केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) एवं NCTE पाठ्यक्रम पर आधारित

UP TET एवं CTET

बाल विकास

एवं

शिक्षा शास्त्र

अध्यायवार सॉल्व्ड पेपर्स

विस्तृत विश्लेषण एवं व्याख्या सहित हल

(कक्षा I से V एवं कक्षा VI से VIII के शिक्षकों हेतु)

प्रधान संपादक

आननंद कुमार महाजन

लेखक

अमन कुमार (M.A. (NET), B.Ed., M.Ed.)

आन्तरिक सज्जा

बालकृष्ण, चरन सिंह, विनय साहू

संपादकीय कार्यालय

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

मो. : 9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने ओम साईं ऑफसेट, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स, 12, चर्च लेन, प्रयागराज-2 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग अपेक्षित है

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 295/-

विषय-सूची

- **बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ : पाठ्यक्रम.....6**
- **UP TET/CTET/ALL TET की पूर्व परीक्षा प्रश्न-पत्रों की विश्लेषण चार्ट.....7**
- **UP TET/CTET/ALL TET की पूर्व परीक्षा प्रश्न-पत्रों का पाई चार्ट एवं बार ग्राफ.....8**

भाग–I

बाल विकास

1. **शिक्षा एवं मनोविज्ञान---------- 9-12**
2. **विकास की अवधारणा और अधिगम के साथ उसका सम्बन्ध ---------- 13-40**
   - अभिवृद्धि एवं उसकी विशेषताएँ
   - विकास का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - परिपक्वता का अर्थ एवं अधिगम से उसका सम्बन्ध
   - विकास को प्रभावित करने वाले कारक (परिवार, समुदाय, विद्यालय, संचार माध्यम)
   - विकास की अवस्थाएँ
   - गर्भावस्था की विशेषताएँ
   - शैशवावस्था की विशेषताएँ
   - बाल्यावस्था की विशेषताएँ
   - किशोरावस्था की विशेषताएँ
   - शारीरिक विकास
   - गत्यात्मक विकास
   - सामाजिक विकास
   - मानसिक विकास
   - संवेगात्मक विकास
   - नैतिक विकास
   - विकास और अधिगम में सम्बन्ध
   - भाषा विकास–अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
   - सृजनात्मक क्षमता का विकास
3. **बालकों के विकास के सिद्धान्त---------- 41-52**
   - बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान की समझ
   - बालकों के अध्ययन की विधियाँ
   - बाल विकास के सिद्धांत
4. **वंशानुक्रम और वातावरण---------- 53-61**
   - वंशानुक्रम का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - वंशानुक्रम के नियम व सिद्धांत
   - वंशानुक्रम के विशेषक
   - वंशानुक्रम के निर्धारक एवं प्रक्रिया
   - वातावरण का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतर्क्रिया
   - शिक्षा में वंशानुक्रम तथा वातावरण का प्रभाव
   - सुजनन विज्ञान
5. **समाजीकरण की प्रक्रियाएँ, सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, विद्यालय, अभिभावक, जन संचार माध्यम और मित्रगण) ---------- 62-69**
   - समाजीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - समाजीकरण की अवस्थाएँ
   - समाजीकरण के सिद्धांत एवं प्रक्रिया
   - समाजीकरण के निर्धारक (शिक्षक, विद्यालय, जन संचार माध्यम, अभिभावक, मित्रगण)
6. **पियाजे, कोहलबर्ग, ब्रूनर एवं वाइगोत्सकी के सिद्धान्त---------- 70-97**
   - पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत
   - पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत
   - कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत
   - ब्रूनर का संज्ञानात्मक सिद्धांत
   - वाइगोत्सकी का सिद्धांत
7. **बाल केन्द्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा -- 98-118**
   - बाल–केन्द्रित/प्रगतिशील शिक्षा का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - बाल–केन्द्रित/प्रगतिशील शिक्षा के उद्देश्य
   - बाल–केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं शिक्षण क्रियाकलाप
   - राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 (NCF)
   - शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 (RTE)
   - बाल–केन्द्रित शिक्षा पर शिक्षाशास्त्रियों के विचार
   - बाल–केन्द्रित शिक्षा और अध्यापक की भूमिका
   - राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ–1968, 1986, 1993
   - अन्य
8. **बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श एवं बौद्धिकता मापन ---------- 119-130**
   - बुद्धि का अर्थ एवं विशेषताएँ
   - बुद्धि के प्रकार
   - बुद्धि को निर्धारित करने वाले कारक
   - बुद्धि मापन का इतिहास
   - बुद्धि परीक्षणों के प्रकार
   - भारत में बुद्धि परीक्षण
   - बुद्धि लब्धि एवं बुद्धि का वितरण

9. बहुआयामी बौद्धिकता ---------- 131-139

- बुद्धि का एक कारक सिद्धांत (बिने, टरमैन, स्टर्न)
- बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत (स्पीयरमैन)
- बुद्धि का बहु–कारक सिद्धांत (थार्नडाइक)
- बुद्धि का समूह कारक सिद्धांत (थर्सटन)
- बुद्धि का पदानुक्रमिक सिद्धांत (फिलिप बर्नन)
- बुद्धि का संरचनात्मक सिद्धांत (जेपी. गिलफोर्ड)
- बुद्धि का तरल–ठोस सिद्धांत (कैटल)
- बुद्धि का त्रितंत्र सिद्धांत (स्टेनबर्ग)
- बहु–आयामी बुद्धि का सिद्धांत (हावर्ड गार्डनर)
- बुद्धि और अधिगम में अंतर्सम्बन्ध

10. व्यक्तित्व और उसका मापन ---------- 140-152

- व्यक्तित्व का अर्थ एवं विशेषताएँ
- व्यक्तित्व के प्रकार
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक
- व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (फ्रायड)
- व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत (आलपोर्ट)
- व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत (कैटल)
- व्यक्तित्व का मानवतावादी सिद्धांत (मैस्लो)
- व्यक्तिव का मनोसामाजिक सिद्धांत (इरिक्सन)
- व्यक्तिव के अन्य सिद्धांत (मूर्रे, रोजर्स, आइजेंक)
- व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

11. भाषा एवं विचार ---------- 153-163

- भाषा विकास की आवश्यकता एवं महत्त्व
- भाषा विकास का अर्थ, सोपान एवं विकास क्रम
- भाषा–विकास के सिद्धांत
- भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- भाषा के अंग (शब्द, पद, वाक्य आदि)
- भाषा एवं विचार में अंतर्सम्बन्ध
- चिंतन का अर्थ एवं विशेषताएँ
- चिंतन की प्रक्रिया
- चिंतन की सामग्री
- चिंतन के प्रकार
- चिंतन के सिद्धांत
- चिंतन का शैक्षिक महत्त्व
- कल्पना का अर्थ एवं विशेषताएँ
- कल्पना के प्रकार
- कल्पना तथा शिक्षा
- तर्क का अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार एवं शैक्षिक महत्त्व
- प्रत्यय निर्माण, प्रत्यय निर्माण के स्तर एवं शैक्षिक महत्त्व

12. समाज निर्माण में लैंगिक मुद्दे ---------- 164-171

- समाज निर्माण में लिंग (जेंडर) की भूमिका
- लैंगिक भेदभाव
- व्यक्तित्व के विषय में लैंगिक भेद
- लैंगिक पूर्वाग्रह एवं शैक्षणिक व्यवहार
- पूर्वाग्रह एवं भेदभाव

13. व्यक्तिगत विभिन्नताएँ ---------- 172-177

- व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अर्थ एवं स्वरूप
- व्यक्तिगत विभिन्नता की प्रकृति एवं विशेषताएँ
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के क्षेत्र– जाति, भाषा, धर्म, लिंग, समुदाय आदि।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं का शैक्षिक महत्त्व एवं उनका समायोजन

14. अभियोग्यता/अभिक्षमता, अभिवृत्ति तथा मूल्य -- 178-182

- अभियोग्यता/अभिक्षमता का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अभिक्षमता/अभियोग्यता का मापन
- अभिवृत्ति का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अभिवृत्ति मापन
- मूल्य का अर्थ एवं विशेषताएँ

15. आकलन/मूल्यांकन ---------- 183-198

- आकलन/मापन/मूल्यांकन का अर्थ एवं विशेषताएँ
- मूल्यांकन के क्षेत्र एवं उद्देश्य
- अधिगम का आकलन (योगात्मक आकलन)
- अधिगम के लिए आकलन (निर्माणात्मक आकलन)
- विद्यालय आधारित आकलन
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन
- आकलन हेतु उपयुक्त प्रश्नों का निर्माण करना
- उपलब्धि परीक्षाओं के उद्देश्य एवं प्रकार
- अध्यापक निर्मित एवं मानकीकृत परीक्षण
- अच्छे मापक उपकरण का निर्माण एवं विशेषताएँ (विश्वसनीयता, वैधता, मानक आदि)
- मापन और मूल्यांकन की प्रमुख तकनीके (अवलोकन, तकनीक, परीक्षण तकनीक, समाजमीति तकनीक आदि)
- मापन और मूल्यांकन में प्रयुक्त उपकरण (अवलोकन, एनेक्डोटल, पोर्टफोलियो आदि)
- ग्रेडिंग प्रणाली, आंकिक प्रणाली

भाग–II

समावेशी शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श

16. समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ -------- 199-210

- विशिष्ट बालक
- समावेशी शिक्षा का अर्थ एवं विशेषताएँ
- समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं उद्देश्य
- समावेशी शिक्षा के सिद्धांत एवं प्रक्रिया

- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ, कौशल एवं उपकरण
- विशेष तथा समावेशित शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ एवं कानून
- दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (PWD एक्ट) 1995 एवं 2016

17. अलाभान्वित एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्ताओं की पहचान एवं शिक्षा --- 211-215

- अलाभान्वित बालक/अपवंचित बालक (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक बालक, कमजोर वर्ग के बालक आदि की पहचान)
- अपवंचित बालकों की शिक्षा
- पिछड़े बालक का अर्थ एवं विशेषताएँ
- पिछड़ेपन के कारण एवं समस्याएँ
- पिछड़े बालकों की शिक्षा के प्रावधान
- मंद बुद्धि बालक एवं उनकी शिक्षा
- कुसमायोजित बालक एवं उनकी शिक्षा

18. अधिगम कठिनाइयों 'क्षति' आदि से सम्बन्धित बालक ---------- 216-230

- अधिगम अक्षमता का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अधिगम अक्षमता के कारण एवं प्रकार
- अधिगम अक्षम बालक की आवश्यकताएँ, एवं पहचान
- अधिगम अक्षम बालकों की शिक्षा
- दिव्यांगता/असामान्य बालक, असाधारण बालक की अवधारणा एवं प्रकार
- दृष्टि बाधित बालक एवं उनकी शिक्षा
- मूक बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा
- वाक् बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा
- अस्थि बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा
- अन्य विकार से ग्रसित बालक (विकासात्मक विकार, अटिज्म आदि)

19. प्रतिभावान, सृजनात्मक तथा विशेष क्षमता वाले बालक ---------- 231-243

- प्रतिभाशाली बालक का अर्थ एवं विशेषताएँ
- प्रतिभाशाली बालकों की आवश्यकताएँ एवं पहचान
- प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा
- सृजनात्मकता का अर्थ, स्वरूप, सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ, समस्याएँ तथा उनकी शिक्षा एवं सृजनात्मकता का मापन

20. समायोजन व मानसिक स्वास्थ्य---------- 244-248

- समायोजन का अर्थ एवं विशेषताएँ
- समायोजन के लक्षण
- समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक
- समायोजन की युक्तियाँ
- मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ एवं विशेषताएँ
- मानसिक स्वास्थ्य पर बाधा डालने वाले कारक
- बालक व शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य
- कुण्ठा का अर्थ, लक्षण एवं कुण्ठा कम करने के उपाय
- तनाव का अर्थ, कारण एवं तनाव कम करने के उपाय
- मानसिक द्वन्द्व के कारण तथा उपाय
- चिंता विकार से ग्रसित बालकों की समस्याएँ कारण एवं निदान

21. समस्याग्रस्त बालक पहचान एवं निदानात्मक पक्ष ---------- 249-250

- समस्यात्मक बालक का अर्थ एवं प्रकार
- समस्यात्मक बालकों की शिक्षा के उपाय

22. बाल–अपराध, कारण एवं प्रकार---------- 250-250

23. निर्देशन एवं परामर्श---------- 251-256

- निर्देशन का अर्थ प्रकार एवं आवश्यकता
- निर्देशन की प्रक्रिया एवं सिद्धांत
- निर्देशन कार्यक्रम का संगठन
- परामर्श का अर्थ, प्रकार, सिद्धांत एवं प्रक्रिया
- परामर्श के लिए आवश्यक गुण/कौशल
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ– (मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद, मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र, जिला चिकित्सालय, डायट मेंटर पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तंत्र, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन आदि)
- बाल अधिगम एवं शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श का महत्त्व

24. क्रियात्मक अनुसंधान---------- 257-258

भाग–III

अधिगम और अध्यापन

25. बालकों का सोचना और सीखना तथा विद्यालय प्रदर्शन में असफलता के कारण---------- 259-291

- अधिगम का अर्थ
- अधिगम की विशेषताएँ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
- अधिगम के प्रकार एवं क्षेत्र
- अधिगम के वक्र तथा पठार
- अधिगम अनुभव
- अधिगम शैली
- अधिगम अंतरण/स्थानान्तरण
- अधिगम के सिद्धांत
- थार्नडाइक का अधिगम सिद्धांत एवं नियम
- पावलव का अधिगम सिद्धांत
- स्किनर का अधिगम सिद्धांत

- हल का अधिगम सिद्धांत
- गुथरी का अधिगम सिद्धांत
- कोहलर का अधिगम सिद्धांत
- टालमैन का अधिगम सिद्धांत
- लेविन का अधिगम सिद्धांत
- बण्डूरा का अधिगम सिद्धांत
- रोजर्स का अधिगम सिद्धांत
- मिलर व डोलार्ड का अधिगम सिद्धांत
- बालकों का विद्यालय प्रदर्शन में असफलता का अर्थ, कारण एवं उपाय

26. अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ---------- 292-335

- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य एवं इनके प्रकार
- शिक्षण की प्रक्रिया एवं अवस्थाएँ
- शिक्षण के स्तर
- शिक्षण वातावरण
- शिक्षण का संगठन
- शिक्षण का नियोजन
- शिक्षण के सिद्धांत
- शिक्षण के सूत्र
- शिक्षण प्रविधियाँ
- शिक्षण प्रतिमान एवं उसके प्रकार
- शिक्षण की नवीन विधाएँ (रचनात्मक, छात्र केन्द्रित, अध्यापक केन्द्रित आदि)
- सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल
- शिक्षण उपकरण एवं शिक्षण तकनीकी
- शिक्षण विधियाँ
- सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम एवं सामाजिक संदर्भ
- शिक्षा में विद्यालय, शिक्षक, परिवार एवं समाज का योगदान
- संप्रेषण

27. बालक एक समस्या समाधानकर्ता एवं वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में ---------- 336-341

- समस्या समाधान का अर्थ
- प्रभावी समस्या समाधान व्यवहार के सोपान
- समस्या समाधान की विधियाँ
- बालक एक समस्या–समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में

28. बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ एवं उनकी त्रुटियों को समझना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक–अवधान एवं रुचि ---------- 342-352

- पियाजे का रचनावादी दृष्टिकोण
- वाइगोत्सकी का सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण
- शिक्षार्थियों की त्रुटियों की पहचान
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण
- अवधान का अर्थ एवं विशेषताएँ
- अवधान की दशाएँ एवं प्रकार
- अवधान केन्द्रित करने के उपाय
- रुचि का अर्थ प्रकार एवं मापन
- रुचि उत्पन्न करने की विधियाँ

29. बोध/संज्ञान, संवेग, संवेदनाएँ एवं प्रत्यक्षीकरण -- 353-360

- बोध/संज्ञान का अर्थ एवं सिद्धांत
- संवेग का अर्थ, विशेषताएँ एवं संवेगात्मक बुद्धि
- संवेग के प्रकार एवं सिद्धांत
- सांवेगिक दशाएँ
- बोध, संवेग एवं अधिगम में अंतर्सम्बन्ध
- संवेदना का अर्थ, विशेषताएँ एवं प्रकार
- संवेदना का शिक्षा में महत्त्व
- प्रत्यक्षीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ
- प्रत्यक्षीकरण का शिक्षा में महत्त्व

30. अभिप्रेरणा और अधिगम ---------- 361-378

- अभिप्रेरणा की अवधारणा
- अभिप्रेरणा के संघटक एवं प्रकार
- अभिप्रेरणा के सिद्धांत
- अभिप्रेरणा और अधिगम में अंतर्संबन्ध
- अभिप्रेरणा का शिक्षा में महत्त्व
- पुनर्बलन, पुरस्कार एवं दण्ड

31. अधिगम में योगदान देने वाले कारक------- 379-380

- व्यक्तिगत कारक
- पर्यावरणीय कारक

32. स्मृति, विस्मृति, आदत निर्माण, थकान तथा अनुशासन---------- 381-385

- स्मृति का अर्थ एवं विशेषताएँ
- स्मृति के अंग एवं प्रक्रिया
- स्मृति के प्रकार
- स्मृति के नियम/सिद्धांत
- विस्मृति का अर्थ एवं प्रकार
- विस्मृति के कारण एवं विस्मृति कम करने के उपाय
- आदत का अर्थ, प्रकार एवं शिक्षा में इसका महत्त्व
- थकान का अर्थ, प्रकार, कारण एवं शिक्षा में महत्त्व
- अनुशासन

33. शिक्षा में सांख्यिकी विधियाँ ---------- 386-388

34. विविध---------- 389-400

- कथन
- पुस्तकें
- भारत में शिक्षा का विकास
- अन्य

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ नवीन पाठ्यक्रम (18-9-2018)

UP TET (I-V) एवं (VI-VIII) नवीन पाठ्यक्रम बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

30 प्रश्न

(क) विषय-वस्तु

बाल विकास–

- बाल विकास का अर्थ, आवश्यकता तथा क्षेत्र, बाल विकास की अवस्थाएँ, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, भाषा विकास – अभिव्यक्ति क्षमता का विकास, सृजनात्मकता एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास।
- बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक– वंशानुक्रम, वातावरण। (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयीय, संचार माध्यम)

सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्त–

- अधिगम (सीखने) का अर्थ प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ।
- अधिगम के नियम– थार्नडाइक के सीखने के मुख्य नियम एवं अधिगम में उनका महत्व।
- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता, थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त, पैवलव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम सिद्धान्त, कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त, प्याजे का सिद्धान्त, व्योगास्की का सिद्धान्त, सीखने का वक्र– अर्थ एवं प्रकार, सीखने में पठार का अर्थ और कारण एवं निराकरण।

शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ-

- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य, सम्प्रेषण, शिक्षण के सिद्धान्त, शिक्षण के सूत्र, शिक्षण प्रविधियाँ, शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम), सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल।

समावेशी शिक्षा-निर्देशन एवं परामर्श-

- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार, निराकरण यथा अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक्/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ।
- समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी।
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ। यथा-ब्रेललिपि आदि।
- समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श– अर्थ, उद्देश्य, प्रकार, विधियाँ, आवश्यकता एवं क्षेत्र।
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थायें–
  - मनोविज्ञानशाला उ.प्र., इलाहाबाद
  - मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)
  - जिला चिकित्सालय
  - जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित डायट मेण्टर
  - पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
  - समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
  - सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
- बाल-अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

(ख) अधिगम और अध्यापन

- बालक किस प्रकार सोचते और सीखते हैं, बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं।
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएं, बालकों की अधिगम कार्यनीतियां, सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम, अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्त्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की त्रुटियों को समझना।
- बोध और संवेदनाएं।
- प्रेरणा और अधिगम।
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक – निजी एवं पर्यावरणीय।

CTET (I-V) एवं (VI-VIII) नवीन पाठ्यक्रम बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

I. बाल विकास और अध्यापन **30 प्रश्न**

(क) बाल विकास (प्राथमिक विद्यालय का बालक) **15 प्रश्न**

- विकास की अवधारणा तथा अधिगम के साथ उसका संबंध
- बालकों के विकास के सिद्धान्त
- आनुवांशिकता और पर्यावरण का प्रभाव
- सामाजीकरण प्रक्रियाएं : सामाजिक विश्व और बालक (शिक्षक, अभिभावक और मित्रगण)
- पाइगेट, कोलबर्ग और वायगोट्स्की : निर्माण और विवेचित संदर्श
- बाल-केन्द्रित और प्रगामी शिक्षा की अवधारणाएँ
- बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श
- बहु-आयामी बौद्धिकता
- भाषा और चिंतन
- समाज निर्माण के रूप में लिंग, लिंग भूमिकाएं, लिंग-पूर्वाग्रह और शैक्षणिक व्यवहार
- शिक्षार्थियों के मध्य वैयक्तिक विभेद, भाषा, जाति, लिंग, समुदाय, धर्म आदि की विविधता पर आधारित विभेदों को समझाना
- अधिगम के लिए मूल्यांकन और अधिगम का मूल्यांकन के बीच अंतर, विद्यालय आधारित मूल्यांकन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन : संदर्श और व्यवहार
- शिक्षार्थियों की तैयारी के स्तर के मूल्यांकन के लिए (कक्षा में शिक्षण और विवेचित चिंतन के लिए तथा शिक्षार्थी की उपलब्धि के लिए उपयुक्त प्रश्न तैयार करना।

(ख) समावेशी शिक्षा की अवधारणा तथा विशेष आवश्यकता वाले बालकों को समझना। **5 प्रश्न**

- गैर-लाभप्राप्त और अवसर-वंचित शिक्षार्थियों सहित विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।
- अधिगम संबंधी समस्याएं, कठिनाई वाले बालकों की आवश्यकताओं को समझना।
- मेधावी, सृजनशील, विशिष्ट प्रतिभावान शिक्षणार्थियों की आवश्यकताओं को समझना।

(ग) अधिगम और अध्यापन **10 प्रश्न**

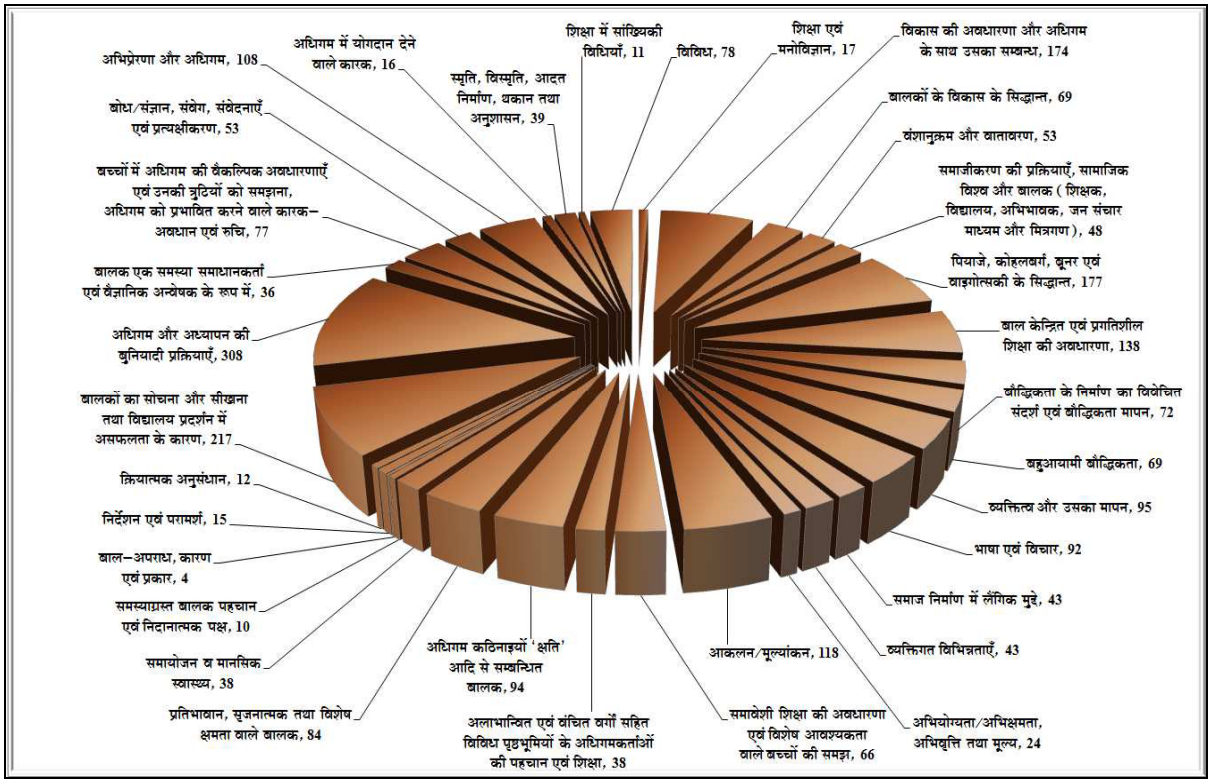
- बालक किस प्रकार सोचते हैं और सीखते हैं, बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों 'असफल' होते हैं।
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बालकों की अधिगम कार्यनीतियाँ : सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम; अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना, अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की 'त्रुटियों' को समझना।
- बोध और संवेदनाएं
- प्रेरणा और अधिगम
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक–निजी एवं पर्यावरणीय।

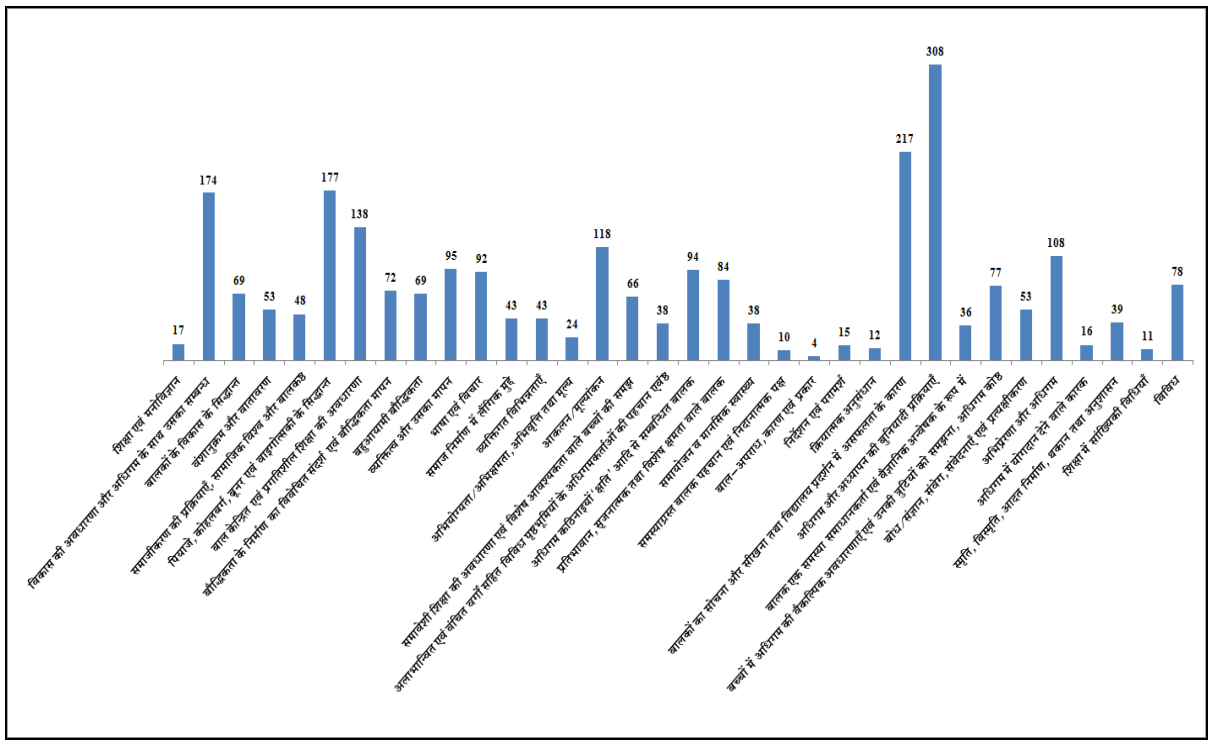
UP TET/CTET/All TET बाल विकास पूर्व प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण चार्ट

S.L.	Exam NAME	EXAM DATE/TIME	No. of Questions
	UP Assistant Teacher Test		
1.	**UP Assistant Teacher Test**	06.01.2019	32
2.	**UP Assistant Teacher Test**	27.07.2018	30
	UP TET		
3.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	08.01.2020	2 × 30 = 60
4.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	18.11.2018	2 × 30 = 60
5.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	15-10-2017	2 × 30 = 60
6.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	19-12-2016	2 × 30 = 60
7.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	02-02-2016	2 × 30 = 60
8.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	23-02-2014	2 × 30 = 60
9.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	27-06-2013	2 × 30 = 60
10.	**UP TET (I-V) & (VI-VIII)**	13-11-2011	2 × 30 = 60
	CTET		
11.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	08.12.2019	2 × 30 = 60
12.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	07.07.2019	2 × 30 = 60
13.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	09.12.2018	2 × 30 = 60
14.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	18-09-2016	2 × 30 = 60
15.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	21-02-2016	2 × 30 = 60
16.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	20-09-2015	2 × 30 = 60
17.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	22-02-2015	2 × 30 = 60
18.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	21-09-2014	2 × 30 = 60
19.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	16-02-2014	2 × 30 = 60
20.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	28-07-2013	2 × 30 = 60
21.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	18-11-2012	2 × 30 = 60
22.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	29-01-2012	2 × 30 = 60
23.	**CTET (I-V) & (VI-VIII)**	26-06-2011	2 × 30 = 60
	Uttarakhand TET		
24.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	22-01-2017	2 × 30 = 60
25.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	28-04-2015	2 × 30 = 60
26.	**Uttarakhand TET (I-V)**	2014	30
27.	**Uttarakhand TET (I-V) & (VI-VIII)**	12-11-2013	2 × 30 = 60
28.	**Uttarakhand TET (I-V)**	29-01-2011	30
	MP TET		
29.	**MP TET (VI-VIII)**	28.02.2019, (Shift - Ist)	30
30.	**MP TET (VI-VIII)**	26.02.2019, (Shift - Ist & IInd)	5 × 30 = 150
31.	**MP TET (VI-VIII)**	24.02.2019, (Shift - Ist)	30
32.	**MP TET (VI-VIII)**	22.02.2019, (Shift - Ist)	30
33.	**MP TET (VI-VIII)**	21.02.2019, (Shift - Ist & IInd)	2 × 30 = 60
34.	**MP TET (VI-VIII)**	18.02.2019, (Shift - Ist)	30
35.	**MP TET (VI-VIII)**	17.02.2019, (Shift - Ist & IInd)	2 × 30 = 60
36.	**MP TET (VI-VIII)**	16.02.2019, (Shift - Ist)	30
37.	**MP TET (I-V)**	2011	30
	Chattishgargh TET		
38.	**Chattishgargh TET (I-V) & (VI-VIII)**	2011	2 × 30 = 60
39.	**Chattishgargh TET (VI-VIII)**	2014	30
	Bihar TET		
40.	**Bihar TET (I-V) & (VI-VIII)**	2011	2 × 30 = 60
41.	**Bihar TET (I-V) & (VI-VIII)**	2013	2 × 30 = 60
	Jharkhand TET		
42.	**Jharkhand TET (I-V)**	2011	30
	Rajasthan TET		
43.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	2011	2 × 30 = 60
44.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	2012	2 × 30 = 60
45.	**Rajasthan TET (I-V) & (VI-VIII)**	2016	2 × 30 = 60
	Panjab TET		
46.	**Panjab TET (I-V) & (VI-VIII)**	2011	2 × 30 = 60
	Haryana TET		
47.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2011	2 × 30 = 60
48.	**Haryana TET Level-III (I-V)**	2011	30
49.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2012	2 × 30 = 60
50.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2014	2 × 30 = 60
51.	**Haryana TET (I-V) & (VI-VIII)**	2015	2 × 30 = 60
52.	**DSSSB PRT**	-	500
		Total	**3262**

नोट- उपरोक्त प्रश्न-पत्रों के सम्यक विश्लेषण के उपरान्त **TET** से सम्बन्धित कुल **3262** (दुहराव वाले प्रश्न + समान प्रकृति वाले प्रश्न) प्रश्नों को अध्यायवार प्रस्तुत किया गया है, जिससे प्रतियोगियों को प्रश्न पूछने की तकनीकि का लाभ मिल सके।

Trend Analysis of Previous Year UP TET/CTET/All TET Papers Through Bar Graph and Pie Chart





भाग–I

बाल विकास

01.

शिक्षा एवं मनोविज्ञान

1. प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना किसने की थी?

(a) गाल्टन
(b) हल
(c) वुण्ट
(d) वाटसन

Bihar TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (c) जर्मनी के चिकित्सक, दार्शनिक, प्राध्यापक, विल्हेम मैक्समिलियन वुण्ट को आधुनकि मनोविज्ञान का जनक माना जाता है। वुण्ट ने मनोविज्ञान को 'विज्ञान' माना और उन्होंने ही सबसे पहले अपने आपको 'मनोवैज्ञानिक' कहा। वे प्रायोगिक मनोविज्ञान के जनक माने जाते हैं। सन् 1879 में लिपजिंग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला स्थापित की। इसके बाद मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र विधा माना जाने लगा।

2. छात्र अधिगम का वार्क (VARK) मॉडल इनके द्वारा प्रस्तावित किया गया था :

(a) कोह्लबर्ग
(b) नील फ्लेमिंग
(c) पियाजें
(d) ई. इरिक्सन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : छात्र अधिगम का वार्क (VARK) मॉडल नील डी फ्लेमिंग द्वारा प्रस्तावित किया गया था। वार्क न्यूरो–लैंग्वेज–प्रोग्रामिंग (NLP) का विस्तारित रूप है। वार्क मॉडल 1987 में लिंकन विश्वविद्यालय में किये गये शोध कार्य के माध्यम से लाँच किया गया था।

3. शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन–सा माना जाता है?

(a) 1947 (b) 1920
(c) 1940 (d) 1900

DSSSB PRT
Bihar TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) शिक्षा मनोविज्ञान का औपचारिक प्रारम्भ आधुनिक काल में वर्ष 1889 से जी. स्टेनलेहॉल के प्रयासों से माना जाता है। स्टैनले हाल को बाल मनोविज्ञान का अन्वेषक भी कहा जाता है। थार्नडाइक द्वारा स्थापित कोलाम्बिया विश्वविद्यालय (सन् 1900) में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना होने के फलस्वरूप शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन को दृढ़ता मिली एवं शिक्षा मनोविज्ञान की स्वतंत्र रूप से अध्ययन करने का सिलसिला यहीं पर शुरू हुआ था।

4. शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध किससे नहीं है?

(a) मानव व्यवहार का अध्ययन
(b) मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन
(c) सीखने के तरीकों का अध्ययन
(d) संचार माध्यमों का अध्ययन

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षा का मनोवैज्ञानिक रूप में अध्ययन करती है। इसका सम्बन्ध मानव के व्यवहार, मानसिक प्रक्रियाओं, सीखने के तरीकों, व्यक्ति और समायोजन, व्यक्तिगत भिन्नतओं, पाठ्क्रम निर्माण, अध्ययन विधियाँ, मापन एवं मूल्यांकन अदि से सम्बन्धित है। जबकि संचार माध्यमों का अध्ययन सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के अंतर्गत किया जाता है।

5. निम्नलिखित में से कौन शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति है?

(a) कला (b) विज्ञान
(c) विध्यात्मक विज्ञान (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) शिक्षा मनोविज्ञान न पूर्ण रूप से कला है और न ही पूर्ण विज्ञान/बल्कि यह कला और विज्ञान दोनों है। शिक्षक अपने कला और कौशल से बालकों में अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न करता है तथा बालक अपनी रूचि, अभिप्रेरणा, आवश्यकतानुसार अधिगम प्रक्रिया में भाग लेता है। इसलिए इसे विध्यात्मक विज्ञान भी कहा जाता है।

6. शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सत्य है?

(a) बच्चे अपने ज्ञान का स्वयं सृजन करते हैं
(b) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्व ज्ञान नहीं होता है
(c) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है
(d) बच्चे यथावत् सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है

DSSSB PRT

Ans : (a) शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से 'बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं।' अर्थात बच्चों को सिखाने के लिए मात्र अधिगम परिस्थिति की उपस्थिति आवश्यक होती है तथा उन्हें अधिगम के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है जिसमें बच्चे स्वयं सक्रिय सहभागिता द्वारा अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं।

7. एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र इस उद्देश्य के साथ संबद्ध है?

(a) सामाजिक दर्शन (b) मीडिया-मनोविज्ञान
(c) शिक्षा-मनोविज्ञान (d) शिक्षा-समाजशास्त्र

CTET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (c) शिक्षा मनोविज्ञान, शैक्षिक परिस्थितियों में बालक के व्यवहार का अध्ययन करके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल, सुगम तथा प्रभावी बनाने का विज्ञान है। इसमें शिक्षक अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास करता है तथा उसी अनुरूप उसमें सुधार करने का प्रयास करता है।

8. शिक्षा मनोविज्ञान है

(a) विशुद्ध विज्ञान
(b) व्यावहारिक विज्ञान
(c) मानक विज्ञान
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Haryana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) शिक्षा मनोविज्ञान एक मानक विज्ञान है जिसमें व्यक्ति को लक्ष्य केन्द्रित शिक्षा दी जाती है। इसके द्वारा मानव व्यवहार को परिवर्तित, मनचाही दिशा में मोड़ा जा सकता है।

9. प्रारम्भ में आत्मा का प्रयोग किस शास्त्र में किया जाता था?

(a) अर्थशास्त्र (b) दर्शनशास्त्र
(c) समाजशास्त्र (d) शिक्षाशास्त्र

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (b) दर्शनशास्त्र वह ज्ञान है जो परम सत्य और प्रकृति के सिद्धान्तों और उनके कारणों की विवेचना करता है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है। अतः दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध आत्मा से है। जिसमें व्यक्ति के आत्मा (अन्तर्निहित ज्ञान) का अध्ययन किया जाता था।

10. 1882 ई. में किस मनोवैज्ञानिक द्वारा लन्दन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया गया?

(a) कैटेल (b) गाल्टन
(c) अल्फ्रेड बिने (d) वुडवर्थ।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (c) अल्फ्रेड बिने ने 1882 में लन्दन में मानवीय विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए प्रयोगशाला का निर्माण किया था।

11. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि

(a) इससे शिक्षक को आत्म-सन्तुष्टि मिल सके
(b) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
(c) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
(d) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योकि इसकी सहायता से वह अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकता है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना। यह कार्य तभी हो सकता है जबकि विद्यार्थियों के व्यवहार के स्तर की जाँच हो सके, यह पता चल सके कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किस सीमा तक हुआ।

12. निम्न में से कौन-सी शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि है?

(a) अन्तर्दर्शन (b) बहिर्दर्शन
(c) अवलोकन (d) प्रयोगीकरण

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (a) शिक्षा मनोविज्ञान की सर्वाधिक व्यक्तिनिष्ठ विधि अंतदर्शन है। इस विधि का प्रतिपादन विल्हेंम वुण्ट तथा उनके शिष्य टिचनर ने किया था। अंतदर्शन विधि में मनोवैज्ञानिक अपने ही भावों, अनुभवों, व्यवहारों, संवेगों आदि का अंतर्निरीक्षण करके उसका विश्लेषण करते थे और मनोवैज्ञानिक नियमों तथा सिद्धांतों का प्रतिपादन करते थे।

13. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प शिक्षा मनोविज्ञान की एक सीमा है?

(a) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का ज्ञान
(b) कक्षा की समस्याओं का समाधान
(c) बालक केंद्रित शिक्षा
(d) वैयक्तिक विभिन्नताओं की समस्या

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (d) वैयक्तिक विभिन्नताओं की समस्या शिक्षा मनोविज्ञान की एक सीमा है।

14. प्रयोगात्मक विधि को सर्वप्रथम प्रस्तावित किया-

(a) जुड ने (b) राइस एवं कार्नमैन ने
(c) विल्हेम वुन्ट ने (d) कोलिन्स व ड्रेवर ने

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) विल्हेम वुन्ट जर्मनी के दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक थे। विल्हेम वुन्ट ने 1879 में मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला की स्थापना किया था तथा इन्होंने मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक विधि का प्रारम्भ किया इसलिए इन्हे प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का पिता भी कहा जाता है।

15. मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है :

(a) विषय केन्द्रित शिक्षा
(b) शिक्षक केन्द्रित शिक्षा
(c) क्रिया केन्द्रित शिक्षा
(d) बाल केन्द्रित शिक्षा

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (d) मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है बाल केन्द्रित शिक्षा के विकास में। मनोविज्ञान के द्वारा ही शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया जिसके परिणामस्वरूप बालक के व्यवहार को नियन्त्रित करके सकारात्मक दिशा प्रदान की जाती है तथा शिक्षण पाठ्यक्रम तथा शिक्षण कौशल छात्र के अनुकूल ही तैयार किये जाते हैं ताकि छात्र सहजतापूर्वक अधिगम कर सके।

16. मनोविज्ञान प्रारंभ में किस विषय का अंग था?

(a) दर्शनशास्त्र (b) नीतिशास्त्र
(c) तर्कशास्त्र (d) भौतिकी

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (a) मनोविज्ञान प्रारम्भ में दर्शनशास्त्र का विषय हुआ करता था। मनोविज्ञान का जन्म ही दर्शनशास्त्र से हुआ है इसलिए मनोविज्ञान का प्रारम्भिक विषय ''आत्मा'' रहा है। Psychology दो शब्दों से मिलकर बना है Psyche + logos। Psyche का अर्थ आत्मा तथा logos का अर्थ अध्ययन होता है अतः अंग्रेजी शब्द Psychology का शाब्दिक अर्थ आत्मा का अध्ययन'' है।

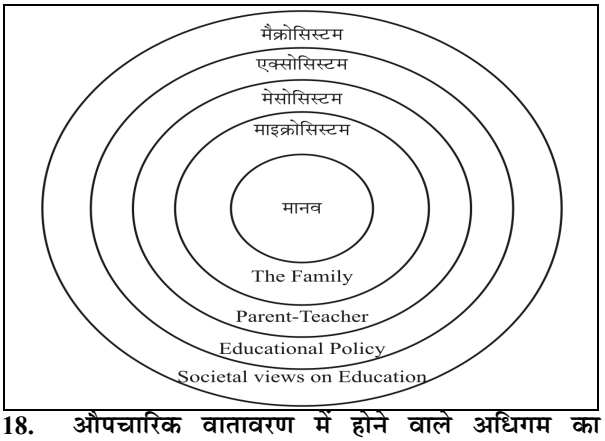
17. पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धांत, जो मूल रूप से उरी ब्रोफेरब्रेनर द्वारा तैयार किया गया है, चार प्रकार के नेस्टेड पर्यावरण प्रणालियों को निर्दिष्ट करता है जिन्हें ..... भी कहा जाता है।

(a) प्रभावशाली अवधारणा (b) मानव विकास
(c) मानव पारिस्थितिकी (d) बौद्धिक विकास

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : पारिस्थितिक प्रणाली सिद्धान्त, जो मूल रूप से उरी ब्रोंफनब्रेनर द्वारा तैयार किया गया है, चार प्रकार के नेस्टेड पर्यावरण प्रणालियों को निर्दिष्ट करता है, जिन्हें मानव पारिस्थितिकी (Human Ecology) भी कहा जाता है। ब्रोंफेनब्रेनर एक विकासात्मक मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने मानव विकास और उसके पारस्थितिकी को समझने के लिए चार प्रकार के पारिस्थितिकी स्तर बताये हैं जो मानव विकास के प्रत्येक चरण को निर्धारित करते हैं।

1. माइक्रोसिस्टम
2. मेसोसिस्टम
3. एक्सोसिस्टम
4. मैक्रोसिस्टम



18. औपचारिक वातावरण में होने वाले अधिगम का _____ द्वारा अध्ययन किया जाता है।

(a) मानवविज्ञानी
(b) शिक्षा मनोविज्ञानी
(c) नैदानिक मनोविज्ञानी
(d) सामाजिक मनोविज्ञानी

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) औपचारिक वातावरण में होने वाले अधिगम का शिक्षा मनोविज्ञानी द्वारा अध्ययन किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान मानव व्यवहार का शैक्षणिक परिस्थितियों में अध्ययन करता है। इसका सम्बन्ध उन मानव व्यवहारों और व्यक्तित्व के अध्ययन से है, जिनका उत्थान, विकास और मार्गदर्शन शिक्षा की प्रक्रिया द्वारा होता है।

17. ''व्यक्ति बिना किसी अंतर्निहित मानसिक प्रकरण के पैदा होते हैं, और इसलिए सभी ज्ञान अनुभव या धारणा से आते हैं।'' इस धारणा को ..... के रूप में संदर्भित किया जाता है।

(a) मासूम नोटा (तबुला नोटा)
(b) मासूम मनः स्थिति (तबुला रास)
(c) मासूम पहिला (तबुला प्राइमस)
(d) मासूम नोवस (तबुला नोवस)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : ''व्यक्ति बिना किसी अंतर्निहित मानसिक प्रकरण के पैदा होते हैं, और इसलिए सभी ज्ञान अनुभव या धारणा से आते हैं।'' इस धारणा को मासूम मनः स्थिति (Tabula rasa) के रूप में संदर्भित किया जाता है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन जॉन लॉक, जिन्होंने मानव की यांत्रिक अवधारणा की नींव रखी थी, ने किया था। लॉक के अनुसार, अनुभव हमारे दिमाग में हमारी इंद्रियों को कैप्चर करने की एक प्रति बनाते हैं। समय बीतने के साथ, हम उन प्रतियों में पैटर्न का पता लगाना सीखते हैं जो हमारे दिमाग में रहते हैं, जो अवधारणाओं को प्रकट करता है। बदले में इन अवधारणाओं को एक दूसरे के साथ भी जोड़ा जाता है और इस प्रक्रिया से पहले जटिल अवधारणाएँ उत्पन्न होती हैं और उन्हें पहले समझना मुश्किल होता है।

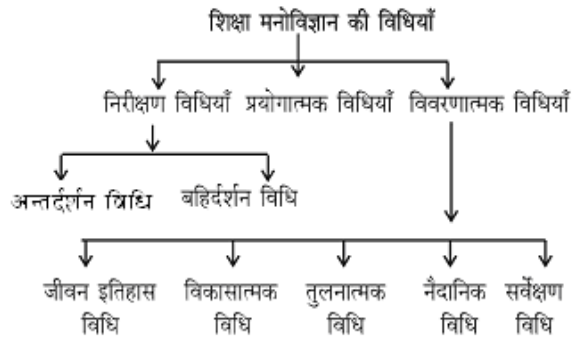
EXAM POINT

- शिक्षा है? **–शिक्षा जीवनपर्यन्त प्राप्त होने वाला अनुभव एवं ज्ञान है**
- शिक्षण क्रिया का केन्द्र बिन्दु है **–छात्र**
- ''शिक्षा वह है जो मुक्ति दिलाये'' या ''सः विद्या या विमुक्तये'' कथन है **–शंकराचार्य**
- ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है'' **–स्वामी विवेकानन्द**
- शिक्षा का अर्थ उन सर्वमान्य विचारो को विकसित करना है जो प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में विलुप्त होती हैं **–सुकरात**
- स्वस्थ शरीर में स्वस्थ्य मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है **–अरस्तू**
- Education को E+Duco का संयोग कहा गया है **–E का अर्थ है भीतर से** Duco **का अर्थ बाहर निकालना**
- 'psyche' का अर्थ होता है **–आत्मा**
- 'Psychology' का शाब्दिक अर्थ होता है **–आत्मा का विज्ञान**
- ''विद्या से अमरत्व की प्राप्ति होती है।'' कहाँ पर उल्लेख किया गया है **–यजुर्वेद मे**
- शिक्षा कैसा विज्ञान है **–नियामक**
- मनोविज्ञान की प्रकृति होती है **–वैज्ञानिक**
- किसके अनुसार - ''मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है'' **–जेम्स**

शिक्षा मनोविज्ञान की परिधि– जैसे शिक्षा के तीन स्तम्भ होते हैं- शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम।

उसी प्रकार शिक्षा मनोविज्ञान के तीन क्षेत्र है- शिक्षार्थी, शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षण दशायें।

- मनोविज्ञान की सबसे अधिक प्रयोग की जानी वाली विधि है **–निरीक्षण विधि**



- शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए ताकि **–इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके**
- शिक्षण क्या है? **–ज्ञानार्जन**
- मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है? **–मन का विज्ञान**
- ''मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का विज्ञान है'', किसका कथन है **–मोर्गन का**
- शिक्षा-मनोविज्ञान में अध्ययन किया जाता है **–मानव व्यवहार की शैक्षणिक परिस्थितियों का**
- मनोविज्ञान से क्या तात्पर्य है **–व्यवहार का विज्ञान**
- ''मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार एवं आचरण का यथार्थ विज्ञान है'' कथन है **–मैकडूगल**
- मैकडूगल के अनुसार मूल प्रवृत्तियों की संख्या होती है **–14**
- शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार की आवश्यकता क्यों है? **–बालकों के आन्तरिक एवं बाह्य गुणों का पता लगाने तथा शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु**
- शिक्षा की दृष्टि से बालक की महत्वूपर्ण आवश्यकता है **–बालकों के साथ मनोवैज्ञानिक व्यवहार की आवश्यकता**
- ''शिक्षा-मनोविज्ञान शिक्षण विधियों के चयन में शिक्षक की सहायता करता है'' कथन है **–स्किनर का**
- मनोविज्ञान है **–विधायक विज्ञान है**
- निरीक्षण विधि में किया जाता है **–दूसरों का अध्ययन**
- मनोविज्ञान की उचित विषय-वस्तु है **–व्यवहार**
- मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है, कथन है **–स्किनर**
- शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र है **–बालक**
- शिक्षा को 'द्विध्रुवीय' किसने कहा **–एडम्स**
- शिक्षा के तीन ध्रुव कौन से है **–शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम**
- शिक्षा को 'त्रिध्रुवी' मानने वाले प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री जॉन डीवी किस देश के निवासी थे **–अमेरिका**
- शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने के लिए आवश्यक है **–सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का सतत मूल्यांकन**
- वैदिक काल में शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य था **–मोक्ष की प्राप्ति**
- वैदिक काल में शिक्षा का आरम्भ किस संस्कार से होता था **–उपनयन संस्कार से**
- 'समावर्तन' के समकक्ष संस्कार है **–उपसम्पदा**
- मुस्लिम काल में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती थी **–मकतब में**

02.

विकास की अवधारणा और अधिगम के साथ उसका सम्बन्ध

अभिवृद्धि एवं उसकी विशेषताएँ

1. बच्चे की वृद्धि मुख्यतः सम्बन्धित है–

(a) शारीरिक विकास से (b) सामाजिक विकास से

(c) भावात्मक विकास से (d) नैतिक विकास से

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : बच्चे की वृद्धि मुख्यतः शारीरिक विकास से सम्बन्धित होती है। दूसरे शब्दों में कोशिकाओं की गुणात्मक वृद्धि ही 'अभिवृद्धि' कहलाती है अथवा व्यक्ति के स्वाभाविक विकास को वृद्धि कहा जाता है। मानव अभिवृद्धि की प्रकृति के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बालक के शरीर और व्यवहार के प्रमुख आकार–प्रकार में किस प्रकार परिवर्तन घटित होता है। गर्भाधान से लेकर शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था से होते हुए प्रौढ़ावस्था तक पहुँचने के दौरान व्यक्ति के विभिन्न अंगों के आकार, लम्बाई तथा भार आदि में आने वाले परिवर्तनों को वृद्धि कहा जा सकता है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन वृद्धि की विशेषता का प्रतिनिधित्व नहीं करता है?

(a) यह एक मात्रात्मक पहलू है

(b) यह मापने योग्य नहीं है

(c) यह जीवन पर्यंत नहीं है

(d) यह केवल शारीरिक विकास को दर्शाता है

(DSSSB ASSISTANT TEACHER EDUCATION DEP.)

Ans. (b) **:** सामान्यतः व्यक्ति के स्वभाविक प्रगतिशील परिवर्तन, जिन पर शिक्षण या प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता, वृद्धि कहलाती है। वृद्धि के निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- वृद्धि एक मात्रात्मक पहलू है तथा इसे मापा जा सकता है।
- वृद्धि का सम्बन्ध शारीरिक परिपक्वता से है।
- वृद्धि एक निश्चित आयु के पश्चात् रूक जाती है।
- वृद्धि में व्यक्तिगत भेद होता है।

3. वृद्धि के बारे में क्या सही नहीं है?

(a) अभिवृद्धि शारीरिक होती है

(b) अभिवृद्धि मात्रात्मक होती है

(c) अभिवृद्धि मापनीय होती है

(d) अभिवृद्धि जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है

Haryana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) वृद्धि (Growth) विकास (Development) का ही भाग होता है। वृद्धि विकास में समाहित होती है।

अन्तर

वृद्धि	विकास
यह शारीरिक होती है	यह शारीरिक एवं मानसिक दोनो होती है
यह मात्रात्मक रुप से दर्शाया जा सकता है	इसे गुणात्मक रुप से दर्शाया जा सकता है
यह मापनीय होती है	इसे मापा नहीं जा सकता
एक निश्चित आयु तक चलने वाली प्रक्रिया है	यह जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

विकास का अर्थ एवं विशेषताएँ

4. निम्न में से कौन–सा कथन सत्य नहीं है?

(a) सीखना व्यवहार परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।

(b) वृद्धि एक जैविक प्रक्रिया है।

(c) विकास एक मात्रात्मक प्रक्रिया है।

(d) शिक्षा एक लक्ष्य उन्मुख प्रक्रिया है।

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : विकास एक मात्रात्मक प्रक्रिया है, यह कथन असत्य है क्योंकि शरीर के गुणात्मक परिवर्तनों को विकास कहा जाता है। जबकि अन्य, सीखना व्यवहार परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, वृद्धि एक जैविक प्रक्रिया है तथा शिक्षा एक लक्ष्य उन्मुख प्रक्रिया है, ये सभी सत्य हैं।

5. मानव विकास को क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है जो है–

(a) शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक

(b) संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, आध्यात्मिक और सामाजिक-मनौवैज्ञानिक

(c) मनोवैज्ञानिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक

(d) शारीरिक, आध्यात्मिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (a) मानव का विकास प्रत्येक क्षेत्र में साथ-साथ होता रहता है साथ ही साथ उनमें आपस में सामंजस्य भी स्थापित होता रहता है और वे एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते रहते है। मानव विकास में सबसे महत्वपूर्ण होता है शारीरिक विकास इसमें मानव

किसी भी कार्य को करने के लिए शारीरिक रूप से तैयार होता है। उसके बाद वह उस क्षेत्र के बारे में जानकारी लेकर और उसे अपने संज्ञान में लाकर उस पर विचार करता है। उसके बाद उस पर अपने विचारों को सोच समझकर उसे प्रस्तुत करता है और अन्त में सामाजिक विकास की आवश्यकता होती है।

6. मानव जाति में विकास होता है

(a) किशोरावस्था के अन्त तक (b) बाल्यावस्था के अन्त तक
(c) प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ तक (d) जीवनपर्यन्त

Haryana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) विकास एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो मानव के भ्रूणावस्था से प्रारम्भ होकर मृत्यु तक चलती रहती है। इस विकास की अवस्था में निम्न स्तर होते है- भ्रूणावस्था, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था एवं वृद्धावस्था।

7. निम्नलिखित में से कौन विकास के व्यापक आयामों की सही पहचान करता है?

(a) संवेगात्मक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं स्व
(b) शारीरिक, व्यक्तित्व, आध्यात्मिक एवं संवेगात्मक
(c) सामाजिक, शारीरिक, व्यक्तित्व, स्व
(d) शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और संवेगात्मक

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) विकास की विभिन्न अवस्थाओं में बालक-बालिकाओं के व्यवहार में विभिन्न प्रकार के अनेकानेक परिवर्तन होते हैं। बालक-बालिकाओं के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर विकास को अग्रांकित आयामों में विभक्त किया जा सकता है–

- शारीरिक विकास
- मानसिक विकास
- सामाजिक विकास
- संवेगात्मक विकास
- नैतिक विकास

8. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) विकास और वृद्धि एक-दूसरे के पर्यायवाची है।
(b) विकास एक सतत प्रक्रिया है।
(c) वृद्धि विकास का ही एक भाग है।
(d) विकास कार्यक्षमता, कार्यकुशलता और व्यवहार में आने वाले गुणात्मक परिवर्तनों को प्रकट करता है।

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (a) विकास एवं वृद्धि एक-दूसरे का पर्यायवाची नहीं है क्योकि विकास-सतत चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति के व्यवहार एवं कार्य के गुणात्मक वृद्धि से सम्बंधित होती है जबकि वृद्धि निश्चित समय तक चलने वाली प्रक्रिया है जो शारीरिक एवं मात्रात्मक परिवर्तन है

9. विकास का एक अधिनियम है कि विकास प्रतिमान के विभिन्न काल में खुशी भिन्न-भिन्न होती है। इस अधिनियम के अनुसार

(a) जीवन का प्रथम वर्ष सबसे अधिक खुशी का काल होता है।
(b) वयःसन्धि काल एवं जीवन का प्रथम वर्ष भी जीवन का सबसे अधिक खुशी का काल होता है
(c) वयःसन्धि काल जीवन का सबसे अधिक दुःखी काल होता है।
(d) जीवन का प्रथम वर्ष सबसे अधिक खुशी का एवं वयः सन्धि काल सबसे अधिक दुःखी काल होता है।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) मानव जीवन का सबसे आराम दायक तथा खुशी का काल जन्म के प्रथम वर्ष को माना जाता है क्योंकि इस अवस्था में बालक दुःख की भावना से अनभिज्ञ होता है। जबकि वयः संधि काल संघर्ष का काल माना जाता है क्योंकि इस अवस्था में बालक एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाता है तथा समायोजन की क्षमता में कमी के कारण तनाव का सामना करता है।

10. निम्न में से कौन-सा कथन विकास के सम्बन्ध में सही नहीं है?

(a) विकास प्रतिमानों की कुछ निश्चित विशेषताओं की भविष्यवाणी की जा सकती है
(b) विकास का उद्देश्य वंशानुगत सम्भाव्य क्षमता का विकास करना है
(c) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सम्भाव्य खतरे नहीं होते हैं
(d) प्रारम्भिक विकास बाद के विकास से अधिक महत्वपूर्ण है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) ''विकास के विभिन्न क्षेत्रों में सम्भाव्य खतरे नहीं होते हैं'' यह कथन गलत है क्योंकि प्रत्येक विकास के क्षेत्र में खतरे की सम्भावना रहती है।

11. विकास का अर्थ है

(a) परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला
(b) अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला
(c) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रृंखला
(d) परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की श्रृंखला।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) विकास एक परिवर्तन है जिसमें उत्तरोत्तर (गुणात्मक) वृद्धि होती रहती है। समय की दृष्टि से व्यक्ति में जो परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं, वे विकास कहलाते हैं। विकास मानव के शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता के साथ उसके अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की एक श्रृंखला है जो जीवन तक चलती है।

12. विकास के सन्दर्भ में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे हैं
(b) विकास उकसाने/बढ़ावा देने से होता है

(c) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है

(d) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (b) विकास की विशेषताए-

1. विकास सांस्कृतिक एवं वातावरणीय परिवर्तनों से प्रभावित होता है
2. विकास के प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताए होती है।
3. विकास के प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे है अर्थात् विकास को सही दिशा नहीं दी गई तो नकारात्मक विकास उत्पन्न होगा।

13. विकास में वृद्धि से तात्पर्य है–

(a) ज्ञान में वृद्धि

(b) संवेग में वृद्धि

(c) वजन में वृद्धि

(d) आकार, सोच, समझ कौशलों में वृद्धि

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) विकास में वृद्धि से तात्पर्य वजन में वृद्धि से होता है। चूँकि वृद्धि मात्रात्मक होती है, एक निश्चित समय तक ही होती है इसलिए वजन में वृद्धि को विकास में वृद्धि माना जाता है।

14. मानव विकास ..... है

(a) मात्रात्मक (b) गुणात्मक

(c) कुछ सीमा तक अमापनीय

(d) (a) और (b)

C TET-2014 (I-V)

DSSSB PRT

Ans : (d) मानव का विकास मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों रूपों में होता है। मात्रात्मक में लम्बाई, भार, विभिन्न अंगों के आकार का बढ़ना आदि शामिल किया जाता है जबकि गुणात्मक में योग्यता, क्षमता, अभिवृत्ति, बुद्धि, व्यक्तित्व, रूचि, चिन्तन आदि में परिवर्तन शामिल है।

15. निम्नलिखित सूची में से बाल विकास में गुणात्मक परिवर्तन की पहचान करें–

(a) वज़न (b) दृष्टि

(c) बाल (d) दांत

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (b) बालकों के विकास में परिवर्तन दो प्रकार के होते हैं– (1) मात्रात्मक (2) गुणात्मक।

वजन, बाल, दाँत, लम्बाई आदि मात्रात्मक परिवर्तन के अंतर्गत आते हैं जबकि दृष्टि, सूझ, मानसिक योग्यता, क्षमता आदि गुणात्मक परिवर्तन के अंतर्गत आते हैं।

परिपक्वता का अर्थ एवं अधिगम से सम्बन्ध

16. निम्नलिखित में से अधिगम संबंधी कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) इसे उचित वातावरण चाहिए।

(b) परिपक्वता का इससे कोई संबंध नहीं है।

(c) सहायक सामग्री अधिगम में मदद करती है।

(d) अधिगम प्रक्रिया में अभिप्रेरणा महत्वपूर्ण

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (b) अधिगम तभी सुचारु रुप से हो सकता है जब उचित वातावरण हो, अधिगम सामग्री हो तथा बालकों में अभिप्रेरणास्तर विद्यमान हो साथ ही बालक अपने आयु के हिसाब से परिपक्व हो चुका हो। अतः विकल्प (b) सही है।

17. परिपक्वता का एक उदाहरण है कि जब बालक सीखता है

(a) चित्रांकन करना (b) पढ़ना

(c) साइकिल चलाना (d) चलना

Haryana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) परिपक्वता एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। यह विकास और अनुभव के फलस्वरूप आती है। परिपक्वता का एक उदाहरण है कि जब बालक चलना सीखता है तो प्रारम्भ में वह धीरे–धीरे चलता है किन्तु बाद में विकास और अनुभव के फलस्वरूप उसके चलने की गति में तीव्रता आ जाती है।

18. अधिगम एवं परिपक्वता के सम्बन्ध में निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

(a) यदि मानव विकास केवल परिपक्वता से होता तो मनुष्य केवल निम्नतम स्तर तक ही सीमित रह जाते।

(b) वंशक्रम सम्भाव्य क्षमता की सीमा के कारण, बालक एक निश्चित सीमा से आगे तक विकसित हो सकते हैं।

(c) बालक विकास की दृष्टि से जब सीखने के लिये तैयार नहीं है तब भी वे अधिक प्रयास के द्वारा सीख सकते हैं।

(d) बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को बिना समय विचारे विकसित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a) अधिगम एवं परिपक्वता दोनों ही तत्व मानव विकास के लिए महत्वपूर्ण कारक है। अधिगम की अनुपस्थिति में परिपक्वता मानव विकास को असंतुलित कर देती है तथा मानव केवल निम्नतम स्तर (बोध स्तर) तक ही सीमित रह जाते हैं।

19. निम्न में से कौन-सी विशेषता परिपक्वता को अधिगम से अलग करती है?

(a) यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है

(b) यह अभ्यास पर निर्भर करती है

(c) यह प्रेरकों पर निर्भर करती है

(d) यह जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) परिपक्वता एक स्वभाविक प्रक्रिया है परन्तु अधिगम एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। इस स्तर पर परिपक्वता अधिगम से अलग होती है।

20. सामान्य परिपक्वन से पहले प्रशिक्षित करना प्रायः

(a) सामान्य कौशलों के निष्पादन के संदर्भ में बहुत लाभकारी होता है।
(b) कुल मिला कर हानिकारक होता है।
(c) दीर्घकालिक दृष्टि से लाभकारी होता है।
(d) लाभकारी हो या हानिकारक, यह इस पर निर्भर करता है कि प्रशिक्षण में किस प्रकार की विधि का प्रयोग किया गया है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) प्रशिक्षण से प्राप्त परिपक्वता लाभकारक है या हानिकारक इस बात पर निर्भर करता है कि प्रशिक्षण के दौरान किस प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है। क्योंकि साधन (विधि) से ही साध्य (लक्ष्य) का निर्धारण किया जाता है।

21. परिपक्वता का सम्बन्ध है–

(a) विकास (b) बुद्धि
(c) सृजनात्मकता (d) रुचि

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) विकास वह प्रक्रिया है जिसमें बालक मानसिक एवं शारीरिक रूप से परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है।

22. विकास का वही सम्बन्ध परिपक्वता से है जो उद्दीपन का.....से

(a) परिवर्तन (b) प्रतिक्रिया
(c) प्रयास (d) परिणाम

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) व्यक्ति का विकास क्रमिक रूप से होता है। जैसे–जैसे व्यक्ति का विकास होता जाता है वैसे-वैसे उसमें परिपक्वता भी आती जाती है। ठीक इसी प्रकार उद्दीपन का सम्बन्ध प्रतिक्रिया से होता है क्योंकि बिना उद्दीपन के प्रतिक्रिया नहीं हो सकती।

23. परिपक्व विद्यार्थी

(a) इस बात में विश्वास करते हैं कि उनके अध्ययन में भावनाओं का कोई स्थान नहीं है
(b) अपनी बौद्धिकता के साथ अपने सभी प्रकार के द्वन्द्वों का शीघ्र समाधान कर लेते हैं
(c) अपने अध्ययन में कभी-कभी भावनाओं की सहायता चाहते हैं
(d) कठिन परिस्थितियों में भी अध्ययन से विचलित नहीं होते

DSSB PRT

Ans : (b) परिपक्व विद्यार्थी अपनी बौद्धिकता के साथ अपने सभी प्रकार के द्वन्द्वों का शीघ्र समाधान कर लेते हैं। परिपक्वता का अर्थ है कि विकास की एक निश्चित अवस्था में बच्चे वे कार्य करने के योग्य हो जाते हैं जो वे इससे पूर्व करने में समर्थ नहीं होते हैं।

24. ..... को परिपक्वता कहा जाता है।

(a) पारिवारिक हस्तक्षेप
(b) सांस्कृतिक प्रभावों के कारण एक परिवर्तन
(c) प्राकृतिक जैविक विकास
(d) पर्यावरणीय दबावों के कारण परिवर्तन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : परिपक्वता उन परिवर्तनों को इंगित करता है जो एक निर्धारित क्रम का अनुसरण करते हैं तथा प्रधानतः उस आनुवंशिक रूपरेखा से सुनिश्चित होते हैं जो हमारी संवृद्धि एवं विकास में समानता उत्पन्न करते हैं। सामान्यतः प्राकृतिक जैविक विकास को परिपक्वता कहा जाता है। जैविक विकास में परिपक्वता का विशेष स्थान है। विकास क्रम में जब एक क्रिया अपने में पूर्ण हो जाती है तभी दूसरी प्रारम्भ होती है।

25. एक व्यक्ति, मांसपेशियों का उपयोग करना सीखता है और इसके कारण एक कौशल प्राप्त करता है :

(a) परिपक्वता (b) अभ्यास
(c) अधिगम (d) अभिभावकों का जोर

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : एक व्यक्ति, मांसपेशियों का उपयोग करना सीखता है और इसके कारण एक कौशल प्राप्त करता है। यह परिपक्वता का एक उदाहरण है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि एक क्रिया का अपने में पूर्ण होना, जिसके आधार पर नवीन क्रिया सीखी जा सके परिपक्वता कहलाती है। विकास में परिपक्वता का अपना स्थान है। विकास क्रम में जब एक क्रिया अपने में पूर्ण हो जाती है तभी दूसरी आरम्भ होती है।

26. निम्नलिखित में से क्या एक शिक्षार्थी की परिपक्वता का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) यह व्यक्तिगत विकास की एक सतत् प्रक्रिया है
(b) यह संज्ञानात्मक क्षमताओं से संबंधित है
(c) विशिष्ट वातावरण की आवश्यकता होती है
(d) कुछ विशिष्ट आयु में होता है।

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : परिपक्वता व्यक्तिगत विकास की एक सतत् प्रक्रिया है। एक क्रिया का अपने में पूर्ण होना जिसके आधार पर नवीन क्रिया सीखी जा सके, 'परिपक्वता' कहलाती है। विकास में परिपक्वता का विशेष स्थान होता है। विकास क्रम में जब एक क्रिया अपने में पूर्ण हो जाती है तभी दूसरी आरम्भ होती है। यह एक सतत प्रक्रिया है।

विकास को प्रभावित करने वाले कारक (परिवार, समुदाय, विद्यालय, संचार माध्यम)

27. विकास के लिये निम्नलिखित में से कौन-सा एक उचित है?

(a) विकास जन्म के साथ प्रारम्भ होता है और समाप्त होता है।
(b) 'सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ' विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

(c) विकास एकल आयामी है।

(d) विकास पृथक होता है।

DSSSB PRT

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (b) विकास एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है जो मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलती रहती है। विकास कई क्षेत्रों में होते है- शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, शैक्षिक विकास आदि। अतः 'सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ' विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

28. ..... के अलावा, निम्नलिखित कारणों से खेल युवा बच्चों के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है :

(a) वे अपने शरीर पर निपुणता प्राप्त करते हैं

(b) यह उनकी इंद्रियों को उत्तेजित करता है

(c) यह समय बिताने का एक सुखद तरीका है

(d) वे नए कौशल हासिल करते हैं और सीखते हैं कि उन्हें कब उपयोग किया जाए

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : खेल समय बिताने का एक सुखद तरीका है, के अलावा निम्नलिखित कारणों से यह, युवा बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैसे-

* वे अपने शरीर पर निपुणता प्राप्त करते हैं।
* यह उनकी इंद्रियों को उत्तेजित करता है।
* वे नये कौशल हासिल करते है और सीखते हैं कि इन्हे कब उपयोग किया जाये।
* यह उनके सामाजिक, मानसिक, शारीरिक और नैतिक विकास में योगदान करता है।

29. निम्नलिखित में से कौन–सा कारक बालक के विकास को प्रभावित करता है?

(a) अंतः स्रावी ग्रंथियाँ (b) पौष्टिक भोजन

(c) रोग तथा चोट (d) उपर्युक्त सभी

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (d) बालक के विकास को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख कारक निम्नवत हैं–

* अंतः स्रावी ग्रंथिया
* पौष्टिक भोजन
* रोग तथा चोट
* वंशानुक्रम
* शुद्ध हवा तथा प्रकाश
* यौन विभेद
* पारिवारिक परिस्थितियाँ
* संस्कृति
* बुद्धि आदि।

30. आजकल अधिकतर विद्यालयों में सम्भागी समूह के लिए प्राथमिक ध्यान आधारित होता है

(a) ग्रेड स्तर पर (b) आयु स्तर पर

(c) योग्यता स्तर पर (d) छात्र अनुराग पर

Haryana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) सम्भागी समूह के द्वारा समान आयुस्तर के बालकों के बीच आपसी समन्वय स्थापित करके उनको और बेहतर बनाया जा सकता है इसलिए विद्यालयों में सर्वप्रथम इस पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

31. निम्न में से कौन-सा बालकों के अधिगम एवं विकास में सबसे अधिक योगदान देता है?

(a) परिवार, समवयस्क समूह और टेलीविजन

(b) परिवार, समवयस्क समूह और अध्यापक

(c) परिवार, खेल एवं कम्प्यूटर

(d) परिवार, खेल एवं पर्यटन।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) बालकों के अधिगम एवं विकास में सबसे अधिक योगदान परिवार, समवयस्क समूह और अध्यापक का होता है।

32. निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) जो अध्यापक यह विश्वास करता है कि विकास प्रकृति की वजह से होता है, वह अनुभव प्रदान करने को महत्त्व नहीं देता

(b) प्रारम्भिक अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं और अध्यापक का हस्तक्षेप भी महत्वपूर्ण होता है

(c) प्रारम्भिक जीवन की नकारात्मक घटनाओं के प्रभाव से कोई भी अध्यापक बचाव नहीं कर सकता

(d) व्यवहारात्मक परिवर्तन के सन्दर्भ में विकास वातावरणीय प्रभावों के फलस्वरूप होता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) अध्यापक का मुख्य कार्य होता है विद्यार्थियों के नकारात्मक भाव को दूर कर सकारात्मक भाव का समावेश करना और कुशल अध्यापक अपने कार्यों में सफल भी होता है।

33. बालक की प्रथम पाठशाला है

(a) परिवार (b) समाज

(c) गाँव (d) विद्यालय।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (a) बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार तथा प्रथम शिक्षक उसकी माता होती है। परिवार में ही सर्वप्रथम बालक अपनी मौलिक आवश्यकताओं एवं अपने रिश्तों को जानना प्रारम्भ करता है।

34. बालक का प्रारंभिक विकास मुख्यतः किस पर निर्भर है?

(a) माता-पिता (b) वातावरण (परिवेश)

(c) विद्यालय का वातावरण (d) समाज

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) बालक के प्रारम्भिक विकास पर उनके माता-पिता का प्रभाव पड़ता है इसलिए माता-पिता बालक के प्रथम शिक्षक माने जाते हैं।

35. निर्धन परिवारों के बच्चे जो छोटे आकार के परिवार से संबद्ध हैं उनको विकास के बेहतर वातावरण पाने के मौके होते हैं क्योंकि उन्हें बड़े परिवारों के निर्धन बच्चों की अपेक्षा.....

(a) साफ-सफाई से जुड़ी कम समस्याओं का सामना करना पड़ता है

(b) उनके अभिभावक ज्यादा प्रसन्नचित रहते हैं

(c) उन्हें शांतिमय परिस्थिति मिलती है

(d) उन्हें बेहतर परिस्थितियां प्राप्त होती हैं।

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans:(d) निर्धन परिवार के वे बच्चे जो छोटे परिवार से सम्बद्ध होते है वे अपना विकास और बेहतर तरीके से कर सकते हैं क्योंकि उन्हें बेहतर वातावरण एवं परिस्थितियाँ प्राप्त होती है।

36. वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक हैं–

(a) पर्यावरण (b) स्वास्थ्य

(c) आहार (d) ये सभी

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) गर्भाधारण के समय, भ्रूण बनने से लेकर जन्म लेने तक तथा जन्म से प्रौढ़ावस्था तक व्यक्ति में जो भी स्वाभाविक परितवर्तन होते है, जिन पर शिक्षण अथवा प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता, अभिवृद्धि कहलाते हैं। अभिवृद्धि को पर्यावरण, स्वास्थ्य, आहार, वंशानुक्रम आदि कारक प्रभावित करते हैं।

37. निम्नलिखित में से ..... के अतिरिक्त सभी वातावरणीय कारक विकास को आकर देते हैं।

(a) पौष्टिकता की गुणवत्ता (b) संस्कृति

(c) शिक्षा की गुणवत्ता (d) शारीरिक गठन

DSSSB PRT
C TET-2012 (VI-VIII)

Ans : (d) शारीरिक गठन के अतिरिक्त सभी वातावरणीय कारक जैसे– पौष्टिकता की गुणवत्ता, सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, शिक्षा की गुणवत्ता, अभिभावक की आर्थिक स्थिति आदि बालक के विकास को प्रभावित करते हैं।

38. निम्न में से कौन सा कथन बच्चे के विकास में परिवेश की भूमिका का समर्थन करता है?

(a) पिछली कुछ दशाब्दियों में बुद्धि लब्धांक परीक्षा में शिक्षार्थियों के औसत प्रदर्शन में लगातार वृद्धि हुई है।

(b) एक समान जुड़वां बच्चे जिनका लालन-पालन भिन्न घरों में हुआ है, उनकी बुद्धिलब्धि 0.75 के समान उच्च है।

(c) शारीरिक रूप से स्वस्थ बच्चे अक्सर नैतिक रूप से अच्छे पाए जाते हैं।

(d) कुछ शिक्षार्थी सूचनाओं का जल्दी प्रक्रमण करते हैं जबकि उसी कक्षा के अन्य विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (a) पिछले कुछ दशकों में बुद्धि लब्धांक परीक्षा में शिक्षार्थियों के औसत प्रदर्शन में लगातार वृद्धि हुई है। यह तथ्य दर्शाता है कि पिछले कुछ दशकों में कुछ ऐसा अधिगम वातावरण बन रहा है जिसमें बच्चे सुलभता से अपने आपको समायोजित कर पा रहे है और बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

विकास की अवस्थाएँ

39. निम्नलिखित में से कौन मानव विकास का सही क्रम है?

(a) शैशवावस्था, किशोरावस्था, बाल्यावस्था, प्रौढ़ावस्था

(b) शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था

(c) बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था, शैशवावस्था

(d) बाल्यावस्था, शैशवावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (b) मानव निम्न अवस्थाओं से होकर विकास करता है

1. शैशवावस्था (जन्म से 5 या 6 वर्ष)
2. बाल्यावस्था (5-6 वर्ष से 12 वर्ष)
3. किशोरावस्था (12-18 वर्ष)
4. प्रौढ़ावस्था (18-40 वर्ष)
5. वृद्धावस्था (40 वर्ष के बाद)

40. जन्मोत्तर (जन्म के बाद की) विकास की दूसरी प्रमुख अवस्था है

(a) गर्भावस्था (b) शैशवावस्था

(c) किशोरावस्था (d) बाल्यावस्था।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (d) जन्मोत्तर (जन्म के बाद की) विकास की दूसरी प्रमुख अवस्था बाल्यावस्था है। जन्म के बाद की अवस्थाओं को निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है–

पहली अवस्था-शैशवावस्था
दूसरी अवस्था-वाल्यावस्था
तीसरी अवस्था- किशोरावस्था

41. शैशवावस्था मानव विकास की प्रमुख अवस्था है

(a) प्रथम (b) द्वितीय

(c) तृतीय (d) चतुर्थ।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (a) मानव विकास की प्रमुख चरणबद्ध अवस्था-

प्रथम अवस्था - शैशवावस्था
द्वितीय अवस्था - बाल्यावस्था
तृतीय अवस्था - किशोरावस्था
चतुर्थ अवस्था - प्रौढ़ावस्था

42. शैशवावस्था होती है-

(a) पाँच वर्ष तक (b) बारह वर्ष तक

(c) 21 वर्ष तक (d) इनमें से कोई भी नहीं

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) बाल विकास की मुख्यतः तीन अवस्थाएँ होती है-

1. शैशवावस्था (0 - 5 या 6) वर्ष
2. बाल्यावस्था (6 - 12) वर्ष
3. किशोरावस्था (12 - 18) वर्ष

43. बाल्यावस्था अवस्था होती है–

(a) पाँच वर्ष तक (b) बारह वर्ष तक

(c) इक्कीस वर्ष तक (d) कोई भी नहीं

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) बाल विकास के संदर्भ में बाल्यावस्था जन्म के बाद की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण अवस्था मानी जाती है। यह अवस्था 6-12 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था को अनोखा काल की संज्ञा दी गई है। सामाजिक विकास की दृष्टि से बाल्यावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था मानी जाती है।

44. शैशवकाल की अवधि है

(a) जन्म से 2 वर्ष तक (b) जन्म से 3 वर्ष तक

(c) 2 से 3 वर्ष तक (d) जन्म से 1 वर्ष तक

DSSSB PRT

C TET -2015 (I-V)

Ans : (a) शैशवावस्था बालक का निर्माण काल होता है। सामान्यतः यह अवस्था जन्म से पाँच वर्ष तक मानी जाती है। पहले 2 वर्ष पूर्व शैशवावस्था और 2 से पाँच वर्ष की आयु उत्तर शैशवावस्था कहलाती है। किन्तु विभिन्न विद्वानों ने विकास की अवस्थाओं को अपने–अपने ढंग से वर्गीकृत किया है। इन्हीं विद्वानों में कोल भी हैं जिन्होंने शैशवावस्था की आयु जन्म से 2 वर्ष तक माना हैं।

45. मध्य–बचपन अवधि है

(a) 2 वर्ष से 6 वर्ष (b) 6 वर्ष से 11 वर्ष

(c) 10 वर्ष के बाद (d) जन्म से 2 वर्ष

DSSSB PRT

C TET-2016 (VI-VIII)

Ans : (b) कोल ने विकास की अवस्थाओं का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से क्रिया है–

1. शैशवावस्था– जन्म से 2 वर्ष तक
2. प्रारम्भिक बाल्यावस्था– 2 से 5 वर्ष तक
3. मध्य बाल्यावस्था–
   (i) बालक– 6–12 वर्ष
   (ii) बालिका– 6–10 वर्ष
4. पूर्व किशोरावस्था या उत्तर बाल्यावस्था–
   (i) बालक– 13 से 14 वर्ष
   (ii) बालिका– 11 से 12 वर्ष
5. प्रारम्भिक किशोरावस्था–
   (i) बालक– 15 से 16 वर्ष
   (ii) बालिका– 17 से 18 वर्ष
6. मध्य किशोरावस्था–
   (i) बालक– 17 से 18 वर्ष
   (ii) बालिका– 15 से 17 वर्ष
7. उत्तर किशोरावस्था
   (i) बालक– 19 से 20 वर्ष
   (ii) बालिका– 18 से 20 वर्ष

46. निम्नलिखित में से कौन–सा आयु समूह परवर्ती बाल्यावस्था श्रेणी के अन्तर्गत आता है?

(a) 11 से 18 वर्ष

(b) 18 से 24 वर्ष

(c) जन्म से 6 वर्ष

(d) 6 से 11 वर्ष

DSSSB PRT

Ans : (d) हरलॉक ने मानव विकास को निम्न अवस्थाओं में वर्गीकृत किया है–

1.	गर्भकालीन अवस्था	– गर्भधारण से जन्म तक
2.	शैशवावस्था	– जन्म से 14 दिनों की अवस्था
3.	बचपनावस्था	– 14 दिनों के बाद से 2 वर्ष तक
4.	पूर्व बाल्यावस्थ	– 3 से 6 वर्ष तक
5.	परवर्ती बाल्यावस्था/ उत्तर बाल्यावस्था	– 6 से 11 वर्ष तक
6.	वयः संधि या पूर्व किशोरावस्था	– 11 से 17 वर्ष तक
7.	किशोरावस्था	– 17 से 21 वर्ष तक
8.	प्रौढ़ावस्था	– 21 से 40 वर्ष तक
9.	मध्यावस्था	– 40 से 60 वर्ष तक
10.	वृद्धावस्था	– 60 वर्ष से जीवन के अंत तक

47. निम्नलिखित में से कौन-सा आयु समूह परवर्ती बाल्यावस्था श्रेणी के अन्तर्गत आता है?

(a) 11 से 18 वर्ष (b) 18 से 24 वर्ष

(c) जन्म से 6 वर्ष (d) 9 से 12 वर्ष

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (d) परवर्ती बाल्यावस्था की आयु 9 से 12 वर्ष तक मानी जाती है। इस आयु में शरीरिक विकास की गति कुछ धीमी हो जाती है परन्तु इस अवधि में शरीरिक विकास दृढ़ता की ओर उन्मुख होता है। यही कारण है कि 9 से 12 वर्ष की अवधि को 'परिपाक काल' भी कहते हैं।

48. बाल्यकाल होता है–

(a) जन्म से लेकर 3 वर्ष की आयु तक

(b) तीसरे वर्ष से लेकर 6 वर्ष की आयु तक

(c) छठे वर्ष से लेकर 12 वर्ष की आयु तक

(d) दूसरे वर्ष से लेकर 10 या 12 वर्ष की आयु तक

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) बाल विकास को सामान्य रूप से चार अवस्थाओं से होकर गुजरना पड़ता है–
शैशवावस्था – जन्म से 5 या 6 वर्ष तक
बाल्यावस्था – 5 या 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
किशोरावस्था – 12 वर्ष से 18 वर्ष तक
प्रौढावस्था – 18 वर्ष से 40 वर्ष तक

49. निम्नलिखित में से किस आयु सीमा को प्रारंभिक बचपन माना जाता है?

(a) 7 से 11 (b) जन्म से 2
(c) 3 से 12 (d) 2 से 6

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : कोल ने बालकों के विकास की अवस्थाओं को निम्नलिखित प्रकार से विभाजित किया है–

1.	शैशवावस्था –	जन्म से 2 वर्ष
2.	प्रारम्भिक बाल्यावस्था/ बचपन अवस्था–	2 - 6 वर्ष
3.	मध्य बाल्यावस्था –	बालक- 6 से 12 वर्ष बालिका- 6 से 10 वर्ष
4.	पूर्व किशोरावास्था – या उत्तर बाल्यावस्था	बालक- 13 से 14 वर्ष बालिका- 11 से 12 वर्ष
5.	प्रारम्भिक किशोरावस्था –	बालक- 15 से 16 वर्ष बालिका- 13 से 14 वर्ष
6.	मध्य किशोरावस्था –	बालक- 17 से 18 वर्ष बालिका- 15 से 17 वर्ष
7.	उत्तर किशोरावस्था –	बालक- 19 वर्ष से 20 वर्ष बालिका- 18 से 20 वर्ष

गर्भावस्था की विशेषताएँ

50. गर्भाधान से बालक के जन्म तक की अवधि को क्या कहा जाता है?

(a) किशोरावस्था (b) बचपन
(c) प्रसव-पूर्व काल (d) वयस्कता

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) गर्भाधान से बालक के जन्म तक की अवधि को प्रसव-पूर्व काल कहा जाता है। सामान्यतः प्रसव-पूर्व काल की अवधि दस चन्द्रमास अथवा नौ कैलेण्डर मास अथवा चालीस सप्ताह अथवा 280 दिन का होता है। परन्तु कभी-कभी इस अवधि में अंतर भी हो जाता है। प्रसव-पूर्व काल को तीन कालखण्डों – डिम्बावस्था (Period of Ovum), पिण्डावस्था (Period of Embryo) तथा भ्रूणावस्था (Period of Fetus) में बाँटा जा सकता है।

51. मानव–विकास का प्रारम्भ होता है–

(a) गर्भावस्था से (b) पूर्व–बाल्यावस्था से
(c) उत्तर–बाल्यावस्था से (d) शैशवावस्था से

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : गर्भाधान के साथ ही विकास की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है तथा यह जन्म के उपरान्त शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था व जीवनपर्यंत निरन्तर किसी न किसी रूप में चलती रहती है। ध्यातव्य है कि वृद्धि और विकास की प्रक्रिया एक निश्चित क्रम में और निरंतर चलती रहती है।

52. विकास शुरू होता है

(a) पूर्व प्रसव अवस्था (b) शैशवावस्था
(c) पूर्व बाल्यावस्था (d) उत्तर बाल्यावस्था

DSSSB ASSISTANT NURSERY TEACHER
C TET-2012 (VI-VIII)

Ans. (a) **:** मानव विकास पूर्व प्रसव अवस्था से आरम्भ होकर जीवनपर्यंत चलता रहता है। दूसरे शब्दों में, विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यंत चलती रहती है।

53. गर्भस्थ शिशु में संवेदनशीलता का विकास प्रारंभ होता है

(a) सिर से (b) पैर से
(c) हाथ से (d) सम्पूर्ण शरीर से।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) गर्भस्थ शिशु में सर्वप्रथम मस्तिष्क का विकास होता है अतः संवेदनशीलता का विकास भी सिर से प्रारम्भ होता है।

54. गर्भ में बालक को विकसित होने में कितने दिन लगते हैं?

(a) 150 (b) 280
(c) 390 (d) 640

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (b) सामान्यतः जन्म–पूर्व काल की अवधि चालीस सप्ताह अथवा 280 दिन का होता है। जन्म पूर्व काल को तीन काल–खण्डों डिम्बावस्था (Period of ovum), पिण्डावस्था (Period of embryo) तथा भ्रूणावस्था (Period of fetus) में बाँटा जा सकता है।

55. निम्नलिखित में से क्या जन्म से पूर्व होने वाले विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं करता है?

(a) कैफीन (b) व्यायाम
(c) शराब (d) विकिरण

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : जन्म से पूर्व होने वाले विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं–
(i) कैफीन, (ii) शराब, (iii) विकिरण (iv) सिगरेट
(v) निकोटीन आदि।
व्यायाम जन्म से पूर्व होने वाले विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

शैशवावस्था की विशेषताएँ

56. किस अवस्था में शारीरिक वृद्धि तीव्र होती है

(a) आरम्भिक बाल्यावस्था (b) शैशव अवस्था

(c) किशोरावस्था (d) शिक्षा काल

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Ans. (b) **:** जन्म से लेकर 5 वर्ष तक की अवस्था शैशव अवस्था कहलाती है। शैशवावस्था में विशेषकर जन्म से लेकर तीन वर्ष की आयु होने के दौरान शारीरिक विकास की गति अत्यन्त तीव्र रहती है।

57. शैशवावस्था की मुख्य विशेषता क्या नहीं है?

(a) सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता

(b) जिज्ञासा की प्रवृत्ति

(c) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति

(d) चिन्तन प्रक्रिया

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans : (d) शैशवावस्था में चिंतन का विकास नहीं हो पाता है क्योंकि इस अवस्था में बालक का व्यवहार उसके मूल संवेगों से निर्देशित होता है। चिंतन का विकास बाल्यावस्था का मुख्य लक्षण होता है। अधिगम प्रक्रिया में तीव्रता, जिज्ञासा की प्रवृत्ति तथा अनुकरण (दोहराने) की प्रकृति शैशवावस्था की प्रमुख विशेषता होती है।

58. शैशवावस्था में बच्चों के क्रिया-कलाप.....होते हैं।

(a) मूलप्रवृत्यात्मक (b) संरक्षित

(c) संज्ञानात्मक (d) संवेगात्मक

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013
UP TET-2016 (I-V)

Ans : (a) सामान्यतः 0-6 वर्ष तक की अवस्था बालक की शैशवावस्था कहलाती है। इस अवस्था में शिशु अपने मूल प्रकृति के अनुसार ही व्यवहार करता है जैसे गुस्सा आने पर रो कर अपनी अभिव्यक्ति देता है तथा खुश होने पर उसकी अभिव्यक्ति हंसी द्वारा होती है। अतः शैशवावस्था में बच्चों के क्रिया-कलाप मूल प्रवृत्यात्मक होते हैं।

59. स्व-केन्द्रित अवस्था होती है बालक के

(a) जन्म से 2 वर्ष तक

(b) 3 से 6 वर्ष तक

(c) 7 वर्ष से किशोरावस्था तक

(d) किशोरावस्था में

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) जन्म से 6 वर्ष तक की अवस्था को शैशवावस्था कहा जाता है। शैशवावस्था का अन्तिम चरण 3-6 वर्ष जिसे बाल्यावस्था के पूर्व की अवस्था भी कहते हैं। इस अवस्था में बालक स्वयं की खुशी की चिंता करते है। इसलिए इस अवस्था को स्वकेन्द्रित अवस्था भी कहा जाता है।

60. शिशु..... की उम्र तक अजनबियों से झिझकना या शर्माना विकसित करते हैं।

(a) तीन महीने (b) एक वर्ष

(c) नौ महीने (d) छह महीने

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : शिशु छह महीने की उम्र तक अजनबियों से झिझकना या शर्माना विकसित कर लेता है। तत्पश्चात् शैशवावस्था के अंतिम वर्षों में शिशु में सामाजिक भावना का विकास होने लगता है तथा वह अपने संगी–साथियों के साथ खेलना प्रारंभ कर देती है।

61. प्रारंभिक अवस्था में शिशु अत्याधिक_____ होते हैं।

(a) बहिर्मुखी (b) निस्वार्थ

(c) स्वकेन्द्रित (d) परोपकारी

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) प्रारम्भिक अवस्था में शिशु अत्यधिक स्वकेन्द्रित होते हैं। शैशवावस्था में शिशु के अंदर स्व–प्रेम की भावना जिसे नर्सीसिज्म (Narcissism) कहते हैं, अत्यन्त प्रबल होती है। यह सभी का अत्यधिक स्नेह पाना चाहता है। माता–पिता या अन्य परिजनों के द्वारा अपने से अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों से स्नेह किये जाने पर शिशु उसे ईर्ष्या करने लगता है। वह प्रत्येक वस्तु पर केवल अपना अधिकार चाहता है। वह अपने खिलौने, खाद्य पदार्थ व अन्य वस्तुएँ अन्य बालकों को नहीं देना चाहता है तथा सबकुछ अपने पास ही रखना चाहता है।

बाल्यावस्था की विशेषताएँ

62. निम्नलिखित में से कौन सी 'मध्य बाल्यावस्था' की विशेषता है ?

(a) अमूर्त रूप से सोचने तथा वैज्ञानिक तर्क का प्रयोग करने की योग्यता विकसित होती है।

(b) बच्चे तार्किक एवं मूर्त रूप से सोचना प्रारंभ कर देते हैं।

(c) अधिगम मुख्य रूप से संवेदी एवं चालक गतिविधियों द्वारा घटित होता है।

(d) शारीरिक वृद्धि एवं विकास बहुत तेज गति से होता है।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (b) मध्य बाल्यावस्था में बच्चे तार्किक एवं मूर्त रूप से सोचना प्रारम्भ कर देते हैं। **कोल** के अनुसार मध्य बाल्यावस्था 6-12 वर्ष की आयु होती है। **पियाजे** ने इस अवस्था को मूर्त संक्रियात्मक अवस्था कहा है जिसमें बालक तार्किक और मूर्त रूप से चिंतन करने लगता है। इसी अवस्था में विलोमीयता और संरक्षण जैसे गुणात्मक मानसिक योग्यताओं का विकास होता है।

63. बाल्यावस्था की अवधारणा से क्या अभिप्राय है ?

(a) समकालीन सामाजिक-संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह एक सामाजिक संरचना है।

(b) यह है कि बच्चे दुष्ट रूप में पैदा होते हैं और उन्हें सभ्य बनाना होता है।

(c) यह कि बच्चे शून्य से शुरुआत करते हैं और उनके गुण पूरी तरह से परिवेश के द्वारा निर्धारित किए जाते हैं।

(d) यह विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भो में सार्वभौम रूप से समान है।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (a) समकालीन सामाजिक-संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बाल्यावस्था एक सामाजिक संरचना की अवस्था है। बाल्यावस्था में समाजीकरण की गति तीव्र हो जाती है। बालक समाज के प्रत्यक्ष संपर्क में आता है, जिसके फलस्वरूप उसका सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। बाल्यावस्था में समूह सदस्यता, सामाजिक गुण, बहिर्मुखी प्रवृत्ति, सामाजिक स्वीकृति की चाह, मित्र चयन आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है।

64. मानव विकास की वह अवस्था जिसे 'सुनहरी अवस्था' कहा जाता है, वह है-

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था

(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था

Haryana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) कोल एवं ब्रुश ने मानव विकास की अवस्था- बाल्यावस्था को सुनहरी अवस्था तथा संवेगात्मक विकास का अनोखा काल कहा है।

65. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास उत्तर बाल्यावस्था के लिए उपयुक्त नहीं है?

(a) साधारण खेलों के लिए शारीरिक दक्षता अधिगम आवश्यकता है

(b) एक पुरुष या स्त्री की सामाजिक भूमिका प्राप्त करना

(c) व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्राप्त करना

(d) हम उम्रों के साथ रहने के लिए सीखना

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Rajasthan TET 2011 (I-V)

Ans. (b) **:** हरलॉक के अनुसार उत्तर बाल्यावस्था की आयु 6–11 वर्ष तक तथा कोल के अनुसार उत्तर बाल्यावस्था की आयु बालकों के लिए 13 से 14 वर्ष तक तथा बालिकाओं के लिए 11–12 वर्ष तक होती है। यह अवस्था सामाजिक भूमिका निर्वाह की दृष्टि से अपरिपक्व होती है। इसलिए एक पुरुष या स्त्री की सामाजिक भूमिका प्राप्त करना इस अवस्था की विशेषता नहीं होती है।

66. 6-11 वर्ष आयु वर्ग के बालकों की विशिष्टताएँ निम्नलिखित है

(a) बालक स्वाभाविक एवं सक्रिय अधिगमकर्ता होते हैं

(b) सीखने के लिए शिक्षकों पर निर्भर होते है

(c) बालक, शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं

(d) बालक सीखने में रुचि नहीं रखते हैं

Haryana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) 6-11 वर्ष की आयु वर्ग के बालकों की सीखने में रुचि नहीं होती है इस लिए इस आयु वर्ग के बालको को सिखाने के लिए ऐसी विधि का प्रयोग करते है जिनमे उनकी रुचि हो। जैसे- खेल विधि।

67. 6 या 7 वर्ष का बालक दूसरों के विचारों को स्वीकार करने के योग्य नहीं होता

(a) क्योंकि वह बहुत छोटा होता है

(b) क्योंकि वह अहम् केन्द्रित होता है

(c) क्योंकि वह बुद्धिमान नहीं होता है

(d) क्योंकि वह कल्पनाशील होता है

Haryana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) 6 या 7 वर्ष का बालक दूसरो के विचारों को स्वीकार करने के योग्य नहीं होता क्योंकि वह अहम् केन्द्रित होता है। शैशवावस्था के लक्षण अभी भी उसमें विद्यमान रहते हैं वह कोई प्रश्न पूछने पर उदासीनतापूर्वक 'हाँ' और 'नहीं' में उत्तर देता है।

68. दल या गैंग का सदस्य होने से समाजीकरण उत्तर बाल्यावस्था में बेहतर होता है। निम्न में से कौन-सा कथन इस विचार के विपरीत हैं?

(a) वयस्कों पर निर्भर न होकर सीखता है

(b) जिम्मेदारियों को निभाना सीखता है

(c) अपने समूह के प्रति वफादार होना सीखता है

(d) छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करते हुये, अपने गैंग के सदस्यों से लड़ाई मोल लेता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) दल बनाना उत्तर बाल्यावस्था की मुख्य विशेषता होती है। इस अवस्था के बालक अपने आयु वर्ग के बालकों के साथ समूह बना लेते हैं और अपने समूह के साथ खेलते हैं। इससे मित्रता की भावना का विकास होता है और अपने आवश्यकता के लिए अपने अभिभावक पर धीरे-धीरे निर्भरता को कम करते हैं। अतः प्रश्नानुसार कथन का विपरीत विचार है कि वह अपने समूह या गैंग के लोगों के साथ छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा मोल लेता है। अतः वचन गलत है।

69. वयः सन्धि काल में निम्न में से कौन बाह्य अभिव्यक्ति नहीं है?

(a) प्रभुता/सत्ता के विपरीत विरोध

(b) अशान्ति

(c) आत्मनिर्भरता के प्रति आग्रही

(d) सक्रिय खेलों के स्थान पर बैठे रह कर खेलना अधिक पसंद।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) वयः संधि एक संक्रमण काल होता है जो बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था के मिश्रित गुणों से बनता है। इस अवस्था में बालक अस्थिर, अशांत तथा विद्रोही स्वभाव का होता है।

70. निम्न में से कौन-सा कथन मिडिल स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के विकास से सहमति नहीं रखता?

(a) सामाजिक व्यवहार उत्तरोत्तर समवयस्क समूह के आदर्शों से प्रभावित होता है

(b) इस अवस्था में अधिकांश बालक तीव्र गति से वृद्धि प्राप्त नहीं करते हैं

(c) बौद्धिक एवं सामाजिक व्यवहार पर स्व-प्रभाविता का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है

(d) अधिकांश विद्यार्थी विशेष रूप से स्वकेन्द्रित हो जाते हैं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) मिडिल स्कूल स्तर पर बालक सामान्यतः बाल्यावस्था और किशोरावस्था के मध्य वयःसंधि काल में होता है जिसमें शारीरिक विकास धीमा होता है किन्तु उसके अन्य व्यवहार पर किशोरावस्था के लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ने लगते हैं।

1. सामाजिक व्यवहार अन्य समूहों के व्यवहार से प्रभावित होते है
2. बौद्धिक व सामाजिक व्यवहार पर स्वप्रभाविता

71. 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है

(a) पूर्व बाल्यावस्था को (b) उत्तर बाल्यावस्था को

(c) शैशवावस्था को (d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) पूर्व बाल्यावस्था की आयु 3-6 वर्ष मानी जाती है। इस आयु वर्ग को 'खिलौनो की आयु' कहा जाता है क्योंकि इस अवस्था में बालक अपने खिलौनों के साथ ही अपना मन बहलाता है।

स्टैनले हाल के अनुसार- ''बच्चों के खेल उन कार्यो की पुनरावृत्ति है जो सृष्टि के प्रारम्भ से उनके पूर्वज करते आ रहे है।''

72. निम्न में से कौन-सी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है?

(a) दल/समूह में रहने की अवस्था

(b) अनुकरण करने की अवस्था

(c) प्रश्न करने की अवस्था

(d) खेलने की अवस्था।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) पूर्व बाल्यावस्था की आयु 3-6 वर्ष मानी जाती है। इस अवस्था की विशेषताएँ निम्न है-

1. अनुकरण करने की प्रवृत्ति
2. खेलने की प्रवृत्ति (खिलौने की आयु कहा जाता है)
3. शारीरिक विकास में तीव्रता
4. स्वप्रेम की भावना जिसे नार्सोसिज्म कहते हैं। अत्यन्त प्रबल होता है।
5. संवेगों का प्रदर्शन
6. मूल प्रवृत्तियों पर आधारित काम करना आदि।

दल एवं समूह में रहने की अवस्था पूर्व बाल्यावस्था नहीं बल्कि बाल्यावस्था को कहते है।

73. शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास किस अवस्था में होता है?

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था

(c) किशोरावस्था (d) वृद्धावस्था

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) संवेगात्मक विकास की दृष्टि से बाल्यावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं अनोखा काल माना जाता है। बालक में मूल संवेगात्मक लक्षण (शर्म, गर्व, उत्साह आदि) का विकास इसी काल में होता है।

74. बाल्यावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता क्या है?

(a) पर निर्भरता

(b) सामूहिकता की भावना

(c) धार्मिकता

(d) अनुकरणात्मक प्रवृत्ति का अभाव

UP TET Paper-I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) बाल्यावस्था की प्रमुख मनौवैज्ञानिक विशेषता-

1. सामूहिक भावना की प्रबलता
2. आत्मनिर्भरता की भावना
3. मानसिक योग्यताओं में वृद्धि
4. शारीरिक विकास में स्थिरता
5. रचनात्मक कार्यो में आनन्द
6. बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास
7. रुचियों में परिवर्तन

75. एक प्रसामान्य 12 वर्ष की आयु के बच्चे में सबसे अधिक होना सम्भव है

(a) कुल प्रेरेक समन्वय में कठिनाई

(b) वयस्कों को खुश करने के बारे में दुश्चिन्ता की अनुभूति

(c) अब और यहाँ में उसकी रुचियों को सीमित करना

(d) समकक्षी के अनुमोदन के लिए बेचैनी

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) समकक्षी के अनुमोदन के लिए बेचैनी पूर्व किशोरावस्था (9-12 वर्ष) का प्रमुख लक्षण होता है। इस अवस्था का बालक अपने समूह को ज्यादा महत्व देना प्रारम्भ कर देते हैं वे उनका अनुमोदन प्राप्त करना चाहते है।

किशोरावस्था की विशेषताएँ

76. पद 'संवेगात्मक क्रान्ति' किस अवस्था से अधिक जुड़ा हुआ है?

(a) शैशवावस्था से (b) बाल्यावस्था से

(c) किशोरावस्था से (d) प्रौढ़ावस्था से

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) संवेगात्मक क्रान्ति का अर्थ है-संवेगो में पूर्ण परिवर्तन तथा नये संवेगों का प्रतिस्थापन। इस प्रकार का परिवर्तन मानव विकास की किशोरावस्था की मुख्य विशेषता होती है। जिस कारण किशोरावस्था में व्यक्ति अस्थिर एवं तनाव महसूस करता है। स्टैनलेहॉल के अनुसार-किशोरावस्था संघर्ष, तनाव, तूफान एवं विरोध की अवस्था है।

77. वह अवधि जो वयस्कता के संक्रमण की पहल करती है, उसे क्या कहते हैं–

(a) मध्य बाल्यावस्था (b) पूर्व-क्रियात्मक अवधि
(c) बाल्यावस्था की समाप्ति (d) किशोरावस्था

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) वह अवधि जो वयस्कता के संक्रमण की पहल करती है उसे किशोरावस्था कहते हैं। इस अवस्था में होने वाले शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा प्रौढ़ावस्था (वयस्कता) के बीच का संक्रमण काल होने के कारण इसे जीवन का सर्वाधिक कठिन काल माना जाता है। इस अवधि में बालक दोनों ही अवस्थाओं में रहता है। न तो उसे बालक ही समझा जाता है और न ही प्रौढ़ के रूप में स्वीकृति मिलती है। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है तथा जिसकी समाप्ति पर वह पूर्ण परिपक्व व्यक्ति (वयस्क व्यक्ति) बन जाता है।

78. सहपाठियों का दबाव जब सबसे अधिक प्रभाव डालता है, वह है–

(a) प्रारंभिक बाल्यावस्था (b) मध्य बाल्यावस्था
(c) प्रारंभिक किशोरावस्था (d) उत्तर किशोरावस्था

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) किशोरावस्था के अन्तिम चरण जिसे उत्तर किशोरावस्था कहते है किशोर अपने सहपाठियों के व्यवहार से ज्यादा प्रभावित होता है।

79. निम्नलिखित में से किशोरावस्था के संदर्भ में कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) कई नवीन आंतरिक तथा बाह्य परिवर्तन दिखाई देते हैं।
(b) यह आयु अत्यधिक संवेगात्मक होती है।
(c) बुद्धि अपनी चरम सीमा तक पहुँचने का प्रयास करती है।
(d) आत्म-चेतना कम हो जाती है।

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) किशोरावस्था में कई नवीन आंतरिक तथा बाह्य परिवर्तन दिखाई देते हैं, यह आयु अत्यधिक संवेगात्मक होती हैं, वृद्धि अपनी चरम सीमा तक पहुँचने का प्रयास करती है। कल्पना और आत्मचेतना बढ़ जाती है। अतः विकल्प (d) सही नहीं है।

80. सोलह वर्षीय नीरज अपने-आप में पृथक स्वनियंत्रित व्यक्ति की भावना को विकसित करने का प्रयास कर रहा है। वह विकसित कर रहा है–

(a) नियमों के प्रति घृणा (b) स्वायत्तता
(c) किशोरावस्थत्मक अक्खड़पन (d) परिपक्वता

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) 16 वर्षीय नीरज द्वारा पृथक स्वनियंत्रित व्यक्ति की भावना विकसित करने का तात्पर्य है कि नीरज स्वयं में स्वायत्तता की भावना का विकास कर रहा है।

81. स्टेनले हाल के अनुसार अधिक तनाव और तूफान की अवस्था है–

(a) प्रौढ़ावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) शैशवकाल

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (c) स्टेनले हाल के अनुसार-''किशोरावस्था बड़े तनाव तूफान एवं संघर्ष का काल होता है''

82. निम्नलिखित में से किसका विकास किशोरावस्था में नहीं होता?

(a) अहम् केन्द्रिकता (b) अभिरुचियाँ
(c) तर्क शक्ति (d) प्रेक्षण की योग्यता

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (a) किशोरावस्था में अहम केन्द्रिता नहीं होती है यह गुण शैशवावस्था का है। किशोरावस्था में तर्क क्षमता का विकास अभिरुचियो में परिवर्तन, प्रेक्षण की योग्यता आदि का विकास होता है।

83. बाल विकास के किस चरण में विपरीत लिंग की ओर अधिकतम आकर्षण दिखता है?

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) वयस्क अवस्था

(DSSSB ASSISTANT TEACHER EDUCATION DEP.)

Ans. (c) **:** किशोरावस्था में बालक हो या बालिका दोनों में विपरीत लिंगों के प्रति अधिक आकर्षण होता है। किशोर–किशोरियों की मित्रता, उनके परस्पर मिलने-जुलने, बातचीत करने, घूमने–फिरने जैसे क्रियाकलापों से स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

84. निम्नलिखित में से कौन-सी अवधि किसी की विकासशील अवस्था में सामान्यतः संघर्ष की अवधि कहलाती है?

(a) शैशव अवस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोर अवस्था (d) व्यस्क अवस्था

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Ans. (c) **:** किशोरावस्था (Adolescence) यह अवस्था जीवन की सबसे जटिल अवस्था होती है। 'स्टैनले हाल' के अनुसार ''किशोरावस्था बहुत दबाव, तनाव, तूफान तथा संघर्ष की अवस्था होती है।''

85. विकास की कौन-सी अवस्था 'तनाव एवं तूफान की अवस्था' कही जाती है?

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था

Haryana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) किशोरावस्था बालक में एक नये बदलाव का संकेत है जिसमें बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक गुणों में तेजी से परिर्वतन होता है और वह इन नये परिवतनों को समायोजित करने में कठिनाई महसूस करता है और तनाव का सामना करता है इसीलिए स्टैनलेहाल ने कहा है- ''किशोरावस्था बड़े तनाव एवं तूफान का काल है।''

86. वीर पूजा की भावना जाग्रत होती है-

(a) किशोरावस्था में (b) बाल्यावस्था में
(c) प्रौढ़ावस्था में (d) इनमें से कोई नहीं।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) वीर पूजा का तात्पर्य है किसी प्रसिद्ध व्यक्तित्व को अपना आदर्श मानते हुए उनके जैसे अपने व्यवहार को समायोजित करना। इस प्रकार के गुण किशोरावस्था में पाए जाते है।

87. शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता प्राप्त व्यक्तियों को कहा जाता है

(a) किशोर (b) प्रौढ़
(c) वृद्ध (d) बालक।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता का तात्पर्य शरीर एवं सोचने समझने की क्षमता का पूर्ण विकास। यह लक्षण किशोरावस्था की है क्योंकि किशोरावस्था में व्यक्ति का शरीर एवं मानसिक क्षमता का पूर्ण विकास हो जाता है।

88. एक 13 वर्षीय बालक बात-बात में अपने बड़ों से झगड़ा करने लगता है और हमेशा स्वयं को सही साबित करने की कोशिश करता है। वह विकास की किस अवस्था में है?

(a) प्रारम्भिक बाल्यावस्था (b) किशोरावस्था
(c) युवावस्था (d) बाल्यावस्था

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
Jharkhand TET (I-V)

Ans: (b) किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिनकाल माना जाता है। इस अवस्था में बालक में मानसिक एवं व्यवहारिक परिवर्तन तेजी से होते हैं तथा समायोजन न हो पाने पर बालक में विद्रोह की भावना का विकास होता है और वह विरोधी व्यवहार प्रकट करता है।

89. तनाव और क्रोध की अवस्था है–

(a) शैशवावस्था (b) किशोरावस्था
(c) बाल्यावस्था (d) वृद्धावस्था

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) किशोरावस्था मानव जीवन की वह अवस्था है जिसमे मानव परिपक्व होने के लिए प्रयास करता है परिणाम स्वरूप अनेक समस्याओं का सामना करता है। इसी संदर्भ में **स्टैनले हॉल** का कथन है कि ''किशोरावस्था बड़े ही तनाव, तूफान एवं संघर्ष का काल है।''

90. मानवों/मनुष्यों में विकास की सबसे तीव्र गति होती है?

(a) बाल अवस्था में (b) किशोरावस्था में
(c) शैशव काल मे (d) यौवन अवस्था में

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) मानव/मनुष्य के विकास की सबसे तीव्र गति किशोरवस्था में होती है। इसलिए तीव्र विकास के कारण बालक सामंजस्य स्थापित न कर पाने से तनाव में रहता है।

91. निम्नलिखित में से किस अवस्था में बच्चे अपने समवयस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं?

(a) किशोरावस्था (b) प्रौढ़ावस्था
(c) पूर्व बाल्यावस्था (d) बाल्यावस्था

DSSSB PRT
C TET 2011 (I-V)
UP TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) बाल्यावस्था में बच्चे अपने समवयस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं वे अपने समूह को घर और विद्यालय से भी अधिक महत्त्व देने लगते हैं।

92. मनोविज्ञान के अनुसार बाल-विकास की कौन–सी अवस्था सबसे जटिल व कठिन है?

(a) शैशवास्था (b) किशोरावस्था
(c) बाल्यावस्था (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (b) स्टेनले हॉल के अनुसार– '' किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।'' जबकि ई.ए. किर्कपैट्रिक का कथन है– ''इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।''

93. किशोर ..... का अनुभव कर सकते हैं

(a) बचपन में किए गए अपराधों के प्रति डर के भाव
(b) आत्मसिद्धि के भाव
(c) जीवन के बारे में परितृप्ति
(d) दुश्चिंता और स्वयं से सरोकार

DSSSB PRT
C TET-2012 (I-V)

Ans : (d) ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन के अनुसार– ''किशोर महत्त्वपूर्ण बनना, अपने समूह में स्थिति प्राप्त करना और श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाना चाहता है।'' इसके अलावा व्यवसाय चुनने की समस्या आदि के कारण वह अधिक चिंतित रहने लगता है जो धीरे–धीरे दुश्चिंता का रूप से लेती है।

94. 14 वर्षीय देविका अपने–आप से पृथक् स्वनियंत्रित व्यक्ति की भावना को विकसित करने का प्रयास कर रही है। वह विकसित कर रही है

(a) नियमों के प्रति घृणा
(b) स्वायत्तता

(c) किशोरावस्थात्मक अक्खड़पन
(d) परिपक्वता

DSSSB PRT
C TET-2014 (I-V)

Ans : (b) 14 वर्षीय देविका किशोरावस्था में है, इस अवस्था के बालक और बालिकाओं में शारीरिक और मानसिक स्वतंत्रता की प्रबल भावना होती है। कोलेसनिक का कथन है ''किशोर, प्रौढ़ो को अपने मार्ग में बाधा समझता है, जो उसे अपनी स्वतंत्रता का लक्ष्य प्राप्त करने से रोकता है।''

95. किशोरावस्था में बच्चे किस प्रकार की समस्या का सामना करते हैं?
(a) शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन से समायोजन करना
(b) अपने साथियों से समायोजन करना
(c) अपने माता–पिता से समायोजन करना
(d) पढ़ाई संबंधी समायोजन करना

DSSSB PRT
UKTET-2013 (VI-VIII)

Ans : (a) **स्टेनले हॉल के अनुसार–** ''किशोर में जो शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं, वे अकस्मात् होते हैं।'' इससे उन्हे शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन के कारण अपने वातावरण के साथ समायोजन करने में कठिनाई होती है। फलस्वरूप उनमें क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन, उदासीनता आदि दुर्गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

96. 'विद्रोह की भावना' की प्रवृत्ति निम्न में से किस अवस्था से सम्बन्धित है?
(a) बाल्यावस्था (b) शैशवावस्था
(c) पूर्व किशोरावस्था (d) मध्य किशोरावस्था

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) पूर्व किशोरावस्था के किशोर में शारीरिक और मानसिक स्वतंत्रता की प्रबल भावना होती है। अतः यदि उस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगाया जाता है तो उसमें विद्रोह की ज्वाला फूट पड़ती है। कोलेसनिक का कथन है- ''किशोर, प्रौढ़ो को अपने मार्ग में बाधा समझता है, जो उसे अपनी स्वतंत्रता का लक्ष्य प्राप्त करने से रोकते हैं।''

97. हॉल का सिद्धांत निम्न में किसकी व्याख्या करता है–
(a) बुद्धि की प्रकृति
(b) अधिगम में अभिप्रेरण की भूमिका
(c) मूल्यों का विकास
(d) किशोरावस्था का विकास

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (d) स्टेनले हॉल ने 1904 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'एडोलेसेन्स' (Adolescence) में किशोरावस्था के विकास को 'आकस्मिक विकास के सिद्धांत' के अंतर्गत व्याख्यायित किया है। इनके अनुसार ''किशोर में जो शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं, वे अकस्मात् होते हैं।''

98. विकास की किस अवस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास होता है?
(a) बाल्यावस्था (b) शैशवावस्था
(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) किशोरावस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास हो जाता है। इस अवस्था में बालकों की कल्पनाशक्ति, जिज्ञासा, बौद्धिक क्षमता काफी बढ़ जाती है।

99. किशोरावस्था में संवेगों की तीव्रता किस प्रकार प्रकट होती है?
(a) प्रतिकूल पारिवारिक सम्बन्ध
(b) व्यवसाय की समस्या
(c) नई परिस्थिति के साथ समायोजन
(d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (d) किशोरावस्था में अनेक नये प्रकार की परिस्थितियो के साथ समायोजन की समस्या के परिणाम स्वरूप सांवेगिक भावना का विकास तीव्र होता है। ये परिस्थितियाँ निम्न होती है। जैसे-
- प्रतिकूल पारिवारिक सम्बन्ध
- व्यवसाय की समस्या
- नयी परिस्थितियों के साथ समायोजन
- सामाजिक परम्पराए आदि

100. माँ-बाप के साये से बाहर निकल अपने साथी बालकों की संगत को पसन्द करना सम्बन्धित है
(a) किशोरावस्था से (b) पूर्व किशोरावस्था से
(c) उत्तर बाल्यावस्था से (d) शैशवावस्था से

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) सामान्यतः 9-12 वर्ष की अवस्था को उत्तर बाल्यावस्था या पूर्व किशोरावस्था कहते है। इस आयुवर्ग के बालक अपने साथियों की संगत तथा उनके साथ रहना अधिक पसंद करते हैं, अपेक्षा अपने माता-पिता के।

101. मानसिक परिपक्वता की ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रयत्नरत रहना सम्बन्धित है
(a) किशोरावस्था से (b) प्रौढ़ावस्था से
(c) पूर्व बाल्यावस्था से (d) उत्तर बाल्यावस्था से

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक को नयी समस्याओं एवं संवेगों का सामना करना पड़ता है। इस अवस्था में बालक समस्याओं को हल करने के लिए परिपक्वता की ओर उन्मुख होता है तथा मानसिक परिपक्वता के शिखर पर पहुंचने का प्रयत्न करता है जहाँ उसे संतुष्टि का अनुभव हो सके।

102. पूर्वाग्रही किशोर/किशोरी अपनी.....के प्रति कठोर होंगे।
(a) समस्या (b) जीवनशैली
(c) सम्प्रत्यय (d) वास्तविकता

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) पूर्वाग्रह का तात्पर्य 'किसी कार्य, व्यवस्था, ज्ञान या व्यक्ति आदि के विषय में पहले से ही बनी हुई कोई विशेष धारणा तथा उसका पालन करना' होता है। इस प्रकार पूर्वाग्रही किशोर/किशोरी अपने समस्याओं के प्रति कठोर होते है।

103. विकास के किस काल को 'अत्यधिक दबाव और तनाव का काल' कहा गया है?

(a) किशोरावस्था (b) प्रौढ़ावस्था
(c) मध्यावस्था (d) वृद्धावस्था

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (a) स्टैनलेहाल के अनुसार- ''किशोरावस्था संघर्ष, तनाव, तुफान एवं विरोध की अवस्था होती है।''

104. समान-लिंग मित्रता____ के दौरान प्रबलित होती है।

(a) प्रारंभिक किशोरावस्था (b) प्रारंभिक बचपन
(c) मध्य किशोरावस्था (d) मध्य बचपन

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : समान–लिंग मित्रता प्रारंभिक किशोरावस्था के दौरान प्रबलित होती है। इस अवस्था के पूर्व काल में बालकों और बालिकाओं में समान लिंगों के प्रति आकर्षण होता है। इस अवस्था के उत्तर काल में यह आकर्षण विषम लिंगों के प्रति प्रबल रूप धारण कर लेता है।

105. एक व्यक्ति ..... के दौरान पौरूष या स्त्रैण सामाजिक भूमिका प्राप्त करता है।

(a) बचपन (चाइल्डहुड)
(b) किशोरावस्था
(c) पश्च बचपन (लेट चाइल्डहुड)
(d) शैशव

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : एक व्यक्ति किशोरावस्था के दौरान पौरुष या स्त्रैण सामाजिक भूमिका प्राप्त करता है। दूसरे शब्दों में, किशोरावस्था के दौरान बालकों में सामाजिक भूमिका प्राप्त करने की इच्छा होती है और उसमें पौरुषत्व गुण का विकास हो जाता है। इसी प्रकार किशोर बालिकाओं में स्त्रैण गुणों का विकास हो जाता है जो उनके व्यवहार में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

106. उचित यौन शिक्षा. ..... अवस्था पर प्रदान की जानी चाहिए।

(a) बाल्यकाल (b) किशोरावस्था
(c) वयस्क (d) प्रारंभिक बाल्यकाल

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : उचित यौन शिक्षा किशोरावस्था में प्रदान की जानी चाहिए, क्योंकि इस अवस्था में बच्चों की कामेन्द्रियाँ परिपक्व तथा क्रियाशील हो जाती हैं। अब उनमें शैशवावस्था का दबा हुआ यौन आवेग, जो बाल्यावस्था में सुप्त रहता है, पुनः जागृत हो जाता है। किशोर किशोरियों में तथा किशोरियाँ–किशोरों में विशेष रुचि लेने लगते हैं। ऐसी स्थिति में उनके लिए यौन शिक्षा लाभदायक हो सकता है। इस अवस्था के दौरान उन्हें मर्यादित यौन शिक्षा प्रदान करना अति आवश्यक है जिससे उनकी काम प्रवृत्ति को उचित दिशा में प्रवृत्त किया जा सके एवं कालान्तर के वैवाहिक जीवन को मधुरता के साथ व्यतीत करने के लिए उन्हें तैयार किया जा सके।

शारीरिक विकास

107. केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में होते हैं

(a) सभी अंग (b) मस्तिष्क
(c) मेरुदण्ड (d) मस्तिष्क तथा मेरुदण्ड

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (d) मस्तिष्क तथा मेरूदण्ड। केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र में मस्तिष्क तथा मेरूदण्ड आते हैं।

108. मनुष्य की वह ग्रन्थि जो पिट्युटरी ग्रन्थि को नियन्त्रित करती है तथा शरीर के सामान्य व सादृश वृद्धि को भी नियन्त्रित करती है :

(a) यौन ग्रन्थि (b) थायरॉइड ग्रन्थि
(c) मूत्र ग्रन्थि (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) मनुष्य की वह ग्रन्थि जो पिट्युटरी ग्रंथि को नियंत्रित करती है तथा शरीर के सामान्य व सादृश वृद्धि को भी नियन्त्रित करती है, हाइपोथैलेमस कहलाती है जो मनुष्य के मस्तिष्क में पायी जाती है। यह हार्मोन जारी करता है तथा शरीर के तापमान को विनियमित करने में मदद करता है।

109. निम्नलिखित अवधि में से किसमें शारीरिक वृद्धि एवं विकास तीव्र गति से घटित होता है?

(a) मध्य बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था
(b) किशोरावस्था एवं वयस्कता
(c) शैशवावस्था एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था
(d) प्रारंभिक बाल्यावस्था एवं मध्य बाल्यावस्था

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (c) शैशवावस्था एवं प्रारम्भिक बाल्यावस्था में शारीरिक वृद्धि एवं विकास तीव्र गति से घटित होता है। शैशवावस्था में विशेषकर जन्म से लेकर तीन वर्ष की आयु होने के दौरान शारीरिक विकास की गति अत्यन्त तीव्र रहती है। इसी प्रकार बाल्यवस्था के प्रथम तीन वर्षो के दौरान अर्थात् 6–9 वर्ष की आयु तक शारीरिक विकास अधिक तीव्र गति से होता है। बाद के तीन वर्षों में शारीरिक विकास की गति कुछ धीमी हो जाती है।

110. सामान्यतया लड़के और लड़कियों में शारीरिक विकास की निम्नलिखित विशेषता प्रेक्षित की जाती है–

(a) समान आयु में दोनों में समान विकास होता है।
(b) लड़के शारीरिक विकास में दो वर्ष आगे होते है।
(c) लड़कियाँ शारीरिक विकास में दो-तीन वर्ष आगे होती है।
(d) लड़कियाँ लड़कों से पाँच वर्ष पीछे होती हैं।

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (c) लड़कियों का शारीरिक विकास लड़को की अपेक्षा तीव्र गति से होता है सामान्यतः लड़कियाँ शारीरिक विकास में लड़को की अपेछा 2-3 वर्ष आगे रहती हैं।

111. वेटलिफ्टर (पहलवानों) को आमतौर पर मांसपेशियों और शरीर को पुष्ट बनाना होता है उन्हें किस प्रकार का आहार लेना चाहिए

(a) प्रोटीन (b) कार्बोहाइड्रेट्स
(c) वसा (d) विटामिन

DSSSB ASSISTANT NURSERY TEACHER

Ans. (a) **:** वेटलिफ्टर (पहलवानों) को आमतौर पर मांसपेशियों और शरीर को पुष्ट बनाने के लिए प्रोटीनयुक्त आहार लेना चाहिए क्योंकि प्रोटीन का मुख्य कार्य शरीर की मरम्मत करना और निर्माण करना होता है।

112.यौन परिपक्वता में महत्वपूर्ण हाथ है

(a) पीयूष ग्रंथि का (b) उप-वृक्क ग्रंथि का
(c) गल ग्रंथि का (d) उप-गल ग्रंथि का।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) पीयूष ग्रंथि को मास्टर ग्रंथि कहा जाता है इसी से सम्पूर्ण मानव व्यवहार एवं शरीर की अन्तःक्रियाओं का नियंत्रण होता है। यौन परिक्वता में भी पीयूष ग्रंथि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

113.मास्टर ग्रंथि के नाम से जाना जाता है

(a) गल ग्रंथि को (b) उपगल ग्रंथि को
(c) उपवृक्क ग्रंथि को (d) पीयूष ग्रंथि को।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) पीयूष ग्रन्थि को मास्टर ग्रंथि के नाम से जाना जाता है यह एक अंतःस्रावी ग्रन्थि है। इसका आकार लगभग एक मटर के दाने जितना होता है। यह मस्तिष्क के तल पर हाइपोथैलमस के निचले हिस्से से निकला हुआ (उभार) है। यह एक छोटे अस्थिमय गुहा में दृढ़तानिका रज्जु से ढंका हुआ होता है। जिसमें पीयूष ग्रंथि रहता है। इसी ग्रंथि से व्यक्ति की सम्पूर्ण शारीरिक एवं व्यवहारिक क्रिया नियंत्रित रहती है।

114. नवजात शिशु का भार होता है

(a) 6 पाउण्ड (b) 7 पाउण्ड
(c) 8 पाउण्ड (d) 9 पाउण्ड

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011
DSSSB PRT

Ans: (b) नवजात शिशु का भार लगभग 7.5 पाउण्ड (3.17 किलो.) होता है एवं इनकी लम्बाई 19.5 इंच होता है। इस अवस्था में वह माँ के दूध पर ही निर्भर रहता है।

115. शारीरिक विकास का क्षेत्र है–

(a) स्नायुमण्डल (b) स्मृति
(c) अभिप्रेरणा (d) समायोजन

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) स्नायुमण्डल का सम्बन्ध शारीरिक विकास के क्षेत्र से है जबकि स्मृति, अभिप्रेरणा एवं समायोजन का सम्बन्ध मानसिक एवं सामाजिक विकास के क्षेत्र से है।

116. शरीर के आकार में वृद्धि होती है क्योंकि–

(a) शारीरिक और गत्यात्मक विकास
(b) संवेगात्मक विकास
(c) संज्ञानात्मक विकास
(d) नैतिक विकास

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास के कारण बालक के शरीर में वृद्धि होती है जबकि संवेगात्मक, संज्ञानात्मक एवं नैतिकता से उसके मानसिक या बौद्धिक विकास में वृद्धि होती है।

117. निम्न में कौन-सा शारीरिक विकास का एक प्रमुख नियम है?

(a) मानसिक विकास से भिन्नता का नियम
(b) अनियमित विकास का नियम
(c) द्रुतगामी विकास का नियम
(d) कल्पना और संवेगात्मक विकास से सम्बन्ध का नियम

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य के शारीरिक विकास की गति धीमी तथा अनियमित होती है। शैशवावस्था में शारीरिक वृद्धि एवं परिवर्तन तीव्रतम गति से होता है। बाल्यावस्था में यह गति धीमी हो जाती है पुनः किशोरावस्था में विकास तीव्रतम गति से होती है। शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था में शारीरिक विकास 'सिर से पैर की ओर' एवं 'निकट से दूर की ओर', के नियमानुसार होता है।

118. शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाला कारक कौन-सा है?

(a) वंशानुक्रम (b) वातावरण
(c) खेल तथा व्यायाम (d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (d) शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक के अन्तर्गत वंशानुक्रम, वातावरण तथा खेल एवं व्यायाम, भोजन, परिवार की स्थिति, दिनचर्या, विश्राम तथा निद्रा आदि आते हैं।

119. निम्न में से कौन-सी एक अन्तःस्रावी ग्रन्थि नहीं है?

(a) एड्रिनल ग्रन्थि (b) पीयूष ग्रन्थि
(c) लार ग्रन्थि (d) थायरॉइड ग्रन्थि

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (c) लार ग्रंथि एक अंतःस्रावी ग्रंथि नहीं है। प्रमुख अंतःस्रावी ग्रंथियाँ हैं- पियुष ग्रंथि, एड्रिनल ग्रंथि, थायराइड ग्रंथि, पैराथाइरॉयड ग्रंथि आदि।

120. शारीरिक वृद्धि और विकास को कहते हैं

(a) तत्परता (b) अभिवृद्धि

(c) गतिशीलत (d) आनुवंशिकता

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (b) शारीरिक वृद्धि एवं विकास को अभिवृद्धि (Growth) कहते है क्योंकि अभिवृद्धि एक निश्चित समय एवं एक निश्चित सीमा तक चलती है और शारीरिक विकास भी एक निश्चित समय एवं सीमा के अन्तर्गत होता है।

121.'बच्चे के उचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए उसका स्वस्थ शारीरिक विकास एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।' यह कथन –

(a) सही है, क्योंकि विकास-क्रम में शारीरिक विकास सबसे पहले स्थान पर आता है

(b) सही है, क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों के साथ अंतःसम्बन्धित है

(c) गलत है, क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों को किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं करता

(d) गलत हो सकता है, क्योंकि विकास नितांत व्यक्तिगत मामला है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (b) किसी भी बच्चे के सम्पूर्ण विकास के लिए शारीरिक एवं अन्य विकास साथ-साथ होने चाहिए क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों के साथ अंतःसम्बन्धित है।

122. निम्नलिखित में से किसको मुख्य (अधिकारी) ग्रन्थि कहते हैं?

(a) थाइरॉयड ग्रन्थि (b) एड्रीनल ग्रन्थि

(c) अन्तःस्रावी ग्रन्थि (d) पीयूष ग्रन्थि

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (d) पीयूष ग्रंथि को मुख्य अधिकारी ग्रंथि कहा जाता है क्योंकि इस ग्रंथि के द्वारा ही अन्य ग्रंथियों को नियंत्रित एवं निर्देशित किया जाता है।

123. बच्चें में शारीरिक विकास निम्न आयु सीमा में धीमा हो जाता है:

(a) 6–9 वर्ष (b) 3–4 वर्ष

(c) 5–6 वर्ष (d) 4–5 वर्ष

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बच्चे में शारीरिक विकास 5-6 वर्ष की आयु में धीमा हो जाता है। शैशवास्था के प्रथम तीन वर्षों में शिशु का शारीरिक विकास अति तीव्र गति से होता है। उसके भार और लम्बाई में वृद्धि होती है। तीन वर्ष के बाद विकास की गति धीमी हो जाती है। इस समय उसकी इन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों, आंतरिक अंगों, माँसपेशियों आदि का क्रमिक विकास होता है और 5-6 वर्ष तक शारीरिक विकास अत्यन्त धीमा हो जाता है।

124. मानव शरीर में सबसे छोटी हड्डी यानि स्टैप्स कान के _____होती है।

(a) अंदर (b) बीच में

(c) इनमें से कोई नहीं (d) बाहर

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : मानव शरीर में सबसे छोटी हड्डी यानि स्टैप्स कान के बीच में होती है। ध्यातव्य है कि शरीर में सबसे बड़ी हड्डी ऊपरी पैर में जाँघ की होती है।

गत्यात्मक विकास

125. चालक विकास की दर में व्यक्तिगत विविधताएँ होती हैं, फिर भी चालक विकास का क्रम ..... से ..... तक है–

(a) अधोगामी, शीर्षगामी

(b) अपरिष्कृत (स्थूल) चालक विकास; परिष्कृत (सूक्ष्म) चालक विकास

(c) परिष्कृत (सूक्ष्म) चालक विकास; अपरिष्कृत (स्थूल) चालक विकास

(d) शीर्षगामी; अधोगामी

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (b) चालक विकास की दर में व्यक्तिगत विविधताएँ होती हैं, फिर भी चालक विकास का क्रम अपरिष्कृत (स्थूल) चालक विकास से परिष्कृत (सूक्ष्म) चालक विकास तक है। सर्वप्रथम स्थूल चालक विकास के फलस्वरूप बच्चे शारीरिक गतिविधियों का नियंत्रण एवं समन्वय सीखते हैं, जिससे वे गतिविधियों को कर पाने में, शारीरिक संतुलन, गति एवं नियंत्रण कर पाने में समर्थ हो पाते हैं। जैसे– चलना, दौड़ना, कूदना और पैरों से प्रहार करना आदि। उसके बाद सूक्ष्म चालक विकास के फलस्वरूप बालक अपने संसार के बारे में सीखने के विभिन्न प्रयासों में वस्तुओं को उठाने, पकड़ने और जाँच परख करने की क्रियाएँ सीखते हैं। यही कारण है कि चालक विकास की दर में व्यक्तिगत विविधताएँ होते हुए भी क्रम स्थूल से सूक्ष्म विकास की ओर होता है।

126. निम्नलिखित में से कौन-सी एक बालक की मनोगत्यात्मक गतिविधि नहीं होती?

(a) खेलना (b) गेंद फेंकना

(c) लिखना (d) सोचना

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (d) सोचना, मनोगत्यात्मक गतिविधि नहीं है बल्कि यह एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है। मनोगत्यात्मक गतिविधि में पेशीय संचालन महत्वपूर्ण होता है, जबकि सोचने की प्रक्रिया में कोई पेशीय संचालन नहीं होता है।

127. निम्नलिखित में से कौन–सा सूक्ष्म गतिक कौशल का उदाहरण है?

(a) चढ़ना (b) फुदकना
(c) दौड़ना (d) लिखना

DSSSB PRT
C TET - 2012 (I-V)
UKTET-2014 (I-V)

Ans : (d) किसी कार्य को बेहतर तरीके से कर पाने की क्षमता का विकास होना गत्यात्मक विकास कहलाता है। सूक्ष्म गतिक या गत्यात्मक कौशल प्राप्त कर लेने पर बच्चे वस्तुओं को उठाने, पकड़ने और जाँच–परख करने की प्रक्रिया सीख जाते हैं। इसमें बालक विभिन्न क्रियाओं को करना तथा उन्हें समन्वित एवं नियंत्रित करना सीखते हैं। इस प्रकार लिखना भी एक सूक्ष्म गतिक कौशल का एक उदाहरण है। सूक्ष्म गतिक कौशल के विकास से बच्चे अपने ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से परिवेश के सम्पर्क में आते हैं।

128. श्रीमती कुमार का पहला बच्चा 10 महीने में चलने लगा। उनका दूसरा बच्चा अब 12 महीने का है और अभी भी नहीं चल रहा है। वह दु:खी या चिन्तित नहीं है, क्योंकि

(a) उनके पति ने कहा है कि जब तक वे 14 महीने के नहीं हुए थे, उन्होंने चलना शुरू नहीं किया था
(b) वह जानती है कि वह जितना अधिक इंतजार करेंगी उतना ही अधिक उसके पैर चलने के लिये मजबूत होंगे
(c) एक पड़ोसी का लड़का भी 18 महीने का है और वह भी नहीं चल रहा है
(d) वह जानती है कि चलने के विकास के लिये वह अभी सामान्य समयबद्ध के अन्दर है

Haryana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (d) बच्चों को अपने पैर पर चलने के लिए उनकी उपयुक्त आयु 14 महींने की मानी जाती है। अतः 12 महीने का बच्चा अगर चल नहीं रहा है तो चिन्ता का विषय नहीं है क्योंकि बालक का विकास अपने समयबद्ध ही होगा।

129. निम्नलिखित में से कौन उत्कृष्ट मोटर कौशल का एक उदाहरण है?

(a) चढ़ना (b) कुलांचें मारना
(c) दौड़ना (d) लिखना

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : लिखना उत्कृष्ट मोटर कौशल का उदाहरण है। कप या अन्य वस्तुओं को पकड़ना, पुस्तक के पृष्ठों को पलटना, बटन तथा जिप लगाना, ड्राइंग करना, लिखना आदि सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल/ उत्कृष्ट गत्यात्मक कौशल के उदाहरण हैं। इस विकास में बालक छोटी पेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है। कुलांचे मारना, चढ़ना, दौड़ना, गेंद फेकना, छल्ला घूमाना आदि स्थूल गत्यात्मक कौशल के उदाहरण हैं। स्थूल गत्यात्मक विकास में बालक बड़ी पेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है।

सामाजिक विकास

130. निम्नलिखित में से कौन-सा किसी बच्चे के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक नहीं है?

(a) मित्र मंडली (b) स्वास्थ्य
(c) संवेग (d) बुद्धि

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (a) किसी बच्चे के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक उसका स्वास्थ्य, संवेग तथा बुद्धि है। बच्चे की मित्र-मण्डली सामूहिक कारक के अन्तर्गत आता है जो उसके सामाजिक विकास में सहायक होता है।

131. बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं

(a) आर्थिक तत्व (b) सामाजिक परिवेशजन्य तत्व
(c) शारीरिक तत्व (d) वंशानुगत तत्व

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) सामाजिक विकास से तात्पर्य विकास की उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन करता है, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आवश्यकताओं व रूचियों पर नियंत्रण करता है, दूसरो के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है तथा अन्य व्यक्तियों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप व्यक्ति समाज का एक मान्य, सहयोगी, उपयोगी तथा कुशल नागरिक बन जाता है। इस प्रकार सामाजिक परिवेशजन्य तत्व बच्चो के सामाजिक विकास को प्रभावित करता है।

132. निम्न में से किसका मिलान सही है?

(a) शारीरिक विकास–वातावरण
(b) संज्ञानात्मक विकास–परिपक्वता
(c) सामाजिक विकास–वातावरण
(d) संवेगात्मक विकास–परिपक्वता

DSSSB PRT
C TET 2013 (VI - VIII)

Ans : (c) **स्किनर** व **हैरीमन** के शब्दों में– ''वातावरण और संगठित साधनों के कुछ ऐसे विशेष कारक हैं, जिनका बालक के सामाजिक विकास की दशा पर निश्चित और विशिष्ट प्रभाव पड़ता है।''

133. निम्नलिखित में से कौन प्रारम्भिक बाल्यावस्था अवधि के दौरान उन भूमिकाओं एवं व्यवहारों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं जो एक समूह में स्वीकार्य हैं?

(a) भाई-बहन एवं अध्यापक (b) अध्यापक एवं साथी
(c) साथी एवं माता-पिता (d) माता-पिता एवं भाई-बहन

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans : (d) प्रारम्भिक बाल्यावस्था अवधि के दौरान भूमिकाओं एवं व्यवहारों के बारे में जानकारी जिस समूह से प्राप्त होती है वह माता-पिता, भाई-बहन एवं पारिवारिक परिवेश है जो एक समूह के रूप में स्वीकार्य है।

134. बच्चे का सामाजिक विकास वास्तव में प्रारम्भ होता है

(a) विद्यालय पूर्व अवस्था में (b) शैशवावस्था में

(c) पूर्व बाल्यावस्था में (d) उत्तर बाल्यावस्था में

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) बच्चों में सामाजिक विकास का वास्तव में प्रारम्भ 9-12 वर्ष की आयु में होता है। 9-12 वर्ष की आयु उत्तर वाल्यावस्था कहलाती है। बच्चा जब संसार में आता है तो न वह सामाजिक होता है न असामाजिक। वह समाज की परम्पराओं, रीति–रिवाजों तथा सामाजिक प्रतिमानों से अनभिज्ञ होता है परन्तु जन्म के साथ ही उस पर सामाजिक प्रतिमानों का प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो जाता है। प्रारम्भिक अवस्था में शिशुओं में नकारात्मक सामाजिक गुणों जैसे– दब्बूपन, लज्जाशीलता, ईर्ष्या, प्रतिद्वंदिता आदि का प्रभाव रहता है परन्तु जब वह उत्तर बाल्यावस्था में पदार्पण करता है तो उसमें सकारात्मक सामाजिक गुणों जैसे सहयोग, सहानुभूति तथा सामाजिक और मूल्यों को सम्मान देने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है।

135. शिशु का सामाजिक विकास किसके ऊपर निर्भर करता है?

(a) दूसरों से बातचीत करने के अवसर पर

(b) बच्चे को दिखाया गया प्यार व स्नेह पर

(c) वह सीमा जहाँ तक बालक दूसरों का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम हो

(d) ये सभी

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) शिशु का सामाजिक विकास दूसरों से बातचीत करने के अवसर पर निर्भर करता है। क्रो व क्रो ने शैशवावस्था के विषय में लिखा है- ''जन्म के समय, शिशु न तो सामाजिक प्राणी होता है और न असामाजिक, पर वह इस स्थिति में बहुत समय तक नही रहता है।'' दूसरे व्यक्तियों के निरन्तर सम्पर्क में रहने के कारण उसकी स्थिति में परिवर्तन होना और फलस्वरूप उसका सामाजिक विकास होना आरम्भ हो जाता है।

136.बालक का सामाजिक विकास प्रभावित होता है

(a) सामाजिक-आर्थिक स्तर से (b) विद्यालय से

(c) परिवार से (d) इनमें से सभी से।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) दिये गये विकल्पों में से बालक के सामाजिक विकास को सभी प्रभावित करते हैं। बालक पहले परिवार का सदस्य होता है, फिर वह विद्यालय जाता है वहाँ सीखता है तथा सामाजिक आर्थिक स्तर भी बालक के सामाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

137. बच्चे तकरीबन इस आयु से सहकर्मी समूह प्रभाव का अनुभव करना शुरू कर देते हैं :

(a) पांच वर्ष (b) चार वर्ष

(c) तीन वर्ष (d) छः वर्ष

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बच्चे तकरीबन तीन वर्ष की आयु से सहकर्मी समूह प्रभाव का अनुभव करना शुरु कर देते हैं। तीन वर्ष की आयु में वे पास पड़ोस के अन्य शिशु बालकों के साथ तरह-तरह के खेल खेलने लगते हैं। खिलौनों के आदान-प्रदान तथा विभिन्न कार्यों में परस्पर सहयोग के द्वारा वे अन्य बालकों से सम्पर्क बनाते हैं तथा उनसे सहयोग करके सामाजिक सम्बन्ध बनाते हैं।

138. बच्चे के सामाजिक विकास का प्रभावित कर सकता है।

(a) अस्थमा (b) पुरानी बीमारी

(c) एलर्जी (d) खाने की आदत

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : पुरानी बीमारी (Chronic illness) एक मानव स्वास्थ्य स्थिति या बिमारी है जो लगातार या एक लंबे समय (3 महीने से अधिक) से चली आ रही होती है। जैसे– क्षय रोग, कुष्ठ रोग, आदि। इन बीमारियों से ग्रसित बच्चे का सामाजिक विकास प्रभावित हो सकता है क्योंकि इन बिमारियों के कारण बच्चे में हीनत्व की भावना विकसित हो जाती है और वह सामाजिक अंतःक्रिया स्थापित करने में कठिनाई महसूस करता है। दूसरी ओर इन बिमारियों से ग्रसित बच्चे से भी समाज के सदस्य अंतःक्रिया स्थापित करने में घबराते हैं जिससे भी सामाजिक विकास प्रभावित होता है।

139. सामाजिक रूप से अपरिपक्व छात्रों को _____ छात्रों के रूप में जाना जाता है।

(a) निर्भर (b) अलग–थलग

(c) आभासी (d) सामाजिक

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) सामाजिक रूप से अपरिपक्व छात्रों को निर्भर छात्रों के रूप में जाना जाता है। कोई भी व्यक्ति स्वयं में अकेला होने पर बहुत कम सीख सकता है। उसके सीखने में दूसरे व्यक्तियों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। सामाजिक रूप से परिपक्व व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन करता है, सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आवश्यकताओं व रुचियों पर नियंत्रण करता है, दूसरों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव करता है तथा अन्य व्यक्तियों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है जबकि सामाजिक रूप से अपरिपक्व व्यक्ति को उपर्युक्त वातावरण में समायोजन के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है।

मानसिक विकास

140.निम्नलिखित में से कौन-सा मानसिक वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

(a) सीखना

(b) परिपक्वन

(c) सीखना तथा परिपक्वन दोनों

(d) सामाजिक मानदण्ड

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (c) सीखना तथा परिवक्वता समग्ररुप से मानसिक वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

141.निम्नलिखित में से कौन-सा मानसिक विकास संबंधी विशेषता नहीं है?

(a) जिज्ञासा की प्रवृत्ति प्रचुर मात्रा में

(b) रट कर याद करने की प्रवृत्ति

(c) रचनात्मक प्रवृत्ति की प्रचुर मात्रा

(d) सहयोगात्मक अभिवृत्ति

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) मानसिक विकास विद्यार्थी के बुद्धि से सम्बंधित होता है इसके अन्तर्गत मुख्यतः विद्यार्थियों के अधिगम कार्य तथा इससे सम्बंधित होते है।

जिज्ञासा की प्रवृति, याद करना तथा रचनात्मक प्रवृत्ति विद्यार्थी के बौद्विक मानसिक क्षमता पर निर्भर करती है। सहयोग की भावना समायोजन की क्षमता पर निर्भर करती है न कि मानसिक क्षमता के विकास पर।

142. निम्नलिखित में से कौन-सा मानसिकता के सिद्धांत का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) स्थिर मानसिकता विराम (फिक्सड माइन्डसेट स्टॉप) को बदला नहीं जा सकता है।

(b) स्थिर मानसिकता (फिक्सड माइन्डसेट) केवल असफलता देती है।

(c) प्रौढ़ मानसिकता, बुद्धि को परिभाषित करता है।

(d) प्रौढ़ मानसिकता, असफलता को एक मामूली रुकावट के रूप में देखती है, सुधारने और विकसित होने का अवसर देती है।

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : प्रौढ़ मानसिकता, असफलता को एक मामूली रूकावट के रूप में देखती है जिसे सुधारने और विकसित होने का अवसर देती है। यह मानसिकता के सिद्धांत का सबसे अच्छा वर्णन करता है। मानसिकता के सिद्धांत का प्रतिपाद कैरोल एस. ड्वेक ने किया था।

143. एक बालक की संज्ञानात्मक शक्तियाँ जैसे कल्पना-शक्ति, बुद्धि, निर्णय लेने की क्षमता, आदि का संबंध है बालक के–

(a) शारीरिक विकास से (b) सामाजिक विकास से

(c) सर्वांगीण विकास से (d) मानसिक विकास से

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (d) कल्पना-शक्ति, बुद्धि, निर्णय लेने की क्षमता आदि का सम्बंध बालक के मानसिक विकास से होता है।

144. मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं–

(a) वंशानुक्रम

(b) परिवार का वातावरण

(c) परिवार की सामाजिक स्थिति

(d) उपरोक्त समस्त

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं-

- वंशानुक्रम
- परिवेश (वातावरण)
- सामाजिक स्थिति
- शारीरिक स्वास्थ्य
- माता–पिता की शिक्षा
- विद्यालय का वातावरण आदि।

संवेगात्मक विकास

145.निम्नलिखित में से कौन-सा कारक बच्चे के संवेगात्मक विकास को सबसे कम प्रभावित करने वाला है?

(a) परिवार (b) आर्थिक स्थिति

(c) स्वास्थ्य (d) खेलकूद

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (d) बच्चों के संवेगात्मक विकास को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारक पारिवारिक वातावरण, अर्थिक स्थिति तथा स्वास्थ्य है। खेल संवेगात्मक विकास को प्रभावित करता है परन्तु महत्वपूर्ण कारक नहीं है क्योकि संवेगात्मक स्थित के हिसाब से खेल का निर्धारण किया जाता है। खेल बालक में समायोजन एवं शारीरिक विकास का महत्वपूर्ण कारक है।

146. निम्न में से किसकी भूमिका पूर्व बाल्यावस्था में बालक के संवेगात्मक विकास हेतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है?

(a) अध्यापकों की (b) संगी-साथियों की

(c) पड़ोसियों की (d) माता-पिता की

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) पूर्व बाल्यावस्था बालक की प्रारम्भिक विद्यालय जाने की अवस्था होती है। इसके पूर्व बालक का शिक्षण केन्द्र उसका घर (परिवार) था। इस आयु में बालक पर माता-पिता का प्रभाव पड़ता है तथा माता-पिता के द्वारा ही बालक के सभी प्रकार के संवेगों के विकास का उत्तरदायित्व भी होता है।

147. इनमें से कौन सी प्रकृति भावनात्मक विकास से संबद्ध नहीं है?

(a) भावनाओं की उत्पत्ति शारीरिक परिवर्तन के साथ शुरू होती है

(b) भावनाओं का प्रस्फूटन जन्म के साथ होने लगता है

(c) शुरुआत वाह्यकाल के दौरान भावनाओं का प्रचण्ड रूप नजर आता है

(d) भावनाएं शारीरिक विकास से असम्बद्ध होती है

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) भावनात्मक विकास मानव के जन्म से नहीं प्रारम्भ होता है। यह विकास मानव के समाजिक परिवेश के साथ संबंध स्थापित करने के पश्चात् होता है। शारीरिक विकास का संबंध भावनात्मक विकास से नहीं होता है।

148. ''कोई भी नाराज हो सकता है– यह आसान है, परन्तु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर सही उद्देश्य के लिए तथा सही तरीके से नाराज होना आसान नहीं है।'' यह सम्बन्धित है

(a) संवेगात्मक विकास से (b) सामाजिक विकास से

(c) संज्ञानात्मक विकास से (d) शारीरिक विकास से

DSSSB PRT

UP TET 2015 (I-V)

Ans : (a) ''कोई भी नाराज हो सकता है– यह आसान है, परन्तु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर, सही उद्देश्य के लिए तथा सही तरीके से नाराज होना आसान नहीं है। यह बालक के संवेगात्मक विकास पर निर्भर करता है। श्रेष्ठ संवेगों पर आधारित व्यवहार, बालक के स्वास्थ्य को समुन्नत, मानसिक दृष्टिकोण को उदार, कार्य करने की इच्छा बलवती और सामाजिक सम्बन्धों को मधुर बनाते हैं।

149. निम्नलिखित में से कौन–सा बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?

(a) कक्षा–कक्ष का प्रजातान्त्रिक परिवेश

(b) अध्यापकों की कोई भी सहभागिता नहीं क्योंकि यह माता–पिता का कार्य है

(c) कक्षा–कक्ष का नियंत्रित परिवेश

(d) कक्षा–कक्ष का अधिकारवादी परिवेश

DSSSB PRT

Ans : (a) कक्षा–कक्ष का प्रजातांत्रिक या लोकतांत्रिक परिवेश, बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। क्योंकि ऐसे परिवेश में शिक्षक एवं छात्र के मध्य अतः प्रक्रियात्मक सम्बन्ध सुदृढ़ होता है जिससे छात्र प्रश्न–पूछने, अभिव्यक्त करने में संकोच नहीं करते हैं।

150. खेल के माध्यम से बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीख जाता है तो यह विकास निम्न में से कौन–सा है?

(a) सामाजिक विकास (b) शारीरिक विकास

(c) संवेगात्मक विकास (d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB PRT

Ans : (c) खेल के माध्यम से बालक का सामाजिक, शारीरकि एवं संवेगात्मक, तीनों क्षेत्रों का विकास होता है। यदि वह खेल के माध्यम से अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीख जाता है तो यह संवेगात्मक विकास होगा जबकि सहयोग, सौहार्द आदि की भावना विकसित होती है तो यह सामाजिक विकास होगा।

151. निम्नलिखित में से कौन–सी परिस्थिति में बच्चे का संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास अच्छे से होगा?

(a) जब बच्चे को महत्त्वपूर्ण माना जाए, उसकी भावनाओं का सम्मान किया जाए।

(b) बच्चे को अधिक–से–अधिक पढ़ने को कहा जाए।

(c) बच्चे के कक्षा में अच्छे अंक आए।

(d) जब शिक्षक बच्चों को उनके बौद्धिक स्तर के अनुसार पढ़ाए।

DSSSB PRT

UTET 2013 (I-V)

Ans : (a) बच्चे का उचित सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास के लिए आवश्यक है कि बच्चे को महत्त्वपूर्ण माना जाये, उसकी भावनाओं का सम्मान किया जाये तथा उचित वातावरण उपलब्ध कराया जाये।

152. व्यापक वफादारी, दया भावना में वृद्धि व मानसिक स्थिति में उतार–चढ़ाव संबंधित है–

(a) शारीरिक विकास की विशेषताएं

(b) संवेगात्मक विकास की विशेषताएं

(c) सामाजिक विकास की विशेषताएं

(d) सांस्कृतिक विकास की विशेषताएं

DSSSB PRT

Ans : (b) व्यापक वफादारी, दया–भावना में वृद्धि व मानसिक स्थिति में उतार–चढ़ाव आदि संवेगात्मक विकास की मुख्य विशेषताएँ हैं। संवेग व्यक्ति के सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक विकास को प्रभावित करता है।

153. बच्चे के संज्ञानात्मक विकास हेतु उत्तम स्थान है

(a) खेल का मैदान

(b) सभागार

(c) घर

(d) विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) विद्यालय एवं कक्षा-कक्ष का वातावरण बालक के संज्ञानात्मक विकास हेतु उत्तम स्थान होता है। जहाँ वह संवेदी सूचनाओं को ग्रहण कर उसका रूपान्तरण एवं विस्तारण करता है।

154. संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक है

(a) शारीरिक स्वास्थ्य (b) मानसिक योग्यता
(c) थकान (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) संवेगात्मक विकास का तात्पर्य शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन से है। जैसी परिस्थितिया उत्पन्न होती है उसी के अनुसार बालक अपने संवेग (व्यवहार) को प्रदर्शित करता है। संवेगात्मक विकास कई प्रकार के आन्तरिक एवं बाह्य कारणों से प्रभावित होता है- जैसे- शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक योग्यता, थकान, परिस्थिति आदि।

155. इनमें से कौनसी विशेषता भावनात्मक विकास से जुड़ी हुई नहीं है?

(a) भावना शारीरिक परिवर्तन से जुड़ी है
(b) भावना जन्म के तुरन्त बाद आ जाती है
(c) भावनाओं का तीव्र रूप बचपन में देखा जाता है
(d) भावना शारीरिक विकास से जुड़ी हुई नहीं है

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) भावना शारीरिक विकास से जुड़ी हुई नहीं है, यह कथन भावनात्मक विकास के संदर्भ में सही नहीं है क्योंकि संवेगों के उदय होने पर अस्थायी शारीरिक परिवर्तन हो जाते हैं। ये परिवर्तन दो प्रकार के हो सकते हैं- (1) आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन तथा (2) बाह्य शारीरिक परिवर्तन। इसके अतिरिक्त भावना जन्म के तुरन्त बाद उत्पन्न हो जाती है तथा भावनाओं का तीव्र रूप बचपन में देखा जा सकता है।

156. एक बच्चा ईर्ष्या का प्रदर्शन करता है

(a) 6 माह की आयु में (b) 12 माह की आयु में
(c) 18 माह की आयु में (d) 24 माह की आयु में

Haryana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ब्रिजेज के अनुसार बच्चा ईर्श्या का प्रदर्शन लगभग 18 माह की आयु में करने लगता है।

157. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?

(a) कक्षा-कक्ष का प्रजातांत्रिक परिवेश
(b) अध्यापकों की कोई भी सहभागिता नहीं क्योंकि यह माता-पिता का कार्य है
(c) कक्षा-कक्ष का नियंत्रित परिवेश
(d) कक्षा-कक्ष का अधिकारवादी परिवेश

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (a) बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए कक्षा–कक्ष में प्रजातांत्रिक परिवेश का होना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारों, भावनाओं आदि को अभिव्यक्त कर सके तथा शिक्षक से निःसंकोच प्रश्न पूँछ सके।

नैतिक विकास

158. बच्चों में नैतिकता की स्थापना के लिए सर्वोत्तम मार्ग है

(a) उन्हें धार्मिक पुस्तकें पढ़ाना
(b) शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना
(c) उनका मूल्य शिक्षा पर मूल्यांकन करना
(d) उन्हें प्रातःकालीन सभा में उपदेश देना

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011
DSSSB PRT

Ans: (b) शिक्षक का प्रत्यक्ष प्रभाव उसके छात्रों पर पड़ता है छात्र शिक्षकों की गतिविधियों तथा आचरणों का अनुसरण करते हैं। अतः छात्रों में नैतिकता के गुणों को स्थापित करने के लिए शिक्षक को स्वयं नैतिकता के गुणों एवं स्वच्छ आचरण को अपने व्यवहार में लाना होगा।

159. छात्रों में अच्छे नागरिक के गुण कैसे समाहित किये जा सकते है?

(a) उन्हें अच्छी नागरिकता पर भाषण देकर
(b) उन्हें राष्ट्रीय नायकों से परिचित कराकर
(c) उन्हें कतिपय सामुदायिक सेवा कार्य आवंटित करके
(d) उन्हें भारतीय संविधान से परिचित कराकर

Haryana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) छात्रों में अच्छे नागरिकों के गुण विकसित करने के लिए उनके पाठ्य-पुस्तक में ऐसे तथ्यों का संकलन करना चाहिए जो महान व्यक्तियों से सम्बंधित हो। उदाहरण कक्षा 8 तक के विद्यार्थियों के लिए भारत की महान विभूतियों के नाम से पाठ्य-पुस्तक चलायी जाती है। तथा स्नातक स्तर पर राष्ट्र गौरव के नाम से विषय वस्तु शामिल है। इन सबका आधार है कि बच्चे अनुकरण द्वारा सीखते हैं।

160. बच्चों के अच्छे चरित्र निर्माण के लिए–

(a) पाठ्य–पुस्तकों में चरित्र निर्माण संबंधी पाठ होने चाहिए।
(b) चरित्र निर्माण के लिए व्याख्यान दिए जाने चाहिए।
(c) कक्षा–कक्ष गतिविधि इस प्रकार से हो कि बच्चों को चरित्र निर्माण में सहायता मिल सके।
(d) महापुरुषों की जीवनी बच्चों को पढ़ाई जानी चाहिए।

DSSSB PRT
UKTET-2013 (I-V)

Ans : (c) बच्चों में अच्छे चरित्र निर्माण के लिए कक्षा–कक्ष की गतिविधि इस प्रकार से हो कि बच्चों को चरित्र निर्माण में सहायता मिल सके। इसके लिए शिक्षक का आदर्शात्मक गुण, कक्षा–कक्ष की सामाजिक अंतःप्रक्रिया एवं सहयोगात्मक व्यवहार आदि महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

161. चरित्र का विकास होता है

(a) इच्छाशक्ति द्वारा
(b) बर्ताव एवं व्यवहार द्वारा

(c) नैतिकता द्वारा

(d) उपरोक्त सभी के द्वारा

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) चरित्र का विकास व्यक्ति की इच्छाशक्ति, व्यवहार तथा नैतिकता पर आधारित होता है।

162. सही और गलत की समझ होना, यें ..... विकास का हिस्सा है।

(a) सांस्कृतिक (b) सामाजिक

(c) नैतिक (d) व्यावसायिक

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : सही और गलत की समझ होना, ये नैतिक विकास का हिस्सा है। नैतिकता को एक ऐसी मानसिक प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार किया जा सकता है जो व्यक्ति को अच्छे–बुरे, सही–गलत, सच–झूठ, उचित–अनुचित तथा वांछनीय तथा अवांछनीय आदि के बीच अंतर करने के योग्य बनाती है।

विकास और अधिगम में सम्बन्ध

163.निचली कक्षाओं में शिक्षण की खेल विधि जिस पर आधारित है, वह है–

(a) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम

(b) शिक्षण की विधियों के सिद्धांत

(c) विकास और वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत

(d) शिक्षण के समाजशास्त्रीय सिद्धांत

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के आधार पर निचली कक्षाओं में शिक्षण की खेल विधि प्रयोग किया जाता है ताकि बच्चों में समायोजन एवं शारीरिक क्षमता का संतुलित विकास हो सके।

164. निम्न कक्षाओं में शिक्षण की खेल विधि आधारित है

(a) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के सिद्धान्त पर

(b) शिक्षण की विधियों के सिद्धान्त पर

(c) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर

(d) शिक्षण के सामाजिक सिद्धान्तों पर

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) निम्न (प्राथमिक) स्तर पर बालकों को शिक्षा प्रदान करने के साथ यह भी आवश्यक होता है कि उसके शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक वृद्धि एवं विकास पर ध्यान दिया जाय। इसके लिए सबसे सर्वोत्तम विधि खेल विधि है क्योंकि खेल विधि वृद्धि एवं विकास के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित होती है।

165. निचली कक्षाओं में शिक्षण की खेल-पद्धति मूल रूप से आधारित है

(a) शिक्षण-पद्धति के सिद्धांतों पर

(b) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर

(c) शिक्षण के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों पर

(d) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के सिद्धांत पर

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (b) निचली कक्षाओं में शिक्षण की खेल पद्धति मूल रूप से विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है, क्योंकि निचली कक्षाओं के बच्चे सामान्यतः बाल्यावस्था में होते हैं और बाल्यावस्था में बच्चे पढ़ने से ज्यादा खेलने में रुचि लेते हैं। इसलिए छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षण की खेल पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

166. एक बच्चा अपनी मातृभाषा सीख रहा है व दूसरा बच्चा वही भाषा द्वितीय भाषा के रूप में सीख रहा है। दोनों निम्नलिखित में से कौन-सी समान प्रकार की त्रुटि कर सकते हैं।

(a) अधिकाधिक सामान्यीकरण

(b) सरलीकरण

(c) विकासात्मक

(d) अत्यधिक संशुद्धता

DSSB PRT

Ans : (c) एक बच्चा अपनी मातृभाषा सीख रहा है व दूसरा बच्चा वही भाषा द्वितीय भाषा के रूप में सीख रहा है तो दोनों के बीच विकासात्मक, त्रुटि की सम्भावना देखी जा सकती है। अर्थात् पहला बच्चा अभी अपने विकास के प्रारम्भिक चरण में है तथा दूसरा बच्चा विकास के द्वितीय चरण में है। दोनों के सीखने की प्रक्रिया और गति में भिन्नता हो सकती है।

167. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा विकास एवं अधिगम के बीच संबंध को सही तरीके से सूचित करता है?

(a) अधिगम विकास का ध्यान किए बिना घटित होता है।

(c) विकास एवं अधिगम अंतःसंबंधित और अंतःनिर्भर होते हैं।

(b) अधिगम की दर विकास की दर से काफी अधिक होती है।

(d) विकास एवं अधिगम संबंधित नहीं हैं।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : विकास और अधिगम के संबंध में निम्नलिखित कथन सत्य है–

- विकास एवं अधिगम अंतःसम्बन्धित और अंतः निर्भर होते हैं।
- विकास एवं अधिगम दोनों अनवरत गति से जीवनपर्यंत चलती हैं।
- विकास एवं अधिगम के संबंध को इस तरह समझा जा सकता है कि बालक का जैसे–जैसे विकास होता जाता है उसका व्यवहार भी परिष्कृत होता जाता है। अर्थात् उसके विकास के साथ-साथ अधिगम के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परितर्वन भी होता जाता है।

168. 6-11 वर्ष आयु वर्ग के छात्रों की आवश्यकता है

(a) कक्षा-कक्ष में प्रजातांत्रिक वातावरण की

(b) सीखने में स्वायत्तता की

(c) क्रिया आधारित, अन्तर्क्रियात्मक अधिगम की

(d) उपरोक्त सभी

Haryana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) 6-11 वर्ष की आयु बालको के लिए अतिमहत्वपूर्ण होती है क्योंकि इसी आयु वर्ग में बालक की कल्पनाशीलता एवं समाजिकता का विकास होता है। इसलिए इस आयु वर्ग के बच्चों के शिक्षा का वातावरण इस प्रकार होना चाहिए कि उनके सभी जरूरी आवश्यकताओ की पूर्ति हो सके जैसे-

1. कक्षा-कक्ष का वातावरण लोकतांत्रिक होना चाहिए
2. बच्चों को सीखने एवं प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता होनी चाहिए
3. क्रियात्मक विधि द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए

169. यदि छात्र अधिकांश कार्य स्वयं के हाथों से करेगा, तो छात्र में

(a) शारीरिक शक्ति बढ़ती है

(b) मानसिक शक्ति बढ़ती है

(c) परिश्रम करने की भावना जागृत होती है

(d) आत्मनिर्भरता पैदा होती है

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) थॉर्नडाइक के अधिगम सम्बंधी नियम के अनुसार कार्य को स्वयं करने से उद्दीपक एवं अनुक्रिया का सम्बंध मजबूत होगा और बालक जल्दी सीख जायेगा साथ ही कार्य को स्वयं करने से बच्चे में आत्मनिर्भरता भी आती है।

170. मिश्रित आयु–वर्ग वाले शिक्षार्थियों की कक्षा से व्यवहार रखने वाले शिक्षक के लिए ..... का ज्ञान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

(a) सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि

(b) सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

(c) विकासात्मक अवस्थाओं

(d) उनके अभिभावकों का व्यवसाय

DSSSB PRT

C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) मिश्रित आयु–वर्ग वाले विद्यार्थियों, जिसमें विभिन्न अवस्थाओं के बालक शामिल हो, की कक्षा में व्यवहार रखने वाले शिक्षक के लिए विकासात्मक अवस्थाओं का ज्ञान होना, सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है, क्योंकि तभी वह प्रत्येक विद्यार्थी के अनुसार अधिगम को सुनिश्चित कर सकता है।

171. नर्सरी कक्षा में शुरूआत करने के लिए कौन–सी विषयवस्तु सबसे अच्छी है?

(a) मेरा परिवार (b) मेरा प्रिय मित्र

(c) मेरा पड़ोस (d) मेरा विद्यालय

DSSSB PRT

UKTET-2014 (I-V)

C TET- 2012 (I-V)

Ans : (a) नर्सरी कक्षा का बालक सामान्यतः 3–5 या 6 वर्ष का होता है जो शैशवावस्था के अंतर्गत आता है। इस अवस्था में बालक स्वयं के अतिरिक्त अपने परिवार से ही प्रेम करता है तथा उसका सामाजिक विकास शून्य होता है। अतः इस अवस्था के लिए विषय–वस्तु 'मेरा परिवार' सर्वाधिक उपयुक्त होता है।

172. बचपन का साम्प्रतिक दृष्टिकोण की मान्यता है–

(a) बहुत तरीके से बच्चे प्राप्तवयस्कों के बराबर हो जाते है

(b) बच्चों को युवा प्राप्तवयस्कों के रूप में सबसे अच्छा माना जाता है

(c) बचपन आधारिक रूप से 'प्रतीक्षा अवधि' है

(d) बचपन वृद्धि एवं परिवर्तन का एक अनूठी अवधि है

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) बचपन की साम्प्रतिक दृष्टिकोण की मान्यता है कि बचपन वृद्धि एवं परिवर्तन की अनूठी अवधि है।

173. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन विकास और अधिगम के बीच संबंध को सर्वश्रेष्ठ रूप में जोड़ता है?

(a) विकास अधिगम से स्वतंत्र है।

(b) अधिगम विकास के पीछे रहता है

(c) अधिगम और विकास समानार्थक पारिभाषित शब्द हैं।

(d) अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अंतःसंबंधित है।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

DSSB PRT

Ans: (d) अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अंतः सम्बन्धित है क्योंकि व्यक्ति अपनी दैनिक क्रियाओं और अनुभवों द्वारा कुछ न कुछ सीखता है। अतः विकास और अधिगम दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हुए विकसित होते है।

174.शिक्षण का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य शिक्षकों से यह माँग करता है कि वे –

(a) कठोर अनुशासन बनाए रखने वाले बनें, क्योंकि बच्चे अकसर प्रयोग (जाँच) करते हैं

(b) विकासात्मक कारकों के ज्ञान के अनुसार अनुदेशन युक्तियों का अनुकूलन करें

(c) विभिन्न विकासात्मक अवस्था वाले बच्चों के साथ समान रूप से व्यवहार करें

(d) इस प्रकार का अधिगम उपलब्ध कराएँ जिसका परिणाम केवल संज्ञानात्मक क्षेत्र के विकास में हो

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (b) शिक्षण का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य शिक्षकों से यह मांग करता है, कि वे विकासात्मक कारकों के ज्ञान के अनुसार अनुदेशन युक्तियों का अनुकूलन करें।

EXAM POINT

विकास की अवधारणा एवं इसका अधिगम से सम्बन्ध

सामान्यतः विकास की पाँच अवस्थाएँ होती है–

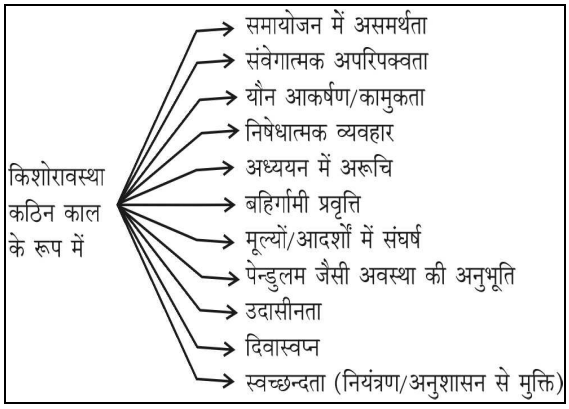
अवस्था	आयु
गर्भाधान अवस्था	गर्भाधान से जन्म (9 माह 10 दिन) तक
शैशवावस्था	जन्म से 5/6 वर्ष तक
बाल्यावस्था	6 से 12 वर्ष
किशोरावस्था	12 से 18 वर्ष
प्रौढ़ावस्था	18 वर्ष के बाद

मनोवैज्ञानिक ने शैक्षिक दृष्टि से बाल विकास को तीन भागों में बाँटा गया है–

1. शैशवावस्था 2. बाल्यावस्था 3. किशोरावस्था

- समाजीकरण प्रक्रिया के प्रारम्भ होने की अवस्था है **–शैशवावस्था**
- एक नवजात शिशु का कद (ऊँचाई होती है) **-19.5 इंच**
- एक नवजात शिशु का भार होता है **-7.5 पाउंड**
- शैशवास्था को सीखने का आदर्श काल कहा है **-वेलेन्टाइन ने**
- सबसे तेज शारीरिक विकास होता है **-शैशवावस्था में**
- विकास की प्रक्रिया होती है **–गर्भावस्था से लेकर जीवन पर्यन्त तक**
- शैशवावस्था में वृद्धि **-तीव्र होती है**
- जन्म से किशोरावस्था तक की गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है **-बाल मनोविज्ञान में**
- व्यक्तित्व विकास की नीव पड़ती है **-बचपन में**
- 3 से 6 वर्ष तक बच्चा अर्द्ध स्वप्नों में रहता है, किसका विचार है **–थार्नडाइक**
- शैशवावस्था द्वारा जीवन का पूरा क्रम निश्चित होता है, कहा है **–एडलर ने**
- मनुष्य को जो कुछ बनना होता है। प्रारम्भ के चार पांच वर्षों में बन जाता है, कथन है **–सिगमंड फ्रायड**
- शैशवावस्था को बालक का कहा जाता है **–निर्माण काल**
- नवजात शिशु में हड्डियों की संख्या लगभग होती है– **270**
- कौन सी अवस्था में दोहराने की प्रवृत्ति तीव्र होती है? **–शैशवावस्था**
- फ्रायड के अनुसार लड़कियों में कौन सी ग्रन्थि पायी जाती है? **–इलेक्ट्रा ग्रन्थि**
- फ्रायड के अनुसार लड़कों में कौन सी ग्रन्थि पायी जाती है **–ओडीपस ग्रन्थि**
- जन्म के समय शिशु की औसत लम्बाई होती है– **51.5 सेमी.**
- नवजात शिशु का भार लगभग होता है– **3.2 किलो ग्राम**
- ''स्वप्रेम'' की भावना का विकास होता है **–शैशवावस्था में**
- जन्म के समय शिशु की धड़कन रहती है **–अनियमित**
- हड्डियों में कौन से तत्व पाये जाते है? **–कैल्शियम, फास्फोरस और खनिज तत्व**
- कितने वर्ष का बच्चा सार्थक शब्दों का प्रयोग करने लगता है **–3 वर्ष**
- बालक के विकास की प्रक्रिया एवं विकास की शुरूआत होती है **–जन्म या प्रसव पूर्व से**
- जन्म के समय बालक, बालिका से लगभग **–1/2 सेमी. लम्बा होता है**
- किस अवस्था में दांत बनना शुरू होते है **–जन्म से पूर्व**
- शैशवकाल का नियत समय है **–जन्म से 5/6 वर्ष तक**
- स्व-केन्द्रित अवस्था होती है **–शैशवावस्था**
- शिक्षा की किण्डरगार्टन पद्धति का प्रतिपादन किया था **फ्रोबेल ने**
- 'भूख और प्यास है' **–जन्मजात प्रेरक**
- बालक की प्रथम पाठशाला है **–परिवार**
- गर्भ में बालक को विकसित होने में दिन लगते हैं **–280 दिन**
- वर्तमान में निःशुल्क बच्चों की शिक्षा के लिए कहा गया है **समावेशी शिक्षा में**
- डाल्टन प्रणाली के जन्मदाता हैं **–मिस हेलेन पार्कहर्स्ट**
- शैशवावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है **मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार**
- मनोवैज्ञानिकों के अनुसार छोटे बच्चों को किस आयु में स्कूल भेजना चाहिए **–5 वर्ष**
- दूध के दाँत होते है **–20**
- सामान्य बालक किस आयु में ध्वनि उच्चारण शुरू करते है **–9 से 15 माह के मध्य**
- जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क का भार होता है **–350 ग्राम**
- ''शैशवास्था में बच्चे का संवेगात्मक विकास होता है'' **–उत्तेजनापूर्ण**
- बाल्यावस्था की आयु होती है **–6-12 वर्ष**
- समूह की आयु होती है **–बाल्यावस्था**
- चुस्ती की आयु होती है **–बाल्यावस्था**
- गंदी आयु होती है **–बाल्यावस्था**
- बाल्यावस्था को 'मिथ्या परिपक्वता' कहा है **–रॉस ने**
- बाल्यावस्था को 'संवेगात्मक विकास का अनोखा काल कहा है **–कोल और ब्रूस ने**

- 'संग्रह करने की प्रवृत्ति, किस अवस्था में पायी जाती है **–बाल्यावस्था**
- 'प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश की अवस्था' होती है **–बाल्यावस्था**
- क्रिया एवं खेल पर आधारित शिक्षा विधि है **–माण्टेसरी शिक्षण विधि**
- बाल्यावस्था में खेल की प्रकृति होनी चाहिए **–सामूहिक**
- 'वास्तविक जगत में प्रवेश' की अवस्था है **–बाल्यावस्था**
- बाल्यावस्था में बालक सम्पर्क रखता है **–समवयस्क समलिंगियों से**
- बाल्यावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है **–सामूहिकता की भावना**
- बाल्यावस्था में सामान्यतः बालक का व्यक्तित्व होता है **–बहिर्मुखी व्यक्तित्व**
- बाल्यावस्था में शिक्षा का क्या स्वरूप होना चाहिए? **–सामूहिक खेलों एवं रचनात्मक कार्यों के माध्यम से शिक्षा दी जानी चाहिए**
- बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषता है **–अधिगम की तीव्रता अपेक्षाकृत स्थिर विकास प्रक्रिया यथार्थवादी दृष्टिकोण**
- बालिकाओं का भाषा विकास बालकों से आगे रहता है **–बाल्यावस्था में**
- हड्डियों का विकास होता है **–16 वर्ष तक**
- 12 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु होती है **–किशोरावस्था**
- किशोरावस्था बड़े दबाव, तनाव तूफान तथा संघर्ष की अवस्था हैं, कहा है **–स्टेनले हाल ने**
- अत्यन्त द्रुत एवं तीव्र विकास का काल है **–पूर्व किशोरावस्था**
- किशोरावस्था में संवेग प्रायः होते हैं **–अधिक उग्र**
- किशोरावस्था में शिक्षा का क्या स्वरूप होना चाहिए **–जीविकोपार्जन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षा**
- ''किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।'' **–क्रो एवं क्रो**
- ''इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।'' कथन है– **–ई. ए. किर्कपैट्रिक**
- किशोरावस्था को अंग्रेजी में कहते है **–Adolescence**
- बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास किस अवस्था में पूर्णता को प्राप्त होता है? **–किशोरावस्था में**
- संवेगात्मक विकास में किस अवस्था में तीव्र परिवर्तन होता है **–किशोरावस्था**



- किशोरावस्था की विशेषताओं की सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है **–परिवर्तन**
- किशोरावस्था, बाल्यकाल अथवा प्रौढ़ावस्था के बीच की कैसी अवस्था है? **–अस्थिरता की अवस्था**
- किशोरावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है **–पूर्ण संवेगात्मक विकास के कारण स्थायित्व एवं समायोजन का अभाव**
- एडोलसेंस किसकी रचना है **–जी. एस. हाल**
- ''किशोर में जो शारीरिक मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते है वे अकस्मात होते है।'' कथन है **–जी. एस. हाल**
- धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए **–किशोरावस्था में**
- स्टनलेहाल कहाँ के मनौवैज्ञानिक थे **–अमेरिका के**
- स्टनलेहाल ने किशोरावस्था को 4 शब्द/तत्व के रूप में परिभाषित किया है **–संघर्ष, तनाव, तूफान, विरोध की अवस्था**
- किशोरावस्था की प्रमुख विशेषता नहीं है **–संचय की प्रवृत्ति**
- किशोरावस्था की प्रमुख विशेषता है **–संवेगों का आधिक्य कल्पना की बहुलता मानसिक विकास**
- संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है **–उत्तेजना या भावों में उथल-पुथल**
- किस अवस्था में आवेगों की तीव्र स्थिति उत्पन्न होती है **–किशोरावस्था में**
- किशोरावस्था में बालक रुचि लेने लगता है **–विषमलिंगी में**
- शक्तियों तथा संवेदनशीलता, अवलोकन, प्रत्ययीकरण, स्मृति, ध्यान, कल्पना, चिन्तन, बुद्धि, तर्क आदि मे वृद्धि होता है **–मानसिक विकास में**
- पाठ्यक्रम का अर्थ है **–दौड़ का वह पथ जिस पर दौड़कर बालक अपने व्यक्तित्व का विकास करता है**
- ''पाठ्यक्रम शिक्षक के हाथों में एक साधन है, जिससे वह अपने छात्र को अपने कला-कक्षा में अपने शैक्षिक लक्ष्यों के अनुसार ढालता है'' **–कनिंघम महोदय के अनुसार**

- बालक अपने व्यवहार की समाजिक स्वीकृति चाहता है **–किशोरावस्था में**
- बालकों के सर्वांगीण विकास का दायित्व है **–शिक्षक एवं बालक दोनों पर**
- सामान्य बालक संवेगात्मक रूप से होता है **–सन्तुलित**
- जब किशोर में किसी वस्तु, समस्या या परिस्थिति के लिए निजी स्तर पर निर्णय लेने की क्षमता का विकास परिपक्व होने लगता है तो इसे ..... कहा जाता है– **संज्ञानात्मक विकास**
- बालकों में होने वाले क्रमबद्ध रूप से सुसंगत परिवर्तन की श्रृंखला को ..... कहते हैं– **विकास**
- शिशु में कब भय एवं क्रोध से सम्बन्धित संवेग का विकास होने लगता है? **एक वर्ष में**
- सामाजिक विकास के सन्दर्भ में कथन सही नहीं है– **बालकों के विकास के रूप में समाज को प्रथम पाठशाला माना गया है**
- गर्भावस्था (Conception Period) के सन्दर्भ में कथन सही नहीं है– **गर्भावस्था में विकास की गति मन्द होती है**
- ''विकास की प्रक्रिया बालक की गर्भावस्था से लेकर जीवन-पर्यन्त एक क्रम में चलती रहती है तथा प्रत्येक अवस्था का प्रभाव दूसरी अवस्था पर पड़ता है।'' इस कथन का सम्बन्ध ..... मनोवैज्ञानिक से है– **हरलॉक**
- विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है; यह विचार सम्बन्धित है– **निरन्तरता का सिद्धान्त**
- निचली कक्षाओं में शिक्षण की खेल पद्धति मूलरूप से आधारित है– **विकास एवं अभिवृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर**
- वह अवस्था जिसमें बच्चे अपने समवयस्क समूह (Peer group) के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं– **किशोरावस्था**
- खिलौने की आयु कहा जाता है– **पूर्व बाल्यावस्था**
- विकास का अर्थ है– **परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की श्रृंखला**
- बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होता है यह अवस्था है– **7 से 11 वर्ष तक**
- बचपन के साम्प्रतिक दृष्टिकोण की मान्यता है– **बचपन वृद्धि एवं परिवर्तन की अनूठी अवधि है**
- एक प्रसामान्य 12 वर्ष के बच्चे में सबसे अधिक होना सम्भव है– **समकक्षी के अनुमोदन के लिए बेचैनी**
- मनोविज्ञान के अनुसार बाल विकास की सबसे जटिल अवस्था है– **किशोरावस्था**
- वह अवस्था जिसमें शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास होता है, है– **बाल्यावस्था**
- शैशवावस्था की मुख्य विशेषता नहीं है– **चिन्तन प्रक्रिया**
- किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार ''विकास एक सतत् और धीमी-धीमी प्रक्रिया है''– **स्किनर**
- बाल्यावस्था होती है– **छः से बारह वर्ष तक**
- विकास और वृद्धि से तात्पर्य है– **आकार, सोच, समझ-कौशलों में वृद्धि**
- परिपक्वता का सम्बन्ध है– **विकास से**
- तनाव और क्रोध की अवस्था है– **किशोरावस्था**
- सीखने की प्रोजेक्ट विधि किस अवस्था के लिए उपयोगी है– **बाल्यावस्था, पूर्व बाल्यावस्था, किशोरावस्था**
- बच्चे के विकास के शिरस्थ सिद्धान्त के अनुसार सत्य कथन है– **विकास सिर से पैर की ओर होता है**
- संक्षिप्त रूप PSRN जो कि विकास से सम्बन्धित है, व्याख्या करता है– **समस्या समाधान, तार्किकता व आंकिक क्षमता**
- वाइगोत्सकी (Vygotsky) ने बाल विकास के विषय में कहा है कि– **यह सामाजिक अनुक्रिया का उत्पाद होता है**
- विकास का सिद्धान्त है– **सभी की विकास दर समान नहीं होती**
- मानव विकास के क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है– **शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक**
- विकास शुरू होता है– **प्रसवपूर्व अवस्था से**
- किशोर अनुभव कर सकते हैं **–दुश्चिन्ता और स्वंय से सरोकर का**
- मिश्रित आयु वर्ग वाले विद्यार्थियों की कक्षा से व्यवहार रखने वाले शिक्षक के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है– **विकासात्मक अवस्थाओं का ज्ञान**
- संकल्पनाओं की व्यवस्थित प्रस्तुति विकास के किन सिद्धान्तों के साथ सम्बन्धित हो सकती है– **विकास विषमजातीयता से स्वायत्तता की ओर अग्रसर होता है**
- मानव वृद्धि एवं विकास की समझ शिक्षक को ..... के योग्य बनाती है– **विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता**
- विकास का वही सम्बन्ध परिपक्वता से है जो– **उद्दीपन का प्रतिक्रिया से**
- मानसिक परिपक्वता की ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रयत्नरत रहना सम्बन्धित है– **किशोरावस्था से**
- विकास के किस काल को 'अत्यधिक दबाव और तनाव का काल' कहा गया है– **किशोरावस्था**
- इरफान खिलौने तोड़ता है तथा उसमें अवयवों को देखने के लिए उसे अलग-अलग कर देता है। आप क्या करेंगे? **उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति को बढ़ावा देंगे तथा उसकी ऊर्जा को दिशा प्रदान करेंगे**
- मानव विकास की वह अवस्था जिसे ''सुनहरी अवस्था'' कहा जाता है– **बाल्यावस्था**
- 'बच्चे अपनी वृद्धि व विकास हेतु कठोर अध्ययन करते हैं' यह मत है– **मैस्लो**
- परिपक्व विद्यार्थी– **अपने अध्ययन में कभी-कभी भावनाओं की सहायता चाहते हैं**

- 14 वर्षीय देविका अपने-आप में पृथक्, स्व-नियंत्रित व्यक्ति की भावना को विकसित करने का प्रयास कर रही है, वह विकसित कर रही है– **स्वायत्तता**
- एक अध्यापक/अध्यापिका ने पाया कि एक विद्यार्थी वर्ग बनाने में कठिनाई अनुभव कर रहा है, उसने अनुमान लगाया कि वह हीरे का चित्र बनाने में भी कठिनाई अनुभव करेगा। उसने किस सिद्धान्त पर आधारित होकर यह अनुमान लगाया? **विकास एक व्यवस्थित क्रम में होने की प्रवृत्ति से सम्बद्ध है**
- मानव विकास का सही क्रम है– **शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था**
- फ्रायड की विकास अवस्थाओं के अनुसार, किस अवस्था को प्रारम्भिक विद्यालय आयु समझा जाता है– **अव्यक्तावस्था**
- विशेष अवधि के दौरान, विकास प्रगति करता है लेकिन उस अवधि में समायोजन के लिए विराम करता है। यह विकास के किस नियम को अनुसरित करता है– **विकास के विभिन्न दर का सिद्धान्त**
- 'सर्वाधिक उपयुक्त जीवित (Survival of the Fittest) रहता है' का सिद्धान्त है– **डार्विन**
- शैशवावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है– **अनुकरणात्मक प्रवृत्ति का प्रभाव**
- किशोरावस्था में संवेगों की तीव्रता किस प्रकार प्रकट होती है– **नयी परिस्थितियों से संघर्ष**
- बच्चों के शाब्दिक या गैर-शाब्दिक दण्ड देने का परिणाम होता है– **उनके स्वयं के प्रति अवधारणा को नष्ट करना**
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था अवधि के दौरान उन भूमिकाओं एवं व्यवहारों के विषय में जानकारी प्रदान करते हैं जो एक समूह में स्वीकार्य हैं– **माता-पिता एवं भाई-बहन**
- कौन-सा आयु वर्ग परवर्ती बाल्यावस्था की श्रेणी के अन्तर्गत आता है– **6 से 11 वर्ष**
- ..... जिज्ञासु प्राणी होते हैं जो अपने चारों ओर के जगत को खोजने के लिए अपने ही तर्कों और क्षमताओं का उपयोग करते हैं– **बच्चे**
- कोल के अनुसार शैशव काल की अवधि है **–जन्म से दो वर्ष तक**
- विकास ..... से ..... की ओर बढ़ता है– **सामान्य-विशिष्ट**
- जब वयस्क सहयोग से सामंजस्य कर लेते हैं तो वे बच्चे के वर्तमान स्तर के प्रदर्शन को सम्भावित क्षमता के स्तर के प्रदर्शन की तरफ प्रगति क्रम को सुगम बनाते हैं, इसे कहा जाता है– **समीपस्थ अधिगम**
- मध्य बाल्यावस्था में भाषा के ..... बजाय ..... अधिगम है– **समाजीकृत, अहंकेन्द्रित**
- विकास और अधिगम के बीच सम्बन्ध को सर्वश्रेष्ठ रूप से जोड़ता है– **अधिगम और विकास एक जटिल तरीके से अन्तः सम्बन्धित हैं**
- स्टेनलेहाल के अनुसार अधिक तनाव और तूफान की अवस्था है– **किशोरावस्था**
- बालक के व्यक्तिगत विकास को प्रभावित करता है– **आनुवंशिकता, भौतिक और सामाजिक वातावरण**
- अहम् केन्द्रिकता का विकास नहीं होता है– **किशोरावस्था में**
- किस प्रकार के विकास से एकाग्रता तथा सृजनात्मकता का सम्बन्ध है– **बौद्धिक विकास**
- एक बालक पहले पूरे हाथ को फिर अंगुलियों को तथा फिर हाथ और अंगुलियों को एक साथ चलाना सीखता है। यह उदाहरण वृद्धि और विकास के किस सिद्धान्त को दर्शाता है– **एकीकरण का सिद्धान्त**
- 16 वर्षीय राहुल अपने आप प्रथम स्वनियंत्रित व्यक्ति की भावना को विकसित करने का प्रयास कर रहा है। वह विकसित कर रहा है– **स्वायत्तता**
- मानसिक वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है– **सीखना तथा परिपक्वन दोनों**
- विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती है, किन्तु यह एक ..... नमूने का अनुगमन करती हैं– **क्रमबद्ध और व्यवस्थित**
- मनोवैज्ञानिकों के अनुसार किस विधि द्वारा मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन लाया जा सकता है– **मार्गान्तरीकरण द्वारा**
- विकास के मनोसामाजिक सिद्धान्त का प्रतिपादन ..... किया था– **एरिक्सन ने**
- अधिकारी ग्रन्थि कहते हैं– **पीयूष ग्रन्थि को**
- तर्क जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास होता है– **11 वर्ष की आयु में**
- किस अवस्था में बालकों में नई खोज करने की ओर घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है– **उत्तर बाल्यावस्था**
- ..... की अवस्था तक बालक की दृष्टि एवं श्रवण इन्द्रियाँ पूर्ण विकसित हो चुकी होती हैं– **3 अथवा 4 वर्ष**
- कक्षा एक और दो स्तर के बच्चे– **मूर्त अनुभवों से शीघ्र सीखते हैं**
- बच्चे के विकास के सिद्धान्त को समझना शिक्षक की सहायता करता है– **शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम शैलियों को प्रभावी रूप में सम्बोधित करने में**
- एक बच्चे की वृद्धि और विकास के अध्ययन की सर्वाधिक अच्छी विधि कौन-सी है– **विकासीय विधि**
- विकास की किस अवस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास होता है– **किशोरावस्था**

03.

बालकों के विकास के सिद्धांत

बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान की समझ

1. शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए–

(a) अध्यापन विषय का
(b) बाल मनोविज्ञान का
(c) शिक्षा संहिता का
(d) अध्यापन विषय एवं बाल–मनोविज्ञान का

DSSSB PRT
UK TET (I-V) 2011

Ans : (d) एक कुशल शिक्षक को अपने विषय में पारंगत होने के साथ–साथ बाल मनोविज्ञान का भी ज्ञान होना आवश्यक है ताकि वह बच्चों के व्यवहार, मानसिक स्थिति, योग्यता एवं क्षमता के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन कर सके।

2. अपने विद्यार्थियों को समझने के लिए एक शिक्षक में अच्छी जानकारी होनी चाहिए

(a) बाल मनोविज्ञान की
(b) बच्चों को समझने की प्रवृत्ति की
(c) विषय वस्तु के प्रति विद्यार्थियों के मत की
(d) उपरोक्त सभी की

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) अपने विद्यार्थियों को समझने के लिए शिक्षक के आवश्यक गुण निम्न होने चाहिए-
1. बाल मनोविज्ञान की समझ
2. बच्चों की बुद्धि स्तर की समझ
3. बच्चों के अभिवृत्ति की समझ
4. बच्चों के समस्याओं के बारे में समझ

3. बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन-सा कथन सर्वोत्तम है?

(a) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं
(b) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है
(c) कुछ बच्चे विशिष्ट होते है
(d) कुछ बच्चे एक जैसे होते है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (b) ''प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है।'' यह कथन बाल मनोंविज्ञान के आधार पर सर्वोत्तम है।

4. बाल विकास की परिभाषा का अध्ययन क्षेत्र है जो

(a) मानवीय सामर्थ्यों में परिवर्तन का परीक्षण करता है
(b) जीवन अवधि के दौरान व्यवहार की व्याख्या ढूँढेगा
(c) बच्चों की वयस्क तथा वरिष्ठ नागरिकों के साथ तुलना करेगा
(d) किसी बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा दूसरे सामर्थ्यों के क्रमिक विकास के लिए उत्तरदायी होगा

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) बाल विकास मनुष्य के जन्म से लेकर किशोरावस्था के अंत तक उनमें होने वाले जैविक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को कहते हैं, जब वे धीरे-धीरे परनिर्भरता से और अधिक स्वायत्तता की ओर बढ़ते हैं। अर्थात् किसी बच्चे में संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा नैतिकता के क्रमिक विकास को बाल विकास कहा जाता है जो एक दूसरे के क्रमिक विकास के लिए उत्तरदायी होते हैं।

5. निर्देशात्मक विकास शब्द सूचित करता है–

(a) दर (b) सीमा
(c) दिशा (d) विशिष्ट गुण

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : निर्देशात्मक विकास (Normativ Development) चरण जो किसी विशिष्ट आयु वर्ग के अधिकांश बच्चों को प्राप्त होने की उम्मीद करती है। यह किसी निश्चित आयु वर्ग के लिए विशिष्ट गुण प्रदर्शित करता है। जैसे– लगभग सभी बच्चे 24 से 36 माह में चलना और बोलना प्रारंभ कर देते हैं।

6. विकास के परिप्रेक्ष्य में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों में निम्न में क्या शामिल है?

(a) रूप (b) दर
(c) अनुक्रम (d) ये सभी

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) विकासशील परिप्रेक्ष्य में बाल मनोविज्ञान में समयानुसार होने वाला दर परिवर्तन सबसे अधिक चिंता का विषय होता है क्योंकि अगर बालक विकास दर में समयानुसार उत्तरोत्तर वृद्धि नहीं होती है तो बालक में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है। जैसे - समयोजना की क्षमता में कमी, कम बुद्धि लब्धि आदि।

7. बाल विकास में

(a) प्रक्रिया पर बल है
(b) वातावरण और अनुभव की भूमिका पर बल है
(c) गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन होता है
(d) उपरोक्त सभी पर

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) बाल विकास एक व्यापक विचारधारा है जिसमें बालक के गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक के शारीरिक, मानसिक एवं व्यवहारिक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।

बाल विकास की अवस्थाएं निम्न है –
1. गर्भावस्था (0-9 माह)
2. शैशवावस्था (जन्म से 6 वर्ष)
3. बाल्यावस्था (7-12 वर्ष)
4. किशोरावस्था (12-18 वर्ष)

8. बाल–मनोविज्ञान के आधार पर कौन–सा कथन सर्वोत्तम है?

(a) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं
(b) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है
(c) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं
(d) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं

DSSSB PRT

Ans : (b) बाल–मनोविज्ञान के अुनसार प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है। प्रत्येक बच्चे भिन्न–भिन्न योग्यता व क्षमता प्रदर्शित करते हैं। अतः प्रत्येक बच्चे को ध्यान में रखकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया संचालित की जानी चाहिए।

9. प्राथमिक शिक्षक के लिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि

(a) यह बच्चों को अनुशासित बनाने में सहायता करता है
(b) परीक्षा में परिणाम में उन्नति होती है
(c) यह बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिए सुविधाजनक तरीका बन जाता है
(d) यह बच्चों के व्यवहार को समझने में शिक्षक की सहायता करता है

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना अति आवश्यक होता है। क्योंकि इसके द्वारा शिक्षक बालक के व्यवहार को आसानी से समझ सकता है तथा अपना शिक्षण कार्य सुचारु रूप से चला सकता है।

10. बाल मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु है–

(a) अच्छा शिक्षक (b) बालक
(c) शिक्षण प्रक्रिया (d) विद्यालय

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (b) बाल मनोविज्ञान का मुख्य केन्द्र बालक ही होता है क्योंकि इसके अन्तर्गत बालक में हो रहे शारीरिक परिवर्तन एवं व्यवहारिक परिवर्तन का अध्ययन एवं परीक्षण किया जाता है तथा उसके अनुसार ही उनके पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है ताकि उनका विकास सकारात्मक हो सके।

11. बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है–

(a) केवल शैशवावस्था की विशेषताओं का अध्ययन।
(b) केवल गर्भावस्था की विशेषताओं का अध्ययन।
(c) केवल बाल्यावस्था की विशेषताओं का अध्ययन।
(d) गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन।

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (d) बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत गर्भावस्था से किशोरावस्था तक की विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। उसी प्रकार बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत बालक व्यवहार के परिवर्तन को विश्लेषित करते हुए उसका अध्ययन किया जाता है तथा अलग-अलग अवस्थाओं के बालक के विकास को सकारात्मक दिशा देने का प्रयास किया जाता है।

12. बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य स्थान है

(a) बालक का (b) अध्यापक का
(c) अभिभावक का (d) प्रशासक का

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (a) बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य स्थान बालक का होता है। वर्तमान समय में बाल केन्द्रित शिक्षा दी जा रही है। बालकेन्द्रित शिक्षा में शिक्षा,शिक्षण पद्धति बालक के बालक के प्रकृति के अनुसार ही प्रस्तुत एवं निर्धारित की जाती है।

बालकों के अध्ययन की विधियाँ

13. निरीक्षण विधि में किया जाता है

(a) अपना अध्ययन
(b) अपने व्यवहार का अध्ययन
(c) दूसरों के व्यवहारों का अध्ययन
(d) व्यवहार विश्लेषण।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) निरीक्षण प्रक्रिया में कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के कार्यों की जांच का अध्ययन करता है। निरीक्षण में स्वयं का मूल्यांक करना पक्षपात पूर्ण होता है। इसलिए निरीक्षण विधि में दूसरों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है ताकि जाँच पक्षपातपूर्ण न होकर तटस्थ रहे।

14. केस अध्ययन विधि के संबंध में क्या सही नहीं है?

(a) यह एक वैज्ञानिक विधि है।
(b) यह विधि बहुत जटिल होती है।
(c) यह सरल और सस्ती होती है।
(d) यह कारण का पता लगाकर समस्याओं का निदान करती है।

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (b) केस अध्ययन एक वैज्ञानिक विधि है जिसके द्वारा किसी समस्या के कारण का पता लगाकर उसका समाधान किया जाता है। यह बहुत ही सरल एवं सस्ती विधि होती है। इसमें किसी घटना को उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है। अतः यह विधि बहुत जटिल होती है। केस अध्ययन के सम्बन्ध में यह कथन सही नहीं है।

15. बालक के व्यक्तिगत अध्ययन की मनोवैज्ञानिक विधि है–

(a) रैटिंग स्केल (b) प्रश्नावली
(c) केस स्टडी (d) प्रयोगात्मक विधि

DSSSB PRT

Ans : (c) बालक के व्यक्तिगत अध्ययन की मनोवैज्ञानिक विधि केस स्टडी है। केस अध्ययन में अन्वेषणकर्ता किसी एक परिस्थिति, घटना, समूह या व्यक्ति का गहराई से विश्लेषण करता है।

16. कक्षा का एक शरारती बालक अन्य छात्रों को परेशान करता है। एक अध्यापक को उसकी समस्या का कारण जानने हेतु किस विधि का प्रयोग करना चाहिए?

(a) सर्वेक्षण विधि (b) वैयक्तिक अध्ययन विधि
(c) प्रायोगिक विधि (d) पर्यवेक्षण विधि

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) वैयक्तिक अध्ययन विधि द्वारा किसी छात्र/व्यक्ति के गुण एवं दोष का अध्ययन कर सकते हैं। अगर किसी छात्र में व्यक्तिगत दोष है जिससे समस्या उत्पन्न होती है तो इस विधि द्वारा उसके दोष को दूर किया जा सकता है।

17. किसी बच्चे की वृद्धि और विकास का अध्ययन करने का सर्वोत्तम तरीका है-

(a) तुलनात्मक विधि (b) विकासात्मक विधि
(c) सांख्यिकी विधि (d) मनोविश्लेषणात्मक विधि

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : बच्चे की बुद्धि और विकास का अध्ययन करने का सर्वोत्तम तरीका विकासात्मक विधि है। विकासात्मक विधि में बच्चों के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, भाषात्मक तथा सामाजिक पक्षों का अध्ययन किया जाता है।

18. जब विकासवादी सामान्य परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं जो सभी मनुष्यों के लिए विशिष्ट है, तो इसे ..... के रूप में जाना जाता है–

(a) निर्देशात्मक विकास
(b) भावसूचक (आइडियोग्राफिक) विकास
(c) अनौपचारिक विकास
(d) औपचारिक विकास

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (a) जब विकासवादी सामान्य परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं, जो सभी मनुष्यों के लिए विशिष्ट है, तो इसे निर्देशात्मक विकास के रूप में जाना जाता है। इसके अनुसार हर बच्चा एक विशिष्ट व्यक्ति है और जीवन भर अलग–अलग समय पर और अलग–अलग तरीकों से विकसित होता है। निर्देशात्मक विकास का मतलब विकास के चरणों से है जो उस विशिष्ट आयु के अधिकांश बच्चों को प्राप्त होने की उम्मीद होती है।

19. एक निर्धारित समय की अवधि के लिए समान बच्चों के अध्ययन को _____ अध्ययन के रूप में जाना जाता हैं।

(a) अनुदैर्ध्य (लॉन्गीट्यूडनल)
(b) प्रतिनिध्यात्मक (क्रॉस सेक्शनल)
(c) अक्षांशीय (लैटीट्यूटडनल)
(d) प्रायोगिक

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : एक निर्धारित समय की अवधि के लिए समान बच्चों के अध्ययन को अनुदैर्ध्य अध्ययन के रूप में जाना जाता है। अनुदैर्ध्य अध्ययन एक बहुत ही दीर्घकालिक और श्रम-गहन विधि है, जिसमें समान विषयों का व्यवस्थित अनुसंधान शामिल है। यह उम्र और व्यक्तिगत परिवर्तनशीलता के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति के जीवन चक्र के चरणों को निर्धारित करने की अनुमति देता है। बी.जी. अनन्याव के अनुसार, अनुसंधान की अनुदैर्ध्य विधि अंततः व्यक्तिगत मोनोग्राफ और विषयों के मनोवैज्ञानिक चित्रों का एक सेट प्रदान करती है।

20. _____वह विधि है जिसमें किसी व्यक्ति को उसकी वृद्धि के दौरान, एक परिवर्तनशील अवधि के लिए समान व्यक्ति का प्रेक्षण और मापन करते हुए अध्ययन किया जाता है।

(a) मिश्रित विधि (b) अनुदैर्ध्य वृद्धि
(c) क्रॉस अनुभागीय (d) विस्तारित विधि

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) अनुदैर्ध्य वृद्धि वह विधि है जिसमें किसी व्यक्ति को उसकी वृद्धि के दौरान, एक परितर्वनशील अवधि के लिए समान व्यक्ति का प्रेक्षण और मापन करते हुए अध्ययन किया जाता है। अनुदैर्ध्य अध्ययन एक विकास अनुसंधान रणनीति है जिसमें कई वर्षों के दौरान बार–बार एक आयु वर्ग की जाँच की जाती है।

21. एक बच्चे की वृद्धि और विकास के अध्ययन की सर्वाधिक अच्छी विधि कौन-सी है?

(a) मनोविश्लेषण विधि (b) तुलनात्मक विधि
(c) विकासीय विधि (d) सांख्यिकी विधि

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) किसी बच्चे के विकास एवं वृद्धि का अध्ययन करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि विकासीय विधि है। हरलॉक के अनुसार - ''विकास की प्रक्रिया गतिशील होती है और विकासात्मक परिवर्तनों का उद्देश्य बालक में पर्यावरण के साथ समायोजन की योग्यता प्राप्त करना है।''

22. बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है–

(a) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन
(b) वातावरण का बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन
(c) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन
(d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) मनुष्य के जन्म से लेकर किशोरावस्था के अंत तक उनमें होने वाले जैविक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को 'बाल विकास' कहते हैं। तथा इसके अंतर्गत हम बालक के शारीरिक विकास, मानसिक एवं व्यवहारिक परिवर्तनों तथा वातावरण का बालक पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके साथ ही बालक के वैयक्तिक भिन्नता का भी अध्ययन किया जाता है।

23. 'सर्वाधिक उपयुक्त जीवित (Survival of the fittest) रहता है' का सिद्धान्त है

(a) लेमार्क का (b) हैरिसन का
(c) डार्विन का (d) मैक्डूगल का

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) चार्ल्स डार्विन ने क्रम विकास का सिद्धांत प्रतिपादित किया - 'क्रम विकास जैविक आबादी के आनुवांशिक लक्षणों के पीढ़ी दर पीढ़ी परिवर्तन को कहते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार जो प्राणी स्वयं को प्रकृति के अनुरूप नहीं ढ़ाल पाता उनका आस्तित्व समाप्त हो जाता है तथा केवल वे ही प्राणी जीवित रहते हैं जो स्वयं को प्रकृति के अनुरूप ढाल पाते हैं।

24. निम्नलिखित में से किस विधि का उपयोग किसी व्यक्ति के व्यवहार का उसकी समग्रता में अध्ययन करने के लिए किया जाता है?

(a) अवलोकन विधि (b) प्रयोगात्मक विधि
(c) सर्वेक्षण विधि (d) केस स्टडी विधि

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : किसी व्यक्ति के व्यवहार का समग्रता में अध्ययन करने के लिए केस स्टडी विधि का उपयोग किया जाता है। केस स्टडी से तात्पर्य किसी भी वस्तु, स्थिति का भली–भाँति बारीकी से जाँच पड़ताल करना व जानना है।

युंग के अनुसार, ''केस स्टडी किसी इकाई के जीवन का गवेषणा तथा विश्लेषण की पद्धति है चाहे वह एक व्यक्ति, परिवार, संस्था, सांस्कृतिक समूह या सम्पूर्ण समुदाय हो।''

25. अध्ययन को लागू करने के लिए अध्ययन किया जाता है, जिसमें से कुछ व्यक्तियों को कम से कम दो लगातार अवसरों पर मापा जाता है।

(a) विस्तारित अनुदैर्ध्य वृद्धि (b) अनुदैर्ध्य वृद्धि
(c) क्रॉस अनुभागीय विकास (d) मिश्रित अनुदैर्ध्य

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : मिश्रित अनुदैर्ध्य अध्ययन को लागू करने के लिए अनुदैर्ध्य डिजाइन अध्ययन किया जाता है, जिसमें से कुछ व्यक्तियों को कम से कम दो लगातार अवसरों पर मापा जाता है। मिश्रित अनुदैर्ध्य डिजाइन में छोटी अवधि के लिए कई कॉहर्ट्स का पालन किया जाता है, उनकी सटीकता, आयु, समय और सह–प्रभाव के कारण पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए तुलना की जाती है।

26. व्यवहारवादियों द्वारा प्रयुक्त अध्ययन की पद्धति थी :

(a) सर्वेक्षण (b) आत्मनिरीक्षण
(c) केस स्टडी (d) अवलोकन

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : व्यवहारवादियों द्वारा प्रयुक्त अध्ययन की पद्धति अवलोकन थी। जे.बी. वाटसन को व्यवहारवाद का जनक माना जाता है। इन्होंने अपना सिद्धांत अवलोकन करके प्रस्तुत किया। जैसे– थार्नडाइक ने बिल्ली के व्यवहार का तथा स्किनर ने चूहे के व्यवहार का अवलोकन करके अपने सिद्धांत प्रतिपादित किया। प्रमुख व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक– स्किनर, थार्नडाइक, पावलाव आदि हैं।

बाल विकास के सिद्धांत

27. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास का सिद्धांत नहीं है?

(a) विशिष्ट से सामान्य क्रियाओं का सिद्धान्त
(b) निरंतरता का सिद्धांत
(c) विविधता का सिद्धांत
(d) एकीकरण का सिद्धांत

(DSSSB ASSISTANT TEACHER EDUCATION DEP.)
Rajasthan TET - 2011 (VI-VIII)

Ans. (a) **: विकास के सिद्धान्त–**

(1) समान प्रतिमान का सिद्धान्त
(2) विकास की दिशा का सिद्धान्त
(3) भिन्नता का सिद्धान्त
(4) निरन्तरता का सिद्धान्त
(5) सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं का सिद्धान्त
(6) पूर्वानुमान का सिद्धान्त
(7) एकीकरण का सिद्धान्त
(8) व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त
(9) शरीर के विभिन्न अंगों के विकास की गति से भिन्नता का सिद्धान्त
(10) वर्तुलाकार बनाम रेखीय प्रगति का सिद्धान्त
(11) अन्तर्सम्बन्धित विकास का सिद्धान्त

28. एक बालक पहले पूरे हाथ को, फिर उँगलियों को तथा फिर हाथ और उँगलियों को एक साथ चलाना सीखता हैं यह उदाहरण वृद्धि और विकास के किस सिद्धांत को दर्शाता है?

(a) निरंतरता का सिद्धांत
(b) एकीकरण का सिद्धांत
(c) सामान्य से विशेष का सिद्धांत
(d) वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) विकास के एकीकरण सिद्धांत के अनुसार बालक पहले सम्पूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। उसके बाद वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है। उदाहरणार्थ– बालक पहले पूरे हाथ को, फिर ऊँगलियों को तथा फिर हाथ और ऊँगलियों को एक साथ चलाना सीखता है।

29. निम्नलिखित में से कौन सा विकास का सिद्धांत नहीं है?

(a) विकास आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों के द्वारा प्रभावित होता है।
(b) विकास सार्वभौमिक है तथा सांस्कृतिक संदर्भ इसे प्रभावित नहीं करते।
(c) विकास जीवनपर्यन्त होता है।
(d) विकास परिवर्त्य होता है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) विकास के सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

- विकास आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों के द्वारा प्रभावित होता है।
- विकास जीवनपर्यन्त होता है।
- विकास परिवर्त्य होता है।
- विकास में व्यक्तिगत भिन्नता होती है।
- विभिन्न अंगों के विकास में परस्पर सम्बन्ध तथा समन्वय रहता है।
- विकास एक निश्चित प्रतिमान का अनुसरण करता है।
- विकास की गति तथा दिशा में परिमार्जन सम्भव होता है।

अतः विकास सार्वभामिक है तथा सांस्कृतिक संदर्भ इसे प्रभावित नहीं करते, विकास के सिद्धांत के संदर्भ में यह कथन सही नहीं है।

30. निम्नलिखित में से कौन सा विकास का सिद्धांत नहीं है?

(a) विकास तुलनात्मक रूप से क्रमिक होता है।
(b) विकास समय के साथ धीरे–धीरे घटित होता है।
(c) विकास की सटीक गति एवं प्रकृति जन्म के समय ही निर्धारित हो जाती है।
(d) व्यक्ति अलग–अलग गति से विकास करते हैं।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : व्यक्ति का विकास निम्नलिखित सिद्धांतों का अनुसरण करता है–

- विकास की प्रक्रिया निरंतर अविराम गति से चलती रहती है।
- भिन्न–भिन्न व्यक्तियों के विकास की गति एवं दिशा भिन्न–भिन्न होती है।
- विकास की गति तथा दिशा में परिमार्जन सम्भव होता है।
- विकास तुलनात्मक रूप से क्रमिक होता है।
- विकास समय के साथ धीरे–धीरे घटित होता है।
- विकास रेखीय गति एवं स्थिर दर से न होकर चक्राकार ढंग से होता है।
- विकास अधोगति रूप में अर्थात् सिर से पैर की ओर होता है।

अतः विकास की सटीक गति एवं प्रकृति जन्म के समय ही निर्धारित हो जाती है, यह विकास का सिद्धांत नहीं है।

31. शरीर के केन्द्रीय भाग से परिधियों या अग्रांगों की ओर का विकास दर्शाता है–

(a) विकिरणीय विकास के सिद्धान्तों को
(b) विकेंद्रीकृत विकास के सिद्धान्तों को
(c) मध्य–बाह्य विकास के सिद्धान्तों को
(d) सोपानीय विकास के सिद्धान्तों को

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : मध्य–बाह्य विकास का सिद्धान्त या सामीप्यता विकास का सिद्धान्त (Principles of Proximodistal development) यह बतलाता है कि वृद्धि तथा विकास निकट से दूर की ओर के क्रम का अनुसरण करता है। इसके अनुसार पहले केन्द्र में स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है फिर केन्द्र से दूर स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है। यही कारण है कि बालक पहले हाथ व पैर की मांशपेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है तथा बाद में अंगुलियों के संचालन में निपुण होता है।

32. विशेष अवधि के दौरान, विकास प्रगति करता है लेकिन इस अवधि में समायोजन के लिये विराम करता है। यह विकास के निम्नलिखित किस नियम को अनुसारित करता है?

(a) समन्वय का सिद्धान्त
(b) निरन्तरता का सिद्धान्त
(c) चक्राकार प्रगति का सिद्धान्त
(d) समान-प्रतिमान का सिद्धान्त

Haryana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) चक्राकार प्रगति के सिद्धांत के अनुसार विकास रेखीय गति एवं स्थिर दर से न होकर चक्राकार ढंग से होता है। अर्थात् विकास प्रक्रिया के दौरान बीच–बीच में ऐसे अवसर आते हैं जबकि किसी क्षेत्र विशेष में विकास की पूर्व अर्जित स्थिति का समायोजन करने के लिए उस क्षेत्र की विकास प्रक्रिया लगभग विराम की स्थिति में आ जाती है।

33. निम्न में से विकास का कौन-सा सिद्धान्त गलत है?

(a) विकास में वैयक्तित्व विभिन्नता होती है
(b) विकास, संयोगों का परिणाम है
(c) यह एक सतत प्रक्रिया है
(d) यह पूर्वकथनीय है

Haryana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) विकास संयोगों का परिणाम नहीं होता है बल्कि वंशानुक्रम एवं वातावरण की अंतःक्रिया का परिणाम होता है। इसलिए विकास संयोगों का परिणाम है यह वाक्य गलत है।

34. प्रत्येक अधिगमकर्ता अद्वितीय होता है अर्थात्

(a) कोई भी दो अधिगमकर्ता उनकी योग्यताओं, रूचियों तथा कौशलों में समान नहीं होते
(b) अधिगमकर्ताओं में कोई भी उभयनिष्ठ गुण नहीं होते,न ही वे उभयनिष्ठ लक्ष्यों को बाँटते है
(c) सभी अधिगमकर्ताओं के लिये एक उभयनिष्ठ पाठ्चर्या संभव नहीं है
(d) एक विषमांगी कक्षा में सभी अधिगमकर्ताओं की क्षमता को विकसित करना असम्भव है

Haryana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (a) प्रत्येक बालक पर उसके वंशानुक्रम एवं वातावरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है जिसके कारण उनमे वैयक्तिक भिन्नता पायी जाती है बालकों में वैयक्तिक भिन्नता का तात्पर्य उनकी योग्यता रुचियों एवं कौशलो में भिन्नता होना है।

35. मस्तकाधोमुखी एवं निकट से दूर का क्रम किस क्रिया का अंग है?

(a) चेतना (b) विकास
(c) विवृद्धि (d) संशोधन।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (b) 'मस्तकाधोमुखी' एवं 'निकट से दूर का क्रम' विकास के प्रमुख सिद्धांत हैं। मस्तकाधोमुखी के अनुसार विकास की क्रिया सिर से आरम्भ होकर पैरों की ओर जाती है अर्थात विकास ऊपर से नीचे की ओर चलता है। निकट से दूर का अर्थ है विकास की गति केन्द्र से दूरवर्ती भागों की ओर चलती है।

36. बालक के शारीरिक व क्रियात्मक विकास की दिशा होती है:

(a) सिर से पैर तथा शरीर के बाहर से मध्य की ओर
(b) सिर से पैर तथा शरीर के मध्य से बाहर की ओर
(c) पैर से सिर तथा शरीर के बाहर से मध्य की ओर
(d) पैर से सिर तथा शरीर के मध्य से बाहर की ओर

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CGTET - 2011 (VI-VIII)

Ans: (b) विकास के मस्तकाधोमुखी सिद्धान्त के अनुसार विकास की क्रिया सिर से आरम्भ होकर पैरों तक जाती है तथा विकास के केन्द्र से निकट-दूर के सिद्धान्त के अनुसार विकास की गति केन्द्र से दूरवर्ती भागों की ओर चलती है।

37. बच्चे के विकास के शिरस्थ सिद्धान्त के अनुसार निम्न में से सत्य कथन है

(a) विकास सिर से पैर की ओर होता है
(b) विकास पैर से सिर की ओर होता है
(c) विकास मध्यभाग से परिधि की ओर होता है
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (a) शिरस्थ सिद्धांत के अनुसार- ''बच्चे का विकास सिर से पैर की ओर होता है।''

38. नरेश और मुकेश की आयु समान है। उनके सामाजिक एवं मानसिक विकास में काफी अन्तर है। यह विकास के निम्न सिद्धान्त के कारण होता है

(a) परिमार्जितता का सिद्धान्त
(b) निश्चित तथा पूर्वकथनीय प्रतिरूप का सिद्धान्त
(c) व्यक्तिगतता का सिद्धान्त
(d) समान-प्रतिमान का सिद्धान्त

Haryana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) दो व्यक्तियों में सामाजिक एवं मानसिक विकास में अन्तर उनके समाजिक पृष्ठभूमि, शिक्षण स्तर,परम्परागत एवं व्यक्तिगत रूचि के कारण होता है। जिसे व्यक्तिगतता का सिद्धांत कहते है जिससे व्यक्ति की अपनी पहचान होती है।

39. सीफैलोकौडल प्रवृत्ति के सिद्धान्त के अनुसार शारीरिक विकास होता है .....

(a) सिर से पांव की ओर
(b) निकटवर्ती से लेकर दूरवर्ती (दूरस्थ) अंगों तक
(c) पांव से सिर की ओर
(d) दूरस्था अंग से निकटवर्ती अंगों तक

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) सिफेलोकोडल (मस्तकाधोमुखी) सिद्धांत के अनुसार मानव शरीर का विकास सिर से पाँव की ओर होता है।

40. निम्न में से कौन–सा विकास का सिद्धांत नहीं है?

(a) विकास लम्बवत न होकर वर्तुलाकार
(b) विकास क्रमबद्ध होता है
(c) विकास निरंतर होता है
(d) विकास मशीनी प्रक्रिया है

DSSSB PRT
Bihar TET - 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) विकास के प्रमुख सिद्धांत है– निरन्तरता का सिद्धांत, व्यक्तिगतता का सिद्धांत, परिमार्जिता का सिद्धांत, वर्तुलाकार प्रगति का सिद्धांत, समान प्रतिमान का सिद्धांत, वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धांत आदि। किन्तु विकास एक मशीनी प्रक्रिया है यह उक्ति सही नहीं है।

41. ''विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।'' यह विचार किससे सम्बन्धित है?

(a) अन्तः सम्बन्ध का सिद्धांत
(b) निरन्तरता का सिद्धांत
(c) एकीकरण का सिद्धांत
(d) अन्तःक्रिया का सिद्धांत

DSSSB PRT
C TET - 2011 (I-V)

Ans : (b) विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है। यह कभी मन्द गत से चलती है तथा कभी तीव्र गति से चलती है और उसमें कोई भी विकास आकस्मिक ढंग से नहीं होता बल्कि धीरे–धीरे होता है। अतः ''विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है'' निरन्तरता के सिद्धांत से सम्बन्धित है।

42. संकल्पनाओं की व्यवस्थित प्रस्तुति विकास के निम्नलिखित किन सिद्धांतों के साथ संबंधित हो सकती है?

(a) विकास विषमजातीयता से स्वायत्तता की ओर अग्रसर होता है
(b) विद्यार्थी भिन्न दरों पर विकसित होते हैं
(c) विकास सापेक्ष रूप से क्रमिक होता है
(d) विकास के परिणाम स्वरूप वृद्धि होती है

DSSSB PRT
C TET - 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) संकल्पनाओं की व्यवस्थित प्रस्तुति 'विकास के क्रमिक सिद्धांत' के साथ सम्बन्धित हो सकती है। मानव विकास की प्रक्रिया गर्भावस्था से मृत्यु पर्यन्त निरंतर चलती रहती है लेकिन इस विकास का एक निश्चित क्रम होता है।

43. विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती है, किन्तु यह एक ..... नमूने को अनुगमन करती है।

(a) एड़ी–से–चोटी (b) अव्यवस्थित
(c) अप्रत्याशित (d) क्रमबद्ध और व्यवस्थित

DSSSB PRT
C TET - 2016 (I-V)

Ans : (d) विकास की गति एक व्यक्ति से दूसरे में भिन्न होती है, किन्तु यह एक क्रमबद्ध और व्यवस्थित नमूने का अनुगमन करती है। **डगलस एवं हालैण्ड** के अनुसार विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में विभिन्नता होती है और यह विभिन्नता विकास के सम्पूर्ण काल में यथावत् बनी रहती है।

44. निम्नलिखित में से कौनसा विकास का सिद्धान्त है?

(a) यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया नहीं है
(b) विकास की सभी प्रक्रियाएँ अंतःसम्बन्धित नहीं हैं

(c) सभी की विकास-दर समान नहीं होती है

(d) विकास हमेशा रेखीय होता है

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014
C TET 2012 (I-V)
DSSSB PRT

Ans: (c) विकास जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया होती है जो शारीरिक, मानसिक तथा संज्ञानात्मक होती है इससे बालक के संपूर्ण जीवन का निर्माण होता है परन्तु वैयक्तिक विभिन्नता के कारण यह विकास अलग-अलग लोगो में अलग-अलग गति से होता है।

45. निम्न में से कौन सा विकास का सिद्धान्त नहीं है?

(a) अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त

(b) निरन्तर विकास का सिद्धान्त

(c) परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त

(d) समान प्रतिमान का सिद्धान्त

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) निरन्तर विकास का सिद्धान्त, परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त, समान प्रतिमान का सिद्धान्त, वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धान्त, परिमार्जिता का सिद्धान्त, एकीकरण का सिद्धान्त, मस्तकाधोमुखी का सिद्धान्त, केन्द्र से निकट-दूर का सिद्धान्त, सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओ का सिद्धान्त, व्यक्तिगतता का सिद्धान्त, विकासक्रम का सिद्धान्त आदि विकास के सिद्धान्त हैं जबकि अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त अधिगम से सम्बन्धित है।

46. कौन–सा अभिवृद्धि और विकास का सिद्धांत नहीं है?

(a) समान प्रतिमान का सिद्धांत

(b) विशिष्ट के सामान्य क्रियाओं का सिद्धांत

(c) सतत विकास का सिद्धांत

(d) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धांत

DSSSB PRT

Ans : (b) अभिवृद्धि और विकास के सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

- समान प्रतिमान का सिद्धांत
- परस्पर सम्बन्ध का सिद्धांत
- निरन्तरता या सतत् विकास का सिद्धांत
- व्यक्तिगत विभिन्नतओं का सिद्धांत
- सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धांत
- केन्द्र से निकट–दूर का सिद्धांत
- मस्तकाधोमुखी का सिद्धांत
- एकीकरण का सिद्धांत
- परिमार्जिता का सिद्धांत आदि।

47. विकास एक प्रक्रिया है–

(a) खंडित (b) निरंतर

(c) पूर्ण (d) अपूर्ण

DSSSB PRT

Ans : (b) विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो जन्म से मृत्यु तक निरंतर चलती रहती हैं। **स्किनर** के अनुसार ''विकास प्रक्रियाओं की निरंतरता का सिद्धांत केवल इस तथ्य पर बल देता है कि व्यक्ति में कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता।''

48. एक अध्यापक/अध्यापिका ने पाया कि एक विद्यार्थी वर्ग बनाने में कठिनाई अनुभव कर रहा है। उसने अनुमान लगाया कि वह हीरे का चित्र बनाने में भी कठिनाई अनुभव करेगा। उसने निम्न में से किस सिद्धांत पर आधारित होकर यह अनुमान लगाया?

(a) विकास निरन्तरीय होता रहता है।

(b) अलग–अलग लोगों के लिए विकास की प्रक्रिया भी अलग–अलग होती है।

(c) विकास एक व्यवस्थित क्रम में होने की प्रवृत्ति से सम्बद्ध है।

(d) विकास की प्रक्रिया एक उत्परिवर्तनीय प्रक्रिया है।

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) विकास एक व्यवथित क्रम में होता है बालक पहले आसान चीजों को सीखता है फिर वह कठिनता की ओर बढ़ता है। उदाहरण के लिए बालक पहले सीधी रेखा खींचना सीखता है फिर वर्ग बनाना और उसके बाद हीरे का चित्र बनाना सीखता है।

49. इनमें से कौन–सा विकास का एक सिद्धांत नहीं है?

(a) विकास संशोधनयोग्य होता है

(b) विकास केवल संस्कृति से शासित और निर्धारित होता है

(c) विकास जीवनपर्यंत होता है

(d) विकास वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों से प्रभावित होता है

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (b) **गैरिसन तथा अन्य के अनुसार** ''जब बालक विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है, तब हम उसमें कुछ परिवर्तन देखते हैं। अध्ययनों ने सिद्ध कर दिया है कि ये परिवर्तन निश्चित सिद्धांतों के अनुसार होते हैं। इन्हीं को विकास का सिद्धांत कहा जाता है जिसमें से कुछ निम्न हैं–

(1) विकास संशोधन योग्य होता है

(2) विकास जीवन पर्यंत होता है

(3) विकास वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों से प्रभावित होता है।

- विकास केवल संस्कृति से शासित और निर्धारित नहीं होता है।

50. निम्नलिखित में से कौन सा वृद्धि और विकास के सिद्धांतों से संबंधित नहीं है?

(a) निरन्तरता का सिद्धांत (b) वर्गीकरण का सिद्धांत

(c) समन्वय का सिद्धांत (d) वैयक्तिकता का सिद्धांत

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) वृद्धि एवं विकास सतत चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक को असहाय शिशु से आत्मनिर्भर, प्रौढ़ बनाती है। विकास के सिद्धांत निम्नवत हैं जिससे विकास की प्रक्रिया नियंत्रित होती है-

1. निरन्तरता का सिद्धांत
2. समन्वय का सिद्धांत (एकीकरण का सिद्धांत)
3. वैयक्तिकता का सिद्धांत

4. वंशानुक्रम व वातावरण के अन्तःक्रिया का सिद्धांत
5. विकास क्रम का सिद्धांत

वर्गीकरण का सिद्धांत विकास का सिद्धांत नहीं होता है।

51. इनमें से कौन-सा बाल विकास का एक सिद्धान्त है?

(a) विकास परिपक्वन तथा अनुभव के बीच अन्योन्यक्रिया की वजह से घटित होता है।
(b) अनुभव विकास का एकमात्र निर्धारक है।
(c) विकास प्रबलन तथा दण्ड के द्वारा सुनिश्चित किया जाता है।
(d) विकास प्रत्येक बच्चे की गति का सही ढंग से अनुमान लगा सकता है।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (a) एक क्रिया का अपने में पूर्ण होना जिसके आधार पर नवीन क्रिया सीखी जा सके 'परिपक्वता' कहलाती है। परिपक्वता अनुभव व अधिगम के फलस्वरूप आती है और मनुष्य का विकास होता है। इसलिए कहा जाता है कि विकास परिपक्वन व अनुभव के बीच अन्योन्यक्रिया की वजह से घटित होता है।

52. निम्नलिखित में से कौन-सा बाल विकास का एक सिद्धान्त नहीं है?

(a) सभी विकास एक क्रम का पालन करते हैं
(b) विकास के सभी क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं
(c) सभी विकास परिपक्वन तथा अनुभव की अंतः क्रिया का परिणाम होते हैं
(d) सभी विकास तथा अधिगम एक समान गति से आगे बढ़ते हैं।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (d) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है। यह कथन विकास के वैयक्तिक भिन्नता के सिद्धांत को प्रदर्शित करता है।

53. विकास ..... से ..... की ओर बढ़ता है–

(a) सामान्य → विशिष्ट (b) जटिल → कठिन
(c) विशिष्ट → सामान्य (d) साधारण → आसान

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (a) विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर बढ़ता है। उदाहरणार्थ– नवजात शिशु अपने शरीर के किसी एक अंग का संचालन करने से पूर्व अपने शरीर का संचालन करता है और किसी विशेष वस्तु की ओर इशारा करने से पूर्व अपने हाथों को सामान्य रूप से चलाता है।

54. विकास के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन है?

(a) विकासात्मक परिवर्तन एक सीधी रेखा में आगे जाते हैं
(b) विकास जन्म से किशोरावस्था तक आगे की ओर बढ़ता है और फिर पीछे की ओर
(c) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है
(d) विकास जन्म से किशोरावस्था तक बहुत तीव्र गति से होता है और उसके बाद रुक जाता है

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (c) विकास भिन्न व्यक्तियों में भिन्न गति से होता है। यह कथन विकास के वैयक्तिक भिन्नता के सिद्धांत को प्रदर्शित करता है।

55. निम्नलिखित विकास के सिद्धांतों का उनके सही वर्णन से मिलान कीजिए–

	सिद्धांत		**वर्णन**
A.	समीप-दूराभिमुख दिशा	(i)	विभिन्न बच्चे भिन्न-भिन्न दर से बढ़ते हैं
B.	शिरःपदाभिमुख दिशा	(ii)	सिर से पैर का क्रम
C.	अंतर्वैयक्तिक भिन्नताएँ	(iii)	किसी अकेले बच्चे में विकास की दर विकास के एक क्षेत्र की अपेक्षा दूसरी में भिन्न हो सकती है
D.	अंतरावैयक्तिक भिन्नताएँ	(iv)	शरीर के केन्द्र से बाहर की ओर
		(v)	सरल से जटिल की ओर वृद्धि

(a) A B C D — iv ii i iii
(b) A B C D — v ii i iii
(c) A B C D — ii iv i iii
(d) A B C D — ii iv iii i

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (a)
समीप-दूराभिमुख दिशा – शरीर के केन्द्र से बाहर की ओर
शिरः पदाभिमुख शिक्षा – सिर से पैर का क्रम
अंतर्वैयक्तिक भिन्नताएँ – विभिन्न बच्चे भिन्न-भिन्न दर से बढ़ते हैं।
अंतरावैयक्तिक भिन्नताएँ – किसी अकेले बच्चे में विकास की दर विकास के एक क्षेत्र की अपेक्षा दूसरी में भिन्न हो सकती है।

56. विकास के सिद्धांतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ग़लत है?

(a) विकास एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है जिसका ठीक-ठाक मापन हो सकता है।
(b) विकास परिपक्वन और अधिगम पर आधारित होता है।
(c) विकास वंशानुगतता और वातावरण के बीच सतत अन्योन्यक्रिया से होता है।
(d) प्रत्येक बच्चा विकास के चरणों से गुजरता है फिर भी बच्चों में वैयक्तिक भिन्नताएँ बहुत होती हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) विकास का अर्थ व्यापक है शारीरिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक आदि विकास भी होता है। विकास के परिवर्तनों को सिर्फ अवलोकित किया जा सकता है जैसे आंतरिक परिवर्तनों एवं योग्यताओं को केवल अवलोकित किया जा सकता है इसका मापन नहीं किया जा सकता है। क्योंकि विकास गुणात्मक परिवर्तन है न कि मात्रात्मक या परिमाणात्मक।

57. विकास का शिर:पदाभिमुख दिशा सिद्धान्त व्याख्या करता है कि विकास इस प्रकार आगे बढ़ता है–

(a) सामान्य से विशिष्ट कार्यों की ओर
(b) भिन्न से एकीकृत कार्यों की ओर
(c) सिर से पैर की ओर
(d) ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) शिर:पदाभिमुख (मस्तकाधोमुखी) दिशा सिद्धांत के अनुसार शारीरिक विकास सिर से पैर की दिशा में होता है। प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर यह दिखाया गया है कि प्रसूतिकाल तथा जन्म के बाद के समय में बच्चों का शारीरिक विकास तथा मानसिक विकास दो प्रकार के नियमों से निर्देशित होता है – मस्तकाधोमुखी नियम तथा निकट दूर नियम। इन दोनों नियमों को मिलाकर एक साथ विकासात्मक दिशा का नियम कहा जाता है।

58. वैयक्तिक शिक्षार्थी एक-दूसरे से ..... में भिन्न होते हैं।

(a) विकास-क्रम
(b) विकास की सामान्य क्षमता
(c) बुद्धि एवं विकास के सिद्धान्तों
(d) विकास की दर

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (d) वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धान्त कहता है कि प्रत्येक बालकों व बालिकाओं के विकास का अपना एक स्वयं का स्वरूप होता है। इनके सामाजिक, शारीरिक, मानसिक आदि का विकास दर भिन्न-भिन्न होता है। इसीलिए समवयस्कों में भी वैयक्तिक विभिन्नता होती है।

59. पूर्व-विद्यालय में पहली बार आया बच्चा मुक्त रूप से चिल्लाता है। दो वर्ष पश्चात् वही बच्चा जब प्रारंभिक विद्यालय में पहली बार जाता है, तो अपना तनाव चिल्लाकर व्यक्त नहीं करता अपितु उसके कन्धे व गर्दन की पेशियाँ तन जाती हैं उसके इस व्यावहारिक परिवर्तन का क्या सैद्धान्तिक आधार हो सकता है?

(a) विकास क्रमिक प्रकार से होता है
(b) विकास निरन्तरीय होता रहता है
(c) अलग-अलग लोगों में विकास भी भिन्न रूप से होता है
(d) विभेद व एकीकरण विकास के लक्षण हैं

C TET Paper - I (Class I-V) 16 Feb 2014

Ans : (d) **किसी पूर्व–** विद्यालय में पहली बार आया बच्चा मुक्त रूप से चिल्लाता है। दो वर्ष पश्चात् वही बच्चा जब प्रारम्भिक विद्यालय में पहली बार जाता है, तो अपना तनाव चिल्लाकर व्यक्त नहीं करता अपितु उसके कन्धे व गर्दन की पेशियां तन जाती हैं। उसके इस व्यावहारिक परिवर्तन का सैद्धान्तिक आधार विभेद व एकीकरण विकास के लक्षण हैं। अर्थात उस बच्चे के विभेद (विश्लेषण, जाँच, पदच्छेद) तथा एकीकरण (एकीभाव, संघीकरण) के विकास के लक्षण के अनुसार है।

60. मानव विकास कुछ विशेष सिद्धान्तों पर आधारित है। निम्नलिखित में से कौन-सा मानव विकास का सिद्धान्त नहीं है?

(a) सामान्य से विशिष्ट (b) प्रतिवर्ती
(c) निरंतरता (d) आनुक्रमिकता

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (b) प्रतिवर्ती मानव विकास का सिद्धान्त नहीं है। 'प्रतिवर्ती' शब्द का आशय है 'पुनः प्रारम्भ करना' और मानव विकास एक बार परिपक्वता प्राप्त करने पर पुनः नहीं प्रारम्भ होता है।

61. प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट है। इसका अर्थ है कि –

(a) सभी शिक्षार्थियों के लिए एक समान पाठ्यचर्या संभव नहीं है
(b) एक विषमरूपी कक्षा में शिक्षार्थियों की क्षमताओं को विकसित करना असंभव है
(c) कोई भी दो शिक्षार्थी अपनी योग्यताओं, रुचियों और प्रतिभाओं में एकसमान नहीं होते
(d) शिक्षार्थियों में न तो कोई समान विशेषताएँ होती हैं और न ही उसके लक्ष्य समान होते हैं

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (c) प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट है इसका आशय यह है कि प्रत्येक शिक्षार्थी किसी न किसी विषय में योग्य होगा अर्थात् कोई भी दो शिक्षार्थी अपनी योग्यता, रुचि और प्रतिभा में एक समान नहीं हो सकते हैं।

62. सीमा हर पाठ को बहुत जल्दी सीख लेती है जबकि लीना उसे सीखने में ज्यादा समय लेती है। यह विकास के ..... सिद्धांत को दर्शाता है।

(a) वैयक्तिक भिन्नता (b) अन्तःसंबंध
(c) निरंतरता (d) सामान्य से विशिष्ट की ओर

DSSSB PRT
C TET (VI–VIII) 2012

Ans : (a) सीमा हर पाठ को बहुत जल्दी सीख लेती है जबकि लीना उसे सीखने में ज्यादा समय लेती है। यह विकास के 'वैयक्तिक भिन्नता' सिद्धांत को दर्शाता है। वैयक्तिक भिन्नता के कारण विद्यार्थियों के सीखने की गति, दर या प्रकृति में अंतर हो सकता है।

63. विकास हमेशा बच्चे की उम्र से मेल खाता है। यह ..... के सिद्धांत के कारण होता है।

(a) निरंतरता (b) एकसमान पैटर्न
(c) एकीकरण (d) वैयक्तिक भिन्नता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : विकास हमेशा बच्चे की उम्र से मेल खाता है। यह एक समान प्रतिमान के सिद्धांत के कारण होता है क्योंकि प्रत्येक जाति, चाहे वह मानवजाति हो या पशु जाति, अपनी जाति के अनुरूप विकास के प्रतिमान का अनुसरण करती है। उदाहरणार्थ– संसार के प्रत्येक भाग में मानव जाति के शिशुओं के विकास का प्रतिमान एक ही है और उसमें किसी प्रकार का अंतर होना सम्भव नहीं है।

64. घसीट के चलने से पहले बच्चा अपना सिर उठाने में सक्षम होता है। ऐसा निम्न के संचालन के कारण होता है–

(a) भेदभाव सिद्धांत
(b) एकीकरण सिद्धांत
(c) सेफलोकॉडल सिद्धांत
(d) प्रॉक्सीमोडिस्टल सिद्धांत

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) विकास के मस्तकाधोमुखी क्रम (cephalocaudal sequence) के अंतर्गत जन्म–पूर्व जीवन में शारीरिक वृद्धि अधोगति (Head to foot) का अनुसरण करती है। इसका अर्थ है कि सबसे पहले मस्तिष्क क्षेत्र, फिर धड़ क्षेत्र तथा सबसे अंत में पैर क्षेत्र में शरीर के विभिन्न अंगों का विकास होता है। जन्म के उपरान्त भी शारीरिक विकास में यही क्रम बना रहता है। इसीलिए घसीट के चलने से पहले बच्चा अपना सिर उठाने में सक्षम होता है।

65. बच्चे के विकास की प्रक्रिया के दौरान,

(a) विशिष्ट कार्य, सामान्य कार्यों के बाद किये जाते हैं।
(b) सामान्य और विशिष्ट कार्य दोनों एक साथ होते हैं।
(c) सामान्य कार्य, विशिष्ट कार्यों के बाद किये जाते हैं।
(d) सामान्य और विशिष्ट कार्य एक-दूसरे पर निर्भर नहीं हैं।

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : बच्चे के विकास की प्रक्रिया के दौरान, विशिष्ट कार्य, सामान्य कार्यों के बाद किये जाते हैं। दूसरे शब्दों में विकास के सभी पक्षों में चाहे वह गति सम्बन्धी हो या मानसिक हो, बालक पहले सामान्य प्रतिक्रिया करता है बाद में विशिष्ट प्रतिक्रिया करता है अर्थात् सामान्य प्रतिक्रियाओं से वह विशिष्ट प्रतिक्रिया की ओर बढ़ता है।

66. रीढ़ की हड्डी हृदय से पूर्व विकसित होती है। यह निम्न प्रवृत्ति के संचालन के कारण होता है :

(a) सामान्य से विशिष्ट तक
(b) सिफैलोकॉडल
(c) प्रोक्सीमॉडिस्टल
(d) भाग से संपूर्ण तक (पार्ट टू होल)

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : रीढ़ की हड्डी हृदय से पूर्व विकसित होती है। यह (Proximodistal Tendency) सामीप्यता की प्रवृत्ति के संचालन के कारण होता है। सामीप्यता की प्रवृत्ति के अनुसार, वृद्धि तथा विकास निकट से दूर की ओर के क्रम का अनुसरण करता है। इसके अनुसार पहले केन्द्र में स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है फिर केन्द्र से दूर स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है। यही कारण है कि बालक पहले हाथ व पैर की मांसपेशियों पर नियंत्रण करना सीखता है तथा बाद में अंगुलियों के संचालन में निपुण होता है।

67. सीफैलोकौडल प्रवृत्तियों के अनुसार विकास का अग्रसरण कैसे होता है?

(a) सिर से पैर की ओर (b) पास से दूर के अंगों में
(c) पैर से सिर की ओर (d) दूर से पास के अंगों में

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) सीफैलोकौडल (Cephalocaudal) या मस्तकाधोमुखी क्रम के अनुसार सबसे पहले मस्तिष्क क्षेत्र फिर धड़ क्षेत्र तथा सबसे अंत में पैर क्षेत्र में शरीर के विभिन्न अंगों का विकास होता है। जन्म के उपरान्त भी शारीरिक विकास में यह क्रम बना रहता है। बालक शरीर के ऊपरी अंगों अर्थात् सिर का नियंत्रण करना सबसे पहले सीखता है, फिर हाथों का नियंत्रण करना सीखता है, फिर धड़ का नियंत्रण करना सीखता है तथा सबसे अंत में शरीर के निम्न भाग अर्थात् पैरों का नियंत्रण करना सीख पाता है।

68. विकासात्मक दिशा का नियम सम्मिलित करता है–

(a) मस्तकाधोमुखी नियम
(b) निकट से दूर का नियम
(c) (a) और (b) दोनों
(d) न तो (a) न ही (b)

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) विकास दिशा के नियम को विकास क्रम का नियम भी कहा जाता है। इस नियम के अंतर्गत मस्तकाधोमुखी नियम तथा निकट से दूर का नियम, दोनों सम्मिलित होता है। मस्तकाधोमुखी विकास क्रम का अर्थ है कि सबसे पहले मस्तिष्क क्षेत्र फिर धड़ क्षेत्र तथा सबसे अंत में पैर क्षेत्र में शरीर के विभिन्न अंगों का विकास होता है। इसी प्रकार निकट से दूर के विकास क्रम के अनुसार पहले केन्द्र में स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है फिर केन्द्र से दूर स्थित अंगों की रचना व नियंत्रण होता है।

69. ''विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।'' यह कथन विकास के किस सिद्धांत से सम्बन्धित है?

(a) अन्तःक्रिया का सिद्धांत
(b) एकीकरण का सिद्धांत
(c) अन्तः सम्बन्ध का सिद्धांत
(d) निरन्तरता का सिद्धांत

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (d) :

- **निरन्तरता का सिद्धांत–**''विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है।''
- **अन्तःसम्बन्ध का सिद्धांत–** बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि पहलुओं के विकास में परस्पर सम्बन्ध होता है।
- **एकीकरण का सिद्धांत–** ''विकास में पूर्ण से अंगों की ओर, एवं अंगों से पूर्ण की ओर गति निहित रहती है। विभिन अंगों के एकीकरण की गतियों की सरलता को सम्भव बनाता है।''
- **अन्तःक्रिया का सिद्धांत–** बालक का विकास न केवल वंशानुक्रम के कारण और न केवल वातावरण के कारण, वरन् दोनों की अन्तःक्रिया के कारण होता है।

EXAM POINTS

- "दो व्यक्ति समान नहीं होते, परन्तु सभी बालकों में विकास का क्रम समान होता है।" यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है– **गैरोल**
- "विकास की प्रक्रिया पूर्व निश्चित दिशा में आगे बढ़ती है" यह कथन बाल विकास के ..... का अनुसरण करता है– **विकास की दिशा का सिद्धान्त**
- बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक होते हैं– **आन्तरिक एवं बाह्य दोनों कारक**
- बाल विकास का जो सिद्धान्त यह बताता है कि बालकों का विकास उनके ..... के अनुरूप होता है– **वैयक्तिक अन्तर का सिद्धान्त**
- बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि उसके ..... की जानकारी शिक्षकों को हो– **व्यवहार**
- एक भावात्मक रूप से संतुलित छात्र– **कक्षा-कक्ष में अपने सहपाठियों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखता है**
- यदि एक विद्यार्थी कोई प्रश्न पूछता है जिसका उत्तर आपके पास नहीं है, आप क्या करेंगे– **प्रश्न का जवाब ढूँढ़कर अगले दिन उसे बताएँगे**
- एक बालक के व्यक्तित्व के मापन की सर्वाधिक वस्तुनिष्ठ विधि है– **प्रक्षेपीय विधि**
- विद्यार्थियों को दिए जाने वाले परामर्श की सर्वाधिक उपयोगिता यह है कि– **उनमें आत्मविश्वास की अभिवृद्धि होती है**
- शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति है– **विध्यात्मक विज्ञान**
- शिक्षक की भूमिका है– **ज्ञान निर्माण का सरलीकरण करना**
- शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए– **विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार करना**
- एक उत्तम कक्षा शिक्षक– **छात्रों को पारस्परिक संवाद के लिए प्रोत्साहित करता है।**
- शिक्षा प्रभावी हो जाती है, यदि– **छात्र केन्द्रित अनुदेशन और अन्तः क्रियात्मक विधियों का उपयोग किया जाए**
- सामान्यतः छात्रों में पठन-पाठन के लिए विशिष्टताएँ होती हैं– **अधिगम में क्रियाशीलता, छात्रों में सीखने की योग्यता, स्वयं क्रिया करके नवीन अनुभवों द्वारा ज्ञान निर्माण करना**
- एक छात्र को मार्गदर्शन के लिए एक अध्यापक को जानना अत्यावश्यक है– **अधिगम की कठिनाई को, उसके व्यक्तित्व को, उसके घर के वातावरण को**
- शिक्षकों को शिक्षण विधियों को अभ्यास में लाना चाहिए– **अन्तःक्रियात्मक विधियां**
- कक्षा का एक शरारती बालक अन्य छात्रों को परेशान करता है। एक अध्यापक को उसकी समस्या का कारण जानने हेतु किस विधि का प्रयोग करना चाहिए– **वैयक्तिक अध्ययन विधि**
- पठन-पाठन में शिक्षकों को करना चाहिए– **जिज्ञासु प्रवृत्ति को बढ़ावा देना**
- एक चिन्तनशील शिक्षक कक्षा-कक्ष में ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है कि छात्र– **छात्रों और शिक्षकों में पारस्परिक अन्तःक्रिया को प्रोत्साहन मिले**
- अनुकूलीय एवं सकारात्मक व्यवहार के लिए छात्र में जीवन कौशल आवश्यक है– **निर्णय लेने की योग्यता, भावनाओं और तनाव के साथ सामंजस्य**
- शिक्षकों की भूमिका है– **छात्र केन्द्रित क्रिया आधारित अन्तःक्रियात्मक अधिगम का सृजन करना**
- शिक्षार्थी जो पहले सीख चुके हैं उसकी पुनरावृत्ति और प्रत्यास्मरण में शिक्षार्थियों की मदद करना महत्वपूर्ण है– **नई जानकारी को पूर्व जानकारी से जोड़ना सीखने को समृद्ध बनाता है**
- विद्यार्थियों के सीखने में जो रिक्तियाँ रह जाती हैं उनके निदान के बाद ..... होना चाहिए– **समुचित उपचारात्मक कार्य**
- शिक्षार्थियों को आत्म नियमन की ओर संकेत करता है– **स्व-अनुशासन और नियन्त्रण**
- सृजनात्मक उत्तरों के लिए आवश्यक है– **मुक्त उत्तर वाले प्रश्न**
- बच्चे के विकास के सिद्धान्त को समझना शिक्षक की सहायता करता है– **शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम शैलियों को प्रभावी रूप से सम्बोधित करने में**
- 'बच्चे के उचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए उसका स्वस्थ्य शारीरिक विकास एक महत्वपूर्ण पूर्व आवश्यकता है' यह कथन– **सही है क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों के साथ अन्तः सम्बन्धित है**
- बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को ..... भूमिका निभानी चाहिए– **अग्रोन्मुखी**
- 'मन का मानचित्रण' सम्बन्धित है– **बोध (समझ) बढ़ाने की तकनीक से**
- एक शिक्षक अपने लोकतान्त्रिक स्वभाव के कारण विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में कहीं भी बैठने की अनुमति देता है। कुछ शिक्षार्थी एक साथ बैठते हैं और चर्चा करते हैं या सामूहिक पठन करते हैं। कुछ चुपचाप बैठकर अपने आप पढ़ते हैं। एक अभिभावक को यह पसन्द नहीं आता। इस स्थिति से निपटने का बेहतर तरीका है– **अभिभावकों को शिक्षा पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए और शिक्षक के साथ समस्या पर चर्चा करनी चाहिए**
- प्राथमिक स्तर पर एक शिक्षक में सबसे महत्वपूर्ण विशेषता होनी चाहिए– **धैर्य और दृढ़ता**
- शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या शब्दावली ..... की ओर संकेत करती है– **विद्यालय का सम्पूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं**
- एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों की क्षमताओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। इस उद्देश्य के सम्बद्ध क्षेत्र है– **शिक्षा मनोविज्ञान**
- श्वेता अकसर घर ज्यादा बात नहीं करती, लेकिन विद्यालय में वह काफी बात करती है। यह दर्शाता है कि– **उसके विचारों को विद्यालय में मान्यता मिलती है**
- एक बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है, उचित रूप से इसका अर्थ है कि– **वह अधिक जिज्ञासु है**
- एक बच्चा प्रायः सहपाठियों के साथ झगड़ता है, आप क्या करेंगे– **आप कारण पता लगाने का प्रयास करेंगे तथा उसे परामर्श देंगे**
- शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए– **अध्यापन विषय एवं बाल-मनोविज्ञान का**

- शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से बच्चे अपने ज्ञान का सृजन करते हैं– **स्वयं**
- परामर्श का उद्देश्य है– **बच्चे को समझना, कमियों के कारण का पता करना, बच्चे को समायोजन में सहायता प्रदान करना**
- शिवानी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है, शिक्षक की प्रतिक्रिया होनी चाहिए– **शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझकर देना**
- बच्चे की जिज्ञासा शांत करनी चाहिए– **तत्काल जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गयी है**
- बाल मनोविज्ञान के आधार पर सर्वोत्तम कथन है– **प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है**
- आप अनपढ़ माता-पिता के बच्चे को अंग्रेजी सिखाना चाहते हैं– **मातृभाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे**
- एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है– **सहयोग की भावना को**
- शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य सम्बन्ध होना चाहिए– **स्नेह, विश्वास, सम्मान का**
- बच्चों में नैतिकता की स्थापना के लिए सर्वोत्तम मार्ग है– **शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना**
- मधु गणित में कमजोर है, एक अच्छे अध्यापक की दृष्टि में उसके गणित में कमजोर होने का कारण हो सकता है– **गणित शिक्षण की शिक्षण विधि त्रुटिपूर्ण है**
- उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं को किस आवश्यक तत्व में परिवर्तन समझने लगते हैं– **द्रव्यमान संख्या और क्षेत्र**
- सकारात्मक दण्ड का उदाहरण है– **मित्रों के द्वारा उपहास**
- प्राथमिक विद्यालयों में बालकों के लिए बेहतर मानते हैं– **वीडियो अनुरूपण, प्रदर्शन, स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव**
- बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होता है– **7 से 12 वर्ष तक**
- जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, उनका भण्डार गृह है– **इदम्**
- श्यामपट्ट को शिक्षण साधन सामग्री के किस समूह में अन्तर्मुक्त किया जा सकता है? **दृश्य साधन**
- शिक्षण कुशलता से सम्बन्धित है– **श्यामपट्ट पर लिखना, प्रश्नों को हल करना, प्रश्न पूछना**
- एक अभिभावक आपसे विद्यालय में मिलने के लिए कभी नहीं आता है, आप– **स्वयं उनसे मिलने जाएंगे**
- वह स्तर जिसमें बच्चा किसी वस्तु एवं घटना के बारे में तार्किक रूप से सोचना शुरू करता है, कहा जाता है– **मूर्त क्रियात्मक अवस्था**
- विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलना उचित है– **यह सहयोग एवं शारीरिक सन्तुलन का विकास करेगा**
- परिवार एक साधन है– **अनौपचारिक शिक्षा का**
- एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण है– **विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करना**
- आप एक अति सक्रिय छात्र को कैसे सही दिशा में लाएँगे– **उसके सक्रियशीलता को सही दिशा देकर**
- एक शिक्षक को साधन सम्पन्न होना चाहिए, इसका अर्थ है– **उनको अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए**
- यदि एक विद्यार्थी कक्षा में भाग लेने से संकोच करता रहेगा, तो आप– **उससे केवल तब प्रश्न पूछेंगे जब वह उनके उत्तर देने के लिए उत्साहित हो**
- अपने विद्यार्थियों को समझने के लिए एक शिक्षक को अच्छा जानकार होना चाहिए– **बाल मनोविज्ञान का, बच्चों को समझने की प्रवृत्ति का, विषय-वस्तु के प्रति विद्यार्थियों के मत का**
- बाल विकास की परिभाषा का अध्ययन क्षेत्र है जो– **किसी बच्चे का संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा दूसरे सामर्थ्यों का क्रमिक विकास के लिए उत्तरदायी होना**
- 'मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।' यह किसने कहा– **स्किनर**
- शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन-सा माना जाता है– **1920**
- एक बच्चे की वृद्धि और विकास की सर्वाधिक अच्छी विधि है– **विकासीय विधि**
- संकल्पनाओं की व्यवस्थित प्रस्तुति विकास के किन सिद्धान्तों के साथ सम्बन्धित हो सकती है– **विकास विषमजातीयता से स्वायत्तता की ओर अग्रसर होता है**
- अच्छी स्मृति की विशेषताएँ हैं– **शीघ्र पुनःस्मरण, शीघ्र पहचानना, अच्छी धारणा**
- शैशवावस्था के लिए उत्तम शिक्षण विधि है– **मॉण्टेसरी विधि, खेल विधि, किण्डर गार्टन विधि**
- बाल विकास में– **प्रक्रिया पर बल है, वातावरण और अनुभव की भूमिका पर बल है, गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन होता है**
- बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है– **बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन, वातावरण का बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन, वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन**
- प्राथमिक स्तर पर मूल्यों की शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि है– **अध्यापक के व्यवहार में मूल्य स्थापन**
- मूल्यों के वर्गीकरण में सम्मिलित नहीं है– **येन-केन प्रकारेन धनार्जन का मूल्य**
- समान आयु के बच्चों में भी आकृति, योग्यता, स्वभाव, रुचि, प्रवृत्ति और अन्य बातों में बहुत अन्तर होता है। इस सन्दर्भ में विद्यालय की भूमिका है– **सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चे की अपनी क्षमताओं के अनुसार विकास के अवसर मिले**
- मनोलैंगिक विकास में सुप्तावस्था का वर्ष अन्तराल सम्बन्धित है– **6 से यौवन तक**
- बच्चे के विकास सिद्धान्तों को समझना शिक्षक की सहायता करना है– **शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम-शैलियों को प्रभावी रूप से सम्बोधित करने से**
- प्राथमिक/शिक्षक के लिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि– **वह बच्चों के व्यवहार को समझने में शिक्षक की सहायता करता है**
- बालक के शारीरिक व क्रियात्मक विकास की दिशा होती है– **सिर से पैर तथा शरीर के मध्य से बाहर की ओर**

04.

वंशानुक्रम और वातावरण

वंशानुक्रम का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. आनुवंशिकता को एक .....सामाजिक संरचना माना जाता है।

(a) प्राथमिक (b) द्वितीयक

(c) गतिक (d) स्थायिक

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (d) अनुवांशिकता को एक स्थायी सामाजिक संरचना माना जाता है क्योंकि अनुवांशिकता वंश दर वंश आगे बढ़ती रहती है।

2. माता-पिता से वंशजो में स्थानान्तरित होने वाले लक्षणों को कहा जाता है

(a) पर्यावरण (b) जीन

(c) आनुवंशिकता (d) होम्योस्टैसिस

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (c) माता-पिता द्वारा बच्चों में जो गुण स्थानान्तरित होते हैं उस प्रक्रिया को आनुवांशिकता कहते हैं तथा माता-पिता से बच्चों में आनुवंशिक गुणों का संचरण गुणसूत्रों के माध्यम से होता है।

3. व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की–

(a) नाममात्र की भूमिका है (b) महत्वपूर्ण भूमिका है

(c) अपूर्वानुमेय भूमिका है (d) आकर्षक भूमिका है।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (b) व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वंशानुक्रम ही निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति के व्यक्तिव और बुद्धि को कितना अधिक विकसित किया जा सकता है।

4. आनुवंशिकता ..... गुणों का गठन है।

(a) वातावरण (b) मानसिक

(c) आनुवांशिक (d) मनोवैज्ञानिक

DSSSB PRT

Ans : (c) आनुवंशिकता, आनुवांशिक गुणों का संगठन है जो बच्चे को अपने माता–पिता या पूर्वजों से गर्भावस्था में ही प्राप्त होता है।

5. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) ''वंशानुक्रम माता-पिता से सन्तान में गुणों का संचरण है''

(b) ''विकास प्राणी और उसके पर्यावरण की अन्तर्क्रिया का परिणाम है''

(c) ''वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का शोधन है''

(d) ''माता-पिता की शारीरिक और मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में संचरित होना वंशानुक्रम है''

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) ''वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का शोधन है।'' यह कथन सत्य नहीं है क्योंकि वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है न कि शोधन है।

6. .....जन्मजात वैयक्तिक गुणों का योगफल है।

(a) समानता (b) निरन्तरता

(c) वंशानुक्रम (d) युयुत्सा

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) आनुवंशिकता का विकास शारीरिक एवं मानसिक गुणों के संचरण से होता है जो माता-पिता से बच्चों में जीन्स के माध्यम से प्रवेश करता है। इसी के द्वारा वंशानुक्रम का निर्धारण भी होता है। इसलिए कहा जाता है कि वंशानुक्रम जन्मजात वैयक्तिक गुणों का योगफल है। **वी.एन. झा** के अनुसार- ''वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है।''

7. इस पर अत्यधिक वाद-विवाद होता है कि क्या लड़कों एवं लड़कियों में योग्यताओं का विशिष्ट समूह उनके आनुवंशिक घटकों के कारण होता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित में से आप सबसे अधिक किससे सहमत हैं?

(a) लड़कियों को सेवाभाव के लिए सामाजिक रूप से तैयार किया जाता है जबकि लड़कों को रोने जैसा संवेग प्रदर्शित करने के लिए हतोत्साहित किया जाता है।

(b) यौवनारम्भ के बाद लड़के और लड़कियाँ एक साथ नहीं खेल सकते हैं क्योंकि उनकी अभिरुचियाँ पूर्णतया विपरीत होती हैं।

(c) सभी लड़कियों में कला-विषयों के लिए अंतर्निहित प्रतिभा होती है जबकि लड़के आक्रामक खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए आनुवांशिक रूप से तैयार होते हैं।

(d) लड़के सेवाभाव वाले नहीं हो सकते हैं क्योंकि वे जन्म से इस प्रकार के होते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015

Ans: (c) सभी लड़कियों में कला विषयों के लिए अन्तर्निहित प्रतिभा होती है। जबकि लड़के आक्रामक खेलों में बेहतर प्रदर्शन के लिए आनुवांशिक रूप से तैयार होते हैं।

8. निम्नलिखित में से कौन सा एक सही क्रम है?

(a) अण्डाणु-शुक्राणु, ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज

(b) ब्लास्टोसिस्ट, अण्डाणु-शुक्राणु, युग्मनज

(c) ब्लास्टोसिस्ट, युग्मनज, अण्डाणु-शुक्राणु

(d) अण्डाणु-शुक्राणु, युग्मनज, ब्लास्टोसिस्ट

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans (d) सही क्रम होगा- अण्डाणु-शुक्राणु, युग्मनज, ब्लास्टोसिस्ट

यह प्रक्रिया निषेचन से सम्बन्धित है जिसमें गर्भाधान क्रिया के दौरान सर्वप्रथम अण्डाणु एवं शुक्राणु आपस में मिलते हैं, इनके मिलने से युग्मनज का निर्माण होता है तत्पश्चात् ब्लास्टोसिस्ट क्रिया के द्वारा शिशु का निर्माण शुरू होता है।

9. आनुवंशिकता को ..... सामाजिक संरचना माना जाता है।

(a) गत्यात्मकता (b) स्थिर

(c) प्राथमिक (d) गौण

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (b) वंशानुक्रम या आनुवांशिक गुण प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता-पिता से प्राप्त होता है जो कि स्थिर होता है। वातावरणीय प्रभाव से इन गुणों को दिशा व दशा मिलती है इसलिए वातावरण सामाजिक संरचना का गत्यात्मक पहलू है जबकि वंशानुक्रम स्थिर पहलू है।

वंशानुक्रम के नियम व सिद्धांत

10. निम्न में से कौन-सा बुद्धि का सिद्धान्त नहीं है?

(a) एक-तत्त्व सिद्धान्त (b) द्वि-तत्त्व सिद्धान्त
(c) प्रत्यागमन सिद्धान्त (d) बहुतत्त्व सिद्धान्त

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (c) बुद्धि के एक-तत्व सिद्धान्त का समर्थन बिने, टरमैन तथा स्टर्न जैसे मनोवैज्ञानिको ने, द्वितत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन स्पीयरमैन ने तथा बहु-तत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन हावर्ड-गार्डनर ने किया था। जबकि प्रत्यागमन का सिद्धान्त अनुवांशिकता से सम्बन्धित है।

11. मानव विकास का अध्ययन करने के लिए आनुवंशिक विधि का उपयोग किया जा सकता है–

(a) क्षैतिज (b) लम्बरूप
(c) क्षैतिज और लम्बरूप दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Ans. (c) **:** मानव विकास का अध्ययन करने के लिए क्षैतिज एवं लम्बवत् दोनों आनुवंशिक विधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

12. किस प्रकार का सिद्धांत यह प्रस्तुत करता है कि विकास उन चीजों पर निर्भर करता है जो जीन के माध्यम से वंशागत हैं?

(a) एक नियतिवाद सिद्धांत (b) एक सामाजिक सिद्धांत
(c) एक प्राकृतिक सिद्धांत (d) एक पालन-पोषण सिद्धांत

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : प्राकृतिक सिद्धान्त यह प्रस्तुत करता है कि विकास उन चीजों पर निर्भर करता है जो जीन (genes) के माध्यम से वंशागत हैं। दूसरे शब्दों में जीन वंशागत एवं प्राकृतिक होता है जो व्यक्ति को अपने पूर्वजों से उपहार स्वरूप प्राप्त होता है। प्राकृतिक सिद्धांत यह मानता है कि यही वंशागत विशेषताएँ किसी व्यक्ति के विकास को निर्धारित करती है।

13. कभी–कभी बच्चे, माता–पिता दोनों से अलग होते हैं। ऐसा _____ के नियम के कारण होता है।

(a) पृथक्करण (b) विविधता
(c) प्रभुत्व (d) प्रतिगमन

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) कभी–कभी बच्चे, माता–पिता दोनों से अलग होते हैं। ऐसा विविधता के नियम के कारण होता है। वंशानुक्रम के विविधता के नियम के अनुसार, बच्चे पूर्णरूपेण अपने माता–पिता के समान नहीं होते हैं वरन् उनमें अपने माता–पिता से कुछ अंतर भी होते हैं। ऐसा भी देखा जाता है कि एक ही माता–पिता के कई बालक शारीरिक तथा मानसिक गुणों में पर्याप्त अंतर रखते हैं। इन विभिन्नताओं का कारण माता–पिता के उत्पादक कोषों के वंशसूत्रों का भिन्न–भिन्न संयोगों में संयुक्त होना है।

14. क्या बुद्धिमान माता-पिता (अभिभावक) के बच्चे (संतानें) सदैव पढ़ाई में तेज होते हैं?

(a) हाँ
(b) नहीं
(c) मनोविज्ञान इस संबंध में कोई उत्तर नहीं दे सकता
(d) यह ईश्वर पर निर्भर है

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) बुद्धिमान माता-पिता के बच्चे सदैव पढ़ाई में तेज हो यह अनिवार्य नहीं है क्योंकि बालक के विकास पर उसके वंशानुक्रम के साथ–साथ वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। अतः वंशानुक्रम और वातावरण दोनों के अनुकूल होने पर ही बुद्धिमान माता–पिता की संतान भी बुद्धिमान होंगे।

वंशानुक्रम के विशेषक

15. निम्नलिखित में से कौन-सा मुख्य रूप से आनुवांशिकता सम्बन्धी कारक है?

(a) समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति अभिवृत्ति
(b) चिंतन पैटर्न
(c) आँखों का रंग
(d) सामाजिक गतिविधियों में भागीदारिता

(DSSSB Assistant Primary Teacher)
C TET (VI-VIII) 2012

Ans. (c) **:** आनुवांशिकता के संरचनात्मक विशेषता के अंतर्गत के वे विशेषक आते हैं जो व्यक्ति के शरीर की संरचना से सम्बन्धित होते हैं। जैसे– शरीर अथवा अंगों की मापन आकृति, बालों का रंग, बालों की आकृति, बालों का विन्यास, नेत्रों का रंग, त्वचा का रंग व दशा, दाँत के टेनटीन व ऐनेमल आदि संरचनात्मक लक्षण आदि विशेषताएँ आनुवंशिकता से सम्बन्धित है।

वंशानुक्रम के निर्धारक एवं प्रक्रिया

16. वंशानुक्रम के सन्दर्भ में गलत कथन निम्नलिखित में से कौन सा है?

(a) वंशानुक्रम बालक का लिंग निर्धारित करता है
(b) यह शारीरिक संगठन में महत्वपूर्ण योगदान देता है
(c) यह जुड़वाँ बालकों के जन्म में योगदान देता है
(d) इसमें रुचि, अभिवृत्ति, पसन्द, नापसन्द तथा मस्तिष्क की संवेदात्मक भावनाएँ समावेशित होती है।

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (d) बालक की रुचि, अभिवृत्ति, पसंद, नापसंद तथा मस्तिष्क की संवेदात्मक भावनाएं, सामाजिक वातावरण के कारण उत्पन्न होती हैं तथा परिवर्तित होती है। वंशानुक्रम से बालक का रंग–रूप, लिंग, शारीरिक गठन, स्वास्थ्य आदि निर्धारित होता है।

17. संज्ञानात्मक विकास में वंशक्रम निर्धारित करता है–

(a) मस्तिष्क जैसी शारीरिक संरचना के मूलभूत स्वभाव को
(b) शारीरिक संरचना के विकास को
(c) सहज प्रतिवर्ती क्रियाओं के अस्तित्व को
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) संज्ञानात्मक विकास में वंशानुक्रम मस्तिष्क जैसी शारीरिक संरचना के मूलभूत स्वभाव को निर्धारित करता है।

18. लिंग का निर्धारण होता है

(a) माता द्वारा (b) पिता द्वारा
(c) माता-पिता द्वारा (d) इनमें से कोई नहीं

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

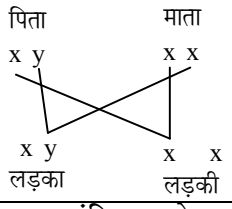
Ans: (b) ग्रेगर जानमेण्डल जिन्हें अनुवांशिकता का पिता कहा जाता है, इनके अनुसार लिंग का निर्धारण बालक के पिता के द्वारा होता है, क्योंकि माता में XX क्रोमोसोम पाये जाते हैं। जबकि पिता में XY क्रोमोसोम पाये जाते हैं।

19. लड़का पैदा होने के लिए उत्तरदायी क्रोमोसोम्स हैं

(a) XX (b) XP
(c) XY (d) CX

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) लड़का पैदा होने के लिए XY क्रोमोसोम उत्तरदायी होते हैं। मानव में सामान्यतः 23 जोड़े (23× 2= 46) गुण सूत्र पाये जाते हैं जिसमें से 22 जोड़े (22 × 2 = 44) गुण सूत्र महिलाओं और पुरुषों में समान होते हैं। लेकिन 23वाँ जोड़ा अर्थात (45, 46) दोनों में भिन्न होता है। यह महिलाओं में XX तथा पुरुषों में XY होता है इस गुणसूत्र के कारण मानव में लिंग का निर्धारण होता है।



20. विकास पर आनुवांशिकता के प्रभाव की सीमा का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से किसके द्वारा होता है?

(a) आनुवंशिकता निर्धारित करती है कि कोई कितना विकसित होगा।
(b) आनुवंशिकता निर्धारित करती है कि किसी को कितना विकसित किया जा सकता है।
(c) (a) और (b) दोनों
(d) या तो (a) या (b)

DSSSB PRT

Ans : (b) **कोलेसनिक** ने लिखा है ''जिस सीमा तक व्यक्ति की शारीरिक रचना को उसके पित्रैंक निश्चित करते हैं उस सीमा तक उसके मस्तिष्क एवं स्नायु–संस्थान की रचना, उसके अन्य लक्षण उसकी खेल–कूद सम्बन्धी कुशलता और उसकी गणित सम्बन्धी योग्यता ये सभी बाते उसके आनुवंशिकता पर निर्भर होती है, किन्तु ये बाते उसके वातावरण पर कहीं अधिक निर्भर होती है।'' इस कथन से स्पष्ट है कि अनुवांशिकता निर्धारित करती है कि किसी को कितना विकसित किया जा सकता है।

21. यदि ..... गुणसूत्रों का मिलान हो तो लड़के का जन्म होता है–

(a) YY (b) XY
(c) XX (d) BY

DSSSB PRT

Ans : (b) निषेचित अण्ड में जब X-X वंशसूत्रों का संयोजन होता है तब संतान लड़की होती है इसके विपरीत निषेचित अण्ड में जब X-Y वंशसूत्रों का संयोजन होता है तब संतान लड़का होता है। अण्ड को X वंशसूत्र से विभाजित शुक्राणु निषेचित करेगा अथवा Y वंशसूत्र से युक्त शुक्राणु निषेचित करेगा यह बात पूर्णतया संयोग पर निर्भर करती है।

22. मुख्यता आनुवंशिकी द्वारा निर्धारित विकास प्रक्रिया है–

(a) अधिगम (b) परिपक्वता
(c) सामाजीकरण (d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB PRT

Ans : (b) प्रत्येक व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक विकास काफी सीमा तक उसके आनुवंशिकी पर निर्भर करता है। निःसंदेह वातावरणीय दशाएँ अर्थात पालन पोषण भी व्यक्ति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। फिर भी पालन–पोषण व्यक्ति में उपस्थित पित्रैक को नहीं बदल सकता है। इसलिए आनुवंशिकी द्वारा परिक्वता का निर्धारण होता है।

23. वह अवस्था जो कि माता के 21वें गुणसूत्र जोड़े के अलग न हो पाने के कारण होती है, कहलाती है–

(a) डाउन्स सिन्ड्रोम (b) क्लीनफेल्टर सिन्ड्रोम
(c) टर्नर सिन्ड्रोम (d) विल्सन सिन्ड्रोम

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (a) डाउन सिण्ड्रोम एक अनुवांशिक या क्रोमोसोम जनित विकार है और ये एक जीवन पर्यंत स्थिति है जो शरीर में क्रोमोसोम्स का एक अतिरिक्त जोड़ा बन जाने से होती है। सामान्य रूप से शिशु 46 क्रोमोसोम्स के साथ पैदा होते हैं, 23 क्रोमोसोम्स का एक सेट पिता से और 23 क्रोमोसोम्स का एक सेट माता से ग्रहण करते हैं। डाउन सिण्ड्रोम से पीड़ित शिशु में एक अतिरिक्त 21वीं क्रोमोसोम आ जाता है जिससे उसके शरीर में क्रोमोसोम की संख्या बढ़कर 47 हो जाती है, ये आनुवांशिक परिवर्तन शारीरिक विकास और मस्तिष्क के विकास के गति को धीमा कर देती है और शिशु में मद्धम से औसत बौद्धिक विकलांगता का कारण बनती है।

24. सामान्य संयुक्त कोशिका में गुणसूत्रों के जोड़े होते हैं

(a) 22 (b) 23
(c) 24 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

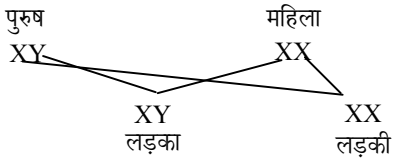
Ans : (b) सामान्य मानव कोशिका में गुणसूत्रों की संख्या 46 होती है जो 23 के जोड़े में होते हैं। इनमें से 22 गुणसूत्र नर और मादा में समान और अपने-अपने जोड़े के समजात होते हैं इन्हे सम्मिलित रूप से समजात गुणसूत्र (Autosomes) कहते है, 23वे जोड़े के गुणसूत्र स्त्री और पुरुष में समान नहीं होते जिन्हे विषमजात गुणसूत्र (Heterosomes) कहते हैं।

25. सामान्य पुरुष में XY गुणसूत्र होते है जबकि सामान्य महिला में..... होते हैं।

(a) XX गुणसूत्र (b) XYY गुणसूत्र
(c) XXX गुणसूत्र (d) X गुणसूत्र

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (a) सामान्य पुरुष में XY गुणसूत्र होते है जबकि सामान्य महिला में XX गुणसूत्र होता है। इन गुणसूत्रों से लिंग का निर्धारण किया जाता है-



26. वंशानुगत कारक बच्चे के ..... के समय से अपना प्रभाव शुरू करते हैं।

(a) विकास (b) वृद्धि
(c) गर्भाधान (d) प्रारंम्भिक वर्ष

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : गर्भाधान (अर्थात् शुक्राणु के द्वारा अण्डकोष का निषेचन) मानव जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। गर्भाधान के समय ही कालान्तर में जन्म लेने वाली संतान के सम्पूर्ण वंशानुक्रम (Heredity Endowment) यौनभेद (Gender Determination) तथा संतानों की संख्या (Number of off springs) आदि का निर्धारण हो जाता है।

27. निम्नलिखित में से कौन सा विकार एक अतिरिक्त इक्कसीवें गुणूसत्र के कारण होता है?

(a) फ़ेनिलकीटोनुरिया
(b) डाउन सिंड्रोम
(c) टर्नर का सिंण्ड्रोम
(d) दरांती कोशिका अरक्तता (सिकेल सेल एनीमिया)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : सामान्य रूप से शिशु 46 क्रोमोसोम (गुणसूत्रों) के साथ पैदा होता है। 23 क्रोमोसोम का एक सेट शिशु अपने पिता से और 23 क्रोमोसोम का एक सेट अपनी माँ से ग्रहण करता है। लेकिन डाउन सिण्ड्रोम तब होता है जब माता या पिता अतिरिक्त क्रोमोसोम का योगदान करते हैं। डाउन सिण्ड्रोम से पीड़ित शिशु में एक अतिरिक्त 21वाँ क्रोमोसोम आ जाता है, जिससे उसके शरीर में क्रोमोसोम्स की संख्या बढ़कर 47 हो जाती है। यह सामान्यतः 35 वर्ष से अधिक की महिलाओं के गर्भवती होने पर देखा जाता है।

28. किसी की आनुवंशिकता _____ के समय पर निर्धारित की जाती है।

(a) परिपक्वता (b) गर्भधारण
(c) विकास (d) जन्म

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) किसी की आनुवंशिकता गर्भधारण के समय ही निर्धारित हो जाती है। गर्भधान अर्थात् शुक्राणु के द्वारा अण्डकोष का निषेचन वास्तव में मानव जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। गर्भाधान के समय ही कालान्तर में जन्म लेने वाली संतान के सम्पूर्ण वंशानुक्रम (Heredity Endowment) यौन निर्धारण (Gender Determination) तथा संतानों की संख्या (No. of Offspring) का निर्धारण हो जाता है। वंशानुक्रम के वास्तविक वाहक पित्रैक होते हैं जो वंशसूत्रों में स्थिर रहते हैं।

वातावरण का अर्थ एवं विशेषताएँ

29. प्राकृतिक पर्यावरण में सम्मिलित होता है

(a) वंशानुक्रम (b) जैव-अजैव
(c) परिवार (d) पशु

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (b) पर्यावरण का तात्पर्य परि+आवरण है अतः वे सभी तत्व जिनसे हम चारों तरफ से घिरे है वे पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं। इन तत्वों में जैव एवं अजैव दोनों सम्मिलित होते हैं। अतः प्राकृतिक पर्यावरण में जैव-अजैव दोनों सम्मिलित रहते हैं।

वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतर्क्रिया

30. आनुवंशिकता और पर्यावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) विकास के कुछ पहलू आनुवंशिकता और कुछ अन्य पर्यावरण से अधिक प्रभावित होते हैं।
(b) सीखने और प्रदर्शन करने की एक बच्चे की क्षमता जीनों द्वारा पूरी तरह से निर्धारित की जाती है।
(c) अच्छी देखभाल और पौष्टिक आहार बच्चे के किसी भी जन्मजात विकार को दूर कर सकता है।
(d) पर्यावरण केवल बच्चे के भाषा-विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : आनुवंशिकता और पर्यावरण की भूमिका के बारे में सबसे अच्छा कथन यह हो सकता है कि, विकास के कुछ पहलू आनुवंशिकता और कुछ अन्य पर्यावरण से अधिक प्रभावित होते हैं। जैसे- आनुवंशिकता हमें क्षमताएं प्रदान करता है तो पर्यावरण उन क्षमताओं को विकसित होने के लिए उचति वातावरण प्रदान करता है इसीलिए लैण्डिस ने कहा भी है कि ''आनुवंशिकता हमें विकसित होने की क्षमताएं प्रदान करता है। इन क्षमताओं के विकसित होने के अवसर हमें वातावरण से मिलते हैं, आनुवंशिकता हमें कार्यशील पूँजी देता है और परिस्थिति/वातावरण हमें इसको निवेश करने के अवसर प्रदान करती हैं।''

31. मानव विकास के संदर्भ में आनुवंशिकता तथा पर्यावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है?

(a) परिवेशीय प्रभाव पूर्ण रूप से एक व्यक्ति के विकास को निर्धारित करते हैं।
(b) मानव-विकास को न तो आनुवंशिकता और न ही पर्यावरण प्रभावित करते हैं।
(c) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों एक जटिल पारस्परिक क्रिया के रूप में मानव विकास को प्रभावित करते हैं।
(d) वैयक्तिक विभिन्नताओं का एकमात्र कारण आनुवंशिकता है।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण दोनों एक जटिल पारस्परिक क्रिया के रूप में मानव विकास को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति जो कुछ भी सोचता है, करता है अथवा अनुभव करता है, वह उसके आनुवंशिकता एवं पर्यावरण की परस्पर अंतर्क्रिया का परिणाम होता है। वंशानुक्रम या आनुवंशिकता विकसित होने के लिए क्षमताएँ प्रदान करता है, जबकि पर्यावरण इन क्षमताओं को विकसित होने के अवसर प्रदान करता है।

32. विद्यार्थी का विकास निर्भर करता है–

(a) वंशानुक्रम पर
(b) वातावरण पर
(c) वंशानुक्रम एवं वातावरण पर
(d) उपरोक्त में से कोई भी नहीं

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) विद्यार्थी का विकास उसके वंशानुक्रम एवं वातावरण के अंतःक्रिया पर निर्भर करता है और इसी कारण विद्यार्थियों में वैयक्तिक भिन्नता देखने को मिलती है।

33. मनुष्य में वैयक्तितक विभिन्नता के निर्धारक किससे संबंधित होते है?

(a) वातावरण के साथ अंतर्क्रिया
(b) वंशानुक्रम में विभिन्नता
(c) वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों में विभिन्नता
(d) वंशानुक्रम व वातावरण में अंतर्क्रिया

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) मनुष्य की वैयक्तिक भिन्नता वंशानुक्रम एवं वातावरण की अंतर्क्रिया पर आधारित होती है। वैयक्तिक भिन्नता का तात्पर्य व्यक्ति की सोच, विचार एवं उनके कार्यो की भिन्नता से होती है। समान वातावरण में रहने वाले व्यक्ति में भी भिन्नता देखने को मिलती है तथा वंशानुक्रम के अनुसार व्यक्ति में भिन्नता होना सर्व स्वीकार्य है अतः वंशानुक्रम एवं वातावरण में अन्तर्क्रिया के द्वारा वैयक्तिक भिन्नता का निर्धारण किया जा सकता है।

34. वंशानुक्रम तथा वातावरण के सम्बन्ध का व्यक्ति की वृद्धि पर प्रभाव निम्न में से एक के अनुसार होता है

(a) वंशानुक्रम व्यक्ति को प्रभावित करता है
(b) वातावरण व्यक्ति को प्रभावित करता है
(c) वंशानुक्रम + वातावरण व्यक्ति को प्रभावित करता है
(d) वंशानुक्रम × वातावरण व्यक्ति को प्रभावित करता है

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (d) वंशानुक्रम × वातावरण का तात्पर्य वंशानुक्रम एवं वातावरण को मध्य अन्तर्क्रिया। व्यक्ति का विकास वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तर्क्रिया से ही निर्धारित होता है।

35. मानव जाति में वे कौन-से वैयक्तिक निर्धारक तत्व होते हैं, जो मानव जाति की विविधता को बताते हैं?

(a) पर्यावरण का अन्तर
(b) आनुवांशिकता का अन्तर
(c) आनुवांशिकता व पर्यावरण की अन्तर्क्रिया
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) आनुवांशिक एवं पर्यावरणीय अन्तर्क्रिया के फलस्वरूप वैयक्तिक भिन्नता उत्पन्न होती है जो मानव जाति के विविधता को बताते है।

36. बालक का विकास परिणाम है :

(a) वंशानुक्रम का
(b) वातावरण का
(c) वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतः प्रक्रिया का
(d) आर्थिक कारकों का

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (c) बालक का विकास बालक के वंशानुक्रम तथा उसके वातावरण की अन्तः प्रक्रिया का परिणाम होता है। वातावरण या वंशानुक्रम में से किसी में भी असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होने पर बालक का विकास भी संतुलित नहीं हो पाता है।

37. मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है?

(a) अभिभावक एवं अध्यापक का
(b) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का
(c) वंशक्रम एवं वातावरण का
(d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) मानव विकास वंशानुक्रम एवं वातावरण के अन्तःक्रिया का परिणाम होता है तथा इसी के द्वारा मानव विकास का निर्धारण होता है।

38. मानव व्यक्तित्व परिणाम है–

(a) केवल आनुवांशिकता का
(b) पालन–पोषण और शिक्षा का
(c) आनुवंशिकता और वातावरण की अंतःक्रिया का
(d) केवल शीघ्र सीखते हैं

DSSSB PRT
UKTET 2016 (I-V)
C TET 2012 (I-V)

Ans : (c) मानव व्यक्तित्व आनुवंशिकता और वातावरण की अंतः प्रक्रिया का परिणाम होता है। **लैण्डिस के अनुसार–** ''आनुवंशिकता हमें विकसित होने की क्षमताएँ प्रदान करता है। इन क्षमताओं के विकसित होने के अवसर हमें वातावरण से मिलते है, आनुवंशिकता हमें कार्यशील पूँजी देता है और परिस्थिति हमें इसको निवेश करने के अवसर प्रदान करती है।''

39. एक 6 वर्ष की लड़की खेलकूद में असाधारण योग्यता का प्रदर्शन करती है। उसके माता–पिता दोनों ही खिलाड़ी हैं, उसे नित्य प्रशिक्षण देते हैं। बहुत संभव है कि उसकी क्षमताएं निम्नलिखित दोनों के बीच परस्पर प्रतिक्रिया का परिणाम होंगी।

(a) वृद्धि और विकास
(b) स्वास्थ्य और परिक्षण
(c) अनुशासन और पौष्टिकता
(d) आनुवांशिकता और पर्यावरण

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (d) व्यक्ति का विकास वंशानुक्रम और पर्यावरण के बीच अंतर्क्रिया का परिणाम होता है। वंशानुक्रम विकसित होने के लिए क्षमताएँ प्रदान करता है जबकि वातावरण इन क्षमताओं को विकसित होने के अवसर प्रदान करता है। इसलिए यदि एक खिलाड़ी माता–पिता अपने बच्चे को खेल का प्रशिक्षण देते हैं तो वह बच्चा खेल के क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करता है।

40. बच्चे के विकास में आनुवंशिकता और वातावरण की भूमिका के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा सत्य है?

(a) आनुवंशिकता और वातावरण दोनों एक बच्चे के विकास में 50.50% योगदान रखते हैं
(b) समवयस्कों और पित्रेक (genes) का सापेक्ष योगदान योगात्मक नहीं होता
(c) अनुवांशिकता और वातावरण एकसाथ परिचालित नहीं होते
(d) सहम रुझान वातावरण से सम्बन्धित है जबकि वास्तविक विकास के लिए अनुवांशिकता जरूरी है

DSSSB PRT
C TET - 2013 (I-V)

Ans : (b) बच्चे का विकास वातावरण और आनुवांशिकता के बीच अंतःक्रिया का परिणाम होता है। बच्चे के विकास में दोनों का योगदान महत्वपूर्ण होता है किन्तु समवयस्कों और पित्रैक (Genes) का सापेक्ष योगदान योगात्मक नही बल्कि गुणात्मक होता है।

41. मानवीय विकास में अनुवांशिकता एवं परिवेश की भूमिका के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन समुचित है?

(a) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आनुवांशिकता एवं परिवेश का सापेक्षिक प्रभाव परिवर्तनशील है।

(b) भारत सरकार की विभेदात्मक क्षति पूरकता संबंधी नीति मानवीय विकास में 'प्रकृति' की भूमिका पर आधारित है।

(c) परिवेश की भूमिका लगभग स्थिर–सी रहती है जबकि आनुवांशिका का प्रभाव परिवर्तित हो सकता है।

(d) 'व्यवहारवाद' के सिद्धांत प्रायः मानवीय विकास में 'प्रकृति' की भूमिका पर आधारित है।

DSSSB PRT
C TET - 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आनुवांशिकता एवं परिवेश का सापेक्षिक प्रभाव परिवर्तनशील होता है। मानव का विकास इन दोनों के बीच अंतःक्रिया का परिणाम होता है।

42. 'प्रकृति–पोषण' विवाद में 'प्रकृति' से क्या अभिप्राय है?

(a) जैविकीय विशिष्टताएँ या वंशानुक्रम सूचनाएँ

(b) एक व्यक्ति की मूल वृत्ति

(c) भौतिक और सामाजिक संसार की जटिल शक्तियाँ

(d) हमारे आस–पास का वातावरण

DSSSB PRT
C TET-2015 (I-V)

Ans : (a) प्रकृति–पोषण विवाद में प्रकृति से तात्पर्य है जैविकीय विशिष्टताएँ या वंशानुक्रम सूचनाएँ। प्रकृति–पोषण विवाद में व्यक्तियों के जन्मजात सहजगुणों और पालन–पोषण के समय मिले वातावरण के प्रभाव की सम्पूरकता और विरोधाभासों के सम्बन्ध में विवेचना किया जाता है।

43. 'प्रकृति–पालन–पोषण' वाद–विवाद के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन–सा आपको उपयुक्त प्रतीत होता है?

(a) बच्चा एक खाली स्लेट के समान होता है जिसका चरित्र परिवेश के द्वारा किसी भी आकार में ढाला जा सकता है

(b) बच्चे आनुवांशिक रूप से उस तरफ प्रवृत्त होते हैं जिस तरफ होना चाहिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वे किस प्रकार के परिवेश में पल–बढ़ रहे हैं

(c) एक बच्चे के व्यवहार का निर्धारण करने में परिवेशीय प्रभावों का बहुत कम महत्त्व होता है, वह प्राथमिक रूप में आनुवंशिक रूप से निर्धारित होता है

(d) वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिन्न रूप से एक–दूसरे से गुँथे हुए हैं और दोनों विकास को प्रभावित करते हैं

DSSSB PRT
C TET - 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) प्रकृति एवं पालन–पोषण वाद–विवाद के संदर्भ में हम यही कहना चाहेंगे कि वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिन्न रूप से एक–दूसरे से गुँथे हुए हैं और दोनों विकास को प्रभावित करते हैं।

44. आर्जव तर्क देता है कि भाषा विकास व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति से प्रभावित होता है जबकि सोनाली महसूस करती है कि यह परिवेश से प्रभावित होता है। आर्जव और सोनाली के बीच यह चर्चा किस विषय में है?

(a) चुनौतीपूर्ण तथा संवेदनशील भावना

(b) स्थिरता तथा अस्थिरता पर बहस

(c) सतत् तथा असतत् अधिगम

(d) प्रकृति तथा पालन–पोषण पर वाद–विवाद

DSSSB PRT
UP TET - 2015 (I-V)

Ans : (d) आर्जव तर्क देता है कि भाषा विकास व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति से प्रभावित होता है जबकि सोनाली महसूस करती है कि यह परिवेश से प्रभावित होता है। यह चर्चा प्रकृति तथा पालन–पोषण पर वाद–विवाद है। प्रकृति बनाम पालन–पोषण (Nature versus nurture) मनोविज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान की शब्दावली और अवधारणा है, जिसका प्रयोग व्यक्तियों के जन्मजात सहज गुणों और उसकी परवरिश और पालन पोषण के दौरान मिले पर्यावरण और महौल के प्रभावों के द्वारा विकसित व्यवहार के लक्षणों की आपसी समपूरकता और विरोधाभासों का विवेचन किया जाता है।

45. ''किसी व्यक्ति को आकार देने में वातावरण के घटकों की कोई भूमिका नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवांशिक संरचना से निर्धारित होती है।'' यह कथन

(a) ठीक है, क्योंकि बहुत–से शोध यह सिद्ध करते हैं कि आनुवांशिक पदार्थ की व्यक्ति के विकास की भविष्यवाणी करता है

(b) ठीक है, क्योंकि वातावरण के घटक किसी व्यक्ति की वृद्धि और विकास में कम योगदान करते हैं

(c) ठीक नहीं है, क्योंकि बहुत–से शोध यह सिद्ध करते हैं कि विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ सकता है

(d) ठीक है, क्योंकि किसी व्यक्ति की आनुवांशिक संरचना बहुत प्रबल होती है

DSSSB PRT
C TET - 2016 (VI-VIII)

Ans : (c) ''किसी व्यक्ति को आकार देने में वातावरण के घटकों की कोई भूमिका नहीं होती है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवांशिक संरचना से निर्धारित होती है।'' यह कथन ठीक नहीं है, क्योंकि बहुत से शोध यह सिद्ध करते हैं कि विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

कोलेसनिक ने लिखा है– ''जिस सीमा तक व्यक्ति की शारीरिक रचना को उसके पित्रैक निश्चित करते है, उस सीमा तक उसके मस्तिष्क एवं स्नायु संस्थान की रचना, उसके अन्य लक्षण, उसकी खेलकूद सम्बन्धी कुशलता आदि बाते उसके वंशानुक्रम पर निर्भर होती है, पर ये बाते उसके वातावरण पर कहीं अधिक निर्भर होती हैं।''

46. व्यक्तियों में एक-दूसरे से भिन्नता क्यों होती है ?

(a) वातावरण के प्रभाव के कारण

(b) जन्मजात विशेषताओं के कारण

(c) वंशानुक्रम और वातावरण के बीच अन्योन्यक्रिया के कारण

(d) प्रत्येक व्यक्ति को उसके माता-पिता से जीनों का भिन्न समुच्चय प्राप्त होने के कारण

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) व्यक्ति के विकास में वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों का ही महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। व्यक्ति जो कुछ भी सोचता है, करता है अथवा अनुभव करता है वह उसके वंशानुक्रम तथा वातावरण के परस्पर अन्योन्य क्रिया का परिणाम होता है। वंशानुक्रम विकसित होने के लिए क्षमताऐं प्रदान करता है जबकि वातावरण इन क्षमताओं को विकसित होने के अवसर प्रदान करता है। इसलिए व्यक्तियों में अपने-अपने वंशानुक्रम तथा वातावरण के अनुसार भिन्नता पायी जाती है।

47. _____ तथा _____ की विशिष्ट अन्योन्यक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है।

(a) खोज; पोषण (b) चुनौतियाँ; सीमाएँ
(c) वंशानुक्रम; पर्यावरण (d) स्थिरता; परिवर्तन

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) बालक के सम्पूर्ण व्यवहार की सृष्टि वंशानुक्रम और वातावरण की अंतः क्रिया द्वारा होती है। मोर्स एवं विंगो का मत है ''मानव व्यवहार की प्रत्येक विशेषता वंशानुक्रम और वातावरण की अन्योन्यक्रिया का फल है।'' इसलिए वंशानुक्रम तथा पर्यावरण की विशिष्ट अन्योन्यक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है।

48. मनुष्य की बुद्धि आगे की पीढ़ियों में संक्रमित होती है।..... का कार्य इस जन्मजात योग्यता के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण करना है।

(a) क्षेत्र (b) मौसम
(c) वातावरण (d) जलवायु

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) मॉर्स एवं विंगो के अनुसार– ''मानव व्यवहार की प्रत्येक विशेषता वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तःक्रिया का फल है।''

वंशानुक्रम द्वारा मनुष्य की बुद्धि आगे की पीढ़ीयों में स्थानान्तरण होती है तो वातावरण द्वारा जन्मजात योग्यता के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितिया उत्पन्न की जाती है।

49. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) आनुवंशिक बनावट व्यक्ति की परिवेश की गुणवत्ता के प्रति, प्रत्युत्तरात्मकता को प्रभावित करती है
(b) गोद लिए गए बच्चों का वही बुद्धि-लब्धांक (IQ) होता है,जो गोद लिए गए उनके सहोदर भाई-बहन का होता है
(c) अनुभव मस्तिष्क के विकास को प्रभावित नहीं करता
(d) विद्यालयीकरण का बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

DSSSB PRT

Ans:(a) आनुवंशिक बनावट व्यक्ति की, परिवेश की गुणवत्ता के प्रति प्रत्युत्तरात्मकता को प्रभावित करती है।

50. प्रकृति-पोषण विवाद निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है?

(a) व्यवहार एवं वातावरण
(b) वातावरण एवं जीव-विज्ञान
(c) वातावरण एवं पालन-पोषण
(d) आनुवांशिकी एवं वातावरण

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) यहाँ पर प्रकृति शब्द व्यक्ति की आनुवांशिकी संरचना से संबंधित है, जो उसे जन्म से ही प्राप्त है तथा पोषण शब्द वातावरण से संबंधित है जिसमें व्यक्ति बृद्धि व विकास करता है। किसी भी व्यक्ति के विकास में इन दोनों का योगदान है। किन्तु वर्तमान में यह विवाद तेजी से उत्पन्न हुआ है कि व्यक्ति के व्यवहार पर किसका प्रभाव ज्यादा पड़ता है। यही विवाद प्रकृति-पोषण विवाद के रूप में जाना जाता है।

शिक्षा में वंशानुक्रम तथा वातावरण का प्रभाव

51. बच्चों के व्यवहार को समझने के लिए विद्यार्थियों के घर के वातावरण का महत्त्वपूर्ण स्थान है तथा इससे प्राप्त सूचना को प्रभावशाली शिक्षाशास्त्र के निर्माण से जोड़ा जा सकता है। यह तथ्य अधिगम के किस सिद्धांत से सम्बद्ध है?

(a) रचनावादी (b) सामाजिक–रचनावादी
(c) व्यवहारवादी (d) पारिस्थितिक

DSSSB PRT
C TET - 2014 (VI-VIII)

Ans : (d) बच्चों के व्यवहार को समझने के लिए विद्यार्थियों के घर के वातावरण का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि बच्चे घर के स्वतंत्र वातावरण में स्वतंत्रतापूर्वक व्यवहार करते हैं और सीखते हैं। इससे प्राप्त सूचना को शिक्षा शास्त्र के निर्माण से जोड़ा जा सकता है तथा बच्चों के लिए विद्यालय में ऐसे वातावरण के निर्माण पर बल दिया जा सकता है जहाँ विद्यार्थी स्वतंत्रतापूर्वक व्यवहार प्रदर्शित करे और सीखे।

52. क्या बच्चे इसलिए भाषा अर्जित करते हैं, क्योंकि उनमें आनुवंशिक रूप से ऐसा करने की पूर्वप्रवृत्ति होती है या उनके माता-पिता प्रारंभिक अवस्था से ही उन्हें गहन रूप से सिखाते हैं? यह प्रश्न आवश्यक रूप से दर्शाता है:

(a) क्या विकास एक सतत प्रक्रिया है या एक असतत प्रक्रिया?
(b) भाषा के विकास पर संज्ञान का प्रभाव।
(c) प्रकृति और पोषण पर बहस
(d) बहु-कारक योग्यता के रूप में विकास पर चर्चा।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015
DSSSB- PRT

Ans: (c) उपर्युक्त प्रश्न प्रकृति और पोषण बहस को दर्शाता है। प्रकृति और पोषण बहस वंशानुक्रम (प्रकृति) और वातावरण (पोषण) के बालक पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर हैं। इस बहस का मुख्य बिन्दु यह है कि बालक पर वंशानुक्रम व वातावरण में से किसका प्रभाव सर्वाधिक पड़ता है।

सुजनन विज्ञान

53. इनमें से किनका नाम 'सुजननशास्त्र के पिता' से जुड़ा हुआ है?

(a) क्रो एवं क्रो (b) गाल्टन
(c) रॉस (d) वुडवर्थ

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) गाल्टन को सुजननशास्त्र का पिता कहा जाता है। सुजनन विज्ञान व्यवहारिक वंशानुक्रम की वह शाखा है जिसके अंतर्गत वंशानुक्रम के सिद्धान्तों की सहायता से भावी पीढ़ियों को वंशानुक्रम में प्राप्त होने वाले लक्षणों को नियंत्रित किया जाता है जिससे मानव जाति की नस्ल सुधर सके।

EXAM POINTS

''वंशानुक्रम में वे सभी बातें समाहित रहती हैं जो जीवन का प्रारम्भ करते समय, जन्म के समय नहीं वरन जन्म से लगभग नौ माह पूर्व गर्भाधान के समय व्यक्ति में उपस्थित थी।''।

वंशानुक्रम के नियम–

1. समानता का नियम
2. भिन्नता का नियम
3. प्रत्यागमन का नियम
4. चयनित गुणों का नियम
5. मातृ एवं पितृ पक्षों का नियम
6. संयोग का नियम

- ''वातावरण शब्द का प्रयोग उन समस्त बाह्य शक्तियों, प्रभावों तथा दशाओं को सामूहिक रूप से वर्णित करने के लिए किया जाता है जो जीवित प्राणियों के जीवन, स्वभाव, व्यवहार तथा बुद्धि, विकास व परिपक्वता को प्रभावित करता है''
  –डगलस के अनुसार
- ''माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में हस्तांतरण होना वंशानुक्रम है'' कथन है **–जेम्स ड्रेवर**
- प्रतिभाशाली माता-पिता की सन्तान कम प्रतिभाशाली तथा निम्न कोटि के माता-पिता की सन्तान उच्च प्रतिभाशाली हो सकती है
  –प्रत्यागमन के नियम के अनुसार
- जब माता-पिता के बच्चे उनके विपरीत विशेषताओं वाले विकसित होते है **–प्रत्यागमन**
- ''वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का पूर्ण योग है'' कथन है **–बी.एन.झा**
- वातावरण का किस दृष्टि से सबसे अधिक महत्व है
  –व्यक्तित्व निर्माण
- रूसो के शिक्षक सम्बन्धी विचार, पुस्तक से मिलते है **–एमील**
- Democracy and Education पुस्तक लिखी है
  –जॉन डी.वी. ने
- एक सफल अध्यापक के लिए अधिक आवश्यकताए हैं
  –विषय वस्तु का समुचित ज्ञान
- ''मनुष्य स्वतन्त्र पैदा होता है, किन्तु वह बाद में सब ओर से जंजीरों से बांध दिया जाता है'' यह कथन है **–रूसो का**
- एक संतान में माता-पिता के अतिरिक्त पूर्वजों के गुण या लक्षण आते हैं– **1/2 माता-पिता, 1/4 दादा-दादी, 1/8 परदादा-दादी, 1/16,1/32 शेषांश अन्य पूर्वजों से**
- वंश दर वंश आनुवंशिक गुण कम होते जाते हैं–
  $\frac{1}{2}, \frac{1}{4}, \frac{1}{8}, \frac{1}{16}, \frac{1}{32}$ **क्रमानुसार**
- वंशानुगत रोग है **–वर्णांधता, हीमोफिलीया**
- लाल व हरा रंग में भेद नहीं कर पाता है
  –वर्णान्धता का रोगी
- मनुष्य में चोट लगने या कट जाने पर रूधिर स्राव बन्द न होना बिमारी है **–हीमोफिलिया का**
- वंशानुगत की ईकाई है **–जीन**
- ''विकासवादी सिद्धान्त'' का समर्थक था **–लैमार्क**
- वंशानुगत सिद्धान्त के जनक थे **–ग्रेगर जान मेण्डल**
- ग्रेगर जान मेंडल आनुवंशिकी का सिद्धान्त किस पौधे पर खोज की **–मटर पर**
- कौन सा कारक बाल विकास को मुख्य रूप से प्रभावित करता है **–आनुवंशिकता**
- शिशु की औपचारिक संस्था है **–विद्यालय**
- अच्छे नैतिक चरित्र का विकास सम्भव है **–शिक्षा द्वारा**
- कौन-सी क्षमता वंशानुक्रम जनित है **–बुद्धि**
- बालक की प्रारम्भिक अवस्था में बालक पर वातावरण का सबसे अधिक प्रभाव होता है **–घर का**
- भाषा-विकास पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है **–घर का**
- वर्णान्ध रोगी किस रंग में अन्तर नहीं कर पाता है **–लाल+हरा**
- ''पाइसम सैटाइवम'' वैज्ञानिक नाम है **–उधान मटर**
- संतान को पिता से जीन प्राप्त होते हैं – **50%**
- वर्णान्ध व्यक्ति लाल व हरा रंग में भेद नहीं कर सकता इसे कौन सा दोष कहा जाता है **–प्रोटीन दोष**
- वर्णान्ध व्यक्ति नहीं बन सकता है **–पायलट**
- व्यवहार के रचनातन्त्र का निर्माण होता है **–वंशानुगत**
- मेंडल का वंशानुगत सिद्धांत प्रकाशित हुई थी– **1866 में**
- वंश परम्परा के मुख्य वाहक हैं **–पित्रैक**
- रुचियों, मूल प्रवृत्तियों एवं स्वाभाविक आवेगों का स्वस्थ विकास हो सकता है **–स्वच्छ वातावरण में**
- भ्रूण में कितने क्रोमोसोम होते है– **46**
- आँखों व त्वचा का रंग होता है **–फोनोटाईप**
- नर क्रोमोसोम है– **XY**
- मादा क्रोमोसोम है– **XX**
- वंशानुगतता का निर्धारण होता है **–जीन्स के द्वारा**
- निषेचित अण्ड कहलाता है **–भ्रूण**
- जन्म से पूर्वकाल में कितनी अवस्थाएँ होती है– **3**
- सबसे छोटी कोशिका कौन सी है **–शुक्राणु**
- सबसे बड़ी कोशिका कौन सी होती है **–ओवम या अण्डा**
- भ्रूण काल होता है– **2 से 8 सप्ताह**
- लड़का या लड़की होना निर्धारित होता है **–नर शुक्राणु द्वारा**
- वंशानुगत गुणों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तरण होने की प्रक्रिया को ..... कहते हैं– **आनुवांशिकता**
- जीव सांख्यिकी सिद्धान्त का प्रतिपादन ..... मनोवैज्ञानिक ने किया है– **फ्रांसिस गाल्टन**
- आनुवांशिकता एवं वातावरण दोनों– **एक दूसरे के पूरक हैं**
- बालकों की बुद्धिमत्ता निर्भर करती है– **पारिवारिक परिवेश पर**

- ..... वंशानुगत प्रभाव बालकों पर पड़ता है– **शारीरिक लक्षणों पर प्रभाव, चरित्र पर प्रभाव, बुद्धि पर प्रभाव**
- गुणसूत्र (Chromosomes) होता है– **स्थिर**
- बालक के चरित्र का विकास किस के द्वारा होता है– **इच्छाशक्ति द्वारा, बर्ताव एवं व्यवहार द्वारा, नैतिकता द्वारा**
- व्यक्तित्व स्थायी समायोजन है– **पर्यावरण के साथ, जीवन के साथ, प्रकृति के साथ**
- मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक है– **वंशानुक्रम, परिवार का वातावरण, परिवार की सामाजिक स्थिति**
- माता-पिता से वंशजों में स्थानान्तरित होने वाले लक्षणों को कहा जाता है– **आनुवांशिकता**
- मानव-व्यक्तित्व परिणाम है– **आनुवंशिकता और वातावरण की अन्तःक्रिया पर**
- जुड़वाँ भाइयों में से एक को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से धनाढ्य परिवार द्वारा गोद लिया जाता है और दूसरे को एक निर्धन परिवार द्वारा। एक वर्ष के बाद उनके बुद्धि-लब्धांक के बारे में से ..... अवलोकित होने की सर्वाधिक संभावना है– **सामाजिक-आर्थिक स्तर बुद्धि-लब्धांक को प्रभावित नहीं करता**
- मुख्य रूप से आनुवांशिकता सम्बन्धी कारक है– **आँखों का रंग**
- ..... के अतिरिक्त सभी वातावरणीय कारक विकास को आकार देते हैं– **शारीरिक गठन**
- बच्चे के विकास में आनुवंशिकता और वातावरण की भूमिका के बारे में कथन सत्य है– **समवयस्कों और पित्रेक (genes) का सापेक्ष योगदान योगात्मक नहीं होता है**
- संस्कृति पर शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है– **संस्कृति की निरन्तरता को बनाए रखना, संस्कृति के हस्तान्तरण में सहायता करना, संस्कृति का परिष्करण**
- मानवीय विकास में आनुवांशिकता एवं परिवेश की भूमिका के सन्दर्भ में समुचित कथन है– **विकास के विभिन्न क्षेत्रों में आनुवांशिकता एवं परिवेश का सापेक्षिक प्रभाव परिवर्तनशील है**
- मनुष्य की बुद्धि आगे की पीढ़ियों में संक्रमित होती है। ..... का कार्य इस जन्मजात योग्यता के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण करना है– **वातावरण**
- 'प्रकृति-पालन-पोषण' वाद-विवाद के सन्दर्भ में उपयुक्त कथन है– **वंशानुक्रम तथा परिवेश अभिन्न रूप से एक-दूसरे से गुँथे हुए हैं और दोनों विकास को प्रभावित करते हैं**
- व्यक्तित्व विकास में ..... एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है– **आनुवंशिकता और वातावरण का मिश्रण**
- क्या बच्चे इसलिए भाषा अर्जित करते हैं, क्योंकि उनमें आनुवंशिक रूप से ऐसा करने की पूर्वप्रवृत्ति होती है या उनके माता-पिता प्रारम्भिक अवस्था से ही उन्हें गहन रूप से सिखाते हैं? यह प्रश्न आवश्यक रूप से दर्शाता है– **प्रकृति-पोषण विवाद को**
- ''किसी व्यक्ति को आकार देने में वातावरण के घटकों की कोई भूमिका नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की वृद्धि उसकी आनुवंशिक संरचना से निर्धारित होती है।'' यह कथन– **ठीक नहीं है, क्योंकि बहुस-से शोध यह सिद्ध करते हैं कि विकास में वातावरण का बड़ा प्रभाव पड़ सकता है**
- एक 6 वर्ष की लड़की खेलकूद में असाधारण योग्यता प्रदर्शित करती है। उसके माता-पिता दोनों ही खिलाड़ी हैं, उसे नित्य प्रशिक्षण प्राप्त करने भेजते हैं और सप्ताहांत में उसे प्रशिक्षण देते हैं। बहुत सम्भव है कि उसकी क्षमताएँ ..... दोनों के बीच परस्पर प्रतिक्रिया का परिणाम होंगी– **आनुवंशिकता और पर्यावरण**
- 'प्रकृति-पोषण' विवाद में 'प्रकृति' से क्या अभिप्राय है– **जैविकीय विशिष्टताएँ या वंशानुक्रम सूचनाएँ**
- ..... तथा ..... का विशिष्ट अन्योन्यक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षों के रूप में हो सकता है– **वंशानुक्रम; पर्यावरण**
- ''व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन, जो उसके पर्यावरण के साथ अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है'' कहलाता है– **व्यक्तित्व**
- ''वातावरण वह बाहरी शक्ति है, जो हमें प्रभावित करती है।'' कहा था– **रॉस**
- आनुवंशिकता (Heredity) को ..... सामाजिक संरचना माना जाता है– **स्थिर**
- मानव विकास किन दोनो के योगदान का परिणाम है– **वंशानुकम (Heredity) एवं वातावरण**
- व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की– **महत्वपूर्ण भूमिका है**
- असंगठित घर से आने वाला बच्चा सबसे अधिक कठिनाई का अनुभव करेगा– **सुनिर्मित पाठों में**
- किसी भी बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ्य होने का कारण– **परिवार का वातावरण, कक्षा का वातावरण, पास-पड़ोस का वातावरण**
- मानव व्यक्तित्व परिणाम है– **आनुवंशिकता और वातावरण की अंतर्क्रिया का**
- बच्चों में सीखने और सुनने के लिए अधिगम योग्य वातावरण के लिए उपयुक्त है– **विद्यार्थियों को यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है**
- बच्चों के व्यवहार को समझने के लिए विद्यार्थियों के घर के वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है तथा इससे प्राप्त सूचना को प्रभावशाली शिक्षा-शास्त्र के निर्माण से जोड़ा जा सकता है। यह तथ्य अधिगम के किस सिद्धान्त से सम्बद्ध है– **पारिस्थितिक**
- मनुष्य की बुद्धि आगे की पीढ़ियों में संक्रमित होती है ..... का कार्य इस जन्मजात योग्यता के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण करना है– **वातावरण**
- वह अवस्था जो कि माता के 21वें गुण सूत्र जोड़े के अलग न हो पाने के कारण कहलाती है– **डाउन्स सिण्ड्रोम**
- वंशानुक्रम तथा वातावरण के सम्बन्ध का व्यक्ति की वृद्धि पर प्रभाव होता है– **वंशानुक्रम × वातावरण व्यक्ति को प्रभावित करता है**
- मानव जाति में वे कौन-से वैयक्तिक निर्धारक तत्व हैं, जो मानव जाति की विविधता को बताते हैं– **आनुवंशिकता व पर्यावरण की अन्तःक्रिया**

05.

समाजीकरण की प्रक्रियाएँ, सामाजिक विश्व और बालक

(शिक्षक, विद्यालय, अभिभावक, जन संचार माध्यम और मित्रगण)

समाजीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बच्चे आदतों, कौशलों, मूल्यों तथा अभिप्रेरणा को विकसित करते हैं और जो उन्हें समाज का जिम्मेदार एवं क्रियाशील सदस्य बनाती है, उसे क्या कहा जाता है?

(a) समावेशन (b) मुख्यधारा से जुड़ना
(c) विभेदीकरण (d) समाजीकरण

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (d) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा बच्चे आदतों, कौशलों, मूल्यों तथा अभिप्रेरणा को विकसित करते हैं और जो उन्हें समाज का जिम्मेदार एवं क्रियाशील सदस्य बनाती है, उसे समाजीकरण कहा जाता है। समाजीकरण एक विस्तृत और अंतहीन प्रक्रिया है, जो एक व्यक्ति के साथ जीवनपर्यंत चलती रहती है।

2. दो संस्कृतियों के बीच व्यवहार में अंतर के लिए इसे उत्तरदायी माना जा सकता है:

(a) भौगोलिक पृष्ठभूमि (b) समाजीकरण
(c) आनुवंशिकता (d) वातावरण

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : दो संस्कृतियों के बीच व्यवहार में अंतर के लिए समाजीकरण को उत्तरदायी माना जा सकता है। समाजीकरण एक साधन है जिसके द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक निरंतरता प्राप्त होती है। समाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति अपने सामाजिक मूल्यों, मानदण्डों, नैतिकता, व्यवहारों आदि को सीखता है और उसी के अनुरूप व्यवहार करता है, जिससे दो प्रकार के समाज और संस्कृति में निवास करने वाले व्यक्तियों के व्यवहारों में अंतर देखने को मिलता है।

3. सामाजीकरण में सम्मिलित हैं– सांस्कृतिक संचरण और .....।

(a) विद्रोहियों को निरुत्साहित करना
(b) वैयक्तिक व्यक्तित्व विकास
(c) बच्चों को लेबलों में समायोजित करना
(d) संवेगात्मक समर्थन उपलब्ध करना

DSSSB PRT
C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (b) सामाजीकरण के अंतर्गत व्यक्ति समाज की संस्कृति के बारे में सीखता है और उसी के अनुरूप व्यवहार करने की अपेक्षा रखता है। इसी समाजीकण के माध्यम से ही समाज में संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अंतरित होती रहती है।
बीयरस्टेट ने लिखा है ''व्यक्तित्व कभी बना–बनाया नहीं आता। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में समाजीकरण की सबसे प्रमुख भूमिका होती है। व्यक्ति जन्म से ही अपने गुणों को प्राप्त नहीं करता है, बल्कि समाज के सदस्य के रूप में धीरे–धीरे वह अर्जित करता है।'' इस प्रकार समाजीकरण में सामाजिक संचरण और व्यक्तित्व विकास दोनों सम्मिलित होता है।

4. शिक्षा के संदर्भ में, समाजीकरण से तात्पर्य है–

(a) अपने सामाजिक मानदंड बनाना
(b) समाज में बड़ों का सम्मान करना
(c) सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन
(d) सामाजिक मानदंडों का सदैव अनुपालन करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
UKTET - 2014 (I-V)
DSSSB PRT

Ans: (c) शिक्षा, समाजीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाती है क्योंकि शिक्षा के माध्यम से मनुष्य सामाजिक मूल्यों, आदर्शों, व्यवहारों आदि को सीखता है और अपने आपको उसके अनुरूप बनाने का प्रयास करता है।

5. धर्म जिससे व्यक्तिगत बच्चा संबंधित होता है वह ..... का हिस्सा है

(a) वंशानुगतता (b) प्रसवपूर्व पर्यावरण
(c) सामाजिक पर्यावरण (d) भौतिक पर्यावरण

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : धर्म जिससे व्यक्तिगत बच्चा सम्बन्धित होता है वह सामाजिक पर्यावरण का हिस्सा है। समाज और धर्म में गहरा सम्बन्ध होता है। धर्म समाज का मार्गदर्शन करता है। धार्मिक रीति–रिवाज विश्वास, आस्था आदि सामाजिक और धार्मिक वातावरण का निर्माण करते हैं जिसका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर पड़ता है।

समाजीकरण की अवस्थाएँ

6. निम्न में से किसको विद्यालय में समाजीकरण की विशिष्ट अवस्था माना जाता है?

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) प्रौढ़ावस्था (d) किशोरावस्था

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) मानव विकास के क्रम से सामाजिकता का सर्वाधिक विकास वाल्यावस्था में होता है इसलिए बाल्यावस्था को समाजीकरण की विशिष्ट अवस्था माना जाता है।

7. सबसे अधिक गहन और जटिल समाजीकरण होता है–

(a) पूर्व बाल्यावस्था के दौरान (b) प्रौढ़ावस्था के दौरान

(c) व्यक्ति के पूरे जीवन में (d) किशोरावस्था के दौरान

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (d) सबसे अधिक गहन और जटिल सामाजीकरण किशोरावस्था के दौरान होता है। इस अवस्था में किशोरो में समूह निर्माण की प्रवृत्ति, मैत्री भावना का विकास, सामाजिक गुणों का विकास, समूह के प्रति भक्ति, सामाजिक परिपक्वता की भावना का विकास, बहिर्मुखी प्रवृत्ति आदि का विकास होता है जो समाजीकरण की प्रक्रिया को समृद्ध, गहन व जटिल बनाते है।

8. बाद के रिश्तों के लिए पूर्वाभ्यास कहा जाता है :

(a) विकासात्मक समाजीकरण (b) द्वितीयक समाजीकरण

(c) प्राथमिक समाजीकरण (d) अग्रिम समाजीकरण

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : बाद के रिश्तों के लिए पूर्वाभ्यास अग्रिम समाजीकरण कहलाता है। अग्रिम समाजीकरण की अवधारणा को सर्वप्रथम समाजशास्त्री राबर्ट के. मेरटॉन द्वारा परिभाषित किया गया था।

समाजीकरण के सिद्धांत एवं प्रक्रिया

9. जब आप एक शिक्षक समूह से जुड़ जाते हैं और अपने समूह के अन्य लोगों की ही तरह पोशाक धारण करने लगते हैं, तो आप प्रदर्शन कर रहे होते हैं–

(a) समूह की पहचान का

(b) समूह आज्ञाकारिता का

(c) समूह निर्देश–अनुपालन का

(d) समूह की अनुरूपता का

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : यदि आप एक शिक्षक समूह से जुड़ जाते हैं और अपने समूह के अन्य लोगों की ही तरह पोशाक धारण करने लगते हैं, तो आप समूह की अनुरूपता का प्रदर्शन कर रहे होते हैं। अर्थात् आप अपने आपको उस समूह में समायोजित करने के लिए समूह के नियमों, विधियों, मूल्यों आदि को आत्मसात् करते हैं और उस समूह के अनुरूप अपना समाजीकरण करते हैं।

10. बालक का समाजीकरण किससे सम्बन्धित नहीं है?

(a) आधारभूत मूल्यों को परिवर्तित करने से

(b) वह प्रक्रिया जो तुरन्त हो जाती है

(c) औपचारिक तथ्यों को प्रदर्शित करना

(d) आदर्श आकांक्षाओं को गम्भीरता से लेना

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) जो प्रक्रिया तुरन्त हो जाती है उसका सम्बंध बालक के समाजीकरण से सम्बंधित नहीं है, क्योंकि सामाजीकरण की प्रक्रिया धीरे-धीरे और निरंतर चलती रहती है।

11. समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसे बच्चे व वयस्क सीखते हैं

(a) परिवार से (b) विद्यालय से

(c) श्रेष्ठ जनों से (d) इन सभी से

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (d) समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें बच्चे व वयस्क अपने परिवार, विद्यालय व श्रेष्ठ जनो से कुछ सीखते है जो उसके भावी जीवन को संतुलित कर समायोजित करता है।

12. संस्कृति पर शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है?

(a) संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखना

(b) संस्कृति के हस्तांतरण में सहायता करना

(c) संस्कृति का परिष्करण

(d) उपरोक्त सभी

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (d) शिक्षा के द्वारा संस्कृति की निरन्तरता बनाये रखने में सहायता मिलती है, संस्कृति के हस्तान्तरण में, संस्कृति के परिष्करण में, संस्कृति के विस्तारण आदि में शिक्षा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

13. समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल नहीं है

(a) मूल्यों और विश्वासों का अर्जन

(b) आनुवांशिक संचरण

(c) एक संस्कृति की रीतियों और मानदण्डों को सीखना

(d) कौशलों का अर्जन

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (b) समाजीकरण की प्रक्रिया में बालक सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, विश्वासों का अर्जन करता है, वह अपने संस्कृति की रीतियों और मानदण्डों को सीखता है तथा सामाजिक कौशलों का अर्जन करता है। आनुवांशिक संचरण एक प्रकार का जैविकीय संचरण है जो बच्चे को अपने माता–पिता से गर्भधारण के समय ही प्राप्त होता है। अतः यह समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतर्गत शामिल नहीं होता है।

14. सामाजिक परिवर्तन का सर्वाधिक कार्यकारी कारक है–

(a) धर्म (b) शिक्षा

(c) सरकार (d) जाति

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (b) सामाजिक परिवर्तन का सर्वाधिक कार्यकारी कारक होता है– शिक्षा। शिक्षा बालक के सामाजिक गुणों का विकास करती है तथा समाज में आये त्रुटियों का परिमार्जन करती है। उदाहरण के लिए पुनर्जागरण काल में शिक्षा के प्रचार–प्रसार ने ही सामाजिक–और धार्मिक त्रुटियों को सुधार कर आधुनिक समाज की ओर अग्रसर किया।

15. ''जब कभी दो या अधिक व्यक्ति एकसाथ मिलते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं'' यह कथन

(a) आंशिक रूप से सत्य है (b) सत्य है
(c) कदाचित सत्य है (d) असत्य है

UPTET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) 'जब कभी दो या अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं, तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।' यह कथन सत्य है क्योंकि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है तथा एक–दूसरे के साथ अंतःसम्बन्धों के माध्यम से ही अपना सामाजिक विकास करता है।

16. एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मानव शिशु समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में निष्पादन करने के लिए आवश्यक कौशलों का अर्जन करना प्रारंभ करता है।

(a) समाजीकरण (b) विकास
(c) सीखना (d) परिपक्वता

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से मानव शिशु समाज के सक्रिय सदस्य के रूप में निष्पादन करने के लिए आवश्यक कौशलों का अर्जन करना प्रारम्भ करता है।

17. समाजीकरण एक प्रक्रिया है –

(a) मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित करने की।
(b) घुलने-मिलने तथा समायोजन की।
(c) एक समाज की संस्कृति की आलोचना करना सीखने की।
(d) मित्रों के साथ सामाजिक बनने की।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (a) सामाजीकरण वह प्रविधि है, जिसके द्वारा संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित किया जाता है इसके माध्यम से मानव अपने समूह समाज के मूल्यों, रीति-रिवाजों, लोकाचारों, आदर्शों एवं सामाजिक उद्देश्यों को सीखता है। अतः समाजीकरण ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित किया जाता है।

18. निम्नलिखित में कौन-सा बच्चों के समाजीकरण को प्रगतिशील मॉडल के संदर्भ में सही नहीं है?

(a) समूह कार्य में सक्रिय सहभागिता तथा सामाजिक कौशलों का सीखना।
(b) बच्चे विद्यालय में बताई गई बातों को स्वीकार करते हैं चाहे उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो
(c) कक्षा में प्रजातंत्र के लिए स्थान होना चाहिए।
(d) समाजीकरण सामाजिक नियमों का अधिग्रहण है।

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans : (b) सामाजीकरण का प्रगतिशील मॉडल वही है जिसमें व्यक्ति या बालक स्वतंत्रता पूर्वक तथा सरलता पूर्वक सहभागी बन सकें और सामाजिक कौशलों को सीख सके। किन्तु यदि विद्यालय में कोई ऐसी बात या कार्य बताया या कराया जाता है जो छात्रों के सामाजिक पृष्ठभूमि से भिन्न है या उनके अनुकूल नहीं है तो इससे छात्रों के सामाजीकरण में विरोध उत्पन्न होगा जो किसी भी दशा में सामाजीकरण का प्रगतिशील मॉडल नहीं है।

19. छोटे शिक्षार्थियों को कक्षा-कक्ष में समवयस्कों के साथ अन्तःक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे–

(a) वे एक-दूसरे से प्रश्नों के उत्तर सीख सकें
(b) पाठ्यक्रम को बहुत जल्दी पूरा किया जा सके
(c) वे पढ़ने के दौरान सामाजिक कौशल सीख सकें
(d) शिक्षक कक्षा-कक्ष को बेहतर तरीकें से नियंत्रित कर सकें

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (c) छोटे शिक्षार्थियों को कक्षा-कक्ष में समवयस्कों के साथ अन्तः क्रिया करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे वे पढ़ने के दौरान सामाजिक कौशल सीख सकें।

20. के.मा.शि.बो. (CBSE) द्वारा अपनाए गए प्रगतिशील शिक्षा के प्रतिमान में बच्चों का समाजीकरण जिस प्रकार से किया जाता है, उससे अपेक्षा की जा सकती है कि

(a) वे समय नष्ट करने वाली सामाजिक आदतों/प्रकृति का त्याग करें तथा सीखें कि किस प्रकार अच्छी श्रेणियाँ पाई जा सकती हैं (Score good grades)
(b) वे सामूहिक कार्य में सक्रिय भागीदारी का निर्वाह करें तथा सामाजिक कौशल सीखें
(c) वे बिना प्रश्न उठाए समाज के नियमों–विनियमों का अनुपालन करने के लिए तैयार हो सकें
(d) किसी भी प्रकार की सामाजिक पृष्ठभूमि होते हुए भी वे वह सब स्वीकार करें जो उन्हें विद्यालय द्वारा प्रदान किया जाता है

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2014

Ans : (b) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) द्वारा अपनाये गये प्रगतिशील शिक्षा के प्रतिमान में बच्चों का सामाजीकरण जिस प्रकार से किया जाता है, उससे अपेक्षा की जा सकती है कि वे सामूहिक कार्य में सक्रिय भागीदारिता का निर्वाह करे तथा सामाजिक कौशल सीखे।

21. अन्य लोगों से ---- के माध्यम से सामाजिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

(a) प्रतिक्रिया (b) हतोत्साहन
(c) प्रोत्साहन (d) तर्क

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) अन्य लोगों से प्रतिक्रिया (Feedback) के माध्यम से सामाजिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है। अर्थात् जब व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से अंतःक्रिया करते हैं तो वे अपने भावों, विचारों तथ्यों आदि का आदान प्रदान करते हैं, जिससे प्राप्त सूचनाओं या ज्ञान को संपुष्ट करने के लिए एक दूसरे को प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं। इस प्रतिपुष्टि या प्रतिक्रिया से सफलता व असफलता का अंतर जाना जा सकता है। यही हमें विश्वसनीयता में सुधार के योग्य बनाता है। हमे हमारी भूलें व गलतियाँ सुधारने की योग्यता प्रदान करता है।

समाजीकरण के निर्धारक (शिक्षक, विद्यालय, जन संचार माध्यम, अभिभावक, मित्रगण)

22. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा माता-पिता यह अनुमान लगाते है कि उनके बच्चे में सभी सकारात्मक गुण है क्योंकि एक गुण सकारात्मक है, कहलाता है।

(a) परिवेश का प्रभाव
(b) हावथेनि का प्रभाव
(c) प्रभाव का नियम
(d) प्रतिलोम परिवेश का प्रभाव

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) हावथेनि प्रभाव के कारण बालक में एक गुण सकारात्मक होने पर अभिभावक को बालक के अन्य गुण भी सकारात्मक लगते है।

23. परिवार एवं पास-पड़ोस, बच्चों के समाजीकरण की-

(a) प्राथमिक एजेंसियाँ हैं। (b) मध्य एजेंसियाँ हैं।
(c) द्वितीयक एजेंसियाँ हैं। (d) मनोवैज्ञानिक एजेंसियाँ हैं।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (a) परिवार एवं पास-पड़ोस, बच्चों के समाजीकरण की प्राथमिक एजेंसियाँ हैं। बालक जन्म के बाद परिवार के ज्यादा से ज्यादा सदस्यों के संपर्क में आता है और उनके क्रियाकलापों तथा व्यवहार के तौर-तरीकों से उनके विविध स्वरूपों जैसे क्रोध करना, चिल्लाना, हँसना, हाथ, भुजा, पैर आदि हिलाने की अनुक्रियाओं का अनुकरण करता है। इस प्रकार की विशेष भाव-भंगिमाओं से उसे परिवार के लोगों से घुलने-मिलने तथा उनसे स्वयं को जोड़ने में सहायता मिलती है। इसी प्रकार वह स्थान तथा गाँव जहाँ बच्चा बड़ा होता है उससे उसका पास-पड़ोस बनता है। पास-पड़ोस के भौतिक तथा सामाजिक वातारण में उसका समाजीकरण होता है।

24. निम्नलिखित में से कौन सा द्वितीयक समाजीकरण एजेन्सी का उदाहरण है?

(a) विद्यालय एवं मीडिया
(b) मीडिया एवं पास-पड़ोस
(c) परिवार एवं पास-पड़ोस
(d) परिवार एवं मीडिया।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (a) विद्यालय एवं मीडिया समाजीकरण की द्वितीयक एजेन्सी के उदाहरण हैं, जबकि परिवार, परिवार के निकटतम सदस्य, पास–पड़ोस, सहचर-समूह आदि समाजीकरण की प्राथमिक एजेन्सियां हैं। ये सभी मिलकर बालक के सामाजिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

25. निम्नलिखित में कौन प्राथमिक सामाजीकरण माध्यम है–

(a) विद्यालय (b) सरकार
(c) मीडिया (d) परिवार

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) समाजीकरण एक विस्तृत और अंतहीन प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के साथ जीवन पर्यंत चलती रहती है। इस प्रक्रिया में बालक सांस्कृतिक पद्धतियों को ग्रहण करता है और अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह करना सीखता है। परिवार समाजीकरण का प्राथमिक माध्यम है। जब बच्चा पैदा होता है तो वह आश्रित और असहाय होता है। उसकी विभिन्न शारीरिक और मानसिक आवश्यकताएँ होती हैं। उसे अपने शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माता-पिता पर निर्भर रहना पड़ता है। इस प्रकार बच्चा अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के सामने अपना जीवन प्रारम्भ करता है तथा वह ज्ञान, व्यवहार, तौर तरीके आदि परिवार से ही अर्जित करता है ओर परिवार के प्रतिमानों के अनुकूल इन सभी पद्धतियों को हृदयंगम करता तथा सीखता है। जो उसके सामाजिक होने की प्रक्रिया का प्रारम्भिक सोपान होता है।

26. निम्नलिखित में से कौन बच्चे के समाजीकरण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं?

(i) मीडिया
(ii) विद्यालय
(iii) परिवार
(iv) पास–पड़ोस

(a) (ii), (iii) (b) (i), (iii), (iv)
(c) (i), (ii), (iii), (iv) (d) (iii), (i)

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : सामाजीकरण एक विस्तृत और अंतहीन प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के साथ जीवनपर्यंत चलती रहती है। व्यक्ति समाज के मूल्यों, मानदण्डों, नैतिकता, आदर्शों आदि को ग्रहण करता है और अपने व्यवहार को सामाजिक रूप से उपयोगी बनाने का प्रयास करता है। व्यक्ति के समाजीकरण में निम्नलिखित एजेंसियाँ (संस्थाएँ) महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं–

- परिवार
- पास–पड़ोस
- सहचर समूह
- विद्यालय समाज
- मीडिया (जनसंचार माध्यम)

27. स्कूल बच्चों के समाजीकरण की एक ऐसी संस्था है जहाँ–

(a) प्रमुख स्थान स्कूली बच्चों का होता है
(b) प्रमुख स्थान स्कूल की दिनचर्या का होता है।
(c) प्रमुख स्थान स्कूल की गतिविधियों का होता है
(d) प्रमुख स्थान स्कूल के शिक्षकों का होता है।

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : स्कूल बच्चों के समाजीकरण की एक ऐसी संस्था है जहाँ प्रमुख स्थान स्कूली बच्चों का होता है, अर्थात् स्कूल की सम्पूर्ण गतिविधियाँ, कार्यक्रम, शिक्षक तथा पाठ्यचर्या स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास के लिए प्रतिबद्ध होती हैं। इसलिए प्रगतिशील शिक्षा में बच्चों को शिक्षा का केन्द्र–बिन्दु माना गया है।

28. निम्न में से कौन-सा विद्यालय का मुख्य कार्य नहीं है?

(a) विद्यालय हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित व प्रेषित करते हैं
(b) विद्यालय सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए यन्त्र का कार्य करते हैं
(c) विद्यालय 'सम्पूर्ण बालक' को उसके उच्चतम स्तर तक विकसित करते हैं
(d) विद्यालय जातिवाद के कारण विद्यार्थियों में बुरी भावना का विकास करते हैं

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) विद्यालय जातिवाद के कारण शिक्षार्थियों में बुरी भावना का विकास नहीं करते हैं बल्कि विद्यालय सामाजिक पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों एवं सामाजिक बुराइयों को दूर कर उनमें सहयोग, सामंजस्य, स्नेह, सौहार्द आदि गुणों का विकास करते हैं।

29. निम्नलिखित में से कौन–सी संस्था सामाजिक परम्पराओं के हस्तांतरण में सबसे अधिक योगदान करती हैं?

(a) परिवार (b) विद्यालय
(c) पड़ोस (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (a) परिवार सामाजिक परम्पराओं के हस्तान्तरण में सबसे अधिक योगदान करता है क्योंकि बालक जन्म से ही परिवार के सम्पर्क में रहता है और वह परिवार से ही सामाजिक मूल्यों, आचरणों, व्यवहारों को सीखता है और अपने व्यवहार को समाज के अनुरूप बनाता है।

30. बच्चे के समाजीकरण में परिवार ..... भूमिका निभाता है।

(a) कम महत्त्वपूर्ण (b) रोमांचकारी
(c) मुख्य (d) गौण

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) बच्चे के सामाजीकरण में परिवार मुख्य भूमिका निभाता है। क्योंकि परिवार ही बालक के प्रथम पाठशाला के रूप में कार्य करता है जहाँ बालक समाज द्वारा निर्धारित मूल व्यवहारों, मूल्यों, आदर्शों को सीखता है तथा अपने आपको समाज के अनुरूप बनाता है।

31. निम्नलिखित में से कौन–से समाजीकरण के गौण वाहक हो सकते हैं?

(a) विद्यालय और पास–पड़ोस
(b) विद्यालय और निकटतम परिवार के सदस्य
(c) परिवार और रिश्तेदार
(d) परिवार और पास–पड़ोस

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (b) सामाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल होने वाले मुख्य घटक हैं– परिवार, पास–पड़ोस, विद्यालय, समुदाय। अतः विद्यालय और निकटतम परिवार के सदस्य भी समाजीकरण की प्रक्रिया के घटक तो हैं किन्तु विकल्प (b) में निकटतम परिवार के सदस्य का आशय स्पष्ट नहीं हो रहा है इसलिए इसे गौण घटक माना जा सकता है।

32. मध्याह्न भोजन के दौरान उच्च जाति के विद्यार्थी निम्न जाति के विद्यार्थियों के साथ एक पंक्ति में भोजन करने से इंकार करते हैं। आप क्या करेंगें?

(a) आप पृथक् बैठक व्यवस्था करने हेतु सहमत हो जाएंगे।
(b) आप उच्चाधिकारियों से निर्देशन प्राप्त करेंगे।
(c) आप विद्यार्थियों को एकसाथ बैठकर भोजन करने के लिए सहमत कर लेंगे।
(d) आप विद्यालय में मध्याह्न भोजन पकाना बंद कर देंगे।

DSSSB PRT

Ans : (c) विद्यालय का प्रमुख कार्य होता है बालक के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उसका सामाजिक, नैतिक एवं मानवीय गुणों का विकास करना ताकि वे सभी प्राणियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करे तथा मानव मात्र के साथ जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव न करे। अतः जब मध्यान्ह भोजन के दौरान उच्च जाति के विद्यार्थी निम्न जाति के विद्यार्थियों के साथ एक पंक्ति में भोजन करने से इन्कार करते हैं तो एक अध्यापक को चाहिए कि उनके पूर्वाग्रह को दूर करे तथा विद्यार्थियों को एक साथ बैठकर भोजन करने के लिए सहमत करे।

33. शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त ये ..... में भी सहायता करती है।

(a) दुश्चिंता (b) समाजीकरण
(c) मूल्य द्वंद्व (d) आक्रामकता

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (b) शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त ये समाजीकरण में भी सहायता करती हैं।

34. समाजीकरण के सन्दर्भ में विद्यालयों के पास प्रायः एक प्रच्छन्न पाठ्यचर्या विद्यमान रहती है, जिसमें निहित हैं

(a) परिवारों के माध्यम से विद्यार्थियों का समझौतापूर्ण (negotiating) व प्रतिरोधक समाजीकरण
(b) मूल्यों व अभिवृत्तियों का शिक्षण एवं आकलन
(c) बलात्मक अधिगम, चिन्तन व समक्षीय साथी एवं अध्यापक की अनुकृति द्वारा विशेष रूप से अपनाया जाने वाला व्यवहार
(d) अन्तःक्रिया व सामग्री द्वारा विद्यालयों में प्रस्तुत किए जाने वाले सामाजिक भूमिकाओं से सम्बद्ध अनौपचारिक संकेत

DSSSB PRT
C TET 2014 (V-VIII)

Ans : (d) सामाजीकरण के संदर्भ में विद्यालयों के पास प्रायः एक प्रच्छन्न या गुप्त पाठ्यचर्या विद्यमान रहती है। यह कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक और छात्र के मध्य होने वाले अंतःप्रक्रिया के रूप में खेल के मैदान में, पाठ्य सहगामी क्रिया के रूप में आदि सामाजिक भूमिकाओं से सम्बद्ध अनौपचारिक संकेत के रूप में विद्यमान रहती है।

35. बालक–बालिकओं के सामाजिक विकास का आधारभूत अभिकरण कहा जाता है–

(a) विद्यालय (b) माता–पिता एवं परिवार
(c) समुदाय (d) जनसंचार माध्यम

DSSSB PRT

Ans : (b) बालक–बालिकाओं के सामाजिक विकास का प्रारम्भिक और आधारभूत अभिकरण माता–पिता एवं परिवार होता है। बच्चों के सामाजिक विकास का प्रारम्भ इसी अभिकरण से होता है।

36. विद्यालय का कार्य होता है–

(a) संस्कृति का संरक्षण
(b) संस्कृति का परिष्करण
(c) संस्कृति के नये प्रतिरूपों का निर्माण
(d) उपरोक्त सभी

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (d) विद्यालय का एक प्रमुख कार्य बालकों में संस्कृति का हस्तान्तरण करना भी होता है। वह सांस्कृतिक मूल्यों, मानदण्डों, आचरणों आदि का बालकों के व्यवहार में ग्रहणशीलता को बढ़ावा देता है। इसके अलावा संस्कृति का संरक्षण, संस्कृति का परिष्करण संस्कृति के नये प्रतिरूपों का निर्माण तथा सांस्कृतिक रूढ़िबद्धता को दूर करना भी विद्यालय का प्रमुख कर्तव्य होता है।

37. बच्चों के सामाजिक विकास में..... का विशेष महत्त्व है।

(a) खेल (b) बाल साहित्य
(c) दिनचर्या (d) संचार माध्यम

UPTET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) खेल विधि द्वारा बालक की मूल प्रवृतियों का विकास होता है जिससे समायोजन की क्षमता में वृद्धि होती है परिणाम स्वरूप बच्चे का सामाजिक विकास सकारात्मक होता है।

38. विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलना क्यों उचित है?

(a) यह उन्हें शारीरिक रूप से सशक्त बनाएगा
(b) यह शिक्षकों के लिए काम आसान करेगा
(c) यह समय बिताने में सहायक होगा
(d) यह सहयोग एवं सन्तुलन का विकास करेगा

UPTET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011
Hariyana TET 2015 (I-V)

Ans : (d) विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलना सहयोग एवं शारीरिक संतुलन के विकास की दृष्टि से उचित होता है। शिक्षाशास्त्री एगबर्ग के अनुसार ''बालक को दूसरे बालकों से सामाजिक संबंध स्थापित करने में सहायता देना खेल का उद्देश्य है।'' व्यायाम एवं खेल के अभाव में बालक का संतुलित एवं उचित विकास संभव नहीं हो पाता है।

39. विद्यालय और समाजीकरण के बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?

(a) विद्यालय समाजीकरण का पहला मुख्य कारक है।
(b) विद्यालय समाजीकरण का एक महत्त्वपूर्ण कारक है।
(c) समाजीकरण में विद्यालय की कोई भूमिका नहीं होती।
(d) समाजीकरण में विद्यालय की बहुत थोड़ी भूमिका होती है।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (b) विद्यालय सामाजीकरण का एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि बालक जब विद्यालय जाना प्रारम्भ करता है तो वहाँ वह सामाजिक कार्यों में भाग लेना, नये मित्र बनाना आदि सीखता है। धीरे-धीरे वह किसी न किसी टोली का सदस्य बन जाता है जो बालक में अनेक सामाजिक गुणों का विकास करती है।

40. निम्नलिखित में से कौन-सा समाजीकरण का एक प्रमुख कारक है?

(a) परिवार (b) कम्प्यूटर
(c) आनुवंशिकता (d) राजनीतिक दल

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (a) समाजीकरण का प्रमुख कारक परिवार होता है क्योंकि बालक पहले परिवार का सदस्य होता है और वहीं से अपने परिवार के मूल्यों परम्पराओं, विचारों आदि को सीखता है।

41. ''जन-संचार माध्यम समाजीकरण का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है।''
नीचे दिए गए कथनों में से कौन-सा सबसे उपयुक्त कथन है?

(a) संचार माध्यम पदार्थों के विज्ञापन और विक्रय के लिए एक अच्छा माध्यम है।
(b) समाजीकरण केवल माता-पिता और परिवार के द्वारा किया जाता है
(c) जन-संचार माध्यमों की पहुँच बढ़ रही है और जन-संचार माध्यम अभिवृत्तियों, मूल्यों और विश्वासों को प्रभावित करता है।
(d) बच्चे संचार माध्यमो के साथ प्रत्यक्ष रूप से अंतःक्रिया नहीं कर सकते है।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (c) वर्तमान परिदृश्य में जन संचार माध्यमों की पहुँच हर व्यक्ति तक हो गयी है, ऐसे में ये समाज के अभिवृत्तियों,मूल्यों तथा विश्वासों को भी प्रभावित कर रही है, चाहे वह प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया हो या सोशल मीडिया, फेसबुक, व्हाटसअप, आदि हो। सभी ने समाज के मूल्यों को प्रभावित किया है। इससे सिद्ध होता है कि ''जन संचार माध्यम समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है।''

42. निम्न में से कौन-सा समाजीकरण की निष्क्रिय एजेंसी है?

(a) परिवार (b) ईको क्लब
(c) सार्वजनिक पुस्तकालय (d) स्वास्थ्य क्लब

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) परिवार, ईको क्लब व स्वास्थ्य क्लब सामाजीकरण की सक्रिय संस्थाएँ हैं। जहाँ व्यक्ति दूसरों के साथ संप्रेषण के माध्यम से सामाजिक बनता है तथा अपने विचारों को दूसरो के साथ बाँटता है। परन्तु यह सार्वजनिक पुस्तकालय में अधिक सम्भव नहीं है।

43. निम्नलिखित में से कौन-सा अधिनायकवादी पालन-पोषण की विशेषता नहीं है?

(a) अत्यधिक दंडात्मक
(b) कठोर
(c) आज्ञाकारिता की मांग
(d) सजा के लिए स्पष्टीकरण का प्रावधान

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) अधिनायक वादी पालन–पोषण में माता–पिता द्वारा बच्चों में स्थापित नियमों का पालन कठोरता से करने की आशा की जाती है। ऐसे नियमों का पालन न करने वाले बच्चों के प्रति अत्यधिक दण्डात्मक रवैया अपनाया जाता है। इस पालन–पोषण की अवस्था में माता–पिता अत्यधिक अपेक्षाएँ रखते हैं, उनसे आज्ञाकारिता की माँग करते हैं, परन्तु वे बच्चों के प्रति संवेदनशील नहीं होते हैं। वे अपनी अपेक्षाओं और नियमों के अनुसार बच्चों को सजा देते हैं जिसका वे स्पष्टीकरण देना उचित नहीं समझते हैं।

44. वे माता–पिता जो बच्चे को दंडित करने में विश्वास करते हैं, ... दर्शाता है।

(a) असंबद्ध (भावनात्मक रूप से न जुड़ा हुआ) परवरिश
(b) अनुमोदक परवरिश
(c) आधिकारिक परवरिश
(d) अधिकारवादी परवरिश

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : वे माता–पिता जो बच्चे को दंडित करने में विश्वास करते हैं, यह उनका अधिकारवादी परवरिश दृष्टिकोण दर्शाता है। इस प्रकार के पालन–पोषण में बच्चों से माता–पिता द्वारा स्थापित नियमों का पालन सख्ती से करने की आशा की जाती है। ऐसे नियमों का पालन न करने पर बच्चों को दण्डित किया जाता है। इस प्रकार के माता–पिता अत्यधिक अपेक्षाएँ रखते हैं, परन्तु बच्चों के प्रति संवेदनशील नहीं होते हैं।

45. निम्नलिखित में से कौन-सा माता-पिता द्वारा बच्चों को असफलता से निपटने में समर्थन देने और उनकी मदद करने का सबसे अच्छा तरीका है?

(a) उनकी असफलता को भूलाने के लिए बच्चे को किसी अन्य गतिविधि में व्यस्त करने हेतु एक आरामदायक परिवेश का निर्माण करना
(b) सुनना, सहानुभूति रखना, फिर सीखने के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करना, न कि क्षमताओं पर
(c) अपने बच्चों के लिए ऐसे परिवेश का निर्माण करे जो उन्हें संभावित असफलता या निराशा से बचायें।
(d) बच्चों को उनकी क्षमताओं से परे धकेलना या पुश करना।

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : बच्चों की बातों, भावनाओं, अनुभवों, विचारों आदि को सुनना, सहानुभूति रखना फिर सीखने के अवसरों पर ध्यान केन्द्रित करना, न कि क्षमताओं पर, ऐसा करके माता–पिता या अभिभावक अपने बच्चों को असफलता से निपटने में सक्षम बना सकते हैं।

46. निम्नलिखित में से कौन एक बच्चे की विलक्षणता नहीं है, जिसके माता-पिता अधिनायकवादी (अथॉरिटेरियन) हैं?

(a) अमित्र
(b) एकांतप्रिय
(c) स्वतंत्र
(d) अंतर्मुखी

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : जिस बच्चे के माता–पिता अधिनायकवादी (अथॉरिटेरियन) होते हैं, उसमें स्वतंत्रता, मौलिकता, सृजनात्मकता जैसे गुणों का अभाव पाया जाता है। ऐसे बच्चे प्रायः अपनी क्षमता के अनुरूप विकास नहीं कर पाते हैं।

47. विद्यालय कार्यक्रम के बाद माध्यमिक विद्यालय के बच्चों को ..... के माध्यम से अपने परिवारों के बाहर वयस्कों के साथ लंबे समय तक चलने वाले रिश्ते बनाने के लिए सुरक्षित अवसरों की अनुमति देता है।

(a) आनंद और खुशी
(b) कठिनाई और जिम्मेदारी
(c) अकादमिक उत्कृष्टता के लिए पढ़ना और लिखना
(d) स्वतंत्रता, सहकर्मी संबंध और नेतृत्व

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : विद्यालय कार्यक्रम के बाद माध्यमिक विद्यालय के बच्चों को स्वतंत्रता, सहकर्मी सम्बन्ध और नेतृत्व के माध्यम से अपने परिवारों के बाहर वयस्कों के साथ लम्बे समय तक चलने वाले रिश्ते बनाने के लिए सुरक्षित अवसरों की अनुमति देता है। इससे बच्चों का सामाजिक विकास बेहतर होता है।

48. निम्नलिखित में से कौन सी थेरेपी, माता-पिता को अपने बच्चों के लक्षणों को नियंत्रित करने और प्रबंधित करने के लिए दी जाती है जिनके बच्चे विशेष रूप से आचरण विकार (कंडक्टर डिसऑर्डर) से पीड़ित होते हैं :

(a) पैरेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम्स
(b) कार्यात्मक परिवार थेरेपी
(c) प्रणालीगत फैमिली थेरेपी
(d) प्ले थेरेपी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : वे बच्चे जो विशेष रूप से आचरण विकार (कंडक्टर डिसऑर्डर) से पीड़ित होते हैं उनके माता–पिता को अपने बच्चों के लक्षणों को नियंत्रित करने और प्रबन्धित करने के लिए, पैरेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम्स का आयोजन किया जाता है ताकि माता–पिता को अपने बच्चों के साथ पैरेंटिंग और संचार को बेहतर बनाने में मदद मिल सके। इसे अभिभावक शिक्षा कार्यक्रम भी कहा जा सकता है। इस कार्यक्रम का लक्ष्य बच्चों के शोषण, उपेक्षा और उनमें व्यवहार की समस्याओं को कम करना है।

EXAM POINTS

- समाजीकरण के सन्दर्भ में से किस संस्था की महत्वपूर्ण भूमिका होती है– **परिवार, समाज, समुदाय**
- ''समाजीकरण सीखना है, जो सीखने वाले को सामाजिक कार्य करने योग्य बनाता है।'' समाजीकरण के सन्दर्भ में यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है– **जॉनसन**
- समाजीकरण की विशेषता नहीं है– **व्यक्ति के समाजीकरण में समुदाय की कोई भूमिका नहीं होती**
- मनोसामाजिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किस मनोवैज्ञानिक ने दिया है– **एरिक एरिक्सन**
- पारिस्थितिपरक सिद्धान्त के अन्तर्गत जब कोई बालक सामाजिक मूल्य तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर पर समायोजन करता है, तो वह बालक किस मण्डल में है– **वृहतमण्डल**
- मनोविश्लेषण सिद्धान्त का प्रतिपादन किस मनोवैज्ञानिक ने किया है– **सिगमण्ड फ्रायड**
- सिगमण्ड फ्रायड के किस तत्व के अन्तर्गत मानव में नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृति मूल्यों का विकास होता है– **पराअहम्**
- कथन सही नहीं है– **बालकों के समाजीकरण में उनके मित्र समूहों की भूमिका नहीं होती है**
- अल्प वयस्क के अधिगम में अभिभावकों की भूमिका होनी चाहिए – **अग्रोन्मुखी**
- परिवार एक साधन है– **अनौपचारिक शिक्षा का**
- वह कौन-सी संस्था सामाजिक परम्पराओं के हस्तान्तरण में सबसे अधिक योगदान करती है– **परिवार**
- सामाजिक अधिगम आरम्भ होता है– **सम्पर्क से**
- विद्यार्थियों के साथ सम्प्रेषण का अर्थ होता है– **उन्हें अपने विचारों से अवगत कराना**
- समाजीकरण है– **समाज के मानदण्डों के साथ अनुकूलन**
- बच्चों के अच्छे चरित्र के निर्माण के लिए– **कक्षा-कक्ष गतिविधि इस प्रकार से हो कि बच्चों को चरित्र निर्माण में सहायता मिल सके**
- समाजीकरण के सन्दर्भ में विद्यालयों के पास प्रायः एक प्रच्छन्न पाठ्यचर्या विद्यमान रहती है, जिसमें निहित है– **अन्तः क्रिया व सामग्री द्वारा विद्यालयों में प्रस्तुत कि जाने वाली सामाजिक भूमिकाओं से सम्बद्ध अनौपचारिक संकेत**
- समाजीकरण की निष्क्रिय एजेन्सी है– **सार्वजनिक पुस्तकालय**
- मनोसामाजिक सिद्धान्त किस पर बल देता है– **उद्यम के मुकाबले में हीनता स्तर**
- समाजीकरण एक प्रक्रिया है– **मूल्यों, विश्वासों तथा अपेक्षाओं को अर्जित करने की**
- ''जन-संचार माध्यम समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है।'' यह प्रभावित करता है– **अभिवृत्तियों, मूल्यों और विश्वासों को**
- समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल नहीं है– **आनुवंशिक संचरण**
- बच्चे के समाजीकरण में परिवार की भूमिका होती है– **मुख्य**
- समाजीकरण के गौण कारक हो सकते हैं– **विद्यालय और निकटतम परिवार के सदस्य**
- शिक्षा के सन्दर्भ में, समाजीकरण से तात्पर्य है– **सामाजिक वातावरण में अनुकूलन और समायोजन**
- सबसे अधिक गहन और जटिल समाजीकरण होता है– **किशोरावस्था के दौरान**
- एक शिक्षक विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है– **आदर्श रूप में वर्ताव कर**
- उपनयन संस्कार किस काल में किया जाता था– **वैदिक काल**
- समाजमिति तकनीक का प्रयोग किया जाता है– **समाजीकरण की जाँच में**
- समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसे बच्चे व वयस्क सीखते हैं– **परिवार, विद्यालय, श्रेष्ठजनों से**
- समाजीकरण में सम्मिलित है, सांस्कृतिक संचरण और– **वैयक्तिक व्यक्तित्व विकास**
- ''जब कभी दो या अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।'' यह कथन– **सत्य है**
- बच्चों के सामाजिक विकास में विशेष महत्व है– **खेल**
- सामाजिक परिवर्तन का सर्वाधिक कार्यकारी कारक है– **शिक्षा**
- प्रगतिशील शिक्षा के सम्बन्ध में कथन जॉन डीवी के अनुसार समुचित है– **विद्यार्थियों को स्वयं ही सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सक्षम होना चाहिए**
- व्यक्तित्व का ''समाजशास्त्रीय प्रकार का सिद्धान्त'' दिया गया– **स्प्रेंजर के द्वारा**
- किसी बच्चे के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक नहीं है– **मित्र मण्डली**
- बालक का समाजीकरण किससे सम्बन्धित नहीं है– **वह प्रक्रिया जो तुरन्त हो जाती है**
- विद्यालय और समाजीकरण के बारे में सत्य कथन है– **विद्यालय समाजीकरण का महत्वपूर्ण कारक है**
- सामाजिक परम्पराओं के हस्तान्तरण में सबसे अधिक योगदान करने वाली संस्था है– **परिवार**

06.

पियाजे, कोह्लबर्ग, ब्रूनर एवं वाइगोत्सकी के सिद्धांत

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत

1. बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को सबसे अच्छे तरीके से कहाँ परिभाषित किया जा सकता है?

(a) खेल के मैदान में (b) विद्यालय एवं कक्षा में
(c) ऑडिटोरियम में (d) गृह में

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (b) बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को मापने एवं परिभाषित करने का सर्वाधिक उपयुक्त विधि परीक्षा प्रणाली है जिसमें बच्चों के संज्ञानात्मक विकास स्तर को जाना जा सकता है तथा इसके लिए विद्यालय सबसे उपयुक्त स्थान होता है जहाँ बच्चे स्वतंत्र एवं अनुशासित रुप से अपनी अभिव्यक्ति दे सकते हैं।

2. आजकल बच्चों की 'गलत धारणाओं को' 'वैकल्पिक धारणाएँ' कहने की एक प्रवृत्ति है। इसे कहा जा सकता है :

(a) बच्चों की गलतियों की व्याख्या के लिए मनोहर शब्दों का उपयोग करना
(b) बच्चों को उनकी सोच में प्रौढ़ों के समान मानना
(c) बच्चों के समझ में सूक्ष्म भेद करना और उनका अपने सीखने के प्रति निष्क्रिय रहना
(d) पहचानना कि बच्चे सोच सकते हैं और उनकी सोच प्रौढ़ों से भिन्न होती है

DSSSB PRT

Ans : (d) आजकल बच्चों की गलत धारणाओं को वैकल्पिक धारणाएँ कहने की एक प्रवृत्ति है। ऐसा इसलिए किया जाता है, क्योंकि बच्चे अपने स्तर पर समझते व सोचते हैं जो निःसंदेह प्रौढ़ो से भिन्न हो सकता है। **पियाजे के अनुसार** यह बालक के संज्ञानात्मक विकास पर निर्भर करता है। इसलिए उनके सोचने व समझने की धारणाओं को गलत नहीं कहा जा सकता बल्कि उन्हें वैकल्पिक धारणाएँ कहना अधिक उपयुक्त है।

3. एक तीन साल का बच्चा बताता है कि दूध बूथ पर एक मशीन द्वारा दूध का उत्पादन होता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चे की समझ का सबसे अच्छा स्पष्टीकरण प्रदान करता है?

(a) बच्चे को दुनिया का बहुत सीमित अनावरण/ज्ञान है।
(b) बच्चे का जवाब दूध बूथ से दूध खरीदने के अपने अनुभव पर आधारित है।
(c) बच्चे ने गायों को कभी नहीं देखा है।
(d) बच्चे का परिवार बच्चे को प्रेरक वातावरण प्रदान नहीं करता।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : यदि कोई तीन साल का बच्चा बताता है कि दूध-बूथ पर एक मशीन द्वारा दूध का उत्पादन होता है तो इसका अर्थ यह है कि बच्चे का जवाब दूध बूथ से दूध खरीदने के अपने अनुभव पर आधारित है। जीन पियाजे की माने तो तीन साल का बच्चा पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था में होता है। इस अवस्थ में बच्चा बिना किसी तार्किक विचार प्रक्रिया के किसी वस्तु या बात को स्वीकार कर लेता है।

4. किसी वस्तु के स्थायित्व की अवधारणा पियाजे के विकास के ..... चरण में प्राप्त हो जाती है।

(a) संवेदी–गामक (b) पूर्व–परिचालन
(c) मूर्त परिचालन (d) औपचारिक परिचालन

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : किसी वस्तु के स्थायित्व की अवधारणा पियाजे के विकास के संवेदी–गामक चरण में प्राप्त हो जाती है। अर्थात् बालक इस अवस्था में यह जान पाता है कि घटनाएँ एवं वस्तुएँ तब भी उपस्थित रहती हैं जब वे हमारे सामने नहीं होती हैं। संज्ञानात्मक विकास की संवेदी गामक अवस्था जन्म से 2 वर्ष तक होती है।

5. स्वजागरूकता एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं का नियंत्रण, जैसे–योजना बनाना, समीक्षा करना और संशोधन करना इत्यादि ..... में अंतर्निहित हैं।

(a) केन्द्रीकरण (b) संज्ञानबोध
(c) संज्ञान (d) समायोजन

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : स्वजागरूकता एवं संज्ञानात्मक क्षमताओं का नियंत्रण, जैसे–योजना बनाना, समीक्षा करना और संशोधन करना इत्यादि संज्ञानबोध में अंतर्निहित हैं। संज्ञानबोध के अंतर्गत छात्र विभिन्न सम्प्रत्ययों के परस्पर सम्बन्धों का अवबोध करने, नियमों को पहचानने, समझने उनका विभिन्न परिस्थिति में अनुप्रयोग करने, विषय के गूढ़ भावों तथा तथ्यों को समझने जैसी योग्यताएँ विकसित कर लेता है।

6. निम्नलिखित में से कौन-सी पूर्व-संक्रियात्मक विचार की एक सीमा नहीं है?

(a) ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति
(b) प्रतीकात्मक विचार का विकास
(c) अहंमन्यता
(d) अनुत्क्रमणीयता

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : संज्ञानात्मक विकास की पूर्व संक्रियात्मक अवस्था लगभग दो वर्ष की अवस्था से प्रारम्भ होकर सात वर्ष की अवस्था तक चलती है। इस अवस्था में संकेतात्मक या प्रतीकात्मक विचारों का विकास तथा भाषा का प्रयोग प्रारम्भ होता है इसलिए प्रतीकात्मक विचारों का विकास पूर्व संक्रियात्मक गुण है न कि सीमा है।

7. निम्नलिखित में से कौन सा मूर्त क्रियात्मक अवस्था के प्रमुख कौशलों में से एक है?

(a) सुरक्षित रखने की योग्यता
(b) परिकल्पित निगमनात्मक तर्क
(c) द्वितीयक वर्तुल प्रतिक्रियाएँ
(d) सजीवात्मक चिंतन

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (a) : मूर्त–क्रियात्मक अवस्था लगभग 7-12 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था का एक प्रमुख कौशल सुरक्षित रखने की योग्यता है। इसे संरक्षण का सिद्धांत भी कहा जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार किसी वस्तु की मात्रा पर उस वस्तु के आकार में परिवर्तन करने अथवा उस वस्तु को कई हिस्सों या टुकड़ों में विभक्त कर देने का कोई प्रभाव नहीं होता है। पियाजे के अनुसार संरक्षण के ज्ञान के लिए विलोमीयता तथा तार्किक गुणिता नामक दो पूर्व योग्यताओं का होना आवश्यक है। विलोमीयता से आशय किसी वस्तु को मानसिक स्तर पर उसके आकार को समझने से है। तार्किक गुणिता से आशय किसी वस्तु या समस्या की दो या दो से अधिक विमाओं या विशेषताओं पर एक साथ ध्यान देने से है। बच्चे इस अवस्था में तरल, लम्बाई, भार इत्यादि के संरक्षण से संबंधित समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होते हैं।

8. पियाजे के अनुसार, विशिष्ट मनोवैज्ञानिक संरचनाएँ (अनुभव से सही अर्थ निकालने के व्यवस्थित तरीके) को क्या कहा जाता है?

(a) स्कीमा (b) प्रतिमान
(c) मानसिक मैप (d) मानसिक उपकरण

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (a) : पियाजे के अनुसार, स्कीमा से तात्पर्य एक ऐसी मानसिक संरचना से लिया जाता है जिसका सामान्यीकरण किया जा सके। दूसरे शब्दों में स्कीमा जानने व समझने में शामिल मानसिक व शारीरिक क्रियाओं दोनों का वर्णन है। स्कीमा ज्ञान की श्रेणियाँ हैं जो संसार की समझ और व्याख्या में हमारी मदद करती हैं। जैसे–जैसे बच्चें के अनुभव में विस्तार होता है वैसे–वैसे नवीन अनुभवों व जानकारी के आधार पर पूर्ववर्ती स्कीमा में संशोधन, जोड़ना या परिवर्तन या नये स्कीमा बनाने की प्रक्रिया होती जाती है। इसीलिए पियाजे ने स्कीमा को विशिष्ट मनोवैज्ञानिक संरचना कहा है।

9. निम्नलिखित में से कौन सा पूर्व क्रियात्मक अवस्था काल के बच्चे को विशेषित करता है?

(a) लक्ष्य-निर्देशित व्यवहार
(b) विलंबित अनुकरण
(c) विचारों की अनुत्क्रमणीयता
(d) वर्तुल प्रतिक्रिया

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) पूर्व क्रियात्मक अवस्था लगभग 2 वर्ष से प्रारम्भ होकर सात वर्ष तक चलती है। इस अवस्था को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(i) पूर्व प्रत्ययात्मक काल (2-4 वर्ष)
(ii) आंत प्रज्ञ काल (4-7 वर्ष)

(i) पूर्व प्रत्ययात्मक काल (2-4 वर्ष)–इसे खोज की अवस्था भी कहा जाता है तथा इस अवस्था में भाषा विकास का विशेष महत्व रहता है।

(ii) आंत प्रज्ञ काल (4-7 वर्ष)–आंत प्रज्ञ चिंतन से पियाजे का तात्पर्य बिना किसी तार्किक विचार प्रक्रिया के किसी वस्तु या बात को मस्तिष्क के द्वारा तुरंत स्वीकार कर लेने से है। इस अवस्था में विचार प्रक्रिया अनुत्क्रमणीय होती है अर्थात बालक मानसिक क्रम के प्रारम्भिक बिन्दु पर पुनः नहीं लौट पाता है। उदाहरण के लिए यदि दो समान लम्बाई की छड़ी को आगे पीछे रखकर बच्चे से पूछा जाये कि कौन सी लम्बी छड़ी है तो वह बतायेगा कि आगे वाली छड़ी लम्बी है। जो कि गलत उत्तर होगा।

10. जीन पियाजे द्वारा परिभाषित वह अवस्था जहाँ संज्ञानात्मक विकास बालक के अपनी इन्द्रियों के प्रयोग तथा बाहरी दुनिया का पता लगाने के प्रयासों से होता है :

(a) ज्ञानेन्द्रिय अवस्था (b) पूर्व-परिचालन अवस्था
(c) ठोस अवस्था (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) जीन पियाजे द्वारा परिभाषित ज्ञानेन्द्रिय अवस्था में संज्ञानात्मक विकास बालक के अपनी इंन्द्रियों के प्रयोग द्वारा बाहरी दुनिया का पता लगाने के प्रयासों से होता है। दूसरे शब्दों में ज्ञानेन्द्रिय अवस्था में बच्चा अपनी इन्द्रियों के अनुभवों तथा उन पर पेशीय कार्य करके जानने और समझने का प्रयास करता है। ज्ञानेन्द्रिय अवस्था जन्म से लेकर 2 वर्ष तक चलती है।

11. जीन पियाजे के सिद्धांत का प्रमुख प्रस्ताव है कि–

(a) बच्चों की सोच वयस्कों से बेहतर होती है।
(b) बच्चों की सोच मात्रात्मक रूप में वयस्कों से भिन्न होती है।
(c) बच्चों की सोच गुणात्मक रूप में वयस्कों से भिन्न होती है।
(d) बच्चों की सोच वयस्कों से निम्न होती है।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) जीन पियाजे के सिद्धान्त का प्रमुख प्रस्ताव यह है कि बच्चों की सोच गुणात्मक रूप में वयस्कों से भिन्न होती है। जीन पियाजे ने इस बात पर बल दिया है कि बच्चे संसार के बारे में अपनी समझ की रचना सक्रिय रूप से करते हैं। पियाजे का मानना है कि प्रत्येक अवस्था चिंतन के एक विशिष्ट तरीके से परिभाषित होती है एवं आयु से संबद्ध रहती है। यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि यह चिंतन का अलग तरीका है तथा गुणात्मक रूप से भिन्न होती हैं न कि मात्रात्मक रूप से जो एक अवस्था को दूसरी अवस्था से अधिक उच्च बनाती हैं।

12. निम्नलिखित व्यवहारों में से कौन सा जीन पियाजे के द्वारा प्रस्तावित 'मूर्त संक्रियात्मक अवस्था' को विशेषित करता है?

(a) आस्थगित अनुकरण, पदार्थ स्थायित्व
(b) प्रतीकात्मक खेल, विचारों की अनुत्क्रमणीयता
(c) परिकल्पित-निगमनात्मक तर्क; साध्यात्मक विचार
(d) संरक्षण, कक्षा समावेशन

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था संज्ञानात्मक विकास की तीसरी अवस्था है, जिसकी समयावधि लगभग 7–11 वर्ष तक मानी जाती है इस अवस्था के बच्चों में तीन महत्त्वपूर्ण संप्रत्यय विकसित हो जाते हैं।

(i) संरक्षण का सिद्धांत (Principle of conservation)
(ii) संबंध (Relation)
(iii) कक्षा समावेशन या वर्गीकरण
इस अवस्था के बच्चों में जब संरक्षण का गुण आ जाता है तो वे समझने लगते हैं कि किसी वस्तु के आकार में परिवर्तन करने अथवा उस वस्तु को कई हिस्सों में विभाजित कर देने का उस वस्तु के द्रव्यमान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसी प्रकार कक्षा समावेशन के अंतर्गत वे वस्तुओं को उनके गुणों के आधार पर संबंधित कर सकते हैं या वर्गीकृत कर सकते हैं।

13. बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सी पियाजे की संरचना है?

(a) अनुबंधन (b) प्रबलन
(c) स्कीमा (d) अवलोकन अधिगम

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (c) बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के संदर्भ में स्कीमा, स्कीम्स, संज्ञानात्मक संरचना, साम्यधारण या संतुलन, समायोजन, आत्मसात्करण, विकेन्द्रण आदि पियाजे द्वारा दिये गये संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के मूलभूत भाग हैं जबकि अनुबंधन पावलव के अधिगम सिद्धान्त के प्रबलन हल के अधिगम सिद्धांत के तथा अवलोकन अधिगम बण्डूरा के अधिगम सिद्धांन्त के महत्वपूर्ण अंग हैं।

14. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत से निहितार्थ निकालते हुए एक ग्रेड 6-8 के शिक्षक को अपनी कक्षा में क्या करना चाहिए?

(a) ऐसी समस्याएँ प्रस्तुत करनी चाहिए जिसमें तर्क आधारित समाधान की आवश्यकता होती है।
(b) एक अवधारणा को पढ़ाने के लिए केवल मूर्त सामग्रियों का प्रयोग करना चाहिए।
(c) केवल निर्धारित पाठ्यक्रम पर निर्भर रहना चाहिए।
(d) तार्किक बहस के प्रयोग को हतोत्साहित करना चाहिए।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (a) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से निहितार्थ निकालते हुए एक ग्रेड 6-8 के शिक्षक को अपनी कक्षा में ऐसी समस्याएँ प्रस्तुत करनी चाहिए, जिसमें तर्क आधारित समाधान की आवश्यकता होती है क्योंकि पियाजे का मानना है कि बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं इसलिए उनके समक्ष ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना चाहिए जिसमें वे स्वयं खोज के द्वारा अधिगम अनुभव प्राप्त करें।

15. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, परिकल्पित निगमनात्मक तर्क किस अवधि में विकसित होता है?

(a) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(b) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(c) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(d) संवेदी-चालक अवस्था

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार, परिकल्पित निगमनात्मक तर्क अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में विकसित होता है। अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था संज्ञानात्मक विकास की अंतिम अवस्था है, जो लगभग 11-15 वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था के दौरान बालक अमूर्त बातों के संबन्ध में तार्किक चिंतन करने की योग्यता विकसित कर लेता है। ध्यातव्य है कि मूर्त वस्तुओं तथा सामग्री के स्थान पर शाब्दिक तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति का प्रयोग तार्किक चिंतन में किया जाता है।

16. आत्मसातकरण तथा समायोजन की प्रक्रिया किससे सम्बन्धित है?

उत्तर: संज्ञानात्मक विकास/ अनुकूलन

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-जीन पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक विकास की दो मुख्य विशेषताएँ हैं- संगठन तथा अनुकूलन। संगठन से तात्पर्य प्रत्यक्षीकृत तथा बौद्धिक सूचनाओ को सार्थक पैटर्न में व्यवस्थित करने से होता है।
अनुकूलन के अंतर्गत व्यक्ति अपने पूर्व ज्ञान तथा नवीन अनुभवों के मध्य संतुलन स्थापित करता है। इसमे 'आत्मसातकरण' तथा 'समायोजन' दो प्रक्रम सन्निहित होते हैं।

17. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के चार चरणों में कौन-सा सम्मिलित नहीं है?

(a) इंद्रिय गामक अवस्था
(b) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
(c) उत्तर-संक्रियात्मक अवस्था
(d) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) पियाजे के संज्ञानात्मक विचार के चार चरण होते है
1- संवेदनात्मक गामक अवस्था (इन्द्रिय-गामक अवस्था) (0-2 वर्ष तक)
2- पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष तक)
3- अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष तक)
4- औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष के बाद)

18. पियाजे के अनुसार विकास की प्रथम अवस्था (जन्म से 2 वर्ष तक) में बच्चा अधिक उपयुक्त प्रकार से जिसके द्वारा सीखता है, वह है–

(a) इंद्रियों के प्रयोग द्वारा
(b) अमूर्त चिंतन द्वारा
(c) भाषा के नए सीखे शब्दों के बोध के द्वारा
(d) मूर्त चिंतन द्वारा

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (a) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की प्रथम अवस्था संवेदनात्मक-गामक अवस्था है जो जन्म से 2 वर्ष तक रहती है। इस अवस्था में बालक अपने इन्द्रियों का प्रयोग कर वस्तुओं को पहचानता है तथा अन्य बातों को सीखता है।

19. जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं के अनुसार जिसे पूर्व-प्रत्ययात्मक काल के रूप में जाना जाता है, निम्न में से किससे सम्बन्धित है?

(a) इन्द्रिय गति अवस्था से
(b) मूर्त संक्रिया अवस्था से
(c) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था से
(d) औपचारिक-संक्रिया अवस्था से

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं के अनुसार जिसे पूर्व–प्रत्ययात्मक काल के रूप में जाना जाता है, वह पूर्व संक्रियात्मक अवस्था से सम्बन्धित है। पूर्व संक्रियात्मक अवस्था को दो भागों में बाँटा जा सकता है– (i) पूर्व–प्रत्ययात्मक काल (ii) अंतर्दर्शी अवधि।

पूर्व प्रत्ययात्मक काल की समयावधि 2 से 4 वर्ष तक की मानी जाती है। इस अवधि में बच्चा वस्तु सामने उपस्थित न होने पर भी उसकी मानसिक छवि बना लेता है।

20. पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धान्त की अवस्थाओं का क्रम निम्न है-

(a) संवेदनात्मक गामक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल- पूर्वसंक्रियात्मक काल- औपचारिक संक्रियात्मक काल
(b) संवेदनात्मक गामक काल- पूर्व-संक्रियात्मक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल- औपचारिक संक्रियात्मक काल
(c) पूर्वसंक्रियात्मक काल- संवेदनात्मक गामक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल-औपचारिक संक्रियात्मक काल
(d) पूर्वसंक्रियात्मक काल- संवेदनात्मक गामक काल- औपचारिक संक्रियात्मक काल- मूर्त संक्रियात्मक काल

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाए निम्न है -
1. संवेदनात्मक गामक काल - (0-2 वर्ष)
2. पूर्व संक्रियात्मक काल - (2-7 वर्ष)
3. मूर्त संक्रियात्मक काल - (7-11 वर्ष)
4. औपचारिक संक्रियात्मक काल - (11 से अधिक आयु)

21. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की 'पूर्व संक्रियात्मक अवस्था' का आयु समूह है

(a) 0-2 वर्ष (b) 2-7 वर्ष
(c) 4-11 वर्ष (d) 7-12 वर्ष

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत की पूर्व संक्रियात्मक अवस्था की आयु 2-7 वर्ष के समूह को कहते हैं।

22. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त के अनुसार समाविष्टीकरण से तात्पर्य है

(a) पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं तथा वातावरणीय माँग का मिलान
(b) चिन्तन के नये तरीकों का समावेश तथा पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करते हुए व्यवहार करना
(c) पूर्व ज्ञान तथा नवीन ज्ञान के बीच साम्यावस्था होना
(d) प्रत्यक्षात्मक व संज्ञानात्मक सूचनाओं को सार्थक पैटर्न में व्यवस्थित करना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार समाविष्टीकरण से तात्पर्य– चिन्तन के नये तरीकों का समावेश तथा पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करते हुए व्यवहार करना है।

23. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था निम्न योग्यता द्वारा लक्षित नहीं होती है

(a) विचारों की विलोमीयता
(b) मानसिक द्वन्द्व
(c) संरक्षण
(d) क्रमबद्धता व पूर्ण-अंश प्रत्ययों का प्रयोग

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत की मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था के निम्न विशेषता होती है-
1. विचारों की विलोमीयता
2. संरक्षण
3. क्रमबद्धता व पूर्ण अंश प्रत्ययों का प्रयोग

24. ''घटना और वस्तुओं के बारे में एक बच्चा तार्किक रूप से सोच सकता है'' पियाजे के चरणों के सम्बन्ध में सही कथन है

(a) सेन्सरी तन्त्रिका तन्त्र (Sensory Motor)
(b) प्रारम्भिक संचालन प्रक्रिया (Pre Operational)
(c) मूर्त संचालन प्रक्रिया (Concrete Operational)
(d) औपचारिक संचालन प्रक्रिया (Formal Operation)

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) पियाजे के बौद्धिक क्षमता की तीसरी अवस्था मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11वर्ष) में बच्चे किसी घटना और वस्तुओं के बारे में तार्किक रूप से सोच सकते हैं।

25. निम्न सिद्धान्तों में से कौन बच्चे के बौद्धिक विकास के 4 चरणों (संवेदी-चालक, पूर्व परिचालन, सुदृढ़ परिचालन एवं औपचारिक परिचालन) को चिह्नित करता है?

(a) एरिक्सन का मनो-सामाजिक विकास का सिद्धान्त
(b) फ्रायड का मानसिक-यौन विकास का सिद्धान्त
(c) जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त
(d) कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (c) जीन पियाजे ने अपने ज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में शिशु के बौद्धिक विकास को उसके आयु के अनुसार 4 चरणो में बांटा है-
1. संवेदी मोटर (संवेदनात्मक गामक अवस्था (0-2 वर्ष)
2. पूर्व संचालकता (पूर्व संक्रियात्मक अवस्था) (2-7 वर्ष)
3. प्रत्यक्ष संचालकता (मूर्त संक्रियात्मक अवस्था) (7-11 वर्ष)
4. औपचारिक संचालकता (औपचारिक संक्रियावस्था) (11-15 वर्ष)

26. वस्तुओं को क्रम से लगाने की क्षमता बालक में विकसित होती है जब वह

(a) इन्द्रियगति अवस्था में हो (b) पूर्व क्रिया अवस्था में हो
(c) मूर्त क्रिया अवस्था में हो (d) औपचारिक क्रिया अवस्था में हो

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) वस्तुओं को क्रम में लगाने की क्षमता बालक में मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में हो जाती है। इस अवस्था में उसे क्रमबद्धता का ज्ञान हो जाता है।

27. निम्न में से कौन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नहीं है?

(a) सामाजिक संचरण (b) अनुभव
(c) सन्तुलनीकरण (d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) जिन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास के निर्धारक तत्व निम्न हैं-
- संवेदना - प्रत्यक्षीकरण (अनुभव)
- अवलोकन - ध्यान
- स्मृति - कल्पना
- चिंतन (संतुलनीकरण) - तर्क
- निर्णय - बुद्धि
- भाषा - अधिगम

अतः सामाजिक संचरण बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नहीं है।

28. फ्रायड, पियाजे एवं अन्य मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व विकास की विभिन्न अवस्थाओं के सन्दर्भ में व्याख्या की है। परन्तु पियाजे ने
(a) कहा कि विकास की अवस्थाएँ वातावरण से निर्धारित होती हैं
(b) कहा कि शैशवावस्था के अनुभव ही अधिक प्रभावित करते हैं, बाकी अवस्थाओं के सीमित प्रभाव होते हैं
(c) विभिन्न अवस्थाओं को समझाने के लिए संज्ञानात्मक बदलाव के बारे में कहा
(d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) जींन पियाजे ने व्यक्ति के विभिन्न व्यक्तित्व अवस्थाओं को समझाने के लिए व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा को विकसित किया।

29. पियाजे के अनुसार बच्चा अमूर्त स्तर पर चिंतन, बौद्धिक क्रियाएँ और समस्या समाधान किस अवस्था में करने लगता है?
(a) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष)
(b) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष)
(c) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-15 वर्ष)
(d) संवेदी पेशीय अवस्था (0-2 वर्ष)

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (c) पियाजे के अनुसार बालक संज्ञानात्मक विकास की चौथी अवस्था औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-15 वर्ष) में अमूर्त स्तर पर चिंतन करने लगता है। वह अपने स्तर पर सही और गलत के बीच तार्किक रूप से सोचने लगता है।

30. पियाजे की कौन-सी अवस्था का सम्बन्ध अमूर्त एवं तार्किक चिन्तन से है?
(a) संवेदीगामक अवस्था
(b) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(c) अर्मूत संक्रियात्मक अवस्था
(d) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013
DSSSB PRT

Ans: (c) जीन पियाजे के अनुसार अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (11-15 वर्ष) में बालक अमूर्त बातों के सम्बन्ध में तार्किक चिंतन करने की योग्यता विकसित करता है। अमूर्त संक्रियात्मक विचार बालकों को वास्तविकता से बाहर जाने तथा सम्भावनाओं पर विचार करने योग्य बनाते है।

31. जीन पियाजे द्वारा परिभाषित चरण जिसमें ज्ञानात्मक विकास की शुरुआत शिशु द्वारा अपनी संवेदना (विवेक) एवं गतिविधियों का इस्तेमाल दुनिया को समझने के साथ होती है, कहलाता है?
(a) संवेदी मोटर अवस्था (b) संचालन पूर्व अवस्था
(c) साकार (मूर्त) अवस्था (d) इनमें कोई नहीं।

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans : (a) पियाजे ने मानव के संज्ञानात्मक विकास को चार स्तरों में बाँटा है। प्रथम स्तर जिसे संवेदी गामक अवस्था या संवेदी मोटर अवस्था (0-2 वर्ष तक) कहते है। इसमें बालक अपनी संवेदना एवं गतिविधियों का इस्तेमाल दुनिया को समझने के लिए करने लगता है। अपने भावों को अभिव्यक्त करने के लिए अपनी इंद्रियों को संचालित करता है।

32. अपने आसपास के वातावरण (माहौल) के साथ सामंजस्य बैठाने (ढालने) की क्षमता से बुद्धिमत्ता का संबंध जोड़ने वाला मनोवैज्ञानिक था?
(a) जीन पियाजे (b) थार्नडाइक
(c) होर्वाड गार्डनर (d) इनमें कोई नहीं

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) अपने आस पास के वातावरण के साथ सामंजस्य बैठान की क्षमता को बुद्धि के साथ जोड़ने का प्रयास जीन पियाजे के द्वारा किया गया। वस्तुतः जीन पियाजे ने बुद्धि को एक ऐसी अनुकूलित प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जिसमें जैविक परिपक्वता की वातावरणीय परिस्थितियों के साथ अन्तर्क्रिया होती है। जीन पियाजे ने बुद्धि के सम्बन्ध में संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

33. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के अनुसार संवेदी-क्रियात्मक अवस्था होती है
(a) जन्म से 2 वर्ष (b) 2 से 7 वर्ष
(c) 7 से 11 वर्ष (d) 11 से 16 वर्ष

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) जीन पियाजे के द्वारा संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत दिया गया। इस सिद्धांत के अनुसार बालक के संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाए होती है-
1. संवेदी गामक अवस्था (संवेदीक्रियात्मक अवस्था) (0-2) वर्ष
2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7) वर्ष
3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11) वर्ष
4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था-11 वर्ष के बाद

34. एक बच्ची को उसके पिता चहलकदमी करा रहे थे। बच्ची जानती थी कि चिड़िया जैसी चीजें होती है परन्तु उसने कभी पतंग को नहीं देखा था। पतंग को देखकर उसने कहा 'चिड़िया को तो देखों' उसके पिता ने कहा 'यह एक पतंग है'। यह उदाहरण दिखाता है।

(a) सम्मिलन (b) समायोजन
(c) संरक्षण (d) वस्तु का प्रदर्शन

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
JH TET 2011 (I-V)

Ans: (b) बच्ची के मस्तिष्क में पतंग की अवधारणा का विकास नहीं हुआ था अतः जब उसके पिता बताते हैं कि वह पतंग है तो बच्ची उस पतंग की अवधारणा को अपने मस्तिष्क में स्थापित करने के लिए अपने स्कीमा में समायोजन कर लेगी। अर्थात् वह अपने पूर्ववर्ती मानसिक संरचना में संशोधन करके पतंग के प्रत्यय को समायोजित कर लेगी।

35. तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास होता है-
(a) 6 वर्ष की आयु में (b) 8 वर्ष की आयु में
(c) 11 वर्ष की आयु में (d) 15 वर्ष की आयु में

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) जीन पियाजे के अनुसार बालक के औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था में बालक में तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण–शक्ति का विकास हो जाता है। औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था की शुरूआत 11 वर्ष की आयु से हो जाती है।

36. पियाजे के विकास की अवस्थाओं में संवेदी गामक अवस्था समायोजित करता है-
(a) अनुकरण, स्मृति एवं मानसिक प्रस्तुतीकरण
(b) विकल्पों की व्याख्या एवं विश्लेषण करने की क्षमता
(c) तार्किक रूप से समस्या के समाधान की क्षमता
(d) सामाजिक मुद्दों से सरोकार

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) पियाजे ने बालक के विकास को चार अवस्था/चरण में बाँटा है। जिसमें पहली अवस्था संवेदी गामक अवस्था होती है जो बालक के जन्म से 2 वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था में बालक अनुकरण, स्मृति एवं मानसिक प्रस्तुतिकरण को समायोजित करता है।

38. पियाजे के अनुसार मूर्त संक्रियाओं का स्तर किस अवधि में घटित होता है?
(a) जन्म से 2 वर्ष (b) 2 से 7 वर्ष
(c) 7 से 11 वर्ष (d) 11 से 15 वर्ष

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (c) पियाजे ने बालक के संज्ञानात्मक विकास को चार चरणों में विभाजित किया है, ये है-
1. संवेदनात्मक गामक स्तर (0-2 वर्ष तक)
2. पूर्व संक्रियात्मक स्तर (2-7 वर्ष तक)
3. मूर्त संक्रियात्मक स्तर (7-11 वर्ष तक)
4. औपचारिक संक्रियात्मक स्तर (11-15 वर्ष तक)

अतः मूर्त संक्रियात्मक अवस्था 7 से 11 वर्ष की आयु वर्ग में आती है।

39. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं को बाँटा गया है
(a) चार भागों में (b) तीन भागों में
(c) दो भागों में (d) पाँच भागों में।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013
CG TET 2011 (VI-VIII)
Jharkhand TET 2011 (I-V)

Ans: (a) पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्था को चार भागों में बांटा गया है-
1. संवेदनशीलता बुद्धि विकास की अवस्था 0 - 2 वर्ष
2. पूर्व संक्रिया अवस्था 2 - 7 वर्ष
3. मूर्त संक्रिया अवस्था 7 - 11 वर्ष
4. औपचारिक संक्रिया अवस्था 11 - 15 वर्ष

40. जीन पियाजे के अनुसार, प्रारूप (स्कीमा) निर्माण वर्तमान योजनाओं के अनुरूप बनाने हेतु नवीन जानकारी में संशोधन और नवीन जानकारी के आधार पर पुरानी योजनाओं में संशोधन के परिणाम के रूप में घटित होता है। इन दो प्रक्रियाओं को जाना जाता है–
(a) समावेशन और अनुकूलन के रूप में
(b) साम्यीकरण और संशोधन के रूप में
(c) समावेशन और समायोजन के रूप में
(d) समायोजन और अनुकूलन के रूप में

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) जीन पियाजे ने अपने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में प्रारूप निर्माण के सम्बन्ध में दो बाते कहीं है– पहला समावेशन (Assimilation) तथा दूसरा समायोजन (Accomodation) समावेशन से तात्पर्य नवीन अनुभवों को पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं में यथावत् व्यवस्थित करने से है जबकि समायोजन से तात्पर्य नवीन अनुभवों की दृष्टि से पूर्ववर्ती बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करने विस्तार या परिवर्तन करने से है।

41. पियाजे के अनुसार, बच्चों का चिन्तन वयस्कों से ..... भिन्न होता है बजाए ..... के।
(a) मात्रा, प्रकार (b) आकार, मूर्तपरकता
(c) प्रकार, मात्रा (d) आकार, किस्म

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2016

Ans : (c) पियाजे के अनुसार बच्चों का चिंतन वयस्कों से प्रकार में भिन्न होता है बजाये मात्रा के क्योंकि पियाजे द्वारा बतायी गयी चारों अवस्थाओं में बालक का संज्ञानात्मक विकास क्रमशः जटिल होती जाती है। बालकों के द्वारा एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने की गति उनकी शारीरिक परिपक्वता तथा वातावरणीय अनुभवों पर आधारित होती है।

42. जीन पियाजे के अनुसार अनुकूलन..... द्वारा होता है।
(a) आत्मसात्करण (b) व्यवस्थापन
(c) अनुभव (d) आत्मसात्करण तथा व्यवस्थापन

DSSSB PRT

Ans : (d) जीन पियाजे के अनुसार अनुकूलन समायोजन में सहायता पहुँचाता है। इसमें आत्मसात्करण तथा व्यवस्थापन या समंजन नामक दो प्रक्रम सन्निहित होते हैं।

43. पियाजे के अनुसार, 'संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा 'वस्तु–स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है?
(a) संवेदी प्रेरक चरण
(b) पूर्व–संक्रियात्मक चरण

(c) मूर्त संक्रियात्मक चरण
(d) औपचारिक संक्रियात्मक चरण

DSSSB PRT
UK TET 2014 (I-V)

Ans : (a) पियाजे के अनुसार, 'संज्ञानात्मक विकास के संवेदी प्रेरक चरण पर बच्चा 'वस्तु-स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है। संवेदी प्रेरक चरण के अंतिम अवस्था 18-24 महीने की होती है, जिसमें शिशु प्रत्यक्ष वस्तु के साथ-साथ अप्रत्यक्ष वस्तु के सम्बन्ध में भी विचार करने लगता है।

44. पियाजे की औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था, बालक की किस आयु अवधि तक मानी जाती है?

(a) 0–2 वर्ष (b) 2–7 वर्ष
(c) 7–11 वर्ष (d) 11–15 वर्ष

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (d) पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की संक्रियात्मक अवस्था बालक की 11–15 वर्ष की आयु तक मानी जाती है। इस अवस्था के दौरान बालक अमूर्त बातों के सम्बन्ध में तार्किक चिन्तन करने की योग्यता विकसित करता है।

45. वह कौन–सा स्थान है जहाँ बच्चे के 'संज्ञानात्मक' विकास को सबसे बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सकता है?

(a) खेल का मैदान (b) विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण
(c) सभागार (d) घर

DSSSB PRT

Ans : (b) बालक का ज्यादातर 'संज्ञानात्मक' विकास विद्यालय एवं कक्षा के वातावरण में ही होता है। खेल का मैदान, विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण, सभागार, घर, परिवार आदि जगहों पर बालक के संज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ सामाजिक, नैतिक, कौशलात्मक विकास भी होता है।

46. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के चरणों के अनुसार, इन्द्रिय–गामक (संवेदी–प्रेरक) अवस्था किसके साथ सम्बन्धित है?

(a) सामाजिक मुद्दों से सरोकार
(b) अनुकरण, स्मृति और मानसिक निरूपण
(c) तार्किक रूप से समस्या–समाधान की योग्यता
(d) विकल्पों के निर्वचन और विश्लेषण करने की योग्यता

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (b) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के चरणों के अनुसार इंद्रिय–गामक (संवेदी–प्रेरक) अवस्था अनुकरण, स्मृति और मानसिक निरूपण से सम्बन्धित है। इस अवस्था में 0–2 वर्ष तक के बालक आते हैं।

47. एक शिक्षिका दो एकसमान गिलासों को प्रदर्शित करती हैं जो जूस की समान मात्रा से भरे हुए हैं। वह उन्हें दो भिन्न गिलासों में खाली करती है जिसमें से एक लम्बा है और दूसरा चौड़ा है। वह बच्चों को उस गिलास की पहचान करने के लिए कहती है जिसमें जूस ज्यादा है। बच्चे प्रत्युत्तर देते हैं कि लंबे गिलास में जूस ज्यादा है। शिक्षिका के बच्चों को ..... कठिनाई है।

(a) समायोजन (b) अहम्केंद्रिता
(c) विकेंद्रीकरण (d) पलटावी

DSSSB PRT
C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) जीन पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक विकास के पूर्व संक्रियात्मक अवस्था के बालक में पलटावी या अविलोमीय विचार प्रक्रिया की कमी पायी जाती है। इस स्तर पर बालक से बराबर मात्रा में जूस को यदि दो गिलासों (एक लम्बी और एक चौड़ी) में भर कर पूछा जाता है कि किस गिलास में जूस ज्यादा है तो वे लम्बी गिलास में जूस ज्यादा होने का उत्तर देते हैं। क्योंकि वे मानसिक क्रम के प्रारम्भिक बिन्दु पर पुनः नहीं लौट पाते हैं।

48. 'मानसिक संरचनाएँ जो चिन्तन के निर्माण प्रखण्ड हैं' इसके लिए पियाजे ने किस शब्द/पद का प्रयोग किया है?

(a) जीन (b) परिपक्वन प्रखण्ड
(c) स्कीमा (अवधारणाएँ) (d) विकास का क्षेत्र

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (c) 'मानसिक संरचनाएँ जो चिंतन के निर्माण प्रखण्ड हैं' इसके लिए पियाजे ने 'स्कीमा' शब्द का प्रयोग किया है। स्कीमा से तात्पर्य एक ऐसी मानसिक संरचना से लिया जाता है जिसका सामान्यीकरण किया जा सके। जैसे–जैसे बच्चे के अनुभव में विस्तार होता जाता है, वैसे–वैसे नवीन अनुभवों व जानकारी के आधार पर पूर्ववर्ती स्कीमा में संशोधन, जोड़ना, परिवर्तन या नये स्कीमा बनाने की प्रक्रिया होती जाती है।

49. अमूर्त वैज्ञानिक चिन्तन के लिए क्षमता का विकास निम्नलिखित अवस्थाओं में किसकी एक विशेषता है?

(a) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(b) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था
(c) संवेदी–गतिक अवस्था
(d) पूर्व– संक्रियात्मक अवस्था

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (b) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था में बच्चे अमूर्त वैज्ञानिक चिंतन की क्षमता प्रदर्शित करने लगते हैं। समान्यतया यह अवस्था 12 वर्ष की आयु में शुरू होती है। इस अवस्था के बच्चों में अमूर्त चिंतन की योग्यता विकसित हो जाती है तथा उनमें निगमनात्मक चिंतन प्रदर्शित होने लगता है। इसे संज्ञानात्मक परिपक्वता की अवस्था भी कहा जाता है।

50. सीता ने हाथ से दाल और चावल खाना सीख लिया है। जब उसे दाल और चावल दिए जाते हैं तो वह दाल–चावल मिलाकर खाने लगती है। उसने चीजों को करने के लिए अपने स्कीमा में दाल और चावल खाने ..... कर लिया है।

(a) अंगीकार (b) समायोजित
(c) अनुकूलित (d) समुचिता

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (c) सीता ने हाथ से दाल और चावल खाना सीख लिया है। जब उसे दाल और चावल दिये जाते हैं तो वह दाल चावल मिलाकर खाने लगती है। उसे दाल और चावल खाने को अपने स्कीमा में अनुकूलित कर लिया है।

51. पियाजे अनुमोदन करते हैं कि पूर्व–संक्रियात्मक बच्चे याद रखने में असमर्थ होते हैं। निम्नलिखित कारकों में से किसको उन्होंने इस असमर्थता के लिए जिम्मेदार ठहराया है?

(a) परिकल्पित–निगमनात्मक तार्किकता की अयोग्यता
(b) उच्च स्तर की अमूर्त तार्किकता की कमी
(c) व्यक्तिगत कल्पित कथा
(d) विचार की अनुत्क्रमणीयमा (पलट न सके)

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) पियाजे अनुमोदन करते हैं कि पूर्व संक्रियात्मक बच्चे याद रखने में असमर्थ होते हैं क्योंकि इस अवस्था में उनकी विचार प्रक्रिया अविलोमीय होती है अर्थात बालक मानसिक क्रम के प्रारम्भिक बिन्दु पर पुनः नहीं लौट पाता है।

52. पियाजे के सिद्धांत के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन–सा व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित नहीं करेगा?

(a) भाषा (b) सामाजिक अनुभव
(c) परिवक्वन (d) क्रियाकलाप

DSSSB PRT

Ans : (a) पियाजे के अनुसार व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास पर भाषा का प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि वाइगोत्सकी के अनुसार व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास पर भाषा का प्रभाव होता है।

53. प्रचलित योजनाओं में नई जानकारी जोड़ने को किस नाम से जाना जाता है?

(a) समायोजन (b) साम्यधारण
(c) आत्मसात्करण (d) संगठन

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (c) प्रचलित योजनाओं में जब कोई नयी जानकारी जोड़ी जाती है तो उसे आत्मसातकरण कहते हैं। आत्मसातकरण का अर्थ है नवीन जानकारियों को पूर्व प्रचलित योजना में यथावत् व्यवस्थित करना।

54. पियाजे के अनुसार, विकास को प्रभावित करने में निम्नलिखित कारकों में से किसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है?

(a) भौतिक विश्व के साथ अनुभव
(b) अनुकरण
(c) पुनर्बलन
(d) भाषा

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (a) **पियाजे के अनुसार** मानव विकास भौतिक जगत के साथ होने वाले अनुभवों का परिणाम है। मनुष्य नये–नये अनुभव प्राप्त करता है जिसका वह अपने पूर्व ज्ञान से अनुकूलन करता है। यह अनुकूलन दो प्रकार से करता है– पहला आत्मसातकरण और दूसरा समाविष्टीकरण। इन्हीं दो क्रियाओं के माध्यम से वह नये अनुभवों को पूर्व ज्ञान से सामंजस्य स्थापित कर अपना विकास करता है।

55. पियाजे मुख्य रूप से किसके अध्ययन के लिए जाने जाते हैं?

(a) भाषा विकास (b) यौन विकास
(c) संज्ञानात्मक विकास (d) सामाजिक विकास

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत जीन पियाजे द्वारा दिया गया। इन्होंने अपने निजी प्रेक्षणों के आधार पर बालक के संज्ञानात्मक विकास को परिभाषित किया। इनके अनुसार संज्ञानात्मक विकास व्यक्ति के जन्मजात संरचना एवं प्रक्रियाओं के साथ अनुभवों की अंतर्क्रिया पर निर्भर करता है। संज्ञानात्मक विकास निम्न प्रक्रियाओं से होकर गुजरती है - (1) संगठन (2) अनुकूलन (3) आत्मसातन (4) समंजन।

56. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की द्वितीय अवस्था है?

(a) ज्ञानेन्द्रिय अवस्था
(b) औपचारिक संक्रियता की अवस्था
(c) पूर्व-संक्रिया की अवस्था
(d) मूर्त संक्रिया की अवस्था

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (c) पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की 4 अवस्थाएँ होती हैं–
1) संवेदीगामक अवस्था (Sensor motor stage) (0-2 वर्ष)
2) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre-operations stage) (2-7)
3) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (Concrete operations stage) (7-11)
4) औपचारिक संक्रिया अवस्था(Formal operations stage)(11-15)

57. मानव के ज्ञानात्मक (मानसिक) विकास की मूर्त संक्रिया अवस्था में सामान्यतः किस आयु काल को शामिल किया जाता है?

(a) लगभग दो से सात वर्ष तक
(b) जन्म से दो वर्ष तक
(c) लगभग सात से ग्यारह वर्ष तक
(d) लगभग बारह से पंद्रह वर्ष तक

DSSSB PRT

Ans : (c) मानव के ज्ञानात्मक (मानसिक) विकास की मूर्त–संक्रिया अवस्था में सामान्यतः सात से ग्यारह वर्ष तक की आयु काल को शामिल किया जाता है।

58. पियाजे के अनुसार अहंकेन्द्रित क्या है?

(a) वातावरण ज्ञान का केन्द्र
(b) बालक विश्व का केन्द्र है और हर चीज उसके इर्द–गिर्द घूमती है
(c) संवेदी गामक अवस्था
(d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB PRT

Ans : (b) पियाजे के अनुसार अहंकेन्द्रित या अहंकेन्द्रीयकरण (Ego centerlization) से तात्पर्य बालक की इस मान्यता से होता है कि सभी व्यक्तियों के घटना के सम्बन्ध में ठीक यही विचार है जो मेरे विचार हैं। बालक समझते हैं कि वह विश्व का केन्द्र है और हर चीज उसके इर्द–गिर्द घूमती है।

59. पियाजे के सिद्धांत में आयतन, लंबाई मात्रा इत्यादि का संरक्षण किस अवस्था में होता है?

(a) स्थूल प्रक्रिया (b) औपचारिक प्रक्रिया
(c) पूर्व प्रक्रिया (d) संवेदी-पेशीय प्रक्रिया

DSSSB PRT

Ans : (a) पियाजे के सिद्धांत में आयतन, लम्बाई, मात्रा आदि का संरक्षण स्थूल प्रक्रिया अवस्था या मूर्त–संक्रिया अवस्था में होता है। यह अवस्था लगभग 7–11 वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था में बालक तीन योग्यताएँ हासिल कर लेता है–
(1) विचारों की विलोमीयता (2) संरक्षण तथा क्रमबद्धता
(3) पूर्ण–अंश संप्रत्ययों का उपयोग।

60. पियाजे मुख्यतः..... के क्षेत्र में योगदान के लिए जाने जाते हैं।

(a) भाषा विकास (b) ज्ञानात्मक विकास
(c) नैतिक विकास (d) सामाजिक विकास

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) पियाजे मुख्यतः ज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में योगदान के लिए जाने जाते हैं। पियाजे ने बालक के ज्ञानात्मक विकास को चार प्रमुख चरणों में विभाजित किया है-
1. संवेदनात्मक गामक अवस्था (0-2 वर्ष)
2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष)
3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11वर्ष)
4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-15 वर्ष तक)

61. पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त में अमूर्त तर्क एवं परिपक्व नैतिक चिंतन किस अवस्था की विशेषताएँ हैं?

(a) संवेदनात्मक-गामक अवस्था
(b) पूर्व संक्रियावस्था
(c) औपचारिक संक्रियावस्था
(d) मूर्त संक्रिया अवस्था

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाए होती है-
1- संवेदनात्मक गामक अवस्था (जन्म से 2 वर्ष तक)
2- पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष)
3- मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष)
4- औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-15 वर्ष तक)
चतुर्थ अवस्था में बालक में चिंतन में पूर्ण क्रमबद्धता आ जाती है तथा अमूर्त तर्क एवं परिपक्व नैतिक चिंतन का विकास हो जाता है।

62. जीन पियाजे के द्वारा प्रस्तुत 'संरक्षण' के प्रत्यय से तात्पर्य है कि–

(a) दूसरों के परिदृश्य को ध्यान में रखना एक महत्त्वपूर्ण संज्ञानात्मक क्षमता है
(b) वन्यजीवन और वनों का संरक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण है
(c) कुछ भौतिक गुणधर्म वही रहते हैं चाहे बाहरी आकृतियाँ बदल जाएँ
(d) परिकल्पना पर विधिवत् परीक्षण से सही निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) जीन पियाजे द्वारा प्रस्तुत संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाओं में से तीसरी अवस्था मूर्त संक्रिया अवस्था है। इस अवस्था के दौरान बालक तीन गुणात्मक मानसिक योग्यताओं में पर्याप्त निपुणता हासिल कर लेता है। ये योग्यताएँ हैं– विचारों की विलोमीयता, संरक्षण तथा क्रमबद्धता, पूर्ण-अंश संम्प्रत्ययों का उपयोग। संरक्षण सम्प्रत्यय के अंतर्गत बालक यह समझने लगता है कि किसी भी भौतिक वस्तु की आकृति बदल देने पर भी उनके मूल गुणों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

63. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों में से सही कथन कौन-सा है?

(a) बच्चों के सांस्कृतिक आधार के अनुसार इन चरणों का क्रम बदला जा सकता है।
(b) पियाजे का तर्क है कि संज्ञानात्मक विकास, चरणों में आगे बढ़ने की अपेक्षा निरंतर होता है।
(c) पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के पाँच स्पष्ट चरण प्रस्तावित किए हैं।
(d) किसी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि ये चरण स्थिर हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (d) पियाजे ने कहा है कि यह आवश्यक नहीं है कि सभी बच्चों में विकासात्मक चरण एक ही समय पर दिखाई पड़े, परन्तु यह निश्चित है कि सभी बच्चों को विकास के सभी चरणों से गुजरना पड़ता है। अर्थात् संज्ञानात्मक विकास के किसी चरण को छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि ये सभी चरण निश्चित व स्थिर है।

64. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही मिलान वाला जोड़ा है ?

(a) मूर्त संक्रियात्मक बच्चा - संधारण एवं वर्गीकरण करने योग्य
(b) औपचारिक संक्रियात्मक बच्चा - अनुकरण प्रारंभ, कल्पनापरक खेल
(c) शैशवावस्था - तर्क का अनुप्रयोग और अनुमान लगाने में सक्षम
(d) पूर्वसंक्रयात्मक बच्चा - निगमनात्मक विचार

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) जीन पियाजे ने बालक में संज्ञानात्मक विकास को चार प्रमुख अवस्थाओं में बांटा है जो निम्न है-
1. संवेदनात्मक गामक अवस्था (शैशवावस्था) (0-2 वर्ष तक) इस अवस्था में बालक वस्तु को पहचानने की कोशिश करता है तथा जैविक क्रियाओं को अपनाता है।
2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष तक) इस अवस्था में बालक क्यों ? और कैसे ? का प्रश्न करने लगता है। इसलिये पियाजे ने इस अवस्था को खोज की अवस्था कहा है।

3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष तक) इस अवस्था में बालक तार्किक चिंतन करने लगता है। बाल बौद्धिक संक्रिया (गुणा, जोड़, घटाना, भाग) के अतिरिक्त साधारण वर्गीकरण की क्रिया भी करने लगता है।
4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष के बाद) इस अवस्था में बालक के चिंतन में पूर्णता आ जाती है। समस्या समाधान के बौद्धिक क्षमता का विकास हो जाता है।

65. नवीन जानकारी को शामिल करने के लिए वर्तमान स्कीमा (अवधारणा) में बदलाव की प्रक्रिया ..... कहलाती है–

(a) अनुकूलन (b) आत्मसात्करण
(c) समायोजन (d) अहंकेन्द्रिता

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (c) नवीन जानकारी को शामिल करने के लिए वर्तमान स्कीमा (अवधारणा) में बदलाव की प्रक्रिया समायोजन कहलाती है। समायोजन से तात्पर्य नवीन अनुभवों की दृष्टि से वर्तमान स्कीमा (बौद्धिक संरचनाओं) में सुधार करने विस्तार करने या परिवर्तन करने से है।

66. पियाजे के अनुसार 2 से 7 वर्ष के बीच का एक बच्चा संज्ञानात्मक विकास की ..... अवस्था में है–

(a) पूर्व संक्रियात्मक (b) औपचारिक संक्रियात्मक
(c) मूर्त संक्रियात्मक (d) संवेदी-गतिक

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (a) पियाजे ने संज्ञानात्मक सिद्धान्त की व्याख्या चार प्रमुख अवस्थाओं में बांटकर की है, जो निम्न है–
(1) संवेदीगात्मक अवस्था – (0–2) वर्ष
(2) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था – (2–7) वर्ष
(3) मूर्त संक्रिया अवस्था – (7–11) वर्ष
(4) औपचारिक संक्रिया अवस्था – (11–15) वर्ष

67. पूर्व-संक्रियात्मक काल में आने वाली संज्ञानात्मक योग्यता है

(a) अमूर्त चिंतन की योग्यता
(b) अभिकल्पनात्मक निष्कर्ष चिंतन
(c) लक्ष्य-उद्दिष्ट व्यवहार की योग्यता
(d) दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की योग्यता

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था की अवधि 2 से 7 वर्ष तक माना गया है। पियाजे के अनुसार इस अवस्था में बच्चे अहंकेन्द्रित हो जाते है, वे चीजों को स्वयं से सम्बद्ध करके देखने लगते है। इस अवस्था में बच्चे लक्ष्य उद्दिष्ट व्यवहार की योग्यता सीख लेते है। इसी अवस्था में संकेतात्मक कार्यों का प्रादुर्भाव तथा भाषा का प्रयोग प्रारम्भ हो जाता है।

68. एक वर्ष तक के शिशु जब आँख, कान व हाथों से ''सोचते'' हैं, तो निम्नलिखित में से कौन-सा स्तर शामिल होता है?

(a) पूर्व-संक्रियात्मक स्तर (b) इंद्रियजनित गामक स्तर
(c) अमूर्त संक्रियात्मक स्तर (d) मूर्त संक्रियात्मक स्तर

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (b) पियाजे की इंद्रियजनित गामक अवस्था में बच्चा 0-2 वर्ष का होता है। जिसमें वह आँख, कान व हाथों का प्रयोग करके सोचता है।

69. पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार, बच्चे निम्न में से किसके द्वारा सीखते हैं?

(a) सही प्रकार से ध्यान लगाकर जानकारी को याद करना
(b) समाज के आर्थिक योग्य सदस्यों के द्वारा उपलब्ध कराए गए सहारे के आधार पर
(c) अनुकूलन की प्रक्रियाएँ
(d) उपयुक्त पुरस्कार दिए जाने पर अपने व्यवहार में परिवर्तित करना

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (c) पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार बच्चे अनुकूलन की प्रक्रियाओं के द्वारा सीखते हैं। अनुकूलन समायोजन में सहायता पहुँचाता है कि इसमें आत्मसातन एवं समंजन नामक दो प्रक्रम सन्निहित होते हैं।

70. छिपी हुई वस्तुएँ ढूढ़ निकालना इस बात का संकेत है कि शिशु निम्नलिखित में से किस संज्ञानात्मक कार्य में दक्षता प्राप्त करने लगा है?

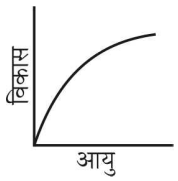
(a) साभिप्राय व्यवहार (b) वस्तु-स्थायित्व
(c) समस्या-समाधान (d) प्रयोग करना

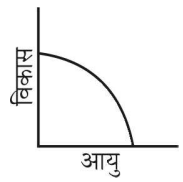
C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

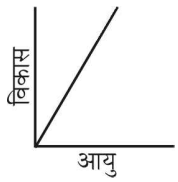
Ans: (b) छिपी हुई वस्तुएँ ढूँढ़ निकालना इस बात का संकेत है कि शिशु वस्तु–स्थायित्व संज्ञानात्मक कार्य में दक्षता प्राप्त करने लगा है। अर्थात शिशु में वस्तु के संप्रत्यय का विकास हो चुका है।

71. पियाजे के विकासात्मक सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य – में निम्नलिखित में से कौन-सा आरेख विकास को समुचित रूप से स्पष्ट करता है।

(a) 

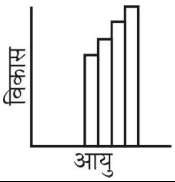
(b) 

(c) 

(d) 

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (a)
जीन पियाजे के विकासात्मक परिप्रेक्ष्य में जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है उसी अनुपात में बालक का विकास भी होता है।



72. निम्नलिखित में से कौन-सा निहितार्थ पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से नहीं निकाला जा सकता?

(a) बच्चों की अधिगमनात्मक तत्परता के प्रति संवेदनशीलता
(b) वैयक्तिक भेदों की स्वीकृति
(c) खोजपूर्ण अधिगम
(d) शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिन्द्रात से शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता के निहितार्थ को नहीं निकाला जा सकता क्योंकि पियाजे ने अपने सिद्धान्त में कहीं भी शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता पर बल नहीं दिया है। पियाजे के सिद्धान्त में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि संज्ञानात्मक विकास मुख्यतया व्यक्ति की जन्मजात संरचना एवं प्रक्रियाओं के साथ अनुभवों की अंन्तर्क्रिया पर निर्भर करता है।

73. पियाजे के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सी अवस्था में बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना आरंभ करता है?

(a) औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था (12 वर्ष एवं ऊपर)
(b) संवेदी –प्रेरक अवस्था (जन्म -02 वर्ष)
(c) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (02-07 वर्ष)
(d) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था (07-11 वर्ष)

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (a) पियाजे के अनुसार औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (12 वर्ष एवं ऊपर) में बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना आरम्भ करता है। मूर्त वस्तुओं तथा सामग्री के स्थान पर शाब्दिक तथा सांकेतिक अभिव्यक्ति का प्रयोग तार्किक चिंतन में किया जाता है। समस्या–समाधान व्यवहार अधिक व्यवस्थित हो जाता है। बालक निष्कर्ष निकालने लगता है, व्याख्या करने लगता है तथा परिकल्पनाएँ बनाने लगता है।

74. वह अवस्था जब बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओं व घटनाओं के विषय में चिंतन प्रारंभ करता है, है

(a) औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था
(b) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
(c) मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था
(d) संवेदी-प्रेरक अवस्था

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT
UP TET 2011 (I-V)

Ans: (c) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था में बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओं व घटनाओं के विषय में चिंतन प्रारम्भ करता है। यह अवस्था लगभग 7–11 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था के दौरान बालक तीन गुणात्मक मानसिक योग्यताओं में पर्याप्त निपुणता हासिल कर लेता है। ये योग्यताएँ हैं– विचारों की विलोमीयता, संरक्षण तथा क्रमबद्धता एवं पूर्ण–अंश सम्प्रत्ययों का उपयोग।

75. पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा 'वस्तु स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है?

(a) मूर्त संक्रियात्मक चरण
(b) औपचारिक संक्रियात्मक चरण
(c) संवेदी प्रेरक चरण
(d) पूर्व-संक्रियात्मक चरण

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012

Ans: (c) संवेदी प्रेरक चरण में शिशु असहाय जीवधारी से गतिशील, अर्द्धभाषी तथा सामाजिक दृष्टि से चतुर व्यक्ति बन जाते हैं वे आवाज तथा प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करते है, रूचिकर कार्यों को करते रहने की कोशिश करते रहते हैं तथा वस्तुओं को स्थिर मानते हैं। वे ऐसे वस्तुओं के बारे में भी सोचना प्रारम्भ कर देते हैं जो प्रत्यक्ष नहीं होती है। अर्थात् उनमें वस्तु स्थायित्व का गुण आ जाता है।

76. पियाजे के अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अनुसार, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संशोधित किया जाता है, ... कहलाती है।

(a) प्रत्यक्षण (b) समायोजन
(c) समावेशन (d) स्कीमा

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (b) पियाजे के अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संशोधित किया जाता है, समायोजन कहलाता है। समायोजन में नवीन ज्ञान व अनुभवों की दृष्टि से पूर्ववर्ती स्कीमा में सुधार करने, विस्तार करने या परिवर्तन करने की प्रक्रिया निहित होती है। इस प्रक्रिया के द्वारा नये स्कीमा का भी विकास होता है।

77. पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था (जन्म से लगभग 2 वर्ष आयु) के दौरान बच्चा ..... सबसे बेहतर सीखता है।

(a) अमूर्त तरीके से चिंतन द्वारा
(b) भाषा के नए अर्जित ज्ञान के अनुप्रयोग द्वारा
(c) इंद्रियों के प्रयोग द्वारा
(d) निष्क्रिय (neutral) शब्दों को समझने के द्वारा

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (c) पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था संवेदी पेशीय अवस्था होती है। इस अवस्था में बालक देखने, छूने, पहुँचने, पकड़ने, चूसने आदि की स्वतः सहज क्रियाओं से व्यवस्थित प्रयासरत क्रियाओं की ओर अग्रसित होता है। भाषा का अनुकरण करने लगता हैं, आवाज, प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करता हैं आदि।

78. बच्चों के बौद्धिक विकास की चार विशिष्ट अवस्थाओं की पहचान की गई

(a) एरिकसन द्वारा (b) स्किनर द्वारा
(c) पियाजे द्वारा (d) कोह्लबर्ग द्वारा

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT
UP TET (I-V)

Ans: (c) बच्चों के बौद्धिक विकास की चार विशिष्ट अवस्थाओं की पहचान पियाजे द्वारा की गयी है।
संवेदी गामक काल – 0-2 वर्ष
पूर्व संक्रिया काल – 2-7 वर्ष
मूर्त संक्रिया काल – 7-11 वर्ष
औपचारिक संक्रिया काल – 11-15 वर्ष

79. उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्व में परिवर्तन समझने लगते हैं?

(a) द्रव्यमान (b) द्रव्यमान और संख्या
(c) संख्या (d) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) पियाजे के अनुसार मूर्त संक्रियात्मक अवस्था 7–11 वर्ष तक होती है। यही आयु उत्तर बाल्यावस्था की भी होती है। इस आयु में बच्चे द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र में परिवर्तन को समझने लगते हैं।

80. संज्ञानात्मक विकास के चार चरणों - संवेदी पेशीय, पूर्व संक्रियात्मक, स्थूल संक्रियात्मक और औपचारिक संक्रियात्मक, की पहचान की गई है।

(a) हिलगार्ड द्वारा (b) स्टॉट द्वारा
(c) हरलॉक द्वारा (d) पियाजे द्वारा

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) पियाजे द्वारा संज्ञानात्मक विकास को चार चरणों में विभाजित किया गया है-
1. संवेदनात्मक गामक अवस्था (0-2 वर्ष)
2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष)
3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7-11वर्ष)
4. औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11-15 वर्ष तक)

81. बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है। यह अवस्था है

(a) 7 से 12 वर्ष तक (b) 12 से वयस्क तक
(c) 2 से 7 वर्ष तक (d) जन्म से 2 वर्ष तक।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) जीन पियाजे के अनुसार बालक की 7-12 वर्ष की अवस्था मूर्त संक्रियात्मक अवस्था या ठोस संक्रियात्मक अवस्था होती है जिसमें बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है। बालक मूर्त वस्तुओं के सम्बन्ध में अनेक विभिन्न प्रकार की तार्किक संक्रियाएँ करने लगता है।

82. पियाजे ने क्षमताओं और योग्यताओं को यह नाम दिया है-

(a) स्कीमा
(b) समायोजन (एकोमेडेशन)
(c) अहंकेन्द्रभाव (इगो सेन्ट्रिज्म)
(d) आत्मसात्करण

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : पियाजे ने क्षमताओं और योग्यताओं को स्कीमा का नाम दिया है। पियाजे ने बालक के ज्ञान को स्कीमा से निर्मित माना है। स्कीमा ज्ञान की वह मूल इकाई है जिसका प्रयोग पूर्व अनुभवों को संगठित करने के लिए किया जाता है जो नये ज्ञान के लिए आधार का काम करती है।

83. कोई वस्तु क्या है और हम उसके साथ कैसे व्यवहार करते हैं, इस विषय में उससे जुड़े मानसिक प्रतिरूप या विचार को कहा जाता है-

(a) निर्माण (b) नेटवर्क
(c) स्कीमा (d) संरचना

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : कोई वस्तु क्या है और हम उसके साथ कैसे व्यवहार करते हैं, इस विषय में उससे जुड़े मानसिक प्रतिरूप या विचार को स्कीमा कहा जाता है। स्कीमा जानने एवं समझने में शामिल मानसिक और शारीरिक दोनों क्रियाओं का वर्णन है। स्कीमा ज्ञान की श्रेणियाँ है जो संसार की समझ और व्याख्या में हमारी सहायता करती है। स्कीमा से तात्पर्य एक ऐसी मानसिक संरचना से लिया जाता है जिसका सामान्यीकरण किया जा सके। जैसे–जैसे बच्चे के अनुभव में विस्तार होता जाता है वैसे–वैसे नवीन अनुभवों व जानकारी के आधार पर पूर्ववर्ती स्कीमा में संशोधन, जोड़ना या परिवर्तन या नए स्कीमा बनने की प्रक्रिया होती जाती है।

84. पियाजे के अनुसार, 7 से 12 साल की उम्र के विकास की अवस्था को कहा जाता है:

(a) मूर्त संक्रियात्मक (b) औपचारिक संक्रियात्मक
(c) पूर्व–संक्रियात्मक (d) संवेदी पेशीय अवस्था

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) पियाजे के अनुसार, 7 से 12 साल की उम्र के विकास की अवस्था को मूर्त संक्रियात्मक अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था की निम्न विशेषताएँ होती हैं–

- इस अवस्था में संक्रियात्मक चिंतन का विकास हो जाता है।
- इस अवस्था के बच्चों में मूर्त समस्याओं के समाधान ढूढ़ने की क्षमता विकसित हो जाती है किन्तु अमूर्त समस्याओं के विषय में वे नहीं सोच पाते हैं।
- इस अवस्था में बच्चे गणित पढ़ने और गिनती करने में रुचि लेने लगते हैं।
- इस अवस्था में बच्चे यथार्थवादी और अधिक व्यवहारिक होते हैं।

85. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांत इस समझ को संदर्भित करता है कि वस्तुएं तब भी मौजूद रहती हैं जब उन्हें देखा या अनुभव नहीं किया जा सकता?

(a) संरक्षण (b) वस्तु स्थायित्व
(c) मन का सिद्धांत (d) जीववाद

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : वस्तु स्थायित्व का सिद्धांत यह संदर्भित करता है कि वस्तुएँ तब भी मौजूद रहती हैं जब उन्हें देखा या अनुभव नहीं किया जा सकता है। पियाजे के संवेदी गामक अवस्था की उपअवस्था प्रतीकात्मक चिंतन की अवस्था के अंत तक बच्चों में प्रतिकात्मक चिंतन का गुण विकसित हो जाता है। इसमें बच्चे वस्तुओं से सम्बन्धित मानसिक प्रारूपों को बनाने में सक्षम हो जाते हैं। इससे तात्पर्य यह है कि जब वस्तुएँ उनके सामने प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित नहीं होती हैं तब भी वे उनके सम्बन्ध में मानसिक चित्रण कर लेते हैं अर्थात् उनमें वस्तु स्थायित्व का गुण विकसित हो जाता है।

86. जब नए विचारों को मौजूदा विचारों में शामिल किया जाता है, तो उन्हें ..... के रूप में जाना जाता है।

(a) अनुकूलन (b) प्रतिकृतियन
(c) आत्मसात्करण (d) पुनरूत्पादन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : जब नये विचारों को मौजूदा विचारों में शामिल किया जाता है, तो उन्हें आत्मसात्करण के रूप में जाना जाता है। दूसरे शब्दों में, बच्चे में पहले से विद्यमान स्कीमा या मानसिक या बौद्धिक संरचना में नई सूचना या जानकारी जोड़ लेने या व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को आत्मसात्करण कहा जाता है। इस प्रक्रिया में बच्चा अपनी ज्ञात या विद्यमान स्कीमा में नवीन अनुभवों को आसानी से समावेशित कर लेता है।

87. क्षैतिज डेकलआयु नामक घटना का वर्णन किसने किया?

(a) इरिक्सन (b) पियाजे
(c) फ्रायड (d) वाइगोत्सकी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : क्षैतिज अंधकूप (Horizontal decalage) जीन पियाजे के सिद्धांत का संप्रत्यय है जिसमें बच्चा एक तरफ की संज्ञानात्मक क्रियायें कर पाता है लेकिन उसी से मिलती–जुलती क्रियायें नहीं कर पाता है। यह संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत का एक संप्रत्यय है जिससे यह तात्पर्य है कि एक बार में एक बच्चे के पास एक निश्चित कार्य करने की क्षमता होती है परंतु वे यह नहीं जानते हैं कि उसी अवधारणा को तुरंत अन्य कार्यों में कैसे लागू किया जाए।

88. एक 12 साल का बच्चा यह समझता है कि एक मेज का वजन वही रहता है, चाहें वह दाईं ओर हो या उल्टी हो। उसने किस सिद्धांत को समझा है?

(a) संरक्षण (b) आगमनात्मक तर्क
(c) वस्तु स्थायित्व (d) परिकल्पित तर्क

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : यदि एक 12 साल का बच्चा यह समझने लगता है कि एक मेज का वजन वही रहता है, चाहे वह किसी भी दिशा में हो या उल्टी हो, तो उसने संरक्षण के सिद्धांत को समझा है, जो पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत की तीसरी अवस्था, मूर्त–संक्रियात्मक अवस्था (7 से 12 वर्ष तक) की एक मानसिक योग्यता है। इस अवस्था में बालक यह समझने लगता है कि किसी भौतिक वस्तु का द्रव्यमान वही रहता है चाहे उसके आकार–प्रकार या दिशा में जितना परिवर्तन कर दिया जाये। आगमनात्मक तर्क तथा परिकल्पित तर्क औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था की तथा वस्तु स्थायित्व संवेगात्मक–गामक अवस्था की विशेषता होती है।

89. निम्नलिखित में से कौन-सा पियाजे के इन्द्रियजनित गामक अवस्था की उपअवस्था नहीं है?

(a) गौण वृत्तीय अनुक्रिया (b) सहज गतिविधि
(c) प्राथमिक वृत्तीय अनुक्रिया (d) क्रमबद्धता

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के संवेदी गामक/इन्द्रियजनित गामक अवस्था की छः उप–अवस्थाएँ होती हैं–

1. सहज गतिविधि की अवस्था (Stage of Reflex activity)
2. प्राथमिक वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था (Stage of primary circular reaction)
3. गौण वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था (Stage of secondary cirular reaction)
4. गौण स्कीमेटा के समन्वय की अवस्था (Stage of coordination of secondary schemata)
5. वृत्तीय अनुक्रियाओं की अवस्था (Stage of tertiary ciruclar reactions)
6. प्रतिकात्मक चिंतन की अवस्था (Stage of symbolic thoughts)

जबकि क्रमबद्धता, विचारों की विलोमीयता, संरक्षण का सिद्धांत आदि मूर्त–संक्रियात्मक अवस्था की विशेषताएँ है।

90. संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत के अनुसार, मूर्त संक्रियात्मक अवस्था ..... उम्र में शुरू होती है–

(a) 5 (b) 1
(c) 3 (d) 7

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत की तीसरी अवस्था मूर्त संक्रियात्मक अवस्था है जो लगभग सात से बारह वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था में पूर्व संक्रियात्मक अवस्था के अतार्किक चिन्तन का स्थान संक्रियात्मक तार्किक विचार लेने लगते हैं। **अन्य अवस्थाएँ– संवेदी गामक अवस्था** जन्म के उपरान्त प्रथम दो वर्षों तक, **पूर्व संक्रियात्मक अवस्था** लगभग दो वर्ष से प्रारम्भ होकर सात वर्ष तक तथा **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था** लगभग 12 से 15 वर्ष की आयु तक चलती है।

91. एक बच्चा कहता है कि उसका दोस्त जो 5 फीट लंबा है, वह अपने चाचा से बड़ा हो सकता है, जो केवल 4 फीट लंबा है। किसी व्यक्ति की ऊँचाई की व्याख्या करने के इस दृष्टिकोण को ..... में बच्चे को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

(a) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था
(b) सेंसरीमोटर अवस्था
(c) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(d) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : एक बच्चा कहता है कि उसका दोस्त जो 5 फीट लम्बा है, वह अपने चाचा से बड़ा हो सकता है, जो केवल 4 फीट लम्बा है। किसी व्यक्ति की ऊँचाई की व्याख्या करने के इस दृष्टिकोण को बच्चे के पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में होने को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। जीन पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की निम्न चार अवस्थाएँ बताई हैं–

(i) संवेगात्मक–गामक अवस्था
(ii) पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था
(iii) मूर्त–संक्रिया अवस्था
(iv) औपचारिक संक्रिया अवस्था

पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में बालक प्रत्यक्षतः दिखाई देने वाली वस्तुओं पर आधारित चिंतन करना तथा जोड़, घटाना गुणा भाग भी समस्याओं का समाधान करना सीख लेता है।

92. राधा ने अपने छात्रों से उनके लिए एक अध्याय से प्रश्न बनाने और उससे संबंधित उत्तर लिखने के लिए कहा। एक छात्र, संज्ञानात्मक विकास के किस चरण में इस कार्य के निहितार्थ से सबसे अधिक लाभान्वित होता है?

(a) संवेदी मोटर अवस्था
(b) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

(c) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था
(d) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : राधा ने अपने छात्रों से एक ही अध्याय से प्रश्न बनाने और उससे संबंधित उत्तर लिखने के लिए कहा। इस कार्य के निहितार्थ से संज्ञानात्मक विकास की औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (लगभग 11 से 15 वर्ष की आयु तक) का छात्र अधिक लाभान्वित होगा क्योंकि इस अवस्था में समस्या–समाधान व्यवहार अधिक व्यवस्थित हो जाता है। बालक निष्कर्ष निकालने लगता है, व्याख्या करने लगता है तथा परिकल्पनाएँ बनाने लगता है। औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था में बालकों का कुल बौद्धिक संगठन अधिक क्रमबद्ध हो जाता है। इस अवस्था में बालक एक साथ अधिक से अधिक तथ्यों को समझने तथा अधिकाधिक दृष्टिकोणों को अपनी विचार प्रक्रिया में स्थान देने के योग्य हो जाता है।

93. संरक्षण का कौन सा सिद्धांत किसी मौजूदा पदार्थ की मात्रा पर केंद्रित हैं?

(a) वजन (b) क्षेत्रफल
(c) द्रव्यमान (d) लंबाई

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : पियाजे के अनुसार, आंत–प्रज्ञ अवस्था की समाप्ति पर संरक्षण सिद्धांत की प्राप्ति होती है। संरक्षण का सिद्धांत कहता है कि किसी वस्तु की द्रव्यमान पर उस वस्तु के आकार में परितर्वन करने अथवा उस वस्तु को हिस्सों में विभक्त कर देने का कोई प्रभाव नहीं होता है। इसीलिए द्रव्यमान (mass) किसी मौजूदा पदार्थ की मात्रा पर केंद्रित होता है।

94. बच्चे कौन-सी संज्ञानात्मक क्षमता दर्शा रहे हैं जब वे वस्तुओं को मानव गुणों से संबंधित करते हैं?

(a) अहंभाव (इगोसेन्ट्रिज्म) (b) संरक्षण
(c) जीववाद (d) वस्तु स्थायित्व

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : जीववाद पियाजे की प्राक्संप्रत्यात्मक अवधि की एक परिसीमा है जिसमें बच्चा सभी वस्तुओं को सजीव समझता है, अर्थात् ऐसी धारणा होती है कि बच्चा निर्जीव वस्तुओं को भी सजीव के समान मानता है। इस अवस्था की अवधि चार या पाँच वर्ष तक की होती है। इस तरह बालक जीववाद नामक संज्ञानात्मक क्षमता दर्शाते हैं जब वे वस्तुओं को मानव गुणों से संबंधित करते हैं।

95. पियाजे के अनुसार, बौद्धिक विकास दुनिया के अनुकूल के माध्यम से होता है। यह किसके माध्यम से होता है?

(a) अवशोषण और समंजन (एकोमेडेशन)
(b) संप्राप्ति और स्वतः सहसंबंध
(c) आत्मसात्करण और समंजन (एकोमेडेशन)
(d) आत्मसात्करण और परिस्थिति अनुकूलन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : पियाजे के अनुसार, बौद्धिक विकास दुनिया के अनुकूलन के माध्यम से होता है इसमें आत्मसात्करण (Assimilation) तथा समंजन/ समाविष्टीकरण (Accommodation) दो प्रक्रियाएँ होती हैं। आत्मसातीकरण से तात्पर्य नवीन अनुभवों को पूर्ववर्ती विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं में यथावत् व्यवस्थित करने से है जबकि समविष्टीकरण/समंजन से तात्पर्य नवीन अनुभवों की दृष्टि से पूर्ववर्ती बौद्धिक संरचनाओं में सुधार करने, विस्तार करने तथा परितर्वन करने से है। यह विद्यमान बौद्धिक संरचनाओं को परिवर्तित करने की प्रक्रिया है जिससे नवीन अनुभवों अथवा ज्ञान को उचित ढंग से व्यवस्थित किया जा सके।

96. जीन पीयाजे के अनुसार..... के दौरान बच्चों में अमूर्त तर्क और तर्क कौशल विकसित होते हैं।

(a) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(b) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था
(c) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
(d) संवेदी प्रेरक (सेंसरीमोटर) अवस्था

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : जीन पियाजे के अनुसार औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था के दौरान बच्चों में अमूर्त तर्क और तर्क कौशल विकसित होते हैं। यह अवस्था लगभग 12–15 वर्ष तक चलती है। पियाजे के अनुसार इस अवस्था में बच्चे वैज्ञानिकों की तरह तार्किक सोच रखते हैं। वे समस्या को हल करने में निगमनात्मक तर्क का प्रयोग करते हैं अर्थात् समस्या के संभावित उत्तरों का परीक्षण करके बेहतर संभावित उत्तर को निष्कर्ष के रूप में खोजते हैं।

97. किस चरण में बच्चों में सरंक्षण का सिद्धान्त विकसित होता है?

(a) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(b) पोस्ट-औपचारिक अवस्था
(c) पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था
(d) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के मूर्त संक्रियात्मक अवस्था के बच्चों में संरक्षण का सिद्धांत विकसित होता है। पियाजे के अनुसार इस अवस्था की अवधि 7 से 11 वर्ष के मध्य होती है। इस अवस्था में वस्तुओं को पहचानने, विभेद करने, वर्गीकृत करने तथा विभिन्न क्षमताओं और अवबोधों की क्षमता विकसित हो जाती है। संख्या बोध, तरल का बोध, लंबाई बोध, मात्रा का बोध आदि इस अवस्था में विकसित होने वाले अवबोध हैं।

98. पियाजे के अनुसार, जब एक शिशु लगभग 18–24 महीने की उम्र तक पहुँचता है, तो वे विकसित होने लगते हैं जिसे उन्होंने..... कहा है।

(a) इगोसेन्ट्रिज्म (b) व्यक्तिगत कल्पित
(c) वस्तु स्थायित्व (d) आगमनात्मक तर्क

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : पियाजे के अनुसार, जब एक शिशु लगभग 18-24 महीने की उम्र तक पहुँचता है तो उसमें वस्तु स्थायित्व का गुण विकसित होने लगता है। इस अवस्था के अंत तक बच्चों में प्रतीकात्मक चिंतन का गुण विकसित हो जाता है तथा इसमें बच्चे वस्तुओं से सम्बन्धित मानसिक प्रारूपों को बनाने में सक्षम हो जाते हैं।

99. जीन पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास..... अवस्था पर शुरू होता है।

(a) मूर्त-संक्रियात्मक
(b) पूर्व-संक्रियात्मक

(c) औपचारिक संक्रियात्मक
(d) संवेदी पेशीय (सेंसरीमोटर)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : जीन पियाजे के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास संवेदी पेशीय अवस्था पर ही शुरू हो जाता है। यह अवस्था बालक में जन्म से लेकर लगभग 2 वर्ष की अवधि तक चलती है। इस अवस्था में बच्चा अपनी इन्द्रियों के अनुभवों तथा उन पर पेशीय कार्य करके जानने और समझने का प्रयास करता है।

100. जीन पियाजे के अनुसार, पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था के बच्चे कैसे होते हैं?

(a) आत्मकेंद्रित (इगोसेन्ट्रिक) (b) नम्य (फ्लेक्सिबल)
(c) जटिल (d) सामाजिक

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : जीन पियाजे के अनुसार, पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था 2 से 7 वर्ष तक मानी जाती है। इस अवस्था के बच्चे आत्म-केन्द्रित (Egocentric) होते हैं। आत्म-केन्द्रिता से तात्पर्य बच्चा स्वयं के दृष्टिकोण व अन्य के दृष्टिकोण में विभेद न कर पाने की स्थिति में रहता है अर्थात् बच्चा किसी परिस्थिति में अन्य व्यक्ति के नजरिये को जान पाने में अक्षम होता है।

101. जिस तरह से कोई व्यक्ति अपने मस्तिष्क में किसी भी जानकारी को प्रस्तुत करता है, यह उसके निम्न का उदाहरण है–

(a) व्यक्तिगत अभिलक्षण (b) संज्ञात्मक अभिलक्षण
(c) भावपूर्ण अभिलक्षण (d) शिक्षण अभिलक्षण

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : जिस तरह से कोई व्यक्ति अपने मस्तिष्क में किसी भी जानकारी को प्रस्तुत करता है, यह उसके संज्ञानात्मक अभिलक्षण का उदाहरण है, जिसके अंतर्गत संवेदनशीलता, प्रत्यक्षीकरण, अवलोकन, प्रत्यय निर्माण, ध्यान, स्मृति, कल्पना, चिन्तन, तर्क, बुद्धि आदि संज्ञानात्मक शक्तियाँ आती हैं।

102. नाइव के पिता के बाल सफेद और लम्बे हैं, इसलिए वह सोचती है कि सभी के पिता के बाल सफेद और लम्बे हैं। यह दृष्टिकोण किस अवस्था में है?

(a) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था
(b) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(c) सेंसरीमोटर अवस्था
(d) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : पियाजे के संज्ञानात्मक विकास में पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था के आंतः–प्रज्ञ चरण के बालकों में विभिन्न प्रत्ययों की समझ मुख्यतः इस बात पर निर्भर करती है कि वे प्रत्यक्षतः क्या देख रहे हैं अर्थात् उनके द्वारा देखी गयी परिस्थिति की सतही बनावट अथवा प्रबल विशेषतायें क्या हैं। उदाहरण के तौर पर नाइव के पिता के बाल सफेद और लम्बे हैं, इसलिए वह सोचती है कि सभी के पिता के बाल सफेद और लंबे हैं।

103. पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के ..... महत्वपूर्ण चरण विकसित किए।

(a) पांच (b) आठ
(c) चार (d) तीन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास के चार महत्त्वपूर्ण चरण विकसित किये। ये चरण निम्न हैं–

(i) संवेदी गामक अवस्था
(ii) पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था
(iii) मूर्त–संक्रियात्मक अवस्था
(iv) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

104. रूही; 11 महीने की बच्ची है और वह प्रत्येक सफेद तरल वस्तु को दूध कहती है। रूही द्वारा अवधारणा विकास प्रक्रिया का कौन सा प्राकृतिक स्वभाव दिखाया गया है?

(a) विश्लेषण (b) अमूर्तिकरण
(c) समान्यीकरण (d) अनुभव

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : पियाजे की संवेदीगामक अवस्था की उपअवस्था गौण स्कीमैटा के समन्वय की अवस्था की समयावधि आठ माह से लेकर 12 माह तक होती है। इस अवस्था में बच्चों द्वारा एक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग करने की क्षमता के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इस अवस्था में बच्चें विकसित एवं अधिगमित स्कीमा का एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में सामान्यीकरण करना प्रारम्भ कर देते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई 11 माह की बच्ची प्रत्येक सफेद तरल वस्तु को दूध कहती है तो वह विकास प्रक्रिया की इसी सामान्यीकरण स्वभाव को प्रदर्शित करती है।

105. सर्वात्मवाद यह विश्वास है कि जो कुछ भी मौजूद है उसमें किसी प्रकार की चेतना है। निम्नलिखित में से क्या विकास से पूर्व-परिचालन स्तर पर बच्चों में सर्वात्मवाद के विचार का वर्णन नहीं करता है?

(a) एक बच्चा जो एक कुर्सी से टकराते हुए अपने पैर को चोट पहुँचाता है, खुशी से 'शरारती कुर्सी को धकेल देगा'।
(b) फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के लिए एक बच्चा फायरमैन के रूप में तैयार होता है।
(c) एक ऊँचे पर्वत को 'पुराना' माना जाएगा।
(d) एक कार जिसे शुरु नहीं किया जाएगा उसे 'थका'या 'बीमार' बताया जाएगा।

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : Animism (सर्वात्मवाद या जीववाद) पूर्व परिचालन या प्राक संक्रियात्मक स्तर की एक अवस्था या विशेषता है। इसमें बच्चा सभी वस्तुओं को सजीव समझता है। उदाहरण के लिए बच्चा कुर्सी, टेडीबियर, पंखा, पर्वत, कार आदि निर्जीव वस्तुओं को सजीव मानता है। इसलिए यदि कोई बच्चा फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के लिए फायरमैन के रूप में तैयार होता है तो यह सर्वात्मवाद का उदाहरण नहीं होगा जबकि अन्य तीनों कथन सर्वात्मवाद के उदाहरण हैं।

106. वह शब्द क्या है जिसका उपयोग पियाजे ने शरीर के उन हिस्सों के साथ की गई नकल का वर्णन करने के लिए किया है, जिन्हें कोई देख नहीं सकता है।

(a) अदृश्य नकल (b) स्थानिक नकल
(c) दर्शनीय नकल (d) मॉडल नकल

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) अदृश्य नकल वह शब्द है जिसका उपयोग पियाजे ने शरीर के उन हिस्सों के साथ की गई नकल का वर्णन करने के लिए किया था, जिन्हें कोई देख नहीं सकता है। पियाजे उपागम के अनुसार संज्ञानात्मक विकास के संवेदी गामक अवस्था में अदृश्य नकल, दृश्य नकल, वृत्तीय प्रतिक्रिया, अस्थगित नकल, वस्तु स्थायित्व जैसे गुणों का विकास होता है।

107. संज्ञानात्मक विकास के सेंसरीमोटर चरण में कितने उप-चरण होते हैं?

(a) सात (b) पांच
(c) छः (d) आठ

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : संज्ञानात्मक विकास के सेंसरी मोटर चरण (संवेदी–गामक चरण) में छः उपचरण होते हैं–

(i) सहज क्रियाओं की अवस्था (जन्म से 30 दिन)
(ii) प्राथमिक वृत्तीय प्रतिक्रियाओं की अवस्था (1 माह से 4 माह तक)
(iii) गौण वृत्तीय प्रतिक्रियाओं की अवस्था (4 माह से 6 माह तक)
(iv) गौण स्कीमेटा के समन्वय की अवस्था (8 माह से 12 माह तक)
(v) तृतीय वृत्तीय प्रतिक्रियाओं की अवस्था (12 माह से 18 माह तक)
(vi) मानसिक निरंतरता द्वारा नये साधनों की खोज की अवस्था (18 माह से 24 माह तक)

108. ..... के दृष्टिकोण के अनुसार, एक स्कीमा में ज्ञान की एक श्रेणी और उस ज्ञान को प्राप्त करने की प्रक्रिया दोनों शामिल हैं।

(a) जीन पियाजे (b) एरिक इरिक्सन
(c) जेरोम ब्रुनर (d) सिंगमंड फ्रायड

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : जीन पियाजे के दृष्टिकोण के अनुसार, एक स्कीमा में ज्ञान की एक श्रेणी और उस ज्ञान को प्राप्त करने की प्रक्रिया दोनों शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, स्कीमा एक प्रकार की मानसिक संरचना होती है जिसमें नये अनुभवों को जोड़ा जाता है या नये अनुभवों के आधार पर उसमें संशोधन किया जाता है। स्कीमा ज्ञान की श्रेणियाँ हैं जो संसार की समझ और व्याख्या में हमारी सहायता करती हैं।

109. जिन्दगी की शुरूआत में बच्चा किसके द्वारा निर्देशित होता है?

(a) परिपक्वता (b) सहज ज्ञान
(c) अधिगम (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (b) जिंदगी की शुरुआत में बच्चा सहज ज्ञान के द्वारा निर्देशित होता है। इस अवस्था में बच्चे अपने इन्द्रियों द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा इनकी प्रतिक्रियाएँ सजह क्रियाओं द्वारा व्यक्त होती हैं।

110. प्रतिबिम्ब, अवधारणा, प्रतीक एवं संकेत, भाषा, शारीरिक क्रिया और मानसिक क्रिया अन्तर्निहित है

(a) अनुकूलन
(b) प्रेरक पेशी विकास
(c) समस्या समाधान
(d) विचारात्मक प्रक्रिया

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) चित्र, विचारधारा, प्रतीक एवं चिन्ह, भाषा, पेशियों की गतिविधियाँ तथा मस्तिष्क से जुड़ी क्रियाएँ मोटर तंत्र विकास से जुड़ी हैं। इसकी व्याख्या पियाजे ने अपने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में किया है। यह संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत का पहला चरण है।

पियाजे का नैतिक विकास सिद्धांत

111. रिया कक्षा में पिकनिक तय करने हेतु रिषभ से सहमत नहीं है। वह सोचती है कि बहुमत के अनुकूल बनाने के लिए नियमों का संशोधन किया जा सकता है। यह सहपाठी विरोध, पियाजे के अनुसार, निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है?

(a) संज्ञानात्मक अपरिपक्वता
(b) प्रतिक्रिया
(c) सहयोग की नैतिकता
(d) विषमांग नैतिकता

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (c) सहयोग की नैतिकता स्तर पर कार्यों की व्याख्या करने की प्रवृत्ति होती है। पियाजे के अनुसार, सहयोग, पारस्परिक निर्भरता तथा विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रति जागरूकता व्यक्ति को स्वतः नैतिकता के स्तर पर पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है।

कोह्लबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत

112. कोह्लबर्ग के सिद्धांत के योगदान के रूप में निम्नलिखित में से किसे माना जा सकता है?

(a) उनके सिद्धांत ने संज्ञानात्मक परिपक्वकता और नैतिक परिपक्वकता के बीच एक सहयोग का समर्थन किया है।
(b) इस सिद्धांत में विस्तृत परीक्षण प्रक्रियाएँ हैं।
(c) यह नैतिक तर्क और कार्यवाही के बीच एक स्पष्ट संबंध स्थापित करता है।
(d) उनका विश्वास है कि बच्चे नैतिक दार्शनिक हैं।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त ने संज्ञानात्मक परिपक्वता और नैतिक परिपक्वता के बीच एक सहयोग का समर्थन किया है अर्थात् नैतिक विकास के तीनों स्तर तथा सातों सोपान क्रमशः नैतिक निर्णय लेने की बढ़ती योग्यता तथा दृष्टिकोणों की बढ़ती व्यापकता व अमूर्तता को इंगित करते हैं। जैसे- प्रथम स्तर (पूर्व-परम्परागत स्तर) पर बालक आत्म केन्द्रित होते हैं क्योंकि वे स्वयं के हित की दृष्टि ही नैतिक व्यवहार करते हैं जबकि तृतीय स्तर (उत्तर परम्परागत स्तर) पर बालक बाह्य केन्द्रित हो जाते हैं तथा वे निष्पक्ष भाव से नैतिक व्यवहार करते हैं।

113. निम्नलिखित वर्णन को पढ़िए तथ कोहलबर्ग के नैतिक तर्क की अवस्था को पहचानिए।

वर्णन :

अंत:करण के स्व–चयनित नैतिक सिद्धांतों के द्वारा सही कार्य परिभाषित किया जाता है जो कानून एवं सामाजिक समझौते पर ध्यान दिए बिना सम्पूर्ण मानवता के लिए वैध होता है।

(a) सामाजिक–अनुबंधन अभिविन्यास
(b) सामाजिक – क्रम व्यवस्था अभिविन्यास
(c) सार्वभौम नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास
(d) यंत्रीय उद्देश्य अभिविन्यास

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : कोहलबर्ग के अनुसार सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास सोपान में किशोर उचित-अनुचित का निर्णय ऐसे स्वनिर्धारित नैतिक सिद्धांतों के आधार पर करता है जो तार्किक व्यापकता, सार्वभौमिकता तथा एकरूपता से युक्त होते हैं। इस अवस्था में किशोर सार्वभौमिक मानवाधिकार पर आधारित नैतिक मापदण्ड बनाता है। जब कोई व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की आवाज के द्वंद के बीच फंसा होता है तो वह व्यक्ति यह तर्क देता है कि अपनी अंतरात्मा की आवाज के आधार पर कार्य करना चाहिए, चाहे उसका परिणाम कुछ भी हो। इसी प्रकार इस अवस्था में अंत:करण के स्व–चयनित नैतिक सिद्धांतों के द्वारा सही कार्य परिभाषित किया जाता है जो कानून एवं सामाजिक समझौते पर ध्यान दिये बिना सम्पूर्ण मानवता के लिए वैध होता है।

114. एक बच्चा तर्क प्रस्तुत करता है कि हिंज को दवाई की चोरी नहीं करनी चाहिए (वह दवाई जो उसकी पत्नी की जान बचाने के लिए जरूरी है), क्योंकि यदि वह ऐसा करता है तो उसे पकड़ा जाएगा और जेल भेज दिया जाएगा। कोलबर्ग के अनुसार वह बच्चा नैतिक समझ की किस अवस्था के अंतर्गत आता है?

(a) सामाजिक-क्रम नियंत्रक अभिविन्यास
(b) दण्ड एवं आज्ञापालन अभिविन्यास
(c) सार्वभौम नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास
(d) यंत्रीय उद्देश्य अभिविन्यास

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (b) यदि कोई बच्चा तर्क प्रस्तुत करता है कि हिंज को दवाई की चोरी नहीं करनी चाहिए (वह दवाई जो उसकी पत्नी की जान बचाने के लिए जरूरी है), क्योंकि यदि वह ऐसा करता है तो उसे पकड़ा जायेगा और जेल भेज दिया जायेगा। कोहलबर्ग के अनुसार वह बच्चा नैतिक समझ की दण्ड एवं आज्ञापालन अभिविन्यास के अंतर्गत आता है। दण्ड तथा आज्ञापालन अभिविन्यास के अंतर्गत बालक बड़े व्यक्तियों अथवा अधिकार सम्पन्न व्यक्तियों के द्वारा दिये जाने वाले दण्ड से बचने के प्रति चिंतित रहते हैं। वे नियमों तथा उनको तोड़ने से होने वाले दुष्परिणामों को समझते हैं। किसी कार्य के करने पर होने वाले स्थूल परिणाम उस कार्य को अच्छा या बुरा निर्धारित करते हैं।

115. निम्नलिखित में से कौन सी लॉरेंस कोहलबर्ग के द्वारा प्रस्तावित नैतिक विकास की एक अवस्था है?

(a) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(b) उद्योग बनाम अधीनता अवस्था
(c) प्रसुप्ति अवस्था
(d) सामाजिक अनुबंध अभिविन्यास

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) लारेंस कोहलबर्ग ने नैतिक विकास के तीन स्तर और छः अवस्थाएँ या सोपान बताएँ जो निम्न हैं–

1.	पूर्व परम्परागत स्तर	0. आत्मकेन्द्रित निर्णय 1. दण्ड तथा आज्ञापालन अभिमुखता/अभिविन्यास 2. यांत्रिक सापेक्षिक अभिमुखता / अभिविन्यास
2.	परम्परागत स्तर	3. परस्पर एकरूप अभिविन्यास 4. अधिकार संरक्षण अभिविन्यास
3.	उत्तर परम्परागत स्तर	5. सामाजिक अनुबंध विधि सम्मत अभिविन्यास 6. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिविन्यास

116. नूर विद्यालय में अपना लंच बॉक्स लाना भूल गई तथा यह कहते हुए तान्या से उसका लंच साझा करने के लिए कहा, ''तुम्हें आज अपना लंच मेरे साथ साझा करना चाहिए क्योंकि कल मैंने तुम्हारे साथ अपना लंच साझा किया था।''

लॉरेंस कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के अनुसार नूर का कथन ..... अभिविन्यास प्रारूप को ..... अवस्था पर दर्शाता है।

(a) आज्ञापालन; पूर्व-परम्परागत
(b) अच्छा होना; परम्परागत
(c) आदान-प्रदान; परम्परागत
(d) कानून एवं व्यवस्था; पश्च-परम्परागत

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) यदि नूर विद्यालय में अपना लंच बॉक्स लाना भूल गयी तथा यह कहते हुए तान्या से उसका लंच साझा करने के लिए कहती है कि ''तुम्हें आज अपना लंच मेरे साथ साझा करना चाहिए क्योंकि कल मैंने तुम्हारे साथ अपना लंच साझा किया था।''
लॉरेंस कोहलबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार नूर का यह कथन आदान-प्रदान, (Exchange) अभिविन्यास प्रारूप को परम्परागत (Conventional) अवस्था पर दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, परम्परागत स्तर के प्रथम उप-सोपान पारस्परिक संबन्ध स्तर या परस्पर एकरूप अभिमुखता में बच्चों में विश्वास, दूसरों का ख्याल रखना, दूसरों के प्रति निष्पक्ष व्यवहार करना आदि उसके नैतिक व्यवहार का आधार होते हैं।

117. रिक्त स्थान भरिए: ''कोहलबर्ग का सिद्धान्त एक बालक के .....?.....विकास की व्याख्या करता है।''

उत्तर: नैतिक

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-कोहलबर्ग का सिद्धान्त एक बालक के नैतिक विकास की व्याख्या करता है। कोहलबर्ग ने 10-16 वर्ष तक के बालको के सामने नैतिक दुविधाएँ प्रस्तुत कर साक्षात्कार लिया जिसके आधार पर नैतिक विकास के तीन प्रमुख स्तर तथा सोपान बताएँ हैं जिन्हे निम्न सारणी द्वारा व्यक्त किया गया है-

स्तर	सोपान
(1) पूर्व परम्परागत स्तर	(1) आत्म केन्द्रित निर्णय (2) दण्ड तथा आज्ञापालन अभिमुखता (3) यांत्रिक सापेक्षिक अभिमुखता
(2) परम्परागत स्तर	1. परस्पर एकरूप अभिमुखता 2. अधिकार संरक्षण अभिमुखता
(3) उत्तर परम्परागत स्तर	1.सामाजिक अनुबंध विधि सम्मत अभिमुखता 2. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धान्त अभिमुखता

118.कोह्लबर्ग के अनुसार वह स्तर जिसमें बालक की नैतिकता दंड के भय से नियंत्रित रहती है, कहलाती है–

(a) पूर्व-नैतिक अवस्था (b) परम्परागत नैतिक स्तर

(c) आत्म-स्वीकृत नैतिक अवस्था (d) नैतिकता स्तर

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015
Hariyana TET (Class I-V) 2013

Ans: (a) कोह्लबर्ग के अनुसार वह स्तर जिसमें बालक की नैतिकता दण्ड के भय से नियंत्रित रहती है वह पूर्व नैतिक स्तर या पूर्व परम्परागत स्तर कहलाता है। इस स्तर पर बालक का नैतिक व्यवहार तीन सोपानों द्वारा नियंत्रित होता है–

1. आत्म केन्द्रित निर्णय
2. दण्ड तथा आज्ञापालन अभिमुखता
3. यांत्रिक सापेक्षिक अभिमुखता

119.कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त एवं उसकी विभिन्न स्तरों के अनुसार निम्न में से कौन-सा सोपान उनके द्वारा प्रतिपादित नहीं है?

(a) आत्मकेन्द्रित निर्णय

(b) परस्पर एकरूप अभिमुखता

(c) वैयक्तिकता व विनिमय अभिमुखता

(d) सामाजिक अनुबंध विधिसम्मत अभिमुखता

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास के तीन स्तरों, जिनमें से प्रत्येक के कुछ सोपान हैं, के रूप में नैतिक विकास के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है-

(1) पूर्व-परम्परागत स्तर

(1) आत्मकेन्द्रित निर्णय

(2) दण्ड तथा आज्ञापालन अभिमुखता

(3) यांत्रिक सापेक्षिक अभिमुखता

(2) परम्परागत स्तर

(1) परस्पर एकरूप अभिमुखता

(2) अधिकार संरक्षण अभिमुखता

(3) उत्तर-परम्परागत स्तर

(1) सामाजिक अनुबंध विधिसम्मत अभिमुखता

(2) सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिमुखता

वैयक्तिकता व विनिमय अभिमुखता कोह्लबर्ग के नैतिक विकास का सोपान नहीं है।

120.कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार निम्न अवस्था में लोगों की आशा तथा इच्छाएँ पूरी करने के सन्दर्भ में सही या गलत का निर्णय लेता है

(a) अवस्था-1 (b) अवस्था-2

(c) अवस्था-3 (d) अवस्था-4

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत के अनुसार अवस्था–अवस्था अर्थात् परम्परागत अवस्था में बालक लोगों की आशा तथा इच्छाएँ पूरी करने के संदर्भ में सही या गलत का निर्णय लेने लगता है। अच्छा लड़का या अच्छी लड़की बनने का प्रयास करते हैं तथा ये सीख लेते हैं कि ऐसा करने में ही अंतर्निहित मूल्य होते हैं।

121.रोहित ने अजय की डेस्क से ली हुई पेंसिल वापस रख दी क्योंकि उसे पकड़े जाने पर सजा मिलने का डर था। यह कोह्लबर्ग के किस स्तर को बताता है?

(a) पूर्व-परम्परागत स्तर (b) परम्परागत स्तर

(c) उत्तर-परम्परागत स्तर (d) पूर्व-संक्रियात्मक स्तर

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (a) कोह्लबर्ग द्वारा प्रतिपादित नैतिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार पूर्व परम्परागत स्तर पर बालक में दण्ड तथा आज्ञापालन की अभिमुखता पायी जाती है। इस स्तर पर बालक अधिकार सम्पन्न व्यक्तियों के द्वारा दिये जाने वाले दण्ड से बचने के प्रति चिंतित रहते हैं। वे नियमों तथा उनकों तोड़ने से मिलने वाले दण्डों को समझते हैं।

122. 9 वर्ष के बालक की नैतिक तर्कणा आधारित होती है–

(a) किसी कार्य के भौतिक परिणाम उसकी अच्छाई या बुराई को निर्धारित करते हैं

(b) कोई कार्य सही होना इस बात पर निर्भर करता है कि उससे व्यक्ति को अपनी आवश्यकता पूर्ति होती है

(c) नियमों का पालन करने के बदले में कुछ लाभ मिलना चाहिए

(d) सही कार्य वह है जो उस व्यक्ति के द्वारा किया जाये जो अन्य व्यक्तियों को अपने व्यवहार से प्रभावित करता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) कोह्लबर्ग के अनुसार 9 वर्ष का बालक नैतिक विकास के पूर्व परम्परागत स्तर पर होता है। इस स्तर के बालक की नैतिक तर्कणा किसी कार्य के भौतिक परिणाम उसकी अच्छाई या बुरई को निर्धारित करते हैं।

123. लॉरेन्स कोह्लबर्ग के नैतिक तर्क के सिद्धांत की अनेक बातों के लिए आलोचना की जाती है। इस आलोचना के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सही है?

(a) अपनी सैद्धान्तिक रूपरेखा पर पहुंचने के लिए कोह्लबर्ग ने पियाजे के सिद्धांतों को दोहराया है।

(b) कोह्लबर्ग ने नैतिक तर्क के प्रत्येक सोपान के लिए विशेष उत्तर नहीं दिया है।

(c) कोह्लबर्ग का सिद्धांत बच्चों के प्रत्युत्तरों पर ध्यान केन्द्रित नहीं करता।

(d) कोह्लबर्ग ने अपने अध्ययन को मूलतः पुरुषों के नमूनों का आधृत रखा है।

DSSSB PRT
C TET - 16 (VI-VIII)

Ans : (d) लॉरेंस कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत की अनेक बातों के लिए आलोचना की जाती है जिसमें एक आलोचना यह भी होती है कि उन्होंने अपने अध्ययन को मूलतः पुरुषों के नमूनों का आधृत रखा है।

124. कोह्लबर्ग के अनुसार, बच्चे सीखते हैं

(a) संज्ञानात्मक विकास के चरण
(b) शारीरिक विकास के चरण
(c) संवेगात्मक विकास के चरण
(d) नैतिक विकास के चरण

DSSSB PRT

Ans : (d) कोह्लबर्ग ने 10 वर्ष से 16 वर्ष तक के बच्चों में नैतिक विकास के चरणों का अध्ययन करके अपना नैतिक विकास का सिद्धांत प्रस्तुत किया है, जिसको इन्होंने तीन चरणों के अंतर्गत कई सोपानों में वर्गीकृत किया है।

125. कोह्लबर्ग के अनुसार सही और गलत प्रश्न के बारे में निर्णय लने में शामिल चिंतन–प्रक्रिया को कहा जाता है–

(a) नैतिक दुविधा (b) सहयोग की नैतिकता
(c) नैतिक तर्कणा (d) नैतिक यथार्थवाद

DSSSB PRT
Hariyana TET 2013 (VI-VIII)
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) कोह्लबर्ग के अनुसार सही और गलत प्रश्न के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन–प्रक्रिया को नैतिक तर्कणा कहा जाता है। 'सार्वभौमिक नैतिक' सिद्धांत अभिमुखता' सोपान में व्यक्ति सही और गलत का निर्धारण ऐसे स्वनिर्धारित नैतिक सिद्धांतों के आधार पर करता है जो तार्किक व्यापकता सार्वभौमिकता तथा एकरूपता से युक्त होते हैं।

126. एक बच्चा तर्क प्रस्तुत करता है ''आप यह मेरे लिए करें और मैं वह आपके लिए करूँगा।'' यह बच्चा कोह्लबर्ग की नैतिक तर्कणा की किस अवस्था के अन्तर्गत आएगा?

(a) 'अच्छा लड़का–लड़की' अभिमुखीकरण
(b) सामाजिक–अनुबन्ध अभिमुखीकरण
(c) सहायक उद्देश्य अभिमुखीकरण
(d) दण्ड और आज्ञापालन अभिमुखीकरण

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) एक बच्चा तर्क प्रस्तुत करता है ''आप यह मेरे लिए करें और मैं वह आपके लिए करूँगा।'' यह बच्चा कोह्लबर्ग की नैतिक तर्कणा के पूर्व परम्परागत स्तर पर है। इस अवस्था में बच्चों का व्यवहार दण्ड तथा आज्ञाकारिता और स्वयं के लाभ की भावना से सम्बन्धित होता है। इस स्तर पर बच्चों के नैतिक निर्णय आत्म–रुचि एवं दूसरे इसके बदले में क्या कर सकते हैं, की मान्यताओं पर आधारित होते हैं।

127. आप एक शिक्षिका/शिक्षक के रूप में 'रैगिंग और धमकाने' के सख्त विरोधी हैं तथा इस सन्दर्भ में विद्यालय में पोस्टर लगवाते हैं तथा समिति बनवाते हैं। आपसे जुड़ने वाले किशोर जो इस विचार के दृढ़ विश्वासी हैं। निम्नलिखित में से किस स्तर पर होंगे?

(a) पारम्परिक
(b) पूर्व पारम्परिक
(c) उत्तर पारम्परिक
(d) सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने वाला

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) उत्तर पारम्परिक स्तर पर व्यक्ति या बालक अपने विवेक एवं अंतरात्मा की आवाज के आधार पर कार्यों एवं व्यवहारों की वांछनीयता निर्धारित करता है।

128. निम्नलिखित में से कौन–सा कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के चरणों का लक्षण है?

(a) सभी संस्कृतियों से सम्बद्ध चरणों की सार्वभौम श्रृंखला
(b) विभिन्न चरण एक गैर–पदानुक्रम रूप में आगे की ओर बढ़ते हैं
(c) चरणों का परिवर्तनशील अनुक्रम
(d) विभिन्न चरण अलग–अलग प्रत्युत्तर हैं न कि सामान्य प्रतिमान

DSSSB PRT

Ans : (a) कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के चरणों के लक्षण निम्नलिखित हैं–

- वांछनीय व्यवहार के विकास में तर्क एवं चिंतन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।
- नैतिक विकास के प्रतिमान सार्वभौमिक है तथा व्यक्ति को नैतिक विकास की प्रत्येक अवस्था से गुजरना पड़ता है।
- नैतिक विकास की प्रत्येक क्रमिक अवस्था में व्यवहार परिमार्जित होता है।

129. कोह्लबर्ग के सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना क्या है?

(a) कोह्लबर्ग ने बिना किसी अनुभूतिमूलक आधार के सिद्धांत प्रस्तुत किया
(b) कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास की स्पष्ट अवस्थाओं का उल्लेख नहीं किया
(c) कोह्लबर्ग ने प्रस्ताव दिया कि नैतिक तार्किकता विकासात्मक है
(d) कोह्लबर्ग ने पुरुषों एवं महिलाओं की नैतिक तार्किकता में सांस्कृतिक विभिन्नताओं को महत्त्व नहीं दिया

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) कोह्लबर्ग के सिद्धांत की एक प्रमुख आलोचना यह है कि इन्होंने पियाजे के सिद्धांत का ही नकल किया है तथा दूसरी आलोचना यह है कि इन्होंने पुरुषों व महिलाओं की नैतिक तार्किकता में सांस्कृतिक विभिन्नताओं को महत्त्व नहीं दिया।

130. कोह्लबर्ग के अनुसार किस अवस्था में नैतिकता बाह्य कारकों द्वारा निर्धारित होती है?

(a) पूर्व पारम्परिक अवस्था
(b) पारम्परिक अवस्था
(c) पश्चात् पारम्परिक अवस्था
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) लारेंस कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत में तीन प्रमुख अवस्थाएं होती हैं।

1. पूर्व परम्परागत स्तर (प्राकरुढ़िगत स्तर)
2. परम्परागत स्तर (रुढ़िगत नैतिक स्तर)
3. उत्तर रुढ़िगत स्तर

परम्परागत अवस्था में बालक की नैतिकता बाह्य कारकों के द्वारा निर्धारित होती है।

131. कोह्लबर्ग का विकास सिद्धान्त निम्न में से किससे सम्बन्धित है?

(a) भाषा विकास (b) संज्ञानात्मक विकास
(c) नैतिक विकास (d) सामाजिक विकास

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013
UP TET 2016 (I-V)

Ans : (c) लारेंस कोह्लबर्ग ने 10-16 वर्ष के उम्र में बच्चो के व्यवहार का विश्लेषण किया तथा जीन पियाजे के नैतिक विकास के सिद्धांत को विस्तारित, परिवर्तित तथा परिमार्जित किया। कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास के सिद्धांत में तीन प्रमुख स्तर माना जो निम्न है-

1. पूर्व परम्परागत स्तर (प्राक रूढ़िगत स्तर)
2. परम्परागत स्तर (रूढ़िगत नैतिक स्तर)
3. उत्तर रूढ़िगत स्तर (उत्तर परम्परागत)

132. किसी बच्चे का दिया गया विशिष्ट उत्तर कोह्लबर्ग के नैतिक तर्क के सोपानों की विषयवस्तु के किस सोपान के अंतर्गत आएगा?

''यदि आप ईमानदार हैं, तो आपके माता-पिता आप पर गर्व करेंगे। इसलिए आपको ईमानदार रहना चाहिए।''

(a) दंड-आज्ञाकारिता अनुकूलन
(b) सामाजिक संकुचन अनुकूलन
(c) अच्छी लड़की-अच्छा लड़का अनुकूलन
(d) कानून और व्यवस्था अनुकूलन

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) ''यदि आप ईमानदार हैं, तो आपके माता-पिता आप पर गर्व करेंगे। इसलिए आपको ईमानदार रहना चाहिए।'' यह उत्तर बच्चों को अच्छी लड़की / अच्छा लड़का अनुकूलन के लिए प्रेरित करेगा। वह वाह्य समाज या परिवार की प्रशंसा प्राप्त करना चाहते हैं। इसलिए अच्छा बनना चाहते है।

133. कोहलवर्ग ने प्रस्तुत किये हैं।

(a) संज्ञानात्मक विकास के चरण
(b) शारीरिक विकास के चरण
(c) संवेगात्मक विकास के चरण
(d) नैतिक विकास के चरण

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (d) मनोवैज्ञानिक लारेंस कोहलवर्ग के द्वारा बालक के नैतिक विकास का सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया। कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास के सिद्धान्त में तीन प्रमुख चरणों का उल्लेख किया- जो निम्न है-

1. पूर्व परम्परागत स्तर (प्राक रूढ़िगत स्तर)
2. परम्परागत स्तर (रूढ़िगत नैतिक स्तर)
3. उत्तररूढ़िगत स्तर

134. निम्नलिखित में से किस एक जोड़े का मिलान ठीक हुआ है?

(a) दंड देना और आज्ञापालन अभिविन्यास-नियम तय नहीं है, किंतु समाज के हित में बदले जा सकते हैं
(b) सामाजिक संविदा अभिविन्यास-किसी कार्य के भौतिक परिणाम निर्धारित करते हैं कि वह अच्छा है या बुरा
(c) अच्छा लड़का व अच्छी लड़की अभिविन्यास-अच्छा बनकर कोई स्वीकृति प्राप्त करता है
(d) नियम और आदेश अभिविन्यास-मानवाधिकारों के मूल्य के आधार पर नैतिक सिद्धान्त स्वयं चुने जाते हैं

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (c) कोह्लबर्ग के अनुसार नैतिक विकास के परम्परागत स्तर पर बच्चे अच्छा लड़का व अच्छी लड़की बनकर कोई स्वीकृति प्राप्त करना चाहते हैं। वे अच्छे बालक अथवा अच्छी बालिका जैसा व्यवहार करने में रुचि लेते हैं, जो कुछ अन्यों को अच्छा लगे या अन्यों की सहायता करे या अन्यों के द्वारा स्वीकृत हो, वही उत्तम माना जाता है।

135. लॉरेन्स कोह्लबर्ग के सिद्धान्त में कौन-सा स्तर नैतिकता की अनुपस्थिति को सही अर्थ में सूचित करता है?

(a) स्तर III (b) स्तर IV
(c) स्तर I (d) स्तर II

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (c) कोह्लबर्ग द्वारा बताये गये नैतिक विकास के स्तरों में प्रथम स्तर पूर्व-परम्परागत स्तर है। इस स्तर पर नैतिक विकास सामाजिक व सांस्कृतिक नियमों जैसे– अच्छा या बुरा, सही या गलत आदि की व्याख्या मिलने वाले दण्ड, पुरस्कार अथवा नियमों का समर्थन करने वाले व्यक्तियों की शारीरिक सामर्थ्य अथवा होने वाले स्थूल परिणामों से आँकी जाती है।

136. कोह्लबर्ग के सिद्धान्त के पूर्व-परम्परागत स्तर के अनुसार, कोई नैतिक निर्णय लेते समय एक व्यक्ति निम्नलिखित में से किस तरफ प्रवृत्त होगा?

(a) अंतर्निहित संभावित दंड
(b) व्यक्तिगत आवश्यकताएँ तथा इच्छाएँ
(c) व्यक्तिगत मूल्य
(d) पारिवारिक अपेक्षाएँ

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (a) कोह्लबर्ग के सिद्धान्त के पूर्व-परम्परागत स्तर पर बालक का नैतिक विकास तीन सोपानों के अन्तर्गत होता है।

- आत्मकेन्द्रित निर्णय– इसमें बालक अपनी इच्छा-अनिच्छा अथवा पसंद-नापसंद से हटकर किसी भी नियम का परवाह नही करते
- दण्ड तथा आज्ञा-पालन अभिमुखता– इसमें बालक का नैतिक व्यवहार दण्ड या आज्ञा-पालन से निर्धारित व संचालित होता है।

■ यांत्रिक सापेक्षिक अभिमुखता– इस स्तर पर बालक मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को देखना होता है तथा कोई भी व्यक्ति केवल उन व्यक्तियों के प्रति उत्तरदायी होता है जो उसकी सहायता करते हैं।

137. एक शिक्षिका अपनी कक्षा में कहती है, ''सभी प्रकार के प्रदत्त कार्यों (assignments) का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि प्रत्येक विद्यार्थी अधिक प्रभावशाली ढंग से सीख सके अतः सभी विद्यार्थी बिना किसी अन्य की सहायता से अपना कार्य पूर्ण करें।'' वह कोह्लबर्ग के किस नैतिक विकास के चरण की ओर संकेत दे रही है?

(a) औपचारिक चरण- 4 कानून और व्यवस्था
(b) पर - औपचारिक चरण-5 सामाजिक संविदा
(c) पूर्व - औपचारिक चरण-1 दण्ड परिवर्जन
(d) पूर्व - औपचारिक चरण-2 वैयक्तिक और विनियम

C TET Paper - I (Class I-V) 16 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans : (a) औपचारिक चरण-कानून और व्यवस्था- यह कोहलवर्ग के सिद्धान्तों की चौथी अवस्था है। इस स्थिति में लोगों के नैतिक विकास की अवस्था सामाजिक आदेश, कानून, न्याय और कर्तव्यों पर आधारित होती है। जैसे किशोर सोचते हैं कि समाज अच्छे से चले इसके लिए कानून के द्वारा बनाये गये दायरे के अंदर ही रहना चाहिए।

138. निम्नलिखित में से कौन-सा कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के चरणों का लक्षण है?

(a) चरणों का परिवर्तनशील अनुक्रम
(b) विभिन्न चरण अलग-अलग प्रत्युत्तर हैं न कि सामान्य प्रतिमान
(c) सभी संस्कृतियों से सम्बद्ध चरणों की सार्वभौम श्रृंखला
(d) विभिन्न चरण एक गैर-पदानुक्रम रूप में आने की ओर बढ़ते हैं

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (c) कोह्लबर्ग के अनुसार नैतिक विकास सार्वभौमिक गोचर है, क्योंकि सामाजिक प्राणी बनने के लिए मान्य व्यवहार संहिता को आत्मसात् करना ही पड़ता है। इसीलिए सभी संस्कृतियों से सम्बद्ध चरणों की सार्वभौम श्रृंखला होती है।

139. लॉरेंस कोह्लबर्ग के द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित चरणों में से प्राथमिक विद्यालयों के बच्चे किन चरणों का अनुसरण करते हैं?

A. आज्ञापालन और दण्ड-उन्मुखीकरण
B. वैयक्तिकता और विनिमय
C. अच्छे अंतःवैयक्तिक सम्बन्ध
D. सामाजिक अनुबंध और व्यक्तिगत अधिकार

(a) A और B (b) B और D
(c) A और D (d) A और C

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (a) कोह्लबर्ग के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों के बच्चे नैतिक विकास के पूर्व-परम्परागत स्तर पर होते हैं। इस स्तर पर बच्चे आत्मकेन्द्रित निर्णय लेते हैं, उनमें दण्ड तथा आज्ञापालन अभिमुखता होती है, यांत्रिक सापेक्ष अभिमुखता और वैयक्तिकता तथा विनिमय की भावना होती है।

140. करनैल सिंह कानूनी कार्यवाही तथा खर्चे के बावजूद आयकर नहीं देते। वे सोचते हैं कि वे एक भ्रष्ट सरकार को समर्थन नहीं दे सकते जो अनावश्यक बाँधों के निर्माण पर लाखों रुपए खर्च करती है। वे सम्भवतः कोह्लबर्ग के नैतिक विकास की किस अवस्था में हैं?

(a) पश्च-परंपरागत (b) पूर्व पारंपरागत
(c) परा-परंपरागत (d) परंपरागत

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (a) वे संभवतः कोह्लबर्ग के नैतिक विकास की पश्च-पंरपरागत अवस्था में है। नैतिक विकास के इस तृतीय या सर्वोच्च स्तर पर व्यक्ति उन नैतिक मूल्यों तथा नैतिक सिद्धांतों को परिभाषित करने के स्पष्ट प्रयास करने लगता है जिनकी सामाजिक दृष्टि में वैधता या उपयोगिता होती है तथा जो परम्परागत मूल्यों, नियमों तथा सिद्धांतों से भिन्न हो सकते हैं। उनमें स्वनिर्धारित नैतिक सिद्धांतों के प्रति निष्ठा तथा अनुसरण करने की भावना होती है।

141. कोह्लबर्ग के अनुसार, शिक्षक बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास कर सकता है

(a) धार्मिक शिक्षा को महत्व देकर
(b) व्यवहार के स्पष्ट नियम बनाकर
(c) नैतिक मुद्दों पर आधारित चर्चाओं में उन्हें शामिल करके
(d) 'कैसे व्यवहार किया जाना चाहिए' इस पर कठोर निर्देश देकर

C TET Paper -I (Class I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT
UKTET 2014 (I-V)

Ans: (c) कोह्लबर्ग के अनुसार बच्चों के नैतिक विकास के लिए उन्हें विभिन्न नैतिक मुद्दों की परिचर्चा में सक्रिय सहभागी बनाना चाहिए साथ ही नैतिक रूप से प्रेरणादायक कहानियों को सुनाकर उनके नैतिक विकास को निर्देशित किया जा सकता है।

142. निम्नलिखित में से कौन सा अनुकूलन (ओरिएंटेशन), कोह्लबर्ग के अनुसार पारंपरिक नैतिकता के चरण के अंतर्गत आता है?

(a) दण्ड एवं आज्ञा के प्रति अनुकूलन (ओरिएंटेशन)
(b) सामाजिक सहानुभूति और विवेक
(c) सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों की नैतिकता
(d) सहायक उद्देश्य और विनिमय

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : सामाजिक सहानुभूति और विवेक अनुकूलन कोह्लबर्ग के अनुसार पारंपरिक नैतिकता चरण के अंतर्गत आता है। कोह्लबर्ग के परंपरागत स्तर के उपसोपान अधिकार संरक्षण अभिमुखता में बालक सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत नियमों तथा दायित्वों के अनुरूप कार्य करने की भावना से प्रोत्साहित रहते हैं। वे समझते हैं कि समाज में एक व्यापक सामाजिक प्रणाली है जो उसमें रहने वाले व्यक्तियों के व्यवहार को नियंत्रित करती है। उनके विचार में नैतिकता का आधार सामाजिक व्यवस्था होती है।

143. कोह्लबर्ग के अनुसार नैतिक विकास में पहला चरण क्या है?

(a) पूर्व–परम्परागत नैतिकता
(b) पेरी–पराम्परागत नैतिकता

(c) परम्परागत नैतिकता
(d) पश्चपरम्परागत नैतिकता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : लारेंस कोह्लबर्ग ने नैतिक विकास के सिद्धांत के तीन प्रमुख स्तर तथा सात सोपान बताये हैं। ये स्तर निम्न हैं–
1. पूर्व–परम्परागत स्तर
2. परम्परागत स्तर
3. उत्तर–परम्परागत स्तर

पूर्व–परम्परागत स्तर नैतिक विकास का पहला चरण होता है। इस स्तर पर बालक अपनी आवश्यकताओं के संदर्भ में चिंतन करते हैं। नैतिक दुविधाओं से युक्त प्रश्नों पर उनके उत्तर प्रायः उनको होने वाले लाभ या हानि पर आधारित होते हैं।

144. ..... नैतिक विकास चरण में माता-पिता और बड़ों की सामाजिक और राजनीतिक मान्यताओं पर सवाल उठा सकता है।

(a) पश्च-पारंपरिक (b) औपचारिक पारंपरिक
(c) पूर्व-पारंपरिक (d) पारंपरिक

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : कोह्लबर्ग के अनुसार, बच्चा, पश्च पारंपरिक या उत्तर पारम्परिक नैतिक विकास चरण में माता–पिता और बड़ों की सामाजिक और राजनीतिक मान्यताओं पर सवाल उठा सकता है। इस चरण में बच्चा उचित–अनुचित का निर्णय ऐसे स्वनिर्धारित नैतिक सिद्धांतों के आधार पर करता है जो तार्किक व्यापकता, सार्वभौमिकता तथा एकरूपता से युक्त होते हैं।

बूनर का संज्ञानात्मक सिद्धांत

145. बूनर की प्रतिबिम्बात्मक अवस्था पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की किस अवस्था से मिलती जुलती है?

(a) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था
(b) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था
(c) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(d) संवेगात्मक गामक अवस्था

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : बूनर की प्रतिबिम्बात्मक अवस्था पियाजे की पूर्व संक्रियात्मक अवस्था से मिलती–जुलती है। प्रतिबिम्बात्मक अथवा छायात्मक अवस्था में मानसिक प्रतिबिम्बों के द्वारा सूचनायें व्यक्ति तक पहुँचती हैं। बालक चमक, शोर, गति तथा विविधता से प्रभावित होता है। बालकों में दृश्य–स्मृति (Visual memory) विकसित हो जाती है, इसी प्रकार पियाजे के पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में संकेतात्मक कार्यों का प्रादुर्भाव तथा भाषा का प्रयोग प्रारम्भ होता है।

146. निम्न में से कौन–सी अवस्था बूनर के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत का अंग नहीं है?

(a) आन्त प्रज्ञ अवस्था (b) प्रतिबिम्बात्मक अवस्था
(c) संकेतात्मक अवस्था (d) क्रियात्मक अवस्था

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : ब्रूनर ने संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं को तीन स्तरों में बाँटा है–
1. क्रियात्मक अवस्था (Enactive stage)
2. प्रतिबिम्बात्मक अवस्था (Iconic stage)
3. संकेतात्मक अवस्था (Symolic stage)

आंत–प्रज्ञ अवस्था जीन पियाजे द्वारा बताये गए संज्ञानात्मक विकास के पूर्व संक्रियात्मक अवस्था की दूसरी उपअवस्था है, जो चार वर्ष से सात वर्ष तक होती है।

147. ..... एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में अधिगम के विचार को समाहित करता है जहाँ वे सीखने वाले अपने वर्तमान ज्ञान के साथ-साथ अपने पिछले ज्ञान के आधार पर नए विचार बनाने में सक्षम होते हैं–

(a) निर्माणवाद पर जॉन डेवी का सिद्धांत
(b) निर्माणवाद पर लेव वाइगोत्सकी का सिद्धांत
(c) निर्माणवाद पर जीन पियाजे का सिद्धांत
(d) निर्माणवाद पर जेरोम ब्रूनर का सिद्धांत

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) निर्माणवाद पर जेरोम ब्रूनर का सिद्धांत एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में अधिगम के विचार को समाहित करता है जहाँ बच्चे सीखने वाले अपने वर्तमान ज्ञान के साथ–साथ अपने पिछले ज्ञान के आधार पर नए विचार बनाने में सक्षम होते हैं।

वाइगोत्सकी का सिद्धांत

148. वायगोत्स्की के अनुसार बच्चे स्वयं से क्यों बोलते है?

(a) बच्चे अपने प्रति वयस्कों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बोलते हैं।
(b) बच्चे स्वभाव से बहुत बातूनी होते हैं।
(c) बच्चे अहंकेंद्रित होते है।
(d) बच्चे अपने कार्य को दिशा देने के लिए बोलते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (d) वायगोत्स्की के अनुसार संज्ञानात्मक विकास को समझने के लिए उन औजारों का परीक्षण अति आवश्यक है जो संज्ञानात्मक विकास में मध्यस्थता करते हैं तथा उसे रूप प्रदान करते हैं। इसी के आधार पर वे यह भी मानते हैं कि भाषा संज्ञानात्मक विकास का महत्वपूर्ण औजार है। इनके अनुसार आरम्भिक बाल्यकाल में ही बालक अपने कार्यों के नियोजन एवं समस्या समाधान में भाषा का औजार की तरह उपयोग करने लग जाता है।

149. भाषा के विकास में 'आंतरिक भाषण' की अवधारणा इनके द्वारा आरंभ की गई थी;

(a) पियाजे (b) चोम्स्की
(c) वाइगोत्स्की (d) स्किनर

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : भाषा के विकास में 'आंतरिक भाषण' (Inner speech) की अवधारणा वाइगोत्सकी द्वारा आरंभ की गयी थी। इनके अनुसार बालक अपने व्यवहार को नियोजित और निर्देशित करने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। उनका मत है कि कोई भी मानसिक कार्य करने से पहले बालक में बाहरी समाज से संवाद होना आवश्यक है। बाहरी दुनिया से बात करने के लिए भाषा को सीखना आवश्यक है। बालक जैसे ही भाषा सीखता है वह भीतरी सम्भाषण प्रारम्भ कर देता है। सभी बालक अपने अंदर आत्म वार्तालाप (Self talk) की आदत बना लेते हैं।

150. निकटवर्ती विकास का क्षेत्र संदर्भित करता है–

(a) उस चरण को, जब अधिकतम विकास संभव है

(b) उस विकासात्मक चरण को, जब बच्चा सीखने की पूरी ज़िम्मेदारी लेता है

(c) एक संदर्भ को, जिसमें बच्चे सहयोग के सही स्तर के साथ कोई कार्य लगभग स्वयं कर सकते हैं

(d) उस सीखने के बिन्दु को, जब सहयोग वापस लिया जा सकता है

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : निकटवर्ती विकास का क्षेत्र उसे संदर्भित करता है जिसमें बच्चे सहयोग के सही स्तर के साथ कोई कार्य लगभग स्वयं कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में 'बच्चा जो कर रहा है तथा जो करने की क्षमता रखता है, के बीच के क्षेत्र को निकटवर्ती विकास का क्षेत्र कहा जाता है।'

151. ''एक उचित प्रश्न/सुझाव के द्वारा बच्ची की समझ को उस बिंदु से बहुत आगे ले जाया जा सकता है जिस पर वह अकेले पहुँच सकती है।''
निम्नलिखित में से कौन सी संरचना उपरोक्त कथन को प्रकाशित करती है?

(a) साम्यधारण

(b) संरक्षण

(c) बुद्धि

(d) समीपस्थ/निकटस्थ विकास का क्षेत्र

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (d) : समीपस्थ/निकटस्थ विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development)– वाइगोत्सकी के अनुसार बालक क्षमताओं की सीमाओं में बंधा है इसलिए वह कुछ कार्य अकेले नहीं कर पाता है। परन्तु जब उसे अपने से अधिक कुशल बालक या परिवार का सदस्य जैसे– माता–पिता, बड़े भाई–बहन या शिक्षक उसकी सहायता करते हैं तो उसकी क्षमता और अधिक हो जाती है। अर्थात् बच्चा जो कर रहा है और जो करने की क्षमता रखता है, के बची के क्षेत्र को संभावित विकास का क्षेत्र कहा जाता है। अतः यह उदाहरण कि ''एक उचित प्रश्न/सुझाव के द्वारा बच्ची के समझ को उस बिन्दु से बहुत आगे ले जाया जा सकता है, जिस पर वह अकेले पहुँच सकती है।'' को समीपस्थ विकास का क्षेत्र कहा जायेगा।

152. लेव वायगोट्स्की के अनुसार, आधारभूत मानसिक क्षमताओं को मुख्य रूप से किसके द्वारा उच्चतर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में बदला जाता है?

(a) सामाजिक पारस्परिक क्रिया

(b) उद्दीपन–अनुक्रिया संबंध

(c) अनुकूलन एवं संघटन

(d) पुरस्कार एवं दण्ड

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (a) : लेव वाइगोत्सकी के अनुसार, आधारभूत मानसिक क्षमताओं को मुख्य रूप से सामाजिक पारस्परिक क्रिया द्वारा उच्चतर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में बदला जाता है। वाइगोत्सकी ने पियाजे के मत के विपरीत जैविक कारक से ज्यादा सामाजिक कारक को उच्चतर संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं जैसे भाषा, स्मृति व अमूर्त चिंतन में महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में देखा। इस प्रकार सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियों को उन्होंने बालक के विकास में महत्त्वपूर्ण माना है।

153. मौखिक संवाद जो बच्चे अपने आप से करते हैं, उन्हें लेव वायगोत्सकी क्या कहते हैं–

(a) व्यक्तिगत वार्ता (b) भ्रांत वार्ता

(c) समस्यात्मक वार्ता (d) अहंकेंद्रित वार्ता

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (a) मौखिक संवाद जो बच्चे अपने आप से करते हैं उन्हें लेव वाइगोत्सकी व्यक्तिगत वार्ता कहते हैं। वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चे भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्प्रेषण हेतु अपितु स्वनिर्देशित तरीके से कार्य करने के लिए, अपने व्यवहार हेतु योजना बनाने, निर्देश देने व मूल्यांकित करने में भी करते हैं। स्व-निर्देशन में भाषा के प्रयोग को आंतरिक स्व-भाषा या निज भाषा कहा जाता है। पियाजे ने निज भाषा को आत्म केन्द्रित तथा अपरिपक्व माना है, परन्तु वाइगोत्सकी के अनुसार आरम्भिक बाल्यावस्था में यह बालक के विचारों का एक महत्वपूर्ण साधन है।

154. जिग-सॉ पहेली को करते समय 5 वर्ष की नज्मा स्वयं से कहती है, ''नीला टुकड़ा कहाँ है? नहीं, यह वाला नहीं, गाढ़े रंग वाला जिससे यह जूता पूरा बन जाएगा'' इस प्रकार की वार्ता को वायगोट्स्की किस तरह संबोधित करते हैं?

(a) पाड़ (ढाँचा) (b) आत्मकेन्द्रित वार्ता

(c) व्यक्तिगत वार्ता (d) जोर से बोलना

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (c) जिग-सॉ पहेली को करते समय 5 वर्ष की नज्मा स्वयं से कहती है ''नीला टुकड़ा कहाँ है? नहीं यह वाला नहीं, गाढ़े रंग वाला जिससे यह जूता पूरा बन जाएगा।'' इस प्रकार की वार्ता को वाइगोत्सकी ने व्यक्तिगत वार्ता कहा है। वाइगोत्सकी के अनुसार बालक या बालिका किसी कार्य को करते समय अपने आपसे बात भी करते रहते हैं। इसे ही व्यक्तिगत वार्ता कहा जाता है किन्तु जब ये अपने मन में सोचते हुए कार्य करते हैं तो उसे आत्म भाषा/आत्म केन्द्रित वार्ता कहा जाता है।

155. बच्चों को संकेत देना तथा आवश्यकता पड़ने पर सहयोग प्रदान करना, निम्नलिखित में से किसका उदाहरण है?

(a) मॉडलिंग (b) पाड़ (ढाँचा)

(c) प्रबलन (d) अनुबंधन

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) बच्चों को संकेत देना तथा आवश्यकता पड़ने पर सहयोग प्रदान करना, पाड़ (ढाँचा) निर्माण (Scaffolding) का उदाहरण है। वाइगोत्सकी के अनुसार ढाँचा निर्माण एक तकनीक है जो सहायता के स्तर में परिवर्तन करती है। शिक्षण करते समय शिक्षक शिक्षार्थी के समसामयिक निष्पादन के आधार अपने निर्देशन और सहायता में समायोजन करता है जिसे ढाँचा निर्माण कहा जाता है।

156. ..... के अनुसार, बच्चों के चिंतन के बारे में सामाजिक प्रक्रियाओं तथा सांस्कृतिक संदर्भ के प्रभाव को समझना आवश्यक है।

(a) जीन पियाजे (b) लेव वायगत्स्की

(c) अलबर्ट बैन्डुरा (d) लॉरेंस कोह्लबर्ग

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (b) लेव वाइगोत्स्की के अनुसार बच्चों के चिंतन के बारे में सामाजिक प्रक्रियाओं तथा सांस्कतिक संदर्भ के प्रभाव को समझना आवश्यक है। वाइगोत्स्की का मानना है कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबन्धों से ही संज्ञानात्मक कौशल का विकास होता है। उनके अनुसार अधिगम व विकास सांस्कृतिक व सामाजिक वातावरण के मध्य साथ-साथ चलते हैं। उनका कहना है कि बालक का विकास सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से अलग नहीं किया जा सकता है।

157. वायगोत्स्की के अनुसार, जब एक वयस्क बच्चे के निष्पादन के वर्तमान स्तर को सहयोग द्वारा विस्तारित करता है तो इसे क्या कहते हैं ?

(a) समीपस्थ विकास का क्षेत्र (b) पाड़ (ढांचा)

(c) अंतः व्यक्तिनिष्ठता (d) खोजपूर्ण अधिगम

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (b) वाइगोत्स्की के अनुसार, जब एक वयस्क बच्चे के निष्पादन के वर्तमान स्तर को सहयोग द्वारा विस्तारित करता है तो इसे पाड़ या ढाँचा निर्माण (Scaffolding) कहते हैं। दूसरे शब्दों में जब कोई बड़ा व्यक्ति जैसे कि माता-पिता या शिक्षक बालक को कोई खेल या व्यवहार सिखाता है तो उससे अंतःक्रिया या संवाद करता है, इस क्रिया को ढाँचा निर्माण कहा जाता है। इसमें संवाद या अंतःक्रिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

158. 'जोन ऑफ प्रॉक्सिमल डेवलपमेन्ट (ZPD) का प्रत्यय दिया गया-

(a) बन्डूरा द्वारा (b) पियाजे द्वारा

(c) स्किनर द्वारा (d) वांइगोट्स्की द्वारा

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) वाइगोत्सकी अपने सामाजिक, सांस्कृतिक सिद्धान्त के लिए जाने जाते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक अंतः क्रिया ही बालक की सोच व व्यवहार में निरंतर बदलाव लाता है जो एक संस्कृति से दूसरे में भिन्न हो सकता है। वाइगोत्सकी ने सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धान्त के कई तत्व बताये हैं जिनमें पहला व्यक्तिगत भाषा है तथा दूसरा निकटतम् विकास का क्षेत्र (Zone of proximal development)

159. वाइगोत्स्की (Vygotsky) ने बाल विकास के बारे में कहा कि

(a) यह संस्कारों की आनुवांशिकी के कारण होता है

(b) यह सामाजिक अन्तर्क्रियाओं का उत्पाद होता है

(c) औपचारिक शिक्षा का उत्पाद होता है

(d) यह समावेशन और समायोजन का परिणाम होता है

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) वाइगोत्स्की के अनुसार- ''बालक का विकास सामाजिक अन्तर्क्रियाओं के परिणाम स्वरूप होता है।''

160.मनोवैज्ञानिक वाइगोत्सकी कहाँ के थे?

(a) जापान (b) रूस

(c) फ्रांस (d) चीन।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (b) लिव सिमोनोविच वाइगोत्सकी सोवियत संघ के मनोवैज्ञानिक थे उन्होने मानव के सांस्कृतिक तथा जैव-सामाजिक विकास का सिद्धान्त दिया जिसे सांस्कृतिक-ऐतिहासिक मनोविज्ञान कहा जाता है।

161. लेव वाइगोत्स्की के अनुसार, संज्ञानात्मक विकास का मूल कारण है–

(a) सामाजिक अन्योन्यक्रिया

(b) मानसिक प्रारूपों (स्कीमाज) का समायोजन

(c) उद्दीपक–अनुक्रिया युग्मन

(d) संतुलन

DSSSB PRT

Ans : (a) लेव वाइगोत्सकी अपने संज्ञानात्मक विकास के सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने संज्ञानात्मक विकास पर विशेष कार्य किया विशेषकर भाषा और चिंतन के सम्बन्ध पर। इनके अध्ययन में संज्ञान के विकास के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों के प्रभाव का वर्णन किया गया है।

162. वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चे स्वयं से क्यों बोलते हैं?

(a) बच्चे अपने प्रति वयस्कों का ध्यान आकर्षित करने के लिए बोलते हैं

(b) बच्चे स्वभाव से बहुत बातूनी होते हैं

(c) बच्चे अहंकेन्द्रित होते हैं

(d) बच्चे अपने कार्य को दिशा देने के लिए बोलते हैं

DSSSB PRT

Ans : (d) वाइगोत्सकी ने अपनी सिद्धांत में संज्ञान और सामाजिक वातावरण का सम्मिश्रण किया। वाइगोत्सकी के सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत के कई प्रमुख तत्त्व है। प्रथम महत्त्वपूर्ण तत्त्व है– व्यक्तिगत भाषा। इसमें बालक अपने व्यवहार को नियंत्रित और निर्देशित करने के लिए स्वयं से बातचीत करते हैं। सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांत का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है– निकटतम विकास का क्षेत्र।

163. यह तथ्य कि बच्चों को सांस्कृतिक रूप से प्रांसगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। निम्नलिखित में से किस व्यक्ति से सम्बन्धित है?

(a) चार्ल्स डार्विन (b) बी एफ स्किनर

(c) यूरी ब्रोनफैनब्रैनर (d) लिव वाइगोत्सकी

DSSSB PRT

C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (d) वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चों का संज्ञानात्मक विकास उनके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होता है। अतः बच्चों के संज्ञानात्मक विकास निर्देशित करने के लिए सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक ज्ञान की आवश्यकता होती है।

164. लेव वाइगोत्स्की के अनुसार संज्ञानात्मक विकास का मूल कारण है–

(a) संतुलन

(b) सामाजिक अन्योन्यक्रिया

(c) मानसिक प्रारूपों (स्कीमाज़) का समायोजन

(d) उद्दीपक-अनुक्रिया युग्मन

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (b) लेव वाइगोत्स्की के अनुसार संज्ञानात्मक विकास का मूल कारण सामाजिक अन्योन्यक्रिया है। लेव वाइगोत्स्की ने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में सामाजिक कारकों एवं भाषा को महत्वपूर्ण बतलाया है।

165. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भाषा और विचार के बारे में पियाजे और वाइगोत्स्की के दृष्टिकोण का सही वर्णन करता है?

(a) दोनों भाषा को बच्चे के विचारों से जन्म लेती हुई मानते हैं।

(b) वाइगोत्स्की के अनुसार पहले विचार जन्म लेता है और पियाजे के अनुसार भाषा का विचार पर भारी प्रभाव पड़ता है।

(c) पियाजे के अनुसार पहले विचार जन्म लेता है और वाइगोत्स्की के अनुसार भाषा का विचार पर भारी प्रभाव पड़ता है।

(d) दोनों मानते हैं कि बच्चे की भाषा से विचार जन्म लेते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (c) पियाजे के अनुसार पहले विचार जन्म लेता है और वाइगोत्सकी के अनुसार भाषा का विचार पर भारी प्रभाव पड़ता है।

166. लेव वाइगोत्स्की के अनुसार–

(a) बच्चे भाषा अर्जन की एक युक्ति से कोई भाषा सीखते हैं

(b) वयस्कों और साथियों से अन्योन्यक्रिया करने का भाषा के विकास में कोई प्रभाव नहीं पड़ता

(c) भाषिक विकास मानव चिंतन के स्वभाव को बदल देता है

(d) भाषिक विकास में संस्कृति की भूमिका बहुत कम होती है

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (c) वायगोत्सकी के अनुसार भाषा समाज द्वारा दिया गया प्रमुख सांकेतिक उपकरण है जो कि बालक के विकास में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। क्योंकि भाषा विकास मानव चिंतन के स्वभाव को बदलने में सक्षम होता है।

167. वाइगोत्स्की की संस्तुति के अनुसार, बच्चों की 'व्यक्तिगत वाक्' की संकल्पना

(a) स्पष्ट करती है कि बच्चे अहं-केंद्रित होते हैं

(b) प्रदर्शित करती है कि बच्चे बुद्धू होते हैं इसलिए उन्हें प्रौढ़ों के निर्देशन की आवश्यकता होती है

(c) प्रदर्शित करती है कि बच्चे अपने-आप से प्यार करते हैं

(d) स्पष्ट करती है कि बच्चे अपने ही कार्यों के निर्देशन के लिए भाषा का उपयोग करते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (d) वाइगोत्स्की के अनुसार बच्चों की 'व्यक्तिगत वाक्' की संकल्पना स्पष्ट करती है कि बच्चे अपने ही कार्यों के निर्देशन के लिए भाषा का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए जब बालक जोड़ सीखता है तो वह अपनी उंगलियों में गिनते हुए खुद को समझाता है, 'दो और दो चार होते हैं।' इस प्रकार वह खुद से बाते कर रहा होता है। इसे व्यक्तिगत वाक् कहते हैं।

168.वाइगोत्स्की तथा पियाजे के परिप्रेक्ष्यों में एक प्रमुख विभिन्नता है –

(a) व्यवहारवादी सिद्धान्तों की उनकी आलोचना।

(b) बच्चों को एक पालन-पोषण का परिवेश उपलब्ध कराने की भूमिका।

(c) भाषा एवं चिंतन के बारे में उनके दृष्टिकोण।

(d) ज्ञान के सक्रिय निर्माताओं के रूप में बच्चों की संकल्पना

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (c) वाइगोत्सकी तथा पियाजे के परिप्रेक्ष्यों में भाषा एवं चिंतन के बारे में उनके दृष्टिकोणों में एक प्रमुख विभिन्नता थी। वाइगोत्सकी के अनुसार जहाँ संज्ञानात्मक विकास सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में घटित होता है तथा भाषा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वहीं पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास के प्रतिमान सार्वभौमिक स्तर पर प्रदर्शित होते हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक असमानताओं का आसमान प्रभाव नहीं पड़ता है तथा भाषा का चिंतन या संज्ञानात्मक विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

169. वाइगोत्स्की के सिद्धान्त में, विकास के निम्नलिखित में से कौन-से पहलू की उपेक्षा होती है?

(a) सांस्कृतिक (b) जैविक

(c) भाषायी (d) सामाजिक

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (b) वाइगोत्स्की के सिद्धान्त में केवल सांस्कृतिक, भाषीय व सामाजिक पक्षों की ही बात की गई है, इसलिए वाइगोत्स्की द्वारा जैविक पक्ष की उपेक्षा की गई है।

170.वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के अनुसार –

(a) संस्कृति और भाषा संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

(b) बच्चे अलग क्षेत्र में चिंतन करते हैं और वे पूर्ण परिप्रेक्ष्य नहीं लेते

(c) यदि निम्न आयु पर अमूर्त सामग्री को प्रस्तुत किया जाए तो बच्चे अमूर्त तरीके से चिंतन करते हैं

(d) स्व-निर्देशित वाक् सहयोग का निम्नतम स्तर है

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (a) संस्कृति और भाषा संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यह कथन वाइगोत्सकी ने अपने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के अनुसार दिया है। यह एक रशियन मनो-वैज्ञानिक थे, इन्होंने सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर अधिक बल देते हुए बालक के मानसिक विकास पर कार्य किया है।

171. वाइगोत्स्की के अनुसार, समीपस्थ विकास का क्षेत्र है –

(a) अध्यापिका के द्वारा दिए गए सहयोग की सीमा निर्धारित करना।

(b) बच्चे के द्वारा स्वतंत्र रूप से किए जा सकने वाले तथा सहायता के साथ करने वाले कार्य के बीच अंतर।

(c) बच्चे को अपना सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए उपलब्ध कराए गए सहयोग की मात्रा एवं प्रकृति।

(d) बच्ची अपने आप क्या कर सकती है जिसका आकलन नहीं किया जा सकता है।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (b) वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चे के द्वारा स्वतंत्र रूप से किए जा सकने वाले तथा सहायता के साथ करने वाले कार्य के बीच अन्तर, समीपस्थ विकास का क्षेत्र है। अर्थात् बच्चा जो कर रहा है और जो करने की क्षमता रखता है के बीच क्षेत्र को समीपस्थ विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development) कहा जाता है।

172. जब वयस्क सहयोग से सामंजस्य कर लेते हैं, तो वे बच्चे के वर्तमान स्तर के प्रदर्शन को संभावित क्षमता के स्तर के प्रदर्शन की तरफ प्रगति क्रम को सुगम बनाते हैं, इसे कहा जाता है–

(a) समीपस्थ विकास (b) सहयोग देना

(c) सहभागी अधिगम (d) सहयोगात्मक अधिगम

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (a) जब वयस्क सहयोग से सामंजस्य कर लेते हैं, तो वे बच्चे के वर्तमान स्तर के प्रदर्शन को संभावित क्षमता के स्तर के प्रदर्शन की तरफ प्रगति क्रम को सुगम बनाते हैं, इसे समीपस्थ विकास कहा जाता है।

173. कोई 5 साल की लड़की एक टी-शर्ट को तह करते हुए अपने आप से बात करती है। लड़की द्वारा प्रदर्शित व्यवहार के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) जीन पियाजे और लेव वाइगोत्स्की इसकी व्याख्या बच्चे के विचारों की अहंकेंद्रित प्रकृति के रूप में करेंगे।

(b) जीन पियाजे इसे अहंकेंद्रित भाषा कहेगा और लेव वाइगोत्स्की इसकी व्याख्या बच्चे के द्वारा निजी भाषा से अपनी क्रियाओं को नियमित करने के प्रयासों के रूप में करेगा।

(c) जीन पियाजे इसकी व्याख्या सामाजिक अन्योन्यक्रिया के रूप में करेगा और लेव वाइगोत्स्की इसे खोजबीन मानेगा।

(d) जीन पियाजे और लेव वाइगोत्स्की इसकी व्याख्या बच्चे के द्वारा अपनी माँ के अनुकरण के रूप में करेंगे।

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (b) यदि कोई लड़की ऐसा व्यवहार करती है तो जीन पियाजे इसे अंहकेन्द्रित भाषा कहेगा और लेव वाइगोत्सकी इसकी व्याख्या बच्चे के द्वारा निजी भाषा से अपनी क्रियाओं को नियमित करने के प्रयासों के रूप में करेगा।

174. पियाजे ने विकास को नियंत्रित करने वाले जैविक कारकों को महत्व दिया, जबकि वाइगोत्स्की ने इसके महत्व का कारण बताया:

(a) चिंतन प्रक्रिया (b) सामाजिक संपर्क

(c) भौतिक कारक (d) पर्यावरणीय कारक

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : पियाजे ने विकास को नियंत्रित करने वाले जैविक कारकों को महत्व दिया, जबकि वाइगोत्सकी ने सामाजिक संपर्क को महत्वपूर्ण माना। जहाँ पियाजे के अनुसार बालकों का विकास चिंतन करने, उसकी खोज करने, उसके बारे में समझ बनाने तथा उनके बारे में सूचनाएँ एकत्रित करने की क्षमता, बालक के परिपक्वता स्तर तथा बालक के अनुभवों की पारस्परिक अंतःक्रिया द्वारा निर्धारित होती है। वहीं वाइगोत्सकी ने बालक के संज्ञानात्मक विकास में समाज एवं उसके सांस्कृतिक सम्बन्धों के बीच संवाद को एक महत्वपूर्ण आयाम घोषित किया।

175. किस प्रसिद्ध प्रोफेसर ने प्रतिपादित किया कि बच्चे सामाजिक संबंधों के कारण, आत्मकेन्द्रित स्थिति से समाज केन्द्रित की ओर बढ़ते हैं?

(a) जॉन डूई (b) लेव वाइगोत्सकी

(c) जीन पियाजे (d) हावर्ड गार्डनर

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : लेव वाइगोत्सकी ने प्रतिपादित किया कि बच्चे सामाजिक संबंधों के कारण, आत्मकेन्द्रित स्थिति से समाज–केन्द्रित की ओर बढ़ते है। वाइगोत्स्की का मानना है कि बच्चों का विकास सामाजिक अंतर्सम्बन्धों के कारण होता है।

176. वाइगोत्सकी के सामाजिक विकास सिद्धांत में तीन प्रमुख विषय हैं :

(a) संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता, सामाजिक सहभागिता और पारस्परिक निर्धारणवाद

(b) संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता वैध परिधीय भागीदारी, समीपस्थविकास का क्षेत्र

(c) पारस्परिक निर्धारणवाद, प्रोत्साहन और दंड, शास्त्रीय अनुकूलन (क्लासिकल कंडीशनिंग)

(d) सामाजिक सहभागिता, समीपस्थ विकास का क्षेत्र, अन्य अधिक ज्ञान संपन्न

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : वाइगोत्सकी के सामाजिक विकास सिद्धांत के प्रमुख विषय हैं– सामाजिक सहभागिता, भाषा और खेल, समीपस्थ विकास का क्षेत्र, अन्य अधिक ज्ञान सम्पन्न (more knowledgeble others) तथा ढाँचा निर्माण (Scaffolding)।

177. निकटस्थ विकास के क्षेत्र की अवधारणा का प्रस्ताव किसने रखा?

(a) अब्राहम मास्लो (b) लेव वाइगोत्सकी

(c) कार्ल रोजर्स (d) अल्बर्ट बण्डुरा

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : निकटस्थ विकास के क्षेत्र की अवधारणा का प्रस्ताव लेव वाइगोत्सकी ने रखा। वाइगोत्सकी के अनुसार बच्चा जो कर रहा है और जो करने की क्षमता रखता है के बीच के क्षेत्र को सम्भावित विकास का क्षेत्र या निकटस्थ विकास का क्षेत्र (Zone of Proximal Development) कहा जाता है।

EXAM POINTS

- जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की ..... में बच्चे आँख, कान एवं नाक से सोचते हैं– **संवेदी प्रेरक अवस्था**
- ..... भाग परम्परागत नैतिक स्तर से जुड़ा हुआ है– **अधिकार संरक्षण अभिमुखता**
- नैतिक दुविधा एवं नैतिक तर्कणा को किस मनोवैज्ञानिक ने प्रतिपादित किया है– **लॉरेन्स कोह्लबर्ग**
- लेव वाइगोत्स्की के सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धान्त के सन्दर्भ में कथन सही नहीं है– **वाइगोत्स्की एक फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक थे**
- सम्भाव्य/निकट विकास का क्षेत्र (ZPD) किस मनोवैज्ञानिक की देन है– **लेव वाइगोत्स्की**
- एक माध्यमिक स्कूल का शिक्षक विद्यालय में पढ़ाने के दौरान एक विद्यार्थी का विश्लेषण करने के बाद यह सोचता है कि उस विद्यार्थी में अमूर्त चिन्तन करने की क्षमता, भाषा-सम्बन्धी योग्यता तथा संप्रेषणशीलता का बेहतर विकास हो रहा है। विद्यार्थी के बारे में शिक्षक की यह सोच पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के किस अवस्था का सूचक है– **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था**
- पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था (जन्म से लगभग 2 वर्ष की आयु) के दौरान बच्चा ..... सबसे बेहतर सीखता है– **इन्द्रियों के प्रयोग द्वारा**
- पियाजे (Piaget) के अनुसार, कौन-सी अवस्था में बच्चा, अमूर्त संकल्पनाओं (Abstract Proposition) के विषय में तार्किक चिन्तन करना आरम्भ करता है– **औपचारिक-संक्रियात्मक अवस्था**
- पियाजे के अनुसार, बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नहीं है– **सामाजिक संचरण**
- फ्रायड पियाजे एवं अन्य मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व विकास की विभिन्न अवस्थाओं के सन्दर्भ में व्याख्या की है, परन्तु पियाजे ने– **विभिन्न अवस्थाओं को समझने के लिए संज्ञानात्मक बदलाव के बारे में कहा**
- पियाजे की औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था बालक की किस आयु अवधि तक मानी जाती है– **11 से 15 वर्ष**
- पियाजे के अनुसार मूर्त संक्रियाओं का स्तर किस अवधि में घटित होता है– **7 से 11 वर्ष**
- जब बच्चे की दादी उसे उसकी माँ की गोद से लेती है तो बच्चा रोने लगता है। बच्चे के रोने का कारण– **वियोग दुश्चिंता**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को विभिन्न अधिगम शैलियों को संतुष्ट करने के लिए वैविध्यपूर्ण कार्यों का उपयोग करती है। वह प्रभावित है– **गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धान्त**
- कोह्लबर्ग के अनुसार, शिक्षक बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास कर सकता है– **नैतिक मुद्दों पर आधारित चर्चाओं में शामिल करके**
- बहुबुद्धि सिद्धान्त निहितार्थ देता है सिवाय– **बुद्धि प्रकरण संक्रियाओं का एक विशिष्ट समुच्चय है जिसका उपयोग एक व्यक्ति द्वारा समस्या समाधान के लिए किया जाता है।**
- कोह्लबर्ग के अनुसार सही और गलत के प्रश्न के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिन्तन प्रक्रिया को कहा जाता है– **नैतिक तर्कणा**
- "एक महिला ने भोजन प्राप्त करने के लिए अपने बच्चे को बेच दिया।" इस खबर को ..... के आधार पर अच्छी तरह समझा जा सकता है– **पदानुक्रमिक आवश्यकताओं का सिद्धान्त**
- मान लीजिए आप विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष हैं, आप अपने अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले विद्यालयों की शिक्षा की सम्पूर्ण गुणवत्ता को सुधारने के लिए क्या योजना बनायेंगे? इस प्रकार का प्रश्न ..... का एक उदाहरण है– **उच्चस्तरीय अपसारी चिंतन**
- सीता ने हाथ से दाल और चावल खाना सीख लिया है। जब उसे दाल और चावल दिये जाते हैं, तो वह दाल चावल मिलाकर खाने लगती है। उसने चीजों को करने के लिए अपने स्कीमों में दाल और चावल खाने को ..... – **अनुकूलित कर लिया है।**
- एक शिक्षिका दो एक समान गिलासों को प्रदर्शित करती है जो जूस की समान मात्रा से भरे हुए हैं। वह उन्हें दो भिन्न-भिन्न गिलासों में खाली करती है, जिनमें से एक लम्बा और दूसरा चौड़ा है। वह बच्चों को उस गिलास की पहचान करने के लिए कहती है जिसमें जूस ज्यादा है। शिक्षका के बच्चों को ..... कठिनाई है– **पलटावी में**
- करनैल सिंह कानूनी कार्यवाही तथा खर्चे के बावजूद आयकर नहीं देते। वे सोचते हैं कि वे एक भ्रष्ट सरकार को समर्थन नहीं दे सकते जो अनावश्यक बाँधों के निर्माण पर लाखों रुपए खर्च करती है। वे सम्भवतः कोह्लबर्ग के नैतिक विकास की किस अवस्था में है– **पश्च परम्परागत**
- कोह्लबर्ग का विकास सिद्धान्त सम्बन्धित है– **नैतिक विकास**
- जीन पियाजे की संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाओं के अनुसार जिसे पूर्व प्रत्यात्मक काल जाना जाता है, सम्बन्धित है– **पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था से**
- वाइगोट्स्की के सामाजिक - सांस्कृतिक सिद्धान्त पर आधारित है– **पारस्परिक शिक्षण**
- कौन-सा पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त से नहीं निकाला जा सकता– **शाब्दिक शिक्षण की आवश्यकता**
- कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के चरणों का लक्षण है– **सभी संस्कृतियों से सम्बद्ध चरणों की सार्वभौम श्रृंखला**
- कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से सम्बद्ध जटिल परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते हैं– **सामाजिक संरचनात्मक**
- पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त की मूर्त संक्रियात्मक अवस्था किन योग्यता द्वारा लक्षित नहीं होती है– **मानसिक द्वन्द्व**
- कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त के अनुसार किन अवस्था में लोगों की आशा तथा इच्छाएँ पूरी करने के सन्दर्भ में सही या गलत का निर्णय लेता है– **अवस्था–2**
- कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धान्त एवं उसकी विभिन्न स्तरों के अनुसार कौन-सा सोपान उनके द्वारा प्रतिपादित नहीं है **वैयक्तिकता व विनिमय अभिमुखता**
- बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य स्थान है– **अभिभावक**

- पियाजे के अनुसार 2 से 7 वर्ष के बीच का एक बच्चा संज्ञानात्मक विकास की ..... अवस्था में है– **पूर्व संक्रियात्मक**
- अमूर्त वैज्ञानिक चिन्तन के लिए क्षमता का विकास अवस्थाओं में से किसकी एक विशेषता है– **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था**
- मानसिक संरचनाएँ जो चिन्तन के निर्माण के प्रखण्ड हैं, इसके लिए पियाजे ने किस शब्द पद का प्रयोग किया है– **स्कीमा (अवधारणाएँ)**
- वाइगोट्स्की के अनुसार बच्चे स्वयं से क्यों बोलते हैं– **बच्चे अपने कार्य को दिशा देने के लिए बोलते हैं**
- जीन पियाजे के द्वारा 'संरक्षण' के प्रत्यय से तात्पर्य है कि– **कुछ भौतिक गुणधर्म वही रहते हैं चाहे बाहरी आकृतियाँ बदल जाएँ**
- कोह्लबर्ग के अनुसार किस अवस्था में नैतिकता बाह्य कारकों द्वारा निर्धारित होती है– **पूर्व पारम्परिक अवस्था**
- पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा 'वस्तु स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है– **संवेदी प्रेरक चरण पर**
- बच्चों के बारे में किस कथन से वाइगोट्स्की सहमत होते हैं– **बच्चे समवयस्कों और वयस्कों के साथ सामाजिक अन्तःक्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं**
- बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को सबसे अच्छे तरीके से कहाँ परिभाषित किया जा सकता है– **विद्यालय एवं कक्षा में**
- किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, ''सीखने का मतलब ज्ञान निर्माण करना है''– **पियाजे**
- ''घटना और वस्तुओं के बारे में एक बच्चा तार्किक रूप से सोच सकता है'' पियाजे के चरणों के सम्बन्ध में सही कथन है– **मूर्त संचालन प्रक्रिया**
- वाइगोट्स्की बच्चों के सीखने में किस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं– **सामाजिक**
- पियाजे मुख्यतः किस क्षेत्र में योगदान के लिए जाना जाता है– **ज्ञानात्मक विकास**
- बच्चों के व्यवहार को समझने के लिए विद्यार्थियों के घर के वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है तथा इससे प्राप्त सूचना को प्रभावशाली शिक्षाशास्त्र के निर्माण से जोड़ा जा सकता है। यह तथ्य अधिगम के किस सिद्धान्त से सम्बद्ध है– **सामाजिक-रचनावादी**
- संज्ञानात्मक विकास किसके द्वारा होता है– **एक समृद्ध और विविधापूर्ण वातावरण द्वारा**
- रिया, कक्षा-पिकनिक तय करने हेतु ऋषभ से सहमत नहीं हैं। वह सोचती है कि बहुमत को अनुकूल बनाने के लिए नियमों का संशोधन किया जा सकता है। यह सहपाठी विरोध, पियाजे के अनुसार, किससे सम्बन्धित है– **सहयोग की नैतिकता**
- एक वर्ष तक के शिशु जब आँख, कान व हाथों से सोचते हैं, तो कौन-सा स्तर शामिल होता है– **इन्द्रियजनित गामक स्तर**
- वाइगोट्स्की के सिद्धान्त में, विकास के किस पहलू की उपेक्षा होती है– **नैतिक**
- यह तथ्य कि बच्चों को सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक स्तर की आवश्यकता होती है, किस व्यक्ति से सम्बन्धित है– **लेव वाइगोट्स्की**
- आप एक शिक्षिका/शिक्षक के रूप में रैंगिंग और धमकाने के सख्त विरोधी हैं तथा इस सन्दर्भ में विद्यालय में पोस्टर लगवाते हैं तथा समिति बनवाते हैं आपसे जुड़ने वाले किशोर, जो इस विचार के दृढ़ विश्वासी हैं वे किस स्तर पर होंगे– **उत्तर पारम्परिक**
- वाइगोट्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के अनुसार– **संस्कृति और भाषा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं**
- पियाजे के संज्ञानात्मक सिद्धान्त की अवस्थाओं की क्रम है– **संवेदनात्मक गामक काल, पूर्व संक्रियात्मक काल, मूर्त संक्रियात्मक काल, औपचारिक संवेदनात्मक काल**
- लॉरेन्स कोह्लबर्ग के सिद्धान्त में कौन-सा स्तर नैतिकता की अनुपस्थिति को सही अर्थ में सूचित करता है– **स्तर I**
- पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार, कौन सा कारक व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित नहीं करेगा– **भाषा**
- वाइगोट्स्की तथा पियाजे के परिप्रेक्ष्यों में एक प्रमुख विभिन्नता है– **भाषा एवं चिन्तन के बारे में उनके दृष्टिकोण**
- कोह्लबर्ग के सिद्धान्त की एक प्रमुख आलोचना है– **कोह्लबर्ग ने पुरुषों एवं महिलाओं की नैतिक, तार्किकता में सांस्कृतिक विभिन्नताओं को महत्व नहीं दिया**
- पियाजे अनुमोदन करते हैं कि पूर्व-संक्रियात्मक बच्चे याद रखने में असमर्थ होते हैं। उन्होंने किसको इस असमर्थता के लिए जिम्मेदार ठहराया है– **विचार की अनुत्क्रमणीयता (पलट न सके)**
- वाइगोट्स्की के अनुसार, समीपस्थ विकास का क्षेत्र है– **बच्चे के द्वारा स्वतन्त्र रूप से किए जा सकने वाले तथा सहायता के साथ करने वाले कार्य के बीच अन्तर**
- पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार, बच्चे किसके द्वारा सीखते हैं– **अनुकूलन की प्रक्रियाएँ**
- कोह्लबर्ग के सिद्धान्त के पूर्व-परम्परागत स्तर के अनुसार, कोई नैतिक निर्णय लेते समय एक व्यक्ति किस तरफ प्रवृत्त होगा– **अन्तर्निहित सम्भावित दण्ड**
- पियाजे के अनुसार, बच्चों का चिन्तन वयस्कों से ..... में भिन्न होता है। बजाय ..... के– **प्रकार, मात्रा**
- वाइगोट्स्की के अनुसार, सीखने को पृथक् नहीं किया जा सकता– **उसके सामाजिक सन्दर्भ से**
- वाइगोट्स्की की संस्तुति के अनुसार, बच्चों की 'व्यक्तिगत वाक्' की संकल्पना– **स्पष्ट करती है कि बच्चे अपने ही कार्यों के निर्देशन के लिए भाषा का उपयोग करते हैं**
- पियाजे के अनुसार, विकास को प्रभावित करने में किसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है– **भौतिक विश्व के साथ अनुभव**
- जीन पियाजे के अनुसार प्रारूप (स्कीमा) निर्माण वर्तमान योजनाओं के अनुरूप बनाने हेतु नवीन तकनीकी में संशोधन और नवीन जानकारी के आधार पर पुरानी योजनाओं के संशोधन के परिणाम के रूप में घटित होता है। इन दो प्रक्रियाओं को जाना जाता है– **समावेशन और समायोजन के रूप में**
- जीन पियाजे के अनुसार अधिगम के लिए आवश्यक है– **शिक्षार्थी के द्वारा पर्यावरण की सक्रिय खोज**

07.

बाल केन्द्रित एवं प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा

बाल–केन्द्रित/प्रगतिशील शिक्षा का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. एकीकृत छात्र-केन्द्रित अधिगम के लिए पाठ्यक्रम में निम्नलिखित में से क्या लाभकारी नहीं है?

(a) छात्र का अभिप्रेरण विकास
(b) सहकर्मी संचार का विकास
(c) छात्र-शिक्षक सम्बन्ध का निर्माण
(d) खोज/सक्रिय अधिगम का ह्रास

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (d) एकीकृत छात्र केन्द्रित अधिगम प्रक्रिया के लिए पाठ्यक्रम में खोज या सक्रियता अधिगम प्रक्रिया में रूकावट नहीं डालता बल्कि इसे पुष्ट ही करता है।

2. एक प्रारंभिक कक्षाकक्ष में एक बच्ची अपने साथ जो अनुभव लाती है–

(a) उसकी उपेक्षा करनी चाहिए।
(b) उन पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
(c) उन्हें शामिल कर उनका संचय करना चाहिए।
(d) /उन्हें अस्वीकार करना चाहिए।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) एक प्रारम्भिक कक्षाकक्ष में एक बच्ची अपने साथ जो अनुभव लाती है उन्हें शामिल कर उनका संचय करना चाहिए। बच्चे अपने साथ बहुत कुछ लेकर विद्यालय आते हैं– अपनी भाषा, अपने अनुभव और दुनिया को देखने का अपना नजरिया आदि। बच्चे घर परिवार एवं परिवेश से जिन अनुभवों को लेकर विद्यालय आते हैं, वे बहुत समृद्ध होते हैं अत: इन अनुभवों का इस्तेमाल उनके ज्ञान के निर्माण में करना चाहिए।

3. कृतिका अक्सर घर में ज्यादा बात नहीं करती, लेकिन विद्यालय में वह काफी बात करती है। यह दर्शाता है कि

(a) विद्यालय हर समय बच्चों को खूब बात करने का अवसर देता है
(b) शिक्षकों की यह माँग होती है कि बच्चे विद्यालय में खूब बात करें
(c) कृतिका को अपना घर बिल्कुल पसन्द नहीं है
(d) उसके विचारों को विद्यालय में मान्यता मिलती है

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2011

Ans : (d) कृतिका अक्सर घर में ज्यादा बात नहीं करती, लेकिन विद्यालय में वह काफी बात करती है। यह दर्शाता है कि उसके विचारों को विद्यालय में मान्यता मिलती है जबकि घर में लिंग रूढ़िबद्धता के कारण उसके विचारों, भावनाओं आदि को नजरअंदाज किया जाता है।

4. प्रगतिशील शिक्षा में बच्चों को किस तरह से देखा जाता है?

(a) निष्क्रिय अनुकारकों के रूप में
(b) सक्रिय अन्वेषकों के रूप में
(c) खाली स्लेटों के रूप में
(d) छोटे वयस्कों के रूप में

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (b) प्रगतिशील शिक्षा में बच्चों को सक्रिय अन्वेषकों के रूप में देखा जाता है। प्रगतिशील शिक्षा में यह माना जाता है कि बच्चे अपने ज्ञान का निर्माता स्वयं होते हैं, वे निष्क्रिय जानकारी प्राप्तकर्ता नहीं हैं बल्कि सक्रिय रूप से अपने अनुभवों और पूर्व ज्ञान से अर्थ का निर्माण करते हैं। उन्हें खोजकर्ता या आविष्कारक के स्थान पर रखा जाता है तथा उनके समक्ष समस्या को प्रस्तुत किया जाता है फिर उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि निर्देशन के अनुसार अवलोकन और प्रयोग आयोजित करें। निष्कर्ष विद्यार्थियों द्वारा निकाला जाता है और इस प्रकार उनको तार्किक कौशल का परिचय स्वयं के अवलोकन और प्रयोग द्वारा होता है। प्रगतिशील शिक्षा में शिक्षक मात्र एक सुगमकर्ता, सहायक और मार्गदर्शक की भूमिका में होता है।

5. निम्नलिखित में से कौन सा प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा के बारे में प्रमुख है?

(a) प्रत्येक बच्चे की क्षमता एवं संभावना में विश्वास करना।
(b) मानक निर्देश एवं मूल्यांकन
(c) बाह्य प्रेरणा तथा एकरूप मूल्यांकन मानदंड
(d) पाठ्य पुस्तक केन्द्रित अधिगम

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (a) : प्रगतिशील शिक्षा के संदर्भ में प्रत्येक बच्चे की क्षमता एवं संभावना में विश्वास करना चाहिए। प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा के विकास में अमेरिका के जॉन डीवी का विशेष योगदान रहा है। प्रगतिशील शिक्षा के अनुसार शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य बालक की शक्तियों का विकास करना है। प्रगतिशील शिक्षा के संदर्भ में बालक के वैयक्तिक भिन्नता को स्वीकार करते हुए एक ऐसे शिक्षण व्यवहार का निर्माण करना जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी अपनी योग्यता, क्षमता एवं आवश्यकतानुसार अपना विकास कर सकें।

6. छात्र केन्द्रित शिक्षाशास्त्र की क्या विशेषता है?

(a) यंत्रवत् याद करना
(b) योग्यता के आधार पर विद्यार्थियों को नामांकित करना तथा वर्गीकरण करना

(c) केवल पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर होना
(d) बच्चों के अनुभवों को प्रमुखता देना

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) छात्र केन्द्रित शिक्षाशास्त्र में बच्चों के अनुभवों को प्रमुखता दी जाती है। बाल केन्द्रित शिक्षा में बालकों की रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं, मनोवृत्तियों, पूर्व अनुभवों, विचारों आदि को महत्त्व दिया जाता है तथा इसी के अनुसार शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रमों और अधिगम परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है जिसमें छात्र सक्रिय सहभागिता के द्वारा अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं।

7. शिक्षा को बाल-केन्द्रित शिक्षा माना जाता है, जब

(a) बालक के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होता है
(b) बालक की माँग रुचि व अभिवृत्ति की प्राथमिकता होती है
(c) शिक्षक के स्वयं के महत्व को ध्यान में रखा जाता है
(d) पाठ्यक्रम को महत्व दिया जाता है

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) बाल केन्द्रित शिक्षा का तात्पर्य बालक को केन्द्र मानकर शिक्षा देना है जिसमें बालक के अभिवृत्ति एवं रुचियों को प्राथमिकता दी जाती है।

8. 'बाल–केन्द्रित' शिक्षाशास्त्र का अर्थ है–

(a) बच्चों के अनुभवों और उनकी आवाज को प्रमुखता देना।
(b) शिक्षक द्वारा बच्चों को आदेश देना कि क्या किया जाना चाहिए।
(c) निर्धारित सूचना का अनुसरण करने में बच्चों को सक्षम बनाना।
(d) कक्षा में सारी बातें सीखने के लिए शिक्षक का आगे–आगे होना।

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2016

Ans : (a) बालक के मनोविज्ञान को समझते हुए शिक्षण की व्यवस्था करना तथा उसकी अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करना बाल केन्द्रित शिक्षा कहलाता है। अर्थात् बालक की रूचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करना ही बाल केन्द्रित शिक्षा कहलाता है। इस प्रकार की शिक्षा में बच्चों के अनुभवों और उनकी आवाज को प्रमुखता दी जाती है।

9. बालकेन्द्रित शिक्षाशास्त्र का अर्थ है–

(a) बच्चों को नैतिक शिक्षा देना
(b) बच्चों को शिक्षक का अनुमान और अनुकरण करने के लिए
(c) बच्चों को अभिव्यक्ति और उनकी सक्रिय भागीदार को महत्त्व देना
(d) बच्चों को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता देना

DSSSB PRT
CTET 2016 (I-V)

Ans : (c) बाल केन्द्रित शिक्षा का अर्थ है बालक के मनोविज्ञान को समझते हुए शिक्षण की व्यवस्था करना तथा उसकी अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करना। अर्थात् बालक की रूचियों, प्रवृत्तियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करना ही बाल केन्द्रित शिक्षा कहलाता है। इसमें बालक की सक्रिय भागीदारी को महत्त्व दिया जाता है।

10. ''यदि आप बच्चों को सिखाना चाहते हो, तो बच्चों से सीखिए'' यह इशारा करता है–

(a) अध्यापक केन्द्रित शिक्षा की ओर
(b) बाल केन्द्रित शिक्षा की ओर
(c) मूल्यांकन केन्द्रित शिक्षा की ओर
(d) परीक्षा केन्द्रित शिक्षा की ओर

DSSSB PRT

Ans : (b) ''यदि आप बच्चों को सिखाना चाहते हो, तो बच्चों से सीखिए'' यह बाल केन्द्रित शिक्षा की ओर इशारा करता है। बाल केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत बालक के व्यवहार, आवश्यकता, रुचि मनोवृत्ति आदि महत्त्वपूर्ण होते हैं। यदि उनके व्यवहार में शिक्षण के माध्यम से परिवर्तन लाना है तो उनके व्यवहार का अध्ययन करना भी आवश्यक है।

11. सृजनवाद में–

(a) बच्चे सीखने की प्रक्रिया में निष्क्रिय रूप से प्रतिभाग करते हैं।
(b) शिक्षा शिक्षक केन्द्रित होती है।
(c) शिक्षा बाल केन्द्रित होती है।
(d) शिक्षा व्यवहारवादी होती है।

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (c) सृजनवाद में शिक्षा बालकेन्द्रित होती है। इस प्रकार की शिक्षा में बालक के स्वतंत्र चिंतन के लिए उपयुक्त अधिगम परिस्थिति का निर्माण किया जाता है जिसमें बालक स्वतंत्र रूप से कार्य या चिंतन करके नवीन विचार या वस्तु का निर्माण करता है।

12. एक बाल–केन्द्रित कक्षा में, बच्चे सामान्यत: सीखते हैं

(a) वैयक्तिक और सामूहिक, दोनों रूपों में
(b) मुख्य रूप से शिक्षक से
(c) वैयक्तिक रूप से
(d) समूहों में

DSSSB PRT
CTET 2012 (VI-VIII)

Ans : (a) एक बालकेन्द्रित कक्षा में बच्चे सामान्यत: वैयक्तिक और सामूहिक दोनों रूपों में सीखते हैं। बाल–केन्द्रित कक्षा में शिक्षक बालकों के वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करता है।

13. निम्नलिखित में से कौन–सी प्रगतिशील शिक्षा की विशेषता है?

(a) समय–सारणी और बैठने की व्यवस्था में लचीलापन
(b) केवल प्रस्तावित पाठ्य–पुस्तकों पर आधारित अनुदेश
(c) परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करने पर बल
(d) बार–बार ली जाने वाली परीक्षाएँ

DSSSB PRT
CTET 2012 (I-V)

Ans : (a) प्रगतिशील शिक्षा की निम्न विशेषताएँ होती हैं–
(1) समय सारणी और बैठने की व्यवस्था में लचीलापन
(2) बाल–केन्द्रित शिक्षा
(3) समावेशी शिक्षा
(4) सौहार्द्रपूर्ण सामाजिक अंत:प्रक्रिया
(5) शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षण

14. प्रगतिवादी शिक्षा

(a) अनुबन्धन और पुनर्बलन के सिद्धांतों पर आधारित है

(b) पाठ्य–पुस्तकों पर आधारित है, क्योंकि वे ज्ञान के एकमात्र वैध स्रोत हैं

(c) इस मत पर विश्वास करती है कि शिक्षक को अपने उपागम में दृढ़ रहना है और वर्तमान समय में बिना दण्ड का प्रयोग किए बच्चों को पढ़ाया नहीं जा सकता

(d) समस्या–समाधान और आलोचनात्मक चिन्तन पर अधिक बल देती है

DSSSB PRT
CTET 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) प्रगतिवादी शिक्षा क्रियाशीलता के सिद्धांत पर आधारित है। इस प्रकार की शिक्षा बच्चों में समस्या-समाधान और आलोचनात्मक चिंतन पर अधिक बल देती है क्योंकि इसमें बच्चे सक्रिय रूप से क्रियाशील होकर अधिगम प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

15. बालक केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत क्या सम्मिलित नहीं है?

(a) गृहकार्य प्रदान करना

(b) बालक को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना

(c) बाल के अनुभव को प्राथमिकता प्रदान करना

(d) बालक की सृजनात्मकता को बढ़ावा देना

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (a) बालक केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत, बालक को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना, बालक के अनुभव को प्राथमिकता प्रदान करना, बालक की सृजनात्मकता को बढ़ावा देना, बालक के वैयक्तिक भिन्नता को मान्यता देना आदि को शामिल किया जा सकता है जबकि गृहकार्य प्रदान करना शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक अंग तो है किन्तु यह बालक केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत नहीं आता है।

16. प्रगतिशील शिक्षा के सन्दर्भ में 'समान शैक्षिक अवसर' से अभिप्राय है कि सभी छात्र

(a) बिना किसी भेद के समान पद्धतियों व सामग्रियों से शिक्षा प्राप्त करें

(b) ऐसी शिक्षा पाएं जो उनके लिए अनुकूलतम हो तथा उनके भविष्य के कार्यों में सहायक हो।

(c) किसी भी जाति, पंथ, रंग, क्षेत्र व धर्म के होते हुए भी समान शिक्षा प्राप्त करें।

(d) समान शिक्षा पाने के बाद अपनी क्षमताओं को सिद्ध कर सकें।

DSSSB PRT
CTET 2014 (VI-VIII)

Ans : (b) प्रगतिशील शिक्षा के सन्दर्भ में समान शैक्षिक अवसर से अभिप्राय है कि सभी छात्र ऐसी शिक्षा पायें जो उनके लिए अनुकूलतम हो तथा उनके भविष्य के कार्यों में सहायक हो।

17. प्रगतिशील शिक्षा में अपरिहार्य है कि कक्षा-कक्ष

(a) लोकतांत्रिक होता है और समझने के लिए बच्चों को पर्याप्त स्थान दिया गया होता है

(b) शिक्षक के पूर्ण नियंत्रण में होता है जिसमें वह अधिनायकतावादी होता है

(c) सत्तावादी होता है, जहाँ शिक्षक आदेश देता है और शिक्षार्थी चुपचाप अनुसरण करते हैं

(d) सबके लिए मुक्त होता है जिसमें शिक्षक अनुपस्थित होता है

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) प्रगतिशील शिक्षा वह होती है जिसमें बालक स्वतंत्रता पूर्वक अबाध रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं तथा वहां का वातावरण भी प्रजातांत्रित होता है। अत: प्रगतिशील शिक्षा में अपरिहार्य होता है कि कक्षा कक्ष वातावरण लोकतांत्रिक हो समझने के लिए बच्चों को पर्याप्त समय एवं स्थान दिया गया हो।

18. निम्नलिखित में से कौन सी स्थिति बालकेंद्रित कक्षा-कक्ष को प्रदर्शित कर रही है ?

(a) एक कक्षा जिसमें शिक्षिका नोट लिखा देती है और शिक्षार्थियों से उन्हें याद करने को कहा जाता है

(b) एक कक्षा जिसमें पाठ्य-पुस्तक एक मात्र संसाधन होता हैं जिसका संदर्भ शिक्षिका देती है।

(c) एक कक्षा जिसमें शिक्षार्थी समूहों में बैठे है और शिक्षिका बारी-बारी से प्रत्येक समूह में जा रही है।

(d) एक कक्षा जिसमें शिक्षार्थियों का व्यवहार शिक्षिका द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार और दंड से संचालित होता है

CTET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) बालकेन्द्रित शिक्षा के अन्तर्गत कक्षा कक्ष का वातावरण तथा पाठ्यक्रम स्वरूप बालक के अनुकूल तैयार किया जाता है ताकि बालक सहज व सरल ढंग से सीख सके। एक कक्षा जिसमें शिक्षार्थी समूहों में बैठे है और शिक्षिका बारी-बारी से प्रत्येक समूह में जा रही है, इससे पता चलता है कि शिक्षा बालक केन्द्रित है न कि शिक्षिका या पाठ्यक्रम केन्द्रित।

19. प्राथमिक विद्यालय के कक्षा-कक्ष के संदर्भ में सक्रियबद्धता का क्या अर्थ है ?

(a) याद करना, प्रत्यास्मरण और सुनाना

(b) शिक्षक का अनुकरण और नकल करना

(c) जाँच-पड़ताल करना, प्रश्न पूछना और वाद-विवाद

(d) शिक्षक द्वारा दिये गये उत्तरों को नकल करना

UPTET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (c) प्राथमिक विद्यालय के कक्षा-कक्ष के सन्दर्भ में सक्रियबद्धता का अर्थ है कि शिक्षक द्वारा किये गये कार्यों में क्रमबद्धता हो जिससे कार्यों की तारतम्यता बनी रहती है तथा अधिगम कार्य सुगमता पूर्वक होता रहे। सक्रियबद्धता का क्रम है- जाँच पड़ताल करना - प्रश्न पूछना - वाद-विवाद

20. बाल केन्द्रित शिक्षा में शामिल है–

(a) बच्चों के लिए हस्तपरक गतिविधियाँ

(b) बच्चों का एक कोने में बैठना

(c) प्रतिबंधित परिवेश में अधिगम

(d) वे गतिविधियाँ जिनमें खेल शामिल नहीं होते

CTET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (a) बालक की रूचियों, प्रवृत्तियों तथा क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करना ही बाल केन्द्रित शिक्षा कहलाता है। इसके निम्नलिखित प्रमुख सिद्धान्त है–

- बालकों को क्रियाशील रखकर शिक्षा प्रदान करना
- बालक की शिक्षा उद्देश्यपरक हो
- बालक की योग्यता व रूचि के अनुसार विषय-वस्तु का चयन
- रचनात्मक कार्य जैसे हस्तकला आदि के द्वारा शिक्षण
- पाठ्यक्रम को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटकर शिक्षण

21. प्रगतिशील शिक्षा निम्नलिखित में से किस कथन से सम्बन्धित है?

(a) शिक्षक सूचना और प्राधिकार के प्रवर्तक होते हैं।
(b) ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव और सहयोग से उत्पन्न होता है।
(c) अधिगम तथ्यों के एकत्रीकरण और कौशल में प्रवीणता के साथ सीधे मार्ग पर चलता है।
(d) परीक्षा मानदंड-संदर्भित और बाह्य है।

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (b) प्रगतिशील शिक्षा ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव और सहयोग से उत्पन्न होता है। साथ ही इससे हुआ अधिगम लंबे समय तक याद रहता है। यह शिक्षा करके सीखने के सिद्धांत पर आधारित है। इसलिए सीखा हुआ अधिक समय तक या हमेशा याद रहता है।

22. शिक्षण से अधिगम पर बल देने वाला परिवर्तन हो सकता है–

(a) बाल-केन्द्रित शिक्षा-पद्धति अपनाकर
(b) रटने को प्रोत्साहित करके
(c) अग्र शिक्षण की तकनीक अपनाकर
(d) परीक्षा परिणामों पर केन्द्रित होकर

CTET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (a) बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धति अपनाकर शिक्षण से अधिगम पर बल देने वाला परिवर्तन हो सकता है।

23. निम्नलिखित में से कौन–सा एक बाल–केन्द्रित अधिगम का अभ्यास नहीं है?

(a) ज्ञान और कौशल अर्जित करने में छात्र को अधिक सक्रिय बनाना।
(b) छात्र को इस बारे में अधिक जानकारी देना कि वे क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं।
(c) शिक्षक के निर्देश और निर्णयों के तहत काम करना।
(d) पारस्परिक विचार–विमर्श पर ध्यान केंद्रित करना, जैसे कि ट्यूटोरियल और अन्य चर्चा समूहों का उपयोग करना।

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) शिक्षक के निर्देश और निर्णयों के तहत काम करना, बाल–केन्द्रित अधिगम का अभ्यास नहीं है, बल्कि यह शिक्षक केन्द्रित अधिगम का अभ्यास है। बाल केन्द्रित अधिगम में सभी अधिगम गतिविधियाँ और व्यूह रचनाएँ व्यक्तिगत विद्यार्थी की आवश्यकताओं, रुचियों, मनोवृत्तियों, योग्यता एवं क्षमता के अनुसार होती है। इसमें शिक्षक मात्र एक सुविधा प्रदाता के रूप में होता है तथा विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ परस्पर क्रिया से सीखते हैं।

24. प्रगतिशील शिक्षा क्या है?

(a) इसमें मानकीकृत परीक्षण होता है
(b) इसमें कार्य आधारित अधिगम (लर्निंग बाई डूइंग) होता है
(c) इसमें डेटा-आधारित शिक्षा होती है
(d) इसमें मानकों पर आधारित पाठ्यक्रम होता है।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : प्रगतिशील शिक्षा पारम्परिक शिक्षा की प्रतिक्रिया का परिणाम है। इस शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बालक की शक्तियों का सर्वांगीण विकास है। इसमें क्रिया आधारित अधिगम (Learning by doing) पर विशेष बल दिया जाता है। शिक्षा के इस प्रकार में बालक स्वयं क्रियाशील होकर स्वयं अनुभव द्वारा सीखने का प्रयास करता है।

25. अनुभवात्मक शिक्षा क्या है?

(a) एक पाठ्यक्रम जिसमें अच्छी तरह से छात्रों के अधिगम का मार्ग परिभाषित है।
(b) एक शैक्षिक दर्शन इस विचार पर आधारित है कि अधिगम, अनुभव के माध्यम से होता है।
(c) यह अनुभवों के माध्यम से अधिगम है।
(d) निरंतर अभ्यास से अधिगम।

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : अनुभवात्मक शिक्षा एक ऐसा शैक्षिक दर्शन है जो इस विचार पर आधारित है कि अधिगम, अनुभव के माध्यम से होता है। अनुभवात्मक शिक्षा बालकेन्द्रित शिक्षा को संपोषित करता है। अनुभवात्मक शिक्षा ऐसे शिक्षण वातावरण के निर्माण पर बल देता है जिसमें छात्र स्वयं सक्रिय होकर अधिगम अनुभव प्राप्त कर सकें।

26. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रगतिशील शिक्षा की विशेषताएं हैं?

(a) निर्देश केवल निर्धारित पाठ्य पुस्तकों पर आधारित होते हैं
(b) उन विषयों पर नम्यता (फ्लेक्सिबिलिटी) जो छात्र सीखना चाहते हैं।
(c) जीवन पर्यन्त अधिगम और सामाजिक कौशल पर जोर देना
(d) परीक्षाओं में अच्छे अंक लाने पर जोर देना

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : प्रगतिशील शिक्षा एक शैक्षणिक आंदोलन है जो 19वीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ था। अधिकांश प्रगतिशील शिक्षा कार्यक्रमों में निम्नलिखित गुण पाये जाते हैं–

- जीवन पर्यंत शिक्षा तथा सामाजिक कौशलों पर बल
- करके सीखने पर बल
- समस्या समाधान तथा आलोचनात्मक सोच पर बल
- सहकारी और सहयोगात्मक शिक्षण परियोजनाएँ
- व्यक्तिगत शिक्षा पर बल
- शिक्षा में उद्यमिता का एकीकरण

बाल–केन्द्रित/प्रगतिशील शिक्षा के उद्देश्य

27. निम्नलिखित में से कौन सा कारक कक्षा में सार्थक अधिगम का पक्ष लेता है?

(a) बच्चों को पढ़ने के लिए अभिप्रेरित करने हेतु पुरस्कारों को बढ़ावा देना।
(b) निर्देश के लिए केवल व्याख्यान विधि को अपनाना।
(c) विषय वस्तु तथा बच्चों के संपूर्ण कुशलक्षेम एवं अधिगम के प्रति सच्चा सरोकार रखना।
(d) बच्चों को पढ़ने/सीखने के लिए अभिप्रेरित करने हेतु परीक्षणों की संख्या को बढ़ाना।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) विषय वस्तु तथा बच्चों के संपूर्ण कुशलक्षेम एवं अधिगम के प्रति सच्चा सरोकार रखना, सार्थक अधिगम का पक्ष लेता है। दूसरे शब्दों में, वही विषयवस्तु सार्थक अधिगम को बढ़ावा देता है, जो बच्चों की रुचियों, मनोवृत्तियों, योग्यताओं, क्षमतओं, आवश्यकताओं आदि के अनुकूल हो तथा उनके सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करे।

28. शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए

(a) विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना
(b) विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता का विकास करना
(c) विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार करना
(d) व्यावहारिक जीवन के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) शिक्षा का मूल उद्देश्य जीवन जीने की कला सीखाना है। जिसमें विद्यार्थी व्यवहारिक जीवन के लिए तैयार होता है।

29. सभी अधिगम सामान्यत: कुल मिलाकर सफल होते है जब ..... किया जाता है।

(a) संसाधन संपन्न
(b) शिक्षार्थियों द्वारा स्व-निर्देशित
(c) प्रौद्योगिकी का नेतृत्व
(d) शिक्षक का नेतृत्व

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : सभी अधिगम सामान्यत: कुल मिलाकर तभी सफल होते हैं जब यह शिक्षार्थियों द्वारा स्व-निर्देर्शित किया जाता है। स्व-निर्देशन विद्यार्थियों को अपनी दक्षता विकसित करने के योग्य बनाती है। स्व-निर्देशन द्वारा छात्र अधिक कुशलतापूर्वक अधिगम कर सकते हैं तथा उनका ज्ञान भी अपेक्षाकृत रचनात्मक और स्थायी होता है।

बाल–केन्द्रित शिक्षा के अंतर्गत पाठ्यक्रम का स्वरूप एवं शिक्षण क्रियाकलाप

30. वह विधियाँ जिनके प्रयोग में विद्यार्थियों की स्व पहल व प्रयास शामिल हैं, निम्न में से किसका उदाहरण हैं?

(a) निगमनात्मक विधि (b) अधिगमकर्ता केंद्रित विधि
(c) परम्परागत विधि (d) अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (b) वह विधियाँ जिनके प्रयोग में विद्यार्थियों की स्व पहल व प्रयास शामिल होते हैं उसे अधिगमकर्ता केन्द्रित विधि कहते हैं। अधिगमकर्ता केन्द्रित शिक्षण उपागम की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- इस उपागम की सभी अधिगम विधियाँ और व्यूह रचना, व्यक्तिगत विद्यार्थी की आवश्यकताओं को आधार बनाती हैं।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक एक सुविधा प्रदान करने वाले की भूमिका निभाता है ना कि उपदेशक की।
- विद्यार्थी अपने सहपाठियों के साथ परस्पर क्रिया से सीखते हैं।
- बच्चों के बैठने की व्यवस्था, कक्षा में बच्चों के क्रियाकलाप के अनुसार होती है।

31. बच्चों और उनके अधिगम के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है?

(a) बच्चों को सीखने के लिए अभिप्रेरणा तथा सीखने के लिए उनकी सक्षमता केवल आनुवंशिकता के द्वारा पूर्व निर्धारित है।
(b) बच्चों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि उनकी प्रेरणा एवं अधिगम सक्षमता को निर्धारित व सीमित करती है।
(c) बच्चों को अधिगम हेतु प्रेरित करने के लिए उन्हें पुरस्कृत एवं दंडित करना होता है।
(d) सभी बच्चे सीखने के लिए स्वाभाविक रूप से प्रेरित होते हैं तथा सीखने में सक्षम हैं।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) समावेशी शिक्षा के संदर्भ में बच्चों और अधिगम के सम्बन्ध में यह माना जाता है कि सभी बच्चे सीखने के लिए स्वभाविक रूप से प्रेरित होते हैं तथा सीखने में सक्षम हैं। इसी आधार को मानकर समावेशी कक्षा का निर्माण किया जाता है जिसमें सभी विद्यार्थी अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं।

32. प्राइमरी स्तर पर अनुदेशन होना चाहिए

(a) शिक्षक केन्द्रित
(b) पाठ्यपुस्तक केन्द्रित
(c) छात्र केन्द्रित
(d) शिक्षक एवं पाठ्यपुस्तक केन्द्रित

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) प्रगतिशील शिक्षा व्यवस्था में प्राइमरी स्तर पर अनुदेशन छात्र केन्द्रित होना चाहिए।

33. प्राथमिक शिक्षा में मदद करता है -

(a) बच्चे का समाजीकरण (b) बच्चे का लोकतंत्रीकरण
(c) पाठ्यक्रम की समझ (d) इनमें से सभी।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) बच्चों का लोकतंत्रीकरण होना ही प्राथमिक शिक्षा का मुख्य घटक है इसमें बच्चे स्वतंत्र होकर अपने कार्य एवं व्यवहार को संचालित करते हैं। इसके अलावा बच्चों का समाजीकरण पाठ्यक्रम की समझ आदि प्राथमिक शिक्षा में मदद करता है।

34. कक्षा–कक्ष में बैठक व्यवस्था कैसी होनी चाहिए?

(a) कक्षा–कक्ष में कराई जा रही गतिविधियों के अनुरूप होनी चाहिए।

(b) रोज एक जैसी होनी चाहिए।

(c) एक ही लाइन में बच्चों को बैठाना चाहिए।

(d) इस प्रकार से हो कि वे एक–दूसरे से बातचीत न कर सके।

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (a) कक्षा–कक्ष में बैठक व्यवस्था, कक्षा–कक्ष में करायी जा रही गतिविधियों के अनुरूप होनी चाहिए। उदाहरण के लिए सामूहिक परिचर्चा के समय समूह में, व्याख्यान विधि के समय कतारबद्ध, परियोजना विधि में वास्तविक परिस्थिति के अनुसार बैठक–व्यवस्था सुनिश्चित की जा सकती है।

35. विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों के नियंत्रण की दृष्टि से सरकारी संगठनों द्वारा संस्था के स्तर पर विभिन्न उपाय किए गए हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा कारण संस्थानिक स्तर से जुड़ा है जिसके कारण बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं?

(a) विद्यालय में श्यामपट्ट और शौचालय जैसी आधारभूत सेवाओं का अभाव होना

(b) अध्यापकों का समुपयुक्त योग्यता वाला न होना तथा उन्हें कम आय देना

(c) बच्चों से भली-भाँति व्यवहार करने की आवश्यकता के प्रति अध्यापकों का संवेदनशील न होना

(d) जो बच्चे अनिवार्य पाठ्यचर्चा को स्वीकार नहीं कर पाते उनके लिए विकल्पात्मक पाठ्यचर्या का न होना

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (d) वर्तमान में विद्यालय एक निश्चित मानक का अनुपालन करते हुए शिक्षा प्रदान करते हैं। ऐसे विद्यालय में एक निश्चित और अनिवार्य पाठ्यचर्या होती है। जो बच्चे अनिवार्य पाठ्यचर्या को स्वीकार नहीं कर पाते उनके लिए वैकल्पिक पाठ्यचर्या का कोई प्रावधान ऐसे विद्यालय में नहीं उपलब्ध होता है। इसलिए प्राय: वंचित वर्ग या पिछड़े बालक विद्यालय छोड़ देते हैं।

36. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प प्रगतिशील शिक्षा का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) कर के सीखना, परियोजना विधि, सहयोग से सीखना

(b) थिमैटिक इकाइयाँ, नियमित इकाई परीक्षण, रैंकिंग

(c) व्यक्तिगत अधिगम, क्षमता समूह बनाना, छात्रों की लेबलिंग

(d) परियोजना विधि, क्षमता समूह बनाना, रैंकिंग

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : प्रगतिशील शिक्षा शिक्षार्थित्रों की सक्रिय सहभागिता के सिद्धान्त पर आधारित होता है तथा यह भी मानता है कि बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं इसलिए प्रगतिशील शिक्षा करके सीखने, परियोजना विधि, सहयोग से सीखने तथा गतिविधि द्वारा सीखने पर बल देता है।

37. प्रगतिशील शिक्षा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन बताता है– शिक्षा स्वयं ही जीवन है?

(a) स्कूल शिक्षा को यथासंभव लंबे समय तक जारी रखना चाहिए।

(b) स्कूलों की आवश्यकता नहीं है, बच्चे अपने जीवन के अनुभवों से सीख सकते हैं।

(c) स्कूलों में शिक्षा सामाजिक और प्राकृतिक दुनिया को प्रतिबिंबित करे।

(d) जीवन सच्चा शिक्षक है।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : 'शिक्षा स्वयं ही जीवन है' अर्थात् शिक्षा मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाती है इसलिए प्रगतिशील शिक्षा के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि स्कूलों में शिक्षा सामाजिक और प्राकृतिक दुनिया को प्रतिबिम्बित करे ताकि विद्यार्थी सामाजिक और प्राकृतिक दुनिया में समायोजन और आत्मसातन कर सकें।

38. निम्नलिखित में से कौन-सी कक्षा समृद्ध शिक्षा को प्रोत्साहित करती है?

(a) वह कक्षा जिसमें प्रदर्शित विभिन्न प्रकार की सामग्री बच्चों की पहुँच से परे हो ताकि सामग्री लंबे समय तक चलती रहे

(b) वह कक्षा जिसमें खुली गतिविधि कोनें में हों और विभिन्न प्रकार के बाल साहित्य खुली ताक (शेल्फ) में रखी हों, जो दिन के किसी भी समय प्राप्त किया जा सके।

(c) अलमारी में अच्छी तरह संगठित सामग्री वाली कक्षा, जहाँ सामग्री को सप्ताह में एक बार मुक्त खेल के लिए बाहर लाया जाता हो

(d) पाठ्यपुस्तक सामग्री द्वारा संचालित संरचित और योजनाबद्ध अधिगम वाली कक्षा

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : कक्षा समृद्ध शिक्षा से तात्पर्य संसाधनयुक्त कक्षा शिक्षण से है। इस प्रकार की कक्षा शिक्षण में कक्षा सभी आवश्यक शिक्षण सहायक सामग्री से युक्त होती है। ऐसी कक्षा में खुली गतिविधि कोने में होती है और विभिन्न प्रकार के बाल साहित्य खुली ताक (शेल्फ) में रखी होती हैं जो दिन के किसी भी समय प्राप्त किया जा सकता है। इसका अर्थ है कि सभी शिक्षण सहायक सामग्री और शिक्षण गतिविधियाँ कक्षा में यथा स्थान होती हैं।

39. व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम की योजना ..... के संदर्भ में बनायी जाती है।

(a) विशेष शिक्षा कार्यक्रम

(b) बाल–केन्द्रित शिक्षा कार्यक्रम

(c) मुक्त विद्यालयी शिक्षा कार्यक्रम

(d) ई–अधिगम शिक्षा कार्यक्रम

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम की योजना बाल–केन्द्रित शिक्षा कार्यक्रम के संदर्भ में बनायी जाती है। बाल–केन्द्रित शिक्षा में प्रत्येक बालक महत्त्वपूर्ण होता है और शिक्षण की सभी गतिविधियाँ बालक को ध्यान में रखकर संचालित की जाती हैं।

40. जिस दिए गए कार्य को करते समय बच्चे स्वयं आनंद लेते हुए अनुभव प्राप्त करते हैं, उसे ..... कहा जाता है।

(a) ड्रिल और अभ्यास कार्य
(b) उपभोक्ता प्रकार का कार्य
(c) निर्माणात्मक प्रकार का कार्य
(d) समस्यात्मक प्रकार का कार्य

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : जिस दिए गए कार्य को करते समय बच्चे स्वयं आनंद लेते हुए अनुभव प्राप्त करते हैं, उसे उपभोक्ता प्रकार का कार्य कहा जाता है, क्योंकि उपभोक्ता प्रकार का कार्य वह होता है जिसे बच्चे स्वयं अपने उपयोग के लिए करते हैं साथ ही उसमें उनकी रुचि होती है तथा उनके वास्तविक जीवन से सम्बन्धित होती है।

41. बच्चे प्रभावी रूप से सीखते हैं जब –

(a) वे पाठ्यपुस्तक में दिए गए तथ्यों को याद करते हैं।
(b) वे श्यामपट्ट पर अध्यापक के द्वारा लिखे गए उत्तरों की नकल करते हैं।
(c) वे विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
(d) शिक्षक कक्षा में होने वाली सभी घटनाओं व बच्चों को पूर्ण रूप से नियंत्रित करता है।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) शिक्षण के क्रियाशीलता सिद्धान्त के अनुसार बच्चे प्रभावी रूप से सीखते हैं जब वे विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। बालक के जीवन की प्रमुख विशेषता मानसिक और शारीरिक क्रियाशीलता है। यही कारण है कि शिक्षाशास्त्री इस बात पर विशेष बल देते आये हैं कि बालक के मस्तिष्क और शरीर को क्रियाशील बनाकर ही उसे किसी बात को भली-भाँति सिखाया जा सकता है।
फ्रोबेल का कथन है कि ''बालक क्रिया के द्वारा ही कार्य को सीखता है, अत: जहाँ तक सम्भव हो सके उसे करके सीखने का अवसर दिया जाये।''

42. बच्चों को कक्षा में प्रश्न–

(a) पूछने के लिए हतोत्साहित करना चाहिए।
(b) पूछने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।
(c) पूछने से रोकना चाहिए
(d) पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) बच्चों को कक्षा में प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए क्योंकि बच्चों में जिज्ञासा तथा अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं तथा उनका कक्षा शिक्षण में सम्मान करना चाहिए। जब बच्चे कक्षा में अपनी जिज्ञासा प्रकट करते हैं तो शिक्षक को तत्काल उनकी जिज्ञासा शान्त करनी चाहिए ताकि वे पुन: प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित हों।

43. एक प्रगतिशील कक्षा में–

(a) विद्यार्थी के द्वारा निष्क्रिय रूप से ज्ञान प्राप्त किया जाता है।
(b) विद्यार्थी के द्वारा ज्ञान को उसी रूप में दोहराया जाता है।
(c) शिक्षक के निर्देशों के अनुसार विद्यार्थी के द्वारा ज्ञान का अनुस्मरण किया जाता है।
(d) विद्यार्थी के द्वारा ज्ञान की संरचना की जाती है।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (d) एक प्रगतिशील कक्षा में विद्यार्थी के द्वारा ज्ञान की संरचना या निर्माण किया जाता है। प्रगतिशील कक्षा में शिक्षक की भूमिका मात्र एक सुविधाप्रदाता या सुलभकर्ता की होती है, वह ऐसे अधिगम परिस्थिति का निर्माण करता है, जिसमें विद्यार्थी सक्रिय होकर अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं। प्रगतिशील कक्षा में बच्चों के पूर्व अनुभव को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

44. एक कक्षा में एक शिक्षक पढ़ाने के लिए बालकेन्द्रित उपागम का प्रयोग कर रहा है। यह तरीका उपयुक्त नहीं है-

(a) समूह वार्तालाप के लिए (b) प्रोजेक्ट विधि के लिए
(c) प्रदर्शन के लिए (d) प्रश्नोत्तर के लिए

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) यदि एक कक्षा में शिक्षक पढ़ाने के लिए बालकेन्द्रित उपगम का प्रयोग कर रहा है तो यह तरीका प्रदर्शन के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि प्रदर्शन विधि में विद्यार्थी मात्र दर्शक के रूप में उपस्थित होता है जबकि शिक्षक अधिक क्रियाशील रहता है। साथ ही प्रदर्शन विधि में सभी विद्यार्थियों को निरीक्षण के समान अवसर भी नहीं मिल पाता है जबकि बालकेन्द्रित उपागम में विद्यार्थी की सक्रियता अपरिहार्य होती है।

45. कक्षा में छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए

(a) हतोत्साहित करना चाहिए
(b) प्रेरित करना चाहिए
(c) रोक देना चाहिए
(d) अनुमति नहीं देनी चाहिए

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : कक्षा में छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि वे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता करते हुए अधिगम अनुभव प्राप्त कर सकें, साथ ही अपनी जिज्ञासा का समाधान कर सकें।

46. पाठ्यक्रम होना चाहिए -

(a) छात्र केन्द्रित (b) विद्यालय केन्द्रित
(c) शिक्षक केन्द्रित (d) इनमें से कोई नहीं।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (a) प्रकृतिवादी रुसों के अनुसार शिक्षा तभी सफल हो सकती है जब वह छात्र केन्द्रित हो। अत: पाठ्यक्रम भी छात्र केन्द्रित होना अनिवार्य है।

47. शिक्षा के क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली ..... की ओर संकेत करती है।

(a) शिक्षण–पद्धति एवं पढ़ाई जाने वाली विषय–वस्तु
(b) विद्यालय का सम्पूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं
(c) मूल्यांकन–प्रक्रिया
(d) कक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली पाठ्य–सामग्री

DSSSB PRT

Ans : (b) शिक्षा के क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली विद्यालय का सम्पूर्ण कार्यक्रम, जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं, की ओर संकेत करती है। इसमें शैक्षिक व सह–शैक्षिक दोनों प्रकार के कार्यक्रम शामिल होते हैं।

48. गतिविधि आधारित शिक्षण ..... पर बल देता है।

(a) सभी विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी
(b) निश्चित अवधि में गतिविधि पूरा करने
(c) खेलने
(d) अनुशासित कथा

DSSSB PRT

Ans : (a) गतिविधि आधारित शिक्षण सभी विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी पर बल देता है। गतिविधि आधारित शिक्षण क्रियाशीलता पर आधारित है इसके अंतर्गत शिक्षण की प्रायोजना विधि को रखा जा सकता है।

49. बुनियादी स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देना बेहतर है, क्योंकि यह

(a) बच्चों में आत्मविश्वास का विकास करेगा
(b) अधिगम को सरल बनाएगा
(c) बौद्धिक विकास में सहायता करेगा
(d) प्राकृतिक वातावरण में बच्चों को सीखने में सहायता करेगा

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) बुनियादी (प्राथमिक) स्तर पर बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देना बेहतर होता है क्योंकि इससे वे अपने आस-पास के वातावरण के बारे में जल्दी सीख जाते हैं।

50. शिक्षण- प्रक्रिया में निम्नलिखित में किसका भली प्रकार ध्यान रखना चाहिए?

(a) विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता
(b) अनुशासन और नियमित उपस्थिति
(c) गृहकार्य की जाँच में लगन
(d) विषय-वस्तु का कठिनाई स्तर

UPTET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) सफल शिक्षण प्रक्रिया वह होती है जिसमे समय-समय पर शिक्षक-छात्र संवाद होता रहे अन्यथा शिक्षण कार्य नीरस हो जाएगा और छात्रों का अधिगम अच्छी तरह से नहीं होगा।

51. अधिगमकर्ता-केन्द्रित विधि का आशय है

(a) वे विधियाँ, जहाँ अधिगम में अधिगमकर्ता की अपनी पहल तथा प्रयास सम्मिलित होते हैं
(b) उन विधियों को अपनाना, जिनमें शिक्षक मुख्य कर्ता (पात्र) होता है
(c) कि शिक्षक अधिगमकर्ता के लिए स्वयं निष्कर्ष निकाल देते हैं
(d) परम्परागत व्याख्यात्मक विधियाँ

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) अधिगमकर्ता- केन्द्रित विधि का तात्पर्य ऐसी विधि से है जहाँ पर अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता की अपनी पहल तथा प्रयास सम्मिलित रहती है इससे अधिगमकर्ता की रूचि एवं उत्साह बना रहता है तथा वह अपनी अधिगम क्रिया को सहजता पूर्वक कर सकता है।

52. विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का यह दृढ़ विश्वास है कि–

(a) शिक्षार्थियों को स्वतंत्र रूप से तर्कणा नहीं करनी चाहिए
(b) बच्चे स्कूल से बाहर क्या सीखते हैं, यह अप्रासंगिक है
(c) शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्षण महत्वपूर्ण होते हैं
(d) एक शिक्षक को हमेशा कक्षा-कक्ष के अनुदेशन का नेतृत्व करना चाहिए

CTET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (c) विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र का यह मानना है कि छात्र कोई भी कार्य या विषय सीखने के लिए स्वयं क्रियाकलाप करे, चिंतन करें, तर्क करे तथा अपने अनुभवों को इस प्रकार से संगठित एंव समंजन करे ताकि सीखने में प्रत्यक्ष लाभ हो सके। इसलिए विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र को विद्यार्थियों के अनुभव व प्रत्यक्षण को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

53. बाल-केन्द्रित शिक्षा में मूल्यांकन का सबसे कम महत्वपूर्ण कारण है-

(a) उन लक्ष्यों की ओर उनकी प्रगति की निगरानी करना
(b) उनके अधिगम और विकास के लिए लक्ष्य निर्धारित करने में छात्रों की सक्रिय भागीदारी
(c) किसी भी अंतराल को संबोधित करने का निर्धारण
(d) मुख्य सामग्री ज्ञान और कौशल

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : बाल–केन्द्रित शिक्षा में मूल्यांकन का सबसे कम महत्त्वपूर्ण कारण मुख्य सामग्री ज्ञान और कौशल है जबकि बच्चों के अधिगम और विकास के लिए लक्ष्य निर्धारित करने में छात्रों की सक्रिय भागीदार, उन लक्ष्यों की ओर उनकी प्रगति की निगरानी करना, किसी भी अंतराल को संबोधित करने का निर्धारण, उनके अधिगम त्रुटियों की पहचान कर उसमें सुधार करना आदि बाल–केन्द्रित शिक्षा में मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण कारण होता है।

54. बाल-केंद्रित शिक्षा निम्न का उपयोग करता है-

(a) विविध प्रदर्शन (b) वर्ष-अंत मूल्यांकन
(c) रैखिक प्रदर्शन (d) अनुशासनात्मक बल

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : बाल केन्द्रित शिक्षा विविध प्रदर्शन का उपयोग करता है। बाल केन्द्रित शिक्षा बच्चों की विविधता के अनुसार शिक्षण पर बल देता है। यह मानता है कि प्रत्येक बालक में अलग–अलग योग्यता व क्षमता होती है। अत: उनकी योग्यताओं और क्षमताओं के अनुसार ही शिक्षण किया जाना चाहिए।

55. 15बच्चों की कक्षा में जहाँ आपके पास 15 अलग-अलग सीखने की शैली और 15 अलग-अलग व्यक्तित्व वाले बच्चें हैं, बाल-केन्द्रित शिक्षण-

(a) एक शिक्षण प्रणाली के साथ एक पाठ योजना विकसित करना।
(b) प्रत्येक बच्चे को देखकर एक पाठ योजना विकसित करती है, कि उनकी जरूरतें क्या हैं।
(c) कक्षा की क्षमता के मध्य को लक्षित करते हुए एक पाठ योजना विकसित करना।
(d) एक पाठ योजना विकसित करती हे, जो सभी के लिए उपयुक्त है।

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : यदि 15 बच्चों की कक्षा में 15 अलग–अलग सीखने की शैली और 15 अलग–अलग व्यक्तित्व वाले बच्चे हैं तो बाल–केन्द्रित शिक्षण में प्रत्येक बच्चे की आवश्यकता, क्षमता, रुचि, अधिगम शैली योग्यता आदि के अनुसार पाठ योजना विकसित करनी चाहिए क्योंकि बाल–केन्द्रित शिक्षण में बच्चों के वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

56. बाल-केंद्रित शिक्षा में, बच्चे को जो सीखना चाहिए, वह निम्नानुसार आंकना चाहिए-

(a) गतिविधियों के माध्यम से
(b) उनके परीक्षा परिणामों के अंकों से
(c) बच्चे की योग्यता, रुचि, क्षमता और पिछले अनुभव के अनुसार
(d) बच्चे के पिछले अनुभव के अनुसार

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बाल–केन्द्रित शिक्षा में बच्चे को जो सीखना चाहिए वह उनकी रूचि, योग्यता, क्षमता, आवश्यकता और पिछले अनुभव के अनुसार आंकना चाहिए तभी उनके व्यवहारों में परिमार्जन किया जा सकता है। इसी प्रकार बाल–केन्द्रित शिक्षा में शिक्षण-विधियाँ, मूल्यांकन और परीक्षण, पाठ्यक्रम, अनुशासन आदि को भी बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप होना चाहिए तभी बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव हो पायेगा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 (NCF)

57. एन सी एफ 2005 के अनुसार, गलतियाँ इस कारण महत्त्वपूर्ण होती हैं

(a) यह विद्यार्थियों को 'उत्तीर्ण' एवं 'अनुत्तीर्ण' समूह में वर्गीकृत करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है
(b) यह अध्यापकों को बच्चों को डाँटने के लिए एक तरीका उपलब्ध कराती है
(c) यह बच्चे के विचार की अन्तर्दृष्टि उपलब्ध कराती है तथा समाधानों को पहचानने में सहायता करती है
(d) यह कक्षा में कुछ बच्चें के हटाने के लिए आधा स्थान उपलब्ध कराती है

DSSSB PRT
UPTET 2015 (I-V)

Ans : (c) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार, गलतियाँ इस कारण महत्त्वपूर्ण होती हैं क्योंकि यह बच्चे के विचार की अंतर्दृष्टि उपलब्ध कराती है तथा समाधानों को पहचानने में सहायता करती है।

58. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क 2005 ने अपनी समझ ..... से प्राप्त की है।

(a) मानवतावाद (b) व्यवहारवाद
(c) रचनावाद (d) संज्ञानात्मक सिद्धांत

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क 2005 ने अपनी समझ रचनावाद से प्राप्त की है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 यह निर्देशित करती है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनायें कि वे बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप कक्षायी अनुवीक्षण आयोजित करें ताकि सारे बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करें।

59. एक बालक को वस्तुओं को देखने में कुछ समस्या है। उसका दाखिला NCF-2005 के आधार पर किस विद्यालय में होना चाहिये?

(a) नियमित विद्यालय (b) विशिष्ट विद्यालय
(c) समावेशी विद्यालय (d) एकीकृत विद्यालय

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) एक बालक को वस्तुओं को देखने में कुछ समस्या है, उसका दाखिला NCF–2005 के आधार पर समावेशी विद्यालय में होना चाहिए।

60. NCF-2005 किस प्रकार की शिक्षण प्रणाली को प्रोत्साहित करता है?

(a) समावेशी (b) एकीकृत
(c) विशेष (d) नियमित

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (a) NCF-2005 शिक्षण प्रणाली के तहत सभी विद्यार्थियों को समानता के आधार पर शिक्षा दी जाएगी इसके सुझाव के अनुसार किसी भी बालक में उनके मानसिक स्तर, शारीरिक स्तर एवं सामाजिक स्तर पर भिन्नता नहीं की जाएगी एवं सभी विद्यार्थियों को एक साथ एक विद्यालय में शिक्षा दी जाएगी, जिसे समावेशी शिक्षा प्रणाली के नाम से जाना जाता है।

61. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में भारत की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता को मानना, स्त्रियों के प्रति सम्मान एवं जिम्मेदारी का दृष्टिकोण को बढ़ाने के प्रोग्राम का आयोजन एवं वृत्त चित्र तथा फिल्मों को एकत्र करना एवं दिखाना जिनके माध्यम से न्याय एवं शान्ति में वृद्धि हो, को सुझाया गया है ताकि

(a) शान्ति की शिक्षा दी जा सके
(b) मूल्यों की शिक्षा दी जा सके
(c) नागरिकता की शिक्षा दी जा सके
(d) इनमें से कोई नहीं

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-2005 में भारत की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता, स्त्रियों के प्रति सम्मान जैसे वृत चित्रों तथा फिल्मों को दिखाने, जिससे न्याय एवं शांति में वृद्धि हो को सुझाया गया ताकि मूल्यों की शिक्षा दी जा सके।

62. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में बहुभाषा को एक संसाधन के रूप में समर्थन दिया गया है क्योंकि

(a) यह एक तरीका है जिसमें प्रत्येक बालक सुरक्षित महसूस करें
(b) भाषागत पृष्ठभूमि के कारण कोई भी बालक पीछे न छूट जाये
(c) यह बालकों को अपने पर विश्वास के लिये प्रोत्साहन देगा
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में बहुभाषा को एक संसाधन के रूप में समर्थन दिया गया है। इसके निम्न कारण है-

1. बालक स्वयं को सुरक्षित महसूस करे।
2. मातृभाषा का विकास हो।
3. बालक को भाषा सम्बंधी समस्याओं का सामना न करना पड़े।
4. बालकों में आत्मविश्वास की वृद्धि हो सके।
5. समय की बचत हो सके आदि।

63. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में शान्ति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ क्रियाओं की अनुशंसा की गई है। पाठ्यचर्या की रूपरेखा में निम्न में से किसे सूचीबद्ध किया गया है?

(a) महिलाओं के प्रति आदर एवं जिम्मेदारी का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किये जाये
(b) नैतिक शिक्षा को पढ़ाया जाये
(c) शान्ति शिक्षा को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाया जाये
(d) शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (d) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में शान्ति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ क्रियाओं की अनुशंसा की गयी है। इसके लिए शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की बात कही गयी है।

64. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में बातचीत की गई है

(a) ज्ञान का विकास किया जाये, शिक्षण के लिए सुव्यवस्थित पाठक्रम निर्धारित किया जाये
(b) शैक्षिक केन्द्र से विषय केन्द्र होने पर
(c) विद्यार्थी केन्द्रित से अध्यापक केन्द्रित की ओर
(d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) राष्ट्रीय पाठ्यक्रम 2005 की रूपरेखा में बात की गयी है-

- ज्ञान का विकास किया जाये
- शिक्षण के लिए सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम निर्धारित किए जाये
- पाठ्यक्रम सरल हो आदि

65. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में 'गुणवत्ता आयाम' शीर्षक के अन्तर्गत अधिक महत्व दिया गया है

(a) भौतिक संसाधनों को
(b) शिक्षित एवं अभिप्रेरित अध्यापकों को
(c) बालको के लिए ज्ञान के संदर्भ में संरचित अनुभवों को
(d) बालकों के लिए संरचित अनुभव एवं पाठ्यक्रम सुधार को।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 में गुणवत्ता आयाम शीर्षक के अन्तर्गत बालको के लिए संरचित अनुभव एवं पाठ्यक्रम सुधार को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम का निर्धारण छात्र के मानसिक क्षमता एवं आयु वर्ग को ध्यान में रख कर किया गया है।

66. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में निम्न में से किस परीक्षा सम्बन्धी सुधारों को सुझाया गया है?

(a) कक्षा- X की परीक्षा ऐच्छिक
(b) विद्यालयी शिक्षा की विभिन्न अवस्थाओं पर राज्य स्तर की परीक्षा संचालन
(c) प्रतियोगी प्रवेश परीक्षाओं को ऐच्छिक
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रुपरेखा 2005 में कक्षा X की परीक्षा को ऐच्छिक करने का सुझाव दिया गया है।

67. इनमें से कौन पाठ्यचर्या (NCF) 2005 मार्गदर्शी सिद्धान्त नहीं है?

(a) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना
(b) पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त कराना
(c) अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देना
(d) बच्चों को चहुमुखी विकास के अवसर उपलब्ध कराना

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 (NCF-2005) बालकों को उनके मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान करता है न कि अंग्रेजी भाषा में। मातृभाषा में बालक स्वयं को सहज स्थिति में पाता है तथा अधिगम प्रक्रिया तीव्र हो जाती है।

68. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 की संस्तुतियों के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) विश्वविद्यालयों को राजनीति से मुक्त रखना
(b) ज्ञान को बाह्य जीवन से जोड़ना
(c) राष्ट्र के प्रजातान्त्रिक मूल्यों का सम्मान
(d) परीक्षाओं में लचीलापन

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (a) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा-2005 (NCF-2005) की संस्तुतियाँ निम्न है-

1. ज्ञान को बाह्य जीवन से जोड़ना
2. प्रजातांत्रिक मूल्यों का सम्मान
3. परीक्षाओं में लचीलापन
4. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन
5. समावेशी शिक्षा

विश्वविद्यालय को राजनीति से मुक्त रखने की संस्तुति के सम्बन्ध में कोई उल्लेख राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- 2005 में नहीं की गई है।

69. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अन्तर्गत 'परीक्षा सुधारों' में निम्न में से किस सुधार को सुझाया गया है?

(a) खुली पुस्तक परीक्षा
(b) सतत/निरन्तर एवं व्यापक मूल्यांकन
(c) सामूहिक कार्य मूल्यांकन
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (b) राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रुपरेखा 2005 के अन्तर्गत परीक्षा सुधारों के लिए सतत निरन्तर एवं व्यापक मूल्यांकन अपनाने पर सुझाव दिया गया है।

69. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF-2005) के आधारभूत सिद्धान्तों में, निम्न में से कौन-सा भाग सम्मिलित नहीं है?

(a) अच्छी बाह्य परीक्षाओं का आयोजन करना
(b) रटने को महत्व प्रदान न करना
(c) पुस्तकों से इतर ज्ञान प्राप्त करना
(d) ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ना

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (a) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 (NCF–2005) के पाँच आधारभूत सिद्धांत निम्न हैं–

(i) ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।
(ii) पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित करना।
(iii) पाठ्यचर्या का इस तरह संवर्धन करना कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाये बजाय इसके कि वह पाठ्य पुस्तक केन्द्रित बनकर रह जाये।
(iv) परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना
(v) एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास करना जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य–व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हों।

70. एन सी एफ, 2005 (NCF, 2005) की संस्तुतियों के अनुसार, कक्षा एक एवं कक्षा दो के विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन का तरीका होना चाहिए

(a) लिखित परीक्षण के आधार पर
(b) मौखिक परीक्षण के आधार पर
(c) लिखित एवं मौखिक परीक्षण के आधार पर
(d) प्रेक्षण के आधार पर

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (d) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा - 2005 (NCF-2005) के अनुसार कक्षा एक एवं कक्षा दो अर्थात पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों का मूल्यांकन प्रेक्षण के आधार पर होना चाहिए।

71. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 दस्तावेज में भाषा के लिए निहित है

(a) एक भाषा (b) द्वि भाषा
(c) तीन भाषा (d) बहु भाषा

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 (NCF-2005) में त्रिभाषा फार्मूले को लागू करने का पुन: सुझाव दिया गया है जिसमें आदिवासी भाषाओं सहित बच्चों की मातृभाषाओं को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकृति देने पर जोर है।

72. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ), 2005 के अनुसार शिक्षक की भूमिका है–

(a) अधिनायकीय (b) अनुमतिपरक
(c) सुविधादाता (d) सत्तावादी

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2016

Ans : (c) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार शिक्षक की भूमिका एक सुविधादाता की होनी चाहिए क्योंकि बालक स्वयं ज्ञान का निर्माता होते हैं, इसको ध्यान में रखकर शिक्षक को उचित अधिगम परिस्थिति का निर्माण करना चाहिए, उनके अधिगम में आने वाली कठिनाइयों को दूर करना चाहिए तथा उन्हें सक्रिय खोज के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

73. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार अधिगम अपने स्वभाव में ..... और ..... है।

(a) निष्क्रिय; सरल (b) सक्रिय; सामाजिक
(c) निष्क्रिय; सामाजिक (d) सक्रिय; सरल

DSSSB PRT
CTET 2016 (VI-VIII)

Ans : (b) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के मार्गदर्शी सिद्धान्त के अनुसार–

(1) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ा जाय
(2) पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त किया जाय
(3) पाठ्यचर्या पाठ्यपुस्तक केन्द्रित न रह जाये
(4) कक्षा–कक्ष को गतिविधियों से जोड़ा जाय आदि

उपर्युक्त सिद्धांत से यह स्पष्ट होता है कि अधिगम अपने स्वभाव में सक्रिय और सामाजिक होना चाहिए।

74. एन सी एफ 2005 के संबंध में निम्न में से कौन–सा कथन सही है?

(a) वह भारत की विद्यालयी शिक्षा के संबंध में एक संवैधानिक संशोधन है
(b) यह एनसीईआरटी द्वारा तैयार किया गया दस्तावेज है, जो भारत की विद्यालयी शिक्षा के संबंध में संस्तुतियाँ प्रस्तुत करता है
(c) यह भारत में गुणात्मक शिक्षा के संबंध में यूनेस्कों और भारत द्वारा हस्ताक्षरित दस्तावेज है।
(d) उपरोक्त में से काई नहीं

DSSSB PRT
UK TET (I-V) 2014

Ans : (b) एन.सी.एफ–2005 (National Curriculum Framework) (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005) का निर्माण बालकों को 'क्या और कैसे पढ़ाया जाय', इन्हीं विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने हेतु एक अति महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय दस्तावेज के रूप में किया गया है। यह एनसीईआरटी द्वारा तैयार किया गया दस्तावेज है, जो भारत की विद्यालयी शिक्षा के सम्बन्ध संस्तुतियाँ प्रस्तुत करता है।

75. एन सी एफ 2005 (NCF, 2005) की संस्तुतियों के अनुसार, कक्षा एक एवं कक्षा दो के विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन का तरीका होना चाहिए–

(a) लिखित परीक्षण के आधार पर
(b) मौखिक परीक्षण के आधार पर
(c) लिखित एवं मौखिक परीक्षण के आधार पर
(d) प्रेक्षण के आधार पर

DSSSB PRT

Ans : (d) एन सी एफ 2005 (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005) की संस्तुतियों के अनुसार कक्षा एक एवं कक्षा दो के विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन का तरीका प्रेक्षण के आधार पर होना चाहिए। उनके व्यवहारों, क्रियाकलापो आदि का प्रेक्षण करना चाहिए।

76. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF-2005) के आधारभूत सिद्धांतों में, निम्नलिखित में से कौन–सा भाग सम्मिलित नहीं है?

(a) अच्छी बाह्य परीक्षाओं का आयोजन करना
(b) रटने को महत्त्व प्रदान न करना
(c) पुस्तकों के इतर ज्ञान प्राप्त करना
(d) ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ना

DSSSB PRT

Ans : (a) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 (NCF–2005) के आधारभूत सिद्धांतों में 'अच्छी बाह्य परीक्षाओं का आयोजन करना' शामिल नहीं है। बल्कि 'परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना' शामिल है।

77. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के रूपरेखा 2005 की संस्तुतियों के संबंध में कौन–सा कथन सत्य नहीं है?

(a) विश्वविद्यालयों को राजनीति से मुक्त रखना
(b) ज्ञान को बाह्य जीवन से जोड़ना
(c) राष्ट्र के प्रजातांत्रिक मूल्यों का सम्मान
(d) परीक्षाओं में लचीलापन

DSSSB PRT

Ans : (a) 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005' का निर्माण प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए किया गया था। इस दस्तावेज में पाठ्यचर्या निर्माण के पाँच निर्देशक सिद्धांतों का प्रस्ताव रखा गया–

1. ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।
2. पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना।
3. पाठ्यचर्या का इस तरह सवंर्द्धन कि वह वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाये बजाये इसके कि पाठ्य–पुस्तक केन्द्रित बनकर रह जाये।
4. परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।
5. एक ऐसी अधिभावी पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्यव्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय चिंताएँ समहित हों।

78. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार गणित शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है–

(a) बच्चों को अंकगणित का ज्ञान देना।
(b) बच्चों में गणित के प्रति रूचि पैदा करना।
(c) बच्चों में तार्किक चिंतन तथा समस्या समाधान योग्यता का विकास करना।
(d) बच्चों का संवेगात्मक विकास करना।

DSSSB PRT
UK TET (I-V) 2011

Ans : (c) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार गणित शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों के वे संसाधन समृद्ध हों जो चिंतन और तर्क में, अमूर्त की संकल्पना करने और उनका व्यवहार करने, समस्याओं को सूत्रबद्ध करने और सुलझाने में उनकी सहायता करें।

79. ''पाठ्यचर्या ऐसी हो जो पाठ्य-पुस्तक के ज्ञान को पुन: प्रस्तुत करने के स्थान पर बच्चों को अपनी आवाजें पाने, कार्य करने के लिए अपनी जिज्ञासा का पोषण करने, प्रश्न पूछने और जाँच-पड़ताल करने तथा अपने अनुभवों को बाँटने तथा विद्यालय के ज्ञान के साथ जोड़ने में सक्षम बनाए।''

- राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005, पृ.13 इस पृष्ठभूमि में, एक शिक्षक की प्राथमिक भूमिका क्या होनी चाहिए?

(a) बच्चों को उनकी अपनी समझ और अपने ज्ञान को साझा करने के पर्याप्त अवसर देना।
(b) बच्चों के अनुभवों को निरस्त कर पाठ्य-पुस्तकों पर ध्यान केंद्रित करना।
(c) पाठ्यपुस्तक के अध्ययों को क्रमवार पूरा कराना।
(d) यह सुनिश्चित करना कि शिक्षिका अच्छे प्रश्न पूछे और शिक्षार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें।

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans: (a) राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 के अनुसार शिक्षक की मुख्य भूमिका यह होनी चाहिए कि बच्चों को पर्याप्त अवसर दिया जाय कि वह अपनी समझ विकसित कर सके तथा छात्र-शिक्षक वार्तालाप कर सके। जिससे छात्र अपने ज्ञान का साझा शिक्षक के साथ कर सके।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 (RTE)

80. नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 दिव्यांग बच्चों की नि:शुल्क शिक्षा के अधिकारों को सुनिश्चित करता है–

(a) 6 वर्ष से 18 वर्ष तक के लिए
(b) 3 वर्ष से 18 वर्ष तक के लिए
(c) 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के लिए
(d) 6 वर्ष से 22 वर्ष तक के लिए

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : नि:शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 में सामान्य बच्चों के लिए 6–14 वर्ष तक नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्राप्त है जबकि दिव्यांग बच्चों के लिए 6–18 वर्ष तक नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। यह अधिनियम 1 अप्रैल वर्ष 2010 को जम्मू–कश्मीर को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में लागू हुआ।

81. निम्नलिखित संरचनाओं में से शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 किसकी वकालत करता है?

(a) समावेशी शिक्षा (b) पृथक्करण
(c) मुख्यधारा शिक्षण (d) एकीकृत शिक्षा

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (a) शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 समावेशी शिक्षा की वकालत करता है। इस अधिनियम के द्वारा समावेशी शिक्षा के अंतर्गत वे सभी बालक जो छ: से चौदह वर्ष तक की आयु पूरा करते हैं (चाहे वे अलाभान्वित समूह के बालक हों, दुर्बल वर्ग के बालक हों, नि:शक्त बालक हों या अन्य किसी अधिगम अक्षमता से ग्रसित बालक हों) सभी को अनिवार्य व नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया गया है।
ध्यातव्य है कि दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016 में दिव्यांग बच्चों के लिए 6-18 वर्ष की आयु तक मुफ्त शिक्षा के अधिकार की व्यवस्था की गयी है।

82. शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act) किस वर्ष से प्रभावी हुआ ?

(a) 2009 (b) 2010
(c) 2005 (d) 2001

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act) 1 अप्रैल 2010 को लागू हुआ। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के शीर्षक में 'नि:शुल्क और अनिवार्य' शब्द सम्मिलित है जिसका अर्थ है उचित सरकार और स्थानीय प्राधिकारियों पर 6–14 आयु समूह के सभी बच्चों को प्रवेश, उपस्थिति और प्रारम्भिक शिक्षा को पूरा करने का प्रावधान करने और सुनिश्चित करने की बाध्यता रखी है।

83. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में उल्लेख की गई 'समावेशी शिक्षा' की अवधारणा निम्नलिखित में किस पर आधारित है?

(a) अधिकार-आधारित मानवतावादी परिप्रेक्ष्य
(b) मुख्यत: व्यावसायिक शिक्षा उपलब्ध करा करके अशक्त बच्चों को मुख्यधारा में शामिल करना।
(c) व्यवहारवादी सिद्धांत
(d) अशक्त बच्चों के प्रति एक सहानुभूतिक अभिवृत्ति

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (a) शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 में उल्लेख की गयी समावेशी शिक्षा की अवधारणा, अधिकार- आधारित मानवतावादी परिप्रेक्ष्य पर आधारित है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 सभी बच्चों को अनिवार्य और नि:शुल्क शिक्षा का अधिकार देता है। यह अधिनियम सामान्य बच्चों के साथ-साथ गैर लाभान्वित और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को भी नि:शिुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है।

84. संविधान के किस संशोधन से शिक्षा एक मौलिक अधिकार बन गयी है?

(a) 86वें संशोधन (b) 25वें संशोधन
(c) 52वें संशोधन (d) 22वें संशोधन

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : भारतीय संविधान में 86वाँ संशोधन अधिनियम, 2002 शिक्षा के अधिकार से संबंधित है जिसमें अनुच्छेद 21 में एक नया खण्ड जोड़कर अनुच्छेद 21(ए) बनाया गया जिससे शिक्षा मौलिक अधिकार बन गयी है। इस अनुच्छेद के अनुसार– ''राज्य को 6 से 14 साल तक के सभी बच्चों को नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करानी होगी।''

85. शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के क्रियान्वयन के बाद कक्षा-कक्ष-

(a) अप्रभावित हैं, क्योंकि शिक्षा का अधिकार विद्यालय में कक्षा की औसत आयु को प्रभावित नहीं करता
(b) जेंडर के अनुसार अधिक समजातीय है
(c) आयु के अनुसार अधिक समजातीय है
(d) आयु के अनुसार अधिक विषमजातीय है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा विधेयक 2009 भारतीय संसद द्वारा सन् 2009 में पारित शिक्षा सम्बंधी विधेयक है इस विधेयक द्वारा यह पारित किया गया कि 6-14 वर्ष तक के देश के सभी बच्चों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करायी जायेगी। किन्तु 14 वर्ष के बाद वाले बालकों की शिक्षा के विषय में कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए शिक्षा का अधिकार 2009 के क्रियान्वयन के बाद आयु के अनुसार कक्षा अधिक समजातीय हो जायेगी।

86. बालकों का मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में निम्न में से किस पर ध्यान नहीं दिया गया है?

(a) अध्यापकों को प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करना
(b) घुमन्तू बालकों के प्रवेश को सुनिश्चित करना
(c) एकेडेमिक कैलेन्डर को निर्धारित करना
(d) 14 वर्ष के पश्चात की शिक्षा।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 1 अप्रैल 2009 को लागू किया गया। इसके अन्तर्गत 6-14 वर्ष तक के बालकों को एक निर्धारित कैलेण्डर के अनुसार प्रशिक्षित अध्यापकों के द्वारा अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है। इसमें 14 वर्ष से अधिक उम्र के बालकों की शिक्षा का कोई प्रावधान नहीं है।

87. नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का बालकों का अधिकार, 2009 के अर्न्तगत, किसी भी अध्यापक को निम्न में से किस कार्य के लिये नहीं लगाया जा सकता?

(a) दस वर्ष पश्चात होने वाली जनगणना में
(b) आपदा राहत कार्य में
(c) चुनाव सम्बन्धी कार्य में
(d) पल्स पोलियो कार्यक्रम में।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार 2009 के अनुसार अध्यापकों को अब पल्स-पोलियो अभियान के तहत घर-घर जाकर बच्चों को ड्राप पिलाने के कार्यों से छूट दे दी गयी है। अब यह कार्य आशा सदस्य एवं नर्सो के द्वारा किया जाता है।

88. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में एक अध्यापक के लिए न्यूनतम कार्य घंटे प्रति सप्ताह निर्धारित किये गये हैं

(a) चालीस घंटे (b) पैंतालीस घंटे
(c) पचास घंटे (d) पचपन घंटे।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (b) शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार प्रत्येक अध्यापक के लिए एक सप्ताह में न्यूनतम 45 घंटे शिक्षण कार्य निर्धारित किया गया है।

89. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में एक अध्यापक को निम्न में से किस दायित्व को पूरा करना होगा?

(a) विद्यालय में नियमित रूप से समय पर उपस्थित होना होगा
(b) पाठ्यक्रम का संचालन पूरा करना होगा
(c) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को निर्धारित समय पर पूरा करना होगा
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (d) शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार शिक्षक का दायित्व-

- विद्यालय में नियमित रूप से समय पर उपस्थित होना
- पाठ्यक्रम पूरा करना
- निर्धारित पाठ्यक्रम को निर्धारित समय से पूरा करना
- बच्चों को मानसिक एवं शारीरिक दण्ड न देना
- अनुशासन बनाए रखना आदि

90. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में निर्दिष्ट किया गया है कि कक्षा-1 से कक्षा-5 तक यदि प्रवेश दिये गये विद्यार्थियों की संख्या दो सौ से अधिक है, तो विद्यार्थी-अध्यापक आवश्यक अनुपात होगा

(a) तीस (b) चालीस
(c) पैंतालीस (d) पचास।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (b) शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार कक्षा 1 से कक्षा 5 तक के विद्यालयो में छात्र शिक्षक अनुपात 40 : 1 होना चाहिए अर्थात 40 विद्यार्थियो को पढ़ाने के लिए एक अध्यापक की नियुक्ति की जाएगी।

91. भारत के संविधान में किसके लिए नि:शुल्क अनिवार्य शिक्षा है?

(a) सभी छात्रों के लिए
(b) 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए
(c) सभी छात्रों और प्रौढ़ो के लिए
(d) सभी नागरिकों के लिए

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) भारतीय संविधान के मौलिक अधिकार अनुच्छेद 21 (क) के अन्तर्गत 6 - 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रावधान करता है।

92. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू नहीं होता

(a) नि:शक्त बच्चे
(b) 6-14 आयु वर्ग के बच्चे
(c) 14-18 वर्ष के आयु के बच्चे
(d) बच्चों की नियमित उपस्थिति

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 भारत के 6-14 वर्ष तक के समस्त बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित प्रावधान करता है। RTE एक्ट - 2009 6 वर्ष से पूर्व के आयु वर्ग एवं 14 वर्ष के बाद के आयु वर्ग के बच्चों पर नहीं लागू होता। अत: विकल्प (c) सही उत्तर है।

93. बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के लिए लागू है–

(a) 6–14 वर्ष (b) 7–13 वर्ष
(c) 5–11 वर्ष (d) 6–12 वर्ष

DSSSB PRT
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (a) बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार 6–14 वर्ष की आयु के प्रत्येक बच्चे को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है। इसके अंतर्गत बच्चे या उनके अभिभावकों से प्राथमिक शिक्षा हासिल करने के लिए कोई भी प्रत्यक्ष शुल्क या अप्रत्यक्ष मूल्य (यूनीफार्म, पाठ्य–पुस्तकें, मध्यान्ह भोजन, परिवहन शुल्क) नहीं लिया जायेगा।

94. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 ने 6 से 14 वर्ष आयु के विद्यालय कभी न गए अथवा विद्यालयी शिक्षा अधूरी छोड़ने वाले बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु–

(a) विशेष पाठ्यक्रम लागू करने पर जोर दिया है।
(b) विशेष प्रशिक्षण लागू करने पर जोर दिया है।
(c) अलग से विद्यालय खोलने की बात कही है।
(d) अलग से शिक्षक नियुक्त करने की बात कही है।

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (b) शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 ने 6 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के विद्यालय कभी न गये अथवा विद्यालयी शिक्षा अधूरी छोड़ने वाले बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए विशेष प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अध्यापकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करने पर जोर दिया है।

95. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में 6-14 आयु-वर्ग के बच्चों के लिए नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार शामिल किया गया है?

(a) अनुच्छेद 26 (b) अनुच्छेद 15
(c) अनुच्छेद 45 (d) अनुच्छेद 21A

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (d) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21A में 6-14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार शामिल किया गया है।

96. शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ना चाहिए–

(a) व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों में जो उन्हें जीवन कौशलों के लिए तैयार करेंगे

(b) घर पर माता-पिता और देखभाल करने वालों के साथ जो उन्हें आवश्यक सहायता उपलब्ध कराएँ

(c) खासतौर पर उन्हीं के लिए बनाए गए विशेष विद्यालयों में

(d) समावेशी शिक्षा व्यवस्था में इस प्रावधान के साथ कि उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (d) शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 यह उपबन्ध करता है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनकी आवश्यकता के अनुसार ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये ताकि वे अपना सम्पूर्ण विकास करते हुए समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में अपना योगदान दे सकें।

97. नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार 2009 में अनिवार्य शब्द का अर्थ है

(a) उचित सरकारें दाखिले, उपस्थिति और प्रारम्भिक शिक्षा की पूर्णता को सुनिश्चित करेंगी।

(b) दण्डात्मक कार्य से बचने के लिए अपने बच्चें को विद्यालय भेजने के लिए अभिभावकों पर अनिवार्य रूप से जोर डाला गया है।

(c) अनिवार्य शिक्षा सतत् परीक्षण के माध्यम से प्रदान की जाएगी

(d) केन्द्र सरकार दाखिले, उपस्थिति और प्रारंभिक शिक्षा की पूर्णता को सुनिश्चित करेगी।

DSSSB PRT

C TET (VI-VIII) 2012

Ans : (a) नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में बच्चों का अधिकार का अर्थ है कि औपचारिक स्कूल, जो कतिपय अनिवार्य मानदण्डों और मानकों को पूरा करता है, में संतोषजनक और एकसमान गुणवत्ता वाली पूर्ण कालिक प्रारम्भिक शिक्षा के लिए प्रत्येक बच्चे का अधिकार है।

इस अधिनियम में 'अनिवार्य' शब्द का अर्थ है उचित सरकारें दाखिले, उपस्थिति और प्रारम्भिक शिक्षा की पूर्णता को सुनिश्चित करेगी।

98. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन के बाद कक्षा–कक्ष

(a) जेंडर के अनुसार अधिक समजातीय हैं

(b) आयु के अनुसार अधिक समजातीय हैं

(c) आयु के अनुसार अधिक विषमजातीय है

(d) अप्रभावित हैं, क्योंकि शिक्षा का अधिकार विद्यालय में कक्षा की औसत आयु को प्रभावित नहीं करता

DSSSB PRT

C TET (VI-VIII) 2012

Ans : (b) शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार 6–14 आयु वर्ष के बालकों को नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का प्रावधान है। अत: इस अधिनियम के द्वारा कक्षा–कक्ष आयु के अनुसार अधिक समजातीय हो जायेगा।

99. आर.टी.ई. एक्ट 2009 के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों को प्रति सप्ताह कुल कितने घण्टे की योजना बनाकर कार्य करना है?

(a) 30 घण्ट (b) 45 घण्टे

(c) 42 घण्टे (d) 50 घण्टे

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE एक्ट)-2009 के अनुसार यह निर्धारित किया गया कि प्राथमिक विद्यालय में एक शिक्षक को एक सप्ताह में कुल 45 घण्टे की योजना बना कर कार्य करना होगा।

100. आरटीई अधिनियम इस वर्ष में लागू किया गया था :

(a) 2010 (b) 2008

(c) 2011 (d) 2009

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : आरटीई (Right of children to free and compulsory education Act, 2009) नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा विधेयक, 2009 भारतीय संसद द्वारा सन् 2009 में पारित शिक्षा सम्बन्धी एक विधेयक है। इस विधेयक के पास होने से बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार मिल गया है। यह विधेयक 1 अप्रैल 2010 को जम्मू–कश्मीर को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में लागू हुआ था।

बाल–केन्द्रित शिक्षा पर शिक्षाशास्त्रियों के विचार

101. प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षा का केन्द्र होना चाहिए

(a) अध्यापक (b) बालक

(c) पाठ्यक्रम (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) प्रकृतिवाद के प्रमुख चिंतक रुसों है। रुसों के अनुसार शिक्षा का मुख्य केन्द्र बालक होता है और बालक को ही शिक्षा का केन्द्र मानकर शिक्षा देनी चाहिए।

102. बेसिक शिक्षा हेतु महात्मा गाँधी ने किस पाठ्यक्रम पर बल दिया है?

(a) नृत्यकला केन्द्रित (b) हस्तकला केन्द्रित

(c) पुस्तककला केन्द्रित (d) संगीतकला केन्द्रित

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (b) बेसिक शिक्षा हेतु गांधी जी द्वारा वर्धा कमीशन का निर्माण किया गया इसकी अध्यक्षता डा. जाकिर हुसैन द्वारा की गयी इस कमीशन ने हस्तकला के द्वारा शिक्षा देने का सुझाव दिया जो गांधी जी के कहने में इसे कौशल के रूप में शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल करने का प्रयास किया गया।

103. विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से चिंतन करने तथा प्रभावी शिक्षार्थी बनने में सक्षम बनाने हेतु शिक्षक के लिए महत्त्वपूर्ण है–

(a) विद्यार्थियों को सिखाना कि किस प्रकार से अपने अधिगम का अनुवीक्षण करें।

(b) विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त की गई प्रत्येक सफलता के लिए उन्हें पुरस्कार देना।

(c) छोटी–छोटी इकाइयों या खंडों में जानकारी प्रदान करना।

(d) एक संघटित तरीके से जानकारी को प्रस्तुत करना ताकि पुन: स्मरण करने में आसानी हों।

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2016

Ans : (a) विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से चिंतन करने तथा प्रभावी शिक्षार्थी बनने में सक्षम बनाने हेतु शिक्षक के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों को सिखाये कि किस प्रकार से अपने अधिगम का अनुवीक्षण करें तथा एक ऐसे अधिगम परिस्थिति का निर्माण करे जिसमें वह स्वयं सक्रिय होकर सीख सकें।

104. बाल–केन्द्रित शिक्षा का समर्थन निम्नलिखित में से किस विचारक द्वारा किया गया?

(a) चार्ल्स डार्विन (b) बी.एफ. स्किनर

(c) जॉन ड्यूवी (d) एरिक इरिकसन

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) जॉन ड्यूवी ने प्रगतिशील शैक्षिक विचारो को प्रचारित किया जिसके केन्द्र में 'बालक' को रखा। इनके अनुसार शिक्षण प्रक्रिया बालक के लिए है न कि बालक शिक्षण प्रक्रिया के लिए। इसलिए शिक्षण प्रक्रिया को बालक के अनुसार होनी चाहिए।

105. प्रगतिशील शिक्षा के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन जॉन डीवी के अनुसार समुचित है?

(a) कक्षा में प्रजातंत्र का कोई स्थान नहीं होना चाहिए

(b) विद्यार्थियों को स्वयं ही सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सक्षम होना चाहिए

(c) जिज्ञासा विद्यार्थियों के स्वभाव में अन्तर्निहित नहीं है अपितु इसका कर्षण/संवर्द्धन करना चाहिए

(d) कक्षा में विद्यार्थियों का निरीक्षण करना चाहिए न कि सुनना चाहिए

DSSSB PRT
CTET 2014 (I-V)

Ans : (b) प्रगतिशील शिक्षा के सन्दर्भ में जॉन डीवी का विचार है कि विद्यार्थियों को स्वयं ही सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सक्षम होना चाहिए। जान डीवी विद्यार्थियों की क्रियाशीलता और उनमें सर्जनात्मक गुणों के विकास के पक्षधर थे।

106.जॉन ड्यूवी द्वारा समर्थित 'लैब विद्यालय' के उदाहरण हैं –

(a) पब्लिक विद्यालय (b) सामान्य विद्यालय

(c) फैक्ट्री विद्यालय (d) प्रगतिशील विद्यालय

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) जान ड्यूवी द्वारा समर्थित 'लैब विद्यालय' प्रगतिशील विद्यालय का उदाहरण है। इनके अनुसार इस तरह के विद्यालय में प्रयोगों के द्वारा, चल-चित्रों के द्वारा तथा लैब के माध्यम से भविष्य के लिए शिक्षक तैयार किये जाते हैं।

107. ''प्रगतिशील शिक्षा के जनक'' के रूप में याद किए जाने वाले सिद्धांतकार हैं-

(a) फेडरिक फ्रोबेल (b) जॉन डीवी

(c) जीन पियाजे (d) ग्राहम गिब्स

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : ''प्रगतिशील शिक्षा के जनक'' जॉन डीवी माने जाते हैं। जॉन डीवी संयुक्त राज्य अमेरिका के एक मनोवैज्ञानिक और शिक्षाविद थे। प्रगतिशील शिक्षा पारम्परिक शिक्षा की प्रतिक्रिया का परिणाम है। प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा के अनुसार– शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बालक की शक्तियों का विकास करना है। वैयक्तिक विभिन्नता के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया में भी अंतर रखकर इस उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है।

बाल–केन्द्रित शिक्षा और अध्यापक की भूमिका

108. जब शिक्षक को विद्यार्थियों एवं उनकी योग्यताओं के बारे में सकारात्मक विश्वास होता है तब विद्यार्थी–

(a) निश्चिन्त हो जाते हैं तथा सीखने के लिए किसी भी तरह का प्रयास करना बंद कर देते हैं।

(b) का उत्साह भंग हो जाता है तथा वे दबाव में आ जाते हैं।

(c) किसी भी रूप में प्रभावित नहीं होते हैं।

(d) सीखने के लिए उत्सुक एवं प्रेरित रहते हैं।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) जब शिक्षक को विद्यार्थियों एवं उनकी योग्यताओं के बारे में सकारात्मक विश्वास होता है तब विद्यार्थी सीखने के लिए उत्सुक एवं प्रेरित रहते हैं। वर्तमान बाल केन्द्रित शिक्षा में बालकों के अनुभवों, विचारों, जिज्ञासा, उनकी वैयक्तिक भिन्नता आदि को महत्वपूर्ण माना जाता है तथा कक्षा-शिक्षण में इनका शैक्षिक संसाधन के रूप में प्रयोग भी किया जाता है। इसीलिए शिक्षक को उनकी योग्यताओं, कार्यों, अनुभवों आदि पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए ताकि उनमें हीनता, कुण्ठा, अपमान जैसी भावना का विकास न हो और वे सीखने के लिए उत्सुक व प्रेरित हों।

109. एक शिक्षक को चाहिए कि–

(a) वह विशेष संस्कृतियों/समुदायों के बच्चों को बढ़ावा दे।

(b) वह विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक विभिन्नताओं तथा विविधता की अनदेखी करें।

(c) यह सम्प्रेषित करे कि वह कक्षाकक्ष में सभी संस्कृतियों का सम्मान करती है एवं महत्त्व देती है।

(d) वह विद्यार्थियों के बीच तुलना को अधिकतम करें।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) एक शिक्षक को चाहिए कि वह कक्षा-कक्ष में यह सम्प्रेषित करे कि वह सभी संस्कृतियों का सम्मान करता है एवं महत्व देता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 समावेशी शिक्षा की वकालत करता है तथा यह व्यक्त करती है कि बच्चों में वैयक्तिक विभिन्नता उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता आदि को कक्षा में समान महत्व देना चाहिए तथा उनके सामाजिक-सांस्कृतिक, भाषायी आदि किसी भी प्रकार की विविधता के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।

110. एकल अभिभावक वाले बच्चे को पढ़ाते समय शिक्षक को

(a) इस तथ्य की अनदेखी करना चाहिए और ऐसे बच्चे के साथ अन्य बच्चों के समान व्यवहार करना चाहिए

(b) इस प्रकार के बच्चे के साथ भिन्न प्रकार के व्यवहार करना चाहिए

(c) ऐसे बच्चे को कम गृहकार्य देना चाहिए

(d) स्थिर और एकरूप वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए

DSSSB PRT

Ans : (a) एकल अभिभावक वाले बच्चे को पढ़ाते समय शिक्षक को इस तथ्य की अनदेखी करनी चाहिए और ऐसे बच्चे के साथ अन्य बच्चों के समान व्यवहार करना चाहिए।

111. बाल–केन्द्रित कक्षा की एक प्रमुख विशेषता है कि उसमें

(a) शिक्षक की भूमिका ज्ञान को सीखने के लिए उसे प्रस्तुत करना है और शिक्षार्थियों का मानक मानदण्डों पर आकलन करना है

(b) शिक्षक के मार्गदर्शन से शिक्षार्थियों को अपनी स्वयं की समझ का निर्माण करने के लिए उत्तरदायी बनाया जाता है

(c) शिक्षक के द्वारा बल प्रयोग और मनोवैज्ञानिक नियंत्रण होता है, जो अधिगम पथ और बच्चों के व्यवहार को निर्धारित करता है

(d) शिक्षक बच्चों के लिए व्यवहार के समरूप तरीकों को निर्धारित करता है और जब वे उसका पालन करते हैं, तो उन्हें उपयुक्त पुरस्कार देता है

DSSSB PRT
CTET 2015 (VI-VIII)

Ans : (b) बाल–केन्द्रित कक्षा की एक प्रमुख विशेषता होती है कि शिक्षक के मार्गदर्शन से शिक्षार्थियों को अपनी स्वयं की समझ का निर्माण करने के लिए उत्तरदायी बनाया जाता है ताकि उनमें आलोचनात्मक ढंग से सोचने व समझने की योग्यता विकसित हो सके।

112. एक शिक्षार्थी केन्द्रित कक्षा–कक्ष में अध्यापिका करेगी

(a) अधिगम को सुगम बनाने के लिए बच्चों को एक–दूसरे के साथ अंकों के लिए मुकाबला करने हेतु प्रोत्साहित करना

(b) मुख्य तथ्यों की व्याख्या करने के लिए व्याख्यान पद्धति का प्रयोग करना और बाद में शिक्षार्थियों का उनकी सजगता के लिए आकलन करना

(c) वह अपने विद्यार्थियों से जिस प्रकार की अपेक्षा करती है उसे प्रदर्शित करना और तब बच्चों को वैसा करने के लिए दिशा–निर्देश देना

(d) इस प्रकार की पद्धतियों को नियोजित करना जिसमें शिक्षार्थी अपने स्वयं के अधिगम के लिए पहल करने में प्रोत्साहित हों

DSSSB PRT

Ans : (d) शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण में शिक्षण की सभी गतिविधियाँ शिक्षार्थियों के अनुसार तथा उनके सहयोग से संचालित की जाती है। इसलिए शिक्षार्थी केन्द्रित कक्षा–कक्ष मे अध्यापिका अधिगम परिस्थितियों को इस प्रकार नियोजित करे जिसमें शिक्षार्थी अपने स्वयं के अधिगम के लिए पहल करने में प्रोत्साहित हो।

113. एक प्रभावशाली अध्यापिका होने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है

(a) पुस्तक के उत्तरों को लिखाने पर बल देना

(b) समूह गतिविधि के बजाय वैयक्तिक अधिगम पर ध्यान देना

(c) विद्यार्थियों के द्वारा प्रश्न पूछने के कारण उत्पन्न व्यवधान की अनदेखी करना

(d) प्रत्येक बच्चे के सम्पर्क में रहना

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (d) बाल–केन्द्रित शिक्षा में प्रत्येक छात्र महत्त्वपूर्ण होता है तथा उसकी रुचियों, अभिवृत्तियों, योग्यताओं, क्षमताओं को बराबर महत्त्व दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में प्रभावशाली अध्यापिका के लिए प्रत्येक बच्चे के सम्पर्क में रहना चाहिए तथा उन्हें उचित सहायता उपलब्ध कराते रहना चाहिए।

114. निम्नलिखित में से कौन–सा एक माध्यमिक विद्यालय की कक्षा–कक्ष में शिक्षक की भूमिका का सर्वोत्तम/उचित वर्णन करता है?

(a) चर्चाओं के अवसर उपलब्ध कराना

(b) प्रथम स्थान के लिए शिक्षार्थियों को आपस में प्रतिस्पर्धा के लिए बढ़ावा देना

(c) बहु–परिप्रेक्ष्य को निरुत्साहित करना तथा एक–आयामी परिप्रेक्ष्य पर केन्द्रीभूत होना

(d) व्याख्यान देने के लिए पावरप्वॉइंट प्रेजेंटेशन का प्रयोग करना

DSSSB PRT

Ans : (a) वर्तमान में शिक्षा का स्वरूप बाल केन्द्रित हो गया है, इस शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षण की सभी गतिविधियाँ बालक के रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं, अवस्थाओं को ध्यान में रखकर संचालित की जाती है तथा बलक भी सक्रिय होकर अधिगम करता है। इसलिए बालकों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए इसके लिए उन्हें चर्चाओं में भाग लेने के अवसर उपलब्ध कराया जा सकता है।

115. कक्षा तक पहुँचने वाली बच्चों की भोली अवधारणाओं को जानना–

(a) शिक्षक की योजना और शिक्षण में रुकावट बनता है

(b) शिक्षक के हौसले को पस्त कर देता है क्योंकि इससे उसका कार्यभार बढ़ता है

(c) शिक्षक के किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता

(d) शिक्षक के लिए अपने शिक्षण को अधिक सार्थक बनाने की योजना बनाने में सहायक होता है

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (d) शिक्षक कक्षा में प्रस्तावना कौशल के माध्यम से बच्चों के पूर्व ज्ञान के बारे में जानकारी प्राप्त करता है तत्पश्चात् वह नये ज्ञान या पाठ्य वस्तु को बच्चों के पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए सार्थक रूप से प्रस्तुत करते हैं। अर्थात् बच्चों की भोली अवधारणाओं की जानकारी से शिक्षक शिक्षण को सार्थक तथा रोचक बना सकता है।

116. किसी प्रगतिशील कक्षा की व्यवस्था में शिक्षक एक ऐसे वातावरण को उपलब्ध कराकर अधिगम को सुगम बनाता है, जो–

(a) खोज को प्रोत्साहन देता है

(b) नियामक है

(c) समावेशन को हतोत्साहित करता है

(d) आवृत्ति को बढ़ावा देता है

CTET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (a) प्रगतिशील कक्षा की व्यवस्था में शिक्षक खोज को प्रोत्साहन देकर अधिगम को सुगम बनाता है।

117. शिक्षार्थियों के ज्ञान अर्जन में सहायता करने के क्रम में अध्यापकों को किस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए?

(a) सुनिश्चित करना कि शिक्षार्थी सब कुछ याद करते हैं

(b) शिक्षार्थी के द्वारा प्राप्त किए गए अंकों/ग्रेडों पर

(c) शिक्षार्थी को सक्रिय सहभागिता के लिए शामिल करना

(d) शिक्षार्थी के द्वारा अधिगम की अवधारणाओं में कुशलता प्राप्त करना

CTET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (c) शिक्षार्थियों के ज्ञान अर्जन में सहायता करने के क्रम में अध्यापक को उनको सक्रिय सहभागिता के लिए शामिल करना चाहिए।

118. बच्चों के अधिगम को सुगम बनाने के लिए अध्यापकों को एक अच्छे कक्षायी परिवेश का सृजन करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के अधिगम परिवेश का सृजन करने के लिए नीचे दिए गए कथनों में से कौन-सा सही नहीं है?

(a) बच्चे के प्रयासों को स्वीकृति

(b) अध्यापकों के अनुसार कार्य करना

(c) बच्चे को स्वीकार करना

(d) अध्यापक का सकारात्मक रुख

CTET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (b) बच्चों के अधिगम को सुगम बनाने के लिए अध्यापकों को एक अच्छे कक्षायी परिवेश का सृजन करने की आवश्यकता होती है जिसके अन्तर्गत बच्चों के द्वारा किये गये प्रयासों को स्वीकृति देना एवं उन्हें उस कार्य के लिए और ज्यादा उत्साहित करना, इसके लिए उन्हें बच्चों के साथ रहकर उन्हें स्वीकार करना होगा एवं अध्यापक को अपने रुख को बच्चे के प्रति सकारात्मक रखना होगा। यदि अध्यापक अपने अनुसार बच्चों से कार्य करवाता है तो इससे बच्चे के ऊपर मानसिक प्रभाव पड़ता है।

119. एक प्रभावी कक्षा में :

(a) बच्चे अपने अधिगम को सुगम बनाने के लिए मार्गदर्शन एवं सहयोग हेतु शिक्षक से सहायता लेते हैं।

(b) बच्चे हमेशा उत्सुक और तैयार रहते है, क्योंकि शिक्षक उनकी प्रत्यास्मरण योग्यता का आकलन करने के लिए नियमित रूप से परीक्षा लेता रहता है।

(c) बच्चे शिक्षक से डरते हैं, क्योंकि वह मौखिक और शारीरिक दंड का प्रयोग करता है।

(d) बच्चे शिक्षक का सम्मान नहीं करते हैं और जैसा उन्हें अच्छा लगता है वैसा ही करते हैं।

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans: (a) प्रभावी कक्षा में कक्षा का वातावरण सौहार्दपूर्ण होता है जिसमें छात्र स्वयं को आसानी से समायोजित कर सकते हैं तथा अपनी समस्या अपने शिक्षक के सामने रख सकते हैं और बच्चे शिक्षक को अपना मार्गदर्शक मानते हैं जो समय-समय पर उन्हें निर्देशित करते हैं तथा समस्या समाधान में सहयोग भी करते हैं।

120. बच्चों में ज्ञान की रचना करने और अर्थ का निर्माण करने की क्षमता होती है। इस परिप्रेक्ष्य में एक शिक्षक की भूमिका है–

(a) तालमेल बैठाने वाले की

(b) संप्रेषक और व्याख्याता की

(c) सुगमकर्ता की

(d) निर्देशक की

CTET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (c) बच्चों में ज्ञान की रचना करने तथा अर्थ का निर्माण करने की क्षमता विकसित करने के लिए शिक्षक को सुगमकर्ता की भूमिका अदा करनी चाहिए। उसे ऐसे शिक्षण अधिगम परिस्थिति का निर्माण करना चाहिए जिसमें छात्र स्वयं अपने क्रियाकलापों से सीख सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ–1968, 1986, 1993

121. भावात्मक एकता समिति के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर: डा. सम्पूर्णानन्द

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-भावात्मक एकता को विकसित करने के लिए शिक्षा परम आवश्यक है। अत: भारत के केन्द्रिय शिक्षा मंत्रालय ने सन् 1961 में एक भावात्मक समिति स्थापित की जिसका उद्देश्य ऐसे सुझावों को देना था जिनसे सभी विघटनकारी प्रवृत्तियों का अंत हो जाये। इस समिति के अध्यक्ष स्वर्गीय डा. सम्पूर्णानन्द को बनाया गया।

122. राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की शुरुआत कब हुई?

उत्तर: सन् 1988 में

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-सन् 1988 ई. में देश में पूर्ण साक्षरता प्राप्ति हेतु 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन' की शुरुआत की गयी और लक्ष्य रखा गया कि सन् 2005 तक निरक्षरता का पूर्णत: उन्मूलन कर दिया जाय। इसका उद्देश्य ऐसे निरक्षरों को साक्षर बनाना है जो औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत नहीं आते और जिनकी आयु 15 वर्ष से 35 वर्ष के बीच है। सन् 1989 में अर्नाकुलम, केरल में पूर्ण साक्षरता ने इस मिशन के लिए आदर्श का काम किया।

123. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के अनुसार शिक्षा पर निवेश कुल राष्ट्रीय उत्पादन का प्रतिशत होना चाहिए

(a) 6% (b) 10% (c) 4% (d) 3%

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) भारत के प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा शिक्षा में सुधार के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 लागू किया गया जिसमें शिक्षा के लिए धन की कमी को पूरा करने के लिए कुल GDP का 6% शिक्षा पर खर्च करने का प्रावधान किया गया था। यही सुझाव 1964 में कोठारी आयोग द्वारा भी किया गया था।

124.'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' परिणाम था-

(a) कोठारी आयोग का
(b) राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रचना - 2005
(c) राष्ट्रीय शैक्षिक योजना - 1986
(d) राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रचना - 2000

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) राष्ट्रीय शैक्षिक योजना 1986 (National Education Policy 1986) प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीवगांधी के कार्यकाल में लाया गया इसी योजना के अन्तर्गत Operation Blackboard नाम का अभियान चलाने का संकेत दिया गया। इस अभियान के अनुसार किसी भी मौसम में काम देने लायक कम से कम दो बड़े कमरे, दो शिक्षक जिनमें कम से कम एक महिला हो, आवश्यक खिलौने, ब्लैकबोर्ड, नक्शे, चार्ट आदि शिक्षण सामग्री की व्यवस्था होनी चाहिए।

अन्य

125. NCTE का पूर्ण रूप क्या है?

(a) National Council of Technical Education
(b) National Curriculum for Technical Education
(c) National Council of Teacher Education
(d) National Curriculum for Teacher Education

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) NCTE - National Council of Teacher Education

126.सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रस्तावित समूह-परियोजना गतिविधि ..... का एक सशक्त साधन है।

(a) रोजमर्रा के शिक्षण से होने वाले तनाव को दूर करने
(b) अनेकता में एकता की संकल्पना का प्रचार-प्रसार करने
(c) सामाजिक भागीदारिता को सुगम बनाने
(d) शिक्षकों के भार को हल्का करने

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (c) सी. बी. एस. ई. द्वारा प्रस्तावित समूह-परियोजना गतिविधि सामाजिक भागीदारिता को सुगम बनाने का एक सशक्त साधन है।

127. अनुच्छेद में नागरिकों के मूलभूत कर्तव्यों की चर्चा है?

उत्तर: अनुच्छेद 51 ए में

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-नागरिकों के मूल कर्तव्य 1976 में सरकार द्वारा गठित स्वर्णसिंह समिति की सिफारिशों पर 42वें संशोधन द्वारा संविधान के अनुच्छेद 51ए में जोड़े गये थे। मूल रूप से संख्या में 10, मूल कर्तव्यों की संख्या 2002 में 86वें संविधान संशोधन द्वारा 11 कर दी गयी। 11वे मूल कर्तव्य के अनुसार 'यदि आप माता-पिता या संरक्षक हैं तो 6 वर्ष से 14 वर्ष की आयु वाले अपने या प्रतिपाल्य बच्चे को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान करे।'

128. मानक कौन निर्धारित करता है?

उत्तर: एन.सी.टी.ई. या राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद का मूल उद्देश्य समूचे भारत में अध्यापक शिक्षा प्रणाली का नियोजित और समन्वित विकास करना, अध्यापक शिक्षा प्रणाली में मानदण्डों और मानको का विनियमन तथा उन्हे समुचित रूप से बनाये रखना है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद भारत सरकार की एक संस्था है, जिसकी स्थापना राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद अधिनियम, 1993 के अंतर्गत 17 अगस्त सन् 1995 में की गयी थी।

129. एन. सी. ई. आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा कब प्रस्तुत की गई ?

(a) 1986 (b) 1992
(c) 2005 (d) 2009

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा सन् 2005 में प्रस्तुत की गयी। इसके मार्गदर्शी सिद्धान्त निम्न हैं–
(1) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ा जाये।
(2) पढ़ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त किया जाये।
(3) पाठ्चर्या, पाठ्यपुस्तक केन्द्रित न होकर बाल केन्द्रित हो।
(4) कक्षा–कक्ष को गतिविधियों से जोड़ा जाये।
(5) राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति आस्थावान विद्यार्थी तैयार हों।

130. एन.सी.ई.आर. टी. ने शैक्षिक संदर्भ में निम्नलिखित मूल्यों में से किसको स्वीकार किया है?

(a) सफाई एवं सच्चाई (b) श्रम
(c) समानता एवं सहयोग (d) उपर्युक्त सभी

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (d) एन.सी.ई.आर.टी.ने शैक्षिक संदर्भ में समानता एवं सहयोग को स्वीकार किया है। यहाँ समानता से तात्पर्य सामान्य तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समान शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने से है तथा सहयोग से तात्पर्य सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच सामाजिक अंत: प्रक्रियात्मक व्यवहार को सुदृढ़ करने एवं सहयोगात्मक व्यवहार को विकसित करने से है। इसके अतिरिक्त एन.सी.ई.आर.टी. ने शैक्षिक संदर्भ में सफाई एवं सच्चाई तथा श्रम जैसे मूल्यों को भी स्वीकार किया है।

131. प्राथमिक विद्यालयों में मिड–डे मील कार्यक्रम प्रारंभ करने का प्रमुख कारण है–

(a) समाज विस्तार करना
(b) रोजगार वृद्धि करना
(c) नामांकन संख्या बढ़ाना
(d) अध्यापकों का विकास करना

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) प्राथमिक विद्यालयों में मिड-डे मील कार्यक्रमों का प्रारम्भ 15 अगस्त सन् 1995 को हुआ, जिसके मुख्य उद्देश्य निम्न हैं–
* बच्चों के पोषण स्तर में सुधार करना।
* विद्यालयों में नामांकन संख्या बढ़ाना।
* ग्रीष्मावकाश के दौरान अकाल पीड़ित क्षेत्रों में प्रारम्भिक स्तर के बच्चों को पोषण सम्बन्धी सहायता प्रदान करना।

132.निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. मनोविज्ञान का प्रयोग कर रहा है?

(a) पाठ्यपुस्तकों का निर्माण (b) विद्यालय संगठन
(c) विषय निर्धारण (d) वित्तीय सहायता

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (a) पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में NCERT मनोविज्ञान का प्रयोग कर रहा है ताकि विद्यार्थियों के बौद्धिक भिन्नता तथा विभिन्न बौद्धिक स्तरों के अनुसार पाठ्यक्रम लागू किया जा सके।

133. इनमें से कौन-सा अनुच्छेद यह कहता है कि धर्म और भाषा के आधार पर आधारित अल्पसंख्यक अपने अनुसार शिक्षा संस्थानों को स्थापित कर चला सकते हैं?

(a) अनुच्छेद 29 (1) (b) अनुच्छेद 29 (2)
(c) अनुच्छेद 30 (1) (d) अनुच्छेद 30 (2)

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) भारतीय संविधान के भाग तीन के मौलिक अधिकार के अनु. 30(1) में इसका वर्णन किया गया है कि धर्म एवं भाषा के आधार पर कोई अल्पसंख्यक समुदाय अपने शिक्षा संस्थानों की स्थापना कर सकता है

134. निम्नलिखित में से कौन सी एजेंसी, भारत में स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार करने के लिए उत्तरदायी है?

(a) NCERT (b) NEUPA
(c) NCTE (d) RCI

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : NCERT (National Council of Educational Research and Training) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, भारत में स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार करने के लिए उत्तरदायी है। इस परिषद का गठन 1 सितम्बर, 1961 को सोसायटी अधिनियम के अंतर्गत, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में किया गया था।

135. सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रस्तावित समूह–परियोजना गतिविधि..... का एक सशक्त साधन हैं

(a) अनकेता में एकता की संकल्पना का प्रचर–प्रसार करने
(b) सामाजिक भागीदारी को सुगत बनाने
(c) शिक्षकों के भार को हल्का करने
(d) रोजमर्रा के शिक्षण से होने वाले तनाव को दूर करने

DSSSB PRT

Ans : (b) सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रस्तावित समूह–परियोजना गतिविधि सामाजिक भागीदारी को सुगत बनाने का एक सशक्त साधन है।

136. NCTE का पूर्ण रूप क्या है?

(a) National Council to Technical Education
(b) National Curriculum Technical Education
(c) National Council for Teacher Education
(d) National Curriculum for Teacher Education

DSSSB PRT

Ans : (c) NCTE का पूर्ण रूप है National Council for Teacher Education (राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद)। यह भारत सरकार की एक संस्था है, जिसकी स्थापना राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद अधिनियम, 1993 के अंतर्गत 17 अगस्त 1995 में की गयी थी। राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद का मूल उद्देश्य समूचे भारत में अध्यापक शिक्षा प्रणाली का नियोजित और समन्वित विकास करना, अध्यापक शिक्षा प्रणाली में मानदण्डों और मानकों का विनियमन तथा उन्हें समुचित रूप से बनाये रखना है।

137. राज्य स्तर पर कक्षा I से VIII तक की पाठ्यचर्या का निर्माण करती है–

(a) एस सी ई आर टी (b) एन सी टी ई
(c) एन सी ई आर टी (d) सीमेंट

DSSSB PRT

Ans : (a) राज्य स्तर पर कक्षा I से VIII तक की पाठ्यचर्या का निर्माण एस.सी.ई.आर.टी. (राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद) करती है। जबकि एन.सी.ई.आर.टी. राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली शिक्षा के लिए निर्देश एवं परामर्श देती है।

138. सी.बी.एस.ई. शिक्षार्थियों के लिए व्यक्तिगत गतिविधियों के स्थान पर सामूहिक गतिविधियों की संस्तुति करती है। ऐसा करने के पीछे विचार हो सकता है।

(a) व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के प्रति नकारात्मक संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से उबारना जो संपूर्ण अधिगम पर सामन्यीकृत हो सकती है
(b) प्रत्येक शिक्षार्थी के स्थान पर समूह में अवलोकन द्वारा शिक्षक के कार्य को सरल बनाने के लिए
(c) विद्यालयों के पास उपलब्ध समय को प्रासंगिक बनाना जबकि उनमें से अधिकांश के पास व्यक्तिगत गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं होता
(d) गतिविधि की ढांचागत लागत को कम करना

DSSSB PRT

Ans : (a) सी.बी.एस.ई. शिक्षार्थियों के लिए व्यक्तिगत गतिविधियों के स्थान पर सामूहिक गतिविधियों की संस्तुति करती है। ऐसा करने के पीछे यह विचार हो सकता है कि पहला तो उनमें सामाजिकता का विकास करना तथा दूसरा कि व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के प्रति नकारात्मक संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से उबारना जो सम्पूर्ण अधिगम पर सामान्यीकृत हो सकती है।

EXAM POINTS

- सिद्धान्त रूप में रचनावाद (Constructivism) बल देता है– **दुनिया के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्मित करने में शिक्षार्थी की भूमिका पर**
- प्राथमिक शिक्षक के लिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि– **यह बच्चों के व्यवहार को समझने में शिक्षक की सहायता करता है**
- आधुनिक मनोविज्ञान का अर्थ है– **व्यवहार का अध्ययन**
- शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष माना जाता है– **1920**
- एक बाल केन्द्रित कक्षा में बच्चे सामान्यत: सीखते हैं– **वैयक्तिक और सामूहिक दोनों रूपों में**
- बाल केन्द्रित शिक्षा का समर्थन किस विचारक द्वारा किया गया– **जॉन डीवी**
- प्रगतिशील शिक्षा के सन्दर्भ में ''समान शैक्षिक अवसर'' से अभिप्राय है कि सभी छात्र– **ऐसी शिक्षा पायें जो उनके लिए अनुकूलन हो तथा उनके भविष्य के कार्यों में सहायक हो**
- विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों के नियन्त्रण की दृष्टि से सरकारी संगठनों तथा संस्था के स्तर पर विभिन्न उपाय किए गए हैं। कौन-सा कारण सांस्थानिक स्तर से जुड़ा है जिसके कारण बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं– **जो बच्चे अनिवार्य पाठ्यचर्या को स्वीकार नहीं कर पाते उनके लिए विकल्पात्मक पाठ्यचर्या का न होना**
- शिक्षा को बाल-केन्द्रित शिक्षा माना जाता है, जब– **बालक की माँग, रुचि व अभिवृत्ति की प्राथमिकता होती है**
- बाल मनोविज्ञान के आधार पर सर्वोत्तम कथन है– **प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है**
- बाल मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु है– **बालक**
- बच्चों की त्रुटियों के बारे में सत्य कथन है– **बच्चों की त्रुटियाँ उनके सीखने का अंग है**
- बाल केन्द्रित शिक्षा में शामिल है– **बच्चों के लिए हस्तपरक गतिविधियाँ**
- प्रगतिवादी शिक्षा– **समस्या समाधान और आलोचनात्मक चिन्तन पर अधिक बल देती है**
- मनोविज्ञान प्रारम्भ में किस विषय का अंग था– **दर्शनशास्त्र**
- शिक्षार्थियों द्वारा की गयी गलतियाँ और त्रुटियाँ– **उनके चिन्तन को समझने के अवसर के रूप में देखी जानी चाहिए**
- बाल-केन्द्रित कक्षा-कक्ष को प्रदर्शित करती है– **एक कक्षा जिसमें शिक्षार्थी समूहों में बैठे हैं और शिक्षिका बारी-बारी से प्रत्येक समूह में जा रही है**
- 'बाल केन्द्रित' शिक्षाशास्त्र का अर्थ है– **बच्चों के अनुभवों और उनकी आवाज को प्रमुखता देना**
- मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है– **बाल केन्द्रित शिक्षा**
- किस व्यवहारवादी का मानना है कि अन्य व्यवहारों की भाँति भाषा भी क्रिया-प्रसूत अनुबंधन द्वारा सीखी जाती है– **स्किनर**
- मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का परित्याग किया फिर अपने मन का और फिर अपनी चेतना का, अभी वह एक प्रकार के व्यवहार को संजोये हैं, कथन है– **वुडवर्थ**
- स्मिथ के शिक्षण को त्रिधुवी प्रक्रिया में कार्यवाहक माना जाता है– **शिक्षक को**
- भारत के संविधान में किसके लिए नि:शुल्क अनिवार्य शिक्षा है– **14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए**
- बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप कौन-सी विधि का चयन करेंगे– **बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे**
- शिक्षण से अधिगम पर बल देने वाला परिवर्तन हो सकता है– **बाल-केन्द्रित शिक्षा पद्धति अपनाकर**
- जॉन डी.वी. द्वारा समर्थित 'लैब विद्यालय' के उदाहरण हैं– **प्रगतिशील विद्यालय**
- शिक्षा की प्रक्रिया के अंग होते हैं– **शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम**
- प्रोजेक्ट शिक्षण विधि सम्बन्धित है– **किलपैट्रिक, जॉन डी. वी.**
- बाल-केन्द्रित कक्षा की एक प्रमुख विशेषता है, कि उसमें– **शिक्षक के मार्गदर्शन से शिक्षार्थियों को अपनी स्वयं की समझ का निर्माण करने के लिए उत्तरदायी बनाया जाता है**
- ''बच्चों में ज्ञान की रचना करने और अर्थ का निर्माण करने की क्षमता होना।'' इस परिप्रेक्ष्य में एक शिक्षक की भूमिका है– **निर्देशक की**
- प्रगतिशील शिक्षा में अपरिहार्य है, कि कक्षा-कक्ष– **लोकतान्त्रिक होता है और समझने के लिए बच्चों को पर्याप्त स्थान दिया गया होता है**

08.

बौद्धिकता के निर्माण का विवेचित संदर्श एवं बौद्धिकता मापन

बुद्धि का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. तर्कसंगत चिंतन शब्द निम्न से संबंधित है:

(a) व्यक्तित्व (b) मनोवृत्ति
(c) बुद्धि (d) प्रेरणा

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) तर्कसंगत चिंतन शब्द बुद्धि से सम्बन्धित है। वैश्लर ने बुद्धि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि– ''बुद्धि किसी व्यक्ति के द्वारा उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने, तार्किक चिंतन करने तथा वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से क्रिया करने की सामूहिक योग्यता है।'' हावर्ड गार्डनर ने भी बुद्धि के एक प्रकार के रूप में तार्किक गणितीय बुद्धि को परिभाषित किया है।

2. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा बुद्धि के बारे में सही है?

(a) बुद्धि एक एकात्मक कारक तथा एक एकाकी विशेषक है।
(b) बुद्धि बहु–आयामी है तथा जटिल योग्यताओं का एक समूह है।
(c) बुद्धि एक निश्चित योग्यता है जो जन्म के समय ही निर्धारित होती है।
(d) बुद्धि को मानकीकृत परीक्षणों के प्रयोग से सटीक रूप से मापा एवं निर्धारित किया जा सकता है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) बुद्धि बहुआयामी है तथा जटिल योग्यताओं का एक समूह है। **राबिन्सन** तथा **राबिन्सन** ने बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा है, ''बुद्धि से तात्पर्य संज्ञानात्मक व्यवहारों के उस सम्पूर्ण समूह या वर्ग से है जो सूझ के साथ समस्या समाधान करने, नयी परिस्थितियों से अनुकूलन करने, अमूर्त ढंग से सोचने तथा अपने अनुभवों से लाभ उठाने संबन्धी किसी व्यक्ति की क्षमता को इंगित करता है।'' इसी प्रकार **हावर्ड गार्डनर** ने कहा है कि बुद्धि का स्वरूप एकाकी न होकर बहुप्रकारीय होता है। इन्होंने मुख्य रूप से कुल आठ प्रकार की बुद्धि का उल्लेख किया था।

3. बुद्धि के लिए कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) बुद्धि सीखने की योग्यता है
(b) बुद्धि समस्या हल करने की योग्यता है
(c) बुद्धि परिश्रम करने की योग्यता है
(d) बुद्धि नवीन परिस्थिति के साथ अनुकूलन करने की योग्यता है

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) बुद्धि वह शक्ति है जिसके द्वारा नवीन परिस्थियों में व्यक्ति खुद को अनुकूलित कर सकता है साथ ही समस्याओं को हल कर सकता है और कुछ नया सीख सकता है। बुद्धि परिश्रम करने की योग्यता नहीं है, बल्कि कम परिश्रम में अधिकतम उत्पादन करने की शक्ति है।

4. निम्न में से कौन कथन बुद्धि के बारे में सत्य नहीं है?

(a) यह एक व्यक्ति की मानसिक क्षमता है
(b) यह सामंजस्य/अनुकूलन स्थापित करने में सहायक है
(c) यह व्यवहार की गुणवत्ता से आँकी जाती है
(d) यह स्थाई एवं अपरिवर्तनशील विशेषता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) बुद्धि वह साधन है जो व्यक्ति के मानसिक क्षमता को दर्शाता है तथा व्यक्ति अपने वातावरण के साथ खुद को समायोजित एवं अनुकूलित कर पाता है। बुद्धि के द्वारा ही व्यक्ति के किए गये कार्यों का सही तरीके से आकलन करके उसके कार्यो की सफलता या असफलता को जाँचते है। बुद्धि अस्थाई तथा परिवर्तनशील होती है और अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-2 व्यवहार को अपनाती है।

5. मनुष्य का व्यवहार मुख्यत: किससे प्रेरित होता है?

(a) कौशल (b) अभिक्षमता
(c) अभिवृत्ति (d) बुद्धि।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) मनुष्य का व्यवहार मुख्यत: बुद्धि से प्रेरित होता है। तथा वह बुद्धि के द्वारा ही अपने व्यवहार को दूसरों के साथ समायोजित करता है।

6. बुद्धि है–

(a) सामर्थ्यों का एक समुच्चय
(b) एक अकेला और जाती विचार
(c) दूसरे को अनुकरण करने की योग्यता
(d) एक विशिष्ट योग्यता

DSSSB PRT
CTET 2016 (I-V)

Ans : (a) बुद्धि कार्य करने की योग्यता है जिसमें सामर्थ्यों का एक समुच्चय होता है जिसके माध्यम से व्यक्ति विभिन्न समस्याओं का विभिन्न प्रकार से समाधान करते हैं।

7. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बुद्धि

(a) सीखने की क्षमता है (b) अमूर्त चिन्तन की योग्यता है
(c) या तो (a) या (b) (d) (a) और (b)

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) फ्रीमैन ने बुद्धि को विश्लेषित कर इसको तीन रूपों में परिभाषित किया है-

1. अमूर्त चिंतन के रूप में योग्यता
2. सीखने की योग्यता
3. समायोजन करने की योग्यता

8. हमारे पास बुद्धिमत्ता के लिए संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण क्यों है?

(a) बुद्धिमत्ता परीक्षण, भाषा और शिक्षा के अंतर से मुक्त होने चाहिए।
(b) सांस्कृतिक बोध बुद्धि का एक हिस्सा है।
(c) बुद्धि सांस्कृतिक–आधारित है।
(d) बुद्धिमत्ता को विकसित किया जा सकता है।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : बुद्धिमत्ता के लिए संस्कृति–निष्पक्ष परीक्षण इसलिए आवश्यक है ताकि बुद्धिमत्ता परीक्षण को भाषा और शिक्षा के अंतर से मुक्त किया जा सके। निष्पक्ष बुद्धिमत्ता परीक्षण सभी सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के बच्चों पर समान रूप से लागू किया जा सकता है जिसका निष्पक्ष परिणाम प्राप्त होता है।

9. बुद्धिमता, _____ और पर्यावरण दोनों का एक उत्पाद है।

(a) संस्कृति (b) समुदाय
(c) आनुवंशिकता (d) समाज

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बुद्धिमत्ता आनुवंशिकता और पर्यावरण दोनों का एक उत्पाद है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बालक के बौद्धिक विकास में वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों का योगदान होता है। वंशानुक्रम या आनुवंशिकता पर हमारा नियंत्रण लगभग नहीं के बराबर होता है, जबकि वातावरण को हम इच्छानुसार परिवर्तित करके बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास अधिकतम स्तर तक कर सकते हैं।

10. कई क्षमताओं को एक साथ रखा जाना ..... कहलाता है।

(a) बुद्धि (b) रूचियाँ
(c) मनोवृत्ति (d) व्यक्तित्व

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : कई क्षमताओं को एक साथ रखा जाना बुद्धि कहलाता है। इसी प्रकार वैश्लर ने बुद्धि का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''बुद्धि किसी व्यक्ति के द्वारा उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने, तार्किक चिंतन करने तथा वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से क्रिया करने की सामूहिक योग्यता है।'' इस प्रकार कहा जा सकता है कि बुद्धि में सूझ के साथ समस्या समाधान करने, नयी परिस्थितियों से अनुकूलन करने, अमूर्त ढंग से सोचने तथा अपने अनुभवों से लाभ उठाने आदि क्षमताओं का संकलन होता है।

बुद्धि के प्रकार

11. किस प्रकार के विकास से एकाग्रता तथा सृजनात्मकता का संबंध है?

(a) सामाजिक विकास (b) नैतिक विकास
(c) बौद्धिक विकास (d) संवेगात्मक विकास

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (c) एकाग्रता तथा सृजनात्मकता व्यक्ति के बौद्धिक स्तर तथा चिंतन पर आधारित होता है, एकाग्रता से चिंतन स्तर को और ऊपर लाया जा सकता है जिससे सृजनात्मकता की उत्पत्ति होती है।

12. बुद्धि समावेश करती है-

(a) अपसारी चिन्तन का
(b) अभिसारी चिन्तन का
(c) समालोचित चिन्तन का
(d) विचारशील चिन्तन का

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (a) बुद्धि अपसारी चिंतन का समावेश करती है। अपसारी चिंतन में व्यक्ति भिन्न–भिन्न दिशाओं में चिंतन कर समस्या का समाधान करने की कोशिश करता है। जब वह भिन्न–भिन्न दिशाओं में चिंतन करता है तो स्वभावत: वह समस्या के कई सम्भावित उत्तरों पर सोचता है और अपनी ओर से कुछ नये एवं मूल चीजों को जोड़ने की कोशिश करता है।

बुद्धि को निर्धारित करने वाले कारक

13. निम्नलिखित में से बौद्धिक वातावरण को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन-सा है?

(a) विद्यालय का वातावरण
(b) परिवार का वातावरण
(c) पास-पड़ोस का वातावरण
(d) सांस्कृतिक वातावरण

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (a) बौद्धिक वातावरण को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक विद्यालय का वातावरण होता है क्योंकि विद्यालय के वातावरण में ही बालक के बुद्धि स्तर को बढ़ाया तथा नियंत्रित किया जाता है।

14. एक जुड़वाँ भाइयों में से एक को सामाजिक–आर्थिक रूप से धनाढ्य परिवार द्वारा गोद लिया जाता है और दूसरे को एक निर्धन परिवार द्वारा। एक वर्ष के बाद उनके बुद्धि–लब्धांक के बारे में निम्नलिखित में से क्या अवलोकित होने की सर्वाधिक सम्भावना है?

(a) धनी सामाजिक–आर्थिक परिवार वाले लड़के की अपेक्षा निर्धन परिवार वाला लड़का अधिक अंक प्राप्त करेगा
(b) सामाजिक–आर्थिक स्तर बुद्धि लब्धांक को प्रभावित नहीं करता
(c) निर्धन परविार वाले लड़के की अपेक्षा धनी सामाजिक–आर्थिक परिवार वाला लड़का अधिक अंक प्राप्त करेगा
(d) दोनों समान रूप से अंक प्राप्त करेंगे

DSSSB PRT
CTET 2012 (I-V)

Ans : (b) बालक का सामाजिक–आर्थिक परिवेश उसके बुद्धि लब्धांक को प्रभावित नहीं करता है बल्कि वंशानुक्रम और वातावरण उसके बुद्धि लब्धि को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारक होते हैं।

बुद्धि मापन का इतिहास

15. बुद्धिलब्धि या आइ.क्यू. की आवधारणा दी गई थी–

(a) गैलटॉन के द्वारा (b) बिने के द्वारा
(c) स्टर्न के द्वारा (d) टर्मन के द्वारा

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : जर्मन मनोवैज्ञानिक विलियम स्टर्न तथा कुहलमान ने सन् 1912 में मानसिक आयु व वास्तविक आयु के अनुपात को बुद्धि लब्धि या संक्षेप में आई.क्यू (I.Q.) के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया। परन्तु आई.क्यू का प्रयोग सन् 1916 में टरमैन के द्वारा स्टैनफोर्ड–बिने परीक्षण के प्रकाशन के उपरान्त ही प्रचलित हो पाया था।

16. मानसिक आयु का सम्प्रत्यय सबसे पहले किसने बताया–

(a) बिने–साइमन परीक्षण–1905
(b) बिने–साइमन परीक्षण–1908
(c) बिने–साइमन परीक्षण–1911
(d) बिने–साइमन परीक्षण–1916

(DSSSB ASSISTANT TEACHER EDUCATION DEP.)

Ans. (b) **:** वर्ष 1905 के बुद्धि मापन के क्षेत्र में प्राप्त अपनी सफलता से उत्साहित बिने तथा साइमन ने अपने इस परीक्षण में सुधार करके सन् 1908 में इसे नवीन रूप में प्रस्तुत किया। मानसिक आयु के सम्प्रत्यय का प्रतिपादन भी बिने ने इस परीक्षण के दौरान किया, उसने कहा कि जिस आयु के लिए अपेक्षित मानसिक कार्यों को कोई बालक सफलतापूर्वक कर लेता है, उसे बालक की मानसिक आयु कही जा सकती है, भले ही उसकी वास्तविक आयु इससे कम या अधिक क्यों न हो।

17. 1908 में प्रथम बिनेट–साइमन परीक्षण संशोधन निर्गत हुआ

(a) 1911 (b) 1912
(c) 1913 (d) 1914

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Ans. (a) **:** अल्फ्रेड बिने तथा थिओडोर साइमन नामक दो व्यक्तियों ने मिलकर प्रथम बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया जिसे 1905 का 'बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण' कहा गया। इसमें कुल 30 प्रश्न थे। बिने तथा साइमन ने इस परीक्षण में सुधार करके 1908 में इसे नवीन रूप में प्रस्तुत किया। अब इस परीक्षण में प्रश्नों की संख्या बढ़ाकर 59 कर दिया गया तथा इन्हें आयुवार (3 वर्ष से 13 वर्ष तक के) वर्गों में बाँटा गया। मानसिक आयु का सम्प्रत्यय भी इसी परीक्षण के दौरान दिया गया। सन् 1911 में बिने साइमन परीक्षण को पुन: परिमार्जित किया गया।

18. अमेरिका में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का परीक्षण..... में शुरू हुआ

(a) अनुभव (b) समूचे
(c) संयोजन (d) समूहों

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Ans. (d) **:** अमेरिका में प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का परीक्षण समूहों में शुरू हुआ।

19. बुद्धि लब्धि मापने के जन्मदाता हैं

(a) स्टर्न (b) बिने
(c) टरमैन (d) उपरोक्त में कोई नहीं

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (c) बिने ने प्रथम बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया तथा मानसिक आयु का सम्प्रत्यय दिया। विलियम स्टर्न तथा कुहलमान ने सन् 1912 में मानसिक आयु व वास्तविक आयु के अनुपात को बुद्धि लब्धि (IQ) के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया। सन् 1916 में टरमैन ने मानसिक आयु व वास्तविक आयु में 100 का गुणा करके बुद्धि–लब्धि ज्ञात करने की विधि का निर्माण किया जिसे वर्तमान में मान्यता प्राप्त है। इसलिए टरमैन को बुद्धि–लब्धि मापने का जन्मदाता माना जाता है।

20. किसने सबसे पहले बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया?

(a) डेविड वैश्लर (b) एल्फ्रेड बिने
(c) चाल्स एडवर्ड स्पीयरमैन (d) रॉबर्ट स्टर्नबर्न

DSSSB PRT

Ans : (b) अल्फ्रेड बिने तथा थियोडोर साइमन नामक दो व्यक्तियों के विशेष योगदान से प्रथम बुद्धि परिक्षण का निर्माण हुआ तथा इसे 1905 का 'बिने–साइमन बुद्धि परीक्षण' कहा गया।

21. 'स्टैनफोर्ड-बिने परीक्षण' मापन करता है

(a) व्यक्तित्व का (b) पढ़ने की दक्षता का
(c) बुद्धि का (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UPTET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) 'स्टैनफोर्ड बिने-परीक्षण' बुद्धि का मापन करता है। सन् 1905 में बिने ने अपने सहयोगी साइमन के साथ मिलकर आधुनिक प्रकार का सबसे पहला सफल बुद्धि परीक्षण तैयार किया था। बाद में (1916) अमेरिका के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लेविस एम टरमैन ने अमेरिका के बालकों की बुद्धि मापने के लिए स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण का निर्माण किया।

22. बुद्धिलब्धि अवधारणा के प्रथम प्रतिपादक कौन है?

(a) जे.पी. गिलफोर्ड (b) अलफ्रेड बिने
(c) जे.एस. ब्रूनर (d) विलियम स्टर्न

DSSSB PRT

Ans : (d) जर्मन मनोवैज्ञानिक विलियम स्टर्न तथा कुहलमान ने सन 1912 में मानसिक आयु व वास्तविक आयु के अनुपात को बुद्धि–लब्धि (IQ) के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया। परन्तु IQ का प्रयोग सन् 1916 में टरमैन के द्वारा स्टैनफोर्ड विने परीक्षण के उपरान्त ही प्रचलित हो पाया।

23. मानसिक आयु का प्रत्यय दिया था -

(a) बिने-साइमन ने (b) स्टर्न ने
(c) टर्मन ने (d) सिरिल बर्ट ने

UPTET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) मानसिक आयु का प्रत्यय सर्वप्रथम बिने–साइमन ने दिया था। बिने के अनुसार मानसिक आयु किसी के मानसिक विकास की वह अभिव्यक्ति है, जो उसके द्वारा किये जा सकने वाले मानसिक कार्यों से ज्ञात की जा सकती है तथा जिनकी उस आयु विशेष के सामान्य बालकों से सफलतापूर्वक करने की अपेक्षा रहती है।

24. मानसिक आयु के प्रत्यय का सर्वप्रथम प्रयोग किया

(a) थॉर्नडाइक (b) गिल्फर्ड
(c) स्पीयरमैन (d) बिने-साइमन

UPTET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) मानसिक आयु के सम्प्रत्यय का प्रतिपादन बिने के द्वारा किया गया था। स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति की मानसिक आयु उस व्यक्ति के मानसिक विकास की अवस्था को बताती है तथा इसके आधार पर बालकों को मंद बुद्धि, तीव्र बुद्धि आदि विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है। सन् 1905 में बिने ने अपने सहयोगी साइमन के साथ मिलकर पहला सफल बुद्धि परीक्षण किया।

25. किसने सबसे पहले बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया?

(a) एल्फ्रेड बिने (b) चार्ल्स एडवर्ड स्पीयरमैन
(c) रॉबटे स्टर्नबर्ग (d) डेविड वैश्लर

CTET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (a) प्रथम बुद्धि परीक्षण एल्फ्रेड बिने द्वारा विकसित किया गया। उन्हें बुद्धि परीक्षण के जन्मदाता के रूप में भी जाना जाता है।

26. बुद्धि परीक्षणों के जनक ..... है।

(a) फ्रांसिस गाल्टन (b) जेम्स कैटेल
(c) अल्फ्रेड बिने (d) कार्ल पियर्सन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बुद्धि परीक्षणों के जनक अल्फ्रेड बिने माने जाते हैं। 1905 में अल्फ्रेड बिने तथा थिओडोर साइमन नामक दो व्यक्तियों के योगदान से प्रथम बुद्धि परीक्षण का निर्माण हुआ था।

- बिने ने मानसिक आयु का संप्रत्यय दिया था।

बुद्धि परीक्षणों के प्रकार

27. प्राय: बालकों की बुद्धि का मापन किया जाता है

(a) अ-वाचिक समूह बुद्धि परीक्षणों के द्वारा
(b) वाचिक समूह बुद्धि परीक्षणों के द्वारा
(c) अ-वाचिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों के द्वारा
(d) वाचिक व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों के द्वारा।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a) बालकों के बुद्धि मापन अ-वाचिक समूह बुद्धि परीक्षण द्वारा किया जाता है। इस परीक्षण के अन्तर्गत बच्चों का सामूहिक रूप से परीक्षण किया जाता है तथा परीक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर उनके बुद्धि स्तर का निर्धारण किया जाता है।

28. रेवन का प्रोग्रेसिव मैट्रिसिज परीक्षण ..... परीक्षण का उदाहरण है।

(a) व्यक्तित्व
(b) मौखिक बुद्धि–लब्धांक
(c) संस्कृतिक–मुक्त बुद्धि लब्धांक
(d) अ–समूह बुद्धि लब्धांक

DSSSB PRT
CTET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) रेवन का प्रोग्रेसिव मैट्रिसिज परीक्षण, आर.बी. कैटल के संस्कृति मुक्त परीक्षण का एक उदाहरण है। ये दोनों परीक्षण व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण है जो किसी व्यक्ति पर एक ही बार में किया जाता है।

29. वैश्लर के बालकों के लिए बुद्धि मापनी में उप–परीक्षणों की कुल संख्या है–

(a) 5 (b) 8
(c) 11 (d) 14

DSSSB PRT

Ans : (c) डेविड वैश्लर ने बुद्धि मापन के लिए शाब्दिक तथा निष्पादन उप परिक्षणों को सम्मिलित करके 'वैश्लर प्रौढ़ बुद्धि मापनी' (WAIS) की रचना की। इस मापनी में कुल 11 उपपरीक्षण थे, जिसमें 6 शाब्दिक तथा 5 निष्पादन उपपरीक्षण थे।

30. बुद्धि का सामूहिक परीक्षण कौन-सा है?

(a) स्टैनफोर्ड–बिने परीक्षण
(b) कोह ब्लॉक डिजाईन टेस्ट
(c) आर्मी बीटा परीक्षण
(d) वैश्लर वयस्क बुद्धि मापनी

DSSSB PRT

Ans : (c) सामूहिक बुद्धि परीक्षण, प्रथम विश्वयुद्ध के समय सैनिकों एवं उनके अधिकारियों के सामूहिक बुद्धि परीक्षण के लिए निर्मित किया गया था। इसके अंतर्गत 'आर्मी अल्फा परीक्षण' 'आर्मी बीटा परीक्षण' का निर्माण किया गया। आर्मी अल्फा परीक्षण अंग्रेजी भाषा जानने वाले व्यक्तियों के लिए तथा आर्मी बीटा परीक्षण अंग्रेजी न जानने वाले व्यक्तियों व अशिक्षितों के लिए था।

31. बिने-साइमन परीक्षण द्वारा मापन किया जाता है

(a) सामान्य बुद्धि का (b) विशिष्ट बुद्धि का
(c) अभिवृद्धि का (d) अभिक्षमता का

UPTET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (b) विशिष्ट या व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण का मापन बिने साइमन बुद्धि परीक्षण द्वारा किया गया था। 1905 में बिने तथा साइमन नामक दो मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस परीक्षण की शुरूआत की गई थी।

32. चेस तथा कार्ड को निम्न में किसमें वर्गीकृत किया जा सकता है?

(a) लड़ाई वाले खेल (b) बौद्धिक खेल
(c) प्रायोगिक खेल (d) गतिमान खेल

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (b) चेस (शतरंज) एवं कार्ड बौद्धिक खेलों की श्रेणी में रखा जाता है।

33. प्रदर्शन बुद्धि को निम्न के द्वारा मापा जाता है-

(a) मौखिक क्षमता (b) समझ
(c) संख्यात्मक क्षमता (d) चित्र व्यवस्था

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : प्रदर्शन बुद्धि को चित्र व्यवस्था के द्वारा मापा जाता है। चित्र व्यवस्था एक प्रकार का अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण है जिसमें व्यक्ति को कुछ विशेष प्रकार के चित्रों को व्यवस्थित करना होता है। रावेन का प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स टेस्ट, भाटिया बैट्री आदि अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण के उदाहरण हैं।

भारत में बुद्धि परीक्षण

34. 12 वर्ष से 16 वर्ष के बच्चों के लिए हिन्दी में डॉ. एस. जलोटा ने कौन-सा परीक्षण प्रतिपादित किया है?

(a) अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण
(b) साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण
(c) आर्मी अल्फा परीक्षण
(d) चित्रांकन परीक्षण

UPTET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. एस. जलोटा ने एक सामूहिक बुद्धि परीक्षण का निर्माण सन् 1963 में किया जिसका नाम 'साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण' रखा। यह परीक्षण हिन्दी, उर्दू एवं आंग्लभाषा में तथा 12 वर्ष से 16 वर्ष के बच्चो के लिए था।

35. भाटिया बैटरी का प्रयोग निम्न में से किसके मापन हेतु किया जाता है -

(a) व्यक्तित्व (b) रुचि
(c) बुद्धि (d) अभिक्षमता

UPTET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) बुद्धि-भाटिया बैटरी बुद्धि मापने के लिए प्रयोग किया जाता है। भाटिया द्वारा भारत में बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया गया था यह एक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण है।

36. भाटिया बैटरी का प्रयोग निम्न में से किसके परीक्षण हेतु किया जाता है?

(a) व्यक्तित्व (b) बुद्धि
(c) सृजनात्मकता (d) अभिवृत्ति

UPTET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) भाटिया बैटरी का प्रयोग बुद्धि परीक्षण में किया जाता है। इसका निर्माण C.M. Bhatiya ने 1955 में किया था। इस परीक्षण को बैटरी-बुद्धि परीक्षण/क्रिया परीक्षण समूह कहा जाता है।

बुद्धि लब्धि एवं बुद्धि का वितरण

37. बुद्धिलब्धि (IQ) के आधार पर मन्दबुद्धिता के स्तर पर सही क्रम क्या है?

उत्तर: जड़ बुद्धि, अल्प बुद्धि, मंद बुद्धि/ 71 से कम, 71-80, 80-91

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-बुद्धिलब्धि के आधार पर मंदबुद्धिता के स्तर का सही क्रम है जड़ बुद्धि (Idiot), अल्प बुद्धि (Dull) तथा मंद बुद्धि (Feeble minded) टरमैन ने सन् 1916 में स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण के आधार पर बुद्धि लब्धि के वितरण की तालिका तैयार की जो निम्न है-

बुद्धिलब्धि	वर्ग
130 से अधिक	- प्रतिभाशाली (Genius)
121-130	- प्रखर बुद्धि (Superior)
111-120	- तीव्र बुद्धि (Above Average)
91-110	- सामान्य बुद्धि (Average)
81-90	- मंद बुद्धि (Feeble minded)
71-80	- अल्प बुद्धि (Dull)
71 से कम	- जड़ बुद्धि (Idiot, Imbecile)

38. बुद्धिलब्धि संबंधी विभिन्नताओं में कौन सम्मिलित नहीं है?

(a) औसत बुद्धिमान (b) बुद्धिमान
(c) कला में रुचि (d) मंदबुद्धि

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) कला में रुचि लेना बुद्धिलब्धि सम्बंधी विभिन्नताओं में शामिल नही है। बुद्धिलब्धि सम्बंधी विभिन्नताए निम्न है- प्रतिभाशाली, बुद्धिमान, मंदबुद्धि, अल्पबुद्धि,जड़बुद्धि आदि।

39. एक बच्चे की आयु 12 वर्ष तथा बुद्धि लब्धि 75 है, उसकी मानसिक आयु होगी–

(a) 8 वर्ष (b) 9 वर्ष
(c) 10 वर्ष (d) 12 वर्ष

(DSSSB ASSISTANT TEACHER EDUCATION DEP.)

Ans. (b) : बुद्धिलब्धि (I.Q.) $\Rightarrow \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

$$\cancel{75}^{3} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{12} \times \cancel{100}^{4}$$

$$3 = \frac{\text{मानसिक आयु}}{12} \times 4$$

$$\text{मानसिक आयु} \times 4 = 12 \times 3$$

$$\text{मानसिक आयु} = \frac{\cancel{12}^{3} \times 3}{\cancel{4}} = 9$$

40. एक 25 वर्ष का लड़का, जिसकी मानसिक आयु 16 वर्ष है, उसका आई क्यू क्या होगा?

(a) 64 (b) 75
(c) 80 (d) 100

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Ans. (a) : बुद्धिलब्धि (I.Q.) $\Rightarrow \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

$$= \frac{16}{\cancel{25}} \times \cancel{100}^{4}$$

बुद्धिलब्धि = 64 वर्ष

अत: 25 वर्ष के व्यक्ति की मानसिक आयु यदि 16 वर्ष है तो उसका IQ = 64 होगा। ऐसे बालक जिनकी बुद्धिलब्धि या IQ = 71 से कम होती है वे जड़ बुद्धि के अंतर्गत आते है।

41. अधिकांश लोगों का औसत कुछ बहुत ही उज्जवल होता है और कुछ बहुत ही पूर्ण रूप से स्थापित यह कथन किस सिद्धान्त पर आधारित है

(a) बुद्धि का वितरण
(b) बुद्धि की वृद्धि
(c) बुद्धि और लैंगिक विभिन्नता
(d) बुद्धि और प्रजाति विभिन्नता

DSSSB ASSISTANT NURSERY TEACHER

Ans. (a) : बुद्धि के वितरण के हिसाब से कुछ लोग प्रतिभाशाली तथा प्रखर बुद्धि सामान्य बुद्धि तथा कुछ निम्न बुद्धि के होते हैं।

42. एक विद्यार्थी की वास्तविक आयु 10 वर्ष है तथा मानसिक आयु 12 वर्ष है। उसकी बुद्धिलब्धि होगी

(a) 80 (b) 100
(c) 120 (d) 140

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) बुद्धिलब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

$$= \frac{12}{10} \times 100 = 120$$

43. यदि एक बच्चे की मानसिक आयु 5 वर्ष तथा वास्तविक आयु 4 वर्ष है तो उस बच्चे की IQ होती है

(a) 125 (b) 80
(c) 120 (d) 100

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (a) बुद्धिलब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100 = \frac{5}{4} \times 100 = 125$

44. रमेश तथा अंकित की समान बुद्धि-लब्धि 120 है। रमेश अंकित से दो वर्ष छोटा है। यदि अंकित की आयु 12 वर्ष हो, तो रमेश की मानसिक आयु होगी

(a) 9 वर्ष (b) 10 वर्ष
(c) 12 वर्ष (d) 14 वर्ष

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (c) I.Q. $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

$\because$ अंकित की उम्र = 12 वर्ष

$\therefore$ रमेश की उम्र = 12 वर्ष- 2 वर्ष = 10 वर्ष

रमेश का I.Q. = 120

अत: I.Q. $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100 \Rightarrow \frac{\text{मानसिक आयु}}{10} \times 100$

रमेश का I.Q. $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{10} \times 100$

120 = मानसिक आयु × 10

रमेश की मानसिक आयु $= \frac{120}{10} = 12$ वर्ष

अत: रमेश की मानसिक आयु 12 वर्ष है।

45. एक बालक जिसकी बुद्धिलब्धि 105 है उसे वर्गीकृत किया जाएगा:

(a) श्रेष्ठ बुद्धि (b) सामान्य से अधिक बुद्धि
(c) सामान्य बुद्धि (d) मन्द बुद्धि

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) टरमैन ने 1916 के स्टैनफोड-बिने परीक्षण के आधार पर बालकों के बुद्धि लब्धांक को मानक मानकर उनको निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया–

बुद्धि लब्धि (IQ)	**बालक**
130 से अधिक	प्रतिभाशाली
121-130	प्रखर बुद्धि
111-120	तीव्र बुद्धि
91-110	सामान्य बुद्धि
81-90	मंद बुद्धि
71-80	अल्प बुद्धि
71 से कम	जड़ बुद्धि

अत: 105 बुद्धि लब्धांक वाला बालक सामान्य बुद्धि का होगा।

46. एक बालक की वास्तविक आयु 12 वर्ष तथा मानसिक आयु 15 वर्ष है, तो उसकी बुद्धि-लब्धि होगी -

(a) 125 (b) 120
(c) 80 (d) 100

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (a) बुद्धिलब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

$= \frac{15}{12} \times 100 \Rightarrow 125$

47. निष्पत्ति लब्धि (AQ) का सूत्र होता है

(a) $AQ = \frac{MA}{CA} \times 100$ (b) $AQ = \frac{CA}{EA} \times 100$
(c) $AQ = \frac{EA}{CA} \times 100$ (d) $AQ = \frac{EA}{MA} \times 100$

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013
DSSSB PRT

Ans: (d) A.Q. $= \frac{EA}{MA} \times 100$

AQ = Achievement quotient (निष्पत्ति लब्धि)
EA = Educational Age (शैक्षिक आयु)
MA = Mental Age (मानसिक आयु)

48. किसी बालक की वास्तविक आयु 8 वर्ष है और मानसिक आयु 12 वर्ष है, तो उसकी बुद्धिलब्धि होगी-

(a) 135 (b) 140
(c) 145 (d) 150

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) बुद्धि लब्धि = (मानसिक आयु/ वास्तविक आयु) × 100

$= \frac{12}{8} \times 100 = 150$

49. 16 वर्षीय बच्चा बुद्धि लब्धि परीक्षण में 75 अंक प्राप्त करता है। उसकी मानसिक आयु ..... वर्ष होगी।

(a) 15 (b) 12
(c) 8 (d) 14

DSSSB PRT
CTET 2012 (I-V)

Ans : (b) बुद्धि लब्धांक = $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

प्रश्नानुसार–

बुद्धि लब्धांक = 75
मानसिक आयु = x
वास्तविक आयु = 16 वर्ष

अत: $75 = \frac{x}{16} \times 100$

= 12 वर्ष

अत: 16 वर्षीय बच्चा बुद्धि लब्धि परीक्षण में 75 अंक प्राप्त करता है तो उसकी मानसिक आयु 12 वर्ष होगी। ऐसे बालक अल्प बुद्धि के अंतर्गत शामिल किये जाते हैं।

50. जड़ बुद्धि वाले बालक का IQ (बुद्धि लब्धि) कितना होता है?

(a) 111–120 (b) 91–110
(c) 71–80 (d) 71 से कम

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

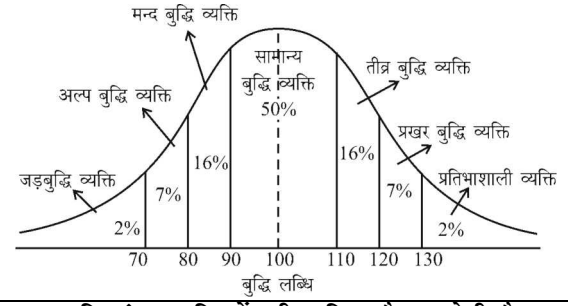
Ans : (d) जड़ बुद्धि वाले बालक का IQ (बुद्धि लब्धि) 71 से कम होता है। टरमैन के अनुसार इनकी संख्या लगभग 2% होती है।

51. एक 11 वर्षीय बच्चे ने 'स्टैनफोर्ड–बिने बुद्धि मापनी' में 130 अंक पाए। मान लीजिए कि एक सामान्य सम्भाव्य वक्र में $\mu = 100$ तथा $\sigma = 15$ है, तो उन 11 वर्षीय बच्चों के प्रतिशत की गणना कीजिए जिनसे इस बच्चे ने बेहतर अंक प्राप्त किए।

(a) 78 प्रतिशत (b) 80 प्रतिशत
(c) 98 प्रतिशत (d) 88 प्रतिशत

DSSSB PRT
CTET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) स्टैनफोर्ड–बिने बुद्धि मापनी का प्रयोग करके टरमैन ने 1916 ई. में बुद्धि लब्धि की तालिकाएँ तैयार की जिसके अनुसार 130 या उससे अधिक बुद्धि लब्धांक बच्चे प्रतिभाशाली वर्ग में आते हैं। इनकी संख्या मात्र 2% होती है। निम्न वक्र द्वारा इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है–



52. अधिकांश व्यक्तियों की बुद्धि औसत होती है, बहुत कम लोग प्रतिभा–संपन्न होते हैं और बहुत कम व्यक्ति मंद बुद्धि के होते हैं। यह कथन ..... के प्रतिस्थापित सिद्धांत पर आधारित है।

(a) बुद्धि और जातीय विभिन्नताओं
(b) बुद्धि के वितरण
(c) बुद्धि की वृद्धि
(d) बुद्धि और लैंगिक विभिन्नताओं

DSSSB PRT
CTET 2012 (VI-VIII)

Ans : (b) टरमैन ने 1916 में स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण के साथ बुद्धि लब्धि के वितरण की तालिकाएँ भी तैयार की थी। जिसके अनुसार अधिकांश व्यक्तियों (लगभग 50%) की बुद्धि औसत होती है, बहुत कम लोग (लगभग 2%) प्रतिभा सम्पन्न होते हैं और बहुत कम व्यक्ति मंद बुद्धि (लगभग 16%) के होते हैं। यह कथन बुद्धि के वितरण प्रतिस्थापित सिद्धांत पर आधारित है।

53. एक बालक की मानसिक आयु 12 वर्ष और शारीरिक आयु 10 वर्ष है। उसका बुद्धिलब्धांक होगा–

(a) 120 (b) 100
(c) 22 (d) 83

DSSSB PRT
CG TET 2011 (I-V)
UK TET 2014 (I-V)

Ans : (a) हल :–

$$\text{बुद्धि लब्धांक} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100 = \frac{12}{10} \times 100$$

बुद्धि लब्धांक = 120
अत: बालक का बुद्धि लब्धांक 120 होगा।

54. बच्चे की बुद्धिलब्धि 90 से 110 के मध्य है, वह है–

(a) सामान्य बुद्धि (b) प्रखर बुद्धि
(c) उत्कृष्ट बुद्धि (d) प्रतिभाशाली

DSSSB PRT
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (a) टरमैन ने वर्ष 1916 के स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण के आधार पर 90–110 बुद्धि लब्धि वाले बालकों को 'सामान्य बुद्धि' के अंतर्गत रखा है। इनकी संख्या सामान्यत: 50% होती है।

55. बुद्धि लब्धि की गणना का सही सूत्र निम्न में से कौन-सा है?

(a) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

(b) $\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}}$

(c) $\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}} \times 100$

(d) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु} \times 100}$

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (a) बुद्धि लब्धि = $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

56. कौन-सा बुद्धि लब्धि स्तर मन्दबुद्धि वाले बच्चों का प्रशिक्षण योग्य बुद्धि लब्धि स्तर कहलाता है?

(a) 70-79 (b) 50-69
(c) 36-49 (d) 35 एवं निम्न

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (*) टरमैन ने 1916 के स्टैनफोर्ड ने परीक्षण के साथ बुद्धिलब्धि के वितरण की तालिका इस प्रकार तैयार की है–

बुद्धिलब्धि की सीमाएँ	**वर्ग**
130 से अधिक	प्रतिभाशाली
121 – 130	प्रखर बुद्धि
111 – 120	तीव्र बुद्धि
91 – 110	सामान्य बुद्धि
81 – 90	मन्द बुद्धि
71 – 80	अल्प बुद्धि
71 से कम	जड़ बुद्धि

इस प्रकार 81 – 90 बुद्धि लब्धि वाले बच्चे मन्दबुद्धि के होते हैं।

57. पाँच वर्ष के मोहन की मानसिक आयु आठ वर्ष है। उसकी बुद्धि लब्धि कितनी है?

(a) 150 (b) 160
(c) 140 (d) 135

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) बुद्धिलब्धि = $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

$= \frac{8}{5} \times 100$

= 160 बुद्धिलब्धि

58. बुद्धि लब्धि निकालने का सूत्र है

(a) मानसिक आयु × वास्तविक आयु

(b) $\frac{\text{वास्तविक आयु}}{\text{मानसिक आयु}}$

(c) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

(d) वास्तविक आयु + मानसिक आयु

UPTET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) स्टर्न तथा कुहलमान ने सन् 1912 में बुद्धि लब्धि, जिसे संक्षेप में आई. क्यू. (I.Q.) कहते है का प्रतिपादन किया था।

बुद्धि लब्धि (I.Q.) $= \frac{\text{मानसिक आयु (M.A)}}{\text{वास्तविक आयु(C.A)}} \times 100$

टरमैन ने मानसिक आयु और वास्तविक आयु के अनुपात में 100 का गुणा करके बुद्धिलब्धि सम्प्रत्यय को विकसित किया।

59. टर्मन के अनुसार 90-100 बुद्धिलब्धि का बालक माना जाता है-

(a) मन्द बुद्धि (b) सामान्य बुद्धि

(c) श्रेष्ठ बुद्धि (d) क्षीण बुद्धि

UPTET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) टर्मन ने बुद्धिलब्धि का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है-

130 से अधिक	-	प्रतिभाशाली बुद्धि
121 से 130	-	प्रखर बुद्धि
111 से 120	-	तीव्र बुद्धि
91 से 110	-	सामान्य बुद्धि
81 से 90	-	मन्द बुद्धि
71 से 80	-	अल्प बुद्धि
71 से कम	-	जड़ बुद्धि

60. औसत बुद्धि वाले बालकों की बुद्धि लब्धि (I.Q.) ..... के बीच होगी।

(a) 50-59 (b) 70-89

(c) 90-109 (d) 110-129

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) साइमन-बिने परीक्षण का प्रयोग करके मनोवैज्ञानिक टरमन ने वर्ष 1916 में बुद्धिलब्धि के वितरण की तालिका तैयार की

बुद्धि लब्धि	बालक	बुद्धि लब्धि	बालक
130 से अधिक	प्रतिभाशाली	81-90	मन्दबुद्धि
121-130	प्रखर बुद्धि	70-80	अल्प बुद्धि
111-120	तीव्र बुद्धि	71 से कम	जड़ बुद्धि
91-110	सामान्य बुद्धि		

61. आठ वर्ष के सुधीर की मानसिक आयु दस वर्ष है। उसकी बुद्धिलब्धि कितनी है?

(a) 80 (b) 100

(c) 110 (d) 125

UPTET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (d) $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100 = \frac{10}{8} \times 100 = 125$

62. बुद्धिलब्धि के सम्बन्ध में क्या सत्य है?

(a) बौद्धिक आयु में व्युत्क्रमी सम्बन्धित

(b) कालानुक्रमिक आयु से प्रत्यक्षत: सम्बन्धित

(c) कालानुक्रमिक आयु से व्युत्क्रमी सम्बन्धित

(d) बौद्धिक तथा कालानुक्रमिक आयु दोनों से प्रत्यक्षत: सम्बन्धित

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) बुद्धिलब्धि तथा कालानुक्रमिक आयु (वास्तविक आयु) परस्पर व्यूतक्रमानुपातिक रूप से सम्बंधित होती है।

बुद्धिलब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{कालानुक्रमिक आयु}} \times 100$

बुद्धिलब्धि $\propto$ मानसिक आयु

बुद्धिलब्धि $\propto \frac{1}{\text{कालानुक्रमिक आयु}}$

बुद्धिलब्धि-मानसिक आयु की समानुपातिक होती है।

63. बुद्धि-लब्धांक के आधार पर विभिन्न समूहों में विद्यार्थियों का वर्गीकरण उनकी स्व-गरिमा को ..... है और उनके शैक्षणिक निष्पादन को ..... है।

(a) घटाता; घटाता (b) घटाता; प्रभावित नहीं करता

(c) बढ़ाता; घटाता (d) बढ़ाता; बढ़ाता

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (b) बुद्धि लब्धांक के आधार पर विभिन्न समूहों में विद्यार्थियों का वर्गीकरण उनकी स्व-गरिमा को घटाता है और उनके शैक्षणिक निष्पादन को प्रभावित नहीं करता है।

64. यदि किसी बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष है और कालानुक्रमिक आयु 10 वर्ष है तो उसका आईक्यू (बुद्धिमत्ता) ..... होगा।

(a) 80 (b) 120

(c) 125 (d) 100

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : यदि किसी बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष तथा कालानुक्रमिक आयु 10 वर्ष है तो उसका बुद्धिमत्ता (I.Q.)

बुद्धि लब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100$

$= \frac{12}{10} \times 100 = \boxed{120}$ होगा और बालक तीव्र बुद्धि (Above Average) वर्ग के अंतर्गत आयेगा।

65. किसी व्यक्ति के बुद्धिलब्धि को शुरू में उसकी..... आयु से विभाजित उस व्यक्ति की ..... आयु के अनुपात से दर्शाया जाता था।

(a) वास्तविक इरादे, स्टीरियोटापिंग

(b) कालानुक्रमिक, स्नायविक

(c) कालानुक्रमिक, मानसिक

(d) मानसिक, कालानुक्रमिक

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : किसी व्यक्ति के बुद्धि लब्धि को प्रारम्भ में उसकी मानसिक आयु से विभाजित उस व्यक्ति की कालानुक्रमिक या वास्तविक आयु के अनुपात से दर्शाया जाता था। इसका प्रतिपादन जर्मन मनोवैज्ञानिक विलियम स्टर्न तथा कुह्लमान ने सन् 1912 में किया था। बाद में टरमैन द्वारा वर्ष 1916 में मानसिक आयु व शारीरिक आयु के अनुपात को 100 से गुणा करके बुद्धि लब्धि को निकाला गया जो वर्तमान में प्रचलित है।

66. 13 वर्षीय मोहन नौंवी कक्षा का छात्र है, जिसकी मानसिक आयु 16 है। वह अपने बुद्धि स्कोर के आधार पर किस प्रकार का बच्चा है?

(a) मूर्ख या मंद (b) प्रतिभावान
(c) औसत से ऊपर (d) वरिष्ठ

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : नवीं कक्षा का छात्र मोहन जिसकी शारीरिक आयु 13 वर्ष तथा मानसिक आयु 16 वर्ष है,

इसकी बुद्धि लब्धि $= \frac{\text{मानासिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100$

$= \frac{16}{13} \times 100 = 123.07$ है।

अत: टरमैन के बुद्धि लब्धि तालिका वितरण के अनुसार, यह बालक वरिष्ठ या प्रखर बुद्धि (Superior) वर्ग के अंतर्गत आयेगा।

67. सभी मनुष्यों के बीच, बुद्धि का वितरण.....नहीं है।

(a) मध्यम (b) समान
(c) उपयुक्त (d) एक जैसा

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : सभी मनुष्यों के बीच, बुद्धि का वितरण समान नहीं होता है। रंग-रूप, शारीरिक संरचना, ज्ञान, स्वभाव, धर्म, वंश तथा अन्य अनेक गुणों में व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। यहीं कारण है कि विभिन्न शारीरिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक गुणों तथा क्षमताओं की दृष्टि से व्यक्ति में अंतर पाया जाता है। एक ही आयु या कक्षा के कुछ बालक मानसिक क्रियाओं को करने में तेज होते हैं, कुछ बालक औसत स्तर के तथा कुछ बालक कमजोर होते हैं। बालकों में इस प्रकार के अंतर प्राय: 'बुद्धि' के कारण होता है। इस संसार का प्रत्येक व्यक्ति या बालक बुद्धि की दृष्टि से अन्य व्यक्तियों या बालकों से कुछ भिन्न होता है।

68. एक 20 साल की लड़की की मानसिक उम्र 12 साल है। उसकी बुद्धिलब्धि निकालिए।

(a) 100 (b) 125
(c) 60 (d) 65

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : $\boxed{\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100}$

उपर्युक्त प्रश्नानुसार,

बुद्धि लब्धि $= \frac{12}{20} \times 100 = 60$

बालिका की बुद्धि 71 से कम है अर्थात् वह बालिका जड़ बुद्धि वर्ग के अंतर्गत आयेगी।

69. बुद्धि लब्धि है :

(a) शारीरिक आयु/मानसिक आयु × 100
(b) शारीरिक आयु × 100 /मानसिक आयु
(c) मानसिक आयु × 100 /शारीरिक आयु
(d) मानसिक आयु / शारीरिक आयु × 100

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) :

बुद्धि लब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{शारीरिक आयु}} \times 100$

टरमैन ने वर्ष 1916 में मानसिक आयु व शारीरिक आयु के अनुपात को 100 से गुणा करके बुद्धि-लब्धि का मान निकाला। इसके पहले विलियम स्टर्न तथा कुह्लमान ने वर्ष 1912 में मानसिक आयु व शारीरिक आयु के अनुपात को बुद्धि-लब्धि या आई. क्यू. (I.Q.) के रूप प्रयोग करने का सुझाव दिया था।

70. बुद्धि लब्धि (IQ) की अवधारणा का श्रेय किसे दिया जाता है?

(a) थियोडोर साइमन (b) स्पीयरमैन
(c) अल्फ्रेड बिने (d) विलियम स्टर्न

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (d) : बुद्धि लब्धि की अवधारणा का श्रेय विलियम स्टर्न को दिया जाता है। जर्मन मनोवैज्ञानिक विलियम स्टर्न तथा कुह्लमान ने सन् 1912 में मानसिक आयु व वास्तविक आयु के अनुपात को बुद्धि लब्धि या संक्षेप में आई.क्यू. (I.Q.) के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया था।

71. किसी व्यक्ति की मानसिक और कालानुक्रमिक आयु कौन-सी अवधारणा ध्यान में रखती हैं?

(a) संज्ञानात्मक भागफल (b) बुद्धिलब्धि
(c) बौद्धिक भागफल (d) कार्यात्मकता भागफल

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : किसी बालक की मानसिक आयु और कालानुक्रमिक आयु का उपयोग बालक की बुद्धि लब्धि मापने के लिए किया जाता है। मानसिक आयु की तुलना वास्तविक आयु से करने पर बालक के मानसिक विकास की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। मानसिक आयु व वास्तविक आयु का अन्तर एवं दिशा ही बालक की बौद्धिक श्रेष्ठता-निकृष्टता की स्थिति को इंगित करती है।

72. यदि बच्चे की कालानुक्रमिक आयु और मानसिक आयु 15 वर्ष है। तो उसे किस श्रेणी में वर्गीकृत किया जाएगा?

(a) उच्च (b) सामान्य बुद्धि
(c) प्रतिभाशाली (d) सामान्य बुद्धि से नीचे

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : यदि बच्चे की दैहिक आयु और मानसिक आयु दोनों 15 वर्ष है तो बालक की बुद्धि लब्धि 100 प्राप्त होगी जो बुद्धि लब्धि सीमा 91-110 के बीच आता है और इस बुद्धि लब्धि के बालक सामान्य बुद्धि वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

EXAM POINTS

- ''बुद्धि सीखने की योग्यता है'' कथन है **–बकिंघम**
- ''बुद्धि कार्य करने की एक विधि है'' कथन है **–वुडवर्थ**
- बुद्धिमापन का प्रयोग सबसे पहले किया था **–अल्फ्रेड बिने**
- ''बुद्धि अमूर्त चिन्तन की क्षमता है'' कथन है **–टरमैन**
- थार्नडाइक ने बुद्धि के तीन प्रकार माना है **–अमूर्त बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, गामक या यांत्रिक बुद्धि**

अमूर्त बुद्धि	ऐसी बुद्धि वाले मनुष्य कवि, साहित्यकार, चित्रकार, दार्शनिक होते हैं।
सामाजिक बुद्धि	इस प्रकार के बुद्धि वाले व्यक्ति व्यवसायी, कूटनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता होते हैं।
गामक या यांत्रिक बुद्धि	इस प्रकार की बुद्धि वाला मनुष्य कुशल कारीगर, मिस्त्री, इन्जीनियर हो सकता है।

बुद्धि के सिद्धान्त

बुद्धि के सिद्धान्त	प्रवर्तक
एक कारक सिद्धान्त	विने, टरमैन, स्टर्न
द्वि कारक सिद्धान्त	स्पीयर मैन
त्रि कारक सिद्धान्त	स्पीयर मैन
बहुतत्व या असत्तात्मक सिद्धान्त या आणविक सिद्धान्त	थार्नडाइक
बहुमानसिक योग्यता का सिद्धान्त	थार्नडाइक
6/7 या 6 या 7 कारक सिद्धान्त	थर्स्टन
वर्गघटक या संघ सत्तात्मक सिद्धान्त	जी. थामसन
क्रमिक महत्व का सिद्धान्त	वर्ट वर्नन
बुद्धि की संरचना सिद्धान्त	जे. पी. गिलफोर्ड
तरल-ठोस बुद्धि सिद्धान्त	आर. वी. कैटल
पदानुक्रमिक सिद्धान्त	फिलिप बनर्न
त्रितत्व सिद्धान्त	राबर्ट स्टैन वर्ग
बुद्धि का पास माडल	जे. पी. दास
संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त	जीन पियाजे
G.S. कारक सिद्धान्त	स्पीयर मैन
G.S. फेक्टर के प्रतिपादक	स्पीयर मैन

- तरल तथा ठोस बुद्धि का सिद्धांत **–कैटल तथा हार्न**
- सम्मिलित सिद्धान्त **–गिलफोर्ड**
- 120 कारक सिद्धान्त/150 कारक सिद्धांत/ 180 कारक सिद्धांत **–जे. पी. गिलफोर्ड**

बुद्धि परीक्षण

बुद्धि परीक्षण को सामान्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया गया है–

1. वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण
2. सामूहिक बुद्धि परीक्षण

1. वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण	वैयक्तिक शाब्दिक परीक्षण
	वैयक्तिक अशाब्दिक परीक्षण-
2. सामूहिक बुद्धि परीक्षण	सामूहिक शाब्दिक परीक्षण
	सामूहिक अशाब्दिक परीक्षण

- सामूहिक शाब्दिक बुद्धि परीक्षण **–आर्मी अल्फा टेस्ट सेना सामान्य वर्गीकरण परीक्षण**
- सामूहिक अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण **–आर्मी बीटा टेस्ट शिकागो अशाब्दिक टेस्ट**
- ऐसे बुद्धि परीक्षण, जिसमें भाषा का प्रयोग किया जाता है, कहा जाता है **–शाब्दिक बुद्धि परीक्षण**
- सामूहिक बुद्धि-परीक्षण का विकास सर्वप्रथम कब से हुआ है **–प्रथम विश्व युद्ध से**
- ऐसे बुद्धि-परीक्षण, जिसमें लकड़ी के गुटकों इत्यादि का प्रयोग करके बुद्धि परीक्षण किया जाता है, उसे किस नाम जाना जाता है **–अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण**

बुद्धि लब्धि मापन विधि

- बुद्धि लब्धि मापन का प्रतिपादन किया था **–टरमैन ने**

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

- **उदाहरण –** किसी बालक की मानसिक आयु 15 वर्ष है। उसकी वास्तविक आयु 12 वर्ष है तो उसकी बुद्धि लब्धि होगी

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{15}{12} \times 100 = 125$$

इस बुद्धि लब्धि का अर्थ है कि बालक प्रखर बुद्धि का है।

- जिनकी बुद्धि लब्धि 100 या इसके आस-पास होती है वे माने जाते है **–सामान्य बुद्धि**

- शैक्षिक लब्धि= $\frac{\text{शिक्षा आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$
- उपलब्धि-लब्धि= $\frac{\text{ज्ञान आयु}}{\text{मानसिक आयु}} \times 100$
- बुद्धि-लब्धि= $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$
- औसतन बुद्धि लब्धि वाले व्यक्ति पाये जाते है **–सामान्य बुद्धि (90-110) के बीच में**
- पी.पी.टी. का अर्थ है **–Paper Pencil Test कागज कलम परीक्षण**
- बुद्धि है **–ज्ञानार्जन क्षमता, विचार क्षमता, अनुभव क्षमता**
- बुद्धि के एक खण्ड सिद्धान्त के समर्थक है **–विने, टरमन, स्टर्न**
- सामूहिक बुद्धि परीक्षण में बचत होती है **–समय, धन और श्रम की**
- बुद्धि को सामाजिक बुद्धि, स्थूल बुद्धि तथा अमूर्त बुद्धि के रूप में विभाजित किया है **–थार्नडाइक**
- बुद्धि के 'संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त' दिया है **–जीन पियाजे**
- ''बुद्धि वही है, जो बुद्धि परीक्षण मापता है।'' मत है **–वोरिंग का**
- बुद्धि के बहुकारक सिद्धान्त के पिता है **–थार्नडाइक**
- बुद्धि के बहु-विधि सिद्धान्त के पिता है **–होवर्ड गार्नर**
- ''क्रिया-परीक्षण समूह'' देन है **–भाटिया की**
- ''शाब्दिक समूह परीक्षण'' देन है **–डॉ. जे. मोरे**
- बुद्धि का त्रि-आयामी सिद्धान्त है **–जे. पी. गिलफोर्ड का**
- बुद्धि के समूह-कारक सिद्धान्त के पिता है **–थर्सटन**
- पादानुक्रमिक बुद्धि सिद्धांत के पिता थे **–बर्नर**
- I.Q. को परिभाषित किया था **–विलियम स्टर्न**
- किस परीक्षण में 'समय' अधिक लगता है **–व्यक्तिगत**
- मूर्त बुद्धि को थार्नडाइक ने कहा है **–गामक या यांत्रिक बुद्धि**
- अलेक्जेण्डर का निष्पादन बुद्धि परीक्षण किस नाम से जाना जाता है? **–पास एलांग परीक्षण के नाम स**
- बुद्धि लब्धि एक सूचकांक (इन्डेक्स) है **–मानसिक विकास की दर**
- व्यक्ति की बुद्धिमत्ता बुद्धि के किस प्रकार पर निर्भर है **–सामान्य बुद्धि**
- स्पीयरमैन के अनुसार बुद्धि के निम्नलिखित प्रकारों में कौन-सी व्यक्ति की विशेषता दिखलाती है **–विशिष्ट बुद्धि**
- बुद्धि की प्रकृति के विषय में सामान्य और विशिष्ट गुण सिद्धान्त किसने उपस्थित किया **–स्पीयरमैन ने**
- बिना पढ़े-लिखे लोग के सामूहिक परीक्षण के लिये कौन-से परीक्षण अपनाये जाते है **–अवाचिक समूह बुद्धि परीक्षण**
- पढ़े-लिखे लोगों के सामूहिक परीक्षण के लिये कौन-से परीक्षण अपनाये जाते है **–वाचिक समूह बुद्धि परीक्षण**
- g- कारक का सिद्धान्त प्रतिपादित किया था **–स्पीयरमैन**
- मानसिक आयु की अवधारणा का सिद्धान्त प्रतिपादन किया था **–बिनै**
- आई.क्यू. को प्रभावित करने वाले कारक है **–बीमारी, पारिवारिक समस्या, भाषा भिन्नता**
- ''बुद्धि वह शक्ति है, जो हमें समस्याओं का समाधान करने और उद्देश्यों को प्राप्त करने की क्षमता देती है।'' बुद्धि के सन्दर्भ में यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है– **रायबर्न**
- किस मनोवैज्ञानिक ने यह बताया है कि बुद्धि का निर्माण प्राथमिक मानसिक योग्यताओं के द्वारा होता है– **केली एवं थर्सटन**
- बुद्धि निर्माण के सिद्धान्त के सन्दर्भ में सत्य नहीं है– **बुद्धि के 'एक कारक सिद्धान्त' का प्रतिपादन जे.पी. गिलफोर्ड ने किया है**
- बुद्धि परीक्षण के सन्दर्भ में असत्य है– **आर्मी बीटा परीक्षण का उपयोग सामूहिक बुद्धि परीक्षण के लिए नहीं किया जाता है**
- वेश्लर के बुद्धि-लब्धि (I.Q.) के अनुसार यदि किसी विद्यार्थी की बुद्धि-लब्धि 120-129 के बीच है तो वह होगा– **श्रेष्ठ बुद्धि**
- आजकल बुद्धि-परीक्षण का उपयोग शिक्षा जगत् में हो रहा है। बुद्धि-परीक्षण का ..... उपयोग बालक के विकास के दृष्टिकोण में सही नहीं है– **बुद्धि-परीक्षण के परिणाम के आधार पर अधिक बुद्धि वाले बालकों पर अन्य बालकों की तुलना में अधिक ध्यान देना**
- यदि किसी बालक की मानसिक आयु 20 वर्ष एवं कालानुक्रम आयु 25 वर्ष है तो उसकी बुद्धि-लब्धांक होगा– **80**
- बालक प्रसंगबोध परीक्षण 3 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बालकों के लिए बनाया गया है। इस परीक्षण में कार्ड में प्रतिस्थापित किए गए हैं– **लोगों के स्थान पर जानवरों को**

- प्रभावीकृत परीक्षण कराए जाते हैं–
  प्रतिभाशाली बालकों की पहचान के लिए
- एक बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष एवं वास्तविक आयु 10 वर्ष है, तो उसकी बुद्धि लब्धि होगी– **120**
- यदि एक बच्चे की मानसिक आयु 5 वर्ष तथा वास्तविक आयु 4 वर्ष है तो उस बच्चे की IQ होती है– **125**
- बुद्धि लब्धांक सामान्यत: ..... रूप से शैक्षणिक निष्पादन से सम्बन्धित होते हैं– **उच्च**
- एक जुड़वाँ भाइयों में से एक को सामाजिक आर्थिक रूप से धनाढ्य परिवार द्वारा गोद लिया जाता है और दूसरे को निर्धन परिवार द्वारा। एक वर्ष बाद उनके बुद्धि लब्धांक के बारे में क्या अवलोकित होने की सर्वाधिक सम्भावना है– **सामाजिक, आर्थिक स्तर बुद्धि लब्धांक को प्रभावित नहीं करता**
- 16 वर्षीय बच्चा बुद्धि लब्धि परीक्षण में 75 अंक प्राप्त करता है। उसकी मानसिक आयु ..... वर्ष होगी– **12**
- बहुविध बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार सभी प्रकार के पशुओं, खनिजों और पेड़-पौधों को पहचानने और वर्गीकृत करने की योग्यता ..... कहलाती है– **प्राकृतिक बुद्धि**
- ''अधिकांश व्यक्तियों की बुद्धि औसत होती है, बहुत कम लोग प्रतिभा सम्पन्न होते हैं और बहुत कम व्यक्ति मंद बुद्धि होते हैं।'' यह कथन ..... के प्रतिस्थापित सिद्धान्तों पर आधारित है– **बुद्धि के वितरण**
- रेबन का प्रोग्रेसिव मैट्रिसिज परीक्षण ..... परीक्षण का उदाहरण है– **संस्कृति मुक्त बुद्धि लब्धांक**
- ..... के अतिरिक्त बुद्धि के पक्षों को स्टेनबर्ग के त्रि-तन्त्र सिद्धान्त में सम्बोधित किया गया है– **सामाजिक**
- हावर्ड गार्डनर का बुद्धि का सिद्धान्त ..... पर बल देता है– **प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण योग्यताओं**
- जो बुद्धि सिद्धान्त बुद्धि में सम्मिलित मानसिक प्रक्रियाओं (जैसे– परा घटक) और बुद्धि द्वारा लिए जा सकने वाले विविध रूपों (जैसे–सृजनात्मक बुद्धि) को शामिल करता है, वह है–
  स्टर्नबर्ग का बुद्धिमत्ता का त्रितन्त्र सिद्धान्त
- भाटिया बैटरी का प्रयोग किसके परीक्षण हेतु किया जाता है–
  बुद्धि
- बुद्धि लब्धि के सम्बन्ध में सत्य कथन है–
  कालानुक्रमिक आयु से व्युत्क्रमी सम्बन्धित
- बुद्धि का तरल मोजेक मॉडल किसने दिया था– **कैटेल**
- एक शिक्षिका का भावनात्मक बुद्धिलब्धि ऊँचा है। इसका तात्पर्य है कि– **वह सन्तुलित व्यवहार रखती है**
- 'बहु-बुद्धि सिद्धान्त' को वैध नहीं माना जा सकता, क्योंकि–
  विशिष्ट परीक्षणों के अभाव में भिन्न बुद्धियों का मापन सम्भव नहीं है
- हॉवर्ड गार्डनर के बहुविध-बुद्धि सिद्धान्त का समर्थन करता है–
  मस्तिष्क के एक भाग में हुई क्षति केवल किसी एक विशिष्ट योग्यता को प्रभावित करती है न कि सम्पूर्ण को
- बाल अन्तर्बोध (एपरेप्शन) परीक्षण का निर्माण किसने किया–
  बेलक
- बिने-साइमन परीक्षण द्वारा मापन किया जाता है –**बुद्धि**
- त्रि-तन्त्रीय सिद्धान्त में व्यावहारिक बुद्धि का अभिप्राय नहीं है–
  केवल अपने विषय में व्यावहारिक रूप से विचार करना
- कक्षा-अध्यापक ने राघव को अपनी कक्षा में अपने की-बोर्ड पर स्वयं द्वारा किया गया मथुर संगीत बजाते हुए देखा। कक्षा-अध्यापक ने विचार किया कि राघव में ..... बुद्धि उच्चस्तरीय थी– **संगीतमय**
- बुद्धि के बारे में सर्वाधिक उपयुक्त कथन है–
  बुद्धि बहुआयामी है और इसमें कई पहलू निहित हैं
- बुद्धि है– **सामर्थ्यों का एक समुच्चय**
- स्मृति के मापन के लिए किस विधि का प्रयोग नहीं किया जाता– **तार्किक विधि**
- बुद्धि-लब्धि सम्प्रत्यय विकसित किया– **टर्मन**
- निष्पत्ति लब्धि (AQ) का सूत्र होता है–

$$AQ = \frac{EA}{MA} \times 100$$

- बुद्धि की स्पीयरमैन परिभाषा में कारक 'g' है– **सामान्य बुद्धि**
- संवेगात्मक बुद्धि, बहुबुद्धि सिद्धान्त के किस क्षेत्र के साथ सम्बन्धित हो सकती है–
  अन्यवैयक्तिक या अन्त:वैयक्तिक बुद्धि
- 'बहुबुद्धि के सिद्धान्त' के सन्दर्भ में एयरफोर्स पायलट बनने के लिए कौन-सी बुद्धि की आवश्यकता है– **गतिक**
- 140 से अधिक बुद्धि-लब्धि (IQ) वाले बच्चों को किस श्रेणी में रखेंगे– **प्रतिभाशाली**
- आउट-ऑफ-द-बॉक्स चिन्तन सम्बन्धित है– **अपसारी चिन्तन**
- हॉवर्ड गार्डनर बहुबुद्धि सिद्धान्त सुझाता है कि–
  शिक्षक को चाहिए, कि विषयवस्तु को वैकल्पिक विधियों से पढ़ाने के लिए बहुबुद्धियों को एक रूपरेखा की तरह ग्रहण करे
- स्पीयरमैन (1904) के अनुसार तर्क करने की क्षमता और समस्या समाधान करने की क्षमता कहलाती है– **जी कारक**

09.

बहुआयामी बौद्धिकता

बुद्धि का एक कारक सिद्धांत (बिने, टरमैन, स्टर्न)

1. बुद्धि के एकल कारक का सिद्धान्त किसने दिया था?

(a) थार्नडाइक (b) पैवलॉव
(c) अल्फ्रेड बिने (d) फ्रीमैन

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) बुद्धि के संदर्भ में एकल कारक (एक अव्यय) सिद्धांत का प्रतिपादन प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड बिने ने किया था।

2. बुद्धि का एकल घटक या एकल अव्यय सिद्धान्त दिया था?

(a) थार्नडाइक ने (b) पॉवलव ने
(c) एल्फ्रेड बिने (d) फ्रीमैन ने

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) बुद्धि के संदर्भ में एकल घटक (एक अव्यय) सिद्धांत का प्रतिपादन प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड बिने ने किया था

3. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
A. एक तत्व सिद्धान्त	1. गिलफोर्ड
B. बहुतत्व सिद्धान्त	2. बिने
C. समूह तत्व सिद्धान्त	3. थार्नडाइक
D. त्रिआयाम सिद्धान्त	4. थर्स्टन

कूट

	A	B	C	D
(a)	4	3	2	1
(c)	3	4	2	1

	A	B	C	D
(b)	4	1	2	3
(d)	1	2	3	4

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (*) बुद्धि का सिद्धांत — प्रवर्तक मनोवैज्ञानिक

एक तत्वसिद्धांत - बिने, टर्मन
बहुतत्व सिद्धांत - थार्नडाइक
समूह तत्व सिद्धांत - थर्सटन
त्रिआयाम सिद्धांत - गिलफोर्ड
उपयुक्त विकल्प में कोई उत्तर सही नही है।

बुद्धि का द्वि-कारक सिद्धांत (स्पीयरमैन)

4. बुद्धि का कौन-सा सिद्धान्त सामान्य बुद्धि 'g' और विशिष्ट बुद्धि 's' की उपस्थिति का समर्थन करता है?

(a) नियम प्रतिकूल सिद्धान्त
(b) गिलफार्ड के बुद्धि का सिद्धान्त
(c) स्पीयरमैन का द्विखण्ड सिद्धान्त
(d) वर्नोन का पदानुक्रमिक सिद्धान्त

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (c) स्पीयर मैन ने बुद्धि की संरचना से सम्बंधित द्विघटक सिद्धांत दिया था जिसमें बुद्धि की संरचना दो घटकों से मिलकर बनी है-

1. General factor (G-factor)
2. Specific factor (S-factor)

5. 'बुद्धि के द्विखण्ड सिद्धान्त' का प्रतिपादन किसने किया?

(a) स्पियरमैन (b) थर्सटन
(c) गिलफोर्ड (d) गेने

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
Jharkhand 2011 (I-V)
Bihar TET 2013 (VI-VIII)

Ans: (a) बुद्धि के द्विखण्ड सिद्धांत का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक स्पीयर मैन ने 1904 में किया। स्पीयर मैन का मानना है कि बुद्धि दो कारकों से मिलकर बना है -

1. सामान्य योग्यता कारक या General Factor (G. Factor)
2. विशिष्ट योग्यता कारक या Specific factor (S- factor)

6. बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?

(a) थॉर्नडाइक (b) स्पीयरमैन
(c) वर्नन (d) स्टर्न

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन अंग्रेज मनोवैज्ञानिक स्पीयरमैन ने 1904 में किया था। इनके अनुसार बुद्धि दो कारको से मिलकर बनी है- सामान्य योग्यता कारक (G-Factor) तथा विशिष्ट योग्यता कारक (S- Factor)

7. स्पीयरमैन (1904) के अनुसार तर्क करने की क्षमता और समस्या समाधान करने की क्षमता कहलाती है

(a) एस कारक (b) जी कारक
(c) विशिष्ट बुद्धि (d) सांस्कृतिक बुद्धि

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (b) ब्रिटेन के मनोवैज्ञानिक **स्पीयरमैन** ने बुद्धि के द्विकारक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इस सिद्धांत के अनुसार बुद्धि संरचना दो कारकों से मिलकर कर बनी है-

1. सामान्य योग्यता कारक (G- factor)
2. विशिष्ट योग्यता कारक (S-factor)

G- कारक एक जन्मजात प्रतिभा कारक के रूप में माना जाता है और प्रत्येक व्यक्ति में इसकी मानसिक क्षमता भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक मानसिक कार्य करने की क्षमता भी निश्चित होती है। अतः G कारक के कारण ही तर्क करने की क्षमता और समस्या समाधान करने की क्षमता का निर्धारण होता है।

8. बुद्धि की स्पीयरमैन परिभाषा में कारक `g' है –

(a) आनुवंशिक बुद्धि (b) उत्पादक बुद्धि
(c) सामान्य बुद्धि (d) वैश्विक बुद्धि

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) बुद्धि की स्पीयरमैन परिभाषा में 'g' कारक सामान्य बुद्धि से सम्बन्धित है। यह एक सामान्य योग्यता है जो प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न मात्रा में पाया जाता है। दैनिक जीवन के कार्यों में 'g' कारक का उपयोग अधिक होता है।

बुद्धि का बहु–कारक सिद्धांत (थार्नडाइक)

9. बहुकारक बुद्धि के प्रतिपादक कौन थे?

(a) जीन पियाजे (b) बिने

(c) हॉवर्ड गार्डनर (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) बहुकारक बुद्धि के प्रतिपादक ई.एल. थार्नडाइक थे। इस सिद्धांत के अनुसार बुद्धि अनेक स्वतंत्र कारकों से मिलकर बनी है। जबकि जीन पियाजे संज्ञानात्मक विकास से सम्बन्धित हैं, बिने बुद्धि के एकल कारक सिद्धांत के समर्थक थे तथा हावर्ड गार्डनर बहु बुद्धि सिद्धांत के प्रतिपादक हैं।

10. बुद्धि के बहुकारक सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं

(a) मैक्डूगल (b) टर्मन

(c) थॉर्नडाइक (d) बर्ट

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011
DSSSB PRT

Ans: (c) थार्नडाइक द्वारा बुद्धि के बहुकारक सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया। इस सिद्धांत के अनुसार बुद्धि के अनेक तत्व होते है जिसमें सामान्य तत्व के अलावा कुछ मूल तत्व होते है जैसे - आंकिक योग्यता, शाब्दिक योग्यता, दिशा योग्यता एवं स्मरणशक्ति आदि।

बुद्धि का संरचनात्मक सिद्धांत (जेपी. गिलफोर्ड)

11. संज्ञान किस बुद्धि के सिद्धांत का हिस्सा है–

(a) प्रतिदर्श सिद्धांत

(b) समूहकारक सिद्धांत

(c) गिलफोर्ड का सिद्धांत

(d) फ्लूइड तथा क्रिस्टलाइज्ड का सिद्धांत

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) जे. पी. गिलफोर्ड तथा उनके सहयोगियों ने बुद्धि का त्रिवीमीय प्रारूप प्रस्तुत किया। इनके अनुसार बुद्धि को तीन वीमाओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है- (1) सामग्री (2) संक्रिया और (3) उत्पाद। संक्रिया को पुनः पाँच प्रकारों में विभाजित किया गया है- (1) संज्ञान (2) स्मरण (3) परम्परागत चिंतन (4) गैरपरम्परागत चिंतन (5) मूल्यांकन।

12. गिलफोर्ड ने 'अपसारी चिन्तन' पद का प्रयोग किसके समान अर्थ में किया है?

(a) बुद्धि (b) सृजनात्मकता

(c) बुद्धि एवं सृजनात्मकता (d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (b) गिलफोर्ड ने अपसारी चिन्तन पद का प्रयोग सृजनात्मकता के लिए किया है। अपसारी चिन्तन/केन्द्राभिमुख चिन्तन से तात्पर्य कई दिशाओं में चिन्तन करना है। अपसारी चिन्तन को बहुविध चिन्तन (Divergent thinking) भी कहते हैं।

बुद्धि का तरल–ठोस सिद्धांत (कैटल)

13. आर. बी. कैटल की तरल बुद्धि तुल्य है

(a) वंशानुगत कारको के (b) पर्यावरणीय कारकों के

(c) बौद्धिक कारकों के (d) सामाजिक कारकों के

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (a) आर. बी. कैटल के अनुसार तरल बुद्धि का निर्धारण वंशानुगत कारकों द्वारा होता है तथा यह प्रौढ़ावस्था में उम्र के साथ घटती है। कैटल के अनुसार तरल बुद्धि से तात्पर्य तर्क के आधार पर नवीन समस्याओं को हल करने की योग्यता है।

14. बुद्धि का तरल मोजेक मॉडल किसने दिया था?

(a) कैटेल (b) गिल्फर्ड

(c) थर्स्टन (d) स्पियरमैन

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (a) बुद्धि का तरल मोजेक मॉडल अर्थात तरल ठोस बुद्धि सिद्धांत कैटेल द्वारा दिया गया था कैटल के अनुसार बृद्धि के दो महत्त्वपूर्ण तत्व क्रमशः 1. तरल बुद्धि 2. ठोस बुद्धि होते हैं। तरल बुद्धि को तर्क के आधार पर समस्या को हल करने की योग्यता के रूप में परिकल्पित किया गया जबकि ठोस बुद्धि को शिक्षा प्रशिक्षण व अनुभव पर आधारित ज्ञान के आधार पर परिकल्पित किया गया।

15. बुद्धि के तरल क्रिस्टलीय प्रतिमान के प्रतिपादक कौन थे?

(a) कैटेल (b) थॉर्नडाइक

(c) वर्नन (d) स्किनर

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) बुद्धि के तरल क्रिस्टलीय प्रतिमान का प्रतिपादन आर. बी. कैटल ने किया था। कैटल के अनुसार बुद्धि के दो महत्वपूर्ण तत्व क्रमशः तरल बुद्धि तथा ठोस बुद्धि हैं। तरल बुद्धि को तर्क के आधार पर नवीन समस्याओं को हल करने की योग्यता के रूप में तथा ठोस बुद्धि को शिक्षण, प्रशिक्षण व अनुभव पर आधारित योग्यता के रूप में परिकल्पित किया गया।

बुद्धि का त्रितंत्र सिद्धांत (स्टेनबग&)

16. निम्न में से कौन–सा स्टर्नबर्ग का बुद्धि का त्रिस्तरीय सिद्धांत का एक रूप है?

(a) व्यावहारिक बुद्धि (b) प्रायोगिक बुद्धि

(c) संसाधनपूर्ण बुद्धि (d) सहयोग की नैतिकता

DSSSB PRT
C TET 2014 (I-V)

Ans : (a) राबर्ट स्टैनबर्ग के बुद्धि का त्रिस्तरीय सिद्धांत में बुद्धि के कार्यों के आधार पर तीन उप सिद्धांत बताएँ हैं–

(i) सन्दर्भगत उपसिद्धांत– वातावरण के साथ अनुकूलतम समायोजन

(ii) अनुभवजन्य उपसिद्धांत– अनुभवों से प्राप्त व्यवहारिक ज्ञान से सम्बन्ध

(iii) घटक उपसिद्धांत– विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक ढंग से चिंतन करने की क्षमता।

17. इनमें में से कौन-सा त्रितंत्रीय सिद्धान्त में व्यावहारिक बुद्धि का अभिप्राय नहीं हैं?

(a) पर्यावरण का पुनर्निर्माण करना

(b) केवल अपने विषय में व्यावहारिक रूप से विचार करना

(c) इस प्रकार के पर्यावरण का चयन करना जिसमें आप सफल हो सकते हैं

(d) पर्यावरण के साथ अनुकूलन करना

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (b) बुद्धि के त्रितंत्रीय सिद्धान्त के अन्तर्गत संदर्भात्मक उप सिद्धान्त, अनभवजन्य उप सिद्धान्त और घटक उप सिद्धान्त शामिल है। इन तीनों उप सिद्धान्तों के अनुसार क्रमशः अपने वातावरण के साथ अनुकूलतम समायोजन, अनुभवजन्य व्यवहारिक ज्ञान तथा आलोचनात्मक ढंग से चिंतन करने की क्षमताएँ विकसित होती है। अतः केवल अपने विषय में व्यवहारिक रूप से विचार करना इसमें शामिल नहीं है।

18. ---- के अतिरिक्त बुद्धि के निम्नलिखित पक्षों को स्टेनबर्ग के त्रितंत्र सिद्धांत से संबोधित किया गया है।

(a) संदर्भगत (b) अवयवभूत
(c) सामाजिक (d) आनुभविक

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (c) स्टेनबर्ग ने बुद्धि का त्रितंत्र सिद्धान्त प्रस्तुत किया। इनके अनुसार तर्क करते समय व्यक्ति के मन में क्या है तथा वह सूचनाओं को किस ढंग से प्रक्रमित करता है यही बुद्धि है। त्रितंत्र सिद्धान्त के तीन उप सिद्धान्त हैं– 1. सन्दर्भात्मक उप सिद्धान्त 2. अनुभवजन्य उप सिद्धान्त 3. घटक उप सिद्धान्त

19. जो बुद्धि सिद्धांत में सम्मिलित मानसिक प्रक्रियाओं (जैसे परा–घटक) और बुद्धि द्वारा लिए जा सकने वाले विधिक रूपों (जैसे सृजनात्मक बुद्धि) की शामिल करता है, वह है

(a) स्पीयरमैन का जी कारक
(b) स्टैनबर्ग का बुद्धिमत्ता का त्रितंत्र
(c) बुद्धि का सार्वेट सिद्धांत
(d) थर्स्टन का प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2013

Ans : (b) सन् 1985 में राबर्ट स्टैनबर्ग ने बुद्धि के त्रितंत्र का सिद्धांत दिया। जिसमें इन्होंने तीन प्रकार की बुद्धि की बात कही– संदर्भात्मक बुद्धि, अनुभवजन्य बुद्धि तथा घटकीय बुद्धि। स्टैनबर्ग के अनुसार ये तीनों प्रकार की बुद्धि परस्पर तालमेल तथा समन्वय करते हुए क्रियाशील रहती है। संदर्भात्मक बुद्धि वातावरण के साथ अनुकूलतम् समायोजन करने, अनुभवजन्य बुद्धि, अनुभवों से प्राप्त व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने तथा घटकीय बुद्धि विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक ढंग से चिंतन करने की क्षमता प्रदान करती है।

20. मेटा घटक, प्रदर्शन घटक और ज्ञान प्राप्ति घटक निम्न में से किसकी श्रेणियाँ हैं :

(a) त्रिपक्षीय सिद्धांत (b) त्रिकोणीय सिद्धांत
(c) ऑलपोर्ट का सिद्धांत (d) आईसेंक का सिद्धांत

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : बुद्धि के त्रिकोणीय सिद्धांत (Triarchc Theory) का प्रतिपादन राबर्ट स्टैनबर्ग ने सन् 1985 में किया। इन्होंने सूचनाओं को संसाधित करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए तीन उपसिद्धांत प्रस्तुत किये जो क्रमशः (i) संदर्भात्मक उप–सिद्धांत (Contextnal Subtheory) (ii) अनुभवजन्य उप–सिद्धांत (Experiential Sub-theory) (iii) घटक उप–सिद्धांत (Component Sub–theory) है। मेटा घटक (meta component) प्रदर्शन घटक (Performance component) तथा ज्ञान प्राप्ति घटक (Knowledge Acquisition component) तीनों 'घटक उपसिद्धांत' के महत्त्वपूर्ण घटक हैं।

21. स्टेनबर्ग के बुद्धिमता के सिद्धांत में निम्नलिखित में से किस चरण में समस्या का समाधान ज्ञात करना शामिल है?

(a) अनुप्रयोग (b) प्रतिचित्रण
(c) संकेतन (d) प्रतिक्रिया

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) स्टेनबर्ग के बुद्धिमत्ता के सिद्धांत में, प्रतिक्रिया (Response) चरण में समस्या का समाधान ज्ञात करना शामिल है। स्टैनबर्ग के अनुसार तार्किक प्रक्रिया के समक्ष विचारों तथा सूचनाओं को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करना ही बुद्धि का प्रमुख कार्य है। इसके अनुसार कूट संकेतन, निष्कर्ष ऑकलन, रेखांकन, अनुप्रयोग तथा अनुक्रिया जैसे चरणों में व्यक्ति सूचनाओं को संसाधित करके निष्कर्ष पर पहुँचता है।

बहु–आयामी बुद्धि का सिद्धांत (हावर्ड गार्डनर)

22. हावर्ड गार्डनर के बहु–बुद्धि सिद्धांत के अनुसार, निम्नलिखित विशेषताओं से युक्त एक व्यक्ति की बुद्धि को किस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है?
विशेषताएँ :
''दूसरों की मनोदशा, स्वभाव, प्रेरणा तथा अभिप्राय को उचित तरीके से पता लगाने एवं प्रतिक्रिया करने की योग्यता''

(a) अंतरावैयक्तिक (b) अंतर्वैयक्तिक
(c) नैदानिक (d) प्रकृतिवादी

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (b) : हावर्ड-गार्डनर के बहु-बुद्धि सिद्धांत के अनुसार, दूसरों की मनोदशा, स्वभाव, प्रेरणा तथा अभिप्राय को उचित तरीके से पता लगाने एवं प्रतिक्रिया करने की योग्यता अंतर्वैयक्तिक बुद्धि कहलाती है जबकि अंतरावैयक्तिक बुद्धि में अपने भावों व संवेगों को मॉनीटर करने, विभेद करने तथा स्वयं के व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता समाहित रहती है। गार्डनर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में सात प्रकार की बुद्धि होती है, परन्तु वंशानुक्रम तथा वातावरण के अभाव के कारण इनमें से कोई एक या अनेक प्रकार की बुद्धि अधिक विकसित हो सकती है।

23. एकाधिक बुद्धिमानी का सिद्धांत कहता है कि–

(a) बुद्धि तेजी से बढ़ाई जा सकती है
(b) बुद्धि कई प्रकार की हो सकती है
(c) पेपर-पेंसिल परीक्षण सहायक नहीं हैं
(d) प्रभावी अध्यापन के द्वारा बुद्धि बढ़ाई जा सकती है

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : एकाधिक बुद्धिमानी का सिद्धान्त कहता है कि बुद्धि कई प्रकार की हो सकती है। हावर्ड गार्डनर ने कहा है कि बुद्धि का स्वरूप एकांकी न होकर बहुप्रकारीय होता है। उसने कुल सात तरह की बुद्धि बताते हुए कहा है कि ये सातों बुद्धि परस्पर एक दूसरे से स्वतंत्र होती है एवं प्रत्येक के क्रियाशील होने के ढंग अलग-अलग होते हैं।

24. हावर्ड गार्डनर के बहु बुद्धि सिद्धांत के अनुसार, 'तार्किक-गणितीय' बुद्धि वाले एक व्यक्ति की क्या विशेषताएँ हो सकती हैं ?

(a) दृश्य-स्थानिक परिवेश को सटीक रूप से ग्रहण करने की योग्यता।

(b) संगीतमय अभिव्यक्तियों के आवाज के स्तर, ताल एवं सौंदर्यपरक गुणों को उत्पन्न करने एवं प्रशंसा करने की योग्यता।
(c) पैटर्न को खोजने की एवं तर्क की लम्बी शृंखला को हल करने की क्षमता और संवेदनशीलता।
(d) ध्वनि, ताल तथा शब्दों के अर्थ के प्रति संवेदनशीलता।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) हावर्ड गार्डनर के बहु-बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार, 'तार्किक-गणितीय' बुद्धि वाले एक व्यक्ति की मुख्य विशेषता यह होती है कि वह पैटर्न खोजने की एवं तर्क की, लम्बी शृंखला को हल करने की क्षमता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं। दूसरे शब्दों में तार्किक गणितीय बुद्धि से तात्पर्य तर्क करने, गणितीय समस्याओं का समाधान करने, सादृश्यता, अंकों के क्रम में व्याप्त संबन्धों को पहचानने आदि की क्षमता से है। उच्च तार्किक-गणितीय बालकों की गणितीय व तार्किक क्षमता अच्छी होती है, इन बच्चों को ऐसे पजल्स व खेल अच्छे लगते हैं, जिनमें तर्कणा शक्ति की आवश्यकता होती है।

25. किसने बहुविमात्मक प्रज्ञा का प्रत्यय दिया?
(a) गोलमैन (b) स्पीयरमैन
(c) जॉन मेयर (d) गार्डनर

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : बहुविमात्मक प्रज्ञा या बहुबुद्धि का सिद्धांत हॉवर्ड गार्डनर द्वारा सन् 1983 में प्रतिपादित किया गया था। गार्डनर के अनुसार बुद्धि का स्वरूप एकाकी न होकर बहुप्रकारीय होता है। इन्होंने आठ प्रकार की बुद्धि बताई हैं जो निम्नवत् हैं–
1. वैयक्तिक–पर बुद्धि
2. वैयक्तिक–स्व बुद्धि
3. संगीत बुद्धि
4. शरीर–गतिकी बुद्धि
5. स्थानिक बुद्धि
6. तार्किक गणितीय बुद्धि
7. भाषायी बुद्धि
8. प्राकृतिक बुद्धि

26. किसने 'बहुबुद्धि सिद्धांत' प्रतिपादित किया था?
(a) अल्फ्रेड बिने (b) हॉवर्ड गार्डनर
(c) फ्रांसिस गाल्टन (d) बी. एस. ब्लूम

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014
MP TET 2011 (I-V)

Ans: (b) 'बहुबुद्धि सिद्धांत' का प्रतिपादन हावर्ड गार्डनर ने किया था। इन्होंने इसे 1983 में दिया था। इस सिद्धांत के द्वारा बुद्धि की अवधारणा (कांसेप्ट) को और अधिक शुद्धता से परिभाषित किया। इन्होंने ने ही बुद्धि के सात प्रकार बतायें हैं।

27. स्वयं की भावनाओं तथा संवेगों को नियंत्रित करने से सम्बन्धित बुद्धि को क्या कहा जाता है?
(a) भाषायी बुद्धि (b) अंतः वैयक्तिक बुद्धि
(c) स्थानिक बुद्धि (d) वैयक्तिक बुद्धि

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) अंतः वैयक्तिक बुद्धि वह होती है जो स्वयं की भावनाओं तथा संवेगों को नियंत्रित करने में सहायक होती है।

28. अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि को प्रदर्शित करने वाला व्यवहार है
(a) दूसरे के अन्तर्मन की इच्छाओं एवं मंशा का पता लगाना
(b) दूसरे के मूड को भाँप जाना
(c) मिलते जुलते संवेगों यथा उदासी एवं पछतावा में भेद कर पाना
(d) दूसरों के विचारों एवं व्यवहारों को प्रभावित करने के लिये उनसे सम्बन्धित जानकारी का प्रयोग करना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (b) अंतर्वैयक्तिक बुद्धि को प्रदर्शित करने वाले व्यवहार में दूसरे के मूड और भावनाओं को समझना, समूहों के साथ सहयोग, लोगों की मनोदशा, प्रोत्साहन एवं इरादों पर ध्यान देना, दूसरे लोगों के दृष्टिकोण से चीजों को देखना, सुनना आदि को शामिल किया जाता है।

29. हार्वर्ड गार्डनर द्वारा निम्न में से एक को छोड़कर बाकी सभी बुद्धि के प्रकार बताए गए हैं
(a) भाषा (b) सृजनात्मकता
(c) अन्तर्वैयक्तिक कौशल (d) अन्तः वैयक्तिक कौशल

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
Jharkhand 2011 (I-V)

Ans: (b) हार्वर्ड गार्डनर ने सात प्रकार के बुद्धि का उल्लेख किया है–
(1) भाषायी बुद्धि
(2) तार्किक गणितीय बुद्धि
(3) स्थानिक बुद्धि
(4) शरीर गतिकी बुद्धि
(5) संगीत बुद्धि
(6) वैयक्तिक आत्म बुद्धि
(7) वैयक्तिक पर बुद्धि
गार्डनर ने सृजनात्मकता को बुद्धि का प्रकार नहीं माना है।

30. अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य है
(a) स्वयं की क्षमताओं एवं कमजोरियों की पहचान करना
(b) दूसरों को अभिप्रेरित करने का कौशल
(c) विभिन्न व्यक्तियों को समझने का कौशल
(d) दूसरों के साथ बातचीत करने का कौशल

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (c) अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि का तात्पर्य ऐसी सामान्य मानसिक क्षमता से है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति विभिन्न व्यक्तियों की क्षमताओं एवं कमजोरियों की पहचान करता है।

31. कक्षा–अध्यापक ने राघव को अपनी कक्षा में अपने की–बोर्ड पर स्वयं द्वारा तैयार किया गया मधुर संगीत बजाते हुए देखा। कक्षा–अध्यापक ने विचार किया कि राघव में ..... बुद्धि उच्च स्तरीय थी।
(a) शारीरिक–गतिबोधक (b) संगीतमय
(c) भाषायी (d) स्थानिक

DSSSB PRT
C TET 2015 (I–V)

Ans : (b) कक्षा–अध्यापक ने राघव को अपनी कक्षा में अपने की–बोर्ड पर स्वयं द्वारा तैयार किया गया मधुर संगीत बजाते हुए देखा। कक्षा-अध्यापक ने विचार किया कि राघव में संगीतमय बुद्धि उच्च स्तरीय थी। संगीतमय बुद्धि के कारण ही वह संगीत के सूक्ष्म भेदों को समझ पाता है।

32. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की विभिन्न अधिगम–शैलियों को सन्तुष्ट करने के लिए वैविधपूर्ण कार्यों का उपयोग करती है। वह ..... से प्रभावित है

(a) पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत
(b) कोह्लबर्ग के नैतिक विकास के सिद्धांत
(c) गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत
(d) वागोत्स्की के सामाजिक–सांस्कृतिक सिद्धांत

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (c) एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की विभिन्न अधिगम शैलियों को संतुष्ट करने के लिए यदि वैविध्यपूर्ण कार्यों का उपयोग करती है तो वह गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत से प्रभावित है। इस सिद्धांत के अनुसार बुद्धि सात प्रकार की होती है और प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई विशेष प्रकार की बुद्धि होती है उसी अनुसार वह अपना विकास करता है।

33. शारीरिक गतिक बुद्धि रखने वाले बच्चे को अंतिम अवस्था निम्नलिखित में से कौन–सी हो सकती है?

(a) कवि (b) वाचक
(c) राजनैतिक नेता (d) शल्य चिकित्सक

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (d) शारीरिक गतिक बुद्धि रखने वाले बच्चे की अंतिम अवस्था शल्य चिकित्सक की हो सकती है क्योंकि ऐसे बच्चों में शारीरिक गति पर नियंत्रण करने व उसमें प्रवीणता लाने की क्षमता होती है।

34. बहुबुद्धि सिद्धांत निम्नलिखित निहितार्थ देता है सिवाय

(a) संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि–लब्धि से सम्बन्धित नहीं है
(b) बुद्धि प्रक्रमण संक्रियाओं का एक विशिष्ट समुच्चय है जिसका उपयोग एक व्यक्ति द्वारा समस्या समाधान के लिए किया जाता है
(c) विषयों को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है
(d) विविध तरीकों से सीखने का आकलन प्रस्तुत किया जा सकता है

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (a) बहुबुद्धि सिद्धांत के अनुसार बुद्धि प्रक्रमण संक्रियाओं का एक विशिष्ट समुच्चय है, जिसका उपयोग एक व्यक्ति द्वारा समस्या समाधान के लिए किया जाता है, विषयों को विविध तरीकों से प्रस्तुत किया जा सकता है तथा विविध तरीकों से सीखने का आकलन प्रस्तुत किया जा सकता है। किन्तु संवेगात्मक बुद्धि, बुद्धि लब्धि से सम्बन्धित नहीं है यह कथन बहुबुद्धि सिद्धांत को स्पष्ट नहीं करता है।

35. हॉवर्ड गार्डनर के बहुबुद्धि सिद्धांत के अनुसार निम्नलिखित का मिलना कीजिए

बुद्धि का प्रकार		अंत व्यवस्था	
(a)	संगीतात्मक	(1)	चिकित्सक
(b)	भाषिक	(2)	कवि
(c)	अंतर्वैयक्तिक	(3)	खिलाड़ी
(d)	स्थानिक	(4)	वायलिन–वादक
		(5)	मूर्तिकार

	A	B	C	D
(a)	2	4	1	5
(b)	5	2	4	1
(c)	4	2	1	5
(d)	4	2	5	3

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (c)

बुद्धि का प्रकार		अंत व्यवस्था	
(a)	संगीतात्मक	(4)	वायलिन–वादक
(b)	भाषिक	(2)	कवि
(c)	अंतर्वैयक्तिक	(1)	चिकित्सक
(d)	स्थानिक	(5)	मूर्तिकार

36. हॉवर्ड गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धांत सुझाता है कि–

(a) बुद्धि को केवल बुद्धिलब्धि परीक्षा से ही निर्धारित किया जा सकता है।
(b) शिक्षक को चाहिए कि विषय–वस्तु को वैकल्पिक विधियों से पढ़ाने के लिए बहुविधियों को एक रूपरेखा की तरह ग्रहण करे।
(c) क्षमता भाग्य है और एक अवधि के भीतर नहीं बदलती।
(d) हर बच्चे को प्रत्येक विषय आठ भिन्न तरीकों से पढ़ाया जाना चाहिए ताकि सभी बुद्धियां विकसित हों।

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (b) हॉवर्ड गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धांत सुझाता है कि शिक्षक विषय–वस्तु को वैकल्पिक विधियों से पढ़ाने के लिए बहुविधियों को एक रूपरेखा की तरह ग्रहण करे ताकि शिक्षक विभिन्न विधियों से छात्रों को सीखने के लिए उचित वातावरण तैयार कर सके।

37. निम्नलिखित में से कौन–सा आलोचनात्मक दृष्टिकोण 'बहु–बुद्धि सिद्धांत' (Theory of multiple intelligences) से सम्बद्ध नहीं है?

(a) यह शोधाधारित नहीं है
(b) विभिन्न बुद्धियाँ भिन्न–भिन्न विद्यार्थियों के लिए विभिन्न पद्धतियों की माँग करती है
(c) प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रायः एक क्षेत्र में ही अपने विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं
(d) इसका कोई अनुभावात्मक आधार नहीं है

DSSSB PRT
C TET 2014 (I-V)

Ans : (c) बहु-बुद्धि सिद्धांत का प्रतिपादन हावर्ड गार्डनर ने किया था। इनके अनुसार बुद्धि का स्वरूप एकाकी न होकर बहु-प्रकारीय होता है। इन्होंने कुल सात प्रकार की बुद्धि बतायी। गार्डनर का यह सिद्धांत बताता है कि ये सभी सातों प्रकार की बुद्धि परस्पर अंतर्क्रिया करती है फिर भी वे मुख्यतः स्वतंत्र रूप से कार्य करती है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति किसी एक क्षेत्र में प्रखर होने के बावजूद अन्य क्षेत्र में असफल हो सकता है।

38. बुद्धि के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?

(a) बुद्धि को केवल मानवीकृत बुद्धिलब्धि परीक्षणों के आयोजन के द्वारा विश्वसनीय रूप से निर्धारित किया जा सकता है
(b) बुद्धि मूलभूत रूप से स्नायु–तंत्र–सम्बन्धी कार्यप्रणाली है उदाहरणार्थ प्रक्रमण की गति, संवेदी–विभेद आदि
(c) बुद्धि विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन करने की योग्यता है
(d) बुद्धि बहु–आयामी है और इसमें कई पहलू निहित हैं

DSSSB PRT

Ans : (d) हावर्ड–गार्डनर के अनुसार बुद्धि बहुआयामी है और इसमें कई पहलू निहित है। इन्होंने बुद्धि के सात प्रकार बताए जो परस्पर एक-दूसरे से स्वतंत्र होती हैं एवं प्रत्येक के क्रियाशील होने के ढंग अलग-अलग होते हैं।

39. निम्नलिखित में से कौन–सा एक उदाहरण भाषिक बुद्धि वाले व्यक्ति को दर्शाता है?

(a) स्वर, राग और सुर के प्रति संवेदनशीलता
(b) ध्यान देने और दूसरे से अन्तर कर सकने की योग्यता
(c) तर्क की दीर्घ शृंखलाओं को सम्भाल सकने की योग्यता
(d) शब्दों के अर्थ, क्रम तथा भाषा के विविध प्रयोगों के प्रति संवेदनशीलता

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (d) हॉवर्ड गार्डनर के अनुसार भाषिक बुद्धि वाले व्यक्ति शब्दों के अर्थ, क्रम तथा भाषा के विविध प्रयोगों के प्रति संवेदनशील होते हैं। ऐसे लोग कवि, लेखक, आलोचक आदि होते हैं।

40. अंतरवैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य है–

(a) स्वयं की क्षमताओं एवं कमजोरियों की पहचान करना
(b) दूसरों को अभिप्रेरित करने का कौशल
(c) विभिन्न व्यक्तियों को समझने का कौशल
(d) दूसरों के साथ बातचीत करने का कौशल

DSSSB PRT

Ans : (c) अंतरवैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य अन्य व्यक्तियों की इच्छा, अपेक्षा, आवश्यकता आदि को समझने तथा दूसरो के व्यवहार का पूर्वकथन करने की क्षमता आदि से है। जबकि अंतःवैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य अपने भावों व संवेगों को मॉनीटर करने, विभेद करने तथा स्वयं के व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता से है।

41. संवेगात्मक बुद्धि, बहुबुद्धि सिद्धांत के किस क्षेत्र के साथ सम्बन्धित हो सकती है?

(a) अन्तर्वैयक्तिक और अन्तःवैयक्तिक बुद्धि
(b) प्राकृतिक बुद्धि
(c) चाक्षुष–स्थानिक बुद्धि
(d) अस्तित्वपरक बुद्धि

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) संवेगात्मक बुद्धि, बहुबुद्धि सिद्धांत के अंतर्वैयक्तिक और अंतःवैयक्तिक बुद्धि के साथ सम्बन्धित हो सकती है। अंतर्वैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य अन्य व्यक्तियों की इच्छा, अपेक्षा आवश्यकता आदि को समझने तथा दूसरे के व्यवहार का पूर्वकथन करने की क्षमता से है जबकि अंतःवैयक्तिक बुद्धि से तात्पर्य अपनी भावों व संवेगों को मॉनीटर करने, विभेद करने तथा स्वयं के व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता समाहित रहती है।

42. ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता निम्नलिखित में से किस क्षमता से सम्बन्धित है?

(a) ध्वनि संरचना पर चिंतन करना व उसमें हेर–फेर करना
(b) सही–सही व धाराप्रवाह बोलना
(c) जानना, समझना व लिखना
(d) व्याकरण के नियमों में दक्ष होना

DSSSB PRT
C TET 2014 (I-V)

Ans : (a) हावर्ड गार्डनर के अनुसार भाषिक बुद्धि वाले व्यक्ति में ध्वनि सम्बन्धी जागरूकता होती है। ऐसे व्यक्ति में ध्वनि संरचना पर चिंतन करना व हेर-फेर करना आदि गुणों का होना निश्चित रहता है।

43. तार्किक गणितीय बुद्धि ..... से संबंधित है।

(a) द्वि–कारक सिद्धांत (b) समूह कारक सिद्धांत
(c) पदानुक्रमिक सिद्धांत (d) बहु बुद्धि सिद्धांत

DSSSB PRT

Ans : (d) तार्किक गणितीय बुद्धि बहुबुद्धि सिद्धांत से सम्बन्धित है। इस प्रकार की बुद्धि से अभिप्राय तर्क करने की क्षमता व अंकों के बोध आदि से है। बहुबुद्धि सिद्धांत का प्रतिपादन हावर्ड गार्डनर ने वर्ष 1983 में किया था।

44. गार्डनर के बहु-बुद्धि के सिद्धान्त के अनुसार, वह कारक जो व्यक्ति के 'आत्म-बोध' हेतु सर्वाधिक योगदान देगा, वह हो सकता है –

(a) संगीतमय (b) आध्यात्मिक
(c) भाषा-विषयक (d) अन्तःवैयक्तिक

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (d) हावर्ड गार्डनर ने बहु-बुद्धि का सिद्धान्त दिया है। इन्होंने सात प्रकार के बुद्धि का उल्लेख किया है जिनकी क्षमताएँ या कार्य भी अलग-अलग हैं–

1. भाषायी बुद्धि – भाषा बोध क्षमता
2. तार्किक गणतीय बुद्धि – तर्क करने की क्षमता व अंकों का बोध क्षमता
3. शरीर गतिकी बुद्धि – शारीरिक गति पर नियंत्रण व प्रवीणता की क्षमता
4. स्थानिक बुद्धि – स्थानिक चित्रण व कल्पना शक्ति
5. वैयक्तिक आत्म बुद्धि – आत्म बोध की क्षमता
6. वैयक्तिक पर बुद्धि – दूसरे के व्यवहारों को समझना

45. 'बहुबुद्धि के सिद्धान्त' के संदर्भ में एयरफोर्स पायलट बनने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी बुद्धि की आवश्यकता है?

(a) अंतःवैयक्तिक (b) भाषिक
(c) गतिक (d) अंतर-वैयक्तिक

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) एयरफोर्स पायलट बनने के लिए उसमें शरीर गतिकी बुद्धि का होना आवश्यक है क्योंकि किसी भी पायलट के लिए शारीरिक गति पर नियंत्रण करने व उसमें प्रवीणता लाने की क्षमता होनी चाहिए।

46. हावर्ड गार्डनर का बुद्धि का सिद्धांत ---- पर बल दता है

(a) शिक्षार्थियों में अनुबंधित कौशलों
(b) सामान्य बुद्धि
(c) विद्यालय मे आवश्यक समान योग्यताओं
(d) प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण योग्यताओं

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (d) हावर्ड गार्डनर का बुद्धि का सिद्धांत प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण योग्यताओं पर बल देता है। इनके अनुसार –'बुद्धि कोई एक तत्व नहीं है बल्कि कई भिन्न-भिन्न प्रकार की बुद्धियों का अस्तित्व है। प्रत्येक बुद्धि एक-दूसरे से स्वतंत्र रह कर कार्य करती है।'

47. निम्नलिखित में से कौन-सा निरीक्षण हॉवर्ड गार्डनर के बहुविध-बुद्धि सिद्धान्त का समर्थन करता है?

(a) मस्तिष्क के एक भाग में हुई क्षति केवल किसी एक विशिष्ट योग्यता को प्रभावित करती है न कि सम्पूर्ण को
(b) बुद्धि विश्लेषणात्मक सृजनात्मक एवं व्यवहारात्मक बुद्धियों की अंतःक्रिया है

(c) विभिन्न बुद्धियाँ अपने स्वरूप में पदानुक्रमात्मक हैं
(d) अनुदेशन के प्रारूप का निर्माण करते समय अध्यापकों को किसी एक विशिष्ट शैक्षिक नवाचार के सिद्धान्त का अनुपालन करना चाहिए

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans: (a) गार्डनर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में सात तरह की बुद्धि होती है। ये सभी सातों प्रकार की बुद्धि यद्यपि परस्पर अन्तर्क्रिया करती है फिर भी वे मुख्यतः स्वतंत्र रूप से कार्य करती है। इसलिए मस्तिष्क के एक भाग में हुई क्षति केवल किसी एक विशिष्ट योग्यता को प्रभावित करती है न कि सम्पूर्ण को।

48. 'बहु-बुद्धि सिद्धान्त' को वैध नहीं माना जा सकता, क्योंकि
(a) विशिष्ट परीक्षणों के अभाव में भिन्न बुद्धियों (different intelligences) का मापन सम्भव नहीं है
(b) यह सभी सात बुद्धियों को समान महत्व नहीं देता है
(c) यह केवल अब्राहम मैस्लोंके जीवन-भर के सुदृढ़ अनुभवात्मक अध्ययन पर आधारित है
(d) यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामान्य बुद्धि 'g' के अनुकूल (सुसंगत) नहीं है

DSSSB PRT

Ans: (a) 'बहु-बुद्धि सिद्धान्त' को वैध नही माना जा सकता, क्योंकि विशिष्ट परीक्षणों के अभाव में भिन्न बुद्धियों (different intelligences) का मापन सम्भव नहीं है। ऐसा इसलिए कि कोई विशेष बुद्धि परीक्षण व्यक्ति के किसी खास पक्ष का ही परीक्षण कर सकता है।

49. निम्नलिखित में से कौन-सा आलोचनात्मक दृष्टिकोण 'बहु-बुद्धि सिद्धान्त' (Theory of Multiple Intelligences) से सम्बद्ध नहीं है?
(a) यह शोधाधारित नहीं है।
(b) विभिन्न बुद्धियाँ भिन्न-भिन्न विद्यार्थियों के लिए विभिन्न पद्धतियों की मांग करती है
(c) प्रतिभाशाली विद्यार्थी प्रायः एक क्षेत्र में ही अपनी विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं।
(d) इसका कोई अनुभवात्मक आधार नहीं है

C TET Paper - I (Class I-V) 16 Feb 2014

Ans : (c) मनोविज्ञानी हॉवर्ड गार्डनर ने बहु-बुद्धि सिद्धान्त प्रतिपादित किया था। इन्होंने बहु-बुद्धि परीक्षण के लिए प्रक्रिया का वर्णन किया था जिसके अनुसार प्रतिभाशाली विद्यार्थी लगभग हर क्षेत्र में अपनी विशिष्टता प्रदर्शित करते हैं न कि किसी एक क्षेत्र में।

50. बहुविध बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार सभी प्रकार के पशुओं, खनिजों और पेड़-पौधों को पहचानने और वर्गीकृत करने की योग्यता ..... कहलाती है।
(a) तार्किक-गणितीय बुद्धि (b) प्राकृतिक बुद्धि
(c) भाषिक बुद्धि (d) स्थानिक बुद्धि

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (b) बहुविध बुद्धि सिद्धान्त के अनुसार सभी प्रकार के पशुओं, खनिजों और पेड़-पौधों को पहचानने और वर्गीकृत करने की योग्यता प्राकृतिक बुद्धि कहलाती है। बुद्धि के बहुविधि सिद्धांत का प्रतिपादन हावर्ड गार्डनर ने किया था।

51. निम्नलिखित में से कौन-सी बहुबुद्धि सिद्धान्त की आलोचना है?
(a) बहुबुद्धि शिक्षार्थियों को अपने रुझान को खोजने में मदद उपलब्ध कराती है।
(b) यह व्यावहारिक बुद्धि पर आवश्यकता से अधिक बल देती है।
(c) यह आनुभविक साक्ष्यों को बिल्कुल भी समर्थन नहीं दे सकता।
(d) बहुबुद्धि केवल 'प्रतिभाएँ' हैं जो पूर्ण रूप में बुद्धि में विद्यमान रहती हैं।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (d) बहुबुद्धि का सिद्धान्त, लोगों व उनकी विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं (तार्किक, दृश्य संबंधी, संगीत आदि) के बारे में हार्वड गार्डनर का एक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है जिसे उन्होने सन् 1986 में प्रतिपादित किया। बहुबुद्धि केवल 'प्रतिभाएँ' है जो पूर्ण रूप में बुद्धि में विद्यमान रहती है बहुबुद्धि सिद्धान्त की आलोचना करता है।

52. बुद्धि के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?
(a) बुद्धि को केवल मानकीकृत बुद्धिलब्धि परीक्षणों के आयोजन के द्वारा विश्वसनीय रूप से निर्धारित किया जा सकता है।
(b) बुद्धि मूलभूत रूप से स्नायु-तंत्र-संबंधी कार्यप्रणाली है। उदाहरणार्थ- प्रक्रमण की गति, संवेदी-विभेद आदि।
(c) बुद्धि विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन करने की योग्यता है।
(d) बुद्धि बहु-आयामी है और इसमें कई पहलू निहित हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (d) बुद्धि व्यक्ति की जन्मजात शक्ति है और उसकी सब मानसिक योग्यताओं का योग एवं अभिन्न अंग है। इसलिए बुद्धि बहुआयामी होती है जैसे संज्ञान, स्मरण, चिंतन, गैर परम्परागत चिंतन, मूल्यांकन आदि। इसके कई पहलू भी हैं जैसे ध्यान, निष्कर्ष आदि।

53. गार्डनर ने सात अभियोग्यताओं का अधिमान निर्धारित किया, इसमें से कौन-सा नहीं है?
(a) स्थान सम्बन्धी अभियोग्यता
(b) भावनात्मक अभियोग्यता
(c) अन्तर्वैयक्तिक अभियोग्यता
(d) भाषात्मक अभियोग्यता

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) गार्डनर द्वारा निर्धारित सात अभियोग्यताओं का अधिमान निम्न है-
1. दृश्य/स्थानिक अभियोग्यता
2. भाषात्मक अभियोग्यता
3. अन्तर्वैयक्तिक अभियोग्यता
4. शारीरिक अभियोग्यता
5. अंतःवैयक्तिक अभियोग्यता
6. तार्किक अभियोग्यता
7. संगीत अभियोग्यता

भावनात्मक अभियोग्यता गार्डनर द्वारा निर्धारित नहीं किया गया।

54. भाषाई बुद्धिमत्ता से संपन्न व्यक्तियों में कौन-सी क्षमता होती है?
(a) संख्यात्मक पद्धति के प्रति संवेदनशीलता
(b) लय/ताल बनाने की क्षमता
(c) संगीत की अभिव्यक्तियों के रूपों क सराहना
(d) ध्वनि, लय/ताल और शब्दों के अर्थों के प्रति संवेदनशीलता

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : भाषाई बुद्धिमत्ता से सम्पन्न व्यक्तियों में ध्वनि, लय, ताल और शब्दों के अर्थों के प्रति संवेदनशीलता की क्षमता होती है। हावर्ड गार्डनर ने अपने बहु–बुद्धि सिद्धांत में भाषायी बुद्धिमत्ता को बुद्धि के एक प्रकार के रूप में परिभाषित किया है।

55. ट्रैफिक में नेविगेट करने की कोशिश करते समय किस प्रकार की बुद्धि का उपयोग किया जाएगा?

(a) अंतरावैयक्तिक बुद्धि (b) अंतःवैयक्तिक बौद्धिकता
(c) स्थानिक बुद्धि (d) प्राकृतिवादी बुद्धि

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : ट्रैफिक में नेविगेट करने की कोशिश करते समय स्थानिक बुद्धि का उपयोग किया जायेगा। स्थानिक बुद्धि वाले व्यक्ति में मानसिक बिम्बों को बनाने, उनका उपयोग करने तथा उनमें मानसिक धरातल पर परिमार्जन करने की योग्यता होती है। इस बुद्धि को अधिक मात्रा में रखने वाला व्यक्ति सरलता से स्थानिक सूचनाओं को अपने मष्तिष्क में रख सकता है। विमान चालक, नाविक, मूर्तिकार, शल्य चिकित्सक आदि में इस प्रकार की बुद्धि होती है।

56. जब बच्चे यह पहचानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे लोगों के विचारों और भावनाओं से अवगत हैं, तो यह कहा जाता है–

(a) सामाजिक सूचना भूमिका लेना
(b) सामाजिक और पारंपरिक प्रणाली की भूमिका लेना
(c) आत्म प्रतिबिंब (सेल्फ रिफ्लेक्शन)
(d) आपसी भूमिका लेना

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : जब बच्चे यह पहचानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे लोगों के विचारों और भावनाओं से अवगत हैं तो यह आत्म–प्रतिबिंब (Self–Reflection) कहा जाता है।

57. नृत्य प्रदर्शन के दौरान, गार्डनर के किस प्रकार के बहु-बुद्धिमता का उपयोग किया जाता है?

(a) प्राकृतिक बुद्धि (b) अंतरावैयक्तिक बुद्धि
(c) भाषागत बुद्धि (d) शारीरिक-गतिसंवेदी बुद्धि

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : नृत्य प्रदर्शन के दौरान, गार्डनर के अनुसार शारीरिक-गतिसंवेदी बुद्धि का उपयोग किया जाता है। किसी वस्तु अथवा उत्पाद के निर्माण के लिए अथवा मात्र शारीरिक प्रदर्शन के लिए सम्पूर्ण शरीर अथवा एक से अधिक अंग की लोच तथा पेशीय कौशल की योग्यता शारीरिक गतिसंवेदी बुद्धि कहलाती है। धावकों, नर्तकों, अभिनेताओं/अभिनेत्रियों, खिलाड़ियों, जिमनास्टों तथा शल्य चिकित्सकों में इस बुद्धि की अधिक मात्रा पायी जाती है।

58. एक बच्चा किस तरह का विद्यार्थी है जो विषय से संबंधित भौतिक गतिविधि करते हुए सबसे अच्छा सीखता है?

(a) श्रव्य (b) पठन–लेखन
(c) दृश्य (d) गतिसंवेदी

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) गति संवेदी बुद्धि वाले विद्यार्थी विषय से सम्बन्धित भौतिक गतिविधि करते हुए सबसे अच्छा सीखते हैं। गतिसंवेदी बुद्धि वाले विद्यार्थी में शरीर को अभिव्यक्ति के एक साधन के रूप में कौशलपूर्ण उपयोग करने की क्षमता अथवा वस्तुओं के निर्माण या संचालन के लिए कौशलपूर्ण कार्य करने की क्षमता होती है। ऐसे विद्यार्थी किसी विषय को क्रियाओं द्वारा बेहतर सीखते हैं।

59. गार्डनर के अनुसार, अध्यात्मिक बौद्धिकता है:

(a) किसी की प्रारंभिक धारणाओं में परिवर्तन करने की क्षमता
(b) जीवन के उद्देश्य के संबंध में जटिल समस्यओं पर विचार करने की क्षमता
(c) प्राकृतिक दुनिया में विभेद करने की क्षमता
(d) अपनी स्वयं की शक्तियों, कमजोरियों, इच्छाओं और बुद्धिमता का ज्ञान

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) गार्डनर के अनुसार, आध्यात्मिक बौद्धिकता जीवन के उद्देश्य के संबंध में जटिल समस्याओं पर विचार करने की क्षमता है। राबर्ट एम्मोन्स ने आध्यात्मिक बौद्धिकता को परिभाषित करते हुए कहा है– ''आध्यात्मिक सूचनाओं का अनुकूलित प्रयोग दैनिक समस्या–समाधान तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया जाता है।'' यह बुद्धिमत्ता तथा दया से कार्य करने की क्षमता है।

60. मूर्तिकारों में किस प्रकार की बुद्धिमत्ता होती है?

(a) प्रकृतिवादी
(b) स्थानिक
(c) अंतर्वैयक्तिक
(d) शारीरिक–गतिक (बॉडली–कीनेस्थेटिक)

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) मूर्तिकारों में स्थानिक बुद्धिमत्ता होती है। स्थानिक बुद्धि से तात्पर्य स्थानिक चित्रण व कल्पनाशक्ति से है। यह दृश्य बिंब तथा प्रतिरूप निर्माण का कौशल है। यह मानसिक बिंबों को बनाने, उनका उपयोग करने तथा उनमें मानसिक धरातल पर परिमार्जन करने की योग्यता है। इस बुद्धि को अधिक मात्रा में रखने वाला व्यक्ति सरलता से देशिक सूचनाओं को अपने मस्तिष्क में रख सकता है। विमान– चालक, नाविक, मूर्तिकार, चित्रकार, वास्तुकार, आंतरिक साज–सज्जा के विशेषज्ञ, शल्य–चिकित्सक आदि में इस बुद्धि के अधिक पाए जाने की संभावना होती है।

61. जॉन एक छात्र है जो अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, एहसास और प्रेरणा से स्वाभाविक रूप से अवगत है। हावर्ड गार्डनर की थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस (एकाधिक ज्ञान के सिद्धांत) के अनुसार, वह निम्न में से किस बुद्धिमता को प्रदर्शित करता है :

(a) अन्तर वैयक्तिक बुद्धिमता (b) अंतरावैयक्तिक बौद्धिकता
(c) दृश्य-स्थानिक बुद्धिमत्ता (d) स्वाभाविक बुद्धिमत्ता

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : यदि जॉन एक छात्र है जो अपनी व्यक्तिगत भावनाओं, एहसास और प्रेरणा से स्वाभाविक रूप से अवगत है तो हावर्ड गार्डनर की थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलिजेंस (एकाधिक ज्ञान के सिद्धांत) के अनुसार, वह अंतरावैयक्तिक बौद्धिकता (Intrapersonal intelligence) को प्रदर्शित करता है। अंतरावैयक्ति बौद्धिकता में अपने भावों व संवेगों को मॉनीटर करने, विभेद करने तथा स्वयं के व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता समाहित रहती है।

62. निम्नलिखित में से किस प्रकार की बुद्धि का उपयोग, यातायात के माध्यम से नेविगेट करने की कोशिश करते समय किया जाएगा?

(a) प्राकृतिकवादी बुद्धि (b) स्थानिक बुद्धि
(c) अंतर्वैयक्तिक बुद्धि (d) भावनात्मक बुद्धि

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : स्थानिक बुद्धि का उपयोग, यातायात के माध्यम से नेविगेट करने की कोशिश करते समय किया जाएगा। स्थानिक बुद्धि को अधिक मात्रा में रखने वाला व्यक्ति सरलता से देशिक सूचनाओं को अपने मस्तिष्क में रखा जा सकता है। विमान चालक, नाविक, मूर्तिकार, चित्रकार, वास्तुकार, आंतरिक साज-सज्जा के विशेषज्ञ, शल्य चिकित्सक आदि में इस बुद्धि के अधिक पाये जाने की सम्भावना होती है।

63. बुद्धि के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है?

(a) बुद्धि अनुभव के परिणाम के रूप में व्यवहार में एक अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है।
(b) बुद्धि एक आनुवंशिक विशेषक है जिसमें मानसिक गतिविधियाँ जैसे स्मरण एवं तर्क शामिल होती हैं।
(c) बुद्धि बहु-आयामी है जिसमें बुद्धि परीक्षणों के द्वारा पूर्ण रूप से परिमेय न की जाने वाली कई योग्यताएँ शामिल हैं।
(d) बुद्धि अभिसारी रूप से सोचने की योग्यता है।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) हावर्ड गार्डनर के अनुसार बुद्धि बहुआयामी है जिसमें बुद्धि परीक्षणों के द्वारा पूर्ण रूप से परिमेय न की जाने वाली कई योग्यताएँ शामिल हैं। गार्डनर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में सात तरह की बुद्धि होती है परन्तु वंशानुक्रम तथा वातावरण के प्रभाव के कारण इनमें से कोई एक या अनेक प्रकार की बुद्धि अधिक विकसित हो सकती है। गार्डनर का यह मत है कि सभी सातों प्रकार की बुद्धि यद्यपि परस्पर अंतर्क्रिया करती हैं फिर भी वे मुख्यतः स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं। इसलिए कोई भी मानक बुद्धि परीक्षण किसी एक योग्यता को ही माप सकता है न कि सभी प्रकार की योग्यताओं को।

बुद्धि और अधिगम में अंतर्सम्बन्ध

64. निम्न में से कौन बुद्धि परीक्षणों के दुरुपयोग का संकेत देता है?

(a) उन्नति के लिये मापन में सहायक
(b) बुद्धि लब्धि का लेबल बालकों पर लगा कर अध्यापक अपनी अकुशलता को छिपाते हैं
(c) बालकों को वर्गीकृत करने में
(d) अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिये।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) बुद्धि परीक्षण के द्वारा बालकों के बुद्धि का मापन किया जाता है तथा बालकों की क्षमता की गणना की जाती है इस परीक्षण का प्रमुख दोष यह है कि इसके तहत अध्यापक की अकुशलता को ध्यान में नहीं रखा जाता है तथा अध्यापक अपनी जिम्मेदारी से बचते हुए बालक के अधिगम विफलता का कारण उनके बुद्धि-लब्धि को ही जिम्मेदार ठहराने लगते हैं।

65. बुद्धि लब्धांक सामान्यतः ..... रूप से शैक्षणिक निष्पादन से सम्बन्धित होती है।

(a) मध्यम (b) कम–से–कम
(c) पूर्ण (d) उच्च

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (d) बुद्धि लब्धांक का सीधा सम्बन्ध उच्च शैक्षिक निष्पादन से होता है। जैसे 130 से अधिक बुद्धि लब्धांक वाले बालकों को प्रतिभाशाली तथा 71 से कम बुद्धि लब्धांक वाले बालकों को जड़ बुद्धि की श्रेणी में रखा जाता है।

66. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सत्य है?

(a) लड़के अधिक बुद्धिमान होते हैं
(b) लड़कियाँ अधिक बुद्धिमान होती हैं
(c) बुद्धि का लिंग के साथ संबंध नहीं है
(d) सामान्यतः लड़के, लड़कियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं

DSSSB PRT

Ans : (c) बुद्धि का लिंग, जाति, धर्म, समाज आदि से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता है बल्कि 'बुद्धि व्यक्ति की जन्मजात शक्ति है और उसकी सब मानसिक योग्यताओं का योग व अभिन्न अंग है।'

67. मानव बुद्धि एवं विकास की समझ शिक्षक को--- के योग्य बनाती है।

(a) निष्पक्ष रूप से अपने शिक्षण-अभ्यास
(b) शिक्षण के समय शिक्षार्थियों के संवेगों पर नियंत्रण बनाए रखने
(c) विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता
(d) शिक्षार्थियों को यह बनाने कि वे अपने जीवन में कैसे सुधार कर सकते, है।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (c) मानव बुद्धि एवं विकास की समझ शिक्षक को विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता के योग्य बनाती है। अतः मानव बुद्धि व विकास के आधार पर ही एक शिक्षक किसी छात्र की बौद्धिक स्तर का आकलन करता है।

68. ____ बुद्धिमत्ता, तीव्रतर विकास से जुड़ी है।

(a) कोई बुद्धि नहीं (b) मध्यम बुद्धि
(c) उच्च (d) मंद

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : उच्च बुद्धिमत्ता तीव्रतर विकास से जुड़ी होती है। उदाहरण के लिए प्रतिभाशाली बालकों की बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है, जिनका विकास मंद बुद्धि बालकों (जिनकी बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है) से तीव्र गति से होता है। उच्च बुद्धिमत्ता वाले बालक अपनी समस्याओं का समाधान सरलतापूर्वक कर लेते हैं तथा समाज में अपने आपको बेहतर तरीके से समायोजित कर पाते हैं।

69. आमतौर पर बौद्धिक स्तर की गणना, शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ ..... सहसंबंधित होती है।

(a) कम (b) अत्यधिक
(c) मध्यम रूप से (d) पूरी तरह से

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : आमतौर पर बौद्धिक स्तर की गणना, शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ अत्यधिक सहसंबंधित होती है। उदाहरण के लिए प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का बुद्धि स्तर उच्च होता है तो उनका शैक्षणिक प्रदर्शन भी बेहतर होता है। इसी प्रकार मंद बुद्धि बच्चों का बुद्धि स्तर निम्न होता है तो उन का शैक्षणिक प्रदर्शन भी कमजोर होता है।

10.

व्यक्तित्व और उसका मापन

व्यक्तित्व का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. एक बच्चे के मूल, जन्मजात स्वभाव को निरूपित करने के लिए किस पद का प्रयोग किया जाता है?

(a) व्यक्तित्व (b) प्रकृति या मिजाज
(c) रुचि (d) संलग्न

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : एक बच्चे के मूल, जन्मजात स्वभाव को निरूपित करने के लिए प्रकृति या मिजाज (Temperament) पद का प्रयोग किया जाता है। यह व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और सोच को प्रभावित करता है।

2. ''व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन, जो उसके पर्यावरण के साथ अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है।'', कहलाता है।

(a) व्यक्तित्व (b) समायोजन
(c) संवेदना (d) चरित्र

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (a) आलपोर्ट के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है, जो उसके पर्यावरण के साथ उसका अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है।'' अर्थात् व्यक्तित्व की प्रकृति संगठनात्मक तथा गत्यात्मक है, व्यक्तित्व में मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही प्रकार के गुण समाहित रहते हैं तथा व्यक्तित्व वातावरण के साथ समायोजन से अभिलक्षित होता है।

3. व्यक्तित्व के संगठन का स्वरूप है

(a) सामाजिक-आर्थिक (b) मनोवैज्ञानिक-शारीरिक
(c) सामाजिक-राजनीतिक (d) मनोवैज्ञानिक-आध्यात्मिक

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (b) मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक गुणों के मिलने से एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। इन दोनो गुणों में से किसी एक की भी अनुपस्थिति से व्यक्तित्व का संतुलित विकास नहीं हो सकता है।

4. व्यक्तित्व के संदर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?

(a) व्यक्तित्व अपूर्व और विशिष्ट होता है।
(b) व्यक्तित्व वंशानुक्रम और वातावरण की संयुक्त उपज है।
(c) व्यक्तित्व व्यक्ति के अर्धचेतन और अचेतन व्यवहार तक फैला रहता है।
(d) व्यक्तित्व व्यक्ति के केवल बाहरी रुप तक सीमित होता है।

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) व्यक्तित्व शब्द समग्रता को प्रदर्शित करता है जिसमें व्यक्ति के वातावरण, वंशानुक्रम, चेतना, विशिष्टा तथा आन्तरिक एवं बाह्य विशेषताऐं शामिल होती है।

5. व्यक्तित्व स्थायी समायोजन है

(a) पर्यावरण के साथ (b) जीवन के साथ
(c) प्रकृति के साथ (d) ये सभी

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को अनुकूलित कर लेता है। पर्यावरण, जीवन तथा प्रकृति के साथ समायोजन व्यक्तित्व स्थायी समायोजन के प्रमुख लक्षण है।

6. व्यक्तित्व विकास की अवस्था है

(a) अधिगम एवं वृद्धि (b) व्यक्तिवृत्त अध्ययन
(c) उपचारात्मक अध्ययन (d) इनमें से कोई नहीं

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) व्यक्तित्व विकास की अवस्था को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. अधिगम एवं वृद्धि
2. अधिगम एवं परिपक्वता
3. विकास की प्रक्रिया

7. बालक के व्यक्तित्व की नींव किस अवस्था में पड़ती है?

(a) शैशवावस्था (b) गर्भकालीन अवस्था
(c) बचपनावस्था (d) इनमें से कोई नहीं।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) बालक के व्यक्तित्व का विकास उसके सामाजिकता के कारण होता है। बालक का समाज जिस तरह से होता है, बालक के व्यक्तित्व का विकास भी उसी के अनुरूप होता है। बाल्यावस्था में ही बालक का सम्पूर्ण सामाजिक विकास होता है। अतः बालक के व्यक्तित्व की नींव बाल्यावस्था (बचपनावस्था) में पड़ती है।

8. स्थायी विशेषताओं के पैटर्न के रूप में क्या वर्णित है जो एक व्यक्ति को परिभाषित करता है और स्थिरता एवं वैयक्तिकता का उत्पादन करता है?

(a) व्यक्तित्व (b) अधिगम
(c) बुद्धि (d) प्रेरणा

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) स्थायी विशेषताओं के पैटर्न के रूप में व्यक्तित्व किसी व्यक्ति को परिभाषित करता है और स्थिरता एवं वैयक्तिकता का उत्पादन करता है। दूसरे शब्दों में व्यक्तित्व की प्रकृति गत्यात्मक अवश्य है किन्तु इसका अर्थ कदापि नहीं है कि व्यक्तित्व तेजी से बदलता रहता है। व्यक्तित्व काफी लम्बे समय अन्तराल में अन्य परिस्थितियों से प्रभावित होकर अत्यन्त मंद गति से गतिशील होता है। इसलिए इसे स्थिर माना जाता है। इसी प्रकार गैरेट ने भी व्यक्तित्व के गुणों के बारे में कहा है, ''व्यक्तित्व के गुण, व्यवहार करने की निश्चित विधियाँ हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति में बहुत-कुछ स्थायी होती है।''

9. किसी के व्यक्तित्व के विकास से _____ में सहायता होती है।

(a) परिपक्वता की प्रक्रिया को तेज करने
(b) शरीर का कद बढ़ने

(c) सामाजिक स्थितियों से निपटनें
(d) जन्मजात विकारों पर काबू पाने

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) किसी के व्यक्तित्व के विकास से सामाजिक स्थितियों से निपटने में सहायता होती है। एक अच्छे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति में सामाजिकता, मैत्री–भाव, समाज सेवा, परोपकार, दया, करुणा, धैर्य, बहिर्मुखता, सहानुभूति, सद्भाव, उत्तम समायोजन, सहयोग, नैतिकता आदि महत्त्वपूर्ण सामाजिक गुण होते हैं, जो उसे सामाजिक स्थितियों से निपटने में सहायक होते हैं।

10. इनमें से क्या व्यक्तित्व लक्षण नहीं हैं?

(a) विचार-भावना (b) आँकना-समझना
(c) संवेदना-अंतः प्रज्ञा (d) कद-रंग

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (*) : अच्छे व्यक्तित्व के निम्नलिखित लक्षण होते हैं–

1. **शारीरिक लक्षण (Physical Traits)–** इसके अंतर्गत आकर्षक रूप रंग, सुगठित कद–काठी सौम्य हाव–भाव आदि आते हैं।
2. **मानसिक लक्षण (Mental Traits)–** इसके अंतर्गत उच्च स्तरीय बुद्धि, चिन्तन–शक्ति, तार्किक–क्षमता, उत्तम विचार–प्रक्रिया, आँकना–समझना आदि आते हैं।
3. **सामाजिक लक्षण (Social Traits)–** सामाजिकता, उत्तम समायोजन, सहयोग, सहानुभूति आदि इस लक्षण के अंतर्गत आते हैं।
4. **संवेगात्मक लक्षण (Emotional Traits)–** इसके अंतर्गत सांवेगिक–स्थिरता, उच्च–आकांक्षा, उद्देश्यपूर्णता, संतोष, संवेदना–अंतः प्रज्ञा आदि आते हैं।
5. **नैतिक गुण (Moral Traits)–** उच्च नैतिक चरित्र, देश–प्रेम, सहिष्णुता, दृढ़ संकल्प शक्ति, ईश्वर में आस्था, नैतिक चरित्र आदि अच्छे व्यक्तित्व के कुछ प्रमुख नैतिक गुण हैं।

नोट– अतः प्रश्न में दिये गये सभी विकल्प व्यक्तित्व के लक्षण है। इसलिए कोई विकल्प सही नहीं है।

11. व्यक्तित्व (पर्सनालिटी) शब्द निम्न से लिया गया है:

(a) उपर्युक्त में से कोई नहीं (b) यूनानी
(c) लैटिन (d) जर्मन

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) व्यक्तित्व शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'पर्सनालिटी' (Personality) शब्द का उद्भव लैटिन भाषा के पर्सोना (Persona) से हुआ है, जिसका अर्थ मुखौटा है। पर्सोना शब्द का अभिप्राय उस पहनावे या वेशभूषा से था, जिसे पहनकर नाटक के पात्र रंगमंच पर किसी अन्य व्यक्ति का अभिनय करते थे। अतः पर्सनालिटी शब्द का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति के बाह्य दिखावे मात्र को इंगित करता है।

12. शब्द ''सामंजस्य'' इससे संबंधित है-

(a) व्यक्तित्व (b) मनोवृत्ति
(c) बुद्धि (d) प्रेरणा

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : शब्द सामंजस्य (Consistency) व्यक्तित्व से संबंधित हैं। आलपोर्ट के अनुसार व्यक्तित्व असम्बन्धित शीलगुणों का झुंड मात्र नहीं है वरन् इसमें शीलगुणों के समन्वय (Integration) तथा संगतता या सामंजस्य (Consistency) का भाव निहित रहता है। इसे उसने अपनापन (Proprium) कहा। आलपोर्ट के लिए अपनापन से तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पक्षों से है जो एकीकरण व सामंजस्य के साथ व्यक्ति के अनोखे अपनेपन को दर्शाता है।

13. सभी सामाजिक स्थितियों से निपटना आसान है, यदि आप अपने ..... के बारे में जानते है।

(a) रूचियों (b) खूबियों
(c) व्यक्तित्व (d) शौकों

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : यदि कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के बारे में जानता है तो उसके लिए सभी सामाजिक स्थितियों से निपटना आसान होता है। व्यक्तित्व की प्रकृति संगठनात्मक होती है जिसमें व्यक्ति के सभी गुणों का एक मिला–जुला समन्वित रूप अभिव्यक्त होता है। वातावरण के साथ व्यक्ति का समायोजन स्थापित करने तथा उसे बनाये रखने में व्यक्तित्व एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। व्यक्तित्व ही व्यक्ति के व्यवहारों एवं विचारों को क्रियाशील बनाता है एवं निर्देशित करता है और उसे समाज में समायोजित करता है।

व्यक्तित्व के प्रकार

14. साइजौइड वर्ग में किस प्रकार के बालक आते है?

(a) मोटे, स्वस्थ तथा लम्बे शरीर वाले
(b) प्रतिभाशाली व प्रखर बुद्धि वाले
(c) दुबले, पतले तथा लम्बे शरीर वाले
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) साइजॉइड को साइजॉइड पर्सनालिटी डिसार्डर भी कहते हैं। यह एक प्रकार का मानसिक विकार है जिसमें व्यक्ति उदासीन हो जाता है। इसके लक्षणों के आधार पर यह सिजोफ्रेनिया के ही समान एक मानसिक विकार माना जा सकता है।

15. बहिर्मुखी व्यक्ति वह होते हैं?

(a) जो सामाजिक व मित्रवत् होते हैं
(b) तनाव रहित होते हैं
(c) ये दोनों होते हैं
(d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans: (c) बहिर्मुखी व्यक्ति व्यवहार कुशल, चिन्तामुक्त सामाजिक, मित्रवत्, तनावरहित, आशावादी, वाक्पटु, व्यावहारिक, अहंवादी, अच्छे वक्ता, नेतृत्व प्रवृत्ति, साहसिक, आक्रामक तथा लोकप्रिय प्रकृति के होते हैं।

16. थॉर्नडाइक के व्यक्तित्व के वर्गीकरण का आधार है

(a) शारीरिक गठन और शक्लसूरत
(b) रचनात्मकता और मौलिकता
(c) समायोजन और बुद्धि
(d) चिन्तन और कल्पना

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) व्यवहारवादी चिंतक थार्नडाइक द्वारा व्यक्तित्व का वर्गीकरण चिंतन तथा कल्पना के आधार पर किया है। थार्नडाइक के अनुसार व्यक्तित्व के तीन मुख्य प्रकार हैं–
1. सूक्ष्म विचारक व्यक्तित्व
2. प्रत्यक्ष विचारक व्यक्तित्व
3. स्थूल विचारक व्यक्तित्व

17. आत्मकेन्द्रित व्यक्ति होता है
(a) अन्तर्मुखी (b) बहिर्मुखी
(c) उभयमुखी (d) सामाजिक निर्भर

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (a) अन्तर्मुखी व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण गुण आत्मकेन्द्रित है। ऐसे व्यक्ति अकेले रहना पसंद करते है तथा वाह्य परिस्थितियों के अनुसार खुद को समायोजित करने में कठिनाई महसूस करते है। ऐसे लोग निराशावादी होते है।

18. अपने ऊर्जाबल (Libido) को बाहर की ओर अभिव्यक्त करने वाले व्यक्ति का प्रकार होता है
(a) ज्ञानात्मक व्यक्तित्व (b) कलात्मक व्यक्तित्व
(c) बहिर्मुखी व्यक्तित्व (d) धार्मिक व्यक्तित्व

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) अपने ऊर्जाबल को बाहर की ओर अभिव्यक्त करने वाले व्यक्ति बहिर्मुखी प्रकार के होते है। ऐसे व्यक्ति वाह्य परिस्थितियों के अनुसार खुद को आसानी से समायोजित कर लेते है। ऐसे लोग आशावादी होते है।

19. अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी तथा उभयमुखी व्यक्तित्व का वर्गीकरण ..... द्वारा किया गया है।
(a) क्रेचनर (b) युंग
(c) शैल्डन (d) स्प्रेंजर

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) युंग स्वीट्जरलैण्ड के मनोवैज्ञानिक थे। मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर युंग ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया तथा बताया कि व्यक्तित्व मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं-
1. अन्तर्मुखी
2. बहिर्मुखी
3. उभयमुखी

20. अन्तर्मुखी व्यक्तित्व एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व का वर्गीकरण किसने किया है?
(a) फ्रायड (b) युंग
(c) मन (d) आलपोर्ट

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) युंग के अनुसार सामाजिक अन्तर्क्रिया की दृष्टि से व्यक्तियों के व्यक्तित्व को तीन भागो में बाँटा जा सकता है। (1) अन्तर्मुखी (2) बहिर्मुखी (3) उभय मुखी।

21. ग्रन्थियों के आधार पर व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों की चर्चा किसने की है?
(a) क्रेशमर (b) युंग
(c) कैनन (d) स्प्रैन्जर

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) व्यक्तित्व को विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। क्रेशमर ने 'शरीर रचना' की दृष्टि से व्यक्तित्व को तीन भागो- लम्बकाय, सुडौलकाय, गोलकाय में, युंग ने 'सामाजिक' दृष्टिकोण के आधार पर व्यक्तित्व को तीन भागों- अंतर्मुखी, बहिर्मुखी और उभयमुखी में, स्प्रैन्जर ने 'मूल्यों' के आधार पर व्यक्तित्व का छः भागों- सैद्धान्तिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और कलात्मक में वगीकृत किया है।

22. क्रेशमर ने व्यक्तित्व को निम्न में से किस प्रमुख प्रकार में वर्गीकृत किया है?
(a) कृशकाय (दुर्बल) (b) सुडौलकाय
(c) गोलकाय (d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (d) क्रेशमर ने शरीर रचना की दृष्टि से व्यक्तित्व को तीन भागों में विभक्त किया है–
(1) लम्बकाय/कृशकाय
(2) सुडौलकाय/पुष्टकाय
(3) गोलकाय/स्थूलकाय।

23. विपिन एक दिवास्वपन है और पुस्तकों को पढ़ने में रुचि रखता है और गैर मित्रों से अपने विचार प्रस्तुत नहीं कर सकता है यह व्यक्तित्व का कौन-सा प्रकार है
(a) बाह्यर्मुखी (b) अंतर्मुखी
(c) मध्यर्मुखी (d) खिलाड़ी प्रवृत्ति

Dsssb Assistant Teacher Education Department

Ans. (b) **:** विपिन एक दिवास्वपन है और पुस्तकों को पढ़ने में रुचि रखता है और गैर मित्रों से अपने विचार प्रस्तुत नहीं कर सकता है यह व्यक्तित्व का अंतर्मुखी प्रकार है।

24. निम्नलिखित में से कौन-सा लक्षण बहिर्मुखी व्यक्तित्व का नहीं है?
(a) मिलनसार (b) नेतृत्व शक्ति
(c) आक्रामक स्वभाव (d) दिवास्वप्न देखनेवाला

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (d) बहिर्मुखी वयक्तित्व के लक्षण निम्न है–
1- मिलनसार
2- नेतृत्व शक्ति
3- अक्रामक स्वभाव
4- अभिव्यक्ति की क्षमता
दिवास्वप्न देखनेवाला बालक अन्तर्मुखी होता है।

25. व्यक्तित्व का 'समाजशास्त्रीय प्रकार का सिद्धान्त' दिया गया-
(a) हिप्पोक्रेटस के द्वारा (b) क्रेचमर के द्वारा
(c) शेल्डन के द्वारा (d) स्प्रेन्जर के द्वारा

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) व्यक्तित्व के समाजशास्त्री प्रकार का सिद्धांत एडवर्ड स्प्रेंजर द्वारा दिया गया। स्प्रेंजर जर्मनी के दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने मूल्यों के आधार पर व्यक्तित्व को छः भागों में विभक्त किया है– (1) सैद्धान्तिक, (2) आर्थिक (3) धार्मिक (4) राजनीतिक (5) सामाजिक (6) कलात्मक।

26. बहिर्मुखी विद्यार्थी अन्तर्मुखी विद्यार्थी से किस विशेषता के आधार पर भिन्न होता है?
(a) मजबूत भावनायें, पसंदगी एवं नापसंदगी
(b) मन ही मन पेरशान होने की अपेक्षा अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करता है

(c) अपने बौद्धिक कार्यों में डूबा रहता है
(d) बोलने की अपेक्षा लिखने में बेहतर।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) बहिर्मुखी विद्यार्थी अपनी अभिव्यक्ति पसंद एवं नापसंद को बता देता है परन्तु अन्तर्मुखी विद्यार्थी अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं कर पाता और परिस्थितियों में समायोजन न कर पाने के कारण उसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

27. मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने व्यक्ति को किस आधार पर बाँटा है?

(a) चिन्तन व कल्पना शक्ति के आधार पर
(b) प्रभुतापूर्ण व अधीनस्थपूर्ण के आधार पर
(c) स्वतंत्रता व निर्भरता के आधार पर
(d) इनमें से कोई नहीं

DSSE PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (a) मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने व्यक्ति को चिंतन व कल्पना शक्ति के आधार पर बाँटा है। थार्नडाइक एक व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक थे इन्होंने बालक या प्राणी के व्यवहारिक पक्ष पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

28. ..... वह है जो अधिक खुला, मिलनसार, उद्यमशील, हँसमुख और काफी आत्मविश्वास वाला है।

(a) अंतर्मुखी (b) अंतर्मुखी–बहिर्मुखी
(c) बहिर्मुखी (d) उभयमुखी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : बहिर्मुखी व्यक्ति वह है जो अधिक खुला, मिलनसार, उद्यमशील, हँसमुख, चिन्तामुक्त, व्यवहार कुशल, सामाजिक, आशावादी, वाकपटु, अच्छा वक्ता, नेतृत्व प्रवृत्ति आक्रामकता, अहंवादी तथा लोकप्रिय प्रकृति वाला होता है।

29. एक बहिर्मुखी बच्चा कैसा होगाः

(a) आपके आंतरिक मस्तिष्क से चिंतन को प्रवृत्त करे।
(b) बल्कि सिर्फ निरीक्षण करे।
(c) अधिक चिंतन और बातचीत कम करे।
(d) तीव्र वातावरण में रहना पसंद करे।

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) एक बहिर्मुखी बच्चा तीव्र वातावरण में रहना पसंद करता है। बहिर्मुखी बच्चा व्यवहार कुशल, चिन्तामुक्त, सामाजिक, आशावादी, वाक्पटु, व्यावहारिक, अहंवादी अच्छा वक्ता, साहसिक, आक्रामक तथा लोकप्रिय प्रकृति का होता है।

30. बड़े 5 मॉडल में, व्यक्ति के प्रकार ..... के आधार पर विशिष्ट किए जाते हैं।

(a) सांस्कृतिक व्यक्तित्व (b) व्यक्तिगत विशिष्टता
(c) भावुक बौद्धिकता (d) सत्र आधारित

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : बिग फाइव व्यक्तित्व लक्षण (Big 5 mode), जिसे पाँच कारक मॉडल (FFM) और OCEAN मॉडल के रूप में भी जाना जाता है, व्यक्तित्व लक्षणों के लिए एक वर्गीकरण है। जब कारक विश्लेषण (एक सांख्यिकीय तकनीक) को व्यक्तित्व सर्वेक्षण डेटा पर लागू किया जाता है, तो व्यक्तित्व के पहलुओं का वर्णन करने के लिए उपयोग किये जाने वाले कुछ शब्द अक्सर एक ही व्यक्ति पर लागू होते हैं। यह सिद्धांत आम भाषा के वर्णनकर्ताओं का उपयोग करता है और इसलिए मानव व्यक्तित्व और मानस का वर्णन करने के लिए आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले पाँच व्यापक आयामों का सुझाव देता है।

1. अनुभव करने के लिए खुलापन (Openness)
2. कर्तव्यनिष्ठता (Consientiousness)
3. एक्सट्रावर्शन (Extra version)
4. तंत्रिकावाद (Neuroticism)
5. सहमतता (Agreeableness)

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक

31. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक बालक के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है?

(a) आनुवंशिकता (b) भौतिक वातावरण
(c) सामाजिक वातावरण (d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) बालक का व्यक्तित्व वंशानुक्रम तथा वातावरण भौतिक व समाजिक अन्तक्रिया का परिणाम होता है जैसी परिस्थितियां उत्पन्न होगी बालक विकास भी उसी प्रकार का होगा।

व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत (फ्रायड)

32. ''सामूहिक अचेतन'' का सम्प्रत्यय.....द्वारा दिया गया था।

(a) पावलोव (b) स्किनर
(c) फ्रायड (d) युंग

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (d) युंग ने अचेतना को दो भागों में बाँटा है - (1) व्यक्तिगत अचेतन और (2) सामूहिक अचेतन।

33. मनोविश्लेषणात्मक परामर्श उपागम किसने शुरू किया?

(a) एडलर (b) जुंग
(c) फ्रायड (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) मनोविश्लेषणात्मक परामर्श उपागम के जन्मदाता सिगमण्ड फ्रायड माने जाते हैं। मनोविश्लेषणात्म संदर्भ मनस्ताप रूपी लक्षणों को अचेतन प्रक्रिया का परिणाम मानता है। इस विश्वास की स्वाभाविक स्पष्टता यह है कि अचेतन इच्छाओं, द्वन्दों, अवदमित संवेगों, कार्यरत अहम् रक्षा युक्तियों, कुण्ठाओं आदि जैसे अचेतन सामग्रियों को किस प्रकार चेतन अवस्था में परिवर्तन किया जाये ताकि स्वाभाविक रूप से अचेतन के मूल्य पर चेतन का विस्तार हो सके। अतः मनोविश्लेशणात्मक उपागम अनेक तकनीको को प्रयुक्त करके अचेतन मानसिक सामग्री को चेतन में लाने का लक्ष्य साधता है।

34. कौन व्यक्तित्व के गुण सिद्धांत से संबंधित नहीं है?

(a) फ्रॉयड (b) आलपोर्ट
(c) कैटल (d) आइसेंक

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : व्यक्तित्व के गुण सिद्धांत के अंतर्गत आलपोर्ट का शीलगुण सिद्धांत, कैटल का शीलगुण सिद्धांत तथा आइजेंक का जैविक शीलगुण सिद्धांत आता है जबकि फ्रॉयड, व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत से सम्बन्धित हैं।

35. एक चार–पाँच वर्ष के बालक में अपने पिता की अपेक्षा माता के प्रति अत्यधिक प्रेम की भावना विकसित हो जाती है। बालक के व्यवहार में होने वाले इस परिवर्तन को फ्रॉयड द्वारा क्या नाम दिया गया?

(a) पराहम् (b) नार्सीसिज्म
(c) ओडिपस कॉम्पलेक्स (d) इलेक्ट्रा कॉम्पलेक्स

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : एक चार–पाँच वर्ष के बालक में अपने पिता की अपेक्षा माता के प्रति अत्यधिक प्रेम की भावना विकसित हो जाती है। बालक के व्यवहार में होने वाले इस परिवर्तन को फ्रॉयड द्वारा ओडिपस कॉम्पलेक्स का नाम दिया गया, जबकि इसी अवस्था की कोई लड़की अपनी माता की अपेक्षा पिता से लगाव रखती है तो इसे इलेक्ट्रा कॉम्पलेक्स कहा जाता है।

36. ..... के अनुसार इदम् अहम् तथा पराहम् व्यक्तित्व के तीन घटक हैं।

(a) बन्डुरा (b) युंग
(c) एडलर (d) फ्रायड

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (d) फ्रायड ने व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के दो मुख्य सम्प्रत्यय - (1) चेतन, अर्द्धचेतन व अचेतन तथा (2) इदं, अहं व परा-अहं माने जाते हैं। फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना में इदं, अहम् एवं पराहम् (अत्यहं) इन तीनों तत्वों को विशेष महत्व दिया है।

तत्व	सम्बंध
इदं	जन्मजात, वंशानुगत क्षेत्र से है।
अहं	यथार्थ जगत से है।
पराहम्	नैतिक मूल्य, आत्मा की अन्तःकरण की पुकार है।

37. निम्नलिखित में से कौन व्यक्तित्व का प्रक्षेपी परीक्षण नहीं है?

(a) रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण (b) टी.ए.टी.
(c) शब्द साहचर्य परीक्षण (d) 16 पी.एफ. परीक्षण

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (d) प्रक्षेपी परिक्षण वह परिक्षण होता है जिसमें व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति होती है तथा उसके अभिव्यक्ति से उसके व्यक्तित्व का मापन होता है जैसे- रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण, टी.ए.टी. तथा शब्द साहचर्य परीक्षण। जबकि 16 पी.एफ. परीक्षण अप्रक्षेपी परीक्षण है जिसमें व्यक्ति के सामने प्रश्नों को रखा जाता है तथा उसका जवाब प्रश्न के विकल्प से प्राप्त किया जाता है। इन प्रश्नों की संख्या 164 होती है।

38. .....ने सामूहिक अचेतन का सम्प्रत्यय दिया था।

(a) युंग (b) फ्रायड
(c) एडलर (d) सलीवन

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (a) सामूहिक अचेतन का सम्प्रत्यय मनोवैज्ञानिक युंग के द्वारा दिया गया था। मनोवैज्ञानिक युंग के अनुसार अचेतन मन, मन का एक हिस्सा है जो समाज, लोग एवं मानव जाति द्वारा अपने विचारों एवं अनुभवों को साझा करता है। अचेतन वह स्थिति है जो हमारे मन एवं व्यवहार में तो होती है परन्तु सामान्यतः प्रदर्शित नहीं होती। किसी विशेष परिस्थिति में ही वह प्रदर्शित होती है।

39. फ्रायड के अनुसार हमारे मूल्यों का आन्तरिकीकरण __ ___ में होता है।

(a) इदम् (b) अहम्
(c) पराहम् (d) परिस्थितियों

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) सिगमंड फ्रायड ने व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के दो मुख्य सम्प्रत्यय - 1. चेतन, अर्द्धचेतन व अचेतन तथा 2. इदम्, अहम् व पराअहं माने जाते हैं।
फ्रायड व्यक्तित्व संरचना में इदम् , अहम् एवं अंत्यहम् (पराहम्) इन तीनों तत्वों को विशेष महत्व देते हैं। उनके अनुसार जब ये तीनों तत्व एक-दूसरे के साथ समन्वित होकर कार्य करते हैं तो व्यक्ति अपने वातावरण के साथ प्रभावशाली ढंग से समन्वय स्थापित कर लेता है।
फ्रॉयड के अनुसार इदं (Id) व्यक्ति को अपनी दमित इच्छाओं की तत्काल पूर्ति करने के लिए प्रयास करने हेतु उकसाता है जबकि परा-अहं (Super Ego) सामाजिक मान्यताओं व परम्पराओं के अनुरूप कार्य करने की प्रेरणा देता है एवं अहं (Ego) इन दोनों के मध्य अंतर्क्रिया करके व्यक्ति को वास्तविक धरातल पर तालमेल बैठाने का प्रयास करता है।
पराहम् सामाजिक मान्यताओं, संस्कारों एवं आदर्शों से सम्बन्धित होता है इसे आत्मा के अन्तःकरण की पुकार कहा जाता है।

40. एक सन्तुलित व्यक्तित्व वह है जिसमें

(a) इदम् एवं परम अहम् के बीच सन्तुलन स्थापित किया जाता है।
(b) इदम् एवं अहम् के बीच सन्तुलन स्थापित किया जाता है
(c) अहम् एवं परम् अहम् के बीच सन्तुलन स्थापित किया जाता है।
(d) मजबूत अहम् को बनाया जाता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना में इदं (Id) अहं (Ego) तथा परा-अहं (Super Ego) नामक तीन घटकों का उल्लेख किया है। इदं पाशिवक या जैविक इच्छाओं का, अहं वास्तविक जगत का तथा परा-अहम सामाजिक नियंत्रण का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार इदं एवं परा-अहं में बार-बार संघर्ष होता है जिसमें अहं संतुलन स्थापित कर व्यक्ति को वास्तविकता से परिचित कराता है। अतः एक संतुलित व्यक्तित्व वह है जिससे इदं एवं परा-अहं के बीच संतुलन स्थापित किया जाता है।

41. कौन सिद्धान्त व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान है जो कि अधिकांशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर है?

(a) गुण सिद्धान्त (b) प्रकार सिद्धान्त
(c) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (d) व्यवहारवाद सिद्धान्त।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (c) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में मानव के मस्तिष्क के द्वारा उत्पन्न व्यवहार का आंकलन किया जाता है। इस सिद्धांत को सिगमण्ड फ्रायड द्वारा प्रतिपादित किया गया। फ्रायड चेतन की अपेक्षा अचेतन को सर्वाधिक महत्व देते है। फ्रायड के अनुसार- मस्तिष्क एक बड़ी बर्फ के चट्टान के समान है जो अधिकाशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर है– चेतन, अर्द्धचेतन और अचेतन।

42. जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, उनका भण्डारगृह निम्न में से कौन-सा है?

(a) इदम् (b) अहम्
(c) परम अहम् (d) इदम् एवं अहम् ।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है वह इदम् भण्डारगृह में सुरक्षित हो जाती है। इद्म एक जन्म जात प्रवृत्ति है तथा इसके व्यक्ति की मूल भावनाए (दमित इच्छाए) आती है इदम् किसी तरह का तनाव सहन नहीं कर सकता तथा यह पूर्णतः अचेतन में कार्य करता है।

फ्रायड के अनुसार - ''इदम् को पूर्वजों की स्मृतियों के अवशेषों का भण्डार माना जाता है।'' यह अंधापन की स्थिति है।

43. अहम् ..... के नियम पर कार्य करता है–

(a)सुख (b) नैतिकता
(c)वास्तविकता (d) कल्पना

DSSSB PRT

Ans : (c) अहं वास्तविकता से सम्बन्ध रखता है तथा व्यक्ति को वास्तविक परिस्थितियों के साथ तालमेल बैठाने के लिए प्रेरित करता है। अहं आंशिक रूप से चेतन एवं आंशिक रूप से अचेतन में कार्य करता है। इदं जन्मजात प्रकृति का होता है, यह किसी भी तरह का तनाव नहीं सह सकता है तथा बिना किसी बाधा के तत्काल आनन्द, सुख व संतुष्टि प्राप्त करना चाहता है। पराअहं सामाजिक मान्यताओं, संस्कारों व आदर्शों से सम्बन्धित होता है।

44. इदम्, अहम्, व पराअहम् किस संरचना के भाग हैं?

(a) मन (b) व्यक्तित्व
(c) चेतना (d) रक्षात्मक मनोरचना

DSSSB PRT

Ans : (b) व्यक्तित्व के प्रथम व्यापक सिद्धांत की रचना करने का श्रेय सिंगमंड फ्रायड को दिया जाता है। इन्होंने व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के दो मुख्य संप्रत्यय– (i) चेतन, अर्द्धचेतन व अचेतन तथा (ii) इदं, अहं परा–अहं माने जाते हैं।

45. ''सामूहिक अचेतन'' का सम्प्रत्यय.....द्वारा दिया गया था।

(a) पावलोव (b) स्किनर
(c) फ्रायड (d) युंग

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (d) युंग ने अचेतन को दो भागों में बाँटा है - (1) व्यक्तिगत अचेतन और (2) सामूहिक अचेतन।

46. नए लक्ष्यों की ओर ऊर्जा या उन आक्रामक लक्ष्यों को पुनः निर्देशित करना, जो अक्सर कलात्मक, बौद्धिक या सांस्कृतिक लक्ष्य होते हैं,..... कहलाता है।

(a) उदात्तीकरण (b) प्रतिकरण
(c) संबंधन (d) युक्तिकरण

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : नये लक्ष्यो की ओर ऊर्जा या उन आक्रामक लक्ष्यों को पुनः निर्देशित करना, जो अक्सर कलात्मक, बौद्धिक या सांस्कृतिक लक्ष्य होते हैं, उदात्तीकरण (Sublimation) कहलाता है। फ्रायड के अनुसार उदात्तीकरण अहं (Id) रक्षा का उच्चतम स्तर है और सबसे अधिक रचनात्मक रक्षा युक्तियों में से एक है। यह सामाजिक दृष्टि से आपत्तिजनक लक्ष्य को स्वीकार्य में बदलकर विरोध हल करता है। उदाहरण के लिए, काम ऊर्जा को प्रायः सृजनात्मक कार्यों में और आक्रमण को कठोर कार्य में उदात्त किया जाता है।

47. ..... का मानना था कि व्यक्तित्व, चरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से विकसित होता है और बचपन के प्रभाव लंबे समय तक रहते हैं।

(a) अल्बर्ट बंडूरा (b) जीन पियाजे
(c) सिगमंड फ्रायड (d) लिव वाइगोत्सकी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : सिगमंड फ्रायड का मानना था कि व्यक्तिव, चरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से विकसित होता है और बचपन के प्रभाव लंबे समय तक रहते हैं। इनका मानना था कि व्यक्तित्व का विकास पाँच अवस्थाओं यथा–मुखावस्था, गुदावस्था, शिश्नावस्था, अव्यक्तावस्था तथा जननेन्द्रियावस्था से होकर गुजरती है। इन पाँचों आवस्थाओं में क्रमबद्धता एवं अंतर्सम्बन्ध होता है। फ्रायड का मानना था कि मनुष्य को जो कुछ भी बनना होता है, वह चार–पाँच वर्षों में बन जाता है और इसका प्रभाव व्यक्तित्व पर लंबे समय तक रहता है।

48. मनोलैंगिक विकास सिद्धांत के अनुसार, निम्नलिखित अवस्थाओं में से किसके निर्धारण (फिक्सेशन) से निर्भरता में सुधार होता है?

(a) गुदा (एनल) (b) मौखिक (ओरल)
(c) सुषुप्ता (लैटेंसी) (d) लैंगिक (फेलिक)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : फ्रायड के मनोलैंगिक विकास सिद्धांत के अनुसार, मौखिक या मुखावस्था (Oral stage) की मुख्य विशेषता निर्भरता होती होती है क्योंकि इस अवस्था की आयु जन्म से लगभग एक वर्ष तक होती है जो शैशवावस्था के अंतर्गत आती है। इस अवस्था में बच्चे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माता–पिता पर पूर्णतः निर्भर होते हैं।

फ्रायड ने इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र को मुख पर केन्द्रित माना है। इसमें बच्चा मुख द्वारा की जाने वाली विभिन्न क्रियाओं जैसे चूसना (Sucking), निगलना (Swallowing), काटना (Cutting) आदि से लैंगिक सुख प्राप्त करता है।

49. फ्रायड ने किस पद का उपयोग मन की संरचना के अपने सिद्धांत का वर्णन करने के लिए किया?

(a) चेतना (b) आइसबर्ग
(c) लिबिडो (d) लैंडस्केप

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : फ्रायड ने अपने सिद्धांत में मन की संरचना का वर्णन करने के लिए आइसबर्ग (Iceberg) पद का उपयोग किया है। फ्रायड ने अचेतन (Unconscions) को व्यक्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण स्वीकार किया है। उसने मानसिक क्रियाओं के चेतन तथा अचेतन पक्षों की तुलना पानी पर तैरते बर्फ के टुकड़े से करते हुए कहा कि जिस प्रकार से बर्फ के टुकड़े का जितना हिस्सा पानी से बाहर नजर आता है, उससे कई गुना अधिक हिस्सा पानी के अंदर रहता है, ठीक उसी प्रकार से व्यक्तित्व के चेतन पक्ष की तुलना में उसका अचेतन पक्ष अधिक व्यापक व जटिल होता है।

50. मनोलैंगिक विकास की फ्रायडियन अवस्था को क्या कहा जाता है जिसमें बच्चों को शौच के लिए प्रशिक्षित किया जाता है?

(a) अव्यक्तावस्था (लैटेंसी)
(b) लिंग प्रधानावस्था (फेल्लिक)

(c) मुखावस्था (ओरल)
(d) गुदावस्था (एनल)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : मनोलैंगिक विकास की फ्रायडियन अवस्था जिसमें बच्चों को शौच के लिए प्रशिक्षित किया जाता है उसे गुदावस्था (Anal Stage) कहा जाता है। इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र गुदा होती है तथा बालक मल–मूत्र त्यागने में लैंगिक सुख प्राप्त करते हैं। इस अवस्था पर अधिक उत्तेजना होने पर वयस्कावस्था में 'गुदा आक्रामक व्यक्तित्व' (Anal Aggressive personality) विकसित होता है तथा गुदावस्था में कम उत्तेजना होने पर 'गुदा धारणात्मक व्यक्तित्व' (Anal Retentive Personality) विकसित होता है।

51. ..... की आयु में बच्चे स्वयं को पहचान सकते हैं कि वह लड़का है या लड़की–

(a) पांच वर्ष (b) चार वर्ष
(c) तीन वर्ष (d) छह वर्ष

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) तीन वर्ष की आयु में बच्चे स्वयं को पहचान सकते हैं कि वह लड़का है या लड़की। फ्रायड ने 3–6 वर्ष की आयु को शिश्नावस्था कहा है। इस अवस्था के लड़कों में मातृ मनोग्रन्थि (Oedipus complex) तथा लड़कियों में पितृ मनोग्रंथि (Electra complex) का विकास हो जाता है।

52. मनोलैंगिक विकास की कौन सी अवस्था में बंध्याकरण चिंता (केस्ट्रेशन एंजाइटी) होती है?

(a) गुदा (एनल) (b) मौखिक (औरल)
(c) सुषुप्ता (लैटेंसी) (d) लैंगिक (फेलिक)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : मनोलैंगिक विकास की लैंगिक (phallic) अवस्था में बंध्याकरण चिंता (castration anxiety) होती है। लैंगिक अवस्था 3–7 वर्ष तक चलती है। इसमें बच्चा अपना लिंग पहचानने लगता है। इसी अवस्था में बच्चे में ओडीपस कॉम्प्लेक्स, इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स, बंध्याकरण चिंता तथा शिश्न इर्ष्या जैसी कॉम्प्लेक्सेज उत्पन्न होती है।

53. बाल विकास की कौन-सी अवस्था में ओडीपस और इलेक्ट्रा जटिलता शुरू होती है

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था
(c) किशोरावस्था (d) वयस्क अवस्था

(DSSSB ASSISTANT TEACHER EDUCATION DEP.)

Ans. (a) **:** फ्रायड (Freud) के अनुसार शैशवावस्था में ही ओडिपस (Oedipus) व इलेक्ट्रा (Electra) ग्रन्थि का विकास हो जाता है। यह अवस्था 3 वर्ष से प्रारम्भ होकर 4 से 6 वर्ष की आयु तक चलती है।

- ओडिपस (Oedipus) – यह ग्रन्थि लड़कों में पाया जाता है। जिससे इनका अपनी माता के प्रति ज्यादा ममता, प्रेम की भावना होती है।
- इलेक्ट्रा (Electra) – यह ग्रन्थि लड़कियों में पायी जाती है। जिससे इनका लगाव व प्रेम पिता के प्रति ज्यादा होता है।

54. फ्रायड की विकास अवस्थओं के अनुसार, किस अवस्था को प्रारम्भिक विद्यालय आयु समझा जाता है?

(a) मुखावस्था (b) गुदावस्था
(c) अव्यक्तावस्था (d) शैश्नावस्था

Haryana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) फ्रायड के व्यक्तित्व सम्बन्धी विचारों को मनोलैंगिक विकास का सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसे फ्रायड ने पाँच अवस्थाओं में बाँटा हैं–

1. मुखावस्था (Oral Stage) – जन्म से एक वर्ष
2. गुदावस्था (Anal Stage) – एक वर्ष से तीन वर्ष तक
3. लैंगिक अवस्था (Phallic Stage)– तीन वर्ष से पाँच वर्ष तक
4. अव्यक्तावस्था/सुषुप्तावस्था (Latency Stage) – छः वर्ष से बारह वर्ष तक
5- जननिक अवस्था (Gental Stage) – बारह वर्ष से बीस वर्ष या उससे अधिक

इस प्रकार फ्रायड के अनुसार अव्यक्तावस्था को प्रारम्भिक विद्यालय की अवस्था समझा जाता है।

55. मानव व्यक्तित्व के मनो-लैंगिक विकास को निम्न में किसने महत्व दिया था -

(a) कमेनियस (b) हॉल
(c) हालिंगवर्थ (d) फ्रायड

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (d) व्यक्तित्व के विकास की व्याख्या के लिए सिगमण्ड फ्रायड ने सर्वप्रथम मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। फ्रायड ने व्यक्ति के मनोलैंगिक विकास के संदर्भ में मुख्य रूप से पाँच अवस्थाओं का उल्लेख किया है - (1) मुखीय अवस्था (2) गुदीय अवस्था (3) लैंगिक अवस्था (4) अदृश्यवस्था (5) जननेन्द्रियावस्था।

56. अपने आपको प्रेम करने की प्रवृत्ति को क्या कहते हैं?

(a) आत्मकेन्द्रित प्रवृत्ति (b) अहंकारी प्रवृत्ति
(c) नार्सिसिज्म की प्रवृत्ति (d) हिप्नोटिज्म की प्रवृत्ति

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने यूनानी पौराणिक कथा के आधार पर स्वप्रेम की भावना के लिए नार्सिसिज्म (अर्थात् अपने आपको प्रेम करने की प्रवृत्ति) शब्द का प्रयोग किया है।
पौराणिक कथा में नार्सिसिस्ट नामक व्यक्ति को अपने शरीर से प्रेम करते हुए दिखाया गया है। इस तरह की भावना शिशु में उच्च स्तर की होती है।

57. मनोलैंगिक विकास में सुप्तावस्था का वर्ष-अन्तराल सम्बन्धित है

(a) 2-5 वर्षों का (b) 6 से यौवन तक
(c) 18-20 वर्षों का (d) 20-22 वर्षों का

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (b) मनोलैंगिक विकास का सिद्धांत **सिगमंड फ्रायड** के द्वारा दिया गया। इस विकास के सिद्धांत के अनुसार सुप्तावस्था का वर्ष अन्तराल 6 वर्ष से किशोरावस्था (यौवन) के प्रारम्भ तक होती है। इस अवस्था में कोई नया कामुकता क्षेत्र विकसित नहीं होता है तथा लैंगिक इच्छाएँ प्रायः सुप्त रहती हैं।

व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत (कैटल)

58. कैटेल ने अपने व्यक्तित्व के सिद्धांत में स्रोत लक्षण के कितने युग्म दिखाए?

(a) 16 (b) 32
(c) 14 (d) 22

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : कैटल के अनुसार किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व वह विशेषता है, जिसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि किसी दी गयी परिस्थिति में वह व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करता है। कैटल के अनुसार स्रोत शीलगुण व्यक्ति के व्यवहार के पीछे छिपे रहते हैं तथा अभिव्यक्त को अप्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित व निर्धारित करते हैं। इन शीलगुणों की जानकारी के लिए कैटल ने कारक विश्लेषण नामक सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग किया है। कैटल ने व्यक्तित्व मापन उपकरण के 16 पी.एफ. प्रश्नावली का निर्माण किया, जिसमें व्यक्तित्व के सोलह द्विध्रुवीय कारकों को सम्मिलित किया गया है।

व्यक्तित्व का मानवतावादी सिद्धांत (मैस्लो)

59. आत्म-सुधार को व्यक्तित्व के _____दृष्टिकोणों में महता दी जाती है–

(a) संज्ञानात्मक (b) मनोविश्लेषणात्मक
(c) मानववादी (d) जैविक

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) आत्म–सुधार को व्यक्तित्व के मानववादी दृष्टिकोणों में महत्ता दी जाती है। मैस्लो के मानवतावादी सिद्धांत के अनुसार व्यक्तित्व का सर्वोच्च माँग आत्मसिद्धि की माँग होती है। आत्मसिद्धि की माँग की पूर्ति के लिए आत्म–सुधार की आवश्यकता होती है जिसके लिए स्व–अनुशासन, स्व–नियंत्रण, सतत् प्रयास, त्याग, साहस, संकल्प जैसे उच्च स्तरीय सुधार होना आवश्यक होता है।

व्यक्तिव का मनोसामाजिक सिद्धांत (इरिक्सन)

60. मनोवैज्ञानिक विकास के निम्नलिखित चरणों में से कौन सा चरण बचपन में नहीं होता है?

(a) स्वायत्तता बनाम शर्म
(b) विश्वास बनाम अविश्वास
(c) अंतरंगता बनाम अलगाव
(d) पहल बनाम अपराध बोध

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : मनोवैज्ञानिक विकास के चरणों में अंतरंगता बनाम अलगाव (Initiative versus Isolation) चरण बचपन की विशेषता नहीं है क्योंकि यह सामान्यतः बीस वर्ष से तीस वर्ष की आयु की विशेषता है, जबकि विश्वास बनाम अविश्वास, जन्म से लेकर 2 वर्ष तक, स्वायत्तता बनाम शर्म- 2 वर्ष से 4 वर्ष की आयु तक पहल बनाम अपराध बोध-चार वर्ष से 6 वर्ष की आयु की विशेषताएँ हैं।

61. एरिक एरिक्सन के अनुसार, एक व्यक्ति ..... विकासात्मक चरणों से होकर गुजरता है।

(a) 7 (b) 9
(c) 4 (d) 8

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : एरिक एरिक्सन के द्वारा प्रतिपादित व्यक्तित्व के सिद्धांत को व्यक्तित्व का मनो–सामाजिक सिद्धांत कहा जाता है। एरिक्सन के अनुसार, एक व्यक्ति निम्नलिखित 8 विकासात्मक चरणों से होकर गुजरता है–

(i) शैशवावस्था : विश्वास बनाम अविश्वास
(ii) प्रारम्भिक बाल्यावस्था : स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता
(iii) खेल अवस्था : पहल शक्ति बनाम दोषिता
(iv) विद्यालय अवस्था : परिश्रम बनाम हीनता
(v) किशोरावस्था : अहं पहचान बनाम भूमिका संभ्रान्ति
(vi) तरुण वयस्कावस्था : घनिष्ठ बनाम विलगन
(vii) मध्य वयस्कावस्था : जननात्मकता बनाम अस्थिरता
(viii) परिपक्वता : अहं संपूर्णता बनाम निराशा

62. मनोसामाजिक विकास का अंतिम चरण है-

(a) पहचान बनाम भ्रम
(b) विश्वास बनाम अविश्वास
(c) उदारता बनाम ठहराव
(d) अखंडता बनाम निराशा

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : मनोसामाजिक विकास का अंतिम चरण अखण्डता बनाम निराशा है। मनोसामाजिक विकास का सिद्धान्त इरिक इरिक्सन द्वारा दिया गया है। इरिक्सन ने व्यक्तित्व सिद्धान्त में सम्मिलित मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाओं का वर्णन किया है जो निम्न हैं–

1. विश्वास बनाम अविश्वास
2. स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता
3. पहल शक्ति बनाम दोषिता
4. परिश्रम बनाम हीनता
5. अहं पहचान बनाम भूमिका संभ्रान्ति
6. घनिष्ठ बनाम विलगन
7. जननात्मकता बनाम स्थिरता
8. अखण्डता बनाम निराशा

63. एरिक्सन के सिद्धान्त में, उन पहलुओं को आमतौर पर किशोरावस्था के दौरान विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और फिर युवा व्यस्कता के दौरान ..... कहा जाता है।

(a) पहचान, मूल विश्वास (b) पहचान, आत्मीयता
(c) अंतरगंता, पहचान (d) मूल विश्वास, पहचान

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : एरिक्सन के सिद्धान्त में, उन पहलुओं को आम तौर पर किशोरावस्था के दौरान विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है और फिर युवा वयस्कता के दौरान पहचान, आत्मीयता कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, युवा वयस्कता (19–35 वर्ष) के दौरान मित्रता, प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग की भावना बढ़ती है। परन्तु निराशा, असफलता, हीनता एवं द्वन्द्व होने पर एकाकीपन विकसित हो जाती है।

64. मनोवैज्ञानिक विकास के किस चरण में बच्चे को शर्म और संदेह महसूस होता है?

(a) प्रीस्कूल (b) किशोरावस्था
(c) स्कूल आयु (d) शुरुआती बाल्यकाल

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : मनोवैज्ञानिक विकास के प्रीस्कूल चरण में बच्चे को शर्म और संदेह महसूस होता है। मनोवैज्ञानिक इरिक्सन के अनुसार प्रारम्भिक बाल्यावस्था लगभग 2 वर्ष से 4 वर्ष की आयु तक की अवस्था होती है। इसी अवस्था को प्रीस्कूल अवस्था भी कहा जाता है। इस अवस्था में जब बालक को छोटा समझकर कुछ कार्य करने

नहीं दिया जाता है या उसके बदले में माता–पिता स्वयं उसका कार्य कर देते हैं या माता–पिता या अन्य परिजन बालक से कुछ ऐसी अपेक्षाएँ रखते हैं जो उसकी क्षमता से बाहर होती है और वे नहीं कर पाते हैं तब बालकों में लज्जाशीलता या शर्म की भावना उत्पन्न होती है। इसके फलस्वरूप बालकों में स्वयं पर शक (Self– doubt) या संदेह, व्यर्थता तथा शक्तिहीनता जैसी मनोसामाजिक विकृतियाँ आने लगती हैं।

65. पहचान बनाम भूमिका भ्रम..... आयु के बीच होती है।

(a) शून्य से तीन (b) तीन से छह
(c) छह से बारह (d) बारह से बीस

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : पहचान बनाम भूमिका भ्रम (Ego Identity versus Role confusion) 12–20 वर्ष की आयु के बीच होती है। इरिक्सन महोदय ने इसे मनोसामाजिक विकास की पाँचवी अवस्था माना है। इस अवस्था में किशोरों के बीच धनात्मक मनोसामाजिक पक्ष के रूप में अहं पहचान का भाव तथा ऋणात्मक मनोसामाजिक पक्ष के रूप में भूमिका संभ्रांति या पहचान भ्रम का विकास होता है।

66. विकास के मनोसामाजिक सिद्धान्त का प्रतिपादन..... ने किया था।

(a) एरिकसन (b) फ्रायड
(c) कोहलर (d) वाटसन

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (a) विकास के मनोसामाजिक सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1950 में एरिक्सन ने किया था। इनका मानना था कि विकास में जैविक कारकों की अपेक्षा सामाजिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एरिक्सन के सिद्धांत के अनुसार पूरा जीवन विकास के आठ चरणों से होकर गुजरता है प्रत्येक चरण में एक विशिष्ट विकासात्मक मानक होता है, जिसे पूरा करने में आने वाली समस्याओं का समाधान करना आवश्यक होता है। एरिक्सन के अनुसार समस्या कोई संकट नहीं होती है बल्कि संवेदनशीलता और सामर्थ्य को बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण बिन्दु होती है।

67. मनोसामाजिक सिद्धान्त निम्नलिखित में से किस पर बल देता है?

(a) उद्दीपन व प्रतिक्रिया
(b) लिंगीय व प्रसुप्ति स्तर
(c) उद्यम के मुकाबले में हीनता स्तर
(d) क्रियाप्रसूत (सक्रिय) अनुबंधन

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (c) एरिक्सन द्वारा विकास का मनोसामाजिक सिद्धान्त दिया गया है। एरिक्सन के अनुसार यह चौथा विकासात्मक चरण है जो बाल्यावस्था के मध्य में परिलक्षित होता है। बालक द्वारा की गयी पहल से वह नये अनुभवों के सम्पर्क में आता है और जैसे-जैसे वह अपने बचपन के मध्य और अंत तक पहुँचता है, तब तक वह अपनी ऊर्जा को बौद्धिक कौशल और ज्ञान से हासिल करने की दिशा में मोड़ देता है।

व्यक्तिव के अन्य सिद्धांत (मूर्रे, रोजर्स, आइजेंक)

68. आइसेंक ने व्यक्तित्व के एक तीसरे आयाम की बात की है, वह कौन-सा है?

(a) सहमतता (एग्रीएबलनेस)
(b) अंतर्विवेकशीलता (कोन्शीयसनेस)
(c) न्यूरोटिज्म
(d) साइकोटिज्म

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : एच.जे. आइजेंक ने व्यक्तित्व के जैविक शीलगुण सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। आइजेंक ने प्रारम्भ में मानव के प्रमुख विमाओं को प्रस्तुत किया– **(i) मुखता (versionism)** अर्थात् अंतर्मुखता–बहिर्मुखता (Intorversion–Extroversion) **(ii) मनस्ताप (Neuroticism)** अर्थात् स्नायुविक स्थिरता–अस्थिरता (Emotional stability instability) बाद में आइजेंक ने अपने अध्ययनों के आधार पर व्यक्तित्व की **मनोविक्षिप्तता (Psychoticism)** नामक एक तीसरी विमा को प्रस्तुत किया।

व्यक्तित्व मापन की विधियाँ

69. समाजमितीय विधि में सुपर स्टार कौन होता है?

(a) जिस व्यक्ति को अधिकतम् लोग पसन्द करें
(b) जिसे बहुयुग्मों द्वारा चुना जाये
(c) ये दोनों
(d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) सामाजिक पैमाने की विधि समाजमितीय विधि के अनुसार सुपर स्टार (अतिमानव) वह होता है जिसे ज्यादा से ज्यादा लोगों के द्वारा पसंद किया जाता है। एक समूह की संरचना का अध्ययन करने और उस समूह के प्रत्येक व्यक्ति के पारस्परिक सामाजिक संबंधों की स्थिति को मापने की तकनीक को समाजमिति के रूप में जाना जाता है।

70. जुंग द्वारा सर्व प्रथम व्यक्तित्व के आकलन के लिए 'शब्द संघ परीक्षण' कब बनाया गया?

(a) 1912 (b) 1922
(c) 1848 (d) 1910

MP TET (I-V) 2011

Ans: (d) जुंग द्वारा सर्वप्रथम व्यक्तित्व के आकलन के लिए वर्ष 1910 में 'शब्द संघ परीक्षण' (World Association Test) का निर्माण किया गया। इसमें 100 शब्दों को शामिल किया गया।

71. रोर्शा इंकब्लॉट टेस्ट, जो कि एक व्यक्तित्व मूल्यांकन की विधि है, किसने निर्मित किया?

(a) एसेन्क (b) आलपोर्ट
(c) हरमन रोर्शा (d) जीन पियाजे

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) रोर्शा इंकब्लॉट टेस्ट, जो कि एक व्यक्तित्व मूल्यांकन की विधि है, हरमन रोर्शा ने निर्मित किया था। रोर्शा इंकब्लाट टेस्ट व्यक्तित्व मापने वाला एक प्रक्षेपीय तकनीक है। रोर्शा इंकब्लाट (मसि-लक्ष्य) परीक्षण में कुल 10 कार्ड होते हैं, जिनमें से प्रत्येक पर एक सममित इंकब्लाट बना होता है।

72. निम्न में से कौन–सा व्यक्तित्व मापन की प्रक्षेपी तकनीकी है?

(a) साक्षात्कार (b) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण
(c) निर्धारण मापनी (d) अवलोकन

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : व्यक्तित्व मापन की प्रक्षेपीय तकनीकी के अंतर्गत निम्न परीक्षण आते हैं–

- शब्द साहचर्य परीक्षण
- रोर्शा मसि – लक्ष्य परीक्षण
- अन्य मसि लक्ष्य परीक्षण
- प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण

अवलोकन, साक्षात्कार तथा जीवन इतिहास आत्मनिष्ठ विधि के अंतर्गत तथा निर्धारण मापनी, परिसूची या प्रश्नावली, परिस्थिति परीक्षण व्यक्तित्व मापन की वस्तुनिष्ठ विधि के अंतर्गत आते हैं।

73. 16-PF का प्रयोग किसके मापन हेतु किया जाता है?

(a) सृजनात्मकता (b) अभिरुचि
(c) व्यक्तित्व (d) दबाव

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) 16 - PF (16 - Personality factor) का प्रयोग व्यक्तित्व मापन में किया जाता है इस परीक्षण का निर्माण कैटल द्वारा किया गया। इस परीक्षण के अन्तर्गत 17 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों के 16 शील गुणों को मापा जाता है। यह शील गुण निम्न है -
ईमानदारी, सत्यता, अधिनायकवाद, सत्य एवं अहिंसा, कर्तव्यनिष्ठता, सहयोग, परोपकार, समय की पाबंदी, व्यवहार कुशलता, समाजिकता, सौम्यता, आत्मविश्वास, प्रभुत्व, उत्साह एवं आत्म गौरव।

74. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (T.A.T.) का विकास ..... द्वारा किया गया था।

(a) सायमण्ड (b) होल्ट्जमैन
(c) मूरे (d) बैलक

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (TAT) व्यक्तित्व मापन का एक परीक्षण है। इस परीक्षण का विकास वर्ष 1935 में हावर्ड विश्वविद्यालय के शिक्षक एस.ए. मूरे द्वारा किया गया। TAT परीक्षण में 31 कार्डों का प्रयोग किया जाता है। जिसमें एक कार्ड सादा रहता है तथा परीक्षण के समय एक व्यक्ति पर अधिकतम 20 कार्डों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक कार्ड पर अलग-अलग विषयों पर अलग-अलग चित्र बने होते हैं तथा प्रत्येक कार्ड पर बने चित्रों के आधार पर 5 मिनट में कहानी बनानी पड़ती है।

75. क्लाउड पिक्चर टेस्ट निम्न में से किसके मापन में प्रयुक्त होता है?

(a) बुद्धि (b) व्यक्तित्व
(c) अभिक्षमता (d) अभिरुचि

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) क्लाउड पिक्चर टेस्ट व्यक्तित्व के मापन में प्रयुक्त होता है। यह प्रक्षेपीय प्रकार का परीक्षण है।

76. निम्न में से कौन-सा शेष से भिन्न है?

(a) टी. ए. टी. (b) 16-पी. एफ.
(c) रैवेन का परीक्षण (d) ड्रॉ-ए-मैन परीक्षण

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (c) टी. ए. टी., 16 पी. एफ. तथा ड्रॉ-ए-मैन परीक्षण व्यक्तित्व परीक्षण है जबकि रैवेन का परीक्षण अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण है।

77. रोर्शा इंकब्लॉट टेस्ट का प्रयोग निम्न में से किसके मापन हेतु किया जाता है?

(a) व्यक्तित्व (b) बुद्धि
(c) अभिरुचि (d) अभिक्षमता

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (a) रोर्शा इंकब्लॉट टेस्ट का प्रयोग व्यक्तित्व मापन हेतु किया गया है। यह एक प्रक्षेपीय विधि है। इसका निर्माण हरमन रोर्शा ने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में किया था।

78. निम्न में कौन शेष से भिन्न है?

(a) टी.ए.टी. (b) 16- पी. एफ.
(c) क्लाउड पिक्चर टेस्ट (d) ड्रा ए मैन टेस्ट

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (b) 16 पी. एफ.। अन्य तीन विकल्प टी.ए.टी क्लाउड पिक्चर टेस्ट, ड्रा ए मैन टेस्ट ये तीनों व्यक्तित्व मापन की प्रक्षेपीय तकनीक है जबकि 16 पी. एफ. कैटल द्वारा निर्मित व्यक्तित्व परीक्षण टेस्ट है जो कि प्रक्षेपी नहीं है।

79. टी.ए.टी. .....द्वारा बनाया गया था।

(a) रोर्शा (b) आल्पोर्ट
(c) मैस्लो (d) मूरे

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (d) T.A.T. (Thematic Appereeption Test) प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण का निर्माण 1935 में सी.डी. मोर्गन तथा एच.ए. मूरे ने की थी। यह परीक्षण पक्षेपीय ढंग से व्यक्तित्व मापन की विधि है।

80. बाल अन्तर्बोध (एपरसेप्शन) परीक्षण का निर्माण किसने किया?

(a) मर्रे (b) बेलक
(c) रॉबर्ट (d) रोजनविग

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (b) बाल अंतर्बोध परीक्षण (CAT) का निर्माण 3 वर्ष से 10 वर्ष तक के बालकों के व्यक्तित्व मानव करने के लिए लियोपोल्ड बैलक के द्वारा सन् 1948 में किया गया था। इस परीक्षण में 10 चित्र होते हैं जो विभिन्न असंचित परिस्थितियों में जानवरों के व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं।

81. व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन करना कहलाता है

(a) अवलोकनात्मक विधि (b) विषयपरक विधि
(c) प्रक्षेपण विधि (d) मनोविश्लेषणात्मक विधि

Dsssb Assistant Teacher Education Department

Ans. (c) **:** व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति के अचेतन मन का अध्ययन प्रक्षेपण विधि से किया जा सकता है।

82. व्यक्तित्व मापन का स्याही धब्बा परीक्षण है

(a) आत्मनिष्ठ परीक्षण (b) वस्तुनिष्ठ परीक्षण
(c) प्रक्षेपण परीक्षण (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) व्यक्तित्व मापन का स्याही धब्बा परीक्षण प्रक्षेपण परीक्षण के अंतर्गत आता है। इसकी खोज हरमन रोर्शा नाम के स्विस मनोवैज्ञानिक ने बीसवीं शताब्दी में की थी। इसलिए इसे रोर्शा मसि लक्ष्य परीक्षण या रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण भी कहते हैं। अतः विकल्प (c) उत्तर सही होगा।

83. एक बालक के व्यक्तित्व के मापन की सर्वाधिक वस्तुनिष्ठ विधि है

(a) प्रक्षेपी विधि (b) साक्षात्कार विधि
(c) प्रश्नावली विधि (c) समाजमिति विधि

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (a) बालक के व्यक्तित्व मापन की सर्वाधिक वस्तुनिष्ठ विधि प्रक्षेपीय विधि है।

84. निम्न में से कौन-सी तकनीक प्रक्षेपण तकनीक नहीं है?

(a) खेल तकनीक (b) शब्द साहचर्य परीक्षण
(c) चित्र साहचर्य परीक्षण (d) व्यक्तिगत अध्ययन।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) व्यक्तिगत अध्ययन प्रक्षेपण तकनीकी नहीं है बल्कि यह परीक्षण की आत्मनिष्ठ प्रविधि है। प्रक्षेपण से अभिप्राय को जानने की उस प्रक्रिया से है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, दृष्टिकोण, संवेगों, गुणों आवश्यकताओं आदि को अन्य व्यक्तियों या वस्तुओं के माध्यम से अपरोक्ष ढंग से अभिव्यक्त कर देता है।

85. बालक प्रसंगबोध परीक्षण 3 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बालकों के लिए बनाया गया है। इस परीक्षण में कार्ड में प्रतिस्थापित किये गये हैं

(a) सजीव वस्तुओं के स्थान पर निर्जीव वस्तुओं को
(b) लोगों के स्थान पर जानवरों को
(c) पुरुषों के स्थान पर महिलाओं को
(d) वयस्क के स्थान पर बालकों को।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (b) बालक प्रसंगबोध परीक्षण 3 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बालकों के लिए बनाया गया है। इस परीक्षण में दस चित्र होते हैं जो विभिन्न असंरचित परिस्थितियों में जानवरों के व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं। इस परीक्षण का निर्माण लियोपोल्ड बैलक के द्वारा सन् 1948 में किया गया था।

86. किस परीक्षण में 10 मसिलक्ष्य या स्याही धब्बे होते है?

(a) रोर्शा परीक्षण (b) 16 पी. एफ.
(c) ई. पी. क्यू. (d) एम. एम. पी. आई.।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) रोर्शा मसि लक्ष्य परीक्षण व्यक्तित्व को प्रक्षेपीय विधि से मापने वाला एक प्रसिद्ध तथा बहुतायत से प्रयुक्त किया जाने वाला परीक्षण है जिसका निर्माण स्विस मनोवैज्ञानिक हरमन रोर्शा ने किया था। इस परीक्षण में 10 कार्ड होते हैं, जिन पर मसि लक्ष्य बना होता है।

87. प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (TAT) व्यक्तित्व को मापने की एक

(a) आत्मनिष्ठ तकनीक है (b) वस्तुनिष्ठ तकनीक है
(c) प्रक्षेपीय तकनीक है (d) प्रयोगात्मक तकनीक है

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (TAT) व्यक्तित्व मापन की प्रक्षेपीय तकनीक है। इस परीक्षण का निर्माण मार्गन एवं मूर्रे ने 1935 में किया था। इस परीक्षण में 31 कार्डों का प्रयोग होता है। यह परीक्षण 14 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों पर किया जाता है।

88. एक समूह के समाजमिति विश्लेषण का उपयोग व्यक्तित्व को ____ विधि के रूप में मापने के लिए किया जाता है।

(a) प्रेक्षण (b) वस्तुनिष्ठ
(c) व्यक्तिनिष्ठ (d) प्रक्षेपी

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : एक समूह के समाजमिति विश्लेषण का उपयोग व्यक्तित्व को वस्तुनिष्ठ विधि के रूप में मापने के लिए किया जाता है। समाजमितीय विधि, परिस्थिति परीक्षण (जो कि व्यक्तित्व मापन की एक वस्तुनिष्ठ विधि है) का एक प्रमुख उदाहरण है जिसमें किसी समूह के व्यक्तियों के द्वारा अन्य व्यक्तियों के प्रति की गयी स्वीकृतियों अथवा अस्वीकृतियों के आधार पर समूह की सामाजिक संरचना को ज्ञात किया जाता है। समाजमिति द्वारा वास्तव में पारस्परिक सम्बन्धों को जानकर समूह के विभिन्न व्यक्तियों की परस्पर स्थिति व सम्बन्धों को ज्ञात किया जाता है।

89. व्यक्तित्व मूल्यांकन के लिए एमबीटीआई का दृष्टिकोण ..... है।

(a) धारणा (b) प्रक्षेपीय
(c) संरचित (d) आंकना

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : व्यक्तित्व मूल्यांकन के लिए एमबीटीआई का दृष्टिकोण संरचित है। मायर्स-ब्रिग्स पर्सनैलिटी टाइप इंडिकेटर या MBTI किसी के व्यक्तित्व प्रकार, शक्ति, प्राथमिकताओं आदि की पहचान करने के लिए की गयी एक सेल्फ रिपोर्ट इन्वेंट्री है। यह इंडिकेटर जुंग के व्यक्तित्व सिद्धान्त से अभिप्रेरित है। एमबीटीआई उत्तरदाताओं को अपनी पसंद, नापसन्द, ताकत, कमजोरियों, संभावित कैरियर वरीयताओं और अन्य लोगों के साथ संगतता सहित अपने स्वयं के व्यक्तित्व को और अधिक जानने और समझने की अनुमति देता है। इसकी सहायता से उत्तरदाता अपने व्यक्तित्व में सुधार कर सकता है।

90. व्यक्तित्व परीक्षण निम्न होना चाहिए :

(a) लिंग पक्षपाती
(b) अधिक से अधिक प्रश्न वाला
(c) विश्वनीय और वैध
(d) नवाचारी

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : व्यक्तित्व परीक्षण विश्वसनीय तथा वैध होना चाहिए। किसी भी परीक्षण का विश्वसनीय तथा वैध होना आवश्यक है। यदि किसी परीक्षण को बार–बार प्रयुक्त किया जाये और बार–बार समान प्राप्तांक प्राप्त हो तो परीक्षण को विश्वसनीय कहा जाता है। इसी प्रकार किसी परीक्षण की वैधता का आशय उसकी सत्यता मापन करता है जिसके लिए उसे बनाया गया है।

91. निम्नलिखित परीक्षणों में से किसमें अंतर्निहित व्यक्तित्व की कहानियों और व्याख्याओं का विश्लेषण शामिल होता है?

(a) विषय आत्मबोधन परीक्षण
(b) स्याही-धब्बा परीक्षण
(c) शब्द संधि परीक्षण (वर्ड एसोसिएशन टेस्ट)
(d) कथा वाचक परीक्षण

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : विषय आत्मबोधन परीक्षण में अंतर्निहित व्यक्तित्व की कहानियों और व्याख्याओं का विश्लेषण शामिल होता है। विषय आत्मबोधन परीक्षण {(Thematic Apperception Test) TAT} की रचना 1935 ई. में सी.डी. मोर्गन तथा एच.ए. मुरे ने की थी। इस परीक्षण में कुल 31 काई होते हैं जिनमें से 30 कार्डों पर अस्पष्ट काले सफेद रंग से चित्र बने होते हैं, जबकि एक कार्ड सादा होता है। कार्डो पर बने चित्र जीवन की साधारण घटनाओं से सम्बन्धित होते हैं।

92. व्यक्तित्व आधारित अनुमानी परीक्षणों से मूल्यांकन के परिणाम_____ हैं।

(a) सरल (b) विवादास्पद
(c) व्यर्थ (d) वस्तुनिष्ठ

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) व्यक्तित्व आधारित अनुमानी परीक्षणों से मूल्यांकन के परिणाम विवादास्पद हैं। अनुमानी या प्रक्षेपण से अभिप्राय अचेतन को जानने की उस प्रक्रिया से है, जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, दृष्टिकोणों, संवेगों, गुणों, आवश्यकताओं आदि को अन्य व्यक्तियों या वस्तुओं के माध्यम से अपरोक्ष ढंग से अभिव्यक्त कर देता है। प्रक्षेपी तकनीक द्वारा प्राप्त परिणामों की वैधता तो उच्च होती है किन्तु विश्वसनीयता का अभाव रहता है।

93. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रक्षेपण तकनीक व्यक्तित्व का आकलन करने के लिए होती है?

(a) रोर्शा स्याही का धब्बा (रोर्शा इंकब्लॉट)
(b) साक्षात्कार
(c) प्रश्नावली
(d) प्रेक्षण

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : प्रक्षेपीय तकनीक में व्यक्ति के सम्मुख किसी उद्दीपक या परिस्थिति को प्रस्तुत किया जाता है तथा व्यक्ति को इस बात के अवसर दिये जाते हैं कि वह अपने विचारों, दृष्टिकोणों, संवेगों, आवश्यकताओं आदि को उस परिस्थिति में आरोपित कर सके। इस प्रविधि की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता, व्यक्ति के अचेतन को जानना है। रोर्शा स्याही का धब्बा, शब्द साहचर्य परीक्षण, प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण आदि व्यक्तित्व परीक्षण की प्रक्षेपण तकनीक है जबकि साक्षात्कार और प्रेक्षण आत्मनिष्ठ विधियाँ हैं तथा प्रश्नावली वस्तुनिष्ठ विधि के अंतर्गत आता है।

94. निम्नलिखित में से कौन सा कैटल द्वारा तैयार किया गया व्यक्तित्व परीक्षण है?

(a) वाक्य पूर्णता परीक्षण
(b) एनईओ–एफएफआई
(c) सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (सिक्सटीन पर्सनालिटी फैक्टर्स क्वैश्चनॉयर)
(d) नियंत्रण का ठिकाना (लोकस ऑफ कंट्रोल)

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) सोलह व्यक्तिव कारक प्रश्नावली (16 P.F. Questionnaire) कैटल द्वारा तैयार किया गया व्यक्तिव मापन परीक्षण है जिसमें व्यक्तित्व के सोलह द्विध्रुवीय कारकों को सम्मिलित किया गया है। इनमें से कुछ कारक निम्नलिखित हैं–

S.N.	कारक	कारकों के दो विपरीत ध्रुव	
1.	ए (A)	उत्साही	एकांकी
2.	बी (B)	अधिक बुद्धिमान	कम बुद्धिमान
3.	सी (C)	स्थिर	संवेगात्मक
4.	ई (E)	दृढ़	नम्र
5.	एफ (F)	हँसमुख	सौम्य
6.	जी (G)	आध्यात्मिक	सांसारिक

95. व्यक्तित्व के आत्म-रिपोर्ट उपायों का एक उदाहरण हैं:

(a) एमएमपीआई (b) वाक्य पूर्ण परीक्षण
(c) रोर्शा परीक्षण (d) टीएटी

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : व्यक्तित्व के आत्म रिपोर्ट उपायों का एक उदाहरण MMPI (Minnesota Multiphasic Personality Inventory) मिनेसोटा बहुभाषी व्यक्तित्व सूची है। यह एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण है जो व्यक्तित्व लक्षणों और मनोचिकित्सा का आकलन करता है। इसका उद्देश्य मुख्य रूप से उन लोगों का परीक्षण करना है, जिन्हें मानसिक स्वास्थ्य या अन्य नैदानिक मुद्दों के होने का संदेह होता है।

EXAM POINTS

- व्यक्तित्व मूल्यांकन की साधारण विधि है **–प्रश्नावली**
- व्यक्तित्व मूल्यांकन की सर्वश्रेष्ठ विधि है **–केस अध्ययन**
- लिबिडो (Libido) की अवधारणा का प्रतिपादन किया था **–फ्रायड**
- एक अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ है **–विश्वसनीयता, वैद्यता, मानक**
- व्यापारी खिलाड़ी राजनैतिक नेता, अभिनेता व्यक्तिगत प्रारूप के होते है **–बहिर्मुखी**
- फ्रायड के अनुसार बालक का माता-पिता से प्रमुख सम्बन्ध है **–तादात्ममय**
- TAT की रचना की थी **–मॉर्गन व मूरे**
- TAT परीक्षण में कितने कार्ड होते हैं **–31**
- रोशा मसि परीक्षण में कितने कार्डों का प्रयोग होता है **–10**
- हरमन रोशा मनोवैज्ञानिक थे **–स्वीटजरलैण्ड के**
- शीलगुण सिद्धान्त के प्रवर्तक थे **–आलपोर्ट**
- इदं, अहं, पराहं का सम्बन्ध है **–फ्रायड**
- अचेतन तत्व पर अत्यधिक जोर दिया है **–फ्रायड ने**
- अहं का सम्बन्ध है **–यर्थाथ जगत से**
- इदं का सम्बन्ध है **–पाशविक जगत से**
- ''पराह'' का सम्बन्ध है **–संस्कार, नैतिकता**
- स्याही धब्बा परीक्षण में कौन-कौन से रंग का प्रयोग किया जाता है **–लाल, काला और सफेद**
- व्यक्तित्व को यूनानी भाषा के किस शब्द से लिया गया है **–पर्सोना**

- बालक के व्यक्तित्व के विकास का आरम्भ हो जाता है **–शैशवावस्था से**
- भारतीय आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार व्यक्ति होते है **–कप प्रधान, पित प्रधान, वात प्रधान**
- ''व्यवहार ही व्यक्तित्व है'' कहा है **–वाटसन ने**
- ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है'' **–वुडवर्थ**
- प्राचीन भारतीय मान्यता के अनुसार कपिल मुनि के सांख्य दर्शन में तीन गुणों का उल्लेख किया है **–सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण**
- व्यक्तित्व का विकास व्यक्ति में उपस्थित ''अभिप्रेरकों'' के द्वारा होती है **–अब्राहम मैसलो**
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक है **–जैविक या आनुवांशिक, पर्यावरण सम्बन्धी**
- व्यक्तित्व की संरचना में (इदं), (अहं), अत्यहं तीन तत्वों का विशेष महत्व दिया है **–फ्रायड ने**
- इदं है **–सुखवादी सिद्धान्त, भौतिक सुख**
- अहं है **–वास्तविकता, भौतिक जगत, यथार्थ जगत**
- अत्यहं **–संस्कार व आदर्शो से सम्बन्धित होता है**
- अहंशक्ति सामाजिकता, हठवादिता, इत्यादि क्या है? **–शीलगुण**
- एकान्तप्रिय, संकोची, आदर्शवादी तथा आत्मगत दृष्टिकोण वाले व्यक्ति युंग के व्यक्तिगत वर्गीकरण के किस वर्ग में आते हैं **–अन्तर्मुखी**
- स्याही धब्बा परीक्षण मूलतः किसके द्वारा निर्मित है? **–रोर्शा**
- एक विद्यार्थी व्यवहार कुशल, संकोचरहित, यथार्थवादी तथा सामाजिक क्रियाकलापों में पर्याप्त भाग लेता हैं, उसे युंग के किस व्यक्तित्व-वर्ग में रखा जा सकता है? **–बहिर्मुखी**
- शेल्डन के एण्डोमार्फिक वर्गीकरण में कैसे व्यक्ति सम्मिलित हैं? **–मोटे, कोमल, तथा गोल शरीर वाले आराम पसन्द**
- क्रेश्मर ने शारीरिक रचना के आधार पर व्यक्तित्व को एस्थेनिक्स, एथेलेटिक्स, डिसप्लास्टिक तथा.....रूप में बाँटा है **–पाइकनिक**
- स्पैंगर ने किस आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है **–मूल्य**
- ऐसे व्यक्ति जिनमें अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी दोनों वर्गों की विशेषताएँ पायी जाती हैं, उन्हें मनोवैज्ञानिक युंग ने कहा है **–उभयमुखी**
- अत्यधिक वाचाल, प्रसन्नचित्त करने वाले तथा सामाजिक प्रवृत्ति के धनी वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व रहता है **–बहिर्मुखी**
- मूड़ एवं सवेंग में अन्तर है कि मूड होता है **–अस्पष्ट**

परीक्षण	प्रतिपादक
TAT	मार्गन व मूरे
रोर्शा स्याही धब्बा	हरमन रोर्शा
CAT	लियोपोल्ड बैलेक
शब्द साहचर्य विधि	गाल्टन 75 शब्द, युंग 100 शब्द
क्रास आउट परीक्षा	प्रेसी
अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी परीक्षा	लेयर्ड, मेस्टोन एवं हीड्डर
मोजेक परीक्षण	मार्गरिट लेविन फील्ड

- मिनेसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व सूची (MMPI) का निर्माण सर्वप्रथम किसने किया **–हाथवे एवं मैकिनले**
- छात्रों के व्यक्तित्व को मापने और परामर्श देने के लिए किस पद्धति का प्रयोग किया जाता है **–साक्षात्कार विधि**
- बालक के व्यक्तिगत अध्ययन की मनोवैज्ञानिक विधि है **–केस स्टडी**
- विद्यालय में शारीरिक शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य है **–बालकों में शारीरिक तन्दरूस्ती का उन्नयन करना**
- विद्यालय में छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण क्यों जरूरी है **–यह विद्यालय का भी दायित्व है**
- मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली के जन्मदाता है **–सिंगमंड फ्रायड**
- बालक की मूल शक्तियों का प्रधान कारक है **–वंशानुक्रम**
- भारतीय मनोवैज्ञानिक जलोटा द्वारा निर्मित 'साधारण मानसिक योग्यता परीक्षण' किस प्रकार का है **–सामूहिक शाब्दिक प्रकार का**
- 'ड्रा ए मैन परीक्षण' मूलतः किसके द्वारा निर्मित है **–गुडएनएफ द्वारा**
- आवश्यकताओं के पदानुक्रमिकता का उल्लेख सर्वप्रथम किसके द्वारा व्यवस्थित रूप में किया गया? **–मास्लो द्वारा**
- S-O-R कारक निम्न में किसकी देन है? **–वुडवर्थ**
- व्यवहारवाद के प्रमुख प्रवर्तक है **–जे. वी. वाटसन**
- मनोविश्लेषणवाद के जनक थे **–सिंगमण्ड फ्रायड**
- मुझे बालक दे दीजिए। तुम उसे जैसा बनाना चाहते हो, उसे मैं वैसा ही बना दूँगा **–वाटसन**
- सिंगमण्ड फ्रायड के अनुसार, निम्न में से मन की तीन स्थितियाँ कौन-कौन सी है **–चेतन, अर्द्धचेतन, अचेतन**
- इड, ईगो, सुपर ईगो को मानव की संरचना का विभिन्न अंग हैं। कौन मानता है **–फ्रायड**
- केवल दो प्रकार की मूल प्रवृत्ति है। 'मृत्यु एवं जीवन' यह विचार है **–फ्रायड**
- 'व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक विशेषता है **–वुडवर्थ**
- व्यक्तित्व मापन की विधियाँ है **– आत्मनिष्ठ विधि, प्रक्षेपी विधि, वस्तुनिष्ठ विधि**
- मैसलो के ''मूल मांग'' में कितने अभिप्रेरक तत्व है **–पांच**
- कौन मांग सर्वाधिक प्रबल मांग है **–दैहिक मांग**
- सबसे कमजोर मांग कौन है **–आत्म सिद्धि की मांग**
- कौन 'मानवतवादी मनोविज्ञान के आध्यात्मिक जनक' माने जाते है **–अब्राहम मैसालो**

11.

भाषा एवं विचार

भाषा विकास की आवश्यकता एवं महत्त्व

1. बच्चों के भाषायी विकास के लिए जरूरी है कि–

(a) उनको अधिक–से–अधिक अपने विचार व्यक्त करने के अवसर देने चाहिए।

(b) भाषायी कौशलों के विकास हेतु गतिविधियां आयोजित की जानी चाहिए।

(c) लिखना, पढ़ना, बोलना तथा सुनने का अभ्यास करना चाहिए।

(d) उपरोक्त सभी।

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) बच्चों के भाषायी विकास के लिए जरूरी है कि–

- उनको अधिक से अधिक अपने विचार व्यक्त करने के अवसर देने चाहिए।
- भाषायी कौशलों के विकास हेतु गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।
- लिखना, पढ़ना, बोलना तथा सुनने का अभ्यास कराना चाहिए आदि।

भाषा विकास का अर्थ, सोपान एवं विकास क्रम

2. विकासात्मक कार्य के प्रत्यय के प्रतिपादक थे

(a) हॉलिंगवर्थ (b) हैविघर्स्ट

(c) जीन पियाजे (d) हाल

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (b) विकासात्मक कार्य के प्रत्यय के प्रतिपादक अमेरिका की शिकागो यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर 'रॉबर्ट हैविघर्स्ट' (Robert Havighurst) थे।

3. एक विद्यार्थी कहता है, ''उसका दादा आया है''। एक शिक्षक होने के नाते आपकी प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

(a) 'दादा आया है' की जगह पर 'दादाजी आए हैं' कहना चाहिए

(b) आप अपनी भाषा पर ध्यान दीजिए।

(c) अच्छा, आपके दादाजी आए हैं।

(d) बच्चे, आप सही वाक्य नहीं बोल रहे।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (c) बच्चे अनुकरण द्वारा सीखते हैं। वे शिक्षक के सही-गलत सभी व्यवहारों का अनुकरण करते हैं। शिक्षक होने के कारण अभिभावकों के प्रति सम्माननीय शब्दावली का प्रयोग करना आपका एक उत्तरदायित्व है। अतः आप कहेंगे 'अच्छा, आपके दादाजी आये हैं।'

4. पठन कौशल को इस प्रक्रिया द्वारा सबसे अच्छी तरह विकसित किया जा सकता है-

(a) उत्तर लिखना

(b) वर्ड गेम खेलना/क्विज करना

(c) पाठ में शब्दों के उपयोग पर ध्यान केंद्रित करना

(d) शब्दावली अभ्यास करना

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : पठन कौशल को सबसे अच्छी तरह विकसित करने के लिए पाठ में आये शब्दों के उपयोग पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। किसी भी पाठ में आये शब्द, वाक्य-संगठन, पद आदि उस पाठ को अर्थवान इकाई बनाते हैं इसलिए इन सबका पठन कौशल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

5. एक शिशु जन्म के पश्चात् प्रथम 15 माह में भाषा विकास की किस अवस्था में होता है?

उत्तर: पूर्व-वाक अवस्था

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

Ans. जन्म के उपरान्त के प्रथम पन्द्रह महिने में होने वाले भाषा विकास की अवस्था को पूर्व-वाक अवस्था (Pre-Speech Stage) कहा जाता है।

6. भाषा के अर्जन एवं विकास के लिए सर्वाधिक संवेदनशील अवधि कौन सी है?

(a) मध्य बाल्यावस्था (b) किशोरावस्था

(c) जन्म पूर्व अवधि (d) प्रारंभिक बाल्यावस्था

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) भाषा के अर्जन एवं विकास के लिए सर्वाधिक संवेदनशील अवधि प्रारम्भिक बाल्यावस्था है। इस अवस्था में अर्थात् 6–9 वर्ष की आयु में बालक के भाषा विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है। बालकों के भाषा ज्ञान की वृद्धि के लिए उन्हें वार्तालाप करने, कहानियाँ सुनाने, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने जैसे क्रियाओं में भाग लेने के लिए अधिकाधिक प्रोत्साहित करना चाहिए।

7. अधिकांश बालक अपनी मातृभाषा सीख लेते है

(a) एक वर्ष की आयु में (b) चार वर्ष की आयु में

(c) छः वर्ष की आयु में (d) दो वर्ष की आयु में

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) बालकों को 5 वर्ष की अवस्था में अक्षर ज्ञान हो जाता है और इस ज्ञान का उपयोग कर बालक 6 वर्ष तक आते-आते अपने बातों को शब्दों में कह सकने के योग्य हो जाते है। और 6 वर्ष की अवस्था में ही अपनी मातृभाषा भी सीख लेते है।

8. अनुकरण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम शिशु अनुकरण करता है

(a) व्यंजन वर्णों का (b) स्वर वर्णों का

(c) स्वर व व्यंजन वर्णों का (d) शब्दों का।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) शिशु को अक्षर ज्ञान नहीं होता है। वह उसी बात का अनुकरण करने की कोशिश करता है जिसे वह सुनता है अतः शिशु सर्वप्रथम शब्दों का अनुकरण करता है।

9. सामान्य बुद्धि बालक प्रायः किस अवस्था में बोलना सीख जाते हैं?

(a) 11 माह (b) 16 माह

(c) 34 माह (d) 51 माह।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) सामान्य बुद्धि वाले बालक प्रायः 34 माह में बोलना सीख जाते है।

10. दूसरे वर्ष में अन्त तक शिशु का शब्द भण्डार हो जाता है–

(a) 100 शब्द (b) 60 शब्द
(c) 50 शब्द (d) 10 शब्द

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) दूसरे वर्ष के अन्त तक शिशु का शब्द भण्डार लगभग 100 शब्द हो जाता है। यह अवस्था शैशवावस्था के अन्तर्गत आती है। शैशवावस्था की आयु (0-6) वर्ष तक होती है

11. भाषा के विकास के लिए प्रारम्भिक बचपन ..... काल है।

(a) कम महत्त्वपूर्ण (b) अमहत्त्वपूर्ण
(c) अतिसंवेदनशील (d) निरपेक्ष

DSSSB PRT, C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) भाषा के विकास की दृष्टि से प्रारम्भिक बचपन काल अति संवेदनशील माना जाता है। स्ट्रैंग के अनुसार– ''इस अवस्था में बालकों की भाषा में बहुत रुचि होती है।'' अतः इस बात पर विशेष बल दिया जाना आवश्यक है कि बालक, भाषा का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करें।

12. भाषा विकास के लिए सबसे संवेदनशील समय निम्नलिखित में से कौन–सा है?

(a) मध्य बचपन का समय (b) वयस्कावस्था
(c) प्रारंभिक बचपन का समय (d) जन्मपूर्व का समय

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) प्रारम्भिक बचपन का समय भाषा विकास के लिए सबसे संवेदनशील समय होता है। इस अवस्था में बालक अपने परिवार के सदस्यों द्वारा बोले गये शब्दों का अनुकरण करता है और अपनी भावनाओं, इच्छाओं को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। ऐसी स्थिति में यदि पारिवारिक सदस्यों की भाषा अस्पष्ट, बहुभाषी या बालक को भाषा सुनने-समझने या सीखने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते तो उनमें भाषा विकार सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं।

13. हिन्दी अक्षरों को बालक किस उम्र में पहचानने लगते हैं?

(a) 3 वर्ष की आयु में (b) 4 वर्ष की आयु में
(c) 5 वर्ष की आयु में (d) 6 वर्ष की आयु में

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) भारत में प्रारम्भिक शिक्षा का काल प्रायः बाल्यावस्था को माना जाता है। इस अवस्था में बालक अपना औपचारिक शिक्षा प्रारम्भ करता है तथा स्कूल जाता है जहाँ उसे सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान कराया जाता है। यह अवधि 5–6 वर्ष की आयु होती है। 5 वर्ष की आयु में सामान्यतः बालक अक्षर पहचानने लगते हैं।

14. कक्षा एक में बच्चों की भाषा कौशल का विकास क्रम में होना चाहिए?

(a) सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना
(b) लिखना, पढ़ना, सुनना, बोलना
(c) सुनना, लिखना, बोलना, पढ़ना
(d) लिखना, बोलना, पढ़ना, सुनना

DSSSB PRT
UK TET 2014 (I-V)

Ans : (a) कक्षा में बच्चों की भाषा कौशल का विकास क्रम इस प्रकार होना चाहिए– सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना। बालक शब्दों को सुनता है फिर उनका प्रयोग करने का प्रयास करता है फिर धीरे-धीरे पढ़ना सीखता है और फिर वह अन्तिम क्रिया के रूप में लिखना सीखता है। इसलिए एक कुशल अध्यापक को इस विकासक्रम का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

15. मध्य बाल्यावस्था में भाषा..... के बजाय....अधिक है–

(a) अहकेंद्रित, समाजीकृत (b) समाजीकृत, अहंकेद्रित
(c) जीववादी, समाजीकृत (d) परिपक्व, अपरिपक्व

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (b) मध्य बाल्यावस्था में भाषा समाजीकृत के बजाय अहंकेन्द्रित अधिक होती है। बालक सामाजिक नियमों से प्रेरित होकर कार्य नही करता है, और अपनी इच्छाओं के सामने दूसरे के इच्छाओं को भी स्वीकार नहीं करता है।

16. भाषा, निम्नलिखित में से किस प्रकार की विषय–वस्तु है?

(a) श्रवण (b) रूढ़िवादी
(c) दृश्य (d) सांकेतिक

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) भाषा एक प्रकार की सांकेतिक विषय–वस्तु है। दुनीचंद ने भाषा को परिभाषित करते हुए कहा है– ''हम अपने मन के भाव प्रकट करने के लिए जिन सांकेतिक ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें भाषा कहते हैं।'' आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने भाषा को इस प्रकार परिभाषित किया है कि ''विभिन्न अर्थों में सांकेतिक शब्द–समूह ही भाषा है जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं।''

17. भाषा में अर्थ के अध्ययन को इस नाम से जाना जाता है।

(a) मोर्फोलॉजी (b) लिंग्विस्टिक्स
(c) सिंटेक्स (d) सिमेंटिक्स

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) भाषा में अर्थ के अध्ययन को सिमेंटिक्स (अर्थ विज्ञान) के नाम से जाना जाता है। भाषा के दायरे में शब्दों और वाक्यों के तात्पर्य का अध्ययन अर्थ विज्ञान कहलाता है। दूसरे शब्दों में भाषा की आत्मा– अर्थ से सम्बन्धित वैज्ञानिक अध्ययन को अर्थ विज्ञान कहते हैं। अर्थ विज्ञान में भाषा की सार्थक इकाई का अध्ययन किया जाता है, जो मानव समाज में भावों, विचारों आदि के आदान–प्रदान में सहयोगी होता है।

18. बच्चा किस उम्र में भाषा की समझ दिखाना शुरू कर देता है?

(a) जन्म से ही (b) तीन महीने पर
(c) छः महीने पर (d) नौ महीने पर

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : बच्चा 5–6 माह की आयु में भाषा की समझ दिखाना शुरू कर देता है। भाषा विकास का प्रथम सोपान ही ध्वनि की पहचान करना होता है, जो भाषा की समझ के साथ शुरू होता है। बच्चा लगभग 5–6 माह की आयु में ध्वनियों में विभेद करने परिचित ध्वनियों को पहचानकर उन पर मुस्कुराने जैसी प्रतिक्रियाएँ करने लगता है।

19. निम्नलिखित में से कौन एक प्रकार का प्रीलिंग्विस्टिक स्पीच नहीं है?

(a) किलकना (b) बड़बड़ाना
(c) टेलीग्राफिक भाषण (d) रोना

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : भाषा विकास की प्रक्रिया को दो सोपानों, (i) पूर्व भाषा विकास अवस्था तथा (ii) पश्च भाषा विकास अवस्था में विभक्त किया गया है। पूर्व वाक्–भाषा की अवस्था में बालक अपनी संचार आवश्यकताओं को प्रायः निम्न चार प्रकारों से अभिव्यक्त करता है– (i) रूदन (ii) बड़बड़ाना (iii) हाव–भाव (iv) सांवेगिक अभिव्यक्ति।

पश्च भाषा विकास की अवस्था में बालक निम्न पाँच प्रकार का सामर्थ्य विकसित करता है– (i) भाषा अवबोध (ii) शब्दावली निर्माण (iii) वाक्य संगठन (iv) सही उच्चारण (v) भाषा स्वामित्व। टेलीग्राफिक भाषण प्रीलिंग्विस्टिक स्पीच नहीं है।

20. भाषा के उद्गमन के दौरान, ''शब्दजाल या जार्गन'' अवधि इस दौरान होती है :

(a) नौ महीने से एक वर्ष (b) जन्म से तीन महीने
(c) तीन से छः महीने (d) छः से नौ महीने

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (d) : भाषा के उद्गम के दौरान, ''शब्द जाल या जार्गन अवधि 6–9 महीने के दौरान होती है।'' 6–9 माह की अवधि के दौरान बच्चा बड़बड़ाने की ध्वनियाँ जानबूझकर करने लगता है बार–बार ध्वनि के होने के कारण ये ध्वनियाँ सुनने पर अर्थपूर्ण लगने लगती हैं, जैसे– मा–मा, दा–दा, ना–ना आदि। इस प्रकार की अर्थपूर्ण प्रतीत होने वाली ध्वनियों को ही बड़बड़ाना या जार्गन कहा जाता है।

21. ..... महीनों की आयु के बीच अधिकांश बच्चे शब्दों को मिलाकर छोटे–छोटे वाक्यों में बोलना शुरू कर देते हैं।

(a) 12 से 18 (b) 18 से 24
(c) 24 से 30 (d) 30 से 36

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : 18 से 24 महीनों की आयु के बीच अधिकांश बच्चे शब्दों को मिलाकर छोटे–छोटे वाक्यों में बोलना शुरू कर देते हैं। प्रारम्भ में उनके वाक्य अस्पष्ट व भाषा विज्ञान की दृष्टि से अपूर्ण होते हैं। वे अपने बनाए टूटे–फूटे वाक्यों को बोलने के साथ–साथ तदनुरूप हाव–भाव भी दिखाते हैं जिससे सुनने वालों को उनका अर्थ स्पष्ट हो जाता है। ढाई से तीन वर्ष की आयु में बालक संज्ञाओं तथा क्रियाओं, शब्दों को मिलाकर एक छोटा वाक्य बनाने का प्रयास करते हैं।

भाषा–विकास के सिद्धांत

22. किसका तात्पर्य उन विशिष्ट तरीकों से है जिनके द्वारा व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करता है?

(a) आत्म नियंत्रण (b) अन्तर्निरीक्षण
(c) आत्म सम्मान (d) आत्म प्रबलन।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (d) आत्म प्रबलन का तात्पर्य उन विशिष्ट तरीकों से है जिनके द्वारा व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करता है।

23. भाषा विकास का सिद्धान्त नहीं है

(a) अनुबंधन का सिद्धान्त
(b) अनुकरण का सिद्धान्त
(c) अतिरिक्त शक्ति का सिद्धान्त
(d) परिपक्वता का सिद्धान्त

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) भाषा विकास का तात्पर्य ऐसे विकास से है जिसमें बालक अपने विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त कर सके। भाषा विकास के मुख्य सिद्धांत निम्न है-

1. अनुबंधन का सिद्धांत
2. अनुकरण का सिद्धांत
3. परिपक्वता का सिद्धांत

अतिरिक्त शक्ति का सिद्धांत भाषा विकास का सिद्धांत नहीं है।

24. निम्नलिखित में से कौन से युग्म के सही होने की संभावना सबसे कम है?

(a) भाषा और विचार प्रारम्भ में दो भिन्न गतिविधियाँ हैं – वाइगोत्स्की
(b) भाषा विचार पर आधारित है। – पियाजे
(c) भाषा वातावरण में एक उद्दीपक है। – बी. एफ. स्किनर
(d) बच्चे भाषा के बारे में निश्चित ज्ञान के साथ प्रवेश करते हैं। – चॉम्स्की

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013 DSSSB PRT

Ans: (c) बी. एफ. स्किनर ने अधिगम के लिए क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त दिया। इनके अनुसार भाषा भी क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत के आधार पर सीखा जा सकता है। इनके अनुसार भाषा सीखने के लिए पुनर्बलन की आवश्यकता होती है जो क्रिया प्रसूत अनुबंधन का मूलाधार हैं इनका मानना है कि भाषा एक उद्दीपक अवश्य है किन्तु उसके लिए प्रतिक्रिया अनिवार्य शर्त है।

25. भाषा-विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र पियाजे के द्वारा कम कर आँका गया?

(a) आनुवंशिकता (b) सामाजिक अंतःक्रिया
(c) अहं-केंद्रित भाषा (d) विद्यार्थी द्वारा संक्रियात्मक रचना

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014 DSSSB PRT

Ans: (b) पियाजे भाषा विकास में सामाजिक अंतःक्रिया को कम महत्व देते हैं जबकि वाइगोत्सकी भाषा विकास में सामाजिक अंतःक्रिया को विशेष महत्व देते हैं।

26. भाषा विकास में यूनिवर्सल ग्रामर के सिद्धांत को किसने पेश किया?

(a) पियाजे (b) वाइगोत्सकी
(c) स्किनर (d) चॉम्सकी

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : भाषा विकास में यूनिवर्सल ग्रामर के सिद्धान्त को नोआॅम चाम्स्की ने पेश किया। उन्होंने माना कि प्रत्येक मानव शिशु में व्याकरण की संरचनाओं का एक अंतर्निहित एवं जन्मजात खाका होता है जिसे सार्वभौम व्याकरण कहा जा सकता है।

27. 'महत्वपूर्ण अवधि की परिकल्पना' ..... के द्वारा प्रस्तावित की गई थी।

(a) हेलेन केल्लर (b) नोंम चोंम्स्की
(c) ब्लूमफील्डस (d) एरिक लेनबर्ग

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (d) : 'महत्त्वपूर्ण अवधि की परिकल्पना' एरिक लेनबर्ग के द्वारा प्रस्तावित की गयी थी। एरिक हेंज लेनबर्ग एक भाषाविद और न्यूरोलॉजिस्ट थे जिन्होंने भाषा अधिग्रहण और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान पर कई बड़े कार्य किये। भाषा के क्षेत्र में इन्होंने 'अवधि की परिकल्पना' का प्रतिपादन किया जो आज भी चर्चा का विषय बना हुआ है।

28. बच्चों में भाषा का विकास इस सिद्धांत के अंतर्गत होता है :

(a) एकीकरण (b) एकरूप पैटर्न
(c) निरंतरता (d) व्यक्तिगत भिन्नता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : बच्चों में भाषा का विकास एकरूप पैटर्न पर होता है। सामान्य रूप से सभी बालकों में भाषा का विकास एक क्रमिक पैटर्न पर होता है। जैसे– सभी बालक प्रारम्भ में रूदन करते हैं, फिर बड़बड़ाने की क्रिया करते हैं फिर हाव–भाव प्रदर्शित करते हैं फिर भाषा का प्रयोग, भाषा अवबोधन, शब्दावली निर्माण और अंत में भाषा पर स्वामित्व प्राप्त करते हैं।

भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक

29. जब कोई बच्चा किसी शब्द का गलत उच्चारण करता है तो आप क्या करेंगे?

(a) कहेंगे कि ऐसे मत बोलो
(b) शुद्ध उच्चारण बतायेंगे
(c) गलत उच्चारण के लिए उसे डाटेंगे
(d) ध्यान नहीं देंगे

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) बच्चे द्वारा गलत शब्द का उच्चारण करना यह बताता है कि बच्चे को शब्द के बारे में ज्ञान नहीं है अतः अध्यापक को चाहिए कि वह बालक को सही उच्चारण बताए और पुनः उच्चारण करने को कहे।

30. भाषा शिक्षण की प्रथम कक्षा किसे माना जाता है?

(a) पूर्व प्राथमिक कक्षा को (b) प्लेवे विद्यालय को
(c) घर को (d) उपरोक्त सभी

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) भाषा शिक्षण की प्रथम पाठशाला घर को माना जाता है। बच्चे घर के सदस्यों द्वारा बोले गये शब्दों का अनुकरण करते हैं और उसे बोलने का प्रयास करते हैं। धीरे–धीरे वे बा, पा, मा, ना से बाबा, पापा, मामा, नाना शब्द और फिर अपरिष्कृत छोटे–छोटे वाक्य बोलना प्रारम्भ करते हैं।

31. वाणी दोष नहीं है–

(a) ध्वनि परिवर्तन और अस्पष्ट उच्चारण
(b) धीमी या तेज गति से बोलना
(c) हकलाना और तुतलाना
(d) तीव्र अस्पष्ट वाणी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (b) वाणी दोष का अर्थ है अपनी बातों को स्पष्ट रूप से न कह पाना। स्पष्ट रूप से अपनी बात न कह पाने का कारण होता है- हकलाना, तुतलाना, शब्दो का सही उच्चारण न कर पाना आदि। धीमी या तेज गति से बोलना वाणी दोष नहीं होता बल्कि परिस्थितिजन्य ध्वनि में परिवर्तन होता है।

भाषा के अंग (शब्द, पद, वाक्य आदि)

32. भाषा का वह घटक जो ध्वनि के अनुक्रम संचालन एवं उसकी संरचना से सम्बन्धित नियम की चर्चा करता है, उसे क्या कहते हैं?

(a) अर्थविज्ञान (b) व्याकरण
(c) स्वर विज्ञान (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) भाषा का वह घटक जो ध्वनि के अनुक्रम संचालन एवं उसकी संरचना से सम्बन्धित नियम की चर्चा करता है उसे स्वर विज्ञान कहते हैं।

33. किसी भाषा के स्वीकृत ध्वनि संयोजनों को इसके ..... नियमों के अन्तर्गत बनाया जाता है।

(a) ध्वनि–संबंधी (b) व्याकरणिक
(c) वाक्यात्मक (d) विभक्ति–विषयक

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : किसी भाषा के स्वीकृत ध्वनि संयोजनों को इसके ध्वनि सम्बन्धी नियमों के अन्तर्गत बनाया जाता है। भाषा की लुघतम इकाई ध्वनि है। वाक्य, उपवाक्य, पदबंध, पद तथा रूप अथवा रूपिम आदि सभी सार्थक हैं तथा सभी ध्वनियों के समूह से ही बनते हैं। जहाँ स्वरों का संयोजन जिह्वा की ऊँचाई, जिह्वा की स्थिति तथा होठों की आकृति के आधार पर किया गया है वहीं व्यंजन ध्वनियों का संयोजन उनके उच्चारण स्थान, उच्चारण प्रयत्न आदि के आधार पर किया गया है।

34. 'बोली जाने वाली भाषा' की सबसे छोटी इकाई है–

(a) अर्थ विज्ञान (b) रूपग्राम
(c) ध्वनिग्राम (d) वाक्य विन्यास

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : 'बोली जाने वाली भाषा' की सबसे छोटी इकाई ध्वनिग्राम (Phoneme) है। इसे स्वनिम भी कहा जाता है। स्वनिमों का अपना अर्थ नहीं होता है किन्तु वे अर्थभेदक होते हैं। जैसे– 'क', 'प', 'न' आदि।

35. भाषा में अर्थ की सबसे छोटी इकाई ..... है।

(a) स्वनिम (b) संकेत प्रयोग विज्ञान
(c) वाक्य (d) रूपिम

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (d) किसी भाषा या बोली में स्वनिम (Phoneme) उच्चारित ध्वनि की सबसे छोटी इकाई है। स्वनिम उच्चारित भाषा की ऐसी लघुतम इकाई है, जिससे दो स्वनिमों का अंतर स्पष्ट होता है। जैसे– 'ज' 'न' 'प' आदि। रुपिम (Morpheme) भाषा उच्चारण की लघुत्तम अर्थवान इकाई है। रूपिम स्वनिमों का ऐसा न्यूनतम अनुक्रम है, जो व्याकरणिक दृष्टि से सार्थक होता है।

36. थ, फ, च ध्वनियाँ हैं

(a) स्वनिम (b) रूपिम
(c) लेखीम (d) शब्दिम

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (a) किसी भाषा या बोली में स्वनिम (Phoneme) उच्चारित ध्वनि की सबसे छोटी इकाई है। स्वनिम उच्चारित भाषा की ऐसी लघुतम इकाई है, जिससे दो ध्वनियों का अंतर स्पष्ट होता है।

37. 'मैडम चाय खाती हैं' वाक्य –

(a) अर्थ-विज्ञान एवं वाक्य-विन्यास दोनों की दृष्टि से सही है
(b) अर्थ-विज्ञान एवं वाक्य-विन्यास दोनों की दृष्टि से गलत है
(c) वाक्य-विन्यास की दृष्टि से सही है लेकिन अर्थ-विज्ञान की दृष्टि से गलत है
(d) अर्थ-विज्ञान की दृष्टि से सही है लेकिन वाक्य-विन्यास की दृष्टि से गलत है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (c) मैडम चाय खाती हैं यह वाक्य विन्यास की दृष्टि से सही है परन्तु अर्थ विज्ञान की दृष्टि से वाक्य 'मैडम चाय पीती हैं' होना चाहिए।

38. किसी भाषा में, अर्थ को दर्शाने वाली सबसे छोटी इकाई को ..... कहा जाता है।

(a) स्वनिम (फोनीम) (b) वाक्य विन्यास (सिंटेक्स)
(c) शब्द (वर्ड) (d) रूपिम (मॉर्फीम)

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : रूपिम (Morpheme) भाषा की लघुतम् अर्थवान इकाई है। रूपिम का संकल्पना में शब्द, धातु, प्रतिपादिक, प्रत्यय आदि सभी आ जाते हैं। रूपिम को और अधिक सार्थक खण्डों में विभक्त नहीं किया जा सकता है।

39. वाक्य को एक साथ रखने में सम्मिलित नियमों को निरूपित करने के लिए किस पद का प्रयोग किया जाता है?

(a) टेलीग्राफ (b) रूपिम
(c) वाक्य-विन्यास (d) नेस्टेड संरचना

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) वाक्य को एक साथ रखने में सम्मिलित नियमों को निरूपित करने के लिए वाक्य–विन्यास पद का प्रयोग किया जाता है। किसी भाषा में जिन सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं के द्वारा वाक्य बनाया जाता है उसके अध्ययन को भाषा विज्ञान में वाक्य विन्यास कहा जाता है। वाक्य विन्यास, पदों के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन है।

40. भाषा के विकास में, एक वाक्य के संरचनात्मक संगठन को ..... के रूप में जाना जाता है।

(a) ध्वनिम (फीनोम्स) (b) वाक्यविन्यास (सिंटेक्स)
(c) तथ्यात्मक (प्रेग्मेटिक) (d) रूपिम (मॉर्फिम)

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : भाषा के विकास में एक वाक्य में संरचनात्मक संगठन को वाक्यविन्यास के रूप में जाना जाता है। किसी भाषा में जिन सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं के द्वारा वाक्य बनते हैं, उनके अध्ययन को भाषा विज्ञान में वाक्य विन्यास, वाक्य विज्ञान या सिन्टेक्स कहते हैं। वाक्य विन्यास के अंतर्गत निम्नलिखित बातों का विचार किया जाता है– वाक्य की परिभाषा, वाक्यों और भाषा के अन्य अंग का सम्बन्ध, वाक्यों के प्रकार, वाक्यों में परिवर्तन, वाक्यों के पदों का क्रम, वाक्यों में परिवर्तन के कारण आदि।

भाषा एवं विचार में अंतर्सम्बन्ध

41. जब सोचने की प्रक्रिया किसी भाषा द्वारा प्रभावित होती है, तो ऐसी स्थिति को कहते हैं–

(a) संस्कृति प्रभावित (b) भाषा निर्धारित
(c) संज्ञानात्मक पक्ष (d) सामाजिक–भाषायी उद्धृत

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : जब सोचने की प्रक्रिया किसी भाषा द्वारा प्रभावित होती है, तो ऐसी स्थिति को भाषा निर्धारित प्रक्रिया कहते हैं। यह सिद्धान्त वाइगोत्सकी ने दिया था। इनके अनुसार भाषा संज्ञानात्मक विकास को निर्धारित भी करती है और प्रभावित भी करती है जबकि पियाजे का मानना है कि संज्ञानात्मक विकास सार्वभौमिक होता है यह किसी भी संस्कृति या भाषा से प्रभावित नहीं होता है।

42. भाषा

(a) हमारी विचार–प्रक्रिया को पूरी तरह से नियंत्रित करती है
(b) हमारी विचार–प्रक्रिया को प्रभावित करती है
(c) हमारी विचार–प्रक्रिया का निर्धारण नहीं कर सकती
(d) विचार–प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करती

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (b) भाषा विकास एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है जो काफी हद तक व्यक्ति की परिपक्वता से निर्धारित होती है। अतः भाषा विकास का अर्थ उस योग्यता से है जो बालक की परिपक्वता के अनुपात में उसे अपने भावों तथा विचारों को दूसरों तक पहुँचाने अथवा दूसरे के भावों तथा विचारों को ग्रहण करने में सहायक होती है। अतः भाषा विचार–प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

43. 'भाषा सापेक्षतावादी परिकल्पना' में मजबूत विश्वासियों का तर्क है कि .....

(a) भाषा बोध को निर्धारित करती है
(b) भाषा विचार को निर्धारित करती है
(c) भाषा स्मरण शक्ति को प्रभावित करती है
(d) भाषा विचार को प्रभावित करती है

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : 'भाषा सापेक्षतावादी परिकल्पना' में मजबूत विश्वासियों का तर्क है कि भाषा विचार को निर्धारित करती है। दूसरे शब्दों में, वाइगोत्सकी जैसे मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भाषा बालक के विचारों का एक महत्त्वपूर्ण साधन है जो विचार को प्रभावित करती है।

44. किसने प्रस्तावित किया कि भाषा और विचार स्वतंत्र होते हैं?

(a) वाइगोत्सकी (b) पियाजे
(c) कोहलर (d) चॉमस्की

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : नोआम चॉमस्की का मानना है कि भाषा और विचार स्वतंत्र होते हैं। इनका मानना है कि मानव शिशु में व्याकरण की संरचनाओं का एक अंतर्निहित एवं जन्मजात खाका होता है जिसे सार्वभौम व्याकरण कहा जाता है जबकि विचार व्यक्ति अपने अनुभवों से प्राप्त करता है।

चिंतन का अर्थ एवं विशेषताएँ

45. चिन्तन शक्ति के विकास की प्रक्रिया में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(a) ज्ञान व अनुभवों की यथेष्टता
(b) यथेष्ट अभिप्रेरणा
(c) यथेष्ट स्वतंत्रता व लचीलापन
(d) कम बुद्धि व ज्ञान

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (d) चिंतन शक्ति के विकास की प्रक्रिया में ज्ञान व अनुभव की अभिवृद्धि होती है। अतः विकल्प (d) गलत होगा।

46. कॉल्सनिक के अनुसार संकल्पना का पुनर्गठन क्या है?

(a) व्यवहार (b) शब्द
(c) चिन्तन (d) समस्याएँ

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) By Kalesnik- चिंतन, संकल्पना का पुनर्गठन है।

47. चिंतन अनिवार्य रूप से है एक

(a) संज्ञानात्मक गतिविधि (b) मनोगतिक प्रक्रिया
(c) मनोवैज्ञानिक परिघटना (d) भावात्मक व्यवहार

DSSSB PRT, Hariyana TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) चिंतन एक जटिल संज्ञानात्मक क्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी किसी विशिष्ट व लक्ष्य केन्द्रित समस्या का समाधान करता है तथा जिसमें व्यक्ति अपनी समस्या के समाधान के लिए वस्तुओं तथा घटनाओं को अभिव्यक्त करने में आंतरिक संकेतों का प्रयोग करता है।

48. 'चिंतनशील सोच' की चर्चा इनमें से किसने की है?

(a) ड्यूवी (b) रॉस
(c) वुडवर्थ (d) ड्रेवर

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (a) John Dewey ने ''चिंतनशील सोच'' की अवधारणा 1910 में दी थी।

49. बालक का चिन्तन किसके द्वारा प्रदर्शित नहीं होता?

(a) आत्मकेन्द्रिकता (b) सजीवतावाद
(c) यथार्थवाद (d) वैयक्तिकवाद

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) बालक का चिंतन निम्न द्वारा प्रदर्शित होती है-
1. आत्मकेन्द्रिकता 2. सजीवतावाद
3. यथार्थवाद

वैयक्तिकवाद से बालक का चिंतन नहीं प्रदर्शित होता है। वैयक्तिकवाद एक नैतिक राजनैतिक एवं सामाजिक दर्शन है जो व्यक्ति के स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता पर बल देता है।

50. चिंतन अनिवार्य रूप से है एक –

(a) संज्ञानात्मक गतिविधि (b) मनोगतिक प्रक्रिया
(c) मनोवैज्ञानिक परिघटना (d) भावात्मक व्यवहार

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012

Ans: (a) चिंतन चूँकि मानसिक स्तर पर होता है और इसमें अनुभवों, कल्पनाओं, सूचनाओं का समिश्रण होता और एक नया रूप ग्रहण करता है इसलिए इसे एक संज्ञानात्मक गतिविधि माना गया है।

51. निम्नलिखित में से कौन–सा गहन चिंतन कौशल का एक उदाहरण नहीं है?

(a) तत्काल तैयार करना (b) वर्गीकृत करना
(c) लक्ष्यानुसरण (d) व्याख्यात्मक

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : चिंतन एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने किसी विशिष्ट व लक्ष्यकेन्द्रित समस्या का समाधान करता है तथा जिसमें व्यक्ति अपनी समस्या के समाधान के लिए वस्तुओं और घटनाओं को अभिव्यक्त करने में आन्तरिक संकेतों का प्रयोग करता है। इसमें वर्गीकृत करने, लक्ष्यानुसरण करने तथा व्याख्यात्मक समाधान खोजने जैसी प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं जबकि तत्काल तैयार करना गहन चिंतन कौशल की विशेषता नहीं है।

52. मस्तिष्क का कौन-सा भाग चिंतन के लिए जिम्मेदार है?

(a) मज्जा (मेडुल्ला)
(b) उपवल्कुटीय तंत्र (लिम्बिक सिस्टम)
(c) अनुमस्तिष्क (सेरेबेल्लम)
(d) प्रमस्तिष्क वल्कुट (सेरेब्रल कार्टेक्स)

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : प्रमस्तिष्क वल्कुट (Cerbral Cortex) चिंतन के लिए जिम्मेदार है। सेरेब्रल कार्टेक्स मस्तिष्कीय गोलार्ध के ऊपर ग्रे पदाथ का एक बाहरी आवरण है। यह आमतौर पर 2–3 मिमी मोटी होती है। कुछ कार्टिकल क्षेत्रों में सरल कार्य होते हैं जिन्हें प्राथमिक कार्टिक्स के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जैसे– संवेदी और प्रत्यक्षण से सम्बन्धित अनुभव आदि तथा कुछ जटिल कार्यों जैसे स्मृति, भाषा, अमूर्तता, रचनात्मकता, निर्णय, भावना, चिंतन और ध्यान को द्वितीयक कार्टिक्स के द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

चिंतन की प्रक्रिया

53. निम्न में से कौन-सा चिन्तन की प्रक्रिया में सबसे कम महत्वपूर्ण है?

(a) चित्र (b) प्रतीक एवं चिह्न
(c) मांसपेशीय क्रियायें (d) भाषा।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) चिंतन प्रक्रिया संज्ञानात्मक मानसिक क्रिया होती है। इसमें प्रतीक एवं चिन्ह, चित्र, भाषा आदि शामिल होते है जबकि मांसपेशीय क्रियाएँ नहीं शामिल होती है।

54. एक विद्यार्थी एक प्रकरण में मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करती है, उसका एक दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण बनाती है तथा प्रकरण की समाप्ति पर अपने दिमाग में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों को प्रस्तुत करती है। वह –

(a) विचारों के संघटन के द्वारा अपने चिन्तन को निर्देशित करने की कोशिश कर रही है।
(b) अनुरक्षण पूर्वाभ्यास की रणनीति का प्रयोग करने की कोशिश कर रही है।
(c) प्रेक्षण अधिगम सुनिश्चित कर रही है।
(d) केन्द्र-बिन्दु की विधि का प्रयोग करने की कोशिश कर रही है।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (a) एक विद्यार्थी एक प्रकरण में मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करती है, उसका एक दृश्यात्मक प्रस्तुतीकरण बनाती है तथा प्रकरण की समाप्ति पर अपने दिमाग में उत्पन्न होने वाले प्रश्नों को पूँछती है। वह विचारों के संघटन के द्वारा अपने चिन्तन को निर्देशित करने की कोशिश करती है।

चिंतन की सामग्री

55. सृजनात्मक चिन्तन सदैव होता है

(a) विनाशकारी (b) रचनात्मक
(c) अभिसारी (d) एकरसता

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) सृजन शब्द का तात्पर्य किसी नये प्रकार की रचना से है इस प्रकार सृजनात्मक चिंतन सदैव रचनात्मक होता है।

चिंतन के प्रकार

56. एक बच्ची कहती है, ''धूप में कपड़े जल्दी सूख जाते हैं।'' वह.....की समझ को प्रदर्शित कर रही है।

(a) प्रतीकात्मक विचार (b) अहंकेंद्रित चिंतन
(c) कार्य-कारण (d) विपर्यय चिंतन

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (c) किसी अन्य वस्तु के उपस्थिति में किसी कार्य के होने के सम्बन्ध को कार्य- कारण सम्बन्ध कहा जाता है। अतः बच्ची द्वारा यह कहना कि धूप में कपड़े जल्दी सूख जाते हैं। बच्ची की यह समझ कार्य- कारण की समझ को प्रदर्शित कर रही है।

57. एक छात्र को पाई के मान का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न प्रणाली को ज्ञात करने के लिए कहा जाता है। इसमें मुख्य रूप से निम्नलिखित में से कौन सा ऑपरेशन शामिल होगा?

(a) मूल्यांकन (b) अभिसारी चिंतन
(c) अपसारी चिंतन (d) अधिगम

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : यदि किसी छात्र को पाई के मान का मूल्यांकन हेतु विभिन्न प्रणाली को ज्ञात करने के लिए कहा जाता है तो इसका मतलब है कि उसे अपसारी चिंतन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है क्योंकि पाई का कोई निश्चित मान नहीं होता है तथा यह एक अपरिमेय संख्या है।

58. जब बच्चे प्राप्त की गई सूचनाओं की व्याख्या करने के लिए अपने अनुभवों के आधार पर सोचते हैं, तो उसे ..... कहा जाता है।

(a) प्रतिक्रियावादी सोच (b) सृजनात्मक सोच
(c) अमूर्त सोच (d) मूर्त सोच

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : जब बच्चे प्राप्त की गयी सूचनाओं की व्याख्या करने के लिए अपने अनुभवों के आधार पर सोचते हैं, तो उसे मूर्त सोच या प्रत्यक्षात्मक चिंतन या स्थूल चिंतन कहा जाता है। यह सर्वाधिक निम्न स्तर का चिंतन है जो प्रायः छोटे–बालकों, मंद बुद्धि व्यक्तियों तथा पशुओं में पाया जाता है। यह चिंतन किसी प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित अथवा पूर्व अवलोकित घटना पर आधारित होता है। इस प्रकार के चिंतन में प्राणी अपने पूर्व अनुभवों का उपयोग करता है।

59. 'निम्न में से किस प्रश्न' द्वारा सृजनात्मक चिन्तन को सर्वाधिक अच्छे ढंग से अनुमानित किया जा सकता है?

(a) इसे कौन बता सकता है?
(b) सही उत्तर बताएँ।
(c) क्या आप इसका उत्तर बता सकते हैं?
(d) इसे कितने भिन्न तरीकों से हल किया जा सकता है?

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : 'इसे कितने भिन्न तरीकों से हल किया जा सकता है?' इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा सृजनात्मक चिंतन को सर्वाधिक अच्छे ढंग से अनुमानित किया जा सकता है, क्योंकि इसमें बच्चों को विभिन्न तरीकों से चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। ऐसे प्रश्नों को हल करते समय विद्यार्थी अपने पूर्व अनुभवों का उपयोग करते हुए प्रश्न को विभिन्न प्रकार से हल करने का प्रयास करेगा।

60. एक पाँच वर्ष के बालक का चिन्तन निम्न में से किस प्रकार का होता है?

(a) परावर्तित चिन्तन (b) निर्देशित चिन्तन
(c) मूर्त चिन्तन (d) तार्किक चिन्तन

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (a) एक पाँच वर्ष के बालक का चिन्तन परावर्तित चिन्तन होता है।

61. प्रवाहपूर्णता, व्याख्या, मौलिकता और लचीलापन ..... के साथ सम्बन्धित तत्व है।

(a) प्रतिभा (b) गुण
(c) अपसारी चिन्तन (d) त्वरण

DSSSB PRT
C TET 2014 (I-V)

Ans : (c) प्रवाहपूर्णता, व्याख्या, मौलिकता और लचीलापन अपसारी चिंतन के आवश्यक गुण होते हैं। अपसारी चिंतन में व्यक्ति अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए स्वतंत्र होता है।

62. निम्नलिखित में से कौन-सा सृजनात्मक से सम्बन्धित है?

(a) अपसारी चिन्तन (b) अभिसारी चिन्तन
(c) सांवेगिक चिन्तन (d) अहंवादी चिन्तन

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (a) अपसारी चिन्तन को सृजनात्मक चिन्तन भी कहते हैं। इस चिन्तन के अंदर व्यक्ति को कुछ तथ्य तो दिये होते उनमें अपनी ओर एक तथ्य जोड़कर निष्कर्ष निकालना होता है। जैसे- जली माचिस से भी लोग तरह-तरह के होम डेकोरेटर बना देते है।

63. 'ऑउट ऑफ-द-बॉक्स' चिन्तन किससे सम्बन्धित है?

(a) अनुकूल चिंतन (b) स्मृति-आधारित चिंतन
(c) अपसारी चिंतन (d) अभिसारी चिंतन

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (c) 'आउट ऑफ द बॉक्स' चिंतन अपसारी चिंतन से सम्बन्धित है। इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति को कुछ तथ्य तो दिये होते हैं उनमें अपनी ओर से एक तथ्य जोड़कर निष्कर्ष निकालना होता है।

64. शब्दों की भाषा इसके लिए आवश्यक नहीं है:

(a) वैचारिक चिंतन (b) अवधारणात्मक चिंतन
(c) कल्पनाशील चिंतन (d) साहचर्य चिंतन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : शब्दों की भाषा कल्पनाशील चिंतन के लिए आवश्यक नहीं है। कल्पनात्मक चिंतन को सृजनात्मक चिंतन भी कहते हैं। इस प्रकार के चिंतन का आधार मानसिक प्रतिमाएँ होती हैं। इस प्रकार के चिंतन में कोई वस्तु अथवा परिस्थिति प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं होती हैं अर्थात् प्रत्यक्षीकरण का अभाव रहता है। इसमें व्यक्ति उद्दीपक के सम्मुख न होने पर भी स्मृति के आधार पर भविष्य के बारे में सोचता है। इसमें भाषा और नाम का अभाव रहता है।

65. निम्नलिखित में से कौन रचनात्मक चिंतन का उदाहरण है?

(a) तर्क करना (b) समय प्रबंधन
(c) सक्रिय श्रवण (d) पूछ–ताछ

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) पूछ–ताछ रचनात्मक चिंतन का उदाहरण है। रचनात्मक चिंतन को अन्य प्रकार के चिंतन से इस तथ्य के आधार पर विभेदित किया जाता है कि इसमें समस्याओं के समाधान के लिए नवीन एवं मौलिक विचारों या समाधानों का उत्पादन शामिल होता है। अर्थात् नवीनता के अतिरिक्त मौलिकता भी रचनात्मक चिंतन की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है। रचनात्मक चिंतन के लिए व्यक्ति में जिज्ञासा का होना आवश्यक है।

66. किस प्रकार का चिंतन सृजनशीलता से संबंधित होता है?

(a) अभिसारी सोच
(b) अलग सोच
(c) अंतर्दृष्टि सोच(इनसाइटफुल थिंकिंग)
(d) पारमार्थिक सोच (ट्रांसडक्टिव थिंकिंग)

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : (Divergent thinking) अलग सोच या अपसारी चिंतन सृजनशीलता से सम्बन्धित होता है। अपसारी चिंतन एक मुक्त चिंतन है जहाँ व्यक्ति अपने अनुभवों के आधार पर प्रश्नों या समस्याओं के अनेक उत्तर सोच सकता है। इस प्रकार का चिंतन नवीन एवं मौलिक विचारों को उत्पन्न करने में सहायक होता है। अपसारी चिंतन को एडवर्ड डी बोनों ने पार्श्विक चिंतन कहा है।

67. 'ऑउट–ऑफ–द–बॉक्स' चिन्तन किससे सम्बन्धित है?

(a) अनुकूल चिन्तन (b) स्मृति–आधारित प्रश्न
(c) अपसारी चिन्तन (d) अभिसारी चिन्तन

DSSSB PRT

Ans : (c) 'आउट ऑफ द बॉक्स' चिंतन का अर्थ है किसी निश्चित सीमा या बंधन से मुक्त होकर विचार करना या चिंतन करना। इस प्रकार के चिंतन को अपसारी चिंतन कहा जाता है। इस प्रकार के चिंतन में व्यक्ति कुछ नये तथ्यों एवं विचारों का सृजन करते हुए चिंतन करता है।

चिंतन के सिद्धांत

68. चिंतन के सूचना प्रक्रमण सिद्धांत में निम्नलिखित चरण आते हैं:

(क) प्रतिक्रिया क्रियान्वयन (ख) प्रतिक्रिया चयन
(ग) श्रेणीकरण (घ) पूर्व-प्रक्रमण

इन चरणों का सही क्रम है

(a) ग, घ, ख, क, (b) ख, घ, ग, क
(c) ग, क, घ, ख (d) घ, ग, ख, क

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) चिंतन के सूचना प्रक्रमण सिद्धान्त का चरण निम्नवत् होगा-पूर्व-प्रक्रमण, श्रेणीकरण, प्रतिक्रिया चयन, प्रतिक्रिया क्रियान्वयन।

चिंतन का शैक्षिक महत्त्व

69. विभिन्न मुद्दों और विमर्शों पर उनके लिए कारण प्रस्तुत करते हुए बच्चों को अपनी व्यक्तिगत राय को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने वाले प्रश्न किसको बढ़ावा देते है?

(a) बच्चों का मानकीकृत आकलन
(b) विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक चिंतन
(c) अभिसारी चिंतन
(d) जानकारी का पुनःस्मरण

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (b) बच्चों में विभिन्न मुद्दों एवं समस्याओं को हल करने एवं उस पर अपना विचार प्रस्तुत करने से विश्लेषणात्मक एवं आलोचना-त्मक चिंतन का विकास होता है।

70. मान लीजिए आप विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष हैं, आप अपने अधिकार–क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों की शिक्षा की संपूर्ण गुणवत्ता को सुधारने के लिए क्या योजना बनाएंगे। इस प्रकार का प्रश्न ..... का एक उदाहरण है।

(a) निम्न स्तरीय अपसारी (b) उच्च स्तरीय अभिसारी
(c) उच्च स्तरीय अपसारी (d) निम्न स्तरीय अभिसारी

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2012

Ans : (c) यदि आप किसी विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष हैं तो आप में उच्च स्तरीय अपसारी चिंतन की योग्यता व क्षमता होनी चाहिए जिसका उपयोग कर आप अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विद्यालयों की शिक्षा की सम्पूर्ण गुणवत्ता में सुधार ला सकते हैं तथा उसमें यथा सम्भव आवश्यकतानुसार परिवर्तन व परिमार्जन भी कर सकते हैं।

कल्पना तथा शिक्षा

71. कल्पना के विकास के लिए

(a) ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करना चाहिए
(b) कहानी सुनना चाहिए
(c) रचनात्मक प्रवृत्ति के विकास पर ध्यान देना चाहिए
(d) उपरोक्त सभी क्रियाएँ करनी चाहिए

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (d) कल्पना के विकास के लिए निम्न कार्य करने अति आवश्यक होते है-
1. ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करना चाहिए
2. कहानी सुनना चाहिए
3. रचनात्मक प्रवृत्तियों के विकास पर ध्यान देना चाहिए
4. सामाजीकरण होना चाहिए आदि

तर्क का अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार एवं शैक्षिक महत्त्व

72. सामान्य से विशेष की तर्क की प्रक्रिया निम्नलिखित में से कौन-सी पद्धति में है?

(a) आगमनात्मक (b) निगमनात्मक
(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) निगमनात्मक तर्क के अन्तर्गत सामान्य से विशिष्ट की ओर चला जाता है, या नियम से उदाहरण की ओर चला जाता है। नवीन समस्याओं को हल करने की यह सबसे उपयुक्त विधि है।

73. संक्षिप्त रूप PSRN जोकि विकास से सम्बन्धित है, व्याख्या करता है

(a) समस्या हल, तार्किकता व आंकिक क्षमता
(b) समस्या हल, सम्बन्ध और आंकिक क्षमता
(c) बौद्धिक क्षमता, तार्किकता और आंकिक क्षमता
(d) बौद्धिक क्षमता, तार्किकता और अंक ज्ञान

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (a) PSRN का पूर्णरूप- Problem Solving, Reasoning and Numeracy अर्थात् समस्या समाधान तार्किकता एवं आंकिक क्षमता।

74. निगमनात्मक तर्कणा में शामिल है/हैं-

(a) विशिष्ट से सामान्य की ओर तर्कणा
(b) ज्ञान का सक्रिय निर्माण और पुनर्निर्माण
(c) अन्वेषणपरक सीखना और स्वतः खोजपरक सम्बन्धी पद्धतियाँ
(d) सामान्य से विशिष्ट की ओर तर्कणा

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) निगमनात्मक तर्कणा में शिक्षक छात्रों के सम्मुख पहले सामान्य नियम प्रस्तुत करता है तथा इसके पश्चात् उदाहरणों द्वारा नियम की सत्यता को प्रमाणित करता है एवं विशिष्ट परिस्थितियों में उसके उपयोग को बताता है।

75. आगमनात्मक तर्क के स्तरों में कौन-सी शामिल नहीं है?

(a) अवलोकन (b) प्रयोग
(c) सामान्यीकरण (d) कल्पना

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (d) आगमनात्मक तर्क के स्तरों के अन्तर्गत अवलोकन, प्रयोग तथा सामान्यीकरण शामिल है परन्तु कल्पना शामिल नहीं है।

76. किसी विशेष परिस्थिति में किसी दिए गए सामान्य सिद्धांत को लागू करने की क्षमता को..... कहा जाता है।

(a) आगमन तर्क (b) आपवादिक तर्क
(c) निगमन तर्क (d) तार्किक तर्क

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : किसी विशेष परिस्थिति में किसी दिये गये सामान्य सिद्धांत को लागू करने की क्षमता को निगमन तर्क कहा जाता है। इस तर्क में व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों, विश्वासों, सिद्धांतों के आधार पर अपनी समस्या के सम्बन्ध में चिन्तन करके समस्या का समाधान प्राप्त करता है। वस्तुतः निगमन तर्क मुख्य पद (Major premise), गौण पद (minor premise) तथा निष्कर्ष (Conclusion) के त्रिपदीय क्रम पर आधारित रहता है।

प्रत्यय निर्माण, प्रत्यय निर्माण के स्तर एवं शैक्षिक महत्त्व

77. शिक्षक बच्चों की जटिल अवधारणाओं की समझ को किस प्रकार सहज कर सकते हैं?

(a) बार-बार यांत्रिक अभ्यास के द्वारा
(b) अन्वेषण एवं परिचर्चा के लिए अवसर उपलब्ध करके।
(c) एक व्याख्यान देकर के।
(d) प्रतियोगितात्मक अवसरों की व्यवस्था करके।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) शिक्षक बच्चों की जटिल अवधारणाओं की समझ को अन्वेषण एवं परिचर्चा के लिए अवसर उपलब्ध कराकर सहज कर सकते हैं। जब बच्चे किसी समस्या का समाधान स्वयं खोजते हैं और उस पर परिचर्चा करते हैं तो उस समस्या/विषय की जटिल अवधारणाओं को स्वतः समझने लगते हैं।

78. विद्यार्थियों में संप्रत्ययात्मक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए निम्नलिखित में से कौन–सी विधि सबसे गलत है?

(a) यदि करने के लिए कहकर विद्यार्थियों के गलत विचारों को सही विचारों में बदलना
(b) विद्यार्थियों को बहुत–से उदाहरण देना और उन्हें तर्कशक्ति का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना
(c) जब तक विद्यार्थियों में वांछित संप्रत्ययात्मक परिवर्तन न हो जाए, तब तक दंड का उपयोग करना
(d) पुराने प्रत्ययों से किसी संदर्भ के बिना नये प्रत्ययों को अपने आप समझाना चाहिए।

DSSSB PRT

Ans : (c) विद्यार्थियों में संम्प्रत्ययात्मक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए सबसे गलत विधि यह होगी कि जब तक विद्यार्थियों में वांछित संप्रत्ययात्मक परिवर्तन न हो जाये तब तक दण्ड का प्रयोग करना।

79. विद्यार्थियों को स्पष्ट उदाहरण एवं गैर-उदाहरण देने के क्या परिणाम हैं?

(a) यह अवधारणाओं की समझ में अभाव पैदा करता है।
(b) यह अवधारणात्मक समझ के बजाय कार्यविधिक/प्रक्रियात्मक ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करता है।
(c) अवधारणात्मक परिवर्तनों को प्रोत्साहित करने के लिए यह एक प्रभावशाली तरीका है।
(d) यह विद्यार्थियों के दिमाग में भ्रांतियाँ उत्पन्न करता है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (c) विद्यार्थियों के सामने स्पष्ट उदाहरणों एवं गैर उदाहरणों को प्रस्तुत करने से उनके अवधारणाओं में परिवर्तन व परिमार्जन करने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। प्रायः यह देखा जाता है कि विद्यार्थी सामाजिक अंतःक्रिया द्वारा कई गलत अवधारणाएं विकसित कर लेते हैं जिसमें सुधार के लिए शिक्षक उनके जीवन से संबन्धित उदाहरणों और गैर उदाहरणों या अनुभवों को प्रस्तुत करते हैं।

80. विद्यार्थियों में प्रत्यय निर्माण के लिए शिक्षक

(a) की शिक्षण विधि सरल से जटिल की ओर होनी चाहिए
(b) को विद्यार्थी को व्यापक अनुभव का अवसर प्रदान करना चाहिए
(c) को विद्यार्थी को निर्मित प्रत्ययों के अन्तरण का अवसर देना चाहिए
(d) को उपरोक्त सभी क्रियाएँ करनी चाहिए

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (d) विद्यार्थियों के प्रत्यय विकास या निर्माण के लिए शिक्षक को निम्न कार्य करना चाहिए-

1. शिक्षण विधि सरल से जटिल की ओर होनी चाहिए
2. विद्यार्थियों को व्यापक अनुभव का अवसर प्रदान करना चाहिए
3. विद्यार्थी को निर्मित प्रत्यय अन्तरण का अवसर देना चाहिए
4. सौहार्दपूर्ण एवं लोकतांत्रिक वातावरण का निर्माण करना चाहिए
5. समायोजन की भावना का विकास करना चाहिए।

81. अपने चिंतन में अवधारणात्मक परिवर्तन लाने हेतु शिक्षार्थियों को सक्षम बनाने के लिये शिक्षिका को

(a) उन बच्चों को पुरस्कार देना चाहिये जिन्होंने अपने चिंतन में परिवर्तन किया है।
(b) बच्चों को स्वयं चिंतन करने के लिये हतोत्साहित करना चाहिए कि वे शिक्षिका को सुनें और उसका अनुपालन करें।
(c) व्याख्यान के रूप में व्याख्या प्रस्तुत करनी चाहिए।
(d) स्पष्ट और आश्वस्त करने वाली व्याख्या देनी चाहिए तथा शिक्षार्थियों के साथ चर्चा करनी चाहिए।

UP TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (d) शिक्षार्थियों के चिंतन में अवधारणात्मक परिवर्तन लाने के लिये यह आवश्यक है कि शिक्षक द्वारा कक्षा-कक्ष में दिया गया व्याख्यान स्पष्ट हो जिसे विद्यार्थी द्वारा आसानी से ग्रहण किया जा सके तथा साथ ही शिक्षिका एवं विद्यार्थी का सम्बन्ध भी सहज हो ताकि विद्यार्थी के मन में उत्पन्न शंका का समाधान किया जा सके और शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य विषय सम्बंधी चर्चा में विद्यार्थी स्वयं को सहज अनुभव कर सकें।

82. अपनी कक्षा के बच्चों को उनकी अपनी अवधारणाओं को बदलने में आप किस प्रकार सहायता करेंगे?

(a) बच्चों को सूचनाएँ लिखाकर उन्हें याद करने को कहकर।
(b) यदि बच्चों की अवधारणाएँ गलत हों तो उन्हें दंड देकर।
(c) तथ्यात्मक जानकारी देकर
(d) अवधारणाओं के बारे में बच्चों को अपनी समझ को व्यक्त करने का अवसर देकर।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (d) किसी भी कक्षा के बच्चों को उनकी अपनी अवधारणाओं को बदलने के लिए यह आवश्यक है कि उनको कक्षा में अपनी समझ व्यक्त करने का अवसर दिया जाय। जब अध्यापक इनके समझ, विचार के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर ले तो उनके गलत अवधारणाओं को विभिन्न तथ्यों, तर्कों, उदाहरणों आदि के माध्यम से बदलने का प्रयास करना चाहिए।

83. एक बच्चा खिड़की के सामने से एक कौवे को उड़ता हुआ देखता है और कहता है, ''एक पक्षी''। इससे बच्चे के विचार के बारे क्या पता चलता है?

(a) बच्चे की स्मृतियां पहले से भंडारित होती हैं।
(b) बच्चे में 'पक्षी' का प्रत्यय विकसित हो चुका है।
(c) बच्चे ने अपने अनुभव बताने के लिए भाषा के कुछ उपकरणों का विकास कर लिया है।

(a) B और C (b) A, B और C
(c) केवल B (d) A और B

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (a) एक बच्चा खिड़की के सामने से एक कौवे को उड़ता हुआ देखता है और कहता है ''एक पक्षी''। इससे पता चलता है कि बच्चे में पक्षी के प्रत्यय का विकास हो चुका है और अपने अनुभव बताने के लिए वह कुछ उपकरणों का विकास कर लिया है।

84. प्रत्ययों का बनते रहना एक..... प्रक्रिया है–

(a) विषम (b) अनियमित
(c) सामयिक (d) संचयी

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (d) प्रत्ययों के बनते रहना एक संचयी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत अलग-अलग तथ्यों का संग्रह करके प्रत्ययों का निर्माण किया जाता है। संचयी का तात्पर्य इक्ट्ठा (संग्रह) करना होता है।

85. निम्नलिखित में से कौन मूर्तवाचक अवधारणा का उदाहरण नहीं है?

(a) योग्यता (b) कुर्सी
(c) बल (d) गति

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (a) योग्यता मूर्तवाचक (यांत्रिक) अवधारणा का उदाहरण न होकर अमूर्तवाचक अवधारणा का उदाहरण है। शेष कुर्सी, गति एवं बल प्रत्यक्ष (मूर्त) विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

86. संप्रत्यय निर्माण का प्रथम सोपान है–

(a) सामान्यीकरण (b) विभेदीकरण
(c) प्रत्यक्षीकरण (d) पृथक्करण

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) सम्प्रत्यय (संकल्पना) निर्माण के सोपान निम्न हैं-
प्रत्यक्षीकरण-विभेदीकरण-पृथक्करण-सामान्यीकरण
अतः सम्प्रत्यय निर्माण का प्रथम सोपान प्रत्यक्षीकरण होगा।

87. सिद्धान्त चित्र.....के द्वारा नवीन अवधारणाओं की समझ बढ़ाते हैं।

(a) विशिष्ट विवरण पर एकाग्रता केन्द्रित करने
(b) अध्ययन के लिए शैक्षणिक विषय-वस्तु की प्राथमिकता तय करने
(c) तर्कपूर्ण ढंग से सूचनाओं को व्यवस्थित करने की योग्यता को बढ़ाने
(d) विषय-क्षेत्रों के बीच ज्ञान के स्थानांतरण

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) उचित सिद्धांत चित्र के द्वारा किसी भी प्रकरण को आसानी से समझ व व्यवस्थित किया जा सकता है इसके अंतर्गत किसी भी अवधारणा को छोटी-छोटी उप-अवधारणाओं में बाँट दिया जाता है। जिसके द्वारा सूचना को व्यवस्थित व तर्क पूर्ण ढंग से समझाया जा सकता है।

88. अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से.....का हिस्सा है।

(a) शारीरिक विकास (b) सामाजिक विकास
(c) संवेगात्मक विकास (d) बौद्धिक विकास

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (d) अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से बौद्धिक विकास का हिस्सा है क्योंकि किसी भी अवधारणा को सोचने के लिए उसकी छवि मस्तिष्क में बनानी पड़ती है जिससे उसके बारे में सोचकर अपनी अवधारणा प्रकट की जा सके।

89. विद्यार्थियों में संप्रत्ययात्मक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी विधि सबसे प्रभावी है?

(a) पुराने प्रत्ययों से किसी संदर्भ के बिना नए प्रत्ययों को अपने आप समझा जाना चाहिए
(b) याद करने के लिए कहकर विद्यार्थियों के गलत विचारों को सही विचारों में बदलना
(c) विद्यार्थियों को बहुत-से उदाहरण देना और उन्हें तर्कशक्ति का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना
(d) जब तक विद्यार्थियों में वांछित संप्रत्ययात्मक परिवर्तन न हो जाए, तब तक दंड का उपयोग करना

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (c) संप्रत्यात्मक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए विद्यार्थियों को बहुत से उदाहरण देना और उन्हें तर्कशक्ति का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

90. अपने चिंतन में अवधारणात्मक परिवर्तन लाने हेतु शिक्षार्थियों को सक्षम बनाने के लिए शिक्षक को

(a) उन बच्चों को पुरस्कार देना चाहिए जिन्होंने अपने चिन्तन में परिवर्तन किया है
(b) बच्चों को स्वयं चिन्तन करने के लिए हतोत्साहित करना चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि वे शिक्षिका को सुनें और उसका अनुपालन करें
(c) व्याख्यान के रूप में व्याख्या प्रस्तुत करनी चाहिए
(d) स्पष्ट और आश्वस्त करने वाली व्याख्या देनी चाहिए तथा शिक्षार्थियों के साथ चर्चा करनी चाहिए।

DSSSB PRT

Ans : (d) अपने चिंतन में अवधाराणात्मक परिवर्तन लाने हेतु शिक्षार्थियों को सक्षम बनाने के लिए शिक्षक को स्पष्ट और आश्वस्त करने वाली व्याख्या देनी चाहिए तथा शिक्षार्थियों के साथ चर्चा करनी चाहिए और उन्हें स्वतंत्र रूप से चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करनी चाहिए।

91. ज्ञान के एक बड़े असम्बद्ध भाग को प्रस्तुत करना:

(a) अपने तरीके से जानकारी को व्यवस्थित करने में शिक्षार्थियों की सहायता करेगा।

(b) शिक्षिका के कार्य को कठिन और शिक्षार्थियों के कार्य को आसान बनाएगा।
(c) शिक्षार्थियों के लिए अवधारणात्मक समझ को प्राप्त करने को कठिन बनाएगा।
(d) शिक्षार्थियों के लिए प्रत्यास्मरण को आसान बनाएगा।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (c) ज्ञान के बड़े असम्बद्ध भाग को प्रस्तुत करने से छात्र को कठिनाई का अनुभव होगा जिससे उन्हें अपने अवधारणात्मक समझ के लिए कठिनाई महसूस होगी।

92. अनेक घटनाओं के बारे में बच्चों के द्वारा बनाए गए 'सहजानुभूत सिद्धांतों' के संदर्भ में एक शिक्षिका को क्या करना चाहिए?

(a) बार-बार याद करने के द्वारा एक सही सिद्धांत से 'बदल' देना चाहिए।
(b) प्रतिकूल प्रमाण एवं उदाहरणों को प्रस्तुत करके बच्चों के इन सिद्धांतों को चुनौती देनी चाहिए।
(c) बच्चों के इन सिद्धांतों को अनदेखा करना चाहिए।
(d) बच्चों को दंडित करना चाहिए।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) अनेक घटनाओं के बारे में बच्चों के द्वारा बनाये गये 'सहजानुभूत सिद्धांतों' के संदर्भ में एक शिक्षिका को प्रतिकूल प्रमाण एवं उदाहरणों को प्रस्तुत करके बच्चों के इन सिद्धांतों को चुनौती देनी चाहिए ताकि उनके पूर्व निर्मित गलत धारणाओं में परिवर्तन व परिमार्जन किया जा सके।

EXAM POINTS

- बुनियादी स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा देना बेहतर है, क्योंकि यह– **प्राकृतिक वातावरण में बच्चों को सीखने में सहायता करेगा**
- हिन्दी अक्षरों को बालक किस उम्र में पहचानने लगते हैं– **5 वर्ष की आयु में**
- भाषा शिक्षण की प्रथम कक्षा किसे माना जाता है– **घर को**
- दूसरे वर्ष के अन्त में शिशु का शब्द भण्डार होता है– **100 शब्द**
- भाषा में सबसे छोटी इकाई है– **स्वनिम**
- थ, फ, च ध्वनियाँ हैं– **स्वनिम**
- सांस्कृतिक तथा भाषिक रूप में वैविध्यपूर्ण कक्षा में यह निश्चित करने से पहले कि शिक्षार्थी विशिष्ट शिक्षा-वर्ग में आता है या नहीं, एक शिक्षक को करना चाहिए– **अक्षमता स्थापित करने से पहले शिक्षार्थी की मातृभाषा का मूल्यांकन करना चाहिए**
- संस्कृति पर शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ता है– **संस्कृति का परिष्करण, संस्कृति के हस्तान्तरण में सहायता करना, संस्कृति की निरन्तरता को बनाए रखना**
- एक बच्चा अपनी मातृभाषा सीख रहा है व दूसरा बच्चा वहीं भाषा द्वितीय भाषा के रूप में सीख रहा है। दोनों किस प्रकार की त्रुटि कर सकते हैं– **विकासात्मक**
- भाषा-अवबोधन से सम्बद्ध विकार है– **भाषाघात**
- भाषा-विकास के सन्दर्भ में कौन-सा क्षेत्र पियाजे के द्वारा कमतर आँका गया– **सामाजिक अन्तःक्रिया**
- भाषा विकास का सिद्धान्त नहीं है– **अतिरिक्त शक्ति का सिद्धान्त**
- आर्जव तर्क देता है कि भाषा विकास व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति से प्रभावित होता है जबकि सोनाली महसूस करती है कि यह परिवेश से प्रभावित होता है। आर्जव और सोनाली के बीच यह चर्चा किस विषय में है– **प्रकृति तथा पालन-पोषण पर वाद-विवाद**
- भारत में भाषिक विभिन्नता बहुत है। इस सन्दर्भ में विशेषकर कक्षा I और II के प्राथमिक स्तर पर बहुभाषिक कक्षाओं के बारे में सर्वथा उपयुक्त कथन है– **शिक्षक को सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए और सभी भाषाओं में अभिव्यक्ति के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए**
- बच्चे भाषा अर्जित करते हैं, क्योंकि उनमें आनुवंशिक रूप से ऐसा करने की पूर्व प्रवृत्ति होती है या उनके माता-पिता प्रारम्भिक अवस्था से ही उन्हें गहन रूप से सिखाते हैं? यह प्रश्न आवश्यक रूप से दर्शाता है– **प्रकृति और पोषण पर बहस**
- भाषा विकास के लिए प्रारम्भिक बचपन ..... काल है– **अति संवेदनशील**
- कक्षा एक में बच्चों में भाषा कौशल का विकास किस क्रम में होना चाहिए– **सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 दस्तावेज में भाषा के लिए निहित है– **तीन भाषा**
- भाषा विकास में सहयोग करने का गलत तरीका है– **उसकी अपनी भाषा के प्रयोग को अमान्य करना**
- एक कक्षा में बहुभाषी विद्यार्थी हैं; यह स्थिति उत्पन्न करती है– **सीखने के समृद्ध संसाधन**
- ''चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है'' चिन्तन की यह परिभाषा दी है– **रॉस**
- अपने चिन्तन में अवधारणात्मक परिवर्तन लाने हेतु शिक्षार्थियों को सक्षम बनाने के लिए शिक्षक को– **स्पष्ट और आश्वस्त करने वाली व्याख्या देनी चाहिए तथा शिक्षार्थियों के साथ चर्चा करनी चाहिए**
- भाषिक बुद्धि वाले व्यक्ति को दर्शाता है– **शब्दों के अर्थ, क्रम तथा भाषा के विविध प्रयोगों के प्रति संवेदनशीलता**
- भाषा और विचार के बारे में पियाजे और वाइगोट्स्की के दृष्टिकोण का सही वर्णन करता है– **वाइगोट्स्की के अनुसार भाषा से विचार जन्म लेता है और पियाजे के अनुसार भाषा का विचार पर प्रभाव नहीं पड़ता है**
- किस व्यवहारवादी का मानना है कि अन्य व्यवहारों की भाँति भाषा भी क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन द्वारा सीखी जाती है– **स्किनर**
- चिन्तन प्रारम्भ होने के लिए आवश्यक है– **समस्या**
- पियाजे के अनुसार, विकास को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है– **भौतिक विश्व के साथ अनुभव**
- भाषा– **हमारी विचार-प्रक्रिया को प्रभावित करती है**

12.

समाज निर्माण में लैंगिक मुद्दे

समाज निर्माण में लिंग (जेंडर) की भूमिका

1. बच्चे .....को छोड़कर अन्य सभी के द्वारा लिंग भूमिकाएँ ग्रहण करते हैं।

(a) मीडिया (b) समाजीकरण

(c) संस्कृति (d) ट्यूशन

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : बच्चे ट्यूशन को छोड़कर अन्य सभी के द्वारा लिंग भूमिकाएं ग्रहण करते हैं। लिंग भूमिकाएं, सामाजिक अंतःक्रिया द्वारा निर्मित होती है; जिसमें मीडिया समाजीकरण, संस्कृति, समुदाय, परिवार आदि सामाजिक अभिकरण सहायता प्रदान करते हैं।

2. ''पुरुष और महिला की भूमिकाओं का निर्धारण समाज करता है।'' यह कथन बताता है कि–

(a) लैंगिकता एक अंतर्निहित अवतरण है

(b) लैंगिकता एक आनुवंशिक प्रतिभा है

(c) लैंगिकता एक अंतर्ज्ञानी अवतरण है

(d) लैंगिकता एक सामाजिक अवतरण है

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : ''पुरुष और महिला की भूमिकाओं का निर्धारण समाज करता है।'' यह कथन बताता है कि लैंगिकता एक सामाजिक अवतरण है। अर्थात् लैंगिकता का निर्धारण समाज द्वारा किया जाता है। समाज की जैसी प्रकृति होती है समाज में लिंग भूमिकाएँ भी उसी प्रकार बनती हैं। जैसे–भारतवर्ष में पितृप्रधान समाज में पुरुषों को महिलाओं से ज्यादा अधिकार प्राप्त हैं, जबकि महिलाओं को हीन समझा जाता है।

3. जेंडर–

(a) एक मनोवैज्ञानिक सत्ता है।

(b) एक सामाजिक संरचना है।

(c) एक आर्थिक अवधारणा है।

(d) एक जैविक निर्धारक है।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (b) जेंडर या लैंगिकता एक सामाजिक संरचना है। समाज की संरचना पुरुष और स्त्रियों से मिलकर बनती है। ये परस्पर क्रिया और प्रतिक्रिया करके सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करते हैं। समाज की परम्परा के अनुसार प्रत्येक स्त्री पुरुष की निश्चित प्रस्थिति और भूमिकाएँ होती हैं। ये प्रस्थिति और भूमिकाएँ समाज की परम्परा के अनुसार लिंगभेद पर आधारित होती हैं तथा असमान होती हैं। इसीलिए इसे लैंगिक रूढ़िबद्धता से जोड़कर देखा जाता है जो किसी भी समाज की गतिहीनता को दर्शाता है।

4. कक्षा–कक्ष में शिक्षक और विद्यार्थी किस प्रकार जेंडर को ..... करते हैं, यह सीखने के वातावरण

(a) परिभाषित, को कम प्रभावी बनाता है

(b) व्याख्यायित, पर कोई प्रभाव नहीं डालता

(c) निर्मित, पर प्रभाव डालता है

(d) रूपांतरित, को क्षुब्ध करता है

DSSSB PRT

C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) कक्षा–कक्ष में शिक्षक और विद्यार्थी किस प्रकार जेंडर को निर्मित करते हैं, यह सीखने के वातावरण को प्रभावित करता है। यदि कक्षा–कक्ष का वातावरण लिंग विभेद से मुक्त रहता है तो अधिगम प्रक्रिया में कोई दोष नहीं आता और अधिगम सुचारू रूप से चलता है।

5. सामाजिक भूमिकाओं के कारण न कि जीववैज्ञानिक संपत्ति के कारण सौंपी गई विशिष्टताएं..... कहलाती हैं?

(a) जेंडर भूमिका अभिवृत्ति (b) जेंडर भूमिका दबाव

(c) जेंडर भूमिका रूढ़िबद्धता (d) जेंडर भूमिका नैदानिकी

DSSSB PRT

C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (c) जेंडर भूमिका रूढ़िबद्धता सामाजिक भूमिकाओं के द्वारा प्रदान की गयी विशिष्टताएँ हैं न कि जीववैज्ञानिक सम्पत्ति के कारण सौंपी गयी विशिष्टताएँ हैं। मनुष्य जेंडर रूढ़िबद्ध व्यवहार समाज से सीखता है।

6. बालिका शिक्षा को महत्ता देना उचित है, क्योंकि

(a) बालिकाएँ बालकों से अधिक बुद्धिमती होती है

(b) बालिकाएँ बालकों से अल्पसंख्यक होती है

(c) अतीत में बालिकाओं को बुरी तरह से विभेदित किया जाता है

(d) किसी सामाजिक परिवर्तन के नेतृत्व में केवल बालिकाएँ ही समर्थ होती है

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) किसी सामाजिक परिवर्तन के नेतृत्व में बालिकाओं की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए बालिका शिक्षा को महत्ता देना उचित है तथा साथ ही इससे लैंगिक भेद-भाव में कमी आती है।

7. व्यक्तियों में _____ उत्पन्न भिन्नताओं को लिंग (जेंडर) संदर्भित करता है।

(a) शैक्षिक रूप से (b) भावनात्मक रूप से

(c) जैविक रूप से (d) सामाजिक रूप से

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) व्यक्तियों में सामाजिक रूप से उत्पन्न भिन्नताओं को लिंग (जेंडर) संदर्भित करता है। दूसरे शब्दों में, लैंगिकता (जेंडर) या लिंग सामाजिक संरचना है जो समाज की आवश्यकताओं, मूल्यों, परम्पराओं आदि द्वारा सृजित की जाती है जबकि लिंग (सेक्स) एक जैविक संरचना होती है।

8. निम्नलिखित में से कौन-सा सामाजिक आर्थिक स्थिति से प्रभावित नहीं होता है?

(a) पड़ोस की पसंद (b) स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता
(c) लिंग (d) पोषण

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) लिंग (Gender) सामाजिक–आर्थिक स्थिति से प्रभावित नहीं होता है। जेंडर व्यवहारों का एक समुच्चय है, जो कि पुरुषों और महिलाओं के लिए समाज द्वारा निर्धारित किया जाता है। हर समाज अपने लिए अपनी जेंडर सम्बन्धी भूमिकाएँ तय करता है।

लैंगिक भेदभाव

9. अनेक शोध अध्ययनों से पता चलता है कि शिक्षक लड़कियों की अपेक्षा लड़कों से अधिक पारस्परिक क्रिया करते हैं। इसका सही विवेचन क्या है?

(a) लड़कियों की तुलना में लड़कों को अधिक अवधान की आवश्यकता होती है।
(b) यह शिक्षण में लिंग पक्षपात का एक उदाहरण है।
(c) कक्षा में लड़कियों की तुलना में लड़कों को अधिक आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।
(d) लड़कियों की तुलना में लड़कों में शैक्षिक क्षमताएँ काफी अधिक होती हैं।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (b) : अनेक शोध अध्ययनों से पता चलता है कि शिक्षक लड़कियों की अपेक्षा लड़कों से अधिक पारस्परिक क्रिया करते हैं। यह शिक्षण में लिंग पक्षपात का एक उदाहरण है। एक शिक्षक को किसी लिंग विशेष के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवहार करने से बचना चाहिए तथा उसे पारम्परिक लैंगिक भूमिकाओं से ऊपर उठकर शिक्षण व्यवहार करना चाहिए।

10. कक्षा में परिचर्चा के दौरान एक शिक्षक प्रायः लड़कियों की तुलना में लड़कों पर अधिक ध्यान देता है। यह किसका उदाहरण है?

(a) जेंडर संबद्धता (b) जेंडर समरूपता
(c) जेंडर पक्षपात (d) जेंडर पहचान

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (c) यदि कक्षा में परिचर्चा के दौरान एक शिक्षक प्रायः लड़कियों की तुलना में लड़कों पर अधिक ध्यान देता है तो यह जेंडर पक्षपात का उदाहरण है। कक्षा में जब शिक्षक लिंग विशेष को ध्यान में रखकर व्यवहार करता है तो इसे लैंगिक पक्षपात कहा जाता है। अतः एक अच्छे शिक्षक को कक्षा में लैंगिक पक्षपात नहीं करना चाहिए।

11. एक अच्छा विद्यालय निम्न में से किससे बचता है?

(a) सामाजिक जिम्मेदारी से (b) लैंगिक समानता से
(c) लैंगिक पक्षपात से (d) लैंगिक संवेदनशीलता से

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) विद्यालय वह स्थान है जहाँ पर बिना किसी भेदभाव के शिक्षा दी जाती है। विद्यालय मुख्यतः सामाजिकता से जुड़े हैं। अच्छे विद्यालय के निम्न गुण होते हैं-

- सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करना
- सामाजिक रुप से बालकों में पक्षपात न करना
- लैंगिक समानता को अपनाना
- लैंगिक संवेदनशीलता को बनाए रखना

विद्यालय लैंगिक पक्षता जैसे नकारात्मक व्यवहार को नहीं अपनाता है।

12. लिंग भेद है–

(a) शारीरिक संरचना (b) सहज गुण
(c) सामाजिक संरचना (d) जैविक सत्ता

DSSSB PRT, C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) शिक्षा में लिंग भेद सामाजिक संरचना माना जाता है। किन्तु वर्तमान में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है और एक नया स्वरूप स्वीकार किया गया है जिसे समावेशी शिक्षा कहा गया है। इस प्रकार की शिक्षा में लिंग भेद या शारीरिक अक्षमता को दरकिनार कर सभी के लिए उनकी आवश्यकतानुरूप शिक्षा की बात शामिल की गयी है।

13. लिंग (जेण्डर) पक्षपात ..... की ओर संकेत करता है।

(a) आनुवंशिक विभिन्नताएँ जो लड़कों और लड़कियों में मौजूद हैं
(b) स्त्रियोचित और पुरुषोचित विशेषताओं में सापेक्षिक रूप से स्वयं का बोध
(c) अपने शरीर–विज्ञान के कारण लड़कों और लड़कियों के बीच विभिन्नताओं की स्वीकृति
(d) सांस्कृतिक अभिवृत्तियों के कारण अपेक्षाओं पर आधारित लड़कों और लड़कियों से भिन्न व्यवहार करना

DSSSB PRT
C TET 2014 (I-V)
C TET (VI-VIII) 2015

Ans : (d) लिंग पक्षपात या लिंग रूढ़िबद्धता, सांस्कृतिक अभिवृत्तियों के कारण अपेक्षाओं पर आधारित लड़कों और लड़कियों से भिन्न व्यवहार की ओर संकेत करता है।

14. जब एक शिक्षक यह समझता है कि स्वाभाविक रूप से लड़के गणित में लड़कियों से अच्छे हैं, यह दर्शाता है कि अध्यापक है

(a) लिंग (जेण्डर) पक्षपाती (b) शिक्षाप्रद
(c) सही दृष्टिकोण वाला (d) नीतिपरक

DSSSB PRT
C TET 2015 (I-V)

Ans : (a) जब एक शिक्षक यह समझता है कि स्वाभाविक रूप से लड़के गणित में लड़कियों से अच्छे हैं तो यह लिंग रूढ़िबद्धता या पक्षपात को दर्शाता है। इस प्रकार के पूर्वाग्रह से ग्रसित अध्यापक एक लिंग-विशेष को महत्त्व देते हैं जो प्रगतिशील समाज के लिए अच्छा नहीं है।

15. विद्यालय में लिंग–भेदभाव से बचने का सर्वोत्तम तरीका हो सकता है

(a) पुरुष एवं महिला शिक्षकों को समान संख्या में भर्ती करना
(b) विद्यालय में लिंग–भेदभाव को दूर करने के लिए नियम बनाना और सख्ती से उसका पालन करवाना
(c) संगीत प्रतियोगिता के लिए लड़कियों की अपेक्षा अधिक लड़कों का चयन करना
(d) शिक्षकों द्वारा उनके लिंग–पक्षपातपूर्ण व्यवहारों का अधिसंज्ञान

DSSSB PRT, C TET 2012 (I-V)

Ans : (d) विद्यालय में लिंग–भेदभाव से बचने के लिए सर्वप्रथम शिक्षकों को लिंग–पक्षपातपूर्ण व्यवहारों का अधिसंज्ञान होना चाहिए, उसके प्रभावों के बारे में पता होना चाहिए तथा ऐसे कार्य या कथनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए जिससे लिंग विशेष के साथ पक्षपात् हो।

16. निम्न में से कौन-सी व्यूह रचना/अभिलक्षण लैंगिक अन्तरों को मद्देनजर रखते हुए लैंगिक समता की भावना के विपरीत है?

(a) विद्यार्थियों को बतायें कि रूढ़िबद्ध विषयों में सफलता हासिल कर सकते है
(b) प्रारम्भिक विद्यालयी वर्षों में लड़के एवं लड़कियों में शारीरिक एवं गामक कौशलों के विकास की सम्भाव्य क्षमता समान होती है
(c) लड़कों की समस्याओं के समाधान और विश्व पर नियंत्रण रखने के लिये उनकी योग्यता पर उनको आत्मविश्वास विकसित करने के लिये सहयोग प्रदान करें
(d) लड़के एवं लड़कियों दोनों के कम आक्रामक एवं एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करने के सम्मत सामाजिक तरीकों को सिखाया जाये।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) लैंगिक समता का तात्पर्य लिंग के आधार पर स्त्री-पुरुष में किसी प्रकार का पक्षपातपूर्ण व्यवहार न करना। स्त्री-पुरुष में पक्षपात पूर्ण व्यवहार लैंगिक समता की भावना के विपरीत होती है। लैंगिक समता में किसी भी पक्ष का वर्चस्व दूसरे पक्ष पर नहीं करते हैं।

17. एक व्यक्ति के लिंग के आधार पर, उस व्यक्ति के खिलाफ पूर्वाग्रह (पक्षपात)_____ होता है।

(a) लैंगिक रूढ़िबद्धता (जेंडर स्टीरियोटाइप)
(b) लैंगिक भेदभाव (जेंडर बाइअस)
(c) लैंगिक पहचान (जेंडर आईडेंडिटी)
(d) लैंगिक मुद्दा (जेंडर मुद्दा)

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : एक व्यक्ति के साथ लिंग के आधार पर उसके खिलाफ किया जाने वाला पूर्वाग्रह (पक्षपात) लैंगिक भेदभाव होता है। प्रायः सभी समाजों में पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग पोशाकें, भूमिकाएँ एवं जिम्मेदारियाँ दी जाती है। यह विभाजन परिवार और समाज में उनके समाजीकरण को निर्धारित करता है। चूँकि पुरुषों को पैसा कमाने, धन जुटाने की भूमिका दी जाती है अतः उनकी प्रधान भूमिका हो जाती है जबकि महिलाओं को घरेलू कार्यों के लिए भूमिकाएँ दी जाती हैं इसलिए उनकी भूमिका अधीनस्थ की होती हैं। यह मानसिकता परिवारों में पुरुषों और महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण रवैये का कारण बनने लगता है जो समाज के प्रत्येक स्तर पर देखने को मिलता है।

18. नकारात्मक दृष्टिकोणों का वर्णन करने के लिए किस पद का उपयोग किया जाता है, जिसे लोग उनके लिंग के आधार पर किसी व्यक्ति के लिए करते हैं?

(a) पितृसत्ता (b) जातिगत भूमिकाएँ
(c) लिंगभेद (d) समाजीकरण

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) नकारात्मक दृष्टिकोणों का वर्णन करने के लिए लिंगभेद का उपयोग किया जाता है जिसे लोग लिंग के आधार पर किसी व्यक्ति के लिए करते हैं। किसी व्यक्ति के साथ लिंग के आधार पर पूर्वाग्रह या भेदभाव लिंगभेद है। यह एक नकारात्मक दृष्टिकोण हैं जो सामाजिक या सांस्कृतिक रीति–रिवाजों और मानदंडों से उत्पन्न हो सकता है।

व्यक्तित्व के विषय में लैंगिक भेद

19. एक उभयलिंगी व्यक्तित्व–

(a) स्त्री लक्षणों वाले पुरुषों को संदर्भित करता है
(b) में आमतौर पर माने गए मर्दाना और स्त्री गुणों का समायोजन होता है
(c) में दृढ़ और अहंकारी होने की आदत है
(d) समाज में प्रचलित रुढ़िवादी लिंग भूमिकाओं का पालन करता है।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : एक उभयलिंगी व्यक्तित्व में आमतौर पर माने गये मर्दाना और स्त्री गुणों का समायोजन होता है। लंदन की ह्वाइट हैड इंस्टीट्यूट और वहीं की एक अन्य इम्पीरियल कैंसर रिसर्च एण्ड लेबोरेटरी ने अपने शोधों के आधार पर बताया है कि एक शरीर में दो भिन्न लिंगों का, उनके बाह्य लक्षणों का साथ-साथ विद्यमान होना शक्य है। इनमें दोनों लक्षण अपना संतुलन समीकरण बराबर भी रख सकते हैं अथवा किसी एक गुण को अधिक प्रभावी रूप से प्रदर्शित भी कर सकते हैं।

20. निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) लड़के अधिक बुद्धिमान होते है

(b) लड़कियाँ अधिक बुद्धिमान होती है

(c) बुद्धि का लिंग के साथ सम्बन्ध नहीं है

(d) सामान्यतः लड़के लड़कियों से अधिक बुद्धिमान होते है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (c) बुद्धि व्यक्ति की जन्मजात शक्ति होती है और उसकी सब मानसिक योग्यताओं का योग एवं अभिन्न अंग है। बुद्धि से समायोजन की शक्ति, समझने की शक्ति का विकास होता है। इस प्रकार बुद्धि का विकास लिंग के आधार पर नहीं होता अतः बुद्धि का लिंग के साथ सम्बंध नहीं होता है।

21. सहयोगात्मक रणनीति की किस श्रेणी में महिलाएँ निम्न से सम्बन्धित नहीं होती?

(a) स्वीकार्यता (b) प्रतिरोध

(c) क्रान्ति (d) अनुकूलन

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) सहयोगात्मक रणनीति में महिलाएं क्रांति की प्रवृत्ति नहीं रखती है।

लैंगिक पूर्वाग्रह एवं शैक्षणिक व्यवहार

22. समाचार–पत्रों से कहानियों एवं कतरनों का चयन करना एवं प्रस्तुत करना जो पुरुष एवं महिलाओं दोनों को गैर–परम्परागत भूमिकाओं में चित्रित करते हैं, निम्नलिखित में से किसके लिए एक प्रभावी रणनीति है?

(a) लैंगिक/जेंडर स्थिरता को बढ़ाने के लिए

(b) रूढ़िवादी लैंगिक/जेंडर भूमिकाओं को प्रोत्साहन देने के लिए

(c) लैंगिक/जेंडर रूढ़ियों का सामना करने के लिए।

(d) लैंगिक जेंडर पक्षपात को बढ़ाने के लिए।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : समाचार पत्रों से कहानियों एवं कतरनों का चयन करना एवं प्रस्तुत करना जो पुरुष एवं महिलाओं दोनों को गैर परम्परागत् भूमिकाओं में चित्रित करते हैं। यह लैंगिक/जेंडर रूढ़ियों का सामना करने के लिए प्रभावी रणनीति है। परम्परागत रूप में लिंग विशेष (पुरूष या स्त्री) को किसी कार्य या भूमिका से संबंधित करके देखा जाता है। जैसे–घर का कार्य करने के लिए महिलाएँ एवं ऑफिस का कार्य करने के लिए पुरूषों को प्रतिरूपित करना। यह लैंगिक रूढ़िवादिता को दर्शाता है। लैंगिक रूढ़िवादिता जैसे सामाजिक दोषों पर शिक्षण करते समय शिक्षक को पुरूषों और महिलाओं दोनों के गैर परम्परागत भूमिकाओं पर ध्यान आकर्षित करना चाहिए। उदाहरण के लिए महिलाओं को घरेलू कार्यों के अतिरिक्त ऑफिस कार्य, डॉक्टर, इंजीनियर, पॉयलट आदि की भूमिकाओं में दिखाना या बताना चाहिए।

23. खिलौने, पहनावे की वस्तुएँ, घरेलू सामग्रियाँ, व्यवसायों एवं रंगों को विशिष्ट लिंग के साथ संबंधित करना क्या प्रदर्शित करता है?

(a) जेंडर रूढ़िवादिता (b) जेंडर सिद्धांत

(c) जेंडर प्रासंगिकता (d) विकसित जेंडर पहचान

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (a) खिलौने, पहनावे की वस्तुएँ, घरेलू सामग्रियाँ, व्यवसायों एवं रंगों की विशिष्ट लिंग के साथ सम्बन्धित करना जेंडर रूढ़िवादिता को प्रदर्शित करता है। लैंगिक रूढ़िवादिता में किसी लिंग विशेष को कार्य विशेष से या किसी खास भूमिका से जोड़कर देखा जाता है। लैंगिक रूढ़िवादिता समाज को गतिहीन व रूग्णता की दिशा में ले जाता है।

24. बच्चों में जेंडर रूढ़िवादिता एवं जेंडर-भूमिका अनुरुपता को कम करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी पद्धति प्रभावशाली है?

(a) जेंडर- पृथक खेल समूह बनाना।

(b) जेंडर-पृथक बैठने की व्यवस्था करना।

(c) जेंडर–पक्षपात के बारे में परिचर्चा करना।

(d) जेंडर-विशिष्ट भूमिकाओं को महत्त्व देना।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (c) बच्चों में जेंडर रूढ़िवादिता एवं जेंडर-भूमिका अनुरूपता को कम करने के लिए जेंडर-पक्षपात के बारे में परिचर्चा करना सबसे प्रभावशाली तरीका हो सकता है। जब छात्र किसी विषय-वस्तु पर परिचर्चा करते हैं तो उसमें निहित अवधारणाओं को अच्छी तरह समझते हैं तथा उस पर चिंतन करते हैं इससे उनकी अवधारणाएँ स्पष्ट हो जाती हैं।

25. समाज में विभिन्न लिंगों के लिए उपयुक्त मानी जाने वाली प्रारूपिक विशेषताओं के बारे में जन सामान्य की अवधारणाओं को क्या कहते हैं ?

(a) जेंडर भूमिकाएँ (b) जेंडर पहचान

(c) जेंडर रूढ़िवादिताएँ (d) जेंडर विभेदीकरण

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) समाज में विभिन्न लिंगों के लिए उपयुक्त मानी जाने वाली प्रारूपिक विशेषताओं के बारे में जन सामान्य की अवधारणाओं को जेंडर रूढ़िवादिताएँ कहते हैं। प्रत्येक समाज में पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग पोशाकें, भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ निर्धारित हैं। भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का यह विभाजन परिवार और समाज में उनके समाजीकरण को निर्धारित करता है तथा यही पुरुषों और महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण रवैये या लिंग रूढ़िवादिता का कारण बनता है।

26. हाल ही में पाठ्यचर्या में ऐसी कहानियों को शामिल करने के लिए विवेकशील प्रयास किया गया है जिसमें पिता घर के कार्यों में लगा रहता है और माता साहसी गतिविधियों को करती है। यह कदम किसलिए महत्त्वपूर्ण है?

(a) यह जेंडर रूढ़िवादिता को समाप्त करता है।

(b) यह जेंडर स्थिरता को प्रोत्साहित करता है।

(c) यह जेंडर विभेदीकरण को बढ़ाता है।

(d) यह जेंडर पक्षपात को सशक्त बनाता है।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (a) हाल ही में पाठ्यचर्या में ऐसी कहानियों को शामिल करने के लिए विवेकशील प्रयास किया गया है, जिसमें पिता घर के कार्यों में लगा रहता है और माता साहसी गतिविधियों को करती है। यह कदम जेंडर रूढ़िवादिता को समाप्त करता है। आम तौर पर पाठ्य-पुस्तकों में पुरुषों को घर का मुखिया, मालिक, संपत्ति की देखभाल करने वाला और साहसिक कार्यों में संलग्न माना जाता है जबकि महिलाओं को घर सम्भालने, बच्चों और बड़े-बूढ़ों की देखभाल करने तथा घरेलू कार्यों में संलग्न माना जाता है। यह प्रायः लैंगिक रूढ़िवादिता का कारण बनता है जो एक प्रगतिशील समाज में अभिशाप है।

27. विज्ञान के प्रयोगों में, सामान्यतः लड़के उपकरणों का नियंत्रण अपने हाथों में लेते हैं और लड़कियों से आंकड़ों को रिकॉर्ड करने अथवा बर्तनों को धोने के लिए कहते हैं। यह प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि

(a) लड़के उपकरणों को ज्यादा कुशलता से संभाल सकते हैं, लेकिन वे इस प्रकार के कार्यों को करने में प्राकृतिक रूप से सक्षम होते हैं

(b) लड़कियाँ नाजुक होने के कारण ऐसे काम करना पसंद करती हैं जिनमें ऊर्जा की खपत कम होती है

(c) लड़कियाँ बेहतरीन अवलोकनकर्ता होती हैं ओर बिना किसी गलती के आँकड़ों का रिकार्ड रखती हैं

(d) पुरुष और स्त्री की रूढ़िबद्ध भूमिकाएं विद्यालय में भी होती हैं

DSSSB PRT, C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (d) जब किसी कार्य के लिए पुरुष या महिला विशेष को अतार्किक ढंग से अधिकृत कर दिया जाता है तो इसे लिंग रूढ़िबद्धता कहा जाता है। यह सामान्यतः विद्यालयों, संस्थाओं, कार्यशालाओं या प्रयोगशालाओं में देखने को मिल जाता है, जो अनुचित व असामाजिक है।

28. मोनिका, जो गणित की शिक्षिका है, राधिका से एक प्रश्न पूछती है। राधिका से कोई उत्तर न मिलने पर वह तुरन्त मोहन से दूसरा प्रश्न पूछती है। जब उसे महसूस होता है कि मोहन उत्तर बताने में संघर्ष कर रहा है तो वह अपने प्रश्न के शब्दों को बदलती है। मोनिका की यह प्रवृत्ति यह प्रदर्शित करती है कि वह

(a) अपने सवाल के प्रति थोड़ा घबरा गई है

(b) मोहन का पक्ष लेकर लिंग भूमिकाओं में रूढ़िबद्धता को बढ़ावा दे रही है

(c) राधिका को किसी उलझनपूर्ण स्थिति में नहीं डालना चाह रही

(d) इस तथ्य से पूर्णतः परिचित है कि राधिका सवालों के जवाब देने के योग्य नहीं है

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (b) प्रश्न पूछना भी शिक्षक या शिक्षिका का एक विशेष प्रकार का कौशल होता है किन्तु जब प्रश्न की प्रकृति, मात्रा या शब्दों में हेर-फेर किसी लिंग विशेष को ध्यान में रखकर किया जाता है तो यह शिक्षक/शिक्षिका की लिंग रूढ़िबद्धता में विश्वास को दर्शाता है जो सर्वथा अनुचित है। अध्यापक को ऐसे व्यवहारों से बचना चाहिए।

29. एक सह-शिक्षा में लड़कों से शिक्षक यह कहता है, ''लड़के बनो और लड़कियों जैसा व्यवहार मत करो।'' यह टिप्पणी

(a) जातीय भेद-भाव का परिचायक है

(b) लड़के-लड़कियों के साथ व्यवहार का एक अच्छा उदाहरण है

(c) लड़के-लड़कियों में भेद-भाव की रूढ़िबद्ध धारणा प्रकट करता है

(d) लड़कियों पर लड़कों की जीव वैज्ञानिक महत्ता को उजागर करता है

DSSSB PRT, C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) एक सह शिक्षा में लड़कों से शिक्षक यह कहता है, ''लड़के बनो और लड़कियों जैसा व्यवहार मत करो'' यह वाक्य लड़के-लड़कियों में भेद-भाव की रूढ़िबद्ध धारणा प्रकट करता है। इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग शिक्षा में नहीं होना चाहिए जो किसी लिंग विशेष के प्रति पक्षपातपूर्ण हो।

30. विद्यालय-यात्रा पर जाने के लिए पोती को अपने पिता से बहस करते हुए देखकर दादी कहती है, ''तुम अच्छी लड़की की तरह आज्ञाकारी क्यों नहीं हो? तुम लड़कों की तरह व्यवहार करोगी, तो तुम से कौन शादी करेगा?'' यह कथन निम्नलिखित में से किसको प्रतिबिम्बित करता है?

(a) लड़कियों और लड़कों के स्वाभाव के बारे में रूढ़िबद्ध धारणा

(b) लिंग समरूपता

(c) लड़की के लिंग की गलत पहचान

(d) बच्चों के पालन-पोषण में परिवार की कठिनाइयाँ

DSSSB PRT, C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (a) किसी लड़की के विषय में यह कहना कि ''तुम अच्छी लड़की की तरह आज्ञाकारी क्यों नही हो? तुम लड़कों की तरह व्यवहार करोगी, तो तुमसे कौन शादी करेगा।'' यह लड़कों और लड़कियों के स्वभाव के बारे में रूढ़िबद्ध धारणा को दर्शाता है। ऐसे वाक्य या व्यवहार लड़कियों को हतोत्साहित करते हैं।

31. एक अच्छी पाठ्य–पुस्तक ..... से बचाती है।

(a) लैंगिक समानता (b) सामाजिक उत्तरदायित्व

(c) लैंगिक पूर्वाग्रह (d) लैंगिक संवेदनशीलता

DSSSB PRT, C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) एक अच्छी पाठ्य–पुस्तक लैंगिक पूर्वाग्रह से बचाती है। उदाहरण के लिए किसी पाठ्य–पुस्तक में 'छात्र' या 'छात्राओं' जैसे शब्द लिखने के बजाय 'विद्यार्थी' शब्द का उपयोग अधिक उपयुक्त माना जाता है।

32. राज्य स्तर की एक एकल–गायन प्रतियोगिता के लिए विद्यार्थियों को तैयार करते समय एक विद्यालय लड़कियों को वरीयता देता है। यह दर्शाता है–

(a) प्रगतिशील (b) वैश्विक प्रवृत्तियां

(c) प्रयोजनात्मक उपगाम (d) लैंगिक पूर्वाग्रह

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)
UK TET 2014 (I-V)

Ans : (d) लैंगिक–पूर्वाग्रह का अर्थ है किसी विशेष लिंग (पुरुष/महिला) के प्रति विशेष व्यवहार प्रदर्शित करना। अतः जब विद्यालय में एकल गायन प्रतियोगिता के लिए लड़कियों को वरीयता दी जाती है तो इसका अर्थ है कि विद्यालय लैंगिक पूर्वाग्रह से ग्रसित है।

33. निम्नलिखित में से कौन–सा समाज लिंग समानता का मानदण्ड हो सकता है?

(a) विद्यालय में पुरुष और महिला शिक्षकों की संख्या की तुलना

(b) कक्षा 12 में लड़कों और लड़कियों द्वारा समान संख्या प्राप्त विशिष्ट योग्यता

(c) कक्षा 12 तक पहुँचने वाले लड़कों और लड़कियों की संख्या की तुलना

(d) क्या छात्राओं को विद्यालय से बाहर आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने की अनुमति दी जाती है?

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2014

Ans : (c) किसी समाज का लिंग समानता का मानदण्ड वह हो सकता है कि कितना छात्रों और छात्राओं या लड़कों और लड़कियों को अपनी योग्यता एंव क्षमता के अनुसार प्रगति का समान अवसर प्राप्त है। यह ज्ञात करने के लिए कक्षा 12 तक पहुँचने वाले लड़कों और लड़कियों की तुलना की जा सकती है।

34. छात्राएँ

(a) गणित के सवाल अच्छे से सीखती है लेकिन उन्हें तब कठिनाई आती है जब उनसे उनके तर्क के बारे में पूछा जाता है

(b) अपनी आयु के लड़कों की तरह गणित में अच्छी हैं

(c) अपनी आयु के लड़कों की तुलना में स्थानिक अवधारणाओं में कम कुशलतापूर्ण निष्पादन करती है

(d) भाषिक और संगीत सम्बन्धी अधिक क्षमताएँ रखती हैं

DSSSB PRT, C TET 2014 (I-V)

Ans : (b) छात्र एवं छात्राओं में जन्म के समय से कोई भेद नहीं होता है। यह भेद समाज द्वारा उनकी योग्यता व क्षमता के आकलन में किया जाता है जो अनुचित है। अतः उपयुक्त परिस्थिति मिले तो लड़कियाँ भी अपने उम्र के लड़कों के समान ही गणित या विज्ञान में अच्छा प्रदर्शन कर सकती हैं।

35. लड़कों एवं लड़कियों के विषय में कुछ कथन नीचे दिए गए हैं। आपके अनुसार इनमें से कौन–सा सही है?

(a) लड़कों को घर के बाहर कार्यों में सहायता करनी चाहिए

(b) लड़कों को घर के कार्यों में सहायता करनी चाहिए

(c) सभी लड़कों को विज्ञान तथा लड़कियों को गृह विज्ञान पढ़ाया जाना चाहिए

(d) लड़कियों को घर के कार्यों में सहायता करनी चाहिए

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (b) ऐसा सामान्यतः देखा जाता है कि लड़कों को घर के कार्यों से छूट दे दी जाती है ताकि वे अपना पूरा ध्यान पढ़ने में लगाये जबकि लड़कियों को घर के कार्यों में सहायता करने के लिए कहा जाता है। यह लिंग रूढ़िगत मानसिकता को दर्शाता है। इसलिए लड़कों से भी घर के कार्यों में सहायता लेनी चाहिए तथा लड़कियों को भी अनावश्यक घर के कार्यों में सहायता नही लेनी चाहिए।

36. कक्षा VIII की एक पाठ्य–पुस्तक में इस प्रकार के चित्र हैं– शिक्षिका एवं घरेलू काम करने वाली के रूप में महिला, जबकि डॉक्टर एवं पायलट के रूप में पुरुष। इस प्रकार के चित्रण से बढ़ सकती/सकता है

(a) लिंग भूमिका–निर्वाह खेल (b) लिंग स्थिरता

(c) लिंग सशक्तीकरण (d) लिंग रूढ़िबद्धता

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (d) यदि शिक्षिका एवं घरेलू काम करने वाली के रूप में महिला, जबकि डॉक्टर एवं पायलट के रूप में पुरुष को किसी चित्रण में दिखाया जाता है तो यह लिंग रूढ़िबद्धता को प्रदर्शित करता है, जिसके अनुसार किसी लिंग विशेष को कोई खास भूमिका निर्वाह के लिए ही प्रोत्साहित किया जाता है।

37. ''प्रायः लड़कियाँ गणित में कमजोर होती हैं,'' यह–

(a) अनुसंधान आधारित धारणा है।

(b) लैंगिक पूर्वाग्रह पर आधारित धारणा है।

(c) सत्य धारणा है।

(d) उपरोक्त सभी

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (b) लैंगिक पूर्वाग्रह का अर्थ, किसी लिंग विशेष (पुरुष या महिला) के प्रति एक निश्चित सोच बना लेना है। उदाहरण के लिए ''प्रायः लड़कियाँ गणित में कमजोर होती है'' उक्ति लैंगिक–पूर्वाग्रह से ग्रसित है।

38. 'पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते हैं।' यह कथन –

(a) लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है
(b) बुद्धि के भिन्न पक्षों के लिए सही है
(c) सही है
(d) सही हो सकता है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (a) किन्हीं दो वर्गों में विभेद करना लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है। अतः यह कहना कि 'पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते हैं', लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है।

39. कक्षा में जेंडर रूढ़िबद्धता से बचने के लिए एक शिक्षक को

(a) लड़कों को जोखिम उठाने और निर्भीक बनने के लिए प्रोत्साहित करना।
(b) लकड़े-लड़कियों को एक साथ अ-पारंपरिक भूमिकाओं में रखना चाहिए।
(c) 'अच्छी लड़की' 'अच्छा लड़का' कहकर शिक्षार्थियों के अच्छे कार्य की सराहना करनी चाहिए।
(d) कुश्ती में भाग लेने के लिए लड़कियों को निरूत्साहित करना।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (b) कक्षा में शिक्षक को जेंडर रूढ़िबद्धता से बचने के लिए सदैव लड़के व लड़कियों को एक साथ अ-पारम्परिक भूमिकाओं में रखना चाहिए। कभी भी शिक्षक को कक्षा में लड़के व लड़कियों में किसी भी भूमिका पर भेद-भाव नहीं करना चाहिए।

40. अध्यापिका ने एक कमेटी के प्रधान को 'सभापति' के स्थान पर 'सभाध्यक्ष' लिखा। यह संकेत करता है कि अध्यापिका

(a) एक अधिक उपयुक्त पारिभाषिक शब्द का पालन करती है
(b) भाषा पर अच्छा अधिकार रखती है
(c) एक लिंग –मुक्त भाषा का प्रयोग कर रही है
(d) लिंग पूर्वाग्रह से ग्रस्त है

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (c) सभापति एक पुलिंग शब्द है जबकि सभाध्यक्ष एक सामान्य शब्द है जिसके अन्तर्गत पुलिंग या स्त्रीलिंग दोनों आते हैं। अतः अध्यापिका ने एक लिंग मुक्त भाषा का प्रयोग किया।

41. एक पाठ्यपुस्तक ने लड़को को बुद्धिमान और प्रमुख पात्र, जबकि लड़कियों को नम्र और भावनात्मक रूप में चित्रित किया। यह.....का उदाहरण है।

(a) लिंग रूढ़िवादिता (b) लिंग भेद
(c) लिंग समरूपता (d) लिंग संवेदनशीलता

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : यदि एक पाठ्यपुस्तक ने लड़कों को बुद्धिमान और प्रमुख पात्र, जबकि लड़कियों को नम्र और भावनाात्मक रूप से चित्रित किया है, तो यह कथन लिंगरूढ़िवादिता का उदाहरण है। समाज की संरचना पुरुष और स्त्रियों से मिलकर बनती है। ये परस्पर क्रिया और प्रतिक्रिया करके सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करते हैं। समाज की परम्परा के अनुसार प्रत्येक स्त्री और पुरुष की निश्चित भूमिकाएँ समाज के परम्परा के अनुसार लिंगभेद पर आधारित होती हैं तथा असमान होती हैं। इसीलिए इसे लैंगिक रूढ़िवादिता से जोड़कर देखा जाता है, जो किसी समाज के गतिहीनता की दर्शाता है।

पूर्वाग्रह एवं भेदभाव

42. आपकी कक्षा के एक विद्यार्थी को विभिन्न स्त्रोतों से बार-बार यह बताया गया है कि उसके सामाजिक वर्ग के लोग शैक्षिक क्षेत्र में निम्न स्तरीय प्रदर्शन करते हैं। इस रूढ़िवादिता एवं परिणामिक रूढ़िवादी आशंका के प्रभाव को कम करने के लिए एक शिक्षक को क्या पहल करना चाहिए?

(a) विभिन्न सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों के बीच प्रतियोगिता आयोजित करनी चाहिए।
(b) विद्यार्थी से पढ़ाई छोड़कर किसी अन्य क्षेत्र में शामिल होने के लिए सलाह देनी चाहिए।
(c) विभिन्न सामाजिक वर्गों के रोल मॉडल से संबंधित कहानियों एवं उदाहरणों को प्रस्तुत करना चाहिए।
(d) इस प्रकार के सरोकारों को अनदेखा करना चाहिए।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) यदि कक्षा के एक विद्यार्थी को विभिन्न स्त्रोतों से बार-बार यह बताया गया है कि उसके सामाजिक वर्ग के लोग शैक्षिक क्षेत्र में निम्न स्तरीय प्रदर्शन करते हैं, तो इस रूढ़िवादिता एवं परिणामिक रूढ़िवादी आशंका के प्रभाव को कम करने के लिए एक शिक्षक को विभिन्न सामाजिक वर्गो के रोल मॉडल से संबंधित कहानियों एवं उदाहरणों को प्रस्तुत करना चाहिए ताकि संबंधित विद्यार्थी में अपने वर्ग विशेष के प्रति पूर्वाग्रह दूर हो सके और उनमें आत्मविश्वास की भावना विकसित हो सके।

43. किसी विशेष जातीय या धार्मिक समूह के सदस्यों के प्रति प्रतिकूल रवैये को दर्शाने के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?

(a) पूर्वाग्रह (b) नस्लवाद
(c) दुश्मनी (d) कट्टरता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : पूर्वाग्रह शब्द का प्रयोग किसी विशेष जातीय या धार्मिक समूह के सदस्यों के प्रति प्रतिकूल रवैये को दर्शाने के लिए किया जाता है। किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति प्रबल नापसंदगी या अविश्वास, विशेषतः उसकी जाति, धर्म या लिंग के कारण हो, यही पूर्वाग्रह कहलाता है। पूर्वाग्रह में किसी व्यक्ति को किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के प्रति इस तरह प्रभावित किया जाता है कि उस व्यक्ति के मन में दूसरे व्यक्ति या वस्तु के प्रति गलत धारणा बन जाती है।

EXAM POINTS

- माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के द्वारा घर में लड़कियों को प्रायः यह कहना कि घर के काम-काज पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है, यह दर्शाता है– **रूढ़िवादिता**
- ''शरीर सम्बन्धी दृष्टिकोण व्यक्ति के विभिन्न अंगों के विकास में सामंजस्य और परस्पर सम्बन्ध पर बल देता है।'' कथन है– **गैरीसन का**
- भारत में किस प्रकार के समाज की अवधारणा है– **पितृसत्तात्मक समाज**
- ''बुद्धि लिंग पर निर्भर करती है'' इस कथन से आप– **पूर्णतः असहमत हैं**
- जब किसी व्यक्ति, जाति, वर्ग वस्तु के बारे में कोई ऐसी धारणा बन जाए जो वास्तविकता से मीलों दूर हो, वैसी धारणा को कहा जाता है– **रूढ़िबद्ध धारणा**
- पूर्वाग्रह का सम्बन्ध ..... से है– **पक्षपात**
- लैंगिक भेदभाव से सम्बन्धित है– **विद्यालय में होने वाले गायन एवं नृत्य प्रतियोगिता में केवल लड़कियों को वरीयता देना, विद्यालय में लड़कियों को खेलने से रोकना तथा लड़के, लड़कियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं**
- ''एक बालक की शिक्षा का अर्थ है एक पुरुष की शिक्षा, जबकि एक बालिका की शिक्षा का अर्थ है–एक परिवार की शिक्षा।'' महिला शिक्षा के सन्दर्भ में यह कथन है– **महात्मा गाँधी**
- विद्यालय में लैंगिक भेदभाव के कारण छात्राओं की मनोदशा पर क्या प्रभाव पड़ता है– **वे विद्यालय जाने से कतराती है**
- लैंगिक भेदभाव होता है– **पारिवारिक स्तर पर, सामाजिक स्तर पर तथा विद्यालय स्तर पर**
- लैंगिक भेदभाव को दूर करने में भूमिका होती है– **परिवार की, समाज की, अध्यापक की**
- लैंगिक भेदभाव को दूर करने की दिशा में शिक्षकों द्वारा ..... कदम उठाया जाना चाहिए– **छात्र-छात्राओं के एक समान प्रावधान**
- वर्ग V की एक पाठ्य-पुस्तक में इस प्रकार के चित्र हैं, जिसमें महिलाओं को घरेलू कार्य करते हुए, बच्चों को सम्भालते हुए, जबकि पुरुष को डॉक्टर, वकील, अभियन्ता एवं वैज्ञानिक के रूप में प्रदर्शित किया गया है, यह दर्शाता है– **लैंगिक भेदभाव**
- सहयोगात्मक रणनीति की किस श्रेणी में महिलाएँ सम्बन्धित नहीं हैं– **क्रान्ति**
- विद्यालय में लिंग भेदभाव से बचने का सर्वोत्तम तरीका हो सकता है– **शिक्षकों द्वारा उनके लिंग-पक्षपात पूर्ण व्यवहारों का अधि संज्ञान**
- सामाजिक भूमिकाओं के कारण न कि जीववैज्ञानिक सम्पत्ति के कारण सौंपी गयी विशिष्टताएँ ..... कहलाती हैं– **जेंडर भूमिका रूढ़िबद्धता**
- मोनिका, जो गणित की शिक्षिका है, राधिका से एक प्रश्न पूछती है, राधिका से कोई उत्तर न मिलने पर वह तुरन्त मोहन से दूसरा प्रश्न पूछती है। जब उसे महसूस होता है कि मोहन उत्तर बताने में संघर्ष कर रहा है, तब वह अपने प्रश्न के शब्दों को बदलती है। मोनिका की यह प्रवृत्ति प्रदर्शित करती है कि वह– **मोहन का पक्ष लेकर लिंग भूमिकाओं में रूढ़िबद्धता को बढ़ावा दे रही है**
- एक अच्छी पाठ्य-पुस्तक ..... से बचती है– **लैंगिक पूर्वाग्रह**
- विज्ञान के प्रयोगों में, सामान्यतः लड़के उपकरणों का नियन्त्रण अपने हाथों में लेते हैं और लड़कियों से आँकड़ों को रिकॉर्ड करने अथवा वर्तनों को धोने के लिए कहते हैं। यह प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि– **पुरुष और स्त्री की रूढ़िबद्ध भूमिकाएँ विद्यालय में भी होती हैं**
- कक्षा में जेंडर रूढिबद्धता से बचने के लिए शिक्षक को– **लड़के-लड़कियों को एक साथ अपारम्परिक भूमिकाओं में रखना चाहिए**
- एक अच्छा विद्यालय किससे बचता है– **लैंगिक पक्षपात से**
- अध्यापिका ने एक कमेटी के प्रधान को 'सभापति' के स्थान पर 'समाध्यक्ष' लिखा। यह संकेत करता है कि अध्यापिका– **एक लिंग मुक्त भाषा का प्रयोग कर रही है**
- जब एक शिक्षक यह समझता है कि स्वाभाविक रूप से लड़के गणित में लड़कियों से अच्छे हैं, यह दर्शाता है कि अध्यापक है– **लिंग (जेण्डर) पक्षपाती**
- लिंग (जेण्डर) पक्षपात ..... की ओर संकेत करता है– **सांस्कृतिक अभिवृत्तियों के कारण अपेक्षाओं पर आधारित लड़कों और लड़कियों से भिन्न व्यवहार करना**
- सहशिक्षा कक्षा में लड़कों से शिक्षक यह कहता है, ''लड़के बनों और लड़कियों जैसा व्यवहार मत करो।'' यह टिप्पणी– **लड़के-लड़कियों में भेदभाव की रूढ़िबद्ध धारणा प्रकट करता है**
- विद्यालय-यात्रा पर जाने के लिए पोती को अपने पिता से बहस करते हुए देखकर दादी कहती है। ''तुम अच्छी लड़की की तरह आज्ञाकारी क्यों नहीं हो? तुम लड़कों की तरह व्यवहार करोगी तो तुमसे कौन शादी करेगा?'' यह कथन प्रतिबिम्बित करता है– **लड़कियों और लड़कों के स्वभाव के बारे में रूढ़िबद्ध धारणा**
- पृथक् - पृथक् समजातीय समूहों के व्यक्तियों के प्रति बच्चों की अभिवृत्ति साधारणतया आधारित होती है– **उनके अभिभावकों की चित्तवृत्ति पर**
- बालिका शिक्षा को महत्ता देना उचित है, क्योंकि– **किसी सामाजिक परिवर्तन के नेतृत्व में केवल बालिकाएँ ही समर्थ होती हैं**

13.

व्यक्तिगत विभिन्नताएँ

व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अर्थ एवं स्वरूप

1. वैयक्तिक भिन्नता का क्या अर्थ है?

(a) दो व्यक्तियों में शारीरिक भिन्नता होना
(b) कोई दो व्यक्ति शारीरिक, मानसिक योग्यता और संवेगात्मक दशा में समान और एक जैसे नहीं होते हैं
(c) कोई दो व्यक्ति शारीरिक और मानसिक योग्यता में समान और एक जैसे होते हैं
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) वैयक्तिक भिन्नता का तात्पर्य कोई दो व्यक्ति शारीरिक और मानसिक योग्यता और संवेगात्मक दशा में समान और एक जैसे नहीं हो सकते हैं।

2. लम्बाई, भार, त्वचा का रंग, पैर, आंखों एवं बालों का रंग में विविधता तथा विचलन को कहते हैं?

(a) भावनात्मक अंतर (b) भौतिक अंतर
(c) मानसिक अंतर (d) इनमें कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (b) लम्बाई, भार, त्वचा का रंग, पैर, आँख एवं बालों के रंग में विविधता तथा विचलन को भौतिक अन्तर की संज्ञा दी जाती है।

व्यक्तिगत विभिन्नता की प्रकृति एवं विशेषताएँ

3. व्यक्ति में वे भिन्नतायें जिससे वह कद वजन, त्वचा का रंग, आँखों व बालों का रंग पैर आदि से दूसरे से अलग होते हैं :

(a) भावनात्मक भेद (b) शारीरिक भेद
(c) मानसिक भेद (d) इनमें कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (b) व्यक्ति में वे भिन्नतायें जिससे वह कद, वजन, त्वचा का रंग, आँखों व बालों का रंग आदि एक दूसरे से अलग होते हैं, शारीरिक भेद के अंतर्गत आता है।

4. वह कथन जो वैयक्तिक विभिन्नता के सन्दर्भ में सत्य नहीं है, वह है-

(a) व्यक्तिविशेष प्रकार में भिन्न होते हैं
(b) व्यक्तिविशेष कोटि में भिन्न होते हैं
(c) व्यक्तिविशेष प्रकार व कोटि दोनों में भिन्न होते हैं
(d) व्यक्ति विशेष न तो कोटि और न ही प्रकार में भिन्न होते है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) वैयक्तिक भिन्नता का तात्पर्य वैयक्तिक रूप से अन्तर अर्थात कोई भी दो व्यक्तियों की बुद्धि, कार्य करने के तरीके, व्यक्तित्व आदि में कभी समान नही होते हैं।

5. ''हममें से कुछ लोग, कुछ जो लम्बे हैं तथा कुछ जो छोटे हैं, कुछ जो गोरे हैं तथा कुछ जो काले हैं, कुछ लोग मजबूत हैं तथा कुछ कमजोर है'' यह कथन किस स्थापित सिद्धान्त पर आधारित है?

(a) बुद्धि व लैंगिक विभिन्नता पर
(b) बुद्धि व प्रजाति विभिन्नता पर
(c) वैयक्तिक विभिन्नता पर
(d) वैयक्तिक प्रगतिशीलता पर

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) जैविक तथा वातावरणीय कारकों के परस्पर अन्तः क्रिया द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण होता है तथा वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है इसलिए जैविकीय तथा वातावरणीय कारक को व्यक्तित्व निर्धारण का तत्व माना जाता है। व्यक्ति का रंग, रुप, कदकाठी, स्वास्थ्य काफी सीमा तक जन्म के समय ही वंशानुक्रम के द्वारा निर्धारित हो जाते है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्ति के शारीरिक जैवकीय गुणों के द्वारा उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों जैसे शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विकास पर प्रभाव डाला जाता है।

6. हम सभी अपनी बुद्धि, प्रेरणा, अभिरुचि आदि के सन्दर्भ में भिन्न होते हैं। यह सिद्धांत सम्बन्धित है

(a) वैयक्तिक भिन्नता से (b) बुद्धि के सिद्धांतो से
(c) वंशुनक्रम से (d) पर्यावरण से

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (a) टायलर के अनुसार– ''शरीर के आकार और स्वरूप, शारीरिक गति सम्बन्धी क्षमताओं, बुद्धि, उपलब्धि, ज्ञान, रुचियों अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों में माप की जा सकने वाली विभिन्नताओं की उपस्थिति सिद्ध की जा चुकी है।'' इस प्रकार वैयक्तिक भिन्नता से अभिप्राय है कि प्रत्येक व्यक्ति में जैविक, मानसिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक अंतर पाया जाना।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण

7. विकास के वैयक्तिक विभिन्नता को समझने के लिए क्या महत्त्वपूर्ण है?

(a) पर्यावरणीय कारकों पर विचार करना जो लोगों को प्रभावित करते हैं।
(b) शरीर एवं दिमाग के परिपक्वन पर विचार करना।
(c) वंशागत विशेषताओं के साथ–साथ पर्यावरणीय कारकों एवं उनकी पारस्परिक क्रिया पर विचार करना।
(d) वंशागत विशेषताओं पर विचार करना जो प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में विशेष शुरुआत देती हैं।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : विकास में वैयक्तिक विभिन्नता को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि वंशागत विशेषताओं के साथ-साथ पर्यावरणीय कारकों एवं उसकी पारस्परिक क्रिया पर भी विचार किया जाना चाहिए। क्योंकि व्यक्ति के विकास में वंशानुक्रम तथा वातावरण दोनों की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। व्यक्ति जो कुछ भी सोचता है, करता है अथवा अनुभव करता है वह उसके वंशानुक्रम तथा

वातावरण की परस्पर अंतर्क्रिया का परिणाम होता है। इसलिए व्यक्ति विकास की वैयक्तिक विभिन्नता को समझने के लिए वंशानुक्रम और वातावरण दोनों की परस्पर अंतर्क्रिया पर विचार किया जाना चाहिए।

8. मार्गरेट मीड के अनुसार वैयक्तिक भिन्नताओं के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है–

(a) जैविक (b) मनोवैज्ञानिक
(c) सजातीय (d) सांस्कृतिक

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (d) मार्गरिट मीड के अनुसार वैयक्तिक भिन्नताओं के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक सांस्कृतिक कारक है। मार्गरेट मीड अमेरिका की सांस्कृतिक नृवैज्ञानिक थी। सैद्धान्तिक रूप से मीड का विमर्श अपनी सहयोगी विद्वान और मित्र रूथ बेनेडिक्ट की ही तरह मनोवैज्ञानिक मानवशास्त्र की श्रेणी में आता है। मानवशास्त्र की इस प्रवृत्ति को कल्चर एण्ड पर्सनॉलिटी के नाम से भी जाना जाता है। मीड की दिलचस्पी व्यक्ति पर पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों के अध्ययन पर थी।

9. वैयक्तिक विभिन्नताओं का प्राथमिक कारण क्या है?

(a) पर्यावरणीय प्रभाव
(b) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण के बीच जटिल पारस्परिक क्रिया।
(c) लोगों के द्वारा माता-पिता से प्राप्त आनुवंशिक संकेत पद्धति (कोड)
(d) जन्मजात विशेषताएँ

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) वैयक्तिक भिन्नताओं का प्राथमिक कारण आनुवंशिकता एवं पर्यावरण के बीच जटिल पारस्परिक क्रिया है। अनेक मनोवैज्ञानिक शोधों ने यह सिद्ध कर दिया है कि अनेक शारीरिक, मानसिक तथा व्यक्तित्व संबंधी विभिन्नताओं के लिए वंशानुक्रम काफी सीमा तक उत्तरदायी होता है। इसी तरह जिस प्रकार के वातावरण में बालक रहता है उसी के अनुरूप उसका शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा चारित्रिक विकास होता है। इन दोनों के पारस्परिक अंतर्क्रिया के कारण ही वैयक्तिक भिन्नता उत्पन्न होती है।

10. आमतौर पर, सभी कक्षाओं में विविधता होगी। उस आयाम को पहचानें जो बहुत अधिक विविधता से संबंधित कई समस्याओं को प्रस्तुत नहीं करता है।

(a) सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (b) भौगोलिक स्थिति
(c) सामाजिक मान्यताएं (d) पुष्ट योग्यताएं

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : भौगोलिक स्थिति बहुत अधिक विविधता से संबंधित समस्याओं को प्रस्तुत नहीं करता है क्योंकि भौगोलिक स्थिति का प्रसार विस्तृत होता है जिसमें रहने वाले सभी मानव जाति समान विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं जबकि सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और सामाजिक मान्यताएँ समुदाय विशेष की विविधता दर्शाती हैं तथा पुष्ठ योग्यताएँ वैयक्तिक विविधता को दर्शाती हैं।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के क्षेत्र– जाति, भाषा, धर्म, लिंग, समुदाय आदि।

11. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का क्षेत्र है-

(a) लिंग-भेद (b) शारीरिक रचना
(c) मानसिक योग्यताए (d) ये सभी

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) व्यक्तिगत विभिन्नताओं में लिंगभेद, शारीरिक संरचना, मानसिक योग्यता, शारीरिक क्षमता आदि सभी तत्व आते हैं।

12. एक कक्षा में वैयक्तिक विभिन्नताओं के क्षेत्र हो सकते हैं :

(a) रुचियों के (b) सीखने के
(c) चरित्र के (d) उपरोक्त सभी

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (d) वैयक्तिक भिन्नता से तात्पर्य है प्रत्येक व्यक्ति में जैविक, मानसिक, सांस्कृतिक संवेगात्मक अंतर पाया जाना। इसी अंतर के कारण व्यक्ति दूसरों से भिन्न होता है। वैयक्तिक भिन्नता के निम्न क्षेत्र हो सकते हैं–
शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, रूचि, चरित्र, अधिगम क्षमता, अभिप्रेरणा आदि।

13. आज के कक्षाओं में छात्र के बीच, सांस्कृतिक, जातीय और नस्लीय..... की एक विस्तृत श्रृंखला होने की संभावना है।

(a) सक्रियता (b) समानताएं
(c) विविधता (d) निरंतरता

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : आज के कक्षाओं में छात्र के बीच, सांस्कृतिक, जातीय और नस्लीय विविधता की एक विस्तृत श्रृंखला होने की संभावना है क्योंकि समावेशी शिक्षा के अंतर्गत इन सभी वर्गों को एक ही कक्षा में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा दिया जा रहा है। ऐसी विविधता से निपटने के लिए एक कुशल अध्यापक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है जो बच्चों की विविधता को स्वीकार करते हुए एक सर्वमान्य शिक्षण–प्रक्रिया का आयोजन करता है जिसमें सभी विद्यार्थी अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं।

व्यक्तिगत भिन्नताओं का शैक्षिक महत्त्व एवं उनका समायोजन

14. व्यक्तिगत विविधताओं वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए ऐसे विद्यालय होने चाहिए जहाँ शिक्षक–

(a) व्यक्तिगत विविधताओं के आधार पर वर्गीकृत की गई कक्षाओं के विभिन्न वर्गों में पढ़ा सकें
(b) विविध अधिगम आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न शिक्षण–अधिगम प्रविधियों का प्रयोग करने में प्रशिक्षित हों।
(c) विशिष्ट व्यक्तिगत विविधताओं वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित हों
(d) बच्चों को समरूप अधिगमकर्ता बनाने में प्रशिक्षित हों

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : व्यक्तिगत विविधताओं वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए ऐसे विद्यालय होने चाहिए जहाँ शिक्षक विविध अधिगम आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न शिक्षण–अधिगम प्रविधियों का प्रयोग करने में प्रशिक्षित हों। इसलिए वर्तमान में अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे बच्चों की वैयक्तिक विभिन्नता को पहचान सकें और तदनुसार शिक्षण कार्य कर सकें।

15. वैयक्तिक विभिन्नता के मिलने के सम्बन्ध में एक अध्यापक की भूमिका होनी चाहिए

(a) व्यक्ति के दृष्टिकोण, अभिरुचि और योग्यता को जानने का प्रयास
(b) व्यक्ति आधारित पाठ्यक्रमों को उनकी आवश्यकता के अनुसार जानने की कोशिश
(c) उपरोक्त दोनों
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) वैयक्तिक भिन्नता मिलने के संबंध में एक अध्यापक को व्यक्ति का दृष्टिकोण उसकी योग्यता एवं अभिरुचियों को जानने का प्रयत्न करना चाहिए तथा व्यक्ति आधारित पाठ्यक्रमों को उनकी आवश्यकता के अनुसार जानने की कोशिश करनी चाहिए। अतः विकल्प a एवं b दोनो सही है।

16. एक अध्यापक किसी भी समूह में समुदाय आधारित व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझ सकता है -

(a) आँखों के सम्पर्क के आधार पर
(b) बुद्धि के आधार पर
(c) भाषा एवं अभिव्यक्ति के आधार पर
(d) गृह कार्य के आधार पर।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) प्रत्येक समुदाय की अपनी भाषा, रीति-रिवाज एवं अभिव्यक्ति करने के तरीके होते है। इस आधार पर अध्यापक अलग-2 समूहों के विद्यार्थियों को व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर उनकी पहचान कर सकते हैं।

17. व्यक्तिगत विभिन्नताओं से सम्बन्धित निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

(a) यदि विद्यार्थियों का बुद्धि स्तर समान है तब भी उपलब्धि में विभिन्नता हो सकती है।
(b) सभी बालकों में कुछ भी समानता नहीं होती।
(c) व्यक्तिगत विभिन्नताओं के वक्र खींच कर दिखाने पर वह एक दिशा की ओर झुक जाता है।
(d) व्यक्तिगत विभिन्नतायें वंशक्रम के कारण होती हैं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a) व्यक्तिगत विभिन्नता प्रत्येक व्यक्ति में पाई जाती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के विचार चिंतन शैली अलग होती है। अतः समान बुद्धि स्तर होने पर भी लोगों की उपलब्धियों में भिन्नता दिखाई देती है। व्यक्ति की उपलब्धि उसके चिंतन शैली एवं क्षेत्र विशेष में आकर्षण के आधार पर होती है।

18. प्रजातिगत व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझने में निम्न में से क्या मददगार साबित नहीं होता?

(a) मूल्य व्यवस्था
(b) शाब्दिक एवं अ-शाब्दिक सम्प्रेषण
(c) अधिगम की प्रक्रियायें एवं विभिन्न व्यवस्थायें
(d) बुद्धि।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) प्रजातिगत व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझने में बुद्धि मदद नहीं कर सकता क्योंकि बुद्धि जाति या प्रजाति की विशेषता नहीं होती। बुद्धि का विकास वातावरण से सम्बन्धित होता है।

19. शिक्षार्थियों में बहुत विभिन्नताएँ होती हैं। इनसे किसके/किनके लिए शिक्षक को संवदेनशील होने की आवश्यकता है?

I. संज्ञानात्मक क्षमताओं और सीखने के स्तरों पर आधारित भिन्नताएँ।
II. भाषा, जाति, लिंग, धर्म समुदाय की विविधता पर आधारित भिन्नताएँ।

नीचे दिए गए कूट के आधार पर सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल II (b) I और II दोनों
(c) न तो I और न ही II (d) केवल I

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (b) वैयक्तिक भिन्नता से तात्पर्य है प्रत्येक व्यक्ति में जैविक, मानसिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक अंतर पाया जाना। **टायलर** ने वैयक्तिक भिन्नता को परिभाषित करते हुए लिखा है ''शरीर के आकार और स्वरूप, शारीरिक कार्यो, गति सम्बन्धी क्षमताओं, बुद्धि उपलब्धि, ज्ञान, रूचियों, अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों में माप की जा सकने वाली भिन्नताओं की उपस्थिति सिद्ध की जा चुकी है। अतः शिक्षक को इन सब के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए।

20. भारत में अधिकांश कक्षाएँ बहुभाषी होती हैं इसे शिक्षक द्वारा ..... के रूप में देखा जाना चाहिए।

(a) परेशानी (b) समस्या
(c) संसाधन (d) बाधा

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (c) भारत में अधिकांश कक्षाएँ बहुभाषी होती है इसे शिक्षक द्वारा संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि बाल केन्द्रित शिक्षा में वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखते हुए तथा उनका प्रभावी उपयोग करते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को संचालित की जाती है।

21. एक कक्षा में बहुभाषी विद्यार्थी हैं; यह स्थिति उत्पन्न करती है

(a) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बाधा
(b) विद्यार्थियों के मध्य सामंजस्य की समस्या
(c) अध्यापक में कुण्ठा
(d) सीखने के समृद्ध संसाधन

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013
DSSSB PRT

Ans: (d) राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रुपरेखा 2005 (NCF 2005) के अनुसार बहुभाषिता को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण संसाधान के रूप में प्रयोग किया जा सकता है अतः कक्षा में उपस्थित बहुभाषी विद्यार्थी अधिगम हेतु समृद्ध संसाधन हैं।

22. अध्ययन की दृष्टि से व्यक्तिगत विभिन्नताओं का महत्व है-

(a) विद्यार्थियों की व्यक्तिगत शिक्षण व्यवस्था
(b) व्यक्तिगत रूचियों के अनुसार गृह कार्य देना
(c) विद्यार्थियों का समरूप समूहों में वर्गीकरण
(d) उपर्युक्त सभी

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) अध्ययन की दृष्टि से व्यक्तिगत विभिन्नताओं का महत्व है–
1. विद्यार्थियों की व्यक्तिगत शिक्षण व्यवस्था
2. व्यक्तिगत रुचियों के अनुसार गृहकार्य देना
3. विद्यार्थियों का समरूप समूहों में वर्गीकरण

23. विद्यालयों को किसके लिए वैयक्तिक भिन्नताओं को पूरा करना चाहिए?

(a) वैयक्तिक शिक्षार्थी को विशिष्ट होने की अनुभूति कराने के लिए

(b) वैयक्तिक शिक्षार्थियों के मध्य खाई को कम करने के लिए

(c) शिक्षार्थियों के निष्पादन और योग्यताओं को समान करने के लिए

(d) यह समझने के लिए कि क्यों शिक्षार्थी सीखने के योग्य या अयोग्य हैं

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (d) विद्यालयों को बालकों की वैयक्तिक भिन्नताओं को समझना चाहिए क्योंकि इससे शिक्षार्थियों के सीखने की योग्यता व अयोग्यता का पता चलता है तथा विद्यालय इसी आधार पर उनका विकास करता है।

24. समान आयु के बच्चें में भी आकृति, योग्यता, स्वभाव, रुचि, प्रवृत्ति और अन्य बातों में बहुत अन्तर होता है इस सन्दर्भ में विद्यालय की क्या भूमिका है?

(a) बच्चों के आकलन के लिए नियामक मानक स्थापित करना

(b) सुनिश्चित करना कि शिक्षक मानकीकृत निर्देश और पाठ्य–पुस्तकों का उपयोग करे

(c) सुनिश्चित करना कि सभी बच्चों का विकास एक ही प्रकार से हो

(d) सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चे को अपनी क्षमताओं के अनुसार विकास के अवसर मिलें

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) समान आयु के बच्चों में भी आकृति, योग्यता, स्वभाव, रुचि, प्रवृत्ति और अन्य बातों में बहुत अंतर होता है। इस संदर्भ में विद्यालय को चाहिए कि उनकी वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखते हुए सुनिश्चित करे कि प्रत्येक बच्चे को अपनी क्षमताओं के अनुसार विकास के अवसर मिलें।

25. शिक्षार्थी वैयक्तिक भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। अतः शिक्षक को

(a) अधिगम की एकसमान गति पर बल देना चाहिए

(b) सीखने के विविध अनुभवों को उपलब्ध कराना चाहिए

(c) कठोर अनुशासन सुनिश्चित करना चाहिए

(d) परीक्षाओं की संख्या बढ़ा देनी चाहिए

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)
UK TET 2014 (I-V)

Ans : (b) शिक्षार्थी वैयक्तिक भिन्नता प्रदर्शित करते हैं, उनकी भिन्न–भिन्न क्षमताएँ, योग्यताएँ, रुचियाँ, अभिवृत्तियाँ, आवश्यकताएँ होती हैं। अतः शिक्षक को सीखने के विविध अनुभवों को उपलब्ध कराना चाहिए।

26. पढ़ाते समय सामान्य कक्षा में अध्यापक का सर्वाधिक ध्यान किस मनोवैज्ञानिक तथ्य पर होना चाहिए?

(a) शिक्षण तकनीक (b) शारीरिक क्षमता

(c) वैयक्तिक विभिन्नता (d) पारिवारिक स्थिति

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) पढ़ाते समय सामान्य कक्षा में शिक्षक को सर्वाधिक ध्यान कक्षा में बैठे बालकों के वैयक्तिक भिन्नता पर देना चाहिए क्योंकि सभी बालकों में बुद्धि क्षमता का स्तर अलग-अलग होता है साथ ही उनकी वातावरणीय स्थिति भिन्न होती है जिसके कारण बालकों में अधिगम क्षमता में भिन्नता पाई जाती है। अतः अध्यापक को इसका विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि बच्चों के अधिगम क्षमता के अनुसार अधिगम कार्य किया जा सके और सभी बालकों का समान रूप से विकास हो।

27. भारतीय समाज की बहुभाषिक विशेषता को ..... देखा जाना चाहिए।

(a) विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करने हेतु शिक्षक-योग्यता की चुनौती के रूप में

(b) शिक्षार्थियों के लिए विद्यालयी जीवन को एक जटिल अनुभव के रूप में बनाने के लिए कारक के रूप में

(c) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बाधा के रूप में

(d) विद्यालयी जीवन को समृद्ध बनाने के संसाधन के रूप में

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (d) भारतीय समाज की बहुभाषिक विशेषता को विद्यालयी जीवन को समृद्ध बनाने के संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए।

28. सह-शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के आधार पर शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के स्तर को बढ़ाने का औचित्य स्थापन किस आधार पर किया जा सकता है

(a) यह हाथ से किए जाने वाले श्रम के प्रति सम्मान विकसित करता है।

(b) यह वैयक्तिक भिन्नताओं को संतुष्ट करता है

(c) यह हाशियाकृत विद्यार्थियों के लिए प्रतिपूरक भेदभाव की नीति का अनुगमन करता है

(d) यह सार्वभौमिक धारण (retention) को सुनिश्चित करता है।

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (b) सह शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के आधार पर शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के स्तर को बढ़ाने का औचित्य वैयक्तिक भिन्नताओं को संतुष्ट करता है।

29. शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को संबोधित करने के लिए एक विद्यालय किस प्रकार का सहयोग उपलब्ध करवा सकता है?

(a) सभी शिक्षार्थियों के लिए समान स्तर की पाठ्यचर्या का अनुगमन करना

(b) बाल-केन्द्रित पाठ्यचर्या का पालन करना और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर उपलब्ध करवाना।

(c) शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को समाप्त करने के लिए हर संभव उपाय करना।

(d) धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों को विशेष विद्यालयों में भेजना।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (b) शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को सम्बोधित करने के लिए एक विद्यालय बाल-केन्द्रित पाठ्यचर्या का पालन और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर व सहयोग उपलब्ध करा सकता है।

30. योग्यता व योग्यता समूहीकरण के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) विद्यार्थी सम-समूहों से बेहतर सीखते हैं

(b) अबाध व प्रभावी शिक्षण हेतु कथा को समरूपी (प्दस्द्वाहादले) होना चाहिए

(c) छात्र असहिष्णु होते हैं व भेदों को स्वीकार नहीं करते
(d) विभिन्न योग्यता वाले समूहों को ग्रहण करने के लिए अध्यापकों को बहु-स्तरीय शिक्षा को अपनाना चाहिए

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (d) योग्यता व योग्यता समूहीकरण के परिप्रेक्ष्य में- विभिन्न योग्यता वाले समूहों को ग्रहण करने के लिए अध्यापको को बहुस्तरीय शिक्षण को अपनाना चाहिए।

31. वैयक्तिक अंतरों का ज्ञान शिक्षकों की मदद किसमें करता है?

(a) पिछड़े शिक्षार्थियों के साथ कठोर परिश्रम करने की निरर्थकता को समझने में, क्योंकि वे बाकी कक्षा के समान कभी नहीं हो सकते
(b) वैयक्तिक अंतरों को शिक्षार्थियों की असफलता की स्वीकृति एवं उत्तरदायी ठहराने में
(c) सभी शिक्षार्थियों को समान रूप से लाभ पहुँचाने के लिए अपनी प्रस्तुति-शैली को एकरूप बनाने में
(d) सभी शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं का आकलन करने और उसके अनुरूप उन्हें पढ़ाने में

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) वैयक्तिक अंतरो का ज्ञान सभी शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं का आकलन करने और उसके अनुरूप उन्हें पढ़ाने में शिक्षकों की मदद करता है।

32. अनुसंधान से पता चला है कि विद्यालयों में अनेक स्तरों पर विभेदीकरण पाया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर इनमें से कौन-सा विभेदीकरण का एक उदाहरण नहीं है?

(a) बहुत से अध्यापक पढ़ाने के लिए केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग करते हैं।
(b) मध्यान्ह भोजन के दौरान दलित बच्चों को अलग बैठाया जाता है।
(c) लड़कियों को गणित तथा विज्ञान विषयों को लेने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है।
(d) अध्यापकों की निम्न सामाजिक-आर्थिक परिवेश से आए बच्चों से बहुत कम अपेक्षाएँ होती हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (a) यदि बहुत से अध्यापक पढ़ाने के लिए केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग करते है तो यह उच्च प्राथमिक विद्यालय में विभेदीकरण का उदाहरण नहीं है।

33. एक बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में एक अध्यापिका सुनिश्चित करेगी कि आकलन में निम्नलिखित में से सम्मिलित हो –

(a) अपने आकलन उपकरण की विश्वसनीयता तथा वैधता
(b) अधिगम के न्यूनतम स्तरों के लिए अनुपालन करते हुए विद्यालय प्रशासन की अपेक्षाओं को पूरा
(c) आकलन उपकरण के मानकीकरण
(d) अपने विद्यार्थियों को सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (d) एक शिक्षिका अपनी बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में आकलन करने के लिए अपने विद्यार्थियों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को सम्मिलित करेगी।

34. भारत में भाषिक विभिन्नता बहुत है। इस संदर्भ में विशेषकर कक्षा I और II के प्राथमिक स्तर पर बहुभाषिक कक्षाओं के बारे में सर्वथा उपयुक्त कथन है–

(a) शिक्षार्थियों को अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा का प्रयोग करने पर दंडित किया जाए।
(b) विद्यालय में उन्हीं बच्चों को प्रवेश दिया जाए जिनकी मातृभाषा वही हो जो शिक्षा के लिए अपनाई जा रही हो
(c) शिक्षक को सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए और सभी भाषाओं में अभिव्यक्ति के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
(d) जो बच्चे कक्ष में मातृभाषा का उपयोग करते हैं अध्यापक को उनकी उपेक्षा करनी चाहिए।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (c) भाषिक विभिन्नता को शिक्षा में अवरोधक की बजाय एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। यदि किसी कक्षा में बहुभाषी विद्यार्थी हैं विशेषकर कक्षा I और कक्षा II के प्राथमिक स्तर पर तो ऐसी परिस्थिति में शिक्षक को एक ऐसी शिक्षण प्रक्रिया का निर्माण करना चाहिए जिसमें सभी बच्चे सहजता से सीख सके तथा अपने भावों, विचारों आदि को अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकें।

35. शिक्षार्थियों (अधिगमकर्त्ता) की वैयक्तिक विभिन्नताओं के संदर्भ में शिक्षिका को चाहिए–

(a) विविध प्रकार की अधिगम परिस्थितियों को उपलब्ध कराना
(b) निगमनात्मक पद्धति के आधार पर समस्याओं का समाधान करना
(c) कलनविधि (एल्गोरिथ्म) का अधिकतर प्रयोग करना।
(d) बाद करने के लिए शिक्षार्थियों को तथ्य उपलब्ध कराना।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans : (a) वैयक्तिक भिन्नता वाले कक्षा में अध्यापक को विभिन्न प्रकार के अधिगम परिस्थितियों को उपलब्ध कराना चाहिए क्योंकि बालक के बुद्धि, रूचि, योग्यताओं, आदि के अनुरूप विकास के अवसर मिलने पर ही वह अपने सर्वोत्तम विकास के स्तर को, प्राप्त कर सकता है।

36. जिस कक्षाकक्ष में विविध पृष्ठभूमि से विद्यार्थी आते हों, वहाँ एक प्रभावी शिक्षक–

(a) समान आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों का समूह बनाएगा और उन्हें एक साथ रखेगा
(b) वंचित पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने के लिए कहेगा ताकि वे अपने साथियों के बराबर पहुँच सकें
(c) समूह में वैयक्तिक भिन्नता को बताने के लिए उनकी सांस्कृतिक जानकारी पर ध्यान देगा
(d) सांस्कृतिक जानकारी की अनदेखी करेगा और एक सर्वमान्य तरीके से अपने सभी विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करेगा।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (d) हम जानते हैं कि किसी भी कक्षा में विविध पृष्ठभूमि से विद्यार्थी आते हैं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक विद्यालय की एक निश्चित परिपाटी के अनुसार शिक्षण कार्य करता है, जिसमें कुछ ऐसी चीजों जैसे– सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि आदि की अनदेखी कर, जो छात्रो में हीनता या अहम की भावना पैदा करती है, एक ऐसे सार्वभौम तरीके से शिक्षण प्रक्रिया का संचालन करता है जो सभी बच्चों के लिए सुलभ व सर्वमान्य होती है।

37. एक शिक्षिका अपनी कक्षा में विविधता को संबोधित कर सकती है –

A. भिन्नताओं को स्वीकार करके और उसे महत्व देकर
B. बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का शिक्षा-शास्त्रीय संसाधन के रूप में प्रयोग करके
C. विभिन्न अधिगम शैलियों को समायोजित करके
D. मानक निर्देश देकर और निष्पादन हेतु सर्वमान्य मानदण्ड निर्धारित करके

नीचे दिए गए कूट के आधार पर सही उत्तर चुनिए।

(a) A, B और C (b) A, B, C और D
(c) A, B और D (d) B, C और D

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) एक शिक्षिका अपनी कक्षा में विविधता को संबोधित कर सकती है यदि उसे वैयक्तिक भिन्नता की पूर्ण समझ हो क्योंकि प्रत्येक बालक की अपनी अलग मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सांवेगिक भिन्नता व योग्यता होती है। अतः शिक्षिका को चाहिए कि वैयक्तिक भिन्नता को स्वीकार करे और उसे महत्व दे तथा बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का शिक्षाशास्त्रीय संसाधन के रूप में प्रयोग करे और विभिन्न अधिगम शैलियों को समायोजित करके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को संचालित व सम्पादित करे।

38. ''विविध प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों से युक्त कक्षा सभी विद्यार्थियों के अधिगम अनुभवों को बढ़ाती है।'' यह कथन है–

(a) गलत, क्योंकि यह बच्चों के लिए दुविधा उत्पन्न कर सकता है और वे स्वयं को अलग-अलग महसूस कर सकते हैं
(b) सही, क्योंकि बच्चे अपने साथियों से अनेक कौशल सीखते है
(c) सही, क्योंकि इससे कक्षा अधिक श्रेणीबद्ध दिखाई देती है
(d) गलत, क्योंकि यह अनावश्यक स्पर्धा की ओर ले जाता है

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (b) ''विविध प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बच्चों से युक्त कक्षा सभी विद्यार्थियों के अधिगम अनुभवों को बढ़ाती है।'' यह कथन सही है क्योंकि बालक का विकास अपने साथी समूह में होता है, और वे अपने मित्रों के द्वारा अनेक कौशल सीखते हैं।

39. अपनी कक्षा की वैयक्तिक भिन्नताओं से निपटने के लिए शिक्षक को चाहिए कि–

(a) शिक्षण और आकलन के समान और मानक तरीके हों
(b) बच्चों को उनके अंकों के आधार पर अलग कर उनको नामित करें
(c) बच्चों से बातचीत करें और उनके दृष्टिकोण को महत्व दें
(d) विद्यार्थियों के लिए कठोर नियमो को लागू करें

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (c) अपनी कक्षा की वैयक्तिक भिन्नताओं से निपटने के लिए शिक्षक को चाहिए कि बच्चों से बातचीत करें और उनके दृष्टिकोण को महत्व देते हुए शिक्षण प्रक्रिया को आगे बढ़ाये जिससे सभी छात्र लाभान्वित हो सके।

40. अध्यापन के समय अध्यापक को निम्नलिखित में से किसका सर्वाधिक ध्यान रखना चाहिए?

(a) विषय-वस्तु
(b) विद्यार्थियों की आयु
(c) वैयक्तिक भिन्नता
(d) विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) शिक्षक को छात्रों के वैयक्तिक भिन्नता की जानकारी होना अति आवश्यक है। वैयक्तिक भिन्नता के कारण छात्रों में बुद्धि स्तर, समझ का स्तर भिन्न-भिन्न होता है। इस जानकारी के आधार पर शिक्षक अपना अधिगम कार्य अच्छी तरह से चला सकता है तथा अधिगम कार्य सफल होता है।

41. शिक्षा के क्षेत्र में बहुसांस्कृतिक जागरूकता में उनके_____ के संदर्भ में छात्रों में मतभेदों की समझ और सराहना शामिल है।

(a) कौशल और क्षमताएँ
(b) विशेष आवश्यकताएँ और उपहार
(c) सामाजिक आर्थिक स्थिति और धार्मिक पृष्ठभूमि
(d) व्यवहार और स्वभाव

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) शिक्षा के क्षेत्र में बहुसांस्कृतिक जागरूकता में उनके सामाजिक आर्थिक स्थिति और धार्मिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में छात्रों में मतभेदों की समझ और सराहना शामिल है। दूसरे शब्दों में, जब विद्यार्थियों में बहु सांस्कृतिक जागरूकता आ जाती है तो उनमें विभिन्न संस्कृतियों के सम्बन्ध में आलोचनात्मक समझ विकसित हो जाती है।

42. शिक्षकों को शिक्षार्थी की ..... के साथ डील करना पड़ता है।

(a) समावेशिता (b) विविधता
(c) विचलन (d) प्रतिभाशीलता

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : शिक्षकों को शिक्षार्थी की विविधता के साथ डील करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षक को शिक्षण कार्य करते समय विद्यार्थियों की वैयक्तिक भिन्नता उनकी रुचियों, योग्यता, क्षमता, मनोवृत्तियों आदि के अनुसार शिक्षण करना चाहिए ताकि सभी विद्यार्थी अपनी वैयक्तिक विभिन्नता के अनुसार अधिगम अनुभव प्राप्त कर सकें।

43. नृत्य, ड्रामा एवं शिल्पकला का प्रयोग किया जाता है

(a) विशिष्ट गुणों के विकास हेतु
(b) व्यक्तित्व को ढालने के लिए
(c) दबी एवं बर्दाश्त न की जा सकने वाले अंतनोंद के प्रगटीकरण हेतु
(d) इनमें से सभी

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) नृत्य, ड्रामा एवं शिल्पकला एक विशिष्ट गुण होता है जिसमें व्यक्ति अपने व्यक्तिगत गुण एवं रूचियों के कारण इसे अपनाता है। इसके गुण एवं क्रिया के द्वारा व्यक्ति स्वयं की या समाज की परिस्थितियों एवं दोषों तथा समस्याओं को सबके सामने लाने के लिए एक साधन के रूप में प्रयोग करता है।

14.

अभियोग्यता/अभिक्षमता, अभिवृत्ति तथा मूल्य

अभियोग्यता/अभिक्षमता का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. क्षेत्र विशेष में बालक की विशिष्ट योग्यता तथा विशिष्ट क्षमता को कहते हैं–

(a) मूल्य (b) अभिप्रेरणा
(c) अभिक्षमता (d) रुचि

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : किसी क्षेत्र विशेष में बालक की विशिष्ट योग्यता तथा विशिष्ट क्षमता को अभिक्षमता कहते हैं। अभिक्षमता से तात्पर्य व्यक्ति के उस रुझान, रुचि या योग्यता से होता है जो किसी विशिष्ट कार्य, पाठ्यक्रम या व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक होती है। **फ्रीमैन के अनुसार–** ''अभिक्षमता ऐसी विशेषताओं के समूह का द्योतक है जो किसी विशिष्ट ज्ञान, कौशल या संगठित प्रतिक्रियाओं के समुच्चय को अर्जित करने की व्यक्ति की योग्यता की सूचक होती है, जैसे– भाषा बोलने, संगीतकार बनने, यांत्रिक कार्य करने आदि की योग्यता।''

2. अभियोग्यता के सम्बन्ध में सही कथन क्या है?

(a) समायोजन करने की क्षमता का नाम अभियोग्यता है
(b) सीखने की क्षमता का नाम अभियोग्यता है
(c) संक्षिप्त तार्किकता (Abstract Reasoning) की क्षमता का नाम अभियोग्यता है
(d) उपरोक्त सभी

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (d) अभियोग्यता का तात्पर्य समायोजन की क्षमता, सीखने (अधिगम) की क्षमता तथा तार्किकता की क्षमता का समावेश है अतः अभियोग्यता में सभी बातें आती हैं जो मानव जीवन के बौद्धिकता की वृद्धि करती हैं।

3. मानव जाति में अभिक्षमता किस प्रकार से वितरित है?

(a) वितरण सामान्य है।
(b) वितरण अस्तव्यस्त है।
(c) वितरण विषम है
(d) वितरण विविधतापूर्ण है

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : मानव जाति में अभिक्षमता का वितरण विविधतापूर्ण है। किसी व्यक्ति की समस्त अभिक्षमताएँ समान नहीं होती हैं। व्यक्ति की विविध अभिक्षमताओं में अंतर होना स्वाभाविक ही है। इसी प्रकार अभिक्षमता की प्रकृति वैयक्तिक होती है अर्थात् अभिक्षमताओं में व्यक्तिगत भिन्नताएँ पायी जाती हैं। किन्हीं भी दो व्यक्तियों की अभिक्षमताओं में अंतर का होना स्वाभाविक ही होता है।

अभिक्षमता/अभियोग्यता का मापन

4. विभेदक परीक्षण का उपयोग किस मनोवैज्ञानिक ने भारतीय अनुकूलन के अनुसार विकसित किया है?

(a) होरेस (b) वालाश
(c) जे. पी. गिलफोर्ड (d) जे. एम. ओझा।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (d) जे. एम. ओझा ने अमेरिका की मनोवैज्ञानिक कार्पोरेशन के द्वारा प्रकाशित तथा बैनेट, सीशोर तथा बेजमेन के द्वारा तैयार किया गया विभेदक अभिक्षमता परीक्षण (Differentioal Aptitude Test) डी.ए.टी. के प्रारूप एल का अनुशीलन भारतीय अनुकूलन के अनुसार किया।

5. किस अभिक्षमता को ए. एस. टी. के नाम से जाना जाता है?

(a) विभेदक अभिक्षमता
(b) सामान्य अभिक्षमता
(c) अभिक्षमता सर्वेक्षण परीक्षण
(d) व्यावसायिक अभिक्षमता

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (c) अभिक्षमता सर्वेक्षण परीक्षण को ए.एस.टी. के नाम से जाना जाता है। यह भेदक अभिक्षमता परीक्षण के अंतर्गत आता है। इस प्रकार के परीक्षण में परीक्षण की कई श्रृंखला होती है जिससे व्यक्ति की भिन्न-भिन्न क्षमताओं का परीक्षण करके व्यक्ति के अधिक अभिक्षमता वाले क्षेत्र को ज्ञात कर लिया जाता है।

6. शिक्षक पात्रता परीक्षण किस प्रकार के परीक्षण का एक उदाहरण है?

(a) अभियोग्यता (b) सृजनशीलता
(c) बुद्धि (d) व्यक्तित्व

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : अभियोग्यता किसी क्षेत्र विशेष में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता (Specific Ability) या विशिष्ट क्षमता (Specific potentiality) अथवा भावी सफलता के अनुमान को इंगित करती है। विशिष्ट अभियोग्यता परीक्षण किसी विशिष्ट क्षेत्र में व्यक्ति की अभियोग्यता का मापन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जैसे– शिक्षण पात्रता परीक्षण, यांत्रिक अभियोग्यता परीक्षण, चिकित्सीय अभियोग्यता परीक्षण आदि इसी प्रकार के परीक्षण के उदाहरण हैं।

7. एक योग्यता परीक्षण एक बच्चे के ..... को मापता है–

(a) पूरे वर्ष में प्राप्त ज्ञान
(b) समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक कौशल
(c) आलोचनात्मक सोच का कौशल
(d) कुछ कार्यों को करने की क्षमता

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) अभियोग्यता (Aptitude) किसी क्षेत्र विशेष में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता तथा विशिष्ट क्षमता (Specific potentiality) अथवा भावी सफलता के अनुमान को इंगित करती है। एक योग्यता परीक्षण एक बच्चे के कुछ कार्यों को करने की क्षमता को मापता है। शैक्षिक, व्यावसायिक तथा मनोवैज्ञानिक परामर्श व मार्गदर्शन के कार्य में अभियोग्यता का विशेष महत्त्व होता है। यह किसी क्षेत्र विशेष में दक्षता अर्जित करने की क्षमता होती है।

8. मिनेसोटा पेपर फॉर्म बोर्ड परीक्षण, एक परीक्षण है जो किसी की___ को मापता है।

(a) मौखिक तर्क (b) योग्यता
(c) व्यक्तित्व (d) अंग्रेजी कौशल

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : मिनेसोटा पेपर फार्म बोर्ड परीक्षण, एक परीक्षण है जो किसी की योग्यता (Aptitude) को मापता है। अभियोग्यता से तात्पर्य व्यक्ति के उस रूझान, रूचि या योग्यता से होता है जो किसी विशिष्ट कार्य, पाठ्यक्रम या व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक व महत्वपूर्ण होती है। अभियोग्यता मापने के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का निर्माण किया गया है–
होर्न का कला अभियोग्यता सूची
मिनेसोटा पेपर फार्म बोर्ड परीक्षण
मियर कला परीक्षण
ग्रेवस डिजाइन निर्णय परीक्षण आदि।

9. एक योग्यता परीक्षा में, किसी व्यक्ति के भविष्य की उपलब्धियों की संभावनाओं का कोई भी अनुमान _____ है।

(a) एक संभावना
(b) एक निश्चितता
(c) एक प्रश्न
(d) एक धारणा

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) एक योग्यता परीक्षा में, किसी व्यक्ति के भविष्य की उपलब्धियों की संभावनाओं का कोई भी अनुमान एक संभावना है। अर्थात् भविष्य में उपलब्धियों की सम्भावना उसके अधिगम अनुभवों और योग्यता परीक्षा में किये प्रदर्शनों पर निर्भर करता है, जिसका कोई निश्चित परिणाम नहीं निकाला जा सकता है।

अभिवृत्ति का अर्थ एवं विशेषताएँ

10. निम्नलिखित में से कौन-सी अभिवृत्ति की विशेषता नहीं हैं?

(a) यह प्रेरणात्मक होती है।
(b) यह हमारे व्यवहार का आधार होती है।
(c) यह अस्थायी होती है।
(d) यह सीखी जाती है।

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) अभिवृत्ति बालक के मन:स्थिति तथा व्यवहार से सम्बंधित होती है जो स्थायी होती है। जो बाते बालक के मन में बैठा दी गई है वह उसके व्यवहार में आ जाती है जो काफी समय तक संचरण करती है।

11. विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन के लिए निम्न में से किस विधि का प्रयोग अध्यापक को नहीं करना चाहिए?

(a) दबाव से किसी बात या विचार के लिए राजी करना
(b) किसी विचार को दोहराना अथवा दृढ़तापूर्वक व्यवहार
(c) किसी प्रशंसनीय व्यक्ति के द्वारा समर्थन एवं स्वीकृति
(d) संदेश के साथ साहचर्य स्थापित करना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) विद्यार्थियों के अभिवृत्ति के परिवर्तन के लिए अध्यापक को किसी भी प्रकार के नकारात्मक साधन का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि विद्यार्थियों में कुण्ठा भावना का विकास हो सकता है तथा वह विद्यार्थी उस अध्यापक के साथ सहजता का अनुभव नहीं कर पाता है।

12. अभिवृत्ति सम्प्रत्यय है

(a) संज्ञानपरक (b) क्रियापरक
(c) संवेगात्मक (d) ये सभी

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) अभिवृत्ति किसी विषय वस्तु या घटना के प्रति एक तरह का दृष्टिकोण रखने की मानसिक क्रिया है जिसमें संज्ञापरक, क्रियापरक तथा संवेगात्मक प्रत्यय पाया जाता है।

13. अभिवृत्ति है

(a) एक भावात्मक प्रवृत्ति जो अनुभव के द्वारा संगठित होकर किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के प्रति पसंदगी या नापसंदगी के रूप में प्रतिक्रिया करती है
(b) एक ऐसी विशेषता जो व्यक्ति की योग्यता का परिचायक है जिसे किसी प्रदत्त क्षेत्र में विशिष्ट प्रशिक्षण, ज्ञान अथवा कौशल से सीखा जा सकता है
(c) व्यक्ति की बीजभूत क्षमता जो कि विशिष्ट प्रकार की होती है
(d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) अभिवृत्ति एक भावनात्मक प्रवृति होती है जो अनुभव द्वारा प्राप्त होता है तथा अनुभव के द्वारा संगठित होकर किसी वस्तु के पसंदगी या नापसंदगी के रूप में मनोवैज्ञानिक रुप से प्रतिक्रिया करती है।

14. पृथक-पृथक समजातीय समूहों के व्यक्तियों के प्रति बच्चों की अभिवृत्ति साधारणतया आधारित होती है

(a) उनके अभिभावकों की चित्तवृत्ति पर
(b) उनमें समकक्षियों की अभिवृत्ति पर
(c) दूरदर्शन के प्रभाव पर
(d) उनके सहोदरों की अभिवृत्ति पर

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (a) बच्चे जिस परिवेश से आते है उन पर उनके परिवेश का सीधा असर पड़ता है तथा उनके अभिभावकों के गुणों का स्थानान्तरण उनमें होता है। तथा उसी के अनुसार उनमें आदतों एवं अभिवृतियों का विकास होता है। इसमे परिवार एवं अभिभावक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है।

अभिवृत्ति मापन

15. थर्स्टन तथा लिकर्ट निम्न में किसके मापन से सम्बन्धित है?

(a) बुद्धि (b) अभिवृत्ति
(c) मूल्य (d) व्यक्तित्व

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (b) सन् 1927 में थर्स्टन ने अभिवृत्ति मापन के लिए तुलनात्मक निर्णय के नियम का प्रतिपादन किया, जो अभिवृत्ति मापन का पहला परिष्कृत मापक था। सन् 1932 में लिकर्ट ने अभिवृत्ति मापन की योग निर्धारण विधि को विकसित किया।

16. किस पेशे में अभिवृत्ति जांच का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है।

(a) मार्गदर्शन परामर्शक (b) चिकित्सक
(c) वकील (d) इंजीनियर

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) मार्गदर्शन एवं परामर्श में अभिवृत्ति (Aptitude) जाँच का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। मार्गदर्शन एवं परामर्श में व्यक्ति को अपने आपकों समझने, समझाने तथा समस्या–समाधान के लिए प्रेरित के, आत्मविश्वास जागृत करने, सही दिशा की ओर अग्रसर होने में सहायता प्रदान की जाती है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति के अभिवृत्ति, मनोवृत्ति, मानसिक स्तर, रुचि आदि की जाँच की जाती है, तद्नुरूप उन्हें मार्गदर्शन एवं परामर्श दिया जाता है।

17. निम्नलिखित में से किसका उपयोग मनोवृत्ति के परीक्षणों में किया जाता है?

(a) अभिक्षमता परीक्षण
(b) उपलब्धि परीक्षण
(c) बुद्धिमता परीक्षण (आईक्यू टेस्ट)
(d) लिकर्ट स्केल

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) मनोवृत्ति (Attitude) के मापन हेतु निम्न परीक्षणों का उपयोग किया जाता है–

- थर्सटन का युग्म तुलनात्मक निर्णय विधि
- थर्सटन एवं चेव का समदृष्टि अंतर विधि
- लिकर्ट का योग निर्धारण विधि
- सफीर का क्रमबद्ध अंतराल विधि
- गटमैन का स्केलोग्राम विधि

18. ..... को मापने के लिए क्रम निर्धारण मान (रेटिंग स्केल) का उपयोग किया जाता है।

(a) बुद्धि (b) अभिवृत्ति
(c) उपलब्धि (d) कौशल

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : क्रम निर्धारण मान (रेटिंग स्केल) का उपयोग अभिवृत्ति को मापने के लिए किया जाता है। इस विधि में अभिवृत्ति का मापन करने के लिए कुछ कथनों का प्रयोग किया जाता है। ये कथन किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान, जिसके प्रति अभिवृत्ति का मापन करना होता है, के सम्बन्ध में कुछ बात व्यक्त करते हैं। व्यक्ति के द्वारा इन कथनों पर दी गयी प्रतिक्रिया के आधार पर उसके अभिवृत्ति का मापन किया जाता है।

19. 'बॉब एक मॉडल हवाई जहाज को एक साथ रख सकते हैं।' यह कथन, अभिवृत्ति परीक्षण की किस विशेषता का संकेत है?

(a) लिपिकीय चिंतन (b) स्थानिक चिंतन
(c) संगठनात्मक चिंतन (d) बौद्धिक चिंतन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : यदि बॉब एक मॉडल हवाई जहाज को एक साथ रख सकता है तो यह अभिवृत्ति परीक्षण की स्थानिक चिंतन की विशेषता का संकेत है। स्थानिक चिंतन में स्थानिक चित्रण (Spatial mapping) व कल्पनाशक्ति शामिल होता है। अभिक्षमता परीक्षण के निर्माण की विधि लगभग वही है जो किसी बुद्धि परीक्षण के निर्माण में की जाती है। भेदक अभिक्षमता परीक्षण (Differential Aptitude Test) के अंतर्गत शाब्दिक बोध, आंकिक बोध, स्थानगत बोध, यांत्रिक बोध, लिपिकीय बोध या क्षमता, स्वभावगत झुकाव आदि से संबंधित परीक्षण होते हैं।

मूल्य का अर्थ एवं विशेषताएँ

20. चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करना किस मूल्य से सम्बन्धित है?

उत्तर: प्रजातांत्रिक मूल्य से

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करना प्रजातांत्रिक मूल्य से सम्बन्धित है। प्रजातांत्रिक मूल्य से तात्पर्य है, प्रजातंत्र के मूल सिद्धान्तों यथा- स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्वता एवं न्याय आदि में विश्वास और आस्था व्यक्त करना। कोठारी कमीशन ने अपने सुझाव में शिक्षा द्वारा प्रजातंत्र की सुदृढ़ता लाने की बात कही थी।

21. एक शिक्षक, विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है–

(a) अनुशासन की अनुभूति को विकसित कर
(b) आदर्श रूप से बर्ताव कर
(c) महान व्यक्तियों के बारे में बोलकर
(d) उन्हें अच्छी कहानियाँ सुनाकर

DSSSB PRT
UP TET 2011 (I-V)
UK TET 2014 (I-V)

Ans : (b) विद्यार्थी देखकर या अनुकरण के द्वारा बेहतर सीखते है इसलिए एक शिक्षक को आदर्शात्मक व्यवहार करना चाहिए। शिक्षक अपने आदर्शात्मक व्यवहार के द्वारा बालकों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित कर सकता है।

22. मूल्यों के वर्गीकरण में सम्मिलित नहीं है

(a) आध्यात्मिक मूल्य
(b) येन केन प्रकारेण धनार्जन का मूल्य
(c) नैतिक मूल्य
(d) सांस्कृतिक मूल्य

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (b) मूल्य का तात्पर्य मानव जीवन के वे सकारात्मक गुण जो लोगों को प्रभावित करते है- जैसे- नैतिक आचरण, आध्यात्मिकता, संस्कृति आदि। येन केन प्रकारेण धर्नाजन अनैतिक हो सकता है अतः यह मूल्य नहीं बल्कि दोष है।

23. मानवीय मूल्यों, जो प्रकृति में सार्वत्रिक हैं, के विकास का अर्थ है

(a) मतारोपण (b) अंगीकरण
(c) अनुकरण (d) अभिव्यक्ति

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (b) राधाकुमुद मुकर्जी ने लिखा है ''मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ एवं लक्ष्य है जिनका अंतरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और जो बाद में व्यक्तिनिष्ठ मान तथा अभिलाषाएँ बन जाती है।'' अर्थात मानवीय मूल्यों का पीढ़ी दर पीढ़ी अंगीकरण होता है और इसी प्रकार उनका विकास भी पीढ़ी दर पीढ़ी होता है।

24. सामाजिक मूल्यों में बदलाव को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है :

(a) असमानता को कम करना (b) सामाजिक परिवर्तन
(c) सामाजिक गतिशीलता (d) संस्कृति का संचरण

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : सामाजिक मूल्यों में बदलाव को सामाजिक परितर्वन के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन आंतरिक तथा बाहरी या संरचनात्मक दो रूपों में होती है। किसी युग के आदर्शों एवं मूल्यों में यदि पिछले युग के मुकाबले कुछ नयापन या परिवर्तन दिखाई पड़े तो उसे आंतरिक परिवर्तन कहेंगे और अगर किसी सामाजिक अंग जैसे परिवार, वर्ग, जातीय हैसियत, समूहों के स्वरूपों एवं आधारों में परिवर्तन परिलक्षित हो तो उसे संरचनात्मक परितर्वन कहेंगे। इन दोनों प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों के कारण सामाजिक मूल्यों, विश्वासों, नैतिक नियमों आदि में बदलाव दिखाई देता है।

EXAM POINT

- प्रकृति का नियम है कि– **कोई भी दो व्यक्ति पूर्णतः एक जैसे नहीं हो सकते**
- व्यक्तिगत विभिन्नता से सम्बन्धित प्रत्यय पर (Conception) सर्वप्रथम किस मनोवैज्ञानिक ने कार्य किया– **गाल्टन**
- बालकों की अभिवृत्ति के निर्धारण में ..... तत्वों की भूमिका है– **परिवार, समाज, समुदाय आदि**
- ''सम्भवतः व्यक्ति, योग्यता की विभिन्नताओं के बजाय व्यक्तित्व की विभिन्नताओं से अधिक प्रभावित होता है।'' वैयक्तिक विभिन्नता के सन्दर्भ में यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है– **टॉयलर**
- वैयक्तिक विभिन्नता को जानने की विधियाँ हैं– **बुद्धि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण एवं अभिरुचि परीक्षण**
- व्यक्तिगत शिक्षार्थी एक-दूसरे से ..... में भिन्न होते हैं– **विकास की दर**
- समायोजन से तात्पर्य स्वयं का विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन करना (Accommodating) है ताकि सन्तुष्ट किया जा सके– **आवश्यकताओं को**
- व्यक्तित्व स्थायी समायोजन है– **पर्यावरण के साथ, जीवन के साथ, प्रकृति के साथ**
- शिक्षार्थी वैयक्तिक भिन्नता प्रदर्शित करते हैं, अतः शिक्षक को– **सीखने के विविध अनुभवों को उपलब्ध कराना चाहिए**
- सह-शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के आधार पर शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के स्तर को बढ़ाने का औचित्य स्थापन किस आधार पर किया जा सकता है– **वैयक्तिक विभिन्नताओं को संतुष्ट करना**
- राहुल हर पाठ को बहुत जल्दी सीख लेता है, जबकि रोहित उसे सीखने में ज्यादा समय लेता है। यह विकास के ..... सिद्धान्त को दर्शाता है– **वैयक्तिक भिन्नता**
- विद्यालयों में किसके लिए वैयक्तिक भिन्नताओं को पूरा करना चाहिए– **यह समझने के लिए कि क्यों शिक्षार्थी सीखने के योग्य या अयोग्य है**
- शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को सम्बोधित करने के लिए विद्यालय किस प्रकार का सहयोग उपलब्ध करवा सकता है– **बाल केन्द्रित पाठ्यचर्या का पालन करना और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर उपलब्ध कराना**

- अध्यापन के समय अध्यापक को किन बातों का सर्वाधिक ध्यान रखना चाहिए– **वैयक्तिक भिन्नता**
- ''हममें से कुछ लोग, कुछ जो लम्बे हैं तथा कुछ जो छोटे हैं, कुछ जो गोरे हैं तथा कुछ काले, कुछ लोग मजबूत हैं तथा कुछ कमजोर हैं।'' यह कथन किस स्थापित सिद्धान्त पर आधारित है– **वैयक्तिक विभिन्नता पर**
- कक्षा में विद्यार्थियों के वैयक्तिक विभेद– **लाभकारी हैं क्योंकि विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक संरचनाओं को खोजने में अध्यापकों को प्रवृत्त करते हैं**
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं का क्षेत्र है– **लिंग भेद, शारीरिक संरचना, मानसिक योग्यताएँ**
- व्यक्तित्व का संगठन का स्वरूप है– **मनोवैज्ञानिक-शारीरिक**
- आत्म केन्द्रित व्यक्ति होता है– **अन्तर्मुखी**
- अपने ऊर्जा बल (Libido) को बाहर की ओर अभिव्यक्त करने वाले व्यक्ति का प्रकार होता है– **बहिर्मुखी व्यक्तित्व**
- वैयक्तिक भिन्नता का अर्थ है– **कोई दो व्यक्ति शारीरिक, मानसिक योग्यता और संवेगात्मक दशा में समान और एक जैसे नहीं होते**
- व्यक्तियों में एक-दूसरे से भिन्नता क्यों होती है– **वंशानुक्रम और वातावरण के बीच अन्योन्य क्रिया के कारण**
- अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी तथा उभयमुखी व्यक्तित्व का वर्गीकरण ..... द्वारा किया गया है– **युंग**
- बाह्य आभास के आधार पर व्यक्तित्व का वर्णन कहा जाता है– **प्रेक्षणात्मक दृष्टिकोण**
- व्यक्तिगत भेद पाए जाते हैं– **बुद्धि स्तर में, अभिवृत्ति में, गतिवाही योग्यता में**
- व्यक्तित्व का पहला प्रकारात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया– **हिप्पोक्रेटस ने**
- सह-शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के आधार पर शैक्षणिक क्षेत्रों में निष्पादन के स्तर को बढ़ाने का औचित्य स्थापन किस आधार पर किया जा सकता है– **यह वैयक्तिक भिन्नताओं को सन्तुष्ट करता है**
- शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को सम्बोधित करने के लिए एक विद्यालय किस प्रकार का सहयोग उपलब्ध करवा सकता है– **बाल केन्द्रित पाठ्यचर्या का पालन कराना और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर उपलब्ध करना**
- पढ़ाते समय सामान्य कक्षा में अध्यापक का सर्वाधिक ध्यान किस मनोवैज्ञानिक तथ्य पर होना चाहिए– **वैयक्तिक विभिन्नता**
- ''व्यक्ति उन मनोशारीरिक अवस्थाओं का गतिशील संगठन है, जो उसके पर्यावरण के साथ अद्वितीय सामंजस्य निर्धारित करता है'' कहलाता है– **व्यक्तित्व**
- प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट है। इसका अर्थ है कि– **कोई भी दो शिक्षार्थी अपनी योग्यताओं, रुचियों और प्रतिभाओं में एक समान नहीं होते**
- 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारम्भ करते हैं– **विद्यालय में**
- यदि कुछ विद्यार्थी कक्षा में अध्ययन की चित्तवृत्ति में नहीं हैं तो आप– **उन्हें उनकी रुचि अथवा आप अपने विषय के अनुसार रुचिपूर्ण चीजें बताएंगे**
- विद्यालय से विद्यार्थियों के भाग जाने का कारण है– **कक्षा शिक्षण में रुचि का अभाव**
- बच्चों में रुचि बनाए रखने के लिए आप कौन-सी विधि का चयन करेंगे– **बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे**
- वे कौन-से बाह्य कारक हैं जो एक बच्चे को कक्षा में रुचि लेने से रोकते हैं– **संस्कृति और प्रशिक्षण**
- थर्स्टन तथा लिकर्ट किसके मापन से सम्बन्धित है– **अभिवृत्ति**
- रुचि का सम्बन्ध है– **अवधान**
- हम सभी अपनी बुद्धि, प्रेरणा, अभिरुचि आदि के सन्दर्भ में भिन्न होते हैं। यह सिद्धान्त सम्बन्धित है– **वैयक्तिक भिन्नता से**
- अभिवृत्ति सम्प्रत्यय है– **संवेगात्मक**
- बच्चे के उचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए उसका स्वस्थ शारीरिक विकास एक महत्वपूर्ण पूर्व आवश्यकता है। यह कथन– **सही है, क्योंकि शारीरिक विकास, विकास के अन्य पक्षों के साथ अन्तःसम्बन्धित है**
- मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है– **वंशानुक्रम एवं वातावरण का**
- शारीरिक विकास का क्षेत्र है– **स्नायुमण्डल**
- शरीर के आकार में वृद्धि होती है, क्योंकि– **शारीरिक और गत्यात्मक विकास**
- मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं– **वंशानुक्रम, परिवार का वातावरण, परिवार की सामाजिक स्थिति**
- मानसिक स्वास्थ्य और ..... में घनिष्ठ सम्बन्ध है– **समायोजन**
- ''मानसिक स्वास्थ्य के नियमों को खोजना और उन्हें बनाए रखना'' अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है– **हैडफील्ड**
- मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का प्रमुख उद्देश्य है– **बालक के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करना, कुसमायोजन का निवारण करना**
- शारीरिक विकास का क्षेत्र है– **स्नायुमण्डल, माँसपेशियों की वृद्धि, एण्डोक्राइन ग्लैण्डस**

15.

आकलन/मूल्यांकन

आकलन/मापन/मूल्यांकन का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. परम शून्य स्थित होती है–

(a) नामित स्केल में (b) अंतरित स्केल में
(c) क्रमित स्केल में (d) आनुपातिक स्केल में

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (d) आनुपातिक स्केल में अंतरित स्केल के सभी गुणों के साथ–साथ परम शून्य या वास्तविक शून्य की संकल्पना निहित रहती है। परम शून्य वह स्थिति है जिस पर कोई गुण पूर्णरूपेण अस्तित्वविहिन हो जाता है। जैसे लम्बाई, भार या दूरी का मापन आनुपातिक मापन हैं।

2. यह खुले तौर पर अवलोकित किया जाता है कि मापन की तुलना में ..... शामिल होता है

(a) सरकार (b) वातावरण
(c) अधिगम (d) मूल्यांकन

DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT)

Ans. (d) **:** यह खुले तौर पर अवलोकित किया जाता है कि मापन की तुलना में मूल्यांकन शामिल होता है।

3. अपने मूल्य की निष्पक्ष प्रशंसा की अभिवृत्ति एक मानसिक ..... के विचार से पाई जा सकती है।

(a) मूल्यांकन (b) व्यवहार
(c) माप (d) प्रतिफल

DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT)

Ans. (c) **:** अपने मूल्य की निष्पक्ष प्रशंसा की अभिवृत्ति एक मानसिक माप के विचार से पाई जा सकती है।

4. ''वे सभी क्रियाकलाप जो शिक्षक व शिक्षार्थी द्वारा स्वयं को आकलित करने के लिये किये जाते हैं, जो एक प्रतिपुष्टि के रूप में शिक्षण व अधिगम क्रियाकलापों को सुधारने हेतु सूचना प्रदान करते हैं।'' उसे क्या कहा जाता है?

(a) उपलब्धि परीक्षण (b) आकलन
(c) परीक्षा (d) अधिगम

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) वे सभी क्रियाकलाप जो शिक्षक व शिक्षार्थी द्वारा स्वयं को आकलित करने के लिए किये जाते हैं, जो एक प्रतिपुष्टि के रूप में शिक्षण व अधिगम क्रियाकलापों को सुधारने हेतु सूचना प्रदान करते हैं उसे आकलन कहा जाता है। आकलन मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं– (i) योगात्मक या संकलनात्मक आकलन (ii) निर्माणात्मक या रचनात्मक आकलन।

5. व्यक्तिगत भिन्नताओं के मापन की सर्वोत्तम मापनी है-

(a) नमित मापनी (b) अन्तराल मापनी
(c) क्रमसूचक मापनी (d) समानुपाती मापनी

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (b) अन्तराल मापनी के द्वारा व्यैक्तिक भिन्नताओं का परीक्षण सर्वोत्तम तरीके से त्रुटि रहित रूप से किया जा सकता है।

6. विद्यार्थी और शिक्षक के बीच की एक संवादात्मक प्रक्रिया जो उनके सीखने के वातावरण में बदलाव लाती है, वह है-

(a) मूल्यांकन (b) आकलन
(c) a व b दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) मूल्यांकन व आकलन वह प्रणाली होती है जिसके द्वारा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच एक संवादात्मक प्रक्रिया चलती है और इसी के परिणामस्वरूप सीखने के वातावरण में बदलाव आता है।

7. आकलन

(a) बच्चों को लेवल (नाम देने) और वर्गीकृत करने की अच्छी रणनीति है
(b) बच्चों में प्रतियोगितात्मक भावना को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना है
(c) सीखने को सुनिश्चित करने के लिए तनाव और दबाव को उत्पन्न करता है
(d) सीखने में सुधार का एक तरीका है

DSSSB PRT
CTET 2016 (I-V)

Ans : (d) आकलन एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा नहीं यदि विद्यार्थी का अधिगम किसी कारणवश बाधित हो रहा है तो उसको पहचान कर उसमें सुधार किया जाता है इसलिए इसे सुधार का तरीका माना जाता है।

8. आकलन के बारे में निम्नलिखित कथनों में कौन–से कथन सही हैं?

(1) आकलन से विद्यार्थियों को यह सहायता मिलनी चाहिए कि वे अपनी शक्तियों और रिक्तियों को देख सकें और शिक्षक तदनुसार उन्हें ठीक कर सकें।
(2) आकलन तभी सार्थक होता है जब विद्यार्थियों का तुलनात्मक मूल्यांकन भी हो।
(3) आकलन केवल स्मरण शक्ति का ही नहीं, बोधन और अनुप्रयोग का भी होना चाहिए।
(4) आकलन तब तक उद्देश्यपूर्ण नहीं हो सकता जब तक उससे भय और चिंता का संचार न हो।

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 2 और 4 (d) 1 और 3

DSSSB PRT
CTET 2016 (VI-VIII)

Ans : (d) आकलन एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा नहीं। अर्थात् आकलन से विद्यार्थियों को यह सहायता मिलनी चाहिए कि वे अपनी शक्तियों और रिक्तियों को देख सके और शिक्षक तद्नुसार उसे ठीक कर सके। इसके अलावा आकलन केवल स्मरण शक्ति का ही नहीं बोधन और अनुप्रयोग का भी होना चाहिए।

9. निम्नलिखित मापन के स्तरों में सबसे अच्छा कौन है?

(a) नामिक (b) अनुपात
(c) क्रमिक (d) अन्तराल

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (b) मापन के स्तरों को मापने के लिए सबसे अच्छी विधि अनुपात विधि होती है जिसमें दो या अधिक तथ्यों को मापने के लिए अनुपात का सहारा लिया जाता है। इससे मापन में त्रुटि की संभावना न्यूनतम रहती है।

10. वह मापनी जिसमें अन्तराल के समस्त गुण के साथ परम शून्य भी हो, कहलाती है–

(a) नामित मापनी (b) क्रमसूचक मापनी
(c) अन्तराल मापनी (d) अनुपात मापनी

UPTET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (d) वह मापनी जिसमें अंतराल मापनी के समस्त गुण के साथ परम शून्य भी हो, अनुपात मापनी कहलाती है। परम शून्य वह स्थिति है जिस पर कोई गुण पूर्ण रूपेण अस्तित्वविहीन हो जाता है। जैसे, लम्बाई, भार, या दूरी का मापन आनुपातिक मापन है।

11. निम्नलिखित में से कौन सी कार्य विधि (ऑपरेशन) हमें जानकारी को मान्य करने में मदद करती है?

(a) मूल्यांकन (b) अपसारी चिंतन
(c) अभिसारी चिंतन (d) संज्ञान

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : मूल्यांकन किसी भी जानकारी को मान्य करने में मदद करती है। मूल्यांकन का अर्थ है मूल्य का अंकन करना। मूल्यांकन गुणों या विशेषताओं की वांछनीयता स्पष्ट करता है। किसी व्यक्ति में उपस्थित गुणों की मात्रा का विश्लेषणात्मक अथवा गुणात्मक विवरण मूल्यांकन प्रस्तुत करता है और यह बताता है कि किसी निश्चित उद्देश्य हेतु वह कितना उपयुक्त या संतोषप्रद है।

मूल्यांकन के क्षेत्र एवं उद्देश्य

12. मूल्यांकन को–

(a) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक भाग होना चाहिए।
(b) केवल नम्बरों के संदर्भ में करना चाहिए।
(c) वस्तुनिष्ठ प्रकार के लिखित कार्यों पर आधारित होना चाहिए।
(d) एक अलग गतिविधि के रूप में लेना चाहिए।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (a) मूल्यांकन को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक भाग होना चाहिए। मूल्यांकन एक सतत् प्रक्रिया है तथा यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। सतत् का तात्पर्य निरन्तर से है। इसका अर्थ है, आकलन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक नियमित गतिविधि बनाना। सतत् मूल्यांकन में छात्रों के प्रदर्शन को औपचारिक तथा अनौपचारिक तरीके से आँका जाता है। यह शिक्षण के साथ-साथ चलता रहता है। छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक अवलोकन, साक्षात्कार, स्व तथा सहपाठी आकलन, समूह कार्य, परियोजना आदि विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करते हैं।

13. बच्चों के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित में से कौन से कारण होने चाहिए?

(i) बच्चों को 'गैर-उपलब्धि वाले', 'निम्न-उपलब्धि वाले', 'औसत' एवं 'उच्च–उपलब्धि वाले' के रूप में अलग करना एवं नाम देना।
(ii) कक्षा में शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं में सुधार करना।
(iii) समय के साथ बच्चों में होने वाले अधिगम परिवर्तनों एवं प्रगति के बारे में पता लगाना।
(iv) बच्चे की क्षमताओं, संभावनाओं, सशक्त पक्षों एवं चुनौतीपूर्ण पक्षों के बारे में माता–पिता के साथ चर्चा करना।

(a) (i), (ii), (iii) (b) (ii), (iii), (iv)
(c) (ii), (iv) (d) (i), (ii), (iii), (iv)

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (b) : बच्चों के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित कारण होने चाहिए–

- कक्षा में शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं में सुधार करना। इस प्रकार के मूल्यांकन को संरचनात्मक या रचनात्मक मूल्यांकन कहा जाता है। इसका प्रयोग सीखने की प्रक्रिया के दौरान किया जाता है।
- समय के साथ बच्चों में होने वाले अधिगम परितर्वनों एवं प्रगति के बारे में पता लगाना।
- बच्चों की क्षमताओं, सम्भावनाओं, सशक्त पक्षों एवं चुनौतीपूर्ण पक्षों के बारे में माता–पिता के साथ चर्चा करना।

अतः बच्चों को 'गैर उपलब्धि वाले', 'निम्न उपलब्धि वाले', 'औसत' एवं 'उच्च उपलब्धि वाले' के रूप में अलग करना एवं नाम देना मूल्यांकन का न तो उद्देश्य होता है और न ही कारण। बच्चों का मूल्यांकन उनकी उपलब्धि के आधार पर वर्गीकरण करने के लिए अवश्य किया जाता है किन्तु मूल्यांकन का उद्देश्य उनको हमेशा के लिए उसी वर्ग में रखकर नाम देना कदापि नहीं हो सकता है।

14. आकलन का प्राथमिक उद्देश्य क्या होना चाहिए?

(a) विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के आधार पर उनको नामांकित करना।
(b) रिपोर्ट कार्ड में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण अंकित करना।
(c) विद्यार्थियों के लिए श्रेणी निश्चित करना।
(d) संबंधित अवधारणाओं के बारे में बच्चों की स्पष्टता तथा भ्रांतियों को समझना।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) आकलन का प्राथमिक उद्देश्य संबन्धित आवधारणाओं के बारे में बच्चों की स्पष्टता तथा भ्रांतियों को समझना, होना चाहिए अर्थात् बच्चों का आकलन इसलिए किया जाना चाहिए ताकि यह पता लगाया जा सके कि उनको जो कुछ भी सिखाया गया है उसमें से वे कितना सीखे हैं और जो सीखे हैं उसमें कितनी स्पष्टता है। इसके अतिरिक्त छात्रों की क्षमताओं, अध्यापक की योग्यता, शैक्षिक कार्यक्रम एवं शिक्षण विधियों की उपयुक्तता की भी जाँच आकलन द्वारा की जाती है।

15. विज्ञान में मूल्यांकन-

(a) पूर्णतया वैज्ञानिक तथा बहुविकल्पीय परीक्षण होना चाहिए
(b) विद्यार्थियों की क्रियाकलापों के अन्त में होना चाहिए
(c) सभी क्रियाकलापों का एकीकृत भाग होना चाहिए
(d) केवल विषय व प्रत्ययों को शामिल करें तथा प्रक्रिया व अभिवृत्ति को छोड़ दें

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) विज्ञान में मूल्यांकन का सबसे सही तरीका यह होता है कि बालक के सभी क्रियाकलापों का एकीकृत एवं समावेशी रुप से मूल्यांकन किया जाए।

16. ..... की उपलब्धि का सफल अभ्यास एक वास्तविक परीक्षण है।

(a) शिक्षक (b) प्रधानाध्यापक
(c) अधिगम (d) मूल्यांकन

Dsssb Assistant Primary Teacher (PRT)

Ans. (c) **:** अधिगम की उपलब्धि का सफल अभ्यास एक वास्तविक परीक्षण है।

17. मूल्यांकन का उद्देश्य है–

(a) बालकों को धीमी गति से सीखने वाले एवं प्रतिभाशाली बालकों के रूप में लेबल करना
(b) जिन बालकों को उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है, उनकी पहचान करना
(c) अधिगम की कठिनाइयों व समस्या वाले क्षेत्रों का पता लगाना
(d) उत्पादक जीवन जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तक तैयार कर पाई है, का पुष्टिपोषण प्रदान करना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) किसी कार्य के पूर्ण होने के बाद उस कार्य का मूल्यांकन किया जाता है कि वह कार्य अपने उद्देश्य को किस सीमा तक प्राप्त कर सका है तथा उसके लिए उचित पुष्टि पोषण प्रदान किया जाता है ताकि पूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति हो सके।

18. मूल्यांकन का उद्देश्य है–

(a) बच्चे को उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण घोषित करना
(b) बच्चा क्या सीखा है जानना
(c) बच्चे के सीखने में आई कठिनाइयों को जानना
(d) उपरोक्त सभी

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2014 (VI-VIII)

Ans: (d) मूल्यांकन अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह पढ़ाने में शिक्षकों की तथा सीखने में विद्यार्थियों की मदद करता है। मूल्यांकन एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह मूल्य निर्धारण में शैक्षिक स्तर अथवा विद्यार्थियों की उपलब्धियों को जानने में सहायक होता है। इसके मूल उद्देश्य है बच्चा क्या सीखा है जानना, बच्चे के सीखने में आयी कठिनाइयों को जानना, उनका समाधान करना और अधिगम प्रक्रिया को आगे बढ़ाना। बच्चे को उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण घोषित करना मूल्यांकन का मूल उद्देश्य नहीं है बल्कि बच्चे के प्रगति का आकलन करना है।

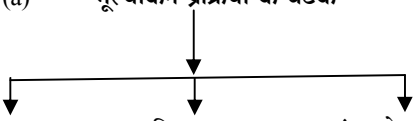
19. मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण बिन्दु हैं

(a) उद्देश्य, अधिगम अनुभव व मूल्यांकन के उपकरण
(b) छात्र, अध्यापक व उद्देश्य
(c) छात्र, समाज व अधिगम के अनुभव
(d) छात्र,परीक्षा व परिणाम

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (a)

मूल्यांकन प्रक्रिया के घटक



मूल्यांकन प्रक्रिया वह प्रक्रिया होती है जिसमे शिक्षक द्वारा यह आकलन किया जाता है कि उसके द्वारा किया गया शिक्षण कार्य कितना सफल रहा।

20. मूल्यांकन किया जाना चाहिए

(a) मूल्यांकन से बच्चे पढ़ेंगे
(b) पता लगता है बच्चों की उपलब्धि का
(c) बच्चों के सीखने के स्तर का ज्ञान होता है
(d) शिक्षकों की उपलब्धि का पता लगता है।

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) मूल्यांकन वह प्रक्रिया होती है जिसके द्वारा बालक के सीखने के स्तर का पता लगाया जाता है तथा साथ ही अधिगम प्रक्रिया में उत्पन्न होने वाली समस्या का पता लगाया जाता है ताकि उसका उचित समाधान किया जा सके।

21. आकलन उद्देश्यपूर्ण होता है यदि–

(a) इससे विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रतिपुष्टि (फीडबैक) प्राप्त हो।
(b) यह केवल एक बार वर्ष के अंत में हो।
(c) विद्यार्थियों की उपलब्धियों में अंतर करने के लिए तुलनात्मक मूल्यांकन किया जाए।
(d) इससे विद्यार्थियों में भय और तनाव का संचार हो।

DSSSB PRT
CTET 2016 (I-V)

Ans : (a) शिक्षा प्रक्रिया में आकलन छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान के स्तर को ज्ञात करने हेतु किया जाता है जिससे शिक्षण प्रक्रिया में यथोचित सुधार का आधार प्रस्तुत किया जा सके। इसके अलावा आकलन छात्रों, अध्यापकों तथा अभिभावकों सभी हेतु पृष्ठपोषण प्रस्तुत करता है ये सभी स्व आकलन, सहयोगी आकलन तथा बाह्य आकलन के परिणामों का प्रयोग अपनी स्थिति एवं कार्य प्रणाली को सुधारने हेतु करते हैं।

22. मूल्यांकन से अभिप्राय है–

(a) छात्रों की आवश्यकता का पता लगाना
(b) छात्रों की बुद्धि का पता लगाना
(c) छात्रों के अधिगम की सफलता व असफलता का अध्ययन करना
(d) स्वास्थ्य परीक्षण करना।

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (c) मूल्यांकन से अभिप्राय है, छात्रों के अधिगम की सफलता व असफलता का अध्ययन करना। मूल्यांकन के द्वारा छात्रों के अधिगम त्रुटियों की पहचान की जाती है, छात्रों का वर्गीकरण किया जाता है तथा कक्षोन्नति का कार्य किया जाता है।

23. अधिगम में आकलन किस लिए आवश्यक होता है?

(a) ग्रेड एवं अंकों के लिए
(b) जाँच परीक्षण के लिए
(c) प्रेरणा के लिए
(d) पृथक्करण और श्रेणीकरण के उद्देश्य को प्रोत्साहन देने के लिए

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (c) अधिगम में आकलन प्रेरणा के लिए आवश्यक है। यह एक प्रकार के प्रतिपुष्टि का कार्य करता है जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपने अधिगम त्रुटियों को अध्यापक की सहायता से सुधार सकते हैं तथा अध्यापक अपने शिक्षण विधियों में संशोधन व परिमार्जन कर अधिगम को पुष्ट बना सकता है।

24. निम्नलिखित में से कौन–सा आकलन करने का सर्वाधिक उपयुक्त तरीका है?

(a) आकलन शिक्षण–अधिगम में अन्तर्निहित प्रक्रिया है
(b) आकलन एक शैक्षणिक सत्र में दो बार करना चाहिए– शुरु में और अन्त में
(c) आकलन शिक्षक के द्वारा नहीं बल्कि किसी बाह्य एजेन्सी के द्वारा कराना चाहिए
(d) आकलन सत्र की समाप्ति पर करना चाहिए

DSSSB PRT
CTET 2015 (I-V)

Ans : (a) आकलन शिक्षण–अधिगम में अंतर्निहित प्रक्रिया है। वास्तव में जब पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है तो उद्देश्य का निर्धारण, पाठ्य वस्तु का संगठन, पाठ्य वस्तु क्रिया और फिर मूल्यांकन शामिल होता है। इसी प्रकार कक्षा शिक्षण में भी उद्देश्य निर्धारण, प्रारम्भिक बिन्दु और आकलन अंतिम बिन्दु होता है। आकलन से शिक्षण विधियों में संशोधन व परिमार्जन किया जा सकता है जो शिक्षण प्रक्रिया का आवश्यक अंग है।

25. शैक्षिक विकास में मूल्यांकन का अर्थ है

(a) छात्रों की प्रगति का आकलन
(b) कक्षा अभिलेखों का मूल्यांकन
(c) कार्य निष्पादन का मूल्यांकन
(d) ज्ञान क्षमता का मूल्यांकन

UPTET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) शैक्षिक विकास में मूल्यांकन का अर्थ है, छात्रों की प्रगति का आकलन करना। अध्यापन–अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नये उद्देश्यों को तय करने, अधिगम अनुभव प्रस्तुत करने और विद्यार्थी के सम्प्राप्ति की जाँच करने एवं उनकी प्रगति का आकलन करने में मूल्यांकन–अधिगम काफी योगदान देता है। इसके अतिरिक्त शिक्षण और पाठ्य विवरण सुधारने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

26. आकलन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है क्योंकि:

(a) आकलन से अध्यापक बच्चों के अधिगम को समझता है और उससे अपने शिक्षण की प्रतिपुष्टि भी करता है।
(b) आकलन ही एकमात्र तरीका है जो आश्वस्त करता है कि शिक्षकों ने पढ़ाया और बच्चों ने सीखा।
(c) आज के समय में केवल अंक ही शिक्षा में महत्त्वपूर्ण हैं।
(d) बच्चों को अंक दिए जाने चाहिए ताकि वे समझ सकें कि अपने सहपाठियों की तुलना में कहाँ पर हैं।

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans: (a) आकलन एक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक बच्चों तथा अपने शिक्षण विधि का विश्लेषण करता है कि बच्चों की अधिगम क्षमता का विकास हुआ है कि नहीं, अगर नहीं हुआ तो शिक्षण विधि में क्या कमी है। इस प्रकार शिक्षक को प्रतिपुष्टि मिल जाती है साथ ही बच्चों के अधिगम का निर्धारण भी किया जा सकता है।

27. मूल्यांकन (assessment) का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए –

(a) यह निर्णय लेना कि क्या विद्यार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाना चाहिए
(b) सीखने में होने वाली कमियों का निदान और उपचार करना
(c) शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ निकालना
(d) शिक्षार्थियों की उपलब्धि को मापना

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (b) मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य सीखने में होने वाली कमियों का निदान तथा उपचार करना होना चाहिए।

28. निम्नलिखित में से कौन-सा ब्लूम के पुनर्संशोधित वर्गीकरण में 'मूल्यांकन' (evaluating) के क्षेत्र को प्रदर्शित करता है?

(a) आँकड़ों का प्रयोग करते हुए ग्राफ (graph) अथवा चार्ट (chart) का निर्माण करना
(b) एक समाधान की तार्किक सुसंगतता का परीक्षण करना
(c) प्रदत्त आँकड़ों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना
(d) वस्तुओं के श्रेणीकरण हेतु एक नूतन पद्धति का निर्माण करना

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (b) शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन उपागम के प्रयोग का श्रेय बेंजामिन एस ब्लूम को दिया जाता है। इन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर वर्ष 1956 में इस उपागम को प्रस्तुत किया। मूल्यांकन उपागम के तीन प्रमुख अंग– (i) शिक्षण उद्देश्य (ii) अधिगम क्रियाएँ तथा (iii) व्यवहार परिवर्तन होते हैं। मूल्यांकन के ये तीन अंग परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित होकर एक समाधान की तार्किक सुसंगतता का परीक्षण करते हैं।

अधिगम का आकलन (योगात्मक आकलन)

29. अर्जित ज्ञान का परीक्षण करने के लिए कौन-सी विधि है

(a) आकलन विधि (b) प्रोजेक्ट विधि
(c) प्रश्नोत्तर उत्तरोत्तर विधि (d) अवलोकनात्मक विधि

Dsssb Assistant Teacher Education Department

Ans. (a) **:** अर्जित ज्ञान का परीक्षण करने के लिए आकलन विधि का प्रयोग करते है।

30. योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है–

(a) समय विशेष एवं विभिन्न कार्यों पर एक विद्यार्थी ने कितना अच्छा निष्पादित किया है, का पता लगाना
(b) अधिगम को सुगम बनाना व ग्रेड न प्रदान करना
(c) ऐसे विद्यार्थी का पता लगाना जो अपने साथियों के समकक्ष सम्प्राप्ति में कठिनाई अनुभव कर रहा है
(d) अगली इकाई के अनुदेशन से पूर्व प्रगति का पता लगाना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) योगात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है– समय विशेष एवं विभिन्न कार्यों पर एक विद्यार्थी ने कितना अच्छा निष्पादन किया है, का पता लगाना। स्कूल में योगात्मक आकलन में ज्यादा प्रत्यक्षता होती है। यह एक ग्रेड या इकाई या सत्र के अंत में अधिगम के परिणामों की जाँच करता है।

31. निम्नलिखित में से कौन-सा अधिगम के आकलन को उजागर करता है?

(a) शिक्षक किसी विद्यार्थी के निष्पादन का आकलन दूसरों के निष्पादन की तुलना में करता है।
(b) शिक्षक विद्यार्थियों की चिंतन प्रक्रियाओं पर ध्यान देने के अलावा उनकी अवधारणात्मक समझ का भी आकलन करता है।
(c) शिक्षक 'मानक' उत्तरों से विद्यार्थियों के उत्तरों की तुलना करके उनका आकलन करता है।

(d) शिक्षक पाठ्य-पुस्तकों में दी गई जानकारी के आधार पर विद्यार्थियों का आकलन करता है।

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (b) अधिगम के आकलन का प्रयोग करके शिक्षक अपने विद्यार्थियों की चिंतन प्रक्रियाओं पर ध्यान देने के अलावा उनकी अवधारणात्मक समझ को हर स्थान पर विद्यार्थियों के अधिगम की बढ़त की जाँच के लिए महत्त्वपूर्ण सूचक माना जाता है।

32. क्रिस्टीना अपनी कक्षा को क्षेत्र-भ्रमण पर ले जाती है और वापस आने पर अपने विद्यार्थियों के साथ भ्रमण पर चर्चा करती है। यह ..... की ओर संकेत करता है।

(a) आकलन के लिए सीखना
(b) आकलन का सीखना
(c) सीखने का आकलन (Assessment)
(d) सीखने के लिए आकलन

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (c) किसी भी प्रकार से शिक्षार्थी को प्रायोगिक या व्यावहारिक ज्ञान देकर बाद में उस विषय पर चर्चा करके यह देखा जाता है कि शिक्षार्थी कितना सीखा, सीखने में त्रुटियों का पता लगाकर उन्हें पुनः सुधारने का प्रयास किया जाता है। यह सीखने का आकलन के अन्तर्गत किया जाता है।

33. जब सेमेस्टर के अंत में परीक्षण दिए जाते हैं, तो इसे जाना जाता है–

(a) सारांशित आकलन (b) नैदानिक आकलन
(c) अंतरिम आकलन (d) रचनात्मक आकलन

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (a) जब सेमेस्टर के अंत में परीक्षण दिये जाते हैं तो इसे सारांशित या योगात्मक आकलन (Summative Assessment) कहा जाता है। इस विधि का उपयोग किसी पूर्व–विकसित शैक्षिक कार्यक्रम, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षण सामग्री की उपयुक्तता की जाँच करने के लिए किया जाता है। इससे स्वीकृत शैक्षिक कार्यक्रमों, शिक्षण विधियों आदि को जारी रखने के सम्बन्ध में निर्णय लेने में सहायता मिलती है। योगात्मक मूल्यांकन का इस्तेमाल यह जानने के लिए किया जाता है कि किस सीमा तक शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता मिली है।

34. बेंचमार्क ऑकलन को यह भी कहा जाता है :

(a) योगात्मक आकलन (b) निदानात्मक आकलन
(c) अंतरिम आकलन (d) निर्माणात्मक आकलन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बेंचमार्क आकलन को अंतरिम आकलन भी कहा जाता है। यह योगात्मक आकलन तथा रचनात्मक आकलन के बीच का आकलन है। इसका उपयोग छात्रों के अधिगम में सुधार करने और रचनात्मक मूल्यांकन को लागू करने में किया जाता है।

अधिगम के लिए आकलन (निर्माणात्मक आकलन)

35. शिक्षक सीखने के लिए मूल्यांकन और सीखने के मूल्यांकन दोनों का उपयोग कर सकते हैं–

(a) बच्चों की प्रगति और उपलब्धि स्तर को जानने में
(b) बच्चे की सीखने की जरूरतों को जानने में और तदनुसार शिक्षण रणनीति का चयन करने में
(c) आवधिक अंतरालों पर बच्चे के प्रदर्शन का आकलन करने और उसके प्रदर्शन को प्रमाणित करने में
(d) बच्चों की प्रगति की निगरानी करने और उनके सीखने के अंतराल को भरने के लिए उचित लक्ष्य निर्धारित करने में

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : शिक्षक 'सीखने के लिए मूल्यांकन' और 'सीखाने के मूल्यांकन' दोनों का उपयोग बच्चों की प्रगति और उपलब्धि स्तर को जानने में कर सकते हैं। अर्थात् सीखने के लिए मूल्यांकन बच्चों की प्रगति तथा सीखने का मूल्यांकन उपलब्धि स्तर को दर्शाता है। सीखने के लिए मूल्यांकन का प्रयोग नवीन ज्ञान देने से पहले किया जाता है जबकि सीखने के मूल्यांकन का प्रयोग शिक्षण के बाद किया जाता है।

36. कक्षा नायक (उपदेशक) द्वारा प्रयुक्त मूल्यांकन का प्रकार जो अनुदेशन के समय सीखने के विकास में किया जाता है, कहलाता है

(a) नैदानिक मूल्यांकन (b) फॉर्मेटिव मूल्यांकन
(c) प्लेसमेन्ट मूल्यांकन (d) संकलित मूल्यांकन

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) कक्षा नायक (उपदेशक) के द्वारा अनुदेशन के समय फॉर्मेटिव मूल्यांकन का प्रयोग सीखने के विकास के लिए किया जाता है। जबकि शिक्षक द्वारा निर्देश सत्र के दौरान ज्ञान अर्जित करने (सीखने) के प्रयास में हुई प्रगति का अनुश्रवण करने हेतु नैदानिक मूल्यांकन प्रणाली का प्रयोग किया जाता है।

37. निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य है

(a) प्रगति पर गौर करना एवं उपचारात्मक अनुदेशन की योजना बनाना
(b) विद्यार्थियों की समझ का पता लगाना
(c) अध्यापक के उद्देश्यों की पूर्ति का पता लगाना
(d) ग्रेड्स प्रदान कराना।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a) निर्माणात्मक मूल्यांकन को रचनात्मक मूल्यांकन भी कहते हैं। निर्माणात्मक मूल्यांकन का मूल उद्देश्य है– प्रगति पर गौर करना एवं उपचारात्मक अनुदेशन की योजना बनाना। यह आकलन कक्षा में ही किये जाते हैं। इससे प्राप्त जानकारी बच्चे के अधिगम व शिक्षक के शिक्षण दोनों की स्थिति को सूचित करती है।

38. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सत्य है?

(a) रचनात्मक आकलन का मुख्य उद्देश्य है विद्यार्थियों की उपलब्धि का श्रेणीकरण
(b) रचनात्मक आकलन समय–समय पर शिक्षार्थियों के विकास का सार प्रस्तुत करता है
(c) रचनात्मक आकलन कभी–कभी संकलनात्मक हो सकता है एवं इसी प्रकार विपरीत
(d) संकलनात्मक आकलन से अभिप्राय है कि आकलन अधिगम का एक निरन्तर व अभिन्न अंग है।

DSSSB PRT
CTET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) रचनात्मक आकलन कभी-कभी संकलनात्मतक हो सकता है और इसी प्रकार संकलनात्मक आकलन भी कभी-कभी रचनात्मक हो सकता है।

39. जब एक बावर्ची खाना पकाते समय खाने को चखता है तो वह ..... के समान है।

(a) सीखने का आकलन
(b) सीखने के लिए आकलन
(c) सीखने के रूप में आकलन
(d) आकलन और सीखना

DSSSB PRT
CTET 2013 (VI-VIII)

Ans : (b) जब एक बावर्ची खाना पकाते समय खाने को चखता है तो वह सीखने के लिए आकलन करता है अर्थात् वह चखकर उसमें सुधार करना चाहता है। अतः सुधार के लिए आकलन आवश्यक है।

40. ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित सभी सीखने के रूप में आकलन को बढ़ावा देते हैं

(a) शिक्षार्थियों को आंतरिक पृष्ठपोषण लेने के लिए कहना
(b) अवसर लेने हेतु शिक्षार्थियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना
(c) पढ़ाए गए विषय पर मनन करने के लिए शिक्षार्थियों को कहना
(d) जितनी संभावना हो शिक्षार्थियों को लगातार परीक्षण लेना

DSSSB PRT
CTET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) शिक्षार्थियों को आंतरिक पृष्ठपोषण लेने के लिए कहना, अवसर लेने हेतु शिक्षार्थियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण करना, पढ़ाये गये विषय पर मनन करने के लिए शिक्षार्थियों को कहना ये सभी सीखने के रूप में आकलन को बढ़ावा देते हैं जबकि जितनी सम्भावना हो शिक्षार्थियों को लगातार परीक्षण लेना सीखने का आकलन को बढ़ावा देता है।

41. सीखने के लिए आकलन

(a) अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है
(b) अलग करने और रैंक देने के प्रयोजन के लिए किया जाता है
(c) ग्रेड्स को पूरी तरह से महत्त्व देने पर बल देता है
(d) विशिष्ट होता है और अपने आप में की गई आकलन गतिविधि है

DSSSB PRT
CTET 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) सीखने के लिए आकलन अभिप्रेरणा को बढ़ावा देता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी और अध्यापक दोनों को अधिगम की सफलता और असफलता के सम्बन्ध में निरंतर प्रतिपुष्टि प्रदान करना होता है।

42. निम्नलिखित में से कौन–सा एक उपयुक्त रचनात्मक आकलन कार्य नहीं है?

(a) खुले अन्त वाले प्रश्न
(b) परियोजना
(c) अवलोकन
(d) विद्यार्थियों का योग्यता क्रम निर्धारित करना

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (d) आकलन का उद्देश्य है बच्चों की अभिव्यक्ति, क्षमता, अनुभूति का मापन करना। इसके लिए बच्चों से कई प्रकार के कार्य करवाये जाते है जैसे– खुले अंत वाले प्रश्न लिखना, परियोजना कार्य करवाना, अवलोकन करवाना इन सब के माध्यम से बच्चों की अभिव्यक्ति, क्षमता, अनुभूति का मापन किया जाता है किन्तु विद्यार्थियों का योग्यताक्रम निर्धारित करने के लिए कई विद्यार्थियों के द्वारा किये गये कार्यों का आकलन कर उनके बीच तुलना करना होता है जो रचनात्मक आकलन कार्य के अंतर्गत नहीं आता।

43. शिक्षण में अध्यापकों के द्वारा विद्यार्थियों का आकलन इस अन्तर्दृष्टि को विकसित करने के लिए किया जा सकता है :

(a) उन विद्यार्थियों की पहचान करना जिन्हें उच्चतर कक्षा में प्रोन्नत करना है
(b) उन विद्यार्थियों को प्रोन्नत न करना जो विद्यालय के स्तर के अनुकूल नहीं है
(c) शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण उपागम में परिवर्तन करना
(d) कक्षा में 'प्रतिभाशाली' तथा 'कमजोर' विद्यार्थियों के समूह बनाना

CTET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (c) अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का आकलन करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसके माध्यम से अध्यापक उनकी आवश्यकता के अनुसार शिक्षण उपागम में परिवर्तन कर अपना शिक्षण कार्य कर सकता है।

44. एक शिक्षक कक्षा के कार्य को एकत्र करता है और उन्हें पढ़ता है, उसके बाद योजना बनाता है और अपने अगले पाठ को शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समायोजित करता है। वह.....कर रहा/रही है।

(a) सीखने के रूप में आकलन
(b) सीखने के लिए आकलन
(c) सीखने के समय आकलन
(d) सीखने का आकलन

CTET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (b) एक शिक्षक कक्षा के कार्य को एकत्र करता है और उन्हें पढ़ता है, उसके बाद योजना बनाता है और अपने अगले पाठ को शिक्षार्थियो की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समायोजित करता है। इसका अर्थ है कि वह सीखने के लिए आकलन कर रहा है। अतः शिक्षक कक्षा का आकलन स्वयं करेगा।

45. एक अध्यापक/अध्यापिका विद्यार्थियों को किसी विषय की अपनी अवबोधनात्मकता को प्रतिबिम्बित करते हुए संकल्पनात्मक मानचित्र (concept map) का निर्माण करने को कहना/कहता है। वह –

(a) विद्यार्थियों की स्मृतियों को मंथर गति से जागृत कर रहा/रही है
(b) रचनात्मक आकलन कर रहा/रही है
(c) छात्रों की मुख्य बिन्दुओं का सार लेखन की क्षमता का परीक्षण कर रहा/रही है
(d) छात्रों की उपलब्धि के मूल्यांकन हेतु शीर्षकों (rubrics) के विकास का प्रयास कर रहा/रही है

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans: (b) रचनात्मक आकलन के लिए तीन बिन्दू महत्वपूर्ण हैं जैसे (1) किन-किन कौशलों एंवम् दक्षताओं का आकलन करना है। (2) आकलन बिन्दुओं के लिए कक्षा में कौन-कौन से उपकरण काम में आ सकते हैं। (3) और बच्चों के किन-किन पक्षों का अभिलेख रखा जा सकता है। अतः कोई अध्यापिका विधार्थियों को किसी विषय की अपनी अवबोधनात्मकता को प्रतिबिम्बित करते हुए संकल्पनात्मक मानचित्र का निर्माण करने को कहती है तो वह रचनात्मक आकलन कर रही है।

46. सीखने के लिए आकलन निम्नलिखित का ध्यान रखता है सिवाय

(a) विद्यार्थियों की क्षमताएँ (b) विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ
(c) विद्यार्थियों की त्रुटियाँ (d) विद्यार्थियों की अधिगम-शैलियाँ

CTET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (b) सीखने के लिए आकलन विद्यार्थियों की आवश्यकता का ध्यान नहीं रखता है। जबकि सीखने के लिए आकलन विद्यार्थियों की क्षमताओं, उनकी त्रुटियों एवं अधिगम-शैलियों का ध्यान रखता है।

47. सीखने ..... आकलन, आकलन और अनुदेशन के बीच ..... के दृढ़ीकरण द्वारा सीखने को प्रभावित करता है।

(a) का; अंतर (b) का; भिन्नता
(c) के लिए; सम्बन्धों (d) के लिए; अंतर

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (c) सीखने के लिए आकलन को निर्माणात्मक आकलन भी कहा जाता है। इस प्रकार के आकलन का मुख्य प्रयोजन छात्रों को वह रचनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करने में सक्षम बनाना है जो उन्हें बेहतर सीखने और प्रभावी प्रगति करने में उनकी मदद करेगी। यह खासतौर पर शिक्षक द्वारा दी जाती है। इसलिए सीखने के लिए आकलन, आकलन और अनुदेशन के बीच सम्बन्धों के दृढ़ीकरण द्वारा सीखने को प्रभावित करता है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा रचनात्मक आकलन (Formative Assessment) के लिए उचित उपकरण नहीं है?

(a) सत्र परीक्षा (b) प्रश्नोत्तरी और खेल
(c) दत्त कार्य (d) मौखिक प्रश्न

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011
Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (a) सत्र परीक्षा रचनात्मक आकलन के लिए उचित उपकरण नहीं है। क्योंकि सत्रीय परीक्षाएँ विद्यार्थियों को किसी भी तरीके से पास होने के लिए बाध्य करती हैं साथ ही उनकी रचनात्मकता को कुण्ठित करती हैं।

49. छात्रों के अधिगम के परिणाम के विषय में आकलन को ___ मूल्यांकन के रूप में जाना जाता है।

(a) नैदानिक (b) बेंचमार्क
(c) रचनात्मक (d) उपचारात्मक

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : छात्रों के अधिगम के परिणाम के विषय में आकलन को उपचारात्मक मूल्यांकन के रूप में जाना जाता है। शिक्षण अधिगम की परिस्थिति में निरन्तरता एवं क्रमबद्धता कायम रखने हेतु निदानात्मक परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों के अनुरूप विषयगत उपचारात्मक अध्यापन प्रविधि को प्रस्तावित करना आवश्यक होता है। निदानात्मक परीक्षणों द्वारा छात्रों की समस्या या कठिनाई के कारणों का ज्ञान हो जाने के उपरान्त उपचार हेतु किया जाने वाला शिक्षण उपचारात्मक शिक्षण कहलाता है।

50. अधिगम के लिए एक प्रारंभिक ऑकलन का प्राथमिक ध्येय होना चाहिए :

(a) बच्चे की कक्षा में उपस्थिति की जाँच करना
(b) स्मरण शक्ति कौशल की जाँच करना
(c) लेखन कला को सुधारने में मदद करना
(d) अधिगम में अंतराल को समझना

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : अधिगम के लिए एक प्रारंभिक आकलन का प्राथमिक ध्येय अधिगम के अंतराल को समझना होना चाहिए। जब बालक किसी विषय–वस्तु का अधिगम करता है तो अधिगम करते समय वह त्रुटियाँ करता है। ये त्रुटियाँ ही अधिगम में अंतराल को समझने में सहायता करती हैं जिसे पहचानना प्रारम्भिक आकलन का मुख्य ध्येय होता है।

51. बाल–केंद्रित शिक्षा में आम तौर पर निम्न शामिल होता है-

(a) तुरंत या मौके पर मूल्यांकन
(b) कोई मूल्यांकन नहीं
(c) अधिक योगात्मक मूल्यांकन
(d) अधिक रचनात्मक मूल्यांकन

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : बाल–केन्द्रित शिक्षा में आम तौर पर रचनात्मक मूल्यांकन अधिक शामिल होता है। शिक्षक जब कक्षा में शिक्षण कार्य करते समय प्रश्नों द्वारा सीखने वाले छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करता है, तो इसे रचनात्मक मूल्यांकन कहते हैं। प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण के दौरान छात्रों से प्रश्न करता है। ये प्रश्न छात्र को किसी पाठ को सीखने में सहायक होते हैं और शिक्षण को रूचिकर और सजीव बनाते हैं।

52. राउंड रोबिन चार्ट..... के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

(a) योगात्मक ऑकलन (b) निदानात्मक ऑकलन
(c) अंतरिम ऑकलन (d) रचनात्मक ऑकलन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : राउंड रोबिन चार्ट रचनात्मक आकलन के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं। राउण्ड रॉबिन चार्ट मूल्यांकनों में 4–5 बच्चों का समूह बनाया जाता है। इन समूहों को कोई भी प्रश्न दिया जाता है, जिस पर प्रत्येक समूह के प्रत्येक बच्चे को प्रतिक्रिया लिखनी होती है। बाद में इन सभी समूहों के सभी बच्चों द्वारा लिखी गयी प्रतिक्रिया पर परिचर्चा करायी जाती है, जिससे वे एक दूसरे के विचारों का मूल्यांकन करते हैं।

53. अधिगम के लिए आंकलन में शामिल है:

(a) कुछ मानदंडों के अनुसार सफलता के विभिन्न स्तरों पर उदाहरण को साझा करना
(b) छात्रों के काम के विपरीत ग्रेड या अंकन प्रदान करना
(c) योगात्मक मूल्यांकन का योगात्मक उपयोग
(d) परीक्षण और परीक्षा का उपयोग

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : अधिगम के लिए आकलन में कुछ मानदण्डों के अनुसार सफलता के विभिन्न स्तरों पर उदाहरणों को साझा किया जाता है। अधिगम के लिए आकलन का मुख्य उद्देश्य, हर बच्चे को यह ज्ञात करवाना कि वह क्या कर रहा है, यह समझाना कि उसे सुधार के लिए क्या करने की आवश्यकता है तथा वहाँ तक कैसे पहुँचना है। इस प्रकार के आंकलन में बच्चे को बल प्रदान किया जाता है, उसे सक्रिय अध्येता बनने के लिए प्रेरित किया जाता है ताकि अपने अधिगम में लगातार सुधार कर पाये।

विद्यालय आधारित आकलन

54. अधिगमकर्ताओं की उपलब्धि का आकलन शिक्षकों की सहायता करता है–

(a) अधिगमकर्ताओं के प्रदर्शन का रिकॉर्ड रखने में
(b) शिक्षण–अधिगम विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में
(c) कक्षाओं में अधिगमकर्ताओं के क्षमता समूह बनाने में
(d) शिक्षण के लिए गतिविधियों की सूची तैयार करने में

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : अधिगमकर्त्ताओं की उपलब्धि का आकलन शिक्षकों की शिक्षण–अधिगम विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में सहायता करता है। अधिगमकर्त्ताओं का आकलन शिक्षकों को अपने शिक्षण–विधियों के सम्बन्ध में प्रतिपुष्टि प्रदान करता है साथ ही छात्रों को भी अपने अधिगम से सम्बन्धित प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। शिक्षक इन्हीं प्रतिपुष्टियों के आधार पर अपने शिक्षण प्रविधियों में सुधार करके पुनः शिक्षण करता है।

55. विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने के लिए शालाओं में उपयोग में आने वाली विधियाँ हैं-

(a) परिमाणात्मक एवं निरीक्षण विधि
(b) परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विधि
(c) गुणात्मक एवं साक्षात्कार विधि
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (b) विद्यार्थियों के उपलब्धि का मूल्यांकन कई विधियों के द्वारा किया जाता है। इनमें परिमाणात्मक एवं गुणात्मक विधि का प्रयोग प्रयोगशाला (lab) में किया जाता है।

56. विद्यालय आधारित आकलन मुख्य रूप से किस सिद्धांत पर आधारित होता है?

(a) आकलन बहुत किफायती (मितव्ययी) होना चाहिए
(b) बाह्य परीक्षकों की अपेक्षा शिक्षक अपने शिक्षार्थियों की क्षमताओं को बेहतर जानते हैं
(c) किसी भी कीमत पर विद्यार्थियों को अच्छे ग्रेड मिलने चाहिए
(d) विद्यालय, बाह्य परीक्षा निकायों की अपेक्षा ज्यादा सक्षम हैं

DSSSB PRT
CTET 2015 (I-V)

Ans : (b) विद्यालय आधारित आकलन मुख्य रूप से इस सिद्धांत पर आधारित है कि बाह्य परीक्षकों की अपेक्षा शिक्षक अपने शिक्षार्थियों की क्षमताओं को बेहतर जानते हैं इसलिए वे आकलन करके उनकी अधिगम कठिनाइयों को बेहतर ढंग से हल कर सकते हैं।

57. विद्यालय आधारित आकलन

(a) परिणामों की अपेक्षा तकनीकों पर केन्द्रित है
(b) क्या आकलित किया जाएगा– इस पर शिक्षार्थियों को कम नियंत्रण प्रदान करता है
(c) रचनात्मक प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराते हुए सीखने में संवर्द्धन करता है
(d) परीक्षा के लिए शिक्षण को बढ़ावा देता है क्योंकि उसमें निरन्तर परीक्षण होता है

DSSSB PRT
CTET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) विद्यालय आधारित आकलन रचनात्मक प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराते हुए सीखने में संवर्द्धन करता है। प्रतिपुष्टि विद्यार्थियों के सफल अधिगम को पुनर्बलन प्रदान करती है और अधिगम की विशेष त्रुटियाँ पहचानती है जिन्हें सुधारने की आवश्यकता होती है।

58. वे शिक्षक जो विद्यालय आधारित आकलन के अंतर्गत कार्य करते हैं-

(a) उन्हें प्रत्येक शिक्षार्थी को प्रत्येक विषय में परियोजना कार्य देना पड़ता है।
(b) शिक्षार्थियों के मूल्यों और अभिवृत्तियों का आकलन करने के लिए रोजाना उनका सूक्ष्म अवलोकन करते हैं।
(c) व्यवस्था के लिए स्वामित्व की भावना रखते हैं।
(d) उन पर अधिक कार्य का बोझ रहता है, क्योंकि उन्हें सोमवार की परीक्षा सहित अक्सर परीक्षा लेनी पड़ती है।

CTET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) वे शिक्षक जो विद्यालय आधारित आकलन के अंतर्गत कार्य करते हैं वे व्यवस्था के लिए स्वामित्व की भावना रखते हैं। क्योंकि विद्यालय आधारित आकलन में शिक्षक शिक्षार्थियों की सहायता से उनके अधिगम में आने वाली कठिनाइयों को विविध तरीके से दूर करने का प्रयास करते हैं। विद्यालय आधारित आकलन में आकलन की सम्पूर्ण जिम्मेदारी शिक्षक पर होती है।

59. विद्यालय आधारित आकलन–

(a) शिक्षार्थियों और शिक्षकों को अगंभीर और लापरवाह बनाता है।
(b) शिक्षा-बोर्ड की जवाबदेही कम कर देता है।
(c) सार्वभौमिक राष्ट्रीय मानकों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है।
(d) परिचित वातावरण में अधिक सीखने में सभी शिक्षार्थियों की मदद करता है।

CTET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (d) विद्यालय आधारित आकलन परिचित वातावरण में अधिक सीखने में सभी शिक्षार्थियों की मदद करता है।

60. सहयोगी अधिगम में, यह बेहतर है कि छात्र ..... के माध्यम से जाएं।

(a) स्वतः आंकलन (b) रचनात्मक आंकलन
(c) साथी आंकलन (d) योगात्मक आंकलन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : सहयोगी अधिगम में, साथी आंकलन को बेहतर माना जाता है। साथी आंकलन एक शैक्षिक गतिविधि है जिसमें छात्र अपने साथियों के प्रदर्शन का न्याय करते हैं। यह अधिगम के कार्यान्वयन, सीखने वालों और सीखने के संदर्भ की विशेषताओं के आधार पर विभिन्न रूप ले सकता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

61. निम्नलिखित में से कौन-सा सतत और व्यापक मूल्यांकन से संबंधित नहीं है?

(a) इसे भारत के शिक्षा के अधिकार अधिनियम द्वारा अनिवार्य किया गया है।
(b) यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है।
(c) यह विभिन्न शिक्षा-क्षेत्रों में बच्चे की उपलब्धि पर केंद्रित है।
(d) यह बच्चों को धीमे, खराब या बुद्धिमान के रूप में चिह्नित करने में उपयोगी होता है।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : सतत् और व्यापक मूल्यांकन, बच्चों को धीमें, खराब या बुद्धिमान के रूप में चिह्नित करने में उपयोगी नहीं होता है बल्कि इसका प्रयोग बच्चों के अधिगम त्रुटियों को पहचान कर उनका उपचार करने में किया जाता है। इसकी अन्य विशेषताएँ भी हैं जैसे–

* इसे भारत के शिक्षा के अधिकार अधिनियम द्वारा अनिवार्य किया गया है।
* यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है।
* यह विभिन्न शिक्षा क्षेत्रों में बच्चे की उपलब्धि पर केन्द्रित है।
* यह शैक्षिक और सहशैक्षिक गतिविधियों का मूल्यांकन करता है।

62. किसी बच्चे का विद्यालय के मैदान में खेलते हुए निरीक्षण करना, किस प्रकार का निरीक्षण है?

(a) औपचारिक (b) अनौपचारिक
(c) सहभागी (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) किसी बच्चे का विद्यालय के मैदान में खेलते हुए निरीक्षण करना अनौपचारिक निरीक्षण का उदाहरण है।

63. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन में क्या शामिल है?

(a) केवल संकलनात्मक आकलन
(b) न तो संरचनात्मक न ही संकलनात्मक आकलन
(c) विविध प्रकार की रणनीतियों का प्रयोग करते हुए दोनों संरचनात्मक एवं संकलनात्मक आकलन का प्रयोग करना।
(d) केवल संरचनात्मक आकलन

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में विविध प्रकार की रणनीतियों का प्रयोग करते हुए दोनों संरचनात्मक एवं संकलनात्मक आकलन का प्रयोग किया जाता है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में छात्रों के प्रदर्शन को औपचारिक तथा अनौपचारिक तरीके से आँका जाता है। यह शिक्षण के साथ-साथ चलता रहता है। छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए शिक्षक अवलोकन, साक्षात्कार, स्व तथा सहपाठी ऑकलन, समूह कार्य, परियोजना कार्य आदि विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करते हैं। ऑकलन शिक्षण-अधिगम से जुड़ा हुआ है तथा इकाई, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक तथा वार्षिक परीक्षाओं के माध्यम से संपन्न किया जाता है।

64. अधिकतर बच्चों ने अंग्रेजी के परीक्षण में कम ग्रेड हासिल किए अध्यापक उनके कम ग्रेड के लिए क्या करेगा।

(a) निदानात्मक मूल्यांकन (b) निपुणता परीक्षण
(c) उपलब्धि परीक्षण (d) अभिक्षमता परीक्षण

DSSSB Assistant Teacher Education Department

Ans. (a) **:** अधिकतर बच्चों ने अंग्रेजी के परीक्षण में कम ग्रेड हासिल किए अध्यापक उनके कम ग्रेड के लिए निदानात्मक मूल्यांकन का प्रयोग करेगा।

65. निम्न में से कौन सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का भाग नहीं हो सकता है?

(a) संचित अभिलेख (b) दत्त कार्य
(c) अभिभावक-शिक्षक बैठक (d) एनेकडॉटल रिकार्ड

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (a) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के तहत निम्न कार्य किए जाते है-

- अभिभावक शिक्षक बैठक
- दत्त कार्य
- एनेकडॉटल रिकार्ड

संचित अभिलेख सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के तहत नहीं आते है। यह पोर्टफोलियों आकलन के अन्तर्गत आता है।

66. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सतत् व व्यापक मूल्यांकन के लिए सही नहीं है?

(a) यह एक विद्यालय आधारित मूल्यांकन है
(b) यह विद्यार्थियों में तनाव को कम करता है
(c) इसमें नम्बरों के स्थान पर ग्रेड का प्रयोग होता है
(d) इससे शिक्षकों पर बोझ बढ़ जाता है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन केन्द्रिय शैक्षिक शिक्षा परिषद द्वारा कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों के मूल्यांकन की एक प्रक्रिया है। इसकी विशेषताएं निम्न है-

- विद्यालय आधारित मूल्यांकन
- विद्यार्थियों के तनाव को कम करता है
- नम्बरों के स्थान पर विद्यार्थियों को ग्रेड दिया जाता है।

67. पद 'व्यापक मूल्यांकन' का तात्पर्य है

(a) अलग-अलग समय किया जाने वाला मूल्यांकन
(b) अध्यापकों के एक समूह द्वारा किया जाने वाला मूल्यांकन
(c) लंबी अवधि के कई टेस्ट
(d) विद्यार्थी की संवृद्धि के शैक्षणिक व सहशैक्षणिक आयामों का मूल्यांकन

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) पद 'व्यापक मूल्यांकन' का तात्पर्य विद्यार्थी की संवृद्धि के शैक्षणिक व सहशैक्षणिक आयामों का मूल्यांकन करना होता है।

68. CCE में, औपचारिक और योग्यात्मक निर्धारण का कुल मूल्य होता है

(a) क्रमशः 40% और 60% (b) क्रमशः 60% और 40%
(c) क्रमशः 50% और 50% (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (a) CCE (Continuous and comprehensive Evaluation) अर्थात सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में औपचारिक एवं योग्यात्मक निर्धारण का मूल्य क्रमशः 40% एवं 60% होता है।

69. परीक्षा के स्थान पर सतत् और व्यापक मूल्यांकन गुणवत्ता मूलक शिक्षा के लिए अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इसमें :

(a) संज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन किया जाता है।
(b) सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र का मूल्यांकन किया जाता है।
(c) मूल्यांकन सतत् एवं व्यापक क्षेत्रों का होता है।
(d) उपरोक्त सभी

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (d) परीक्षा के स्थान पर सतत् व व्यापक मूल्यांकन गुणवत्ता मूलक शिक्षा के लिए अधिक उपयुक्त होता है क्योंकि इस मूल्यांकन के तहत बालक के विकास से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों (संज्ञानात्मक, शारीरिक, सहसंज्ञानात्मक आदि) का मूल्यांकन किया जाता है। इससे बालक का विकास सही दिशा में और सकारात्मक होता है।

70. सतत् व्यापक मूल्यांकन में 'व्यापक' शब्द का अभिप्राय है

(a) संज्ञानात्मक (b) सह-संज्ञानात्मक
(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में व्यापक शब्द का अभिप्राय संज्ञानात्मक तथा सह–संज्ञानात्मक दोनों क्षेत्र शामिल होते हैं।

71. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से तात्पर्य है

(a) नियमित रूप से मासिक परीक्षा लेना
(b) सीखने की प्रक्रिया के दौरान शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक क्षेत्रों की नियमित रूप से आकलित करना
(c) नियमित रूप से कक्षा में गतिविधियाँ आयोजित करना
(d) अंक या ग्रेड प्रदान करना

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013
DSSSB PRT

Ans: (b) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सफल संचालन के लिए शिक्षक मुख्यतः दो कार्य करता है– प्रथम निदानात्मक कार्य दूसरा उपचारात्मक कार्य। अर्थात् पहला कार्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आने वाले अवरोधो, समस्याओं की पहचान करना तथा दूसरा कार्य इन समस्याओं, अवरोधो को दूर करना। इसके लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अत्यन्त आवश्यकता होती है जिसका तात्पर्य है सीखने की प्रक्रिया के दौरान शैक्षिक व सह शैक्षिक क्षेत्रों को नियमित रूप से आकलित करना।

72. बच्चों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, वे उस कार्य को किस प्रकार से कर रहे हैं, इसकी जानकारी इन्हें

(a) कार्य समाप्त होने के पश्चात् दी जानी चाहिए
(b) कार्य करते समय सतत् रूप से दी जानी चाहिए
(c) कार्य के बीच में एक बार दी जानी चाहिए
(d) इसकी कोई आवश्यकता नहीं है

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (b) शिक्षण प्रक्रिया के दौरान शिक्षक के निरंतर निरीक्षण करते रहना चाहिए। विद्यार्थी किसी कार्य को किस तरह कर रहे है, शिक्षक को इसकी जानकारी समय-समय पर छात्र को देते रहना चाहिए इससे छात्रों की त्रुटियाँ कम होगी और वे अपने कार्य में कुशलता प्राप्त कर लेंगे।

73. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में, व्यापक मूल्यांकन शब्दावली का तात्पर्य है–

(a) सभी विषयों का मूल्यांकन
(b) सह–शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन
(c) शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन
(d) शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन

DSSSB PRT, UK TET 2011 (I-V)

Ans : (c) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में 'व्यापक मूल्यांकन' शब्द का तात्पर्य है–शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन।

74. बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए–

(a) बोर्ड परीक्षा द्वारा
(b) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा
(c) गृह परीक्षा द्वारा
(d) लिखित एवं मौखिक परीक्षा द्वारा

DSSSB PRT, UK TET 2011 (I-V)

Ans : (b) बच्चों का मूल्यांकन सतत् एवं व्यापक होना चाहिए। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ है छात्रों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन की प्रणाली जिसमें छात्र के शैक्षिक तथा सहशैक्षिक, सभी पक्ष शामिल होते हैं।

75. निम्नलिखित में से कौन–सी आकलन पद्धति विद्यार्थियों की सर्वोत्तम क्षमता को पोषित करेगी?

(a) जब विद्यार्थियों को बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से किए गए परीक्षण के रूप में तथ्यों को दोहराने की आवश्यकता होती है
(b) जब परीक्षा के अंकों और विद्यार्थियों की योग्यता के बीच सकारात्मक सह–सम्बन्ध पर बल दिया जाता है
(c) जब संकल्पनात्मक परिवर्तन तथा विद्यार्थियों के वैकल्पिक समाधानों को आकलन की विभिनन विधियों के द्वारा आकलित किया जाता है
(d) जब कक्षा में विद्यार्थी के द्वारा प्राप्त किए गए अंक और स्थान सफलता का एकमात्र निर्धारक होते हैं

DSSSB PRT
CTET 2015 (VI-VIII)

Ans : (c) शिक्षा में आकलन पाठ्यचर्या सम्बन्धी पहल है जो परीक्षा को समग्र अधिगम की ओर विस्थापित करने का प्रयास करती है। यह आकलन तभी विद्यार्थियों की सर्वोत्तम क्षमता को पोषित करेगी जब संकल्पनात्मक परिवर्तन तथा विद्यार्थियों के वैकल्पिक समाधानों को आकलन की विभिन्न विधियों के द्वारा आकलित किया जायेगा।

76. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन किस लिए आवश्यक है?

(a) शिक्षण के साथ परीक्षण का तालमेल बैठाने के लिए
(b) शिक्षा बोर्ड की जवाबदेही कम करने के लिए
(c) जल्दी-जल्दी की जाने वाली गलतियों को सुधारना
(d) यह समझने के लिए कि अधिगम का किस प्रकार अवलोकन किया जाता है, दर्ज किया जाता है व सुधार किया जा सकता है।

CTET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (d) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का अर्थ है छात्रों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन की प्रणाली जिसमें छात्र के विकास के सभी पक्ष शामिल होते हैं। इसके माध्यम से अध्यापक छात्रों का नियमित निदान और उसके बाद सुधारात्मक अनुदेशन के आधार पर उनकी उपलब्धियों और अध्यापन-अधिगम कार्यनीतियों के सुधार हेतु मूल्यांकन का उपयोग करता है।

77. सतत् और व्यापक मूल्यांकन ----- पर बल देता है।

(a) बोर्ड परीक्षाओं की अनावश्यकता पर
(b) सीखने को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्केल पर निरंतर परीक्षण
(c) सीखने को किस प्रकार अवलोकित,रिकॉर्ड और सुधारा जाए इस पर
(d) शिक्षण के साथ परीक्षाओं का सामंजस्य

CTET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (c) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चे के आकलन की निरन्तर चलने वाली विकासात्मक प्रक्रिया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के द्वारा शिक्षण अधिगम के समय ही शिक्षक को छात्रों के सीखने की प्रगति और कठिनाईयों के बारे में निरन्तर जानकारी मिलती रहती हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में दीर्घ अन्तराल के बाद चलाएं जाने वाले उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता भी समाप्त हो जाएगी, क्योंकि छात्र की कठिनाई का समय रहते निदान और उपचार हो सकेगा तथा यथासमय की कठिनाइयों का निवारण होने से छात्रों में आत्मविश्वास जागृत होगा। अतः सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन सीखने को किस प्रकार अवलोकित तथा रिकॉर्ड और सुधारा जाए इस पर बल देता है।

78. आकलन को 'उपयोगी और रोचक' प्रक्रिया बनाने के लिए ----के प्रति सचेत होना चाहिए।

(a) विद्यार्थियों को बुद्धिमान या औसत शिक्षार्थी की उपाधि देना
(b) शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थी के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए विविध तरीकों को प्रयोग करना
(c) प्रतिपुष्टि (फीडबैक) देने के लिए तकनीकी भाषा का प्रयोग करना
(d) अलग-अलग विद्यार्थियों में तुलना करना

CTET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (b) आकलन को उपयोगी और रोचक प्रक्रिया बनाने के लिए शैक्षिक और सह-शैक्षिक क्षेत्रों में विद्यार्थी के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए विविध तरीकों का प्रयोग करना चाहिए।

79. सतत् और व्यापक मूल्यांकन की योजना में 'व्यापक' शब्द ..... के अलावा निम्नलिखित के द्वारा समर्थित किया जाता है।

(a) जे. पी. गिलफोर्ड का बुद्धि-संरचना का सिद्धान्त
(b) एल. एल. थर्स्टर्न का प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का सिद्धान्त
(c) बहुबुद्धि सिद्धान्त
(d) सूचना प्रक्रमण सिद्धान्त

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (a) सतत् और व्यापक मूल्यांकन की योजना में व्यापक का अर्थ है कि इस योजना में छात्रों की वृद्धि और विकास के शैक्षिक तथा सह शैक्षिक दोनों ही पक्षों को शामिल करने का प्रयास किया जाता है। चूँकि क्षमताएँ, मनोवृत्तियाँ और अभिरूचियाँ अपने आपको लिखित शब्दों के अलावा अन्य रूपों में प्रकट करती हैं अतः यह शब्द विभिन्न साधनों और तकनीकों के अनुप्रयोग के लिए उपयोग किया जाता है। इसलिए जे. पी. गिलफोर्ड ने बुद्धि संरचना सिद्धान्त जो कि बुद्धि को ही परिभाषित कर पाती है यह 'व्यापक' शब्द को सार्थक नहीं करती।

80. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित में क्या मात्रात्मक पूर्वापेक्षा का हिस्सा नही हैं?

(a) कक्षाएं (b) विद्यालय
(c) शिक्षक (d) पाठ्यक्रम

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए पाठ्यक्रम मात्रात्मक पूर्वापेक्षा का हिस्सा नहीं है क्योंकि पाठ्यक्रम गुणात्मक पूर्वापेक्षाओं को पोषित करता है। पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन की अपेक्षाएं रहती हैं।

आकलन हेतु उपयुक्त प्रश्नों का निर्माण करना

81. विद्यालयी क्षेत्र में रचनात्मक निर्धारकों को जानने के लिए इनमें से कौन-सा उपागम नहीं है?

(a) वार्तालाप कौशल (b) बहुविकल्पीय प्रश्न
(c) परियोजना कार्य (d) मौखिक प्रश्न

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) विद्यालयी क्षेत्र में रचनात्मक निर्धारकों को जानने के लिए मुख्यतः तीन उपागम होते हैं -

1. वार्तालाप कौशल
2. परियोजना कार्य
3. मौखिक प्रश्न

बहुविकल्पिय प्रश्नों से वस्तुनिष्ठता का निर्धारण होता है।

82. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्नावली विधि का दोष नहीं है?

(a) अच्छे प्रश्न बनाना एक कठिन कार्य है।
(b) इस विधि से अनेक व्यक्तियों के विचार जाने जा सकते हैं।
(c) हो सकता है कि सम्मिलित प्रश्न सुनियोजित न हों।
(d) हो सकता है कि लोग प्रश्नों के उत्तर, देने में रुचि न रखते हों।

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (b) एक ही समय में बहुत से उत्तरदाता प्रश्नावली के माध्मय से सूचना दे सकते हैं। एक प्रश्नावली में मुद्दों/विषयों पर कुछ पद लिखित रूप में रखा जाता है। उत्तरदाता को प्रश्नों के उत्तर देना होता है। प्रश्न इस प्रकार के होते हैं जिससे कि उत्तर विचारों के बजाय तथ्यों पर आधारित हो। अतः प्रश्नावली विधि का यह दोष नहीं हो सकता है कि इससे अनेक व्यक्तियों के विचारों को जाना जा सकता है।

83. रचनात्मक उत्तरों के लिए चाहिए–

(a) मुक्त उत्तरीय प्रश्न (b) तथ्यपरक प्रश्न
(c) सीमित उत्तर वाले प्रश्न (d) प्रत्यक्ष प्रश्न

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (a) रचनात्मक उत्तर के लिए मुक्त उत्तरीय प्रश्न सर्वाधिक उपयुक्त होता है क्योंकि इस प्रकार के प्रश्न देने में किसी प्रकार की सीमा नही होती है तथा उत्तर देने वाला बालक स्वतंत्र रुप से अपने विचार प्रकट कर सकता है।

84. सर्वाधिक प्रभावी मूल्यांकन पद्धति है

(a) वार्षिक परीक्षा प्रणाली (b) सपुस्तक परीक्षा प्रणाली
(c) सेमेस्टर प्रणाली (d) वस्तुनिष्ठ प्रश्नपत्र पद्धति

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d)सर्वाधिक प्रभावी मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ प्रश्नपत्र पद्धति है। क्योंकि इसमें मूल्यांकनकर्ता के व्यक्तित्व का प्रभाव परीक्षार्थी के परिणामों पर नहीं पड़ता है।

85. निबन्धात्मक प्रश्नों के लिए निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छा विकल्प है?

(a) न्यूटन के गति के नियम की चर्चा करे।
(b) न्यूटन के गति के तीनों नियमों की व्याख्या करें।
(c) न्यूटन के गति का नियम क्या है?
(d) न्यूटन के गति के नियम पर एक लेख लिखें।

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (d) निबंधात्मक लेख में किसी विषय वस्तु पर एक समग्र सारांश होता है जिसमे उस विषय वस्तु की समस्त बातें निहित होती है। अतः न्यूटन के गतिकी के सिद्धांत पर नोट (सारांश लिखना) निबंधात्मक प्रश्न के अन्तर्गत आएगा।

86. निम्न में से वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के गुण के सम्बन्ध में सही कथन है

I. इनका अंकन शीघ्रता एवं सुगमता से किया जा सकता है
II. ये परीक्षकों के व्यक्तिगत प्रभाव से प्रभावित नहीं होते हैं।
III. वस्तुनिष्ठता के कारण ये अधिक विश्वसनीय एवं वैध होते हैं।
IV. उपरोक्त में से कोई नहीं

(a) केवल I (b) I, II एवं III
(c) केवल IV (d) II एवं III

DSSSB PRT

Ans (b) वस्तुनिष्ठ परीक्षण के गुण–
1. इस परीक्षण को शीघ्रता से एवं सुगमता से किया जा सकता है
2. यह परीक्षण परीक्षक के व्यक्तिगत प्रभाव से प्रभावित नहीं होता है
3. वस्तुनिष्ठता के कारण इस परीक्षण की विश्वसनियता बनी रहती है।

87. परीक्षा में विद्यार्थियों से किस प्रकार के प्रश्न पूछने चाहिए?

(a) स्मृति एवं समझ आधारित
(b) वस्तुनिष्ठ एवं विषयगत
(c) समझ एवं अनुप्रयोग आधारित
(d) केवल वस्तुनिष्ठ

DSSSB PRT
UKTET 2013 (VI-VIII)

Ans : (c) शिक्षण का मूल उद्देश्य होता है बालक के ज्ञानात्मक, बोधात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का विकास करना। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हुई या नहीं, इसकी जाँच के लिए ही उनकी परीक्षा ली जाती है। अतः इन्हीं उद्देश्यों के आधार पर परीक्षा प्रश्नों का निर्माण भी किया जाता है। विद्यार्थियों से समझ एवं अनुप्रयोग आधारित प्रश्न पूछने से उनकी सृजनात्मकता और अंतर्दृष्टि का पता चलता है जबकि स्मृति आधारित प्रश्न रटने पर बल देता है। इसलिए समझ एवं अनुप्रयोग आधारित प्रश्न ज्यादा उपयुक्त माने जाते हैं।

88. बहुविकल्पी प्रश्न बच्चों ..... की योग्यता का आकलन करते हैं।

(a) सही उत्तर का निर्माण करना
(b) सही उत्तर की व्याख्या करना
(c) सही उत्तर की पहचान करना
(d) सही उत्तर का प्रत्यास्मरण करना

DSSSB PRT
CTET 2015 (VI-VIII)

Ans : (c) बहुविकल्पी प्रश्नों में एक प्रश्न के कई उत्तर दिये होते हैं जिसमें से बच्चे सही उत्तर की पहचान करते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा बच्चों के तार्किक क्षमता, प्रत्यास्मरण, ज्ञान तथा बोध का आकलन किया जाता है।

89. किस प्रकार के प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की श्रेणी में रखा जाता है?

(a) लघुउत्तरात्मक प्रश्न (b) मुक्त उत्तर वाला प्रश्न
(c) सत्य या असत्य (d) निबंधात्मक प्रश्न

CTET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (c) प्रश्नों के बारे में केवल एक लाइन लिखकर यह पूछा जाना कि वाक्य सत्य है या असत्य इस प्रकार के प्रश्नों को वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की श्रेणी में रखा जाता है।

90. विद्यार्थियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने का आदर्श 'प्रतीक्षा समय' ..... के सही अनुपात में होना चाहिए।

(a) पिछले पाठों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए विद्यार्थियों द्वारा लिया गया समय
(b) वास्तविक जीवन में प्रश्न की प्रासंगिकता
(c) पाठ्यचर्या में प्रकरण विशेष के लिए आवंटित समय
(d) प्रश्न का कठिनाई स्तर

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) विद्यार्थियों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने का आदर्श 'प्रतीक्षा समय' प्रश्न का कठिनाई स्तर के सही अनुपात में होना चाहिए।

91. सृजनात्मक उत्तरों के लिए आवश्यक है –

(a) मुक्त-उत्तर वाले प्रश्न
(b) एक अत्यंत अनुशासित कक्षा
(c) प्रत्यक्ष शिक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रश्न
(d) विषय-वस्तु आधारित प्रश्न

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (a) सृजनात्मकता का तात्पर्य नवीन विचारों से हैं। नवीन विचार स्वतंत्रता के वातावरण में ही आते हैं। सृजनात्मक उत्तर के लिए आवश्यक है कि छात्रों से मुक्त उत्तर वाले प्रश्न पूछे जाएं ताकि बालक स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचारों में नवीन आयामों का समावेश कर सके।

उपलब्धि परीक्षाओं के उद्देश्य एवं प्रकार

92. दबाव को कम करने एवं परीक्षाओं में सफलता के लिए आवश्यक है

(a) कम अवधि की परीक्षाओं में अंतरण
(b) विद्यालयी शिक्षा की विभिन्न चरणों में परीक्षाओं का आयोजन
(c) वार्षिक एवं अर्द्धवार्षिक परीक्षायें
(d) विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के लिए विभिन्न एजेन्सियों की स्थापना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) दबाव को कम करने एवं परीक्षाओं की सफलता के लिए कम अवधि की परीक्षाओं में अंतरण होना आवश्यक है इसी को ध्यान में रखते हुए आज सभी विद्यालयों में तिमाही, छमाही एवं वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है। जबकि उच्च विद्यालयों में समेस्टर प्रणाली का विकास किया गया है।

93. जैक गणित में एक कमजोर छात्र है। निम्नलिखित में से कौन सा परीक्षण उपरोक्त कथन का सर्वोत्तम समर्थन करता है?

(a) बुद्धि परीक्षण (b) अभिवृत्ति परीक्षण
(c) उपलब्धि परीक्षण (d) कौशल आधारित परीक्षण

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : उपलब्धि परीक्षण के द्वारा किसी भी विद्यार्थी के विषय सम्बन्धी अर्जित ज्ञान का परीक्षण किया जा सकता है। इस परीक्षण से शिक्षक यह ज्ञात कर सकता है कि विद्यार्थी ने कितनी उन्नति की है या विद्यार्थी ने किस सीमा तक विषय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया है। अतः जैक गणित में कमजोर छात्र है, यह कथन उपलब्धि परीक्षण का समर्थन करता है।

अध्यापक निर्मित एवं मानकीकृत परीक्षण

94. प्रमापीकृत परीक्षण क्यों कराए जाते हैं?

(a) मन्द बुद्धि बालकों की पहचान के लिए
(b) प्रतिभाशाली बालकों की पहचान के लिए
(c) पिछड़े बालकों की पहचान के लिए
(d) बहरे बालकों की पहचान के लिए

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) बालकों में वर्गीकरण (बुद्धिलब्धि के आधार पर) करने के लिए कई सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। प्रभावशाली बालकों की पहचान करने के लिए सबसे उपयुक्त विधि प्रमापीकृत परीक्षण है।

95. एक प्रमाणीकृत पठन परीक्षण लेने के लिए पाँचवीं कक्षा को प्रस्तुत करने में शिक्षक को अधिकाधिक परामर्श दिया जाता है कि

(a) बच्चों को बोलना कि परीक्षण बहुत महत्वपूर्ण है तथा वह उसमें अच्छा प्रदर्शन करेगा
(b) पूर्ववर्ती परीक्षा से प्रधान प्रश्नों को चिन्हित करना एवं छात्रों को उन्हें उत्तर देने की अनुमति देना
(c) निम्न कोटि के पाठकों को प्रशिक्षण देना ताकि कक्षा के शेष बच्चे किसी भी तरीके से अच्छा करें।
(d) परीक्षण में आने वाले समान प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए छात्रों को अभ्यास कराना

UPTET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) एक प्रमाणीकृत पठन परीक्षण लेने के पूर्व यह आवश्यक है कि शिक्षक छात्रो को परीक्षण में आने वाले प्रश्नों के प्रारूप की जानकारी दे तथा अधिक से अधिक प्रश्नों का अभ्यास करवाए।

96. मानकीकृत परीक्षणों की आलोचनाओं में से एक यह है कि–

(a) मुख्य रूप से मुख्यधारा की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसलिए पक्षपाती हैं
(b) उनकी भाषा को समझना मुश्किल है
(c) परीक्षण बड़ी आबादी पर लागू नहीं किए जा सकते हैं
(d) वे बच्चे की क्षमता की स्पष्ट तस्वीर नहीं देते हैं

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : मानकीकृत परीक्षणों की आलोचनाओं में से एक यह है कि वे मुख्य रूप से मुख्यधारा की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं इसलिए पक्षपाती होते हैं। परीक्षण की ऐसी त्रुटियाँ मुख्य धारा से अलग समाज के सभी परीक्षार्थियों को समान रूप से प्रभावित करती हैं। ऐसी परीक्षण त्रुटियों को स्थिर त्रुटियाँ या परीक्षण से सम्बन्धित त्रुटियाँ कहा जाता है।

97. कौन सा मूल्यांकन पूर्व निर्धारित मानकों के एक निश्चित सेट के विरुद्ध छात्र के प्रदर्शन को मापता है?

(a) सामान्य-संदर्भित आंकलन
(b) मानदंड-संदर्भित आंकलन
(c) नैदानिक आंकलन
(d) उपलब्धि का आंकलन

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : मानदण्ड–संदर्भित आंकलन पूर्व निर्धारित मानको को एक निश्चित सेट के विरूद्ध छात्र के प्रदर्शन को मापता है। क्लेजर ने कहा है कि इस आंकलन द्वारा अर्जित ज्ञान की निरपेक्ष स्थिति का ज्ञान प्राप्त होता है। मानदण्ड संदर्भित आंकलन में योग्यता का मूल्यांकन किसी निकष या मानदण्ड के संदर्भ में किया जाता है। दूसरे शब्दों में मानदण्ड संदर्भित आंकलन से यह ज्ञात होता है कि विशिष्ट शैक्षिक उद्देश्यों में से छात्र ने क्या अर्जित किया है और क्या अर्जित नहीं किया है।

अच्छे मापक उपकरण का निर्माण एवं विशेषताएँ (विश्वसनीयता, वैधता, मानक आदि)

98. एक परीक्षण तैयार करने के बाद, एक शिक्षक प्राप्तांकों की निरन्तरता को जाँचने के लिये एक ही आयु वर्ग के बच्चों पर प्रशासित करता है। वह निम्न को जाँचना चाह रहा है

(a) वैधता (b) विश्वसनीयता
(c) वस्तुनिष्ठता (d) उपयोगिता

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) एक परीक्षण तैयार करने के बाद एक शिक्षक प्राप्तांकों की निरन्तरता को जांचने के लिए एक ही आयु वर्ग के बच्चों पर प्रशासित करता है वह विश्वसनीयता जांचना चाह रहा है।

99. एक शिक्षक प्रश्न-पत्र बनाने के बाद, यह जाँच करता है कि क्या प्रश्न परीक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की परीक्षा ले रहे हैं। वह मुख्य रूप से प्रश्न-पत्र की/के ..... बारे में चिंतित है।

(a) सम्पूर्ण विषय-वस्तु को शामिल करने
(b) प्रश्नों के प्रकार
(c) विश्वसनीयता
(d) वैधता

CTET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) एक शिक्षक प्रश्न-पत्र बनाने के बाद, यह जाँच करता है कि क्या प्रश्न, परीक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की परीक्षा ले रहे हैं। वह मुख्य रूप से प्रश्नपत्र की वैद्यता के बारे में चिंतित है।

100. निम्न में से कौन-सा एक उत्तम परीक्षण की विशेषताओं से भिन्न है?

(a) विश्वसनीयता (b) वैधता
(c) वस्तुनिष्ठता (d) अभिक्षमता

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (d) एक उत्तम परीक्षण की निम्नलिखित विशेषताएँ होती है- (1) वैधता, (2) विश्वसनीयता, (3) वस्तुनिष्ठता, (4) विभेदकता, (5) प्रमापीकरण, (6) व्यापकता, (7) विशिष्टता, (8) व्यावहारिकता आदि।

अतः अभिक्षमता परीक्षण की विशेषता में नहीं आता है।

101. यदि उन्हीं छात्रों को वही परिणाम लगातार प्राप्त होता है तो यह एक ..... आकलन है

(a) वैध (b) अवैध
(c) विश्वसनीय (d) अविश्वसनीय

Dsssb Assistant Primary Teacher (PRT)

Ans. (c) **:** यदि उन्हीं छात्रों को वही परिणाम लगातार प्राप्त होता है तो यह एक विश्वसनीय आकलन है।

102. यह एक ..... आकलन है जिनमें से एक मापन के लिए अभिप्रेत है।

(a) वैध (b) अवैध
(c) विश्वसनीय (d) अविश्वसनीय

Dsssb Assistant Primary Teacher (PRT)

Ans. (a) **:** यह एक वैध आकलन है जिनमें से एक मापन के लिए अभिप्रेत है।

103. निम्न में से कौन-सा लक्षण किसी मापक उपकरण के लिए सर्वाधिक वांछनीय है?

(a) विश्वसनीयता (b) वैधता
(c) वस्तुनिष्ठता (d) मानक

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (b) किसी भी मापक उपकरण अथवा विधि में सर्वप्रथम विशेषता यह होनी चाहिए कि वह उस गुण अथवा गुणों का मापन कर सके जिसके लिए उसका प्रयोग किया जाना है। ऐसे मापक उपकरण को वैध उपकरण कहा जाता है और उसकी इस विशेषता को वैधता कहा जाता है जो किसी मापक उपकरण के लिए सर्वाधिक वांछनीय है।

मापन और मूल्यांकन की प्रमुख तकनीके (अवलोकन, तकनीक, परीक्षण तकनीक, समाजमीति तकनीक आदि)

104.विभेदकारी परीक्षण अन्तर करता है-

(a) कमजोर विद्यार्थियों में (b) सामान्य विद्यार्थियों में
(c) प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में (d) उपर्युक्त सभी

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) विभेदीकृत परीक्षण (विभेदकारी परीक्षण) के द्वारा बालकों को उनकी क्षमता तथा बुद्धिलब्धि के आधार पर अलग-अलग किया जा सकता है।

105.निम्नलिखित में से कौन सी मूल्यांकन की प्रविधि है?

(a) प्रश्नावली (b) साक्षात्कार
(c) मत सूची (d) ये सभी

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) मूल्यांकन वह प्रणाली होती है जिसके तहत बालक/व्यक्ति के सभी आयामों का परीक्षण किया जा सकता है। मूल्यांकन करने में कई प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है जैसे- साक्षात्कार करके, प्रश्नावली तैयार करके, मत सूची तैयार करके तथा खेल विधि आदि।

106. एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के संरचनात्मक कक्षा–कक्ष में अपने स्वयं के आकलन में विद्यार्थियों की भूमिका में निम्नलिखित में से क्या देखा जाएगा?

(a) एक विस्तृत दिशा-निर्देश बनाना कि किस प्रकार से विद्यार्थियों की उपलब्धि तथा कक्षा में प्रतिष्ठा को अंको के साथ सह–सम्बद्ध किया जाएगा
(b) शिक्षण अधिगम में आकलन की भूमिका को नकारना
(c) विद्यार्थी अपने आकलन के एकमात्र निर्धारक होंगे
(d) विद्यार्थी अध्यापक के साथ आकलन के लिए योजना बनाएंगे

DSSSB PRT
CTET 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के संरचनात्मक कक्षा–कक्ष जिसमें ज्ञान का निर्माण छात्र स्वयं सक्रिय होकर अध्यापक की सहायता से करते हैं, में अपने स्वयं के आकलन के लिए वे अध्यापक की सहायता से योजना का निर्माण करते हैं।

107. केवल कागज-पेंसिल जाँचो द्वारा आंकलन

(a) आकलन को सीमित कर देता है
(b) सकल आकलन को बढ़ावा देता है
(c) समग्र मूल्यांकन को सुविधा प्रदान करता है
(d) निरंतर मूल्यांकन को सुविधा प्रदान करता है

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) केवल कागज-पेंसिल से किया गया आंकलन सीमित होता है क्योंकि किसी व्यक्ति या बालक का आकलन करने के लिए उसके सभी पक्षों का अवलोकन एवं जाँच आवश्यक है जैसे-भाषा, शारीरिक आदि। कागज पेंसिल से केवल बौद्धिकता का आकलन किया जा सकता है। अतः इस प्रकार का आकलन सीमित होता है।

108.'अधिगमकर्ता का स्व-नियमन' का क्या अर्थ है?

(a) विद्यार्थी निकाय द्वारा बनाए गए नियम एवं विनियम
(b) विद्यार्थियों के व्यवहार के लिए विनियमों का निर्माण करना
(c) स्व-अनुशासन और नियंत्रण
(d) अपने सीखने का स्वयं अनुवीक्षण करने की योग्यता

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (d) अधिगम कर्ता का स्व-नियमन का अर्थ है - अपने सीखने का स्वयं अनुवीक्षण करने की योग्यता।

109.शिक्षार्थियों का 'आत्म-नियम'.....की ओर संकेत करता है।

(a) विद्यार्थी-निकाय द्वारा बनाए गए नियम-विनिमय
(b) स्व-अनुशासन और नियंत्रण
(c) अपने सीखने का स्वयं पर्यवेक्षण करने की उनकी योग्यता
(d) विद्यार्थियों के व्यवहार के लिए विनिमय बनाना

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (c) शिक्षार्थियों का 'आत्म नियम' अपने सीखने का स्वयं पर्यवेक्षण करने की उनकी योग्यता की ओर संकेत करता है। 'आत्म नियम' स्व–मूल्यांकन की एक युक्ति है जिसमें विद्यार्थी अपने अधिगम का स्वयं मूल्यांकन करता है तथा अपने प्रयासों एवं सूझ के द्वारा उसमें सुधार करता है।

110. 'समाजमिति तकनीक' का प्रयोग किया जाता है–

(a) आर्थिक स्तर की जाँच में (b) समाज के सर्वेक्षण में
(c) समाजीकरण की जाँच में (d) उपरोक्त सभी

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) समाजमिति तकनीक का प्रयोग समूह में व्यक्ति विशेष के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। इसके द्वारा विशेषकर एकांकी और उपेक्षितों तथा अस्वीकृत व्यक्तियों की व्यक्तित्व सम्बन्धी समस्याओं का पता लगाया जाता है। समाजमिति तकनीकी व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार का आकलन करने तथा सूचना प्राप्त करने का एक उपयोगी माध्यम है।

मापन और मूल्यांकन में प्रयुक्त उपकरण (अवलोकन, एनेक्डोटल, पोर्टफोलियो आदि)

111. कौन सा अभिलेख छात्रों की योग्यता, रूचि, क्षमताओं एवं प्रतिक्रियाओं की जाँच करने हेतु रखा जाता है?
उत्तर: संचयी अभिलेख

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-विद्यालय में प्रायः छात्रों से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाओं के क्रमबद्ध रूप से एकत्रित किया जाता है। छात्रों के अधिगम को निर्देशित व सुलभ बनाने के लिए जो अभिलेख या प्रपत्र तैयार किया जाता है उसे संचयी या उपाख्यानात्मक अभिलेख कहा जाता है। यह अभिलेख छात्रों की योग्यता, रूचि, क्षमताओं एवं प्रतिक्रियाओं की जाँच के लिए रखा जाता है।

112. छात्र की प्रयोगात्मक दक्षता के आकलन का यथोचित् रूप है

(a) साक्षात्कार (b) अवलोकन
(c) प्रश्नावली (d) लिखित परीक्षा

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) छात्र की प्रयोगात्मक दक्षता के ऑकलन का यथोचित रूप है– अवलोकन।

113. कक्षा में शिक्षार्थियों से कहा गया है कि वे अपने समाज के लिए कर सकते हैं– इसे दर्शाने के लिए एक नोटबुक में अपने कार्य को विविध शिल्पकृतियों को संयोजित करें। यह किस प्रकार की गतिविधि है?

(a) निबन्धात्मक आकलन (b) घटनावृत्त अभिलेख
(c) समस्या–समाधान आकलन (d) पोर्टफोलियों आकलन

DSSSB PRT
CTET 2014 (VI-VIII)

Ans : (d) कक्षा में शिक्षार्थियों से कहा गया है कि वे अपने समाज के लिए कर सकते हैं– इसे दर्शाने के लिए एक नोटबुक में अपने कार्य को विविध शिल्पकृतियों को संयोजित करें। अर्थात् उनके पोर्टफोलियो का आकलन करना सुनिश्चित किया जा रहा है।

114. विद्यार्थियों के पोर्टफोलियों के लिए सामग्री का चयन करते समय ___ का ___ जरूर होना चाहिए।

(a) अन्य शिक्षकों; समावेशन (b) विद्यार्थियों; समावेशन
(c) अभिभावकों; समावेशन (d) विद्यार्थियों; बहिष्करण

CTET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (b) विद्यार्थियों के पोर्टफोलियों के लिए सामग्री का चयन करते समय विद्यार्थियों का समावेशन जरूर होना चाहिए।

115..... के अलावा निम्नलिखित घटना/वृत्तांत रिकॉर्ड की विशेषताएँ हैं।

(a) यह पर्याप्त विस्तार से पूर्ण तथ्यात्मक प्रतिवेदन है
(b) यह व्यवहार का व्यक्तिनिष्ठ साक्ष्य है और इसलिए यह शैक्षणिक क्षेत्र के लिए प्रतिपुष्टि (फीडबैक) उपलब्ध नहीं कराता
(c) यह घटनाओं का सही वर्णन है
(d) यह बच्चे के व्यक्तिगत विकास अथवा सामाजिक अंतःक्रियाओं को वर्णित करता है

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (b) यह व्यवहार की व्यक्तिनिष्ठ साक्ष्य है और इसलिए यह शैक्षाणिक क्षेत्र के लिए प्रतिपुष्टि (फीड बैक) उपलब्ध नहीं कराता है। इस कथन के अतिरिक्त सभी विकल्प घटना वृतांत की विशेषताएँ हैं।

ग्रेडिंग प्रणाली, आंकिक प्रणाली

116. ग्रेडिंग, कोडिंग, अंकन और क्रेडिट संचय प्रणालियाँ ..... के कुछ उदाहरण हैं।

(a) परीक्षा के उत्तर–पत्रों के मूल्यांकन की प्रक्रिया
(b) कक्षा में बच्चों की स्थिति की निरूपण विधि
(c) आलेख–पत्र (रिपोर्ट कार्ड) में अकादमिक प्रगति को दर्शाने
(d) अधिगमकर्ताओं की उपलब्धि के आकलन की गणन–विधि

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : ग्रेडिंग, कोडिंग, अंकन और क्रेडिट संचय प्रणालियाँ अधिगमकर्त्ताओं की उपलब्धि के आकलन की गणन–विधि के कुछ उदाहरण हैं। उपलब्धि के आकलन को योगात्मक आकलन भी कहा जाता है। इस प्रकार के आकलन का प्रयोजन शिक्षक को छात्रों की उपलब्धि और कार्य प्रदर्शन की पहचान करने में सक्षम करना है, जिसमें सीखने की अवधि एक सत्र या वर्ष हो सकती है।

117. ''ग्रेड अंकों से कैसे अलग है?''
यह प्रश्न निम्न में से किस प्रकार के प्रश्नों से सम्बन्ध रखता है?

(a) विश्लेषणात्मक (b) मुक्त-अंत
(c) समस्या-समाधान (d) अपसारी

CTET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (a) ''ग्रेड अंकों से कैसे अलग है।'' यह विश्लेषणात्मक प्रकार के प्रश्नों से सम्बन्ध रखता है। वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था में सुधार करते हुए ग्रेडिंग प्रणाली पर बल दिया जा रहा है। ग्रेडिंग प्रणाली में शिक्षार्थियों को सीधे–सीधे अंक या श्रेणी में न वितरित करके ग्रेड दिया जाता है। यू.जी.सी. तथा अनेक विश्वविद्यालयों ने सर्वसम्मत्ति से 7 बिन्दु ग्रेड अपनाने पर सहमति जताई है। ये बिंदु है– O, A, B, C, D, E, F । ग्रेडिंग प्रणाली में परीक्षक छात्रों के प्रश्नवार उत्तरों को सीधे ग्रेड देकर मूल्यांकन करते हैं तथा सम्पूर्ण उत्तर पुस्तिका के लिए औसत ग्रेड ज्ञात कर लिया जाता है।

118. निम्नलिखित में से किसमें बुद्धि परीक्षण का उपयोग नहीं होता है?

(a) छात्रवृत्ति के लिए छात्रों का चयन
(b) शिक्षक के प्रदर्शन का मूल्यांकन
(c) एक छात्र की ग्रेडिंग
(d) एक छात्र की सफलता का पूर्वानुमान करना

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बुद्धि परीक्षण का उपयोग एक छात्र की सफलता का पूर्वानुमान करने में, छात्रवृत्ति के लिए छात्रों का चयन करने में तथा शिक्षक के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने में किया जाता है जबकि एक छात्र का ग्रेडिंग करने के लिए मानक संदर्भित परीक्षण का उपयोग किया जाता है।

EXAM POINTS

- मूल्यांकन का महत्व है– **यह छात्रों को अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करता है, यह बालकों की कमजोरियों को बताता है एवं यह बालकों में आत्मविश्वास को बढ़ाता है**
- मूल्यांकन सत्र (session) की समाप्ति के बाद किया जाता है– **योगात्मक मूल्यांकन**
- अध्याय के बीच-बीच में होता है– **निर्माणात्मक मूल्यांकन**
- अधिगम के सन्दर्भ में अच्छे मूल्यांकन का क्या मानदण्ड होना चाहिए– **ये विश्वसनीय होते हैं**
- अच्छे मूल्यांकन की विशेषता नहीं है– **संकीर्णता**
- मूल्यांकन का प्रयोजन (Purpose) है– **यह पता लगाना कि प्रत्येक छात्र की जरूरत और अधिगम शैली क्या है, अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ाना, अध्यापक एवं छात्र के बीच बातचीत को कायम रखना**
- सीखने में होने वाली कमियों का निदान और उपचार करना उद्देश्य होना चाहिए– **मूल्यांकन (Assessment) का**
- रचनात्मक आकलन (Formative Assessment) के लिए उचित उपकरण नहीं है– **सत्र परीक्षा**
- क्रिस्टिना अपनी कक्षा को क्षेत्र –भ्रमण पर ले जाती है और वापस आने पर अपने विद्यार्थियों के साथ भ्रमण पर चर्चा करती है, यह संकेत करता है– **सीखने का आकलन की ओर**
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा होना चाहिए– **बच्चों का मूल्यांकन**
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में, व्यापक मूल्यांकन शब्दावली का तात्पर्य है– **शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन**
- उत्पादक जीवन (Productive life) जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तक तैयार कर पाई है, का पुष्टि-पोषण (Feed-back) प्रदान करना उद्देश्य है– **मूल्यांकन का**
- बच्चों के सीखने के स्तर का ज्ञान होता है– **मूल्यांकन से**
- विद्यालय-आधारित आकलन मुख्य रूप से आधारित होता है– **बाह्य परीक्षकों की अपेक्षा शिक्षक अपने शिक्षार्थियों की क्षमताओं को बेहतर मानते हैं, के सिद्धान्त पर**
- सीखने को किस प्रकार अवलोकित, रिकार्ड और सुधारा जाए इस पर बल देता है– **सतत् और व्यापक मूल्यांकन**
- परिचित वातावरण में अधिक सीखने में सभी शिक्षार्थियों की मदद करता है– **विद्यालय आधारित आकलन**
- किसके अतिरिक्त कुछ तकनीकें हैं, जो परीक्षा के कारण होने वाली चिन्ता को दूर करती हैं **–परिणाम के बारे में बहुत अधिक सोचना**
- जितनी सम्भावना हो शिक्षार्थियों का लगातार परीक्षण लेने के अतिरिक्त सभी सीखने के रूप में बढ़ावा देते हैं– **आकलन को**
- जब एक बावर्ची खाना पकाते समय खाने को चबाता है तो वह– **सीखने के लिए आकलन के समान है**
- शैक्षिक विकास में मूल्यांकन का अर्थ है– **छात्रों की प्रगति का आकलन**
- किसी मापक उपकरण के लिए सर्वाधिक वांछनीय है– **वैधता**
- सभी क्रियाकलापों का एकीकृत भाग होना चाहिए– **विज्ञान में मूल्यांकन**
- छात्रों की अधिगम की सफलता-असफलता का अध्ययन करना, अभिप्राय है– **मूल्यांकन का**
- विद्यालय-आधारित आकलन प्रारम्भ किया गया था ताकि– **सभी विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास को निश्चित किया जा सके**
- सतत् व व्यापक मूल्यांकन के लिए सही तथ्य नहीं है– **इससे शिक्षकों पर बोझ बढ़ जाता है**
- ''वे सभी क्रियाकलाप जो शिक्षक व शिक्षार्थी द्वारा स्वयं को आकलित करने के लिए किए जाते हैं, जो एक प्रतिपुष्टि के रूप में शिक्षण व अधिगम क्रियाकलापों को सुधारने हेतु सूचना प्रदान करते हैं।'' उसे कहा जाता है– **आकलन**
- एक उपयुक्त रचनात्मक आकलन कार्य नहीं है– **विद्यार्थियों का योग्यताक्रम निर्धारित करना**
- शिक्षण में अध्यापकों के द्वारा विद्यार्थियों का आकलन इस अन्तर्दृष्टि को विकसित करने के लिए किया जा सकता है– **शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण उपागम में परिवर्तन करना**
- यह समझने के लिए कि अधिगम का किस प्रकार अवलोकन किया जाता है, दर्ज किया जाता है व सुधार किया जा सकता है, यह आवश्यक है– **सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए**
- आकलन करने का सर्वाधिक उपयुक्त तरीका है– **आकलन शिक्षण अधिगम में अन्तर्निहित प्रक्रिया है**
- आकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है क्योंकि– **आकलन में अध्यापक बच्चों के अधिगम को समझता है और उसके अपने शिक्षण की प्रतिपुष्टि भी होती है**
- बच्चों की सही उत्तर की पहचान करने की योग्यता का आकलन करते हैं– **बहुविकल्पीय प्रश्न**
- सीखने में सुधार का एक तरीका है– **आकलन**
- तनाव को कम करने के अप्रत्यक्ष ढंग कहलाते हैं– **रक्षात्मक यान्त्रिकता**
- मूल्यांकन का एक प्रकार नहीं है– **मानक**
- विद्यार्थियों के सीखने में, जो रिक्तियाँ रह जाती हैं उनके निदान के बाद होना चाहिए– **समुचित उपचारात्मक कार्य**
- अकादमिक कठिनाइयों के कारणों का पता लगाना मुख्य उद्देश्य है– **नैदानिक परीक्षा का**
- CCE में, औपचारिक और योग्यतात्मक निर्धारण का कुल मूल्य होता है– **क्रमशः 40% और 60%**
- कक्षा नायक (उपदेशक) द्वारा प्रयुक्त मूल्यांकन का प्रकार, जो अनुदेशन के समय सीखने के विकास में किया जाता है– **फार्मेटिव मूल्यांकन**
- बाह्य परीक्षकों की अपेक्षा शिक्षक अपने शिक्षार्थियों की क्षमताओं को बेहतर जानते हैं, यह आधारित होता है– **विद्यालय-आधारित आकलन सिद्धान्त पर**
- मापक उपकरण के लिए सर्वाधिक वांछनीय लक्षण है– **विश्वसनीयता**
- एक शिक्षक कक्षा के कार्य को एकत्र करता है और उन्हें पढ़ाता है उसके बाद योजना बनाता है और अपने अगले पाठ को शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समायोजित करता है। वह कर रहा है– **सीखने के लिए आकलन**
- रचनात्मक प्रतिपुष्टि उपलब्ध कराते हुए सीखने में संवर्धन करता है– **विद्यालय आधारित आकलन**
- अधिगम में आकलन आवश्यक होता है– **प्रेरणा के लिए**
- केवल कागज-पेन्सिल जाँचों द्वारा आकलन– **आकलन को सीमित कर देता है**

■शिक्षक विद्यार्थियों की चिन्तन प्रक्रियाओं पर ध्यान देने के अलावा उनकी अवधारणात्मक समझ का भी आकलन करता है, यह उजागर करता है– **अधिगम के आकलन को**

भाग–II
समावेशी शिक्षा, निर्देशन एवं परामर्श

16.
समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समझ

विशिष्ट बालक

1. विशिष्ट बालकों के अन्तर्गत निम्न में से कौन–सा बालक आता है?

(a) पिछड़ा बालक (b) प्रतिभाशाली बालक
(c) मन्द बुद्धि बालक (d) ये सभी

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (d) विशिष्ट बालकों को अंतर्गत निम्न प्रकार के बालकों को रखा जा सकता है–
(1) प्रतिभाशाली बालक
(2) मंद बुद्धि बालक
(3) तीव्र बालक
(4) पिछड़े बालक
(5) शारीरिक दृष्टि से दिव्यांग बालक
(6) समस्यात्मक बालक
  (i) सामाजिक दृष्टि से कुसमायोजित बालक
  (ii) संवेगात्मक असंतुलित बालक
  (iii) अपराधी बालक

2. निम्नलिखित में से कौन-सा विशिष्ट बालकों का प्रकार नहीं माना जाता है?

(a) धीमी गति से सीखने वाले (b) सृजनशील बालक
(c) शारीरिक रुप से विकलांग (d) साधन-सम्पन्न बालक

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) विशिष्ट बालक वे बालक होते हैं जो सामान्य बुद्धि एवं शारीरिक क्षमता वाले बालकों से भिन्नता प्रदर्शित करते है- जैसे -
धीमी गति से सीखने वाले बालक
- सृजनशील बालक
- शारीरिक रुप से विकलांग बालक -
- सामाजिक रुप से पिछड़े बालक

साधन सम्पन्न होना विशिष्टता का परिचायक नही है।

समावेशी शिक्षा का अर्थ एवं विशेषताएँ

3. .....यह विचारधारा है कि सभी बच्चों को एक नियमित विद्यालय व्यवस्था में समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार हो।

(a) मुख्यधारा शिक्षा (b) विशेष शिक्षा
(c) बहुल-सांस्कृतिक शिक्षा (d) समावेशी शिक्षा

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) समावेशी शिक्षा वह विचारधारा है जिसमें सभी बच्चों को एक नियमित विद्यालय व्यवस्था में समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार हो। निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में प्रारम्भिक शिक्षा में सभी बच्चों के समावेशन व समता के सिद्धान्तों पर आधारित भेदभाव रहित शिक्षा प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त किया गया है। यह अधिनियम सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने व उसे पूरा करने का अधिकार देता है।

4. समावेशी शिक्षा से तात्पर्य है-

(a) नियमित विद्यालयों में सभी प्रकार के बालकों का बिना किसी भेदभाव के स्वागत करना
(b) शिक्षण का एक विशेष तरीका, जिससे सभी बालक सीख सकें
(c) कड़ी दाखिला प्रक्रिया को बढ़ावा देना
(d) शिक्षण के लिए विशेष विद्यालयों का प्रयोग करना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (a) समावेशी शिक्षा वह होती है जिसमे सभी बालक बिना किसी भेद भाव के एक साथ सामान्य विद्यालय (नियमित विद्यालय) में शिक्षा ग्रहण करें।

5. शिक्षा में समावेशन का अर्थ है

(a) शारीरिक अयोग्य बालकों को शिक्षा प्रदान करना
(b) मंदबुद्धि बालकों को शिक्षा प्रदान करना
(c) लड़के, लड़कियों व वयस्को को शिक्षा प्रदान करना
(d) सभी विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य धारा प्रणाली में स्वीकारना

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (d) समावेशन का तात्पर्य सभी को शामिल करना है अतः शिक्षा में समावेशन का अर्थ सभी विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल करना एवं स्वीकारना है।

6. विशेष शिक्षा सम्बन्धित हैं

(a) मेधावी छात्र के लिए शिक्षा से

(b) कम योग्य छात्रों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम से

(c) शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम से

(d) पिछड़ी बुद्धि के छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम से

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) विशेष शिक्षा ऐसे छात्रों को दी जाती है जो बौद्धिक क्षमता में कम होते है ताकि अतिरिक्त सहायता से वे सामान्य बच्चों की तरह अपना अधिगम कर सके।

7. निःशक्त बालकों की शिक्षा के लिए प्रावधान किया जा सकता है

(a) समावेशित शिक्षा द्वारा (b) मुख्य धारा में डालकर

(c) समाकलन द्वारा (d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) निःशक्त बालक वे होते है जो शारीरिक रूप से अक्षम होते है। समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत इन बालकों को भी सामान्य विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का प्रावधान किया गया है। समावेशी शिक्षा वह शिक्षा है जिसमें सभी प्रकार के बालकों को बिना किसी भेद-भाव के एक ही स्थान पर शिक्षा दी जाती है।

8. वर्तमान में निःशक्त बच्चों की शिक्षा के लिए कहा गया है

(a) समावेशी शिक्षा (b) विशेष शिक्षा

(c) समेकित शिक्षा (d) कोई नहीं

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रुपरेखा-2005 (NCF-2005) के तहत निःशक्त बालकों के लिए समावेशी शिक्षा की घोषणा की गई है। समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत प्रत्येक वर्ग के बालक जो आयु वर्ग में समान हो परन्तु सामाजिक, आर्थिक एवं शारीरिक रूप से भिन्न हों, उन्हें एक साथ शिक्षा दी जाती है। इससे बालकों में नकारात्मक व्यवहार की सम्भावना नगण्य होती है तथा सहयोग व भाईचारे की भावना का विकास होता है।

9. निम्नलिखित में से कौन–सा एक कथन 'समावेशन' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) यह एक विश्वास है कि बच्चों को अपनी योग्यताओं के अनुसार अलग किया जाना चाहिए

(b) यह एक विश्वास है कि कुछ बच्चे कभी कुछ सीख ही नहीं सकते

(c) यह एक दर्शन है कि सभी बच्चों को नियमित विद्यालय प्रणाली में समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है

(d) यह एक दर्शन है कि विशेष बच्चे 'ईश्वर के विशेष उपहार' हैं

DSSSB PRT

C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) समावेशन का अर्थ है किसी व्यवस्था में समाहित करना। यह एक दर्शन है कि सभी बच्चों को नियमित विद्यालय प्रणाली में समान शिक्षा पाने का अधिकार है। अर्थात नियमित विद्यालय में सभी विद्यार्थियों का समावेशन करना, शिक्षा में समावेशन का सबसे अच्छा वर्णन है।

10. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा उपलब्ध कराई जानी चाहिए

(a) अन्य सामान्य बच्चों के साथ

(b) विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित पद्धतियों द्वारा

(c) विशेष विद्यालयों में

(d) विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा

DSSSB PRT

C TET 2011 (I-V)

Ans : (a) शिक्षा के समावेशीकरण के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अन्य सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

11. समावेशी शिक्षा

(a) हाशिए पर स्थित वर्गों से शिक्षकों को सम्मिलित करने से सम्बन्धित है

(b) कक्षा में विविधता का उत्सव मनाती है

(c) दाखिले सम्बन्धी कठोर प्रक्रियाओं को बढ़ावा देती है

(d) तथ्यों की शिक्षा (मतारोपण) से सम्बन्ति है

DSSSB PRT

C TET 2012 (I-V)

Ans : (b) समावेशी शिक्षा कक्षा में विविधता का उत्सव मनाती है। अर्थात् इस प्रकार की शिक्षा कक्षा में वैयक्तिक भिन्नता को मान्यता देते हुए शिक्षण कार्य के संचालन को निर्धारित करती है।

12. समावेशी शिक्षा मानती है कि हमें .....को..... के अनुरूप बदलना है।

(a) व्यवस्था/बच्चे (b) परिवेश/परिवार

(c) बच्चे/व्यवस्था (d) बच्चे/व्यवस्था

DSSSB PRT

C TET 2015 (I-V)

Ans : (a) समावेशी शिक्षा बच्चों के वैयक्तिक अंतर को मान्यता देती है और यह भी मानती है कि बच्चों के साथ कहीं भी और किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए समावेशी शिक्षा की अवधारणा विकसित की गयी। यह शिक्षा बच्चों के अनुसार व्यवस्था में परिवर्तन की बात करती है ताकि शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक रूप से असमर्थ बच्चों की शिक्षा व्यवस्था सामान्य विद्यालयों में हो सके।

13. 'सभी के लिए विद्यालयों में सभी की शिक्षा' निम्नलिखित में से किसके लिए प्रचार वाक्य हो सकता है?

(a) सशक्तिशील शिक्षा (b) समावेशी शिक्षा

(c) सहयोगात्मक शिक्षा (d) पृथक् शिक्षा

DSSSB PRT

C TET 2014 (I-V)

Ans : (b) समावेशी शिक्षा, सभी के लिए विद्यालयों में सभी की शिक्षा का प्रावधान या प्रबन्ध करता है। समावेशी शिक्षा वैयक्तिक भिन्नताओं को स्वीकार करते हुए सभी को अपनी योग्यता, क्षमता के अनुसार विकास करने का अवसर प्रदान करता है।

14. विशेष रूप से जरूरतमन्द बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए–

(a) दूसरे सामान्य बच्चों के साथ

(b) विशेष विद्यालयों में विशेष बच्चों के लिए विकसित विधियों द्वारा

(c) विशेष विद्यालयों में

(d) विशेष विद्यालयों में विशेष शिक्षकों द्वारा

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (a) विशेष रुप से जरूरत मंद बच्चों को सामान्य बच्चो के साथ ही शिक्षा देने का प्रबंध करना चाहिए ताकि अपनी आवश्यकताओं या जरूरतों की पूर्ति के साथ-साथ वे सामान्य बच्चों के क्रियाकलापों से भी प्रभावित होते रहे ताकि भविष्य में सामान्य वातावरण के साथ अपने आपको समायोजित कर सके।

15. समन्वित शिक्षा की सफलता निर्भर करती है–

(a) समुदाय के समर्थन पर

(b) पाठयपुस्तकों की उत्कृष्टता पर

(c) शिक्षण-अधिगम वस्तु की गुणवत्ता पर

(d) शिक्षकों में अभिवृत्तिगत परिवर्तन पर

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) शिक्षकों में अभिवृत्तिगत परिवर्तन की उत्कृष्टता पर ही समन्वित शिक्षा की सफलता निर्भर करती है।

16. एक समावेशी कक्षा वह है, जहाँ –

(a) तब तक आकलन की पुनरावृत्ति होती रहती है जब तक प्रत्येक अधिगमकर्ता न्यूनतम श्रेणी प्राप्त न कर ले

(b) विद्यार्थियों का भार कम करने के लिए अध्यापक केवल अनुमोदित पुस्तकों से ही पढ़ाते हैं

(c) समस्याओं का अधिकाधिक समाधान करने की सम्भावना की दृष्टि से बच्चों की सक्रिय भागीदारिता रहती है

(d) अध्यापक प्रत्येक अधिगमकर्ता के लिए वैविध्यपूर्ण व सार्थक अधिगमात्मक अनुभवों हेतु परिवेश का निर्माण करते हैं

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) एक समावेशी कक्षा वह है, जहाँ अध्यापक प्रत्येक अधिगमकर्ता के लिए वैविध्यूपर्ण व सार्थक अधिगमनात्मक अनुभवों हेतु परिवेश का निर्माण करते है।

17. समावेशी शिक्षा उस विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था की ओर संकेत करती है जो –

(a) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को विशिष्ट विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा देने को प्रोत्साहित करती है।

(b) केवल बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देती है

(c) जो सभी निर्योग्य बच्चों को शामिल करती है

(d) जो उनकी शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भाषिक या अन्य विभिन्न योग्यता स्थितियों को ध्यान में रखे बगैर बच्चों को शामिल करती है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012

Ans: (d) समावेशी शिक्षा उस विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था की ओर संकेत करती है जो सामान्य शिक्षार्थियों के साथ शारीरिक रूप से दिव्यांग शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करता है। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षार्थियों की शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भाषिक या अन्य विभिन्न योग्यताओं व स्थितियों को ध्यान में रखे बगैर सभी को समान व उपयोगी शिक्षा उपलब्ध कराता है।

18. समेकित शिक्षा इंगित करती है–

(a) सभी बच्चों के लिए एकसमान शिक्षण विधि

(b) सामान्य बच्चों एवं भिन्न रूप से योग्य बच्चों के लिए एक ही स्कूल

(c) सामान्य बच्चों एवं भिन्न रूप से योग्य बच्चों के लिए पृथक् स्कूल

(d) सामान्य बच्चों एवं भिन्न रूप से योग्य बच्चों के लिए एकसमान सुविधा

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (b) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 (NCF-2005) ने समेकित शिक्षा की संस्तुति की है। इसके अन्तर्गत अलग-अलग बुद्धिलब्धि वाले बालक एक साथ एक ही विद्यालय में तथा एक ही कक्षा में शिक्षा ग्रहण करेंगे। इससे उनमें सहयोगात्मक समायोजन की क्षमता का विकास होगा।

19. विशेष शिक्षा इससे संबंधित है-

(a) प्रतिभाशाली बच्चों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

(b) शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

(c) प्रतिभाशाली लोगों के लिए शिक्षा

(d) विकलांगों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : विशेष शिक्षा विकलांगों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम से सम्बन्धित है। यह शिक्षा शारीरिक, मानसिक अक्षम या विशिष्ट गुण सम्पन्न बालकों के लिए अपनायी जाती है। विशेष शिक्षा कार्यक्रम में इन विशिष्ट बालकों की आवश्यकताओं, क्षमताओं, योग्यताओं आदि का ध्यान रखा जाता है और तद्नुसार शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया जाता है।

20. नियमित विद्यालयों में आम तौर पर विकासशील बच्चे के साथ-साथ विशेष बच्चों को शिक्षित करना ..... है–

(a) व्यक्तिगत शिक्षा (b) सामान्य शिक्षा

(c) विशेष शिक्षा (d) समावेशी शिक्षा

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) नियमित विद्यालयों में आम तौर पर विकासशील बच्चे के साथ–साथ विशेष बच्चों को शिक्षित करना समावेशी शिक्षा के अंतर्गत आता है। शैक्षिक समावेशन एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो छात्रों की योग्यता क्षमता एवं स्थितियों के अनुरूप दी जाती है। सभी बच्चे जो विभिन्न वर्ग एवं योग्यता के हैं, को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षा देना समावेशित शिक्षा कहलाता है।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं उद्देश्य

21. शिक्षा-शास्त्र का वह प्रकार जिसमें विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता होती है

(a) विशेष लोगों को दी जाती है

(b) विकलांग व्यक्तियों को दी जाती है

(c) बुद्धिमान व्यक्तियों को दी जाती है
(d) स्थानीय मुखिया द्वारा संस्थापित होती है

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट प्रकार के बालकों के लिए होती है विशिष्ट बालकों के अन्तर्गत शारीरिक एवं मानसिक रूप से अक्षम बालक होते हैं जो सामान्य परिस्थितियों में अपने कार्य को कर पाने में सक्षम नहीं होते हैं।

22. समावेशित विद्यालय योजना के सन्दर्भ में कौन सा कथन गलत है?

(a) समानता की भावना का विकास
(b) धनात्मक आत्मसम्मान का विकास
(c) विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों में आत्म-हीनता की भावना का विकास
(d) विशेष बालकों के नैतिक आचरण को उठाना

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) समावेशित विद्यालय योजना के मुख्य लक्ष्य है
- विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए समान अवसर देना
- विद्यार्थियों में समानता की भावना का विकास करना
- विद्यार्थियों में आत्मसम्मान की भावना का विकास करना
- नैतिकता व व्यक्तित्व का निर्माण करना आदि।

23. एक समावेशी कक्षा के लिये, शिक्षकों को, किस प्रकार की तैयारी की आवश्यकता नहीं होती है?

(a) व्यावहारिक व सामाजिक संक्रियाओं की सम्पूर्ण भागीदारी
(b) समस्यागत क्षेत्रों के बालकों से शीघ्र व सतत सम्पर्क
(c) निदानात्मक व उपचारात्मक प्रक्रियाओं का अधिकतर प्रयोग
(d) धैर्यशीलता का कम होना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) समावेशी का तात्पर्य समेंकित रूप से है एवं समावेशी कक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसमें सभी वर्ग एवं मानसिक स्तर के विद्यार्थी शामिल होते है। इस तरह के कक्षा को चलाने के लिए शिक्षक में धैर्यशीलता, सामाजिकता, समस्या को हल करने की क्षमता आदि का उच्च स्तर होना अति आवश्यक है नहीं तो कक्षा के बालकों का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

24. समायोजन शिक्षा का मुख्य कार्य है–

(a) विद्यालय न आने वाले बच्चों को विद्यालय में लाना
(b) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्य धारा में लाना
(c) विशेष व सामान्य बच्चों के साथ–साथ पढ़ने की सुविधा देना
(d) उपरोक्त सभी

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) समायोजन शिक्षा का मुख्य कार्य है–
विद्यालय न आने वाले बच्चों को विद्यालय में लाना
विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्य धारा में लाना
विशेष व सामान्य बच्चों के साथ–साथ पढ़ने की सुविधा देना।
अर्थात् शिक्षा का समायोजन यह बताता है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामान्य छात्र और एक दिव्यांग छात्र को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए।

25. सफल समावेशन को निम्नलिखित की आवश्यकता होती है सिवाय

(a) पृथक्करण (b) अभिभावकों की भागीदारी
(c) क्षमता–सम्वर्द्धन (d) संवेदनशील बनाना

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (a) सफल समावेशन के लिए वैयक्तिक भिन्नता की स्वीकृति, अभिभावकों की भागीदारी, क्षमता सवंर्द्धन संवदेनशील बनाना, सहयोगात्मक व्यवहार को प्रोत्साहन आदि का होना आवश्यक होता है सिवाय पृथक्करण के।

26. एक समावेशी विद्यालय

(a) शिक्षार्थियों को निर्योग्यता के अनुसार उनकी सीखने की आवश्यकताओं को निर्धारित करता है
(b) शिक्षार्थियों की क्षमताओं की परवाह किए बिना सभी के अधिगम–परिणामों को सुधारने के लिए प्रतिबद्ध होता है
(c) शिक्षार्थियों के मध्य अन्तर करता है और विशेष रूप से सक्षम बच्चों के लिए कम चुनौतीपूर्ण उपलब्धि लक्ष्य निर्धारित करता है
(d) विशेष रूप से योग्य शिक्षार्थियों के अधिगम–परिणामों को सुधारने के लिए विशिष्ट रूप से प्रतिबद्ध होता है

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (b) एक समावेशी विद्यालय विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नता को मान्यता देता है और यह मानता है कि सभी बालक एक दूसरे से भिन्न होते हैं यह भिन्नता शारीरिक, मानसिक, सामाजिक कुछ भी हो सकती है अतः सभी भिन्नताओं को मान्यता देते हुए ऐसी शिक्षा के अवसर प्रदान किये जाये जिससे सभी विद्यार्थी लाभान्वित हो सकें।

27. समावेशी शिक्षा के पीछे मूलाधार यह है कि

(a) समाज में विभिन्नता है और विद्यालयों को इस विभिन्नता के प्रति संवेदनशील होने के लिए समावेशी होने की आवश्यकता है
(b) प्रत्येक बच्चे के निष्पादन के लिए मानक एकसमान तथा मानकीकृत होने चाहिए
(c) हमें विशेष आवश्यकता है और सुविधाओं तक उनकी पहुँच होनी चाहिए
(d) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अलग विद्यालयों की व्यवस्था करना लागत प्रभावी नहीं है

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (a) समावेशी शिक्षा के पीछे मूलाधार यह है कि समाज में विभिन्नता है और प्रत्येक बालक एक दूसरे से भिन्न है यह भिन्नता चाहे योग्यता क्षमता, रुचि, अभिवृत्ति जैसे मानसिक और मनोवैज्ञानिक हो चाहे समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी अपंगता जैसे व्यवहारिक हो। इन सब भिन्नताओं को संसाधन समझना चाहिए तथा उनको विकसित होने के समान अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। इसके लिए विद्यालयों को इन भिन्नताओं के प्रति संवेदनशील होने की आवश्कता है।

28. जिन विद्यालयों में समेकित शिक्षा दी जाती है उसके शिक्षकों को किस क्षेत्र विशेष में प्रशिक्षित करना चाहिए?

(a) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान और शिक्षण
(b) व्याख्यान विधि द्वारा शिक्षण
(c) क्रियात्मकता के साथ शिक्षण
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) समेकित शिक्षा में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों में विशेष आवश्यकता वाले बालको तथा लक्षणों को पहचानने की क्षमता का होना अति अनिवार्य है अतः उन्हें इसका प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

29. एक समावेशी विद्यालय ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रश्नों पर मनन करता है।

(a) क्या हम अधिगमयोग्य परिवेश की योजना बनाने और उसे प्रदान करने के लिए समूह में कार्य करते हैं?
(b) क्या हम विशेष बालक को बेहतर देखभाल उपलब्ध कराने के लिए उचित तरीके से उन्हें अलग करते हैं?
(c) क्या हम शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए युक्तियाँ अपनाते हैं?
(d) क्या हम यह विश्वास करते हैं कि सभी शिक्षार्थी सीख सकते हैं?

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (b) एक समावेशी विद्यालय यह नहीं देखता कि हम विशेष बालक को बेहतर देखभाल, बेहतर शिक्षा, सुविधा आदि उपलब्ध कराते है ताकि वह सामान्य से अलग दिखे। बल्कि विद्यालय हमेशा यह ध्यान रखता है कि वह शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तथा अधिगमयोग्य परिवेश की योजना बनाने और उसे प्रदान करने के लिए समूह में कार्य कर रहा है कि नहीं।

30. समावेशी शिक्षण का उद्देश्य ..... को समाप्त करना और यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे को उनके शिक्षित होने का अधिकार प्राप्त हो–

(a) असमानता (b) चुनौती
(c) समस्या (d) अंतर

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (a) समावेशी शिक्षण का उद्देश्य असमानता को समाप्त करना और यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे को उनके शिक्षित होने का अधिकार प्राप्त हो। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी भी भेदभाव व अंतर के बिना समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षा प्रदान की जाती है ताकि समाज के सभी बालकों को एक स्तर पर लाया जा सके। इसका उद्देश्य बालक के विकास के लिए सहायक वातावरण उपलब्ध कराना तथा समाज में बालकों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना है।

31. किसी प्रकार की असमर्थता के बावजूद, सभी बच्चे निम्न में सक्षम होते हैं-

(a) चलने (b) सुनने
(c) सीखने (d) देखने

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : किसी प्रकार की असमर्थता के बावजूद सभी बच्चे सीखने में सक्षम होते हैं। यह बाल केन्द्रित शिक्षा की अवधारणा को संपुष्ट करता है। बाल केन्द्रित शिक्षा का मानना है कि सभी बच्चे सीख सकते हैं यदि अधिगम सामग्री उनकी रूचि, योग्यता, क्षमता, आवश्यकता आदि के अनुरूप हो। यह वैयक्तिक भिन्नता के अनुसार अधिगम परिस्थिति के निर्माण पर बल देता है।

32. 20वीं शताब्दी के पहले छमाही के दौरान,..... छात्रों, जिनकी पहचान विशेष आवश्यकता रखने वालों के रूप में की गई थी, उन्हें स्कूलों में कुछ या कोई विशेष सेवा नहीं मिली थी।

(a) औसत से अधिक (b) असाधारण
(c) मानसिक रूप से मंद (d) गरीब

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : 20वीं शताब्दी के पहले छमाही के दौरान, असाधारण छात्रों, जिनकी पहचान विशेष आवश्यकता रखने वालों के रूप में की गयी थी, उन्हें स्कूलों में कुछ या कोई विशेष सेवा नहीं मिली थी, जिसके कारण ऐसे बालकों की क्षमता व योग्यता का उचित विकास नहीं हो सका था।

समावेशी शिक्षा के सिद्धांत एवं प्रक्रिया

33. आपकी कक्षा में आप पाते हैं कि पढ़ाई में लम्बे अन्तराल के कारण कुछ विद्यार्थी एक प्रसंग को नहीं समझ पा रहे हैं। आप क्या करेंगे?

(DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT))

(a) उन लोगों की मदद के लिए अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था
(b) अभिभावकों से कहेंगे कि घर पर मदद की व्यवस्था करें
(c) अपनी कक्षा को जारी रखेंगे
(d) प्रधानाध्यापक से मदद लेंगे

Ans. (a) **:** प्रत्येक विद्यार्थी में व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है। पढ़ाई में लम्बे अंतराल के कारण कुछ विद्यार्थी यदि प्रसंग को नहीं समझ पाते हैं तो उनके लिए अतिरिक्त कक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।

34. समावेशी शिक्षा..... के सिद्धांत पर आधारित है।

(a) सामाजिक संतुलन
(b) समता एवं समान अवसर
(c) सामाजिक अस्तित्व एवं वैश्वीकरण
(d) विश्व बंधुता

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : समावेशी शिक्षा समता एवं समान अवसर के सिद्धान्त पर आधारित है। अर्थात् समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत उन बालकों को शामिल किया जाता है जो सामान्य बालकों से अलग होते हैं। जैसे–दृष्टि बाधित बालक, मूक बधिर बालक, अपवंचित बालक, प्रतिभाशाली बालक, मानसिक मंद बालक या इसी प्रकार के अन्य विशिष्ट प्रकार के बालक। समावेशी शिक्षा में इन सभी प्रकार के विशिष्ट बालकों को सामान्य बालकों के साथ नियमित विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर दिया जाता है ताकि किसी भी प्रकार की सामाजिक पारिस्थिति में अपना समायोजन कर सकें।

35. एक समावेशी कक्षा में शिक्षक को क्या करना चाहिए–

(a) अशक्त अधिगमकर्त्ताओं के प्रति दया एवं सहानुभूति का भाव प्रदर्शित करना चाहिए।

(b) बच्चों को 'अपाहिज बच्चा', 'मंद बुद्धि बच्चा' आदि के रूप में वर्गीकृत करना चाहिए।

(c) केवल प्रतिभाशाली एवं योग्य बच्चों पर ध्यान देना चाहिए।

(d) यह विश्वास करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे में अपनी योग्यताओं एवं शक्ति के अनुसार सीखने की क्षमता है।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (d) एक समावेशी कक्षा में शिक्षक को यह विश्वास करना चाहिए कि प्रत्येक बच्चे में अपनी योग्यताओं एवं शक्ति के अनुसार सीखने की क्षमता है। इसी विश्वास के साथ वह वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखते हुए शिक्षण अधिगम परिस्थिति का निर्माण करता है, ताकि बच्चे अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार अधिगम अनुभव प्राप्त कर सकें।

36. निम्न में से क्या समावेशी कक्षा में शिक्षक की भूमिका नहीं है?

(a) बच्चे की आवश्यकता के अनुरूप बैठने की पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए

(b) शिक्षक को निःशक्त बच्चों पर ध्यान नहीं देना चाहिए

(c) शिक्षक को बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए

(d) शिक्षक को सीखने में अक्षम को अतिरिक्त समय देना चाहिए

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : समावेशी कक्षा में शिक्षक की भूमिका निम्न होनी चाहिए–

1. बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप बैठने की पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए।
2. शिक्षक को निःशक्त बच्चों पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
3. बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. शिक्षक को सीखने में अक्षम बच्चों को अतिरिक्त समय देना चाहिए।
5. शिक्षक को बच्चों के वैयक्तिक भिन्नता को ध्यान में रखकर अधिगम परिस्थितियों का निर्माण करना चाहिए।

37. विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु शिक्षक को ध्यान देना चाहिए–

(a) अपने पहनावे पर (b) अनुशासन पर

(c) व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर (d) पाठ्यक्रम पर

DSSSB PRT

Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु शिक्षक को व्यक्तिगत आवश्यकता पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि विशिष्ट बालक के अंतर्गत प्रतिभाशाली, मंद बुद्धि, पिछड़े, समस्यात्मक आदि प्रकार के बालक आते हैं जिनकी आवश्यकताएँ भिन्न–भिन्न होती है। अतः ऐसे बालकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता होती है।

38. एक समावेशी कक्षा में किसी शिक्षिका की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका है :

(a) यह सुनिश्चित करना कि शिक्षिका कक्षा को मानक निर्देश दे रही है।

(b) बच्चे के माता-पिता के व्यवसाय को जानना ताकि शिक्षिका प्रत्येक बच्चे के भावी व्यवसाय को जान सके।

(c) सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चे को अपनी संभावना को प्राप्त करने का अवसर मिले।

(d) कक्षा के लिए ऐसी योजना बनाना कि प्रत्येक बच्चा समान गति से आगे बढ़े।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

DSSSB PRT

Ans : (c) समावेशी कक्षा वह होती है जिसमें सभी प्रकार के योग्यता वाले विद्यार्थी एक साथ एक ही कक्षा में बैठ कर शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसमें शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका यह होती है कि उसे यह सुनिश्चित करना कि सभी विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के अनुसार अवसर दिया जाए।

39. अध्यापक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी कक्षा के सभी शिक्षार्थी अपने आपको स्वीकृत और सम्मानित समझें। इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि वह–

(a) कड़े नियम बनाए और जो बच्चे उनका पालन न करें उन्हें दंड दे।

(b) वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों का तिरस्कार करें ताकि वे अनुभव करें कि उन्हें अधिक कठोर परिश्रम करना है।

(c) उन शिक्षार्थियों का पता लगाए जो अच्छी अंग्रेजी बोल सकते हों और संपन्न घरों से हों तथा उन्हें आदर्श के रूप में प्रस्तुत करें।

(d) अपने शिक्षार्थियों की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करें और कक्षा में विविध मतों को प्रोत्साहित करें।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (d) सभी विद्यार्थी अपने आपको स्वीकृत और सम्मानित समझे इसके लिए अध्यापकों को सभी विद्यार्थियों की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की जानकारी होनी चाहिए जिससे बालक के आन्तरिक भावो को समझ सके तथा बालक के अनुरूप शिक्षण कार्य कर सकें।

40. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों से व्यवहार करने के लिए निम्नलिखित दार्शनिक दृष्टिकोणों में से किसका अनुसरण किया जाना चाहिए?

(a) उन्हे किसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं होती

(b) उन्हें समावेशी शिक्षा का और नियमित विद्यालयों में अध्ययन करने का अधिकार प्राप्त है

(c) उन्हें पृथक करे उनकी शिक्षा किसी भिन्न शैक्षिक संस्थाओं में होनी चाहिए

(d) उन्हें केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

DSSSB PRT

Ans : (b) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम की घोषणा के अनुसार विशेष आवश्यकता वाले बच्चे अर्थात नकारात्मक विशिष्ट बालक को भी समावेशी शिक्षा का और नियमित विद्यालयों में अध्ययन करने का अधिकार प्राप्त है।

41. एक शिक्षिका की कक्षा में कुछ शारीरिक विकलांगता वाले बच्चे हैं। निम्नलिखित में से उसके लिए क्या कहना सबसे उचित होगा?

(a) पोलियोग्रस्त बच्चे अब एक गाना प्रस्तुत करेंगे।

(b) पहिया-कुर्सी वाले बच्चे हॉल में जाने के लिए अपने समवयस्क साथी बच्चों से मदद ले सकते हैं।

(c) शारीरिक रूप से असुविधाग्रस्त बच्चे कक्षा में ही कोई वैकल्पिक गतिविधि कर सकते हैं।

(d) मोहन खेल के मैदान में जाने के लिए आप अपनी बैसाखियों का प्रयोग क्यों नहीं करते?

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (c) एक शिक्षिका की कक्षा में कुछ शारीरिक विकलांगता वाले बच्चे हैं शिक्षिका उनके लिए कह सकती है कि शारीरिक रूप से असुविधाग्रस्त बच्चे कक्षा में ही कोई वैकल्पिक गतिविधि कर सकते हैं।

42. एकल अभिभावक वाले बच्चे को पढ़ाते समय शिक्षक को –

(a) स्थिर और एकरूप वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए

(b) इस तथ्य को अनदेखा करना चाहिए और ऐसे बच्चे के साथ अन्य बच्चों के समान व्यवहार करना चाहिए

(c) इस प्रकार के बच्चे के साथ भिन्न प्रकार से व्यवहार करना चाहिए

(d) ऐसे बच्चे को कम गृह कार्य देना चाहिए

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (b) एकल अभिभावक वाले बच्चे को पढ़ाते समय शिक्षक को इस तथ्य को अनदेखा करना चाहिए और ऐसे बच्चे के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि एकल अभिभावक का उनकी योग्यता, क्षमता या बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

43. जब एक निर्योग्य बच्चा पहली बार विद्यालय आता है तो शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(a) बच्चे की निर्योग्यता के अनुसार उसे विशेष विद्यालय में भेजने का प्रस्ताव देना चाहिए

(b) उसे अन्य विद्यार्थियों से अलग रखना चाहिए

(c) सहकारी योजना विकसित करने के लिए बच्चें को माता-पिता के साथ चर्चा करनी चाहिए

(d) प्रवेश-परीक्षा लेनी चाहिए

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (c) जब एक निर्योग्य बच्चा पहली बार विद्यालय आता है तो सहकारी योजना विकसित करने के लिए बच्चें के माता-पिता के साथ चर्चा करनी चाहिए।

44. एक शिक्षक को स्कूल में प्रथम बार आए विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के साथ करना चाहिए-

(a) उसकी विशेष आवश्यकता के अनुसार विशेष स्कूल में जाने की सलाह

(b) अन्य बच्चों से अलग करना

(c) बच्चे के अभिभावक से सहयोगी योजना की चर्चा

(d) बच्चे की विशेष आवश्यकता के स्तर की जाँच के लिए प्रवेश परीक्षा

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) प्रथम बार स्कूल आये विशेष आवश्यकता वाले बालक के संदर्भ में शिक्षक को उसके सामाजिक स्थिति का पता लगाना आवश्यक होता है जिससे उसके व्यक्तित्व का परीक्षण किया जा सके तथा साथ ही शिक्षक को बच्चे के अभिभावक के साथ मिल कर उसके लिए सहयोगी योजना का निर्माण करना चाहिए ताकि बालक शिक्षक तथा विद्यालयी व्यवस्था के साथ सहज स्थिति में आ सके और उसका अधिगम सुचारु रूप से चल सके।

45. विविध शिक्षार्थियों वाली एक समावेशी कक्षा में सहयोगी अधिगम और समवयस्कों से सीखना–

(a) सक्रिय रूप से निरूत्साहित किया जाना चाहिए और प्रतियोगिता को बढ़ावा देना चाहिए।

(b) केवल कभी–कभी ही प्रयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि यह सहपाठियों से तुलना को बढ़ावा देता है।

(c) सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे समवस्यकों की स्वीकार्यता बढ़े।

(d) कार्यान्वित नहीं किया जाना चाहिए और विद्यार्थियों को क्षमताओं के अनुसार अलग–अलग किया जाना चाहिए।

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2016

Ans : (c) विविध शिक्षार्थियों वाली एक समावेशी कक्षा में सहयोगी अधिगम और समवयस्कों से सीखने को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे समवस्यकों की स्वीकार्यता बढ़े साथ ही साथ उनमें सहयोगात्मक भावना का भी विकास हो।

46. कौन–सा समावेशी शिक्षा का सिद्धांत नहीं है?

(a) शिक्षार्थियों के बीच कोई भेदभाव नहीं

(b) विशेष बच्चों के लिए अलग कक्षा

(c) समान शैक्षिक अवसर

(d) सभी बच्चों की खानपान संबंधी जरूरतों का ध्यान रखना

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : समावेशी शिक्षा में केवल विकलांग बच्चों को ही सामान्य कक्षा में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा देना नहीं है, बल्कि सभी बच्चे जो विभिन्न वर्ग एवं योग्यता के हैं, को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षा देना सम्मिलित होता है। समावेशी कक्षा में सभी के लिए समान शैक्षिक अवसर, सभी बच्चों की खान-पान संबंधी जरूरतों का ध्यान रखना तथा शिक्षार्थियों के बीच कोई भेदभाव नहीं करने के सिद्धांत का पालन किया जाता है जबकि विशेष बच्चों के लिए अलग कक्षा का प्रावधान इस शिक्षा का सिद्धांत नहीं है।

47. आईईपी ..... अनुदेश का प्रमुख रूप है–

(a) सहकर्मी शिक्षक (b) वैयक्तिकृत

(c) पहचान (d) आंकलन

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (b) आई ई पी अर्थात् व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (Individualized education program) वैयक्तिकृत अनुदेश का प्रमुख रूप है। यह एक शिक्षा योजना है जिसका निर्माण छात्रों की

जरूरतों को पूरा करने के लिए किया गया है। इसे विशेष शिक्षा सेवाओं के लिए अर्हक के रूप में पहचाना गया है। यह एक योजना है जो शिक्षक तथा छात्रों दोनों की आवश्यकताओं जैसे– छात्रों को लक्ष्यों को पूरा करने तथा शिक्षकों को सेवाओं को प्रदान करने से पहले के क्रियाकलापों को निर्देशित करने के लिए सहायता करती है।

48. समावेशी शिक्षा में योजना को..... के द्वारा पालन किया जाना चाहिए।

(a) सार-कथन (b) मूल्यांकन
(c) कार्यान्वयन (d) आंकलन

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : समावेशी शिक्षा में योजना को कार्यान्वयन के द्वारा पालन किया जाना चाहिए। समावेशी शिक्षा एक ऐसी संकल्पना है जिसमें सामान्य बच्चों के साथ ही नियमित विद्यालय में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को भी शिक्षा का अवसर दिया जाता है। यह एक व्यावहारिक संकल्पना है, जिसकी सफलता सफल क्रियान्वयन पर निर्भर करती है।

49. एक शिक्षक के रूप में जब आप एक समावेशी कक्षा में काम कर रहे होते हैं, तो आपकी भूमिका होनी चाहिए।

(a) दंड देने वाला (b) देखभाल करने वाला
(c) अन्वेषक (d) सहायक

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : जब एक शिक्षक एक समावेशी कक्षा में काम कर रहा होता है तो उसकी भूमिका एक सहायक की होती है। वह एक ऐसे अधिगम वातावरण का निर्माण करता है जिसमें सामान्य बच्चों के साथ–साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी अपनी सुविधानुसार अधिगम–अनुभव प्राप्त करते हैं। वह कक्षा के वैयक्तिक भिन्नता को स्वीकार करता है तथा उसी अनुसार शिक्षण अधिगम परिस्थिति का निर्माण करता है।

समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ, कौशल एवं उपकरण

50. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी व्यूहरचना अधिक उपयुक्त है?

(a) अधिकतम बच्चों को सम्मिलित करते हुए कक्षा में चर्चा करना
(b) विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुए अध्यापक द्वारा निर्देशन
(c) सहकारी अधिगम तथा पीअर ट्यूटरिंग (सहपाठियों द्वारा अनुविक्षण)
(d) अध्यापन के लिए योग्यता आधारित समूहीकरण।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) विशेष आवश्यकता वाले बालकों को पढ़ाने के लिए सहकारी अधिगम तथा पीअर ट्यूटरिंग (सहपाठियों द्वारा अनुविक्षण) व्यूहरचना सर्वाधिक उपयुक्त है।

51. विविध अधिगमकर्ताओं के लिए सुगम्य स्वरूपों में शिक्षण–अधिगम सामग्रियाँ प्रदान करने का तात्पर्य ..... से है।

(a) सार्वभौमिक समावेशी शिक्षा के नैतिक विचार
(b) शिक्षण व्यावसायिकता की सार्वभौमिक संहिता
(c) शिक्षण के सार्वभौमिक मानववादी दृष्टिकोण
(d) अधिगम की सार्वभौमिक संरचना

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : विविध अधिगमकर्त्ताओं के लिए सुगम्य स्वरूपों में शिक्षण–अधिगम सामग्रियाँ प्रदान करने का तात्पर्य अधिगम की सार्वभौमिक संरचना से है। अर्थात् कक्षा में सामान्य और विशिष्ट दोनों प्रकार के बालक होते हैं जिनके अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक एक ऐसी सार्वभौमिक शिक्षण–अधिगम परिस्थिति का निर्माण करता है जिसमें सभी प्रकार के बालक सहजतापूर्वक अधिगम करते हैं।

52. सहयोगात्मक अधिगम एवं हमउम्र साथियों के द्वारा शिक्षण का एक समावेशी कक्षा में किस प्रकार से उपयोग करना चाहिए?

(a) सक्रिय रूप से हतोत्साहित करना चाहिए।
(b) कभी–कभी प्रयोग करना चाहिए।
(c) प्रयोग नहीं करना चाहिए।
(d) सक्रिय रूप से आगे बढ़ाना चाहिए।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (d) : सहयोगत्मक अधिगम एवं हमउम्र साथियों के द्वारा शिक्षण का एक समावेशी कक्षा में सक्रिय रूप से आगे बढ़ाना चाहिए। सहयोगात्मक अधिगम एक साथ दो या उससे अधिक विद्यार्थियों को एक साथ सीखने के लिए अवसर उपलब्ध कराता है। सहयोगत्मक अधिगम का आधार है– बच्चों के समूह में ज्ञान का सृजन, सदस्यों द्वारा पारस्परिक अंतःक्रिया करके, अनुभवों को बाँटकर तथा सक्रिय भूमिका निभाकर अधिगम करना। सहयोगात्मक अधिगम व्यक्तिगत विभिन्नताओं को स्वीकार करता है। यह प्रत्येक बच्चें को अपने विचार, भाव व अनुभव व्यक्त करने का अवसर देता है। इसलिए सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करना चाहिए।

53. निम्नलिखित में से कौन सा समावेशी कक्षा में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है?

(a) मानकीकृत परीक्षण
(b) प्रतियोगी अधिगम को बढ़ावा देना
(c) विशिष्ट शिक्षा योजना
(d) एकरूप निर्देश

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : एक समावेशी कक्षा में विशिष्ट शिक्षा योजना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। विशिष्ट शिक्षा योजना से तात्पर्य है– व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण योजना बनाना। विशिष्ट शिक्षा योजना के माध्यम से शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की योग्यता, क्षमता एवं आवश्यकता के अनुसार शिक्षण कार्य कर सकता है तथा विद्यार्थी भी अपनी योग्यता एवं क्षमता के सापेक्ष अपना विकास कर सकते हैं। समावेशी कक्षा में विद्यार्थी महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट शिक्षा योजना आवश्यक है।

54. अतिसंवेदनशील बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा तरीका उपयुक्त तरीका नहीं है?

(a) एक कार्य को छोटे-छोटे प्रबंधनीय खंडों में तोड़ना
(b) अधिगम के वैकल्पिक तरीकों की पेशकश

(c) उनके दैनिक कार्यक्रम में शारीरिक गतिविधि का समावेश

(d) बेचैन होने पर अक्सर उन्हें फटकार लगाना

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : अतिसंवेदनशील बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए शिक्षक को संवदेनशील होना चाहिए तथा उनके विचारों और भावनाओं को स्वीकार करना चाहिए न कि बेचैन होने पर अक्सर उन्हें फटकार लगाना चाहिए। इसके अतिरिक्त अति संवेदनशील बच्चों को सीखने में मदद करने के लिए निम्न तरीका उपयुक्त हो सकता है–

* कार्य को छोटे-छोटे प्रबंधनीय खण्डों में तोड़कर सिखाना
* विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराना।
* अधिगम के वैकल्पिक तरीकों की पेशकश
* उनके दैनिक कार्यक्रम में शारीरिक गतिविधि का समावेश आदि।

55. एक समावेशी कक्षा में, एक शिक्षक को विशिष्ट शैक्षिक योजनाओं को–

(a) सक्रिय रूप से तैयार करना चाहिए।

(b) तैयार करने के लिए हतोत्साहित होना चाहिए।

(c) तैयार नहीं करना चाहिए।

(d) कभी-कभी तैयार करना चाहिए।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (a) एक समावेशी कक्षा में, एक शिक्षक को विशिष्ट शैक्षिक योजनाओं को सक्रिय रूप से तैयार करना चाहिए ताकि सामान्य बच्चों के साथ-साथ विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चे भी अपनी क्षमता व योग्यता के अनुसार अधिगम अनुभव प्राप्त कर सकें।

56. एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक के रूप में आपके पास कक्षा में कुछ बच्चे हैं जो प्रथम पीढ़ी के रूप में विद्यालय आ रहे हैं। आपके द्वारा निम्नलिखित में से किसे किए जाने की सम्भावना सर्वाधिक है?

(a) कक्षा गतिविध के समय और गृहकार्य के लिए उन्हें बुनियादी सहयोग और अन्य सहायता उपलब्ध कराएँगे

(b) उन्हें याद करने के लिए और उत्तर को पाँच बार अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखने के लिए गृहकार्य देंगे

(c) बच्चों से कहेंगे कि उनमें आगे पढ़ने की क्षमता नहीं है और अब उन्हें माता–पिता के काम में सहायता करनी चाहिए

(d) माता–पिता की बुलाएँगे और उनसे अपने बच्चों का ट्यूशन लगाने को नम्रतापूर्वक कहेंगे

DSSSB PRT

CT TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (a) उच्च प्राथमिक विद्यालय की कक्षा में यदि कुछ ऐसे बच्चे हैं जो प्रथम पीढ़ी के रूप में विद्यालय आ रहे हैं तो उनके लिए कक्षा गतिविधि के समय और गृहकार्य के लिए उन्हें बुनियादी सहयोग और अन्य सहायता उपलब्ध कराना शिक्षक के लिए आवश्यक है ताकि वे भी मुख्य धारा की शिक्षा प्राप्त कर सकें।

57. एक 40 मिनट की कक्षा में सभी विद्यार्थियों व मुख्यतः विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की माँग को पूरा करते हुए आप किस प्रकार पढ़ायेंगे?

(a) वैयक्तिकता पर ध्यान देकर

(b) कक्षा में समांगी समूह बनाकर

(c) सभी विद्यार्थियों के लिये क्रियाकलाप आयोजित कराकर परन्तु विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए

(d) कक्षा के किसी योग्य विद्यार्थी को जिम्मेदारी सौंपते हुए

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) 40 मिनट की कक्षा में सभी प्रकार के विद्यार्थियों के आवश्यकतानुरूप शिक्षण कार्य करना सम्भव नहीं है अतः ऐसी स्थिति में शिक्षक को कुछ अलग तरीके अपनाने चाहिए। जैसे कोई ऐसा, क्रियाकलाप का आयोजन किया जाय जिसमे सभी बच्चों की सहभागिता बढ़े जिसमें आवश्यकतानुसार शिक्षक विद्यार्थियों पर ध्यान केन्द्रित कर सकता हो।

58. एक शिक्षक के रूप में, समस्याग्रस्त स्थिति में छात्रों की मदद करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?

(a) इनाम देकर

(b) दंड देकर

(c) समाधान प्रदान करके

(d) हल करने के लिए इसी प्रकार की समस्या देकर

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : एक शिक्षक के लिए समस्याग्रस्त स्थिति में छात्रों की मदद करने का सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि वह पहले किसी समस्या को छात्रों के सामने हल करे फिर उसी प्रकार की समस्या छात्रों को दे। इस प्रकार समस्याग्रस्त छात्र अध्यापक द्वारा किये गये व्यवहारों का अवलोकन कर अपने समस्या-समाधान में उसका उपयोग कर सकेंगे।

59. निम्नलिखित में से कौन समावेशी शिक्षा में एक शिक्षण कौशल नहीं है?

(a) ब्लैकबोर्ड

(b) पूछताछ

(c) समस्या समाधान

(d) सुदृढ़ या प्रबलन

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : ब्लैकबोर्ड एक प्रकार का शिक्षण सहायक सामग्री होता है न कि समावेशी शिक्षा में शिक्षण कौशल प्रश्नीकरण या पूछताछ, समस्या-समाधान कौशल, सुदृढ़ या प्रबलन कौशल, श्यामपट्ट (ब्लैकबोर्ड) लेखन कौशल, प्रस्तावना कौशल, उद्देश्य लेखन कौशल आदि शिक्षण के महत्त्वपूर्ण कौशल हैं।

60. एक शिक्षक एक समावेशी कक्षा में विशेष योग्यता वर्ग वाले अधिगमकर्त्ताओं की आवश्यकताओं को किस प्रकार से बता सकता है/ संबोधित कर सकता है?

(a) विद्यार्थियों को निर्देश देने के लिए एक रूप तरीकों का प्रयोग करना।

(b) अत्यधिक लिखित गृहकार्य देना तथा उत्तरों को अन्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से नकल करने पर दबाव डालना।

(c) प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम के सशक्त पक्षों एवं कमजोरियों के विश्लेषण के आधार पर विशिष्ट अधिगम उद्देश्यों को विकसित करना।

(d) आकलन के लिए पेपर-पेंसिल टेस्ट का प्रयोग करना तथा अभ्यास एवं रटने पर बल देना।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) एक शिक्षक को एक समावेशी कक्षा में विशेष योग्यता वर्ग वाले अधिगमकर्ताओं की आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम के सशक्त पक्षों एवं कमजोरियों के विश्लेषण के आधार पर विशिष्ट अधिगम उद्देश्यों को विकसित करना चाहिए ताकि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार अधिगम अनुभव प्राप्त कर सकें।

विशेष तथा समावेशित शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नीतियाँ एवं कानून

61. भारतीय पुनर्वास परिषद्' की स्थापना किस उद्देश्य के लिए हुई है?

(a) दूरस्थ शिक्षा
(b) पर्यावरण शिक्षा
(c) दिव्यांगजन की शिक्षा
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) भारतीय पुनर्वास परिषद (रीहैबिलिटेशन काउन्सिल ऑफ इण्डिया) को एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में 1986 में स्थापित किया गया था। सितम्बर 1992 को भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम संसद द्वारा पारित किया गया, जिसके द्वारा यह एक सांविधिक निकाय के रूप में 22 जून सन् 1993 को अस्तित्व में आयी। इसके मुख्य उद्देश्य निम्न है–

* देशभर में सभी प्रशिक्षण संस्थानों में विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का मानकीकरण एवं नियमन करना।
* दिव्यांगों के पुनर्वास के संदर्भ में देश में और देश के बाहर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाने वाले प्रशिक्षण संस्थानों/ विश्वविद्यालयों को मान्यता देना आदि।

62. 'राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान' स्थित है–

(a) देहरादून में
(b) मुम्बई में
(c) कोलकाता में
(d) सिकंदराबाद में

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) 'राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान' कोलकाता में स्थित है। राष्ट्रीय दृष्टि बाधितार्थ संस्थान देहरादून में, राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान सिकन्दराबाद में तथा राष्ट्रीय श्रवण विकलांगता संस्थान मुम्बई में स्थित है।

63. भारतीय पुनर्वास परिषद' की स्थापना किस प्रकार के बच्चों की शिक्षा के लिए की गई है?

उत्तरः दिव्यांग बच्चो हेतु/शारीरिक रूप से अक्षम बच्चो के लिए

UP Assistant Teacher 27 May 2018

व्याख्या-'भारतीय पुनर्वास परिषद' की स्थापना का मुख्य उद्देश्य दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास के क्षेत्र में प्रशिक्षण नीतियों और कार्यक्रमों को विनियमित करना है। भारतीय पुनर्वास परिषद को एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में सन 1986 में स्थापित किया गया था। सितम्बर 1992 में भारतीय पुनर्वास परिषद अधिनियम संसद द्वारा पारित किया गया जिसके द्वारा यह परिषद् एक सांविधिक निकाय के रूप में 22 जून सन् 1993 को अस्तित्व में आयी।

64. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 व 46 किसके कल्याण से सम्बन्धित हैं?

(a) आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों से
(b) विकलांग व्यक्तियों से
(c) धार्मिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों से
(d) क्षेत्रीय रूप से पिछड़े व्यक्तियों से

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (a) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 के अनुसार राज्य आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों का विशेष ध्यान रखेगा। अनुच्छेद 46 के अनुसार राज्य एस.टी. और एस.सी. तथा दुर्बल वर्गों के हितों का ध्यान रखेगा।

65. निःशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केंद्रीय प्रायोजित योजना का उद्देश्य है ..... में निःशक्त बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना।

(a) मुक्त विद्यालयों
(b) 'ब्लाइंड रिलीफ एसोसिएशन' के विद्यालयों
(c) नियमित विद्यालयों
(d) विशेष विद्यालयों

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (c) निःशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केन्द्रिय प्रायोजित योजना का उद्देश्य है नियमित विद्यालयों में निःशक्त बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम (PWD एक्ट) 1995 एवं 2016

66. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम वर्ष ..... में लागू किया गया है।

(a) 1992 (b) 1995
(c) 1999 (d) 2016

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 16 दिसम्बर वर्ष 2016 में लागू किया गया है। यह विधेयक 21 वर्ष पुराने दिव्यांग व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण तथा पूर्ण सहभागिता) अधिनियम 1995 का स्थान लेगा। अब सात की जगह इक्कीस (21) प्रकार की अक्षमताओं को इस श्रेणी में डाला गया है। जिसमें वाणी व भाषायी अक्षमता, विशिष्ट प्रज्ञता अक्षमता, डिस्लेक्सिया, एसिड अटैक पीड़ित, तीन रक्त सम्बन्धी बीमारियों (थैलेसेमिया, हीमोफीलिया तथा सिकल सेल बीमारी वामनता तथा पेशीय दुर्विकास जैसी अक्षमताओं को शामिल किया गया है।)

EXAM POINTS

- विविध पृष्ठभूमि के वंचित बालकों में किसे सम्मिलित किया जाता है– **निर्धन तथा गरीब बच्चे, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति**
- समावेशी शिक्षा के उद्देश्य हैं– **शिक्षा में लोकतान्त्रिक मूल्यों को बढ़ाना, बालकों में नैतिक मूल्य का संचार तथा बालकों को आत्मनिर्भर बनाना**
- सामाजिक दृष्टि से वंचित बालकों के उत्थान के लिए क्या उपाय हो सकते हैं– **निःशुल्क शिक्षण उपलब्ध कराना, आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध कराना, अधिक पाठशालाओं को खोलना**
- 'अनुसूचित जाति' के लोगों के सामाजिक गतिशीलता से वंचित रहने के क्या कारण हैं– **सभी प्रकार की शिक्षा से वंचित रहना**
- अनुसूचित जनजाति के बालकों की शिक्षा के खराब स्तर के प्रमुख कारण हैं– **विद्यालय में इन बालकों की कम संख्या, पारिवारिक गरीबी, शिक्षा का प्रचार-प्रसार न होना**
- वंचन के मनोवैज्ञानिक प्रभावों में सम्मिलित नहीं है– **आर्थिक प्रारूप पर**
- वंचित बालकों की शिक्षा के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए– **सृजनशीलता को प्रोत्साहन, विद्यालय में स्वस्थ तथा विविध सहगामी क्रियाएँ, व्यावसायिक शिक्षा का आयोजन**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के पाठ्यचर्या निर्माण के निर्देशक सिद्धान्तों के बारे में सत्य है– **परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों को वास्तविक जीवन से जोड़ना, यह सुनश्चित करना की पढ़ाई रटन्त प्रणाली पर आधारित न हो, बल्कि समझ पर आधारित हो तथा पाठ्यचर्या का विकास इस प्रकार हो कि वह बालकों को सर्वांगीण विकास का अवसर उपलब्ध करवाए**
- किस रूप से बच्चे हमेशा विद्यालय के भौतिक वातावरण से निरन्तर अन्तःक्रिया करते हैं– **चेतन रूप से, अचेतन रूप से**
- हमारी शिक्षा आज भी सीमित 'पाठ योजना' पर आधारित है, जिसका लक्ष्य हमेशा ..... को हासिल करना होता है– **परिमेय आचरणों**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 किस सूझ के आधार पर पाठ्यचर्या के बोझ को कम करने पर बल देती है– **शिक्षा, बिना बोझ के**
- शिक्षा के क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली ..... की ओर संकेत करती है– **विद्यालय का सम्पूर्ण कार्यक्रम, जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधारभूत सिद्धान्तों में, कौन-सा भाग सम्मिलित नहीं है– **अच्छी बाह्य परीक्षाओं का आयोजन करना**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 में 'गुणवत्ता आयाम' शीर्षक के अन्तर्गत अधिक महत्व दिया गया है– **बालकों के लिए संरचित अनुभव एवं पाठ्यक्रम सुधार को**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में बात की गई है– **ज्ञान स्थायी है व दिया जाता है–से ज्ञान का विकास होता है और इसकी संरचना की जाती है**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अन्तर्गत 'परीक्षा सुधारो' में किस सुधार को सुझाया गया है– **खुली पुस्तक परीक्षा, सतत/निरन्तर एवं व्यापक मूल्यांकन व सामूहिक कार्य मूल्यांकन**
- NCTE का पूर्ण रूप क्या है– **National Council of Teacher Education**
- पाठ्यचर्या (NCF) का मार्गदर्शी सिद्धान्त नहीं है– **अंग्रेजी भाषा में शिक्षा देना**
- विद्यालय-आधारित आकलन प्रारम्भ किया गया था ताकि– **सभी विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास को निश्चित किया जा सके**
- एन. सी. एफ-2005 के अनुसार, गलतियाँ इस कारण महत्वपूर्ण होती हैं– **यह बच्चे के विचार को अन्तर्दृष्टि उपलब्ध कराती हैं तथा समाधानों को पहचानने में सहायता करती है**
- शिक्षक की सबसे मुख्य जिम्मेदारी है– **विद्यार्थियों को विभिन्न अधिगम शैलियों के अनुसार सीखने के मौके उपलब्ध कराना**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुसार अधिगम अपने स्वभाव में ..... और ..... है– **सक्रिय, सामाजिक**
- बालकेन्द्रित शिक्षा-शास्त्र का अर्थ है– **बच्चों के अनुभवों और उनकी आवाज को प्रमुखता देना**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ)-2005 के अनुसार शिक्षक की भूमिका है– **सुविधादाता**
- एन.सी.एफ-2005 के सम्बन्ध में कथन सही है– **यह एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किया गया दस्तावेज है, जो भारत की विद्यालयी शिक्षा के सम्बन्ध में संस्तुतियाँ प्रस्तुत करता है**
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा उपलब्ध करायी जानी चाहिए– **अन्य सामान्य बच्चों के साथ**
- बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 लागू है– **6-14 वर्ष के लिए**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005) के आधारभूत सिद्धान्तों में सम्मिलित नहीं है– **रटने को महत्व प्रदान करना**
- एक अध्यापक की दृष्टि में सर्वोत्तम है– **प्रत्येक बच्चा सीख सकता है**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 (NCF-2005) के अनुसार गणित शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है– **बच्चों में तार्किक चिंतन तथा समस्या समाधान योग्यता का विकास करना**
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में निर्दिष्ट किया गया है कि कक्षा 1 से 5 तक यदि प्रवेश दिए गए विद्यार्थियों की संख्या दो सौ से अधिक है, तो विद्यार्थी आवश्यक अध्यापक अनुपात– **चालीस**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 में 'गुणवत्ता आयाम' (Quality Dimension) शीर्षक के अन्तर्गत अधिक महत्व दिया गया है– **बालकों के लिए ज्ञान के संदर्भ में संरचित अनुभवों को**
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए अधिक उपयुक्त व्यूह रचना है– **सहकारी अधिगम (Learning) तथा पीअर ट्यूटरिंग (Peer Tutoring) सहपाठियों द्वारा अनुविक्षण**
- निःशक्त बालकों (Children with disabilities) की शिक्षा के लिए प्रावधान किया जा सकता है– **मुख्य समावेशित शिक्षा (Inclusive Education) द्वारा**
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में एक अध्यापक के लिए न्यूनतम कार्य घण्टे प्रति सप्ताह निर्धारित किए गए हैं– **पैंतालीस घण्टे**

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) 2005 में शान्ति शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ क्रियाओं की अनुशंसा की गयी है, पाठ्यक्रम रूपरेखा में किसे सूचीबद्ध (Enlisted) किया गया है– **शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए**
- भारत के संविधान में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा है– **14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए**
- वर्तमान में निःशक्त बच्चों की शिक्षा के लिए कहा गया है– **समावेशी शिक्षा**
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू नहीं होता है– **14 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों पर**
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 दस्तावेज में भाषा के लिए निहित है– **त्रि स्तरीय भाषा**
- कौन-सा अनुच्छेद यह कहता है कि धर्म और भाषा के आधार पर आधारित अल्पसंख्यक अपने अनुसार शिक्षा संस्थानों को स्थापित कर चला सकते हैं– **अनुच्छेद 30(1)**
- कक्षा में विविधता का उत्सव मनाती है– **समावेशी शिक्षा**
- जहाँ अध्यापक प्रत्येक अधिगमकर्त्ता के लिए वैविध्यपूर्ण व सार्थक अधिगमात्मक अनुभवों हेतु परिवेश का निर्माण करते हैं, वह है– **एक समावेशी कक्षा**
- सी. बी. एस. ई. द्वारा प्रस्तावित समूह परियोजना गतिविधि एक सशक्त साधन है– **सामाजिक भागीदारिता को सुगम बनाने का**
- समावेशित विद्यालय योजना के संदर्भ में गलत कथन है– **विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों में आत्महीनता की भावना का विकास**
- एन.सी.एफ. 2005 (NCF 2005) की संस्तुतियों के अनुसार कक्षा एक एवं कक्षा दो के विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन का तरीका होना चाहिए– **प्रेक्षण के आधार पर**
- के. मा. शि. बो. (CBSE) द्वारा अपनाए गए प्रगतिशील शिक्षा के प्रतिमान में बच्चों का समाजीकरण जिस प्रकार से किया जाता है, उससे अपेक्षा की जा सकती है कि– **वे सामूहिक कार्य में सक्रिय भागीदारिता का निर्वाहन करें तथा सामाजिक कौशल सीखें**
- नियमित विद्यालयों में सभी प्रकार के बालकों का बिना किसी भेदभाव से स्वागत करना तात्पर्य है– **समावेशी शिक्षा का**
- ''आपरेशन ब्लैक बोर्ड'' परिणाम था– **राष्ट्रीय शैक्षिक योजना 1986 का**
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के क्रियान्वयन के बाद कक्षा-कक्ष– **आयु के अनुसार अधिक समजातीय है**
- समावेशी शिक्षा मानती है कि हमें बदलना है– **व्यवस्था/बच्चे के अनुरूप**
- एक समावेशी कक्षा में किसी शिक्षिका की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है– **सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चे को अपनी सम्भावना को प्राप्त करने का अवसर मिले**
- भारत में अधिकांश कक्षाएँ बहुभाषी होती हैं। इसे शिक्षक द्वारा देखा जाना चाहिए– **संसाधन के रूप में**
- यह एक दर्शन है कि सभी बच्चों को नियमित विद्यालय प्रणाली में समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है, का सबसे अच्छा वर्णन करता है– **समावेशी शिक्षा**
- NCF 2005 बल देता है– **करके सीखने पर**
- सामान्य बच्चों व भिन्न रूप से योग्य बच्चों के लिए एक ही स्कूल, यह इंगित करती है– **समेकित शिक्षा**
- समन्वित शिक्षा की सफलता निर्भर करती है– **समुदाय के समर्थन पर**
- विशेष व सामान्य बच्चों को साथ-साथ पढ़ने की सुविधा देना, मुख्य कार्य है– **समावेशी शिक्षा का**
- विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों के नियन्त्रण की दृष्टि से सरकारी संगठनों द्वारा संस्था के स्तर पर विभिन्न उपाय किए गए हैं। कौन कारण सांस्थानिक स्तर से जुड़ा है जिसके कारण बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं– **जो बच्चे अनिवार्य पाठ्यक्रम को स्वीकार नहीं कर पाते उनके लिए विकल्पात्मक पाठ्यचर्या का न होना**
- अभिभावकों की भागीदारी, क्षमता-सम्वर्धन एवं संवेदनशील बनाना आवश्यकता होती है– **सफल समावेशन की**
- विद्यालय में नियमित उपस्थिति के लिए वंचित बच्चों को प्रोत्साहित करने का सर्वाधिक उपयुक्त तरीका होगा– **आवासीय विद्यालय खोलना**
- विद्यार्थियों की क्षमताओं की परवाह किए बिना सभी के अधिगम-परिणामों को सुधारने के लिए प्रतिबद्ध होता है– **एक समावेशी विद्यालय**
- सर्वाधिक प्रभावकारी विधि हो सकती है, जो आपकी इस अपेक्षा को पूरी कर सके कि वंचित विद्यार्थी अपनी भागीदारिता द्वारा सफल हो सकें– **आप उनकी सफलता हेतु उनकी क्षमता में विश्वास को अभिव्यक्त करें**
- समाज में विभिन्नता है और विद्यालयों को इस विभिन्नता के प्रति संवेदनशील होने के लिए समावेशी होने की आवश्यकता है, यह है– **समावेशी शिक्षा के पीछे मूलाधार**
- जो असामाजिक कार्य करते हैं, होते हैं– **अपराधी बालक**
- समस्या समाधान की वैज्ञानिक पद्धति का पहला चरण है– **समस्या के प्रति जागरूकता**
- एक विद्यार्थी अपने समकक्ष व्यक्तियों के प्रति आक्रामक व्यवहार करता है और विद्यालय के मापदण्डों को नहीं मानता। इस विद्यार्थी को आवश्यकता है– **भावात्मक क्षेत्र में सहायता की**
- समस्या समाधान उपागम का विशेष चिह्न है– **समस्या कथन में संकेत अन्तर्निहित रूप से दिया होता है**
- अपनी कक्षा के एक विद्यार्थी की प्रवृत्ति को यदि शिक्षक बदलना चाहता है, तो उसे– **विद्यार्थी को पढ़ने के लिए प्रेरित करना होगा**
- आपकी कक्षा में एक बच्चा रोज आपको परेशान करने के लिए अप्रासंगिक प्रश्न पूछता है। आप उससे– **बात-चीत करेंगे**
- समस्या-समाधान को बाधित नहीं करता– **अन्तर्दृष्टि (Insight)**
- वंचित शिक्षार्थियों के साथ व्यवहार करने के संदर्भ में अध्यापक/अध्यापिका को विश्वास व्यक्त करना चाहिए– **छात्रों की सफलता हेतु व्यक्तिगत उत्तरदायित्व में**
- कक्षा 4 का एक बच्चा सदैव चिन्तित और कुण्ठित रहता है, आप– **स्वयं परामर्शदाता की भूमिका का निर्वाहन करेंगे**
- 'वंचित वर्ग' की पृष्ठभूमि के बालकों को शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षक को चाहिए कि– **उसके बारे में अधिक जानकारी जुटाने का प्रयास करें और उन्हें कक्षा में होने वाली चर्चा में शामिल करें**
- यदि कोई शिक्षिका चाहे कि उसके विद्यार्थी समस्या समाधान कौशल प्राप्त कर लें, तो विद्यार्थी को ऐसे क्रियाकलापों में लगाना चाहिए जिनमें हो– **पूछना, तर्क करना और निर्णय लेना**
- भावनात्मक बाधा को प्रदर्शित (Manifestation of Emotional Disturbance) नहीं करता है– **भगोड़ापन (Truancy)**
- सामाजिक रूप से वंचित की समस्या नहीं है– **सीखने के लिए प्रेरणा का अभाव**

17.

अलाभान्वित एवं वंचित वर्गों सहित विविध पृष्ठभूमियों के अधिगमकर्ताओं की पहचान एवं शिक्षा

अलाभान्वित बालक/अपवंचित बालक (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक बालक, कमजोर वर्ग के बालक आदि की पहचान)

1. राज साझा करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है और एकांत गतिविधि पसन्द करता है। यह इंगित करता है कि वह है

(DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT))

(a) एक लोकप्रिय बच्चा (b) एक तिरस्कृत बच्चा

(c) एक ईर्ष्यालु बच्चा (d) एक खुशहाल बच्चा

Ans. (b) **:** राज साक्षा करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं है। क्योंकि वह एक तिरस्कृत बच्चा है।

2. कुपोषण के प्रभाव के बारे में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) जीवन के बाद के वर्षों में यह मस्तिष्क की कोशिकाओं को प्रभावित करता है।

(b) यह बालकों की सीखने की योग्यताओं को प्रभावित करता है।

(c) बालक निराश एवं आशंकित रहते हैं।

(d) यह कद को प्रभावित करता है।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a) कुपोषण मानसिक तथा शारीरिक विकृतियों का स्वरूप है जो जन्मजात होती है। जन्म के बाद शरीर के कोशिकाओं में किसी प्रकार का बदलाव नहीं करती है अतः मस्तिष्क की कोशिकाए भी जन्म के बाद कुपोषण से प्रभावित नहीं होती हैं।

3. निम्न में से कौन-सी विशेषता सामाजिक रूप से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की नहीं है?

(a) बालकों को देखभाल के अनुभव उन्हें स्कूल के लिए प्रभावशाली ढंग से तैयार नहीं करते

(b) नियमित स्वास्थ्य सम्बन्धी देखभाल नहीं मिलती

(c) व्यापक एवं विविध अनुभवों को प्राप्त करने का मौका नहीं मिलता

(d) विद्यालय में अच्छा करने के लिये अभिप्रेरित नहीं किया जाता।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (b) स्वास्थ्य सम्बंधी दोष सामाजिक कारण नहीं बल्कि व्यक्तिगत दोष होते हैं।

4. सांस्कृतिक तथा भाषिक रूप से वैविध्यपूर्ण कक्षा में यह निश्चित करने से पहले कि शिक्षार्थी विशिष्ट शिक्षा वर्ग में आता है या नहीं, एक शिक्षक को करना चाहिए –

(a) अक्षमता स्थापित करने से पहले शिक्षार्थी की मातृभाषा का मूल्यांकन करना चाहिए।

(b) पारंगत मनोविज्ञानियों का उपयोग।

(c) वातावरणीय कारकों को अप्रभावी बनाने के लिए बच्चे को अलग कर देना चाहिए।

(d) माता-पिता को इसमें सम्मिलित नहीं करना चाहिए क्योंकि उनके पास अपना कार्य होता है।

CTET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (a) सांस्कृतिक तथा भाषिक रूप से वैविध्यपूर्ण कक्षा में यह निश्चित करने से पहले कि शिक्षार्थी विशिष्ट शिक्षा वर्ग में आता है, या नहीं, एक शिक्षक को अक्षमता स्थापित करने से पहले शिक्षार्थी की मातृभाषा का मूल्यांकन करना चाहिए।

5. 'कमजोर वर्ग के बालक' से तात्पर्य है

(a) ऐसे अभिभावकों के बालक से जिनकी वार्षिक आय कम है

(b) ऐसे अभिभावकों के बालक से जो वंचित वर्ग में आते हैं

(c) ऐसे अभिभावकों के बालक से जो गरीबी रेखा से नीचे की सीमा में आते हैं

(d) ऐसे अभिभावकों के बालकों से जो सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा की वार्षिक आय की सीमा से नीचे के वर्ग में आते है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम सीमा की वार्षिक आय के नीचे के वर्ग में आने वाले लोगों को कमजोर वर्ग कहा जाता है तथा उनके बालको को कमजोर वर्ग का बालक कहा जाता है।

6. वंचित समूहों के बच्चों को अच्छा पोषण, अच्छी स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच और ..... के अवसरों की संभावना कम होती है।

(a) खेलने (b) सीखने

(c) अध्ययन (d) आनंद

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : वंचित समूहों के बच्चों को अच्छा पोषण, अच्छी स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच और सीखने के अवसरों की संभावना कम होती है। इसलिए समावेशी शिक्षा के अंतर्गत ऐसे बच्चों के लिए विशेष शिक्षा योजनाओं को शामिल किया गया है जैसे-मिड-डे मील, पोषाहार वितरण, छात्रवृत्ति, आवासीय विद्यालय आदि।

अपवंचित बालकों की शिक्षा

7. सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को कक्षा के माहौल की आवश्यकता होती है, जो–

(a) उन्हें अच्छा व्यवहार सिखाता है

(b) उनके सांस्कृतिक और भाषाई ज्ञान को महत्व देता है तथा उनका उपयोग करता है

(c) उनके भाषा के उपयोग को हतोत्साहित करता है ताकि वे मुख्यधारा की भाषा सीख सकें

(d) बच्चों को उनकी क्षमताओं के आधार पर वर्गीकृत करता है

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को कक्षा में ऐसे माहौल की आवश्यकता होती है, जो उनके सांस्कृतिक और भाषायी ज्ञान को महत्व देता है तथा उनका उपयोग करता है इसीलिए समावेशी शिक्षा की संकल्पना विकसित की गयी है।

8. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में, वंचित समूह से संबंधित विद्यार्थियों के द्वारा सहभागिता कम होने की स्थिति में एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(a) इन विद्यार्थियों से अपनी अपेक्षाओं को कम करना चाहिए।

(b) अपनी शिक्षण पद्धिति पर विचार करना चाहिए तथा बच्चों की सहभागिता में सुधार करने के लिए नए तरीके ढूँढ़ने चाहिए।

(c) बच्चों को विद्यालय छोड़ने के लिए कहना चाहिए।

(d) इस स्थिति को जैसी है, स्वीकार कर लेना चाहिए।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में वंचित समूह से संबन्धित विद्यार्थियों के द्वारा सहभागिता कम होने की स्थिति में एक शिक्षक को अपनी शिक्षण पद्धति पर विचार करना चाहिए तथा बच्चों की सहभागिता में सुधार करने के लिए नये तरीके ढूँढने चाहिए।

9. एक शिक्षक समाज के 'वंचित वर्ग' के बच्चों की आवश्यकताओं को प्रभावपूर्ण तरीके से पूरा कर सकता है

(a) उन्हें कक्षा–कक्ष में अलग स्थान पर बैठाकर, ताकि वे अन्य बच्चों से मेल–जोल न करें

(b) अन्य बच्चों को वंचित पृष्ठभूमि वाले बच्चों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने के लिए कहकर

(c) कक्षा–कक्ष के प्रत्येक बच्चे की आवश्यकतानुसार अपना शिक्षण–कौशल अपनाकर

(d) उनकी पृष्ठभूमि की उपेक्षा करके तथा उन्हें विद्यालय में कार्य करने के लिए कहकर

DSSSB PRT, CTET 2016 (VI-VIII)

Ans : (c) प्रत्येक कक्षा–कक्ष में विभिन्न योग्यता, क्षमता, रुचि वर्ग सामाजिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषायी पृष्ठभूमि के छात्र होते हैं। इसलिए इनकी आवश्कताएँ भी भिन्न–भिन्न होती है। अतः एक शिक्षक को इन विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए ऐसे शिक्षण कौशल को अपनाना चाहिए जो सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर उपलब्ध कराये।

10. विद्यालय में नियमित उपस्थिति के लिए वंचित बच्चों को प्रोत्साहित करने का निम्नलिखित में से कौन–सा तरीका सर्वाधिक उपयुक्त होगा?

(a) बच्चों को विद्यालय आने की अनुमति न देने को कानून दण्डनीय अपराध बनाया जाए

(b) विद्यालय द्वारा बच्चों को एकत्रित करने वाले एक व्यक्ति को नियुक्त किया जाए जो प्रतिदिन घरों से बच्चों को लेकर आए

(c) बच्चों को आकर्षित करने के लिए प्रतिदिन 5 रु. देना

(d) आवासीय विद्यालय खोलना

DSSSB PRT, CTET 2012 (I-V)

Ans : (d) वंचित वर्ग के बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय खोला जाना चाहिए जिसमें उपयुक्त शिक्षण सम्बन्धी सुविधाएँ हो। इससे वंचित वर्ग के बच्चों को विद्यालय में नियमित होने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

11. वंचित शिक्षार्थियों के साथ व्यवहार करने के सन्दर्भ में अध्यापक/अध्यापिका को निम्नलिखित मूल्यों में से किसमें विश्वास व्यक्त करना चाहिए?

(a) विद्यार्थी से किसी प्रकार की मांग न होना

(b) विद्यार्थियों द्वारा स्वीकृति हेतु आघात्मकता (shocked) व क्रोध का प्रयोग करना।

(c) छात्रों की सफलता हेतु व्यक्तिगत उत्तरदायित्व

(d) समुचित व्यवहार की उच्च अपेक्षाएं

DSSSB PRT, CTET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) वंचित विद्यार्थियों के साथ अध्यापक का व्यवहार सहयोगात्मक व सहानुभूतिपरक होना चाहिए। समावेशी शिक्षा में सभी विद्यार्थियों को अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार प्रगति करने का अवसर प्रदान करने का उत्तरदायित्व विद्यालय और शिक्षक दोनों पर होता है।

12. वंचित समूहों के विद्यार्थियों को सामान्य विद्यार्थियों के साथ–साथ पढ़ाना चाहिए। इसका अभिप्राय है

(a) समावेशी शिक्षा (b) विशेष शिक्षा

(c) एकीकृत शिक्षा (d) अपवर्जन शिक्षा

DSSSB PRT, UPTET 2015 (I-V)

Ans : (a) समावेशी शिक्षा का आशय दिव्यांग विद्यार्थियों (जिन्हें आजकल विशिष्ट आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी कहा जाता है) को सामान्य बच्चों के साथ बैठाकर सामान्य रूप से पढ़ाना है, ताकि सामान्य बच्चों और विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बच्चों में कोई भेदभाव न रहे तथा दोनों प्रकार के विद्यार्थी एक दूसरे को ठीक ढंग से समझते हुए आपसी सहयोग से पठन–पाठन के कार्य को कर सकें।

13. असंगठित घर से आने वाला बच्चा सबसे अधिक कठिनाई का अनुभव करेगा

(a) सुनिर्मित पाठों में (b) स्वतन्त्र अध्ययन में

(c) नियोजित निर्देश में (d) अभ्यास पुस्तिकाओं में

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (b) असंगठित घर से आने वाले बच्चो में उनके वातावरण का प्रभाव अवश्य पड़ता है जिससे उनमें अनुशासन एवं आत्मनिर्भरता जैसे गुणों का अभाव पाया जाता है इन गुणों के अभाव में बालक स्वतंत्र अध्ययन में कठिनाई का अनुभव करेगा।

14. 'वंचित वर्ग' की पृष्ठभूमि के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षक को चाहिए कि

(a) उन्हें बहुत-सा लिखित कार्य दे

(b) उनके बारे में अधिक जानकारी जुटाने का प्रयास करें और उन्हें कक्षा में होने वाली चर्चा में शामिल करें।

(c) उन्हें कक्षा में अलग बिठाए

(d) उन पर ध्यान न दें क्योंकि वे दूसरे शिक्षार्थियों के साथ अंतर्क्रिया नहीं कर सकते।

CTET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (b) वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों की सामान्यतः समस्या यह होती है कि वह कक्षा में उपस्थित छात्रों के साथ स्वयं का समायोजन नहीं स्थापित कर पाते। अतः शिक्षक को इस समस्या के समाधान का प्रयास करना चाहिये। इसके लिये शिक्षक को विद्यार्थी के पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करना चाहिए तथा उन्हें सामूहिक गतिविधियों (खेल, परिचर्चा, वाद-विवाद) में शामिल करना चाहिए तथा इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

15. शिक्षार्थियों को सबसे कम प्रतिबंधित विद्यालय वातावरण में रखने के माध्यम से, विद्यालय–

(a) लड़कियों और अलाभान्वित वर्गों के लिए शैक्षिक अवसरों को समान करता है।
(b) वंचित वर्ग के बच्चों के जीवन को सामान्य करता है, जो इन बच्चों के समुदायों और अभिभावकों के साथ विद्यालय के सम्बन्ध को बढ़ा रहा है
(c) विज्ञान मेला और प्रश्नोत्तरी जैसी गतिविधियों में अलाभान्वित वर्ग के बच्चों को भागीदार बनाता है
(d) दूसरे बच्चों को संवेदनशील बनाता है कि वे अलाभान्वित बच्चों को दबाएँ नहीं उन्हें नीचा न दिखाएँ

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (d) शिक्षार्थियों को सबसे कम प्रतिबंधित विद्यालय वातावरण में रखने के माध्यम से विद्यालय दूसरे बच्चों को संवेदनशील बनाता है कि वे अलाभान्वित बच्चों को दबाएँ नहीं और उन्हें नीचा न दिखाएँ। यह बालकों में सामाजिक विकास को भी बढ़ावा देता है।

16. एक अध्यापिका समाज के 'वंचित वर्गों' से आए बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति प्रभावशाली तरीके से प्रतिक्रिया निम्नलिखित द्वारा कर सकती है –

(a) 'अन्य बच्चों' को 'वंचित वर्ग से आए बच्चों' के साथ सहयोग करने के लिए कहना तथा विद्यालय के तरीकों को सीखने में उनकी सहायता करने के लिए कहना
(b) विद्यालयी व्यवस्था तथा स्वयं के उन तौर-तरीकों के बारे में विचार करना जिनसे पक्षपात एवं रूढ़िबद्धताएँ झलकती हैं
(c) उनके प्रताड़ित होने के अवसरों को कम करने के लिए यह सुनिश्चित करना कि बच्चे आपस में अन्योन्यक्रिया करने का मौका न पाएँ
(d) वंचित वर्ग से आए बच्चों को विद्यालय के नियमों एवं अपेक्षाओं के प्रति संवेदनशीलता बनाना ताकि वे उनका अनुपालन करें

CTET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (b) एक अध्यापिका समाज के वंचित वर्गों से आए बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति प्रभावशाली प्रतिक्रिया के लिए विद्यालयी व्यवस्था तथा स्वयं के उन तौर-तरीकों के बारे में विचार करे जिसमें पक्षपात एवं रूढ़िबद्धताएँ झलकती है तथा उसमें सुधार करने का प्रयास करें।

17. सामाजार्थिक मुद्दो से जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है को.....सहायता करता है।

(a) स्वअधिगम मॉडल (b) विभेदित निर्देश
(c) पाठ्यचर्या का विस्तार (d) संज्ञानात्मक वर्गीकरण

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (a) स्वअधिगम मॉडल ऐसे बच्चों के लिए सहायक होता है जिसकी प्रतिभा सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के कारण सामने नही आ पाती है।

18. वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को सीखने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। सबसे संभावित कारक जो उन्हे प्रभावित कर रहा है, वह है–

(a) व्यक्तिगत आवश्यकताएँ (b) नींद की कमी
(c) तनाव (d) संज्ञानात्मक क्षमता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : यदि वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को सीखने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है तो सबसे संभावित कारक जो उन्हें प्रभावित कर रहा है वह है व्यक्तिगत आवश्यकताएँ। वंचित पृष्ठभूमि के अंतर्गत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यक वर्ग, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से अन्य पिछड़े वर्ग शामिल हैं। ऐसे बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताएँ, क्षमताएँ, योग्यताएँ, रुचियाँ आदि होती हैं जिनका समावेशी शिक्षा में ध्यान दिया जाना आवश्यक होता है। यदि इनके व्यक्तिगत भिन्नताओं पर ध्यान नहीं दिया जाता है तो वे सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

पिछड़े बालक का अर्थ एवं विशेषताएँ

19. वह बालक जो अपनी कालानुक्रमिक आयु के बालकों की तुलना में शैक्षिक कमी को दर्शाता है, उसे क्या कहते हैं?

(a) प्रतिभाशाली बालक (b) पिछड़ा बालक
(c) असाधारण बालक (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans: (b) वह बालक जो अपनी कालानुक्रमिक आयु के बालकों की तुलना में शैक्षिक कमी को दर्शाता है, उसे पिछड़ा बालक कहते हैं। पिछड़ें बालकों का मंद बुद्धि होना आवश्यक नहीं है। औसत बुद्धि बालक अथवा तीव्र बुद्धि बालक भी परिस्थितिजन्य कारणों से पिछड़ा बालक हो सकता है, यदि वह कक्षा के औसत छात्रों से शैक्षिक दृष्टि से कम होता है।

20. मन्द अधिगमकर्ता जिनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्य योग्यता से कम रह जाती है कहे जाते हैं

(a) पिछड़े (b) विशेष
(c) बाल अपराधी (d) मानसिक रूप से कमजोर

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (a) धीमी गति से सीखने वाले बालक जिनकी शैक्षणिक उपलब्धि उनके प्राकृतिक क्षमता से काफी नीचे होती है पिछड़े बालक के रूप में जानते हैं।

21. निम्न में से कौन-सी पिछड़े हुये बालकों की विशेषता नहीं है?

(a) अपनी प्रकृति प्रदत्त योग्यताओं से कम स्तर की शैक्षिक उपलब्धि का प्रदर्शन करते हैं
(b) सामान्य विद्यालयी कार्य के साथ वे गति नहीं रख पाते।
(c) अपनी आयु के बालकों से काफी पिछड़ जाते हैं।
(d) कम बुद्धि रखते हैं।

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) पिछड़े वर्ग के बालकों की विशेषता–
- कम स्तर की शैक्षिक उपलब्धि का प्रदर्शन
- सामान्य विद्यालयी कार्य के साथ सामंजस्य स्थापित करने में अक्षम
- अपने आयु वर्ग के बालकों से पिछड़ जाते हैं

पिछड़े वर्ग के बालकों के पास यह आवश्यक नहीं है कि उनकी बुद्धि कम हो क्योंकि बुद्धि का निर्धारण बालक के सामाजिक तथा आर्थिक पिछड़ेपन पर निर्भर नहीं होता है।

22. जो बालक स्कूल के जीवन के मध्य में अपनी आयु स्तर की कक्षा से एक नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ हो, वह है-

(a) पिछड़ा बालक
(b) मानसिक रूप से मन्द बालक
(c) समस्यात्मक बालक
(d) मादक दव्य का सेवन करने वाला बालक

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) जो बालक स्कूल के जीवन के मध्य में अपनी आयु स्तर की कक्षा से एक नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ हो वह पिछड़ा बालक है।

23. समान आयु वर्ग से सम्बद्ध अन्य सहपाठियों से जब किसी छात्र की तुलना की जाती है तो उसमे एक स्पष्ट शैक्षिक कमी (त्रुटि) दृष्टिगोचर होती है। ऐसे बच्चे को कहते हैं?

(a) प्रतिभाशाली बालक (b) पिछड़ा बालक
(c) अपवादी बालक (d) इनमें कोई नहीं

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) वह बालक जो सामान्यतः अपने आयुवर्ग के बालकों के बुद्धि लब्धि से कम बुद्धि लब्धि रखता है तथा तुलनात्मक रूप से कमी (त्रुटि) प्रदर्शित करता है तो ऐसे बालक पिछड़े बालक कहे जाते हैं।

24. पिछड़े बालक ऐसे बच्चे हैं

(a) सीखने की गति धीमी हो
(b) बुद्धि लब्धि स्तर 80-90
(c) मानसिक रूप से अस्वस्थ और असमायोजित व्यवहार
(d) उपरोक्त सभी

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) पिछड़े बालकों के अन्तर्गत वे बालक आते हैं जो अपने स्कूली कक्षा से एक नीचे की कक्षा की समस्या को हल करने में अक्षम होते हैं, जिसकी बुद्धि लब्धि 80-90 के मध्य होती है समायोजन में समस्या का सामना करते है परिणाम स्वरूप उनका अधिगम कार्य बहुत धीमा हो जाता है। विकल्प (d) में उपरोक्त सभी भाव निहित हैं, अतः यही सही उत्तर है।

25. सिरिल बर्ट के अनुसार पिछड़े बालकों की बुद्धिलब्धि होती है

(a) 120 से अधिक (b) 85 से कम
(c) 120 से कम (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (b) सिरिल बर्ट का मत है कि जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 85 से कम होती है वे पिछड़े बालक कहे जाते हैं।

पिछड़ेपन के कारण एवं समस्याएँ

26. इनमें से कौनसा शैक्षिक पिछड़ेपन का कारण नहीं होता है?

(a) परिवार की गरीब सामाजिक-आर्थिक स्थिति
(b) विद्यालय का खराब शैक्षिक वातावरण
(c) परिवार का व्यवसाय
(d) परिवार का खराब भावनात्मक वातावरण

MP TET (I-V) 2011

Ans: (c) शैक्षणिक पिछड़ेपन के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

- परिवार की गरीबी
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति
- विद्यालय का खराब शैक्षणिक वातावरण
- परिवार का खराब भावनात्मक वातावरण
- सामान्य से कम शारीरिक विकास
- परिवार का बड़ा आकार
- माता-पिता की बुरी आदत
- माता-पिता की अशिक्षा आदि।

अतः परिवार का व्यवसाय शैक्षणिक-पिछड़ेपन का कारण नहीं होता है।

27. इनमें से किस घटक के प्रभाव से शैक्षिक पिछड़ापन नहीं उत्पन होगा?

(a) परिवार की खराब सामाजिक-आर्थिक स्तर
(b) स्कूल (विद्यालय) की सोचनीय शैक्षिक माहौल
(c) परिवार का पेशा
(d) परिवार की सोचनीय भावनात्मक वातावरण

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) शैक्षणिक पिछड़ेपन का कारण मुख्यतः सामाजिक-आर्थिक स्थिति, भावनात्मक वातावरण, स्कूल का वातावरण है। इन सबके उन्नयन से शैक्षणिक स्तर ऊपर उठता है जबकि परिवार का पेशा बालक के शैक्षणिक स्तर पर कोई प्रभाव नही डालता है।

पिछड़े बालकों की शिक्षा के प्रावधान

28. एक मन्द गति से सीखने वाले बालक को जरूरत होती है

(a) अतिरिक्त सहायता की (b) विशेष सहायता की
(c) किसी सहायता की नहीं (d) कुछ सहायता की

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) मंद गति से सीखने वाले बालक को विशेष सहायता की आवश्यकता होती है। उसके सीखने की प्रक्रिया को तेज करने के लिए शिक्षण कार्य में बदलाव की आवश्यकता होती है। मंदबुद्धि के बालक को अगर क्रिया विधि या खेल विधि से शिक्षा दी जाए तो वह उसे तेजी से ग्रहण कर सकते हैं।

29. हस्तशिल्प की शिक्षा दी जानी चाहिए

(a) सामान्य बालक को (b) पिछड़े बालक को
(c) मंद बुद्धि बालक को (d) प्रखर बुद्धि बालक को।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (b) हस्तशिल्प की शिक्षा वैसे तो सभी को दी जानी चाहिए किन्तु पिछड़े बालकों के लिए यह विशेष रूप से दी जानी चाहिए। क्योंकि पिछड़े बालक सामान्य तौर पर सामाजिक, आर्थिक व मानसिक रूप से पिछड़े होते है इन बालकों को हस्तकौशल के माध्यम से समुन्नत किया जा सकता है।

30. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के लिये निम्न में से कौन-सी व्यूह रचना कार्य करेगी?

(a) कार्यों को मूर्त रूप से समझाना
(b) विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारित करने के लिये प्रोत्साहित करना
(c) स्व-अध्ययन के अवसर प्रदान करना
(d) सहायता के लिये बाहर से संसाधनों को प्राप्त करना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) मानसिक रूप से पिछड़े (मन्दबुद्धि) बालकों के लिए शिक्षण कार्य तभी सफल हो सकता है जब उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव कराया जाय क्योंकि प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा ग्रहण किया गया ज्ञान स्मृति पटल में ज्यादा समय तक रहता है। प्रत्यक्ष ज्ञान को ही मूर्त रूप कहा जाता है। उपरोक्त तथ्य विकल्प (a) में निहित हैं। अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।

31. पिछड़े बच्चों के लिए शैक्षिक लब्धि की अवधारणा किसने दी है?

(a) गॉर्डन (b) शोनेल
(c) बर्टन हॉल (d) सिरिल बर्ट

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (d) पिछड़े बच्चों के लिए शैक्षिक लब्धि की अवधारणा सिरिल बर्ट ने दी है। इसके लिए इन्होंने चाल्स स्पीयरमैन के परीक्षण बैटरी का उपयोग किया। इसी के आधार पर सन् 1913 में इन्होंने पिछड़े बच्चों के लिए शैक्षिक लब्धि की अवधारणा दी।

मंद बुद्धि बालक एवं उनकी शिक्षा

32. 'मन्दितमना' बालकों की शिक्षा हेतु कौन–सा उपागम उपयुक्त कहा जा सकता है?

(a) वैयक्तिक अनुदेशन (b) त्वरण उपागम
(c) संवर्धन उपागम (d) उच्चस्तरीय पाठ्यचर्या

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : 'मन्दितमना' या मानसिक रूप से मंद बालकों को शिक्षित करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित अध्यापकों के द्वारा संचालित विशिष्ट कक्षाओं की व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसे शिक्षा तथा प्रशिक्षण का उद्देश्य उनके दैनिक जीवन में आने वाली व्यक्तिगत सामाजिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए उन्हें तैयार करना है। इन सब के लिए वैयक्तिक अनुदेशन की आवश्यकता होती है, जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से शिक्षित तथा प्रशिक्षित कर सके।

33. निम्न में से कौन-सी मानसिक मन्दता की विशेषता नहीं है?

(a) बुद्धि लब्धि का 25 से 70 के मध्य होना
(b) धीमी गति से सीखना एवं दैनिक जीवन की क्रियाओं को न कर पाना
(c) वातावरण के साथ अनुकूलन में कठिनाई
(d) अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों का कमजोर होना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) अन्तर्वैयक्तिक सम्बंधों का कमजोर होना मानसिक मंदता की विशेषता नहीं है क्योंकि सम्बंधो में मजबूती या कमजोर होना व्यक्ति के व्यवहार से जुड़ी होती है न कि बुद्धि से।

34. निम्न में से कौन-सी अक्षमता केवल जन्मजात होती है?

(a) दृष्टि दोष (b) श्रवण दोष
(c) मूक-बधिर (d) मन्द बुद्धि

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (d) आनुवांशिक दोष के कारण बालक का मानसिक विकास प्रभावित होता है। मानसिक विकास को जन्मजात माना जाता है अतः मंद बुद्धि जन्मजात होता है।

35. आशा 14 वर्ष की आयु में वह सब कार्य करती है जो अधिकतर 6-7 वर्ष के बच्चे करते हैं आशा की यह अवस्था का कारण है-

(a) मानसिक अक्षमता (b) अपंगता
(c) आनुवंशिकता (d) कुपोषण

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) मानसिक अक्षमता के कारण बालक/बालिका अपने आयु वर्ग के बालक/बालिकाओं के समान अधिगम कार्य नहीं कर पाते हैं यहाँ तक कि अपने आयु वर्ग के नीचे की अवस्था के कार्य को करने में भी अक्षम होते हैं।

36. _____ विकास के विभिन्न पहलुओं में मंदता से जुड़ी है।

(a) मध्यम बुद्धि (b) कोई बुद्धि नहीं
(c) उच्च बुद्धि (d) मंद बुद्धि

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : मंद बुद्धि विकास के विभिन्न पहलुओं में मंदता से जुड़ी समस्या है। मंद बुद्धि अथवा मानसिक मंदता को प्रायः बुद्धि परीक्षणों पर बालकों के द्वारा किये गये कार्यों के आधार पर परिभाषित किया जाता है। वे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 80 या 85 से कम होती है, प्रायः मंद बुद्धि बालक कहलाते हैं। मंद बुद्धि बालक नई बातों को सीखने में कठिनाई का अनुभव करते हैं, ये सीखी गयी बातों को नवीन परिस्थितियों में प्रयुक्त करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं तथा ऐसे बालकों में धैर्य, कल्पना, चिंतन तथा आत्मविश्वास आदि योग्यताओं की कमी होती है।

37. आपको अपनी कक्षा में दो मन्द बुद्धि बच्चों को बैठाने के लिए बोला गया है। आप

(a) उन्हें अपने विद्यार्थी के रूप में ग्रहण करने से इनकार करेंगे
(b) प्रधानाध्यापक को उन्हें किसी और कक्षा में जोकि मन्द बुद्धि बालकों के लिए विशेष रूप से चिह्नित है, में बैठाने के लिए बोलेंगे
(c) ऐसे विद्यार्थियों को सिखाने की तकनीक सीखेंगे
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) शिक्षक द्वारा सभी प्रकार के बच्चों को शिक्षा दी जाती है परन्तु शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि भिन्न-भिन्न बौद्धिक स्तर के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधि एवं तकनीकी (कौशल) का ज्ञान हो। अतः विशिष्ट बालकों के शिक्षण के लिए अध्यापक को विशिष्ट शिक्षण तकनीकों को सीखने की आवश्यकता होती है।

कुसमायोजित बालक एवं उनकी शिक्षा

38. सामान्यतः कुसमायोजित बच्चे यहाँ देखे जाते हैं :

(a) बिखरे परिवार में (b) ग्रामीण क्षेत्रों में
(c) इनमें से कोई नहीं (d) गरीब परिवार में

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : सामान्यतः कुसमायोजित बच्चे बिखरे परिवार में देखे जाते हैं। कुसमायोजित बालक परिवार, कक्षा या विद्यालय में भाँति–भाँति की समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। ऐसे बालकों का व्यवहार सामान्य से अलग हटकर होता है तथा ये कक्षा अथवा विद्यालय में अपने को ठीक ढंग से समायोजित नहीं कर पाते हैं। बच्चों के कुसमायोजन में कई कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, जैसे– शारीरिक स्वास्थ्य, शारीरिक विसंगतियाँ, बिखरे परिवार या परिवार का वातावरण, सामाजिक अपवंचना इत्यादि। ये सभी कारक मिलकर बच्चों के समायोजन को प्रभावित करते हैं।

18.

अधिगम कठिनाइयों 'क्षति' आदि से सम्बन्धित बालक

अधिगम अक्षमता का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. एक विद्यार्थी कक्षा में निम्नलिखित लक्षण प्रदर्शित करता है :
–पढ़ने के प्रति चिंता
–शब्दों या अक्षरों को पहचानने में कठिनाई
–निम्न स्तरीय शब्दावली कौशल
–पहले पढ़े हुए पाठ को समझने या याद करने में कठिनाई
ये किसके सूचक हैं?
(a) एक सृजनात्मक विद्यार्थी के
(b) अधिगम अशक्तता वाले विद्यार्थी के
(c) 'मानसकि क्षति' वाले विद्यार्थी के
(d) एक 'स्वलीन' विद्यार्थी के

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (b) यदि कोई विद्यार्थी पढ़ने के लिए चिंता, शब्दों या अक्षरों को पहचानने में कठिनाई, निम्न स्तरीय शब्दावली कौशल या पहले पढ़े हुए पाठ को समझने या याद करने में कठिनाई का अनुभव करता है, तो इसका मतलब है कि वह अधिगम अशक्तता (लर्निंग डिसेबिलिटी) का लक्षण प्रदर्शित कर रहा है। अधिगम अशक्तता एक प्रकार की विसंगति है, जो बच्चे के सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है। यद्यपि बच्चों का बौद्धिक स्तर 90 या इससे भी अधिक हो सकता है, लेकिन फिर भी ये बच्चे दूसरे बच्चों की तुलना में पढ़ाई में थोड़े कमजोर होते हैं।

2. युवा अधिगमकर्ताओं में निम्न में से कौन पढ़ने में कठिनाई का द्योतक नहीं है?
(a) अक्षर व शब्द अभिज्ञान में कठिनाई
(b) पठन गति व प्रवाह में कठिनाई
(c) शब्दों व विचारों को समझने में कठिनाई
(d) स्पेलिंग निरन्तरता में कठिनाई

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) शब्दों एवं विचारों को समझने के लिए पढ़ने की नही सुनने की आवश्यकता होती है जबकि पढ़ने में कठिनाई का द्योतक अक्षर ज्ञान, पठनगति में प्रवाह की कठिनाई तथा स्पेलिंग निरंतरता में कठिनाई है।

3. अधिगम निर्योग्यताओं वाले बालकों में प्रक्रमण सम्बन्धी निम्न में से किस प्रकार की कमी पायी जाती है?
(a) संख्याओं सम्बन्धी सूचनाओं को याद करने में, समय एवं दिशा की कम समझ
(b) प्रायः अत्यधिक सक्रिय व्यवहार
(c) मांसपेशियों पर कम नियन्त्रण
(d) कम मानसिक सक्रियता।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a) अधिगम निर्योग्यता का अर्थ विभिन्न प्रकार के उन विकारों के समूह से है, जिनके कारण किसी व्यक्ति में सीखने, पढ़ने, लिखने, बोलने, तर्क करने तथा गणित के प्रश्न हल करने आदि में कठिनाई होती है। यह जन्मजात दोष होता है तथा यह केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र की कार्यविधि में समस्याओं के कारण होता है। ऐसे बालकों को संख्याओं सम्बन्धी सूचनाओं को याद करने में, समय एवं दिशा आदि को समझने में कठिनाई होती है।

4. अधिगम निर्योग्य का लक्षण है
(a) भागने की प्रवृत्ति होना।
(b) अशान्त, ऊर्जावान एवं विध्वंसक होना।
(c) अवधान सम्बन्धी बाधा/ विकार।
(d) अभिप्रेरणा का अभाव।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) अधिगम निर्योग्यता का मुख्य लक्षण अवधान सम्बन्धी बाधा या विकार है। इसे अवधान न्यूनता अतिक्रिया विकार भी कहा जाता है। ऐसे बालक अधिक चित्त अस्थिर होते हैं। वे विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन नहीं करते तथा विद्यालयों में मूल विषयों को पढ़ने या सीखने में बुद्धि की न्यूनता न होते हुए भी कठिनाईयों का अनुभव करते हैं।

5. अधिगम–अक्षमताएं
(a) सामान्य या अधिक बुद्धि–लब्धांक वाले बच्चों में भी पाई जाती है।
(b) समय व हस्तक्षेप के स्वरूप की उपेक्षा करते हुए भी अपरिवर्तनशील नहीं होती है
(c) वस्तुपरक तथ्य है तथा संस्कृति की इनमें कोई भूमिका नहीं है
(d) पठन–अक्षमता के पर्याय हैं

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) अधिगम अक्षमता सम्बन्धी विकार ऐसे बालकों में भी हो सकता है जिनकी बुद्धि लब्धांक सामान्य या अधिक है। ऐसे बालक हो सकता है कि पढ़ने या लिखने में असक्षम हो किन्तु वे रचनात्मक कार्यों में कुशल हो। इसका अर्थ है बुद्धि लब्धांक का सम्बन्ध अधिगम अक्षमता से नहीं है।

6. अधिगम निर्योग्यता
(a) समुचित निवेश के साथ सुधार योग्य नहीं होता
(b) एक स्थिर अवस्था है

(c) एक चर अवस्था है
(d) जरूरी नहीं कि कार्य–पद्धति की हानि करें

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (b) सामान्य भाषा में अधिगम निर्योग्यता का तात्पर्य सीखने की क्षमता अथवा योग्यता की कमी या अनुपस्थिति से है। अधिगम निर्योग्यता में निम्नलिखित बाते निहित होती हैं–
1. अधिगम अक्षमता आंतरिक होती है
2. यह स्थायी स्वरूप का होता है अर्थात यह व्यक्ति विशेष में आजीवन विद्यमान रहता है।
3. यह कोई विकृति नहीं बल्कि विकृतियों का एक विषम समूह है।

7. इनमें से कौन–सी अशक्तता वाले बच्चे की एक विशेषता है?
(a) 50 से नीचे की बुद्धिलब्धि
(b) धाराप्रवाह रूप से पढ़ने तथा शब्दों पर पलटकर जाने में कठिनाई
(c) अन्य बच्चों को धमकाना तथा आक्रामक कार्यों में लगे रहना
(d) एक ही प्रकार की गत्यात्मक क्रिया को बार–बार दोहराना

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (b) अधिगम अशक्तता वाले बच्चे धारा प्रवाह रूप से पढ़ने तथा शब्दों पर पलटकर जाने में कठिनाई महसूस करते हैं। इस प्रकार के बच्चे ऑर्गनाइजेशनल लर्निंग डिसार्डर (संगठनात्मक पठन सम्बन्धी विकार) से ग्रसित होते हैं।

8. एक बच्चे को कॉपी में लिखने में विपरीत छवियाँ, दर्पण छवि आदि जैसी गलतियाँ मिलती हैं। इस प्रकार का बच्चा लक्षण प्रदर्शित कर रहा है
(a) अधिगम में असुविधा के
(b) अधिगम में अशक्तता के
(c) अधिगम में कठिनाई के
(d) अधिगम में समस्या के

DSSSB PRT
UP TET 2015 (I-V)

Ans : (b) यदि बच्चे की कॉपी में लिखने में विपरीत छवियाँ, दर्पण छवि आदि जैसी गलतियाँ मिलती है तो इसका अर्थ है कि वह अधिगम अशक्तता सम्बन्धी विकार से ग्रसित है। इस विकार को डिस्ग्राफिया विकार कहा जाता है। यह वर्तनी सम्बन्धी कठिनाई, खराब हस्तलेखन और अपने विचारों को लिपिबद्ध करने में कठिनाई के रूप में जाना जाता है।

9. वर्तनी, वाचन एवं गणना में कठिनाई, सामान्य बुद्धि एवं अच्छी अनुकूलनात्मक योग्यता विशेषता है
(a) धीमी गति से सीखने वालों की
(b) सामान्य/औसत अधिगमकर्त्ता की
(c) मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की
(d) अधिगम निर्योग्य बालकों की।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) वर्तनी, वाचन एवं गणना में कठिनाई सामान्य बुद्धि एवं अच्छी अनुकूलनात्मक योग्यता एक अधिगम निर्योग्य बालकों की विशेषता होती है। इन्हें शब्दों और अंकों को लिखने, पढ़ने व गणना करने में कठिनाई होती है।

10. सीखने की अक्षमता वाले छात्र को स्कूल से संबंधित क्षेत्र जैसे– पढ़ना, लिखना, तर्क करना, सुनना या गणित में महत्वपूर्ण ..... होती हैं।
(a) समक्ष (b) जानकारी
(c) समस्याएँ (d) कठिनाईयाँ

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : सीखने की अक्षमता वाले छात्र को स्कूल से संबंधित क्षेत्र जैसे-पढ़ना, लिखना, तर्क करना, सुनना या गणित में महत्वपूर्ण कठिनाइयाँ होती हैं। सीखने की अक्षमता को वाक्, भाषा, पठन, लेखन या अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से किसी एक या अधिक प्रक्रियाओं में मंदता, विकृति अथवा अवरूद्ध विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो सम्भवतः मस्तिष्क कार्यविरूपता या संवेगात्मक अथवा व्यावहारिक विक्षोभ का परिणाम है न कि मानसिक मंदता संवेदी अक्षमता अथवा सांस्कृतिक या अनुदेशन कारक का।

अधिगम अक्षमता के कारण एवं प्रकार

11. 'पठनवैफल्य' बच्चों के प्राथमिक लक्षण क्या हैं?
(a) धाराप्रवाह पढ़ने की अक्षमता
(b) एक ही गतिविषयक कार्य को बार-बार दोहराना।
(c) न्यून-अवधान विकार
(d) अपसारी चिंतन; पढ़ने में धारा प्रवाहिता।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (a) पठनवैफल्य (dyslexia) अधिगम विकार से ग्रसित बच्चों को धाराप्रवाह पढ़ने में कठिनाई होती है। इसके अतिरिक्त भी डिस्लेक्सिया में कई लक्षण दिखाई देते हैं–
– वर्णमाला अधिगम में कठिनाई
– अक्षरों की ध्वनियों को सीखने में कठिनाई
– पढ़ते समय स्वर वर्णों का लोप होना।
– शब्दों को उल्टा या अक्षरों का क्रम इधर-उधर कर पढ़ा जाना आदि।

12. पढ़ने और लिखने की अक्षमता है–
(a) ऑटिज्म (b) डिस्लेक्सिया
(c) डिस्ग्रेक्सिया (d) एप्रक्सिया

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) डिस्लेक्सिया पढ़ने लिखने से जुड़ी एक खास विकलांगता है जिसका असर पढ़ने और भाषा को समझने पर पड़ता है। डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों को पढ़ने, लिखने स्पेलिंग लिखने या बोलने में कठिनाई होती है।

13. सम्प्रेषण सम्बन्धी अक्षमता है–
(a) डिस्फेशिया (b) डिस्ग्रेफिया
(c) डिस्लेक्सिया (d) डिस्कैल्क्युलिया

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : डिस्फेसिया दो शब्दों ''डिस'' और ''फासिया'' से मिलकर बना है, जिनके शाब्दिक अर्थ क्रमशः ''अक्षमता'' एवं ''वाक्'' होते हैं। इस प्रकार डिस्फेशिया का शाब्दिक अर्थ वाक् अक्षमता होता है। यह एक भाषा एवं वाक् संबंधी विकृति है जिससे ग्रसित बच्चे विचार की अभिव्यक्ति या व्याख्यान के समय कठिनाई महसूस करते हैं।

14. डिस्लेक्सिया में यह करने में कठिनाई होती है–

(a) पढ़ने/वर्तनी में (b) व्यक्त करने में
(c) खड़े होने में (d) बोलने में

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : डिस्लेक्सिया एक प्रकार का अधिगम अक्षमता विकार है जिसके निम्नलिखित लक्षण होते हैं–

- वर्णमाला अधिगम में कठिनाई,
- अक्षरों की ध्वनियों को सीखने में कठिनाई,
- पढ़ते समय स्वर वर्णों का लोप होना,
- समान उच्चारण वाले ध्वनियों को न पहचान पाना,
- शब्दों को उल्टा या अक्षरों का क्रम इधर–उधर कर पढ़ा जाना।

15. डिस्ग्राफिया मुख्यतः किस कठिनाई से जुड़ा है?

(a) पठन की (b) लिखने की
(c) चित्रकला करने की (d) सुनने की

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) डिस्ग्राफिया एक प्रकार का लेखन विकार है। इस विकार से ग्रसित बालक में स्पेलिंग, हस्तलेखन, कॉम्प्रीहेन्सन यानि अवधारणात्मक पाठों जैसे कौशल की कमी होती है। इसे मनोविकार की श्रेणी में रखा गया है। जिन बच्चों में डिस्ग्राफिया पाया जाता है उनकी लेखन प्रक्रिया कठिन और धीमी होती है।

16. यदि एक बच्चा 16 को 61 लिखिता है तथा b और d के मध्य अन्तर नहीं कर पाता हो, तो यह है

(a) दृष्टि-दोष (b) सीखने में अक्षम
(c) मानसिक दोष (d) मानसिक क्षय

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) डिस्लेक्सिया, पढ़ने लिखने से जुड़ी एक खास विकलांगता है जिसका असर पढ़ने, भाषा को समझने पर पड़ता है। डिस्लेक्सिया से पिड़ित बच्चों को पढ़ने, लिखने, स्पेलिंग लिखने या बोलने में कठिनाई होती है। इस प्रकार यह सीखने की क्षमता को प्रभावित करता है। इसमें बालक 16 को 61 लिखता है तथा b और d के मध्य अंतर नहीं कर पाता है।

17. डिस्लेक्सिया क्या है?

(a) पढ़ने की अक्षमता (b) लिखने की अक्षमता
(c) सीखने की अक्षमता (d) सुनने की अक्षमता

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) डिस्लेक्सिया एक विकार है जो सामान्यतः बच्चों में पाया जाता है। इस विकार से बच्चों में पढ़ने की अक्षमता उत्पन्न होती है वे शब्दों को पहचान नहीं पाते और उन्हे पढ़ने में समस्या महसूस होती है।

18. यदि आपकी कक्षा का बच्चा 'C' को 'D' तथा 'D' को 'C' लिखे/ पढ़े, तो वह कौन-से रोग से पीड़ित है?

(a) मलेरिया (b) डिसलेक्सिया
(c) फाइलेरिया (d) टायफाइड

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) डिसलेक्सिया एक पठन विकार (दोष) है जिसमें बालक को अक्षरों को पहचानने में समस्या आती है जिसके परिणाम स्वरूप बालक में नकारात्मक भावना का विकास होने लगता है जो उसके अधिगम प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती है। डिस्लेक्सिया मानसिक तथा मलेरिया, फाइलेरिया एवं टायफाइड शारीरिक बीमारियाँ हैं।

19. निम्न में से कौन-सा विशिष्ट अधिगम विकलांगता का उदाहरण है?

(a) मानसिक मन्दता
(b) डिसलेक्सिया
(c) एटेंशन डेफिसिट हाइपर डिसआर्डर
(d) आटिस्म

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (b) डिस्लेक्सिया एक विशिष्ट अधिगम विकार है। यह पठन से सम्बंधित है। इसमें बालक पढ़ने में अक्षम हो जाता है यह अधिगम विकलांगता का उदाहरण है।

20. डिस्लेक्सिया मुख्य रूप से ..... की समस्या से संबंधित है।

(a) सुनने (b) पढ़ने
(c) बोलने (d) बोलने व सुनने

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (b) डिस्लेक्सिया एक अधिगम सम्बन्धी विकार है। यह मुख्य रूप से पढ़ने की समस्या से सम्बन्धित है। जबकि ऑडीटरी प्रोसेसिंग डिसआर्डर सुनने की समस्या, डिस्फैसिया बोलने की समस्या, डिस्ग्राफिया लिखने की समस्या डिसऑर्थोग्राफिया वर्तनी की समस्या से सम्बन्धित है।

21. डिस्लेक्सिया का संबंध है–

(a) पढ़ने की अक्षमता से (b) लिखने की अक्षमता से
(c) आंकिक अक्षमता से (d) तार्किक अक्षमता से

DSSSB PRT
UP TET 2013 (I-V)

Ans : (a) डिस्लेक्सिया का सम्बन्ध पढ़ने की अक्षमता से है। डिस्लेक्सिया से ग्रसित बच्चों को पहले/बाद में, बायें/दायें आदि के भेद को समझने में कठिनाई होती है।

22. एक बच्चा जो ..... से ग्रस्त है, वह 'saw' और 'was' और nuclear और 'unclear' में अन्तर नहीं कर सकता।

(a) शब्द 'जम्बलिंग' विकार (b) डिस्लेक्सिमिया
(c) डिस्मोरफीमिया (d) डिस्लेक्सिया

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (d) एक बच्चा जो डिस्लेक्सिया से ग्रस्त है, वह 'saw' और 'was' में तथा nuclear और unclear में अंतर नहीं कर सकता है क्योंकि डिस्लेक्सिया पठन सम्बन्धी विकार है इसमें शब्दों के संयोजन में, वर्णमाला सीखने आदि में कठिनाई होती है।

23. शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को सामान्यतः ..... होते हैं।

(a) डिस्केलकुलिया (b) डिस्लेक्सिया
(c) डिस्ग्राफिया (d) डिस्थीमिया

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (c) डिस्कैलकुलिया (गणितीय कौशल सम्बन्धी विकार), डिस्लेक्सिया (पढ़ने सम्बन्धी विकार) तथा डिस्ग्राफिया (लेखन सम्बन्धी विकार), अधिगम अक्षमता सम्बन्धी विकार हैं जबकि डिस्थीमिया मूड डिसआर्डर सम्बन्धी विकार है जो हल्का लेकिन लम्बे समय तक रहने वाला अवसाद है। इसके लक्षणों में शामिल है सामान्य गतिविधियों में दिलचस्पी का खत्म होना, निराशा, आत्म सम्मान में कमी आदि। अतः शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों में डिस्ग्राफिया (लिखने सम्बन्धी) विकार होने की सम्भावना सबसे अधिक होती है।

24. ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित सभी के कारण अधिगम अक्षमता उत्पन्न हो सकती है?

(a) सांस्कृतिक कारक (b) सेरेब्रल डिस्फंक्शन
(c) संवेगात्मक विघ्न (d) व्यवहारगत विघ्न

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (a) सांस्कृतिक कारक के अतिरिक्त सभी कारक जैसे– सेरेब्रल डिस्फंक्शन, संवेगात्मक विघ्न तथा व्यवहारगत विघ्न के कारण अधिगम अक्षमता उत्पन्न हो सकती है।

25. एक औसत बुद्धि वाला बच्चा यदि भाषा को पढ़ने एवं समझने में कठिनाई प्रदर्शित करता है, तो यह संकेत देता है कि बच्चा..... का लक्षण प्रदर्शित कर रहा है।

(a) लेखन–अक्षमता (डिस्ग्रफिया)
(b) गणितीय–अक्षमता (डिस्कैल्कुलिया)
(c) गतिसमन्वय–अक्षमता (डिस्प्रैक्सिया)
(d) पठन–अक्षमता (डिस्लैक्सिया)

DSSSB PRT
C TET 2015 (I-V)

Ans : (d) डिस्लैक्सिया पठन सम्बन्धी विकार है इस विकार से ग्रसित एक औसत बुद्धि वाला बच्चा भाषा को पढ़ने एवं समझने में कठिनाई प्रदर्शित करता है।

26. डिसलेक्सिया सम्बन्धित है–

(a) मानसिक विकार से (b) गणितीय विकार से
(c) पठन विकार से (d) व्यावहारिक विकार से

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011
C TET 2011 (I-V)
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (c) डिसलेक्सिया एक पठन सम्बंधी विकार होता है जिसमें बालक को अक्षरों को पहचानने में कठिनाई होती है तथा उनका अधिगम बाधित होता है। इस विकार को दूर करने के लिए शिक्षक को मौखिक कार्य एवं पर्याप्त अभ्यास पर बल देना चाहिए।

27. शब्दों में अक्षरों के क्रम को पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करना और अक्सर चाक्षुष स्मृति का ह्रास.....से सम्बन्धित है।

(a) डिस्केल्कुलिया (b) डिस्ग्राफिया
(c) डिस्ग्राक्सिया (d) डिस्लेक्सिया

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) डिस्लेक्सिया एक पठन विकार है जिसमें कोई व्यक्ति अक्षरों को क्रमबद्ध तरीके से पढ़ने में असमर्थ होता है और साथ ही अक्षरों/शब्दो को उल्टे क्रम में भी लिखता है।

28. सीखने-संबंधी निर्योग्यताएँ सामान्यतः

(a) औसत से श्रेष्ठ बुद्धि-लब्धि वाले बच्चों में पाई जाती है।
(b) लड़कियों की तुलना में अधिकतर लड़कों में पाई जाती है
(c) अधिकतर उन बच्चों में पाई जाती है जो शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं
(d) उन बच्चों में पाई जाती हैं विशेषतः जिनके पैत्रिक अभिभावक इस प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होते है

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) सीखनें संबंधी निर्योग्यताएँ वंशानुगत चलने वाली प्रक्रिया होती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलती जाती है सीखने संबंधी निर्योग्यताएँ सामान्यतः उन बच्चों में पाई जाती है जिनके पैतृक अभिभावक इस प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होते हैं।

29. निम्नलिखित में से ..... के अतिरिक्त सभी के कारण अधिगम अक्षमता उत्पन्न हो सकती है –

(a) जन्म से पहले माँ द्वारा मदिरा सेवन
(b) मंदबुद्धिता
(c) शैशवकाल के समय दिमागी बुखार
(d) शिक्षक की शिक्षण-शैली

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (d) शिक्षक की शिक्षण शैली के अतिरिक्त सभी के कारण अधिगम अक्षमता उत्पन्न हो सकती है। अर्थात् अधिगम अक्षमता निम्न कारणों से हो सकती है–
(i) जन्म से पहले माँ द्वारा मदिरा या नशीली दवाइयों का सेवन
(ii) मंदबुद्धिता
(iii) शैशवाकाल के समय दिमागी बुखार आदि।

30. गतिक कौशलों में अधिगम निर्योग्यता---कहलाती है।

(a) डिस्फेज़िया (b) डिस्प्रेक्सिया
(c) डिस्केलकुलिया (d) डिस्लेक्सिया

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (b) गतिक कौशलों में अधिगम निर्योग्यता डिस्प्रेक्सिया कहलाती है। यह एक विकार है। इसमें बच्चे गति एवं समय में सामन्जस्य स्थापित नहीं कर पाते यही कारण है कि वे अपनी ओर तेजी से आती हुई गेंद को पकड़ नहीं पाते। जबकि डिस्फेजिया भाषा विकार, डिस्कैल्कुलिया गणना विकार और डिस्लेक्सिया पठन विकार से सम्बन्धित हैं।

31. विकृत लिखावट से सम्बन्धित लिखने की योग्यता में कमी किसका एक लक्षण है?

(a) डिस्ग्राफिया (b) डिस्प्रैक्सिया
(c) डिस्कैल्कुलिया (d) डिस्लेक्सिया

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (a) डिस्ग्राफिया विकृत लिखावट से सम्बन्धित लिखने की योग्यता में कमी को प्रकट करता है। जबकि डिस्प्रैक्सिया – समन्वय विकार, डिस्कैल्कुलिया – गणना विकार एवं डिस्लेक्सिया पठन विकार से सम्बन्धित है।

32. अधिगम अक्षमता का कारण होता है–

(a) समय से पूर्व जन्म (b) मलेरिया

(c) कक्षा का माहौल (d) विकास संबंधी समस्याएं

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) विकास सम्बन्धी समस्याओं के कारण भी अधिगम अक्षमता होने की सम्भावना अधिक होती है। अधिगम अक्षमता सामान्यतः केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र के सुचारू रूप से कार्य न करने के कारण उत्पन्न होती है। अधिगम अक्षमता के अंतर्गत वाक् भाषा, पठन, लेखन एवं अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से एक या अधिक विकृति को शामिल किया जाता है।

33. मौलिक गणितीय संक्रियाओं को करने में असमर्थता द्वारा पहचाने जाने वाले विकार का नाम क्या है?

(a) डिस्लेक्सिया (b) डिस्मॉर्फिया

(c) डिसग्राफिया (d) डिस्कैलक्युलिया

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : मौलिक गणितीय संक्रियाओं को करने में असमर्थता द्वारा पहचाने जाने वाले विकार का नाम डिस्कैलक्यूलिया (Dyscalculia) है। डिस्कैलक्यूलिया पद का प्रयोग गणितीय कौशल अक्षमता के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत अंकों, संख्याओं के अर्थ समझने की अयोग्यता से लेकर अंकगणितीय समस्याओं के समाधान में सूत्रों एवं सिद्धांतों के प्रयोग की अयोग्यता तक सभी प्रकार के गणितीय कौशल अक्षमता शामिल है।

34. भाषा-अवबोधन से सम्बद्ध विकार है

(a) चलाघात (apraxia)

(b) पठन-वैकल्य (dyslexia)

(c) वाक-सम्बद्ध रोग (aspeechxia)

(d) भाषाघात (aphasia)

C TET Paper - I (Class I-V) 16 Feb 2014

Ans : (d) भाषा-अवबोधन से सम्बद्ध विकार है-भाषाघात, भाषाघात (Aphasia) मस्तिष्क का एक ऐसा विकार है जिसमें व्यक्ति के बोलने, लिखने तथा बोले और लिखे हुए शब्दों को समझाने या प्रकट करने में अनियमितता, अस्पष्टता एवं स्थायी विकार उत्पन्न हो जाता है।

अधिगम अक्षम बालक की आवश्यकताएँ, एवं पहचान

35. छोटे शिक्षार्थियों में निम्नलिखित में से कौन-सा लक्षण 'पठन-कठिनाई' का नहीं है?

(a) शब्दों और विचारों को समझने में कठिनाई

(b) सुसंगत वर्तनी में कठिनाई

(c) वर्ण एवं शब्द पहचानने में कठिनाई

(d) पठन-गति और प्रवाह में कठिनाई

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (a) छोटे शिक्षार्थियों के पठन के लिए यह कठिनाई नहीं है कि वे शब्दों और विचारों को समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

36. अधिगमकर्त्ताओं एवं उनकी प्राथमिक विशेषताओं के मिलान युग्मों में से निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(a) 'पठन–अक्षमता' अधिगमकर्ता – धारा प्रवाह पढ़ने एवं लिखने में कमी है।

(b) सृजनात्मक अधिगमकर्ता– अतिसक्रिय; कार्य को पूरा करने में धीमें हैं।

(c) अवधानात्मक कमी अधिगमकर्त्ता– उच्च अभिप्रेरणा, लम्बे समय तक अवधान बनाए रख सकते हैं।

(d) श्रव्य क्षतिपूर्ति अधिगमकर्त्ता– दृश्य सूचनाओं को समझ नहीं सकते हैं।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (a) : अधिगमकर्ताओं एवं उनकी प्राथमिक विशेषताओं के मिलान युग्मों में पहला युग्म सही है–

- पठन–अक्षमता – अधिगमकर्ता द्वारा धारा प्रवाह पढ़ने एवं लिखने में कमी।

अन्य तीनों मिलान युग्म इस प्रकार होंगे–

- सृजनात्मक अधिगमकर्ता – उच्च अभिप्रेरणा, लम्बे समय तक अवधान बनाये रख सकते हैं।
- अवधान की कमी अधिगमकर्ता – अतिसक्रिय कार्य को पूरा करने में धीमे हैं।
- श्रव्य क्षतिग्रस्त अधिगमकर्ता – सुनने की क्षमता में कमी।

37. कम गति से सीखने वाले बच्चों की मुख्य विशेषता होती है

(a) उनमें किसी-न-किसी प्रकार की अक्षमता होती है जो उसके ज्ञानार्जन व शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है

(b) उनमें कक्षा में समायोजन में कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होती

(c) उन्हें केवल गणित में कठिनाई होती है

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (a) कम गति से सीखने वाले बालकों की बुद्धि लब्धि कम होती है तथा उनका मानसिक विकास अवरोधित होता है जिसके कारण बालकों में अधिगम सम्बंधी अक्षमता पाई जाती है जो उनके ज्ञानार्जन एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

38. अधिगम–निर्योग्यता वाले बच्चे

(a) कुछ भी नहीं सीख सकते

(b) अधिगम के कुछ पक्षों से संघर्ष करते हैं

(c) बहुत सक्रिय होते हैं, लेकिन उनकी बुद्धि लब्धि कम होती है

(d) बहुत बुद्धिमान तथा परिपक्व होते हैं

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (b) अधिगम निर्योग्यता एक प्रकार की सीखने की अक्षमता है अर्थात् अधिगम क्षमता या योग्यता की कमी या अनुपस्थिति ही अधिगम निर्योग्यता कहलाती है। इस प्रकार के बच्चे अधिगम के कुछ पक्षों से संघर्ष करते हैं जैसे– पढ़ने की कठिनाई लिखने में कठिनाई, वाक सम्बन्धी कठिनाई, वर्तनी सम्बन्धी कठिनाई आदि।

39. अधिगम अशक्तता वाले

(a) बच्चों को एकसमान दिखाई देने वाले अक्षरों और वर्णों में भ्रम होता है

(b) बच्चे दृश्य शब्दों (साइट वर्ड्स) को आसानी से पहचानते और समझते हैं
(c) बच्चों का मानसिक विकास मन्द होता है
(d) बच्चे निम्न बुद्धिलब्धि वाले होते हैं

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (a) अधिगम अशक्तता वाले बच्चों को एक समान दिखाई देने वाले अक्षरों और वर्णों में भ्रम होता है। जैसे वे b को d के रूप में M को W के रूप में देखते हैं।

40. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यवहार बच्चे की अधिगम-निर्योग्यता की पहचान करता है।
(a) मनोभाव का जल्दी-जल्दी बदलना (मूड स्विंग्स)
(b) अपमानजनक व्यवहार
(c) शब्दों को सही तरह से न समझ पाना तथा शब्दों को सही तरह से न लिख पाना
(d) (a) और (b)

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (c) शब्दों को सही तरह से न समझ पाना तथा शब्दों को सही तरीके से न लिख पाना बच्चे की अधिगम निर्योग्यता को प्रदर्शित करता है।

41. गणित के अधिगम निर्योग्यता का आकलन निम्न में से किस परीक्षण द्वारा सर्वाधिक उचित तरीके से किया जा सकता है?
(a) निदानात्मक परीक्षण (b) स्क्रीनिंग परीक्षण
(c) उपलब्धि परीक्षण (d) अभिक्षमता परीक्षण

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (a) गणित के अधिगम निर्योग्यता का आकलन निदानात्मक परीक्षण द्वारा सर्वाधिक उचित तरीके से किया जा सकता है क्योंकि निदानात्मक परीक्षण द्वारा अधिगम त्रुटियों की पहचान किया जाता है तथा उपचारात्मक शिक्षण के माध्यम से उसमें सुधार किया जाता है।

42. अधिगम-निर्योग्यता वाले बच्चों की प्रगति का निरीक्षण करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी पद्धति सबसे उपयुक्त है?
(a) व्यक्ति (केस) अध्ययन
(b) घटनावृत्त अभिलेख (वास्तविक रिकार्ड)
(c) व्यवहार-रेटिंग स्केल
(d) संरचित व्यवहारपरक अवलोकन

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) अधिगम व्यवहार परक होता है अर्थात अधिगम से व्यवहार में परिवर्तन होता है इसलिए अधिगम निर्योग्यता का निरीक्षण करने के लिए संरचित व्यवहारपरक अवलोकन करना सबसे अधिक उपयुक्त है।

43. शैक्षिक समस्याओं से ग्रस्त बालकों को किस समस्या का सामना करना पड़ता है?
(a) कान व उससे जुड़ी नसों का सही प्रकार से काम नहीं करना
(b) भाषा के बोलने में असामान्यता का होना
(c) मानसिक सक्रियता का कम होना
(d) व्यावहारिक एवं सामाजिक बुद्धि में कमी का होना

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) शैक्षिक समस्या से ग्रस्त बालक पढ़ने, लिखने, समझने, अभिव्यक्त करने आदि में कठिनाई अनुभव करते हैं जिससे उनका व्यवहार भी अंसन्तुलित होता है और उन्हें अपने वातावरण के साथ समायोजन करने में भी समस्या आती है।

अधिगम अक्षम बालकों की शिक्षा

44. यदि आपकी कक्षा में कोई बच्चा अधिगम अक्षम हो, तो आप क्या करेंगे?
(a) उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देंगे
(b) उसकी अक्षमता किस प्रकार की है यह जानकर उसको सिखाने का प्रयास करेंगे
(c) उसकी अतिरिक्त कक्षा लेंगे
(d) उसकी बैठक व्यवस्था कक्षा के बुद्धिमान बच्चों के साथ करेंगे

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (b) किसी विद्यार्थी के अक्षमता के आधार पर शिक्षण कार्य किया जाय तो वह सफल होता है और विद्यार्थी बेहतर प्रदर्शन करते है।

45. अधिगम निर्योग्यता वाले शिक्षार्थियों द्वारा एक पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने के अवसरों को बढ़ाने का सबसे सही तरीका है
(a) इस तरह के शिक्षार्थियों की कमजोरियों पर ध्यान केन्द्रित करना
(b) इस तरह के शिक्षार्थियों से उच्च अपेक्षाओं को बनाए रखना
(c) विविध कौशलों और युक्तियों का शिक्षण करना जिसे सभी सन्दर्भों में लागू किया जा सकता है
(d) इन बच्चों को अपने लक्ष्यों का निर्धारण करने के लिए प्रोत्साहित करना

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) अधिगम निर्योग्यता वाले शिक्षार्थियों द्वारा एक पूर्ण और उत्पादक जीवन जीने के अवसरों को बढ़ाने का सबसे सही तरीका है विविध कौशलों और युक्तियों का शिक्षण करना जिसे सभी संदर्भों में लागू किया जा सके ताकि जिस क्षेत्र में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकते हो उस क्षेत्र को चुन सकें।

46. बच्चों में शब्द खोजने की समस्या का निदान ..... होता है।
(a) डिस्लेक्सिया (b) डिस्कैलक्यूलिया
(c) डिस्नोमिया (d) डिस्टोपिया

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : बच्चों में शब्द खोजने की समस्या का निदान डिस्नेमिया द्वारा होता है। डिस्नोमिया एक अधिगम अक्षमता है जिसे याद्दाश्त में शब्द, नाम, संख्या आदि रखने में कठिनाई के द्वारा चिन्हित किया जाता है। इससे पीड़ित बालक प्रश्न में शब्द का विस्तृत विवरण प्रदान कर सकता है, लेकिन उसका सही नाम याद नहीं कर पाता है।

दिव्यांगता/असामान्य बालक, असाधारण बालक की अवधारणा एवं प्रकार

47. निम्नलिखित में से कौन-सा स्तम्भ-क के बच्चों को स्तम्भ-ख में उनकी प्राथमिक विशेषताओं के सही मिलान को प्रस्तुत करता है?

स्तम्भ-क	स्तम्भ-ख
I. प्रतिभाशाली	A. धाराप्रवाह पढ़ने में कमी है।
II. अधिगम अशक्तता	B. मूल समाधानों के बारे में सोच सकता है।
III. सृजनात्मक	C. आसानी से विचलित होने की आदत है।
IV. अवधान कमी अतिसक्रियता व्यतिक्रम (ADHD)	D. शीघ्रता से एवं स्वतंत्र रूप से सीखने की योग्यता

	I	II	III	IV
(a)	D	A	B	C
(b)	D	C	A	B
(c)	A	B	D	C
(d)	D	C	B	A

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (a)

स्तम्भ-क	स्तम्भ-ख
I. प्रतिभाशाली	D. शीघ्रता से एवं स्वतंत्र रूप से सीखने की योग्यता
II. अधिगम अशक्तता	A. धाराप्रवाह पढ़ने में कमी
III. सृजनात्मक	B. मूल समाधानों के बारे में सोच सकता है।
IV. अवधान की कमी अतिसक्रियता व्यतिक्रम	C. आसानी से विचलित होने की आदत है।

48. निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?

(a) अक्षम व्यक्तियों के प्रति विपरीत विचार एवं भावना बच्चा बड़ों से सीखता है

(b) विशेष आवश्यकता वाले बच्चे दूसरे क्षेत्रों में कार्य करने में अक्षम होते है

(c) शारीरिक अक्षमता वाला बच्चा मानसिक अक्षमता नहीं रखता

(d) a एवं b दोनों

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (b) विशेष आवश्यकता वाले बच्चे दूसरे क्षेत्रों में कार्य करने में अक्षम होते हैं, यह कथन असत्य है क्योंकि ऐसा देखा गया है कि किसी एक क्षेत्र में अक्षम बालक किसी अन्य क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन कर सकता है यदि उसकी आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाये। इसका समर्थन हावर्ड गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धांत भी करता है।

49. जो बच्चे सामान्य बच्चों से काफी हटके होते हैं, उन्हें इस रूप में जाना जाता है:

(a) स्वपरायण बच्चे (ओटिस्टिक चिल्ड्रेन)

(b) आसमान्य बच्चे

(c) बुद्धिमान बच्चे

(d) असाधरण बच्चे

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) जो बच्चे सामान्य बच्चों से काफी हटके होते हैं, उन्हें असाधारण बच्चे (Exceptional Children) के रूप में जाना जाता है। ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों से मानसिक, शारीरिक, सांवेगिक तथा सामाजिक रूप से भिन्न होते हैं। ऐसे बच्चों को विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है, जो उनकी आवश्यकताओं, क्षमताओं, योग्यताओं, रुचियों आदि के अनुरूप हो।

दृष्टि बाधित बालक एवं उनकी शिक्षा

50. 'दृश्य रूप से बाधित' विद्यार्थियों के साथ कार्य करते समय एक शिक्षक को किस प्रकार के अनुदेशन अनुकूलन करने चाहिए?

(a) कई प्रकार की दृश्य प्रस्तुतियों का प्रयोग करना।

(b) स्वयं अभिविन्यास करना ताकि विद्यार्थी उसे ध्यान से देख सकें।

(c) अनेक प्रकार के लिखित कार्यों, विशेष रूप से वर्कशीटों पर ध्यान केन्द्रित करना।

(d) स्पष्ट रूप से बोलना तथा छूकर महसूस करने वाली सामग्रियों का अधिक मात्रा में प्रयोग करना।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (d) : दृश्य रूप से बाधित विद्यार्थियों के साथ कार्य करते समय एक शिक्षक को स्पष्ट रूप से बोलना तथा छूकर महसूस करने वाली सामग्रियों का अधिक मात्रा में प्रयोग करना चाहिए। दृश्य रूप से बाधित बच्चों के अनुदेशन के लिए निम्न शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे– चश्मा, आवर्धक उपकरण, बड़े आकार के छपे पुस्तकों का उपयोग, उभरा हुआ और स्पर्शयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री (मानचित्र, ग्लोब चार्ट, मॉडल, आरेख आदि) ब्रेल स्लेट, टेलर फ्रेम, सफेद छड़ी (व्हाइट-केन) अबेकस, न्यून दृष्टि हेतु उपकरण (लो विजन ऐड्स) स्क्रीन रीडर और स्कैनिंग सॉफ्टवेयर।

50. 'ब्रेल लिपि' के जनक हैं–

(a) चार्ल्स ब्रेल (b) लुई ब्रेल

(c) बारबियर ब्रेल (d) इनमें से कोई नहीं

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) ब्रेल लिपि विश्व भर में नेत्रहीनों के द्वारा पढ़ने और लिखनें में छूकर व्यवहार में लाया जाता है। इस लिपि का आविष्कार वर्ष 1821 में एक नेत्रहीन फ्रांसीसी लेखक लुई ब्रेल ने किया था। ये अलग–अलग अक्षरों, संख्याओं और विराम चिन्हों को दर्शाते हैं।

51. ब्रेल प्रणाली के बारे में सिखाये जाने के बाद, विद्यार्थियों को नेत्रहीन विद्यार्थियों के स्कूल ले जाया गया। इससे छात्रों को मदद मिलेगी–

(a) दोस्तों के साथ मजे करने में

(b) सभी प्रकार के चुनौतीपूर्ण विद्यार्थियों के लिए सम्मान का विकास करने में

(c) कक्षा अधिगम को वास्तविक जीवन स्थितियों से जोड़ने में

(d) नेत्रहीन चुनौती वाले विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में

(DSSSB Assistant Teacher Education Dep.)

Ans. (d) **:** ब्रेल प्रणाली के बारे में सिखाये जाने के बाद, विद्यार्थियों को नेत्रहीन विद्यार्थियों के स्कूल ले जाया गया। इससे छात्रों को नेत्रहीन चुनौती वाले विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिलेगी क्योंकि विद्यार्थी नेत्रहीन विद्यार्थियों की भावनाओं को ब्रेल लिपि के माध्यम से बेहतर समझ सकेंगे।

53. जब एक अध्यापक एक नेत्रहीन चुनौतीपूर्ण बालक को दूसरे बच्चों के समूह की गतिविधियों में शामिल करता है तो वह है

(DSSSB Assistant Nursery Teacher)

(a) समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार अभिनय करना
(b) नेत्रहीन चुनौतीपूर्ण शिक्षार्थी के प्रति सहानुभूति विकसित करने के लिए सभी शिक्षार्थियों की सहायता करना
(c) नेत्रहीन चुनौतीपूर्ण शिक्षार्थी पर तनाव बढ़ने की सम्भावना
(d) कक्षा के लिए सीखने के लिए बाधाएं बनाना

Ans. (a) **:** जब एक अध्यापक एक नेत्रहीन चुनौतीपूर्ण बालक को दूसरे बच्चों के समूह की गतिविधियों में शामिल करता है तो वह समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार अभिनय करता है। अर्थात् शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को बिना किसी भेदभाव के नियमित कक्षा में सामान्य विद्यार्थियों के साथ शिक्षा प्रदान करना ही समावेशी शिक्षा है।

54. एक व्यक्ति वैधानिक रूप से दृष्टि-बाधित है, यदि उसका विजन क्षेत्र 20 डिग्री है, जबकि उसकी विजुअल एक्यूइटी -

(a) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/6 से कम है
(b) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/7 से कम है
(c) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/30 से कम है
(d) अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/60 से कम है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) कानूनी परिभाषा के अनुसार सुधारात्मक उपायों के बावजूद दृष्टिबाधित व्यक्ति की दृष्टि तीक्ष्णता 20/60 या 70 (फीट) से कम या दृष्टि क्षेत्र 20 डिग्री से कम होता है। अर्थात् सामान्य दृष्टि वाला जिस वस्तु को 60–70 फीट की दूरी से देख सकता है उसे दृष्टिबाधित वाला व्यक्ति 20 फीट की दूरी से देख पायेगा तथा दृष्टि के बिल्कुल सीध में रखने पर व्यक्ति मात्र 20 डिग्री या कम की परिधि में आने वाली वस्तुओं को देख सकने में सक्षम होगा।

55. निम्नलिखित में से कौन-सा संकेत बच्चों में दृष्टि बाधिता की समस्या सूचित नहीं करता?

(a) दिशा-निर्देश के अनुसरण में समस्या
(b) उदासी
(c) ठोकर लगने का भय
(d) दूरी मापने में असमर्थता

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (a) दृष्टि बाधित बच्चों के लिए दिशा निर्देश के अनुसरण में समस्या नहीं होती है।

56.ब्रेल लिपि का प्रयोग निम्न में से किनके लिए किया जाता है?

(a) शारीरिक निःशक्त (b) दृष्टिबाधित
(c) वाचनबाधित (d) इनमें से कोई नहीं।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (b) ब्रेललिपि का निर्माण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों/व्यक्तियों को पढ़ने के लिए एक नई तकनीकी है जिसका निर्माण 1821 ई. में फ्रांसीसी शिक्षा मनोवैज्ञानिक लुई ब्रेल के द्वारा किया गया। इन्हीं के नाम पर इनके द्वारा बनायी गई लिपि ब्रेल लिपि कहलाती है।

57. आंशिक दृष्टि दोष युक्त बालक का कक्षा व्यवहार कैसा होता है?

(a) वह पुस्तक को आँखों के निकट लाकर पढ़ता है
(b) वह शिक्षक से अक्षर स्पष्ट न दिखने की शिकायत करता है
(c) श्यामपट्ट पर लिखे हुए को नोट बुक में नहीं उतार पाता है
(d) उपरोक्त सभी

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (d) आंशिक दृष्टि दोष युक्त बालक अक्षरों को स्पष्ट रूप से न देख पाने के कारण उसकी अधिगम प्रक्रिया बाधित होती है। अपनी इस समस्या को दूर करने के लिए बालक निम्न क्रिया को अपनाता है-

1. वह पुस्तकों को आखों के निकट ला कर पढ़ता है।
2. श्यामपट्ट पर स्पष्ट न देख पाने के कारण उस पर लिखे गये विषय-वस्तु को अपने नोट-बुक में नहीं लिख पाता है। इसके लिए शिक्षक से स्पष्ट एवं बड़ा लिखने की शिकायत करता है।

58. एक बच्चा जो आंशिक रूप से देख सकता है

(a) बिना किसी विशेष प्रावधान के उसे 'नियमित' विद्यालय में डालना चाहिए
(b) उसे शिक्षा नही देनी चाहिए, क्योंकि वह उसके किसी काम नहीं आएगी
(c) उसे अलग संस्थान में डालने की आवश्यकता है
(d) विशेष प्रावधान करते हुए उसे 'नियमित' विद्यालय में रखना चाहिए।

DSSSB PRT, C TET 2016 (I-V)

Ans : (d) ऐसा बच्चा जो आंशिक रूप से देख सकता है उसको समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत बिना किसी भेदभाव के सीखने के समान अवसर मिलना चाहिए ताकि उसका समुचित विकास हो सके इसके लिए विशेष प्रावधान करते हुए उसे नियमित विद्यालय में रखना चाहिए।

59. दृष्टि दोष से युक्त बच्चों को आकृतियों का ज्ञान देना चाहिए–

(a) मौखिक व्याख्यान द्वारा
(b) त्रि–आयामी आकृतियों के स्पर्श के द्वारा

(c) क्षेत्र भ्रमण द्वारा
(d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (b) दृष्टि–दोष से युक्त बच्चों को आकृतियों का ज्ञान त्रि–आयामी आकृतियों के स्पर्श के द्वारा दिया जाना चाहिए क्योंकि ऐसे बालक वस्तु को छू कर बेहतर सीख सकते हैं।

60. 'राष्ट्रीय दृष्टि बाधितार्थ संस्थान' (NIVH) स्थित है–

(a) शिमला में (b) कोलकाता में
(c) देहरादून में (d) दिल्ली में

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (c) राष्ट्रीय दृष्टिबाधितार्थ संस्थान (National Institute for the Visually Handicapped) का मुख्यालय देहरादून, उत्तराखण्ड में तथा चेन्नई (तमिलनाडु), कोलकाता (पश्चिम बंगाल) और सिकन्दराबाद (आंध्र प्रदेश) में इसके क्षेत्रीय कार्यालय अवस्थित है। एन.आई.वी.एच. एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में वर्ष 1982 में अस्तित्व में आया।

1. राष्ट्रीय दृष्टिबाधितार्थ संस्थान – देहरादून (उत्तराखण्ड)
2. राष्ट्रीय अस्थिविकलांग संस्थान – कोलकाता (प. बंगाल)
3. राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान – सिकन्दराबाद (आन्ध्र प्रदेश)
4. राष्ट्रीय श्रवण विकलांग संस्थान – मुम्बई (महाराष्ट्र)

61. कक्षा पाँच के न्यून दृष्टि वाले बच्चे को

(a) निम्न स्तर के कार्य के लिए माफ करना उचित है
(b) उसके दैनिक कार्य में उसके माता-पिता तथा मित्रों को सहायता करनी चाहिए
(c) कक्षा में सामान्य रूप से बर्ताव करना चाहिए एवं ऑडियो सीडी के जरिए सहायता प्रदान करनी चाहिए
(d) कक्षा में विशेष बर्ताव करना चाहिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) कक्षा 5 (प्राथमिक स्तर) के न्यून दृष्टि वाले बच्चों के साथ सामान्य बच्चों की तरह व्यवहार करना चाहिए तथा उसके अधिगम को बढ़ाने के लिए श्रव्य शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए ताकि दृष्टि क्षमता के अभाव में उनके अधिगम पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

62. कोई शिक्षिका अपनी कक्षा में फर्नीचर की तीखी धार वाले किनारों को रुई से ढँका रखने को कहती है और 'छुओ तथा अनुभव करो' वाले सूचना-पट्टों का उपयोग करने को कहती है। वह किस वर्ग के विशेष शिक्षार्थियों की आवश्यकता पूर्ति करने का प्रयास कर रही है?

(a) सामाजिक रूप से वंचित शिक्षार्थी
(b) दृष्टि विकलांग शिक्षार्थी
(c) श्रवण विकलांग शिक्षार्थी
(d) सीख न सकने वाले शिक्षार्थी

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (b) किसी भी वस्तु को छू कर उसके आकार, रूप, प्रकार के बारे में अनुभव करने या महसूस करने की दिव्य शक्ति दृष्टि बाधित विद्यार्थियों में ही पायी जाती है। अतः 'छुओ तथा अनुभव करो' वाले सूचना-पट्टो का उपयोग शिक्षिका दृष्टि विकलांग शिक्षार्थी के लिए करती है।

63. पाँचवीं कक्षा के 'दृष्टिबाधित' विद्यार्थी–

(a) के माता-पिता और मित्रों द्वारा उसे दैनिक कार्यों को करने में सहायता की जानी चाहिए
(b) के साथ कक्षा में सामान्य रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए और श्रव्य सी.डी. के माध्यम से सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए
(c) के साथ कक्षा में विशेष व्यवहार किया जाना चाहिए
(d) को निचले स्तर के कार्य करने की छूट मिलनी चाहिए

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (b) पाँचवीं कक्षा के 'दृष्टिबाधित' विद्यार्थी के साथ कोई विशेष व्यवहार न करके बल्कि उसके साथ कक्षा में श्रव्य सी.डी. के माध्यम से उसे सीखने की सहायता उपलब्ध करानी चाहिए तथा उसके साथ भी एक सामान्य व्यवहार करना चाहिए।

64. जब एक शिक्षिका दृष्टिबाधित शिक्षार्थी को कक्षा के अन्य शिक्षार्थियों के साथ सामूहिक गतिविधियों में शामिल करती है, तो वह –

(a) कक्षा के लिए सीखने हेतु बाधाएँ उत्पन्न कर रही है
(b) समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार कार्य कर रही है
(c) सभी शिक्षार्थियों में दृष्टिबाधित शिक्षार्थी के प्रति सहानुभूति विकसित करने में मदद कर रही है
(d) दृष्टिबाधित शिक्षार्थी पर सम्भवतः तनाव बढ़ा रही है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (b) जब शिक्षिका द्वारा दृष्टि बाधित विद्यार्थी को अन्य शिक्षार्थियों के साथ शामिल कर गतिविधि कराती है तो वह समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार कार्य कर रही है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2005 (NCF-2005) के घोषणा पत्र में समावेशी शिक्षा की संस्तुति की गई थी।

मूक बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा

65. कम सुनने वाले बच्चों के चेहरे पर दिखने वाली प्रमुख हताशा है

(DSSSB Assistant Nursery Teacher)

(a) अन्य छात्रों के साथ परीक्षा लेने में असमर्थता
(b) लिखने की पाठ्यपुस्तक पढ़ने में असमर्थता
(c) खेल में भाग लेने की अक्षमता
(d) दूसरों के साथ जानकारी साझा करने में असमर्थता

Ans. (d) **:** कम सुनने वाले बच्चे दूसरों के साथ जानकारी साझा करने में असमर्थता महसूस करते हैं।

66. चिह्न भाषा एवं श्रवण-दृश्य विधियों का प्रयोग किन बालकों की शिक्षा के लिए उपयोगी है?

(a) प्रतिभाशाली (b) मन्दित श्रवण वाले
(c) पिछड़ा बालक (d) समस्यात्मक बालक

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (b) कम सुनने वाले बालको को शिक्षा देने के लिए चित्र, चिन्ह तथा श्रवण दृश्य विधियों का प्रयोग किया जाता है।

67. श्रवणबाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए क्या प्रयुक्त की जाती है?

(a) ब्रेललिपि (b) सांकेतिक भाषा
(c) यंत्र (d) उपरोक्त सभी

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (b) श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए सांकेतिक भाषा का प्रयोग करना सबसे उपयुक्त होता है। ब्रेल लिपि का प्रयोग दृष्टिबाधित बच्चों के लिए उपयुक्त होता है।

68. निम्न में से कौन-सी इकाई का उपयोग सुनने की क्षमता की जाँच हेतु किया जाता है?

(a) डेसीमीटर (b) डेसीबल
(c) डेसीपाइन (d) डेसीबिन्दु

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (b) ध्वनि मापन की इकाई डेसीबल (db) होती है इसके प्रयोग से ध्वनि की तीव्रता तथा मंदता ज्ञात होती है। व्यक्ति की सुनने की क्षमता लगभग 40-50 डेसीबल (db) होती है।

69. सुनने में असमर्थ बच्चा–

(a) केवल अकादमिक शिक्षा से लाभ नहीं उठा पाएगा, उसे उसके स्थान पर व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए।
(b) नियमित विद्यालय में बहुत अच्छा कर सकता है यदि उसे उपयुक्त सुविधा और साधन उपलब्ध कराए जाएं।
(c) नियमित विद्यालय में अपने सहपाठियों के समान सभी प्रदर्शन नहीं कर सकेगा।
(d) श्रवण असमर्थता वाले बच्चों के विद्यालय में ही भेजा जाना चाहिए, नियमित विद्यालय में नहीं।

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (b) सुनने में असमर्थ बच्चा नियमित विद्यालय में बहुत अच्छा कर सकता है यदि उसे उपयुक्त सुविधा और साधन उपलब्ध कराये जाये। यह दो बातों की ओर संकेत करता है– पहला समावेशी शिक्षा की ओर जिसमें सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों को एक ही विद्यालय में शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए तथा दूसरा यह कि शारीरिक अक्षमता वाले छात्रों में भी विशेष प्रकार की योग्यता व क्षमता होती है अगर इस बात पर ध्यान दिया जाये तो वे भी समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकते हैं।

70. किस प्राकर के बच्चों की शिक्षा हेतु सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया जाता है?

(a) दृष्टि दोष युक्त बच्चे (b) मूक–बधिर
(c) मन्द बुद्धि (d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (b) मूक–बधिर बच्चों की शिक्षा हेतु सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया जाता है। दृष्टि–दोष युक्त बच्चों के शिक्षण के लिए ब्रेल पद्धति का प्रयोग किया जाता है। इस पद्धति का आविष्कार 1821 ई. में एक नेत्रहीन फ्रांसीसी लेखक लुई ब्रेल ने किया था।

71. श्रवण ह्रास से ग्रसित बच्चे कक्षा में किस से सबसे मुख्य नैराश्य (कुण्ठा) का सामना करते हैं?

(a) दूसरों के साथ सम्प्रेषण करने तथा सूचनाओं को बांटने में अक्षमता
(b) दूसरे विद्यार्थियों के साथ परीक्षा देने में अक्षमता
(c) प्रस्तावित पाठ्य–पुस्तक को पढ़ने की अक्षमता
(d) खेल–कूल में भागीदारिता निभाने में अक्षमता

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (a) श्रवण ह्रास से ग्रसित बच्चे कक्षा में दूसरों के साथ सम्प्रेषण करने तथा सूचनाओं को बाँटने में अक्षमता या कठिनाई अनुभव करते हैं जिसके कारण उनमें कुण्ठा उत्पन्न होती है। अतः एक शिक्षक होने के नाते कक्षा का वातावरण सहानुभूतिपूर्ण व सहयोगात्मक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

72. माध्यमिक विद्यालय की कक्षा में शिक्षिका के पास एक 'बधिर' बच्चा है। उसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि

(a) वह बच्चे को उस स्थान पर बैठाए जहाँ से यह शिक्षिका के होंठ तथा चेहरे के भाव साफ तौर पर देख सके
(b) विद्यालय सलाहकार (काउंसलर) से कहे कि वे बच्चे के अभिभावकों से बात करे तथा उन्हें अपने बच्चे को विद्यालय से हटाने के लिए कहे
(c) उसके प्रति संकेत करे जिसे वह बच्चा बार-बार भी नहीं कर पा रहा
(d) बच्चे को डाँट-फटकार कर उसे अलग स्थान पर बैठाए ताकि वह बधिर केन्द्र में प्रवेश ले ले

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम की घोषणा के अनुसार नकारात्मक विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आने वाले बालकों को भी विशेष विद्यालय के स्थान पर नियमित कक्षाओं में ही शिक्षा दी जाए। अतः कक्षा में उपस्थित बधिर बालक को शिक्षिका के द्वारा ऐसे स्थान पर बिठाना चाहिए जहाँ से वह शिक्षिका के होंठ तथा चेहरे के भाव को साफ तौर पर देख सके ताकि शिक्षिका द्वारा कराए जा रहे अधिगम कार्य को समझ सके तथा उसका लाभ ले सके।

वाक् बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा

73. वाक् बाधित बच्चों का विकास किया जा सकता है उनको

(a) कक्षा में अपने विचार को प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करके
(b) सही ध्वनि के उच्चारण के लिए सहायता करके
(c) उनके द्वारा कथित गलतियों को सुनने में सहायता करके
(d) मूल्यांकन के लिए विशेषज्ञ के पास भेजकर

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) सही ध्वनि का सही उच्चारण करने में मदद करके वाक (वाणी) बाधा से पीड़ित बच्चों की मदद की जा सकती है।

74. निम्नलिखित में से किस पद्धति का उपयोग करते हुए हकलाने (stuttering) की समस्या से निबटा जा सकता है?

(a) अनुश्रुत वाक् (Dictated speech)
(b) प्रवर्द्धित वाक् (Prolonged speech)

(c) परिणामकारी वाक् (Pragmatic speech)
(d) लम्बित वाक् (Protracted speech)

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (b) प्रवर्द्धित वाक् (देर तक बोलना, लंबे समय तक भाषण) पद्धति का प्रयोग करके हकलाने की समस्या से निबटा जा सकता है।

अस्थि बधिर बालक एवं उनकी शिक्षा

75. ऑर्थोटिक उपकरणों को मुख्य रूप से _____ के लिए डिजाइन किया गया है।

(a) इनमें से कोई नहीं
(b) शरीर के अंगों को समर्थन देने
(c) शरीर के हिस्से की मरम्मत करने
(d) न होने वाले अंगों की जगह लगाने

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : ऑर्थोटिक उपकरणों को मुख्य रूप से शरीर के अंगों को समर्थन देने के लिए डिजाइन किया गया है। ऑर्थोटिक एक आर्थोपेडिक उपकरण या तंत्र है जिसका उपयोग विकृतियों का समर्थन करने, संरेखित करने, रोकने या सही करने या शरीर के जंगम भागों के कार्य में सुधार करने के लिए किया जाता है। एक ऑर्थोटिक कोई भी उपकरण है जो आपके शारीरिक गतिविधियों को बेहतर बनाने में मदद करता है।

76. _____ के मामले में शरीर के चार अंग प्रभावित होते हैं ।

(a) ट्राईप्लेगिया (b) बाइप्लेगिया
(c) क्वाड्रीप्लेगिया (d) हैमीप्लेगिया

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) क्वाड्रीप्लेगिया (Quadriplegia) के मामले में शरीर के चार अंग प्रभावित होते हैं। इसे टेट्राप्लेगिया (Tetraplegia) के नाम से भी जाना जाता है। क्वाड्रीप्लेगिया में आमतौर पर रीढ़ की हड्डी (C1 – C7 के बीच) प्रभावित होती है, जिससे मस्तिष्क और अंगों के बीच सिग्नल के आवागमन में बाधा पहुँचती है और आंगिक क्रियाएँ प्रभावित होती हैं।

77. एडीआईपी योजना का मुख्य उद्देश्य, लोकोमोटर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों को..... प्रदान करना है।

(a) दिव्यांगता प्रमाणपत्र (b) रोजगार
(c) शिक्षा (d) सहायक और उपकरण

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : ए.डी.आई.पी. योजना का मुख्य उद्देश्य लोको–मोटर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों को सहायक और उपकरण प्रदान करना है। विकलांग व्यक्तियों को इस योजना के तहत उपकरण की खरीद/फिटिंग के लिए सहायता तथा टिकाऊ, परिष्कृत और वैज्ञानिक रूप से निर्मित, आधुनिक मानक उपकरणों की खरीद में सहायता की जाती है, जो एक भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक पुनर्वास को बढ़ावा दे सकते हैं और उनकी आर्थिक क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं।

78. लोकोमोटर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों का व्यावसायिक प्रशिक्षण _____ डोमेन से अधिक संबंधित है।

(a) संज्ञानात्मक (b) इनमें से कोई नहीं
(c) प्रभावी (d) साइकोमोटर

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) लोकोमोटर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों का व्यावसायिक प्रशिक्षण साइकोमोटर डोमेन से अधिक संबंधित है। साइकोमोटर डोमेन या मनोचालक क्षेत्र का सम्बन्ध मांसपेशियों के विकास तथा प्रयोग एवं शारीरिक क्रियाओं के समन्वय की योग्यता से है। शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, लेखन कार्य, नाट्यकला आदि में माँसपेशीय व आंगिक गतियों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए लोकोमोटर दिव्यांगता वाले व्यक्तियों की शिक्षा में मनोचालक पक्ष के विकास का विशेष महत्त्व होता है।

अन्य विकार से ग्रसित बालक (विकासात्मक विकार, ऑटिज्म आदि)

79. एकाग्रता-समय के साथ मेल बैठाने के लिए एक दत्त कार्य को पूरा करने के लिए आवंटित समय को घटाना और चरणबद्ध तरीके से इस एकाग्रता-समय को बढ़ाना निम्नलिखित में से किस प्रकार के विकार से निपटने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?

(a) अशांतकारी व्यवहार सम्बन्धी विकार
(b) डिस्फेंसिया
(c) संवेदी एकीकरण विकार
(d) एकाग्रता-ह्रास अतिक्रियाशील विकार

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (d) 'एकाग्रता- ह्रास अतिक्रियाशील विकार' बालक को किसी भी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने की क्रिया से बाधित करता है। जिससे बालक को अधिगम करने में कठिनाई आती है।

80. निम्नलिखित में से कौन-सा विकासात्मक विकार का उदाहरण नहीं है?

(a) आत्मविमोह (Autism)
(b) प्रमस्तिष्क घात (Cerebral palsy)
(c) पर-अभिघातज तनाव (Post- traumatic
(d) न्यून अवधान सक्रिय विकास (Attention deficit hyperactivity disorder)

DSSSB PRT

Ans :(c) पर-अभिघातज तनाव एक चिंता विकार है जो आघात के बाद विकसित होता है। इस तनाव विकार में व्यक्ति भयंकर रूप से भयभीत रहता है जो अक्सर दर्दनाक अवस्था तक पहुँच जाता है।

81. हृदय विकार के साथ कौन सी आनुवंशिक समस्या सम्बन्धित है?

(a) टर्नर सिंड्रोम (b) डाउन सिंड्रोम
(c) ऑटिज्म (d) एडीएचडी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : डाउन सिंड्रोम जिसे ट्राइसोमी 21 के नाम से भी जाना जाता है, एक आनुवंशिक विकार है जो क्रोमोसोम 21 की तीसरी प्रतिलिपि के सभी या किसी भी हिस्से की उपस्थिति के कारण होता है। डाउन सिंड्रोम वाले लोगों में लगभक हमेशा शारीरिक और बौद्धिक विकलांगता होती है। वयस्कों में मानसिक क्षमता आमतौर पर 3-9 वर्षीय बालक के समान होती है। आमतौर पर इनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है। ऐसे व्यक्तियों में जन्मजात हृदय दोष लगभग 40% होने की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त मिर्गी, ल्यूकेमिया, थायराइड रोग और मानसिक विकार जैसे दोष भी डाउन सिंड्रोम वाले व्यक्तियों में पाये जाते हैं।

82. इनमें से कौन-सा जीडीडी के लिए एक कारण हो सकता है?

(a) बचपन का संक्रमण
(b) बचपन का मोटापा
(c) सख्त परवरिश
(d) चीनी और एडिटिव्स का अत्यधिक सेवन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : बचपन का संक्रमण जीडीडी (Global Development delay) के लिए एक कारण हो सकता है। जीडीडी में उन बच्चों को शामिल किया जाता है जिनका विकास सामान्य बच्चों की अपेक्षा धीमा होता है। यह विकास की गति शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या किसी भी स्तर को प्रभावित कर सकता है।

83. एक्स-रे विकिरण को ..... विकार के मुख्य कारण के रूप में जिम्मेदार ठहराया जाता है–

(a) मोंन्गोलिज्म (b) बौनापन
(c) जलशीर्ष (d) लघुशीर्षता

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) लघुशीर्षता एक अवस्था है जिसमें बच्चे का सिर अपेक्षा से काफी छोटा होता है जिसके कारण अक्सर मस्तिष्क का अल्प विकास होता है। इसके कारणों में संक्रमण, कुपोषण, विषाक्त पदार्थों के सम्पर्क में आना, एक्स–रे विकिरण आदि आते हैं। इसके लक्षणों में बौद्धिक विकलांगता और बोलने में देरी शामिल होता है।

84. ऑटिज्म एक..... है।

(a) ध्यान-अभाव अति सक्रियता विकार
(b) द्विध्रुवी विकार (बाइपोलर डिस्ऑर्डर)
(c) विपक्षी उद्दंड विकार (अपोजिशनल डिफेंट डिस्ऑर्डर)
(d) न्यूरो विकास विकार

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : ऑटिज्म एक न्यूरों विकास विकार है। ऑटिज्म विकास से जुड़ी एक गंभीर समस्या है जो बातचीत करने और दूसरे लोगों से जुड़ने की क्षमता कम कर देती है। ऑटिज्म तंत्रिका तंत्र पर असर करता है और प्रभावित व्यक्ति की बुद्धि, भावनात्मकता, सामाजिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर व्यापक रूप से असर करता है।

85. आप एक माँ को अपने बेटे राज से निपटने के लिए एक व्यवहार कार्यक्रम विकसित करने में मदद कर रहे हैं, राज को अपोजिशनल डिफेंट डिसऑर्डर है। निम्नलिखित में से कौन सा इस कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण घटक है?

(a) सख्त परवरिश (b) निरोध
(c) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण (d) सजा

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : यदि एक शिक्षक एक माँ को अपने बेटे राज से निपटने के लिए एक व्यवहार कार्यक्रम विकसित करने में मदद कर रहा है जबकि राज को अपोजिशनल डिफेंट डिस्आर्डर (Oppositional Defiant disorder) है। ऐसी परिस्थिति में इस कार्यक्रम के लिए सकारात्मक सुदृढ़ीकरण (Positive reinforcement) महत्त्वपूर्ण घटक होगा। अपोजिशनल डिफेंट डिसआर्डर में बालक अपने से बड़ों और जिम्मेदार लोगों के साथ उद्दण्ड और अवज्ञापूर्ण व्यवहार करता है। इस प्रकार के व्यवहार का कारण सामान्यतः आनुवंशिक और पर्यारण की अंतःक्रिया होती है। इस प्रकार के विकार से ग्रसित बच्चों से निपटने के लिए धनात्मक पुनर्बलन या सकारात्मक सुदृढ़ीकरण का प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि नकारात्मक पुनर्बलन के प्रयोग से उनके व्यवहार में और अधिक कठोरता आयेगी।

86. फेनीलकेटनुरिया से उत्पन्न बौद्धिक विकलांगता को न्यूनतम किया जा सकता है–

(a) सामाजिक संपर्क (b) कक्षा शिक्षण
(c) पर्यावरणीय कारक (d) प्रगतिशील शिक्षा

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) फेनिलकेटोनुरिया (पीकेयू) एक विरासत में मिला विकार है जो रक्त में फेनिलएलनिन नामक पदार्थ के स्तर को बढ़ाता है (फेनिलएलनिन प्रोटीन का एक बिल्डिंग ब्लॉक (एक एमिनो एसिड है) जो आहार के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इससे बौद्धिक विकलांगता और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस विकार से उत्पन्न बौद्धिक विकलांगता को पर्यावरणीय कारक के द्वारा न्यूनतम किया जा सकता है।

87. बच्चों में पश्च-आघात तनाव विकार (पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर) के लक्षण क्या हैं?

(a) घटना से जुड़े स्थानों या लोगों से बचना।
(b) बार-बार कुछ कहने या उसके बारे में सोचना
(c) दूसरों में बिल्कुल रूचि न होना
(d) दूसरों से नाराज होना

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : पोस्ट ट्रामेटिक स्ट्रेस डिसआर्डर (पश्च-आघात तनाव विकार (PTSD)) एक मानसिक विकार है जो किसी व्यक्ति में यौन उत्पीड़न, युद्ध, यातायात टकराव या उसके जीवन पर अन्य खतरों जैसे किसी दर्दनाक घटना के सम्पर्क में आने के बाद विकसित होता है। इस विकार के लक्षणों में बुरे सपने या पुरानी यादों की अनुभूति, आघात में वापस ले जाने वाली स्थितियों से दूर रहने की कोशिश, उत्तेजित होने पर जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया, चिंता या फिर खराब मूड शामिल होते हैं।

88. वह स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति जागरूकता खो देता है और अपनी स्वयं की पहचान को छोड़ देता है,..... के रूप में जाना जाता है।

(a) आघात (b) दमन
(c) अभिघात (d) फ्यूग

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : फ्यूग (Fuges) वह मानसिक स्थिति है जिसमें कोई व्यक्ति जागरुकता खो देता है और अपनी स्वयं की पहचान को छोड़ देता है। इसे आत्म-विस्मृति भी कहा जाता है। यह मनोवैज्ञानिक रूप से स्मृति ह्रास की एक अवस्था है जिसके दौरान व्यक्ति अचेतन में व्यवहार करने लगता है और जब सामान्य चेतन की अवस्था में वापस लौटता है तो वह वास्तविकता से अस्थायी रूप से दूर रहता है जिसमें उसने क्या कार्य किये तथा कितना समय व्यतीत किया, इसका उसे आभास नहीं रहता है।

89. एक बच्चा बल्लेबाजी के लिए अपनी बारी का इंतजार नहीं कर सकता और अक्सर मैदान पर दौड़ता है जबकि कोई पहले से ही बल्लेबाजी कर रहा होता है। बच्चा किस समस्या से जूझ रहा होगा?

(a) डिसग्राफिआ
(b) ध्यानाभाव एवं अतिसक्रियता विकार
(c) ध्यान अभाव विकार
(d) ओटिज्म/आत्मविमोह

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : ध्यानाभाव एवं अतिसक्रियता विकार (ADHD) (Attention Deficit hyperactvity disorder) एक मानसिक विकार और दीर्घकालिक स्थिति है। इसमें ध्यानाभाव, आवेगी व्यवहार, असावधानी और अतिसक्रियता शामिल है। यह लंबे समय से चल रही एक स्थिति होती है जिसमें ध्यान लगाने में कठिनाई, अति सक्रियता और बिना सोचे–समझे जल्दबाजी में काम करना भी शामिल होता है।

90. द्विध्रुवी विकार (बाइपोलर डिस्ऑर्डर) किस प्रकार का विकार है?

(a) मनोदशा (मूड) (b) अधिगम
(c) व्यक्तित्व (d) विचार (थॉट)

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : द्विध्रुवी विकार (Bipolar disorder) मनोदशा (mood) से संबंधित विकार है। इस विकार में मिजाज बदलता रहता है, जिसमें बहुत ज्यादा अवसाद से घिर जाना या अत्यधिक उन्मादी हो जाना शामिल है। उन्मादी–अवसादी विकार (बायपोलर होना) आनुवंशिकी, परिवेश और बदली हुई दिमागी संरचना और रसायन के कारण उत्पन्न होता है। इस रोग से ग्रसित रोगी की मनोदशा बारी–बारी से दो विपरीत अवस्थाओं में जाती रहती है।

91. तीव्र मूड स्विंग निम्न का लक्षण है:

(a) अधिगम अक्षमता (b) द्विध्रुवीय विकार
(c) आचरणगत विकार (d) असामाजिक व्यक्तित्व

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : द्विध्रुवीय विकार एक मानसिक बीमारी है जो मनोदशा में अत्यधिक बदलाव के कारण होती है। द्विध्रुवीय विकार को उन्मत्त अवसाद के रूप में भी जाना जाता है। द्विध्रुवीय विकार के मुख्य लक्षण– उन्माद, हाइपोमेनिया, अवसाद और तीव्र मूड स्विंग आदि हैं। जब किसी व्यक्ति का मूड उन्माद या हाइपोमेनिया (उन्माद से कम चरम) पर शिफ्ट होता है, तो वह उत्साह, ऊर्जा से भरा या असामान्य रूप से चिड़चिड़ा महसूस कर सकता है।

92. निम्नलिखित में से कौन-सा एक गतिसंवेदी अधिगमकर्ता के लिए अनुपयुक्त है?

(a) उन्हें गतिविधियों के माध्यम से अधिगम का अवसर प्रदान करना।
(b) क्षेत्र भ्रमण, नाटक, नृत्य आदि में भाग लेना।
(c) अधिगम के लिए अवधारणा मानचित्रण पद्धति का उपयोग करना।
(d) शिक्षण के लिए समस्या समाधान विधि का उपयोग करना।

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) गतिसंवेदी अधिगमकर्ता अपने शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से सीखने का प्रयास करते हैं। उनके शिक्षण के लिए गतिविधियों के माध्यम से अधिगम का अवसर प्रदान करना, क्षेत्र भ्रमण, नाटक, नृत्य आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना, शिक्षण के लिए समस्या–समाधान विधि का उपयोग करना आदि उपयुक्त होता है जबकि उनके अधिगम के लिए अवधारणा मानचित्रण पद्धति, व्याख्यान पद्धति या प्रदर्शन पद्धति का उपयोग करना उपयुक्त नहीं होता है।

93. जीडीडी एक विकास संबंधी अक्षमता है जो ..... देखने को मिलती है।

(a) 5 वर्ष से छोटे बच्चों में
(b) 12-14 वर्ष की आयु में
(c) 5 वर्ष से अधिक की आयु के बच्चों में
(d) 18 वर्ष से ऊपर की आयु में

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : जीडीडी (GDD-Global developmental delay)– एक विकास संबंधी अक्षमता है जो मुख्यतया 5 वर्ष से छोटे बच्चों में देखने को मिलती है। इस अक्षमता में बालक का शारीरिक तथा संवेगात्मक विकास देरी से होता है। यह विकास के दौरान की एक स्थिति है जिसमें बालक के सामान्य से कम बौद्धिक क्रियाशीलन को चिह्नित किया जाता है।

94. निम्नलिखित में से कौन–सा विकासात्मक विकार का उदाहरण नहीं है?

(a) आत्मविमोह (Autism)
(b) प्रमस्तिष्क घात (Cerebral palsy)
(c) पर–अभिघातज तनाव (Post–traumatic stress)
(d) न्यून अवधान सक्रिय विकास (Attention deficit hyperactivity disorder)

DSSSB PRT

Ans : (c)

- आटिज्म (Autism) आत्मविमोह– विकास से जुड़ी एक गम्भीर समस्या है जो बात-चीत करने और दूसरे लोगों से जुड़ने की क्षमता को कम कर देती है।
- प्रमस्तिक घात (Cerebral palsy)– यह विकास से सम्बन्धित विकार है जो शरीर की गतिविधियों, मांसपेशियों के संकुचित होने या खिचने (मसल टोन) या शरीर की अवस्था (पॉस्चर) का एक जन्मजात विकार है।
- पर अभिघातज तनाव (Post Traumatic stress)– यह किसी भयानक घटना का अनुभव करने या उससे गुजरने के बाद सामान्य हो पाने की विफलता वाला विकार है। यह विकासात्मक विकार नहीं है।
- न्यून ध्यान या अति सक्रियता विकार (Attention deficit hyperactivity disorder)– लम्बे समय से चल रही एक स्थिति जिसमें ध्यान लगाने में कठिनाई, अति-सक्रियता और बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में काम करना शामिल हो सकता है। यह भी विकासात्मक विकार है।

EXAM POINTS

- ''पिछड़ा हुआ बालक वह है, जो स्कूल के जीवन के मध्य में अपनी आयु स्तर की कक्षा से एक नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ हो।'' यह कथन है– **बर्ट का**
- पिछड़े बालकों के सम्बन्ध में कथन सही नहीं है– **ये बालक शैक्षणिक तथा सामाजिक कार्य-कलापों में भाग लेने के लिए अपने आप को पूर्णतः समर्थ मानते हैं**
- स्कूल का वातावरण पिछड़ेपन के लिए किस प्रकार दोषपूर्ण परिस्थितियों के निर्माण का कारण बनता है– **शिक्षकों और विद्यार्थियों के सम्बन्धों में तनाव, स्कूलों में सहगामी क्रियाओं का अभाव एवं विद्यार्थियों के प्रति शिक्षकों की लापरवाही का प्रदर्शन**
- विकलांग बालकों में किस प्रकार की कमी के कारण अधिगम में कठिनाई होती है– **शारीरिक कमी, मानसिक कमी तथा संवेगात्मक कमी**
- शारीरिक रूप से विकलांग बालकों की श्रेणी में नहीं आता है– **मानसिक दोषयुक्त छात्र**
- मानसिक रूप से पिछड़ेपन का कारण नहीं है– **अभिभावकों के शैक्षिक पिछड़ेपन के कारण बालक मानसिक रूप से पिछड़ जाता है**
- मानसिक रूप से पिछड़े बालकों की प्रमुख समस्याएँ हैं– **स्कूल में समायोजन की समस्या, परिवार में समायोजन की समस्या तथा शारीरिक और मानसिक विकास की समस्या**
- मानसिक रूप से विकलांग बालकों की शिक्षा के सन्दर्भ में सही नहीं है– **मानसिक रूप से पिछड़े बालकों के लिए सामान्य शिक्षण विधियाँ ही अपनानी चाहिए**
- समस्यात्मक बालक की श्रेणी में आते हैं– **क्रोध करने वाले, भयभीत रहने वाले, आक्रमणकारी व्यवहार करने वाले**
- अफेज्या ..... से सम्बन्धित विकार है– **भाषा एवं सम्प्रेषण अधिगम अशक्तता**
- मन्द गति से सीखने वाले बालक को जरूरत होती है– **विशेष सहायता की**
- निःशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केन्द्रीय प्रायोजित योजना का उद्देश्य है– **नियमित विद्यालयों में निःशक्त बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना**
- अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों का कमजोर होना (Poor Interpersonal Relation) विशेषता नहीं है– **मानसिक मन्दता (Mental Retardation) की**
- कक्षा में सामान्य रूप से बर्ताव करना चाहिए एवं आडियो सी. डी. के जरिए सहायता प्रदान करनी चाहिए– **कक्षा पाँच के न्यून दृष्टि वाले बच्चों को**
- आपको अपनी कक्षा में दो मन्दबुद्धि बच्चों को बैठाने के लिए बोला गया है। आप– **ऐसे विद्यार्थियों को सिखाने की तकनीक सीखेंगे**
- जड़ बुद्धि वाले बालक का I. Q. (बुद्धि लब्धि) होती है– **71 से कम**
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 व 46 सम्बन्धित है–**आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों के कल्याण से**
- यदि छात्र अधिकांश कार्य हाथों से करेगा तो छात्र में– **आत्मनिर्भरता पैदा होती है**
- वह पुस्तकों को आँखों के निकट लाकर पढ़ता है, वह शिक्षक से अक्षर स्पष्ट न दिखने की शिकायत करता है एवं श्यामपट्ट पर लिखे हुए को नोट बुक पर नहीं उतार पाता है, यह व्यवहार होता है– **आंशिक दृष्टिदोष युक्त बालक का**
- बुरी आदतों को सुधारा जा सकता है– **अनुबन्धन द्वारा**
- उनमें किसी न किसी प्रकार की अक्षमता होती है जो उनके ज्ञानार्जन व शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, यह मुख्य विशेषता होती है– **कम गति से सीखने वाले बच्चों की**
- दृष्टि दोष से युक्त बच्चों को आकृतियों का ज्ञान देना चाहिए– **त्रिआयामी आकृतियों के स्पर्श द्वारा**
- वह अक्षमता जो केवल जन्मजात होती है– **मन्द बुद्धि**
- सुनने की क्षमता की जाँच हेतु उपयोग किया जाता है– **डेसीबल इकाई का**
- सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया जाता है– **मूक बधिर बच्चों की शिक्षा हेतु**
- जिनके सीखने की गति धीमी, बुद्धि लब्धि स्तर 80-90 एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ असमायोजित व्यवहार, ऐसे बालक होते हैं– **पिछड़े**
- जब एक निर्योग्य बच्चा पहली बार विद्यालय आता है तो शिक्षक को करना चाहिए– **उसके अभिभावक के साथ मिलकर सहकारी योजना विकसित करनी चाहिए**
- जब एक शिक्षिका दृष्टिबाधित शिक्षार्थी को कक्षा के अन्य शिक्षार्थियों के साथ सामूहिक गतिविधियों में शामिल करती है, तो वह– **समावेशी शिक्षा की भावना के अनुसार कार्य कर रही है**

- श्रवण ह्रास से ग्रसित बच्चे कक्षा में सबसे मुख्य नैराश्य (कुण्ठा) का सामना करते हैं–
  दूसरों के साथ सम्प्रेषण करने तथा सूचनाओं को बाँटने में अक्षमता
- एक शिक्षिका की कक्षा में कुछ शारीरिक विकलांगता वाले बच्चे हैं। उसके लिए क्या कहना सबसे उचित होगा–
  शारीरिक रूप से अक्षम बालक क्लास में ही कोई खेल खेल सकते हैं
- ''राष्ट्रीय दृष्टि बाधितार्थ संस्थान'' (NIVH) स्थित है–
  देहरादून में
- सिरिलबर्ट के अनुसार पिछड़े बालकों की बुद्धिलब्धि होती है–
  85 से कम
- सर्वाधिक प्रभावकारी विधि हो सकती है, जो आपकी इस अपेक्षा को पूरी कर सके कि वंचित विद्यार्थी अपनी भागीदारिता में सफल हो सकें–
  आप उनकी सफलता हेतु उनकी क्षमता में विश्वास को अभिव्यक्त करें
- एक चालीस मिनट की कक्षा में सभी विद्यार्थियों व मुख्यतः विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की माँग को पूरा करते हुए आप किस प्रकार पढ़ाएंगे–
  सभी विद्यार्थियों के लिए क्रिया-कलाप कराकर परन्तु विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए
- धीमी या तेज गति से बोलना– **वाणी दोष नहीं है**
- एक बच्चा जो आंशिक रूप से देख सकता है–
  विशेष प्रावधान करते हुए उसे नियमित विद्यालय में रखना चाहिए
- कोई शिक्षिका अपनी कक्षा में फर्नीचर की तीखी धार वाले किनारे को रुई से ढका रखने को कहती है और 'छुओ तथा अनुभव करो' वाले सूचना पदों का उपयोग करने को कहती है। वह किस वर्ग के विशेष शिक्षार्थियों की आवश्यकता पूर्ति करने का प्रयास कर रही है– **दृष्टि विकलांग शिक्षार्थी**
- पिछड़ेपन का कारण नहीं है– **स्वस्थ वातावरण**
- जिन बालकों की बुद्धिलब्धि 70 से कम है साधारणतः उन्हें रखते हैं– **मानसिक न्यूनता ग्रसित की श्रेणी में**
- एक शिक्षक, बच्चे द्वारा की गयी छोटी-छोटी गलतियों पर क्रोध प्रकट करता है। यह इंगित करता है कि–
  वह संवेदनात्मक रूप से सन्तुलित नहीं है
- एक अचर अवस्था है– **अधिगम निर्योग्यता**
- कार्यात्मक स्तर पर बाधा है– **दुर्बलीकरण**
- हकलाने (Stuttering) की समस्या से निपटा जा सकता है–
  प्रवर्द्धित वाक् (Prolonged Speech) पद्धति का उपयोग करते हुए
- एक व्यक्ति वैधानिक रूप से दृष्टिबाधित है, यदि उसका विजन क्षेत्र 20^0 है, तो उसकी विजुअल एक्यूइटी–
  अत्यधिक उपयुक्त सुधार के साथ, ठीक आँख में 6/60 से कम है
- सामाजिक नियमों व कानूनों के विरुद्ध व्यवहार करने वाला बालक कहलाता है– **बाल अपराधी**
- बच्चों को एक समान दिखाई देने वाले अक्षरों और वर्णों में भ्रम होता है– **अधिगम अशक्तता वाले**
- छोटे शिक्षार्थियों में कौन-सा लक्षण 'पठन-कठिनाई' का नहीं है– **पठन-गति और प्रवाह में कठिनाई**
- निःशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केन्द्रीय प्रायोजित योजना का उद्देश्य है–
  नियमित विद्यालयों में निःशक्त बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना
- अवधान सम्बन्धी बाधा/विकार लक्षण है–
  अधिगम निर्योग्यता का
- शारीरिक निर्योग्यता वाले व्यक्ति के लिए रक्षा तन्त्र में सबसे सन्तोषजनक युक्ति होगी– **अतिकल्पना**
- धाराप्रवाह रूप से पढ़ने तथा शब्दों पर पलटकर जाने में कठिनाई एक विशेषता है–
  अधिगम अशक्तता वाले बच्चे की
- सामान्य विद्यार्थियों के साथ यदि आपको एक नेत्र बाधित विद्यार्थी को पढ़ाने का अवसर प्राप्त हो, तब आप उससे कक्षा में किस प्रकार का व्यवहार करना चाहेंगे–
  आगे वाली पंक्ति में उसके बैठने की व्यवस्था करेंगे और उसकी सुविधा अनुसार उचित गति से पढ़ाएँगे
- माध्यमिक विद्यालय की कक्षा में शिक्षिका के पास एक 'बधिर बच्चा है' उसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि–
  वह बच्चे को उस स्थान पर बैठाए जहाँ से वह शिक्षिका के होंठ तथा चेहरे के भाव स्पष्ट रूप से देख सके
- एक बच्चा जो 'saw' और 'was', 'nuclear' और 'unclear' में अन्तर नहीं कर सकता, वह ग्रस्त है– **डिस्लेक्सिया से**
- मस्तिष्क की संरचना तथा कृत्यों में विभेद का परिणाम होता है–
  डिस्लेक्सिया

19.

प्रतिभावान, सृजनात्मक तथा विशेष क्षमता वाले बालक

प्रतिभाशाली बालक का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. बच्चों में प्रतिभाशालिता ..... के कारण हो सकती है।

(a) आनुवंशिकता और वातावरण के बीच अंत:क्रिया
(b) एक संसाधन-समृद्ध वातावरण
(c) सफल माता-पिता
(d) एक अनुशासित दिनचर्या

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : बच्चों में प्रतिभाशाली, आनुवंशिकता और वातावरण के बीच एक अंत:क्रिया के कारण हो सकती है। अर्थात् वे बच्चे प्रतिभाशाली होते हैं जिनको आनुवंशिकता प्रगतिशील पूँजी देती है और वातावरण पूँजी को निवेश करने के लिए उचित परिस्थिति का निर्माण करता है।

2. गिफ्टेड (मेधावी) होने का लक्षण है

I. अभिव्यक्ति में नव्यता II. जिज्ञासा
III. वाचालता IV. अति सक्रियता
(a) I और IV (b) I और II
(c) III और IV (d) II और III

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) गिफ्टेड (मेधावी) छात्रों की बुद्धि लब्धि उच्च स्तरीय होती है। ऐसे बालकों में अभिव्यक्ति की नव्यता, जिज्ञासा, नवाचारी, उत्सुकता जैसे गुणों का समावेशन होता है।

3. प्रतिभाशाली बच्चे का गुण है–

(DSSSB Assistant Teacher Education Department)

(a) अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तुलना में बहुत पीछे रहते हैं
(b) कम बुद्धि लब्धि
(c) तीव्र निर्णय लेना तथा आत्मविश्वास होना
(d) दूसरों में अन्त: क्रिया करने में असमर्थ

Ans. (c) **:** प्रतिभाशाली बच्चों की बुद्धिलब्धि 130 से ऊपर पायी जाती है। प्रतिभाशाली बच्चे तीव्र निर्णय लेते हैं। तथा आत्म विश्वासी होते हैं।

4. प्रतिभावान बालक की बुद्धिलब्धि होती है

(a) 130 (b) 140
(c) 125 (d) 120

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) टरमैन ने 1916 के स्टैनफोर्ड बिने परीक्षण के साथ बुद्धिलब्धि के वितरण की तालिका इस प्रकार तैयार की है -

बुद्धिलब्धि की सीमाएं	वर्ग
130 से अधिक	प्रतिभाशाली
121-130	प्रखर बुद्धि
111-120	तीव्र बुद्धि
91-110	सामान्य बुद्धि
81- 90	मन्द बुद्धि
71- 80	अल्प बुद्धि
71 से कम	जड़ बुद्धि

इस प्रकार 130 से अधिक बुद्धिलब्धि वाला बालक प्रतिभावान बालक कहलाता है। अत: विकल्प (b) सही उत्तर है।

5. प्रतिभाशाली बालक

(a) तीव्र और आसानी से सीखते हैं
(b) जो सुनते या पढ़ते हैं बिना रटे कण्ठस्थ कर लेते हैं
(c) वस्तु चिन्तन करते हैं
(d) कम समय में ही अभिप्रेरण का अनुसरण करते हैं

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (a) प्रतिभाशाली बच्चे तीव्र बुद्धि वाले होते हैं इनकी बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है वे किसी विषय-वस्तु को आसानी से त्वरित गति से सीखते हैं।

6. निम्नलिखित में से कौन–सी विशेषता प्रतिभावान शिक्षार्थी की है?

(a) यदि कक्षा की गतिविधियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण नहीं होती हैं, तो वह कम प्रेरित अनुभव करता है और ऊब जाता है।
(b) वह बहुत ही तुनकमिजाज होता है
(c) वह रस्मी व्यवहार करता है जैसे हाथ थपथपाना, डोलना आदि।
(d) वह आक्रामक और कुण्ठित हो जाता है।

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (a) ऐसे बालक जिनकी बुद्धिलब्धि 130 से अधिक होती है उन बालकों को प्रतिभावान बालक की श्रेणी में रखा जाता है। ऐसे बालकों के लिए यदि कक्षा की गतिविधियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण नहीं होती है तो वे कम प्रेरित अनुभव करते हैं और ऊब जाते हैं। अत: ऐसे बालकों के लिए 'मानसिक उद्वेलन तकनीकी' शिक्षा की एक महत्त्वपूर्ण विधि है जो उनकी योग्यता का अधिक से अधिक विकास कर सकती है।

7. प्रतिभाशाली शिक्षार्थी ..... है।

(a) अभिसारी चिंतक (b) अपसारी चिंतक

(c) बहिर्मुखी (d) बहुत परिश्रमी

DSSSB PRT

C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (b) प्रतिभाशाली शिक्षार्थी अपसारी चिंतक होते हैं। उनमें सर्जनात्मक एवं रचनात्मक गुणों का समावेश होता है। वे मौलिक चिंतन में विश्वास करते हैं तथा नये आविष्कारों के प्रति क्रियाशील होते हैं।

8. प्रतिभाशाली बालकों में निम्न विशेषता होती है?

(a) अधिक महत्त्वाकांक्षा (b) बुद्धिलब्धि 130 से अधिक

(c) विस्तृत शब्दकोष (d) उपरोक्त सभी

DSSSB PRT

UT TET 2013 (I-V)

Ans : (d) प्रतिभाशाली बालकों की निम्न विशेषताएँ होती हैं–

- विशाल शब्दकोश।
- मानसिक प्रक्रिया की तीव्रता।
- अधिक महत्त्वाकांक्षी होते हैं।
- बुद्धि–लब्धि 130 से अधिक होती है।
- सामान्य ज्ञान की श्रेष्ठता।
- अध्ययन में अद्वितीय सफलता।
- आश्चर्य जनक अंतर्दृष्टि का प्रमाण।
- पाठ्य–विषयों में अत्यधिक रुचि या अरुचि।
- अमूर्त विषयों में रुचि।

9. इनमें से कौन–सी विशेषता प्रतिभाशाली बच्चों की नहीं है?

(a) उच्च आत्म क्षमता

(b) निम्न औसतीय मानसिक प्रक्रियाएँ

(c) अन्तर्दृष्टिपूर्वक समस्याओं का समाधान करना

(d) उच्चतर श्रेणी की मानसिक प्रक्रियाएँ

DSSSB PRT

C TET 2015 (I-V)

Ans : (b) स्किनर एवं हैरीमैन के अनुसार प्रतिभाशाली बालक में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

(1) मानसिक प्रक्रिया की तीव्रता

(2) अमूर्त विषयों में रुचि

(3) आश्चर्यजनक अंतर्दृष्टि का प्रमाण

(4) सामान्य अध्ययन में रुचि

(5) अध्ययन में अद्वितीय सफलता

(6) विशाल शब्दकोश

(7) दैनिक कार्यों में विभिन्नता आदि।

अत: निम्न औसतीय मानसिक प्रक्रियाएँ प्रतिभाशाली बालक की विशेषता नहीं है।

10. अध्यापक के दृष्टिकोण में प्रतिभाशीलता किसका संयोजन है?

(a) उच्च योग्यता–उच्च सृजनात्मकता–उच्च वचनबद्धता

(b) उच्च प्रेरणा–उच्च सृजनात्मकता–उच्च क्षमता

(c) उच्च योग्यता–उच्च क्षमता–उच्च वचनबद्धता

(d) उच्च क्षमता–उच्च सृजनात्मकता–उच्च स्मरण शक्ति

DSSSB PRT

C TET (I-V) 2015

Ans : (a) मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, अध्यापकों के दृष्टिकोण से किसी व्यक्ति की प्रतिभाशालिता उसकी उच्च योग्यता (High Ability), उच्च सृजनात्मकता (High Creativity) तथा उच्च प्रतिबद्धता (High Commitment) जैसे गुणों के संयोजन पर निर्भर करती है।

11. 'प्रतिभाशाली होने' का संकेत निम्न में से क्या नहीं है?

(a) विचारों में सृजनात्मकता (b) दूसरों के साथ लड़ना

(c) अभिव्यक्ति में अनूठापन (d) कौतूहल

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (b) प्रभावशाली होने का संकेत निम्न है-

- उच्च बुद्धि लब्धि (130 से ऊपर)
- विचारो में सृजनात्मकता
- उत्सुकता (कौतूहल)
- अभिव्यक्ति में अनूठापन

दूसरों के साथ लड़ाई झगड़ा करना प्रतिभाशाली होने का संकेत नहीं है।

12. रेनजुली प्रतिभाशाली की अपनी ..... परिभाषा के लिए जाने जाते हैं।

(a) चार-पंक्तिय (टीयर) (b) चार-स्तरीय

(c) त्रि-वृत्तीय (d) त्रि-मुखी

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (c) रेनजुली प्रतिभाशाली की अपनी त्रि-वृतीय परिभाषा के लिए जाने जाते है।

13. ------ के कारण प्रतिभाशालिता होती है।

(a) मनो-सामाजिक कारकों (b) आनुवंशिक रचना

(c) वातावरणीय अभिप्रेरणा (d) (b) और (c) का संयोजन

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

DSSSB PRT

Ans: (d) किसी भी शिक्षार्थी का प्रतिभाशाली होना सामान्यत: उसके आनुवंशिक रचना तथा वातावरणीय अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है।

14. ---- 'प्रतिभाशाली' होने का संकेत नहीं है।

(a) दूसरों के साथ झगड़ना (b) अभिव्यक्ति में नवीनता

(c) जिज्ञासा (d) सृजनात्मक विचार

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

DSSSB PRT

Ans: (a) प्रतिभाशाली बालक अपने समवयस्कों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार करता है, उनका सहयोग करता है और उनके साथ सामंजस्य स्थापित करता है न कि दूसरों के साथ झगड़ा करता है।

15. 140 से अधिक बुद्धिलब्धि (IQ) वाले बच्चों को किस श्रेणी में रखेंगे?

(a) मूर्ख (b) मन्दबुद्धि

(c) सामान्य बुद्धि (d) प्रतिभाशाली

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (d) टरमैन ने 1916 में एक बुद्धिलब्धि की सारणी प्रस्तुत की थी जिसके आधार पर 140 से अधिक बुद्धिलब्धि (I.Q.) वाले बच्चों को प्रतिभाशाली श्रेणी में रखा गया। टरमैन की श्रेणी निम्नलिखित थी-

1916 में टरमैन ने जो बुद्धि लब्धि की सारणी प्रस्तुत की, वह इस प्रकार है-

बुद्धिलब्धि		बालक
130 से अधिक	-	प्रतिभाशाली
121-130	-	प्रखर बुद्धि
111-120	-	तीव्र बुद्धि
91-110	-	सामान्य बुद्धि
81-90	-	मन्द बुद्धि
71-80	-	अल्प बुद्धि
71 से कम	-	जड़ बुद्धि

16. प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान करने में कौन-सा आईक्यू स्कोर प्रवृत्त होता है?

(a) 170 या अधिक (b) 130 या अधिक

(c) 70 या अधिक (d) 120 या अधिक

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : प्रतिभाशाली बच्चों के लिए 130 या अधिक बुद्धि लब्धि का होना आवश्यक होता है। जिन बालकों की बुद्धि या मानसिक क्षमता सामान्य बालकों से अधिक होती है, उन्हें प्रतिभाशाली बालक कहा जाता है। प्रतिभाशाली बालकों में तीव्र विकास की संभावनायें अधिक होती हैं।

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{दैहिक आयु}} \times 100$$

17. प्रतिभाशाली बच्चों का अपने क्षमता का अहसास होता है जब

(DSSSB Assistant Nursery Teacher)

(a) जब वे अन्य बच्चों के साथ सीखते हैं

(b) जब वे अन्य बच्चों से अलग होकर सीखते हैं

(c) जब वे निजी कक्षा लेते हैं

(d) जब उनका लगातार परीक्षण होता है

Ans. (a) **:** प्रतिभाशाली बच्चे जब अन्य बच्चों के साथ सीखते हैं तो उन्हें अपनी क्षमता का अहसास होता है। प्रतिभाशाली बच्चे अन्य बच्चों की अपेक्षा अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

प्रतिभाशाली बालकों की आवश्यकताएँ एवं पहचान

18. प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान की विधि है

(a) अवलोकन (b) बुद्धि परीक्षण

(c) व्यक्तित्व परीक्षण (d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) प्रतिभाशाली बालक वे होते है जिनकी बुद्धिलब्धि अधिक होती है और सामाजिक नेतृत्व की क्षमता से परिपूर्ण होते हैं तथा सांख्यिकीय आधार पर औसत से अधिक अंक पाते हैं। इस प्रकार की विशेषताओं को पहचानने के लिए अवलोकन के साथ–साथ उनका बुद्धिपरीक्षण तथा व्यक्तित्व परीक्षण करना आवश्यक होता है।

19. प्रतिभावान बालक की पहचान अवलोकन द्वारा नहीं की जा सकती क्योंकि

(a) अवलोकन वस्तुनिष्ठ तकनीक नहीं है

(b) अवलोकन व्यक्तिनिष्ठ प्रविधि है

(c) अवलोकन सिर्फ विशेषज्ञों द्वारा ही किया जा सकता है

(d) उपरोक्त में से सभी

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) प्रतिभावान बालक की पहचान अवलोकन द्वारा नहीं की जा सकती क्योंकि अवलोकन वस्तुनिष्ठ तकनीक नहीं है। अवलोकन व्यक्तिनिष्ठ प्रविधि है तथा अवलोकन सिर्फ विशेषज्ञों द्वारा ही किया जा सकता है।

20. एक प्रतिभाशाली बालक की आप मदद कर सकते हैं

(a) उस पर अधिक ध्यान देकर

(b) उसे अधिक पुस्तके देकर

(c) उसे अधिक समय देकर

(d) उसे संबंधित अधिगम अनुभव देकर

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (a) प्रतिभाशाली बालक को एक विशेष प्रकार की शिक्षण पद्धति की आवश्यकता होती है ताकि उनके समस्याओं को हल किया जा सके।

21. निम्न में से कौन–सा बुद्धिमान बच्चे का लक्षण नहीं है?

(a) वह जो लम्बे निबन्धों को बहुत जल्दी रटने की क्षमता रखता है

(b) वह जो प्रभावपूर्ण एवं उचित तरीके से सम्प्रेषण करने की क्षमता रखता है

(c) वह जो अमूर्त रूप से सोचता रहता है

(d) वह जो परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकता है

DSSSB PRT

C TET 2011 (I-V)

Ans : (a) एक बुद्धिमान या प्रतिभाशाली बालक के निम्न गुण होते हैं–

(1) वह प्रभावपूर्ण एवं उचित तरीके से सम्प्रेषण करने की क्षमता रखता है।

(2) वह अमूर्त रूप से सोचता है।

(3) वह परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकता है।

(4) वह आश्चर्यजनक अंतर्दृष्टि रखता है।

(5) वह बुद्धि परीक्षाओं में उच्च बुद्धि लब्धि प्राप्त करता है।

अत: बहुत लम्बे निबन्धों को रटने की योग्यता प्रतिभाशाली या बुद्धिमान बालक के लक्षण नहीं हैं।

22. प्रतिभाशाली बच्चों के संदर्भ में संवर्द्धन का अर्थ है

(a) आकलन की प्रक्रिया का संवर्द्धन करना

(b) शैक्षणिक गतिविधियों के संपादन में संवर्द्धन करना

(c) सह–शैक्षणिक गतिविधियों के संपादन की गति को बढ़ाना

(d) ऐसे विद्यार्थियों को वर्तमान स्तर/ग्रेड को छोड़कर अपने उच्च स्तर/ग्रेड में प्रोन्नत करना

DSSSB PRT

C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (d) प्रतिभाशाली बच्चों के संदर्भ में संवर्द्धन का अर्थ है उनके वर्तमान स्तर/ग्रेड को छोड़कर उच्च स्तर/ग्रेड में प्रोन्नत करना। प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में **हैविगहर्स्ट** ने कहा– ''कक्षा उन्नत, विशेष पाठ्यक्रम, व्यक्तिगत ध्यान, संस्कृति शिक्षा, सामान्य छात्रों के साथ शिक्षा, विशेष अध्ययन आदि के द्वारा ऐसे बालकों का संवर्द्धन किया जा सकता है।

23. प्रतिभाशाली बच्चे

(a) मानव के लिए महत्त्वपूर्ण किसी भी क्षेत्र में अस्वभावत: अच्छा निष्पादन करते हैं

(b) सामान्यत: शारीरिक रूप से कमजोर होते हैं और सामाजिक अंत: क्रिया में अच्छे नहीं होते

(c) सामान्यत: अपने शिक्षकों को पसंद नहीं करते

(d) बिना किसी सहायता के अपने सामर्थ्य का पूर्ण विकास करते हैं

DSSSB PRT

C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (d) प्रतिभाशाली बच्चे वे होते हैं जिनकी बौद्धिक क्षमताएँ सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक होती है। ऐसे बच्चे बिना किसी सहायता के अपने सामर्थ्य का पूर्ण विकास कर सकते हैं। किन्तु हाँ उन्हें समय–समय पर निर्देशन की आवश्यकता अवश्यक होती है।

24. प्रतिभाशाली विद्यार्थी

(a) स्वभाव के अन्तर्मुखी होते हैं

(b) अपनी आवश्यकताओं को दृढ़तापूर्वक नहीं कह पाते

(c) अपने निर्णयों में आत्मनिर्भर होते हैं

(d) शिक्षकों से स्वतंत्र होते हैं

DSSSB PRT

C TET 2012 (I-V)

Ans : (d) प्रतिभाशाली विद्यार्थी शिक्षकों से स्वतंत्र होते हैं। वे शिक्षकों से सहयोग तो अवश्य प्राप्त करते हैं किन्तु उन पर निर्भर नहीं रहते हैं।

25. प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को तब विकसित कर पाएंगे जब

(a) बार–बार उनकी परीक्षा होगी

(b) वे अन्य विद्यार्थियों के साथ अधिगम–प्रक्रिया से जुड़ते हैं

(c) उन्हें अन्य विद्यार्थियों से अलग किया जाएगा

(d) वे निजी कोचिंग कक्षाओं में पढ़ेंगे

DSSSB PRT

C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (b) प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को तब विकसित कर पायेंगे जब वे अन्य विद्यार्थियों के साथ अधिगम प्रक्रिया से जुड़ेंगे क्योंकि प्रतिभाशाली बालक का भी सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक आदि विकास सामाजिक वातावरण के बिना सम्भव नहीं हो सकता।

26. निम्नलिखित में से किस समूह के बच्चों को समायोजन की समस्या होती है?

(a) औसत बुद्धि के बच्चे (b) ग्रामीण बच्चे

(c) अध्ययनशील बच्चे (d) कुशाग्र बुद्धि के बच्चे

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) कुशाग्र बुद्धि के बच्चों को समायोजन की समस्या रहती है। ऐसे बच्चों के लिए शिक्षा का सफल कार्यक्रम वही हो सकता है जिसका उद्देश्य उनकी विभिन्न योग्यताओं का विकास करना हो। अत: यही कारण है कि विद्यालयों में सामान्यत: देखा जाता है कि कुशाग्र बुद्धि वाले बच्चे उन्हीं बच्चों के साथ समायोजित होना पसन्द करते हैं जो बुद्धि स्तर पर उनके बराबर हो, न कि उनके साथ जो विद्यालय में सामान्य स्तर के होते हैं। इसीलिए कुशाग्र बुद्धि वाले बच्चों को समायोजन करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

27. प्रतिभाशाली शिक्षार्थी (को)

(a) अधिगम-निर्योग्य नहीं हो सकते।

(b) ऐसे सहयोग की आवश्यकता होती है जो सामान्यत: विद्यालयों द्वारा उपलब्ध नहीं कराए जाते।

(c) शिक्षक के बिना अपने अध्ययन को व्यवस्थित कर लेते हैं।

(d) अन्य शिक्षार्थियों के लिए अच्छे मॉडल बन सकते हैं।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

DSSSB PRT

Ans: (b) प्रतिभाशाली शिक्षार्थी को ऐसे सहयोग की आवश्यकता होती है जो सामान्यत: विद्यालयों द्वारा उपलब्ध नहीं कराये जाते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी बालक की परम्परागत विषयों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र में रुचि है तो विद्यालय उसकी रुचि के अनुसार उसके व्यक्तित्व को विकसित करने में प्राय: असमर्थ होते हैं।

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा

28. कक्षा में सृजनात्मक और प्रतिभाशाली बच्चों के लिए आवश्यक हस्तक्षेप निर्भर करता है–

(a) शिक्षक द्वारा अनुकूलित और प्रेरक निर्देशन तरीकों के उपयोग पर

(b) उन्हें अतिरिक्त समय दिए जाने पर

(c) उनके प्रति स्नेही होने के नाते पर

(d) उन्हें अन्य बच्चों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी देने पर

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : कक्षा में सृजनात्मक और प्रतिभाशाली बच्चों के लिए आवश्यक हस्तक्षेप शिक्षक द्वारा अनुकूलित और प्रेरक निर्देशन तरीकों के उपयोग पर निर्भर करता है। अर्थात् शिक्षक प्रतिभाशाली बच्चों के लिए शिक्षण की मानसिक उद्वेलन तकनीकी का प्रयोग करता है साथ ही इनके लिए नियमित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य विस्तृत सह-शैक्षिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करता है। ताकि इनके ज्ञान, अनुभवों एवं सृजनात्मकता का अधिक विकास हो सके।

29. सम्पुष्ट कार्यक्रम जरूरी होते है-

(a) कमजोर अधिगमकर्ताओं के लिए

(b) प्रतिभाशाली बालकों के लिए

(c) साधारण बालकों के लिए

(d) शारीरिक रूप से अयोग्य बालकों के लिए

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) सम्पुष्ट कार्यक्रम के अन्तर्गत गोष्ठियां, नाटक अभिनय, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल, बौद्धिक स्तर की प्रतियोगिता आते हैं। प्रतिभाशाली एवं प्रवीण बालकों के उच्च प्रतिभा के विकास के लिए ये सभी क्रियाविधि को अपनाया जाना आवश्यक होता है।

30. प्रतिभावान बच्चों की शिक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रावधान है

(a) योग्यता के आधार पर समूह बनाना

(b) दोहरी कक्षोन्नति देना

(c) कार्यक्रम को समृद्ध बनाना

(d) विशिष्ट विद्यालयों का प्रावधान करना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) प्रतिभावान बच्चों की शिक्षा के लिए शैक्षिक कार्यक्रम को समृद्ध बनाना सर्वश्रेष्ठ प्रावधान है। जबकि योग्यता के आधार पर समूह बनाने से कम योग्यता वाले छात्रों में कुण्ठा की भावना आयेगी। शेष विकल्प असंगत है।

31. पृथक कक्षाओं एवं संवर्धन कार्यक्रमों का प्रयोग शिक्षा के लिये किया जाता है

(a) प्रतिभाशाली बालकों के लिये

(b) निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों के लिये

(c) प्रतिभाशाली एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों के लिये

(d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a) पृथक कक्षाओं तथा संवर्धन कार्यक्रमों का प्रयोग प्रतिभाशाली बालकों के शिक्षा के लिए किया जाता है क्योंकि प्रतिभाशाली बालक सामान्य कक्षाओं में खुद को कुंठित महसूस करते है। अत: ऐसे बालकों के लिए पृथक कक्षाओं एवं संवर्द्धन कार्यक्रमों का प्रयोग किया जाता है।

32. आपकी कक्षा के कुछ छात्र अति मेधावी हैं, आप उन्हें किस तरह पढ़ाएँगे?

(a) कक्षा के साथ

(b) उच्च कक्षा के साथ

(c) समृद्धिकरण कार्यक्रमों के द्वारा

(d) जब वे चाहें

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) कक्षा के मेधावी छात्रों को समृद्धिकरण कार्यक्रमों के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए ताकि छात्रों की सभी ज्ञानेन्द्रिया संक्रिय रहे।

33. एक मेधावी छात्र अध्ययन में बेहतर उपलब्धि हासिल नहीं कर पा रहा है। शिक्षक को निम्न में से उसके लिए कौन-सी गतिविधि अपनानी चाहिए?

(a) उसके बेहतर प्रदर्शन की प्रतिज्ञा

(b) उसकी कम उपलब्धि के कारण का पता करना

(c) उसे परीक्षा में कृपांक देना

(d) उसके अभिभावक से कहना कि वह उसे स्कूल से निकाल लें

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) अगर कोई मेधावी छात्र बेहतर उपलब्धि हासिल नहीं कर पा रहा हो तो सर्वप्रथम अध्यापक को छात्र द्वारा उसकी कम उपलब्धि प्राप्ति के लिए उत्तरदायी कारणों का पता लगाना चाहिए तत्पश्चात कठिनाई को हल करने का प्रयास करना चाहिए।

34. प्रतिभाशाली बच्चों के लिए सबसे अच्छे शैक्षिक कार्यक्रम वे होते हैं जो–

(a) प्रत्यास्मरण के द्वारा ज्ञान की प्रवीणता पर बल देते हैं।

(b) उन्हें अधिगम के न्यूनतम मानकों तक कम करने को प्रेरित करने के लिए उपहारों और पुरस्कारों का उपयोग करते हैं।

(c) उनके चिंतन को प्रेरित कर उन्हें विविध विचारों में व्यस्त रहने के अवसर देते हैं।

(d) उनके आक्रामक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।

DSSSB PRT

C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (c) **हैविगहर्स्ट** ने अपनी पुस्तक A survey of the Education of gifted children में लिखा है– ''प्रतिभाशाली बालकों के लिए शिक्षा का सफल कार्यक्रम वही हो सकता है, जिसका उद्देश्य उनकी विभिन्न योग्यताओं का विकास करना हो।''

इसलिए प्रतिभाशाली बच्चों के लिए सबसे अच्छे शैक्षिक कार्यक्रम वे होते हैं जो उनके चिंतन को प्रेरित कर उन्हें विविध विचारों में व्यस्त रहने के अवसर देते हैं।

35. प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों के लिए

(a) अभिक्षमता को कौशल के रूप में समझना सही है

(b) प्रगति के निरीक्षण करने की आवश्यकता नहीं है

(c) शिक्षक को अनुकूलन करना चाहिए जिससे शिक्षार्थी में बदलाव आता है

(d) शिक्षक को पहल करनी चाहिए और समस्या–समाधान में मुख्य भूमिका निभानी चाहिए

DSSSB PRT

C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों के लिए शिक्षक को अनुकूलन करना चाहिए जिससे शिक्षार्थी में बदलाव आता है तथा उन्हें विशिष्ट क्रियाओं को करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनकी क्षमता को उचित निर्देशन मिलता रहे।

36. निम्नलिखित में से कौन–सा प्रदत्तकार्य प्रतिभाशाली विद्यार्थी के लिए उपयुक्त है?

(a) विभिन्न विषयों (themes) को ध्यान में रखते हुए विज्ञान की एक नई आदर्शात्मक पुस्तक का निर्माण करना।

(b) सम्पूर्ण कक्षा की अपेक्षा उसे अपनी पाठ्य–पुस्तक को शीर्घ समाप्त करने देना।

(c) अन्य विद्यार्थियों की तुलना में समान प्रकार के परन्तु अपेक्षाकृत अधिक अभ्यास

(d) उसे अपने समवयस्की साथियों को अनुविक्षण देने के लिए कहना ताकि उसकी शक्तियों को दिशा मिल सके तथा वह व्यस्त रह सके।

DSSSB PRT

C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार अपना विकास करने के लिए पर्याप्त अवसर व सुविधाएँ मिलनी चाहिए। उन्हें सामान्य विद्यार्थियों के साथ शिक्षा देने के अलावा ऐसे दर्त्तकार्य देने चाहिए जिससे उनकी योग्यता व क्षमता का समुचित उपयोग किया जा सके। अत: विभिन्न विषयों को ध्यान में रखते हुए विज्ञान की एक नई आदर्शात्मक पुस्तक का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

37. निम्नलिखित में से प्रतिभाशाली अधिगमकर्त्ताओं के लिए क्या समुचित है?

(a) वे अन्यों को भी कुशल–प्रभावी बनाते हैं तथा सहयोगी अधिगम के लिए आवश्यक है

(b) वे सदैव अन्यों का नेतृत्व करते हैं और कक्षा में अतिरिक्त उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं

(c) अपनी उच्चस्तरीय संवेदनात्मकता के कारण वे भी निम्न श्रेणी पा सकते हैं

(d) बुनियादी तौर पर उनकी मस्तिष्कीय शक्ति के कारण ही उनका महत्त्व है

DSSSB PRT

Ans : (c) प्रतिभाशाली अधिगमकर्ता अपनी उच्च स्तरीय संवेदनात्मकता के कारण भी निम्न श्रेणी पा सकते हैं क्योंकि बहुबुद्धि सिद्धांत के अनुसार यह आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति एक क्षेत्र में सफल है वह दूसरे क्षेत्र में भी सफल हो। साथ ही उच्च स्तरीय संवेदनात्मकता अधिगम को धनात्मक या ऋणात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है।

38. प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों को ..... से जुड़े प्रश्नों पर अधिक समय देने के लिए कहा जा सकता है।

(a) समझ (b) सृजन

(c) विश्लेषण (d) स्मरण

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

DSSSB PRT

Ans: (b) प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों में सृजन की प्रवृत्ति होती है। छात्र जितने अधिक सृजन संबंधी प्रश्न बनाएगे उतनी ही उनकी समझ होगी। अत: प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों को सृजन से जुड़े प्रश्नों पर अधिक समय देने के लिए कहा जा सकता है।

39. प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी गतिविधि सर्वाधिक उपयुक्त है?

(a) अभी हाल ही में हुए मैच का प्रतिवेदन लिखना

(b) दी गई संकल्पनाओं के आधार पर मौलिक नाटक लिखना

(c) पाँच पाठों के अंत में दिए गए अभ्यासों को एक बार में हल करना

(d) शिक्षक दिवस पर कक्षा को पढ़ाना

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

DSSSB PRT

Ans: (b) प्रतिभाशाली छात्रों के लिए दी गई संकल्पनाओं के आधार पर मौलिक नाटक लिखना गतिविधि सर्वाधिक उपयुक्त है। क्योंकि उनमें मौलिक चिंतन सृजनात्मकता आदि गुणों का संयोजन होता है।

40. एक शिक्षिका अपनी कक्षा को प्रतिभाशाली बच्चों की योग्यताओं (potential) की उपलब्धि चाहती है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसे निम्नलिखित में से क्या नहीं करना चाहिए?

(a) विशेष ध्यान के लिए उन्हें समकक्षियों से अलग करना

(b) उनकी सृजनात्मकता को समृद्ध करने के लिए उन्हें चुनौती देना

(c) गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में आनंद लेना सिखाना

(d) तनाव को नियंत्रित करना सिखाना

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (a) प्रतिभाशाली बच्चों को योग्यता की उपलब्धि के लिए यह जरूरी नहीं है कि उनको कक्ष से अलग बैठाकर उनके समकक्षियों को दूसरे कक्ष में बैठाया जाये।

41. आप देखते हैं कि एक छात्र बुद्धिमान है। आप

(a) उसके साथ सन्तुष्ट रहेंगे

(b) उसे अतिरिक्त गृहकार्य नहीं देंगे

(c) वह जैसे अधिक प्रगति कर सके उस तरह से उसे अनुप्रेरित करेंगे

(d) उसके अभिभावकों को सूचित करेंगे कि वह बुद्धिमान है

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) बुद्धिमान छात्र को उसके अधिगम को सही दिशा देने के लिए शिक्षक द्वारा उसे समय-समय पर निर्देशन देना चाहिए क्योंकि तीव्र बुद्धि वाले छात्रों को सामान्य छात्रों के साथ शिक्षण करना उचित नहीं माना जाता है। उसे अतिरिक्त शिक्षण देकर उसके सृजनात्मकता को संपोषित किया जा सकता है।

42. रिक्त स्थान भरिए: ''प्रतिभाशाली बालकों के शिक्षण में मानसिक उद्वेलन तकनीक...?.... चिन्तन के महत्व पर बल देता है।''

उत्तर: सृजनात्मक/अपसारी

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-प्रतिभाशाली बालकों के शिक्षण में मानसिक उद्वेलन तकनीक सृजनात्मक चिन्तन के महत्व पर बल देता है। मानसिक उद्वेलन तकनीक सृजनात्मकता को बढ़ावा देने हेतु एक विशिष्ट तकनीक है। इस तकनीक में किसी बालक या समूह को किसी समस्या पर विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। बालक या समूह द्वारा बिना किसी पूर्वाग्रह के अपने विचार प्रस्तुत किया जाता है जिसकी शिक्षक द्वारा विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन किया जाता है।

43. विचार विमर्श और उत्तेजना के बृहत्तर अवसर प्रदान करने के लिए क्षमता समूहन,..... का एक प्रकार का पृथक्करण है।

(a) वंचित (b) सामान्य
(c) पश्चवर्ती (d) प्रतिभावान

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : विचार विमर्श और उत्तेजना के वृहत्तर अवसर प्रदान के लिए क्षमता समूहन, प्रतिभावान का एक प्रकार का पृथक्करण है। दूसरे शब्दों में, क्षमता के अनुसार समूहन करने पर प्रतिभावान बालक सामान्य और वंचित बालकों की अपेक्षा विचार–विमर्श और सृजनात्मक कार्यों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं जिसके आधार पर उनका पृथक्करण किया जाता है।

सृजनात्मकता का अर्थ, स्वरूप, सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ, समस्याएँ तथा उनकी शिक्षा एवं सृजनात्मकता का मापन

44. एक समस्या को मूल एवं अपसारी समाधानों के साथ करने की योग्यता निम्नलिखित में से किसकी एक प्राथमिक विशेषता है–

(a) क्षतिग्रस्त बच्चों की
(b) सृजनात्मक बच्चों की
(c) अधिगम अशक्तता वाले बच्चों की
(d) अहंकेंद्रित बच्चों की

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (b) : एक समस्या को मूल एवं अपसारी समाधानों के साथ करने की योग्यता सृजनात्मक बच्चों की होती है। सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने, विचार करने तथा कार्य करने में समर्थ बनाती है। टोरेन्स ने सृजनात्मक बच्चों की 84 विशेषताओं की एक सूची बनायी है। जैसे–

- कठिन कार्यों को करना।
- रचनात्मक आलोचना।
- रहस्यात्मक खोजों के प्रति आकर्षित होना।
- संवेगात्मक रूप से संवेदनशील होना आदि।

45. रूही हमेशा समस्या के एकाधिक समाधानों के बारे में सोचती है। इनमें से काफी समाधान मौलिक होते हैं। रूही किन गुणों का प्रदर्शन कर रही है?

(a) अनम्य विचारक (b) आत्म-केन्द्रित विचारक
(c) सृजनात्मक विचारक (d) अभिसारिक विचारक

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (c) यदि रूही हमेशा समस्या के एकाधिक समाधानों के बारे में सोचती है जिसमें से काफी समाधान मौलिक होते हैं तो इसका मतलब है कि वह सृजनात्मक विचारों का प्रदर्शन कर रही है। सृजनात्मकता का संबन्ध प्रमुख रूप से मौलिकता या नवीनता से होता है। किसी समस्या पर नये ढंग से सोचने तथा समाधान खोजने के प्रयास से सृजनात्मकता परिलक्षित होती है।

46. सृजनात्मक समस्या समाधान की वह अवस्था, जिसमें व्यक्ति समस्या पर ध्यान नहीं देता है, है–

(a) अनुवादन (b) प्रदीप्ति
(c) उद्भवन (d) आयोजन

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) सृजनात्मक समस्या समाधान की वह अवस्था, जिसमें व्यक्ति समस्या पर ध्यान नहीं देता है, वह अवस्था उद्भवन कहलाती है। इस अवस्था में व्यक्ति सूचना के बारे में चेतन रूप से चिंतन करना छोड़ देता है परन्तु अचेतन रूप से समस्या के बारे में सोचता रहता है। उद्भवन काल में कोई नई सूचना, नया ज्ञान अथवा अनुभव भण्डार में जमा नहीं होता है।

47. सृजनात्मक समस्या समाधान की वह अवस्था जिसमें व्यक्ति असंगत सूचनाओं पर ध्यान नहीं देता, उसे कहते हैं–

(a) आयोजन (b) अनुवादन
(c) प्रबोधन (d) उद्भवन

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : सृजनात्मक समस्या–समाधान की वह अवस्था जिसमें व्यक्ति असंगत सूचनाओं पर ध्यान नहीं देता, उसे उद्भवन (Incubation) कहते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति सभी संबंधित सूचनाओं को एकत्रित करने के बाद सूचना के बारे में चेतन रूप से चिन्तन करना छोड़ देता है परन्तु अचेतन रूप से समस्या के बारे में सोचता रहता है। उद्भवन काल में कोई नई सूचना, ज्ञान अथवा अनुभव स्मृति भंडार में जमा नहीं होता है।

48. सृजनशीलता के पोषण के लिए एक अध्यापक को निम्न में से किस विधि की सहायता लेनी चाहिए?

(a) ब्रेन स्टार्मिंग/विचारावेश (b) व्याख्यान विधि
(c) दृश्य-श्रव्य सामग्री (d) इनमें से सभी

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) सृजनशीलता एक विचार है जो एकदम नये विज्ञान या पुराने विचारों में नये विचार का समावेश होता है अध्यापक को सृजनशील बालको को शिक्षा देने के लिए या उसके विचारों को पोषण देने के लिए ब्रेन स्टार्मिंग/विचारावेश विधि की सहायता लेनी चाहिए।

49. अलग-अलग सोच वाले पैटर्न उन बच्चों की पहचान करते हैं, जो–

(a) विकलांग हैं (b) डिस्लेक्सिक हैं
(c) सृजनात्मक हैं (d) प्रत्यास्थी हैं

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : अलग-अलग सोच वाले पैटर्न उन बच्चों की पहचान करते हैं जो सृजनात्मक होते हैं। ऐसे बालक किसी समस्या पर अपसारी चिंतन करते हैं तथा उसका एक नवीन समाधान प्रस्तुत करते हैं। यह नवीनता उस बच्चे के लिए या सम्पूर्ण समाज के लिए हो सकती है।

50. सृजनशील बालक के बारे में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) सृजनशील बालक जिज्ञासु होता है
(b) सृजनशील बालक साहसी नहीं होता है
(c) सृजनशील बालक बहिर्मुखी होता है
(d) सृजनशील बालक महत्त्वाकांक्षी होता है

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) सृजनशील बालकों के गुण निम्न है-

→ यह जिज्ञासु होते है

→ साहसी होते है

→ बहिर्मुखी होते है

→ महत्वाकांक्षी होते है

→ नवाचारी होते है

→ समायोजन करने की क्षमता होती है

51. सृजनात्मक बालक में निम्न में से कौन-सा गुण नहीं पाया जाता है?

(a) खोजपूर्ण प्रवृत्ति (b) अच्छी अन्तर्दृष्टि

(c) क्रियाशीलता (d) सीमित रुचियाँ

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (d) सृजनात्मकता किसी नवीन विचारों तथा नये वस्तुओं के प्रतिपादन से सम्बंधित होता है। सृजनात्मक बालक नवाचारी होते है। इस प्रकार के बालकों में खोजपूर्ण प्रवृति, क्रियाशीलता तथा अच्छी अर्न्तदृष्टि पायी जाती है जिससे वे समस्या के लिए किसी नवीन मार्ग की खोज करते हैं। सृजनात्मक बालकों की रुचियां असीमित होती हैं।

52. समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषों, कमियों एवं रिक्तियों के प्रति सजगता, विशेषता है

(a) प्रतिभाशाली बालकों की (b) सामान्य बालकों की

(c) सृजनशील बालकों की (d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) सृजनशील बालक नवाचारी होते है जो जानने की योग्यता रखते हैं साथ ही वातावरण के दोषों, कमियों एवं रिक्तियों के प्रति सजग भी होते हैं।

53. निम्नलिखित में से कौन-सा तरीका अध्यापिका के द्वारा एक सृजनात्मक बच्चे की पहचान करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होगा?

(a) यह अवलोकन करना कि बच्ची समूह कार्यों में साथियों के साथ किस प्रकार से प्रतिक्रिया करती है

(b) मानकीकृत बुद्धि परीक्षणों को देना

(c) वस्तुनिष्ठ प्रकार के परीक्षणों को देना

(d) बच्चे को विस्तृत रूप से अवलोकन करना, विशेष रूप से उस समय जब वह समस्याओं को हल करती है

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015

Ans: (d) यदि कोई शिक्षक किसी सृजनात्मक बच्चे की पहचान करना चाहती है तो उस बच्चे को विस्तृत रूप से अवलोकन करे विशेष रूप से तब जब वह समस्याओं को हल करती है।

54. सृजनात्मक शिक्षार्थी वह है जो –

(a) परीक्षा में हर बार अच्छे अंक प्राप्त करने के योग्य हैं

(b) पार्श्व (लेट्रल) चिंतन और समस्या-समाधान में अच्छा है

(c) ड्राइंग और पेंटिंग में बहुत विलक्षण है

(d) बहुत बुद्धिमान है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (b) सृजनात्मक शिक्षार्थी वह है जो पार्श्व चिंतन और समस्या समाधान में अच्छा हो।

55. बच्चे तब सर्वाधिक सृजनशील होते हैं, जब वे किसी गतिविधि में भाग लेते हैं।

(a) शिक्षक की डाँट से बचने के लिये

(b) दूसरों के सामने अच्छा करने के दबाव में आकर

(c) अपनी रुचि से

(d) पुरस्कार के लिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (c) सृजनशीलता का तात्पर्य है नवीन विचार वस्तु अर्थात् किसी नवीन विचार को जन्म देना या किसी नवीन वस्तु का आविष्कार करना सृजनशीलता कहलाती है। बच्चों में सृजनशीलता किसी प्रकार के दबाव या दण्ड स्वरूप या बाह्य प्रेरणा से नहीं पैदा की जा सकती है। सृजनशीलता मुख्यत: व्यक्ति के रूचि से उत्पन्न होती है। अत: बच्चे तब सर्वाधिक सृजनशील होंगे जब वे अपनी रूचि से किसी गतिविधि में भाग लेते हैं।

56. सृजनात्मकता को ..... की अवधारणा से संबंधित माना जाता है।

(a) द्रव बौद्धिकता (b) रवादार बौद्धिकता

(c) अभिसृत सोच (d) विविध सोच

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : सृजनात्मकता को विविध सोच की अवधारणा से सम्बन्धित माना जाता है क्योंकि सृजनात्मकता का सम्बन्ध प्रमुख रूप से मौलिकता या नवीनता से होता है। सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विविधतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने, विचार करने तथा कार्य करने में समर्थ बनाती है। अत: प्रचलित ढंग से हटकर किसी नए ढंग से चिंतन–मनन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता कही जा सकती है।

57. रिक्त स्थान भरिए: ''मौलिकता, नमनीयता तथा प्रवाह....?..... के घटक है।

उत्तर: सृजनात्मकता

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-मौलिकता, नमनीयता, प्रवाह, विस्तारण, विविधता आदि सृजनात्मकता के प्रमुख घटक है। गिलफोर्ड के अनुसार- '- ''सृजनात्मकता वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ नया निर्मित होता है- विचार, वस्तु जिसमे पुराने तत्वों को नवीन तरीके से व्यवस्थित किया जाता है, नवीन सृजन किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करता हो।''

58. अलग ढंग से कार्य करने तथा नये तरीकों का इस्तेमाल करने की योग्यता कहलाती है–

(a) सृजनात्मकता (b) व्यक्तित्व विकास

(c) नवीनता (d) जागरूकता

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (a) अलग ढंग से कार्य करने तथा नये तरीकों का इस्तेमाल करने की योग्यता सृजनात्मकता कहलाती है। ड्रेवहल ने सृजनात्मकता को परिभाषित करते हुए लिखा है ''सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।''

59. निम्नलिखित में से कौन–सा समूह सृजनात्मकता के तत्त्वों के सम्बन्ध में सही है?

(a) प्रवाह, विविधता, मौलिकता, सहकार्यता
(b) प्रवाह, विविधता, मौलिकता, विस्तारण
(c) बारम्बारता, विविधता, मौलिकता, विस्तारण
(d) प्रवाह, व्यवहार्यता, मौलिकता, विस्तारण

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वत्तापूर्ण समाधान खोजन के लिए नवीन ढंग से सोचने, विचार करने तथा कार्य करने में समर्थ बनाती है।
सृजनात्मकता के तत्व निम्नवत् हैं–
1. प्रवाह (Fluency)
2. विविधता (Flexibility)
3. मौलिकता (Originality)
4. विस्तारण (Elaboration)

60. एक शिक्षिका अपनी कक्षा में सृजनात्मक विद्यार्थियों को किस प्रकार से प्रोत्साहित कर सकती है?

(a) अभिसारी चिंतन को हतोत्साहित करके
(b) अनेक परिप्रेक्ष्यों को प्रोत्साहित करके तथा मूल विचारों को महत्त्व देकर।
(c) विद्यार्थियों को जोखिम लेने एवं चुनौतियों का सामना करने से हतोत्साहित करके।
(d) अपसारी चिंतन पर बल देकर

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (b) एक शिक्षिका को अपनी कक्षा में सृजनात्मक विद्यार्थियों के मूल विचारों को महत्त्व देते हुए अनेक परिप्रेक्ष्यों में चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि सृजनात्मक विद्यार्थी समस्याओं पर नवीन और मौलिक विचार प्रस्तुत करते हैं, उनमें अन्वेषणात्मक तथा जिज्ञासात्मक प्रवृत्ति, दूरदृष्टि, स्वतंत्र निर्णय क्षमता, विचारों तथा अभिव्यक्ति में मौलिकता जैसे गुण होते हैं।

61. सृजनात्मकता के बारे में क्या गलत है?

(a) सृजनात्मकता तथा बुद्धि सदैव साथ-साथ चलते हैं
(b) सृजनात्मकता में लचीलापन होता है
(c) सृजनात्मकता सार्वभौमिक प्रत्यय है
(d) सृजनात्मकता में अहम् का समावेश होता है

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (d) सृजनात्मकता तथा बुद्धि में घनिष्ठ सम्बंध होता है बुद्धि से चिंतन तर्क शक्ति, कल्पना एवं स्मृति का विकास होता है। जो बालकों को अपने नवीन विचारों को जन्म देने में सहायता करते है। लचीलापन सार्वेभौमिकरण सृजनात्मकता के गुण होते है। सृजनात्मकता में अहम का समावेश नहीं होता है क्योंकि अहम् की उपस्थिति में कभी-भी नये विचारों का सृजन सम्भव नहीं है।

62. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) सृजनशीलता किसी भी कला में मौलिकता होती है।
(b) सृजनशीलता के लिए चिन्तन आवश्यक नहीं है।
(c) सृजनशीलता किसी पूरा किये गये काम का एक नया परिणाम होता है।
(d) सृजनशीलता में समाज या किसी समूह के लिए उपयोगिता होनी चाहिए।

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) सृजनशीलता का अर्थ है नवीन रचना की प्रवृत्ति, जिसकी मुख्य विशेषता होती है-
– मौलिकता
- उत्सुकता
- नये–परिणाम
- सामाजिक हितों के लिए उपयोग
परम्परागत ढंग से हटकर किसी नये ढंग से सोचने या चिंतन करने या कार्य करने की योग्यता ही सृजनात्मकता (सृजनशीलता) कहलाती है।

63. निम्न में से कौन सृजनात्मकता का एक लक्षण नहीं है?

(a) लचीलापन (b) मौलिकता
(c) विस्तारण (d) सततता

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (d) सृजनात्मकता के लक्षण निम्न है -
- लचीलापन - मौलिकता
- विस्तारण - लक्ष्य उन्मुख
- उत्प्रेरित - सामाजिकता
- महात्वाकांक्षा
अत: सततता सृजनात्मकता का लक्षण नहीं है।

64. सृजनात्मकता की विशेषता है -

(a) मौलिकता (b) प्रवाहशीलता
(c) लचीलापन (d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) सृजनात्मकता की निम्न विशेषता है–
(i) मौलिकता, (ii) प्रवाहशीलता, (iii) लचीलापन।

65. सृजनशीलता के पोषण हेतु, एक अध्यापक को अपने विद्यार्थियों को रखना चाहिए

(a) कार्य केन्द्रित (b) लक्ष्य केन्द्रित
(c) कार्य केन्द्रित एवं लक्ष्य केन्द्रित (d) पुरस्कार प्रेरित

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (b) सृजनशीलता के पोषण हेतु एक अध्यापक को अपने विद्यार्थियों को लक्ष्य केन्द्रित रखना चाहिए ताकि वे विभिन्न प्रकार के कार्यों द्वारा निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति कर सके। परिणामस्वरूप उनमें रचनात्मकता का विकास होगा।

66. वह विचारात्मक प्रक्रिया जिसमें नूतन, वास्तविक तथा उपयोगी अवधारणाओं का प्रस्तुतीकरण निहित हो, कही जाती है

(a) रचनात्मकता (b) अभिनव
(c) बुद्धिमत्ता (d) नवविचार

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (a) किसी विचार या विचारधारा की उत्पत्ति से जुड़ी चिंतन प्रक्रिया जो नवीन मौलिक तथा लाभदायक होती है वह रचनात्मकता कहलाती है।

67. निम्नलिखित में से क्या बच्चों के सृजनात्मकता के विकास में सहायक नहीं है?

(a) खेल (b) भाषण
(c) कहानी लेखन (d) निर्माण संबंधी क्रियाएँ

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (b) सृजनात्मकता नवीन विचार या नवीन वस्तु से सम्बंधित होती है अत: बालक के सृजनात्मकता के विकास के लिए वे सभी तत्व आवश्यक होते हैं जिससे नये विचारों का जन्म हो। भाषण के द्वारा सृजनात्मकता का विकास नहीं होता जबकि अन्य विकल्प में निहित तथ्य सृजनात्मकता के विकास के लिए आवश्यक हैं।

68. निम्न में से कौन-सी सृजनात्मकता की विशेषता नहीं है?

(a) मौलिकता (b) उत्पादकता
(c) अपरिवर्तनशीलता (d) नवीन ज्ञान की खोज

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (c) सृजनात्मकता के मूल तत्व, उत्पाद, मौलिकता तथा नवीन ज्ञान की खोज है तथा यहीं इसकी प्रमुख विशेषता है। अपरिवर्तनशीलता सृजनात्मकता से सम्बंधित नहीं होता। परिवर्तनशीलता सृजनात्मकता की आवश्यकता है।

69. सृजनात्मकता की पहचान होती है

(a) पुराने व्यवहार से (b) चित्रकला से
(c) संगीत से (d) नवीन परिणाम से।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) सृजनात्मकता शब्द सृजन शब्द से बना है जिसका अर्थ है नई वस्तु एवं सिद्धांतों की खोज। इस प्रकार नवीन परिणामों से ही सृजनात्मकता की पहचान होती है।

70. निम्नलिखित में सृजनशीलता का प्रमुख तत्व क्या नहीं है?

(a) मौलिकता (b) अनुशासन
(c) धाराप्रवाहिता (d) लचीलापन

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
Jharkhand 2011 (I-V)

Ans: (b) सृजनशीलता के द्वारा उपलब्ध संसाधनों से किसी नये विचारों को जन्म दिया जाता है। सृजनशीलता के प्रमुख तत्व निम्न है-

1. मौलिकता 2. धाराप्रवाहिता
3. लचीलापन 4. उत्सुकता
5. स्वतंत्रता

अनुशासन सृजनशीलता का तत्व नहीं है।

71. सृजनात्मकता क्या है?

(a) बुद्धि का एक प्रकार जो उन कौशलों से सम्बन्धित है जो संचित किए गए ज्ञान और अनुभव पर निर्भर होते हैं
(b) बुद्धि का एक प्रकार जो संसाधन की गति को शामिल करते हुए सूचना–प्रक्रमण कौशलों पर अत्यधिक निर्भर होता है
(c) समस्याओं के मौलिक और अपसारी समाधानों को पहचानने, अथवा तैयार करने की योग्यता
(d) सृजनात्मकता 200 से ऊपर बुद्धिलब्धि से सर्वाधिक बेहतर ढंग से परिभाषित होती है

DSSSB PRT

Ans : (c) सृजनात्मकता अथवा रचनात्मकता किसी वस्तु, विचार, कला, साहित्य से सम्बद्ध किसी समस्या का समाधान निकालने आदि के क्षेत्र में कुछ नया रचने, अविष्कृत करने या पुनर्सृजित करने की प्रक्रिया है। यह एक मानसिक संक्रिया है जो भौतिक परिवर्तनों को जन्म देती है।

72. यह आवश्यक नहीं है कि उच्च बुद्धि लब्धि वाले बच्चे ..... में भी उच्च होंगे।

(a) सृजनशीलता (b) अध्ययन
(c) विश्लेषण करने (d) अच्छे अंक प्राप्त करने

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (a) किसी भी समस्या का सम्पूर्ण हल प्राप्त करने की योग्यता को 'बुद्धि' कहा जाता है जबकि नवीन उत्पाद एवं नवीन खोज करने की क्षमता को सृजनशीलता कहा जाता है। अत: बुद्धि लब्धि के आधार पर सृजनशीलता का मापन नहीं किया जा सकता तथा यह भी निश्चित नहीं हो सकता कि उच्च बुद्धि लब्धि वाले बालक सृजनशीलता में भी उच्च होंगे।

73. बुद्धि एवं सृजनात्मकता में किस प्रकार का सहसम्बन्ध पाया गया है?

(a) धनात्मक (b) ऋणात्मक
(c) शून्य (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) बुद्धि एवं सृजनात्मकता दो अलग-अलग घटक होते है फिर भी इन दोनो घटकों को धनात्मक सम्बंधों के द्वारा जोड़ा जाता है। बुद्धि का स्तर बढ़ने पर सृजनात्मकता में वृद्धि होती है तथा बुद्धि के घटने पर सृजनात्मकता में कमी आती है।

74. सृजनात्मक मुख्य रूप से ..... से संबंधित है

(a) मॉडलिंग (b) अनुकरण
(c) अभिसारी चिंतन (d) अपसारी (बहुविध) चिंतन

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (d) सृजनात्मकता मुख्य रूप से अपसारी चिंतन से सम्बन्धित है। जब किसी बालक को चिंतन के अनेक विकल्प और विचारों को अलग–अलग दिशाओं में फैलाने का अवसर दिया जाता है तो इसे अपसारी चिंतन कहते हैं। अपसारी चिंन को ''आउट ऑफ द बाक्स (Out of the box)'' चिंतन भी कहा जाता है।

75. निम्न में से कौन–सा शिक्षार्थियों में सृजनात्मकता का पोषण करता है?

(a) अच्छी शिक्षा के व्यावहारिक मूल्यों के लिए विद्यार्थियों का शिक्षण
(b) प्रत्येक शिक्षार्थी की अन्तर्जात प्रतिभाओं का पोषण
(c) विद्यालयी जीवन के प्रारम्भ से उपलब्धि के लक्ष्यों पर बल देना
(d) परीक्षा में अच्छे अंकों के लिए विद्यार्थियों की कोचिंग करना

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2011

Ans : (b) प्रत्येक शिक्षार्थी की अंतर्जात प्रतिभाओं का पोषण उनमें सृजनात्मकता का पोषण करता है। सृजनात्मकता शिक्षार्थी की आंतरिक अभिव्यक्ति होती है जिसे वह अनुकूल वातावरण में उद्घाटित करता है।

76. सृजनात्मकता क्या है?

(a) बुद्धि का एक प्रकार जो उन कौशलों से संबंधित है, जो संचित किए गए ज्ञान और अनुभव पर निर्भर होते हैं।
(b) बुद्धि का एक प्रकार जो संसाधन की गति को शामिल करते हुए सूचना-प्रक्रमण कौशलों पर अत्यधिक निर्भर होता है।
(c) समस्याओं के मौलिक और अपसारी समाधानों को पहचानने अथवा तैयार करने की योग्यता।

(d) सृजनात्मकता 200 से ऊपर की बुद्धिलब्धि से सर्वाधिक बेहतर ढंग से परिभाषित होती है।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (c) स्टेन के अनुसार ''जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।'' इसमें समस्याओं के मौलिक और अपसारी समाधानों को पहचानने अथवा तैयार करने की योग्यता होती है।

77. सृजनात्मक शिक्षार्थी है–

(a) अभिसारी चिंतक (b) अपसारी चिंतक
(c) बहिर्मुखी (d) बहुत परिश्रमी

DSSSB PRT

Ans : (b) सृजनात्मक शिक्षार्थी, अपसारी चिंतक होता है। अपसारी चिंतक कुछ दिये गये तथ्य में अपनी कल्पनाओं, विचारों को जोड़कर अपनी ओर से एक नया निष्कर्ष निकालता है।

78. निम्न में कौन सृजनात्मकता से सम्बन्धित नहीं है?

(a) मौलिकता (b) प्रवाह
(c) मितव्ययिता (d) उपयोगिता

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) सृजनात्मकता का तात्पर्य नये विचारो या उत्पाद का उत्पन्न होना है जिसकी मौलिकता, प्रवाह एवं उपयोगिता एक अनिवार्य गुण है मितव्ययिता सृजनात्मकता का गुण नहीं होता है।

79. उत्सुकता परीक्षण निम्न में किसका घटक है?

(a) सृजनात्मकता (b) अभिप्रेरण
(c) रुचि (d) बुद्धि

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (a) मनोवैज्ञानिक बेरोन ने सृजनशील बालकों की निम्न विशेषताए बतायी है-
1. स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता
2. जटिल समस्याओं में रुचि
3. एक साथ अनेक समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता
4. मौलिकता से परिपूर्ण
5. उत्सुकता

अत: उत्सुकता सृजनशीलता का मापक एवं परीक्षण है।

80. निम्न में से कौन–सी सृजनात्मकता की विशेषता नहीं है?

(a) मौलिकता (b) उत्पादकता
(c) अपरिवर्तनशीलता (d) नवीन ज्ञान की खोज

DSSSB PRT

Ans : (c) **डीहान तथा हेबिंगहर्स्ट के अनुसार–** ''सृजनशीलता वह विशेषता है जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करती है। यह नवीन वस्तु सम्पूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया है।'' अत: इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि सृजनात्मकता की मुख्य विशेषता है– मौलिकता या नवीनता, उत्पादकता, नवीन ज्ञान की खोज, विविधता, विस्तारण आदि।

81. निम्न में से कौन–सी परिस्थिति सृजनात्मकता को बढ़ाने में सहायक होगी?

(a) सीखने हेतु सीमित अवसर हों।
(b) बच्चों को उत्तर याद करने के लिए कहा जाए।
(c) समस्या का समाधान बता दिया जाए।
(d) जब बच्चों को स्वयं करके सीखने के लिए अधिक–से–अधिक अवसर दिए जाएं।

DSSSB PRT

Ans : (d) बालकों में सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए उनको स्वयं करके सीखने के लिए अधिक से अधिक अवसर दिये जाये। अध्यापकों के द्वारा कक्षा तथा विद्यालय में ऐसा वातावरण उपस्थित किया जाना चाहिए जो छात्रों की क्रियाशीलता के साथ–साथ उनके उत्पादक चिंतन, विविधता, मौलिकता तथा नम्यता को प्रोत्साहित करने वाला हो।

82. सृजनात्मक चिंतन की अवस्था जिसमें व्यक्ति चेतन तथा अचेतन स्तरों पर समस्या सुलझाने में प्रयासरत रहता है :

(a) अंतर्दृष्टि (b) उद्‌भवन
(c) प्रदीप्ति (d) सत्यापन

DSSSB PRT

Ans : (b) सृजनात्मक चिंतन की वह अवस्था जिसमें व्यक्ति चेतन तथा अचेतन स्तरों पर समस्या सुलझाने में प्रयासरत रहता है उसे उद्‌भवन स्तर या उदयात्मक सृजनशीलता कहा जाता है। इस स्तर पर व्यक्ति किसी कार्य में निहित समस्त अमूर्त विचारात्मक सिद्धांतों तथा मान्यताओं का उपयोग करके अत्यन्त उच्चस्तरीय सृजनशील कार्य प्रस्तुत करता है।

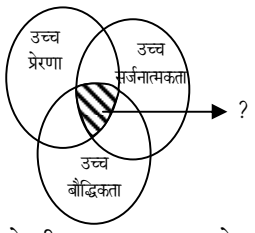
83. विज्ञान एवं कला प्रदर्शनियाँ, संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियाँ तथा विद्यालय–पत्रिका निकालना, ... के लिए है।

(a) शिक्षार्थियों को सृजनात्मक मार्ग उपलब्ध कराने
(b) विभिन्न व्यवसायों के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने
(c) विद्यालय का नाम रोशन करने
(d) अभिभावकों को संतुष्ट करने

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2012

Ans : (a) विज्ञान एवं कला प्रदर्शनियाँ, संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियाँ, कवि–दरबार का आयोजन, वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन, पत्र–पत्रिकाएँ निकालना आदि विद्यालय द्वारा शिक्षार्थियों को सृजनात्मक मार्ग उपलब्ध कराने के लिए किया जाता है।

84. छायांकित क्षेत्र सामान्य वितरण में उन शिक्षार्थियों को प्रदर्शित करता है जो - - - - में आते हैं।



(a) 2σ - 3σ के बीच (b) 3σ के बाद
(c) σ - 2σ के बीच (d) σ = 0 पर

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (b) छायांकित क्षेत्र सामान्य वितरण में उन शिक्षार्थियों को प्रदर्शित करता है जो 3σ के बाद में आते है अर्थात उच्च प्रेरणा, उच्च सर्जनात्मकता और उच्च बौद्धिकता जिन छात्रों में होती है वे सामान्य छात्रों से अलग एक नये मौलिक चिंतन के द्वारा उच्च क्षमता प्रदर्शित करते हैं जो तीनों का योग होता है।

EXAM POINTS

- जो बालक नये एवं मौलिक विचारों, क्रियाओं, कल्पनाओं आविष्कारों की योग्यता रखता है, को कहा जाता है **–सृजनात्मक बालक**
- ''प्रतिभाशाली बालक शारीरिक विकास, शैक्षणिक उपलब्धि बुद्धि और व्यक्तित्व में वरिष्ठ होते हैं।'' यह कथन किस विद्वान का है– **टरमैन**
- डी हॉन और कफ की सूची के आधार पर प्रतिभावान बालकों के सन्दर्भ में कथन सही है– **सामान्य बुद्धि का प्रयोग अधिक करते हैं, कठिन कार्यों को आसानी से कर लेते हैं, ऐसे बालक सब कुछ आसानी से याद कर लेते हैं**
- प्रतिभाशाली बालकों के सन्दर्भ में सही नहीं है– **ऐसे बालकों की रुचि दूसरों की आलोचना में अधिक होती है**
- हैलिंगवर्थ ने प्रतिभाशाली बालकों के पाठ्यक्रम में समृद्धि के लिए क्या कार्यक्रम बताए हैं– **आधुनिक भाषाओं का अध्ययन, जीवन गाथाओं का अध्ययन, विशेष योग्यताओं में प्रशिक्षण**
- प्रतिभाशाली बालकों के शिक्षकों की विशेषताओं के बारे में सही नहीं है– **विशिष्ट प्रशिक्षण एवं प्रमाणपत्र का होना अत्यन्त आवश्यक होना चाहिए**
- ''अनिवार्य रूप से किसी नई वस्तु का सृजन करना ही सृजनात्मकता है।'' यह कथन है– **जेम्स ड्रेवर का**
- गिलफोर्ड के सृजनात्मकता के प्रमुख तत्वों में सम्मिलित नहीं है– **आविष्कारात्मक सृजनात्मकता**
- टेलर महोदय के सृजनात्मकता के प्रकार में किसको सम्मिलित किया जाता है– **चित्रपूर्ति परीक्षण, वृत्त परीक्षण, टीन के डिब्बे का परीक्षण**
- मौलिकता, प्रवाहशीलता एवं लचीलापन विशेषता होती है– **सृजनात्मकता की**
- सृजनात्मकता शिक्षार्थी (Creative Learner) वह है जो– **पार्श्व (लेट्रल) चिन्तन और समस्या समाधान में अच्छा है**
- प्रत्येक विद्यार्थी की अन्तर्जात प्रतिभाओं का पोषण करने एवं प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध कराना, शिक्षार्थियों में पोषण करता है– **सृजनात्मकता का**
- विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को सम्बोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है– **क्षमता के अनुरूप विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना**
- डिस्लेक्सिया (Dyslexia) सम्बन्धित है– **पठन विकार से**
- प्रतिभाशाली होने का संकेत नहीं है– **दूसरों के साथ झगड़ना**
- पढ़ने की अक्षमता से सम्बन्ध है– **डिस्लैक्सिया का**
- वह सिद्धान्त जो यह व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान (Ice berg) के समान है जो कि अधिकांशत: छिपी रहती है एवं उसमें चेतन (Consciousness) के तीन स्तर हैं– **मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psychoanalytical Theory)**
- सीखने की अक्षमता है– **एलेक्सिया**
- पिछड़ा बालक, प्रतिभाशाली बालक एवं मन्द बुद्धि बालक आते हैं– **विशिष्ट बालकों के अन्तर्गत**
- विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु शिक्षक को ध्यान देना चाहिए– **व्यक्तिगत आवश्यकताओं व समस्याओं पर**
- वह गुण जो सृजनात्मक बालक में नहीं पाया जाता है– **सीमित रुचियाँ**
- सृजनात्मकता की विशेषता नहीं है– **अपरिवर्तनशीलता**
- यदि आपकी कक्षा का एक बच्चा C को D तथा D को C पढ़े तो वह पीड़ित है– **डिस्लेक्सिया रोग से**
- आपकी कक्षा में कुछ अति मेधावी हैं आप उन्हें कैसे पढ़ाएँगे– **समृद्धिकरण कार्यक्रम द्वारा**
- कम योग्य छात्रों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम सम्बन्धित है– **विशेष शिक्षा से**
- यदि एक बच्चा 16 को 61 लिखता है तथा 6 और d के मध्य अन्तर नहीं कर पाता है, तो यह है **–सीखने में अक्षमता (डिस्लेक्सिया)**
- एक मेधावी छात्र अध्ययन में बेहतर उपलब्धि हासिल नहीं कर पा रहा है। शिक्षक को निम्न गतिविधि अपनानी चाहिए– **उसकी कम उपलब्धि का पता करना**
- सृजनात्मकता मुख्य रूप से सम्बन्धित है– **अपसारी चिन्तन से**
- विज्ञान एवं कला प्रदर्शनियाँ, संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियाँ तथा विद्यालय पत्रिका निकालना है– **शिक्षार्थियों को सृजनात्मक मार्ग उपलब्ध कराने के लिए**
- शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को सामान्यत: होता है– **डिस्ग्राफिया**
- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को वर्तमान स्तर/ग्रेड को छोड़कर अगले उच्च स्तर/ग्रेड में प्रोन्नत करने का अर्थ है– **संवर्धन (Acceleration)**
- किसको ऐसे सहयोग की आवश्यकता होती है जो सामान्यत: विद्यालयों द्वारा उपलब्ध नहीं कराए जाते– **प्रतिभाशाली शिक्षार्थी को**
- आनुवंशिक रचना एवं वातावरणीय अभिप्रेरणा के कारण होती है– **प्रतिभाशालिता**

- गतिक कौशलों में अधिगम निर्योग्यता कहलाती है– **डिस्प्रेक्सिया**
- एक प्रभावशाली शिक्षार्थी है– **अपसारी चिन्तक**
- बुद्धि एवं सृजनात्मकता में सह-सम्बन्ध पाया जाता है– **धनात्मक**
- किस समूह के बच्चों को समायोजन की समस्या होती है– **कुशाग्र बुद्धि के बच्चे**
- अधिगमकर्त्ता को अधिक स्वतंत्रता देता है– **सृजनशीलतावाद**
- सृजनात्मकता से सम्बन्धित नहीं है– **मितव्ययता**
- चेस तथा कार्ड को वर्गीकृत किया जा सकता है– **बौद्धिक खेल में**
- सृजनात्मकता तथा बुद्धि सदैव साथ-साथ चलती है, सृजनात्मकता के विषय में यह कथन– **गलत है**
- अधिक महत्वाकांक्षा, बुद्धिलब्धि 130 से अधिक एवं विस्तृत शब्दकोश, ये विशेषता होती है– **प्रतिभाशाली बालकों में**
- शिक्षा बाल केन्द्रित होती है– **सृजनवाद में**
- प्रतिभाशाली अधिगम कर्त्ताओं के लिए समुचित है– **अपनी उच्चस्तरीय संवेदनात्मकता के कारण वे भी निम्न श्रेणी पा सकते हैं**
- एक विद्यार्थी उच्चस्तरीय सृजनशील रंगमंचीय कलाकार बनना चाहता है। उसके लिए सबसे कम प्रेरक होगा– **राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं को जीतने का प्रयास करना ताकि छात्रवृत्ति पायी जा सके**
- कक्षा में ध्यान न देने वाले बच्चे से व्यवहार करने के लिए सार्वाधिक लाभकारी उपाय हो सकता है– **बच्चे को उस जगह बैठाना जहाँ सबसे कम ध्यान भंग हो सके**
- सृजनात्मकता का एक लक्षण नहीं है– **सततता**
- सृजनात्मक चिन्तन सदैव होता है– **रचनात्मक**
- मुख्यत: लिखने की कठिनाई से जुड़ा है– **डिस्ग्राफिक**
- 140 से अधिक बुद्धिलब्धि (I.Q.) वाले बच्चों को रखेंगे– **प्रतिभाशाली श्रेणी में**
- ''सृजनशीलता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक क्रिया है।'' यह कथन है– **क्रो एण्ड क्रो का**
- एक प्रभावशाली अध्यापिका होने के लिए यह महत्वपूर्ण है– **प्रत्येक बच्चे के सम्पर्क में रहना**
- विकृत लिखावट से सम्बन्धित लिखने की योग्यता में कमी एक लक्षण है– **डिस्ग्राफिया का**
- प्रतिभाशाली बच्चों की क्षमता नहीं है– **निम्न औसतीय मानसिक प्रक्रियाएँ**
- एक औसत बुद्धि वाला बच्चा यदि भाषा को पढ़ने एवं समझने में कठिनाई प्रदर्शित करता है, तो यह संकेत देता है कि बच्चा प्रदर्शित कर रहा है– **पठन अक्षमता (डिस्लैक्सिया)**
- अवलोकन, बुद्धि परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण, यह सभी विधि है– **प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान की**
- विशिष्ट बालकों का प्रकार नहीं माना जाता है– **साधन सम्पन्न बालक**
- बच्चे तब सर्वाधिक सृजनशील होते हैं जब वे किसी गतिविधि में भाग लेते हैं– **अपनी रुचि से**
- मनोभाव का जल्दी-जल्दी बदलना (मूड स्विंग्स) पहचान करता है– **बच्चे की अधिगम निर्योग्यता की**
- प्रतिभाशाली बच्चों के लिए सबसे अच्छे शैक्षिक कार्यक्रम वे होते हैं जो– **उनके चिंतन को प्रेरित कर उन्हें विविध विचारों में व्यस्त रहने के अवसर देते हैं**
- विद्यार्थियों के प्रभावशाली अधिगम के लिए शिक्षक के प्रारम्भिक कार्यों में से नहीं है– **विद्यार्थियों को उपदेशात्मक विधि से सूचना प्रदान करना**
- फ्रायड के अनुसार हमारे मूल्यों का आन्तरिकीकरण होता है– **पराहम में**
- ''विस्मरण वह प्रवृत्ति है, जिसके द्वारा दु:खद अनुभवों को स्मृति से अलग कर दिया जाता है।'' यह कथन है– **फ्रायड का**
- अमूर्तमान प्रत्ययों को ग्रहण करने की योग्यता होती है– **प्रतिभाशाली बच्चों में**
- सृजनशीलता के पोषण के लिए एक अध्यापक को सहायता लेनी चाहिए– **ब्रेन स्टार्मिंग/विचारावेश (Brain Storming) विधि की**
- वह 'वाद' जो बच्चों को अपना ज्ञान स्वयं निर्माण करने का अवसर प्रदान करता है– **रचनावाद**
- प्रतिभाशाली विद्यार्थी अपनी क्षमताओं को तब विकसित कर पाएँगे जब– **वे अन्य विद्यार्थियों के साथ अधिगम प्रक्रिया से जुड़ते हैं**
- प्रतिभाशाली बालकों के लिए जरूरी होते हैं– **सम्पुष्ट कार्यक्रम**
- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त प्रदत्त कार्य (Assignment) है– **विभिन्न विषयों (Themes) को ध्यान में रखते हुए विज्ञान की एक नई आदर्शात्मक पुस्तक का निर्माण करना**
- विद्यार्थी में अवांछित व्यवहार को किंचित परिवर्तित करने में सबसे प्रभावी पद्धति है– **अवांछित व्यवहार के कारण को ढूँढ़ना एवं उपचार का प्रबन्ध करना**
- विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु शिक्षक को ध्यान देना चाहिए– **व्यक्तिगत आवश्यकताओं व समस्याओं पर**

20.

समायोजन व मानसिक स्वास्थ्य

समायोजन का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. समायोजन से तात्पर्य स्वयं का विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलन करना है ताकि सन्तुष्ट किया जा सके

(a) दूसरों को (b) प्रेरकों को

(c) उद्देश्यों को (d) आवश्यकताओं को।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए बालक में प्रेरणा का जन्म होता है तथा बालक अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए परिस्थितियों के साथ खुद को समायोजित करने एवं स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल करने का प्रयास करता है।

समायोजन के लक्षण

2. किसी भी परिस्थिति में समायोजित होने वाले बच्चों के लचीलेपन को_____ के रूप में जाना जाता है।

(a) दृढ़ता (b) वांछनीयता

(c) अक्षमता (d) ढलनशीलता

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : किसी भी परिस्थिति में समायोजित होने वाले बच्चों के लचीलेपन को ढलनशीलता (Plasticity) के रूप में जाना जाता है। ऐसे बच्चे किसी भी परिस्थिति में अपने आपको सहजतापूर्वक समायोजित करने में सक्षम होते हैं।

समायोजन की युक्तियाँ

3. निम्न में से कौन-सा तरीका प्रत्यक्ष समायोजन का है?

(a) प्रक्षेपण (b) दमन

(c) प्रतिगमन (d) लक्ष्यों का प्रतिस्थापन।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) जब लक्ष्यों एवं समायोजन के मध्य टकराव उत्पन्न हो जाता है तो एक कुशल बालक अपने लक्ष्यों का प्रतिस्थापन कर, वातावरण के साथ समायोजन करता है।

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ एवं विशेषताएँ

4. कौन-से गुण अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के नहीं हैं?

(a) नियमित जीवन, संवेगात्मक परिपक्वता

(b) आत्मविश्वास, सहनशीलता

(c) बहुत विनीत, स्वयं में सीमित

(d) वास्तविकता की स्वीकृति, स्व-मूल्यांकन की योग्यता

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (c) अच्छा मानसिक स्वास्थ्य एक प्रकार का समायोजित व्यवहार होता है जिसके द्वारा बालक सभी स्तरों (जैसे-सामाजिक मानसिक एवं शैक्षिक स्तरों) में समायोजन कर लेता है। बहुत विनीत होना तथा स्वयं में सीमित होना अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का लक्षण होता है। ऐसे व्यक्ति नये वातावरण या परिस्थिति के साथ समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

5. मानसिक स्वास्थ्य और..... में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(a) अभिवृत्ति (b) स्वीकार्यता

(c) बचने (d) समायोजन

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। मानसिक रूप से स्वस्थ्य व्यक्तियों में अपने भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ शीघ्र समायोजन की योग्यता होती है।

6. मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का प्रमुख उद्देश्य है

(a) बालक के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करना

(b) कुसमायोजन का निराकरण करना

(c) (a) और (b) दोनों

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का मुख्य उद्देश्य बालकों के मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा बालकों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले गलत प्रभाव को रोकना ताकि बालक के मस्तिष्क का पूर्ण रूप से विकास हो सके और बालक अपने वातावरण के साथ समायोजन कर सके।

7. निम्न में से कौन-सा कथन किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम रूप से प्रदर्शित करता है?

(a) पूर्ण अभिव्यक्ति, संगतिकरण और सामान्य लक्ष्य की ओर निर्देशन

(b) मानसिक विकारों का न होना

(c) व्यक्तित्व के विकारों से मुक्ति

(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (d) पूर्ण अभिव्यक्ति, संगतिकरण और सामान्य लक्ष्य की ओर निर्देशन, मानसिक विकारों का न होना, व्यक्तित्व के विकारों का न होना, संवेगात्मक संतुलन आदि किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम रूप से प्रदर्शित करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य पर बाधा डालने वाले कारक

8. एक बालक जो शारीरिक दोषों से ग्रस्त है उसमें उत्पन्न होती है-

(a) संवेगात्मक स्थिरता (b) अच्छी आदतें
(c) मिथ्याभिमान (d) हीनता की भावना

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) शारीरिक दोषग्रस्त बालक मनोवैज्ञानिक रूप से दबाव महसूस करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनमें हीनता की भावना का जन्म हो जाता है, जिससे उनका अधिगम कार्य प्रभावित होता है।

9. किसी भी बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने का कारण है

(a) परिवार का वातावरण (b) कक्षा का वातावरण
(c) पास-पड़ोस का वातावरण (d) उपरोक्त सभी

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (d) बालक का मानसिक विकास बालक के परिवार, आस-पास का वातावरण तथा उसके कक्षा-कक्ष के वातावरण से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। बालक के मस्तिष्क पर जो भी सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ता है वह इन्हीं वातावरण के परिणाम स्वरूप होता है।

10. बालक का मानसिक स्वास्थ्य निर्भर करता है

(a) विद्यालय पर (b) परिवार पर
(c) समुदाय पर (d) इनमें से सभी पर।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य स्वस्थता की एक स्थिति है जिसमें किसी व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का एहसास रहता है, जीवन के सामान्य तनावों का सामना कर सकता है लाभकारी और उपयोगी रूप से काम कर सकता है और अपने समाज के प्रति योगदान करने में सक्षम होता है, यह समुदाय परिवार, विद्यालय सभी पर निर्भर करता है।

11. आधुनिक युग में मानसिक स्वास्थ्य पर किसका सबसे बुरा प्रभाव पड़ता है?

(a) शिक्षा का (b) जीवन की अस्थिरता का
(c) आराधना का (d) भौतिकता का।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (b) आधुनिक युग में मानसिक स्वास्थ्य पर सबसे ज्यादा बुरा प्रभाव जीवन की अस्थिरता का पड़ता है। वर्तमान के बाजारवादी, भौतिकवादी समाज में व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए रात–दिन विभिन्न प्रकार के गतिविधियों में संलग्न है जिसके कारण उसका पूरा जीवन अस्थिरता और भाग–दौड़ पूर्ण हो गया है। ऐसी परिस्थिति में मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वभाविक है।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाला कारक नहीं है?

(a) परिवार में गरीबी (b) कक्षा में नींद आना
(c) स्नेह का आभाव (d) पारिवारिक क्लेश

Haryana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (b) बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर परिवार के वातावरण तथा व्यवहार का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जैसे–

- परिवार में गरीबी
- स्नेह का आभाव
- पारिवारिक क्लेश आदि

कक्षा में नींद आना मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करता।

बालक व शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य

13. मानसिक रूप से स्वस्थ अध्यापक की विशेषता क्या है?

(a) वह संवेगात्मक रूप से सन्तुलित है
(b) उसे अपने विषय का गहन ज्ञान है
(c) वह अत्यधिक संवेदनशील है
(d) वह सख्त अनुशासन पसन्द है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (a) मानसिक रूप से स्वस्थ अध्यापक की मुख्य विशेषता होती है कि वह संवेगात्मक रूप से संतुलित व्यवहार करे। अर्थात् उसमें धैर्य, दया, सहानुभूति जैसे गुणों का होना आवश्यक है।

14. विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए निम्न में से कौन-सा तरीका अधिक महत्वपूर्ण है?

(a) सहशैक्षिक क्रियाओं का प्रावधान
(b) अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
(c) रुचियों की भिन्नता
(d) अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालय के वातावरण की स्थिति का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

15. मानसिक रूप से स्वस्थ्य अध्यापक की विशेषता क्या है?

(a) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित है
(b) उसे अपने विषय का गहन ज्ञान है
(c) वह अत्यधिक संवेदनशील है
(d) वह सख्त अनुशासन पसंद है

DSSSB PRT

Ans : (a) मानसिक रूप से स्वस्थ्य अध्यापक की मुख्य विशेषता होती है कि वह संवेदनात्मक या संवेगात्मक रूप से संतुलित हो। वह अपने व्यवहार को नियंत्रित कर पाता हो तथा उसमें अपने भावनाओं को निर्देशित करने की योग्यता व क्षमता हो।

16. विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए क्या महत्वपूर्ण नहीं है?

(a) सहशैक्षिक गतिविधियों का प्रावधान
(b) पाठ्यक्रम का दोहराना
(c) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देना
(d) रुचियों में भिन्नता का ध्यान रखना

Haryana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए सहशैक्षिक गतिविधियों (जैसे-खेल, कला, शिल्प, संगीत आदि) का प्रावधान, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता देना एवं रूचियों की भिन्नता का ध्यान रखना आवश्यक होता है। इससे विद्यार्थियों में स्फूर्ति बनी रहती है तथा उनकी रूचि एवं क्षमता के अनुसार अधिकतम स्तर तक विकास होता है, जबकि पाठ्यक्रम को दोहराना जानकारी के स्तर को बढ़ाने में सहायक है।

कुण्ठा का अर्थ, लक्षण एवं कुण्ठा कम करने के उपाय

17. किसी इच्छा या आवश्यकता में रुकावट पड़ने पर उससे उत्पन्न होने वाला सांवेगिक तनाव ----- कहलाता है -

(a) द्वन्द्व (b) कुण्ठा
(c) चिन्ता (d) तनाव

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) कुण्ठा- मैकड्गल ने 14 संवेग बताए है। किसी इच्छा की पूर्ति न होने पर कुंठा संवेग की उत्पत्ति होती है।

18. निम्नलिखित में से मानसिक विकार के लक्षणों को सभी दर्शाते हैं सिवाय

(a) भग्नाशा के (b) तनाव के
(c) सम्बन्ध के (d) चिन्ता के

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) मानसिक विकार के लक्षण निम्न है-
- तनाव - चिन्ता
- भग्नाशा - भूल एवं त्रुटि

सम्बंध मानसिक विकार का लक्षण नहीं होता है।

19. कक्षा 4 का एक बच्चा सदैव चिन्तित और कुण्ठित रहता है, आप

(a) उसके अभिभावक से शिकायत करेंगे
(b) मनोचिकित्सक के पास ले जाएँगे
(c) स्वयं परामर्शदाता की भूमिका का निर्वाह करेंगे
(d) उसे उसके भाग्य पर छोड़ देंगे

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) बालक के चिंतित एवं कुण्ठाग्रस्त होने पर अध्यापक को चाहिए कि सर्वप्रथम बालक से बात-चीत करके इसके कारण का पता लगाये फिर उसका निराकरण करने का प्रयास करें। अर्थात् इस अवस्था में अध्यापक को परामर्शदाता की भूमिका का निर्वहन करना चाहिए।

तनाव का अर्थ, कारण एवं तनाव कम करने के उपाय

20. अवधान के आन्तरिक अथवा व्यक्तिनिष्ठ निर्धारक हैं–

(a) रुचि, लक्ष्य, अभिवृत्ति (b) उद्दीपक, वस्तु, प्रविधि
(c) प्रकाश, ध्वनि, गंध (d) पुरस्कार, दण्ड, प्रोत्साहन

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (a) अवधान के आन्तरिक निर्धारक निम्न है–अभिरुचि, लक्ष्य, अभिवृत्ती, आदत, जिज्ञासा, आवश्यकता, प्रशिक्षण, अर्थ।

21. शारीरिक निर्योग्यता वाले व्यक्ति के लिए निम्न में से कौन-सी युक्ति रक्षा तंत्र में सबसे संतोषजनक होगी?

(a) तादात्मीकरण (b) विवेकीकरण
(c) अतिकल्पना (d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) शारीरिक निर्योग्यता वाले व्यक्ति हर सम्भव तरीके से ऐसी जानकारी से रक्षा करने की कोशिश करता है जो दर्दनाक घटनाओं की याद दिलाता हो। ऐसी परिस्थिति में वह अतिकल्पनात्मक रक्षा तंत्र का उपयोग करता है।

22. ''अंगूर खट्टे हैं''.....का उदाहरण है।

(a) दमन (b) प्रतिगमन
(c) यौक्तिकीकरण (d) प्रतिक्रिया निर्माण

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) ''अंगूर खट्टे हैं।'' वाक्य यौक्तिकीकरण का उदाहरण है। यौक्तिकीकरण मनोवैज्ञानिक रुप से रक्षा प्रणाली है। जिसमें विवादास्पद व्यवहार को तार्किक रूप से उचित ठहराने की कोशिश की जाती है तथा परिणाम के अनुसार कारण को व्यक्त किया जाता है।

23. कुछ लोगों का कहना है कि जब बालकों को गुस्सा आता है तो वे खेलने के लिए चले जाते हैं। जब तक कि पहले से अच्छा महसूस नहीं करते, उनके व्यवहार में से कौन प्रतिरक्षा तन्त्र प्रतिलक्षित होता है?

(a) प्रक्षेपण (b) विस्थापन
(c) प्रतिक्रिया निर्माण (d) उदात्तीकरण।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (b) जब बालकों को गुस्सा आता है तो वे खेलने के लिए चले जाते हैं, जब तक कि पहले से अच्छा महसूस नहीं करते। यह विस्थापन प्रतिरक्षा तंत्र का उदाहरण है। विस्थापन में व्यक्ति तनाव वाली परिस्थिति से कम घातक या कम तनाव वाली वस्तु या व्यक्ति के प्रति कुछ प्रतिक्रिया करके अपने तनाव को दूर करता है।

24. निम्न का मिलान करते हुये दी गई तालिका में से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-अ	**सूची-ब**
(L) मन तरंग को एक रक्षा तंत्र के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं	1. नकारना
(M) रक्षात्मक तन्त्र व्यक्ति का बचाव करती है	2. पलायन
(N) उदात्तीकरण को रक्षात्मक तंत्र के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है	3. प्रतिस्थापन
(O) क्षतिपूर्ति को रक्षात्मक तंत्र के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है	4. चिन्ता।

कोडः

	L	**M**	**N**	**O**		**L**	**M**	**N**	**O**
(a)	1	4	4	3	(b)	3	1	4	2
(c)	2	4	3	1	(d)	3	2	3	1

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (c)

सूची - अ		**सूची - ब**
(L) मन-तरंग को एक रक्षा तंत्र के रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं	-	पलायन

(M)	रक्षात्मक तंत्र व्यक्ति का बचाव करती है	-	चिंता
(N)	उदात्तीकरण को रक्षात्मक तंत्र के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है	-	प्रतिस्थापन
(O)	क्षतिपूर्ति को रक्षात्मक तंत्र के रूप में किया जा सकता है	-	नकारना वर्गीकृत

25. रक्षा तंत्र बहुत सहायता करता है

(a) हिंसा से निपटने में (b) दबाव से निपटने में
(c) थकान से निपटने में (d) अजनबियों से निपटने में।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (b) रक्षा तंत्र का उपयोग व्यक्ति तब करता है जब वह दबाव की स्थिति में नहीं पड़ना चाहता। अर्थात वह अपने दोषों का स्थानान्तरण किसी अन्य परिस्थिति या व्यक्ति पर कर देता है जिससे वह मानसिक तनाव से बच जाता है।

26. एंटी–तनाव दवा, एक ऐसी दवा है जिसका प्राथमिक व्यवहार प्रभाव, चिंता को कम करता है लेकिन यह केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (सीएनएस) के रूप में कार्य करता है:

(a) उत्प्रेरक (b) अवसादक
(c) उत्तेजक (d) संशोधक

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) एंटी–तनाव दवा, एक ऐसी दवा है जिसका प्राथमिक व्यवहार प्रभाव, चिंता को कम करता है लेकिन यह केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र (सीएनएस) के अवसादक के रूप में कार्य करता है। इससे स्मृति समस्या, घबराहट, सिरदर्द, अवसाद, उलझन आदि समस्याएँ उत्पन्न होने की सम्भावना रहती हैं।

27. व्यक्तियों के शारीरिक बीमारियों में कितने प्रतिशत तक दबाव की भूमिका महत्वपूर्ण है?

(a) 45 से 65 (b) 51 से 69
(c) 52 से 71 (d) 50 से 70

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (d) व्यक्तियों के शारीरिक बीमारियों में 50-70% तक दबाव की भूमिका होती है।

28. स्नायुवीय (न्यूरोटिस्जिम) अनुभव में, व्यक्ति को सर्वाधिक क्या अनुभव होता है?

(a) अनियंत्रित प्रसन्नता (b) मिश्रित भाव
(c) उच्च तनाव और घबराहट (d) सकारात्मकता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : स्नायुवीय या मनोविक्षुब्धता (Neuroticism) क्रोध, चिंता, उच्च तनाव, घबराहट, अवसाद जैसी नकारात्मक भावनाओं को अनुभव करने की प्रवृत्ति है। इसे कभी-कभी भावनात्मक अस्थिरता भी कहा जाता है। मनोविक्षुब्धता से ग्रसित व्यक्ति भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने और तनाव के प्रति कमजोर होते हैं। मनोविक्षुब्धता वाले व्यक्ति में भावनात्मक नियंत्रण की ये समस्याएँ उनकी स्पष्ट रूप से सोचने, निर्णय लेने और तनाव के साथ प्रभावी ढंग से जूझने की क्षमता को कम करती है।

29. निम्नलिखित में से कौन सा एक वह कारक नहीं है जो तनाव के विरूद्ध एक बच्चे की रक्षा करेगा?

(a) परिवार (b) बुद्धि
(c) आधिकारवादी परवरिश शैली (d) सहकर्मी रिश्ते

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : अधिकारवादी परवरिश शैली तनाव के विरूद्ध बच्चे की रक्षा करने में सक्षम नहीं होता है क्योंकि इस परवरिश शैली में माता–पिता नियमों का पालन सख्ती से करने की उम्मीद करते हैं जो बच्चे के तनाव को कम करने की बजाय बढ़ाता है। जबकि बालक की बुद्धि परिवार का सकारात्मक रवैया तथा सहयोगात्मक सहकर्मी रिश्ते बालक के तनाव के विरूद्ध रक्षा करने में सहयोगी हो सकते हैं।

30. शिक्षार्थियों में तनाव से निपटने का एक प्रभावी तरीका है–

(a) दिनचर्या स्थापित करना
(b) सभी बड़े परीक्षणों को वर्ष के अंत के लिए स्थगित करना
(c) सख्त नियम बनाना
(d) उन्हें जब चाहे काम करने की आजादी देना

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (a) शिक्षार्थियों में मुख्य रूप से जीवन की तनावपूर्ण घटनाओं, प्रेरकों का संघर्ष, दिन–प्रतिदिन की उलझन, अत्यधिक कार्य आदि से तनाव उत्पन्न होता है। इससे निपटने का प्रभावी तरीका दिनचर्या स्थापित करना, नियंत्रण उपाय, प्रतिक्रिया निर्माण, युक्तिकरण, प्रक्षेपण, विस्थापन आदि हो सकता है। इन युक्तियों को अपनाकर वे तनाव से मुक्ति पा सकते हैं।

31. क्लौस्ट्रफोबिया संलग्न स्थानों का एक डर है। इसका एक उदाहरण है:

(a) वैश्विक विकास में देरी (b) जुनूनी-बाध्यकारी विकार
(c) तनाव विकार (d) ऑटिज्म

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : क्लौस्ट्रफोबिया सम्बन्धित स्थानों का एक डर है। इसका एक उदाहरण तनाव विकार है। क्लौस्ट्रफोबिया एक तर्कहीन भय होता है जिससे ग्रसित व्यक्ति भीड़–भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचता है। कुछ लोगों में यह विकार अपने आप समाप्त हो जाता है किन्तु कुछ लोगों को इसके लिए थेरेपी की आवश्यकता पड़ सकती है।

चिंता विकार से ग्रसित बालकों की समस्याएँ कारण एवं निदान

32. ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित कुछ तकनीकें हैं जो परीक्षा के कारण होने वाली चिंता को दूर करती हैं।

(a) प्रश्न–पत्र की संरचना (पैटर्न) से परिचित कराना
(b) परिणाम के बारे में बहुत अधिक सोचना
(c) समर्थन प्राप्त करना
(d) विशिष्टताओं पर बल देना

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2013

Ans : (b) परिणाम के बारे में बहुत अधिक सोचना परीक्षा के कारण होने वाली चिंता को बढ़ाता है जबकि प्रश्न–पत्र के पैटर्न से परिचित होना, समर्थन प्राप्त करना, विशिष्टताओं पर बल देना चिंता को दूर करती हैं।

33. ओसीडी का अर्थ है-

(a) ऑब्सेसिव कंडक्ट डिस्ऑर्डर
(b) ऑब्सेसिव कम्पल्सिव डिस्ऑर्डर
(c) अपोजिशनल कम्पल्सिव डिसीज
(d) अपोजिशनल कॉग्नीटिव डिस्ऑर्डर

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : ओसीडी का अर्थ ऑब्सेसिव कम्पल्सिव डिस्ऑर्डर (Obsessive compulsive disorder) है। इसे हिन्दी में जुनूनी व्याकुलता विकार कहते हैं। यह एक व्याकुलता (Anxiety) संबंधी विकार है जो लगातार कोई विचार, बेचैनी और डर पैदा करता है जिससे पीड़ित व्यक्ति किसी काम को बार–बार करने की विवशता महसूस करते हैं। व्याकुलता मस्तिष्क का एक चेतावनी देने का तरीका है।

34. जुनूनी–बाध्यकारी विकार (ओसीडी) का सफलतापूर्वक इलाज निम्न का उपयोग करके किया जा सकता है–

(a) संज्ञानात्मक व्यवहार सिद्धांत
(b) मसाज थैरेपी
(c) एंटीडिप्रेसेंट दवा
(d) प्रणालीगत परिवार थेरेपी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : जुनूनी–बाध्यकारी विकार (ओसीडी) एक व्याकुलता (Anxiety) संबंधी विकार है जिससे पीड़ित व्यक्ति किसी काम को बार–बार करने की विवशता महसूस करता है और यह लगातार कोई विचार, बेचैनी और डर पैदा करता है। OCD से पीड़ित व्यक्ति को अपने बाध्य व्यवहार पर कोई नियंत्रण नहीं होता, वह कितनी भी बार अपने क्रियाकलाप को दोहरा ले, संतुष्ट नहीं होता उसकी व्याकुलता और बेचैनी बनी रहती है। किसी भी अन्य रोगों की तरह इस विकार के लक्षण मामूली, तीव्र या अति तीव्र हो भी सकते हैं इसलिए इसके सफलतापूर्वक इलाज के लिए संज्ञानात्मक व्यवहार सिद्धांत का उपयोग किया जा सकता है। संज्ञानात्मक व्यवहार सिद्धांत का उद्देश्य पीड़ित व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक संकट को कम करना है।

35. बच्चे को चोट लगने के बारे में लगभग प्रतिदिन चिंता होती है। इसका कारण _____ है।

(a) स्वलीनता
(b) ध्यानाभाव एवं अतिसक्रियता विकार
(c) चिंता विकार
(d) अधिगम अक्षमता

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) बच्चे को चोट लगने के बारे में लगभग प्रतिदिन चिंता होती है। इसका कारण चिंता विकार है। यह एक ऐसी मानसिक स्वास्थ्य समस्या है जिसमें बहुत ज्यादा चिंता, बेचैनी या डर की वजह से व्यक्ति को अपने रोजमर्रा के काम करने में कठिनाई होती है। चिंता सम्बन्धी विकार मानसिक बीमारियों का एक समूह है। जो लोग एनजाइटी (Anxiety) से ग्रस्त होते हैं उन्हें निरंतर चिंता और भय रहता है कि वे अक्षम हो सकते हैं।

36. असमान्यता को परिभाषित करते समय इनमें से किसमें नाखुशी शामिल है :

(a) स्वयं/अन्य के लिए घातक (b) विचलन
(c) विकार (d) अत्यधिक पीड़ा

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : असामान्यता को परिभाषित करते समय अत्यधिक पीड़ा (Distress) में नाखुशी शामिल है। दूसरे शब्दों में जब असामान्य व्यक्ति अत्यधिक पीड़ा (Distress) में होता है तो वह खुशी अनुभव नहीं करता है क्योंकि यह एक निरंतर अनुभूत होने वाली पीड़ा है, जिसमें व्यवहार असामान्य रहता है।

37. कुछ बच्चे लंबे समय तक घर से दूर रहने के बाद भी, घर से दूर होने पर अत्यधिक चिंता का अनुभव करते हैं। वे किस से पीड़ित हो सकते हैं?

(a) स्कूल फोबिया (b) सामाजिक चिंता
(c) आचरण विकार (d) अलगाव की चिंता

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (d) : कुछ बच्चे जब लंबे समय तक घर से दूर रहने के बाद भी, घर से दूर होने पर अत्यधिक चिंता का अनुभव करते हैं, तो वे अलगाव की चिंता (Separation Anxiety) से पीड़ित होते हैं। अलगाव की चिंता एक मनोवैज्ञानिक विकार है जो तब विकसित होती है जब किसी व्यक्ति, जानवर या वस्तु से अलग होने का डर होता है।

38. एक चिंता विकार की विशेषता है :

(a) एक अत्यधिक या उत्तेजित स्थिति जो कि आशंका, अनिश्चितता और भय की भावनाओं की विशेषता है।
(b) विकृत चिंतन
(c) अत्यधिक जाँच द्वारा वर्गीकृत एक भावनात्मक स्थिति
(d) पैनिक अटैक की वजह से एक भावनात्मक स्थिति

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : चिंता, संज्ञानात्मक, शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहारिक विशेषता वाले घटकों की मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दशा है। यह घटक एक अप्रिय भाव बनाने के लिए जुड़ते हैं जो कि आमतौर पर बेचैनी, आशंका, डर और क्लेश से सम्बन्धित हैं। चिंता एक सामान्यीकृत मनोदशा है जो कि प्रायः न पहचाने जाने योग्य किसी उद्दीपन द्वारा उत्पन्न हो सकती है। चिंता विकार के निम्नलिखित लक्षण होते हैं–

- बेचैनी महसूस होना, तनाव या अत्यधिक फिक्र होना
- जल्द ही थका हुआ महसूस करना
- ध्यान केन्द्रित करने में मुश्किल होना
- चिड़चिड़ा होना
- नींद की परेशानी

21.
समस्याग्रस्त बालक पहचान एवं निदानात्मक पक्ष

समस्यात्मक बालक का अर्थ एवं प्रकार

1. दुबले-पतले एवं क्षीण शरीर तथा कमजोर हृदय वाले बच्चों को कहा जाता है

(a) समस्यात्मक बालक (b) अपंग बालक
(c) पिछड़ा बालक (d) नाजुक बालक।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) दुबले-पतले एवं क्षीण शरीर तथा कमजोर हृदय वाले बच्चे समस्यात्मक बालक के अन्तर्गत आते हैं।

2. समस्या बालक है–

(a) चोरी करने वाला
(b) झूठ बोलने वाला
(c) माता-पिता का कहना न मानने वाला
(d) इनमें से सभी।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (d) समस्यात्मक बालक वे होते हैं जो अपने व्यवहार को सकारात्मक दिशा नहीं प्रदान कर पाते व गलत दिशा में चले जाते हैं और उनके व्यवहार में अनेक बुराइयाँ आ जाती हैं - जैसे

1. चोरी करना
2. झूठ बोलना
3. माता-पिता का कहना न मानना
4. गृह कार्य समय से पूर्ण न करना
5. विद्यालय से भाग जाना
6. झगड़ा करना आदि।

समस्यात्मक बालकों की शिक्षा के उपाय

3. उपचारात्मक विधि का प्रयोग जिनके लिए किया जाता है, वे हैं

(a) सामान्य बच्चे
(b) समस्यात्मक बच्चे
(c) सामान्य तथा समस्यात्मक बच्चे
(d) प्रतिभाशाली बच्चे

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (b) समस्यात्मक बालकों के लिए उपचारात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत बालक के समस्या के कारणों का पता लगा कर उसका निदान किया जाता है।

4. बच्चों की झूठ बोलने की आदत को सुधार सकते हैं–

(a) उन्हें दंड देकर
(b) झूठ के कुप्रभावों पर भाषण देकर
(c) सच बोलने वाले बच्चो के उदाहरण देकर
(d) सच बोलने वाले बच्चे को पारितोषिक देकर

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) सच बोलने वाले बच्चों को पारितोषिक पुरस्कार देकर झूठ बोलने वाले बच्चों के आदत में सूधार ला सकते है क्योंकि पारितोषिक के प्रलोभन में बच्चा झूठ बोलने की आदत में सुधार करना प्रारम्भ कर देगा।

5. समस्यात्मक बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु आप क्या प्रयास करेंगे?

(a) बालक के वातावरण और दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का प्रयास करेंगे।
(b) बालक को दंड देकर सुधारने का प्रयास करेंगे।
(c) उस पर घ्यान नहीं देंगे।
(d) उसकों कक्षा में आगे की पंक्ति में स्थान देंगे।

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (a) समस्यात्मक बालक का व्यवहार उसके वातावरण तथा दृष्टिकोण से निर्धारित होती है। अतः समस्यात्मक बालक के व्यवहार में परिवर्तन करने के लिए उसके वातावरण तथा उसके दृष्टिकोण में परिवर्तन करना अनिवार्य होता है।

6. आपकी कक्षा के एक विद्यार्थी में झूठ बोलने की आदत है। आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे?

(a) झूठ न बोलने के लिए कहेंगे
(b) उसे सजा देंगे
(c) उसकी उपेक्षा करेंगे
(d) उसे विश्वास में लेंगे एवं परामर्श देंगे

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) छात्रों के दोषों को दूर करने के लिए छात्र के साथ आत्मीयता का सम्बन्ध बनाना चाहिए ताकि पता चल सके कि दोष का कारण क्या है। छात्र को उपेक्षित या सजा देने से छात्र की समस्या का समाधान नहीं हो सकता है।

7. छात्रों में चोरी करने की आदत को कैसे दूर किया जा सकता है?

(a) बालकों को पारितोषिक देकर (b) उदाहरण देकर
(c) ताड़ना देकर (d) सजा देकर।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (b) बच्चों में चोरी करने की आदत को दूर करने का सबसे बेहतर तरीका उदाहरण देना है जिसमें बुरे कार्यों (चोरी) के परिणाम को बताते हुए उन्हें उससे दूर कर सकते हैं। सजा एवं ताड़ना देकर उनके व्यवहार को तत्काल तो रोका जा सकता है परन्तु व्यवहार परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। पारितोषिक देना उनके चोरी करने के व्यवहार को बढ़ावा देना होगा।

8. आप एक अतिसक्रिय बालक को कैसे सही दिशा में लाएँगे?

(a) उसे पहली पंक्ति में बिठाएँगे तथा उस पर कड़ी नजर रखेंगे
(b) उसे कक्षा में कोने में बैठने की जगह निर्धारित करेंगे
(c) उसे श्यामपट्ट आदि साफ करने का काम देंगे
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) अति सक्रिय बालक को सही दिशा देने के लिए उसे सही निर्देशन की आवश्यकता होती है तथा ऐसे बालक को कक्षा के कार्यों का नेतृत्व प्रदान करना उपयुक्त होता है। अतः उसे श्यामपट्ट आदि साफ करने का काम देना बेहतर होगा।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा उपागम अशांतकारी व्यवहार सम्बन्धी विकार वाले बच्चों के साथ व्यवहार करने के लिए बच्चे को उसके आस-पास के लोगों और सामाजिक संस्थाओं के साथ अंतःक्रिया करने का सुझाव देता है?

(a) मनोगत्यात्मक (b) पर्यावरणीय
(c) जीव वैज्ञानिक (d) व्यवहारवादी

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (b) अशांतकारी व्यवहार संबधी विकार वाले बच्चों के साथ व्यवहार करने के लिए पर्यावरणीय उपागम सबसे उपयुक्त है क्योंकि यह बच्चे को उसके आस-पास के लोगों और सामाजिक संस्थाओं के साथ अंतःक्रिया करने का सुझाव देता है।

10. यदि शिक्षक कक्षा में एक छात्र को समस्यात्मक बालक के रूप में पाता है, तो उसे

(a) बच्चे को दण्ड देना चाहिए
(b) बच्चे को नजरअंदाज कर देना चाहिए
(c) बच्चे को परामर्श देना चाहिए
(d) तत्काल घर वापस भेज देना चाहिए

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : ध्यातव्य है कि समस्यात्मक बालक वे होते हैं जिनके व्यवहार तथा व्यक्तित्व इस सीमा तक असामान्य होते हैं कि वे घर, विद्यालय तथा समाज में समस्याओं के जनक बन जाते हैं। वे वातावरण के साथ अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते हैं। समस्यात्मक बच्चे कई प्रकार के होते हैं, जैसे– चोरी करने वाले बच्चे, विद्यालय से भाग जाने वाले बच्चे आदि।

ऐसे बालकों के लिए शिक्षक द्वारा–

1. बच्चों को परामर्श देना चाहिए।
2. बच्चों को अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहन तथा पुरस्कार दिया जाना चाहिए।
3. मधुर तथा सहयोगात्मक व्यवहार किया जाना चाहिए।

22.

बाल–अपराध, कारण एवं प्रकार

1. आई. पी. सी. का अर्थ है :

(a) इण्डियन पोस्टल कोड (b) इंडियन पेनल कोड
(c) इण्डियन पब्लिक कोर्ट (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans: (b) IPC का अर्थ है- Indian Panal Code (भारतीय दंड संहिता)–यह भारत के अन्दर भारत के किसी भी नागरिक द्वारा किये गये कुछ अपराधों की परिभाषा व दण्ड का प्रावधान करती है। भारतीय दण्ड संहिता ब्रिटिश काल में सन् 1862 में लागू हुयी।

2. सामाजिक नियमों व कानूनों के विरुद्ध व्यवहार करने वाला बालक कहलाता है-

(a) पिछड़ा बालक (b) मंदबुद्धि बालक
(c) जड़बुद्धि बालक (d) बाल अपराधी

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) सामाजिक नियमों एवं कानूनों के विरुद्ध व्यवहार करने वाला बालक बाल अपराधी कहलाता है।

3. बालक में अपराधी प्रवृत्ति के विकसित होने का मुख्य कारण है

(a) परिवार का वातावरण (b) अनुशासनहीनता
(c) आर्थिक अभाव (d) दोषपूर्ण पाठ्यक्रम

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (a) बालक के अपराधी प्रवृत्ति के विकास के लिए परिवार तथा उसका वातावरण पूर्ण रूप से उत्तरदायी होता है। पारिवारिक विवादों तथा समस्याओं से बालक के मानसिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मनोवैज्ञानिक कुप्पूस्वामी के अनुसार-''बाल अपराध का सबसे महत्वपूर्ण कारण बालक द्वारा परिवार के दुर्व्यवहार का अनुभव किया जाना है।''

4. अपराधी बालक कौन होते हैं?

(a) जो असामाजिक कार्य करते हैं
(b) जो शिक्षक के लिए सिरदर्द होते हैं
(c) जो कक्षा में अव्वल आते हैं
(d) जो समाज में रहना पसंद नहीं करते हैं

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (a) जो असामाजिक कार्य करते हैं वे अपराधी बालक के अंतर्गत आते हैं। **कुप्पूस्वामी** के अनुसार– ''अपराधी बालक के चरित्र की मुख्य विशेषता यह है कि वे वर्तमान आनन्द के सिद्धांत में विश्वास करते हैं और भविष्य की चिंता नहीं करते।''

23.

निर्देशन एवं परामर्श

निर्देशन का अर्थ प्रकार एवं आवश्यकता

1. वह प्रक्रिया जिसमें व्यक्ति उसके स्वयं के प्रयासों के द्वारा अपनी क्षमताओं को पहचानता है व उनको विकसित करता है, ताकि वह वातावरण में समायोजित हो सके :

(a) मार्गदर्शन (b) परामर्श

(c) अभिप्रेरणा (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) मार्गदर्शन वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति उसके स्वयं के प्रयासों के द्वारा अपनी क्षमताओं को पहचानता है व उनकों विकसित करता है, ताकि वह वातावरण में समायोजित हो सके। मार्गदर्शन द्वारा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, अपनी क्षमताओं, अपनी योग्यताओं को समझकर अपनी समस्याओं का समाधान करने की स्थिति में आता है।

2. किसी व्यक्तिगत समस्या हेतु 1:1 निर्देशन कहलाता है:-

उत्तर: व्यक्तिगत निर्देशन

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-किसी व्यक्तिगत समस्या हेतु 1:1 निर्देशन व्यक्तिगत निर्देशन कहलाता है। इस विधि में एक समय में केवल एक छात्र को ही निर्देशन दिया जाता है। महँगी होने के कारण इस विधि का प्रयोग कम किया जाता है।

3. व्यावसायिक निर्देशन का प्रयोग सर्वप्रथम किसने किया?

(a) मायर (b) पारसन्स

(c) हॉक (d) ब्रेवर

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) अमेरिका में व्यावसायिक निर्देशन का सूत्रपात बोस्टन के फ्रैंक पारसन्स ने किया, जिन्होंने सन् 1905 तथा 1906 में ब्रेंड विनर्स इंस्टीट्यूट की स्थापना करके योजनाबद्ध तरीके से व्यवसाय सम्बन्धी निर्देशन का कार्य प्रारम्भ किया। सन् 1908 में पारसन्स ने लोगों के सहयोग से बोस्टन में वोकेशन ब्यूरो की स्थापना की तथा मई 1908 में ब्यूरो के डायरेक्टरों के समक्ष अपनी प्रथम और अंतिम रिपोर्ट में व्यावसायिक निर्देशन शब्द का प्रयोग करते हुए स्वयं को डायरेक्टर तथा व्यावसायिक परामर्शदाता के रूप में उल्लेख किया।

4. विलियमसन के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन निर्देशात्मक परामर्श का लाभ है?

(a) भावनात्मक पहलू के बजाय बौद्धिकता पर जोर दिया जाता है।

(b) कुशल और आश्वस्त होने के लिए परामर्श लेने वाले का मार्गदर्शन नहीं करता है।

(c) परामर्श लेने वाले को निर्भर बनाना

(d) पहल को दबाना

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : निर्देशात्मक परामर्श विधि के प्रमुख समर्थक ई.जी. विलियमसन के अनुसार इस विधि में भावनात्मक पहलू के बजाय बौद्धिकता पर जोर दिया जाता है जो निर्देशात्मक परामर्श का एक प्रमुख लाभ है। इस विधि में परंपरागत ढंग से परामर्श प्रदान किया जाता है। इसमें परामर्शदाता के द्वारा परामर्श–प्रार्थी को आवश्यक सूचनाओं से परिचित कराया जाता है तथा परामर्श–प्रार्थी की परिस्थिति को जानकर उसकी समस्या व परिस्थिति की वस्तुनिष्ठ व्याख्या करने का प्रयास किया जाता है।

निर्देशन की प्रक्रिया एवं सिद्धांत

5. एक छात्र को मार्गदर्शन देने के लिए एक अध्यापक को जानना अत्यावश्यक है

(a) अधिगम की कठिनाई को (b) उसके व्यक्तित्व को

(c) उसके घर के वातावरण को (d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) एक छात्र को मार्गदर्शन देने के लिए एक अध्यापक को उसके अधिगम की कठिनाई, उसके व्यक्तित्व उसके घर के वातावरण आदि को जानना आवश्यक है।

परामर्श का अर्थ, प्रकार, सिद्धांत एवं प्रक्रिया

6. परामर्श का उद्देश्य है

(a) बच्चे को समझना

(b) बच्चे की कमियों का कारण पता करना

(c) बच्चे को समायोजन में सहायता प्रदान करना

(d) उपरोक्त सभी

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (d) परामर्श का उद्देश्य-

1. बच्चों को समझना
2. बच्चों की समस्याओं का परीक्षण करना
3. समस्याओं का पता लगाना
4. बच्चों में समायोजन शक्ति का विकास करना
5. बच्चों को सही स्थिति से अवगत कराना
6. भविष्य के कार्यों की रूपरेखा तैयार करना (बच्चों के सदंर्भ में)

7. निम्नलिखित में से कौन-सी ग्रहणशील परामर्श दृष्टिकोण (इलेक्टिक काउंसिलिंग एप्रोच) की सीमा है?

(a) इस परामर्श दृष्टिकोण की गत्यात्मक विशेषता को नियंत्रित करने के लिए अत्यधिक कुशल परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है

(b) परामर्श का अधिक सुविधाजनक दृष्टिकोण

(c) अत्यधिक प्रभावी और व्यावहारिक दृष्टिकोण

(d) परामर्श के अधिक लक्ष्य और समन्वित दृष्टिकोण

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : ग्रहणशील परामर्श दृष्टिकोण (Eclectic counselling approach) की एक प्रमुख सीमा यह है कि इस परामर्श दृष्टिकोण की गत्यात्मक विशेषता को नियंत्रित करने के लिए अत्यधिक कुशल परामर्शदाताओं की आवश्यकता होती है क्योंकि इस प्रकार का परामर्श न तो पूर्णतया निर्देशीय है और न अनिर्देशीय, वरन यह मध्यवर्गीय है। यह दोनों प्रकार के परामर्श के मिश्रित सिद्धान्तों पर आधारित है। इस प्रकार का परामर्श, परामर्श प्रार्थी की आवश्यकताओं तथा अपनी परिस्थितियों दोनों का ही अध्ययन करता है। यह दोनों की कुछ-कुछ बातें अपनाकर चलता है। इसलिए एक कुशल परामर्शदाता ही इस प्रकार के परामर्श का उपयोग कर सकता है।

8. परामर्श में _____ शामिल होता है।

(a) परामर्शदाता और व्यक्ति के बीच विचारों का आदान–प्रदान और परामर्श

(b) केवल व्यक्ति को परामर्शदाता से सलाह लेना चाहिए।

(c) केवल परामर्शदाता के साथ व्यक्ति द्वारा समस्या साझा करना।

(d) जरूरत वाले बच्चों के साथ मुद्दों की पहचान करने वाले विद्यालय

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) परामर्श में परामर्शदाता और व्यक्ति के बीच विचारों का आदान–प्रदान और परामर्श शामिल होता है। परामर्श एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें परस्पर साक्षात्कार के माध्यम से दो व्यक्तियों के मध्य विचार–विमर्श होता है एवं परामर्शदाता के द्वारा परामर्श प्रार्थी की समस्या के समाधान या जरूरत की पूर्ति की दृष्टि से मार्गदर्शन किया जाता है। वस्तुतः परामर्शदाता व परामर्श–प्रार्थी के बीच सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध व परस्पर विश्वास ही परामर्श प्रक्रिया की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता होती है।

बाल अधिगम एवं शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श का महत्त्व

9. निम्नलिखित में से कौन-सा तरीका है जिससे कि शिक्षक विद्यालयी शिक्षा में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों का मार्गदर्शन कर सकते हैं?

(a) अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य देना

(b) अधिक परीक्षण देना

(c) सहयोग और सुझाव देना

(d) अधिक गृहकार्य प्रदान करना

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : सहयोग और सुझाव के द्वारा शिक्षक विद्यालयी शिक्षा में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों का मार्गदर्शन कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को विशेष निर्देशन की आवश्यकता होती है। ऐसे बालकों के लिए विशेष कक्षाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिनमें छात्र संख्या काफी कम रखी जाये तथा जहाँ विशेष आवश्यकता वाले बच्चे अपनी रूचि, आवश्यकता व परिस्थिति के अनुरूप उचित शिक्षा प्राप्त कर सकें।

10. जब शिक्षक विद्यालयी शिक्षा में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के मार्गदर्शन और परामर्श में व्यस्त रहते हैं, तो निम्न में से क्या सत्य है?

(a) शिक्षक का अपना व्यावसायिक विकास स्पष्ट है।

(b) शिक्षक प्रोत्साहन, मान्यता और पदोन्नति पा सकते हैं।

(c) शिक्षक के मार्गदर्शन में, छात्र अधिगम की प्रक्रिया में सुरक्षित और अधिक व्यस्त महसूस करेंगे।

(d) शिक्षक के मार्गदर्शन में, छात्रों को विशेष अवधान प्राप्त होता है।

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : जब शिक्षक विद्यालयी शिक्षा में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के मार्गदर्शन और परामर्श में व्यस्त रहते हैं तो, शिक्षक के मार्गदर्शन में, छात्र अधिगम की प्रक्रिया में सुरक्षित और अधिक व्यस्त महसूस करते हैं क्योंकि शिक्षक उनकी रुचियों, अभिक्षमताओं, योग्यताओं, आवश्यकताओं आदि के अनुरूप मार्गदर्शन करते हैं और वे उस प्रकिया में सक्रिय रहकर अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं।

11. अगर शिक्षक छात्र को विषय चुनने में मदद करे तो यह उसकी कौन सी भूमिका है?

उत्तरः परामर्शदाता की/ सुविधा प्रदाता की

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-अगर शिक्षक छात्रों को विषय चुनने में मदद करे तो यह उसकी प्ररामर्शदाता या सुविधाप्रदाता की भूमिका को दर्शाता है। एक कुशल शिक्षक अपने विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ परामर्श सुविधाएँ भी प्रदान करता है। यह परामर्श सुविधाएँ दो प्रकार की होती है- शैक्षिक परामर्श और गैर शैक्षिक परामर्श। शैक्षिक परामर्श के अंतर्गत पाठ्यक्रमों की उपयुक्तता व भावी संभावनाएँ, अध्ययन की तैयारी, प्रवेश के अवसर, उन्नयन के अवसर आदि परामर्श शामिल किये जाते हैं जबकि गैर शैक्षिक परामर्श भावात्मक मुद्दो से सम्बन्धित होता है।

12. आपकी कक्षा की एक लड़की की रुचि स्पोर्ट्स में है और वह स्पोर्ट्स में अपने कैरियर को बढ़ाना चाहती है। आप उसे क्या परामर्श देंगे?

(a) लड़कियों का खेल जगत में कोई भविष्य नहीं है

(b) उसे अपनी आकांक्षा की पूर्ति हेतु कठोर परिश्रम करना चाहिए

(c) उसे सिर्फ पढ़ाई में ध्यान लगाने को कहेंगे

(d) लड़कियाँ खेलों में उत्कृष्ट नहीं कर सकती क्योंकि वे शारीरिक रूप से कमजोर होती है

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) किसी विद्यार्थी को उसके मनपसंद विषय से कभी दूर नहीं करना चाहिए और न ही छोड़ने के लिए कहना चाहिए अगर वह अन्य विषय में कमजोर है तो उसे उस विषय पर विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए। इसलिए यदि किसी लड़की की रुचि स्पोर्ट्स में है और वह आपसे परामर्श चाहती है तो आप उसे अपनी आकांक्षा की पूर्ति हेतु कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित करेंगे।

13. विद्यार्थियों को दिये जाने वाले परामर्श की सर्वाधिक उपयोगिता यह है कि

(a) इससे उनका ज्ञान बढ़ता है

(b) उनका कौशल बढ़ता है

(c) उनमें आत्मविश्वास की अभिवृद्धि होती है

(d) वे दुनियादारी में सफल बन जाते हैं

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (c) परामर्श का परिणामी प्रभाव छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि है। परामर्श वह पद्धति है जिसके द्वारा किसी की समस्याओं पर शोध करके उसका हल निकाला जाता है ताकि छात्र/व्यक्ति अपने आगे आने वाली बाधाओं को आसानी से पार कर सके।

14. एक बच्चा प्रायः अपने सहपाठियों के साथ झगड़ता है, आप क्या करेंगे?

(a) आप बच्चे को सजा देंगे

(b) आप बच्चे को विद्यालय से निकाल देंगे

(c) आप कारण पता लगाने का प्रयास करेंगे तथा उसे परामर्श देंगे

(d) आप उसके माता-पिता से शिकायत करेंगे

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (c) सहपाठियों से झगड़ा करना छात्र के व्यवहार में अवांछनीय परिवर्तन के कारण होता है ऐसी स्थिति में अध्यापक को छात्र के व्यवहार में परिवर्तन के कारण को जानने का प्रयास करना चाहिए तथा उससे व्यक्तिगत रूप से मिल कर उसे परामर्श देना चाहिए।

15. यदि एक विद्यार्थी विद्यालय में लगातार निम्नतर श्रेणी प्राप्त करता है, तो उसके अभिभावक को उसकी सहायता हेतु परामर्श दिया जा सकता है कि -

(a) वह अध्यापकों की घनिष्ठ संगति में कार्य करें

(b) मोबाइल फोन, चलचित्र, कॉमिक्स, खेल हेतु अतिरिक्त पर रोक लगाएँ

(c) जो भलीभांति शिक्षा नहीं ले पाए उनकी जीवन-सम्बन्धी कठिनाइयों को वर्णन करें

(d) घर पर उसको परिश्रमपूर्वक कार्य करने पर बल दें

Ans:(a) यदि विद्यार्थी निरन्तर कक्षा में निम्नतर श्रेणी प्राप्त करता है तो उसके अभिभावक को उसकी सहायता करने हेतु परामर्श दिया जा सकता है कि वह अपने अध्यापकों से घनिष्टता के साथ कार्य करे तथा उनकी हर सम्भव सहायता माँगे ताकि वह शिक्षार्थी की हर समस्या का निदान कर सकें।

परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ

मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

- ✓ मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की एक सहयोगी संस्था है।
- ✓ इसकी स्थापना आचार्य नरेन्द्र देव समिति की संस्तुति पर वर्ष 1947 में की गयी थी।
- ✓ इस संस्था का निदेशक, प्रान्तीय शिक्षा सेवा संवर्ग का अधिकारी होता है।

मनोविज्ञान की स्थापना के उद्देश्य–

- ✓ विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को शैक्षिक, व्यवसायिक तथा वैयक्तिक निर्देशन व परामर्श देना।
- ✓ शिक्षकों को मनोविज्ञान व प्रशिक्षण देकर बच्चों को समझाने की क्षमता का विकास करना।
- ✓ शिक्षक प्रशिक्षकों हेतु मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षणों का आयोजन करना।
- ✓ शिक्षकोपयोगी मनोवैज्ञानिक प्रयोग व अनुसंधान करना।

मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)

- ✓ छात्रों एवं शिक्षकों को निर्देशन एवं परामर्श की सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सरकार एवं प्रशासन के महत्वपूर्ण निर्णय से मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों की स्थापना पर विचार किया।
- ✓ इस विचार क्रम में वर्ष 1975 में मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र आगरा की स्थापना की गयी।
- ✓ यह केन्द्र निदेशक मनोविज्ञानशाला इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश के अधीन कार्य करता है।

मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य–

- ✓ शैक्षिक निर्देशन का उद्देश्य
- ✓ व्यवसायिक निर्देशन का उद्देश्य
- ✓ व्यक्तिगत निर्देशन का उद्देश्य
- ✓ मानसिक समस्याओं के समाधान का उद्देश्य
- ✓ मनोवैज्ञानिक सेवाओं का विस्तार
- ✓ सर्वांगीण विकास का उद्देश्य
- ✓ निदानात्मक एवं उपचायत्मक उद्देश्य

जिला चिकित्सालय–

सम्पूर्ण प्रदेश भर में जिला चिकित्सालयों में मुख्य चिकित्साधिकारी के नेतृत्व में एक विशेषज्ञ डॉक्टरों की समिति होती है जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (विकलांगों) के लिए विकलांगता आदि का परीक्षण करके सेवाओं में आरक्षण का लाभ प्रदान कराते हैं। यह विशेषज्ञ डॉक्टरों की समिति विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समुचित उपकरण जैसे– चश्मा आदि प्रदान करने की संस्तुति करती है तथा उन्हें एवं अन्य जनों को भी व्यवसायिक परामर्श देती है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (District Institute of Teacher Education and Training 'DEIT')

- ✓ राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 की अनुशंसा के आधार पर वर्ष 1987 से प्रत्येक जिला स्तर पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना का कार्य प्रारम्भ हुआ।
- ✓ यह राज्य स्तर से लेकर ग्राम स्तर की शिक्षण संस्थानों के बीच कड़ी के रूप में कार्य करता है।
- ✓ इसका मूल उद्देश्य, शिक्षा संस्थाओं, जिला शिक्षा बोर्ड, विद्यालय संगम (संकुल) आदि को शैक्षिक सलाह एवं मार्गदर्शन देना है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के विभिन्न विभाग–

1. सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
2. कार्यानुभव विभाग
3. जिला संस्थान इकाई
4. सेवारत कार्यक्रम क्षेत्रीय सम्पर्क तथा प्रवर्तन समन्वय विभाग
5. पाठ्यक्रम सामग्री विकास एवं मूल्यांकन विभाग
6. शैक्षिक तकनीकी विभाग
7. नियोजन एवं प्रबन्धन विभाग

जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्था के कार्य

- ✓ सेवापूर्व प्रशिक्षण
- ✓ संदर्भ व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना
- ✓ विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के लिए संस्थागत नियोजन और प्रबन्धन का कार्यक्रम संचालित करना।
- ✓ सर्व शिक्षा अभियान को सफल बनाने में सहयोग करना तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षित डॉयट मेंटर– बालकों को परामर्श एवं निर्देशन प्रदान करने हेतु प्रत्येक जिले में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में मनोविज्ञान विभाग होते हैं जो छात्रों व शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक परामर्श देने का कार्य करते हैं। यद्यपि इस संस्थान का मुख्य कार्य तो अध्यापकों को प्रशिक्षण देना है लेकिन यहाँ उन्हें शिक्षण हेतु मनोवैज्ञानिक विधियों का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तंत्र -

पर्यवेक्षण

- ✓ एडम्स के अनुसार– ''पर्यवेक्षण, संस्थाओं के सुधार के लिए एक नियोजित कार्यक्रम है।''
- ✓ विल्स के अनुसार– ''आधुनिक पर्यवेक्षण, शिक्षण व अधिगम के श्रेष्ठ विकास में सहायक है।''

पर्यवेक्षण की आवश्यकता– एक पर्यवेक्षक कई विद्यालयों का पर्यवेक्षण करता है और वह विद्यालयों की परस्पर तुलना करते हुए विकास की सही दिशा का ज्ञान मुख्याध्यापक को कराता है।

विद्यालय प्रबन्धन में पर्यवेक्षण तंत्र की भूमिका

- ♦ **ब्लाक संसाधन केन्द्र (B.R.C.) के समन्वयक की भूमिका–** ब्लाक संसाधन केन्द्र का समन्वयक ब्लाक के समस्त विद्यालयों का पर्यवेक्षण करता है तथा पर्यवेक्षण के आधार पर अपने विचारों से अपने उच्च अधिकारियों को अवगत कराता है ताकि विद्यालय के प्रबन्धन व प्रशासन को सुधारा जा सके।
- ♦ **न्याय पंचायत संसाधन केन्द्र के समन्वयक की भूमिका–** न्याय पंचायत संसाधन केन्द्र समन्वयक के पर्यवेक्षण अधिकार के अंतर्गत न्याय पंचायत के समस्त विद्यालय आते है। इसका प्रमुख कार्य विद्यालय प्रबन्धन, शिक्षकों की नियुक्ति, विद्यालय भवन आदि से सम्बन्धित सूचना अपने अधिकारियों तक पहुँचाता है साथ ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए नवीन शिक्षण विधियों का प्रदर्शन तथा ज्ञान कराता है।
- ♦ **सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी (A.B.S.A.) की भूमिका–** यह ब्लाक स्तर का शिक्षा अधिकारी होता है तथा ब्लॉक के विद्यालयों की प्रबन्धन व्यवस्था में सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसका मुख्य कार्य नवीन विद्यालयों के निर्माण, विद्यालयों का पर्यवेक्षण व निरीक्षण तथा व्यवस्था के सुधार हेतु समय-समय पर निर्देश देना होता है।
- ♦ **उपविद्यालय निरीक्षक की भूमिका–** उप विद्यालय निरीक्षक अपने पर्यवेक्षण के आधार पर प्रधानाचार्य को विद्यालय प्रबन्धन सम्बन्धी सुझाव देता है, बेसिक सहायक शिक्षा अधिकारी की सहायता व निर्देशों का पालन करता है तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न सुझाव देता है।
- ♦ **जिला समन्वयक की भूमिका–** ब्लाक संसाधन केन्द्रों का निरीक्षण व पर्यवेक्षण करना तथा ब्लाक के सभी समन्वयकों की बैठक बुलाकर शिक्षण की नवीनी विधियों पर चर्चा परिचर्चा करना, जिला समन्वयक के प्रमुख कार्य है।
- ♦ **बेसिक शिक्षा अधिकारी की भूमिका–** बेसिक शिक्षा अधिकारी जिले की बेसिक शिक्षा का प्रमुख अधिकारी होता है। यह जिले के प्राथमिक विद्यालयों से सम्बन्धित समस्त क्रियाकलापों, व्यवस्था, शिक्षकों की नियुक्ति, आदि के लिए जिम्मेदार होता है।

समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ-

- समुदाय को अंग्रेजी में कम्युनिटी (Community) कहते हैं। कम्यूनिटी शब्द दो शब्दों 'Com' (एक साथ) 'Munis' (सेवा करना) से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ एक साथ सेवा करना होता है।
- **बोगार्ड्स के अनुसार–** ''समुदाय एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसमें कुछ मात्रा में 'हम' की भावना होती है और वह एक क्षेत्र विशेष में रहता है।''

समुदाय व विद्यालय में सम्बन्ध– जॉन ड्यूवी के अनुसार, ''सर्वश्रेष्ठ तथा अत्यन्त बुद्धिमान माता-पिता अपने बच्चे के लिए जो चाहते हैं, समुदाय सभी बच्चों के लिए वही चाहता है।''

अतः स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रबन्धन व प्रशासन में समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय के प्रबन्धन व प्रशासन में सहयोग देने के लिए निम्न समितियाँ कार्य करती हैं।

ग्राम शिक्षा समिति

- स्थायी नियम सन् 1972 का सन् 1975 में संशोधन किया गया।
- उत्तर प्रदेश पंचायत राज्य एक्ट, 1947 के अधीन यह निश्चित किया गया है कि प्रत्येक गाँव में एक समिति स्थापित की जायेगी जिसे ग्रामीण शिक्षा समिति के नाम से जाना जायेगा।

ग्राम शिक्षा समिति के सदस्य–

1. ग्राम-सभा का प्रधान अध्यक्ष।
2. बेसिक विद्यालयों के छात्रों के तीन संरक्षक या अभिभावक, जिसमें एक महिला होती है। यह उप-विद्यालय निरीक्षक द्वारा मनोनित किये जाते है।
3. बेसिक विद्यालय का प्रधानाध्यापक। एक से अधिक विद्यालय होने पर वरिष्ठतम् प्रधान अध्यापक इस समिति का सचिव होता है।

ग्राम शिक्षा समिति के कार्य–

- ✓ विद्यालय के सामानों में सुधार के सुझाव देना।
- ✓ शिक्षकों की उपस्थिति और समय से आने के सम्बन्ध में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को जानकारी देना।
- ✓ बेसिक विद्यालयों की जाँच करना।

विद्यालय प्रबन्धन समिति–

- ✓ निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, अधिनियम–2009 की धारा 21 के अंतर्गत विद्यालय प्रबंधन समिति के गठन का प्रावधान किया गया है।
- ✓ प्रत्येक दो वर्ष में इस समिति का पुनर्गठन किया जायेगा।
- ✓ इस समिति का गठन अनुदानित विद्यालय के अतिरिक्त गैर अनुदानित विद्यालय में भी किया जायेगा।
- ✓ विद्यालय प्रबन्धन समिति में कुल 15 सदस्य होंगे, जिसमें 11 सदस्य बालको के माता-पिता या अभिभावक होंगे (50% सदस्य महिलाएँ होंगी)।
- ✓ विद्यालय प्रबन्धन समिति के संरक्षक सदस्यों में एक-एक सदस्य अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा कमजोर वर्ग के बालक के माता-पिता अथवा संरक्षक सम्मिलित होंगे।

विद्यालय प्रबन्ध समिति के कार्य–

विद्यालय के प्रबन्धन, प्रशासन, क्रियाकलाप आदि सभी गतिविधियों की देखभाल की जिम्मेदारी विद्यालय प्रबन्ध समिति की होती है।

मातृ-शिक्षक संघ

- माता को विद्यालय से जोड़ने के लिए मातृ-शिक्षक संघ की स्थापना की गयी। मातृ-शिक्षक संघ के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं–
- ✓ माताओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
- ✓ महिलाओं को उनकी शक्ति, अधिकार और कर्तव्यों का ज्ञान कराना।
- ✓ विद्यालयी शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना।

मातृ-शिक्षक संघ का स्वरूप

अध्यक्ष– माता अभिभावक में से चुना जायेगा।

उपाध्यक्ष– विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा कक्षा अध्यापक में से होगा।

मंत्री– मंत्री अध्यापकों में से चुना जायेगा।

उपमंत्री– माता अभिभावकों में से चुना जायेगा।

कोषाध्यक्ष– माता अभिभावकों में से चुना जायेगा।

- मातृ-शिक्षक संघ की बैठक प्रत्येक महिने में शनिवार या रविवार के दिन, दोपहर के बाद होगी।

मातृ शिक्षक संघ के कार्य–

- ✓ विद्यालय में बालिकाओं के नामांकन को बढ़ावा देना।
- ✓ बालिकाओं के समुचित विकास को बढ़ावा देना।
- ✓ बालिका शिक्षा के प्रति लोगों को प्रेरित करना।

अभिभावक शिक्षक संघ

- बालक के शैक्षिक विकास में शिक्षक तथा अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए प्रगतिशील शिक्षा व्यवस्था में अभिभावकों को भी सम्मिलित किया जाता है ताकि बालक का समुचित विकास किया जा सके।

महिला प्रेरक दल के कार्य

विद्यालय व्यवस्था तथा मानवीय संसाधन में महिला प्रेरक दल की प्रमुख भूमिका है। महिला प्रेरक दल का प्रमुख कार्य ग्रामीण और शहरी अशिक्षित महिलाओं को शिक्षा के महत्व बताना ताकि अपनी बालिकाओं तथा बालकों में विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित हो सके।

- महिला प्रेरक दल द्वारा विद्यालय की व्यवस्था में स्वयं सहयोग किया जाता है तथा अन्य व्यक्तियों को सहयोग के लिए प्रेरित किया जाता है।

मीना मंच

सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मीना मंच योजना को संचालित किया गया है। इस शैक्षिक योजना के अंतर्गत मीना नामक बालिका की प्रमुख भूमिका को प्रदर्शित किया जाता है।

मीना मंच के उद्देश्य–

- ✓ मीना मंच का मूल उद्देश्य एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना है जहाँ बालिकाएँ अपने विचार, भावनाओं एवं सीमाओं को व्यक्त कर सके।
- ✓ बालिकाओं में नेतृत्व क्षमता को विकसित करना।

- ✓ बालिकाओं को विवाह की आयु का ज्ञान कराना।
- ✓ बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रेरित करना।

सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन–

उत्तर प्रदेश की प्राथमिक शिक्षा प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण रही है। यहाँ पर्याप्त समय से शिक्षा स्थानीय निकायों के अधीन रही है। ग्रामीण क्षेत्रों की शिक्षा व्यवस्था पर जिला परिषदों का नियत्रंण रहा। 1972 में 'उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा अधिनियम' के अस्तित्व में आने के बाद प्राथमिक विद्यालयों को इनके अधीन रखा गया। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संविधान के 73वें संशोधन की मूल भावना को दृष्टिगत रखते हुए 1 जुलाई 1999 को ग्राम पंचायतों को प्राथमिक विद्यालयों, अनौपचारिक शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा के कार्य स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया गया।

गैर सरकारी संगठन (Non-Government Organisation N.G.O.)– गैर-सरकारी संगठन एक ऐसी विचारधारा से सम्बद्ध है जो कि अच्छे नागरिको के निर्माण के लिए कार्य करते हैं। गैर सरकारी संगठन का प्रत्येक सदस्य दूसरे व्यक्तियों को सेवाएँ प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहता है तथा किसी भी कार्य को करने में अनावश्यक रूप से विलम्ब नहीं करता है।

गैर सरकारी संगठनों के उद्देश्य–

- ✓ भारत के भावी नागरिकों में नागरिकता के गुणों का विकास करना जिससे कि वे राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके।
- ✓ बुद्धिमान एवं कर्मठ व्यक्तियों के समूह का निर्माण जो कि राष्ट्र एवं समाज के प्रति समर्पण भाव से कार्य कर सके।
- ✓ विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीय आपदाओं एवं दैवीय विपत्तियों में असहाय नागरिकों की सहायता करना तथा उनको सामान्य स्थिति में पहुँचाना।

EXAM POINTS

- छात्रों की उपलब्धियों का मूल्यांकन होना चाहिए– **सतत एवं व्यापक दोनों रूप से**
- पौधे एवं जानवरों में चार अन्तर बताइए। यह प्रश्न ..... प्रकार के प्रश्न का उदाहरण है– **लघु उत्तरीय प्रश्न**
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न के उदाहरण हैं– **रिक्त स्थान वाले प्रश्न, मानचित्र पर आधारित प्रश्न, रूपान्तरण प्रकार**
- जब परीक्षार्थियों की संख्या सर्वाधिक हो तो उनके मूल्यांकन के लिए ... प्रकार के प्रश्न का प्रयोग किया जाएगा– **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**
- कोई बालक फुटबॉल खरीदते वक्त उसके गुण, मजबूती के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद ही उसे खरीदता है, इस सन्दर्भ में यह माना जाएगा कि उस बालक में ..... का विकास हो रहा है– **आलोचनात्मक चिन्तन**
- विद्यार्थियों की दिए जाने वाले परामर्श की सर्वाधिक उपयोगिता यह है कि– **उनमें आत्म-विश्वास की अभिवृद्धि होती है**
- बच्चे को समझना, बच्चे की कमियों का कारण पता करना एवं बच्चे के समायोजन में सहायता प्रदान करना उद्देश्य है– **परामर्श का**
- आपकी कक्षा में एक छात्र देर से आता है, आप– **कारण जानने की चेष्टा करेंगे**
- एक प्रमापीकृत पठन परीक्षण लेने के लिए पाँचवीं कक्षा को प्रस्तुत करने में शिक्षक को अधिकाधिक परामर्श किया जाता है कि– **परीक्षण में आने वाले समान प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए छात्रों को अभ्यास कराना**
- यदि कोई छात्र असामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन कर रहा हो तो शिक्षक को जानना चाहिए– **उनके व्यवहार का कारण**
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न है– **सत्य या असत्य**
- एक शिक्षक प्रश्न-पत्र बनाने के बाद, यह जाँच करता है कि क्या प्रश्न परीक्षण के विशिष्ट उद्देश्यों की परीक्षा ले रहे हैं। यह मुख्य रूप से चिंतित करती है– **प्रश्न-पत्र की वैधता के बारे में**
- वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के गुण के सम्बन्ध में सही कथन है– **इनका अंकन शीघ्रता एवं सुगमता से किया जा सकता है**
- यदि एक विद्यार्थी विद्यालय में लगातार निम्नतर श्रेणी प्राप्त करता है तो उसमें अभिभावक को उसकी सहायता हेतु परामर्श दिया जा सकता है कि– **वह अध्यापकों की घनिष्ठ संगति में कार्य करे**
- एक अध्यापक उस बच्चे के साथ परामर्श करते हैं जिसकी निष्पत्यात्मक प्रगति एक दुर्घटना के पश्चात् अनुकूल नहीं है। वह प्रक्रिया जो विद्यालय में परामर्श के लिए सबसे बेहतर हो सकती है– **यह अपने विचारों द्वारा खोज करने हेतु लोगों में आत्म-विश्वास का निर्माण करता है**
- रचनात्मक लेख का नियोजन होना चाहिए– **सभी छात्रों के लिए**
- कभी-कभी संकलनात्मक हो सकता है एवं इसी प्रकार विपरीततः– **–रचनात्मक आकलन**
- ग्रेड अंकों से कैसे अलग है? यह प्रश्न किस प्रकार के प्रश्नों से सम्बन्ध रखता है– विश्लेषणात्मक
- कक्षा परीक्षणों में अच्छा प्रदर्शन करने में एक बच्चे की असफलता हमें इस विश्वास की तरफ ले जाती है कि– **पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति तथा आकलन प्रक्रियाओं पर विचार की आवश्यकता है**
- जब बच्चे एक विशेष संख्या में पुस्तकें पढ़ते हैं, तो उन्हें एक प्रमाण-पत्र दिया जाता है। यह रणनीति शायद अधिक समय तक काम न करे, क्योंकि– **यह सम्भवतः बच्चों को केवल प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के लिए पुस्तकों के पढ़ने की तरफ ले जा सकती है**

24. क्रियात्मक अनुसंधान

1. व्यक्ति से संवाद करने की प्रक्रिया क्या कहलाती है?

(a) सम्प्रेषण

(b) ग्राह्यता

(c) प्रदाता

(d) संचारकर्त्ता।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (a) व्यक्ति के संवाद करने की प्रक्रिया सम्प्रेषण कहलाती है। ग्राह्यता, प्रदाता एवं संचारकर्ता ये सभी सम्प्रेषण प्रक्रिया के घटक है।

2. एक शोधकर्ता के रूप में आप निम्नलिखित में से कौन से शीर्षक को अनुसंधान प्रस्ताव में सम्मिलित नहीं करेंगे?

(a) अनुसंधान समस्या की पृष्ठभूमि

(b) अनुसंधान के उपकरण

(c) अनुसंधान के लिए मूल विस्तृत व्याख्या

(d) अनुसंधान की परिकल्पनाएँ

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) अनुसंधान प्रस्ताव के अन्तर्गत समस्या की पृष्ठभूमि, अनुसंधान की परिकल्पनाए तथा अनुसंधान के प्रयुक्त उपकरण का वर्णन किया जाता है। अनुसंधान के प्रस्ताव के मूल विस्तृत व्याख्या को शामिल नहीं किया जाता है।

3. निम्नलिखित में से कौन सा चिन्तन अनुसंधान से सम्बन्धित है?

(a) परम्परागत चिन्तन

(b) विकेन्द्रित चिन्तन

(c) वैज्ञानिक चिन्तन

(d) ये सभी

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) चिन्तन अनुसंधान के अन्तर्गत परम्परागत चिन्तन विकेन्द्रित चिन्तन तथा वैज्ञानिक चिन्तन आते है। किसी विषय वस्तु पर शोध करने के लिए चिन्तन अनुसंधान के तीनों चिंतन स्तर से गुजरना पड़ता है।

4. स्कूल प्रशासन कमजोर बच्चों के लिए आयोजित अतिरिक्त कक्षाओं में से कुछ आपको आवंटित करता है। एक अध्यापक के रूप में आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

(a) प्रतिवाद करेंगे और कक्षा नहीं लेंगे

(b) निर्णय के पुनर्विचार का आग्रह करेंगे

(c) विद्यार्थियों से कहेंगे कि वे स्वयं तैयारी करें

(d) इसे अपने दायित्व के रूप में स्वीकार करेंगे

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) स्कूल प्रशासन द्वारा दिये गए वे सभी कार्य (जो दोष रहित हैं) उसे अध्यापक को अपना दायित्व समझकर स्वीकार कर लेना चाहिए।

5. निम्न में से कौन-सा शोध का चरण शोध को क्रियात्मक अनुसन्धान बनाता है?

(a) उपकल्पनाओं का निर्माण

(b) प्रोग्राम का क्रियान्वयन एवं अंतिम मूल्यांकन

(c) सामान्यीकरण

(d) शोध आकल्प का अपरिवर्तन/कठोर होना।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षण संस्थानों की व्यावहारिक समस्याओं का हल खोजा जाता है। **स्टोफेन कोरे** के अनुसार क्रियात्मक अनुसंधान का अभिप्राय उस प्रतिक्रिया से है जिसके द्वारा अभ्यासकर्ता अपने निर्णयों तथा प्रतिक्रियाओं का पथ निर्देशन एवं मूल्यांकन करने के लिए अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान में प्रोग्राम का क्रियान्वयन एवं अंतिम मूल्यांकन चयनात्मक होता है।

6. निम्न में से कौन-सी समस्या क्रियात्मक अनुसन्धान के लिये उपयुक्त नहीं है?

(a) हिन्दी में 5वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लेख में सुधार

(b) 7वीं कक्षा के विद्यार्थियों के व्यवहार पर लिखित प्रशंसा एवं मौखिक प्रशंसा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

(c) परम्परागत विधि के ऊपर कम्प्यूटर सहायतित अनुदेशन का प्रभाव

(d) भूगोल के अधिगम में एटलस एवं ग्लोब का प्रयोग।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (c) क्रियात्मक अनुसंधान किसी समस्या विशेष के लिए किया जाता है। कम्प्यूटर सहायतित अनुदेशन का प्रभाव समस्या से सम्बंधित नहीं है।

7. क्रियात्मक अनुसन्धान के सम्बन्ध में निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) यह अध्यापकों एवं शिक्षा व्यवसाय से जुड़े लोगों के द्वारा किया जाता है

(b) यह किसी विशिष्ट समस्या के समाधान के लिए किया जाता है

(c) व्यापक स्तर पर निर्णय लेने के लिए सूचना संकलन का कार्य इसमें किया जाता है

(d) स्थानीय स्तर पर रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान के लिये क्रियात्मक अनुसन्धान किया जाता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (c) क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालय के व्यक्तिगत समस्याओं को हल करने के लिए किया जाता है। यह प्रधानाध्यापक या अध्यापक द्वारा विद्यालय प्रशासन, छात्रों के अपव्यय–अवरोधन, शिक्षण–पद्धति या पाठ्यक्रम आदि से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी है।

8. क्रियात्मक अनुसन्धान मौलिक अनुसन्धान से भिन्न है क्योंकि यह

(a) अध्यापकों, शैक्षिक प्रबन्धकों एवं प्रशासकों द्वारा किया जाता है

(b) शोधकर्ताओं द्वारा किया जाता है जिनका विद्यालय से कोई सम्बन्ध नहीं होता

(c) यह सांख्यिकीय उपकरणों पर आधारित होता है

(d) यह न्यादर्श पर आधारित होता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा शिक्षा प्रक्रिया में सुधार कर शिक्षण प्रक्रिया को और प्रभावशाली बनाया जा सकता है यह अनुसंधान शिक्षक, विद्यालय, प्रबंधक एवं प्रशासकों द्वारा किया जाता है। जबकि मौलिक अनुसंधान शोध छात्रों द्वारा किया जाता है।

9. क्रियात्मक अनुसन्धान में

(a) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण समस्याओं के कारणों पर आधारित है

(b) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण किसी तर्कयुक्त विवेक पर आधारित है।

(c) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण इस प्रकार किया जाता है ताकि उनका सांख्यिकीय सत्यापन किया जा सके

(d) क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण नहीं किया जाता।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (a) क्रियात्मक अनुसंधान में क्रियात्मक उपकल्पनाओं का निर्माण समस्याओं के कारणों पर आधारित होता है। अर्थात् विद्यालय में प्रशासन, क्रियान्वयन नीति-निर्माण या शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित जब कोई समस्या आती है तब इन समस्याओं को दूर करने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान किया जाता है।

10. उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक को क्रियात्मक शोध का ज्ञान होना चाहिए क्योंकि वे–

(a) इसके माध्यम से बच्चों की समस्या की पहचान कर सुधार करने का कौशल विकसित कर पाएंगे

(b) अपना स्वयं का विकास कर पाएंगे

(c) बच्चों को प्रभावी ढंग से पढ़ा पाएंगे

(d) शोध करने का कौशल विकसित कर पाएंगे

DSSSB PRT, UKTET 2013 (VI-VIII)

Ans : (a) उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षक को क्रियात्मक शोध का ज्ञान होना चाहिए क्योंकि वे इसके माध्यम से बच्चों की समस्या की पहचान कर सुधार करने का कौशल विकसित कर पायेंगे।

11. क्रियात्मक अनुसन्धान का उद्देश्य है

(a) नवीन ज्ञान की खोज

(b) शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास

(c) विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य प्रणाली में सुधार लाना

(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) क्रियात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य विद्यालय का वातावरण सुधारना तथा शिक्षण प्रणाली को सुगम एवं सुव्यवस्थित करने के लिए विकसित करना है।

12. क्रियात्मक अनुसंधान का प्रमुख कार्य है-

(a) नए तथ्यों की खोज करना

(b) स्थानीय समस्याओं का समाधान करना

(c) ज्ञान देना

(d) नई व आधारभूत समस्याओं का समाधान करना

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (b) तत्कालीन एवं स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग किया जाता है।

भाग–III
अधिगम और अध्यापन

25.
बालकों का सोचना और सीखना तथा विद्यालय प्रदर्शन में असफलता के कारण

अधिगम का अर्थ

1. अभ्यास द्वारा सीखना जिसका परिमार्जन है, वह है–

(a) अभिप्रेरणा (b) व्यवहार
(c) मूल प्रवृत्ति (d) अन्तर्नोद

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) अभ्यास द्वारा सीखना व्यवहार का परिमार्जन है जिसके द्वारा व्यवहार को नियत्रिंत तथा विकसित करना होता है।

2. व्यावहारिक क्षमताओं में वह सापेक्ष स्थायी परिवर्तन जो कि प्रबलित अभ्यास का परिणाम होता है, उसे क्या कहते हैं?

(a) अधिगम (b) अभिप्रेरणा
(c) अभिवृत्ति (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) व्यावहारिक क्षमताओं में वह सापेक्ष स्थायी परिवर्तन जो कि प्रतिबल अभ्यास का परिणाम होता है, उसे अधिगम कहा जाता है। **किम्बले** ने भी अधिगम को इसी प्रकार परिभाषित करते हुए कहा है ''पुनर्बलित अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहारजन्य क्षमता में आने वाले अपेक्षाकृत स्थायी प्रकृति का परिवर्तन अधिगम है।''

3. अधिगम का सबसे उपयुक्त कार्य है-

(a) व्यक्तिगत समायोजन
(b) सामाजिक व राजनीतिक चेतना
(c) व्यवहार परिवर्तन
(d) स्वयं को रोजगार के लिए तैयार करना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) अधिगम का सबसे प्रमुख कार्य बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन करना है ताकि बालक अपने वातावरण के साथ समायोजन कर सके।

4. व्यावहारिक क्षमताओं में वह सापेक्ष स्थायी परिवर्तन जो कि प्रचलित अभ्यास का परिणाम होता है उसे क्या कहते हैं -

(a) अधिगम (b) अभिप्रेरणा
(c) अभिवृत्ति (d) अभिक्षमता

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) सीखना या अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभूति या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।

5. अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन कहलाता है

(a) स्मृति (b) सीखना
(c) प्रेरणा (d) चिन्तन

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन सीखना कहलाता है। उदाहरणस्वरूप – यदि किसी बालक के सामने लाल मिर्च रखी है, तो वह जिज्ञासा के कारण मुँह में दबाता है और उसे काटते ही उसको तीखा का ज्ञान होता है और रोने लगता है इसलिए वह मिर्च को फेंक देता है फिर उसके पास कभी नहीं जाता क्योंकि उसने अनुभव से सीख लिया है कि लाल मिर्च कड़वी होती है। इस प्रकार सीखना अनुभव द्वारा व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन है।

मनोवैज्ञानिक सिम्पसन के अनुसार –''व्यवहार में कोई भी परिवर्तन जो कि अनुभवों का परिणाम है और जिसके फलस्वरूप व्यक्ति आने वाली परिस्थितियों का भिन्न प्रकार से सामना करता है-सीखना या अधिगम कहलाता है।''

6. सीखना है

(a) व्यवहार में परिवर्तन
(b) अनुभव तथा अभ्यास का परिणाम
(c) व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन
(d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans: (d) अधिगम/सीखना सतत रुप से चलने वाली वह सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो जन्म से प्रारम्भ होती है और मृत्यु पर्यन्त तक चलती रहती है। सीखने की गति में वातावरण के अनुरुप परिवर्तन होता है। अधिगम प्रक्रिया में दो तत्व निहित है-

I. परिपक्वता
II. पूर्व अनुभवों से प्राप्त परिणाम

7. सीखने का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ है

(a) कौशल अर्जन (b) ज्ञानार्जन

(c) व्यवहार में परिमार्जन (d) वैयक्तिक समायोजन

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) सीखने का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ व्यवहार में परिमार्जन है। इसलिए कॉलविन ने कहा है '' पहले से निर्मित व्यवहार में अनुभवों द्वारा हुए परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।''

8. व्यवहार में होने वाले स्थायी परिवर्तन, जो अभ्यास के कारण होते हैं, को कहा जाता है

(a) सीखना (b) सोचना

(c) क्रिया करना (d) कल्पना करना

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (a) किम्बले के अनुसार– ''पुनर्बलित अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहारजन्य क्षमता में आने वाले अपेक्षाकृत स्थायी प्रकृति का परिवर्तन अधिगम है।''

9. जब शिक्षार्थियों को समूह में किसी समस्या पर चर्चा का अवसर दिया जाता है, तब उनके सीखने का वक्र

(a) बेहतर होता है (b) स्थिर रहता है

(c) अवनत होता है (d) समान रहता है

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (a) जब शिक्षार्थियों को समूह में किसी समस्या पर चर्चा का अवसर दिया जाता है तब उनके सीखने का वक्र बेहतर हो जाता है, क्योंकि समस्या पर चर्चा करने से विद्यार्थी एक दूसरे के विचारों से परिचित होते हैं तथा विद्यार्थियों में नये ज्ञान का भण्डार भी संचित होता है।

10. निम्नलिखित में से किस कथन को 'सीखने' के लक्षण के रूप में नहीं माना जा सकता?

(a) व्यवहार का अध्ययन सीखना है

(b) अन-अधिगम (unlearning) भी सीखने का एक हिस्सा है

(c) सीखना एक प्रक्रिया है जो व्यवहार में मध्यस्थता करती है।

(d) सीखना कुछ ऐसी चीज है जो कुछ अनुभवों के परिणामस्वरूप घटित होती है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (a) व्यवहार का अध्ययन सीखना, यह किसी भी प्रकार से सीखने का लक्षण नहीं है क्योंकि व्यवहार का अनुकरण करके उसे सीखा जा सकता है न कि व्यवहार का अध्ययन सीखा जाता है।

11. अभ्यास के अधिगम पर प्रभाव के एक प्रयोग में अधिगम होगा–

(a) स्वतंत्र चर (b) परतंत्र चर

(c) अन्य चर (d) स्थिर चर

DSSSB PRT

Ans : (b) अभ्यास के अधिगम पर प्रभाव के एक प्रयोग में अधिगम एक परतंत्र चर होगा क्योंकि अधिगम की स्थिति अभ्यास पर निर्भर करता है। अभ्यास की मात्रा बढ़ने पर अधिगम में भी परिवर्तन होता है जबकि अभ्यास न करने पर विलोपन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

12. अधिगम को एक जीव के _____ में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है।

(a) व्यवहार (b) विचार

(c) व्यक्तित्व (d) बुद्धि

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) अधिगम को एक जीव के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। गेट्स व अन्य के अनुसार, ''सीखना अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है।'' इसी प्रकार मार्गन एवं गिलीलैण्ड ने भी अधिगम को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''सीखना अनुभव के परिणामस्वरूप प्राणी के व्यवहार में परिमार्जन है जो प्राणी द्वारा कुछ समय के लिए धारण किया जाता है।''

13. निम्नलिखित में से कौन-सा 'अधिगम' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) शिक्षक को सुनने के माध्यम से ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रिया

(b) मूल संस्मरण के माध्यम से तथ्यों और जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया

(c) पढ़ने और लिखने के लिए जानकारी इकट्ठा करने की प्रक्रिया

(d) अपने विचारों, अनुभवों, अध्ययन इंद्रियों और साझाकरण के माध्यम से ज्ञान, कौशल और निपटान प्राप्त करने की प्रक्रिया

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : अपने विचारों, अनुभवों, अध्ययन इन्द्रियों और साझाकरण के माध्यम से ज्ञान कौशल और निपटान प्राप्त करने की प्रक्रिया को अधिगम कहा जाता है। यह अधिगम की रचनात्मक शैली को संबोधित करता है, जिसमें विद्यार्थी अपने अनुभव, इन्द्रियों, विचारों आदि के आधार पर नवीन ज्ञान का निर्माण करते हैं।

14. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?

(a) वृद्धि केवल एक मानसिक प्रक्रिया है

(b) अनुवांशिकता, अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करती है

(c) विकास, केवल एक मात्रात्मक प्रक्रिया है।

(d) अधिगम व्यावहारिक परिवर्तनों की प्रक्रिया है।

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : अधिगम व्यावहारिक परिवर्तनों की प्रक्रिया है। उपरोक्त में से यह कथन सत्य है। कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गयी अधिगम की परिभाषा निम्नवत् हैं–

स्किनर के अनुसार– ''अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की एक प्रक्रिया है।''

गिलफोर्ड के अनुसार– ''व्यवहार के कारण व्यवहार में आया कोई भी परिवर्तन अधिगम है।''

15. सामान्यतः अधिगम, निम्न पर आधारित व्यवहार में एक स्थायी परिवर्तन माना जाता है–

(a) चुनौतियाँ और सुदृढ़ीकरण

(b) चुनौतियाँ और अनुभव

(c) अभ्यास और अनुभव
(d) अभ्यास और चुनौतियाँ

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : अधिगम, अभ्यास और अनुभव पर आधारित व्यवहार में एक स्थायी परिवर्तन माना जाता है। ''किम्बले'' ने अधिगम को परिभाषित करते हुए कहा है– ''पुर्नबलित अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहारजन्य क्षमता में आने वाला अपेक्षाकृत स्थायी प्रकृति का परिवर्तन अधिगम है।'' एक अन्य परिभाषा जो गेट्स व अन्य के शब्दों में दी गयी है, उसके अनुसार– ''अनुभव तथा प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार का उन्नयन अधिगम है।''

16. ..... के कारण होने वाले किसी भी परिवर्तन को अधिगम माना जाता है।

(a) चोट (b) थकान
(c) परिपक्वता (d) अभ्यास

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : अभ्यास के कारण होने वाले किसी भी परिवर्तन को अधिगम माना जाता है। किम्बले के अनुसार ''पुनर्बलित अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहारजन्य क्षमता में आने वाले अपेक्षाकृत स्थायी प्रकृति का परिवर्तन अधिगम है।''

17. अधिगम का शिक्षा में योगदान है-

(a) व्यवहार परिवर्तन में
(b) नवीन अनुभव प्राप्त करने में
(c) समायोजन में
(d) उपर्युक्त सभी

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) अधिगम वह प्रक्रिया है जिससे बालक को नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है परिणामस्वरूप बालक में समायोजन की क्षमता के विकास के साथ-साथ उचित व्यवहार परिवर्तन भी होता है।

अधिगम की विशेषताएँ एवं अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

18. निम्नलिखित में से कौन सा अधिगम के सार्थक सरलीकरण के रूप में परिणीत नहीं होता है?

(a) दोहराने एवं स्मरण करने को बढ़ावा देना।
(b) उदाहरणों एवं गैर-उदाहरणों का प्रयोग करना।
(c) एक समस्या पर अनेक तरीकों से विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना।
(d) पहले से विद्यमान ज्ञान से नए ज्ञान को जोड़ना।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (a) : निम्नलिखित क्रियाकलाप अधिगम के सार्थक सरलीकरण के रूप में परिणित होता है–

- उदाहरणों एवं गैर उदाहरणों का प्रयोग करना।
- एक समस्या पर अनेक तरीकों से विचार करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- पहले से विद्यमान ज्ञान से नये ज्ञान को जोड़ना।
- उदाहरणों को बच्चों के वास्तविक जीवन से जोड़ना।

अतः दोहराने एवं स्मरण करने को बढ़ावा देना अधिगम के सार्थक सरलीकरण के रूप में परिणीत नहीं होता है। क्योंकि अधिगम का उद्देश्य व्यवहार में परिवर्तन करना होता है न कि स्मरण कराना या दोहराने के लिए प्रोत्साहित करना।

19. निम्नलिखित में से कौन सी प्रथाएँ सार्थक अधिगम को बढ़ावा देती हैं?

(i) शारीरिक दंड
(ii) सहयोगात्मक अधिगम पर्यावरण
(iii) सतत् एवं समग्र मूल्यांकन
(iv) निरंतर तुलनात्मक मूल्यांकन

(a) (i), (ii), (iii) (b) (ii), (iii), (iv)
(c) (i), (ii) (d) (ii), (iii)

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) निम्नलिखित प्रथाएँ सार्थक अधिगम को बढ़ावा देती हैं–

- सहयोगात्मक अधिगम वातावरण
- सतत् एवं समग्र मूल्यांकन
- अध्यापक की संरचनात्मक भूमिका
- रोचक पाठ्य सामग्री आदि

20. निम्नलिखित में से कौन से कारक अधिगम को प्रभावित करते हैं?

(1) विद्यार्थी की अभिरुचि
(2) विद्यार्थी का सांवेगिक स्वास्थ्य
(3) शिक्षाशास्त्रीय रणनीतियाँ
(4) विद्यार्थी का सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ

(a) (ii), (iii) (b) (i), (ii), (iii)
(c) (i), (ii), (iii), (iv) (d) (i), (ii)

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं-

- विद्यार्थी की अभिरुचि
- विद्यार्थी का सांवेगिक स्वास्थ्य
- शिक्षाशास्त्रीय रणनीतियाँ
- विद्यार्थी का सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ
- विद्यार्थी की सीखने की इच्छा
- विषय-वस्तु का स्वरूप
- शिक्षक का विषय ज्ञान
- विद्यार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य आदि।

21. बालकों का अधिगम सर्वाधिक प्रभावशाली होगा, जब–

(a) पढ़ने–लिखने एवं गणितीय कुशलताओं पर ही बल होगा
(b) बालकों का संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोचालक पक्षों का विकास होगा
(c) शिक्षण व्यवस्था एकाधिकारवादी होगी
(d) शिक्षक अधिगम प्रक्रिया में आगे होकर बालकों को निष्क्रिय रखेगा।

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : बालकों का अधिगम सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है जब बालकों का संज्ञानात्मक (cognitive), भावात्मक (affective) तथा मनोचालक (psychomotor) पक्षों का विकास होगा, क्योंकि शिक्षण–अधिगम के फलस्वरूप छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन इन्हीं तीन पक्षों में हो सकते हैं। छात्रों के व्यवहार में होने वाले इन तीन प्रकार के परिवर्तनों के आधार पर ही बेंजामीन एस. ब्लूम ने शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों को तीन भागों–
(i) संज्ञानात्मक उद्देश्य, (ii) भावात्मक उद्देश्य तथा (iii) मनोचालक उद्देश्य में विभाजित किया था।

22. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प अधिगम के संबंध में सही नही है?

(a) अधिगम समायोजन है (b) अधिगम सिर्फ ज्ञान प्राप्ति है
(c) अधिगम विकास है (d) अधिगम परिपक्वता है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (b) अधिगम एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा बालक में समायोजन क्षमता का विकास तथा उच्चतम परिपक्वता के स्तर का विकास होता है। अधिगम का सम्बंध ज्ञान से है परन्तु सिर्फ ज्ञान प्राप्ति से नहीं है।

23. अधिगम के लिए क्या आवश्यक है?

(a) स्वानुभव (b) स्वचिंतन
(c) स्वक्रिया (d) उपर्युक्त सभी

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) अधिगम एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक/छात्र में समझ विकसित होती है जो समस्या के समाधान में सहायक होती है। अधिगम का अर्थ सीखना होता है जो कई प्रकार से हो सकता है-
- स्वानुभव
- स्वचिंतन
- स्वक्रिया
- निर्देशन
- परामर्श आदि

24. सीखने की परिघटना में निम्नलिखित में से कौन आवश्यक घटक नहीं है?

(a) अधिगमकर्ता (b) आंतरिक अवस्था
(c) प्रेरक (d) शिक्षक

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (d) सीखने की घटना अधिगमकर्ता एवं उसकी मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य तथा प्रेरक तत्वों के समायोजन से पूर्ण होती है। शिक्षक अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण कारक नहीं है। शिक्षक केवल छात्र को उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है जिसमें बच्चे का अधिगम सुचारु रूप से चलता रहे।

25. निम्न में से कौन-सा उदाहरण अधिगम को प्रदर्शित करता है?

(a) हाथ जोड़ कर अध्यापक का अभिवादन करना
(b) स्वादिष्ट भोजन देख कर मुँह में लार का आना
(c) चलना, भागना एवं फेंकना तीन से पाँच वर्ष की अवस्था में
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) अधिगम का तात्पर्य सीखना है। किसी बच्चे को कार्य करने के तरीकों को बताया जाए और छात्र उसी तरह का व्यवहार करे तो छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान अधिगम कहलाएगा। जैसे 3-5 वर्ष के बालकों को चलना, दौड़ना आदि सिखाया जाता है।

26. निम्न आर्थिक स्तर का प्रभाव निम्न में से किस पर नहीं पड़ता है?

(a) आत्मसम्मान पर (b) सीखने की क्षमता पर
(c) उच्च संस्थान में प्रवेश पर (d) जीवन-यापन पर

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (b) निम्न आर्थिक स्तर का प्रभाव सीखने की क्षमता पर नहीं पड़ता क्योंकि सीखना एक मानसिक एवं व्यवहारिक प्रक्रिया है।

27. निम्नलिखित में से कौन–सा एक सीखने के लिए प्रमुख है?

(a) अनुबंधन (b) रटकर याद करना
(c) अनुकरण (d) अर्थ–निर्माण

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (d) जब कोई अधिगमकर्ता किसी वस्तु के विषय में अधिगम करता है तो वह इसका अर्थ भी ग्रहण करता है और अर्थ ग्रहण के साथ–साथ उसका अर्थ निर्माण भी करता है और इस प्रकार अधिगम स्थायित्व प्राप्त करता है क्योंकि बिना अर्थ निर्माण के अधिगम स्थायी नहीं हो सकता है।

28. निम्न में से कौन–से कथन सीखने की प्रक्रिया की विशेषता नहीं मानना चाहिए?

(a) शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है जहाँ अधिगम प्राप्त होता है
(b) सीखना एक व्यापक प्रक्रिया है
(c) सीखना लक्ष्योन्मुखी होता है
(d) अन–अधिगम भी सीखने की प्रक्रिया है

DSSSB PRT
C TET 2011 (I-V)

Ans : (a) सीखने की प्रक्रिया के निम्न विशेषताएँ हो सकती हैं–
(1) सीखना एक व्यापक प्रक्रिया है।
(2) सीखना लक्ष्योन्मुखी होता है।
(3) अन–अधिगम भी सीखने की प्रक्रिया है।
(4) सीखना अनुभवों का संगठन है।
(5) सीखना सम्पूर्ण जीवन काल तक चलता है तथा यह सार्वभौतिक होता है न कि शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है जहाँ अधिगम प्राप्त होता है।

29. निम्नलिखित में से किस एक से शिशु के अधिगम को सहायता नहीं मिलती?

(a) अनुकरण (b) अभिप्रेरणा
(c) स्कूल का बस्ता (d) पुरस्कार

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (c) अधिगम एक क्रिया है जिससे व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है। अधिगम को तीव्र करने में अनुकरण, अभिप्रेरणा, पुरस्कार आदि सहायक की भूमिका निभाते है। जबकि स्कूल का बस्ता शिशु के अधिगम में सहायक नहीं होता है।

30. अधिगम क्षमता निम्नलिखित में से किससे प्रभावित नहीं होती?

(a) आनुवंशिकता (b) वातावरण

(c) प्रशिक्षण/शिक्षण (d) राष्ट्रीयता

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक -

1. आनुवांशिकता 2. वातावरण
3. प्रशिक्षण/शिक्षण 4. समायोजन की क्षमता

अतः राष्ट्रीयता अधिगम को प्रभावित करने वाला कारक नहीं होता है।

31. सीखना

(a) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित नहीं होता है

(b) संवेगों से क्षीण संबंध रखता है

(c) सीखने वाले के संवेगों से स्वतंत्र है

(d) सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित होता है

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (d) सीखना अधिगमकर्ता/सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित होती है क्योंकि सीखने वाले की रूचि, उसकी मनोवृत्ति या उसकी भावनाओं पर ही निर्भर करता है कि सीखने की क्रिया कितनी तेज या कितनी धीमी है।

अधिगम के प्रकार एवं क्षेत्र

32. गैग्ने के अधिगम सोपान का सही क्रम है–

(a) नियम अधिगम, सम्प्रत्यय अधिगम, समस्या समाधान

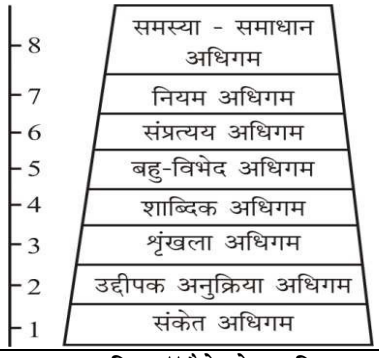
(b) सम्प्रत्यय अधिगम, समस्या समाधान, नियम अधिगम

(c) सम्प्रत्यय अधिगम, नियम अधिगम, समस्या समाधान

(d) नियम अधिगम, समस्या समाधान, सम्प्रत्यय अधिगम

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) गैग्ने ने सीखने को आठ वर्गों में वर्गीकृत करते हुए उन्हें एक अधिगम सोपानिकी के रूप में प्रस्तुत किया। इस अधिगम सोपानिकी के आठ वर्गों में एक स्वस्पष्ट अंतर्निहित क्रम निहित है तथा अगला क्रम पिछले क्रम से उच्चतर अथवा जटिलतर होता जाता है।



33. रिक्त स्थान भरिए: ''गैने के अधिगम पदानुक्रम में अधिगम की सर्वोच्च अवस्था है.....?.....''

उत्तर: समस्या-समाधान

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- गैने ने सीखने को आठ वर्गों में वर्गीकृत करते हुए उन्हें एक अधिगम सोपानिकी के रूप में प्रस्तुत किया। इस अधिगम सोपानिकी के आठ वर्गों में ऐ सुस्पष्ट अंतर्निहित क्रम व्यवस्थित है तथा अगला क्रम पिछले क्रम से उच्चतर अथवा जटिलतर होता जाता है।



34. निम्नलिखित में से कौन सा अधिगम का क्षेत्र नहीं है?

(a) संज्ञानात्मक (b) भावात्मक

(c) क्रियात्मक (d) आध्यात्मिक

Hariyana TET (Class I-V) 1 Feb 2014
Hariyana TET (Class I-V) 2013

Ans: (d) अधिगम के मुख्यतः तीन क्षेत्र होते है

1. संज्ञानात्मक 2. भावनात्मक
3. क्रियात्मक

आध्यात्मिक अधिगम का भाग नहीं है। यह सामाजिक एवं पारिवरिक परिवेश का क्षेत्र है।

35. संकेत अधिगम के अन्तर्गत निम्नलिखित सीखा जाता है

(a) मनोविज्ञान (b) पारम्परिक अनुकूलन

(c) वातावरण (d) मनोदैहिक

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (b) संकेत अधिगम के अन्तर्गत पारम्परिक अनुकूलन सीखा जाता है। इसे उद्दीपक अनुक्रिया अधिगम (S-R Learning) भी कहते है।

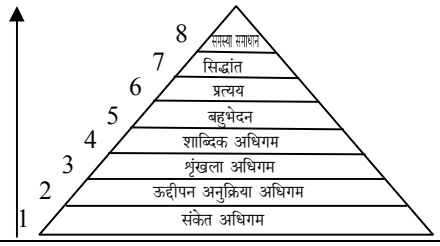
36. गैग्ने निम्न में किससे सम्बन्धित है?

(a) अधिगम का श्रेणीक्रम (b) अधिगम के सिद्धांत

(c) अधिगम का मूल्यांकन (d) अधिगम का प्रबन्धन

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (a) गैग्ने का सम्बन्ध अधिगम का क्षेत्रीय श्रेणीक्रम से है। गैग्ने द्वारा लिखित किताब 'द कण्डीशन ऑफ लर्निंग में इन्होंने सीखने के मूल आठ प्रकारों का वर्णन किया है। जिनमें सीखने का क्रम शृंखलाबद्ध है। इस शृंखला के अंतर्गत सबसे ऊपर समाधान तथा सबसे नीचे सांकेतिक सीखना है। इस शृंखला की मुख्य विशेषता यह है कि यह सरल से जटिल होती है।



37. व्यवहार का 'करना' पक्ष ..... में आता है।

(a) सीखने के गतिक काग्नेटिक क्षेत्र

(b) सीखने के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र

(c) सीखने के संज्ञानात्मक क्षेत्र

(d) सीखने के भावात्मक क्षेत्र

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012

Ans: (a) व्यवहार 'करना' पक्ष सीखने के शरीर गतिक क्षेत्र के अंतर्गत आता है। शरीर गतिक क्षेत्र के अंतर्गत शारीरिक संचालन, शारीरिक क्रिया, शरीर पर नियंत्रण, दृढ़ीकरण क्रियाएँ आदि आती हैं, जिनके माध्यम से ही व्यवहार किया जा सकता है।

38. निम्नलिखित में से कौन–सा सीखने का क्षेत्र है?

(a) व्यावसायिक (b) आनुभविक

(c) भावात्मक (d) आध्यात्मिक

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2012

Ans : (c) अधिगम जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति अपने पूरे जीवनकाल में अनुभव प्राप्त करता है और प्राप्त अनुभवों से अपने ज्ञान में वृद्धि करता है। यह ज्ञान की वृद्धि संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक क्षेत्र में होती है।

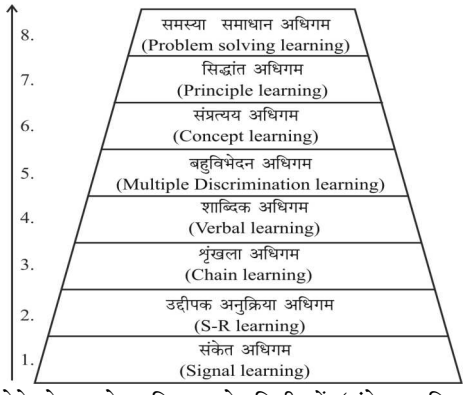
39. निम्नलिखित में से किस प्रकार के अधिगम को गेने ने अपनी अधिगम सोपानिकी में सर्वाधिक निम्न स्थान पर रखा है?

(a) प्रत्यय अधिगम (b) शाब्दिक अधिगम

(c) संकेत अधिगम (d) शृंखला अधिगम

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : आर.एन. गेने के अधिगम सोपानिकी के अनुसार अधिगम के आठ प्रकार निम्न हैं–



अतः गेने ने अपने अधिगम सोपानिकी में 'संकेत अधिगम' को सर्वाधिक निम्न स्थान पर रखा है।

अधिगम के वक्र तथा पठार

40. कौशल सीखने की पहली अवस्था है

(a) यथार्थता (b) कल्पनाशीलता

(c) समन्वय (d) अनुकरण

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) जन्म से ही बालक अपने माता-पिता या समाज के अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों का अवलोकन करता है एवं कालान्तर में उनमें से कुछ के व्यवहारों का अनुकरण अपने व्यवहार में करने लगता है। इसी प्रकार कौशल या किसी विशेष क्षेत्र में योग्यता हासिल करने की पहली अवस्था भी अनुकरण ही है। अनुकरण के माध्यम से ही वह कई प्रकार के कौशल सीख लेता है।

41. प्रतिपालन अधिगम का एक विशिष्ट चरण है, जो अधिगम के ..... चरण का पूर्ववर्ती है।

(a) अधिग्रहण (b) अभिप्रेरण

(c) आत्मनिर्भरता (d) सामान्यीकरण

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : प्रतिपालन (Maintenance) अधिगम का एक विशिष्ट चरण है जो अधिगम के सामान्यीकरण (Generalization) चरण का पूर्ववर्ती है। अधिगम के मुख्यतः छः चरण होते हैं।

1. प्रारम्भिक अर्जन (Initial Acquisition)
2. उन्नत अर्जन (Advanced Acquisition)
3. प्रवीणता (Proficiency)
4. प्रतिपालन (Maintenance)
5. सामान्यीकरण (Generalization)
6. समस्या समाधान (अनुकूलन) (Problem–Solving)

42. निम्नलिखित में से कौन सी एक मुख्य प्रक्रिया <u>नहीं</u> है जिसके द्वारा सार्थक अधिगम घटित होता है?

(a) पुनरावृत्ति एवं अभ्यास

(b) निर्देश एवं संचालन

(c) अन्वेषण एवं पारस्परिक क्रिया

(d) कंठस्थीकरण एवं स्मरण

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) कंठस्थीकरण एवं स्मरण सार्थक अधिगम की प्रक्रिया नहीं माना जा सकता है क्योंकि अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है जो अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन है। जबकि कंठस्थीकरण एवं स्मरण में सक्रियता का अभाव होता है तथा व्यवहार परिवर्तन को भी प्रत्यक्षतः प्रभावित नहीं करता। दूसरी ओर पुनरावृत्ति एवं अभ्यास, निर्देश एवं संचालन तथा अन्वेषण एवं पारस्परिक क्रिया में सक्रियता निहित होती है तथा सार्थक अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

43. बालक विविध प्रकार से सीखते हैं

(a) शिक्षक के भाषण द्वारा

(b) प्रयोग द्वारा, विवेचन द्वारा, प्रश्न पूछकर, क्रिया करके तथा चिन्तन करके

(c) शिक्षक द्वारा निर्देशित, नियंत्रित पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण द्वारा

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) बालकों में सीखने की क्रिया विविध प्रकार से होती है -

1. क्रिया विधि द्वारा 2. प्रश्न पूछ कर
3. विषयवस्तु पर चिंतन करके 4. प्रयोग द्वारा
5. विवेचना द्वारा आदि।

44. कौशल को सीखने में पहली अवस्था होती है

(a) यथार्थता (b) चालाकी

(c) समन्वयन (d) अनुकरण

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (d) किसी कला कौशल को सीखने का प्रथम चरण नकल (अनुकरण) होता है। अनुकरण के माध्यम से ही बालक सर्वप्रथम समस्या को समझने का प्रयत्न करता है।

45. पढ़ने की वह तकनीक जिसका उपयोग तालिका में स्थित शब्दावली तथा प्रसंग में किया जा सकता है, कहलाता है

(a) की-रीडिंग (b) री-रीडिंग

(c) स्कैनिंग (d) स्किमिंग

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (c) किसी तालिका या कोश में से शब्दावलियों तथा संदर्भो को चिंहित करने हेतु इस्तेमाल की जाने वाली तकनीकी जाँच (स्कैनिंग) है। इस तकनीकी का प्रयोग मुख्य बिन्दुओं को इंगित करने के लिए किया जाता है।

46. दूसरे व्यक्ति के बाह्य व्यवहार की नकल है -

(a) सीखना (b) अनुकरण

(c) कल्पना (d) चिन्तन

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) दूसरे व्यक्तियों के बाह्य व्यवहारों की नकल करना ही अनुकरण कहलाता है। जिन व्यक्तियों के व्यवहारों का अनुकरण किया जाता है उन्हें निदर्श (Models) कहा जाता है।

47. बच्चा किस प्रकार सीखता है?

(a) पुस्तकें पढ़कर (b) परिचर्चा द्वारा

(c) प्रश्न पूछकर (d) कई प्रकार से

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011
DSSSB PRT

Ans: (d) सीखना, व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की एक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे कई प्रकार से सीख सकते हैं-

जैसे - पुस्तकों को पढ़कर - परिचर्चा द्वारा
- अखबार पढ़ कर - प्रश्न पूछकर
- अनुकरण करके
- समस्याओं को हल करके आदि।

48. बच्चे किस प्रकार से सीखते हैं? नीचे दिए गए कथनो में से कौन-सा इस प्रश्न के विषय में सही नहीं है?

(a) बच्चे केवल कक्षा में सीखते हैं।

(b) बच्चे तब सीखते हैं जब वे संज्ञानात्मक रूप से तैयार होते हैं।

(c) बच्चे अनेकों प्रकार से सीखते हैं।

(d) बच्चे सीखते हैं क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से प्रेरित होते हैं।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (a) बच्चे जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं, तथा वे हर समय तथा हर परिस्थिति में सीखते हैं तथा उनके सीखने का तरीका अलग-2 हो सकता है। यह गलत है कि बच्चे केवल कक्षा में सीखते हैं।

49. आप अनपढ़ माता–पिता के बच्चे को अंग्रेजी सिखाना चाहते हैं–

(a) आप बच्चे से अंग्रेजी में बात करेंगे

(b) आप बच्चे को अंग्रेजी में बोलने के लिए बाध्य करेंगे

(c) आप बच्चे को मातृभाषा में बोलने से रोकेंगे

(d) आप उसे मातृ–भाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे

DSSSB PRT
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (d) यदि कक्षा के अशिक्षित माता–पिता के बच्चे को अंग्रेजी सिखाना हो तो एक अध्यापक को उसे उसकी मातृभाषा की सहायता से ही अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करना चाहिए ताकि बालक उपयुक्त वातावरण के अभाव में भी अंग्रेजी सीख सके।

50. किस मनोवैज्ञानिक ने सीखने की सामग्री के रूप में निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया?

(a) विलियम जेम्स (b) स्किनर

(c) एबिंगहॉस (d) बार्टलेट

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) एबिंगहॉस मनोवैज्ञानिक ने सीखने की सामग्री के रूप में निरर्थक शब्दों का प्रयोग किया। उनके अनुसार निरर्थक शब्दों के प्रयोग से धीरे-धीरे सार्थक शब्दों का प्रयोग करना आसान हो जाता है।

अधिगम के वक्र तथा पठार

51. जब बच्चा कार्य करते हुए ऊबने लगता है, तो यह इस बात का संकेत है कि–

(a) संभवतः कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है

(b) बच्चा बुद्धिमान नहीं है

(c) बच्चे में सीखने की योग्यता नहीं है

(d) बच्चे को अनुशासित करने की ज़रूरत है

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (a) जब बच्चा किसी कार्य को लगातार करता है तो कुछ समय बाद उसकी उस काम में रुचि खत्म हो जाती है जिससे बच्चा ऊबने लगता है। जिसका आशय है कि कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है।

52. निम्न में से कौन–सा अधिगम का वक्र नहीं है?

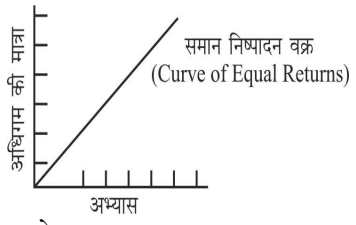
(a) नतोदर (b) मिश्रित

(c) लम्बवत् (d) उन्नतोदर (उत्तल)

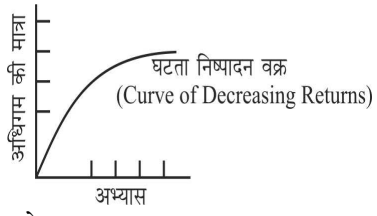
UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : सीखने की मात्रा तथा समय (अथवा प्रयास) के परस्पर संबंध को चित्रांकित करने पर जो वक्र रेखा प्राप्त होती है उसे अधिगम वक्र रेखा कहा जाता है। अधिगम वक्र मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं–

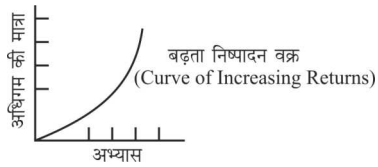
1. सरल रेखीय वक्र (Straight Line Curve)



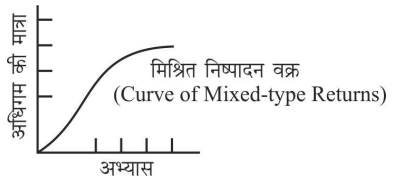
2. उन्नतोदर वक्र (Convex Curve)



3. नतोदर वक्र (Concave Curve)



4. मिश्रित वक्र (Combination type Curve)



53. निम्न में से कौन-सा अधिगम के पठार का कारण नहीं है?

(a) प्रेरणा की सीमा (b) विद्यालय का असहयोग
(c) शारीरिक सीमा (d) ज्ञान की सीमा

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) सीखने की मात्रा तथा समय (अथवा प्रयास) के परस्पर सम्बन्ध को चित्रांकित करने पर जो वक्र रेखा प्राप्त होती है उसे अधिगम वक्र रेखा कहा जाता है। अधिगम वक्रो में कभी-कभी देखा जाता है कि अधिगम वक्र का कुछ भाग अत्यन्त कम उन्नति को प्रदर्शित करता है। नगण्य उन्नति को प्रदर्शित करने वाले इस प्रकार के भाग अधिगम के पठार कहलाते हैं

अधिगम पठार बनने के कई कारण हो सकते हैं। जैसे- अधिगमकर्ता की आवश्यकता, ध्यान, रूचि, उत्साह, वातावरणीय व्यवधान, थकान, मनोशारीरिक सीमा, ज्ञान की सीमा आदि।

54. अधिगम वक्र में पठार बनता है

(a) परिपक्वता के कारण (b) अभिप्रेरणा के कारण
(c) थकान के कारण (d) अभिरुचि के कारण

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

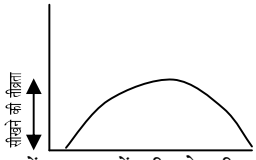
Ans : (c) सीखने की गति हमेशा एक तरह से नहीं रहती है, सीखने की गति में कभी तीव्रता तो कभी मंदता होती है। इसका मुख्य कारण थकान है। थकान के कारण जब अधिगम में अवरोध उत्पन्न होता है तो अधिगम प्रगति को रेखा चित्र में प्रदर्शित करने पर पठार जैसी अवस्था बनती है, जिसे अधिगम पठार कहा जाता है।

55. जिस वक्र रेखा में प्रारम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है और बाद में यह क्रमशः मन्द होती जाती है, उसे कहते हैं

(a) उन्नतोदर वक्र (Convex Curve)
(b) नतोदर वक्र (Concave Curve)
(c) मिश्रित वक्र रेखा (Combination Curve Line)
(d) वक्र रेखा नहीं होती है

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (a)



जिस वक्र रेखा में प्रारम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है और बाद में क्रमशः मन्द होती जाती है उसे उन्नतोदर वक्र (Convex Curve) कहते है।

56. 'सीखने के पठार' के निराकरण के लिए क्या नहीं करना चाहिए?

(a) सीखने वाले को प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहिए
(b) सीखने की अच्छी विधि का प्रयोग करना चाहिए
(c) उसे दण्डित करना चाहिए
(d) इनके कारणों का अध्ययन करना चाहिए

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) सीखने के पठार का अर्थ है सीखने में अवनति अर्थात् जब अधिगम प्रक्रिया में अधिगमकर्ता रुचि नहीं लेता या थक जाता है तो अधिगम में पठार आ जाता है। अधिगम के पठार के निराकरण के लिए अधिगमककर्ता को प्रेरित, प्रोत्साहित करना, अधिगम की अच्छी विधि का प्रयोग करना, अधिगम में पठार के कारणों का अध्ययन करना चाहिए किन्तु कभी भी सीखने वाले को दण्डित नहीं करना चाहिए।

57. किसी शिक्षक को यदि यह लगता है कि उसका एक विद्यार्थी जो पहले विषय-वस्तु को भली प्रकार सीख रहा था। उसमें स्थिरता आ गई है। शिक्षक को इसे

(a) सीखने की प्रक्रिया की स्वाभाविक स्थिति मानना चाहिए
(b) विषय को स्पष्टता से पढ़ाना चाहिए
(c) विद्यार्थी को प्रेरित करना चाहिए
(d) उपचारात्मक शिक्षण करना चाहिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (a) सीखने की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। इस प्रक्रिया में कभी मंदता तो कभी तीव्रता आती है। इसी प्रकार विद्यार्थियों में सीखने की प्रक्रिया में स्थिरता भी आती है जो अधिगम की स्वभाविक प्रक्रिया है। अतः शिक्षक को इसे स्वभाविक प्रक्रिया ही मानना चाहिए।

58. सीखने के वक्र

(a) सीखने की प्रगति के सूचक है
(b) सीखने की मौलिकता के सूचक हैं
(c) सीखने के गत्यात्मक स्वरूप के सूचक हैं
(d) सीखने की रचनात्मकता के सूचक हैं

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (a) सीखने का वक्र सीखने की प्रगति का सूचक होता है। सीखना कभी एक समान नहीं होता, कभी सीखने में अत्याधिक उन्नति होती है तो कभी सीखना मन्द हो जाता है और सीखने में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने इसी आधार पर अधिगम का मापन रेखा चित्र खीचकर करते हैं। इसे ही सीखने का वक्र कहा जाता है।

59. सीखने की वह अवधि, जब सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती, कहलाती है

(a) सीखने का वक्र (b) सीखने का पठार
(c) स्मृति (d) अवधान

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) सीखने की वह अवधि, जब सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती, सीखने का पठार कहलाती है।

60. अधिगम वक्र में पठार दर्शाता है–

(a) विलोप (b) पुनर्बलन
(c) स्वतः पुनःप्राप्ति (d) शून्य अथवा नगण्य सुधार

DSSSB PRT

Ans : (c) अधिगम वक्र में पठार स्वतः पुनः प्राप्ति को दर्शाता है। सीखने के दौरान प्रायः कुछ प्रयासों के बाद सीखने की गति में स्थिरता की स्थिति आ जाती है जिसे पठार कहते हैं। नीरसता, उत्साह में कमी, पूर्व सीखने से या सीखने में मदद न मिलने जैसे कारणों से सीखने के पठार बनते हैं। सीखने के अंतिम दौर में प्रायः व्यक्ति उत्साह तथा मनोयोग से कार्य करता है जिसके कारण सीखने की मात्रा में बढ़ोत्तरी होती है इसे स्वतः पुनः प्राप्ति या स्वतः स्फूरण या अंतिम त्वरण कहते हैं।

अधिगम अनुभव

61. अधिगम अनुभवों को इस प्रकार से आयोजित किया जाना चाहिए जिससे अधिगम को सार्थक बनाया जा सके। नीचे दिए गए अधिगम अनुभवों में से कौन-सा बच्चों के लिए सार्थक अधिगम को सुगम नहीं बनाता है?

(a) विषय-वस्तु को केवल याद करने के आधार पर पुनरावृत्ति
(b) विषय-वस्तु पर प्रश्न बनाना
(c) प्रकरण पर परिचर्चा और वाद-विवाद
(d) प्रकरण पर प्रस्तुतीकरण

DSSSB PRT

Ans : (a) अधिगम अनुभवों को इस प्रकार से आयोजित किया जाना चाहिए जैसे कि विषय वस्तु पर प्रश्न बनाना, प्रकरण पर चर्चा और वाद-विवाद करना, प्रकरण पर प्रस्तुतीकरण देना, ये सब अधिगम अनुभव को सुगम बनाते हैं। जबकि किसी विषय-वस्तु को केवल याद करने के आधार पर पुनरावृत्ति कराना अधिगम को सुगम व सार्थक नहीं बनाता है।

अधिगम शैली

62. शिक्षार्थियों के बीच अधिगम शैली में अन्तर का कारण हो सकता है–

(a) शिक्षार्थी की समाजीकरण प्रक्रिया
(b) शिक्षार्थी द्वारा अपनाई गई विचारणा नीति
(c) परिवार की आर्थिक स्थिति
(d) बालक का लालन-पालन

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (b) शिक्षार्थियों द्वारा अपनायी गयी विचारणा नीति अर्थात् उनके सोचने–समझने के तरीकों के कारण अधिगम शैली में भिन्नता पायी जाती है।

63. सुरेश सामान्य रूप से एक शांत कमरे में अकेले पढ़ना चाहता है, जबकि मदन एक समूह में अपने मित्रों के साथ पढ़ना चाहता है। यह उनके ..... में विभिन्नता के कारण है।

(a) मूल्यों (b) अभिक्षमता
(c) अधिगम शैली (d) परावर्तकता -स्तर

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (c) वैयक्तिक भिन्नता के कारण प्रत्येक व्यक्ति के रूचि, मनोवृत्ति, अवधान, अधिगम-शैली, विचार, बुद्धि, चिन्तन स्तर आदि में अन्तर पाया जाता है। इसलिए कोई व्यक्ति शांत वातावरण में पढ़ना चाहता है जबकि कोई अपने मित्रों के साथ समूह में। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उनके अधिगम शैलियों में अंतर होता है।

64. सुरेश सामान्य रूप से एक शान्त कमरे में अकेले पढ़ना चाहता है, जबकि मदन एक समूह में अपने मित्रों के साथ पढ़ना चाहता है। यह उनके ..... में विभिन्नता के कारण है।

(a) अभिक्षमता (b) अधिगम शैली
(c) परावर्तकता–स्तर (d) मूल्यों

DSSSB PRT

Ans : (b) सुरेश सामान्य रूप से एक शान्त कमरे में अकेले पढ़ना चाहता है, जबकि मदन एक समूह में अपने मित्रों के साथ पढ़ना चाहता है। यह उनके अधिगम शैली में विभिन्नत के कारण है। अधिगम शैली में विभिन्नता उनकी रूचियों, क्षमताओं, सामाजिक संरचनाओं के आधार पर हो सकती है।

65. निम्नलिखित में से कौन सा एक संबंधात्मक अधिगम शैली की विशेषता है?

(a) अनुक्रमिक सोच
(b) संपूर्ण के हिस्से के रूप में सूचना की धारणा
(c) सहज ज्ञान युक्त अधिगम
(d) आशुरचना या तात्कालिक प्रदर्शन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : अनुक्रमिक सोच (Sequential thinking) संबंधात्मक अधिगम शैली की विशेषता है जबकि सहज ज्ञान युक्त अधिगम, सम्पूर्ण के हिस्से के रूप में सूचना की धारणा तथा आशुरचना या तात्कालिक प्रदर्शन, ये सभी संज्ञानात्मक अधिगम शैली की विशेषताएँ है।

66. जो छात्र कक्षा में दूसरों को परेशान करते हैं उनके पास ..... प्रकार की सीखने की शैली होने की संभावना होती है।

(a) गतिसंवेदी (क्राइनेस्थेटिक) (b) स्पर्शनीय (टैक्टाइल)
(c) श्रवण (d) दृश्य

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : जो छात्र कक्षा में दूसरों को परेशान करते हैं उनके पास गति संवेदी (काइनेस्थेटिक) प्रकार की सीखने की शैली होने की संभावना होती है। गति संवेदी प्रकार की अधिगम शैली वाले बालक सीखने के लिए सुनने या देखने के बजाय शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करते हैं। ऐसे छात्र प्रायः कक्षा में कठिनाई उत्पन करते हैं।

67. निम्न में से कौन-सा सीखने की शैली का एक उदाहरण है?

(a) संग्रहण (b) तथ्यात्मक

(c) स्पर्श-सम्बन्धी (d) चाक्षुष

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (d) चाक्षुष अर्थात् जिसके बोध नेत्र से हो। इस प्रकार सीखने का एक उत्तम उदाहरण चाक्षुष शैली हो सकता है। बालक इस शैली के माध्यम से किसी कार्य या व्यवहार का प्रत्यक्षीकरण करता है फिर वह उस व्यवहार का अनुकरण करता है जो एक बालक के सीखने के लिए सर्वोत्तम विधि है।

68. बच्चे के विकास के सिद्धान्तों को समझना शिक्षक की सहायता करता है –

(a) शिक्षार्थियों को क्यों पढ़ाना चाहिए - यह औचित्य स्थापित करने में

(b) शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम-शैलियों को प्रभावी रूप में संबोधित करने में

(c) शिक्षार्थी के सामाजिक स्तर को पहचानने में

(d) शिक्षार्थी की आर्थिक पृष्ठभूमि को पहचानने में

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011
DSSSB PRT
UK TET (I-V) 2014

Ans: (b) बच्चों के विकास के सिद्धान्त को समझना शिक्षक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसके माध्यम से शिक्षक बच्चों की रूचियों, व्यवहारों, संवेगों आदि को सही दिशा में निर्देशित कर सकता है, उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपने शिक्षण शैलियों का निर्माण कर सकता है एवं उन्हें प्रभावी रूप से संचालित कर सकता है।

69. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि–

(a) शिक्षार्थी हमेशा समूहों में ही बेहतर सीखते हैं।

(b) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसा ही बताया गया है।

(c) इससे प्रत्येक शिक्षार्थी को अनुशासित करने के लिए शिक्षकों को बेहतर अवसर मिलते हैं।

(d) बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं।

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं।

अधिगम अंतरण/स्थानान्तरण

70. स्कूटर चलाने वाले व्यक्ति द्वारा कार चलाना सीखते समय उसके पूर्व–अनुभवों का सहायक होना, किस प्रकार के अधिगम अंतरण का उदाहरण है?

(a) क्षैतिज अन्तरण (b) धनात्मक अंतरण

(c) ऊर्ध्व अंतरण (d) द्वि–पार्श्विक अंतरण

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : जब किसी परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, अनुभव अथवा परीक्षण का उपयोग प्राणी के द्वारा किसी अन्य भिन्न प्रकार की अथवा उच्चस्तरीय परिस्थितियों के अध्ययन में किया जाता है तब इसे सीखने का उर्ध्व अन्तरण कहते हैं। उदाहरण के लिए– स्कूटर चलाने वाले व्यक्ति द्वारा कार चलाना सीखते समय उसके पूर्व अनुभवों का सहायक होना।

71. एक बालक कक्षा में सीखे गए गणित का उपयोग किसी अन्य विषय के प्रश्न को हल करने में करता है, तो यह है–

(a) अधिगम का सकारात्मक स्थानांतरण

(b) अधिगम का शून्य सथानांतरण

(c) अधिगम का नकारात्मक स्थानांतरण

(d) प्रेरणात्मक स्थानांतरण

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (a) बालक द्वारा सीखे गये गणित का उपयोग किसी अन्य विषय के प्रश्न को हल करने में किया जाय तो इसे अधिगम का सकारात्मक स्थानान्तरण कहते हैं।

72. एक विद्यार्थी गुणन के सवालों को हल करना सीखता है। वह अपने 'जोड़' के पूर्व ज्ञान का प्रयोग करता है। इस प्रकार के अधिगम अन्तरण को क्या कहा जाता है?

(a) धनात्मक अन्तरण (b) क्षैतिज अन्तरण

(c) ऊर्ध्व अन्तरण (d) द्विपार्श्विक अन्तरण

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) गुणन के सवालों को हल करने में अपने जोड़ के पूर्व के ज्ञान का प्रयोग करना ऊर्ध्व अन्तरण अधिगम कहलाता है। उर्ध्व अंतरण का अर्थ है– जब किसी परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, अनुभव अथवा प्रशिक्षण का प्रयोग व्यक्ति किसी अन्य प्रकार अथवा उच्चस्तरीय परिस्थितियों के अध्ययन में करता है तो इसे उर्ध्व अंतरण कहते है। जैसे– गुणन के सवालों को हल करने में अपने जोड़ के पूर्व अनुभव या ज्ञान का प्रयोग करना अधिगम का उर्ध्व अंतरण है।

73. अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता को बढ़ाने के लिए अध्यापक को नहीं करना चाहिए

(a) स्व-क्रिया को प्रोत्साहित करना

(b) रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना

(c) सूझ द्वारा सीखने का विकास करना

(d) सामान्यीकरण पर बल देना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) रटने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने से अधिगम स्थानान्तरण की योग्यता बाधित होगा अतः अध्यापकों को इस तरह के प्रोत्साहन से बचना चाहिए।

74. शब्द IDENTICAL ELEMENTS (समान तत्व) निम्न से गहन सम्बन्ध रखता है

(a) समान परीक्षा प्रश्न (b) सहयोगियों से ईर्ष्या

(c) अधिगम स्थानान्तरण (d) समूह निर्देशन

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) IDENTICAL ELEMENT (समानतत्व) अधिगम स्थानान्तरण सिद्धांत से सम्बंधित है। इस सिद्धांत का प्रतिपादन थार्नडाइक एवं वुडवर्थ ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार एक विषय का अध्ययन दूसरे विषय के अध्ययन में तभी सहायक सिद्ध हो सकता है जबकि इन दोनों विषयों में कुछ तत्व समान हो।

75. एक क्रिकेट खिलाड़ी अपनी गेंदबाजी के कौशल को विकसित कर लेता है, पर यह उसके बल्लेबाजी के कौशल को प्रभावित नहीं करता। इसे कहते हैं

(a) विधेयात्मक प्रशिक्षण अन्तरण

(b) निषेधात्मक प्रशिक्षण अन्तरण

(c) शून्य प्रशिक्षण अन्तरण

(d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (c) किसी एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, कौशल, आदतों, विचारों आदि का किसी अन्य परिस्थिति में उपयोग करना अधिगम अंतरण कहलाता है। जब व्यक्ति का पूर्व अर्जित ज्ञान, अनुभव या प्रशिक्षण का प्रभाव नवीन ज्ञान अर्जित करने की प्रक्रिया पर नहीं पड़ता है तो इसे शून्य अधिगम अंतरण कहते है। प्रश्न में क्रिकेट खिलाड़ी के गेदबाजी के कौशल का प्रभाव बल्लेबाजी पर नहीं पड़ता तो यहाँ शून्य अधिगम अंतरण होगा।

76. सीखने का स्थानान्तरण है-

(a) सीखी गई वस्तु को सँभालना

(b) सीखी हुई तरकीब का वैसा ही उपयोग

(c) सीखी हुई वस्तु का अन्य परिस्थिति में प्रयोग

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) पूर्व में सीखे गये ज्ञान/वस्तु का प्रयोग किसी अन्य परिस्थिति में करना सीखने का स्थानान्तरण कहलाता है। जैसे साइकिल चलाने की कला का प्रयोग स्कूटर चलाने से करना।

77. दर्पण चित्र परीक्षण किसको मापने हेतु प्रयुक्त होता है?

(a) अधिगम की गति (b) अधिगम-अन्तरण

(c) सृजनात्मकता (d) अभिरुचि

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) दर्पण चित्र परीक्षण अधिगम अन्तरण को मापने हेतु प्रयुक्त होता है।

78. निम्न में कौन शेष से भिन्न है?

(a) अधिगम के लिए अधिगम का सिद्धान्त

(b) समान अवयवों का सिद्धान्त

(c) ड्राइव रिडक्शन सिद्धान्त

(d) सामान्यीकरण का सिद्धान्त

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) अधिगम के लिए अधिगम का सिद्धान्त, समान अवयवों का सिद्धान्त, सामान्यीकरण का सिद्धान्त ये सभी अधिगम स्थानान्तरण के सिद्धान्त है। जबकि ड्राइव रिडक्शन सिद्धान्त अधिगम का सिद्धान्त है जिसका प्रतिपादन क्लार्क एल. हल ने किया था।

79. यदि पूर्व ज्ञान व अनुभव नये प्रकार के सीखने में सहायता करते हैं, तो उसे कहते हैं-

(a) नकारात्मक प्रशिक्षण स्थानान्तरण

(b) सकरात्मक प्रशिक्षण स्थानान्तरण

(c) प्रशिक्षण स्थानान्तरण

(d) सीखना

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) धनात्मक अन्तरण को सकारात्मक अन्तरण भी कहते हैं। जब पूर्व अर्जित ज्ञान नवीन ज्ञान को अर्जित करने में सहायक होता है तो उसे धनात्मक या सकारात्मक अन्तरण कहते हैं।

80. जब मानव शरीर के एक भाग को दिए गए प्रशिक्षण का अन्तरण दूसरे भाग में हो जाता है तो इसे कहते हैं -

(a) ऊर्ध्व अन्तरण (b) क्षैतिज अन्तरण

(c) द्विपार्श्विक अन्तरण (d) उपरोक्त में से कोई नहा

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) मानव शरीर को दो भागों में बाँटा जा सकता है - दायाँ भाग और बायाँ भाग। जब मानव शरीर के एक भाग को दिये गये प्रशिक्षण का अंतरण दूसरे भाग में होता है तो इसे दिपार्श्विक अंतरण कहते हैं। जैसे दायें हाँथ से लिखने की योग्यता का उपयोग बायें हाँथ से लिखने में करना।

81. एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान का दूसरी परिस्थिति में उपयोग कहलाता है

(a) **सीखने की विधियाँ** (b) **सीखने में स्थानान्तरण**

(c) सीखने में पठार (d) सीखने में रुचि

Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान का दूसरी परिस्थिति में उस ज्ञान के उपयोग को सीखने में स्थानान्तरण कहते हैं। अतः जब एक विषय का ज्ञान अथवा एक परिस्थिति में सीखी बातें दूसरे विषय को सीखने में अथवा अन्य परिस्थिति में सीखी जा रही बातों के अध्ययन में सहायक अथवा घातक होता है तो उसे सीखने का स्थानान्तरण या अन्तरण कहा जाता है।

82. अधिगम स्थानान्तरण के द्वि-तत्व सिद्धांत के प्रवर्तक थे।

(a) थॉर्नडाइक (b) स्पीयरमैन

(c) जड (d) गिलफोर्ड

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (b) अधिगम स्थानान्तरण के द्वि-तत्व सिद्धांत का प्रतिपादन ब्रिटेन के मनोवैज्ञानिक स्पीयरमैन ने किया। स्पीयरमैन के अनुसार बुद्धि की संरचना दो तत्वों से मिलकर बना है-

1. सामान्य योग्यता कारक (G-factor)

2. विशिष्ट योग्यता कारक (S-factor)

आमतौर पर जीवन में सामान्य बुद्धि का ही उपयोग किया जाता है तथा जहाँ तक विशिष्ट बुद्धि का प्रश्न है वह हर व्यक्ति में भिन्न प्रकार की होती है। स्पीयरमैन के अनुसार अधिगम स्थानान्तरण विशिष्ट योग्यता में न होकर सामान्य योग्यता में होता है।

83. सीखे हुए ज्ञान, कौशल या विषय का अन्य परिस्थितियों में उपयोग करने को कहते हैं

(a) प्रेरणा (b) सीखने का स्थानान्तरण

(c) भग्नाशा (d) चिन्ता

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) सीखे हुए ज्ञान, कौशल या विषय का किसी अन्य परिस्थितियों में उपयोग करने को सीखने का स्थानान्तरण कहते हैं। सीखने का स्थानान्तरण तीन प्रकार का होता है-

1. धनात्मक स्थानान्तरण
2. ऋणात्मक स्थानान्तरण
3. शून्य स्थानान्तरण

84. जब पूर्व का अधिगम नई स्थितियों के सीखने को बिल्कुल प्रभावित नहीं करता, तो यह ..... कहलाता है।

(a) अधिगम का शून्य स्थानांतरण

(b) अधिगम का निरपेक्ष स्थानांतरण

(c) अधिगम का सकारात्मक स्थानांतरण

(d) अधिगम का नकारात्मक स्थानांतरण

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (a) जब पूर्व का अधिगम नई स्थितियों के सीखने को बिल्कुल प्रभावित नहीं करता, तो यह अधिगम का शून्य स्थानांतरण कहलाता है।

85. एक बालक, जो साइकिल चलाना जानता है, मोटरबाइक चलाना सीख रहा है। यह उदाहरण होगा

(a) क्षैतिज अधिगम अन्तरण का

(b) ऊर्ध्व अधिगम अन्तरण का

(c) द्विपार्श्विक अधिगम अन्तरण का

(d) कोई भी अधिगम अन्तरण नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) जब किसी परिस्थिति में अर्जित ज्ञान, अनुभव, प्रशिक्षण का उपयोग प्राणी के द्वारा किसी अन्य भिन्न प्रकार की अथवा उच्चस्तरीय परिस्थितियों के अध्ययन में किया जाता है तो इसे सीखने का उर्ध्व अंतरण कहते है।

86. सीखने की प्रक्रिया में 'सीखने का स्थानान्तरण' हो सकता है

(a) सकारात्मक (b) नकारात्मक

(c) शून्य (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) जब एक विषय का ज्ञान अथवा एक परिस्थिति में सीखी बातें दूसरे विषय को सीखने में अथवा अन्य परिस्थिति में सीखी जा रही बातों के अध्ययन में सहायक या घातक होती है तो उसे सीखने का स्थानान्तरण कहा जाता है। यह स्थानानतरण कई प्रकार का हो सकता है - सकारात्मक स्थानान्तरण, नकारात्मक स्थानान्तरण, शून्य स्थानान्तरण, क्षैतिज स्थानान्तरण, उर्ध्व स्थानान्तरण, द्विपार्श्विक स्थानान्तरण।

87. एक बच्चा ऊनो खेलने के लिए एक नया तरीका सीखने में असमर्थ है क्योंकि वह पहले से ही अलग नियम सीख चुका है। इसका क्या कारण हो सकता है?

(a) सहज पुनः प्राप्ति (b) पृष्ठनोमुंखी अवरोध

(c) अग्रोनमुखी अवरोध (d) विलम्बित प्रभाव

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : एक बच्चा ऊनों खेलने के लिए एक नया तरीका सीखने में असमर्थ है क्योंकि वह पहले से ही अलग नियम सीख चुका है। इसका कारण अग्रोन्मुखी अवरोध (Proactive interference) हो सकता है। अग्रोन्मुखी अवरोध नये नियम या सामग्रियों को अधिग्रहण करने और पुनः प्राप्ति पर पहले से सीखी गयी सामग्रियों के हस्तक्षेप को संदर्भित करता है।

88. निम्नलिखित में से क्या होगा यदि पहले कार्य की उत्तेजना, दूसरे कार्य में समानता से अधिक है :

(a) कोई भी स्थानांतरण नहीं होगा।

(b) स्थानांतरण का विस्तार न्यूनतम होगा।

(c) स्थानांतरण का विस्तार कम होगा।

(d) स्थानांतरण का विस्तार अधिक होगा।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : यदि पहले कार्य की उत्तेजना, दूसरे कार्य में समानता से अधिक है तो स्थानांतरण का विस्तार अधिक होगा। अर्थात् कार्य की उत्तेजना पर स्थानान्तरण की प्रकृति ज्यादा निर्भर करती है बजाय समानता के। ध्यातव्य है कि समानता के सिद्धांत का प्रतिपादन ई.एल. थार्नडाइक ने किया था जो सादृश्यता के नियम का ही एक विस्तार है।

अधिगम के सिद्धांत

89. स्तम्भ–A तथा स्तम्भ–B को सुमेलित कीजिए।

स्तम्भ–A		स्तम्भ–B	
A.	एनिमल इंटैलिजेंस	I.	गेस्टॉल्ट
B.	पुनर्बलन की अनुसूची	II.	पियाजे
C.	सारगर्भिता का नियम	III.	थॉर्नडाइक
D.	अनुकूलन	IV.	स्किनर

	A	B	C	D
(a)	I	IV	III	II
(b)	II	IV	III	I
(c)	II	IV	I	III
(d)	III	IV	I	II

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (d) :

स्तम्भ– A		स्तम्भ–B	
A.	एनिमल इंटेलिजेन्स	III.	थॉर्नडाइक
B.	पुनर्बलन की अनुसूची	IV.	स्किनर
C.	सारगर्भिता का नियम	I.	गेस्टॉल्ट
D.	अनुकूलन	II.	पियाजे

90. अधिगम का व्यावहारिक सिद्धान्त निम्न है-

(a) सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त
(b) स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम का सिद्धान्त
(c) प्रबलन सिद्धान्त
(d) उपरोक्त सभी

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) अधिगम के व्यवहारिक सिद्धांत के अन्तर्गत स्किनर का क्रिया प्रसूत सिद्धांत, सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धांत तथा प्रबलन के सिद्धांत आते हैं।

91. एस-ओ-आर किसके द्वारा प्रस्तावित किया गया है?

(a) वाटसन (b) कोफ्का
(c) कोहलर (d) गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (*) S-O-R (Stimulus-Organism-Response) अमेरिकी वैज्ञानिक **बुडवर्थ** के द्वारा प्रस्तावित किया गया था। यह संकल्पना अधिगम के क्षेत्र में उद्दीपन अनुक्रिया के बीच संज्ञान को महत्व देता है। जबकि वाटसन का मानना था कि मानव व्यवहार उद्दीपक अनुक्रिया (S-R) सम्बन्ध को इंगित करता है। प्राणी का प्रत्येक व्यवहार किसी न किसी तरह से उद्दीपक के प्रति एक अनुक्रिया ही होती है।

92. अधिगम सिद्धांत, माता-पिता की भूमिका को उनके बच्चे के विकास में कैसे चिन्हित करते हैं?

(a) प्रशिक्षकों के रूप में (b) शिक्षकों के रूप में
(c) भागीदारों के रूप में (d) समर्थकों के रूप में

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : अधिगम सिद्धांत, माता–पिता की भूमिका को उनके बच्चे के विकास में प्रशिक्षकों के रूप में चिन्हित करते हैं। व्यवहारवादी अधिगम का सिद्धांत मानता है कि बच्चों को सीखने के लिए मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है जिसके लिए माता–पिता का सहयोग आवश्यक होता है। व्यवहारवादी स्किनर का मानना है कि माता–पिता क्रिया प्रसूत अनुबंधन के अनुसरण द्वारा बालकों में वांछित व्यवहार विकसित कर सकते हैं।

93. बाल विकास के निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांतकार, उत्तेजना प्रतिक्रिया अधिगम सिद्धांत से संबद्ध नहीं है:

(a) पावलॉव (b) जे.बी. वासटन
(c) गेसेल (d) हल

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : उत्तेजना प्रतिक्रिया अधिगम सिद्धांत से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक पॉवलव, जे.बी. वाटसन, हल, थार्नडाइक आदि हैं जबकि डॉ. अर्नोल्ड गेसेल द्वारा बाल विकास का गणित सिद्धांत पेश किया गया था, जिसके अध्ययन में पाठ्यक्रम, पैटर्न, सामान्य और असाधारण बच्चों में ''विकास की दर'' पर ध्यान केन्द्रित किया गया था।

थार्नडाइक का अधिगम सिद्धांत एवं नियम

94. उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?

(a) पावलोव (b) थॉर्नडाइक
(c) स्किनर (d) कोह्लर

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन एडवर्ड एल.थार्नडाइक ने किया था। इवान पी. पावलव ने क्लासिकल अनुबंधन सिद्धान्त का, बी.एफ.स्कीनर ने क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त का तथा कोहलर ने अंतर्दृष्टि के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था।

95. निम्नलिखित में से कौन–सा नियम थॉर्नडाइक के सीखने के गौण नियमों में शामिल नहीं है?

(a) सादृश्यता का नियम
(b) बहु–प्रतिक्रिया का नियम
(c) आंशिक क्रिया का नियम
(d) क्रिया–प्रतिक्रिया का नियम

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : थॉर्नडाइक के सीखने के गौण नियमों की संख्या 5 है जो निम्नलिखित हैं–

1. बहु–अनुक्रिया/प्रतिक्रिया का नियम
2. मनोवृत्ति का नियम
3. आंशिक क्रिया का नियम
4. सादृश्यता का नियम
5. साहचर्यात्मक रूपान्तरण का नियम

96. अधिगम प्रक्रिया उद्दीपन एवं ..... के बीच की संगति है।

(a) पूर्व अनुभव (b) व्यवहार
(c) अनुक्रिया (d) पशु

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : अधिगम प्रक्रिया उद्दीपन एवं अनुक्रिया के बीच संगति है। थॉर्नडाइक के अनुसार, अधिगम की प्रक्रिया के दौरान उद्दीपक (Stimulus) एवं अनुक्रिया (Response) के बीच एक प्रकार के बंधन अथवा सम्बन्ध बन जाते हैं जिन्हें उद्दीपक अनुक्रिया बन्धन (S-R Bonds) कहते हैं।

97. थॉर्नडाइक का कौन-सा नियम सीखने में पुरस्कार और दंड के महत्व का बताता है?

(a) तत्परता का नियम (b) प्रभाव का नियम
(c) अभ्यास का नियम (d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) थॉर्नडाइक के प्रभाव के नियम में सीखने के लिए दण्ड एवं पुरस्कार के महत्व को बताया गया है।

98. अधिगम कार्य के लिए विद्यार्थियों की तत्परता का आकलन करना शिक्षकों के लिए कठिन है, क्योंकि-

(a) तत्परता के सभी तत्व एक साथ परिपक्व नहीं होते
(b) तत्परता के अधिकतर तत्व बाह्य रूप से दृश्य नहीं होते
(c) अभिभावक अपने बच्चों को उपलब्धि के लिए धकेलते हैं

(d) शिक्षक विद्यार्थियों के बाह्य व्यवहार का निर्णय करने में कमजोर होते हैं

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (a) अधिगम कार्य के लिए विद्यार्थियों की तत्परता का आकलन करना शिक्षकों के लिए कठिन होता है क्योंकि विद्यार्थी में तत्परता के सभी तत्व एक साथ परिपक्व नहीं होते हैं। तत्परता के तत्व है-

1. परिस्थितियाँ 2. सामाजिक परिवेश 3. बुद्धि का विकास
4. विषय-वस्तु की समझ होना 5. अभिप्रेरणा स्तर

99. जब बालक सीखने के लिए तैयार होता है, तब वह जल्दी व प्रभावशाली तरीके से सीखता है यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है-

(a) थॉर्नडाइक द्वारा (b) स्किनर द्वारा
(c) पावलॉव द्वारा (d) कुर्ट लेविन द्वारा

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (a) थॉर्नडाइक के अनुसार- जब बालक सीखने के लिए तैयार होता है तब वह जल्दी एवं प्रभावशाली तरीके से सीखता है। यह तत्परता के नियम को प्रदर्शित कर रहा है।

100. जब अध्यापक एक छात्र को सफलता का अहसास कराता है तो वह उपयोग कर रहा होता है

(a) तत्परता के नियम का (b) अभ्यास के नियम का
(c) प्रभाव के नियम का (d) मानसिक तत्परता के नियम का

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) अध्यापक द्वारा छात्र को सफलता का अहसास करना प्रभाव के नियम का उपयोग करना है।

101. एक कॉलेज जाने वाली लड़की ने फर्श पर कोट फेंकने की आदत डाल ली है। लड़की की माँ ने उससे कहा कि कमरे से बाहर जाओ और कोट को खूँटी पर टाँगो। लड़की अगली बार घर में प्रवेश करती है, कोट को हाथ पर रख कर अलमारी की तरफ जा कर कोट को खूँटी पर टाँग देती है। यह उदाहरण है

(a) शृंखलागत अधिगम का
(b) उद्दीपन-अनुक्रिया अधिगम का
(c) प्रत्यय अधिगम का
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (b) प्रश्नागत उदाहरण उद्दीपन-अनुक्रिया अधिगम का उदाहरण है। इसे प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धांत भी कहते है।

102.निम्न में से कौन-सा सीखने के नियम में सम्मिलित नहीं है?

(a) अभ्यास (b) तत्परता
(c) खेल (d) प्रभाव।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) खेल सीखने के नियम में सम्मिलित नहीं है। थार्नडाइक ने इस सम्बन्ध में वृहत् अध्ययन किया एवं निष्कर्षतः अधिगम (सीखने) के तीन नियमों का प्रतिपादन किया। जो इस प्रकार हैं-

(i) अभ्यास का नियम
(ii) प्रभाव का नियम
(iii) तत्परता का नियम

103. 'तत्परता का नियम' किसने दिया है?

(a) पावलॉव (b) एबिंगहास
(c) थॉर्नडाइक (d) स्किनर

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) थॉर्नडाइक द्वारा तत्परता का नियम दिया गया। इस नियम के अनुसार जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए तैयार होता है तो वह प्रक्रिया उसे आनन्द देती है तो वह कार्य तेजी से करता है और जल्दी सीख जाता है।

104.'प्रयास व त्रुटि' में सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

(a) अभ्यास (b) प्रेरणा
(c) लक्ष्य (d) वाद-विवाद

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (c) प्रयास व त्रुटि में सबसे महत्त्वपूर्ण लक्ष्य होता है। थार्नडाइक ने अपने प्रयोग में पाया कि बिल्ली भोजन रूपी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कई प्रयास एवं त्रुटि करती है और अंततः लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होती है। इसलिए थार्नडाइक ने लक्ष्य या पुनर्बलन को प्रयास एवं त्रुटि सिद्धांत का केन्द्रिय तत्व माना है।

105.सीखने के 'प्रयास और भूल सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं

(a) कोह्लर (b) थॉर्नडाइक
(c) पावलॉव (d) स्किनर

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
UP TET 2014 (VI-VIII)
Jharkhand TET 2011 (I-V)

Ans: (b) सीखने के प्रयास एवं भूल का सिद्धांत थार्नडाइक द्वारा दिया गया। इसे उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत भी कहा जाता है। इसके लिए थार्नडाइक ने बिल्ली पर प्रयोग किया था। इस सिद्धांत के अनुसार त्रुटि (भूल) करते रहने से धीरे-धीरे किसी कार्य को करने की परिपक्वता आ जाती है।

106. थार्नडाइक का सिद्धान्त इनमें से किस वर्ग के तहत सूचीबद्ध किया जाता है?

(a) व्यवहारिकता का सिद्धान्त (b) ज्ञानात्मक सिद्धान्त
(c) मनोविश्लेषण सिद्धान्त (d) इनमें कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) थार्नडाइक एक व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक थे। अतः इनके सिद्धांत को व्यवहारिकता का सिद्धांत के अन्तर्गत रखा जाता है।

107. 'सीखने के नियम' के प्रतिपादक है

(a) फ्रायड (b) स्किनर
(c) थॉर्नडाइक (d) एडलर

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) थार्नडाइक द्वारा 'सीखने के नियम' का प्रतिपादन किया गया था। इसके अनुसार व्यक्ति विशेष कार्य में विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया करता है। थार्नडाइक ने सीखने के तीन नियम बताये -

(i) अभ्यास के नियम,
(ii) प्रभाव के नियम,
(iii) तत्परता का नियम।

108. अधिगम में ..... ने प्रभाव का नियम दिया था।

(a) पावलोव (b) स्किनर

(c) वाटसन (d) थॉर्नडाइक

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (d) थॉर्नडाइक ने अधिगम या सीखने के मुख्यतः तीन नियम दिए हैं-

1. तत्परता का नियम
2. प्रभाव का नियम
3. अभ्यास का नियम

प्रभाव के नियम के अनुसार हम उस कार्य को सीखना चाहते हैं जिसका परिणाम हमारे लिए हितकर होता है। प्रभाव संतोषजनक होने पर व्यक्ति उस अनुक्रिया को सीख लेता है तथा असंतोष उत्पन्न होने पर उस कार्य को नहीं करना चाहता है। प्रभाव के नियम को अध्यापक द्वारा कक्षा कक्ष में लागू करने के लिए मुख्यतः दो कार्य करने अति आवश्यक हैं-

1. शिक्षकों को अध्यापन कार्य करते समय बालकों का उत्साह बढ़ाना चाहिए।
2. शिक्षक को चाहिए कि पाठ्यक्रम को व्यस्थित करके छात्रों के सामने प्रस्तुत करें ताकि छात्रों में अधिगम के प्रति अभिरुचि बढ़ें।

109. अधिगम में प्रयत्न व भूल के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?

(a) पावलोव (b) हेगार्टी

(c) थॉर्नडाइक (d) हल

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) अधिगम में प्रयत्न व भूल के सिद्धांत का प्रतिपादन **थार्नडाइक** ने किया था। इस सिद्धांत के अनुसार प्रयास एवं त्रुटि के द्वारा सिखने वाला एक निश्चित उद्दीपक के लिए एक निश्चित अनुक्रिया करने में परिपक्व हो जाता है। इस सिद्धांत को उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत/चयन एवं सम्बंध का सिद्धांत भी कहते हैं। थार्नडाइक ने इस सिद्धांत का प्रयोग **बिल्ली** पर किया था।

110. सीखने के नियम दिए हैं

(a) पावलॉव ने (b) स्किनर ने

(c) थॉर्नडाइक ने (d) कोह्लर ने

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) सीखने का नियम थॉर्नडाइक ने प्रतिपादित किया है। थार्नडाइक का पूरा नाम एडवर्ड थार्नडाइक था। यह यू.एस.ए. के एक मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने पशु व्यवहार तथा सीखने की प्रक्रिया दोनों पर कार्य किया था जिससे उन्हीं के कार्य के आधार पर आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान की नींव पड़ी। थार्नडाइक ने सीखने के मुख्यतः तीन नियम दिए जो निम्नलिखित है-

1. तत्परता का नियम 2. प्रभाव का नियम 3. अभ्यास का नियम

111. साहचर्य के नियम हैं

(a) समानता का नियम (b) वैषम्य का नियम

(c) समीपता का नियम (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (d) साहचर्य का नियम है-

1. समानता का नियम
2. समीपता का नियम
3. वैषम्य का नियम

112. सीखने का प्राथमिक मूलभूत नियम सम्बन्धित है

(a) अभ्यास कार्य से (b) परिणाम की अपेक्षा से

(c) प्रशंसा से (d) तत्परता से

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) सीखने का प्राथमिक मूलभूत नियम तत्परता से सम्बन्धित है। थार्नडाइक के अनुसार सीखने के तीन मुख्य नियम हैं

1. तत्परता का नियम 2. अभ्यास का नियम
3. प्रभाव का नियम

तत्परता का नियम - 'यह नियम कार्य करने के पूर्व तत्पर या तैयार किए जाने पर बल देता है।' यदि हम किसी कार्य को सीखने के लिए तत्पर या तैयार होते हैं, तो उसे शीघ्र सीख लेते हैं। तत्परता में कार्य करने की इच्छा निहित होती है। ध्यान केंद्रित करने में भी तत्परता सहायता करती है।

113. जब बच्चे एक अवधारणा को सीखते हैं और उसका प्रयोग करते हैं, तो अभ्यास उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों को कम करने में मदद करता है। यह विचार.....के द्वारा दिया गया।

(a) जीन पियाज़े (b) जे.बी. वॉटसन

(c) लेव वाइगोत्स्की (d) ई.एल. थॉर्नडाइक

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (d) यह थॉर्नडाइक की प्रयास एवं त्रुटि सिद्धांत से संबंधित है। थॉर्नडाइक ने बिल्ली पर प्रयोग करके यह सिद्धांत प्रतिपादित किया।

114. ''एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।'' यह किससे सम्बन्धित है?

(a) सीखने का 'प्रभाव-नियम'

(b) सीखने की प्रक्रिया का 'अभिवृत्ति-नियम

(c) सीखने का 'तत्परता-नियम'

(d) सीखने का सादृश्यता-नियम

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (d) सीखने का सादृश्यता-नियम के अनुसार एक बच्चा किसी नवीन परिस्थिति या समस्या के उपस्थित होने पर उससे मिलती जुलती अन्य परिस्थिति का स्मरण करता है जिसे वह पहले भी अनुभव कर चुका है। वह उसके साथ वैसी ही प्रतिक्रिया करेगा जैसा कि उसने पहली परिस्थिति एवं समस्या के साथ की थी।

115. निम्नलिखित में से कौन सा सीखने का नियम नहीं है-

(a) तत्परता का नियम (b) तनाव का नियम

(c) प्रभाव का नियम (d) अभ्यास का नियम

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) तनाव का नियम, सीखने का नियम नहीं है जबकि तत्परता का नियम, प्रभाव का नियम तथा अभ्यास का नियम, सीखने के मुख्य नियम हैं।

116. निम्न में से कौन-सा सीखने के मुख्य नियमों में शामिल नहीं है?

(a) तत्परता का नियम (b) अभ्यास का नियम
(c) बहु-अनुक्रिया का नियम (d) प्रभाव का नियम

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) थार्नडाइक ने अपने प्रयोगों के आधार पर सीखने के कतिपय नियमों का प्रतिपादन किया। इन नियमों को मुख्यतः दो वर्गो में विभाजित किया जाता है- (1) मुख्य नियम (2) गौण नियम

(1) मुख्य नियम के अंतर्गत निम्नलिखित नियम है-
(i) तत्परता का नियम
(ii) अभ्यास का नियम
(iii) प्रभाव का नियम

(2) गौण नियम के अंतर्गत निम्नलिखित नियम है-
(i) बहुअनुक्रिया का निमय
(ii) मानसिक स्थिति का नियम
(iii) आंशिक क्रिया का नियम
(iv) सादृश्य अनुक्रिया का नियम

117. सीखने में प्रयास व भूल के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया?

(a) कोहलर (b) पैवलव
(c) थॉर्नडाइक (d) गेस्टाल्ट

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) सीखने में प्रयास व भूल के सिद्धान्त का प्रतिपादन थार्नडाइक महोदय ने किया। इसे उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त, सम्बन्धवाद/बधंन सिद्धान्त भी कहते है जबकि कोहलर ने सूझ या अंतर्दृष्टि का सिद्धान्त, पैवलव ने अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धान्त तथा गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिको में कोहलर, कोफ्का, लेविन बर्दाइमर जैसे मनोवैज्ञानिको के नाम सम्मिलित किये जाते हैं।

118. अधिगम के प्राथमिक सिद्धांतों के प्रणेता कौन हैं?

उत्तरः ई. एल. थार्नडाइक

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- अधिगम के प्राथमिक सिद्धान्त के प्रणेता इ. एल थार्नडाइक माने जाते हैं। 'पशु व्यवहार' एवं सीखने की प्रक्रिया' पर उनके कार्य के आधार पर ही आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान की वैज्ञानिक नींव पड़ी। ये मनोवैज्ञानिक कार्पोरेशन बोर्ड के सदस्य तथा सन् 1912 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ के अध्यक्ष भी रहे।

119. _____ वे मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रयत्न–त्रुटि अधिगम के प्रयोगों को संचालित किया था।

(a) थार्नडाइक (b) कोहलर
(c) स्किनर (d) पावलोव

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) एडवर्ड एल. थार्नडाइक वे मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रयत्न त्रुटि अधिगम के प्रयोगों को संचालित किया था। थार्नडाइक ने प्रयत्न–त्रुटि के सिद्धांत को समझने के लिए बिल्लियों, चूहों, मुर्गियों के ऊपर अधिगम सम्बन्धी अनेक प्रयोग करने के उपरान्त सीखने का सम्बन्धवाद सिद्धांत अर्थात उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धांत तथा सीखने के नियमों का प्रतिपादन किया।

120. 'सीखने के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त' का प्रतिपादन किसने किया?

उत्तरः ई. एल. थार्नडाइक

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-'सीखने के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त' का प्रतिपादन अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एडवर्ड एल. थार्नडाइक द्वारा सन् 1913 में किया गया। इन्होंने अपना प्रयोग बिल्ली पर किया जिसके आधार पर सीखने के तीन मुख्य नियमों- तत्परता का नियम, अभ्यास का नियम तथा प्रभाव का नियम प्रतिपादित किया। प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त को S-R bond (Stimulus-Response bond) सिद्धान्त भी कहा जाता है।

121. थार्नडाईक के सिद्धांत के अनुसार उत्तेजना-प्रतिक्रिया युग्मों की आवृत्ति, निम्न का गठन निर्धारित करता है–

(a) प्रबलन (b) आदत
(c) दंड (d) अनुबंधन

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) थार्नडाइक के सिद्धांत के अनुसार, उत्तेजना, प्रतिक्रिया (उद्दीपक–अनुक्रिया) युग्मों की आवृत्ति से आदत का निर्माण हो जाता है। इसको इस प्रकार समझ सकते हैं कि उद्दीपक–अनुक्रिया के बार–बार अभ्यास से मांसपेशियों तथा मस्तिष्क के स्नायु तंत्र उस क्रिया को करने के अभ्यस्त हो जाते हैं और प्राणी उस क्रिया की पुनरावृत्ति यंत्रवत करने लगता है, जिसे आदत कहा जा सकता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि किसी क्रिया को बार–बार करने से व्यक्ति की बुद्धि दृढ़ होती चली जाती है।

122. प्रयत्न-त्रुटि अधिगम के थार्नडाइक सिद्धांत ने _____ के महत्व पर जोर दिया है।

(a) प्रेरणा (b) पुरस्कार
(c) प्रशंसा (d) दंड

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : प्रयत्न–त्रुटि अधिगम के थार्नडाइक सिद्धांत ने प्रेरणा के महत्त्व पर जोद दिया है। थार्नडाइक ने अपने प्रयोगों के आधार पर सीखने के लिए दो बातों को अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना– (i) सीखने के लिए अभिप्रेरणा का होना आवश्यक है, (ii) अभिप्रेरणा की संतुष्टि के लिए पुर्नबलन जरूरी है।

123. तत्परता का नियम, अधिगम से पूर्व ..... की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

(a) अनुभव (b) पुनर्बलन
(c) अभ्यास (d) परिपक्वता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : तत्परता का नियम अधिगम से पूर्व परिपक्वता की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। तत्परता के नियम के अनुसार प्राणी जब सीखने के लिए तत्पर होता है, तब सीखने की क्रिया उसके लिए संतोषप्रद होती है तथा वह सरलता, शीघ्रता व स्थायी रूप से सीख लेता है। इसके ठीक विपरीत जब प्राणी सीखने के लिए तत्पर या तैयार नहीं होता है तब उसके लिए कोई भी बात सीखना कष्टप्रद होता है तथा वह अनेक प्रयासों के बावजूद भी ठीक ढंग से सीखने में प्रायः असफल रहता है। इसलिए तत्परता के नियम के अनुसार सीखने के लिए व्यक्ति को परिपक्व होना आवश्यक होता है।

124. संयोजनवाद का सिद्धांत (Theory of connectionism) इनके द्वारा प्रस्तावित किया गया था–

(a) स्किनर (b) टॉलमैन
(c) पावलॉव (d) थॉर्नडाइक

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) संयोजनवाद का सिद्धांत अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एडवर्ड एल. थॉर्नडाइक द्वारा प्रस्तावित किया गया था। इस सिद्धांत के अन्य नाम उद्दीपक–अनुक्रिया सिद्धांत, बंधन सिद्धांत, प्रयास व त्रुटि का सिद्धांत है।

125. थार्नडाइक के तत्परता के नियम को इस नाम से भी जाना जाता है :

(a) अभ्यास का नियम
(b) प्रभाव का नियम
(c) कार्य प्रवृत्ति का नियम
(d) सेट या मनोवृत्ति का नियम

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : थार्नडाइक के '**तत्परता के नियम**' को कार्य '**प्रवृत्ति का नियम**' **(Law of Action Tendency)** या '**तैयारी का नियम**' के नाम से भी जाना जाता है। थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत स्नायुतंत्र तथा उसकी संवहन इकाइयों की शारीरिक रचना क्रिया प्रणाली से सम्बन्धित है। इस सिद्धांत के अनुसार, बालकों को शिक्षा प्रदान करने से पूर्व ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए कि बालक में नवीन ज्ञान को अर्जित करने के लिए रूचि, जिज्ञासा व इच्छा जागृत हो सके ताकि वे नवीन ज्ञान को सीखने के लिए तत्पर हो जायें।

126. थॉर्नडाइक द्वारा उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धांत से संबंधित प्रयोग में किस जानवर का प्रयोग किया गया था?

(a) चूहा (b) कुत्ता
(c) बिल्ली (d) कबूतर

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : थार्नडाइक द्वारा उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धांत से सम्बन्धित प्रयोग में बिल्ली का प्रयोग किया गया था। स्किनर के क्रिया–प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत से सम्बन्धित प्रयोग में चूहे तथा कबूतर का, पावलव के क्लासिकल अनुबंधन सिद्धांत से सम्बन्धित प्रयोग में कुत्ते का प्रयोग किया गया था।

127. ई.एल. थॉर्नडाइक ने किस प्रकार के अधिगम का प्रस्ताव रखा ?

(a) क्रियाप्रसूत अनुबंधन (ऑपरेट कंडीशनिंग)
(b) प्रतिनिधिक अनुबंधन (वाइकेरियस कंडीशनिंग)
(c) शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग)
(d) प्रभाव अनुबंधन (इफेक्ट कंडीशनिंग)

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : ई.एल. थार्नडाइक ने अधिगम के प्रभाव अनुबंधन का प्रस्ताव रखा। थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित प्रभाव अनुबंधन के अनुसार ''जब किसी उद्दीपक तथा अनुक्रिया के मध्य कोई ऐसा परिवर्तनीय बंधन बनता है, जिसके साथ अथवा उपरान्त कोई संतोषप्रद परिस्थिति उत्पन्न होती हो, तब अन्य बातों के समान रहने पर यह उद्दीपक–अनुक्रिया बंधन सुदृढ़ हो जाता है जबकि उद्दीपक अनुक्रिया बन्धन के साथ अथवा उपरान्त असंतोषप्रद परिस्थिति उत्पन्न होने पर यह बंधन शिथिल हो जाता है।

128. शिक्षार्थी तब तक नहीं सीख सकते जब तक

(a) उन्हें शिक्षा के सामाजिक उद्देश्यों की आवश्यकताओं के अनुरूप न पढ़ाया जाए
(b) उन्हें यह पता न हो कि जो तथ्य उन्हें पढ़ाए गए हैं निकट भविष्य में उनका परीक्षण किया जाएगा
(c) वे सीखने के लिए तैयार न हों
(d) दैनिक आधार पर घर में उनके माता–पिता विद्यालय में उनके सीखने के बारे में नहीं पूछेंगे

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) शिक्षार्थी तब तक नहीं सीख सकते जब तक वे सीखने के लिए तैयार न हो। **थार्नडाइक** का तत्परता का नियम कहता है कि बच्चे तभी सीख सकते हैं जब वे सीखने के लिए तैयार हों। अतः शिक्षण कार्य करते समय अध्यापक सर्वप्रथम उनको विभिन्न युक्तियों की सहायता से सीखने के लिए तैयार करता है फिर शिक्षण कार्य प्रारम्भ करता है।

129. कक्षा शिक्षण में पाठ प्रस्तावना सोपान सीखने के किस नियम पर आधारित है?

(a) प्रभाव का नियम (b) सादृश्यता का नियम
(c) तत्परता का नियम (d) साहचर्य का नियम

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) तत्परता में कार्य करने की शक्ति निहित रहती है तथा साथ में तत्परता से सक्रियता भी बढ़ जाती है। तत्परता के नियम को तैयारी का नियम भी कहते हैं इस नियम के तहत निम्न कार्य करने चाहिए-

1. शिक्षकों को बालकों की अभिरुचि एवं अभिक्षमता का मापन कर लेना चाहिए। जिससे उनकी तत्परता का ज्ञान हो सके। (ज्ञात से अज्ञात की ओर)
2. बालकों के लिए तत्परता के अनुरूप शैक्षणिक व्यवस्था होनी चाहिए
3. पूर्व पाठ से कुछ 3 प्रश्न पूछ कर नवीन पाठ आरम्भ करनी चाहिए (पाठ प्रस्तावना)

भाटिया के अनुसार – ''तत्परता या किसी कार्य के लिए तैयार होना, युद्ध को आधा विजय कर लेना है।''

130. 'सीखने की तत्परता'------- की ओर संकेत करती है।

(a) थॉर्नडाइक का तत्परता का नियम
(b) शिक्षार्थियों का सामान्य योग्यता स्तर
(c) सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर
(d) सीखने के कार्य की प्रकृति को संतुष्ट करने

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (c) 'सीखने की तत्परता' सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर की ओर संकेत करती है। अर्थात् सीखने की तत्परता, विद्यार्थी के पूर्व अनुभव का वर्तमान स्तर तथा नवीन ज्ञात के बीच सम्बन्ध को मजबूत बनाती है।

131. थॉर्नडाइक का सिद्धान्त निम्न में से कौनसी श्रेणी में आता है?

(a) व्यवहारात्मक सिद्धान्त (b) संज्ञानात्मक सिद्धान्त
(c) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) थॉर्नडाइक एक व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने अधिगम के प्रयास एवं त्रुटि सिद्धांत का प्रतिपादन किया। ध्यातव्य है कि व्यवहारवाद के प्रवर्तक जे.बी. वाटसन माने जाते हैं तथा इसके समर्थकों में बी.एफ. स्किनर, पावलव जैसे मनोवैज्ञानिकों का नाम लिया जाता है।

पावलव का अधिगम सिद्धांत

132. प्राचीन अनुबंधन का सिद्धान्त किसने दिया ?

(a) स्किनर (b) स्पिनोविच
(c) पावलोव (d) बिने

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) प्राचीन अनुबंधन सिद्धान्त का प्रतिपादन इवान पी.पावलव ने किया था। इन्होंने अपना प्रयोग कुत्ते पर किया। पावलव वास्तव में रूस के एक शरीर वैज्ञानिक थे जिन्होंने पाचन क्रिया की दैहिकी का गहन अध्ययन किया।

133. क्लासिकल स्थिति का प्रतिपादक कौन था?

(a) स्किनर (b) पावलॉव
(c) वॉटसन (d) थॉर्नडाइक

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) क्लासिकल स्थिति का प्रतिपादन पावलॉव द्वारा किया गया जिसे शास्त्रीय अनुकूलन का सिद्धांत भी कहते है यह प्रयोग कुत्ते पर किया गया था।

134. राजू खरगोश से डरता था। शुरू में खरगोश को राजू से काफी दूर रखा गया। आने वाले दिनों में हर रोज खरगोश और राजू के बीच की दूरी कम कर दी गई। अन्त में राजू की गोद में खरगोश को रखा गया और राजू खरगोश से खेलने लगा। यह प्रयोग उदाहरण है

(a) प्रयत्न एवं त्रुटि सिद्धान्त का
(b) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त का
(c) क्रिया प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त का
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (b) किसी व्यक्ति का किसी अन्य से सम्बंधों में प्रगाढ़ता शास्त्रीय अनुबंध सिद्धांत कहलाता है। इस सिद्धांत के तहत दो व्यक्ति या वस्तुओं में आत्मीयता बढ़ती जाती है।

135.पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान को देखता है। बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है। राजू शोर सुन कर उछलता है। बार-बार यह घटना होती है। फिर कुछ देर शान्ति के पश्चात बिजली कड़कती है। राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है। राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धान्त का उदाहरण है?

(a) शास्त्रीय अनुबन्धन (b) क्रियाप्रसूत अनुबन्धन
(c) प्रयत्न एवं भूल (d) इनमें से कोई नहीं।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत का प्रतिपादन पावलव ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी अनुक्रिया का सम्बन्ध किसी विशेष प्रकार के उद्दीपक के साथ स्थापित हो जाने पर उद्दीपक जैसे ही प्रस्तुत होती है अनुक्रिया स्वतः होने लगती है इस प्रकार अधिगम हो जाता है। प्रश्न में राजू बिजली चमकने और कड़कने की आवाज सुनकर उछलता है। बाद में जब पुनः बिजली कड़कती है तो वह पुनः उछल पड़ता है। इस प्रकार उसकी अनुक्रिया 'उछलना' उद्दीपक 'बिजली के कड़कने' के साथ सम्बन्धित हो गयी है। फलस्वरूप उस विशेष उद्दीपक के प्रति वह विशेष अनुक्रिया करना सीख गया है।

136.सीखने का 'क्लासिकल कण्डीशनिंग' सिद्धान्त प्रतिपादित किया था

(a) स्किनर (b) पावलॉव
(c) थॉर्नडाइक (d) कोह्लबर्ग

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
Jharkhand TET 2011 (I-V)

Ans: (b) सीखने की क्लासिकल कण्डीशनिंग सिद्धांत का प्रतिपादन पावलव द्वारा किया गया। इसे सम्बंध प्रत्यावर्तन सिद्धांत भी कहा जाता है। इसके अनुसार ''सीखना एक अनुकूलित अनुक्रिया है।''

137. अनुबन्धन की प्रक्रिया में प्रथम सोपान निम्नांकित में से कौन-सा है?

(a) उत्तेजना (b) आवृत्ति
(c) सामान्यीकरण (d) इनमें से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (a) पावलॉव द्वारा प्रतिवादी अनुबंध सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया इसे अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत भी कहते है। इस प्रक्रिया में प्रथम सोपान उत्तेजना होता है। यही उत्तेजना पहले किसी विशेष अनुक्रिया के साथ लगी रहती है तथा अन्त में यह व्यवहार का कारण बन जाती है।

138. पावलॉव ने सीखने के अनुबन्धन-प्रतिक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन..... पर प्रयोग करके किया था।

(a) खरगोश (b) चूहे
(c) कुत्ते (d) बिल्ली

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) पावलॉव ने सीखने के अनुबन्धन प्रतिक्रिया सिद्धांत का प्रयोग कुत्ते पर किया था। इस सिद्धांत में उद्दीपक तथा अनुक्रिया के बीच एक साहचर्य स्थापित होना दिखाया गया है। अर्थात अनुबन्ध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्दीपक तथा अनुक्रिया के मध्य एक साहचर्य स्थापित होता है।

139. ..... सम्बद्ध प्रतिक्रिया सिद्धांत में पावलॉव ने प्रयोग किया -

(a) बिल्ली पर (b) कुत्ते पर
(c) बन्दर पर (d) चूहे पर

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) अनुबंधित अनुक्रिया उद्दीपक सिद्धांत में पावलॉव ने कुत्ते पर प्रयोग किया जिसमें पावलॉव ने कुत्ते के लार स्रावित करने की क्रिया के आधार पर अनुबंधित अनुक्रिया सिद्धांत की व्याख्या की। बिल्ली पर थार्नडाइक द्वारा, चूहों पर स्किनर द्वारा एवं बन्दर पर कोहलर एवं कोफ्का ने प्रयोग किया था।

140. निम्नलिखित में से किसे अधिगम का एक संज्ञानात्मक रूप नहीं माना जाता है?

(a) प्रत्यधिकृत अनुबंधन (विकैरियस कंडीशनिंग)
(b) अव्यक्त अधिगम
(c) विश्लेषणात्मक अधिगम
(d) शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग)

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग) को अधिगम का एक संज्ञानात्मक रूप नहीं माना जाता है बल्कि यह व्यवहारवाद का रूप माना जाता है। शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत का प्रतिपादन रूसी शरीरशास्त्री आई.पी. पावलव ने किया था। इस सिद्धांत के अनुसार सीखना एक अनुकूलित अनुक्रिया है। बर्नार्ड के शब्दों में– ''अनुकूलित अनुक्रिया उत्तेजना की पुनरावृत्ति द्वारा व्यवहार का स्वचालन है जिसमें उत्तेजना पहले किसी विशेष अनुक्रिया के साथ लगी रहती है और अंत में वह किसी व्यवहार का कारण बन जाती है, जो पहले मात्र रूप से साथ लगी हुई थी।''

141. शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग) की प्रक्रिया के माध्यम से किस प्रकार की प्रतिक्रिया सीखी जाती है?

(a) असुविधाजनक प्रतिक्रिया (b) प्रबलित प्रतिक्रिया
(c) अनुकूलित प्रतिक्रिया (d) तटस्थ प्रतिक्रिया

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : शास्त्रीय अनुबंधन की प्रक्रिया के माध्यम से अनुकूलित प्रतिक्रिया सीखी जाती है। पावलव के क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धांत के अनुसार जब किसी अस्वाभाविक उद्दीपक (Unnatural Stinulus) को किसी स्वाभाविक उद्दीपक (Natural Stimulus) के साथ बार–बार प्रस्तुत किया जाता है तो धीरे–धीरे अस्वाभाविक उद्दीपक का स्वाभाविक उद्दीपक की स्वाभाविक अनुक्रिया के साथ सम्बन्ध जुड़ जाता है तथा बाद में केवल अस्वाभाविक उद्दीपक के प्रस्तुत होने पर व्यक्ति या जीव स्वाभाविक उद्दीपक की स्वाभाविक अनुक्रिया, जिसे अनुकूलित अनुक्रिया या अनुबंधित अनुक्रिया (Conditioned response) कहते हैं, देने लगता है।

142. कुत्ते के साथ पावलोव के प्रसिद्ध प्रयोग में, वह शब्द कौन सा था जिसका उपयोग उस भोजन का वर्णन करने के लिए किया गया था जिसके लिए कुत्ता स्वाभाविक रूप से लार टपकता था?

(a) स्वाभाविक अनुक्रिया (b) तटस्थ उद्दीपक
(c) स्वाभाविक उद्दीपक (d) अनुबंधित उद्दीपक

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : पावलन के क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति या जीव कुछ जन्मजात प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ, प्रतिक्रियाएँ (Reactions) या अनुक्रियाएँ (Response) करता है तथा ये प्रवृत्तियाँ या अनुक्रियायें किसी उपयुक्त प्राकृतिक उद्दीपक के उपस्थित होने पर प्रकट होती है। जैसे– भूखे व्यक्ति के सामने भोजन आने पर मुँह में लार का आना प्राकृतिक अनुक्रिया है। इसलिए भोजन को स्वाभाविक अथवा अ–अनुबन्धित उद्दीपक (unconditioned stimulus) तथा लार आने को स्वाभाविक अथवा अ–अनुकूलित अनुक्रिया (unconditioned response) कहा जाता है।

143. किस प्रयोग से पता चला है कि क्लासिकल कंडीशनिंग द्वारा फोबिया पैदा किया जा सकता है?

(a) गतिशील प्रणाली
(b) अहंकेंद्रवाद (इगोसेन्ट्रिज्म)
(c) लिटिल अल्बर्ट
(d) ज्ञानमीमांसा (एपिस्टेमोलॉजी)

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) लिटिल अल्बर्ट प्रयोग जॉन बी. वाटसन तथा उनके स्नातक छात्र रोजली रेनर द्वारा किया गया था। यह एक नियंत्रित प्रयोग था जो मानव के अनुभवजन्य साक्ष्य को क्लासिकल कंडीशनिंग में देखा गया था। इसी प्रयोग से पता चला है कि क्लासिकल कंडीशनिंग द्वारा फोबिया (डर) पैदा किया जा सकता है। वाट्सन इस धारणा का परीक्षण करना चाहता था कि क्या क्लासिकल कंडीशनिंग प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए किसी ज्ञात उद्दीपक से डर (फोबिया) पैदा किया जा सकता है। इसके लिए उन्हों मैदान में खेल रहे बच्चों और 'शोर' का सहारा लिया।

144. किसने क्लासिकल कंडीशनिंग की खोज की जो एक पर्यावरणीय उत्तेजना और एक अन्य उत्तेजना के बीच एसोसिएशन द्वारा संचालित एक अधिगम की प्रक्रिया है–

(a) एडवर्ड थॉर्नडाइक (b) इवान पॉवलव
(c) वोल्फगैंग कोहलर (d) जीन पियाजे

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (b) इवान पी. पॉवलव ने क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति या जीव कुछ जन्मजात प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ, प्रतिक्रियायें या अनुक्रियायें रखता है तथा ये प्रवृत्तियाँ, अनुक्रियायें किसी उपयुक्त प्राकृतिक उद्दीपक के उपस्थित होने पर प्रकट होती हैं। यह एक पर्यावरणीय उत्तेजना और अन्य उत्तेजना के बीच एसोसिएशन द्वारा संचालित एक अधिगम की प्रक्रिया हैं।

145. क्लासिकल कन्डीशनिंग (चिरप्रतिष्ठित प्रानुकूलन या शास्त्रीय अनुबंधन) निम्न में से किसके द्वारा विकसित किया गया है-

(a) बण्डुरा (b) पावलोव
(c) कोहलर (d) पियाजे

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : क्लासिकल कन्डीशनिंग (चिरप्रतिष्ठित प्रानुकूलन या शास्त्रीय अनुबंधन) सिद्धान्त का प्रतिपादन इवान पी. पावलव नामक रूसी मनोवैज्ञानिक ने किया था। पावलव वास्तव में एक शरीर वैज्ञानिक थे जिन्होंने पाचन क्रिया की दैहिकी का गहन अध्ययन किया था।

146. दो सहयोगी अधिगम सिद्धांत कौन-से है?

(a) शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग) और क्रिया प्रसूत अनुबंधन (ऑपरेट कंडीशनिंग)
(b) शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग) और उत्पीड़क अनुबंधन (ओपरेसिव कंडीशनिंग)
(c) शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग) और कार्यकारी अनुबंधन (ऑपरेट कंडीशनिंग)
(d) शास्त्रीय अनुबंधन (क्लासिकल कंडीशनिंग) और अवलोकन अनुबंधन (ओब्जवेंट कंडीशनिंग)

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : शास्त्रीय अनुबंधन और क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धांत सहयोगी सिद्धांत है। ये दोनों ही अधिगम के व्यवहारवादी सिद्धांत के अंतर्गत आते हैं। क्लासिकल अनुबंधन का सिद्धांत पावलव द्वारा तथा क्रियाप्रसूत अनुबंधन का सिद्धांत स्किनर द्वारा प्रतिपादित किया गया था। इन दोनों प्रकार के अनुबंधनों में मुख्य समानता मुख्यतः उद्दीपक का प्राणी द्वारा सीखी जा रही अनुक्रिया से अनुबंधित हो जाना एवं सीखने की प्रक्रिया में अंतर्नोद (Drive), उद्दीपक (Stimulus), अनुक्रिया (Response) तथा पुनर्बलन (Reinforcement) का अनिवार्य रूप से होना है।

147.राजेश बीमारी के कारण एक महीने तक विद्यालय नहीं गया। जब विद्यालय गया तो उसे भाग के लम्बे सवालों को करना नहीं आया। कई बार के निराशाजनक अनुभवों में असफलता हाथ लगी। लम्बे भाग के सवालों के देखते ही वह चिन्तित हो जाता है। शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त के मुताबिक संवेगात्मक स्वाभाविक उत्तेजक है

(a) असफलता को लेकर चिन्ता
(b) असफलता/भग्नाशा
(c) लम्बे भाग के सवाल
(d) लम्बे भाग के सवालों को लेकर चिन्ता।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धान्त के अनुसार अधिगम उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य सार्थक सम्बन्ध का परिणाम होता है। राजेश जब लम्बे समय के बाद समस्या को हल करने का प्रयास करता है तो वह असफल होता है क्योंकि समस्या (उद्दीपक) और हल करना (अनुक्रिया) के मध्य सम्बन्ध टूट गया होता है जिसके कारण उसमें असफलता का भाव उत्पन्न होने लगता है। इसलिए लम्बे भाग के सवालों को देखते ही वह चिंतित हो जाता है।

स्किनर का अधिगम सिद्धांत

148. थॉर्नडाइक के उद्दीपक–अनुक्रिया सिद्धांत (एस.–आर. थ्योरी) में सीखने की प्रक्रिया में क्या महत्त्वपूर्ण नहीं है?

(a) क्रिया प्रसूत व्यवहार (b) अन्तर्नोद
(c) अभिप्रेरक (d) उद्दीपक

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : थॉर्नडाइक के उद्दीपक– अनुक्रिया सिद्धांत (एस.–आर. थ्योरी) में सीखने की प्रक्रिया में अन्तर्नोद, अभिप्रेरक, उद्दीपक, अवरोध, पुनर्बलन, अनुक्रिया आदि महत्त्वपूर्ण हैं जबकि क्रिया–प्रसूत व्यवहार स्किनर के क्रिया–प्रसूत अनुबन्धन सिद्धांत से सम्बन्धित है।

149. निम्न में किस सिद्धांत को पुनर्बलन का सिद्धांत भी कहते हैं?

(a) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धांत
(b) उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धांत
(c) सूझ का सिद्धांत
(d) क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत को पुनर्बलन का सिद्धांत भी कहते हैं। स्किनर ने अपने अधिगम सिद्धांत में पुनर्बलन की सर्वाधिक तथा प्रभावशाली भूमिका बतायी है। इनके अनुसार पुनर्बलन से तात्पर्य किसी अपेक्षित अनुक्रिया के प्रतिफल के रूप में किसी ऐसे सुखकारी उद्दीपक की प्रस्तुती है जो प्राणी को अपेक्षित अनुक्रिया बार–बार करने के लिए प्रेरित करता है।

150. निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धान्त यह दर्शाता है कि अपेक्षित व्यवहार के सन्निकट सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन के फलस्वरूप व्यवहारात्मक विकास किया जा सकता है?

(a) शास्त्रीय अनुबन्धन (b) वाद्य अनुबन्धन
(c) ऑपरेन्ट अनुबन्धन (d) सामाजिक अनुबन्धन

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (c) आपरेन्ट अनुबंधन या क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त यह दर्शाता है कि व्यवहार का विकास सकारात्मक पुनर्बलन के फलस्वरूप होता है। यह सकारात्मक पुनर्बलन उसके द्वारा प्राप्त परिणामों पर निर्भर करता है।

151.बुरी आदतों को सुधारा जा सकता है

(a) डाँट डपट कर (b) दोषारोपण द्वारा
(c) अनुबन्धन द्वारा (d) ये सभी

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (c) क्रिया प्रसूत अनुबन्धन द्वारा बच्चों के बुरी आदतों को सुधारा जा सकता है। जब बालक बुरा कार्य करता है तो उसे उस कार्य के परिणाम के रूप में नकारात्मक पुनर्बलन देना चाहिए। इस क्रिया के बार-बार दोहराये जाने पर वह उस कार्य को करना त्याग देगा।

152. अधिगम का क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त.....द्वारा दिया गया था।

(a) पावलोव (b) थॉर्नडाइक

(c) टोलमैन (d) स्किनर

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (d) अधिगम का क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत मनोवैज्ञानिक बी. एफ. स्कीनर के द्वारा दिया गया है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यवहार की पुनरावृत्ति तथा परिमार्जन उसके परिणामों के द्वारा निर्देशित होती है। व्यक्ति व्यवहार का संचालन करता है जबकि इसे बनाये रखना उसे प्राप्त परिणामों पर निर्भर करता है। अर्थात् उसके व्यवहार का सम्बन्ध परिणाम से होता है। इसी प्रकार के व्यवहार को सीखने की प्रक्रिया को क्रिया प्रसूत अनुबंधन कहा जाता है। इनके द्वारा चूहे पर किया गया प्रयोग मुख्य माना जाता है।

153. क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धान्त का प्रतिपादन ------ ने किया था-

(a) पावलॉव (b) स्किनर

(c) थौर्नडाइक (d) कोहलर

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) स्किनर द्वारा क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया था। इन्होंने चूहों पर प्रयोग कर सीखने का सिद्धान्त दिया था। इसी प्रकार

पावलॉव- क्लासिकल अनुबन्धन सिद्धान्त (कुत्ते पर प्रयोग)

थौर्नडाइक- प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त (बिल्ली पर प्रयोग)

कोहलर- सूझ का सिद्धान्त (बन्दर पर प्रयोग)

154. स्किनर ने वकालत की कि सीखने की संभावना तब अधिक होती है जब

(a) सार्वजनिक घटनाओं या अवलोकनीय व्यवहार की व्याख्या किया जाता है।

(b) एक व्यवहार का अवलोकन प्रतिदर्शन द्वारा किया जाता है।

(c) व्यवहार उत्तेजना के लिए प्रतिवाद प्रतिक्रिया बन जाता है।

(d) व्यवहार को एक इनाम या सजा के साथ प्रबलित किया जाता है।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : स्किनर के अनुसार सीखने की संभावना तब अधिक होती है जब व्यवहार को इनाम या सजा के साथ प्रबलित किया जाता है। स्किनर ने अपने क्रियाप्रसूत अनुबंधन में प्रबलन (Reinforcement) को महत्त्वपूर्ण माना है। उनका मानना है कि प्रबलन की प्रस्तुति अथवा विलगता से अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ जाती है। प्रबलक धनात्मक तथा ऋणात्मक किसी भी प्रकार का हो सकता है। धनात्मक प्रबलक में इनाम तथा ऋणात्मक प्रबलन में सजा को शामिल किया जाता है।

155. अभिक्रमित अधिगम किसके सिद्धान्त पर आधारित है?

उत्तरः बी. एफ. किनर

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- अभिक्रमित अधिगम बी.एफ. स्किनर द्वारा प्रतिपादित अधिगम के क्रिया-प्रसूत अनुबंधन सिद्धान्त पर आधारित है। अभिक्रमित अधिगम एक ऐसी विधि है जिसमें अधिगमकर्ता सक्रिय रहता है, तत्काल प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है तथा अपनी गति से सीखते हुए बढ़ता है। इस विधि को क्रमसिद्ध अधिगम भी कहा जाता है। स्किनर ने अभिक्रमित अधिगम के पाँच सिद्धान्त बताएँ है-

(1) लघुपदीय सिद्धान्त

(2) सक्रिय अनुक्रिया सिद्धान्त

(3) तत्कालीन जाँच या प्रतिपुष्टि का सिद्धान्त

(4) स्व-गति का सिद्धान्त

(5) छात्र परीक्षण का सिद्धान्त

156.अभिक्रमायोजित अधिगम का प्रत्यय किसने दिया था -

(a) हल (b) थार्नडाइक

(c) स्किनर (d) वाटसन

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) अभिक्रमायोजित अधिगम का अर्थ है किसी योजना के अनुसार शिक्षण एवं अधिगम की क्रिया को साकार रूप प्रदान करना। इसका लक्ष्य है– अधिगम को सोद्देश्य एवं स्थायी बनाना। रेखीय अभिक्रमायोजित अधिगम का प्रतिपादन बी.एफ. स्किनर ने किया था। इस अधिगम में विषय–वस्तु को छोटे–छोटे पदों में बाँटकर उनको शृंखलाबद्ध तरीके से व्यवस्थित करके अधिगम किया जाता है।

157. किस व्यवहारवादी का मानना है कि अन्य व्यवहारों की भाँति भाषा भी क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन द्वारा सीखी जाती है?

(a) वाटसन (b) स्किनर

(c) गुथरी (d) थॉर्नडाइक

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (b) प्रसिद्ध व्यवहारवादी अमेरिकी मनोवैज्ञानिक **वी.एफ. स्किनर** ने अपनी पुस्तक **The behaviour of Organism** में सीखने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। यह सिद्धांत **क्रिया प्रसूत अनुबंध सिद्धांत** है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यवहार की पुनरावृत्ति उससे प्राप्त परिणामों पर निर्भर करता है, अर्थात् पुनर्बलन प्राप्त होने पर व्यक्ति व्यवहार को बार-बार दोहराता है। इसी आधार पर गणित में पहाड़े तथा भाषा में वर्तनी, विलोम व मुहावरे आदि याद करते समय इस सिद्धांत का प्रयोग किया जा सकता है।

हल का अधिगम सिद्धांत

158. निम्न में से कौन-सा युग्म सही नहीं है?

(a) सीखने का उद्दीपक-अनुक्रिया सिद्धान्त–थॉर्नडाइक

(b) सीखने का क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धान्त–बी. एफ. स्किनर

(c) सीखने का क्लासिकल सिद्धान्त–पैवलव

(d) सीखने का समग्र सिद्धान्त–हल

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (d) सीखने के समग्र सिद्धान्त को अंतर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त भी कहते हैं। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिको- वोल्फगैंग कोहलर तथा कुर्ट कोफ्का द्वारा किया गया जबकि हल ने सीखने के प्रबलन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

गुथरी का अधिगम सिद्धांत

159. किस अधिगम मनोवैज्ञानिक ने बाल-अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्व नहीं दिया है?

(a) थार्नडाइक (b) पावलॉव
(c) स्किनर (d) गुथरी

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (d) गुथरी ने समीपता का सिद्धांत दिया उसके अनुसार उद्दीपक एवं अनुक्रिया के मध्य अनुबंध पुनर्बलन (पुरस्कार) के आधार पर नहीं बल्कि समीपता के आधार पर होती है। जबकि थार्नडाइक, पावलव एवं स्किनर ने अधिगम क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों में पुरस्कार को एक महत्वपूर्ण कारक माना है।

कोहलर का अधिगम सिद्धांत

160.बालक के व्यक्तित्व को किस प्रकार का अधिगम अधिक प्रभावित करता है?

(a) प्रयत्न एवं त्रुटि अधिगम (b) अनुकरण अधिगम
(c) अन्तर्दृष्टिपूर्ण अधिगम (d) अनुदेशनात्मक अधिगम

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) अनुकरण अधिगम के द्वारा बालक का व्यक्तित्व प्रभावित होता है। क्योंकि बालक अपने समूह से सर्वाधिक प्रभावित होता है तथा समूह में उपस्थित लोगों के व्यवहार से प्रभावित होता रहता है।

161. अन्तर्दृष्टि (सूझ) द्वारा सीखने के सिद्धान्त में कोहलर ने प्रयोग किया था

(a) कुत्ते पर (b) वनमानुषों पर
(c) बिल्ली पर (d) चूहों पर

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धांत देने का श्रेय जर्मन मनोवैज्ञानिक वोल्फगैंग कोहलर को है जिसने अपनी पुस्तक 'Mentality of opes' में वर्ष 1925 में प्रस्तुत किया है।
कोहलर ने सूझ के सिद्धांत का प्रयोग वनमानुष या सुल्तान नामक ''चिम्पांजी'' पर किया था।
कोहलर के अनुसार ''कल्पना जितनी अधिक होगी सूझ की क्षमता का विकास भी उतना ही अधिक होगा।''

162. निम्न में से कौन-सा मत अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखने की व्याख्या करता है?

(a) मनोविश्लेषणवाद (b) व्यवहारवाद
(c) सम्बन्धवाद (d) गेस्टाल्टवाद

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) सीखने के अर्न्तदृष्टि या सूझ के सिद्धांत का प्रतिपादन जर्मनी के गेस्टाल्टवादियों द्वारा किया गया था। इसलिए इस सिद्धांत को गेस्टाल्ट सिद्धांत भी कहते हैं। इसके अनुसार व्यक्ति सम्पूर्ण परिस्थिति को अपनी मानसिक शक्ति से अच्छी तरह समझ लेता है और फिर वह अपनी सूझ और अनुभव के द्वारा उस परिस्थिति या समस्या का समाधान करता है। इस सिद्धांत का प्रयोग सुल्तान नामक वनमानुष पर किया गया था।

163. 'सीखने के अंतःदृष्टि सिद्धांत' को किसने बढ़ावा दिया?

(a) पैवलॉव (b) जीन पियाजे
(c) वाइगोत्स्की (d) 'गेस्टाल्ट' सिद्धांतवादी

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (d) सीखने के अंतःदृष्टि सिद्धांत को जर्मनी के गेस्टाल्ट सिद्धांतवादियों ने बढ़ावा दिया।

164. सूझ द्वारा सीखने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया -

(a) थार्नडाइक (b) कोहलर
(c) पावलॉव (d) वुडवथ

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) कोहलर- सूझ द्वारा सीखने के सिद्धान्त का प्रतिपादन कोहलर महोदय ने किया था। इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम मात्र किसी अभ्यास का प्रशिक्षण नहीं वस्तुतः अचानक आयी सूझ से होता है। इसलिए इसे 'आहहा'! सिद्धांत भी कहा जाता है।

165. सूझ या अन्तर्दृष्टि के सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया है?

(a) थॉर्नडाइक (b) गेस्टालवादी मनोवैज्ञानिक
(c) हेगार्टी (d) स्किनर

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) अधिगम से सम्बन्धित सूझ या अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त का प्रतिपादन गेस्टालवादी मनोवैज्ञानिको ने किया है, जिसमे वोल्फगैंग कोहलर तथा कुर्ट कोफ्का प्रमुख है।

166. ''एक चीज को समग्रता के रूप में इसके अध्ययन से सीखा जा सकता है।'' यह कथन किस शिक्षण सिद्धांत पर आधारित है-

(a) इंस्ट्रुमेंटल कंडीशनिंग
(b) अंतदृष्टि चिरप्रतिष्ठित प्रानुकूलन (इनसाइट क्लासिकल कंडीशनिंग)
(c) प्रयत्न-त्रुटि विधि
(d) चिरप्रतिष्ठित प्रानुकूलन (क्लासिकल कंडीशनिंग)

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : 'एक चीज को समग्रता के रूप में इसके अध्ययन से सीखा जा सकता है।' यह कथन अंतर्दृष्टि चिरप्रतिष्ठित प्रानुकूलन अधिगम सिद्धान्त पर आधारित है। दूसरे शब्दों में अंतर्दृष्टि सिद्धान्त के अनुसार जब कोई समस्या आती है तब प्राणी उद्दीपक को अनुक्रिया से सम्बन्धित करके नहीं सीखता है वरन वह सम्पूर्ण परिस्थिति को देखकर समस्या का समाधान खोजता है। प्राणी समस्या का समाधान अपनी अंतर्दृष्टि अथवा सूझ से खोजता है।

167.गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आधारशिला किसने रखी थी -

(a) फ्रान्ज ब्रेन्टानो (b) मैक्स वरथीमर
(c) एडगर रूबिन (d) कुर्ट लेविन

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की आधारशिला जर्मन मनोवैज्ञानिक - मैक्स वरथीमर ने रखी। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के समर्थकों में बोल्फगैंग कोहलर, कुर्ट कोफ्का तथा कुर्ट लेविन का भी नाम लिया जाता है।

लेविन का अधिगम सिद्धांत

168. मनोविज्ञान का क्षेत्रवादी सिद्धान्त दिया-

(a) कुर्ट लेविन ने (b) सी.टी.मॉर्गन ने
(c) लियोन फेस्टिंगर ने (d) हेनरी गोडार्ड ने

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (a) कुर्टलेविन ने अधिगम के क्षेत्र में सिद्धान्त (Field theory) या संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धान्त (Cognitive Field Theory) का प्रतिपादन 1917 में किया। इस सिद्धान्त के अनुसार जीवन स्पेस (Life space) अर्थात् व्यक्ति के संसार का परिमार्जन ही अधिगम है।

169.मनोवैज्ञानिक जो अपने अधिगम सिद्धान्त में 'लाइफ स्पेस' को सम्बोधित करता है, वह है-

(a) थार्नडाइक (b) कोहलर
(c) कुर्ट लेविन (d) स्किनर

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) कुर्ट लेविन ने अपने अधिगम सिद्धांत में 'लाइफ स्पेस' को प्रमुख सम्प्रत्यय स्वीकार किया है। लेविन के अनुसार किसी प्राणी का लाइफ स्पेस वह स्थान होता है, जिसमें वह स्वयं मनोवैज्ञानिक रूप से रहता है तथा इसमें उसके अपने प्रत्यक्षण एवं विचार–बिन्दु समाहित रहते हैं।

170. कुर्ट लेविन के अनुसार, समूह में जो परिवर्तन होते हैं उन्हें.....।

(a) परस्परता कहते है (b) रचनात्मकता कहते है
(c) गतिशीलता कहते हैं (d) संगति कहते हैं

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) कुर्ट लेविन के अनुसार, समूह में जो परिवर्तन होते हैं उन्हें गतिशीलता कहते हैं। कुर्ट लेविन को संगठनात्मक विकास का संस्थापक माना जाता है। संगठनात्मक विकास, किसी संगठन की प्रभावकारिता और व्यवहारिकता को बढ़ाने के लिए एक नियोजित संगठन स्तरीय प्रयास होता है। संगठनात्मक विकास एक विशिष्ट प्रकार का अंतिम परिणाम प्राप्त करने के लिए एक विशिष्ट प्रकार की परिवर्तन प्रक्रिया है।

171. क्षेत्र सिद्धान्त निम्न में किस वर्ग का सिद्धांत है-

(a) व्यवहारविदों का (b) संरचनाविदों का
(c) मनोविश्लेषकों का (d) गेस्टाल्टवादियों का

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (d) अधिगम सम्बन्धी क्षेत्र सिद्धांत कुर्ट लेविन द्वारा प्रतिपादित किया गया है। लेविन एक गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिक हैं। लेविन का क्षेत्र सिद्धांत सामान्य शब्दावली में यह कहता है कि ''मानव व्यवहार व्यक्ति और वातावरण दोनों का प्रतिफल है जिसे सांकेतिक रूप में $B = f(P.E)$ द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

172. इनमें से कौन व्यवहारवादी नहीं है?

(a) वाटसन (b) स्किनर
(c) पैवलॉव (d) लेविन

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) जे.बी. वाटसन व्यवहारवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों में बी.एफ. स्किनर, ईवान पी. पावलव, क्लार्क हल, एडवर्ड टॉलमैन आदि का नाम प्रमुख है। जबकि कुर्ट लेविन, कुर्ट कोफ्का, वोल्फगैंग कोहलर आदि गेस्टाल्टवादी (समग्रवाद) मनोवैज्ञानिक थे।

बण्डूरा का अधिगम सिद्धांत

173.सीखने का वह सिद्धान्त जो केवल 'अवलोकित व्यवहार' पर निर्भर है, सीखने के.....सिद्धान्त से जुड़ा है।

(a) संज्ञानात्मक (b) विकासात्मक
(c) व्यवहारात्मक (d) रचनात्मक

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (a) 'अवलोकित व्यवहार' का अर्थ है किसी निदर्श (Model) के व्यवहार का अवलोकन कर उसका अनुकरण करना या नकल करना। इस प्रकार का सीखना अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अंतर्गत आता है।

174.निम्न में से कौन-सा उदाहरण बान्डुरा के अवलोकन पर आधारित अधिगम का नहीं है?

(a) विद्यार्थियों द्वारा केंचुये के विच्छेदन को सीखना
(b) क्रिकेट का उत्साह
(c) सामाजिक अध्ययन के प्रति नापसंदगी
(d) स्कूल की घंटी बजने पर अपने बस्ते बंद कर लेना।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (d) बण्डुरा ने सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त दिया है जिसके अनुसार व्यक्ति अपने आस-पास के सामाजिक वातावरण के अवलोकन से सीखता है या किसी निदर्श (Model) के अनुकरण से सीखता है। प्रस्तुत विकल्प में स्कूल की घंटी बजने पर अपने बस्ते बंद करना, अनुकरण या अवलोकन के द्वारा सीखना नहीं है।

175. जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देख कर सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव के, को कहा जाता है

(a) सामाजिक अधिगम (b) अनुबन्धन
(c) प्रायोगिक अधिगम (d) आकस्मिक अधिगम

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव के, उस अधिगम को सामाजिक अधिगम कहा जाता है। सामाजिक अधिगम अवलोकनात्मक व्यवहार पर आधारित होता है तथा इसमें प्रतिरूप के व्यवहारों का प्रतिरूपण किया जाता है।

176. सामाजिक अधिगम आरम्भ होता है:

(a) अलगाव से (b) भीड़ से
(c) संपर्क से (d) दृश्य श्रव्य सामग्री से

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) सामाजिक अधिगम लोगों के सम्पर्क में आने पर आरम्भ होता है। जितना अधिक लोगों के साथ सम्पर्क बनेगा सामाजिक अधिगम उतना ही अधिक होगा।

177. एक विद्यार्थी अपने अध्यापक से समय की पाबन्दी सीखता है, यह एक उदाहरण है–

(a) वाचिक अधिगम का (b) प्रेक्षण अधिगम का
(c) कौशल अधिकम का (d) अधिगम अन्तरण का

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (b) विद्यार्थी द्वारा शिक्षक के व्यवहार का अनुकरण, प्रेक्षण अधिगम का उदाहरण है।

178. प्रेक्षणात्मक अधिगम सम्प्रत्यय ..... द्वारा दिया गया था।

(a) टोलमैन (b) बैण्डूरा
(c) थॉर्नडाइक (d) कोहलर

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) प्रेक्षणात्मक अधिगम का सम्प्रत्यय (संकल्पना) अल्वर्ट बैण्डूरा के द्वारा दिया गया है। प्रेक्षणात्मक अधिगम सम्प्रत्यय का निर्माण दूसरों के व्यवहारों का प्रेक्षण करने से होता है। इसे पहले अनुकरण कहा जाता था। बण्डूरा ने कई प्रायोगिक अध्ययनों में प्रेक्षणात्मक अधिगम की विस्तृत खोजबीन की। इस प्रकार के अधिगम में व्यक्ति सामाजिक व्यवहारों को सीखता है इसलिए इसे कभी-कभी सामाजिक अधिगम भी कहा जाता है। हमारे सामने ऐसी अनेक सामाजिक स्थितियाँ आती हैं, जिनमें यह ज्ञात नहीं रहता कि हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए ऐसी परिस्थितियों में हम दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण करते हैं और उनकी तरह व्यवहार करते हैं।

179. बन्डुरा का कथन है कि बच्चे प्रतिक्रियाएँ प्रतिमानीकरण द्वारा सीखते हैं, जिसको..... भी कहा जाता है।

(a) अभ्यास द्वारा सीखना (b) अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखना
(c) निरीक्षणात्मक अधिगम (d) पुरस्कार द्वारा सिखना

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) अल्बर्ट बन्डूरा के द्वारा अधिगम के क्षेत्र में सामाजिक अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया था। इसके अनुसार बच्चे प्रतिक्रियाएं प्रतिमानीकरण द्वारा सीखते है, जिसे निरीक्षणात्मक अधिगम भी कहा जाता है। जिसमे बच्चे अपने से बड़ों के व्यवहार का निरीक्षण करके उसी तरह के व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं।

180. एल्बर्ट बैन्ड्यूरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार निम्न में से कौन-सा सही है?

(a) बच्चों के सीखने के लिए प्रतिरूपण (मॉडलिंग) एक मुख्य तरीका है।
(b) अनसुलझा संकट बच्चे को नुकसान पहुँचा सकता है।
(c) संज्ञानात्मक विकास सामाजिक विकास से स्वतंत्र है।
(d) खेल अनिवार्य है और उसे विद्यालय में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014

Ans: (a) एल्बर्ट बैन्ड्यूरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार बच्चों के सीखने के लिए प्रतिरूपण एक मुख्य तरीका है।

181. सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त निम्नलिखित में से किस घटक पर बल देता है?

(a) प्रकृति (b) प्रतिरूपण
(c) अनुकूलन (d) पाठ-संशोधन

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (b) सामाजिक अधिगम का सिद्धांत प्रतिरूपण पर बल देता है। अर्थात् बालक जन्म से ही अपने माता–पिता, पास–पड़ोस के सदस्यों आदि के व्यवहार का अवलोकन करता है कालान्तर में उन व्यवहारों का अनुकरण अपने व्यवहार में करने लगता है। जिन व्यक्तियों के व्यवहारों का वह अनुकरण करता है उन्हें 'प्रतिरूप' तथा इस प्रकार से किसी प्ररूप के व्यवहार का अनुकरण करके किये गये अवलोकनात्मक अधिगम को 'प्रतिरूपण' कहा जाता है।

182. 'बच्चे फिल्मों में दिखाए गए हिंसात्मक व्यवहार को सीख सकते हैं।' यह निष्कर्ष निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक द्वारा किए गए कार्य पर आधारित हो सकता है?

(a) जे. बी. वाटसन (b) एल्बर्ट बंडूरा
(c) जीन पियाजे (d) एडवर्ड एल. थार्नडाइक

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (b) एल्बर्ट बंडूरा ने सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त दिया। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम के स्थान पर अप्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम अर्थात अवलोकनात्मक अधिगम का सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक स्थान है। यही कारण है कि बच्चे फिल्मों में दिखाये गये हिंसात्मक व्यवहार को जल्दी सीख सकते है।

183. सीखने का वह सिद्धान्त जो पूर्ण रूप से और केवल 'अवलोकनीय व्यवहार' पर आधारित है, सीखने के .... सिद्धान्त से सम्बद्ध है।

(a) व्यवहारवादी (b) रचनावादी
(c) संज्ञानवादी (d) विकासवादी

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (c) सीखने का वह सिद्धांत जो पूर्ण रूप से और केवल अवलोकनीय व्यवहार पर आधारित है, सीखने के संज्ञानवादी सिद्धांत से सम्बद्ध है। संज्ञानवादी सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति किसी उद्दीपक के प्रति मात्र अनुक्रिया ही नहीं करता है बल्कि वह सीखने के लिए अपनी सूझ या अंतर्दृष्टि का प्रयोग भी करता है। चूँकि अवलोकनीय व्यवहार को सीखने के लिए सूझ या अंतर्दृष्टि की भी आवश्यकता होती है इसलिए यह अधिगम के संज्ञानवादी सिद्धांत के अंतर्गत आता है।

184. बैन्ड्यूरा के सामाजिक अवलोकन पर आधारित सिद्धांत में निम्नलिखित में से कौन–सी प्रक्रिया होती है?

(a) स्वचिन्तन (b) प्रतिधारण
(c) पुनरावृत्ति (d) सार को दोहराना

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2014

Ans : (b) बैन्ड्यूरा के सामाजिक अवलोकन पर आधारित सिद्धांत में अधिगम प्रक्रिया के निम्न चार सोपान अथवा प्रक्रियाएं बतायी गयी हैं–

1. व्यवहार को जानना तथा उसका प्रत्यक्षण करना
2. व्यवहार का प्रतिधारण या स्मरण करना
3. धारण किये गये व्यवहार को क्रिया में बदलना
4. अनुकरणित व्यवहार का पुनर्बलन

185. शिक्षार्थी फैशन शो को देखकर मॉडल्स का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार के अनुकरण को ..... कहा जा सकता है।

(a) प्राथमिक अनुकरण (b) गौण अनुकरण
(c) सामाजिक अधिगम (d) सामान्यीकरण

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2013

Ans : (c) शिक्षार्थी फैशन शो को देखकर मॉडल्स का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार के अनुकरण को सामाजिक अधिगम कहा जा सकता है। सामाजिक अधिगम के अनुसार बालक जन्म से ही अपने आस–पास के लोगों के व्यवहारों का अवलोकन करता है तदनन्तर उनका अनुकरण अपने व्यवहार में करने लगता है।

186. अल्बर्ट बण्डूरा निम्न में से किस सिद्धांत से सम्बन्धित हैं-

(a) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
(b) व्यवहारात्मक सिद्धान्त
(c) विकास का संज्ञानात्मक सिद्धान्त
(d) विकास का मनो-सामाजिक सिद्धांत

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) अल्बर्ट बण्डूरा ने वर्ष 1969–71 में सामाजिक अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन किया। सामाजिक अधिगम सिद्धांत, अधिगम के संज्ञानात्मक क्षेत्र के सिद्धांत के अंतर्गत आता है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति जो कुछ भी सीखता है वह दूसरों को देखकर, सुनकर व समझकर सीखता है।

187. ऐल्बर्ट बण्डूरा निम्न में से किससे सम्बन्धित है?

(a) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
(b) व्यवहारवादी सिद्धान्त
(c) संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त
(d) मनोलैंगिक विकास

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (a) ऐल्बर्ट बण्डूरा सामाजिक अधिगम सिद्धान्त से सम्बन्धित हैं। बण्डूरा तथा वाल्टर ने इस सिद्धान्त का 1963 में प्रतिपादित किया।

188. बॅण्डुरा द्वारा किए गए फियरलेस पीयर प्रयोग में, किसने मॉडल की भूमिका निभाई थी?

(a) प्रयोगकर्ता ने (b) निडर बच्चे ने
(c) मित्रवत कुत्ते ने (d) भयभीत बच्चे ने

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) बण्डूरा द्वारा किये गये फियरलेस पीयर प्रयोग में निडर बच्चे ने मॉडल की भूमिका निभाई थी। बण्डूरा और उनके सहयोगियों ने इस प्रयोग के द्वारा बच्चों के व्यवहार सम्बन्धी स्वभाव के सापेक्ष शक्ति में परिवर्तन पर सामाजिक सुविधा के लाभ का उदाहरण प्रस्तुत किया था।

189. जब पर्यावरणीय प्रभाव, संज्ञानात्मक कारकों के साथ मिलकर अधिगम के लिए जिम्मेदार होते हैं, तो इस तरह के अधिगम को निम्न रूप में जाना जाता है–

(a) ऑपरेंट कंडीशनिंग (b) प्रयत्न और त्रुटि अधिगम
(c) सामाजिक अधिगम (d) क्लासिकल कंडीशनिंग

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : सामाजिक अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन अल्बर्ट बन्डूरा ने किया था। इस सिद्धांत के अनुसार प्राणी अपने सामाजिक वातावरण में विद्यमान तथा निदर्श (models) के रूप में स्वीकार किये व्यक्तियों के व्यवहारों का अवलोकन करके उनके व्यवहारों को अपने व्यवहार में समाहित करके या उनका अनुकरण करके सीखता है। इसमें अधिगम के लिए संज्ञानात्मक कारकों के साथ पर्यावरणीय प्रभाव भी जिम्मेदार होते हैं।

190. निम्नलिखित में से किसने विकास के चरणों से जुड़े विकास सिद्धांत को प्रस्तुत नहीं किया?

(a) फ्रायड (b) बंडूरा
(c) पियाजे (d) एरिक्सन

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : बंडूरा ने विकास के चरणों से जुड़े विकास सिद्धांत नहीं दिया है।

1. **फ्रायड–** मनोलैंगिक विकास का सिद्धांत (मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत)
   (i) मौखिक अवस्था
   (ii) गुदा अवस्था
   (iii) लैंगिक अवस्था
   (iv) सुषुप्ता अवस्था
   (v) जनानिक अवस्था
2. **जीन पियाजे–** संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
   (i) संवेगात्मक गामक अवस्था
   (ii) पूर्व–संक्रियात्मक अवस्था
   (iii) मूर्त–संक्रियात्मक अवस्था
   (iv) औपचारिक संक्रिया अवस्था
3. **एरिक्सन–** मनोसामाजिक सिद्धांत
   (i) शैशवावस्था : विश्वास बनाम अविश्वास
   (ii) प्रारम्भिक बाल्यावस्था : स्वतंत्रता बनाम लज्जाशीलता
   (iii) खेल अवस्था : पहल शक्ति बनाम दोषिता
   (iv) विद्यालय अवस्था : परिश्रम बनाम हीनता
   (v) किशोरावस्था : अहं पहचान बनाम भूमिका संभ्रान्ति
   (vi) तरुण वयस्कावस्था : घनष्ठि बनाम विलगन
   (vii) मध्य वयस्कावस्था : जननात्मकता बनाम स्थिरता
   (viii) परिपक्वता : अहं संपूर्णता बनाम निराशा
4. **बंडूरा–** सामाजिक अधिगम का सिद्धांत

191. निम्नलिखित में से किसने व्यक्तिव का एक विशेषता सिद्धांत (ट्रेट थ्योरी) प्रस्तावित नहीं किया?

(a) हैंस आइजेंक (b) रेमंड कैटेल
(c) अल्बर्ट बण्डुरा (d) गॉर्डन ऑलपोर्ट

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : हैंस आइजेंक ने व्यक्तित्व का जैविक शीलगुण सिद्धांत (Biological trait theory of personality), रेमंड कैटल ने व्यक्तित्व का शीलगुण सिद्धांत (Trait theory of personality) तथा गॉर्डन ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व के शीलगुण सिद्धांत का प्रतिपादन किया जबकि अल्बर्ड बॅण्डुरा ने सीखने के सामाजिक अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

192. सामाजिक अधिगम सिद्धांत किनके द्वारा प्रस्तावित किया गया था?

(a) फ्रायड (b) बंडूरा

(c) स्किनर (d) पावलोव

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) सामाजिक अधिगम सिद्धांत अल्बर्ट बन्डूरा द्वारा प्रस्तावित किया गया था। सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम के स्थान पर अप्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम अर्थात् अवलोकनात्मक अधिगम का सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक स्थान है।

193. बंडुरा पारस्परिक नियतवाद में विश्वास करते थे। इसका अर्थ है:

(a) परिवेश और किसी का व्यवहार एक दूसरे के कारण बनता है।

(b) किसी का परिवेश, किसी के व्यवहार के कारण बनता है।

(c) किसी के व्यवहार से किसी का परिवेश अप्रभावित रहता है।

(d) किसी का व्यवहार, किसी के परिवेश से स्वतंत्र है।

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) अल्बर्ट बन्डुरा सामाजिक अधिगम सिद्धांत के प्रतिपादक हैं। वे पारस्परिक नियतवाद में विश्वास करते थे। इसका अर्थ है कि परिवेश और किसी का व्यवहार एक–दूसरे के कारण बनता है। इस सिद्धांत के अनुसार प्राणी अपने सामाजिक वातावरण में विद्यमान तथा निदर्श (Models) के रूप में स्वीकार किये व्यक्तियों के व्यवहारों का अवलोकन करके उनके व्यवहारों को अपने व्यवहार में समाहित करके तथा उनका अनुकरण करके सीखता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवेश से व्यक्ति सीखता है और व्यक्ति के व्यवहार से ही सामाजिक परिवेश का निर्माण होता है।

194. अधिगम का कौन सा रूप प्रदर्शित होता है जब बच्चे उस हिंसा की नकल उतारते हैं जो वे अपने पंसदीदा वीडियों गेम में देखते हैं?

(a) क्रियाप्रसूत अधिगम (b) अवलोकन अधिगम

(c) अनुबंधित अधिगम (d) अव्यक्त अधिगम

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : बन्डूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत निरीक्षणात्मक या अवलोकन अधिगम (Observational learning) पर बल देता है। इस सिद्धांत में बन्डूरा ने अवलोकन द्वारा सीखना, अनुकरण (imitation) और मॉडलिंग (modelling) को सीखने में एक अहम् स्थान दिया है। बालक अन्य लोगों को देखकर सीखता है। वे परिवार के सदस्य जैसे– माता–पिता, टी.वी. के काल्पनिक पात्र, कोई मित्र या स्कूल में अध्यापक को अपना आदर्श मानते हैं और उनके व्यवहारों को ध्यानपूर्वक देखते हैं और अपने व्यवहार में सम्मिलित करने की कोशिश करते हैं। इस तरह जब बच्चे उस हिंसा की नकल उतारते हैं जो वे अपने पसंदीदा वीडियो गेम में देखते हैं तो यह अवलोकन अधिगम का ही उदाहरण प्रस्तुत करता है।

195. निम्नलिखित में से कौन एक सामाजिक-अधिगम सिद्धांत से सम्बन्धित है?

(a) बंडूरा (b) फ्रायड

(c) वुण्ट (d) पावलोव

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : अल्बर्ट बन्डूरा द्वारा सामाजिक अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया था। सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम के स्थान पर अप्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम अर्थात् अवलोकनात्मक अधिगम का सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक स्थान है। इनके अनुसार प्राणी जो कुछ भी सीखता है उसका अधिकांश भाग दूसरों को देखकर, सुनकर व समझकर सीखा हुआ होता है।

196. अल्बर्ट बंडुरा के अनुसार, वह प्रक्रिया जो सूचना के अधिग्रहण, संगठन और उपयोग में शामिल होती है, उसे ..... प्रक्रिया कहा जाता है।

(a) संज्ञानात्मक (b) प्रभावी

(c) स्व नियमन (d) प्रेरणा

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : अल्बर्ट बंडुरा के अनुसार, वह प्रक्रिया जो सूचना के अधिग्रहण, संगठन और उपयोग में शामिल होती है, उसे स्व नियमन (Self Regulation) कहा जाता है। स्व–विनियमन सिद्धांत सचेत व्यक्तित्व प्रबंधन की एक प्रणाली है जिसमें लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए अपने स्वयं के विचारों, व्यवहारों और भावनाओं को निर्देशित करने की प्रक्रिया शामिल होती है। स्व–नियमन में कई चरण होते हैं और व्यक्तियों को पारस्परिक रूप से परस्पर प्रभाव वाले नेटवर्क के भीतर अपनी प्रेरणा, व्यवहार और विकास में योगदान देना होता है।

197. अधिगम तब होता है जब बच्चा किसी को ध्यान से देखता है। इस अधिगम को..... के रूप में जाना जाता है।

(a) क्रियाप्रसूत अनुकूलन (b) प्रयत्न-त्रुटि अधिगम

(c) सामाजिक अधिगम (d) अंतर्दृष्टि अधिगम

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : अधिगम तब होता है जब बच्चा किसी को ध्यान से देखता है। इस अधिगम को सामाजिक अधिगम के रूप में जाना जाता है। सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम के स्थान पर अप्रत्यक्ष अनुभवों पर आधारित अधिगम अर्थात् अवलोकनात्मक अधिगम का सीखने की प्रक्रिया में अधिक सार्थक स्थान है। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्राणी जो कुछ भी सीखता है उसका अधिकांश भाग दूसरों को देखकर, सुनकर व समझकर सीखा हुआ होता है। ध्यातव्य है कि सामाजिक अधिगम का सिद्धांत अल्बर्ट बण्डूरा द्वारा दिया गया था।

198. जब बच्चे मीडिया में हिंसा के संपर्क में आने के कारण आक्रामक होना सीखते हैं, तो किस प्रकार का अधिगम प्रदर्शित होता हैं?

(a) क्लासिकल अधिगम (b) मीडिया अधिगम
(c) अन्वेशी अधिगम (d) अवलोकनात्मक अधिगम

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : जब बच्चे मीडिया में हिंसा के संपर्क में आने के कारण आक्रामक होना सीखते हैं तो इसे अवलोकनात्मक अधिगम कहते हैं। बण्डूरा का सिद्धांत अवलोकनात्मक अधिगम (Observational learning) पर बल देता है। बण्डूरा का मानना था कि बच्चे अपने आस–पास के लोगों के व्यवहारों का अवलोकन करके सीखते हैं।

199. पहले से सीखे हुए कार्यों में सुधार लाने के लिए शिक्षक बच्चों को प्रदर्शन देकर सीखा रहा है। वह शिक्षण की ..... विधि का प्रयोग कर रहा है।

(a) अनुकरण (b) अवलोकन
(c) संशोधन (d) प्रतिरूपण

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : पहले से सीखे हुए कार्यों में सुधार लाने के लिए शिक्षक बच्चों को प्रदर्शन देकर सिखा रहा है। यानी वह शिक्षण की प्रतिरूपण विधि का प्रयोग कर रहा है। प्रतिरूपण विधि में बालक किसी प्रतिरूप (Models) के व्यवहारों का अवलोकनात्मक अधिगम करता है। अर्थात् वह किसी प्रतिरूप व्यवहारों को देखकर सीखता है।

200. एक विद्यार्थी अपने अध्यापक से समय की पाबंदी सीखता है; यह एक उदाहरण है–

(a) वाचिक अधिगम का (b) प्रेक्षण अधिगम का
(c) कौशल अधिगम का (d) अधिगम अंतरण का

DSSSB PRT

Ans : (b) जब विद्यार्थी कोई कार्य अपने से बड़ो या समवयस्कों के व्यवहार को देखकर उसे अपने व्यवहार में प्रयोग करता है तो वह प्रेक्षण अधिगम या अनुकरण कहलाता है। अतः विद्यार्थी जब अपने अध्यापक से समय की पाबन्दी सीखता है तो यह प्रेक्षण अधिगम का उदाहरण होगा।

रोजर्स का अधिगम सिद्धांत

201. निम्नलिखित में से कौन एक मानवतावादी सिद्धांतकार है?

(a) सिगमंड फ्रायड (b) इवान पावलोव
(c) एरोन बेक (d) कार्ल रोजर्स

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : कार्ल रोजर्स (1902–1987) एक मानवतावादी सिद्धांतकार हैं। उनके सिद्धांत को मानवतावादी आंदोलन का समर्थक एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत माना गया है। रोजर्स के व्यक्तित्व सिद्धांत को आत्म सिद्धांत (Self theory) या व्यक्ति केन्द्रित सिद्धांत माना जाता है। रोजर्स ने अपने व्यक्तित्व सिद्धांत में मानव प्रकृति के सम्बन्ध में कुछ अभिधारणाएँ प्रस्तुत करते हुए स्वतंत्रता, विवेकपूर्णता पूर्णतावाद, परिवर्तनशीलता, आत्मनिष्ठता और अज्ञेयता जैसी बातों पर अधिक जोर दिया है।

बालकों का विद्यालय प्रदर्शन में असफलता का अर्थ, कारण एवं उपाय

202.यदि एक शिक्षार्थी कक्षा में निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होता है, तो यह प्रदर्शित करता है

(a) शिक्षार्थी की असफलता (b) कक्षा की असफलता
(c) विद्यालय की असफलता (d) माता-पिता की असफलता

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (c) विद्यालय की सफलता एवं असफलता वहाँ के विद्यार्थियों पर निर्भर करती है। अगर वहाँ के विद्यार्थी सफल होंगे तो विद्यालय सफल होगा और यदि विद्यार्थी असफल होंगे तो विद्यालय असफल होगा। बालक के व्यक्तित्व का निर्माण, विद्यालय का उत्तरदायित्व है।

203. निम्न में से कौन-सा छात्रों के पलायन का कारण नहीं होता?

(a) अरुचिकर विद्यालयी कार्यक्रम
(b) अध्यापक का पक्षपातपूर्ण व्यवहार
(c) बहुत अधिक गृह कार्य
(d) बहुत अधिक छुट्टियाँ

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) विद्यालय से छात्रों के पलायन के कारण निम्न है-
→ विद्यालय का वातावरण
→ अरुचिकर पाठ्यक्रम
→ पक्षपातपूर्ण व्यवहार
→ आवश्यकता से अधिक गृहकार्य देना
→ कठोर दण्ड व्यवस्था आदि

204. एक बच्चे को सहारा देने की मात्रा एवं प्रकार में परिवर्तन इस बात पर निर्भर करता है

(a) अध्यापिका की मनोदशा
(b) बच्चे की नैसर्गिक योग्यताएँ
(c) कार्य के लिए प्रस्तावित पुरस्कार
(d) बच्चे के निष्पादन का स्तर

DSSSB PRT

Ans : (d) एक बच्चे को सहारा देने की मात्रा एवं प्रकार में परिवर्तन इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चे का निष्पादन स्तर कैसा है। यदि निष्पादन स्तर निम्न होगा तो उसे अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होगी और यदि निष्पादन उच्च स्तर का होगा तो सामान्य सहयोग की आवश्यकता होगी।

205. इन कथनों में से आप किससे सहमत हैं?

(a) एक बच्चा अनुत्तीर्ण होता है क्योंकि सरकार विद्यालयों में पर्याप्त प्रौद्योगिकीय संसाधन प्रदान नहीं कर रही है
(b) एक बच्चे की असफलता मुख्य रूप से माता–पिता की शिक्षा तथा आर्थिक स्तर में कमी के कारण है
(c) एक बच्चे की असफलता के लिए वंशानुक्रम घटकों को प्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है

(d) एक बच्चे की असफलता व्यवस्था तथा बच्चे के प्रति प्रतिक्रिया करने में इसकी असमर्थता का एक प्रतिबिम्ब है

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (d) एक बच्चे की असफलता व्यवस्था तथा बच्चे के प्रति प्रतिक्रिया करने में इसकी असमर्थता का एक प्रतिबिम्ब है। अतः व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है।

206. कक्षा में पलायन करने वाले विद्यार्थियों के प्रति आपका व्यवहार कैसा होगा?

(a) दमनात्मक (b) प्रशंसात्मक
(c) सहानुभूतिपूर्वक (d) निदानात्मक

DSSSB PRT

Ans : (d) कक्षा में पलायन करने वाले विद्यार्थियों के प्रति एक अध्यापक का व्यवहार निदानात्मक होना चाहिए। अध्यापक को पलायन का कारण जानना चाहिए तथा उसका उपचार करना चाहिए।

207. विद्यालय से विद्यार्थियों को भाग जाने का कारण है

(a) कक्षा शिक्षण में रुचि का अभाव
(b) विद्यार्थियों की अध्ययन में रुचि का अभाव
(c) विद्यार्थियों को दण्ड नहीं देना
(d) समस्या के प्रति शिक्षकों की निर्दय अभिवृत्ति

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) विद्यार्थी द्वारा विद्यालय से भागने की प्रवृत्ति के मुख्य कारण निम्न है-
1. छात्रों की समस्याओं के प्रति शिक्षकों की असंवेदनशील रवैया
2. विद्यालय के वातावरण का अप्रजातांत्रिक स्वरूप
3. छात्रों में सुरक्षा की भावना का आभाव
4. शिक्षण कार्य का सुचारु रूप से न चलना।

208. विद्यालयों में विद्यार्थियों की असफलता के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?

A. विशेष जातियों और समुदायों से संबंधित विद्यार्थी असफल होते हैं क्योंकि उनमें योग्यता नहीं होती।
B. विद्यार्थी विद्यालयों में असफल होते हैं क्योंकि उन्हें अधिगम के लिए उपयुक्त पुरस्कार नहीं दिए जाते।
C. विद्यार्थी असफल होते हैं क्योंकि शिक्षण उस तरीके से नहीं किया जाता जो उनके लिए सार्थक हो।
D. विद्यार्थी असफल होते हैं क्योंकि विद्यालय व्यवस्था प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं और अभिरुचियों का ध्यान नहीं रखती।

(a) B और D (b) C और D
(c) A और B (d) B और C

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (b) प्रत्येक बालक की अपनी विशेष प्रकार की योग्यता व क्षमता होती है जिसके आधार पर बालक का मानसिक व बौद्धिक विकास होता है तथा इसी आधार पर उनमें विशेष प्रकार की आवश्यकताओं का सृजन होता है जो उन्हें अन्य बालकों से विशिष्टता प्रदान करती है। अतः जब विद्यालय द्वारा इस विभिन्नता को नजरअंदाज कर शिक्षण उस तरीके से नहीं किया जाता जो विद्यार्थियों के लिए सार्थक हो या विद्यालय व्यवस्था प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं और अभिरूचियों का ध्यान नहीं रखता तो विद्यार्थी असफल होते हैं जो शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन का कारण बनता है।

209. जब एक विद्यार्थी असफल होता है तो समझा जाता है कि

(a) पद्धति असफल है
(b) शिक्षक असफल है
(c) पाठ्य पुस्तके असफल हैं
(d) यह वैयक्तिक असफलता है

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) जब विद्यालय में एक विद्यार्थी असफल होता है तो यह माना जाता है कि यह वैयक्तिक असफलता है। इसके लिए पूरी व्यवस्था को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। हाँ शिक्षक की यह जिम्मेदारी अवश्य बनती है कि वह प्रत्येक बच्चे की सफलता को सुनिश्चित करे।

210.कक्षा-परीक्षणों में अच्छा प्रदर्शन करने में एक बच्चे की असफलता हमें इस विश्वास की तरफ ले जाती है कि –

(a) आकलन वस्तुनिष्ठ है तथा असफलताओं को स्पष्ट रूप से पहचानने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है।
(b) पाठ्यक्रम, शिक्षण-पद्धति तथा आकलन प्रक्रियाओं पर विचार करने की आवश्यकता है।
(c) कुछ बच्चों को अनुत्तीर्ण होना ही है, चाहे व्यवस्था उन पर कितना भी अधिक प्रयास करे।
(d) बच्चे कुछ निश्चित सक्षमताओं और कमियों के साथ पैदा होते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015
DSSSB PRT

Ans: (b) कक्षा-परीक्षणों में अच्छा प्रदर्शन करने में यदि कोई विद्यार्थी असफल होता है तो यह असफलता हमें इस विश्वास की तरफ ले जाती है कि पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति तथा आकलन प्रक्रियाओं पर विचार करने की आवश्यकता है जिससे कि परिणाम को सुधारा जा सके।

211. एक शिक्षक अपनी प्रतिक्रिया से 'असफलता' शब्द को प्रतिस्थापित कर सकता है–

(a) बुद्धि की कमी (b) अयोग्यता
(c) अधिगम अक्षमता (d) अधिगम में उभरना

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : एक शिक्षक अपनी प्रतिक्रिया से 'असफलता' शब्द को अधिगम में उभरना (emerging in learning) से प्रतिस्थापित कर सकता है। जब विद्यार्थी अधिगम में असफल होते हैं तो अध्यापक उन्हें असफलता से संबंधित प्रतिपुष्टि या प्रतिक्रिया प्रदान करता है। छात्र अध्यापक द्वारा प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर उसकी सहायता से अपने अधिगम त्रुटियों में सुधार करते हैं तथा अधिगम को अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न करते हैं।

212. विद्यालय के प्रदर्शन में, सफलता सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बच्चे को निम्न में मदद मिलती है।

(a) अन्य छात्रों के समक्ष अपने ज्ञान का प्रदर्शन
(b) परीक्षा पास करना
(c) पुरस्कार जीतना
(d) अधिगम के संबंध में अधिक आत्मविश्वास महसूस करना

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) विद्यालय के प्रदर्शन में, सफलता सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बच्चे को अधिगम के सम्बन्ध में अधिक आत्मविश्वास महसूस होता है। जब विद्यार्थी विद्यालय में सफलता प्राप्त करते हैं तो यह सफलता उनके लिए पुनर्बलन का कार्य करती है, जिससे वे अधिगम के लिए प्रेरित होते हैं और उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है।

213. एक शिक्षक, विद्यालय के प्रदर्शन में एक बच्चे की लगातार असफलता का पता निम्न रूप में लगा सकता है:

(a) उच्च प्रबंधन के लिए चिंता को बढ़ाने की आवश्यकता है।
(b) अनुशासनात्मक समस्या
(c) अधिगम अशक्तता या विशेष शिक्षा की आवश्यकता है
(d) विद्यालय बदलने की आवश्यकता है।

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : विद्यालय के प्रदर्शन में एक बच्चे की लगातार असफलता का कारण अधिगम अशक्तता हो सकती है। एक शिक्षक द्वारा अधिगम अशक्तता के कारणों का पता लगाकर उसे विशेष शिक्षा प्रदान करना चाहिए।

अधिगम अशक्तता से आशय एक विशेष तरह से सीखने में कठिनाई का अनुभव करने से है। कुछ प्रमुख अधिगम अशक्तता के प्रकार हैं–

1. डिस्लेक्सिया (पठन विकार)
2. डिस्ग्राफिया (लेखन सम्बन्धी विकार)
3. डिस्कैलकुलिया (गणितीय विकार)
4. डिस्प्रैक्सिया (लेखन एवं चित्रांकन सम्बन्धी विकार)
5. डिस्फ्रैजिया (वाक क्षमता सम्बन्धी विकार)
6. अफेज्या (भाषा अवबोध से सम्बन्धित विकार)

214. निम्नलिखित में से कौन सी सफलता के लिए एक बच्चे की विशेषताएं है?

(a) अधिगम पर लगातार ध्यान केंद्रित करना
(b) स्वयं पर ध्यान केंद्रित करना
(c) कार्यपत्रक (वर्कशीट) और नोट्स व्यवस्थित करना
(d) भाग्य पर विश्वास करना

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : किसी बच्चे की सफलता के लिए अधिगम पर लगातार ध्यान केन्द्रित करना उसकी आवश्यक विशेषता होती है। जब बच्चे अपने अधिगम पर लगातार ध्यान केन्द्रित करते हैं तो उससे वे सीखने के साथ–साथ अधिगम में आयी कमियों की पहचान भी करते हैं और उसमें सुधार भी करते हैं जो उनके ज्ञान अर्जन में उपयोगी होता है।

215. निम्नलिखित में से कौन–सा विद्यालय प्रदर्शन में असफलता का प्रभाव निर्धारित करता है?

(a) आवंटित समय उस कार्य से अधिक है जो वास्तव में कार्य पूरा करने के लिए आवश्यक है
(b) कार्य का पैटर्न और व्यवस्था
(c) चुनौती बच्चों से जो करने के लिए कहा गया– आकर्षक या प्रासंगिक नहीं है।
(d) कार्य में सुगमता का स्तर

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : जब बच्चों के सामने ऐसी चुनौती या समस्या प्रस्तुत की जाती है जिसमें उनकी रुचि न हो और वह उनके जीवन में प्रासंगिक भी न हो तो ऐसी परिस्थिति में वे विद्यालय प्रदर्शन में असफलता दर्शाते हैं। अतः बच्चों के सामने उनकी रुचि, आवश्यकता तथा प्रासंगिकता से सम्बन्धित समस्याओं को प्रदर्शित करना चाहिए।

216. प्रदर्शन में असफलता, बच्चे के अधिगम की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है, क्योंकि :

(a) यह आत्म जागरूकता विकसित करने में मदद करता है
(b) यह बच्चों को बुरे अनुभवों के लिए तैयार करता है
(c) यह पुनः परीक्षा में छात्र की मदद करता है।
(d) यह बच्चों को समझने के लिए सशक्त बनाता है कि बड़ा या छोटा जोखिम उठाना, उनके अधिगम के पथ में महत्वपूण है।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : प्रदर्शन में असफलता, बच्चे के अधिगम की प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा है क्योंकि यह बच्चों को समझने के लिए सशक्त बनाता है कि उनके अधिगम के लिए छोटा या बड़ा जोखिम उठाना महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, बच्चे अपने गलतियों से ही सीखते हैं इसलिए अधिगम में गलतियों को स्वीकार करना चाहिए।

217. निम्नलिखत में से कौन–सा मुख्य रूप से बच्चों के परीक्षाओं में असफल होने का कारण बनता है:

(a) कक्षा का परिवेश
(b) शारीरिक शक्ति
(c) परीक्षा का डर
(d) परीक्षा के दौरान धैर्य की कमी

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) परीक्षा का डर मुख्य रूप से बच्चों के परीक्षाओं में असफल होने का कारण बनता है। जब बच्चों के सामने परीक्षा में असफल होने का डर होता है तो उनमें सांवेगिक अस्थिरता उत्पन्न हो जाती है जिसके परिणाम स्वरूप वे कार्यों में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं और परीक्षा में असफल हो जाते हैं।

EXAM POINT

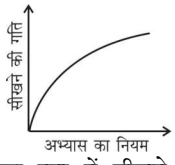
- तर्कणा के कितने प्रकार होते हैं– **दो**
- किस प्रकार की सोच का विकास बच्चों में स्थायी ज्ञान प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन माना जाता है– **अनुभव के आधार पर सोच**
- ''सीखना, अनुभव या व्यवहार में परिवर्तन है।'' यह कथन किस विद्वान का है– **गेट्स का**
- सीखने की किस विधि का प्रतिपादन बैण्डुरा द्वारा किया गया– **प्रेक्षण द्वारा सीखना**
- सीखने (Learning) के लक्षण के रूप में नहीं माना जा सकता– **व्यवहार का अध्ययन सीखना है**
- विद्यार्थियों को एकांकी तथ्यों और प्रक्रियाओं को याद करने के योग्य बनाना, यह लक्षण प्रदर्शित नहीं करता– **'समझ के लिए शिक्षण' को**
- सीखना उस वातावरण में प्रभावी होता है, जो संवेगात्मक रूप से सकारात्मक हो और शिक्षार्थियों को सन्तुष्ट करने वाला हो, यह कथन सही है– **'सीखने' (Learning) के बारे में**
- शैक्षिक संस्थान ही एक मात्र स्थान है जहाँ अधिगम (Learning) प्राप्त होता है, यह विशेषता नहीं मानना चाहिए– **सीखने की प्रक्रिया की**
- यदि वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में लाया जाए जिमसें विद्यार्थी एक दूसरे से अन्तःक्रिया करे और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाएँ, तब– **सीखना समृद्ध हो सकता है**
- पाँच वर्ष का राजू अपनी खिड़की के बाहर तूफान देखता है, बिजली चमकती है और कड़कने की आवाज आती है, राजू शोर सुनकर उछलता है। बार-बार यह घटना होती है। फिर कुछ देर शान्ति के पश्चात् बिजली कड़कती है। राजू बिजली की गर्जना सुनकर उछलता है। राजू का उछलना सीखने के किस सिद्धान्त (Learning Theory) का उदाहरण है– **शास्त्रीय अनुबन्धन (Classical Conditioning)**
- ''नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया है।'' यह कथन है– **वुडवर्थ का**
- 'तत्परता का नियम' दिया– **थार्नडाइक ने**
- मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने व्यक्ति को बाँटा है– **चिन्तन व कल्पना शक्ति के आधार पर**
- सीखने के नियम के प्रतिपादक हैं– **थार्नडाइक**
- सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम का सिद्धान्त एवं प्रबलन का सिद्धान्त है– **अधिगम का व्यावहारिक सिद्धान्त**
- शिक्षार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, प्रेरणा और उपलब्धि का अभिप्रेरण स्तर एवं उत्सुकता और इच्छाशक्ति प्रभावित करते हैं– **सीखने को**
- एक शिक्षिका पाठ्यवस्तु और फल सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है, विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं और पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम आधारित है– **ज्ञान के निर्माण पर**
- जब बच्चा कार्य करते हुए ऊबने लगता है, तो यह इस बात का संकेत है कि– **सम्भवतः कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है**
- जब पूर्व का अधिगम नई स्थितियों के सीखने को बिल्कुल प्रभावित नहीं करता, तो यह कहलाता है– **अधिगम का शून्य स्थानान्तरण**
- चिन्तन अनिवार्य रूप से है एक– **संज्ञानात्मक गतिविधि**
- चिन्तन के सूचना प्रक्रमण सिद्धान्त में चरण आते हैं– **श्रेणीकरण**
- सीखने सम्बन्धी निर्योग्यताएँ सामान्यतः उन बच्चों में पायी जाती है जिनके– **पैत्रिक अभिभावक इस प्रकार की समस्याओं से ग्रसित होते हैं**
- सीखने में सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर संकेत करती है– **सीखने की तत्परता की ओर**
- सीखने की क्रिया को प्रभावित करने वाले कारक हैं– **अनुकरण, प्रशंसा एवं निन्दा एवं प्रतियोगिता**
- बालक की वैयक्तिकता का आदर, पुरस्कार एवं दण्ड एवं प्रशंसा एवं भर्त्सना को उपयोगी माना जाता है– **बालकों के सीखने में प्रेरणा के रूप में**
- पावलॉव ने सीखने के अनुबन्धन-प्रतिक्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था– **कुत्ते पर प्रयोग करके**
- अधिगम कार्य के लिए विद्यार्थियों की तत्परता का आकलन करना शिक्षकों के लिए कठिन है क्योंकि– **तत्परता के सभी तत्व एक साथ परिपक्व नहीं होते**
- चिन्तन शक्ति के विकास की प्रक्रिया में गलत है– **कम बुद्धि व ज्ञान**
- अधिगम का सबसे उपयुक्त कार्य है– **व्यवहार परिवर्तन**
- बालक जब सीखने के लिए तैयार होता है, तब वह जल्दी व प्रभावशाली तरीके से सीखता है। यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है– **थार्नडाइक द्वारा**
- बालक का चिंतन प्रदर्शित नहीं होता है– **वैयक्तिकवाद के द्वारा**
- चिन्तन संज्ञानात्मक पक्ष में एक मानसिक क्रिया है। यह कथन दिया गया है– **रॉस द्वारा**
- थार्नडाइक का वह नियम जो सीखने में पुरस्कार और दण्ड के महत्व को बताता है– **प्रभाव का नियम**

- शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्या है– **विषय-वस्तु को समझने की समस्या**
- छात्रों के द्वारा अधिक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग प्रभावित करता है– **अधिगम उत्पाद एवं प्रक्रिया को**
- अपने चिन्तन में अवधारणात्मक परिवर्तन लाने हेतु शिक्षार्थियों को सक्षम बनाने के लिए शिक्षक को– **स्पष्ट और आश्वस्त करने वाली व्याख्या देनी चाहिए तथा शिक्षार्थियों के साथ चर्चा करनी चाहिए**
- जटिल परिस्थिति को संसाधित करने में शिक्षक बच्चों की सहायता कर सकता है– **कार्य को छोटे हिस्सों में बाँटने के लिए निर्देश लिखकर**
- सीखने वाले के संवेगों से प्रभावित होता है– **सीखना**
- एक परिस्थिति में अर्जित ज्ञान का दूसरी परिस्थिति में उपयोग कहलाता है– **सीखने में स्थानान्तरण**
- अधिगम में प्रयत्न व भूल के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया– **थार्नडाइक ने**
- अधिगम का क्रिया प्रसूत सिद्धान्त दिया गया– **स्किनर द्वारा**
- अधिगम अन्तरण का थार्नडाइक सिद्धान्त कहा जाता है– **अनुरूप तत्वों का सिद्धान्त**
- सीखने का वह सिद्धान्त जो पूर्ण रूप से और केवल ''अवलोकनीय व्यवहार'' (Observable behaviour) पर आधारित होता है, सम्बद्ध है– **सीखने के व्यवहारवादी (Behaviourist) सिद्धान्त से**
- अनुप्रेरित शिक्षण के एक संकेत के रूप में विवेचित किया जाता है– **विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछना**
- एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण है– **विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करना**
- विद्यालय से विद्यार्थियों के भाग जाने का कारण है– **समस्या के प्रति शिक्षकों की निर्दय अभिवृत्ति**
- एक बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है, उचित रूप में इसका अर्थ है कि– **वह अधिक जिज्ञासु है**
- बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप किस विधि का चयन करेंगे– **बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे**
- शिक्षणार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, प्रेरणा और उपलब्धि का अभिप्रेरण स्तर एवं उत्सुकता और इच्छाशक्ति, ये सभी कारक प्रभावित करते हैं– **सीखने को**
- जब बच्चा फेल होता है, तो इसका तात्पर्य है– **व्यवस्था फेल हुई है**
- सीखने का क्षेत्र है– **आनुभविक**
- बच्चों में सीखने और सुनने के लिए अधिगम-योग्य वातावरण के लिए उपयुक्त है– **विद्यार्थियों को यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है**
- सीखने का प्राथमिक मूलभूत नियम सम्बन्धित है– **तत्परता से**
- व्यवहार में होने वाले स्थायी परिवर्तन, जो अभ्यास के कारण होते हैं, को कहा जाता है– **सीखना**
- कक्षा-कक्ष गतिविधि इस प्रकार से हो कि बच्चे को– **चरित्र निर्माण में सहायता मिल सके**
- शिक्षार्थियों से यह अपेक्षा करना कि वे ज्ञान को उसी रूप में प्रस्तुत कर देंगे, जिस रूप में उन्होंने ग्रहण किया है– **समस्यात्मक है, क्योंकि व्यक्ति अनुभवों की व्याख्या करते हैं और ज्ञान को ज्यों का त्यों पुनः उत्पादित नहीं करते**
- सीखी हुई बात को स्मरण रखने या पुनः स्मरण करने की असफलता कहलाती है– **विस्मृति**

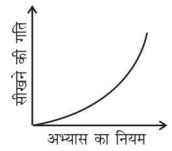
1. सरल रेखीय वक्र– इस वक्र में सीखने की दर एक समान होती है। सरल रेखीय वक्र कहलाती है।



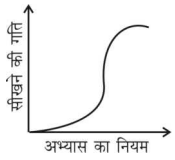
2. उन्नतोदर वक्र- इस वक्र में प्रारम्भिक सीखने की दर तीव्र और बाद में धीमी हो जाती है इस वक्र को उत्तल वक्र भी कहा जाता है।



3. नतोदर वक्र– इस वक्र में सीखने की गति पहले धीमी होती है और बाद में तेज हो जाती है। इसको अवतल वक्र भी कहा जाता है।



4. मिश्रित वक्र– इस वक्र में प्रारम्भ में सीखने की गति धीमी बाद में तेज, कुछ समय तक बनी रहती है तथा फिर तेज उसके बाद धीमी हो जाती है।



- मिश्रित वक्र का आकार होता है –S
- सीखने के वक्र में तीन प्रमुख तत्व है **–प्रारम्भिक तीव्रता पठार शारीरिक सीमा**

- पठार काल होता है **–एक प्रकार से पचने का काल**
- अधिगम वक्र की खोज की थी **–ब्रियान, हार्टर ने**
- वक्र के कितने प्रकार होते है **–चार**
- नकारात्मक वक्र की आकृति होती है **–उत्तल**
- ''अधिगम वक्र, अभ्यास द्वारा उसकी मात्रा, गति व उन्नति की सीमा का ग्राफ पर प्रदर्शन है'' कहा है **–गेट्स**

स्किनर के अनुसार– पठार क्षैतिज प्रसार है जिससे उन्नति का बोध नहीं होता है।'' इससे स्पष्ट है कि अधिगम की प्रक्रिया में एक स्थिति ऐसी अवश्य आ जाती है जब सीखने की गति में कोई प्रगति नहीं दिखाई देती। यह स्थिति ही पठार कहलाती है।

- सीखने की अवधि में पठार साधारणतया कुछ दिनों, सप्ताहें या महीनों तक रहते हैं, कथन है **–सोरेनसन**

अधिगम के पठार के कारण–

1. शारीरिक सीमा
2. गलत पद्धति
3. प्रेरणा का अभाव
4. गलत क्रम
5. अभ्यास का अभाव
6. सामग्री का एकांकीपन
7. त्रुटियों का स्थानांतरण

- अधिगम की दार्शनिक आधार पर व्याख्या किस मनोवैज्ञानिक ने की है **–फ्रोबेल**
- सीखने के पठार का मुख्य कारण है **–उत्साहावरोध**
- जहाँ कोई व्यक्ति एक विशेष प्रणाली का अनुकरण करके पहुँचता है और वहीं रुक जाता है **–ज्ञानावरोध**
- सीखने की प्रक्रिया की एक प्रमुख विशेषता पठार है। ये उस अवधि को बताते हैं, जब सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती है, किसने कहा है? **–रॉस ने**
- सीखने में थकान, आदत और वातावरण का **–प्रभाव पड़ता है**
- परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने से विद्यार्थी में आ जाता है **–उत्साहवरोध**
- सीखने के पठारों का निराकरण सीखने के बाद किया जा सकता है **–विश्राम देकर**
- अधिगम को प्रभावित करने वाला कारक है **–शारीरिक कारक मनोवैज्ञानिक कारक,**
- जब कोई व्यक्ति किसी कौशल को सीख लेता है अथवा किसी विषय का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, उस सीखे गये कौशल तथा प्राप्त किये गये ज्ञान का उपयोग किसी अन्य परिस्थितियों में करता है तो वह स्थिति अधिगम अथवा प्रशिक्षण का स्थानान्तरण कहलाती है। **–अधिगम अंतरण**
- जब किसी व्यक्ति को किसी पूर्व सीखे गये कार्य अथवा विषय के परिणामस्वरूप किसी अन्य कार्य या विषय को सीखना अथवा करना सामान्य रूप से सरल एवं सुविधाजनक लगता है तो इसे कहते है **–धनात्मक स्थानान्तरण**
- जब सीखा गया कोई कार्य, किसी अन्य कार्य को सीखने में कठिनाई उत्पन्न करता है तो उसे कहते है **–नकारात्मक स्थानान्तरण**
- अधिकतर व्यक्ति दायें हाथ से काम करते है, यदि कोई व्यक्ति समय आने पर सभी कार्य बायें हाथ से करने लगे तो इस स्थिति को कहेंगे **–द्विपक्षीय स्थानान्तरण**
- शिक्षा के क्षेत्र में किसी एक विषय का अध्ययन करते हुए प्राप्त किया गया ज्ञान आदि किसी अन्य विषय में समझने में सहायक हो तो इस स्थिति को कहते है **–क्षैतिज स्थानान्तरण**
- अधिगम के स्थानांतरण का प्रकार नही है **–समतल स्थानांतरण**
- अधिगम अथवा सीखने में स्थानांतरण के सिद्धान्त–
  1. एक समान तत्वों का सिद्धान्त
  2. सामान्यीकरण का सिद्धान्त
  3. मानसिक प्रभावों का सिद्धान्त
  4. दो तत्वों का सिद्धान्त
  5. गेस्टाल्ट सिद्धान्त
  6. हैरलो का अधिगम का सिद्धान्त
- स्थानांतरण को प्रभावित करने वाला कारक है **–बुद्धि, विषय की समानता, सामान्यीकरण**
- गणित विषय में प्रयोग किया जाता है **–दृश्य सामग्री, श्रव्य सामग्री, दृश्य श्रव्य सामग्री**
- गृहकार्य है **–अभ्यास कार्य हेतु**
- गणित शिक्षण में ज्ञात से अज्ञात की ओर चलते है **–आगमन विधि**
- ''सीखना विकास की प्रक्रिया है'', कथन है **–वुडवर्थ**
- अधिगम की प्रक्रिया दो तत्व पर आधारित है **–परिपक्वता और पूर्व अनुभवों से लाभ**
- अधिगम की प्रक्रिया **–चेतन और अचेतन रूप में जीवन पर्यन्त चलती रहती है**
- अधिगम का आधार है **–परिपक्वता**
- ''व्यवहार के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को अधिगम कहते हैं'' **–गिलफोर्ड के अनुसार**
- ''सीखने के नियमों के प्रतिपादक है'' **–थार्नडाइक**
- व्यवहार में कोई परिवर्तन जो अनुभवों का परिणाम है और जिसके फलस्वरूप व्यक्ति आने वाली स्थितियों का भिन्न प्रकार से सामना करता है **–अधिगम कहलाता है**

- ''नवीन ज्ञान और नवीन प्रक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया अधिगम की प्रक्रिया है'' कथन है **–वुडवर्थ का**
- अधिगम की क्रिया चेतन या अचेतन रूप में चलती है **–जीवनपर्यन्त**
- ''अधिगम किसी परिस्थिति में भिन्न ढंग से कार्य करने की क्षमता है, जो कि परिस्थिति के अनुसार पूर्व अनुभवों के कारण आती हैं'' कथन है **–गुथरी का**
- ''अधिगम व्यक्ति में एक परिवर्तन है, जो उसके वातावरण के परिवर्तन के अनुसरण में होता है'' कथन है **–पील का**
- अधिगम हो सकता है **–त्रुटि रहित या त्रुटि पूर्ण**
- ''जब किसी नये कार्य को करना सबलीकृत हो जाता है और कालान्तर की क्रियाओं में वह पुनः प्रकट होता है तो उस नये कार्य का करना अधिगम कहलाता है'' यह परिभाषा है **–वुडवर्थ की**
- अधिगम प्रक्रिया में चरण होते है **–4**
- अधिगम प्रक्रिया के चार चरण है **–आवश्यकता अथवा प्रयोजन, लक्ष्य समायोजन, परिवर्तन**
- अधिगम के सिद्धान्तों का वर्गीकरण **–समीपता सिद्धान्त, सबलीकरण सिद्धान्त, ज्ञानात्मक सिद्धान्त**

समीपता सिद्धान्त	पावलव का अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त
	वाटसन का अधिगम सिद्धान्त
	गुथरी का सामीप्य अनुकूलन सिद्धान्त
सबलीकरण सिद्धान्त	हल एवं उनकी परम्परा के सिद्धान्त
	यांत्रिक सबलीकरण का सिद्धान्त
ज्ञानात्मक सिद्धान्त	
1. चिन्ह अधिगम सिद्धान्त	टालमैन का चिह्न अधिगम सिद्धन्त
2. गेस्ट टाल्ट अधिगम सिद्धान्त	इसमें कोहलर का सूझ सिद्धान्त
	कोफ्का का पादक सिद्धान्त
3. गत्यात्म सिद्धान्त	इसमें लेबिन का क्षेत्र सिद्धान्त
	अधिगम का मनोविश्लेषनात्मक सिद्धान्त
4. बन्डूरा का प्रतिरूपण सिद्धान्त	
5. पियाजे का अधिगम का विकासात्मक सिद्धान्त	

- थार्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त से सम्बन्धित नहीं है– **सक्रिय अनुबन्ध का सिद्धान्त**
- स्किनर के सक्रिय अनुबन्ध सिद्धान्त को अन्य किस नाम से जाना जाता है– **साधनात्मक अनुबन्ध व क्रिया प्रसूत अनुबन्ध**
- किस मनोवैज्ञानिक द्वारा एक भूखे चिम्पैंजी पर अपना प्रयोग किया– **कोहलर द्वारा**
- लेविन ने अधिगम सम्बन्धी सिद्धान्त में चार मुख्य तत्व बताए हैं। उनमें सही नहीं है– **उच्च शिक्षा**
- कार्ल रोजर्स ने अपने अनुभवजन्य अधिगम सिद्धान्त में किसकी अधिगम प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए इस अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया– **प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए**
- तत्त्व प्रबलता का नियम, रुचि प्रबलता का नियम एवं साहचर्यात्मक स्थानान्तरण का नियम हैं– **पुनर्बलन के सिद्धान्त के सहायक नियम**
- अधिगम सम्बन्धी सिद्धान्त का तत्व नहीं है– **उच्च शिक्षा**
- कार्ल रोजर्स ने अपने अनुभवजन्य अधिगम सिद्धान्त में किसकी अधिगम प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए इस अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया– **प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए**
- ''एक बच्चा अतीत की समान परिस्थिति में की गई अनुक्रियाओं के आधार पर नई स्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।'' यह कथन सम्बन्धित है– **सीखने का 'प्रभाव-नियम'**
- शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है, जहाँ अधिगम प्राप्त होता है, यह कथन– **सीखने की प्रक्रिया की विशेषता नहीं है**
- वह सिद्धान्त जो यह दर्शाता है कि अपेक्षित व्यवहार के सन्निकट सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन के फलस्वरूप व्यवहारात्मक विकास किया जा सकता है– **सामाजिक अनुबन्धन**
- एक शिक्षिका अपने-आप से कभी भी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती। वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम आधारित है– **सक्रिय भागीदारिता के सिद्धांत पर**
- सतत् पुनर्बलन की अपेक्षा अधिक प्रभावी होता है– **आंशिक पुनर्बलन**
- सीखने के सातत्यक में शिक्षार्थियों का वर्तमान संज्ञानात्मक स्तर संकेत करती है– **सीखने की तत्परता की ओर**
- विकास का वही सम्बन्ध परिपक्वता से है, जो उद्दीपन का है– **प्रतिक्रिया से**
- थॉर्नडाइक का व्यक्तित्व के वर्गीकरण का आधार है– **चिंतन और कल्पना**
- अधिगम को सकारात्मक प्रकार से प्रभावित करता है– **अर्थपूर्ण सम्बन्ध**
- अन्य व्यवहारों की भाँति भाषा भी क्रिया-प्रसूत अनुबन्धन द्वारा सीखी जाती है, यह मानना है– **व्यवहारवादी स्किनर का**

26.

अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ

शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य एवं इनके प्रकार

1. निम्नलिखित में से कौन–सी संज्ञानात्मक क्रिया दी गई सूचना के लिए प्रयोग में लाई जाती है?

(a) वर्णन करना (b) पहचान करना
(c) अन्तर करना (d) वर्गीकृत करना

DSSSB PRT

Ans : (c) किन्ही दो वस्तुओं के मध्य उनके गुणों व दोषों के आधार पर उनमें अंतर करना या विभेद करना उच्च संज्ञानात्मक क्रिया है। यह विद्यार्थियों के समझ या बोध को दिखाता है।

2. संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति का न्यूनतम स्तर है

(a) ज्ञान (b) बोध
(c) अनुप्रयोग (d) विश्लेषण

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति का न्यूनतम स्तर ज्ञान है। संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति क्रमश: छ: चरणों मे होता है- ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन।

3. शिक्षार्थियों से यह अपेक्षा करना कि वे ज्ञान को उसी रूप में पुन: प्रस्तुत कर देंगे जिस रूप में उन्होंने उसे ग्रहण किया है।

(a) अच्छा है, क्योंकि यह शिक्षक के लिये आकलन में सरल है
(b) एक प्रभावी आकलन युक्ति है
(c) समस्यात्मक है, क्योंकि व्यक्ति अनुभवों की व्याख्या करते हैं और ज्ञान को ज्यों-का-त्यों पुन: उत्पादित नहीं करते
(d) अच्छा है, क्योंकि जो भी हमारे मन में हैं हम उसे रिकार्ड करने लगते है

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (c) यह परिस्थिति समस्यात्मक है कि शिक्षार्थी ज्ञान को उसी रूप में पुन: प्रस्तुत करें जिस रूप में उन्होंने ग्रहण किया है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति/शिक्षार्थी किसी विषय पर प्राप्त ज्ञान को अपने अनुभव के द्वारा व्याख्या करता है तथा ज्ञान को ज्यों का त्यों पुन: उत्पादित नहीं करता। ज्ञान को ज्यों का त्यों उत्पादित करना रटने की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है तथा इससे मानसिक तथा बौद्धिक विकास अवरूद्ध हो जाता है।

4. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन शिक्षण के संदर्भ में सही नहीं है?

(a) शिक्षण एक अन्त: क्रियात्मक प्रक्रिया है
(b) शिक्षण एक त्रिमुखी प्रक्रिया है
(c) शिक्षण एक प्रभाव–निर्देशित प्रक्रिया है
(d) शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित रहने वाली प्रक्रिया है

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (d) शिक्षण केवल कक्षा तक सीमित रहने वाली प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो खेल के मैदानों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, वाचनालयों, संगोष्ठियों या अन्य वास्तविक परिस्थितियों में सम्पन्न होती है।

5. शैक्षिक उद्देश्यों के ब्लूम के वर्गीकरण के भावात्मक पक्ष से निम्न में से कौन-सा स्तर सम्बन्धित नहीं है?

(a) व्यवस्थापन (b) अनुक्रिया
(c) आग्रहण (d) ज्ञान

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : शैक्षिक उद्देश्यों के ब्लूम के वर्गीकरण के भावात्मक पक्ष से सम्बन्धित स्तर निम्न हैं–

1. आग्रहण (Receiving)
2. प्रतिक्रिया/अनुक्रिया (Responding)
3. अनुमूल्यन (Valuing)
4. संगठन/व्यवस्थापन (Organisation)
5. स्वाभावीकरण (Characterization)

6. निम्न में से कौन–सा संज्ञानात्मक क्षेत्र से संबंधित नहीं है?

(a) अनुमूल्यन (b) अनुप्रयोग
(c) बोध (d) ज्ञान

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : बी.एस. ब्लूम तथा उनके सहयोगियों ने अपनी पुस्तक (Texonomy of Educational Objectives; Hand Book I; Cognitive Domain –1956) में लिखा है कि संज्ञानात्मक क्षेत्र में वे उद्देश्य होते हैं जो ज्ञान के पुन: स्मरण या पहचान तथा बौद्धिक योग्यताओं व कौशल के विकास से संबंधित होते हैं। ब्लूम ने संज्ञानात्मक क्षेत्र के उद्देश्यों को छ: वर्गों में विभाजित किया है–

1. ज्ञान 2. बोध
3. अनुप्रयोग 4. विश्लेषण
5. संश्लेषण 6. मूल्यांकन

7. बालक के व्यवहार का कौन सा पक्ष उसकी रुचियों तथा मनोवृत्तियों से सम्बंधित होता है?

उत्तर: भावात्मक पक्ष

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-बालक के व्यवहार का भावात्मक पक्ष उसकी रूचियों तथा मनोवृत्तियों से सम्बन्धित होता है। बालक के रूचियों, मनोवृत्तियों तथा आवश्यकताओ के आधार पर उसके व्यवहार में भी परिवर्तन होता रहता है अत: व्यवहार का भावात्मक पक्ष परिवर्तनीय होता है। बालक का जैसे-जैसे विकास होता है वैसे-वैसे उसके व्यवहार के भावात्मक पक्ष में स्थायित्व भी आता जाता है।

8. शिक्षा बच्चों की सहायक होती है, उनके–

(a) शारीरिक विकास में (b) केवल मानसिक विकास में
(c) सर्वांगीण विकास में (d) केवल चरित्र विकास में

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015
DSSSB PRT

Ans: (c) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना होता है ताकि परिस्थितियों के साथ खुद का समायोजन स्थापित कर अपने बुद्धि का अधिकतम विकास कर सकें।

9. आपके अनुसार, शिक्षण है-

(a) एक प्रक्रिया (b) एक कला
(c) एक कौशल (d) (b) और (c) दोनों

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) शिक्षण कला एवं कौशल दोनों है।

10. शिक्षा का उद्देश्य है-

(a) अच्छा नागरिक बनाना
(b) ऐसे व्यक्तियों का निर्माण जो समाज के लिए उपयोगी हों
(c) व्यवहारिकता का निर्माण करना
(d) उपर्युक्त सभी

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) शिक्षा के निम्न उद्देश्य है-
1. मनुष्य के जन्मजात प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करना
2. बालक को अच्छा नागरिक बनाना
3. व्यक्तित्व का निर्माण करना
4. व्यवहारिकता का निर्माण करना
5. सत्य का ज्ञान कराना
6. मानसिक क्षमता का विकास करना आदि।

11. कक्षा शिक्षण में अधिगम को किस रूप में पहचाना जाता है?

(a) व्यक्तिगत समायोजन
(b) सामाजिक व राजनीतिक भिज्ञता
(c) व्यवहार परिवर्तन
(d) विशेष बड़े रोजगार के लिए तैयार करना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) कक्षा शिक्षण में अधिगम को व्यवहार परिवर्तन के रूप में पहचाना जाता है।

12. ब्लूम के वर्गीकरण के आधार पर उद्देश्य आधारित प्रश्नों के निर्माण में कौन-सा विकल्प असंगत है?

(a) विश्लेषण (b) मूल्यांकन
(c) आत्मानुभूति (d) अनुप्रयोग

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (c) ब्लूम के वर्गीकरण के आधार पर उद्देश्य आधारित प्रश्नों के निर्माण में निम्न घटक का होना अति आवश्यक है- ज्ञान, समझ, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन, अनुप्रयोग। आत्मानुभूति ब्लूम के वर्गीकी का घटक नहीं है।

13. शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए

(a) विद्यार्थियों में व्यावसायिक कौशल का विकास करना
(b) विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का विकास करना
(c) विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए तैयार करना
(d) विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार करना

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को इस तरह विकसित करना है कि बालक व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार हो सके।

14. शिक्षण को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है

(a) अधिगम का सरलीकरण
(b) शिक्षकों द्वारा ज्ञान का स्थानान्तरण तथा छात्र द्वारा ज्ञान को ग्रहण करना
(c) पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना
(d) शिक्षकों द्वारा ज्ञान का स्थानान्तरण

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) शिक्षण वह क्रिया है जिसमे शिक्षक अपने ज्ञान का स्थानान्तरण छात्र को करता है और छात्र द्वारा उस ज्ञान को ग्रहण किया जाता है।

15. शिक्षा के दो प्रमुख उद्देश्य हैं

(a) बालकों में विषयों का ज्ञान व उनका मानसिक विकास करना
(b) विषयों का ज्ञान देना व परीक्षा के लिए तैयार करना
(c) विषयों का ज्ञान देना व उसको कंठस्थ करवाना
(d) विषयों का ज्ञान देना व व्यावसायिक कौशल का विकास करना

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) शिक्षा का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके द्वारा बालक अपने भावी जीवन की संरचना का निर्माण करते है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों को सम्बंधित विषय का ज्ञान कराना तथा बालकों के मानसिक क्षमता को विकसित करना है।

16. निम्न में से कौन-सा कथन शिक्षण के बारे में सत्य नहीं है?

(a) शिक्षण में सुधार किया जा सकता है
(b) शिक्षण औपचारिक एवं अनौपचारिक है
(c) शिक्षण विज्ञान के साथ-साथ कला भी है
(d) शिक्षण अनुवेशन है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) शिक्षण अनुवेशन नहीं है बल्कि शिक्षण साहचर्य की भूमिका निभाता है जिसमें शिक्षक एवं छात्र दोनो का सम्बंध बना रहता है।

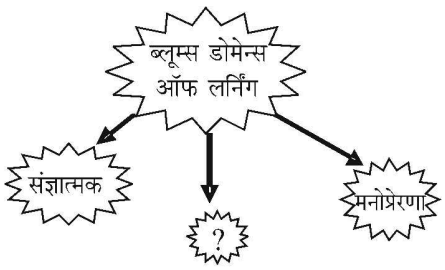
17. अधिगम का शिक्षा में योगदान है

(a) व्यवहार परिवर्तन में (b) नवीन अनुभव प्राप्त करने में
(c) समायोजन में (d) इनमें से सभी में।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (d) अधिगम का तात्पर्य सीखना है जिसमें बालक अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करने के तरीकों के बारे में जानता है। अधिगम का शिक्षा में निम्न योगदान है–
- व्यवहार परिवर्तन
- नवीन अनुभवों को प्राप्त करना
- समायोजन करना
- समस्याओं को हल करना
- सामाजिक आवश्यकताओं को जानना

18. निम्नलिखित रिक्त स्थान के लिए सही उत्तर का चयन करें-



(a) संज्ञानात्मक एवं मनोप्रेरणा (b) ज्ञानात्मक
(c) भावात्मक (d) शारीरिक क्षमता

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) ब्लूम डोमेन्स ऑफ लर्निंग के अनुसार शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के उद्देश्यों को क्रमश; तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है–

1. संज्ञानात्मक
2. भावात्मक
3. मनोप्रेरणात्मक

सन् 1956 में बेंजामिन एस. ब्लूम तथा उसके सहयोगियों ने शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया था।

19. शिक्षा का अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है

(a) अजीविका कमाना (b) बच्चे का सर्वांगीण विकास
(c) पढ़ना एवं लिखना सीखना (d) बौद्धिक विकास

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (b) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना होता है। शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास करती है जिसके द्वारा वह अपने वातावरण पर नियंत्रण करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

20. ब्लूम की टैक्सोनॉमी - - - - की पदानुक्रमिक व्यवस्था है।

(a) पाठ्यचर्या संबंधी घोषणाओं (b) पठन कौशल
(c) संज्ञानात्मक उद्देश्यों (d) उपलब्धि लक्ष्यों

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (c) टैक्सोनॉमी का अर्थ है ऐसी प्रणाली जिसे वर्गीकृत किया जा सके। ब्लूम टैक्सोनॉमी को तीन पदानुक्रमिक भागों में वर्गीकृत किया गया है (1) 'ज्ञानात्मक पक्ष' (2) 'भावात्मक पक्ष' (3) 'क्रियात्मक या मनोपेशीय उद्देश्य'। अतः ब्लूम की टैक्सोनॉमी संज्ञानात्मक उद्देश्यों की पदानुक्रमिक व्यवस्था है।

21. निम्नलिखित में कौन-सी संज्ञानात्मक क्रिया दी गई सूचना के विश्लेषण के लिए प्रयोग में लाई जाती है?

(a) वर्णन करना (b) पहचान करना
(c) अंतर करना (d) वर्गीकृत करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (c) किसी भी सूचनाओं के मध्य अंतर करने या उनका आपस में तुलना करने के लिए सूचनाओं का विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

22. शिक्षण शास्त्र बच्चे के प्रदर्शन को प्रभावित करता है, क्योंकि यह बच्चे को ..... में सक्षम बनाता है।

(a) समान चीजों का बार-बार अभ्यास करने
(b) अधिक अनुशासित होना
(c) अत्यधिक कक्षा-कार्य (क्लास वर्क) और गृह-कार्य (होम वर्क) करना
(d) अधिगम में सुनना और व्यस्त रहना

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : शिक्षण शास्त्र बच्चे प्रदर्शन को प्रभावित करता है क्योंकि यह बच्चे को अधिगम में सुनने और व्यस्त रहने में सक्षम बनाता है। शिक्षण शास्त्र बच्चे के अधिगम शैली और उसकी वैयक्तिक भिन्नता को समझने में सहायता करता है, जिसका उपयोग करते हुए शिक्षक शिक्षण वातावरण का निर्माण करता है और विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता करते हुए अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं।

23. एक विज्ञान शिक्षक छात्रों को ठोस तरल और गैस के उदाहरण देने के लिए कहता है यह उदाहरण सम्बन्धित है

(a) ज्ञान उद्देश्य (b) समझ उद्देश्य
(c) प्रयोग उद्देश्य (d) कौशल उद्देश्य

Dsssb Assistant Teacher Education Department

Ans. (b) **:** एक विज्ञान शिक्षक छात्रों को ठोस तरल और गैस के उदाहरण देने के लिए कहता है यह उदाहरण समझ उद्देश्य से सम्बन्धित है।

24. एक अध्यापक कुछ निर्देशन लिखता है ताकि छात्र लोकतंत्र का अर्थ समझने में सक्षम हो। यह उद्देश्य किस संकल्पना के अन्तर्गत आएगा।

(a) कौशल (b) संश्लेषण
(c) बोध (d) विश्लेषण

Dsssb Assistant Teacher Education Department

Ans. (c) **:** एक अध्यापक कुछ निर्देशन लिखता है ताकि छात्र लोकतंत्र का अर्थ समझने में सक्षम हो। यह उद्देश्य बोध संकल्पना के अन्तर्गत आएगा।

25. निम्न में से किसने अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन नहीं किया?

(a) कोहलर (b) स्किनर
(c) बी.एस. ब्लूम (d) थार्नडाइक

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : बी.एस. ब्लूम तथा उसके सहयोगियों ने सन् 1956 में शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया था, जबकि कोहलर, मैक्स वरथीमर, कुर्ट कोफ्का तथा कुर्ट लेविन ने मिलकर अन्तर्दृष्टि अधिगम सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

स्किनर ने अधिगम का क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धांत प्रतिपादित किया। थॉर्नडाइक ने अधिगम का सम्बन्धवाद सिद्धांत प्रतिपादित किया।

26. व्यवहार का 'करना' पक्ष ..... में आता है?

(a) सीखने के गतिक क्षेत्र
(b) सीखने के भावनात्मक क्षेत्र

(c) सीखने के मनोवैज्ञानिक क्षेत्र
(d) सीखने के संज्ञानात्मक क्षेत्र

DSSSB PRT
UKTET-2014 (I-V)

Ans : (a) व्यवहार का 'करना' पक्ष सीखने के गतिक क्षेत्र में आता है। सीखने के गतिक क्षेत्र से तात्पर्य है उन क्रियाओं पर नियंत्रण जो शिशु को परिवेश के साथ समायोजन में सहयोग देती है। जैसे चलना, खड़ा होना आदि। इसके बाद उत्कृष्ट गतिक विकास होता है, जैसे– वस्तुओं तक पहुँचना, छूना, पकड़ना आदि।

शिक्षण की प्रक्रिया एवं अवस्थाएँ

27. शिक्षण एक प्रक्रिया है

(a) शिक्षक द्वारा अधिगमकर्ता को ज्ञान के स्थानान्तरण की
(b) अधिगम को निर्देशित करने की
(c) अनुदेशन देने की
(d) शिक्षण अधिगम का सरलीकरण करने की

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) शिक्षण अधिगम का सरलीकरण करने की एक प्रक्रिया है। बालक में सीखने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक अवधारणा के अनुसार अधिगम की इस प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षण प्रक्रियाएं एवं समस्त शैक्षिक अवयव सहायक के रूप में होते हैं जिनका उद्देश्य अधिगम को सरल बनाना होता है।

28. शिक्षण के आधार पर इसके कितने चर है?

(a) 1 (b) 2
(c) 3 (d) 4

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) शिक्षण के आधार पर तीन प्रकार से चर होते है-
1. शिक्षक 2. छात्र 3. पाठ्यक्रम

29. पाठ्यक्रम निम्नलिखित में से शिक्षण के कौन-से चर में आता है?

(a) आश्रित चर (b) मध्यस्थ चर
(c) स्वतन्त्र चर (d) इनमें से कोई नहीं

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण के तीन चर होते है
(i) मध्यस्थचर - पाठ्यक्रम (ii) आश्रित चर - छात्र
(iii) स्वतंत्र चर - शिक्षक

30. स्मिथ ने शिक्षण की त्रिध्रुवी प्रक्रिया में कार्यवाहक माना है

(a) अभिभावक को (b) शिक्षक को
(c) शिक्षार्थी को (d) पाठ्यक्रम को

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

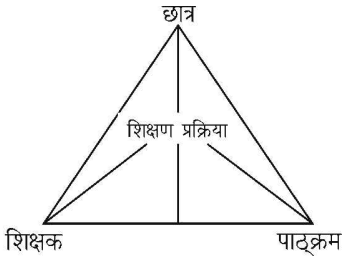
Ans: (b) स्मिथ ने त्रिध्रुवी प्रक्रिया में शिक्षक को कार्यवाहक, विद्यार्थी को लक्ष्य/उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम को मध्यस्थ चर माना है।

31. शिक्षा की प्रक्रिया के अंग होते हैं

(a) शिक्षक (b) शिक्षार्थी
(c) पाठ्यक्रम (d) ये सभी

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013
DSSSB PRT

Ans: (d) शिक्षण प्रक्रिया के मुख्यत: तीन अंग होते है- पाठ्यक्रम, छात्र, शिक्षक



शिक्षण प्रक्रिया में छात्र केन्द्र होता है।

शिक्षण के स्तर

32. निम्न में से कौन–सा शिक्षण का स्तर नहीं है?

(a) परावर्ती स्तर (b) अभिप्रेरणा स्तर
(c) स्मृति स्तर (d) अवबोध स्तर

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : शिक्षण के तीन स्तर होते हैं, जो निम्नवत् हैं–
1. स्मृति स्तर (Memory level)
2. अवबोध स्तर (Understanding level)
3. चिन्तन स्तर/परावर्ती स्तर (Reflective level)

जबकि अभिप्रेरणा स्तर शिक्षण का स्तर नहीं है।

33. स्मृति स्तर एवं बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान की संरचना में कौन–सा सोपान उभयनिष्ठ है?

(a) सामान्यीकरण (b) अन्वेषण
(c) प्रस्तुतीकरण (d) तैयारी

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : स्मृति स्तर एवं बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान की संरचना में प्रस्तुतीकरण सोपान उभयनिष्ठ है।

स्मृति स्तर के सोपान		**बोध स्तर के सोपान**	
हरबर्ट ने स्मृति स्तर शिक्षण प्रतिमान की संरचना पाँच प्रमुख पदों में की है–		बोध स्तर शिक्षण प्रतिमान के जन्मदाता हेनरी सी मौरीसन हैं। इस प्रतिमान के निम्न सोपान हैं–	
1.	प्रस्तावना	1.	अन्वेषण
2.	प्रस्तुतीकरण	2.	प्रस्तुतीकरण
3.	स्पष्टीकरण तथा तुलना	3.	आत्मीकरण अथवा परिपाक
4.	सामान्यीकरण	4.	व्यवस्था
5.	प्रयोग	5.	वर्णन अथवा अभिव्यक्तिकरण

34. मॉरीसन ने बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान में पाँच पदों का वर्णन किया है वे हैं–

I. प्रस्तुतीकरण
II. खोज
III. संगठन/व्यवस्था
IV. आत्मीकरण
V. वाचन/अभिव्यक्तिकरण

इनकी सही क्रम है–

(a) IV, V, III, I, II (b) II, I, IV, III, V
(c) II, I, III, IV, V (d) I, II, III, IV, V

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : हेनरी सी. मौरीसन ने बोध स्तर के शिक्षण प्रतिमान में पाँच पदों का वर्णन किया है, जिसके सोपान निम्न हैं–

1. खोज/अन्वेषण (Exploration)
2. प्रस्तुतीकरण (Presentation)
3. आत्मीकरण अथवा परिपाक (Assimilation)
4. संगठन/व्यवस्था (Organization)
5. वाचन/अभिव्यक्तिकरण (Recitation)

35. निम्नलिखित में से कौन-सा स्तर शिक्षण का है?

(a) परावर्तक (b) अन्त:क्रियात्मक
(c) प्रक्षेपण (d) संकलित

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) शिक्षण स्तर निम्न है-
1. अन्त:क्रियात्मक 2. पहचान 3. प्रशंसा 4. विश्लेषण

36. भारतवर्ष में प्राइमरी शिक्षा निम्नलिखित पर बल देती है

(a) बोध का विकास करना
(b) आध्यात्मिक पक्ष पर बल देना
(c) विवेचनात्मक चिन्तन का विकास करना
(d) रटने को प्रेरित करना

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) बालकों को किसी भी स्तर या कही पर शिक्षा दी जाती है तो उसका मुख्य लक्ष्य बालकों के बौद्धिक क्षमता का विकास करना होता है।

37. निम्न में से कौन-सा शिक्षण-अधिगम का स्तर नहीं है?

(a) विभेदीकरण स्तर (b) स्मृति स्तर
(c) चिन्तनशील स्तर (d) समझ स्तर

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (a) विभेदीकरण स्तर, शिक्षण अधिगम का स्तर नहीं है। शिक्षण अधिगम के मुख्यत: तीन स्तर होते हैं– (1) स्मृति स्तर (2) समझ या बोध स्तर (3) चिन्तनशील स्तर। ये तीनों स्तर आपस में अंतर्सम्बन्धित रहते हुए सरल से कठिनता की ओर अग्रसर होते हैं।

38. निम्नलिखित में से कौन-सा 'समझ के लिए शिक्षण' को प्रदर्शित नहीं करता?

(a) समानता और अंतर देखने और सादृश्यता स्थापित करने के लिए विद्यार्थियों की सहायता करना
(b) विद्यार्थियों को एकांकी तथ्यों और प्रक्रियाओं को याद करने के योग्य बनाना
(c) परिघटना या अवधारणा को अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने के लिए विद्यार्थियों को कहना
(d) नियम कैसे काम करता है इसे स्पष्ट करने हेतु उदाहरण उपलब्ध कराने के लिए विद्यार्थियों को पढ़ाना

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011
Hariyana TET 2013 (VI-VIII)

Ans: (b) विद्यार्थियों को एकांकी तथ्यों और प्रक्रियाओं को याद करने योग्य बनाना उनकी समझ या सूझ को विकसित नहीं करता यह मात्र रटने पर बल देता है इसलिए यह समझ के लिए शिक्षण को प्रदर्शित नहीं करता है।

शिक्षण वातावरण

39. बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ–

(a) उनके अनुभवों एवं भावनाओं को उचित स्थान मिले
(b) उन्हें खेलने का मौका मिले
(c) उन्हें मित्र बनाने का मौका मिले
(d) कड़ा अनुशासन हो

DSSSB PRT
UKTET 2014 (I-V)

Ans : (a) बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उनके अनुभवों एवं भावनाओं को उचित स्थान मिले। अत: अध्यापक को कक्षा–शिक्षण करते समय सहानुभूति तथा सहयोगात्मक व्यवहार करना चाहिए और बच्चों के अनुभवों और भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

40. वह विशेषता जो कि सहयोगात्मक स्थिति की सीमा में नहीं है-

(a) आमने-सामने अन्त:क्रिया (b) वैयक्तिक जवाबदेही
(c) कार्यों पर जोर (d) शिक्षक केन्द्रित

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (d) शिक्षक केन्द्रित शिक्षण सहयोगात्मक स्थिति की सीमा में नहीं है क्योंकि शिक्षक केन्द्रित शिक्षण अधिकारवादी होता है और शिक्षक अपने अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन करता है। यह प्राचीन शिक्षा की विशेषता थी। वर्तमान में छात्र केन्द्रित शिक्षण व्यवस्था सहयोगात्मक स्थिति की सीमा के अंतर्गत आता है।

41. एक शिक्षक को कक्षा में कार्य करना चाहिए-

(a) प्रगतिशील भूमिका में (b) प्रभुत्ववादी भूमिका में
(c) प्रजातांत्रिक भूमिका में (d) प्रभावशाली भूमिका में

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) शिक्षक को कक्षा में प्रजातांत्रिक भूमिका का निर्वहन करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में डर एवं भय का एहसास समाप्त हो जाए तथा शिक्षक-छात्र वार्तालाप सुचारू रुप से चलता रहे।

42. कौन सा सीखना स्थायी होता है?

(a) रटकर (b) सुनकर
(c) समझकर (d) देखकर

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (c) समझकर सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। जबकि रटकर, सुनकर, देखकर सीखा हुआ ज्ञान स्थायी नहीं होता। अत: विकल्प (c) सही है।

43. कक्षा–कक्ष का वातावरण होना चाहिए–

(a) शांत (b) शोरगुल से भरा
(c) अनुशासन से पूर्ण (d) मित्रतापूर्ण

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) कक्षा–कक्ष का वातावरण सहयोगात्मक एवं मित्रतापूर्ण होना चाहिए, सामाजिक अंत:प्रक्रिया सौहार्दपूर्ण होना चाहिए ताकि विद्यार्थी बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी समस्याओं को शिक्षक के समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

44. अपनी कक्षा के एक विद्यार्थी की प्रवृत्ति को यदि शिक्षक बदलना चाहता है, तो उसे.....

(a) विद्यार्थी के साथ कड़ाई से पेश आना होगा
(b) कक्षा के अन्य विद्यार्थियों को उससे न जानने योग्य दूरी बनाए रखने के लिए कहना होगा
(c) उसके समूह के सभी सदस्यों की प्रवृत्ति बदलनी होगी
(d) विद्यार्थी को पढ़ने के प्रति प्रेरित करना होगा

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (c) बालक की प्रवृति उसके संगत से मिलती है अत: यदि किसी एक बालक की प्रवृति में परिवर्तन करना हो तो उस बालक के संगत में रहने वाले सभी बालकों के प्रवृत्तियों में सामूहिक रूप से बदलाव का प्रयास करना चाहिए। अन्यथा बालक पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

45. प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ शिक्षक के लिए विद्यालय में कौन-सी नेतृत्व शैली बेहतर है?

(a) सत्ताधारी नेतृत्व (b) प्रजातान्त्रिक नेतृत्व
(c) अहस्तक्षेपी नेतृत्व (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (b) एक प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ शिक्षक के लिए विद्यालय परिसर में प्रजातांत्रिक नेतृत्व शैली का होना अति आवश्यक है। जिस कारण छात्रों में सुरक्षा की भावना बनी रहती है और उनका अधिगम सुचारु रूप से चलता रहता है तथा विद्यालय के क्रियाकलापों के सफल संचालन में अपने सहयोगियों तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की सहायता प्राप्त करने में कठिनाई नहीं होती है।

46. शिक्षण का सत्तावादी स्तर है

(a) शिक्षक केन्द्रित (b) छात्र केन्द्रित
(c) प्रधानाध्यापक केन्द्रित (d) अनुभव केन्द्रित

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (a) शिक्षण का सत्तावादी स्तर शिक्षक केन्द्रित होता है जबकि शिक्षण का प्रजातांत्रिक स्तर छात्र केन्द्रित होता है।

47. अधिगम के एक अनुकूल वातावरण में,..... के अलावा निम्नलिखित विशेषताएं उपस्थित होती हैं।

(a) शिक्षार्थी को स्वायत्तता (b) बहु-विषयक दृष्टिकोण
(c) शिक्षक की निगरानी (d) लचीली प्रक्रिया

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : अधिगम के एक अनुकूल वातावरण में, शिक्षक की निगरानी के अलावा निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

1. शिक्षार्थी को स्वायत्तता
2. बहु–विषयक दृष्टिकोण
3. लचीली प्रक्रिया
4. समावेशी प्रक्रिया
5. अभिव्यक्ति का अवसर
6. व्यक्तिगत भिन्नता का सम्मान

48. बच्चों में सीखने और सुनने के लिए अधिगमयोग्य वातावरण के लिए निम्नलिखित में से कौन उपयुक्त हैं?

(a) शिक्षार्थियों को कुछ यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है।
(b) एक लंबे समय के लिए निष्क्रिय रूप से सुनना।
(c) निरंतर गृहकार्य देते रहना।
(d) सीखने वाले द्वारा व्यक्तिगत कार्य करना।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (a) अधिगमयोग्य वातावरण में सबसे उपयुक्त है कि शिक्षार्थी पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो कि वह क्या सीखना चाहता है और किसमें उसकी रुचि है ताकि वह बिना किसी कठिनाई के सीख सके और कर सके। अत: शिक्षार्थियों को यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है अधिगमयोग्य वातावरण के लिए सबसे उपयुक्त है।

49. एक बच्चे के लिए अनुकूल अधिगम वातावरण में निम्न होगा–

(a) शिक्षार्थी अनुशासन (b) शिक्षार्थी को स्वायत्तता
(c) रैखिक अनावरण (d) शिक्षक का अधिकार

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : एक बालक के लिए अनुकूल अधिगम वातावरण में शिक्षार्थी को स्वायतता रहती है। शान्त, सुविधाजनक, सहज, नेत्रप्रिय, हरियाली युक्त, परस्पर सहयोगी, सहानुभूतिपूर्ण वातावरण में बालक प्रसन्नता से व एकाग्रचित्त होकर अधिगम करता है। ऐसे वातावरण में शिक्षार्थी को सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है।

शिक्षण का संगठन

50. निम्नलिखित में से कौन-सी शिक्षण-अधिगम से संबंधित समस्या है?

(a) विषय वस्तु को समझने की समस्या
(b) कक्षा-कक्ष में अनुशासनहीनता
(c) परीक्षा में नकल करना
(d) कक्षा में देरी से पहुँचना

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (a) शिक्षण अधिगम का तात्पर्य शिक्षक द्वारा ज्ञान का स्थानान्तरण है जिसे छात्र ग्रहण करते है जब विद्यार्थियों द्वारा विषय वस्तु को समझने में समस्या आती है तो शिक्षण-अधिगम में अवरोध उत्पन्न होता है।

51. निम्नलिखित में से क्या पाठ्यक्रम योजना में सही क्रम है?

(a) प्रेरणा-प्रस्तुति-पुनर्पूंजीकरण– मूल्यांकन– गृह समानुदेशन
(b) प्रेरणा-प्रस्तुति-मूल्यांकन पुनर्पूंजीकरण-गृह समानुदेशन
(c) प्रेरणा-पुनर्पूंजीकरण-मूल्यांकन प्रस्तुति- गृह समानुदेशन
(d) मूल्यांकन-गृह समानुदेशन-पुनर्कथन

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : पाठ्यक्रम योजना का सही क्रम है–

1. प्रेरणा (Motivation)
2. प्रस्तुति (Presentation)

3. पुनर्पूंजीकरण (Recapitalation)
4. मूल्यांकन (Evaluation)
5. गृह समानुदेशन (Home Assignment)

52. शिक्षण के आधार पर उसके कितने चर हैं?

(a) 1 (b) 2
(c) 3 (d) 4

DSSSB PRT

Ans : (c) शिक्षण के आधार पर उसके तीन चर होते हैं– शिक्षक, छात्र एवं पाठ्यक्रम। शिक्षक को स्वतंत्र चर, छात्र को आश्रित चर तथा पाठ्यक्रम को हस्तक्षेप चर की संज्ञा दी जाती है।

शिक्षण का नियोजन

53. पाठ योजना निर्माण में पंचपदीय प्रणाली के प्रणेता कौन थे?

उत्तर: हरबर्ट

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-पाठ योजना निर्माण में पंचपदीय प्रणाली के प्रणेता हरबर्ट थे। हरबर्ट ने अपने शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा मनोविज्ञान के आधार पर अध्यापन की एक सामान्य प्रणाली का प्रतिपादन किया। प्रारम्भ में इसके चार भाग थे- (1) स्पष्टता (2) सम्बन्ध (3) व्यवस्था या प्रणाली (4) विधि

हरबर्ट के अनुयायियों ने कुछ साधारण संशोधन करने के उपरान्त इसे हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली का स्वरूप दिया जो निम्न है-

(1) प्रस्तावना
(2) प्रस्तुतीकरण
(3) तुलना व सहयोग
(4) नियमीकरण
(5) अनुप्रयोग

54. निम्नलिखित में से कौन शिक्षण योजना का मुख्य बिन्दु है?

(a) प्रधानाध्यापक (b) शिक्षक
(c) विद्यार्थी (d) इनमें से कोई नहीं

(DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT))

Ans. (c) **:** शिक्षण योजना का मुख्य बिन्दु बालक (विद्यार्थी) होता है। क्योंकि शिक्षण उसी के व्यवहार परिवर्तन के लिए किया जाता है।

55. एक शिक्षक को विद्यार्थियों की तत्परता स्तर को बढ़ाना है। ऐसा करने के लिये सबसे अच्छा तरीका कौन-सा होगा?

(a) विशेष प्रकरण से सम्बन्धित सृजनात्मक क्रियाकलाप को कक्षा में संगठित करवाकर
(b) कक्षा में एक इनडोर गेम आयोजित करवाकर
(c) कहानी कथन विधि द्वारा
(d) कक्षा के किसी एक विद्यार्थी द्वारा नियंत्रण करवाकर

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (a) एक शिक्षक को विद्यार्थियों की तत्परता स्तर को बढ़ाना हैं ऐसा करने के लिए सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि प्रकरण विशेष से सम्बन्धित सृजनात्मक क्रियाकलाप करवाया जाय ताकि विद्यार्थी क्रियाकलाप में स्वयं सहभागिता के द्वारा सीख सके।

56. शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक को

(a) छात्रों को खड़ा करना चाहिए
(b) छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए
(c) श्याम-पट को साफ करना चाहिए
(d) छात्रों को चुप रहने के लिए कहना चाहिए

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शिक्षक को छात्रों को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए क्योंकि इससे छात्रों की ग्रहण क्षमता बढ़ जाती है एवं कक्षा-कक्ष में अनुशासन स्थापित हो जाता है। अत: शिक्षण कार्य अत्यधिक प्रभावी हो जाता है।

57. निम्नलिखित में से कौन–सा सिद्धांत पाठ–योजना में शामिल नहीं है?

(a) शिक्षार्थियों का ज्ञान (b) उद्देश्यों की स्पष्टता
(c) शिक्षण का ज्ञान (d) योजना की दृढ़ता

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (d) पाठ–योजना बनाते समय निम्न सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) विद्यार्थियों की शारीरिक व मानसिक योग्यताओं का ज्ञान
(2) पाठ–योजना बनाने से पहले विषय का गहन ज्ञान
(3) पाठ–योजना में उद्देश्यों को सावधानीपूर्वक लिखना
(4) शिक्षण सिद्धांतों, शिक्षण सूत्रों तथा शिक्षण विधियों का ज्ञान
(5) विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान की जानकारी आदि।

58. सीखने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है–

(a) पाठ्यपुस्तक पठन (b) रूचि
(c) अनुभव (d) जिज्ञासा

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) सीखने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान होता है जिज्ञासा। जब बालक में किसी विषय–वस्तु से सम्बन्धित जिज्ञासा या जानने की इच्छा होती है तो वह उस विषय–वस्तु में रुचि लेते हैं और अधिगम–प्रक्रिया स्वभाविक रूप से प्रभावी हो जाती है। इसीलिए कक्षा–शिक्षण में अध्यापक प्रस्तावना कौशल के माध्यम से विद्यार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न करने का प्रयास करता है।

59. शिक्षक को गृहकार्य की जाँच करनी चाहिए–

(a) कभी–कभी (b) कभी नहीं
(c) नियमित (d) जब छात्र कहे

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग गृहकार्य होता है। पाठ–योजना निर्माण में इसको प्रमुख स्थान दिया जाता है। क्योंकि गृह–कार्य के द्वारा छात्र स्वतंत्र रूप से अध्ययन करने के लिए प्रेरित होता है। अत: शिक्षक को गृहकार्य की नियमित जाँच करनी चाहिए ताकि छात्रों के स्वतंत्र वातावरण में अध्ययन की गुणवत्ता की माप की जा सके।

शिक्षण के सिद्धांत

60. शिक्षण सबसे अधिक प्रभावी होता है जब–

(a) विद्यार्थी विषय में रुचि लेते हैं।
(b) शिक्षक को विषय का गहन ज्ञान हो।
(c) विद्यार्थियों को उनके मानसिक स्तर के अनुरुप शिक्षा दी जाए।
(d) एक ही विषय-वस्तु को बार-बार दोहराया जाए।

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) शिक्षण सबसे ज्यादा प्रभावी तब होगा जब विद्यार्थियों को उसके मानसिक स्तर के अनुरुप शिक्षा दी जाय। इसके लिए शिक्षक को बौद्धिक भिन्नता तथा वैयक्तिक भिन्नता का ज्ञान होना आवश्यक होता है।

61. बालकों में अधिगम

(a) ज्ञान को रटने से होता है
(b) पाठ्यपुस्तक को पढ़ने से होता है
(c) शिक्षक द्वारा ज्ञान के स्थानान्तरण द्वारा होता है
(d) क्रिया करके होता है

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) बालकों में अधिगम का विकास क्रिया करके होता है। अनुभव के द्वारा सीखे गये तथ्य अधिक प्रभावशाली होते हैं। प्रकृतिवादी रूसो के अनुसार जलती हुई मोमबत्ती छू लेने पर बच्चे को यह बताने की आवश्यकता नहीं रह जाती कि आग जला भी देती है।

62. अधिगम प्रभावशाली रूप से होता है, यदि

(a) बच्चे को सीखने के लिए तत्पर किया जाये
(b) बच्चा, जो वह सीखता है उसे दुहराये
(c) बच्चा संतुष्ट अनुभव करे
(d) बच्चा उपर्युक्त सभी करे

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) अधिगम प्रभावी तब होता है जब निम्न कार्य किए जाए -
1. बच्चों को सीखने के लिए तत्पर किया जाए
2. बच्चों को बार-2 दोहराने की प्रक्रिया कराई जाए
3. बच्चों द्वारा संतुष्टि का अनुभव किया जाय
4. बच्चे क्रिया विधि द्वारा अधिगम करे
5. खेल विधि का प्रयोग अधिगम के लिए किया जाए
6. कक्षा-कक्ष का वातावरण शांत हो

63. शिक्षण और अधिक प्रभावी हो सकता है, यदि

(a) छात्रों को स्वयं कार्य करने की स्वायत्तता व नियंत्रण दिया जाये
(b) छात्र अधिगम, शिक्षक द्वारा निर्देशित एवं नियंत्रित हो
(c) शिक्षक तथ्यों की व्याख्या करने में केन्द्रीय भूमिका निभाये
(d) शिक्षक अधिगम को निर्देशित करें

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (a) छात्र जो कार्य स्वयं करते हैं वे उसे आसानी से सीख लेते है इस लिए करके सीखने की विधि को सबसे प्रभावी शिक्षण माना जाता है।

64. शिक्षण और अधिक प्रभावी हो सकता है, यदि

(a) छात्रो को स्वयं कार्य करने की स्वायत्तता दिया जाये
(b) छात्र अधिगम शिक्षक द्वारा निर्देशित एवं नियंत्रित हो
(c) शिक्षक तथ्यों की व्याख्या करने में केन्द्रीय भूमिका निभाये
(d) शिक्षक अधिगम को निर्देशित करे

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) छात्र जो भी कार्य स्वयं करते है वे उसे जल्दी सीख जाते है इसलिए करके सीखने की विधि को सबसे प्रभावी शिक्षण माना जाता है।

65. प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए निम्न में किसे बेहतर मानते हैं?

(a) विडीयो अनुरूपण
(b) प्रदर्शन
(c) स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (c) प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए स्वयं के द्वारा प्राप्त किए गये अनुभव से प्राप्त शिक्षा सबसे बेहतर मानी जाती है क्योंकि स्वयं के अनुभव से प्राप्त शिक्षा जीवन पर्यन्त स्थिर रहती है।

66. बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप कौन-सी विधि का चयन करेंगे?

(a) बच्चों को पढ़कर आने को कहेंगे और प्रश्न पूछेंगे
(b) स्वयं गतिविधि करेंगे तथा बच्चों को बताएँगे
(c) आप गतिविधि में बच्चों को शामिल करेंगे
(d) बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) बच्चे द्वारा स्वयं कार्य करने से उनमें रुचि का विकास होता है क्योंकि इसमें बच्चों को कार्य करने की स्वतंत्रता होती है तथा उन्हें अलग-अलग तरीकों का प्रयोग करने की भी स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

67. जटिल परिस्थिति को संसाधित करने में शिक्षक बच्चों की सहायता कर सकता है

(a) प्रतियोगिता को बढ़ावा देकर और सबसे पहले कार्य पूरा करने वाले बच्चे को पुरस्कार देकर
(b) कोई भी सहायता न देकर, जिससे बच्चे अपने आप निर्वाह करना चाहिए
(c) उस पर एक भाषण देकर
(d) कार्य को छोटे हिस्सों में बाँटने के बाद निर्देश लिखकर

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (d) वर्तमान शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक होता है उसी के इर्द–गिर्द शिक्षण प्रक्रिया संचालित की जाती है। बालक के समक्ष जब जटिल परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है तो यह अधिगम प्रक्रिया को बाधित करते हैं इसलिए शिक्षक जटिल शिक्षण परिस्थितियों को संसाधित करने के लिए कार्य को छोटे–छोटे हिस्सों में बाँट कर उस पर निर्देश के द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन करता है।

68. सीखना समृद्ध हो सकता है यदि

(a) वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में लाया जाए जिसमें विद्यार्थी एक–दूसरे से अन्त:क्रिया करें और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाए

(b) कक्षा में अधिक–से–अधिक शिक्षण–सामग्री का प्रयोग किया जाए
(c) शिक्षक विभिन्न प्रकार के व्याख्यान और स्पष्टीकरण का प्रयोग करें
(d) कक्षा में आवधिक परीक्षाओं पर अपेक्षित ध्यान दिया जाए

DSSSB PRT
C TET 2011 (I-V)

Ans : (a) सीखना तब अधिक प्रभावशाली होता है जब सीखी जाने वाली विषय–वस्तु का सम्बन्ध बालक के वास्तविक जीवन से होता है। अत: वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में प्रयोग करने से, जिसमें विद्यार्थी एक दूसरे से अन्त:क्रिया करते हैं और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाते हैं, से सीखना समृद्ध हो सकता है।

69. कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए एक शिक्षिक को उचित है
(a) श्यामपट्ट का प्रयोग करना (b) चर्चा करना
(c) कहानी कहना (d) प्रश्न पूछना

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) कक्षा में छात्रों की रुचि एवं उत्सुकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक छात्र से पूर्वज्ञान से सम्बंधित प्रश्न पूछे साथ ही शिक्षण के बीच में भी समय–समय पर प्रश्न पूछकर छात्रों की उत्सुकता शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बनाये रखना चाहिए।

70. यदि कुछ विद्यार्थी कक्षा में अध्ययन की चित्तवृत्ति में नहीं है, तो आप
(a) उन्हें अध्ययन के लिए बाध्य करेंगे
(b) उन विद्यार्थियों को कक्षा छोड़ने के लिए कहेंगे
(c) उन्हें चेतावनी देंगे कि वे अवश्य अध्ययन करें नहीं तो आप प्रधानाध्यापक को सूचित कर देंगे
(d) उन्हें उनकी रुचि अथवा आप अपने विषय के अनुसार रुचिपूर्ण चीजें बताएँगे

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) अध्ययन में चित्तवृत्ति न होने का तात्पर्य अध्ययन में रुचि न लेना है। अगर कुछ छात्रों द्वारा इस तरह की प्रवृति अपनाई जाती है तो शिक्षक को अपने विषय वस्तु से सम्बंधित उनकी रुचि के अनुसार शिक्षण करना चाहिए। शिक्षण कार्य को मनोरंजक एवं रुचिकर बनाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का भी प्रयोग किया जाता है।

71. ''करके सिखना'' तब होता है जब अधिगम निम्न होता है–
(a) शिक्षक केन्द्रीत (b) प्रासंगिक और व्यावहारिक
(c) निष्क्रिय और सैद्धांतिक (d) रटना (रोट) या शिक्षाप्रद

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) 'करके सीखना' तब प्रभावी होता है जब अधिगम प्रासंगिक और व्यावहारिक होता है। क्रिया आधारित अधिगम में अधिगम वस्तु विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से जुड़ी होती हैं, उसमें क्रियाशीलता के गुण होते हैं, तथा वह कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। क्रिया आधारित अधिगम में छात्र बेहतर सीखते हैं और प्राप्त ज्ञान व अनुभव स्थायी होता है।

72. निम्नलिखित में से कौन एक नए विषय के संबंध में प्रासंगिकता का वर्णन करता है?
(a) अभिज्ञता कि कुछ जानने योग्य है
(b) एक वास्तविक जीवन की स्थिति
(c) विषय से संबंधित एक कहानी
(d) किसी भी संदर्भ में सभी शिक्षार्थियों के लिए समान

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : अभिज्ञता कि कुछ जानने योग्य है एक नए विषय के सम्बन्ध में प्रासंगिकता का वर्णन करता है। अर्थात् जिस विषय का अधिगम या शिक्षण किया जा रहा है वह विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन में कितना महत्त्वपूर्ण है और उसकी उपयोगिता क्या है, यही निर्धारित करता है कि उस विषय को कितना और कब पढ़ाया जाये या अधिगम किया जाये।

73. दिए गए वाक्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित में से कौन–सा युग्म सर्वाधिक उचित विकल्प होगा? जब बच्चे उन गतिविधियों में शामिल होते हैं जो ..... होती है, तब वे जल्दी ..... करते हैं
(a) कक्षा–कक्ष में उपयोगी, विस्मरण
(b) केवल उनके कक्षा–कार्य से संबंधित प्रत्यास्मरण
(c) सांस्कृतिक रूप से निष्पक्षीय, स्मरण
(d) वास्तविक जीवन में उपयोगी, सीखा

DSSSB PRT
C TET (VI-VIII) 2013

Ans : (d) जब बच्चे उन गतिविधियों में शामिल होते हैं जो उनके वास्तविक जीवन में उपयोगी होती है तब वे जल्दी सीखा करते हैं क्योंकि उन्हें उस गतिविधि से सम्बन्धित पूर्व अनुभव होता है।

74. एक पी.टी. (खेल) शिक्षक क्रिकेट के खेल में अपने शिक्षार्थियों के क्षेत्र-रक्षण को सुधारना चाहता है। निम्न में से कौन-सी युक्ति शिक्षार्थियों को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सर्वाधिक सहायक है?
(a) शिक्षार्थियों को क्षेत्र-रक्षण का अधिक अभ्यास करवाना।
(b) शिक्षार्थियों को यह बताना कि क्षेत्र-रक्षण सीखना उनके लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है।
(c) बेहतर क्षेत्र-रक्षण और सफलता की दर के पीछे के तर्क को स्पष्ट करना।
(d) क्षेत्र-रक्षण को प्रदर्शित करना और शिक्षार्थी अवलोकन करना।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013
DSSSB PRT

Ans: (a) एक पी. टी. (खेल) शिक्षक क्रिकेट के खेल में अपने शिक्षार्थियों के क्षेत्र–रक्षण को सुधारने के लिए वह निरन्तर शिक्षार्थियों को क्षेत्र-रक्षण का अधिक अभ्यास कराये तथा बाद में उनका परीक्षण भी लें ताकि अभ्यास के दौरान कोई कमी रह गई हो तो वह परीक्षण में पता चल जाये और उसे सुधारा जा सके ऐसा करने से उसे अपना लक्ष्य पाने में सहजता होगी।

75. एक शिक्षिका अपनी प्राथमिक कक्षा में प्रभावी अधिगम को बढ़ा सकती है–

(a) अधिगम में छोटी-छोटी उपलब्धियों के लिए पुरस्कार देकर

(b) ड्रिल और अभ्यास के द्वारा

(c) अपने विद्यार्थियों में प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देकर

(d) विषयवस्तु को विद्यार्थियों के जीवन के साथ संबंधित करके

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (d) प्राथमिक कक्षा में शिक्षिका अपने अधिगम को प्रभावी कर सकती हैं विषयवस्तु को विद्यार्थियों के जीवन से सम्बन्धित करके। ऐसा करने से विद्यार्थी विषय वस्तु को अपने जीवन से जोड़कर देखते हैं और अधिगम प्रभावशाली बनता है।

शिक्षण के सूत्र

76. निम्न में से कौन-सा तरीका विज्ञान विषय को समझने के लिये उच्च प्राथमिक स्तर पर उपयुक्त नहीं है?

(a) वस्तुओं का प्रेक्षण करना व अवलोकनों को रिकार्ड/ दर्ज करना

(b) रेखाचित्र बनाना

(c) वास्तविक अनुभव प्रदान करना

(d) अमूर्त्तता के द्वारा विषय को सीखना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) उच्च प्राथमिक स्तर पर बालकों को विज्ञान विषय समझाने के लिए उन सभी प्रक्रियाओं का सहारा लेना आवश्यक है जिसमें वे स्वयं प्रत्यक्ष तौर पर अनुभव कर सकें क्योंकि तभी उनकी समझ विकसित होती है। अप्रत्यक्ष अनुभव आधारित ज्ञान के द्वारा विज्ञान को समझने में समस्या का सामना करना पड़ेगा।

77. कक्षा एक और दो स्तर के बच्चे–

(a) अमूर्त अनुभवों से शीघ्र सीखते हैं

(b) मूर्त अनुभवों से शीघ्र सीखते हैं

(c) पढ़कर शीघ्र सीखते हैं

(d) लिखकर शीघ्र सीखते हैं

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (b) कक्षा एक एवं दो स्तर के बच्चे एक ही आयु वर्ग (2–7 वर्ष) में आते हैं तथा इस आयु वर्ग के बच्चे अपने मूर्त अनुभवों से शीघ्र सीखते हैं।

शिक्षण प्रविधियाँ

78. दिव्या अक्सर निर्देशित कार्यों को छोटे–छोटे हिस्सों में विभाजित कर आसान बना लेती है। वह उपयोग करती है–

(a) कम करने की विधि का

(b) द्वितीयक विस्तारण विधि का

(c) उपलक्ष्य विश्लेषण विधि का

(d) क्रियात्मक जड़ता नियामक विधि का

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : दिव्या अक्सर निर्देशित कार्यों को छोटे–छोटे हिस्सों में विभाजित कर आसान बना लेती है। अर्थात् वह उपलक्ष्य विश्लेषण विधि का उपयोग कर रही है। जब समस्या कठिन होती है तथा समस्या का समाधान प्राप्त करना आसान नहीं होता है तब इस विधि का प्रयोग करते हुए समस्या को छोटे–छोटे हिस्सों में बॉटकर उसका समाधान प्रस्तुत किया जाता है।

79. निम्नलिखित रणनीतियों में से कौन सी बच्चों में अर्थ निर्माण को बढ़ावा देगी?

(a) सूचनाओं का संचरण

(b) दंडात्मक साधनों का प्रयोग करना

(c) एकरूप एवं मानकीकृत परीक्षण

(d) अन्वेषण एवं परिचर्चा

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (d) : अन्वेषण एवं परिचर्चा बच्चों में अर्थ निर्माण को बढ़ावा देगी। अन्वेषण एवं परिचर्चा दोनों बच्चों के सक्रिय सहभागिता के द्वारा ज्ञान निर्माण में योगदान करते हैं। इन दोनों में छात्र शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्रिय रहते हुए ज्ञान की खोज करते हैं अर्थात् स्वयं सीखते हैं। इसमें शिक्षक ऐसे वातावरण का निर्माण करता है कि छात्रों के सामने समस्या उत्पन्न हो जाये। सभी छात्र समस्या के संबंध में चिंतन तथा निरीक्षण करते हैं तथा अंत में निर्णय निकालते हैं। इन दोनों नीतियों के अंतर्गत सभी छात्र अपनी–अपनी क्रियाओं द्वारा सत्य की खोज करते हैं।

80. निम्नलिखित में से कौन प्रभावी अधिगम रणनीतियों के उदाहरण हैं?

(i) लक्ष्य एवं समय सारणी निर्धारित करना।

(ii) संगठनात्मक चार्टों एवं अवधारणात्मक नक्शे बनाना।

(iii) उदाहरणों एवं गैर–उदाहरणों के बारे में सोचना।

(iv) हमउम्र साथी को समझाना।

(v) स्वयं से प्रश्न करना।

(a) (i), (iv), (v) (b) (i), (ii), (iii), (v)

(c) (i), (ii), (iii), (iv), (v) (d) (i), (ii), (iii)

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : प्रभावी अधिगम की रणनीतियों के संबंध में निम्नलिखित उदाहरण सही हैं–

- लक्ष्य एवं समय–सारिणी निर्धारित करना।
- संगठनात्मक चार्टों एवं अवधारणात्मक नक्शे बनाना।
- उदाहरणों एवं गैर उदाहरणों के बारे में सोचना।
- हमउम्र साथी को समझाना।
- स्वयं से प्रश्न करना।

81. निम्नलिखित में से कौन-सी शिक्षण-अधिगम के लिए एक प्रभावशाली शिक्षण प्रणाली नहीं है?

(a) प्रयोग एवं पर्यवेक्षण

(b) संवाद एवं परिचर्चा

(c) दिए गए ज्ञान को दोहराने पर ध्यान केंद्रित करना

(d) बच्चों को अंतर्दृष्टि के द्वारा अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करना

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) शिक्षण अधिगम के लिए प्रभावशाली शिक्षण प्रणाली निम्नलिखित हैं-
- प्रयोग एवं पर्यवेक्षण प्रणाली
- संवाद एवं परिचर्चा प्रणाली
- बच्चों को अंतर्दृष्टि के द्वारा अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करना
- सक्रिय क्रिया आधारित अधिगम प्रणाली
- परियोजना प्रणाली आदि

अत: दिये गये ज्ञान को दोहराने या रटने पर ध्यान केन्द्रित करके शिक्षण को प्रभावशाली नहीं बनाया जा सकता है।

82. निम्नलिखित में से कौन–सा अभिक्रमित अनुदेशन का सिद्धांत नहीं है?

(a) अभ्यास का सिद्धांत
(b) छोटे–छोटे पदों का सिद्धांत
(c) सक्रिय अनुक्रिया का सिद्धांत
(d) पुनर्बलन का सिद्धांत

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : अभिक्रमित अनुदेशन के पाँच प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं–
1. लघु पदीय सिद्धांत/छोटे–छोटे पदों का सिद्धांत
2. सक्रिय अनुक्रिया का सिद्धांत
3. तात्कालिक प्रतिपुष्टि का सिद्धांत/पुनर्बलन का सिद्धांत
4. स्वगति का सिद्धांत
5. छात्र परीक्षण का सिद्धांत

जबकि अभ्यास का सिद्धांत थॉर्नडाइक के अधिगम के सिद्धांत से संबंधित है।

83. कक्षा तीन के विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित में से शिक्षण का सबसे अच्छा तरीका कौन-सा होगा?

(a) प्रयोगशाला विधि (b) समूह वार्तालाप
(c) व्याख्यान विधि (d) सृजनात्मक क्रियाकलाप

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (d) कक्षा तीन (प्राथमिक) स्तर के विद्यार्थियों के शिक्षण का सबसे अच्छा तरीका सृजनात्मक क्रियाकलाप द्वारा शिक्षा देना होता है। जिसमें विद्यार्थी किसी कार्य को करके सीखता है।

84. कक्षा तीन के विद्यार्थियों के लिये निम्न में से कौन-सा शिक्षण का सबसे अच्छा तरीका होगा?

(a) व्याख्यान विधि (b) सृजनात्मक क्रियाकलाप
(c) समूह वार्तालाप (d) प्रयोगशाला विधि

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) कक्षा तीन के विद्यार्थी बाल्यावस्था मे रहते हैं। इस अवस्था में बालक की रूचि पढ़ने-लिखने में नहीं होती अत: उनकी रूचि और ध्यान अध्ययन या शिक्षण में लगाने के लिए आवश्यक है कि उनको खेल विधि या सृजनात्मक क्रियाकलाप के द्वारा शिक्षा दी जाये जिसमें वे सक्रिय सहभागी बन कर सीख सकें।

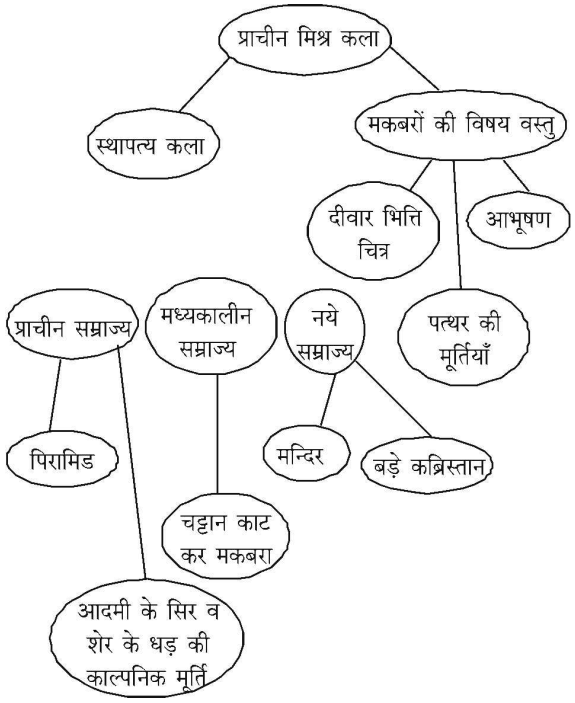
85. एक अध्यापक मानचित्र की खाली रूपरेखा में केवल नदियों पहाड़ों, मैदानों व घाटियों को प्रदर्शित करता है। वह विद्यार्थियों को मुख्य नगर, रेलवे व मुख्य नगरों को जोड़ने वाले राजमार्गो को चिह्नित करने को कहता है। विद्यार्थियों को अन्य पुस्तकों व मानचित्रों को अध्ययन करने की इस दौरान मनाही होती है। यहाँ अध्यापक के द्वारा प्रयुक्त उपागम है

(a) खोज उपागम (b) मानचित्र निरूपण
(c) समस्या समाधान उपागम (d) अन्वेषण उपागम

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) मानचित्र के खाली रुप रेखा में नहरों, रेलवे तथा राजमार्गों को चिंहित करना खोजी उपागम के अन्तर्गत आता है। भूगोल शिक्षण में अधिगम की यह सर्वाधिक उपयुक्त उपागम माना जाता है।

86. निम्न चित्र उदाहरण है



(a) रेखाचित्र का
(b) मॉडल का
(c) प्रत्यय-मानचित्र का
(d) बिन्दु रेखीय चित्र का

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (c) प्रश्न में दिया गया चित्र प्रत्यय मानचित्र का उदाहरण है क्योंकि प्रत्यय मानचित्र में उन प्रत्येक कारकों की स्थिति को दर्शाया जाता है जो उस वस्तु विशेष से सम्बंधित होते है तथा उनकी अनुपस्थिति में वस्तु विशेष की पूर्ण व्याख्या सम्भव नहीं होती।

87. निम्न का मिलान करते हुये दी गई तालिका में से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-अ	सूची-ब
(L) बीज अंकुरित होने का	1. अवलोकन करना, अनुभव प्राप्त करना
(M) भूमिका निर्वाह/रोल प्ले	2. प्रश्न पूछना
(N) परिवार में लैंगिक विभेदीकरण की क्रियाओं या अभ्यास पर वार्तालाप	3. भाग लेना
(O) दुग्धशाला में विभिन्न दूध के उत्पादों की प्रक्रिया को बनाना व डिब्बा बन्द करना	4. विचार/मनन करना।

कोड:

	L	M	N	O		L	M	N	O
(a)	1	3	4	2	(b)	2	3	4	1
(c)	3	1	2	4	(d)	4	2	3	2

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (a)

सूची-अ		सूची-ब
• बीच अंकुरित होने का अनुभव प्राप्त करना	-	अवलोकन करना
• भूमिका निर्वाह/रोल प्ले	-	भाग लेना
• परिवार में लैंगिक विभेदीकरण की क्रियाओं या अभ्यास पर वार्तालाप	-	विचार/मनन करना
• दुधशाला में विभिन्न दूध के उत्पादों की प्रक्रिया को बनाना व डिब्बा बन्द करना	-	प्रश्न पूछना

88. प्राथमिक कक्षाओं में विषय-वस्तु की नीरसता दूर करने के लिए शिक्षक को उपयुक्त शिक्षण नीति का उपयोग करना चाहिए, वह है-

(a) वार्तालाप नीति (b) प्रश्नोत्तर नीति
(c) खेल और मनोरंजन नीति (d) प्रदर्शन नीति

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) प्राथमिक कक्षाओं में विषय-वस्तु की नीरसता दूर करने के लिए शिक्षण में खेल एवं मनोरंजन विधि का प्रयोग करना सर्वाधिक उपयुक्त होता है। खेल एवं मनोरंजन विधि में अधिगम के साथ-साथ बच्चों में समायोजन की क्षमता का भी विकास होता है।

89. शिक्षण हेतु मानसिक उद्वेलन प्रतिमान का प्रयोग निम्न में से किसके सुधार हेतु किया जाता है?

(a) समझ (b) अनुप्रयोग
(c) सृजनात्मकता (d) समस्या समाधान

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (c) शिक्षण हेतु मानसिक उद्वेलन प्रतिमान (Brain storming model) का प्रयोग सृजनात्मकता में सुधार हेतु किया जाता है। यह एक प्रकार से छात्रों को किसी विषय–वस्तु पर स्वतंत्र रूप से विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

90. निम्नलिखित में से कौन-सी एक महत्वपूर्ण गतिविधि बच्चों को सीखने के लिए सक्षम बनाती है?

(a) संवाद (b) पुरस्कार
(c) व्याख्यान (d) निर्देश

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) सीखना एक सामाजिक क्रिया का परिणाम है। बालक जितना ज्यादा सामाजिक क्रिया तथा समाज से सम्बन्ध रखेगा उसे उतना ही ज्यादा सीखने का मौका मिलेगा। सामाजिक संवाद बच्चों को सीखने में सबसे ज्यादा सक्षम बनाती है।

91. विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को संबोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है

(a) महँगी और चमकदार सहायक सामग्री का प्रयोग करना
(b) सरल और रोचक पाठ्य-पुस्तकों को प्रयोग करना
(c) कहानी-कथन पद्धति का प्रयोग करना
(d) क्षमता के अनुरूप विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (d) प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने सम्बन्धी समस्याओं को संबोधित करने का सबसे बेहतर तरीका है कि क्षमता के अनुसार विभिन्न शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए ताकि प्राथमिक स्तर के छात्र स्वयं अपने ज्ञान का निर्माण कर सकें।

92. बच्चों को समूह में कार्य देना एक प्रभावी शिक्षण-रणनीति है, क्योंकि –

(a) इससे शिक्षक का काम कम हो जाता है।
(b) छोटे समूह में कुछ बच्चों को दूसरे बच्चों पर हावी होने की अनुमति होती है।
(c) सीखने की प्रक्रिया में बच्चे एक-दूसरे से सीखते हैं और परस्पर सहायता भी करते हैं।
(d) बच्चे अपना काम जल्दी करने में समर्थ होते हैं।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (c) बच्चों को समूह कार्य देना एक प्रभावी शिक्षण रणनीति है क्योंकि, बालक अपने साथी समूह से परस्पर क्रिया करके अनेक कौशल सीख जाते हैं तथा एक दूसरे की मदद करके मानवीय गुणों का विकास करते हैं।

93. ऑरलिच एट अल. (1985) के अनुसार, कौन-सी रणनीति वैज्ञानिक सोच और छात्र समस्या को सुलझाने के कौशल को बढ़ाती है?

(a) लेखन रणनीति (b) मौखिक चर्चा की रणनीति
(c) कार्य कार्ड रणनीति (d) दृश्य रणनीति

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (b) ऑरलिच एट अल. (1985) के अनुसार मौखिक चर्चा रणनीति वैज्ञानिक सोच और छात्र के समस्या को सुलझाने के कौशल को बढ़ाती है। मौखिक चर्चा रणनीति में छात्र अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं और दूसरों के विचारों को तार्किक आधार पर ग्रहण करते हैं। इससे वे चिंतन करने और तर्क करने के लिए प्रेरित होते हैं।

94. निम्न में से कौन-सा कार्य क्षेत्र में व्यापक है?

(a) शिक्षण रणनीति (b) शिक्षण युक्ति
(c) शिक्षण तकनीक (d) शिक्षण विधि

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (a) शिक्षण रणनीति कार्य प्रणाली की ऐसी कौशलपूर्ण व्यवस्था है जिसके अनुसार उद्देश्य को सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षण रणनीति शिक्षण विधियों से अधिक व्यापक होती हैं क्योंकि विधियों के अंतर्गत केवल बाह्य वस्तु के प्रस्तुतीकरण को ही ध्यान में रखा जाता है जबकि रणनीतियों में पाठ्य–वस्तु कार्य विश्लेषण, शिक्षण के उद्देश्य छात्रों के मानसिक स्तर रुचियाँ व पूर्व व्यवहार को ध्यान में रखा जाता है। जबकि शिक्षण युक्ति पाठ्यवस्तु का ही एक अंग है, शिक्षण तकनीक पाठ्यवस्तु को विभिन्न तरीकों से प्रस्तुत किया जाता है तथा शिक्षण विधि में पाठ्यवस्तु तथा उसके प्रस्तुतीकरण पर विशेष बल दिया जाता है।

95. ..... अधिगम में मौजूदा जानकारी के लिए एक अतिरिक्त जानकारी है।

(a) छिटपुट (b) सर्पिल
(c) रैखिक (d) वियोगी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : सर्पिल (Spiral) अधिगम में मौजूदा जानकारी के लिए अतिरिक्त जानकारी है। सर्पिल लर्निंग एक शिक्षण पद्धति है जिसमें विद्यार्थी को किसी विषय–वस्तु को एक से अधिक बार सीखने का अवसर प्राप्त होता है। इस शिक्षण पद्धति का यह मानना है कि जब विद्यार्थी का किसी विषय–वस्तु से कई बार सामना होता है तो उनके ज्ञान में विस्तार होता है और वे अपने कौशल में सुधार करते हैं।

96. उस नियम को क्या कहा जाता है जो हमेशा एक समाधान लाता है यदि उसका सही ढंग से उपयोग किया जाये?

(a) स्वत: शोध (ह्युरिस्टिक) (b) एल्गोरिथ्म
(c) सूचना प्रसंस्करण (d) रूढ़ियुक्ति (स्टीरियोटाइप)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : एल्गोरिथ्म एक ऐसी प्रक्रिया होती है जिसमें नियमों के सेट को क्रमानुसार तब तक फॉलो किया जाता है या तब तक गणना की जाती है जब तक कि उस समस्या के हल तक न पहुँच लिया जाये और जब इच्छित परिणाम प्राप्त हो जाता है तब एल्गोरिदम समाप्त हो जाता है।

97. कलन विधि (एल्गोरिद्म) और अन्वेषण (ह्युरिस्टिक्स) ..... की रणनीतियाँ है।

(a) शिक्षण (b) समस्या समाधान
(c) अधिगम (d) चिंतन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : कलन विधि और अन्वेषण (खोज विधि) समस्या समाधान की रणनीतियाँ हैं। इन दोनों विधियों के अंतर्गत छात्र शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्रिय रहते हुए ज्ञान की खोज करते हैं अर्थात् स्वयं सीखते हैं। इसमें शिक्षक ऐसे वातावरण का निर्माण करता है कि छात्रों के सामने समस्या उत्पन्न हो जाये। सभी छात्र समस्या के सम्बन्ध में चिन्तन तथा निरीक्षण करते हैं तथा अन्त में निर्णय निकालते है।

98. पूछताछ दृष्टिकोण विधि से शिक्षार्थियों की निम्न के लिए क्षमता का विकास होता है :

(a) एक शिक्षक के अनुभव का उपयोग करना
(b) कम समय में अधिक जानकारी को आत्मसात करना
(c) प्रयोग
(d) मौखिक अधिगम को उच्चतम सीमा तक बढ़ाना

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : पूछताछ दृष्टिकोण विधि से शिक्षार्थियों की प्रयोग के लिए क्षमता का विकास होता है। जब बच्चे कक्षा में प्रश्न पूछते हैं तो इससे पता चलता है कि वे विषय वस्तु में रुचि ले रहे हैं और जिज्ञासू हैं। जिज्ञासा की प्रवृत्ति ही बच्चों को प्रायोगिक अधिगम के लिए प्रोत्साहित करत है।

शिक्षण प्रतिमान एवं उसके प्रकार

99. सूची–A तथा सूची–B को सुमेलित कीजिए।

सूची–A		सूची–B	
A.	ब्रुनर	I.	बुनियादी शिक्षण प्रतिमान
B.	ऑसुबेल	II.	सायनेक्टिक्स शिक्षण प्रतिमान
C.	ग्लेजर	III.	अग्रिम संगठक शिक्षण प्रतिमान
D.	गॉर्डन	IV.	सम्प्रत्यय उपलब्धि शिक्षण प्रतिमान
		V.	पृच्छा प्रशिक्षण प्रतिमान

	A	B	C	D
(a)	IV	III	I	II
(b)	IV	III	II	I
(c)	I	II	III	V
(d)	III	I	II	V

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) :

सूची–A		सूची–B	
A.	ब्रूनर	IV.	सम्प्रत्यय उपलब्धि शिक्षण प्रतिमान
B.	ऑसुबेल	III.	अग्रिम संगठक शिक्षण प्रतिमान
C.	ग्लेजर	I.	बुनियादी शिक्षण प्रतिमान
D.	गॉर्डन	II.	सायनेक्टिक्स शिक्षण प्रतिमान

100. 'एफ.आई.ए.सी.एस.' के साथ मूल रूप से कौन सम्बन्धित है?

(a) हरबर्ट (b) लिपिट
(c) फ्लैण्डर (d) मॉरिसन

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : एफ.आई.ए.सी.एस. (FIACS– Flander's interaction analysis category system) नैड ए. फ्लैण्डर से सम्बन्धित है, जिन्होंने सन् 1959 में कक्षा के शाब्दिक व्यवहार पर आधारित एक विशिष्ट प्रणाली विकसित की, जो कक्षा के अंतर्गत होने वाली विभिन्न घटनाओं का निरीक्षण क्रमबद्ध और वैज्ञानिक ढंग से करती है।

शिक्षण की नवीन विधाएँ (रचनात्मक, छात्र केन्द्रित, अध्यापक केन्द्रित आदि)

101. आपको लगता है कि आपकी कक्षा में कुछ बच्चे बहुत तेज गति से सीख रहे हैं और कुछ बहुत धीमी गति से। इस परिस्थिति में आप क्या करेंगे?

(a) तेज गति से सीखने वाले बच्चों को आगे बढ़ने देंगे
(b) धीमी गति से सीखने वाले बच्चों पर कोई ध्यान नहीं देंगे
(c) इस बात पर कोई ध्यान नहीं देंगे
(d) तेज गति से सीखने वाले बच्चों की सहायता धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को सिखाने हेतु लेंगे

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (d) ऐसी स्थिति में सबसे बेहतर तरीका यह होगा कि तेज गति से सीखने वाले बालकों की सहायता धीमे गति से सीखने वाले बालको को सिखाने में लिया जाय।

102. निम्नलिखित में से कौन सा एक संरचनात्मक परिवेश के साथ अनुकूल नहीं हो सकता है?

(a) विद्यार्थी सहयोगात्मक तरीके से कार्य करते हैं तथा आपस में कार्य–केन्द्रित वार्ता में लगे रहने के लिए सहयोग दिया जाता है।
(b) शिक्षक प्रमुख प्रकरणों के संबंध में विद्यार्थियों के विचारों एवं अनुभवों को प्राप्त करते हैं तथा उनके वर्तमान ज्ञान की पुनर्संरचना या विस्तृत करने के लिए शिक्षण–अधिगम की योजना बनाते हैं।
(c) अध्यापक विशिष्ट सत्रावसान मूल्यांकन रणनीतियों को लागू करते हैं तथा प्रक्रियाओं के बजाय प्रदर्शन पर फीडबैक देते हैं।
(d) विद्यार्थियों को जटिल, सार्थक एवं समस्या-आधारित गतिविधियों में लगे रहने के लिए लगातार अवसर प्रदान किए जाते हैं।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : संरचनात्मक परिवेश में विद्यार्थियों को सक्रिय शिक्षार्थी समझा जाता है और अध्यापक, विद्यार्थियों द्वारा ज्ञान की रचना करने की प्रक्रिया को सुगम बनाता है। इसमें विद्यार्थियों को अधिकतम् स्वतंत्रता दी जाती है। संरचनात्मक परिवेश की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- विद्यार्थी सहयोगात्मक तरीके से कार्य करते हैं तथा आपस में कार्य–केन्द्रित वार्ता में लगे रहने के लिए सहयोग दिया जाता है।
- शिक्षक प्रमुख प्रकरणों के संबंध में विद्यार्थियों के विचारों एवं अनुभवों को प्राप्त करते हैं तथा उनके वर्तमान ज्ञान की पुनर्संरचना या विस्तृत करने के लिए शिक्षण-अधिगम की योजना बनाते हैं।
- विद्यार्थियों को जटिल, सार्थक एवं समस्या–आधारित गतिविधियों में लगे रहने के लिए लगातार अवसर प्रदान किये जाते हैं।

103. संरचनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार, अधिगम ..... है–

(a) एक निष्क्रिय एवं व्यक्तिपरक प्रक्रिया
(b) जानकारी के अर्जन की प्रक्रिया
(c) अनुभव के परिणाम के रूप में व्यवहार में एक परिवर्तन होने की प्रक्रिया
(d) एक सक्रिय एवं सामाजिक प्रक्रिया

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) संरचनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार, अधिगम एक सक्रिय एवं सामाजिक प्रक्रिया है। संरचनात्मक दृष्टिकोण पियाजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त पर आधारित है इसके अनुसार ज्ञान अधिगमकर्ता द्वारा सक्रिय रहकर सृजन किया जाता है न कि निष्क्रिय रहकर वातावरण द्वारा प्राप्त किया जाता है। वहीं वाइगोत्सकी ने समाज रचनावाद से प्रभावित संज्ञानात्मक विकास पर कार्य किया जो कि व्यक्तिगत रूप से सामाजिक अन्तरक्रिया की सहायता से वातावरण द्वारा ज्ञान के निर्माण पर बल देता है। इसीलिए संरचनात्मक दृष्टिकोण अधिगम को एक सक्रिय एवं सामाजिक प्रक्रिया मानता है।

104. संरचनावादी ढाँचे में, अधिगम प्राथमिक रूप से–

(a) अनुबंधन द्वारा अर्जित है।
(b) अवबोधन की प्रक्रिया पर केन्द्रित है।
(c) यंत्रवत् याद करने पर अधारित है।
(d) प्रबलन पर केन्द्रित है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) संरचनावादी ढाँचे में अधिगम प्राथमिक रूप से अवबोधन की प्रक्रिया पर केन्द्रित है। संरचनावादी ढाँचे के अनुसार ज्ञान का निर्माण अधिगमकर्ता के पूर्व ज्ञान/अनुभव पर आधारित होता है। विद्यार्थी वस्तुओं एवं उन्हें प्रस्तुत की गयी गतिविधियों से ही सक्रिय रूप से पुराने अनुभवों को नये विचारों से जोड़ते हुए ज्ञान का सृजन करता है।

105. संरचनावादी सिद्धांतों के अनुसार अधिगम के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है?

(a) अधिगम आवृत्तीय संबंध के द्वारा व्यवहारों का अनुबंधन है।
(b) अधिगम सक्रिय विनियोजन के द्वारा ज्ञान की संरचना की प्रक्रिया है।
(c) अधिगम पुनरुत्पादन एवं स्मरण की प्रक्रिया है।
(d) अधिगम यंत्रवत् याद करने की प्रक्रिया है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) संरचनावादी सिद्धांतों के अनुसार अधिगम सक्रिय विनियोजन के द्वारा ज्ञान की संरचना की प्रक्रिया है अर्थात् अधिगम किसी अनुबंधन द्वारा न होकर बल्कि एक सक्रिय ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया है। संरचनावादी सिद्धांतकारों में स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे तथा रसियन मनोवैज्ञानिक लेव वाइगोत्सकी प्रमुख हैं। इन दोनों सिद्धान्तकारों का मानना है कि ज्ञान अधिगमकर्ता द्वारा सक्रिय रहकर सृजित किया जाता है न कि निष्क्रिय रहकर वातावरण द्वारा प्राप्त किया जाता है।

106. संरचनावादी उपागम बताता है कि _____ ज्ञान की संरचना के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

(a) अनुबंधन (b) दण्ड
(c) यंत्रवत् याद करना (d) विद्यार्थी का पूर्वज्ञान

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (d) संरचनावादी उपागम बताता है कि विद्यार्थी का पूर्व ज्ञान, ज्ञान की संरचना के लिए अत्यन्त आवश्यक है। संरचनावादी उपागम के अनुसार विद्यार्थी वस्तुओं एवं उनके समक्ष प्रस्तुत की गयी गतिविधियों से ही सक्रिय रूप से पुराने अनुभवों को नये विचारों से जोड़ते हुए ज्ञान का सृजन करते हैं। इसमें ज्ञान का निर्माण अधिगमकर्त्ता के पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है। शिक्षण के रचनावादी उपागम को बढ़ावा देने का कार्य जीन पियाजे और वाइगोत्स्की ने किया।

107. एक सिद्धान्त के रूप में निर्मितिवाद-

(a) अनुकरण की भूमिका पर केन्द्रित करता है
(b) अधिगमकर्ता की स्वयं के शब्दों का निर्माण करने की भूमिका पर जोर देता है।
(c) सूचनाओं को रटने तथा प्रत्यास्मरण द्वारा परीक्षण पर जोर देता है
(d) शिक्षक की प्रधान भूमिका पर जोर देता है

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) निर्मितिवाद एक ऐसा विचार है जिसमे अधिगमकर्ता को स्वयं द्वारा शब्दों के निर्माण की भूमिका पर जोर देता है ताकि अधिगमकर्ता का मानसिक एवं संज्ञानात्मक विकास हो सके।

108. एक शिक्षण विधि में दो या अधिक शिक्षक सहयोगपूर्वक विषयों की योजना बनाते हैं, पूरा करते हैं तथा सदैव विद्यार्थियों पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन आवर्ती रूप से करते हैं, यह विधि है-

(a) श्रव्य-दृश्य शिक्षण (b) टोली शिक्षण
(c) दृश्य शिक्षण (d) वैयक्तिक शिक्षण

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) टोली शिक्षण, इस प्रविधि का विकास संयुक्त राज्य अमेरिका में 1950-60 के मध्य हुआ। टोली शिक्षण विधि में शिक्षक द्वारा छात्रों के समूह का निर्माण किया जाता है ताकि छात्रों में समायोजन की क्षमता का विकास हो सके। चूंकि इस समूह में अलग-अलग योग्यता वाले छात्रों का मिश्रण होता है अत: इन्हें निर्देशित करने के लिए एक से अधिक शिक्षक की आवश्यकता होती है ताकि वे शिक्षक छात्रों के लिए सहयोग पूर्ण वातावरण बनाने में सहयोग प्रदान करें तथा छात्रों का मूल्यांकन प्रभावपूर्ण रूप से कर सकें।

109. 'समूह शिक्षण' है-

(a) संसाधनों, रुचि व विशेषता का इष्टतम उपयोग करने हेतु शिक्षकों के समूह द्वारा शिक्षण है
(b) शिक्षकों की अनुपलब्धता से निपटने का एक उपाय है
(c) स्कूल में शिक्षकों के समूहों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा को प्रोत्साहित करता है
(d) विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के अनुसार छोटे समूहों में बाँटकर शिक्षण है

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (a) समूह शिक्षण द्वारा विद्यालय के संसाधनों का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों के रुचि एवं विशेषताओं का अधिकतम उपयोग करते हुए शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को समूह में शिक्षा दी जाती है। इससे विद्यालय का खर्च एवं समय की बचत होती है और छात्रों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त होती है।

110. सामान्यत: छात्रों में पठन-पाठन के लिए निम्न विशिष्टतायें होती है

(a) अधिगम में क्रियाशीलता
(b) छात्रो में सीखने की योग्यता
(c) स्वयं क्रिया करके नवीन अनुभवों द्वारा ज्ञान का निर्माण करना
(d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) सामान्यत: छात्रों में पठन-पाठन के लिए निम्न विशेषताएँ होती हैं–
1. अधिगम प्रक्रिया में क्रियाशीलता
2. छात्रों में सीखने की योग्यता
3. छात्रों में सीखने के प्रति तत्परता
4. स्वयं क्रिया करके नवीन अनुभवों द्वारा ज्ञान का निर्माण करना
5. नवीन प्राप्त ज्ञान को अपने वास्तविक जीवन से जोड़ना

111.6-11 वर्ष आयु वर्ग के लिए अधिगम

(a) ज्ञान निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया है
(b) निष्क्रियता से रटने की प्रक्रिया है
(c) कक्षा-कक्ष में ध्यानपूर्वक सुनने की प्रक्रिया है
(d) पाठ्यपुस्तक का अध्ययन करने की प्रक्रिया है

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) 6-11 वर्ष की आयु वर्ग के लिए अधिगम ज्ञान निर्माण की एक सक्रिय प्रक्रिया है।

112.अधिगम एक प्रविधि है

(a) तथ्यों को याद करने की
(b) पाठ्यपुस्तक में दिये गये विषय को याद करने की
(c) अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण करने की
(d) परीक्षा की तैयारी की

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) अधिगम एक अनुभव द्वारा अर्थ निर्माण करने की प्रविधि है।

113.कक्षा-कक्ष में शिक्षक प्रयास करता है

(a) छात्रों को अनुभव प्रदान करने का
(b) छात्रों को सहायक अधिगम वातावरण देने का
(c) छात्रों को चिन्तन का अवसर देने का
(d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) कक्षा-कक्ष में अध्यापक को चाहिए कि वह ऐसे अध्ययन-अध्यापन का वातावरण तैयार करे जिसमें छात्र सरलता से सीख सके साथ ही साथ छात्रों को चिंतन करने व स्वयं क्रिया विधि द्वारा अनुभव प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध हो।

114. रचनात्मक लेख का नियोजन होना चाहिए

(a) केवल उन छात्रों के लिए जो कक्षा स्तर पर पढ़ते हैं
(b) केवल उन छात्रों के लिए जो लम्बे वाक्य को लिख सकते हैं
(c) केवल उन छात्रों के लिए जो समाचार-पत्र के लिए लिखना चाहते हैं
(d) सभी छात्रों के लिए

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (d) रचनात्मक लेख का नियोजन उन सभी बच्चों के लिए होनी चाहिए जो वाक्यों, भाषा और संदर्भों को भलीभाँति समझते हो। इसीलिए बच्चों से निबंध, यात्रावृतांत, संस्मरण आदि लिखवाये जाते हैं।

115. ''सीखने का वह मॉडल'' जो बच्चों की सृजनात्मकता को उत्प्रेरित करता है:

(a) बैंकिंग मॉडल (b) रचनावादी मॉडल
(c) प्रोग्रामिंग मॉडल (d) उपरोक्त में कोई नहीं

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (b) रचनावादी मॉडल 'सीखने का वह मॉडल' है जो बच्चों में सृजनात्मकता को उत्प्रेरित करता है। क्योंकि इस मॉडल में बच्चों को कार्य करने की स्वतंत्रता होती है जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों में सृजनशीलता की उत्पत्ति होती है।

116.निम्न में से कौन-सा 'वाद' बच्चों को अपना ज्ञान स्वयं निर्माण करने का अवसर प्रदान करता है?

(a) व्यवहारवा (b) संज्ञावाद
(c) रचनावाद (d) ज्ञानवाद

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
DSSSB PRT

Ans: (c) रचनावाद (सृजनात्मकतावाद) बच्चों को अपना ज्ञान स्वयं निर्माण करने का अवसर प्रदान करता है जिसमें बालक स्वतंत्रता पूर्वक अपनी क्षमता का विकास करता है।

117. सार्थक अधिगम है–

(a) वयस्कों और अधिक सक्षम साथियों का अनुकरण
(b) उद्दीपक तथा उत्तर के बीच युग्मन तथा साहचर्य
(c) दी गई सूचना का निष्क्रिय ग्रहण
(d) निजी अनुभवों से ज्ञान की संरचनाओं का सक्रिय निर्माण

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (d) सार्थक अधिगम वह है जिसमें निजी अनुभवों से ज्ञान की संरचनाओं का सक्रिय निर्माण किया जाता है। इसलिए वर्तमान में शिक्षण के लिए वैकल्पिक अधिगम सिद्धांतों का प्रयोग किया जा रहा है। जैसे– रचनात्मक अधिगम सिद्धांत और सामाजिक अधिगम सिद्धांत, जो क्रमश; पियाजे और वाइगोत्सकी के सिद्धांतों पर आधारित है।

118. एक शिक्षिका अपने विद्यार्थियों की सदैव इस रूप से सहायता करती है कि वे एक विषय–क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय–क्षेत्रों के ज्ञान के साथ जोड़ सकें। इससे ..... को बढ़ावा मिलता है।

(a) पुनर्बलन
(b) ज्ञान के सह–संबंध एवं अंतरण
(c) वैयक्तिक भिन्नताओं
(d) शिक्षार्थी–स्वायत्तता

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (b) एक शिक्षिका अपने विद्यार्थियों की सदैव इस रूप में सहायता करती है कि वे एक विषय क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय क्षेत्रों के ज्ञान के साथ जोड़ सके। इससे ज्ञान के सह–संबन्ध एवं अंतरण को बढ़ावा मिलता है।

119. वर्तमान समय में शिक्षा का सबसे उपयुक्त उपागम कौन–सा है?

(a) व्यवहारवादी उपागम (b) सृजनवादी उपागम
(c) संरचनात्मक उपागम (d) मानवतावादी उपागम

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (b) वर्तमान समय में शिक्षा का सबसे उपयुक्त उपागम सृजनवादी उपागम है। यह उपागम इस सिद्धांत पर आधारित है कि अधिगमकर्ता अपने ज्ञान का पूर्व अनुभवों के आधार पर एवं सामाजिक वातावरण के साथ अंतर्क्रिया करके सृजन करता है। इस उपागम में अध्यापक की भूमिका मात्र एक सहायक के रूप में होती है।

120. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सबसे बेहतर ढंग से वर्णन करता है कि कक्षा में बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए क्यों प्रोत्साहित करना चाहिए?

(a) प्रश्न बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाते हैं
(b) जिन बच्चों के बारे में बच्चे नहीं जानते हैं उनके बारे में विचार करवाकर उन्हें यह महसूस करवाया जा सकता है उनमें बुद्धि की कमी है
(c) प्रश्न अन्योन्यक्रिया के द्वारा अधिगम को आगे बढ़ाते हैं तथा संकल्पनात्मक स्पष्टता की दिशा में बढ़ते हैं
(d) बच्चों को अपने भाषा कौशलों के अभ्यास की आवश्यकता होती है

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (c) बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि प्रश्न अन्योन्यक्रिया के द्वारा अधिगम को आगे बढ़ाते हैं तथा बच्चों में संकल्पनात्मक स्पष्टता विकसित करते हैं।

121. कक्षा में जो विद्यार्थी प्रश्न पूछते हैं उन्हें

(a) कक्षा के बाद शिक्षक से मिलने की सलाह दी जाए
(b) कक्षा चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए
(c) लगातार प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए
(d) स्वतन्त्र रूप से उत्तर ढूँढने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) कक्षा शिक्षण के दौरान विद्यार्थी के प्रश्न पूछने पर उसके उत्सुकता को शांत करने के लिए शिक्षक को उसकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए तथा छात्र को विषयवस्तु सम्बंधी सार्थक प्रश्न पूछने को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि विषय से सम्बंधी शिक्षण में उनकी रुचि बनी रहे तथा अधिगम बिना अवरोध के सतत रुप से चलती रहे।

122. .....को अनुप्रेरित शिक्षण के एक संकेत के रूप में विवेचित किया जाता है

(a) कक्षा में अधिकतम उपस्थिति
(b) शिक्षक द्वारा दिया गया उपचारात्मक कार्य

(c) विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछना

(d) कक्षा में पूर्ण नीरसता

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) शिक्षण प्रभावशाली एवं सजीव तब होता है जब कक्षा में समय-समय पर शिक्षक-छात्र वार्तालाप हो तथा छात्रो द्वारा कक्षा में प्रश्न पूछा जा रहा हो। इससे पता चलता है कि छात्र का अधिगम अच्छी तरह से चल रहा है और छात्र कक्षा में रूचि ले रहा है।

123. विद्यार्थियों में श्रम की स्फूर्ति का विकास करने के लिए

(a) शिक्षक अपने ही श्रम में प्रवृत्ति दिखाएगा

(b) शिक्षक श्रम के महत्व पर व्याख्यान करेगा

(c) समय-समय पर विद्यार्थियों को श्रम करने का अवसर देना पड़ेगा

(d) विद्यार्थियों को श्रम करने वाले लोगों का उदाहरण देना पड़ेगा

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (c) छात्रों को समय-समय पर श्रम का अवसर देकर उनमें श्रम स्फूर्ति का विकास किया जा सकता है। इसीलिए आजकल विद्यालयों में NSS, NCC तथा खेलकूद जैसे कोर्स विद्यालय के पाठयक्रम में लाए गये हैं।

124. एक शिक्षिका अपने-आप में कभी भी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती। वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम ..... के सिद्धान्त पर आधारित है।

(a) अनुदेशात्मक सामग्री के उचित संगठन

(b) अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना और भूमिका-प्रतिरूप बनना

(c) सीखने की तत्परता

(d) सक्रिय भागीदारिता

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
UK TET 2014 (I-V)

Ans: (d) यदि शिक्षिका अपने-आप में कभी भी प्रश्नों का उत्तर नहीं देती है और यदि वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं तो यह उपागम सक्रिय भागीदारिता के सिद्धान्त पर आधारित है।

125.सिद्धान्त के रूप में रचनावाद –

(a) सूचनाओं को याद करने और पुन:स्मरण द्वारा जाँच करने पर बल देता है

(b) शिक्षक की प्रभुत्वशाली भूमिका पर बल देता है

(c) अनुकरण की भूमिका पर केंद्रित है

(d) दुनिया के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्मित करने में शिक्षार्थी की भूमिका पर बल देता है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (d) रचनावाद का सिद्धान्त शिक्षार्थी को दुनिया के बारे में सोच-विचार कर अपना दृष्टिकोण निर्मित करने की भूमिका पर बल देता है। अर्थात् रचनावादी सिद्धांत के अनुसार शिक्षार्थी या अधिगमकर्ता अपने ज्ञान का निर्माता स्वयं होते हैं। यह ज्ञान वे स्वयं के अनुभवों और दूसरो से अंतर्क्रिया द्वारा प्राप्त करते हैं।

126. एक शिक्षिका पाठ्य–वस्तु और फल–सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है। विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं ओर पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम ..... पर आधारित है।

(a) ज्ञान के निर्माण

(b) अधिगम के शास्त्रीय अनुबन्धन

(c) पुनर्बलन के सिद्धांत

(d) अधिगम के सक्रिय अनुबन्धन

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2012
CG TET (VI-VIII) 2014

Ans : (a) एक शिक्षिका पाठ्यवस्तु और फल–सब्जियों के कुछ चित्रों का प्रयोग करती है और अपने विद्यार्थियों से चर्चा करती है। विद्यार्थी इस जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान से जोड़ते हैं और पोषण की संकल्पना को सीखते हैं। यह उपागम ज्ञान के निर्माण पर आधारित है।

127. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन रचनावादी (कन्स्ट्रक्टिविस्ट) कक्षा के संबंध में सत्य है?

(a) कक्षा का वातावरण बौद्धिक, भावनात्मक और भौतिक रूप से सुरक्षित होना चाहिए।

(b) अधिगम प्रक्रिया में संरचना का अभाव होता है।

(c) रचनावादी (कन्स्ट्रक्टिविस्ट) कक्षा में छात्र-छात्र के बीच बातचीत की कोई भूमिका नहीं होती है।

(d) निर्देश की विधि, एक रचनावादी कक्षा में पूर्णत: शिक्षाप्रद है

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) रचनावादी (कन्स्ट्रक्टिविस्ट) कक्षा का वातावरण बौद्धिक, भावनात्मक और भौतिक रूप से सुरक्षित होना चाहिए। चूँकि रचनावादी उपागम में ज्ञान का निर्माण अधिगमकर्ता के पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है, इसलिए विद्यार्थी वस्तुओं एवं उन्हें प्रस्तुत की गयी गतिविधियों से ही सक्रिय रूप से पुराने अनुभवों को नये विचारों से जोड़ते हुए ज्ञान का सृजन करते हैं। अत: ऐसी परिस्थिति में शिक्षक को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जो बौद्धिक, भावनात्मक और भौतिक रूप से समृद्ध हो तथा विद्यार्थियों को ज्ञान निर्माण के लिए प्रेरित करे।

128. निम्नलिखित में से पारस्परिक सहयोग इसमें अधिक पाया जाता है-

(a) समूह (b) टीम

(c) समाज (d) कक्षागृह

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : टीम में पारस्परिक सहयोग अधिक पाया जाता है। टीम में टीम के सभी सदस्य एक दूसरे के साथ सहयोगात्मक रूप से मिलकर किसी कार्य को पूरा करते हैं। टीम में सभी सदस्यों के द्वारा मिलकर उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है तथा उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से प्रयास किया जाता है।

129. निम्नलिखित में से कौन सा विचार मूर्त रूप लेता है जब अनुभव के माध्यम से व्यक्ति सीखता है?

(a) सर्वव्यापकता (b) प्रकृति
(c) पोषण (d) नियतिवाद

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : पोषण मूर्त रूप लेता है जब अनुभव के माध्यम से व्यक्ति सीखता है। रचनावादी शिक्षण के अनुसार ज्ञान पूर्ववर्ती अनुभव से निर्मित होता है। विद्यार्थी खाली स्लेट या कोरा कागज नहीं होते हैं और न ही ज्ञान दिया जा सकता अपितु यह निर्मित किया जाता है। बच्चे इसे अर्थ प्रदान करते हैं जो उनकी वर्तमान अवधारणाओं के अनुसार होता है। अत: बच्चे उसी अवस्था में अधिकतम सीखेंगे जब उन्हें निकटतम संसार का अनुभव करने और इन अनुभवों पर किये गये चिंतन पर आधारित एक वैयक्तिक ज्ञान की रचना करने के लिए पर्याप्त अवसर दिये जायें।

130. रचनावाद यह मानता है कि सभी ज्ञान निम्न है–

(a) शिक्षार्थी के पूर्ववर्ती ज्ञान से निर्मित
(b) शिक्षार्थी द्वारा केवल निर्मित
(c) शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी को प्रेषित
(d) व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से केवल प्राप्त किया हुआ

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : रचनावाद यह मानता है कि सभी ज्ञान शिक्षार्थी के पूर्ववर्ती ज्ञान से निर्मित होता है। रचनावाद परिप्रेक्ष्य में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। विद्यार्थी द्वारा सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों में उपलब्ध सामग्री/गतिविधियों के आधार पर अपने लिए ज्ञान का निर्माण किया जा सकता है।

131. अध्ययन की एक रचनात्मकतावाद इकाई की एक विशेषता यह है कि-

(a) इसकी शुरुआत इससे होती है कि बच्चे पाठ के लिए एक प्रभावी प्रस्थान बिंदु के रूप क्या जानते हैं।
(b) जांच (टेस्ट) और नियत कार्य (असाइनमेंट) का उद्देश्य केवल निम्न स्तरीय सोच कौशल का आकलन करना होता है।
(c) यह पूर्णत: शिक्षक के निर्देश के माध्यम से प्रचारित किया जाता है।
(d) प्रश्न पूछना अधिगम की प्रक्रिया में हतोत्साहित करता है।

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : अध्ययन की एक रचनात्मकतावाद इकाई की एक विशेषता यह है कि इसकी शुरूआत इससे होती है कि बच्चे पाठ के लिए एक प्रभावी प्रस्थान बिंदु के रूप में क्या जानते हैं। रचनात्मकतावादी अधिगम में बच्चों के पूर्व अनुभव को महत्व दिया जाता है तथा यह माना जाता है कि वे अपने पूर्व अनुभव के आधार पर ज्ञान का निर्माण करते हैं।

132. अधिगम के प्रति दृष्टिकोण को सबसे अच्छी चीज के रूप में परिभाषित किया जाता है.....

(a) केवल शिक्षार्थियों द्वारा ही संशोधित किया जा सकता है
(b) आयु के साथ संशोधित किया जा सकता है।
(c) सकारात्मक अधिगम वातावरण बनाकर संशोधित किया जा सकता है।
(d) संशोधित नहीं किया जा सकता है।

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : अधिगम के प्रति दृष्टिकोण को सबसे अच्छी चीज के रूप में उसे ही परिभाषित किया जाता है जो सकारात्मक अधिगम वातावरण बनाकर संशोधित किया जा सके। दूसरे शब्दों में, एक रचनात्मक अधिगम वातावरण का निर्माण कर अधिगम को बेहतर बनाया जा सकता है। इसलिए वर्तमान में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक शिक्षक की भूमिका मात्र सुलभकर्ता, सुविधाप्रदाता और आयोजक की हो गयी है जो एक रचनात्मक अधिगम वातावरण का निर्माण करता है और विद्यार्थी स्वयं सक्रीय होकर अधिगम–अनुभव प्राप्त करते हैं।

133. एक समर्पित शिक्षक को शिक्षार्थी की रूचि जगाने के लिए ..... को अपनाना होगा।

(a) प्रदर्शन विधि (b) नवाचारी विधि
(c) आसान विधि (d) प्रत्यक्ष विधि

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : एक समर्पित शिक्षक को शिक्षार्थी की रुचि जगाने के लिए नवाचारी विधि को अपनाना चाहिए। वर्तमान में बाल केन्द्रित शिक्षण विधियों का प्रयोग किये जाने पर बल दिया जा रहा है। इन शिक्षण की नवाचारी विधियों में ह्यूरिस्टिक विधि, प्रायोजना विधि, वाद–विवाद, अंत:क्रिया विधि, अभिक्रमित अनुदेशन, जोड़ीदार विधि, नाट्य प्रयोग विधि, त्रिपद विधि, प्रयोशाला विधि, समस्या–समाधान विधि आदि आते हैं।

134. निम्नलिखित में से क्या एक शिक्षक के लिए सीखने के प्रति बच्चे की योग्यता को समझने का एक संकेत है?

(a) छात्र कक्षा में प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं
(b) छात्र आंकलन रिकॉर्ड उनके द्वारा सीखी गई मात्रा को दर्शाते हैं।
(c) छात्र अपने काम की अभिनव प्रस्तुति देते हैं।
(d) छात्र नियमित रूप से अपना गृहकार्य कर रहे हैं।

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : जब छात्र अपने काम की अभिनव प्रस्तुति देते हैं तो यह सीखने के प्रति बच्चे की योग्यता को समझने का एक प्रमुख संकेत है। सामान्यत: देखा जाता है कि सीखने में रुचि लेने वाले बालक सीखने में नवीनता, मौलिकता आदि की प्रस्तुति देते हैं।

135. बहुग्रेड अध्यापन वह है जिसमें

(a) एक विद्यार्थी एक ही समय में एक से अधिक कक्षाएँ उत्तीर्ण कर सकता है
(b) एक अध्यापक को एक ही समय में एक से अधिक कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाना पड़ता है।
(c) कक्षावार अध्यापन का कोई अर्थ नहीं है
(d) उपर्युक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) एक अध्यापक के द्वारा एक ही कक्षा में एक ही समय में एक से अधिक कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाना बहुग्रेड अध्यापन कहलाता है।

136. निम्न में से कौन-सा कथन बहुग्रेड शिक्षण प्रणाली के साथ सहमति नहीं रखता?

(a) एक अध्यापक एक समय में एक से अधिक कक्षाओं का प्रबन्धन करता है
(b) बैठने की लचीली व्यवस्था
(c) विभिन्न कक्षाओं से एक ही कक्षा में अन्त:क्रिया
(d) विद्यार्थियों का आयु एवं योग्यता के आधार पर समान होना।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (d) बहुग्रेड शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत एक अध्यापक एक समय में एक से अधिक कक्षाओं का प्रबन्धन करता है तथा विभिन्न कक्षाओं से एक ही कक्षा में अंत:क्रिया का अवसर देता है। इसके लिए बैठने की लचीली व्यवस्था, योग्य और कुशल अध्यापक, लचीला पाठ्यक्रम आदि का होना आवश्यक है।

137.अंतरपरक अनुदेशन है –

(a) कक्षा में प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए कुछ अलग करना।
(b) अव्यवस्थित अथवा स्वच्छंद शिक्षार्थी गतिविधियाँ।
(c) ऐसे समूहों का प्रयोग जो कभी नहीं बदलते।
(d) शिक्षार्थियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (d) शिक्षार्थियों की आवश्यकता को पूरा करने के समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना, अंतरपरक अनुदेशन है।

138.शिक्षार्थियों को ..... के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।

(a) अधिक-से-अधिक पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में हिस्सा लेने
(b) शिक्षक जो पूछ सकते हैं उन सभी प्रश्नों के उत्तर याद करने
(c) कक्षा के अंदर और बाहर अधिक-से-अधिक प्रश्न पूछने
(d) समूह कार्य में दूसरे शिक्षार्थियों के साथ सक्रिय रूप से अंत:क्रिया करने

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (b) एक शिक्षक को चाहिए कि शिक्षार्थियों को कभी भी प्रश्नों के उत्तर याद रखने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए बल्कि उस प्रश्न के उत्तर को पढ़कर उसे समझने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

139. निम्न में से कौन अधिगमकर्ता को अधिक स्वतन्त्रता देता है?

(a) संरचनावाद (b) क्रियाशीलतावाद
(c) व्यवहारवाद (d) सृजनशीलतावाद

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) सृजनशीलता अधिगमकर्ता को नये विचारों या रचनाओं को पैदा करने या उन्हें खोजने का भरपूर (स्वतंत्र रूप से) अवसर प्रदान करना है।

सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल

140. जब अध्यापक प्रथम बार कक्षा-कक्ष में प्रवेश करे तो उसे बात करनी चाहिए

(a) विद्यालय भवन के बारे में
(b) विद्यालय के प्रधानाध्यापक के बारे में
(c) पाठ्यपुस्तक के बारे में
(d) अपने एवं छात्रों के बारे में

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) अध्यापक द्वारा प्रथम बार कक्षा-कक्ष में प्रवेश करने पर छात्र-शिक्षक अन्तर्क्रिया अनिवार्य है। इस क्रिया के द्वारा छात्र-शिक्षक के व्यक्तित्व एवं शिक्षक छात्र की रुचि, योग्यता एवं उनके परिवेश के बारे में जान सकेंगे और इसकी सहायता से शिक्षण कार्य सुगम बना रहेगा।

141. विद्यालय में विद्यार्थियों को कैसे अभिप्रेरित करना उचित है?

(a) चुने गए अध्ययन द्वारा (b) प्रासंगिक अध्ययन द्वारा
(c) गहन अध्ययन द्वारा (d) सस्वर अधिगम द्वारा

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) सस्वर का अर्थ (प्रवचन, अनुवाद, पठन) होता है। अत: सस्वर अधिगम द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरित किया जा सकता है तथा यह एक उचित एवं महत्वपूर्ण पहलू है।

142. अनुशासन, जो अधिगम वातावरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, किस तरह की मदद करता है?

(a) बच्चों को अपनी शिक्षा को विनियमित और मॉनीटर करने के लिए
(b) चुप्पी साधे रहने के लिए
(c) शिक्षकों को निर्देश देने में
(d) बच्चों को उनके पाठ रटकर याद करने में

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : अनुशासन, जो अधिगम वातावरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बच्चों को अपनी शिक्षा को विनियमित और मॉनीटर करने में मदद करता है। अर्थात् जब कक्षा अनुशासित रहता है तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रगति करती है तथा जब कक्षा अनुशासनहीन होती है तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बाधित होता है।

143. पाठ प्रस्तावना कौशल का मुख्य संघटक क्या है?

(a) पूर्वज्ञान (b) व्याख्यान
(c) श्यामपट्ट लेखन (d) गृहकार्य

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (a) पाठ प्रस्तावना कौशल के मुख्य संघटक निम्न हैं–
(1) पूर्वज्ञान से सम्बन्ध
(2) प्रेरणा हेतु उपयुक्त युक्ति व शैक्षिक साधनों का चयन
(3) आन्त ज्ञान से तुलना
(4) प्रश्नों में तारतम्यता
(5) उद्दीपन प्रभाव

144. सूक्ष्म–शिक्षण है–

(a) मूल्यांकन शिक्षण (b) वास्तविक शिक्षण
(c) अवश्रेणीयन शिक्षण (d) प्रभावशाली शिक्षण

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : सूक्ष्म शिक्षण एक अवश्रेणीयन शिक्षण है। अर्थात् सूक्ष्म शिक्षण एक निश्चित श्रेणी क्रम का अनुसरण करता है। इसमें कुल छ: सोपान होते हैं, जो एक निश्चित क्रम में चलते हैं–

(i) पाठ योजना निर्माण
(ii) पाठ प्रस्तुतीकरण
(iii) प्रतिपुष्टि
(iv) पुन: पाठ योजना निर्माण
(v) पुन: प्रस्तुतीकरण
(vi) पुन: प्रतिपुष्टि
इन छ: चरणों में न तो किसी प्रकार का परिवर्तन किया जा सकता है और न ही इनको आगे–पीछे किया जा सकता है, इसलिए इसे अवश्रेणीयन शिक्षण कहा जाता है।

145. निम्न कथनों में से कौन–सा 'प्रश्न कौशल' के लिए सही नहीं है?

(a) प्रश्न पूछने में उत्साहवर्धक तरीकों का प्रयोग करना
(b) प्रश्नों को प्रोत्साहन देना
(c) हाँ अथवा न उत्तर वाले प्रश्नों की संख्या बढ़ाना
(d) सुनने में संवेदनशीलता विकसित करना

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : प्रश्न कौशल के उचित तरीके निम्नलिखित हैं–
i. प्रश्न पूछने में उत्साहवर्धक तरीकों का प्रयोग करना,
ii. प्रश्नों को प्रोत्साहन देना,
iii. सुनने में संवेदनशीलता विकसित करना,
iv. विस्तृत सूचना प्राप्त करना,
v. आलोचनात्मक सजगता विकसित करना आदि।
अत: हाँ अथवा न उत्तर वाले प्रश्नों की संख्या बढ़ाना प्रश्न कौशल का उचित तरीका नहीं है।

146. निम्न में से किस कौशल में पूर्व ज्ञान का परीक्षण आता है?

(a) उद्दीपन–परिवर्तन कौशल (b) प्रस्तावना कौशल
(c) समापन कौशल (d) प्रदर्शन कौशल

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : प्रस्तावना कौशल में पूर्व ज्ञान का परीक्षण किया जाता है। इस कौशल का उपयोग कर शिक्षक छात्रों के पूर्व ज्ञान का परीक्षण करता है ताकि वह नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए अधिगम परिस्थिति का निर्माण कर सकें। शिक्षण में पाठ की प्रस्तावना से तात्पर्य है–छात्रों व शिक्षकों के बीच मानसिक समरसता स्थापित करना।
प्रस्तावना कौशल के घटक निम्नलिखित हैं–
1. पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध,
2. आदन्त ज्ञान से तुलना,
3. प्रेरणा हेतु उपयुक्त युक्ति व शैक्षिक साधनों का चयन,
4. प्रश्नों में तारतम्यता,
5. उद्दीपन प्रभाव।

147. सूक्ष्म शिक्षण के भारतीय प्रतिमान में कुल कितना समय लगता है?

(a) 36 मिनट (b) 40 मिनट
(c) 45 मिनट (d) 30 मिनट

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : सूक्ष्म–शिक्षण के भारतीय प्रतिमान में सूक्ष्म शिक्षण चक्र की अवधि 36 मिनट होती है। इसका विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

1.	पाठ योजना निर्माण	–	6 मिनट
2.	शिक्षण	–	6 मिनट
3.	प्रतिपुष्टि या पोषण	–	6 मिनट
4.	पुन: पाठ योजना निर्माण	–	6 मिनट
5.	पुन: शिक्षण	–	6 मिनट
6.	पुन: प्रतिपुष्टि	–	6 मिनट
	कुल समय	**–**	**36 मिनट**

148.यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में गलत प्रश्न पूछता है, तो आप क्या करेंगे?

(a) विद्यार्थी का डाँटेंगे
(b) अन्य विद्यार्थियों की मदद से प्रश्न को सही करेंगे
(c) उदाहरण देकर गलती बताएँगे
(d) गलत प्रश्न के कारण उत्तर पर प्रभाव समझाएँगे

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में गलत प्रश्न पूछता है तो एक कुशल अध्यापक को अन्य विद्यार्थियों की मदद से प्रश्न को सही करना चाहिए क्योंकि छात्र केन्द्रित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में छात्रों को शामिल करके ही शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है।

149. विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा विकसित करने के लिए, एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(a) गलाकाट प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करना
(b) विद्यार्थियों के सम्मुख एक अप्राप्य लक्ष्य रखना
(c) नई तकनीक व नई विधियों का प्रयोग करना
(d) उनके आकांक्षा स्तर को घटाना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा को विकसित करने के लिए शिक्षक को नई तकनीकी एवं नई विधियों के प्रयोग द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए।

150.शिक्षक के व्याख्यान की गति, विद्यार्थी के कार्य के ज्ञान को बाधित कर सकती है, यदि वह अत्यधिक तेज या अत्यधिक धीमी है। इससे बचने के लिये शिक्षक को क्या नहीं करना चाहिये?

(a) गति की विभिन्नता के द्वारा विद्यार्थी का ध्यान बनाये रखना
(b) नयी सूचना को प्रस्तुत करने के लिये, तेज गति के व्याख्यान का प्रयोग करना
(c) जब शिक्षक की गति अधिक हो तो अक्सर पुन:वाक्य बोलना
(d) सूचनाओं के बड़े भागों के बीच विराम रखना

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (b) व्याख्यान कार्य करते समय व्याख्यान गति पर ध्यान देना अति आवश्यक है क्योंकि इससे विद्यार्थियों के अधिगम पर प्रभाव पड़ता है। अत: व्याख्यान में नयी सूचना देते समय अपने व्याख्यान पर संतुलित गति बनाए रखना अनिवार्य है।

151. शिक्षण करते समय आपको लगे कि जो कुछ आपने पढ़ाया है वह सही नहीं है तो आप

(a) प्रकरण अधूरा छोड़ देंगे तथा दूसरा प्रकरण शुरू कर देंगे
(b) छात्रों से कहेंगे कि गलती हुई और उसे ठीक कर देंगे
(c) छात्रों का उससे ध्यान हटा देंगे
(d) छात्रों को डाँट पिलायेंगे

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण कार्य के समय अगर शिक्षक द्वारा कोई तथ्य गलत कह दिया जाय तो शिक्षक को चाहिए कि वह अपनी गलती को तुरन्त सुधार कर सही तथ्य प्रस्तुत करे। शिक्षण कार्य की यही सही विधि है।

152. सलीम संगीत में निष्णात है परन्तु गणित में अच्छा नहीं कर पाता। गणित के अध्यापक के रूप में आप सलीम को क्या कहेंगे?

(a) उससे कहेंगे कि संगीत का कोई भविष्य नहीं है
(b) उससे संगीत छोड़कर गणित की पढ़ाई करने को कहेंगे
(c) उसके अभिभावकों को बुलाकर बात करेंगे
(d) उससे कहेंगे कि वह गणित में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकता है और उसे गणितीय अवधारणाएँ समझायेंगे

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) किसी विद्यार्थी को उसके मनपसंद विषय से कभी दूर नहीं करना चाहिए और न ही छोड़ने के लिए कहना चाहिए अगर वह अन्य विषय में कमजोर है तो उसे उस विषय पर विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए। साथ में अन्य विषय की मूलभूत अवधारणाओं का समझना भी आवश्यक है।

153. एक लंबे व्याख्यान को देते हुए अध्यापक को

(a) बीच में विराम लेना चाहिए
(b) लगातार बोलना चाहिए
(c) बीच में प्रश्न पूछने चाहिए
(d) अपनी भाव-भंगिमा बदलनी चाहिए

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) लम्बे व्याख्यान देते समय अध्यापक को बीच में विराम लेना चाहिए क्योंकि लगातार व्याख्यान से नीरसता उत्पन्न होगी और सम्बंधित विषय उबाऊ हो जाएगा। छात्र भी इन सभी व्याख्यान को एक साथ आत्मसात करने में कठिनाई महसूस करेंगे।

154. आपकी कक्षा के कुछ छात्रों का ध्यान पढ़ने से हट गया है। आप उनका ध्यान पुन: केन्द्रित करने के लिए कौन-सा उपाय करेंगे?

(a) छोटी-सी शारीरिक क्रिया करवाना
(b) थोड़ी देर के लिए कक्षा को निलंबित करना
(c) बच्चों को ध्यान लगाने के लिए कहना
(d) कक्षा को खेल के लिए भेजना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) कक्षा-कक्ष में छात्रों के ध्यान भंग होने पर अध्यापक द्वारा पुन: ध्यान केन्द्रित करने को कहना चाहिए क्योंकि ध्यान भंग होना किसी प्रकार का दोष या गलती नहीं है जिसे तुरन्त दूर न किया जा सके।

155. एक अध्यापक के रूप में आप उन विद्यार्थियों से किस प्रकार निबटेंगे जो कक्षा की पिछली सीटों पर बैठ आपस में बातें कर रहे हैं?

(a) उनकी उपेक्षा करके
(b) उन्हें चुप रहने के लिए कहेंगे अथवा कक्षा से बाहर जाने को कहेंगे
(c) उन्हें कक्षा से बाहर कर देंगे
(d) उनसे पूछेंगे कि वे ध्यान क्यों नहीं दे रहे

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) कक्षा में पिछली सीट पर बैठे, छात्रों द्वारा बात करने पर शिक्षक के शिक्षण कार्य में व्यवधान पड़ता है तथा साथ ही अन्य छात्रों के अधिगम में अवरोध का कार्य करता है, एक अध्यापक के नाते उनसे पूछेंगे कि वे ध्यान क्यों नहीं दे रहे हैं।

156. आपके द्वारा पूछे गये प्रश्न का विद्यार्थी गलत उत्तर देता है, तो आप

(a) दूसरा प्रश्न पूछेंगे जिससे विद्यार्थी स्वयं महसूस करे कि उत्तर गलत था
(b) उसे बतायेगे कि उसका उत्तर गलत क्यों था
(c) किसी दूसरे विद्यार्थी को उत्तर देने के लिए कहेंगे
(d) सही उत्तर बतायेंगे

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (c) कक्षा में पूछे गये सवाल का उत्तर किसी छात्र द्वारा गलत बताने पर, उसी प्रश्न को दूसरे छात्र से पूछा जाना चाहिए क्योंकि अन्य छात्र द्वारा सही उत्तर सुनने पर छात्र उसे आसानी से याद कर लेगा। गलत उत्तर पर दण्ड देने से छात्र में कुण्ठा की भावना का विकास हो सकता है और वह अन्तर्मुखी हो सकता है।

157. कक्षा में किसी विषय-वस्तु की परिचर्चा के समय एक अध्यापक के लिए आवश्यक प्रथम गतिविधि है

(a) तर्क-सम्बन्धी तथ्यों की व्याख्या
(b) उद्देश्य की सूचना
(c) विषय-वस्तु को मौखिक रूप से बताना
(d) श्यामपट्ट पर विषय-वस्तु लिखना

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (d) कक्षा में किसी नये विषय की शुरूआत के लिए किसी शिक्षक की पहली गतिविधि चाक बोर्ड पर विषय से सम्बंधित सूचना इंगित करना है तत्पश्चात् उस लिखित सूचना की चर्चा करना होता है।

158. निम्नलिखित में से कौन पुनर्बलन का उदाहरण है?

(a) नहीं लता! उत्तर 45 नहीं है।
(b) कमला! उत्तर देने में तुम कीर्ति की सहायता नहीं कर सकती
(c) अरे नहीं! आमतौर पर, तुम गलत हो।
(d) सुनील! तुमने सही कहा।

DSSSB PRT

Ans : (d) 'सुनील! तुमने सही कहा', वाक्य पुनर्बलन का उदाहरण है। पुनर्बलन में ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है जो छात्रों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करे। ऐसे पुनर्बलन को सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन कहते हैं।

159. निम्न में से क्या एक प्रभावी प्रशंसा के रूप में अध्यापक के लिये कार्य करेगा?

(a) विद्यार्थियों के अवधान को उसके कार्य से सम्बन्धित व्यवहार पर केन्द्रित करता है

(b) विद्यार्थियों के वर्तमान कार्य निष्पादन को उसके समूह के अन्य साथियों के सन्दर्भ वर्णित करता है

(c) विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं अथवा कार्य निष्पादन के महत्व की सूचना देता है

(d) जब विद्यार्थी अपने व्यवहार को नियंत्रित नहीं कर पाते तो उन्हें सकारात्मक व्यवहारात्मक समर्थन प्रदान करता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) विद्यार्थी की योग्यता एवं कार्य निष्पादन की सफलता अध्यापक के लिए प्रभावी प्रशंसा का कार्य करती है क्योंकि विद्यार्थी की सफलता में ही अध्यापक की सफलता होती है।

160. छात्रों को 'ठीक, शाबास, बहुत अच्छा' कहना है

(a) शाब्दिक पुनर्बलन

(b) अशाब्दिक पुनर्बलन

(c) सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन

(d) नकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (c) छात्रों को ठीक, शाबास, बहुत अच्छा कहना सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन है। सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन के अंतर्गत शिक्षक के वे सभी शाब्दिक अथवा मौखिक व्यवहार आते हैं जो सकारात्मक पुनर्बलन में सहायक हो। अर्थात् जिनके द्वारा एक विद्यार्थी को ठीक उत्तर देने अथवा सही अनुक्रियाएँ करने के लिए प्रोत्साहन और बल मिले।

161. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को क्या करना चाहिए?

(a) छात्रों को दण्डित करना चाहिए

(b) चुटकुले सुनाने चाहिए

(c) अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए

(d) आराम करना चाहिए

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (c) शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक प्रस्तावनात्मक प्रश्न पूछकर परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है।

162. यदि विद्यार्थी पाठ में रुचि न लेते प्रतीत हों, तो शिक्षक को चाहिए कि वह–

(a) शिक्षण विधि बदल दें

(b) दृश्य–श्रव्य सामग्री को प्रयोग में लाकर पाठ को रुचिकर बनाए

(c) कक्षा से चला जाए

(d) कक्षा में कोई अन्य कार्य प्रारम्भ करें

DSSSB PRT
UK TET 2014 (I-V)

Ans : (a) यदि विद्यार्थी पाठ में रुचि न लेते प्रतीत हों, तो शिक्षक को चाहिए कि शिक्षण विधि बदलकर पाठ को रुचिकर बनाये ताकि विद्यार्थी रुचि पूर्वक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सहभागी बने। इसलिए अध्यापक को विभिन्न शिक्षण–विधियों का ज्ञान होना चाहिए।

163. आपकी कक्षा में एक बच्चा रोज आपको परेशान करने के लिए अप्रासंगिक प्रश्न पूछता है। आप क्या करेंगे?

(a) प्रधानाचार्य से शिकायत करेंगे

(b) उसे डाँटेंगे

(c) उससे बातचीन करेंगे

(d) उसके माता–पिता से शिकायत करेंगे

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (c) यदि कोई विद्यार्थी कक्षा में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अप्रासंगिक प्रश्न पूँछकर बाधित करता है तो अध्यापक को उससे बातचीत करके उसके द्वारा इस प्रकार के व्यवहार किये जाने का कारण जानना चाहिए। क्योंकि इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उसे वह विषय समझ में ही न आ रहा हो। ऐसी परिस्थिति में विद्यार्थी को अतिरिक्त समय देकर विषय समझाने का प्रयास करना चाहिए।

164. निम्न में से कौन–सा/से अच्छे अनुशासन के लिए मुख्य तत्त्व है/हैं?

(1) कुशल मुख्याध्यापक

(2) स्कूल का स्वस्थ वातावरण

(3) आदर्श अध्यापक

(4) पुरस्कार और दंड

(a) 1, 2, 4 (b) केवल 2

(c) 1 एवं 3 (d) ये सभी

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (d) विद्यालय में स्वस्थ्य पठन–पाठन के वातावरण को सुनिश्चित करने के लिए अनुशासन एक महत्त्वपूर्ण कारक है। विद्यालय में अनुशासन के लिए आवश्यक है कि कुशल मुख्याध्यापक (प्रधानाध्यापक) हो, स्कूल का स्वस्थ एवं शांतिपूर्ण वातावरण हो, आदर्श अध्यापक हो, पुरस्कार एवं दण्ड की उचित व्यवस्था आदि हो।

165. अधिकतम प्रबलनकारी प्रभाव के लिए दिया गया रिवार्ड होना चाहिए–

(a) उत्तर प्राप्त होने के तुरंत बाद

(b) उत्तर प्राप्त होने के ठीक पहले

(c) उत्तर देने के साथ–साथ उसी क्षण

(d) उत्तर देने के बाद पर्याप्त विलंब के पश्चात्

DSSSB PRT

Ans : (a) अधिकतम प्रबलनकारी प्रभाव के लिए उत्तर प्राप्त होने के तुरंत बाद रिवार्ड या पुनर्बलन प्रस्तुत करना चाहिए। यदि अनुक्रिया और पुनर्बलन के मध्य अंतर ज्यादा होगा तो प्रबलनकारी प्रभाव कम होगा।

166. कक्षा में प्रभावी अनुशासन बनाए रखने के लिए शिक्षक को चाहिए कि वह–

(a) विद्यार्थी जो करना चाहते हैं, करने दें
(b) विद्यार्थियों से कड़ाई से व्यवहार करें
(c) विद्यार्थियों को कुछ समस्या हल करने के लिए दें
(d) (b) और (c)

DSSSB PRT

Ans : (c) कक्षा में प्रभावी अनुशासन बनाये रखने के लिए शिक्षक को चाहिए कि विद्यार्थियों को किसी क्रियाकलाप के माध्यम से व्यस्त रखे इसके लिए वह लेख लिखने, समस्या हल करने, रचनात्मक क्रियाकलाप करने के लिए विद्यार्थियों को दे सकता है।

167. आप कक्षा का अवधान केंद्रित कर सकते हैं

(a) उच्च स्वर में बोलकर (b) श्यामपट्ट पर लिखकर
(c) चित्र बनाकर (d) उद्दीपन परिवर्तन द्वारा

DSSSB PRT
Hariyana TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (d) कक्षा का अवधान केन्द्रित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है उद्दीपन परिवर्तन कौशल। सामान्यत: एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों से कोई अपेक्षित अनुक्रिया की प्राप्ति के लिए किसी विशेष उद्दीपक का प्रयोग करता है। प्रश्न पूछना, श्यामपट्ट की ओर इशारा करना, चित्र या वस्तु दिखाना आदि इसी प्रकार के उद्दीपन हैं जिनकी सहायता से वह विद्यार्थियों के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित और केन्द्रित करने का प्रयास करता है।

168. एक शिक्षिका पाठ को पूर्वपठित पाठ से जोड़ते हुए बच्चों को सारांश लिखना सिखा रही है। वह क्या कर रही है?

(a) वह बच्चों की पाठ समझने की स्वशैली विकसित करने में सहायता कर रही है
(b) वह बच्चों को सम्पूर्ण पाठ्य–वस्तु को पूर्णरूप से न पढ़ने की आवश्यकता का संकेत दे रहा है
(c) वह आकलन के दृष्टिकोण से पाठ्य–वस्तु के महत्त्व को पुनर्बलित कर रही है
(d) वह विद्यार्थियों को सामर्थ्यनुकूल स्मरण करने को प्रेरित कर रही है

DSSSB PRT

Ans : (a) एक शिक्षिका पाठ को पूर्वपठित पाठ से जोड़ते हुए बच्चों को सारांश लिखना सिखा रही है इसका अर्थ है कि वह बच्चों की पाठ समझने की स्वशैली विकसित करने में सहायता कर रही है।

169. कक्षा में ध्यान न देने वाले बच्चे से व्यवहार करने के लिए कौन–सा उपाय सर्वाधिक लाभकारी हो सकता है?

(a) ध्यान केन्द्रित करने के लिए कार्य करते हुए बच्चे को खड़े करने की अनुमति देना
(b) बच्चे के ध्यान को स्फूर्ति युक्त बनाने के लिए बीच–बीच में उससे अवकाश देना।
(c) बच्चे को महसूस करने के लिए उसे कक्षा में सबके सामने बार–बार डांटना–डपटना
(d) बच्चे को उस जगह बैठाना जहां सबसे कम ध्यान भंग हो सके।

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (d) कक्षा में ध्यान न देने वाले बच्चे को ऐसी जगह बैठा सकते है जहाँ आपकी नजर बराबर पहुँचती रहे साथ ही ऐसे बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछकर उसके ध्यान को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की ओर केन्द्रित किया जा सकता है।

170. एक शिक्षक (को)

(a) व्याख्यान पर अधिक ध्यान देना चाहिए और ज्ञान के लिए आधार उपलब्ध कराना चाहिए
(b) शिक्षार्थियों द्वारा की गई त्रुटियों को एक भयंकर भूल के रूप में लेना चाहिए और प्रत्येक त्रुटि के लिए गम्भीर टिप्पणी देनी चाहिए
(c) शिक्षार्थी कितनी बार गलती करने से बचता है इसे सफलता के माप के रूप में लेना चाहिए
(d) जब शिक्षार्थी विचारों को संप्रेषित करने की कोशिश कर रहे हों, तो उन्हें ठीक नहीं करना चाहिए

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (d) एक शिक्षक को, जब शिक्षार्थी विचारो को संप्रेषित करने की कोशिश कर रहे हों तो तत्काल उनमें सुधार नहीं करना चाहिए बल्कि जब वे विचारों को सम्प्रेषित कर ले तो उन्हीं (शिक्षार्थियों) की सहायता से ही उसे ठीक करनी चाहिए।

171. शिवानी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है, शिक्षक की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?

(a) शिक्षक द्वारा शिवानी को चुप करा देना चाहिए
(b) शिक्षक द्वारा शिवानी का ध्यान बँटा देना चाहिए
(c) शिक्षक को कहना चाहिए कि ''मैं नहीं जानता हूँ''
(d) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझकर देना चाहिए

DSSSB PRT
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (d) यदि शिवाानी द्वारा पूछे गये प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे पाता है तो उसे स्पष्ट रूप से कहना चाहिए कि 'इस प्रश्न का उत्तर हम बाद में समझकर देंगे'।

172. यदि एक विद्यार्थी कोई प्रश्न पूछता है जिसका उत्तर आपके पास नहीं है। आप क्या करेंगे? आप–

(a) छात्र से कहेंगे की उसका प्रश्न बेतुका है
(b) टालने का प्रयास करेंगे
(c) प्रश्न का जवाब ढूंढने और अगले दिन उसे बतायेंगे
(d) छात्र को अनावश्यक प्रश्न पूछने के लिए झिड़क देंगे

DSSSB PRT
Hariyana TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) यदि कोई विद्यार्थी प्रश्न पूछता है, जिसका उत्तर आपके पास नहीं है तो एक कुशल अध्यापक होने के नाते आप विनम्रतापूर्वक और बिना किसी झिझक के प्रश्न का जवाब ढूढ़कर कल बताने के लिए कहेंगे।

173. ध्यान आकर्षित होने में ..... की प्रमुख भूमिका होती है।

(a) उद्दीपन की तीव्रता (b) उद्दीपन की उपादेयता
(c) उद्दीपन की विश्वसनीयता (d) उद्दीपन की सक्रियता

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (a) उद्दीपन की तीव्रता ध्यान आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि उद्दीपन की तीव्रता जितनी ज्यादा होगी व्यक्ति न चाहते हुए भी उसकी तरफ आकर्षित हो जाता है।

174. कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय क्या है?

(a) अनुशासनहीन छात्रों को कक्षा से बाहर निकाल देना
(b) शिक्षण को रोचक एवं व्यवहारिक बनाना
(c) छात्रों के अभिभावकों को सूचित करना
(d) अनुशासनहीन छात्रों को विशिष्ट सुविधाएँ प्रदान करना

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) कक्षा में अनुशासन बनाये रखने के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली उपाय यह है कि शिक्षण को रोचक एवं व्यवहारिक बनाया जाये साथ ही शिक्षण छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप हो।

175. निम्न में से कौन शिक्षण कुशलता से सम्बन्धित है?

(a) श्यामपट्ट पर लिखना (b) प्रश्नों को हल करना
(c) प्रश्न पूछना (d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक सभी शिक्षण कौशलों में कुशल हो। शिक्षण कौशल निम्न है-

1. श्यामपट्ट कौशल
2. प्रश्न कौशल
3. स्पष्टीकरण कौशल
4. प्रतिपुष्टि कौशल आदि।

176. श्यामपट्ट पर लिखते समय सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

(a) अच्छी लिखावट (b) लेखन में स्पष्टता
(c) बड़े अक्षरों में लिखना (d) छोटे अक्षरों में लिखना

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (b) श्यामपट्ट लेखन का सबसे महत्वपूर्ण घटक लेखन में स्पष्टता होती है। जिससे छात्र श्यामपट्ट पर लिखी गयी विषयवस्तु को आसानी एवं सुगमता पूर्वक पढ़ सकें।

177. आप किसी कक्षा में पाठ पढ़ाते हैं और एक विद्यार्थी विषय से असम्बद्ध एक प्रश्न पूछता है। आप क्या करेंगे?

(a) उसे असम्बद्ध प्रश्न पूछने की अनुमति देंगे
(b) उसे असम्बद्ध प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं देंगे
(c) उसे गैर-अनुशासित समझकर दण्डित करेंगे
(d) कक्षा के बाद प्रश्न का उत्तर देंगे

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) कक्षा-कक्ष में शिक्षण प्रक्रिया के दौरान विषय-वस्तु से असम्बद्ध प्रश्न पूछने पर अध्यापक द्वारा कक्षा के बाद प्रश्न का उत्तर देना सर्वाधिक उचित है ताकि कक्षा-कक्ष में शिक्षण प्रक्रिया में किसी प्रकार का अवरोध न आये तथा अनुशासित रूप से शिक्षण कार्य चलता रहे।

178.शिक्षार्थी जो पहले सीख चुके हैं उसकी पुनरावृत्ति और प्रत्यास्मरण में शिक्षार्थियों की मदद करना महत्वपूर्ण है क्योंकि –

(a) पूर्व पाठों को दोहराने का यह एक प्रभावी तरीका है
(b) यह शिक्षार्थियों की स्मृति को बढ़ाता है जिससे सीखना सुदृढ़ होता है
(c) यह किसी भी कक्षा-अनुदेशन के लिए एक सुविधाजनक शुरुआत है
(d) नई जानकारी को पूर्व जानकारी से जोड़ना सीखने को समृद्ध बनाता है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (d) शिक्षार्थी जो पहले सीख चुके हैं उसकी पुनरावृत्ति और प्रत्यास्मरण में शिक्षार्थियों की मदद करना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि नई जानकारी को पूर्व जानकारी से जोड़ना सीखने को समृद्ध बनाता है। इसलिए प्राय: अध्यापक पाठ को प्रारम्भ करने से पूर्व छात्रों से प्रस्तावनात्मक प्रश्न पूछते हैं।

179. फैबियानों, पेलहम, मानोस, गैने एट अल (2004) के अनुसार, कक्षा में आक्रामकता, गुणधर्मों का विनाश और गैर–अनुपालन सहित विघटनकारी व्यवहार को कम करने का एक प्रभावी साधन निम्न है?

(a) सकारात्मक सुदृढ़ीकरण से टाइम–आउट (टीओ)
(b) कक्षा में टाइम–आउट (टीओ)
(c) शारीरिक दंड
(d) निरोध

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) फैबियानों, मानोस, गैने एट अल के अनुसार, कक्षा में गुणधर्मों का विनाश और गैर–अनुपालन सहित विघटनकारी व्यवहार को कम करने का एक प्रभावी साधन सकारात्मक सुदृढ़ीकरण से टाइम–आउट है। सकारात्मक सुदृढ़ीकरण सकारात्मक अनुशासन का एक स्तर है। सकारात्मक अनुशासन का लक्ष्य अपने बच्चों को ऐसी चीजों से रोकने के लिए रोकथाम, व्याकुलता और प्रतिस्थापन जैसी तकनीकों का उपयोग करना है, जिन्हें आप नहीं करना चाहते हैं। यह विधि बंधन को मजबूत करने तथा माता–पिता और बच्चों के बीच विश्वास बढ़ाने में मदद करती है।

180. निम्नलिखित में से कौन-सी कक्षा प्रबंधन की तकनीक है जहाँ नकारात्मक व्यवहार प्रदर्शित करने वाला एक छात्र शेष कक्षा से अलग हो जाता है?

(a) तुष्टि तकनीक (b) परिसमाप्ति तकनीक
(c) शारीरिक दंड (d) समय समाप्त तकनीक

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : समय समाप्त तकनीक (Time out technique) कक्षा प्रबंधन की एक तकनीक है जहाँ नकारात्मक व्यवहार प्रदर्शित करने वाला एक छात्र शेष कक्षा से अलग हो जाता है। निष्कासन (insulation) समवय समाप्ति तकनीक का एक प्रकार है जिसे तब लागू किया जाता है जब एक छात्र को कक्षा से निकाल दिया जाता है या एक अलग कमरे में भेजा जाता है।

181. शिक्षक बच्चों को सृजनात्मक विचारों के लिए प्रोत्साहित कर सकता है

(a) उन्हें बहु-विकल्पी प्रश्न देकर
(b) समस्या समाधान आधारित प्रश्न पूछकर

(c) उन्हें उत्तर कंठस्थ करने के लिए कहकर
(d) उनसे प्रत्यास्मरण-आधारित प्रश्न पूछकर

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (b) सृजनात्मकता एक गुण है जिसमें बालक किसी नये विचार या वस्तु की उत्पत्ति के बारे में चिंतन करता है इस तरह के बालक किसी समस्या को नियमबद्ध होकर समाधान नहीं करते बल्कि नियम से अलग होकर किसी और मार्ग की तलाश करते हैं अत: बच्चों में सृजनशील विचारों को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षक द्वारा बच्चों को समस्या समाधान के लिए विभिन्न तरीकों से सोचने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

182. विद्यार्थियों के प्रभावशाली अधिगम के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा, शिक्षक के प्रारंभिक कार्यों में से एक नहीं है?

(a) बच्चों को यह सिखाना कि वे अपने अधिगम प्रयासों को कैसे देख और सुधार सकते हैं
(b) विद्यार्थियों को उपदेशात्मक विधि से सूचना प्रदान करना
(c) विद्यार्थियों की उन धारणाओं को जानना जिन्हें लेकर वे कक्षा में आते हैं
(d) विद्यार्थियों से उच्चतर स्तर के प्रश्नों के उत्तर की अपेक्षा करना

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (d) विद्यार्थियों के प्रभावशाली अधिगम के लिए उनके पाठ्यक्रम से सम्बन्धित प्रश्न पूछने चाहिए न कि उच्चतर स्तर के या निम्नवत् स्तर के प्रश्न पूछने चाहिए क्योंकि इससे विद्यार्थियों में हीनता आती है जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बाधित करने का प्रयास करती है।

183. पठन-पाठन में शिक्षकों को करना चाहिए–

(a) ज्ञान का मौखिक स्थानान्तरण
(b) जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्रोत्साहन
(c) कक्षा-कक्ष में पाठ्यपुस्तक द्वारा शिक्षण
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) पठन-पाठन में शिक्षकों को बालकों के जिज्ञासु प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए शिक्षक प्रस्तावनात्मक प्रश्न पूछ सकता है।

184.शिक्षण के दौरान आवाज में उतार–चढ़ाव उदाहरण है–

(a) उद्दीपन–परिवर्तन कौशल (b) प्रस्तावना कौशल
(c) पुनर्बलन कौशल (d) समापन कौशल

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : छात्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए तथा ध्यान को पाठ में लगाये रखने के लिए शिक्षक अपने व्यवहार में जानबूझकर जो परिवर्तन लाता है उसे उद्दीपन परिवर्तन कौशल कहते हैं।
उद्दीपन परिवर्तन कौशल के घटक निम्न होते हैं–
1. यथोचित शरीर संचालन
2. हाव–भाव, भाव–भंगिमा का प्रयोग
3. भावों का केन्द्रीकरण
4. स्वरों में उतार–चढ़ाव
5. मौन
6. शिक्षक–शिक्षार्थी वार्तालाप में परितर्वन

शिक्षण उपकरण एवं शिक्षण तकनीकी

185. बहु–संवेदी शिक्षण–अधिगम की प्रविधि में अधिगम–संवर्धन हेतु दृश्य- श्रव्य, स्पर्श और ..... संवेदनाओं का एक साथ प्रयोग किया गया है।

(a) गतिबोधक (b) कर्ण–कोटर
(c) प्रत्यक्षीकरण (d) अवलोकन

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : बहु–संवेदी शिक्षण अधिगम की प्रविधि में अधिगम संवर्धन हेतु दृश्य–श्रव्य, स्पर्श और गतिबोधक संवेदनाओं का एक साथ प्रयोग किया गया है। बहु–संवेदी शिक्षण अधिगम प्रविधि बच्चों को विभिन्न इन्द्रियों के प्रयोग पर बल देता है। ऐसा माना जाता है कि इन्द्रियाँ ही ज्ञान के स्रोत हैं। किसी भी बात को सीखने में हम जितनी ज्यादा इन्द्रियों का प्रयोग करेंगे, वह बात हमें उतनी ही जल्दी व बेहतर याद रहेगी।

186. आई.सी.टी. का उद्देश्य है–

(a) स्मार्ट स्कूलों की स्थापना करना
(b) शिक्षकों की क्षमता बढ़ाना
(c) (a) और (b) दोनों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) योजना दिसम्बर, 2004 में माध्यमिक स्तर के छात्रों को मुख्यत: अपनी आई.सी.टी. कौशल क्षमता बढ़ाने और कम्प्यूटर सहायक शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करने हेतु किया गया था। इसके मुख्यत: चार उद्देश्य थे–
1. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों को कम्प्यूटर सहायक शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों के साथ भागीदारी करना।
2. स्मार्ट स्कूलों की स्थापना करना।
3. शिक्षक संबंधित हस्तक्षेप जैसे– विशिष्ट शिक्षक की नियुक्ति, आईसीटी में सभी शिक्षकों की क्षमता–बढ़ाना और प्रेरणा के रूप में राष्ट्रीय आईसीटी पुरस्कार हेतु योजना बनाना।
4. ई-विषयवस्तु का विकास करने से है।

187. पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ मुख्यत: सम्बन्धित हैं–

(a) शैक्षिक संस्थानों के विकास से
(b) छात्रों के सर्वांगीण विकास से
(c) छात्रों के वृत्तिक विकास से
(d) छात्रों के मानसिक विकास से

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ छात्रों के सर्वांगीण विकास से, छात्रों के रुचि और अवधान से, छात्रों की सक्रिय सहभागिता से, छात्रों की क्रियाशीलता आदि से सम्बन्धित है। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में खेल, नाटक, निबन्ध प्रतियोगिता, शैक्षिक भ्रमण, अंताक्षरी आदि क्रियाएँ आती हैं।

188. शैक्षिक तकनीकी तृतीय का दूसरा नाम है-
उत्तर: प्रणाली विश्लेषण/प्रणाली उपागम

UP Assistant Teacher Test (I-V) 27.05.2018

व्याख्या- शैक्षिक तकनीकी तृतीय का दूसरा नाम प्रणाली विश्लेषण या प्रणाली उपागम है। आई. के. डेविज ने अपनी पुस्तक 'मैनेजमेंट आफ लर्निंग' में शैक्षिक तकनीकी के तीन स्वरूपों का वर्णन किया है-

(1) शैक्षिक तकनीकी प्रथम या कठोर शिल्प उपागम

(2) शैक्षिक तकनीकी द्वितीय या मृदुल शिल्प उपागम

(3) शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली विश्लेषण

शैक्षिक तकनीकी तृतीय या प्रणाली उपागम शैक्षिक प्रशासन के विकास तथा अनुदेशन की रूपरेखा बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करती है।

189.छात्रों के द्वारा अधिक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग निम्नलिखित को प्रभावित करता है

(a) शिक्षण प्रक्रिया (b) अधिगम प्रक्रिया

(c) अधिगम उत्पाद (d) अधिगम उत्पाद एवं प्रक्रिया

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) छात्रों द्वारा अधिक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग छात्र के अधिगम उत्पाद तथा प्रक्रिया को प्रभावित करता है तथा छात्र अपने ज्ञानेन्द्रियों के अनुसार ही अधिगम उत्पादन देता है।

190.निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षण का एक नवाचारी स्त्रोत है?

(a) टेलीस्कोप (b) इन्टरनेट

(c) फेसबुक (d) ब्लैक बोर्ड

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (b) इंटरनेट शिक्षण का नवाचारी स्त्रोत है क्योंकि इंटरनेट वर्तमान में खोजी गयी एक ऐसी तकनीकी है जो शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है।

191. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए :

A. स्लाइड प्रोजेक्टर	(i) दृश्य साधन
B. टी वी	(ii) श्रव्य साधन
C. चार्ट	(iii) दृश्य-श्रव्य साधन
D. आवाज रिकॉर्डर	(iv) प्रक्षेपण साधन

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)	(b)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)	(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) स्लाइड प्रोजेक्टर→प्रक्षेपण साधन

टी. वी.→ श्रव्य-दृश्य साधन

चार्ट → दृश्य साधन

आवाज रिकार्डर→ श्रव्य साधन

192. एक विषय पर सर्वाधिक एवं आधुनिकीकृत सूचना किस स्त्रोत से प्राप्त होती है?

(a) विश्वकोश

(b) इन्टरनेट

(c) नवीनतम अकादमिक पत्रिकाएँ

(d) अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) एक विषय पर सर्वाधिक एवं आधुनिकीकृत सूचना प्रदाता स्त्रोत इन्टरनेट है जिसके द्वारा आसानी से सूचना का आदान प्रदान किया जा सकता है।

193. मीडिया का एक उदाहरण जो अधिगमकर्ता को प्रत्यक्ष प्रस्तुतीकरण के द्वारा अधिगम में सहायक होता है

(a) शैक्षिक टेलीविजन (b) शैक्षिक प्रसारण

(c) ओवर हेड प्रोजेक्टर (d) टेलीफोन

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (a) शैक्षिक टेलीविजन मीडिया का एक उदाहरण है जो अधिगमकर्ता को प्रत्यक्ष प्रस्तुतीकरण के द्वारा अधिगम में सहायक होता है।

194.कठोर शिल्प उपागम किस सिद्धान्त पर आधारित है?

(a) औद्योगिक (b) इन्जीनियरिंग

(c) व्यावसायिक (d) अनुदेशन

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (b) कठोर शिल्प उपागम 'इन्जीनियरिंग' सिद्धांत पर आधारित है।

195. कोमल शिल्प उपागम सम्बन्धित है

(a) रेडियो से

(b) दूरदर्शन से

(c) कम्प्यूटर से

(d) मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग से

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (d) कोमल शिल्प उपागम का सम्बंध मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग से है।

196. कोमल शिल्प उपागम संबंधित है–

(a) रोडियो से

(b) दूरदर्शन से

(c) कम्प्यूटर से

(d) मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुप्रयोगों से

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (d) शैक्षिक तकनीकी द्वितीय या कोमल शिल्प उपागम मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग से सम्बन्धित है। इस उपागम में शिक्षण व सीखने के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।

197. निम्न में से कौन श्रव्य–दृश्य सामग्री का उद्देश्य है?

(1) शिक्षण को प्रभावशाली बनाना

(2) सकारात्मक सृजनात्मकता उत्पन्न करना

(3) छात्रों को क्रियाशील बनाना

(4) विषय–वस्तु में अरुचि उत्पन्न करना

(a) 1, 2 एवं 3 (b) 1 एवं 4

(c) 1ए 3 एवं 4 (d) 2, 3 एवं 4

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (a) शिक्षण प्रक्रिया में श्रव्य–दृश्य सामग्री (शिक्षण सहायक सामग्री) के प्रयोग का निम्न उद्देश्य हो सकता है–

- शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए।
- छात्रों में सृजनात्मकता उत्पन्न करने के लिए।
- छात्रों को क्रियाशील बनाने के लिए।
- छात्रों में पाठ के प्रति रुचि जागृत करने के लिए।
- सीखने की गति में सुधार करने के लिए।
- अमूर्त पदार्थो को मूर्त रूप देने के लिए।
- जटिल विषयों को सरल रूप में प्रस्तुत करने के लिए

198. श्यामपट्ट को शिक्षण सामग्री के किस समूह के अन्तर्गत किया जा सकता है?

(a) श्रव्य साधन (b) दृश्य साधन
(c) दृश्य-श्रव्य साधन (d) इनमें से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (b) वे साधन जिसमें बालक की दृश्य ज्ञानेन्द्रिय (आख) प्रेरित होती है वे दृश्य शिक्षण सामग्री कहलाते हैं। जैसे- श्यामपट्ट, मानचित्र, रेखाचित्र, मॉडल आदि।

199.एक शिक्षिका अपने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है क्योंकि –

(a) वे शिक्षक को आराम देते हैं
(b) के प्रभावी आकलन को सुगम बनाते हैं
(c) वे शिक्षार्थियों को वैविध्य उपलब्ध कराते हैं
(d) इनमें अधिकतम इंद्रियों का उपयोग सीखने को संवर्द्धित करता है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) अधिगम का एक सिद्धान्त यह है कि यदि अधिगम करते समय शरीर के अधिकतम इंन्द्रियों को सक्रिय रखा जाय तो वह अधिगम अधिक प्रभावी होता है। इसलिए शिक्षिका जब अपने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है तो इससे अधिगम संवर्द्धित व पुस्ट होता है।

200. निम्नलिखित में से कौन कंप्यूटर के कामकाज के लिए मानवीय अनुभूति की तुलना करता है?

(a) तंत्रिका प्रक्रम (b) नेटवर्क मानचित्रण
(c) सूचना प्रक्रम(d)मन मानचित्रण

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) सूचना प्रक्रम कम्प्यूटर के काम–काज के लिए मानवीय अनुभूति की तुलना करता है। सूचना प्रक्रम में मानव द्वारा अंकित किये गये सूचनाओं का कम्प्यूटर के दिमाग (CPU) द्वारा संसाधित करके परिणामों को मॉनीटर पर प्रेषित किया जाता है।

शिक्षण विधियाँ

201. समस्या–समाधान प्राय: उन विद्यालयों में सफल है, जहाँ

(a) केवल उच्चस्तरीय शैक्षिक उपलब्धि पर ही बल दिया जाता है
(b) अध्यापक केन्द्रित शिक्षापास्त्र प्रभावी है
(c) परिवर्तनीशील/लचीली पाठ्यचर्या है
(d) कक्षाओं में छात्रों का सम–समूहीकरण उपलब्ध है

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (c) समस्या–समाधान विधि से शिक्षण कार्य करना प्राय: उन विद्यालयों में सफल होता है जहाँ पाठ्यचर्या लचीली, परिवर्तनशील व संक्षिप्त हो।

202. अपने अनुभवों और लक्षणों के आधार पर उपकरणों में खराबी के कारण की परिकल्पना का परीक्षण कर रवि उपकरणों की मरम्मत करता है। वह उपयोग करता है–

(a) अंतर्दृष्टि का (b) कलन–विधि का
(c) मानसिक दृढ़ता का (d) अनुमानी विधि का

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : अपने अनुभवों और लक्षणों के आधार पर उपकरणों में खराबी के कारण की परिकल्पना का परीक्षण कर रवि उपकरणों की मरम्मत करता है। इस कार्य में वह शिक्षण की अनुमानी या अन्वेषण विधि का उपयोग करता है। अनुमानी विधि के जन्मदाता आर्मस्ट्रांग माने जाते हैं। इस पद्धति की विशेषता यह है कि विद्यार्थी को अपने निरीक्षण तथा प्रयोग से स्वयं खोजना होता है। अध्यापक विद्यार्थी को बहुत से क्रियाकलाप बताते हैं फिर विद्यार्थी स्वयं प्रयोग करके निष्कर्ष निकालता है।

203. एक प्राथमिक कक्षा-कक्ष में एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(a) केवल गैर–उदाहरण देने चाहिए।
(b) उदाहरण एवं गैर उदाहरण दोनों देने चाहिए।
(c) उदाहरण या गैर–उदाहरण दोनों नहीं देने चाहिए।
(d) केवल उदाहरण देने चाहिए।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (b) : एक प्राथमिक कक्षा–कक्ष में एक शिक्षक को उदाहरण एवं गैर उदाहरण दोनों देने चाहिए। एक शिक्षक को कक्षा शिक्षण करते समय उदाहरण को बच्चों के वास्तविक जीवन से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिए ताकि बच्चे अपने अनुभवों से जोड़ते हुए अवधारणाओं को समझ सकें। साथ ही बच्चों के सामने ऐसे उदाहरण भी प्रस्तुत करने चाहिए जो नियमों या सिद्धांतों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित न होते हुए भी उनके वास्तविक जीवन से संबंधित हो। इससे वे स्वयं चिंतन करने के लिए प्रेरित होंगे जिससे उनमें सृजनात्मकता का विकास होगा।

204. निम्न में से कौन–सी शिक्षण विधि प्रगतिवादी सिद्धांतों पर आधारित है?

(a) आगमन (b) समस्या समाधान
(c) प्रश्नोत्तर (d) निगमन

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : समस्या–समाधान विधि, मानसिक उद्वेलन विधि, खेल विधि आदि प्रगतिवादी सिद्धांतों पर आधारित शिक्षण विधियाँ हैं, क्योंकि प्रगतिवादी शिक्षण विधियों में बालक को सक्रिय अधिगमकर्ता माना जाता है जो अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करते हैं।

205. निम्न में से कौन–सी शिक्षण विधि प्रजातांत्रिक नहीं है?

(a) प्रोजेक्ट विधि (b) सहभागी विधि
(c) व्याख्यान विधि (d) सामूहिक परिचर्चा

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : शिक्षण विधियाँ दो प्रकार की होती हैं–
(i) प्रभुत्ववादी शिक्षण विधि
(ii) प्रजातांत्रिक शिक्षण विधि

(i) प्रभुत्ववादी शिक्षण विधि के अंतर्गत निम्न शिक्षण विधियाँ आती हैं–

1. व्याख्यान विधि
2. प्रदर्शन विधि
3. व्यक्तिगत निदेशन अनुवर्ग
4. अभिक्रमित अनुदेशन

(ii) प्रजातांत्रिक शिक्षण विधि के अंतर्गत निम्न शिक्षण विधियाँ आती हैं–

1. प्रश्नोत्तर विधि
2. सामूहिक परिचर्चा विधि
3. अन्वेषण विधि
4. प्रोजेक्ट विधि
5. ऐतिहासिक खोज विधि

206. प्रयोजना शिक्षण विधि के प्रणेता कौन थे?

उत्तर: विलियम एच. किलपैट्रिक

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-प्रयोजना शिक्षण विधि के प्रणेता जॉन डयूवी के शिष्य विलियम एच. किलपैट्रिक हैं। किलपैट्रिक के अनुसार- ''प्रयोजना वह उद्देश्यपूर्ण कार्य है जिसे लगन के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाता है।'' अर्थात प्रोजेक्ट विधि विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित किसी समस्या का हल खोज निकालने के लिए अच्छी तरह से चुना हुआ वह कार्य है जिसे पूर्ण स्वभाविक परिस्थितियों में सामाजिक वातावरण में ही पूर्ण किया जाता है।

207. ह्यूरिस्टिक विधि के प्रतिपादक कौन थे?

उत्तर: आर्मस्ट्रांग

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या- ह्यूरिस्टिक विधि या अन्वेषण विधि के प्रतिपादक आर्मस्ट्रांग माने जाते हैं। ''ह्यूरिस्टिक'' एक ग्रीक शब्द है। यह ह्यूरिसिको से बना है जिसका अर्थ है ''मैं खोज करता हूँ''। इस विधि में छात्रो को उपयुक्त वातावरण में रखकर स्वयं किसी तथ्य को ढूँढने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसमे अध्यापक मात्र पथप्रदर्शन करता है।

208. यदि आप कक्षा में ज्यादा छात्रों की प्रतिभागिता चाहते हैं तो आप शिक्षण की कौन सी विधि का चुनाव करेंगे?

उत्तर: विचार-विमर्श विधि/सामूहिक-परिचर्चा विधि

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-विचार-विमर्श विधि का उपयोग तब किया जाता है जब सभी विद्यार्थियो को विचार-विमर्श में सीधे रूप में सम्मिलित करना सम्भव हो। इस विधि में कुछ छात्र दिये गये विषय या समस्या के विभिन्न पक्षों पर संक्षेप में भाषण तैयार करते हैं तथा शिक्षक की अध्यक्षता में भाषण देते हैं।

209. निचली, कक्षाओं में पढ़ाते समय एक शिक्षक को प्राथमिकता देनी चाहिए-

(a) व्याख्यान विधि को (b) दत्तकार्य को
(c) कहानी कथन को (d) समूह चर्चा को

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) निचली कक्षाओं में पढ़ाते समय शिक्षक को कहानी कथन शिक्षण विधि को प्राथमिकता देनी चाहिए। क्योंकि छोटे बालक कहानी के प्रति ज्यादा आकर्षित होते हैं अत: इस विधि से बालक में ज्ञान एवं शिक्षा का प्रसार आसानी से किया जा सकता है।

210. कक्षा शिक्षण में सामूहिक क्रियाकलाप का क्या उद्देश्य है?

(a) शिक्षक के कार्य भार को कम करना
(b) अधिकांश बच्चों को अधिगम में शामिल करना
(c) अवधारणाओं को प्रभावपूर्ण ढंग से स्पष्ट करना
(d) बच्चों को स्वच्छंदता प्रदान करना

(DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT))

Ans. (b) **:** कक्षा शिक्षण में सामूहिक क्रिया-कलाप से अधिकांश बच्चे अधिगम में शामिल होते हैं।

211. फ्रोबेल ने निम्नलिखित में से किस खेल पर प्रमुख बल दिया?

(a) गेंद का खेल (b) ब्लॉक का खेल
(c) आकृतियों को खेल (d) उपर्युक्त सभी

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (a) फ्रोबेल ने खेल विधि को अधिगम का एक उपयुक्त उपकरण माना है। फ्रोबेल के अनुसार खेल विधि से बालक में समायोजन शक्ति, शारीरिक शक्ति एवं मानसिक क्षमता का विकास होता है। खेल विधि में फ्रोबेल में गेंद के खेल को प्रमुखता दी। फ्रोबेल के किण्डर गार्डेन शिक्षा प्रणाली की स्थापना की।

212. प्रोजेक्ट शिक्षण विधि किससे सम्बन्धित है?

(a) फ्रोबेल (b) जॉन डीवी
(c) आर्मस्ट्राँग (d) मैक्ड्यूगल

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (b) ''प्रोजेक्ट शिक्षण विधि जॉन डीवी की विचारधारा पर आधारित है। लेकिन इसको विकसित करने का श्रेय किलपेट्रिक को जाता है।'' अत: यह कह सकते है कि जॉन डीवी, किलपैट्रिक के सम्मलित प्रयास का परिणाम प्रोजेक्ट विधि है। इनके अनुसार कार्य को वास्तविक परिस्थिति में करने से अधिगम स्थायी होता है।

213.विद्यार्थियों की शिक्षण में अधिक से अधिक भागीदारी निम्नलिखित विधि के द्वारा सम्भव है

(a) व्याख्यान विधि (b) पाठ्यपुस्तक विधि
(c) श्रव्य-दृश्य सामग्री (d) वार्तालाप विधि

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) विद्यार्थियों की शिक्षण में अधिक से अधिक भागीदारी, वार्तालाप विधि (Discussion Method) द्वारा सम्भव है क्योंकि इसमें सभी विद्यार्थीयों को अपने विचार रखने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

214. अध्यापन की पद्धति के रूप में व्याख्यान प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों का अध्ययन करें :

A. सूचना प्रदान करने की यह एक कुशल विधा है।

B. विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित करने हेतु यह एक प्रभावपूर्ण प्रणाली है।

इनमें से कौन-सा कथन सही है?

(a) केवल A (b) केवल B

(c) A तथा B दोनों (d) न A न B

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) अध्यापन की पद्धति के रूप में व्याख्यान प्रणाली एक कुशल विधा है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को आलोचनात्मक दृष्टि से सोचने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

215. मौखिक मार्गदर्शन कम प्रभावी है

(a) प्रत्ययों के शिक्षण में (b) कौशल के शिक्षण में

(c) तथ्यों के शिक्षण में (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) कौशल के शिक्षण में मौखिक मार्गदर्शन कम प्रभावी होता है क्योंकि कौशल व्यवहारगत होता है जिसमें किसी कार्य को करके सीखा जाता है।

216. शिक्षकों को निम्नलिखित शिक्षण विधियों को अभ्यास में लाना चाहिए

(a) भाषण विधि (b) अन्त:क्रियात्मक विधियाँ

(c) वर्णनात्मक (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) शिक्षकों को अंत:क्रियात्मक शिक्षण विधियों को प्रयोग में लाना चाहिए ताकि छात्र अपनी समस्याओं को नि:संकोच अपने शिक्षक के सामने प्रस्तुत कर सकें तथा शिक्षक उनकी समस्याओं को सरलता पूर्वक सुलझा सके।

217.एक बालक अधिक सीखता है, यदि उसे

(a) पाठ्यपुस्तक के माध्यम से पढ़ाया जाये

(b) कम्प्यूटर से पढ़ाया जाये

(c) व्याख्यान विधि से पढ़ाया जाये

(d) क्रिया विधि से पढ़ाया जाये

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) एक बालक अधिक सीखता है यदि उसे क्रिया विधि से पढ़ाया जाये क्योंकि इस विधि में छात्र सक्रिय सहभागिता करता है जिसमें उसकी सभी इंन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं और सभी इंन्द्रियों के सक्रिय रहने से अधिगम अधिक प्रभावी होता है। अत: शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षण की क्रिया विधि का प्रयोग किया जा सकता है।

218. कक्षा में प्रभावी व्याख्यान देते समय, एक अध्यापक

(a) सम्बन्ध स्थापित करता है

(b) सार्थक शारीरिक हाव-भाव को समावेशित करता है

(c) व्याख्यान स्थल पर स्थैतिक बना रहता है

(d) ध्वनि की तीव्रता और तरीकों में परिवर्तन करता है

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) कक्षा में व्याख्यान देते समय अगर शिक्षक द्वारा सार्थक संकेतों का प्रयोग किया जाता है तो व्याख्यान और भी प्रभावशाली हो जाता है। छात्रों से नेत्र सम्पर्क स्थापित करना तथा स्वरों में आरोह, अवरोह लाना शिक्षक की सामान्य विशेषताए होती है।

219. शिक्षा में विकास को लेकर फ्रोबेल का मुख्य योगदान है

(a) वाणिज्यिक शिक्षणालय (b) बालवाड़ी

(c) पब्लिक स्कूल (d) लैटिन स्कूल

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षा के विकास में फ्रोबेल का महत्वपूर्ण योगदान किण्डर गार्डन (बालवाडी) पद्धति की स्थापना करना।

220.सीखने की खेल विधि उपयोगी है-

(a) बाल्यावस्था हेतु (b) पूर्व बाल्यावस्था हेतु

(c) युवावस्था हेतु (d) परिपक्वावस्था हेतु

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) बाल्यावस्था की आयु (6-12 वर्ष) में बालक को सीखने के लिए खेल विधि सबसे उपयुक्त होती है क्योंकि इस अवस्था में बालक के अन्दर चंचलता की अधिकता, मन में अस्थिरता तथा समायोजन की भावना का अभाव पाया जाता है। जिससे उनमें अधिगम कार्य बहुत ही मन्द होता है। खेल विधि के द्वारा बच्चों में अधिगम प्रक्रिया को तेज किया जा सकता है।

221.शिक्षा में फ्रोबेल का महत्वपूर्ण योगदान था.....का विकास।

(a) व्यावसायिक स्कूल (b) पब्लिक स्कूल

(c) किण्डर गार्टन (d) लेटिन स्कूल

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
Jharkhand 2011 (I-V)

Ans: (c) शिक्षा के क्षेत्र में फ्रोबेल का महत्त्वपूर्ण योगदान था– 'किण्डर गार्टन' का विकास। किण्डर गार्टन का शाब्दिक अर्थ होता है 'बच्चों का बगीचा'।

222.शैक्षिक भ्रमण, अधिगम के लिए आवश्यक साधन क्यों है?

(a) यह रटने की आदत का विकास करता है

(b) पाठ्यचर्या समय पर पूर्ण होती है

(c) यह कल्पना शक्ति का विकास करता है

(d) भ्रमण के स्थान से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (d) शैक्षणिक भ्रमण का मूल उद्देश्य छात्र को विशेष परिस्थितियों का अनुभव प्रदान कराना है क्योंकि शैक्षणिक भ्रमण से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है।

223. सीखने की प्रोजेक्ट विधि किस अवस्था के लिए उपयोगी है?

(a) बाल्यावस्था (b) पूर्व बाल्यावस्था

(c) किशोरावस्था (d) उपरोक्त सभी

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (d) बाल्यावस्था, पूर्व बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था इन तीनों अवस्थाओं में प्रोजेक्ट विधि अधिगम के लिए सर्वोत्तम होती है।

224. विज्ञान में मोनिका की सम्प्राप्ति अच्छी है, किंतु गणित में खराब है। इसका प्रमुख संभाव्य कारण हो सकता है?

(a) बालिकाएं प्राय: गणित में कमजोर होती हैं।
(b) मोनिका के माता–पिता अशिक्षित हैं।
(c) गणित शिक्षण प्रभावी नहीं है।
(d) गणित कठिन विषय है।

DSSSB PRT

Ans : (c) विद्यार्थी जब किसी विषय में असफल होता है तो यह विद्यालय एवं शिक्षक की भी असफलता मानी जाती है क्योंकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना विद्यालय एवं शिक्षक का कर्तव्य होता है। अत: मोनिका यदि गणित में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रही है तो इसका अर्थ है कि गणित शिक्षण प्रभावी नहीं है। इसलिए गणित शिक्षण में सुधार करने की आवश्यकता है।

225. 'खेल शिक्षण विधि' के प्रतिपादक कौन हैं?

(a) सुकरात (b) फ्रोबेल
(c) किलपैट्रिक (d) अरस्तू

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (b) 'खेल शिक्षण विधि' के प्रतिपादक पेस्टालॉजी के शिष्य **फ्रेडरिक विलियम ऑगस्ट फ्राबेल** माने जाते हैं। इन्होंने **किंडरगार्टन (वालगाड़ी)** की संकल्पना दी तथा शैक्षणिक खिलौनों का विकास किया जिन्हें 'फ्राबेल उपहार' के नाम से जाना जाता है। किलपैट्रिक जॉन डिवी के उत्तराधिकारी थे तथा इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा के लिए 'परियोजना विधि' (प्रोजेक्ट मेथड) का विकास किया।

226. 'प्रयोजना विधि' के प्रतिपादक हैं–

(a) दुर्खीम (b) प्लेटो
(c) किलपैट्रिक (d) सुकरात

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (c) 'प्रयोजना विधि' के प्रतिपादक किलपैट्रिक माने जाते हैं। प्रयोजना विधि विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित किसी समस्या का हल खोज निकालने के लिए अच्छी तरह से चुना हुआ वह कार्य है जिसे पूर्ण स्वभाविक परिस्थितियों में सामाजिक वातावरण में ही पूर्ण किया जाता है।

227. डॉल्टन शिक्षण विधि का विकास किसने किया?

(a) फ्रोबेल (b) डब्ल्यू.एच.किलपैट्रिक
(c) मिस हेलेन पार्कहर्स्ट (d) डॉल्टन

DSSSB PRT
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (c) डाल्टन शिक्षण विधि या 'डाल्टन प्रयोगशाला योजना' का प्रयोग मिस हेलेन पार्कहर्स्ट ने वर्ष 1920 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के मैसाच्यूसेट्स राज्य के डाल्टन स्थित विद्यालयों में प्रारम्भ की। इस विधि के दो मुख्य सिद्धान्त हैं–

1. विभिन्न विषयों के लिए निश्चित घंटों और समय–सारिणी के कठोर बंधनों को नष्ट करके बच्चे को स्वतंत्रतापूर्वक काम करने की सुविधा देना।
2. बालक की रुचि जिस विषय में अधिक हो उसे उस विषय को जितनी देर तक वह चाहे अध्ययन करने देना।

228. उदाहरण, निरीक्षण, विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण निम्नलिखित में से किस विधि के सोपान हैं?

(a) निगमन विधि (b) आगमन विधि
(c) अन्तर्दर्शन विधि (d) बहिर्दर्शन विधि

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) उदाहरण, निरीक्षण, विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण का सोपान आगमन विधि के अन्तर्गत आता है। शिक्षण की आगमन विधि में शिक्षक अनेक विशिष्ट उदाहरणों के आधार पर सामान्यीकरण करने का प्रयास करता है।

229. शैशवावस्था के लिए उत्तम शिक्षण विधि है

(a) मॉण्टेसरी विधि (b) खेल विधि
(c) किण्डरगार्टन विधि (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) 0-6 वर्ष तक की अवस्था को शैशवावस्था कहते हैं। इस अवस्था में शिशु को माण्टेसरी शिक्षाविधि, किण्डरगार्टन विधि तथा खेल विधि से शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार की शिक्षण पद्धति वर्तमान समय में प्ले वे (Play way school) स्कूलों में अपनायी जाती है।

230. शिक्षा की किण्डरगार्टन पद्धति का प्रतिपादन किया

(a) टी.पी. नन ने (b) स्पेन्सर ने
(c) फ्रोबेल ने (d) माण्टेसरी ने

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) मनोवैज्ञानिक फ्रोबेल ने 1840 में जर्मनी में पहला किण्डरगार्टन खोला तथा किण्डरगार्टन पद्धति का प्रतिपादन भी किया था। किण्डरगार्टन का अर्थ (बच्चों का बगीचा) होता है, अर्थात् फ्रोबेल के अनुसार बच्चे उद्यान में स्थित नर्सरी की तरह होते हैं जैसे नर्सरी की अच्छी तरह देख-भाल से छोटे पौधे स्वस्थ वृक्ष बनते हैं उसी तरह बच्चों की देख-भाल से उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का विकास होता है।

231. बहुशिक्षण-शास्त्रीय तकनीकें, वर्गीकृत अधिगम सामग्री बहु-आकलन तकनीकें तथा परिवर्तनीय जटिलता एवं सामग्री का स्वरूप निम्नलिखित में से किससे सम्बद्ध हैं?

(a) सार्वभौमिक अधिगम प्रारूप (b) उपचारात्मक शिक्षण
(c) विभेदित अनुदेशन (d) पारस्परिक शिक्षण

DSSSB PRT

Ans:(c) **एस.एम. मुरिन** ने विभेदित अनुदेशन या अभिक्रमित अनुदेशन को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''अनुदेशन प्रक्रिया शिक्षण और अधिगम की सम्पूर्ण प्रक्रिया को सामान्य से विशिष्ट उद्देश्यों की ओर अग्रेषित करके चलाने और मूल्यांकन करने का एक तार्किक ढंग प्रस्तुत करती है।'' बहुशिक्षण–शास्त्रीय तकनीकें, वर्गीकृत अधिगम सामग्री, बहु आकलन तकनीकें तथा परिवर्तनीय जटिलता एवं सामग्री का स्वरूप विभेदित अनुदेशन के ही आवश्यक अंग हैं।

232. निम्नलिखित में से अंत: विषयी अनुदेशन का सर्वोत्कृष्ट लाभ यह है कि

(a) पाठ-योजना बनाने और गतिविधियों में शिक्षकों को अधिक लचीलेपन की अनुमति होती है।

(b) विद्यार्थियों को सीखे गए ज्ञान का बहु-संदर्भो में अनुप्रयोग करने और सामान्यीकृत करने के अवसर दिए जाते हैं

(c) प्रकरणों की विविधता, जिन्हें परंपरागत पाठ्यचर्या में संबोधित किए जाने की आवश्यकता है, से शिक्षकों के अभिभूत होने की कम संभावना होती है

(d) विद्यार्थियों में विभिन्न विषय-क्षेत्रों के विशेष प्रकरणों के प्रति नापसंदगी विकसित होने की कम संभावना होती है

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (b) अंत: विषयी अनुदेशन का सर्वोत्कृष्ट लाभ यह है कि विद्यार्थियों को सीखे गये नये ज्ञान का बहु-संदर्भों में अनुप्रयोग करने और सामान्यीकृत करने के अवसर दिये जाते हैं।

233. बीजों का अंकुरण संकल्पना के शिक्षण की सबसे प्रभावी पद्धति है–

(a) विद्यार्थियों द्वारा पौधे के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना

(b) श्यामपट्ट पर चित्र बनाना और वर्णन करना

(c) बीज की वृद्धि के चित्र दिखाना

(d) विस्तृत व्याख्या करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (a) किसी भी कार्य को यदि प्रयोगात्मक रूप से छात्रों द्वारा करवाकर उसका अध्ययन कराया जायेगा तो वह सबसे प्रभावशाली होगा जैसे छात्रों द्वारा पौधे के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना। यह शिक्षण की परियोजना विधि का सबसे अच्छा उदाहरण है।

234.प्राथमिक कक्षा के बालकों के लिए शिक्षण की उपयुक्त विधि है

(a) प्रयास व भूल विधि (b) अनुकरण विधि

(c) व्याख्यान विधि (d) खेल विधि

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (d) प्राथमिक कक्षा के बालकों के लिए शिक्षण की उपयुक्त विधि खेल विधि है।

235. खोज (डिस्कवरी) अधिगम में, शिक्षक अधिगम के एक____ की भूमिका निभाते हैं।

(a) सलाहकार (b) सुविधा प्रदाता

(c) प्रबंधक (d) प्रेरक

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : खोज अधिगम में, शिक्षक अधिगम के एक सुविधा प्रदाता की भूमिका निभाते हैं। खोज अधिगम पूछ–ताछ आधारित सीखने की एक तकनीक है और इसे शिक्षा का रचनात्मक दृष्टिकोण माना जाता है।

236. निम्नलिखित में से कौन–सी शिक्षण की समस्या को हल करने की विधि का गलत लाभ है?

(a) सभी विशेषज्ञ इस पद्धति का उपयोग समस्या को हल करने के लिए नहीं कर सकते हैं।

(b) इस प्रक्रिया में शिक्षार्थी (लर्नर) सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

(c) यह शिक्षार्थी (लर्नर) को अधिगम की प्रक्रिया में दिलचस्पी दिलाता है।

(d) इस पद्धति का उपयोग करने से अधिगम का मूल्यांकन आसान हो जाता है।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : शिक्षण की समस्या-समाधान विधि में शिक्षण करते समय शिक्षक विद्यार्थियों को समस्या का व्यवस्थित रूप से हल करने का प्रशिक्षण देता है। इस विधि का प्रयोग सभी व्यक्ति नहीं कर सकते हैं क्योंकि यह विधि विशेष दक्षता की माँग करती है। इसी प्रकार यह विधि विद्यार्थी केन्द्रित, रोचक तथा क्रियाशीलता के सिद्धांत पर आधारित होती है। इस विधि द्वारा अधिगम का मूल्यांकन अवश्य किया जा सकता है, किन्तु यह मूल्यांकन में सहायक मात्र होता है। वास्तव में समस्या समाधान शिक्षण की विधि है न कि मूल्यांकन की विधि या उपकरण।

237. निगनात्मक विधि इस प्रकार होती है–

(a) उदाहरण से दृष्टांतों की ओर

(b) कानून और नियमों से अवलोकन की ओर

(c) सामान्यीकरण से विनिर्देशों की ओर

(d) अवलोकन से उदाहरण की ओर

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : निगमनात्मक विधि में सामान्य नियम से विशिष्ट उदाहरण की ओर अग्रसित हुआ जाता है। इस विधि में कानून और नियमों से अवलोकन की ओर जाते हैं। इस विधि में पहले सामान्य नियम प्रस्तुत किया जाता है इसके पश्चात् उदाहरणों द्वारा नियम की सत्यता को प्रमाणित किया जाता है एवं विशिष्ट परिस्थितियों में इसके उपयोग को बताया जाता है।

238. डॉल्टन योजना (डॉल्टन प्लान) में नहीं है:

(a) स्वयं सीखना (b) समय-सारणी

(c) सहयोग (d) स्वतंत्रता

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : डाल्टन योजना की प्रवर्तक अमेरिका की शिक्षा शास्त्रिणी कुमारी हेलेन पार्कहर्स्ट हैं। इस प्रयोगशाला योजना के दो मुख्य सिद्धांत हैं–

1. विभिन्न विषयों के लिए निश्चित घंटों और समय सारिणी के कठोर बंधनों को नष्ट करके बच्चों को स्वतंत्रता पूर्वक काम करने की सुविधा देना।
2. बालक की रुचि जिस विषय में अधिक हो उसको उस विषय को जिनती देर वह चाहे उसे अध्ययन करने देना चाहिए।

239. ऐसी सोच विधि को निरूपित करने के लिए किस पद्धति का उपयोग किया जाता है जो समाधान दे सकती है, परंतु उसमें त्रुटियाँ भी हो सकती हैं?

(a) बुद्धि (b) युक्तिवाक्य (सिल्लोगिज्म)

(c) एल्गोरिथम (d) स्वानुभाविक (स्वत: शोध)

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : स्वानुभाविक {स्वत: शोध (Hueristic)} पद्धति का उपयोग ऐसी सोच विधि को निरूपित करने के लिए किया जाता है, जो समाधान दे सकती है, परन्तु उसमें त्रुटियाँ भी हो सकती हैं। स्वत: शोध विधि में छात्र स्वयं सक्रिय होकर समस्या का समाधान खोजते हैं इसलिए कभी–कभी इसमें त्रुटियाँ भी होती हैं। इन त्रुटियों को दूर करने के लिए छात्र और अध्यापक दोनों प्रयास करते हैं।

240. प्रत्यक्ष विधि को इस रूप में भी जाना जाता है :

(a) प्रत्यक्ष दृष्टिकोण (b) प्रेरणात्मक दृष्टिकोण
(c) प्राकृतिक विधि (d) अप्रत्यक्ष दृष्टिकोण

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : प्रत्यक्ष विधि को प्राकृतिक विधि के रूप में भी जाना जाता है। इसे अक्सर विदेशी भाषाओं को पढ़ाने में उपयोग किया जाता है। यह विधि शिक्षार्थियों की मूल भाषा का उपयोग करने से बचती है और केवल लक्ष्य भाषा का उपयोग करती है।

241. उदाहरणों से सामान्यीकरण की ओर बढ़ना है:

(a) सह–संबंध (b) आगमनात्मक
(c) आकस्मिक (d) निगमनात्मक

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) उदाहरणों से सामान्यीकरण की ओर बढ़ना आगमनात्मक विधि के अंतर्गत आता है। शिक्षण की आगमन विधि में शिक्षक अनेक विशिष्ट उदाहरणों के आधार पर सामान्यीकरण करने का प्रयास करता है और विद्यार्थी शिक्षक के द्वारा प्रस्तुत विशिष्ट उदाहरणों का निरीक्षण करके अपनी सूझबूझ के द्वारा सामान्य नियमों का प्रतिपादन करता है। इस विधि से शिक्षण करते समय शिक्षार्थियों की पाठ में पर्याप्त रुचि बनी रहती है और वे स्वयं ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से तल्लीन रहते हैं।

242. निम्नलिखित में से कौन शिक्षण के प्रदर्शन विधि के बारे में सत्य नहीं हैं?

(a) अवधारणाओं का प्रदर्शन प्रयोगों/क्रियाकलापों पर केंन्द्रित होता है।
(b) इसका उपयोग बहुसांस्कृतिक कक्षा के लिए किया जा सकता है।
(c) शिक्षार्थियों को सम्मिलित होने का एक अवसर मिलता है।
(d) इस विधि द्वारा सभी विषयों को कवर किया जा सकता है।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : शिक्षण के प्रदर्शन विधि का उपयोग बहुसांस्कृतिक कक्षा के लिए किया जा सकता है, इसमें अवधारणाओं का प्रदर्शन प्रयोगों/क्रियाकलापों पर केन्द्रित होता है तथा इस विधि में शिक्षार्थियों को सम्मिलित होने का एक अवसर मिलता है। इस विधि के द्वारा ज्ञानात्मक या निम्न स्तर के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इस विधि द्वारा सभी विषयों को कवर नहीं किया जा सकता है।

243. सामाजार्थिक मुद्दों से जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है को.....सहायता करता है।

(a) स्व-अधिगम मॉडल (b) विभेदित निर्देश
(c) पाठ्यचर्या का विस्तार (d) संज्ञानात्मक वर्गीकरण

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) समाजार्थिक मुद्दों से जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है उनके लिए स्व-अधिगम मॉडल सहायता कर सकती है। इसी आधार पर सरकारें खुला विद्यालय एवं खुला विश्वविद्यालय की स्थापना करती हैं ताकि समावेशी शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके।

244. अधिगमकर्ताओं को व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर उनकी कठिनाइयों के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखते हुए पढ़ाने की विधि को ..... कहा जात है।

(a) विभेदी अनुदेशन (b) चयनित अनुदेशन
(c) सटीक शिक्षण (d) त्रुटिहीन अनुदेशन

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : अधिगमकर्ताओं को व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर उनकी कठिनाइओं के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखते हुए पढ़ाने की विधि को विभेदी अनुदेशन कहा जाता है। विभेदी अनुदेशन विधि का प्रयोग बच्चों की वैयक्तिक विभिन्नता को ध्यान में रखकर किया जाता है ताकि सभी विद्यार्थी अपनी क्षमताओं, योग्यताओं तथा आवश्यकताओं आदि के अनुसार शिक्षण अनुभव प्राप्त कर सकें।

सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम एवं सामाजिक संदर्भ

245.संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद –

(a) अधिगम को एक सामाजिक गतिविधि के रूप में ग्रहण करते हैं
(b) आगमनात्मक तार्किकता के अनुप्रयोग पर आधारित है
(c) पाठ्यसामग्री के सुव्यवस्थित संगठन पर बल देते हैं
(d) कुशलता की प्राप्ति हेतु व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल देते हैं

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (a) संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद अधिगम को एक सामाजिक गतिविधि के रूप में ग्रहण करते हैं। अर्थात् संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद सामाजिक सहयोग व अंत:प्रक्रिया के फलस्वरूप ही सम्भव होता है।

246. संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद

(a) पाठ्य सामग्री के सुव्यवस्थित संगठन पर बल देते है।
(b) कुशलता की प्राप्ति हेतु व्यवहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल देते हैं।
(c) अधिगम को एक सामाजिक गतिविधि के रूप में ग्रहण करते हैं।
(d) आगमनात्मक तार्किकता के अनुप्रयोग पर अधारित है।

DSSSB PRT

Ans : (c) प्रत्येक कक्षा एक समाज होता है और कक्षा में शिक्षक और छात्र के मध्य होने वाले संवाद को सामाजिक अंत:क्रिया कहा जाता है। अत: संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद अधिगम को एक सामाजिक गतिविधि के रूप में ग्रहण करते हैं।

247.एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों के अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों में व्यस्त रखती है, जैसे – समूह-चर्चा, समूह-परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि। यह सीखने के किस आयाम को उजागर करता है?

(a) सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम
(b) मनोरंजन द्वारा अधिगम
(c) भाषा-निर्देशित अधिगम
(d) प्रतियोगिता-आधारित अधिगम

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012

Ans: (a) शिक्षिका द्वारा शिक्षार्थियों से समूह-चर्चा, समूह-परियोजना, भूमिका निर्वाह आदि करवाना सीखने के 'सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम' को उजागर करता है।

248. एक शिक्षक शिक्षार्थियों को सामूहिक क्रियाओं, सामूहिक परिचर्चा, सामूहिक प्रोजेक्ट आदि में सम्मिलित करता है यह सीखने के आयाम को दर्शाता है

Dsssb Assistant Nursery Teacher

(a) मनोरंजन के माध्यम से सीखना
(b) भाषा निर्देशित शिक्षण
(c) प्रतियोगिता–आधारित शिक्षा
(d) एक सामाजिक गतिविधि के रूप में सीखना

Ans. : (d) एक शिक्षक शिक्षार्थियों को सामूहिक क्रियाओं, सामूहिक परिचर्चा, सामूहिक प्रोजेक्ट आदि में सम्मिलित करता है। यह एक सामाजिक गतिविधि के रूप में सीखने के आयाम को दर्शाता है। अर्थात् सामूहिक गतिविधियों में शामिल कर अध्यापक छात्रों के सामाजिक विकास को बढ़ावा दे रहा है।

249.सामाजिक अधिगम आरम्भ होता है

(a) अलगाव से (b) भीड़ से
(c) सम्पर्क से (d) दृश्य श्रव्य सामग्री से

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (c) लिण्डग्रेन के अनुसार- ''सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया सम्पर्क के कारण आगे बढ़ती है।''

शिक्षा में विद्यालय, शिक्षक, परिवार एवं समाज का योगदान

250. एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

(a) कक्षा में अनुशासन बनाए रखना
(b) कक्षा में समयानुवर्ती होना
(c) विद्यार्थियों की कठिनाइयों को दूर करना
(d) एक सुवक्ता होना

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) शिक्षक का कक्षा शिक्षण के समय कई कार्य एवं उत्तरदायित्व होते हैं परन्तु सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह होता है कि वह छात्रों की समस्याओं का समाधान करें तथा उनकी उत्सुकता को शांत करें।

251. अपनी कक्षा में सहयोगात्मक अधिगम का प्रयोग करते समय एक शिक्षक की भूमिका किस प्रकार की होती है?

(a) कक्षा को छोड़ देना तथा बच्चों को स्वयं कार्य करने देना।
(b) सहयोगात्मक होना तथा प्रत्येक समूह की निगरानी करना।
(c) उस समूह का सहयोग करना जिसमें 'होनहार' एवं प्रतिभाशाली बच्चें हैं।
(d) एक मूक दर्शक होना तथा बच्चे जो करना चाहते हैं, उन्हें करने देना।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (b) : अपनी कक्षा में सहयोगात्मक अधिगम का प्रयोग करते समय एक शिक्षक को सहयोगात्मक होना चाहिए तथा प्रत्येक समूह की निगरानी करना चाहिए। सहयोगात्मक अधिगम, एक शिक्षण अधिगम विधि है जिसमें अध्यापक और विद्यार्थी दोनों मिलकर एक महत्त्वपूर्ण समस्या का अन्वेषण करते हैं या कोई अर्थपूर्ण प्रोजेक्ट का निर्माण करते हैं। सहयोगात्मक अधिगम में अध्यापक कार्यों को विभिन्न समूहों में बाँट देते हैं और यह समूह के ऊपर निर्भर करता है कि किस तरह से कार्य को मिलजुलकर पूरा करने की योजना बनाते हैं। इसमें अध्यापक का स्वामित्व नहीं होता बल्कि वह सहयोगी के रूप में कार्य करता है।

252. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षक की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) कक्षा में शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अनुशासन को बनाए रखना है
(b) एक शिक्षक को निर्धारित पाठ्यपुस्तक का पालन करना चाहिए
(c) पाठ्यक्रम का समय पर पूरा करने के साथ-साथ दोहराने के लिए पर्याप्त समय देना महत्वपूर्ण है
(d) आराम के लिए जगह बनाना, जहाँ बच्चे संवाद और पूछताछ के माध्यम से सीखते हैं

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : एक शिक्षक की भूमिका सुविधा प्रदाता के रूप में होती है। वह ऐसे सहज परिस्थिति का निर्माण करता है जहाँ बच्चे नि:संकोच प्रश्न पूछ सकते हैं और संवाद के माध्यम से सीख सकते हैं।

253. निम्नलिखित में से कौन-सा कक्षा में पाठ्यपुस्तकों की भूमिका का सबसे अच्छा वर्णन करता है?

(a) वे कक्षा में उपलब्ध संसाधन और संदर्भ सामग्री में से एक हैं।
(b) वे एक राज्य या राष्ट्र में अधिगम में एकरूपता बनाए रखते हैं।
(c) वे अध्ययन के पाठ्यक्रम के बारे में शिक्षकों और माता-पिता को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
(d) वे संसाधन-रहित संदर्भ में सबसे आवश्यक अधिगम संसाधन बनाते हैं।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (a) : कक्षा शिक्षण में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका कक्षा में उपलब्ध संसाधन और संदर्भ सामग्री के रूप में होती है। पाठ्य पुस्तकें शिक्षकों और छात्रों का मार्गदर्शन करती है तथा एक सुव्यवस्थित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रोत्साहित करती हैं।

254. निम्नलिखित में से कौन-सा बच्चों में अधिगम में सुधार करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है?

(a) नियमित मूल्यांकन परीक्षा आयोजित की जानी चाहिए।
(b) शिक्षक को विभिन्न उदाहरणों और चित्रों का उपयोग करके विषय की व्याख्या करनी चाहिए।
(c) कक्षा में सभी प्रकार की शिक्षण-सामग्री होनी चाहिए।
(d) शिक्षक को वास्तविक जीवन स्थितियों पर बच्चों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने में मदद करनी चाहिए।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : बच्चों के अधिगम में सुधार करने के लिए सबसे उपयुक्त होगा कि शिक्षक वास्तविक जीवन स्थितियों पर बच्चों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने में मदद करें। अधिगम में सुधार मूल्यांकन का ही एक अभिन्न अंग होता है। इसलिए शिक्षक, बच्चे अच्छा निष्पादन कर सकें इसके लिए यह विधि अपना सकता है।

255. एक शिक्षक को विद्यार्थियों को ..... निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए बजाए ..... के।

(a) प्रदर्शन लक्ष्य; अधिगम लक्ष्य
(b) असफलता से बचने के लिए लक्ष्य; अंक लेने के लिए लक्ष्य
(c) अंक लेने के लिए लक्ष्य; असफलता से बचने के लिए लक्ष्य
(d) अधिगम लक्ष्य; प्रदर्शन लक्ष्य

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (d) : एक शिक्षक को विद्यार्थियों को अधिगम लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए बजाए प्रदर्शन लक्ष्य के। अधिगम लक्ष्य निर्धारित करने का अर्थ है– सीखने के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन का लक्ष्य। इसलिए किसी भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य सीखने के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन करना होना चाहिए बजाए व्यवहार प्रदर्शन के।

256. एक शिक्षक को साधन-सम्पन्न होना चाहिए। इसका अर्थ है–

(a) उसके पास पर्याप्त धन-सम्पन्न होना चाहिए।
(b) उसके उच्च अधिकारियों से संपर्क होने चाहिए।
(c) उसे अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने के लिए पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए।
(d) विद्यार्थियों के बीच उसकी अच्छी प्रतिष्ठा होनी चाहिए।

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (c) एक शिक्षक को साधन सम्पन्न होने का तात्पर्य है कि वह अधिगम कार्य करने में निपुण हो तथा सम्बंधित विषय का पूर्ण ज्ञान हो साथ ही अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने के लिए पर्याप्त ज्ञान हो।

257. एक अच्छा विद्यालय वह है-

(a) जो कड़ी प्रतियोगिता की भावना पर जोर देता है
(b) जहाँ प्रत्येक बालक खुशी का अनुभव करे व बिना एक-दूसरे के सहयोग से वैयक्तिक रूप से सीखे
(c) जो बालक के सामाजिक स्तरीकरण को समझे तथा कक्षा के वातावरण को प्रगतिशील व प्रेरणास्पद बनाए
(d) जो आदर्श उत्तरों को याद करने पर जोर दे

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) अच्छा विद्यालय वह है जो बालकों के सामाजीकरण को समझे तथा बालकों में बिना विभेद किए उन्हे समान परिस्थितियाँ उपलब्ध कराए। साथ ही कक्षा-कक्ष का वातावरण इस प्रकार हो कि बालकों को प्रोत्साहन प्राप्त होता हो और उनका अभिप्रेरणा स्तर बना रहे।

258. ..... प्रक्रिया द्वारा शिक्षक निकट रूप से जुड़े होते हैं।

(a) अध्ययन (b) अधिगम
(c) मूल्यांकन (d) निरीक्षण

(DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT))

Ans. (b) **:** अधिगम प्रक्रिया द्वारा शिक्षक नजदीकी रूप से जुड़ा रहता है क्योंकि वह जीवन पर्यन्त कुछ सीखता है और सिखाता है। इसलिए अधिगम की प्रक्रिया एक शिक्षक से जुड़ी रहती है।

259. एक शिक्षक के पास होना चाहिए

(a) अपने विषय का ज्ञान (b) शिक्षण पद्धति का ज्ञान
(c) छात्रों के विषय में ज्ञान (d) उपरोक्त सभी

(DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT))

Ans. (d) **:** एक शिक्षक को सबसे पहले अपने विषय का ज्ञाता होना चाहिए उसके बाद उसे बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना चाहिए तथा शिक्षण पद्धति का भी ज्ञान होना चाहिए।

260. स्कूल की शिक्षा की गुणवत्ता विशेष रूप से निर्भर करती है

(a) बुनियादी ढाँचा सुविधाओं
(b) वित्तीय प्रावधान
(c) अन्तर्राष्ट्रीय समर्थन
(d) शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता

(DSSSB Assistant Nursery Teacher)

Ans. (d) **:** स्कूल की शिक्षा की गुणवत्ता विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

261. एक प्रभावी शिक्षक वह है, जो कर सकता है-

(a) कक्षा पर नियंत्रण
(b) कम समय में अधिक सूचना देना
(c) विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना
(d) दत्तकार्य को ध्यानपूर्वक जाँचना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) एक प्रभावी शिक्षक वह है, जो विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित कर सके।

262. एक शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है-

(a) विद्यार्थियों से उनका गृहकार्य करवाना
(b) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आनन्दप्रद बनाना
(c) कक्षा में अनुशासन बनाए रखना
(d) प्रश्नपत्र तैयार करना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (b) शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती उसके अधिगम प्रक्रिया को आनन्दप्रद बनाना, ताकि उसका शिक्षण कार्य ऊबाऊ न लगे और छात्र कक्षा-कक्ष में शांति पूर्वक शिक्षा ग्रहण करें।

263. एक सजीव कक्षा स्थिति में निम्नलिखित में सबसे अधिक सम्भावित है-

(a) कभी कभार हँसी का शोर
(b) पूर्णरूप से शान्ति
(c) शिक्षक-छात्र वार्ता
(d) विद्यार्थियों के बीच तेज आवाज में वार्तालाप

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (c) कक्षा-कक्ष की स्थिति को जानने का सबसे बेहतर उपाय शिक्षक छात्र वार्तालाप है। इस प्रक्रिया द्वारा छात्रों की उत्सुकता का समाधान आसानी से हो सकेगा तथा कक्षा-कक्ष का वातावरण प्रजातांत्रिक रहेगा।

264.विद्यार्थियों की अकादमिक निष्पादन को सुधारा जा सकता है यदि अभिभावकों को उत्साहित किया जाये

(a) बच्चों के कार्य का निरीक्षण करने के लिए
(b) अधिक ट्यूशन का प्रबंधन करने के लिए
(c) इसके बारे में चिन्तित न होने के लिए
(d) शिक्षकों से बार-बार अंतर्क्रिया करने के लिए

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) विद्यार्थियों की अकादमिक निष्पादन को सुधारने के लिए अभिभावक शिक्षक अन्तर्क्रिया बहुत ही आवश्यक है इससे अभिभावक अपने बालक के विकास को जान सकता है तथा अध्यापक को प्रतिपुष्टि प्राप्त हो सकती है। इसीलिए आजकल विद्यालयों में Parents meeting बुलायी जाती है।

265.शिक्षण को प्रभावित करने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा घटक शिक्षक से संबंधित नहीं है?

(a) विषय का ज्ञान (b) संप्रेषण कौशल
(c) विद्यार्थियों से जुड़ाव (d) संसाधनों की उपलब्धता

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2013

Ans: (d) वे सभी कारक जो शिक्षण कार्य को प्रभावित करते है वे शिक्षण घटक कहलाते है। इनके अनुपस्थिति में शिक्षण कार्य बाधित होता है। ये सभी घटक शिक्षक में अनिवार्य रूप से होने आवश्यक है। जैसे- सम्बंधित विषय का ज्ञान, सम्प्रेषण कौशल एवं विद्यार्थियों से जुड़ाव ताकि उनकी समस्याओं को समझ सके। संसाधनों की उपलब्धता शिक्षक से सम्बन्धित घटक नहीं है।

266. शिक्षण की आधुनिक संकल्पना के अनुसार, एक अध्यापक को मुख्य भूमिका निभानी चाहिए

(a) दार्शनिक की (b) मित्र की
(c) कार्यसहभागी की (d) अनुदेशक की

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शिक्षण की आधुनिक संकल्पना के अनुसार कक्षा-कक्ष में अध्यापक की भूमिका मित्र की होनी चाहिए ताकि छात्रों के कौशल में विकास हो सके तथा अपनी भावनाओं, विचारों, प्रश्नों आदि को नि:संकोच अपने शिक्षक के समक्ष प्रस्तुत कर सकें।

267. शिक्षक की भूमिका है

(a) ज्ञान का स्थानान्तरण करना
(b) ज्ञान देना
(c) कौशल अर्जित करने में प्रशिक्षित करना
(d) ज्ञान निर्माण का सरलीकरण करना

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) कक्षा-कक्ष में शिक्षक की भूमिका निम्न होती है-

1. ज्ञान का संप्रेषण करना
2. क्रियाआधारित अधिगम का सृजन करना
3. अनुशासन बनाए रखना
4. छात्रों की समस्याओं को हल करना
5. छात्रों की जिज्ञासा को शांत करना
6. ज्ञान निर्माण का सरलीकरण करना

268. एक चिन्तनशील शिक्षक कक्षा-कक्ष में ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता है कि छात्र

(a) भाषण सुन सके
(b) कक्षा-कक्ष के शिक्षक के भाषण के नोट्स ले सके
(c) कक्षा-कक्ष में अनुशासन बनाये रखे
(d) छात्रों और शिक्षक में पारस्परिक अन्त:क्रिया को प्रोत्साहन मिले

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) किसी भी शिक्षक को कक्षा-कक्ष का वातावरण इस प्रकार बनाना चाहिए कि छात्र और शिक्षक की अन्त:क्रिया को प्रोत्साहन मिले।

269. शिक्षकों की भूमिका है

(a) ज्ञान का संप्रेषण करना
(b) छात्रों को अनुशासन में रखना
(c) छात्रकेन्द्रित, क्रिया आधारित अन्त:क्रियात्मक अधिगम का सृजन करना
(d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) कक्षा-कक्ष में शिक्षक की भूमिका निम्न होती है-

1. ज्ञान का संप्रेषण करना
2. क्रिया आधारित अधिगम का सृजन करना
3. अनुशासन बनाए रखना
4. छात्रों की समस्याओं को हल करना
5. छात्रों की जिज्ञासा को शांत करना

270. एक उत्तम कक्षा-कक्ष शिक्षक

(a) छात्रों की प्राकृतिक जिज्ञासा का पोषण करता है
(b) छात्रों को पारस्परिक संवाद के लिए प्रोत्साहित करता है
(c) छात्रों को वास्तविक वैश्विक परिस्थितियों में सम्मिलित करता है
(d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) एक उत्तम कक्षा-कक्ष शिक्षक छात्रों की जिज्ञासा शान्त करता है, उन्हें अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए पारस्परिक संवाद के लिए प्रोत्साहित करता है और उनको वास्तविक वैश्विक परिस्थितियों में सम्मिलित करता है ताकि छात्र अपने ज्ञान को व्यवहारिक स्तर पर ला सकें।

271. एक उत्तम शिक्षक वह है जो

(a) छात्र में वांछित व्यवहारगत परिवर्तन करता है
(b) मौखिक रूप से ज्ञान प्रेषित करता है
(c) सूचना का वर्णन करता है
(d) पाठ्यचर्या को संप्रेषित करता है

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) शिक्षण का मुख्य उद्देश्य होता है छात्रों का व्यवहार परिवर्तन करना। इसलिए एक उत्तम शिक्षक वह है जो एक ऐसी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का संचालन करे जिससे छात्रों में वांछित व्यवहारगत परिवर्तन हो सके।

272. यह कहा जाता है कि शिक्षक को संसाधन सम्पन्न होना चाहिए, इसका अर्थ है

(a) उसके पास पर्याप्त मात्रा में पैसा और सम्पत्ति होनी चाहिए ताकि वह ट्यूशन न पढ़ाए
(b) उसका उच्च अधिकारियों से सम्पर्क होना चाहिए ताकि कोई उसे हानि न पहुँचाए
(c) उसे पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए ताकि छात्रों की समस्याओं को हल कर सके
(d) उसकी छात्रों के बीच अच्छी पैठ होनी चाहिए ताकि अधिकारीगण उसके विरुद्ध कोई कार्रवाई न करे

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) शिक्षक को संसाधन सम्पन्न होने से तात्पर्य शिक्षक के पास पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए ताकि छात्रों की समस्याओं को हल कर सके।

273.सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका होनी चाहिए–

(a) सुगमकर्ता की (b) अनुदेशनकर्ता की
(c) प्रशिक्षक की (d) नियंत्रणकर्ता की

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (a) सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक को सुगमकर्ता की भूमिका में होना चाहिए तथा शिक्षक द्वारा छात्र को एक आधार देना चाहिए जिस पर छात्र अपना अधिगम कार्य कर सके तथा समस्या का समाधान शिक्षक की सहायता से कर सकें।

274.एक शिक्षक बच्चे द्वारा की गई छोटी-छोटी गलतियों पर क्रोध प्रकट करता है, यह इंगित करता है–

(a) वह बच्चे का शुभचिंतक है
(b) उसमें ज्ञान की कमी है
(c) वह कुंठित है
(d) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित नहीं है

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (d) बच्चों की छोटी सी गलती पर अध्यापक द्वारा क्रोध प्रकट करना अध्यापक की संवेदनात्मक स्थिति को दर्शाता है। इस प्रकार के व्यवहार अपनाने वाला शिक्षक संवेदनात्मक रूप से असंतुलित होता है तथा समायोजन की क्षमता का आभाव पाया जाता है।

275.वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका है

(a) ज्ञान देने वाले की (b) सुगमकर्ता की
(c) मित्र की (d) प्रबन्धक की

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (b) वर्तमान समय में शिक्षक की भूमिका सुगमकर्ता की है। अर्थात् शिक्षक छात्रों के सामने ऐसी शिक्षण अधिगम परिस्थितियाँ उपस्थित करता है जिसमें वे स्वयं सहभागिता के द्वारा अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं।

276. एक आदर्श अध्यापक में पाया जाने वाला गुण है

(a) लोकतन्त्रात्मक दृष्टिकोण
(b) विषय-वस्तु पर अधिकार
(c) बाल मनोविज्ञान का ज्ञान
(d) उपरोक्त सभी

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013
DSSSB PRT

Ans: (d) आदर्श अध्यापक के महत्वपूर्ण गुण-
1. लोकतांत्रिक दृष्टिकोण 2. विषय का पूर्ण ज्ञान
3. बालमनोविज्ञान का ज्ञान 4. आदर्शवादी आचरण
5. अनुशासन प्रियता 6. शिक्षण कौशल युक्त

277 शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य सम्बन्ध होना चाहिए

(a) स्नेह का (b) विश्वास का
(c) सम्मान का (d) ये सभी

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (d) अधिगम प्रक्रिया को निरंतर एवं सुचारु रूप से चलाने के लिए शिक्षक छात्र का सम्बंध बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। इस सम्बन्ध में सम्मान, विश्वास, स्नेह जैसे सकारात्मक मूल्यों का होना अति आवश्यक है।

278. एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है

(a) प्रतियोगिता की भावना को (b) सहयोग की भावना को
(c) प्रतिद्वन्द्विता की भावना को (d) तटस्थता की भावना को

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (b) एक अच्छा अध्यापक सदैव विद्यार्थियों के मध्य सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है ताकि विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का विकास हो सके। इसके लिए खेल शिक्षण विधि का प्रयोग किया जाता है।

279. एक अध्यापक की दृष्टि में कौन-सा कथन सर्वोत्तम है?

(a) प्रत्येक बच्चा सीख सकता है
(b) कुछ बच्चे सीख सकते है
(c) अधिकतर बच्चे सीख सकते हैं
(d) बहुत कम बच्चे सीख सकते है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (a) ''प्रत्येक बच्चा सीख सकता है।'' यह कथन एक अध्यापक की दृष्टि से सर्वोत्तम है। क्योंकि अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा अलग-अलग शिक्षण कौशलों का प्रयोग कर भिन्न-भिन्न बुद्धिलब्धता के स्तर वाले विद्यार्थियों में ज्ञान का प्रसार किया जा सकता है।

280. किसी कक्षा में शिक्षक की भूमिका है

(a) समय–सारणी का कठोरता से पालन करना और पाठ्यक्रम से बँधे रहना

(b) सीखने की विश्वसनीय स्थितियाँ जुटाना और शिक्षार्थियों को स्वतंत्र चिन्तन की सुविधा देना

(c) अपने ज्ञान से शिक्षार्थियों को परिपूर्ण करना और उन्हें परीक्षा के लिए तैयार करना

(d) सीधे तरीके से ज्ञान पहुँचाना और शिक्षार्थियों को सही उत्तरों के लिए तैयार करना

DSSSB PRT

Ans : (b) किसी कक्षा में एक शिक्षक की भूमिका सुविधा प्रदाता या सुलभकर्ता के रूप में होती है। यह बच्चों को सीखने के लिए विश्वसनीय स्थितियाँ जुटाता है और उनको स्वतंत्र चिंतन करने की सुविधा प्रदान करता है।

281. निम्नलिखित में से कौन–सा तत्त्व कक्षा में अधिगम हेतु सहायक हो सकता है?

(a) बच्चों को अधिगम हेतु प्रेरित करने के लिए परीक्षणों की संख्या को बढ़ा देना

(b) अध्यापकों द्वारा बच्चों की स्वायत्तता को बढ़ावा व सहायता देना

(c) समानता बनाए रखने के लिए किसी एक अनुदेशन पद्धति पर टिके रहना

(d) कालांश की अवधि को 40 मिनट से 50 मिनट तक बढ़ा देना

DSSSB PRT

Ans : (b) किसी भी कक्षा में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तभी प्रभावी हो सकता है जब कक्षा का वातावरण अनुशासित हो तथा छात्र स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रेरित हो। अत: अध्यापक को बच्चों की स्वायत्तता को बढ़ावा व सहायता देना चाहिए।

282. स्कूलों में अधिकतम शिक्षकों में अपने छात्रों के लिए किसका सर्वाधिक अभाव पाया जाता है?

(a) स्नेह (b) क्रोध

(c) दोषारोपण (d) घृणा

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) अधिकतर अध्यापकों में अपने छात्रों के प्रति घृणा नहीं होती है। अध्यापक अपने छात्रों पर क्रोध या दोषारोपण कर सकते हैं किन्तु घृणा, या ईर्ष्या नहीं करते।

283. आपको लगता है कि आपकी कक्षा में कुछ बच्चे बहुत तेज गति से सीख रहे हैं और कुछ बहुत धीमी गति से। इस परिस्थिति में आप क्या करेंगे?

(a) तेज गति से सीखने वाले बच्चों को आगे बढ़ने देंगे।

(b) धीमी गति से सीखने वाले बच्चों पर कोई ध्यान नहीं देंगे।

(c) इस बात पर कोई ध्यान नहीं देंगे।

(d) तेज गति से सीखने वाले बच्चों की सहायता धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को सिखाने हेतु लेंगे।

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक शिक्षण की सारी गतिविधियाँ छात्रों के अनुरूप और उनके सहयोग से संचालित करता है। अत: वह तेज गति से सीखने वाले बच्चों की सहायता धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को सिखाने के लिए ले सकता है।

284. आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका है–

(a) सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्ता की

(b) बच्चों को गणित, विज्ञान और भाषा सिखाने की

(c) बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा देने की

(d) बच्चों को सभी कुछ पढ़ाने की

DSSSB PRT
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (a) आधुनिक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्ता की होनी चाहिए। शिक्षक सीखने हेतु अधिगम–परिस्थिति उपस्थिति करता है जिसमें छात्र सक्रिय सहभागिता के द्वारा अधिगम अनुभव प्राप्त करता है।

285. प्राथमिक स्तर पर मूल्यों की शिक्षा देने की सर्वोत्तम विधि है

(a) मूल्यों के महत्व को बताना

(b) मूल्यों के पालन न करने पर दण्डित करना

(c) अध्यापक के व्यवहार में मूल्य स्थापन

(d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) हमारा समाज सांस्कृतिक रूप से बहु आयामी है इसलिए शिक्षा के द्वारा उन सार्वजनिक और शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हम लोगों को एकता की ओर ले जा सके। प्राथमिक स्तर पर मूल्य आधारित शिक्षा देने की कई विधियां होती हैं। सर्वोत्तम विधि हैं-

1. महान व्यक्तियों के गुणों के बारे में बताना
2. मूल्यों के महत्व को बताना
3. अध्यापक द्वारा स्वयं मूल्य आधारित व्यवहार एवं आचरण अपनाना
4. कक्षा में अनुशासन बनाए रखना।

286. एक अभिभावक आपसे विद्यालय में मिलने के लिए कभी नहीं आता है। आप

(a) बच्चे की उपेक्षा करेंगे

(b) अभिभावक को लिखेंगे

(c) आप स्वयं उनसे मिलने जाएँगे

(d) बच्चे को दण्ड देना शुरू करेंगे

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) यदि छात्र का अभिभावक विद्यालय में किसी कारण-वश शिक्षक से मिलने नहीं आता है तो शिक्षक को चाहिए कि वह स्वयं अभिभावक से मिलने उसके घर जाए तथा छात्र से सम्बंधित समस्याओं पर अभिभावक से वार्तालाप करे।

287. एक शिक्षक को साधन सम्पन्न होना चाहिए। इसका अर्थ है

(a) उनके पास पर्याप्त धन-सम्पदा होनी चाहिए ताकि उसे शिक्षण देने की जरूरत न पड़े

(b) उनका अधिकारियों के उच्च स्तर से सम्पर्क होना चाहिए

(c) उनको अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए

(d) विद्यार्थियों के बीच उनकी प्रसिद्धि होनी चाहिए

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (c) एक शिक्षक को साधन सम्पन्न होना चाहिए अर्थात् शिक्षक को उन सभी शैक्षिक गुणों एवं कौशलों से परिपूर्ण होना चाहिए जिससे शिक्षण कार्य सुगम रुप से चलता हो साथ ही छात्रों की समस्याओं के समाधान के लिए पूर्ण ज्ञान होना शिक्षक के लिए आवश्यक होता है।

288. आपको शिक्षक दिवस पर कुछ विद्यार्थियों ने एक बधाई पत्र भेजा है। आप क्या करेंगे? आप

(a) कुछ नहीं करेंगे

(b) उन्हें धन्यवाद देंगे

(c) उन्हें पैसों की बर्बादी नहीं करने के लिए बोलेंगे

(d) उन्हें बदले में शुभकामनाएँ देंगे

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (b) शिक्षक दिवस के अवसर पर छात्रों द्वारा शिक्षक को बधाई देने पर शिक्षक को औपचारिक रूप से उन्हें धन्यवाद देना चाहिए।

289. आपकी कक्षा में एक छात्र देर से आता है। आप

(a) उसके अभिभावकों को सूचित करेंगे

(b) उसे दण्ड देंगे

(c) कारण जानने की चेष्टा करेंगे

(d) उस पर कोई ध्यान नहीं देंगे

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (c) सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा छात्र के कक्षा में देर से आने का कारण जानने का प्रयास करना चाहिए तत्पश्चात उत्पन्न समस्या के समाधान के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

290. यदि कोई विद्यार्थी आपका सम्मान नहीं करता है तो आप

(a) उसकी उपेक्षा करेंगे

(b) परीक्षा में कम अंक देंगे

(c) उसके अभिभावकों से बात करेंगे

(d) उसे डाँटेंगे

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (c) विद्यार्थी द्वारा शिक्षक को सम्मान न देने पर विद्यार्थी के व्यवहारिक समस्याओं का पता लगाएंगे। उसके अभिभावकों से बात करके समस्या का समाधान करेंगे।

291. यदि एक विद्यार्थी कक्षा में भाग लेने से संकोच करता है तो आप

(a) उससे प्रश्न नहीं पूछेंगे

(b) जिन प्रश्नों के उत्तर वह दे सकता है, केवल उन्हीं प्रश्नों को पूछेंगे

(c) उन प्रश्नों को नहीं पूछेंगे जिसके उत्तर उसके सामर्थ्य से बाहर है जिसके कारण वह कक्षा में उपहास का पात्र बन सकता है।

(d) उससे केवल तब प्रश्न पूछेंगे जब वह उसके उत्तर देने के लिए उत्साहित हो

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षक द्वारा संकोची छात्र से तभी प्रश्न करने चाहिए जब वह उत्तर देने के लिए उत्साहित हो ताकि धीरे-धीरे उसमें आत्मशक्ति का संचार हो और वह कक्षा में सहभागी बन सके।

292. शिक्षक का बर्ताव होना चाहिए -

(a) प्रशासनात्मक (b) शिक्षाप्रद

(c) आदर्शवादी (d) निदेशात्मक

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (c) शिक्षक का बर्ताव आदर्शवादी होना चाहिए विशेषकर निचली कक्षाओं में। क्योंकि प्राथमिक विद्यालय के बच्चे ज्यादातर अनुभव अनुकरण द्वारा प्राप्त करते हैं। यदि कक्षा अध्यापक व्यवहार आदर्शवादी और अनुकरणात्मक होगा तो बच्चे सकारात्मक व्यवहार सीखेंगे।

293. निम्नलिखित में से कौन-सा उदाहरण प्रभावशाली विद्यालय की प्रथा का है?

(a) निरंतर तुलनात्मक मूल्यांकन

(b) शारीरिक दंड

(c) व्यक्तिसापेक्ष अधिगम

(d) प्रतियोगितात्मक कक्षा

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (c) व्यक्ति सापेक्ष अधिगम प्रभावशाली विद्यालय का उदाहरण है। व्यक्ति सापेक्ष अधिगम का अर्थ है प्रत्येक छात्र के अधिगम को सुनिश्चित करना। एक प्रभावशाली विद्यालय छात्रों के वैयक्तिक विभिन्नता के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन करता है।

294. निम्नलिखित में से कौन-सा एक माध्यमिक विद्यालय की कक्षा-कक्ष में शिक्षक की भूमिका का सर्वोत्तम/उचित वर्णन करता है?

(a) व्याख्यान देने के लिए पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन का प्रयोग करना

(b) बहु-परिप्रेक्ष्य को निरुत्साहित करना तथा एक-आयामी परिप्रेक्ष्य पर केन्द्रीभूत होना

(c) चर्चाओं के अवसर उपलब्ध कराना

(d) प्रथम स्थान के लिए शिक्षार्थियों को आपस में प्रतिस्पर्धा के लिए बढ़ावा देना

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (c) माध्यमिक विद्यालय के कक्षा-कक्ष में शिक्षक की एक सशक्त भूमिका होती है। शिक्षक को अपनी सर्वोत्तम उपस्थिति दर्ज कराने के लिए कक्षा-कक्ष में चर्चा के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने चाहिए ताकि छात्र-शिक्षक के बीच समायोजन में व्यवधान न उत्पन्न हो।

295. किसी कक्षा में शिक्षक की भूमिका है :

(a) समय-सारणी का कठोरता से पालन करना और पाठयक्रम से बँधे रहना।

(b) सीखने की विश्वसनीय स्थितियाँ जुटाना और शिक्षार्थियों को स्वतंत्र चिंतन की सुविधा देना।

(c) अपने ज्ञान से शिक्षार्थियों को परिपूर्ण करना और उन्हें परीक्षा के लिए तैयार करना।

(d) सीधे तरीके से ज्ञान पहुँचाना और शिक्षार्थियों को सही उत्तरों के लिए तैयार करना।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans : (b) कक्षा में शिक्षक की मुख्य भूमिका -
- कक्षा में शांत वातावरण पैदा करना
- सीखने की स्थितियों को उत्पन्न करना
- छात्र को स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए प्रेरित करना
- छात्र को व्यवहारिक ज्ञान कराना
- छात्र का मानसिक एवं शारीरिक विकास करना
- छात्रों का व्यवहार परिवर्तन करना आदि।

296. प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए एक शिक्षक को

(a) विभेद नहीं करना चाहिए और प्रत्येक बच्चे के लिए समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिए

(b) सूमह-गतिविधियों के दौरान समाजमिति के आधार पर उन्हें अपने समूह बनाने की अनुमति देनी चाहिए

(c) सकारात्मक अंत वाली कहानियाँ सुनानी चाहिए।

(d) सुबह प्रत्येक बच्चे का अभिवादन करना चाहिए

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans (a) प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए एक शिक्षक को भेद भाव (विभेद) नहीं करना चाहिए और प्रत्येक छात्र के लिए समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिए। ताकि सभी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने सुविधानुसार प्रयास कर सकें।

297. एक शिक्षक अपने लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में कहीं भी बैठने की अनुमति देता है। कुछ शिक्षार्थी एक-साथ बैठते हैं और चर्चा करते हैं या सामूहिक पठन करते हैं। कुछ चुपचाप बैठकर अपने-आप पढ़ते हैं। एक अभिभावक को यह पसंद नहीं आता। इस स्थिति से निबटने का निम्न में से कौन सा तरीका सबसे बेहतर हो सकता है?

(a) अभिभावकों को प्रधानाचार्य से अनुरोध करना चाहिए कि वे उनके बच्चे का अनुभाग बदल दें

(b) अभिभावकों को शिक्षक पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए और शिक्षक के साथ समस्या पर चर्चा करनी चाहिए

(c) अभिभावकों को उस विद्यालय से अपने बच्चे को निकाल लेना चाहिए

(d) अभिभावकों को प्रधानाचार्य से शिक्षक की शिकायत करनी चाहिए।

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (b) यदि कोई शिक्षक अपने लोकतांत्रिक स्वभाव के कारण विद्यार्थियों को पूरी कक्षा में कहीं भी बैठने की अनुमति देता है तो कुछ शिक्षार्थी एक साथ बैठते हैं और चर्चा करते हैं या सामूहिक पठन करते हैं। कुछ चुपचाप बैठकर अपने आप पढ़ते हैं। यदि यह स्थिति किसी अभिभावक को पसन्द नहीं आता है तो सर्वप्रथम अभिभावक को शिक्षक पर विश्वास व्यक्त करना चाहिए और शिक्षक के साथ समस्या पर चर्चा करनी चाहिए।

298. शिक्षा के क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली-----की ओर संकेत करती है।

(a) विद्यालय का संपूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं

(b) मूल्यांकन –प्रक्रिया

(c) कक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली पाठ्य सामग्री

(d) शिक्षण-पद्धति एवं पढ़ाई जाने वाली विषय-वस्तु

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (a) शिक्षा क्षेत्र में 'पाठ्यचर्या' शब्दावली विद्यालय के संपूर्ण कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन अनुभव प्राप्त करते हैं, कि ओर संकेत करती है। अर्थात् पाठ्यचर्या के अंतर्गत पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ भी शामिल होती हैं।

299. भारत में बहुत से बच्चे, विशेषकर लड़कियाँ, विद्यालय में आने से पहले और विद्यालय से वापस जाने के बाद घर का काम करते हैं। आपके विचार से इस संदर्भ में एक शिक्षिका को गृहकार्य के बारे में क्या करना चाहिए?

(a) शिक्षिका को ऐसा गृहकार्य देना चाहिए जो विद्यालय में कराए गए अधिगम को बच्चों के घरेलू जीवन से जोड़ता है।

(b) शिक्षिका को सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे अपना गृहकार्य पूरा करने के लिए सुबह जल्दी उठें और देर तक रुकें।

(c) बच्चों के माता-पिता से उनके गृहकार्य को पूरा कराने के लिए ट्यूशन लगवाने के लिए कहिए।

(d) उसे उन बच्चों को कठोर दंड देना चाहिए जो अपना गृहकार्य पूरा नहीं करते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (a) भारत में बहुत से बच्चे (जिनमे लड़कियों की संख्या ज्यादा है) जिन्हें विद्यालय जाने के पूर्व तथा विद्यालय से आने के बाद घर के कामों में हाँथ बटाना पड़ता है। जिससे विद्यालय में दिया गया गृहकार्य पूर्ण नहीं हो पाता। अत: इन बच्चों के लिए शिक्षक द्वारा इस प्रकार का गृहकार्य दिया जाना चाहिए जो विद्यालय में कराये गये अधिगम को बच्चों के घरेलू जीवन से जोड़ता हो।

300. बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को ---- भूमिका निभानी चाहिए।

(a) अग्रोन्मुखी (b) सहानुभूतिपूर्ण

(c) तटस्थ (d) नकारात्मक

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (a) बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को अग्रोन्मुखी भूमिका निभानी चाहिए तथा उन्हें और अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करते रहना चाहिए।

301. एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में निम्नलिखित योग्यताओं में से किसे सर्वाधिक बढ़ावा देगा?

(a) प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति (b) परीक्षण करने की प्रवृत्ति
(c) स्मृति (d) अनुशासित स्वभाव

DSSSB PRT
UK TET (I-V) 2014
C TET (I-V) 2012

Ans : (a) एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति को सर्वाधिक बढ़ावा देगा क्योंकि शिक्षकों में प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति होने पर बेहतर शिक्षण कार्य करने के प्रति प्रतिबद्धता होगी।

302. प्राथमिक स्तर पर शिक्षक में निम्न में से किसे सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता माननी चाहिए?

(a) पढ़ाने की उत्सुकता
(b) धैर्य और दृढ़ता
(c) शिक्षण–पद्धतियों और विषयों के ज्ञान में दक्षता
(d) अति मानक भाषा में पढ़ाने में दक्षता

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2011

Ans : (b) प्राथमिक स्तर पर एक शिक्षक में धैर्य और दृढ़ता के गुण विशेष तौर पर होनी चाहिए क्योंकि बाल्यावस्था में बालकों की रुचि खेलने में ज्यादा होती है पढ़ने में कम। अत: वे देर से सीखते हैं इसलिए एक अच्छा अध्यापक वही हो सकता है जिसमें धैर्य एवं दृढ़ता हो।

303. एक भावी शिक्षक के रूप में, आपको ..... की आवश्यकता होगी और विभिन्न छात्रों की कक्षा के साथ जुड़ना होगा।

(a) डील (b) जुड़ने
(c) समझ (d) सहयोग

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : एक भावी शिक्षक को, विविध छात्रों वाली कक्षा के साथ जुड़ने के लिए समझ की आवश्यकता होती है ताकि वह विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नता को समझकर उनकी आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुसार शिक्षण अधिगम परिस्थिति का निर्माण कर सके।

संप्रेषण

304. निम्न में से कौन–सा सम्प्रेषण प्रक्रिया का तत्व नहीं है?

(a) माध्यम (b) अंत:क्रिया
(c) प्रतिपुष्टि (d) पुनर्बलन

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : सम्प्रेषण एक प्रक्रिया है, जो दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य घटित होती है तथा इसके माध्यम से अभिवृत्तियों, इच्छाओं, आदर्शों एवं सूचनाओं इत्यादि का आदान–प्रदान होता है। सम्प्रेषण के घटक निम्न हैं–

1. प्रेषक 2. संदेश 3. ग्राही
4. अन्त:क्रिया 5. माध्यम 6. प्रतिपुष्टि

305. एक अच्छे शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण गुण है-

(a) विषयवस्तु का पूर्ण ज्ञान
(b) अच्छा सम्प्रेषण कौशल
(c) विद्यार्थियों के हित का ध्यान रखना
(d) प्रभावी नेतृत्व का गुण

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) अच्छे शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण गुण होता है अच्छा सम्प्रेषण कौशल। संप्रेषण कौशल के बिना शिक्षक ज्ञान का स्थानान्तरण विद्यार्थी तक सही तरीके से नहीं कर पाता है। जिससे विद्यार्थियों को उस विषय वस्तु से सम्बन्धित पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता। शिक्षक के अन्य गुण भी होते है लेकिन वे गौण है - जो निम्न है -

1. विषय वस्तु का पूर्ण ज्ञान
2. प्रभावी नेतृत्व का गुण
3. समायोजन
4. विद्यार्थियों में प्रोत्साहन को बनाए रखना
5. स्पष्ट लेखन क्रिया कलाप
6. शिक्षण सामग्री का सही प्रयोग करना
7. उच्च चरित्र
8. उच्च व्यक्तित्व आदि।

306. विद्यार्थियों के साथ सम्प्रेषण का अर्थ होता है

(a) उनसे प्रश्न करने को कहना
(b) विचारों का आदान-प्रदान
(c) उन्हें निर्देश देना
(d) उन्हें अपने विचारों से अवगत कराना

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) विद्यार्थियों के साथ सम्प्रेषण का अर्थ होता है, विचारों का आदान–प्रदान करना। कक्षा में शिक्षक और शिक्षार्थी आपस में सामाजिक अंत:क्रिया का निर्माण करते हैं जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को गति प्रदान करता है।

307.एक प्रभावी शिक्षक के लिए आवश्यक है कि

(a) वह उच्च जाति से सम्बन्धित हो
(b) उसका उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर हो
(c) वह सम्प्रेषण में निपुण हो
(d) वह कठोर हो

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (c) एक प्रभावी शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह सम्प्रेषण में निपुण हो। ताकि उसके द्वारा सम्प्रेषित सूचनाओं को अधिगमकर्ता सहजतापूर्वक समझकर अपनी प्रतिक्रिया दे सकें।

308. कक्षा–कक्ष में शिक्षण व शिक्षार्थियों के मध्य संप्रेषण होना चाहिए–

(a) पाठ्य–पुस्तक केंद्रित (b) विद्यार्थी केंद्रित
(c) शिक्षक केंद्रित (d) उद्देश्य केंद्रित

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) कक्षा–कक्ष में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का मूल उद्देश्य होता है विद्यार्थियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना। अत: शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के तीनों घटक (शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम) इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु क्रियाशील रहते हैं। इसलिए शिक्षक व विद्यार्थियों के मध्य सम्प्रेषण उद्देश्य केन्द्रित होना चाहिए।

EXAM POINT

- किस विधि के अन्तर्गत किसी वस्तु या तथ्य के घटको को विभाजित किया जाता है **–विश्लेषण विधि**
- गणित शिक्षण में अज्ञात से ज्ञात की ओर शिक्षण सिद्धान्त का पालन होता है **–निगमन विधि**
- निगमन विधि है **–विश्लेषण विधि**
- गणित शिक्षा में आगमन विधि का शिक्षण सूत्र है **–विशिष्ट से सामान्य**
- गणित शिक्षण में निगमन विधि का शिक्षण सूत्र है **–सामान्य से विशिष्ट**
- वृत्त की परिधि का सूत्र ज्ञात करने में प्रयुक्त होने वाली विधि है **–आगमन विधि**

शिक्षण विधियाँ और उनके जनक

विधियाँ	जनक
आगमन विधि	अरस्तू
निगमन विधि	अरस्तू
प्रश्नोत्तर/सुकराती	सुकरात
प्रोजेक्ट विधि	किलपैट्रिक
खेल विधि	कॉल्डवैल कुक
डाल्टन विधि	कु. हेलेन पार्क हर्स्ट
हरबर्ट विधि	हरबर्ट
किण्डर गार्टन विधि	फ्रोबेल
माण्टेसरी विधि	मारिया मान्टेसरी
हयूरिस्टिक विधि	आर्मस्ट्रॉंग

- हयूरिस्टिक शब्द का अर्थ है **–खोज करना**
- ग्रीक भाषा में हयूरिस्टिक शब्द का अर्थ है **–उत्पन्न**
- बेसिक शिक्षा प्रणाली के जनक **–महात्मा गाँधी**
- ''शिक्षण चार चरणों वाली एक प्रक्रिया है। योजना निर्देश, मापन तथा मूल्यांकन।'' शिक्षण के बारे में यह परिभाषा किस विद्वान द्वारा दी गयी है– **हफ तथा डंकन के द्वारा**
- कथन सत्य नहीं है– **शिक्षा एक ऐसी प्रकिया है, जो शिक्षण संस्थाओं तक सीमित होती है**
- शैक्षिक प्रक्रिया के तीन मुख्य बिन्दु बताए गए हैं, उनसे सम्बन्धित नहीं है– **पाठ्यक्रम को रटाना**
- किस व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक ने शिक्षण का पुनर्बलन सिद्धान्त दिया है– **बी. एफ. स्किनर**
- ..... विधि सीखने के सामाजिक सन्दर्भ के सम्बन्ध में विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया को लाभ पहुँचाती है– **समूह परिचर्चा, स्वयं अध्ययन तथा एक-से-एक अधिगम**
- सूक्ष्म शिक्षण चक्र में सम्मिलित नहीं है– **सामाजिक अन्त:क्रिया**
- प्रजातान्त्रिक शिक्षण व्यूह रचना में सम्मिलित नहीं है– **अभिक्रमित अनुदेशन**
- शिक्षण-नियन्त्रित अनुदेशन विधियों में सम्मिलत है– **पाठ-दर्शन विधि, अनुवर्ग-शिक्षण विधि, व्याख्यान विधि**
- डाल्टन शिक्षण विधि की विशेषताओं के सन्दर्भ में सत्य नहीं है– **अध्यापक वाद-विवाद के माध्यम से बालकों के समक्ष समस्या उत्पन्न करता है**
- मैजिक लैनटर्न किस प्रकार के शिक्षण सहायक सामग्री से सम्बन्धित है– **दृश्य सहायक सामग्री**
- आप कक्षा का ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं– **उद्दीपन परिवर्तन द्वारा**
- यदि छात्रों को स्वयं कार्य करने की स्वायत्तता व नियन्त्रण दिया जाए तो– **शिक्षण और अधिगम प्रभावी हो सकता है**
- शिक्षण को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है– **अधिगम का सरलीकरण**
- आधुनिक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका है– **सीखने हेतु एक अच्छे सुलभकर्त्ता की**
- डाल्टन शिक्षण विधि का विकास किया– **मिस हेलेन पार्कहर्स्ट ने**
- बच्चा सीखता है– **कई प्रकार से**
- सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी द्वारा की गयी त्रुटियों के सम्बन्ध में आपकी दृष्टि में सर्वोत्तम कथन है– **त्रुटियाँ अधिगम प्रक्रिया का भाग है**
- शिक्षा का अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है– **बच्चे का सर्वांगीण विकास**
- विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों में परिवर्तन के लिए, अध्यापक को नहीं करना चाहिए– **दबाव से किसी बात या विचार के लिए राजी करना**
- जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव के, को कहा जाता है– **सामाजिक अधिगम**
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक हैं– **परिपक्वता (Maturation) एवं आयु**
- श्यामपट्ट पर लिखना, प्रश्नों को हल करना एवं प्रश्न पूछना सम्बन्धित है– **शिक्षण कुशलता से**
- अल्पवयस्क बच्चों के अधिगम प्रक्रिया में अभिभावकों की भूमिका होनी चाहिए– **अग्रसक्रिय**
- परिवार एक साधन है– **अनौपचारिक शिक्षा का**
- शिक्षण का सत्तावादी स्तर है– **शिक्षक केन्द्रित**

- शिक्षण अधिगम का स्तर नहीं है– **त्रिभेदीकरण स्तर**
- अधिगम से सम्बन्धित किसी विद्यार्थी की समस्याओं का सबसे अच्छा उपचार है– **निदानात्मक शिक्षण**
- आप किसी कक्षा में पाठ पढ़ाते हैं और एक विद्यार्थी विषय से असम्बद्ध एक प्रश्न पूछता है, तब आप– **कक्षा के बाद प्रश्न का उत्तर देंगे**
- श्यामपट्ट पर लिखते समय सबसे महत्वपूर्ण है– **लेखन में स्पष्टता**
- व्यावहारिक जीवन के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना उद्देश्य होना चाहिए– **शिक्षा का**
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रारम्भ करने से पहले एक कुशल अध्यापक को करना चाहिए– **अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी चाहिए**
- स्वतंत्र चर में आता है– **शिक्षक**
- स्मिथ ने शिक्षण की त्रिधुवी प्रक्रिया में कार्यवाहक माना है– **शिक्षक को**
- शिक्षण के आधार पर चर हैं– **3**
- सीखने की प्रक्रिया का प्रथम सोपान है– **जिज्ञासा**
- ''प्रयास व त्रुटि'' में सबसे महत्वपूर्ण है– **लक्ष्य**
- शिक्षक को गृहकार्य की जाँच करनी चाहिए– **नियमित**
- आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता है– **सीखने की क्षमता पर**
- एक प्रभावी शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह– **सम्प्रेषण में निपुण हो**
- शिक्षण से अधिगम पर बल देने वाला परिवर्तन हो सकता है– **बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धति अपनाकर**
- विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का यह दृढ़ विश्वास है कि– **शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण होते हैं**
- एक शिक्षिका अपने आप से कभी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती, वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम आधारित है– **सक्रिय भागीदारिता के सिद्धान्त पर**
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है क्योंकि– **बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं**
- प्राय: शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ संकेत करती हैं– **सीखने की अनुपस्थिति की ओर**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की सदैव इस रूप में सहायता करती है कि वे एक विषय-क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय-क्षेत्रों के ज्ञान को साथ जोड़ सकें। इससे बढ़ावा मिलता है– **ज्ञान के सह-सम्बन्ध एवं अन्तरण को**
- व्यवहार का 'करना' पक्ष आता है– **सीखने के गतिक क्षेत्र में**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को अनेक तरह की सामूहिक गतिविधियों में व्यस्त रखती है, जैसे-समूह चर्चा, समूह परियोजनाएँ, भूमिका निर्वाह आदि यह सीखने के किस आयाम को उजागर करता है– **सामाजिक गतिविधि के रूप में अधिगम**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्रियों और शारीरिक गतिविधियों का प्रयोग करती है, क्योंकि– **इनमें अधिकतम इन्द्रियों का उपयोग सीखने को संवर्द्धित करता है**
- शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त ये सहायता करती है– **समाजीकरण में भी**
- शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि वे प्राय: संकेत करती हैं **–आवश्यक उपचारात्मक युक्तियों की ओर**
- वे शिक्षार्थी जो संवृद्ध ज्ञान और शैक्षणिक दक्षता की हार्दिक इच्छा प्रदर्शित करते हैं, उनके पास होता है– **निष्पादन-उपागम अभिविन्यास**
- विद्यार्थियों को सीखे गये नए ज्ञान को बहु संदर्भों में अनुप्रयोग करने और सामान्यीकृत करने के अवसर दिए जाते हैं– **अन्त:विषयी अनुदेशन में**
- नर्सरी कक्षा से शुरूआत करने के लिए सबसे अच्छी विषयवस्तु है– **मेरा परिवार**
- प्राथमिक कक्षा में सकारात्मक वातावरण निर्मित करने के लिए एक शिक्षक को– **विभेद नहीं करना चाहिए और प्रत्येक बच्चे के लिए समान लक्ष्य सुनिश्चित करने चाहिए**
- एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में सर्वाधिक बढ़ावा देगा– **प्रतिस्पर्द्धात्मक अभिवृत्ति का**
- सीखने के सिद्धान्तों के संदर्भ में 'स्कैफोल्डिंग' संकेत करता है– **सहयोगात्मक अधिगम की ओर**
- सीखने के लिए आकलन, आकलन और अनुदेशन के बीच सम्बन्धों के दृढ़ीकरण द्वारा– **सीखने को प्रभावित करता है**
- पाठ योजना में शामिल नहीं है– **योजना की दृढ़ता**
- 'अधिगमकर्ता का स्वनियमन' का अर्थ है– **स्व अनुशासन और नियंत्रण**
- एक विद्यार्थी कहता है ''उसका दादा आया है'' एक शिक्षक होने के नाते आपकी प्रतिक्रिया होनी चाहिए– **'दादा आया है' की जगह पर दादा जी आए हैं, कहना चाहिए**

- शिक्षार्थी फैशन शो को देखकर मॉडल्स का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार के अनुकरण को कहा जा सकता है– **सामाजिक अधिगम**
- यदि शिक्षार्थी पाठ के दौरान लगातार गलतियाँ करते हैं, तो शिक्षक को– **अनुदेशन कार्य समय-सारणी अथवा बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहिए**
- प्रतिक्रिया का विलोप होना अधिक कठिन है– **आंशिक पुनर्बलन के बाद**
- निपुणता अभिविन्यास को प्रोत्साहित किया जा सकता है– **शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत प्रयासों पर ध्यान केन्द्रित करके**
- शिक्षिका को अपने संज्ञानात्मक शैली के साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक शैली की पहचान करनी चाहिए, यह सर्वाधिक उचित है– **अधिगम को अधिकतम करने के लिए**
- शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना– **अन्तपरक अनुदेशन है**
- शिक्षण प्रक्रिया में भली प्रकार ध्यान रखना चाहिए– **विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता**
- अधिगम क्षमता प्रभावित नहीं होती– **राष्ट्रीयता से**
- किस अधिगम मनोवैज्ञानिक ने बाल-अधिगम विकास में पुरस्कार को महत्व नहीं दिया है– **गुथरी**
- भूलने का सिद्धान्त है– **प्रतीपकारी अवरोध**
- स्मरण करने की विधि है– **विचार-साहचर्य विधि**
- सीखने की प्रगति के सूचक हैं– **सीखने के वक्र**
- अधिगम का श्रेणीक्रम से सम्बन्धित हैं– **गैग्ने**
- व्यवहार में होने वाले स्थायी परिवर्तन, जो अभ्यास के कारण होते हैं, को कहा जाता है– **सीखना**
- प्रधानाध्यापक या वरिष्ठ शिक्षक के लिए विद्यालय में बेहतर नेतृत्व शैली है– **प्रजातांत्रिक नेतृत्व**
- निचली कक्षाओं में पढ़ाते समय एक शिक्षक को प्राथमिकता देनी चाहिए– **कहानी कथन को**
- एक कक्षा में एक शिक्षक पढ़ाने के लिए बाल-केन्द्रित उपागम का प्रयोग कर रहा है। यह तरीका उपयुक्त नहीं है– **प्रदर्शन के लिए**
- जब एक क्षेत्र का अधिगम दूसरे क्षेत्र के अधिगम में सहायता करता है, तो उसे कहते हैं– **अधिगम का धनात्मक अन्तरण**
- वह विशेषता जो कि सहयोगात्मक स्थिति की सीमा में नहीं है– **शिक्षक केन्द्रित**
- एक शिक्षण विधि में दो या अधिक शिक्षक सहयोगपूर्वक विषयों की योजना बनाते हैं, पूरा करते हैं तथा सदैव विद्यार्थियों पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन आवर्ती रूप से करते हैं, यह विधि है– **टोली शिक्षण**
- लोकतन्त्रात्मक दृष्टिकोण, विषय-वस्तु पर अधिकार एवं बाल मनोविज्ञान का ज्ञान, ये सभी गुण पाये जाते हैं– **एक कुशल अध्यापक में**
- मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग से सम्बन्धित है– **कोमल शिल्प उपागम**
- संस्कृति का संरक्षण, संस्कृति का परिष्करण एवं संस्कृति के नए प्रतिरूपों का निर्माण, यह कार्य होता है– **विद्यालय का**
- शिक्षा की प्रक्रिया के अंग होते हैं– **शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम**
- खेल शिक्षण विधि के प्रतिपादक हैं– **फ्रोबेल**
- छात्रों को 'ठीक', 'शाबास', बहुत अच्छा कहना है– **सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन**
- शिक्षण को प्रभावशाली बनाना, छात्रों में सृजनात्मकता उत्पन्न करना एवं छात्रों को क्रियाशील बनाना उद्देश्य है– **श्रव्य-दृश्य सामग्री का**
- बहुशिक्षण शास्त्रीय तकनीकें, वर्गीकृत, अधिगम सामग्री, बहुआकलन तकनीकें तथा परिवर्तनीय जटिलता एवं सामग्री का स्वरूप सम्बद्ध है– **विभेदित अनुदेशन से**
- एक शिक्षिका पाठ को पूर्ववत् पाठ से जोड़ते हुए बच्चों को सारांश लिखना सिखा रही है, वह क्या कर रही है– **वह बच्चों की पाठ समझने की स्वशैली विकसित करने में सहायता कर रही है**
- जो अध्यापक/अध्यापिका अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों में सुधार करना चाहता/चाहती हैं उसके लिए समुचित मार्ग है– **उसे उन त्रुटियों का संशोधन करना चाहिए जो सामान्य अर्थ व अवबोधनात्मकता में हस्तक्षेप करती है**
- एक शिक्षक को कक्षा में कार्य करना चाहिए– **प्रजातांत्रिक भूमिका में**
- एक सजीव कक्षा स्थिति में सबसे अधिक सम्भावित है– **शिक्षक छात्र वार्ता**
- आपके अनुसार शिक्षण है– **एक कला, एक कौशल**
- अच्छा नागरिक बनाना, ऐसे व्यक्तियों का निर्माण जो समाज के लिए उपयोगी हों एवं व्यावहारिकता का निर्माण करना, ये सभी उद्देश्य हैं– **शिक्षा के**
- फ्रोबेल ने प्रमुख बल दिया– **गेंद के खेल पर**
- संसाधनों, रुचि व विशेषता का इष्टतम उपयोग करने हेतु शिक्षकों के समूहों द्वारा शिक्षण है– **''समूह शिक्षण''**
- एक शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण चुनौती है– **शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को आनन्दप्रद बनाना**

- एक प्रभावी शिक्षक वह है जो कर सकता है– **विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करना**
- अधिगम का क्षेत्र नहीं है– **आध्यात्मिक**
- शिक्षक को व्याख्यान की गति, विद्यार्थी के ज्ञान को बाधित कर सकती है, यदि वह अत्यधिक तेज या अत्यधिक धीमी है। इससे बचने के लिए शिक्षक को करना चाहिए– **नयी सूचना को प्रस्तुत करने के लिए तेजगति के व्याख्यान का प्रयोग करना**
- सीखने का वह सिद्धान्त जो केवल ''अवलोकित व्यवहार'' पर निर्भर है, यह जुड़ा है– **सीखने के व्यवहारात्मक सिद्धान्त से**
- एक विद्यार्थी गुणा के सवालों को हल करना सीखता है। वह अपने 'जोड़' के पूर्व ज्ञान का प्रयोग करता है। इस प्रकार के अधिगम अन्तरण को कहा जाता है– **ऊर्ध्व अन्तरण**
- एक शिक्षक को विद्यार्थियों की तत्परता स्तर को बढ़ाना है ऐसा करने के लिए सबसे अच्छा तरीका है– **विशेष प्रकरण से सम्बन्धित सृजनात्मकता क्रिया-कलाप को कक्षा में संगठित करवाकर**
- सीखने की प्रक्रिया में सीखने का स्थानान्तरण हो सकता है– **सकारात्मक, नकारात्मक एवं शून्य**
- अन्तर्दृष्टि द्वार सीखने की व्याख्या करता है– **गेस्टाल्टवाद**
- कौशल सीखने की पहली अवस्था है– **अनुकरण**
- 'प्रयास और भूल' सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं– **थार्नडाइक**
- ''बालक एक ऐसी पुस्तक है जिसका शिक्षक को आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिए।'' उपर्युक्त कथन दिया गया है– **रूसो द्वारा**
- ''स्मृति सीखी हुई वस्तु का सीधा उपयोग है।'' उक्त कथन है– **वुडवर्थ का**
- जिस वक्र रेखा में प्रारम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है और बाद में यह क्रमश: मन्द होती जाती है। उसे कहते हैं– **उन्नतोदर वक्र (Convex curve)**
- कौन-सी दशा/दशाएँ ध्यान का आकर्षित करने की आन्तरिक दशा नहीं है– **उद्दीपन की स्थिति**
- समानता का नियम, वैषम्य का नियम एवं समीपता का नियम है– **साहचर्य के नियम**
- गेट्स के अनुसार ''अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन'' है– **सीखना**
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिये संगीत कहानी कहने नाटक, कला, शिल्प, खेल आदि जैसी गतिविधियों का संचालन– **प्रत्येक विषय के साथ सम्मिलित होना चाहिये**
- यदि विद्यार्थी पाठ में रुचि न लेते प्रतीत हों, तो शिक्षक को चाहिये कि वह– **शिक्षण विधि बदल दे**
- व्यवहार का 'करना' पक्ष आता है– **सीखने के गतिक क्षेत्र में**
- बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ– **उनके अनुभवों एवं भावनाओं को उचित स्थान मिले**
- एक विद्यार्थी अपने अध्यापक से समय की पाबन्दी सीखता है। यह एक उदाहरण है– **प्रेक्षण अधिगम का**
- विद्यार्थियों को अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अधिक महत्वपूर्ण तरीका है– **अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण**
- शिक्षक का बर्ताव होना चाहिए– **आदर्शवादी**
- शिक्षा में विकास को लेकर फ्रोबेल का मुख्य योगदान है– **बालवाड़ी**
- यह कहा जाता है कि शिक्षक को संसाधन सम्पन्न होना चाहिए, इसका अर्थ है– **उसे पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए ताकि छात्रों की समस्याओं को हल कर सके**
- बीजों का अंकुरण संकल्पना के शिक्षक की सबसे प्रभावी पद्धति है– **विद्यार्थियों द्वारा पौधों के बीज बोना और उसके अंकुरण के चरणों का अवलोकन करना**
- शब्द Identical Elements (समान तत्व) गहन सम्बन्ध रखता है– **अधिगम स्थानान्तरण से**
- सीखने के लिए अधिकतम रूप से अभिप्रेरित करता है– **लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत सन्तुष्टि**
- उदाहरण, निरीक्षण, विश्लेषण, वर्गीकरण, नियमीकरण, ये सभी सोपान हैं– **आगमन विधि के**
- विद्यार्थियों में श्रम की स्फूर्ति का विकास करने के लिए– **समय-समय पर विद्यार्थियों को श्रम करने का अवसर देना पड़ेगा**
- ''सीखने का मतलब ज्ञान निर्माण करना है'' यह कथन है– **मनोवैज्ञानिक पियाजे का**
- वाइगॉट्स्की बच्चों के सीखने में किस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं– **सामाजिक**
- एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों का सदैव इस रूप में सहायता करती है कि वे एक विषय-क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय क्षेत्रों के ज्ञान के साथ जोड़ सकें। इससे बढ़ावा मिलता है– **ज्ञान के सह-सम्बन्ध एवं अन्तरण**
- श्यामपट्ट पर लिखना, प्रश्नों को हल करना एवं प्रश्न पूछना ये सभी सम्बन्धित हैं– **शिक्षण कुशलता से**
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि– **बच्चों की विकास दर भिन्न होती है और वे भिन्न तरीकों से सीख सकते हैं**

27.

बालक एक समस्या समाधानकर्ता एवं वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में

समस्या समाधान का अर्थ

1. निम्नलिखित में से कौन–सी विशेषता समस्या–समाधान उपागम का विशेष चिह्न है?

(a) सही उत्तर प्राप्त करने का सामान्यतः एक उपागम होता है
(b) समस्या केवल एक सिद्धांत/प्रकरण पर आधारित होती है
(c) समस्या कथन में संकेत अन्तर्निहित रूप से दिया होता है
(d) समस्या मौलिक होती है

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (c) समस्या–समाधान उपागम की मुख्य विशेषता होती है कि समस्या कथन में संकेत अंतर्निहित रूप से दिया होता है जिसे पहचानकर समस्या समाधान किया जाता है।

प्रभावी समस्या समाधान व्यवहार के सोपान

2. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षक द्वारा कक्षा में बच्चों के लिए समस्या हल करने के तरीके का वर्णन नहीं कर सकता?

(a) किसी विशेष समस्या को हल करने के बारे में अपनी विचार-प्रक्रियाओं पर चर्चा करना
(b) कुछ हल करते समय गलतियों को करने के प्रति ईमानदार रहना
(c) सोच, विचार, परीक्षण और विभिन्न उत्तरों जैसी शब्दावली का प्रयोग करना
(d) अभिसरण उत्तरों वाले प्रश्न पूछना

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : अभिसरण उत्तरों वाले प्रश्न पूछना, शिक्षक द्वारा कक्षा में बच्चों के लिए समस्या हल करने के तरीके का वर्णन नहीं कर सकता है क्योंकि अभिसरण उत्तरों वाले प्रश्न का अर्थ होता है निश्चित उत्तरों वाले प्रश्न। ऐसे प्रश्न बच्चों की स्मृति व पहचान आधारित होते हैं न कि उनके विभिन्न तरीकों से चिन्तन करने पर आधारित होते हैं। बच्चों को चिंतन हेतु प्रेरित करने के लिए अपसारी उत्तरों या मुक्त अंत उत्तरों वाले प्रश्न पूछने चाहिए।

3. मैन्न और जेनिस के अनुसार, निर्णय लेने वाले बच्चे समस्या का विश्लेषण करते हैं, विकल्पों की सूची बनाते हैं और इसके फायदे और नुकसान के प्रत्येक पहलू पर विचार करते हैं। उसका व्यवहार प्रस्तुत करता है–

(a) चौकस (b) सतर्क
(c) निवर्तमान (d) निरंकुश

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : मन्न और जेनिस के अनुसार, निर्णय लेने वाले बच्चे समस्या का विश्लेषण करते हैं, विकल्पों की सूची बनाते हैं और इसके फायदे और नुकसान के प्रत्येक पहलू पर विचार करते हैं। इस प्रकार का व्यवहार सतर्कता को प्रस्तुत करता है। अर्थात् वे किसी समस्या के प्रति पूर्णतः सतर्क होकर अपने सम्मुख उपस्थित समस्यात्मक परिस्थिति पर पूर्णरूपेण विचार करके अथवा उसे अच्छी तरह से समझकर अंतर्दृष्टि या सूझ के द्वारा समस्या का समाधान खोजते हैं।

4. एक शिक्षक बच्चों को प्रभावी रूप से समस्या का समाधान करने में सक्षम बनने के लिए किस तरह से प्रोत्साहित कर सकती है?

(a) पाठ्यपुस्तक से एक ही प्रकार के प्रश्नों के उत्तर के अभ्यास के लिए उन्हें पर्याप्त मात्रा में अवसर प्रदान करके।
(b) पाठ्यपुस्तक में दी गई सूचनाओं के कंठस्थीकरण करने पर बल देकर।
(c) बच्चों को समस्या के बारे में सहजानुभूत अनुमान लगाने एवं बहु-विकल्पों को देखने के लिए प्रोत्साहित करके।
(d) पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्नों के व्यवस्थित तरीके से समाधान लिखकर।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (c) एक शिक्षक बच्चों को प्रभावी रूप से समस्या का समाधान करने में सक्षम बनाना चाहती है तो उसे बच्चों को समस्या के बारे में सहजानुभूत अनुमान लगाने एवं बहु-विकल्पों को देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि बच्चे स्वयं सक्रिय अन्वेषक एवं समस्या-समाधानकर्ता होते हैं तथा वे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। छात्र ज्ञान के निर्माण में सक्रिय सहभागिता द्वारा घनिष्ठ रूप से संबद्ध होते हैं, वे अपने भौतिक एवं प्राकृतिक विश्व के संबंध में जानने का प्रयास करते हैं। इसलिए शिक्षक को छात्रों के समक्ष समस्या प्रस्तुत करनी चाहिए और उन्हें उसका स्वयं समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

5. एक प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका बच्चों को एक प्रभावशाली समस्या-समाधानकर्ता बनने के लिए किस प्रकार से प्रोत्साहित कर सकती है?

(a) 'गलत उत्तरों' को अस्वीकार करके एवं दंडित करके।
(b) बच्चों को सहजानुभूत अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करके तथा उसी पर आधारित विचार मंथन करके।
(c) प्रत्येक छोटे कार्य के लिए भौतिक पुरस्कार देकर।
(d) केवल प्रक्रियात्मक ज्ञान पर बल/महत्त्व देकर।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) यदि एक प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका बच्चों को एक प्रभावशाली समस्या-समाधानकर्ता बनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहती है तो उसे बच्चों को सहजानुभूत अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उसी पर आधारित विचार मंथन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि प्रगतिशील शिक्षा में बच्चों को सक्रिय समस्या-समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक माना जाता है जो अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं इसलिए बच्चों के सामने ऐसी समस्यात्मक वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिसमें उन्हें सक्रिय रूप से समाधान खोजने के अवसर प्राप्त हों।

6. किस प्रकार से एक अध्यापिका बच्चों को बेहतर समस्या समाधानकर्ता बनने में सहायता कर सकती है?

(a) बच्चों को विविध प्रकार की समस्याओं का समाधान करने के मौके देना तथा उनका हल करते समय सहयोग देना
(b) समस्याओं का समाधान करने के लिए वस्तु रूप में पुरस्कार देना
(c) बच्चों की पाठ्य–पुस्तक में समस्याओं का उत्तर देखने के लिए प्रोत्साहित करना
(d) विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत सभी समस्याओं के सही समाधान उपलब्ध कराना

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (a) एक अध्यापिका अपने बच्चों को बेहतर समस्या समाधानकर्ता तभी बना सकती है जबकि वह बच्चों को विविध प्रकार की समस्याओं का समाधान करने का मौका दे तथा उनका हल करते समय सहयोग दे।

7. यदि कोई शिक्षिका चाहे कि उसके विद्यार्थी समस्या-समाधन कौशल प्राप्त कर लें, तो विद्यार्थियों को ऐसे क्रिया-कलापों में लगाना चाहिए जिनमें हो –

(a) पूछना, तर्क करना और निर्णय लेना
(b) बहुविकल्पी प्रश्नों वाले स्तरीकृत कार्यपत्रक
(c) प्रत्यास्मरण, रटना और समझना
(d) ड्रिल और अभ्यास

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) यदि कोई शिक्षिका चाहे कि उसके विद्यार्थी समस्या समाधान कौशल प्राप्त कर ले तो उन्हें ऐसे अधिगम प्रक्रिया में लगाना चाहिए जिसमें वे सक्रिय रूप से भाग लेकर जैसे सवाल पूछना, तर्क करना, निर्णय लेना आदि गतिविधियों के द्वारा सीखे ताकि उनमें समस्या समाधान, समाजिकता, सामान्य ज्ञान, तर्क शक्ति आदि में प्रवीणता आ सके।

8. शिक्षक ___ के अलावा निम्नलिखित सभी को करते हुए समस्या-समाधान को विद्यार्थियों के लिए मजेदार बना सकता है।

(a) सृजनात्मक चिंतन के लिए असीमित अवसर उपलब्ध कराने
(b) जब विद्यार्थी स्वयं से कोई कार्य करने की कोशिश कर रहे हो तो उनसे परिपूर्णता की अपेक्षा करने
(c) मुक्त अंत वाली सामग्री उपलब्ध कराने
(d) मुक्त खेल के लिए समय देने।

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (b) शिक्षक को जब विद्यार्थी स्वयं से कोई कार्य करने की कोशिश कर रहे हों तो उनसे परिपूर्णता की अपेक्षा नही करनी चाहिए बल्कि उनके द्वारा किये गये त्रुटियों को कम करने के लिए उन्हें प्रेरित करनी चाहिए। इसलिए विद्यार्थियों से परिपूर्णता की अपेक्षा न करके समस्या समाधान को रोचक बनाया जा सकता है।

9. अभ्यास के नियम द्वारा छात्रों में विकसित होती है–

(a) परिश्रम की आदत (b) बुद्धि
(c) अंतर्दृष्टि (d) समस्या–समाधान क्षमता

DSSSB PRT

Ans : (d) अभ्यास के नियम द्वारा छात्रों में समस्या–समाधान क्षमता का विकास होता है। बार–बार के अभ्यास से मांसपेशियों तथा मस्तिष्क के स्नायुतंत्र उस क्रिया को करने के अभ्यस्त हो जाते हैं और प्राणी उस क्रिया की पुनरावृत्ति यंत्रवत करने लगता है क्योंकि क्रिया को बार–बार करने से व्यक्ति की बुद्धि दृढ़ होती चली जाती है।

10. निम्नलिखित में से कौन-सा 'आधारभूत सहायता' का एक अच्छा उदाहरण है (जिसका आशय है समस्या समाधान को तब तक सिखाना जब तक शिक्षार्थी स्वयं न कर सके)?

(a) उसे यह बताना कि वह बार-बार प्रयास द्वारा कर सकती है
(b) समस्या का समाधान जल्दी देने के लिए पुरस्कार देना
(c) उसे आधा समाधान (हल) किया उदाहरण उपलब्ध करवाना
(d) उसे कहना कि जब तक वह समस्या का समाधान नहीं कर लेती, तब तक घर नहीं जा सकती

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (a) समस्या समाधान के लिए शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों से बार-बार प्रयास कराना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में स्वयं समस्या के समाधान का कौशल विकसित हो जाए यह प्रक्रिया तब तक चलती रहनी चाहिए जब तक विद्यार्थियों को समस्या समाधान का अधिगम न हो जाय। यह अधिगम या प्रयास आधारभूत सहायता का सबसे अच्छा उदाहरण है।

11. यदि एक शिक्षार्थी सहज ज्ञान युक्त है तो वह कैसा होगा?

(a) वे बड़ी तस्वीर देखते हैं, और सब कुछ जोड़ने की प्रक्रिया को देखते है।
(b) वे मूर्त तथ्यों और विवरणों पर ध्यान देते हैं।
(c) वे चीजें कैसी है, इसकी वास्तविकता पर ध्यान देते हैं।
(d) वह चीजों को विशिष्ट, शब्दशः ढंग से देखने की कोशिश करते हैं।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : सहज ज्ञान युक्त शिक्षार्थी किसी समस्या को व्यवहारिक रूप से देखते हैं और उसका समाधान करने की कोशिश करते हैं। वे समस्या के वास्तविकता, मूर्त तथ्यों और विवरणों को शब्दशः ढंग से देखने की कोशिश नहीं करते हैं। वे किसी समस्या को पूर्ण रूप से देखते हैं और उनके बीच के सम्बन्धों को समझने की कोशिश करते हैं।

12. प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में समस्या निवारण कौशल में सुधार करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?

(a) गणितीय समस्याओं का समाधान करना।
(b) उन समस्याओं का समाधान खोजना, जिनका वे अपने दैनिक जीवन में सामना करते हैं।
(c) उनकी समस्याओं के बारे में कक्षा में सहपाठी और शिक्षक से बात करना।
(d) सोच की प्रक्रिया के स्तर में चरणों को लागू करना और आसपास के साथ व्यस्त करना।

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में समस्या निवारण कौशल में सुधार करने का सबसे अच्छा तरीका सोच की प्रक्रिया के स्तर में चरणों को लागू करना और आस–पास के समुदाय के साथ व्यस्त रखना है। दूसरे शब्दों में, बच्चों को समस्या–समाधान में दक्ष बनाने के लिए उनके विचार प्रक्रिया में क्रमिक रूप से परिवर्तन किया जाए तथा उन्हें अपने आस–पास के वातावरण को देखने और उनके अंतर्सम्बन्धों को समझने के लिए पर्याप्त अवसर दिया जाए।

13. 'स्वानुभाविक शोध प्रणाली' में बच्चे समाधान तक पहुंचने के लिये किसी भी प्रकार के सम्भावित नियम अथव विचार की सहायता ले सकते हैं, इस नियम को क्या कहा जाता है?

(a) अनुभवसिद्ध नियम (रूल ऑफ थम्ब)
(b) विभेदित नियम
(c) अनुकरण नियम
(d) संज्ञानात्मक नियम

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : 'स्वानुभाविक शोध प्रणाली' में बच्चे समाधान तक पहुँचने के लिए किसी भी प्रकार के सम्भावित नियम अथवा विचार की सहायता ले सकते हैं, इस नियम को अनुभव सिद्ध नियम (Rule of Thumb) कहा जाता है। रूल ऑफ थम्ब एक अंग्रेजी कहावत या उक्ति है। इसका प्रयोग उस कार्य के लिए किया जाता है जिस कार्य को करने में व्यवहारिकता और अभ्यास को महत्त्व दिया गया हो बजाय सैद्धान्तिकता के। इसलिए बच्चे जब किसी समस्या के समाधान हेतु अपने अनुभवों और अभ्यासों की सहायता लेते हैं तो कहा जाता है कि वे वे रूल ऑफ थम्ब का प्रयोग कर रहे हैं।

समस्या समाधान की विधियाँ

14. निम्नलिखित में से कौन सा प्रभावशाली समस्या समाधान रणनीति का एक उदाहरण है?

(a) क्रियात्मक अनम्यता- एक वस्तु के केवल परंपरागत कार्य पर ध्यान देना।
(b) प्रतिक्रिया निर्धारण-समस्या प्रस्तुतीकरण के एक ही आयाम में सीमित रहना।
(c) साधन-साध्य विश्लेषण- समस्या को अनेक उपलक्ष्यों में विभाजित करना।
(d) समाधान के मूल्यांकन पर बिल्कुल ध्यान नहीं देना।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) साधन-साध्य विश्लेषण- समस्या को अनेक उपलक्ष्यों में विभाजित करना, प्रभावशाली समस्या समाधान रणनीति का एक मुख्य उदाहरण है। समस्या समाधान व्यक्ति के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जान-बूझकर किया जाने वाला ऐसा व्यवहार है, जिसमें अवरोधों को दूर करने के लिए किन्हीं नवीन विधियों का प्रयोग किया जाता है। समस्या समाधान के लिए अनुगामी कार्य सम्पादन, उपलक्ष्य विश्लेषण तथा साधन साध्य विश्लेषण जैसी व्यूह रचनाओं का प्रयोग किया जाता है। साधन साध्य विश्लेषण में वर्तमान स्थिति व वांछित स्थिति के अंतर को कम करने का प्रयास किया जाता है।

15. निम्नांकित में से कौन–सा समस्या समाधान में बाधक नहीं है?

(a) सूझ (b) भग्नाशा
(c) चिन्ता (d) नकारात्मक मानसिक वृत्ति

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : दुश्चिन्ता (Anxiety), भग्नाशा (Frustration), नकारात्मक मानसिक वृद्धि (Negative mental set), तनाव (Tension), द्वंद (Conflict) आदि समस्या–समाधान में बाधा उत्पन्न करते हैं। जबकि सूझ या अंतर्दृष्टि समस्या–समाधान की एक विधि है जिसमें प्राणी अपने सम्मुख उपस्थित समस्यात्मक परिस्थिति पर पूर्ण रूपेण विचार करके अथवा उसे अच्छी तरह से समझकर अन्तर्दृष्टि या सूझ के द्वारा समस्या का समाधान खोजता है।

16. ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित समस्या समाधान की प्रक्रिया के चरण हैं

(a) परिणामों की आशा करना
(b) समस्या की पहचान
(c) समस्या का छोटे हिस्सों में बाँटना
(d) संभावित युक्तियों को खोजना

DSSSB PRT
C TET 2013 (I-V)

Ans : (a) समस्या समाधान की प्रक्रिया में निम्न चरण होते हैं–
- समस्या की पहचान
- समस्या को हल करने के लिए विभिन्न युक्तियों को खोजना
- समस्या का विश्लेषण
- समस्या समाधान का तार्किक विश्लेषण

17. निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या-समाधान की वैज्ञानिक पद्धति का पहला चरण है?

(a) प्राक्कल्पना का परीक्षण करना
(b) समस्या के प्रति जागरुकता
(c) प्रासंगिक जानकारी को एकत्र करना
(d) प्राक्कल्पना का निर्माण करना

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (b) किसी भी प्रकार की समस्या समाधान का पहला चरण समस्या के बारे में जानना होता है इसे वैज्ञानिक भाषा में समस्या के प्रति जागरुकता के नाम से जाना जाता है।

18. निम्नलिखित में से समस्या–समाधान को क्या बाधित नहीं करता?

(a) अन्तर्दृष्टि (Insight)
(b) मानसिक प्रारूपता (Mental sets)

(c) मोर्चाबंदी (Entrenchment)
(d) निर्धारण (Flxation)

DSSSB PRT

Ans : (a) अंतर्दृष्टि समस्या समाधान को बाधित नहीं करता बल्कि उसमें सहायता करता है। अंतर्दृष्टि विधि समस्या समाधान की एक विधि है जिसका प्रतिपादन गेस्टाल्टवादियों द्वारा किया गया था।

19. समस्या समाधान विधि में दूसरा चरण कौन सा होता है?

(a) परिकल्पनाओं का निरूपण
(b) परिकल्पनाओं का परीक्षण
(c) समस्या का अभिज्ञान और परिभाषा
(d) निष्कर्ष

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : समस्य–समाधान की एक प्रमुख विधि वैज्ञानिक विधि आधुनिक विधि है जिसका प्रयोग करके प्रगतिशील मानव अपनी समस्याओं का समाधान करता है। इस विधि में आगमन तथा निगमन दोनों प्रकार के चिन्तन व तर्क का समावेश रहता है।
वैज्ञानिक विधि के पाँच सोपान होते हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. समस्या से परिचित होना (Identification of the problem)
2. परिकल्पनाओं का निरूपण (Formulation of Hypothesis)
3. तथ्यों का संकलन, व्यवस्थापन तथा विश्लेषण करना (Collection, Organization and Analysis of Data)
4. निष्कर्ष प्राप्त करना (Formulation of Conclusion)
5. परिकल्पना का विशिष्ट परिस्थिति में परीक्षण करना (Verification of the Hypothesis in a specific situation)

20. निम्नलिखित में से कौन-सा वैज्ञानिक प्रणाली का चरण नही हैं?

(a) प्रयोग (b) साक्षात्कार
(c) पूर्वानुमान (d) अवलोकन

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (b) : पूर्वानुमान, अवलोकन, प्रयोग, परीक्षण वैज्ञानिक प्रणाली के चरण हैं जबकि साक्षात्कार इसमें शामिल नहीं है। वैज्ञानिक प्रणाली वस्तुतः समस्या-समाधान की एक आधुनिक विधि है, जिसका प्रयोग करके प्रगतिशील मानव अपनी समस्याओं का समाधान करता है। इस प्रणाली में आगमन तथा निगमन दोनों प्रकार के चिंतन व तर्क का समावेश रहता है।

बालक एक समस्या–समाधानकर्ता और वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में

21. एक बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है, उचित रूप में इसका अर्थ है कि

(a) वह शरारती है (b) वह अधिक जिज्ञासु है
(c) वह असामान्य है (d) वह प्रतिभाशाली है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (b) अगर कोई बच्चा कक्षा में प्रायः प्रश्न पूछता है तो इसका तात्पर्य है कि वह शिक्षण अधिगम में रुचि ले रहा है तथा वह जिज्ञासु प्रवृत्ति का है। ऐसी स्थिति में शिक्षक द्वारा छात्र की जिज्ञासा तुरन्त शांत करनी चाहिए।

22. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्न बच्चों को गंभीर रूप से सोचने के लिए आमंत्रित करता है?

(a) क्या आप इसका उत्तर जानते हैं?
(b) सही जवाब क्या है?
(c) क्या आप इसी तरह की स्थिति के बारे में सोच सकते हैं?
(d) विभिन्न तरीकों से हम इसे कैसे हल कर सकते हैं?

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : किसी दिये गये समस्या को विभिन्न तरीके से हल करने के लिए कहना, बच्चों को गम्भीर रूप से सोचने के लिए आमंत्रित करता है, क्योंकि समस्या को विभिन्न तरीके से हल करने के लिए अपसारी चिंतन आवश्यक होता है और अपसारी चिंतन में किसी समस्या पर विविध तरीके से विचार किया जाता है।

23. एक समस्या सुधारक बच्चा ..... विचार के आधार पर कथनों की सच्चाई या संभावना का मूल्यांकन करता है।

(a) सृजनात्मक (b) सौंदर्यबोध
(c) अमूर्त (d) तार्किक

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : एक समस्या सुधारक बच्चा तार्किक विचार के आधार पर कथनों की सच्चाई या सम्भावना का मूल्यांकन करता है। अर्थात् वह समस्या पर तार्किक विचार करता है। यह तार्किक विचार आगमनात्मक व निगमनात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। आगमनात्मक विचार के द्वारा कुछ विशिष्ट परिस्थितियों का अवलोकन करके परिकल्पना रूपी प्रस्तावित सिद्धान्त प्रतिपादित किया जाता है तथा निगमनात्मक विचार के द्वारा उसका व्यवहारिक परीक्षण करके उस सिद्धान्त को स्वीकार अथवा अस्वीकार किया जाता है।

24. बच्चों के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन–से सही हैं?

(a) बच्चे जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता हैं।
(b) बच्चे समस्या समाधानकर्ता हैं।
(c) बच्चे वैज्ञानिक शोधकर्ता हैं।
(d) बच्चे पर्यावरण के सक्रिय अंवेषक हैं।

(a) B, C और D (b) A, B, C और D
(c) A, B, और C (d) A, B और D

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (a) सामान्यतः बच्चों की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–
(1) बच्चे समस्या समाधानकर्ता होते हैं।
(2) बच्चे वैज्ञानिक शोधकर्ता होते हैं।
(3) बच्चे पर्यावरण के सक्रिय अन्वेषक होते हैं।
(4) बच्चे जानकारी के सक्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं।
बच्चे जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते हैं क्योंकि वे किसी उद्दीपक या क्रिया के प्रति अनुक्रिया या प्रतिक्रिया करके ज्ञान प्राप्त करते हैं।

25. इरफान खिलौने तोड़ता है तथा उसके अवयवों को देखने के लिए उसे अलग-अलग कर देता है। आप क्या करेंगे?

(a) इरफान को कभी भी खिलौने के साथ खेलने नहीं देंगे
(b) सदैव कड़ी नजर रखेंगे

(c) उसकी जिज्ञासु प्रकृति को बढ़ावा देंगे तथा उसकी ऊर्जा को दिशा प्रदान करेंगे

(d) उसे बताएंगे कि खिलौने नहीं तोड़ने चाहिए

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (c) इरफान की जिज्ञासु प्रकृति को बढ़ावा देंगे तथा उसकी ऊर्जा को सही दिशा प्रदान करेंगे।

26. किसी प्रगतिशील कक्षा की व्यवस्था में शिक्षक एक ऐसे वातावरण को उपलब्ध कराकर अधिगम को सुगम बनाता है, जो–

(a) नियामक है।

(b) समावेशन को हतोत्साहित करता है।

(c) आवृत्ति को बढ़ावा देता है।

(d) खोज को प्रोत्साहन देता है।

DSSSB PRT

Ans : (d) किसी प्रगतिशील कक्षा व्यवस्था में शिक्षक एक ऐसे वातावरण को उपलब्ध कराता है जिसमें विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं और अपने प्रयासो से समस्या का समाधान करते हैं। ऐसी प्रक्रिया में शिक्षक मात्र एक सहायक या सहयोगी रूप में कार्य करता है।

27. मनोचित्रण का सन्दर्भ है

(a) अर्थग्राह्यता को बढ़ाने की एक तकनीक

(b) जोखिम भरे कार्य के लिए कर्म योजना

(c) मन का चित्र खींचना

(d) मन के प्रकार्य का अन्वेषण

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) मन के प्रकार्य का अन्वेषण करना ही मनोचित्रण कहलाता है। यह बालक में सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देता है।

28. 'मन का मानचित्रण' संबंधित है

(a) साहसिक कार्यों की क्रिया-योजना से

(b) मन का चित्र बनाने से

(c) मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से

(d) बोध (समझ) बढ़ाने की तकनीक से

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (c) 'मन का मानचित्रण' का अर्थ 'मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से' है अतः अर्थानुसार किसी कार्य को करने से पहले उसकी एक रूपरेखा मन में बना लेना चाहिए।

29. व्याख्या, अनुमान, और/अथवा नियंत्रण प्राक्कल्पना..... के लक्ष्य हैं।

(a) पारंपरिक तर्कणा (b) आगमनात्मक तर्कणा

(c) निगमनात्मक तर्कणा (d) वैज्ञानिक पद्धति

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014

Ans: (d) वैज्ञानिक विधि वस्तुतः समस्या समाधान की एक आधुनिक विधि है जिसका प्रयोग करके प्रगतिशील मानव अपनी समस्याओं का समाधान करता है। इस विधि के व्याख्या, अनुमान, नियंत्रण, प्राकल्पना, निष्कर्ष आदि प्रमुख लक्ष्य हैं।

30. संरचनात्मक ढांचे में बच्चे को किस रूप में देखा जाता है?

(a) 'कोरी पटिया' या 'खाली स्लेट' जिसके जीवन को अनुभव के द्वारा पूर्ण रूप से आकार दिया जाता है।

(b) एक 'निष्क्रिय प्राणी' जिसे अनुबंधन के द्वारा किसी भी रूप में आकार दिया जा सकता है तथा ढाला जा सकता है।

(c) एक समस्या– समाधान करने वाला तथा 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में।

(d) लघु वयस्क' के रूप में जो सभी पक्षों जैसे आकार, संज्ञान तथा संवेग में वयस्क की तुलना में कम है।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : संरचनात्मक ढाँचे में बच्चे को एक समस्या-समाधान करने वाला तथा वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में देखा जाता है। संरचनात्मक ढाँचे की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से सम्मिलित रहते हैं।
- वातावरण प्रजातांत्रिक होता है।
- गतिविधियाँ अंतर्क्रियात्मक एवं विद्यार्थी केन्द्रित होती हैं।
- विद्यार्थी अपने स्वयं के अनुभवों से नये अर्थ गढ़ते हैं।
- अध्यापक अधिगम प्रक्रिया में सहायता करता है जिससे विद्यार्थी एक उत्तरदायी सदस्य के रूप में कार्य करने के लिए उत्साहित रहते हैं।

31. निम्नलिखित में से किस सिद्धांत का उपयोग छात्रों को विषय के बारे में उत्सुक बनाने के लिए किया जा सकता है?

(a) पहले से पता (b) जानने की इच्छा

(c) जानने की इच्छा न होना (d) पता न होना

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) जब छात्रों को किसी विषय के बारे में जानकारी नहीं होती है तो वे उस विषय के बारे में जिज्ञासा प्रकट करते हैं और सीखने के लिए अभिप्रेरित होते हैं। इसलिए अध्यापक शिक्षक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व छात्रों से प्रस्तावनात्मक प्रश्न के द्वारा उनके पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ता है तथा नवीन ज्ञान के मुख्य–मुख्य बिन्दुओं को छात्रों के सामने प्रस्तुत करता है ताकि छात्रों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न हो सके।

32. एक स्व-निर्देशित अधिगम प्रक्रिया, व्यक्तिगत, सामूहिक और संगठनात्मक अधिगम और विकास की सुविधा हेतु निःसंदेह सबसे शक्तिशाली मॉडल है। इसका मतलब है कि अधिगमकर्ता.....।

(a) अधिगम की जिम्मेदारी लेता है और लक्ष्योन्मुखी बनता है।

(b) दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा करता है।

(c) अच्छा परिणाम प्राप्त करता है।

(d) अधिगम का आनंद ले रहा है।

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : एक स्व–निर्देशित अधिगम प्रक्रिया, व्यक्तिगत, सामूहिक और संगठनात्मक अधिगम और विकास की सुविधा हेतु निःसंदेह सबसे शक्तिशाली मॉडल है। इसका मतलब है कि अधिगमकर्ता अधिगम की जिम्मेदारी लेता है और लक्ष्योन्मुखी बनता है। दूसरे शब्दों में, जब अधिगमकर्ता अधिगम प्रक्रिया को अपने रुचियों, अभिवृत्तियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं आदि के अनुसार संचालित करता है और उसमें सक्रिय रहता है तो वह बेहतर अधिगम अनुभव प्राप्त करता है।

33. जॉन अपनी कक्षा में छात्रों की समस्याओं को जानने के लिए नैदानिक साक्षात्कार का उपयोग करता है। यह उनकी भूमिका को..... रूप में दर्शाता है।

(a) सह-शिक्षार्थी (b) वार्ताकार

(c) कक्षा अन्वेषक (d) प्रशिक्षक

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : जॉन अपनी कक्षा में छात्रों की समस्यओं को जानने के लिए नैदानिक साक्षात्कार का उपयोग करता है। यह उनकी भूमिका को कक्षा अन्वेषक के रूप में दर्शाता है। अर्थात् जॉन कक्षा के छात्रों की कमजोरियों, उनकी कठिनाइयों की नैदानिक साक्षात्कार के माध्यम से पहचान करता है तथा उपचारात्मक शिक्षण के माध्यम से उन कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करता है।

34. बच्चे

(a) चिन्तन में वयस्कों की भाँति ही होते हैं और ज्यों–ज्यों वे बड़े होते है उनके चिन्तन में गुणात्मक वृद्धि होती है

(b) खाली बर्तन के समान होते हैं, जिसमें बड़ो के द्वारा दिया गया ज्ञान भरा जाता है

(c) निष्क्रिय जीव होते हैं जो प्रदत्त सूचना को ज्यों–का–त्यों प्रतिलिपि के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं

(d) जिज्ञासु प्राणी होते हैं जो अपने चारों ओर के जगत को खोजने के लिए अपने ही तर्कों और क्षमताओं का उपयोग करते हैं

DSSSB PRT
C TET 2015 (I-V)

Ans : (d) बच्चे जिज्ञासु प्राणी होते हैं जो अपने चारो ओर के जगत को खोजने के लिए अपने ही तर्कों और क्षमताओं का उपयोग करते हैं। जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं वैसे–वैसे उनका दृष्टिकोण भी व्यापक होता जाता है और अपने आस–पास के घटनाओं से हटकर अमूर्त संकल्पनाओं का निर्माण करने के लिए प्रयास करने लगते हैं।

35. इरफ़ान खिलौनों को तोड़ता है और उसके पुर्जों को देखने के लिए उन्हें अलग-अलग कर देता है। आप क्या करेंगे?

(a) उसके जिज्ञासु स्वभाव को प्रोत्साहित करेंगे और उसकी ऊर्जा को सही दिशा में संचारित करेंगे

(b) उसे समझाएंगे कि खिलौनों को कभी तोड़ना नहीं चाहिए

(c) इरफ़ान को खिलौनों से कभी भी नहीं खेलने देंगे

(d) उस पर हमेशा नजर रखेंगे

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (a) बच्चों द्वारा खिलौनों को तोड़ना तथा उनके पुर्जों को देखना यह दर्शाता है कि वह बालक इस तरह का कार्य उत्सुकता पूर्वक करता है। अतः इस प्रकार के बालक के जिज्ञासु स्वभाव को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उसकी ऊर्जा को सही दिशा में संचारित किया जा सके तथा बालक का मानसिक विकास सही दिशा में हो सके।

36. बच्चे की जिज्ञासा शान्त करनी चाहिए

(a) जब शिक्षक फुर्सत में हो

(b) जब विद्यार्थी फुर्सत में हो

(c) कुछ समय के पश्चात्

(d) तत्काल,जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गई है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (d) बच्चों की जिज्ञासा का निराकरण तत्काल करना चाहिए जब विद्यार्थी द्वारा इसे प्रकट किया गया हो।

EXAM POINTS

- ''समस्या समाधान वह प्रतिमान है, जिसमें तार्किक चिन्तन निहित होता है।'' यह कथन किस विद्वान का है– **स्टैनले ग्रे का**
- कथन सत्य नहीं है– **समस्या समाधान का प्रयोग केवल राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में किया जाता है**
- बच्चों को समस्या-समाधानकर्ता बनाने हेतु किए जाने वाले आवश्यक उपायों में सही है–**बालक में आत्म पहचान का गुण विकसित करके, बालक को स्वावलम्बी बनाने के लिए प्रोत्साहित करके, बालक में भाषा का विकास करके**
- एक अन्वेषक के रूप में बालक अपनी समस्याओं की खोज किस रूप में करता है– **निरीक्षण, सामान्यीकरण, प्रमाणीकरण**
- बालक में अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण के लाभ के सन्दर्भ में सत्य नहीं है– **ऐसे बालक कक्षा में प्रथम स्थान पर आते हैं**
- बच्चों के वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में विकास के लिए किन गुणों के विकास की आवश्यकता नहीं है– **बच्चों को सम्भावित समाधानों के निर्माण हेतु प्रेरित करके**
- एक बच्चा माचिस के खाली डिब्बों से कई प्रकार की वस्तुएँ बनाकर खेलता है। उस बच्चे के सन्दर्भ में आपकी राय क्या है– **उसमें वैज्ञानिक अन्वेषक के गुणों का विकास हो रहा है**
- बालक में वैज्ञानिक अन्वेषक के गुणों का विकास क्यों किया जाना चाहिए– **उसमें 'वैज्ञानिक स्वभाव' विकसित करने के लिए**
- क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research) का उद्देश्य है– **विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य प्रणाली में सुधार लाना**
- मुक्त अन्त वाली सामग्री उपलब्ध कराने, मुक्त खेल के लिए समय देने एवं सृजनात्मक चिंतन के लिए असीमित अवसर उपलब्ध कराने, इन सभी को करते हुए शिक्षक विद्यार्थियों के लिए मजेदार बना सकता है– **समस्या-समाधान को**
- समस्या समाधान प्रायः उन विद्यालयों में सफल है, जहाँ– **परिवर्तनशील/लचीली पाठ्यचर्या है**
- समस्या समाधान और आलोचनात्मक चिन्तन पर अधिक बल देती है– **प्रकृतिवादी शिक्षा**
- यदि पूर्व प्राथमिक स्तर को बच्चों पर खोज करने की अनुमति दे दी जाए, तो वे सन्तुष्ट हो जाते हैं। जब उन्हें हतोत्साहित किया जाता है, वे ऐसा करते हैं– **अपनी उपेक्षा को कम करने में उनकी अभिप्रेरणा के कारण**
- (समस्या कथन में संकेत अन्तर्निहित रूप से दिया होता है, यह विशेष चिह्न है– **समस्या-समाधान उपागम का**
- मिश्रित विधि एवं विचार-साहचर्य विधि है– **स्मरण करने की विधि**
- समस्या-समाधान को बाधित नहीं करता– **अन्तर्दृष्टि (Insight)**
- कक्षा में प्रभावी अनुशासन बनाए रखने के लिए शिक्षक को चाहिए कि वह– **विद्यार्थियों को कुछ समस्या हल करने के लिए दे**
- जब शिक्षार्थियों को समूह में किसी समस्या पर चर्चा का अवसर दिया जाता है, तब उनके सीखने का वक्र– **बेहतर होता है**

28.

बच्चों में अधिगम की वैकल्पिक अवधारणाएँ एवं उनकी त्रुटियों को समझना, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक–अवधान एवं रुचि

पियाजे का रचनावादी दृष्टिकोण

1. संज्ञानात्मक रचनावाद के अनुसार, अधिगम निम्न का एक परिणाम है:

(a) व्यवहार और सहयोगात्मक प्रतिक्रियाएँ
(b) संरचनाओं का संयोजन और आवास
(c) बाहरी और आंतरिक सुदृढ़ीकरण
(d) कार्रवाई का पुरस्कार और दंड

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : संज्ञानात्मक रचनावाद के अनुसार, अधिगम संरचनाओं का संयोजन (Assimilation) और आवास (Accommodation) का एक परिणाम है। संज्ञानात्मक रचनावाद के मनोवैज्ञानिकों में पियाजे प्रमुख हैं। इनका मानना है कि अधिगम के लिए स्कीमा में नयी जानकारी को जोड़ा जाता है। यह नयी जानकारी जोड़ने की प्रक्रिया दो स्तरों पर होती है। पहली प्रक्रिया में नयी जानकीर को पुरानी स्कीमा या पहले से विद्यमान मानसिक संरचना में यथावत् आत्मसात/संयोजन (Assimilation) कर लिया जाता है। दूसरी प्रक्रिया में नयी जानकारी के अनुसार पुराने मानसिक संरचना में परिवर्तन कर उसे आवासित/समाविष्टीकरण (Accommodation) किया जाता है।

2. जीन पियाजे के अनुसार अधिगम के लिए निम्नलिखित में से क्या आवश्यक है?

(a) शिक्षार्थी के द्वारा पर्यावरण की सक्रिय खोजबीन
(b) वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन
(c) ईश्वरीय न्याय पर विश्वास
(d) शिक्षकों और माता-पिता द्वारा पुनर्बलन

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (a) जीन पियाजे के अनुसार अधिगम के लिए विद्यार्थी के द्वारा पर्यावरण की सक्रिय खोजबीन आवश्यक है।

3. नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है

(a) ज्ञान स्थानान्तरण के द्वारा
(b) रटने के द्वारा
(c) अनुभव द्वारा नवीन अर्थ ढूँढने के द्वारा
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper -I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) नवीन ज्ञान की प्राप्ति अनुभव द्वारा नवीन अर्थ ढूढ़ने के द्वारा हो सकती है।

4. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पियाजे के सिद्धांत के अनुसार कहा नहीं जा सकता?

(a) विकास गुणात्मक चरणों में होता है।
(b) बच्चे अपनी दुनिया के बारे में ज्ञान का निर्माण और उपयोग करते हैं।
(c) निरंतर अभ्यास से अधिगम होता है।
(d) बच्चे अपने पर्यावरण पर क्रिया करते हैं।

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (c) : पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त दिया था। इस सिद्धान्त के अनुसार यह कहा जा सकता है कि
(i) विकास गुणात्मक चरणों में होता हे।
(ii) विकास क्रमिक होता है।
(iii) बच्चे अपनी दुनिया के बारे में ज्ञान का निर्माण और उपयोग करते हैं।
(iv) बच्चे अपने पर्यावरण के प्रति क्रिया करते हैं।
(v) बच्चे का विकास प्रत्येक अवस्थाओं से होकर गुजरता है।
(vi) बच्चे के विकास को भाषा प्रभावित नहीं करती है।
अतः 'निरन्तर अभ्यास से अधिगम होता है' यह पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार नहीं कहा जाता है बल्कि थार्नडाइक के सिद्धान्त के अनुसार कहा जा सकता है।

5. जीन पियाजे के अनुसार, बच्चे–

(a) प्रेक्षणात्मक अधिगम की प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए दूसरों का अवलोकन करके सीखते हैं।
(b) को उद्दीपन-अनुक्रिया संबंधों के सावधानीपूर्ण नियंत्रण के द्वारा एक विशेष तरीके से व्यवहार करने के लिए अनुबंधित किया जा सकता है।
(c) को पुरस्कार एवं दण्ड के सिद्धांतों का प्रयोग करते हुए विशिष्ट तरीके से व्यवहार करना एवं सीखना सिखाया जा सकता है।
(d) ज्ञान को सक्रिय रूप से संरचित करते हैं, जैसे-जैसे वे दुनिया में व्यवहार कौशल का प्रयोग करते हैं तथा अन्वेषण करते हैं।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) जीन पियाजे के अनुसार, बच्चे ज्ञान को सक्रिय रूप से संरचित करते हैं, वे दुनिया में व्यवहार कौशल का प्रयोग करते हैं तथा अन्वेषण करते हैं। पियाजे के अनुसार बालकों में वास्तविकता के स्वरूप में चिंतन करने, उसकी खोज करने, उसके बारे में समझ बनाने तथा उनके बारे में सूचनाएँ एकत्रित करने की क्षमता, बालक के परिपक्वता स्तर तथा बालक के अनुभवों की पारस्परिक अंतःक्रिया द्वारा निर्धारित होती है। बालक अपने विश्व की ज्ञान रचना में 'स्कीमा' का प्रयोग करता है।

6. जीन पियाजे के अनुसार अधिगम के लिए निम्नलिखित में से क्या आवश्यक है?

(a) वयस्कों के व्यवहार का अवलोकन
(b) ईश्वरीय न्याय पर विश्वास
(c) शिक्षकों और माता–पिता द्वारा पुनर्बलन
(d) शिक्षार्थी के द्वारा पर्यावरण की सक्रिय खोजबीन

DSSSB PRT

Ans : (d) जीन पियाजे ने बालक के संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत दिया था। इनके अनुसार बौद्धिक विकास काफी हद तक व्यक्ति तथा वातावरण की परस्पर सतत् अंतःक्रिया पर निर्भर करता है। इसलिए अधिगम के लिए विद्यार्थियों को पर्यावरण की सक्रिय खोजबीन के लिए समुचित वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।

7. ..... के विचार से बच्चे सक्रिय ज्ञान-निर्माता तथा नन्हें वैज्ञानिक है, जो संसार के बारे में अपने सिद्धान्तों की रचना करते है।

(a) स्किनर (b) पैवलॉव
(c) युंग (d) पियाजे

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (d) जीन पियाजे प्रथम मनोवैज्ञानिक थे जिसने व्यक्ति को जन्म से क्रियाशील तथा सूचना प्रकमणित (प्रचारित करने वाला) प्राणी (Active and informat in processing being) स्वीकार किया है। जिन पियाजे के अनुसार-बच्चे सक्रिय ज्ञान-निर्माता तथा नन्हें वैज्ञानिक है जो संसार के बारे में अपने सिद्धान्तों की रचना करते हैं।

8. ''बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ का सृजन करते हैं।'' इसका श्रेय-----को जाता है।

(a) पैवलॉव (b) कोह्लबर्ग
(c) स्किनर (d) पियाजे

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011
DSSSB PRT

Ans: (d) पियाजे के अनुसार ''बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ का सृजन करते है''

9. बच्चों की प्रकृति होती हैं :

(a) हानिकारक (b) कृत्रिम
(c) कल्पनाशील (d) रचनात्मक

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : बच्चों की प्रकृति रचनात्मक होती है। पियाजे और वाइगोत्सकी जैसे मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बच्चे अपने ज्ञान की रचना स्वयं करते हैं। इसलिए शिक्षक और अभिभावक को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिसमें बच्चे स्वयं सहभागिता के द्वारा सीख सकें।

वाइगोत्सकी का सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण

10. निम्नलिखित में से कौन–सा एक आधारभूत सहायता का उदाहरण है?

(a) अनुबोधन और संकेत देना तथा नाजुक स्थितियों पर प्रश्न पूछना
(b) शिक्षार्थियों को प्रेरित करने वाले भाषण देना
(c) प्रश्न पूछने को बढ़ावा दिए बिना स्पष्टीकरण देना
(d) मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार के उपहार देना

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (a) अनुबोधन और संकेत देना तथा नाजुक स्थितियों पर प्रश्न पूछ कर छात्रों के कठिनाइयों का समाधान करना आधारभूत सहायता का उदाहरण है जो आदर्श शिक्षण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

11. वाइगोत्स्की के अनुसार, बच्चे सीखते है

(a) जब पुनर्बलन प्रदान किया जाता है
(b) परिपक्व होने से
(c) अनुकरण से
(d) वयस्कों और समवयस्कों के साथ परस्पर क्रिया से

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Feb 2016

Ans : (d) वाइगोत्स्की का मत है कि बालक में संज्ञानात्मक शक्तियों का विकास मुख्यतः दो कारकों से होता है। प्रथम सामाजिक कारक तथा द्वितीय भाषा। इन्हीं दोनों कारकों से बालक में सीखने की प्रक्रिया आगे बढ़ती है। सामाजिक कारकों के अन्तर्गत बच्चों का वयस्कों तथा समवयस्कों के साथ परस्पर क्रिया होता है तथा भाषा का विकास इसी कारक पर निर्भर करता है।

12. एक बच्चे को सहारा देने की मात्रा एवं प्रकार में परिवर्तन इस बात पर निर्भर करता है –

(a) अध्यापिका की मनोदशा
(b) कार्य के लिए प्रस्तावित पुरस्कार
(c) बच्चे के निष्पादन का स्तर
(d) बच्चे की नैसर्गिक योग्यताएँ

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015

Ans: (c) एक बच्चे को सहारा देने की मात्रा एवं प्रकार में परिवर्तन इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चे का निष्पादन स्तर कितना है।

13. सीखने के सिद्धान्तों के संदर्भ में 'स्कैफोल्डिंग'.....की ओर संकेत करता है।

(a) सीखने में वयस्कों द्वारा अस्थायी सहयोग
(b) विद्यार्थियों द्वारा की गई गलतियों के कारणों का पता लगाना
(c) अनुरूपित शिक्षण
(d) पूर्व अधिगम की पुनरावृत्ति

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 18 Nov 2012

Ans: (a) स्कैफोल्डिंग का अर्थ है 'मचाना बनाना'। यह नए ज्ञान के साथ बच्चों के पास पहले से मौजूद ज्ञान पर निर्मित होता है जिससे वयस्क बच्चे को सीखने में सहयोग मिलता है।

14. सहयोगी अधिगम में अधिक उम्र के प्रवीण विद्यार्थी, छोटे और कम निपुण विद्यार्थियों की मदद करते हैं। इससे –

(a) गहन प्रतियोगिता होती है
(b) उच्च नैतिक विकास होता है
(c) समूहों में द्वन्द्व होता है
(d) उच्च उपलब्धि और आत्म-सम्मान विकसित होता है

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012

Ans: (d) सहयोगी अधिगम में अधिक उम्र के प्रवीण विद्यार्थी, छोटे और कम निपुण विद्यार्थियों की मदद करते हैं तो इससे उनमें उपलब्धि और आत्म–सम्मान विकसित होता है।

15. अध्यापिका ने ध्यान दिया कि पुष्पा अपने-आप किसी एक समस्या का समाधान नहीं कर सकती है। फिर भी वह एक वयस्क या साथी के मार्गदर्शन की उपस्थिति में ऐसा करती है। इस मार्गदर्शन को कहते हैं।

(a) पार्श्वकरण (b) पूर्व-क्रियात्मक चिन्तन

(c) समीपस्थ विकास का क्षेत्र (d) सहारा देना

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (d) यदि छात्र द्वारा किसी की सहायता से प्रश्नों को हल किया जाता है जो कि उससे बड़ा है तो इस प्रकार के मार्गदर्शन को सहारा देना कहा जायेगा।

16. पियाजे तथा वाइगोत्स्की के अनुसार, एक रचनात्मक कक्षा-कक्ष में अधिगम

(a) शिक्षार्थियों द्वारा स्वयं सृजित किया जाता है, जो एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं

(b) शिक्षक द्वारा पुनर्बलन किया जाना

(c) शिक्षक द्वारा लिखवाया जाता है तथा शिक्षार्थी निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं

(d) उद्दीपक तथा अनुक्रिया के जोड़ से होता है

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (a) पियाजे तथा वाइगोत्स्की द्वारा बालक के संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या की गई है। इनके अनुसार एक रचनात्मक कक्षा-कक्ष में अधिगम प्रक्रिया का सृजन छात्र द्वारा स्वयं अपने अध्यापक की सहायता से किया जाना चाहिये जो उनके रचनात्मक अधिगम में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

17. ..... कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से सम्बद्ध जटिल परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते हैं।

(a) पारम्परिक (b) रचनात्मक (Constructive)

(c) अध्यापक-केन्द्रित (d) सामाजिक-रचनात्मक

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (d) सामाजिक- रचनात्मक कक्षा में वास्तविक सांसारिक समस्याओं से सम्बद्ध जटिल परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अध्यापक व छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से परस्पर ग्रहण करते रहते है।

18. जीन पियाजे एवं लेव वायगोट्स्की जैसे संरचनावादी अधिगम को किस रूप में देखते हैं?

(a) प्रतिक्रियाओं का अनुबंधन

(b) निष्क्रिय आवृत्तीय प्रक्रिया

(c) सक्रिय विनियोजन से अर्थ–निर्माण की प्रक्रिया

(d) कौशलों का अर्जन

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : जीन पियाजे एवं लेव वाइगोत्सकी जैसे संरचनावादी अधिगम को सक्रिय विनियोजन से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं।

जीन पियाजे विकासात्मक मनोविज्ञान में शोध के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने अधिगम प्रक्रिया को योजना द्वारा, सामंजस्य द्वारा, आत्मसात द्वारा पूर्ण होना बताया। उनके अनुसार अधिगमकर्ता को एक आदर्श अधिगम वातावरण प्रदान करने पर वह एक अर्थपूर्ण ज्ञान का निर्माण करता है।

लेव वाइगोत्सकी सामाजिक निर्मितवाद के जनक हैं और मानते हैं कि अधिगम एवं विकास एक सामंजस्यकारी गतिविधि है जिससे बच्चे शिक्षा और समाजीकरण के संदर्भ में ज्ञान का निर्माण करते हैं। इस प्रकार जीन पियाजे और लेव वाइगोत्सकी दोनों ही बच्चों द्वारा सक्रिया रहकर ज्ञान निर्माण पर बल देते हैं और बच्चे को सक्रिय अधिगमकर्ता के रूप में देखते हैं।

19. लेव वायगोट्स्की के अनुसार अधिगम–

(a) एक व्यक्तिगत गतिविधि है।

(b) एक निष्क्रिय गतिविधि है।

(c) एक अनुबंधित गतिविधि है।

(d) एक सामाजिक गतिविधि है।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) लेव वाइगोत्सकी के अनुसार अधिगम एक सामाजिक गतिविधि है। वाइगोत्सकी के अनुसार अधिगम दो स्तरों पर होता है–

(i) प्रथम स्तर पर दूसरों के साथ अंतःक्रिया द्वारा। जब बालक अंतःक्रिया करता है तब सूचनाएँ स्वतः ही व्यक्तिगत स्तर पर एक दूसरे से जुड़ती चली जाती हैं।

(ii) द्वितीय स्तर पर सीखा हुआ ज्ञान बालक की मानसिक संरचना में एकीकृत होता है।

पियाजे की तरह वाइगोत्सकी भी यह मानते थे कि बच्चे ज्ञान का निर्माण करते हैं किन्तु इनके अनुसार संज्ञानात्मक विकास एकाकी नहीं हो सकता। यह भाषा विकास, सामाजिक विकास तथा शारीरिक विकास के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में भी होता है।

20. निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक ने बच्चों को ज्ञान के सक्रिय जिज्ञासु के रूप में देखते हुए उनके चिंतन पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषय वस्तुओं के प्रभाव को महत्त्व दिया?

(a) जीन पियाजे (b) लॉरेंस कोहलबर्ग

(c) जॉन बी. वाट्सन (d) लेव वायगोट्स्की

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (d) लेव वाइगोत्सकी ने बच्चों को ज्ञान के सक्रिय जिज्ञासु के रूप में देखते हुए उनके चिंतन पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषय वस्तुओं के प्रभाव को महत्व दिया है। ध्यातव्य है कि लेव वाइगोत्सकी सामाजिक निर्मितवाद के जनक हैं और मानते हैं कि अधिगम एवं विकास एक सामंजस्यकारी गतिविधि है जिसमें बच्चे शिक्षा और समाजीकरण के संदर्भ में ज्ञान विकसित करते हैं। बच्चों का ध्यान, अवबोधन व स्मृति क्षमताएँ, ज्ञान के विभिन्न उपकरण, जैसे–संस्कृति, इतिहास, सामाजिक परिवेश, परम्पराएँ, भाषा और धर्म के अनुसार बदलती हैं।

21. बच्चे अनेक घटनाओं के बारे में सहजानुभूत सिद्धांत की संरचना करते हैं। इस पृष्ठभूमि में एक शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(a) बच्चों के इन विचारों को खारिज करना चाहिए।

(b) बच्चों के विचारों एवं सिद्धांतों को अनदेखा करना चाहिए।

(c) बच्चों को इन विचारों के लिए डाँटना चाहिए क्योंकि ये विचार उनके शिक्षण में हस्तक्षेप करते हैं।

(d) संवाद के द्वारा बच्चों की इन आवधारणाओं को चुनौती देनी चाहिए।

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (d) बच्चे अनेक घटनाओं के बारे में सहजानुभूत सिद्धान्त की संरचना करते हैं। इस पृष्ठभूमि में एक शिक्षक को संवाद के द्वारा बच्चों की इन अवधारणाओं को चुनौती देनी चाहिए। वाइगोसकी के अनुसार संवाद महत्वपूर्ण औजार होता है जिसके माध्यम से अधिक कुशल व्यक्ति (अभिभावक या शिक्षक) बच्चों के सहजानुभूत सिद्धान्तों में सुधार करने या परिवर्तन करने में सहायता करते हैं।

22. निम्नलिखित में से क्या ज्ञान के सार्थक संरचना की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है?

(a) लगातार अभ्यास तथा बार-बार स्मरण करना

(b) पुरस्कार एवं दंड

(c) उद्दीपन-प्रतिक्रिया संबंध

(d) सामाजिक पारस्परिक क्रियाएँ

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (d) सामाजिक पारस्परिक क्रियाएँ ज्ञान के सार्थक संरचना की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू है। वाइगोत्स्की का मानना है कि बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण सामाजिक पारस्परिक क्रिया द्वारा करते हैं। वाइगोत्स्की के अनुसार बच्चों की भाषा, स्मृति, अमूर्त चिंतन, प्रत्यय निर्माण आदि कौशलों के विकास में सामाजिक पारस्परिक क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

23. सीखने के सिद्धांतों के संदर्भ में स्कैफोल्डिंग ..... को ओर संकेत करता है।

(a) विद्यार्थियों द्वारा की गई गलतियों के कारणों का पता लगाना

(b) अनुरूपित शिक्षण

(c) पूर्व अधिगम की पुनरावृत्ति

(d) सीखने में वयस्कों द्वारा अस्थायी सहयोग

DSSSB PRT

Ans : (d) सीखने के सिद्धांतों के सन्दर्भ में स्कैफोल्डिंग (मचान) सीखने में वयस्कों द्वारा अस्थायी सहयोग की ओर संकेत करता है। वाइगोत्स्की के अनुसार जब कोई बच्चा कोई नया काम सीखने की कगार पर होता है तब वयस्को द्वारा समय पर और संवेदनशील हस्तक्षेप से बच्चों को नये कार्यों (जिन्हें समीपस्थ विकास का क्षेत्र नाम दिया गया) को सीखने में मदद मिल सकती है, इस तकनीक को स्कैफोल्डिंग (मचान बनाना) कहा जाता है।

24. पियाजे तथा वाइगोत्स्की के अनुसार, एक रचनात्मक कक्षा–कक्ष में अधिगम

(a) शिक्षक द्वारा लिखवाया जाता है तथा विद्यार्थी निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं

(b) उद्दीपक तथा अनुक्रिया के जोड़ से होता है

(c) शिक्षक द्वारा पुनर्बलन किया जाना है

(d) शिक्षार्थियों द्वारा स्वयं सृजित किया जाता है, जो एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं

DSSSB PRT

Ans : (d) पियाजे तथा वाइगोत्स्की के अनुसार, एक रचनात्मक कक्षा–कक्ष में अधिगम शिक्षार्थियों द्वारा सृजित किया जाता है, जो एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

25. वाइगोत्स्की के सिद्धांत का निहितार्थ है–

(a) प्रारम्भिक व्याख्या के बाद कठिन सवालों को हल करने में बच्चे की सहायता न करना

(b) बच्चे उन बच्चों की संगति में श्रेष्ठतम रूप से सीख सकते हैं जिनका बुद्धि लब्धांक उनके बुद्धि लब्धांक से कम होता है

(c) सहयोगात्मक समस्या समाधान

(d) प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से दत्त कार्य देना

DSSSB PRT

Ans : (c) वाइगोत्स्की के सिद्धांत का निहितार्थ है सहयोगात्मक समस्या समाधान, अर्थात् बालक का विकास अपने समकक्षीय, समवयस्कों एवं बड़े लोगों के सम्पर्क में रहने से होता है।

26. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की इस रूप में मदद करना चाहती है कि वे एक स्थिति की अनेक दृष्टिकोणों से सराहना कर सकें। वह विभिन्न समूहों में एक स्थिति पर वाद–विवाद करने के अनेक अवसर उपलब्ध कराती है। वाइगोत्स्की के परिप्रेक्ष्य के अनुसार उसके शिक्षार्थी विभिन्न दृष्टिकोणों को ..... करेंगे और अपने तरीके से उस स्थिति के अनेक परिप्रेक्ष्य विकसित करेंगे।

(a) तर्कसंगत (b) आत्मसात्

(c) निर्माण (d) सक्रियाकरण

DSSSB PRT

C TET 2013 (I-V)

Ans : (b) वाइगोत्सकी के परिप्रेक्ष्य में वाद-विवाद में सभी विद्यार्थी विभिन्न दृष्टिकोणों को आत्मसात करते हैं और फिर उन्हें अपने तरीके से अनेक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास करते हैं।

27. निम्नलिखित कथनों में से कौन–सा वाइगोत्स्की के द्वारा प्रस्तावित विकास तथा अधिगम के बीच सम्बन्ध का सर्वश्रेष्ठ रूप में सार प्रस्तुत करता है?

(a) विकास अधिगम से स्वाधी है

(b) अधिगम एवं विकास सामान्तर प्रक्रियाएँ हैं

(c) विकास प्रक्रिया, अधिगम प्रक्रिया से पीछे रह जाती है

(d) विकास अधिगम का समानार्थक है

DSSSB PRT

C TET (VI-VIII) 2015

Ans : (c) पियाजे के अनुसार विकास, अधिगम की पूर्वावस्था है न कि इसका परिणाम। पियाजे के अनुसार अधिगम के लिए सर्वप्रथम एक निश्चित विकास स्तर तक पहुँचना आवश्यक है जबकि वाइगोत्सकी के अनुसार अधिगम और विकास अंतर्संबन्धित प्रक्रियाएँ है जो छात्र के पहले दिन से प्रारम्भ होती है किन्तु आगे चलकर विकास प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया से पीछे रह जाती है तथा विकास अधिगम से प्रेरणा प्राप्त करने लगता है।

28. बच्चों के बारे में निम्नलिखित कथनों में से किस कथन से वाइगोत्स्की सहमत होते?

(a) बच्चे तब सीखते हैं जब उनके लिए आकर्षक पुरस्कार निर्धारित किए जाएँ
(b) बच्चों के चिन्तन को तब समझा जा सकता है जब प्रयोगशाल में पशुओं पर प्रयोग किए जाएँ
(c) बच्चे जन्म से शैतान है और उन्हें दण्ड देकर नियंत्रित किया जाना चाहिए
(d) बच्चे समवयस्कों और वयस्कों के साथ सामाजिक अन्तः क्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं

DSSSB PRT
C TET 2015 (I-V)

Ans : (d) वाइगोत्सकी का मानना है कि बच्चे समवयस्कों और वयस्कों के साथ सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं। वस्तुतः वाइगोत्सकी ने बालक के संज्ञानात्मक विकास में समाज एवं उसके सांस्कृतिक सम्बन्धों के बीच संवाद को एक महत्त्वपूर्ण आयाम घोषित किया।

29. लेव वाइगोत्सकी के समाज संरचना सिद्धान्त में दृढ़ विश्वास रखने वाले शिक्षक के नाते आप अपने बच्चों के आकलन के लिए निम्नलिखित में से किस विधि को वरीयता देंगे?
(a) सहयोगी प्रोजेक्ट
(b) मानकीकृत परीक्षण
(c) तथ्यों पर आधारित प्रत्यास्मरण के प्रश्न
(d) वस्तुपरक बहुविकल्पी प्रकार के प्रश्न

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (a) वाइगोत्सकी अपने सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त के लिए जाने जाते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक अंतः क्रिया ही बालक की सोच व व्यवहार में निरंतर बदलाव लाता है। उनके अनुसार किसी बालक का संज्ञानात्मक विकास उसके अन्य व्यक्तियों से अंर्तसम्बन्धों पर निर्भर करता है। अतः इस सिद्धान्त में विश्वास रखने के नाते सहयोगी प्रोजेक्ट के माध्यम से बच्चों का आकलन किया जा सकता है।

30. वाइगोत्स्की के अनुसार, सीखने को पृथक् नहीं किया जा सकता
(a) उसके सामाजिक संदर्भ से
(b) अवबोधन और अवधानात्मक प्रक्रियाओं से
(c) पुनर्बलन से
(d) व्यवहार में मापने योग्य परिवर्तन से

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016
DSSSB PRT

Ans : (a) वाइगोत्स्की ने संज्ञानात्मक विकास से सम्बन्धित सामाजिक सांस्कृतिक विकास की अवधारणा को बताया। इसके अनुसार संज्ञानात्मक विकास एक अंतर्वैक्तिक सामाजिक परिस्थितियों में सम्पन्न होता है तथा बालक जो कुछ सीखता है उस पर उसके सामाजिक मूल्यों का प्रभाव अवश्य होता है। अतः सीखने को समाजिकता से पृथक नहीं किया जा सकता।

31. निम्नलिखित में से कौन-सा वाइगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त पर आधारित है।
(a) सक्रिय अनुकूलन
(b) पारस्परिक शिक्षण
(c) संस्कृति-निरपेक्ष संज्ञानात्मक विकास
(d) अन्तर्दृष्टिपूर्ण अधिगम

C TET Paper - I (Class I-V) 16 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans : (b) वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त पर पारस्परिक शिक्षण आधारित है। पारस्परिक शिक्षण शिक्षकों और छात्रों के मध्य एक संवादात्मक गतिविधि है। जिसका संचालन चार विशेष रणनीति-सक्षिप्तीकरण, प्रश्न पूछना, स्पष्ट करना और भविष्यवाणी करना, के तहत किया जाता है। पारस्परिक शिक्षण का उद्देश्य शिक्षक और छात्रों के बीच सामूहिक प्रयास के माध्यम से समस्या का हल निकालना होता है।

32. वाइगोत्सकी बच्चों के सीखने में निम्नलिखित में से किस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते हैं?
(a) आनुवंशिक (b) नैतिक
(c) शारीरिक (d) सामाजिक

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) वाइगोत्सकी के अनुसार बालक के संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या उसके सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में करनी चाहिए। किसी बालक का समाजीकरण जिस सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में हुआ रहता है, उसी के अनुरूप उसमें भाव, विचार, दृष्टिकोण एवं मानसिक क्षमताओं का विकास होता है।

33. निर्माणवाद का सिद्धान्त..... के द्वारा प्रतिपादित किया गया था।
(a) एरिक्सन (b) बेन्डुरा
(c) वाइगोत्स्की (d) कोहलबर्ग

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : निर्माणवाद का सिद्धान्त वाइगोत्स्की के द्वारा प्रतिपादित किया गया था। वाइगोत्सकी सामाजिक निर्मितवाद के जनक हैं और मानते हैं कि अधिगम एवं विकास एक सामंजस्यकारी गतिविधि है जिसे बच्चे शिक्षा और समाजीकरण के संदर्भ में विकसित करते हैं। बच्चे का ध्यान, अवबोध व स्मृति क्षमताएँ, ज्ञान के विभिन्न उपकरण जैसे-संस्कृति, इतिहास, सामाजिक परिवेश, परम्पराएँ, भाषा और धर्म आदि के अनुसार बदलती रहती हैं। बच्चा पहले स्वयं के स्तर पर सामाजिक वातावरण में तालमेल बैठाता है और फिर अपने अनुभवों को वैश्विक करता है।

34. वाइगोत्सकी के सिद्धांत के अनुसार बच्चे ..... के माध्यम से अधिगम करेंगे–
(a) देख कर (b) पढ़कर और लिखकर
(c) समाज (d) पुस्तक के माध्यम से

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (c) वाइगोत्सकी के सिद्धांत के अनुसार बच्चे समाज के माध्यम से अधिगम करेंगे। उनके अनुसार बच्चों में समाज से स्वाभाविक रूप से सीखने की प्रवृत्ति होती है। सीखने की इस प्रक्रिया के दौरान निकाले गये अर्थ को अधिगमकर्ता साथियों के साथ साझा करते हैं, परीक्षण करते हैं और नई समझ विकसित करते हैं। सामाजिक रचनावाद में समाज के साथ अंतर्क्रिया महत्त्वपूर्ण होती है। क्योंकि यह सोचने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है जिससे वे अपने विचारों को दूसरे के विचारों के साथ तुलना कर सकते हैं।

शिक्षार्थियों की त्रुटियों की पहचान

35. बच्चों की गलतियाँ–

(a) बार-बार अभ्यास करने के लिए कह कर तुरंत सुधार देनी चाहिए

(b) अधिगम का एक भाग हैं तथा उन्हें विचारों में एक अंतर्दृष्टि देती हैं।

(c) शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में महत्त्वहीन हैं।

(d) प्रदर्शित करती हैं कि बच्चे कितने लापरवाह हैं।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (b) बच्चों की गलतियाँ अधिगम का एक भाग हैं तथा उनके विचारों में एक अंतर्दृष्टि देती हैं। बच्चे सीखते समय गलतियाँ करते हैं ये गलतियाँ खिड़की के समान होती हैं जो अधिगम में आने वाली कठिनाइयों की जानकारी शिक्षक को उपलब्ध कराती हैं। शिक्षक इन कठिनाईयों को समझकर उनको दूर करने का प्रयास करते हैं।

36. बच्चों की गलतियाँ एवं भ्रांत–धारणाएँ .....

(a) शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए रुकावट एवं विघ्न है।

(b) शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अनदेखी करनी चाहिए।

(c) सूचित करती हैं कि बच्चों की क्षमताएँ वयस्कों की तुलना में बहुत निम्न स्तर की हैं।

(d) शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (d) : बच्चों की गलतियाँ एवं भ्रांत धारणाएँ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक महत्त्वपूर्ण कदम हैं। बच्चे सीखते समय गलयिाँ करते हैं। यह गलतियाँ खिड़की के समान होती हैं जो अध्यापक को प्रतिपुष्टि के रूप में प्राप्त होती हैं। अध्यापक इसी आधार पर विद्यार्थियों के अधिगम में सुधार करता है। कभी–कभी बच्चों में भ्राँत धारणाएँ बन जाती हैं। इन धारणाओं में अध्यापक विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से सुधार कर सकता है।

37. शिक्षार्थियों द्वारा की गई गलतियाँ और त्रुटियाँ–

(a) बच्चों को 'कमजोर' अथवा 'उत्कृष्ट' चिह्नित करने के अच्छे अवसर हैं

(b) शिक्षक और शिक्षार्थियों की असफलता के सूचक हैं

(c) उनके चिन्तन को समझने के अवसर के रूप में देखी जानी चाहिए

(d) कठोरता से निपटाई जानी चाहिए

DSSSB PRT

C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) शिक्षार्थियों द्वारा की गयी गलतियाँ और त्रुटियाँ उनके चिंतन को समझने के अवसर के रूप में देखी जानी चाहिए क्योंकि इसी के द्वारा शिक्षार्थी के अधिगम में आने वाली कठिनाइयों का पता चलता है तथा शिक्षण विधियों में संशोधन करने के उपाय सुझाता है।

38. प्रायः शिक्षार्थियों की त्रुटियां ..... की ओर संकेत करती है।

(a) वे कैसे सीखते हैं

(b) शिक्षार्थियों का सामाजिक–आर्थिक स्तर

(c) यांत्रिक अभ्यास की आवश्यकता

(d) सीखने की अनुपस्थिति

DSSSB PRT, C TET 2012 (I-V)
UKTET 2014 (I-V)

Ans : (a) प्रायः शिक्षार्थियों की त्रुटियाँ वे कैसे सीखते हैं, की ओर संकेत करती है। शिक्षक इन त्रुटियों को प्रतिपुष्टि मानता है और उपचारात्मक शिक्षण के माध्यम से इन त्रुटियों का निराकरण करता है।

39. बच्चों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सत्य है?

(a) एक शिक्षक को प्रत्येक त्रुटि पर ध्यान नहीं देना चाहिए अन्यथा पाठ्यक्रम पूरा नहीं होगा

(b) प्रत्येक त्रुटि को सुधारने में बहुत अधिक समय लगेगा तथा एक शिक्षक के लिए थकाने वाला होगा

(c) स्वयं बच्चों द्वारा त्रुटियों को सुधारा जा सकता है इसलिए शिक्षक को उन्हें तुरन्त ही नहीं सुधारना चाहिए

(d) यदि एक शिक्षक कक्षा–कक्ष में सभी बच्चों की त्रुटियों को सुधारने योग्य नहीं है तो यह संकेत करता है कि शिक्षक–शिक्षा की व्यवस्था असफल है

DSSSB PRT

C TET 2012 (I-V)

Ans : (d) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बच्चों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन व परिमार्जन के लिए संचालित की जाती है। यदि फिर भी बच्चों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन नहीं होता है और वह बार–बार त्रुटि करता है तो वह संकेत करता है कि शिक्षक–शिक्षा की व्यवस्था असफल है।

40. सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी द्वारा की गई त्रुटियों के संबंध में, आपकी दृष्टि में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सर्वोत्तम है?

(a) विद्यार्थी को कभी भी त्रुटियाँ नहीं करनी चाहिए

(b) त्रुटियाँ अधिगम प्रक्रिया का भाग है

(c) विद्यार्थी की लापरवाही के कारण त्रुटियाँ होती हैं

(d) कभी–कभी विद्यार्थी त्रुटियाँ कर सकता है

DSSSB PRT

UK TET 2011 (I-V)

Ans : (b) त्रुटियाँ अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न भाग होती है। व्यक्ति के सामने जब समस्या आती है तो वह उसके समाधान के लिए बहुत से अनुक्रियाएँ करता है, जिसमें कई अनुक्रियाएँ त्रुटिपूर्ण होती हैं, अंततः वह सही अनुक्रिया करना सीख लेता है। इसी प्रकार सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी द्वारा की गयी त्रुटियों को भी स्वभाविक अनुक्रिया मानना चाहिए और उसे निरंतर बेहतर प्रयास करते रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

41. यदि शिक्षार्थी पाठ के दौरान लगातार गलतियाँ करते हैं तो शिक्षक को

(a) अनुदेशन, कार्य, समय–सारिणी तथा बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहिए

(b) पाठ को कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहिए और कुछ समय के बाद वापस जाना चाहिए

(c) गलतियाँ करने वाले विद्यार्थियों की पहचान करनी चाहिए और उनके बारे में प्राचार्य से बात करनी चाहिए

(d) गलतियाँ करने वाले शिक्षार्थियों को कक्षा–कक्ष से बाहर खड़ा कर देना चाहिए

DSSSB PRT
C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (a) यदि शिक्षार्थी पाठ के दौरान लगातार गलतियाँ करते हैं तो शिक्षक को अपने शिक्षण विधियो, युक्तियों, अनुदेशन कार्य, समय–सारिणी तथा बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन कर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आने वाली कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है।

42. बच्चों की त्रुटियों के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सत्य है?

(a) बच्चों की त्रुटियाँ उनके सीखने की प्रक्रिया का अंग है

(b) बच्चे तब त्रुटियाँ करते हैं जब शिक्षक सौम्य हो और उन्हें त्रुटियाँ करने पर दण्ड न देता हो

(c) बच्चों की त्रुटियाँ शिक्षक के लिए महत्त्वहीन है और उसे चाहिए कि उन्हें काट दे और उन पर ध्यान न दें

(d) असावधानी के कारण बच्चे त्रुटियाँ करते हैं

DSSSB PRT
C TET 2015 (I-V)

Ans : (a) बच्चों की त्रुटियाँ उनके सीखने की प्रक्रिया का अंग होती हैं। इसी आधार पर थार्नडाइक ने अधिगम का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धांत दिया है। इस सिद्धांत के अनुसार बच्चे जब कोई नया कार्य सीखते हैं तो त्रुटियाँ करते हैं किन्तु बार–बार सीखने का प्रयास करके त्रुटियों की आवृत्ति कम कर देते हैं और कार्य को सीख लेते हैं।

43. आपकी कक्षा में कुछ बच्चें हैं जो गलतियाँ करते हैं। इस परिस्थिति का आपके विश्लेषण के अनुसार इनमें से कौन-सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?

(a) बच्चों का बुद्धि स्तर निम्न है

(b) बच्चों ने अभी तक संकल्पनात्मक स्पष्टता प्राप्त नहीं की है तथा आपको अपनी शिक्षण विधि पर चिन्तन करने की आवश्यकता है

(c) बच्चों की अध्ययन में रुचि नहीं है और वे अनुशासनहीनता उत्पन्न करना चाहते हैं

(d) बच्चों को आपकी कक्षा में प्रोन्नत नहीं करना चाहिए था

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (b) किसी कक्षा में आपके द्वारा शिक्षण करने के बाद भी यदि बच्चे गलत करते हैं तो इसका अर्थ है कि बच्चों ने अभी तक संकल्पनात्मक स्पष्टता प्राप्त नहीं की है। तथा आपको अपनी शिक्षण विधि पर चिंतन करने की आवश्यकता है।

44. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बच्चों की त्रुटियों के सम्बन्ध में सबसे उपयुक्त है?

(a) गलतियों से बचने के लिए बच्चों को शिक्षक का अनुकरण करना चाहिए।

(b) बच्चों की गलतियों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और उन्हें कठोर दंड दिया जाना चाहिए ताकि वे गलतियाँ न दुहराएँ।

(c) बच्चे गलतियाँ करते हैं क्योंकि उनमें विचार करने की क्षमता नहीं होती।

(d) बच्चों की गलतियाँ एक खिड़की के समान होती है, यह जानने के लिए कि वे किस प्रकार सोचते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015
DSSSB PRT

Ans: (d) बच्चों की गलतियाँ एक खिड़की के समान होती है, यह जानने के लिए कि वे किस प्रकार सोचते हैं। अर्थात् उनकी उपलब्धि स्तर तथा उनकी क्षमता के बीच के अंतर को पहचानकर उसमें सुधार किया जा सकता है।

45. आजकल बच्चों की 'गलत धारणाओं' को 'वैकल्पिक धारणाएँ' कहने की एक प्रवृत्ति है। इसे कहा जा सकता है

(a) पहचानना कि बच्चे सोच सकते हैं और उनकी सोच प्रौढ़ों से भिन्न होती है

(b) बच्चों की समझ में सूक्ष्म भेद करना और उनका अपने सीखने के प्रति निष्क्रिय रहना

(c) बच्चों की गलतियों की व्याख्या के लिए मनोहारी शब्दों का उपयोग करना

(d) बच्चों को उनकी सोच में प्रौढ़ों के समान मानना

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (a) आजकल बच्चों की 'गलत धारणाओं' को वैकल्पिक धारणाएँ कहने की प्रवृत्ति है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि बच्चों की सोच प्रौढ़ों से भिन्न होती है इसलिए उनकी सोच को गलत धारणाएँ कहकर तिरस्कृत नहीं किया जा सकता है।

46. उच्च प्राथमिक विद्यालय की गणित-अध्यापिका के रूप में आप विश्वास करती हैं कि –

(a) विद्यार्थियों की गलतियाँ उनके चिंतन में अन्तर्दृष्टियाँ उपलब्ध कराती हैं।

(b) उच्च प्राथमिक विद्यालय के सभी बच्चों में गणित पढ़ने की योग्यता नहीं होती है।

(c) लड़के गणित को बिना अधिक प्रयास किए सीख जाएँगे क्योंकि यह उनकी 'जन्मजात' विशेषता है तथा आपको लड़कियों के ऊपर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

(d) विद्यार्थियों को कार्यविधिक ज्ञान को जानने की आवश्यकता होती है, चाहे वे संकल्पनात्मक आधार नहीं समझते हों।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 22 Feb 2015

Ans: (a) उच्च प्राथमिक विद्यालय की गणित अध्यापिका होने के नाते हमकों विश्वास करना चाहिए कि विद्यार्थियों की गलतियाँ उनके चिंतन में अंतर्दृष्टियाँ उपलब्ध कराती हैं क्योंकि बच्चे गणित या अन्य विषय में गलतियाँ करते हैं और सहयोगात्मक अधिगम के माध्यम से उन गलतियों में सुधार करने का प्रयास करते हैं। यह प्रयास सूझपूर्ण होता है।

47. जो अध्यापक/अध्यापिका अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों में सुधार करना चाहता/चाहती है, उसके लिए निम्नलिखित में से कौन-सा समुचित मार्ग है?

(a) उसे अपने विद्यार्थियों की प्रत्येक त्रुटि का संशोधन करना चाहिए, इसके लिए चाहे उसे विद्यालय में देर तक बैठना पड़े

(b) उसे बार-बार की जाने वाली तथा सामान्य त्रुटियों की अपेक्षा कम बार होने वाली त्रुटियों का अधिक संशोधन करना चाहिए

(c) उसे उन त्रुटियों का संशोधन करना चाहिए जो सामान्य अर्थ व अवबोधनात्मकता में हस्तक्षेप करती हैं

(d) अगर त्रुटि-संशोधन प्रक्रिया बच्चों को क्षुब्ध करती है, तो उसे उनका संशोधन नहीं करना चाहिए

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) अध्यापक अपने विधार्थियों की त्रुटियों में सुधार करने का प्रयत्न करते है तो उनके लिए सबसे उचित है कि उसे उन त्रुटियों का संशोधन करना चाहिए जो सामान्य अर्थ व अवबोधनात्मकता में हस्तक्षेप करती है।

48. कक्षा VII का शिक्षार्थी गणित में त्रुटियाँ करता है। एक शिक्षक के रूप में आप –

(a) शिक्षार्थी को सही उत्तर उपलब्ध कराएँगे

(b) शिक्षार्थी को कैल्कुलेटर का प्रयोग करने की अनुमति देंगे

(c) शिक्षार्थी से कहेंगे कि वह विकल्पात्मक पद्धति का प्रयोग करें अथवा स्वयं त्रुटि का पता लगाने के लिए उसे दुबारा करें

(d) शिक्षार्थी को दिखाएँ कि त्रुटि कहाँ थी और शिक्षार्थी को उसे दुबारा करने के लिए कहेंगे

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) शिक्षार्थी गणित में त्रुटियाँ करता है। एक शिक्षक के रूप में हम शिक्षार्थी से कहेंगे कि वह विकल्पनात्मक पद्धति का प्रयोग करे अथवा स्वयं त्रुटि का पता लगाने के लिए उसे दुबारा करे। इससे बालक में समस्या समाधान करने की क्षमता का विकास होगा और उसके IQ स्तर का भी विकास होगा।

49. लक्ष्य के रूप में प्रदर्शन के साथ एक कार्य करने वाले शिक्षार्थियों की विशेषता क्या है?

(a) वे दूसरों से बेहतर करने के लिए काम में संलग्न होते हैं।

(b) वे गलतियों को सीखने के अवसर के रूप में देखते हैं।

(c) वे स्मार्ट और समझदार दिखना चाहते हैं।

(d) वे दूसरों के साथ अपने प्रदर्शन की तुलना करते हैं और इसको जज करते हैं।

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : लक्ष्य के रूप में प्रदर्शन के साथ एक कार्य करने वाले शिक्षार्थी गलतियों को सीखने के अवसर के रूप में देखते हैं। ऐसे शिक्षार्थी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। इन प्रयासों में से कई प्रयास त्रुटियुक्त होते हैं। शिक्षार्थी इन त्रुटिपूर्ण प्रयासों को समझकर उसमें सुधार करते हैं।

निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

50. शिक्षक कक्षा में पढ़ने में ध्यान न देने वाले बच्चों से किस प्रकार का बर्ताव कर सकते हैं?

(a) पूरी कक्षा के सामने उन्हें बार–बार डाँटकर।

(b) उनसे बात करके तथा उनकी अरुचि का कारण जानने की कोशिश करके।

(c) उन्हें गृहकार्य के रूप में अत्यधिक वर्कशीट देकर।

(d) बच्चों को कक्षा से बाहर जाने के लिए कहकर

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (b) शिक्षक को कक्षा में पढ़ने में ध्यान न देने वाले बच्चों से बात करके उनकी अरुचि का कारण जानने की कोशिश करनी चाहिए तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर उसका उपचार करना चाहिए। अर्थात् यदि अरुचि का कारण शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित है तो उसमें सुधार करना चाहिए और यदि विद्यार्थी से संबन्धित है तो विद्यार्थी और अभिभावक से बात करके उचित निर्देशन एवं परामर्श देना चाहिए।

51. यदि कक्षा में पढ़ाते समय आपको महसूस होता है कि अचानक सभी बच्चे पढ़ने में रुचि नहीं ले रहे हैं, तो आप क्या करेंगे?

(a) कोई ध्यान नहीं देंगे और पढ़ाना जारी रखेंगे

(b) पढ़ाना बन्द कर देंगे

(c) बच्चों को ध्यान देने को कहेंगे

(d) कारण जानने की कोशिश करेंगे

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (d) शिक्षण प्रक्रिया में छात्रों द्वारा रूचि न लेना वास्तव में एक समस्या है। इसके लिए शिक्षक द्वारा समस्या को जानने का प्रयास करना चाहिए तथा समस्या के समाधान के लिए प्रयास करना चाहिए।

52. नैदानिक परीक्षा (Diagnostic Test) का मुख्य उद्देश्य है

(a) कक्षा में प्रदर्शन के दौरान सामान्यतया कमजोर क्षेत्र में चिह्नित करना

(b) उपचारात्मक कार्यक्रम की विशेष प्रकृति की आवश्यकता

(c) अकादमिक कठिनाइयों के कारणों का पता लगाना

(d) छात्र की कठिनाइयों की विशेष प्रकृति को जानना

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (c) नैदानिक परीक्षा (Diagnostic test) का मुख्य उद्देश्य छात्रों के अधिगम के समक्ष उत्पन्न होने वाली शैक्षिक समस्याओं के कारणों का पता लगाना है।

53. व्यक्तिगत निदान विधि का उपयोग है, विशेषतः-

(a) बुद्धिमान बालकों का अध्ययन

(b) असामान्य एवं संतुलित बालकों का अध्ययन

(c) दुर्बल बालकों का अध्ययन

(d) सामान्य बालकों का अध्ययन

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (c) दुर्बल/कमजोर बालकों के बारे में अध्ययन करने में व्यक्तिगत निदान विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत शिक्षक बालक से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उसकी समस्या जानने का प्रयास करता है तथा उसकी समस्या का हल करता है।

54. बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में प्रगति तब हो सकती है जब हम–

(a) उसकी प्रगति की नियमित रूप से जाँच करें

(b) बच्चों की प्रगति को नियमित रूप से जाँचने के साथ-साथ सुधारात्मक कदम उठाएँ

(c) बच्चों को नियमित रूप से गृहकार्य दें

(d) बच्चों के लिए नियमित रूप से गतिविधियाँ आयोजित कराएँ

UK TET Paper - I (Class I-V) 2014

Ans: (b) बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में प्रगति तब हो सकती है जब बच्चों की प्रगति का नियमित रूप से निरीक्षण किया जाये तथा आवश्यकतानुसार सुधारात्मक कदम उठाया जाये।

55. विद्यार्थियों के सीखने में जो रिक्तियाँ रह जाती हैं, उनके निदान के बाद ..... चाहिए।

(a) सघन अभ्यास कार्य होना

(b) समुचित उपचारात्मक कार्य होना

(c) सभी पाठों को व्यवस्थित रूप से दोहराना

(d) शिक्षार्थियों और अभिभावकों को उपलब्धि के बारे में बताना

DSSSB PRT
UKTET 2014 (I-V)

Ans : (b) विद्यार्थियों के सीखने में जो रिक्तियाँ या त्रुटियाँ रह जाती हैं, उनके निदान या पहचान के पश्चात् समुचित उपचारात्मक कार्य होना चाहिए। उपचारात्मक कार्य के द्वारा सीखने में आयी त्रुटियों का निराकरण किया जाता है।

56. वाइगोत्स्की के सिद्धांत का निहितार्थ है

(a) प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से दत्त कार्य देना।

(b) प्रारंभिक व्याख्या के बाद कठिन सवालों को हल करने में बच्चे की सहायता न करना।

(c) बच्चे उन बच्चों की संगति में श्रेष्ठतम रूप से सीख सकते हैं जिनका बुद्धि-लब्धांक से कम होता है।

(d) सहयोगात्मक समस्या समाधान।

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (d) वाइगोत्स्की के अनुसार ज्ञान बाह्य वातावरण में स्थित तथा सहयोगी होता है। अर्थात् ज्ञान विभिन्न व्यक्ति एवं वातावरण (जैसे वस्तुओं, औजार, किताबें मानवीय निर्मित्ताओं इत्यादि) तथा समुदायों (जिनमें व्यक्ति रहता है) में वितरित होता है। यह सिद्धान्त सुझाता है कि दूसरों के साथ अन्तः क्रिया तथा सहयोगात्मक क्रियाओं द्वारा जानने की प्रक्रिया गुणात्मक रूप से श्रेष्ठ होती है।

57. शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि वे प्रायः ..... की ओर संकेत करती हैं।

(a) योग्यताओं के अनुसार समूह बनाने हेतु दिशा-निर्देश

(b) भिन्न प्रकार की पाठ्यचर्या की आवश्यकता

(c) उनके ज्ञान की सीमा

(d) आवश्यक उपचारात्मक युक्तियों

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012
DSSSB PRT

Ans: (d) शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों की त्रुटियों का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि वे प्रायः आवश्यक उपचारात्मक युक्तियों की ओर संकेत करती हैं।

58. कक्षा-शिक्षण के उपरान्त छात्रों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को जानने के लिए कौन सा परीक्षण किया जाता है?

उत्तर: निदात्मक परीक्षण

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-कक्षा शिक्षण के उपरान्त छात्रों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं को जानने के लिए निदानात्मक परीक्षण किया जाता है। क्रो व क्रो के अनुसार ''निदानात्मक परीक्षणों का निर्माण, विद्यार्थियों को अधिगम सम्बन्धी विशिष्ट कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करने या निदान करने के लिए किया जाता है। पूर्ण सावधानी से निर्मित किये गये निदात्मक परीक्षण में किसी विशेष विषय के अधिगम के किसी विशेष पक्ष पर बल दिया जाता है ताकि छात्र की योग्यताओं और कमजोरियों को ज्ञात किया जा सके और उपचारात्मक शिक्षण का उपयोग किया जा सके।

59. यदि कोई छात्र असामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन कर रहा हो, तो शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(a) छात्र को शारीरिक दण्ड देना चाहिए

(b) उसके व्यवहार का कारण जानना चाहिए

(c) उसे उपदेश देना चाहिए

(d) उसे कक्षा से बाहर निकाल देना चाहिए

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011

Ans: (b) किसी विद्यार्थी द्वारा यदि असामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन किया जाता है तो शिक्षक को सर्वप्रथम उसके इस व्यवहार के कारणों को जानना आवश्यक होता है ताकि उनका समाधान किया जा सके तथा उसके व्यवहार में वांछित परिवर्तन किया जा सके।

60. यदि कोई बच्चा विद्यालय में हमेशा देर से पहुँचता है, तो आप क्या करेंगे?

(a) उसे डाँटेंगे ताकि वह यह गलती दोबारा ना दोहराए

(b) प्रधानाचार्य को बताएँगे

(c) उसके माता-पिता से सम्पर्क करेंगे

(d) बच्चे से बातचीत करके कारण जानने का प्रयास करेंगे

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (d) किसी विद्यार्थी द्वारा सदैव देर से पहुचने पर शिक्षक को सर्वप्रथम उन कारणों का पता लगाना चाहिए जिसके कारण विद्यार्थी हमेशा देर से विद्यालय पहुँचता है तत्पश्चात् उसके कारणों का उपचार करना चाहिए।

61. यदि आपकी कक्षा का कोई बच्चा प्रायः चुप रहता है, तो आप क्या करेंगे?

(a) उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देंगे

(b) उसकी किसी मनोवैज्ञानिक के पास ले जाएँगे

(c) उसके चुप रहने के कारण को जानने का प्रयास करेंगे

(d) उसके माता-पिता के बात करेंगे

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013
DSSSB PRT

Ans: (c) कक्षा में किसी विद्यार्थी द्वारा असामान्य व्यवहार अपनाए जाने पर शिक्षक को इसका कारण जानने का प्रयास करना चाहिए तथा उसके व्यवहार परिवर्तन के लिए प्रयास करना चाहिए जिससे अधिगम प्रक्रिया सुचारू रूप से चल सके।

62. मधु गणित में कमजोर है। एक अच्छे अध्यापक की दृष्टि में, उसके गणित में कमजोर होने का क्या कारण हो सकता है?

(a) प्रायः लड़कियाँ गणित में कमजोर होती हैं
(b) उसके माता–पिता अनपढ़ हैं
(c) उसकी अध्ययन में रुचि नहीं है
(d) गणित शिक्षण की विधि त्रुटिपूर्ण है

DSSSB PRT
UK TET (I-V) 2011

Ans : (d) 'मधु गणित में कमजोर है' इसका मतलब है कि वह अन्य विषय में ठीक है। अतः एक कुशल अध्यापक यह अनुमान लगाता है कि गणित शिक्षण की विधि ही त्रुटिपूर्ण होगी इसलिए शिक्षण–विधि में परिवर्तन करके मधु को गणित विषय में ठीक किया जा सकता है।

63. विद्यार्थी में अवांछित व्यवहार को किंचित परिवर्तन करने में सबसे प्रभावी पद्धति है

(a) विद्यार्थी को दण्ड देना
(b) अभिभावकों को ध्यान में इसे लाना
(c) अवांछित व्यवहार के कारणों को ढूँढना एवं उपचार का प्रबन्धन करना
(d) इसकी उपेक्षा करना

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (c) विद्यार्थी में अवांछित व्यवहार को किंचित परिवर्तन करने में सबसे प्रभावी पद्धति अवांछित व्यवहार के कारणों को ढूँढ़ना एवं उपचार का प्रबन्धन करना है।

64. छात्रों के लिए एक समयबद्ध परीक्षण कार्यक्रम स्कूलों में कार्यान्वित किया जाना चाहिए ताकि

(DSSSB Assistant Nursery Teacher)

(a) छात्रों की प्रगति उनके माता-पिता को सूचित की जानी चाहिए
(b) एक नियमित अभ्यास किया जा सकता है
(c) छात्रों को अन्तिम परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है
(d) उपचारात्मक कार्यक्रम परिणामों के बारे में प्रतिक्रिया के आधार पर अपनाया जा सकता है

Ans. (d) **:** छात्रों के लिए एक समय बद्ध परीक्षण कार्यक्रम स्कूलों में कार्यान्वित किया जाना चाहिए ताकि उपचारात्मक कार्यक्रम परिणामों के आधार पर अपनाया जा सके।

65. अधिगम से सम्बन्धित किसी विद्यार्थी की समस्याओं का सबसे अच्छा उपचार है

(a) कठोर परिश्रम का सुझाव
(b) ग्रन्थालय में निरीक्षित अध्ययन
(c) निजी शिक्षण का सुझाव
(d) निदानात्मक शिक्षण

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (d) अधिगम से सम्बंधित किसी विद्यार्थी की समस्याओं का सबसे अच्छा उपचार निदानात्मक शिक्षण द्वारा किया जा सकता है तथा साथ ही भविष्य का निर्धारण भी सही दिशा में किया जा सकता है।

66. सीखने में अशक्त (disabled) बच्चों के संदर्भों में तत्काल सम्बद्धता प्रदान करना, सहयोग पर बल देना तथा गैर-अधिगमनात्मक तकनीकी, जैसी तत्काल सूचनात्मक, बुद्धिपूर्वक गवेषण तथा सामग्री प्रबन्धन, का उत्तोलन (leveraging) निम्नलिखित में से किस प्रारूप से सम्बद्ध है?

(a) संग्रथित अधिगम (Embedded learning)
(b) हस्तक्षेपी अधिगम
(c) उपचारात्मक प्रत्युत्तर
(d) अधिगम का सार्वभौमिक प्रारूप

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans : (a) सीखने में अशक्त (disabled) बच्चों के सन्दर्भों में तत्काल सम्बद्धता प्रदान करना, सहयोग पर बल देना तथा गैर-अधिगमनात्मक तकनीकी, जैसी तत्काल सूचनात्मक, बुद्धिपूर्वक गवेषण तथा सामाग्री प्रबन्धन, का उत्तोलन संग्रथित अधिगम प्रारूप से सम्बद्ध है।

67. विद्यार्थियों के सीखने में जो रिक्तियाँ रह जाती हैं उनके निदान के बाद ..... होना चाहिए।

(a) सभी पाठों को व्यवस्थित रूप से दोहराना
(b) शिक्षार्थियों और अभिभावकों को उपलब्धि के बारे में बताना
(c) समुचित उपचारात्मक कार्य
(d) सघन अभ्यास कार्य

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (c) विद्यार्थियों के सीखने में जो रिक्तियाँ रह जाती हैं उनके निदान के बाद उनमें सुधार या समुचित उपचारात्मक कार्य की आवश्यकता होती है।

अवधान का अर्थ एवं विशेषताएँ

68. अवधान (ध्यान) सचेत रूप से ..... पर ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया है–

(a) व्यवहार (b) उद्दीपन
(c) भाव भंगिमा (d) प्रतिक्रिया

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (b) अवधान सचेत रूप से उद्दीपन पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रक्रिया है। इसकी विशेषताएँ निम्न हैं–

1. अवधान परिणाम भी है तथा एक प्रक्रिया भी है।
2. अवधान वातावरण के प्रति मानसिक सजगता, तत्परता तथा चेतनता में सहायक होता है।
3. अवधान की प्रकृति गत्यात्मक होती है अर्थात् प्राणी का अवधान एक उद्दीपक से दूसरे उद्दीपक पर परिवर्तित होता रहता है।

अवधान की दशाएँ एवं प्रकार

69. ड्राइविंग करते समय हमारे फोन का उपयोग करना किस प्रकार के अवधान का एक उदाहरण है?

(a) सिग्नल अवधान (b) विस्तृत अवधान
(c) चयनात्मक अवधान (d) विभक्त अवधान

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : ड्राइविंग करते समय हमारे फोन का उपयोग करना विभक्त अवधान (Divided attention) का एक उदाहरण है। विभक्त अवधान एक उच्च स्तरीय कौशल है जिसमें दो या दो से अधिक कार्यों पर एक साथ ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए खाना खाते समय टेलीविजन देखना।

70. जब कोई बच्चा अपना सारा ध्यान अपने कार्य पर केंद्रित करता है, और अन्य सूचनाओं की अनदेखी करता है, तो किस प्रकार का अवधान प्रदर्शित होता है?

(a) चयनात्मक अवधान (b) समकालिक अवधान
(c) विभक्त अवधान (d) सामान्य अवधान

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : जब कोई बच्चा अपना सारा ध्यान अपने कार्य पर केन्द्रित करता है और अन्य सूचनाओं की अनदेखी करता है, तो इसका मतलब है कि वह चयनात्मक अवधान प्रदर्शित कर रहा है। यह एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है तथा एक महत्त्वपूर्ण मानसिक उपकरण है क्योंकि यह बालक को अपने वातावरण द्वारा अभिभूत हुए बिना उद्दीपक को संसाधित करने की अनुमति देता है।

अवधान केन्द्रित करने के उपाय

71. ध्यान को केन्द्रित करने की आन्तरिक दशा है–

(a) अवधि (b) नवीनता
(c) रुचि (d) आकार

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) ध्यान केन्द्रित करने की आन्तरिक दशा रुचि होती है। व्यक्ति की रुचि जिस कार्य में अधिक होती है वह उस कार्य को अधिक ध्यान लगाकर करता है जिससे उसे आनन्द की अनुभूति होती है।

72. निम्नलिखित में से कौन-सी दशा/दशाएँ ध्यान को आकर्षित करने की आन्तरिक दशा नहीं है/ हैं?

(a) उद्दीपन की स्थिति (b) आवश्यकता
(c) (a) या (b) (d) (a) और (b)

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (a) उद्दीपन की स्थिति ध्यान आकर्षित करने की बाह्य दशा है जबकि आवश्यकता ध्यान आकर्षित करने की आंतरिक दशा है।

रुचि का अर्थ प्रकार एवं मापन

73. रुचि का सम्बन्ध है–

(a) योग्यता (b) अवधान
(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) मनोवैज्ञानिक क्रो एवं क्रो के अनुसार- ''रुचि वह आन्तरिक प्रेरक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया के प्रति ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।'' इस प्रकार रुचि का अवधान से सीधा तथा घनिष्ठ सम्बंध होता है।

74. वे कौन-से बाह्य कारक हैं जो एक बच्चे को कक्षा में रुचि लेने से रोकते हैं?

(a) भावना और मनोभाव (b) संस्कृति और प्रशिक्षण
(c) बच्चे का दृष्टिकोण (d) लक्ष्य और प्रयोजन

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) भावना और मनोभाव, बच्चे का दृष्टिकोण, लक्ष्य और प्रयोजन आंतरिक कारण हैं जो बच्चे को कक्षा में रूचि लेने से नहीं रोकते हैं जबकि संस्कृति एवं प्रशिक्षण बाह्य कारक हैं जो बच्चे को कक्षा में रूचि लेने से रोकते हैं।

75. निम्न में से कौन-सा कथन रुचि के बारे में सत्य नहीं है?

(a) रुचियाँ जन्मजात और अर्जित दोनों होती हैं
(b) रुचियाँ समय के अनुसार बदलती रहती हैं
(c) रुचियाँ योग्यताओं एवं अभिक्षमताओं से सम्बन्धित नहीं होती हैं
(d) रुचियाँ व्यवहार में आकर्षण एवं विकर्षण के प्रतिबिम्ब नहीं हैं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (d) व्यक्ति की रुचियों से उसके पसंद एवं नापसंद की जानकारी प्राप्त होती है। इससे व्यक्ति के व्यवहार में आकर्षण एवं विकर्षण का पता चलता है।

76. 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारम्भ करते हैं

(a) धर्म में (b) मानव शरीर में
(c) यौन सम्बन्धों में (d) विद्यालय में

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) 6-10 वर्ष की अवस्था में बालक की प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। इसलिए इस आयु वर्ग को विद्यालय में प्रवेश की अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था में बालक विद्यालय जाता है वहां पर मित्र बनाता है। इस अवस्था में पहली बार बालक अपने पारिवारिक परिवेश से निकल कर बाहरी परिवेश में प्रवेश करता है। इसलिए 6-10 वर्ष की अवस्था वाले बालकों में विद्यालय के प्रति रुचि बढ़ती है।

77. 'लॉरा, एक स्प्रेडशीट डिजाइन कर सकती है।' यह कथन अभिरुचि परीक्षण की किस विशेषता का सूचक है?

(a) कार्यस्थलीय (लिपिकीय) चिंतन
(b) तर्क शक्ति
(c) संगठनात्मक चिंतन
(d) अंक चिंतन

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : 'लॉरा, एक स्प्रेडशीट डिजाइन कर सकती है।' यह कथन अभिरुचि परीक्षण की तर्क शक्ति का सूचक है, क्योंकि स्प्रेडशीट बनाने में कम्प्यूटर एप्लीकेशन की जानकारी और तर्क क्षमता की जानकारी आवश्यक होती है। इसलिए यदि लॉरा स्प्रेडशीट डिजाइन कर सकती है तो यह उसके अभिक्षमता को दर्शाता है।

29.

बोध/संज्ञान, संवेग, संवेदनाएँ एवं प्रत्यक्षीकरण

बोध/संज्ञान का अर्थ एवं सिद्धांत

1. संज्ञानात्मक विकास का अर्थ है।

(a) अभियोग्यता का विकास (b) बच्चे का विकास

(c) शारीरिक कौशल का विकास (d) व्यक्तिगत विकास

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (a) संज्ञानात्मक विकास का सम्बंध बालक के अभियोग्यता के विकास से है जो मुख्यतः बौद्धिकता से सम्बंधित होता है।

2. संज्ञानात्मक विकास निम्न में से किसके द्वारा समर्थित होता है?

(a) जितना सम्भव हो उतनी आवृत्ति से संगत और सुनियोजित परीक्षाओं का आयोजन करना

(b) उन गतिविधियों को प्रस्तुत करना जो पारम्परिक पद्धतियों को सुदृढ़ बनाती है

(c) एक समृद्ध और विविधापूर्ण वातावरण उपलब्ध

(d) सहयोगात्मक की अपेक्षा वैयक्तिक गतिविधियों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना

DSSSB PRT

C TET 2014 (I-V)

Ans : (c) संज्ञानात्मक विकास एक समृद्ध और विविधापूर्ण वातावरण में होता है। वाइगोत्सकी ने अपने संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में इसकी विस्तृत व्याख्या की है। इनके अनुसार संज्ञानात्मक विकास सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में घटित होता है तथा उससे प्रभावित भी होता है।

3. पियाजे के सिद्धान्त के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित नहीं करेगा?

(a) भाषा (b) सामाजिक अनुभव

(c) परिपक्वन (d) क्रियाकलाप

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans: (a) पियाजे के सिद्धान्त अनुसार भाषा व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित नहीं करेगा। जबकि वाइगोत्सकी के अनुसार भाषा संवेगात्मक विकास को प्रभावित करता है।

4. निम्नलिखित में से कौन-सा सत्य है?

(a) शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछना संज्ञानात्मक विकास में बाधक है।

(b) विकास और सीखना समाज-सांस्कृतिक संदर्भों से अप्रभावित रहते हैं।

(c) शिक्षार्थी एक निश्चित तरीके से सीखते हैं।

(d) खेलना संज्ञान और सामाजिक दक्षता के लिए सार्थक है।

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (d) संज्ञानात्मक विकास जन्म से लेकर युवा होने तक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें बालक धीरे-धीरे संज्ञानात्मक विकास की निम्न अवस्था से उच्च अवस्था की ओर बढ़ता है साथ ही खेलने से बालक में सहयोगात्मक एवं प्रतिस्पर्द्धात्मक भावना का भी विकास होता है। अतः बालक का खेलना संज्ञान और सामाजिक दक्षता के लिए आवश्यक है।

5. वह कौन-सा स्थान है जहाँ बच्चे के 'संज्ञानात्मक' विकास को सबसे बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सकता है?

(a) विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण (b) सभागार

(c) घर (d) खेल का मैदान

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans:(a) विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण के द्वारा ही बच्चे के संज्ञानात्मक अर्थात् ज्ञान से संबंधी विकास को सबसे बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सकता है। क्योंकि विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण ही एक ऐसा स्थान है जहाँ उस शिक्षार्थी को ज्ञान संबंधी आवश्यकताओं और उसकी समस्याओं का निदान किया जा सकता है।

संवेग का अर्थ, विशेषताएँ एवं संवेगात्मक बुद्धि

6. एक भावात्मक रूप से संतुलित छात्र

(a) कक्षा-कक्ष में अपने सहपाठियों से मैत्रीपूर्ण सहसम्बन्ध रखता है

(b) कक्षा-कक्ष में अपने सहपाठियों से प्रभावी अन्तःक्रिया नहीं करता

(c) वह नवीन विचारों में कोई योगदान नहीं देता

(d) सहपाठियों द्वारा दिये गये विचारों का सम्मान नहीं करता

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (a) भावनात्मक रूप से संतुलित छात्र कक्षा-कक्ष में अपने सहपाठियों से मैत्रीपूर्ण सहसम्बन्ध रखता है। उनके विचारों, भावनाओं आदि का सम्मान करता है।

7. व्यवहार का 'संवेगात्मक' पहलू निम्नलिखित से सम्बन्धित होता है -

(a) सीखने के संज्ञानात्मक पक्ष से

(b) सीखने के भावात्मक पक्ष से

(c) सीखने के क्रियात्मक पक्ष से

(d) सीखने के मनोवैज्ञानिक पक्ष से

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) व्यवहार का 'संवेगात्मक' पहलू सीखने के भावात्मक पक्ष से सम्बंधित होता है।

8. ''संवेगात्मक रूप से अभिप्रेरित बच्चों'' की मुख्य विशेषता है-

(a) उनका अतिप्रक्रियात्मक स्वभाव

(b) उनका अंतर्मुखी स्वभाव

(c) अपने विचार प्रकट करने का संतुलित तरीका

(d) उनका विषादग्रस्त व्यवहार

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) संवेगात्मक रूप से अभिप्रेरित बालक में अस्थिरता की प्रकृति पाई जाती है। इस अस्थिरता का प्रमुख कारण बालक का अतिप्रक्रियात्मक स्वभाव होता है।

9. एक शिक्षिका का भावनात्मक बुद्धिलब्धांक ऊँचा है। इसका तात्पर्य है कि

(a) वह उच्च बुद्धि वाली है

(b) वह उच्च अनुशासनप्रिय है

(c) वह हास-परिहास वाली है

(d) वह सन्तुलित व्यवहार रखती है

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (d) संतुलित व्यवहार करने वाले शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धिलब्धांक ऊँचा होता है।

10. 'संवेग' क्या है?

(a) प्यार व स्नेह (b) क्रोध व भय

(c) उत्तेजना या भावों में परिवर्तन (d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB PRT

Bihar TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (c) **वुडवर्थ के अनुसार–** ''संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।'' **किम्बल यंग के अनुसार–** ''संवेग प्राणी की उत्तेजित मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दशा है, जिसमें शारीरिक क्रियाएँ और शक्तिशाली भावनाएँ किसी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट रूप से बढ़ जाती है।''

11. ..... के अतिरिक्त निम्नलिखित सभी तथ्य संकेत करते हैं कि बच्चा कक्षा में संवेगात्मक और सामाजिक परिपक्वता की ओर ले जाते हैं।

(a) हम उम्र साथियों के साथ मधुर संबंधों का विकास

(b) चुनौतीपूर्ण कार्यों पर ध्यान केन्द्रित करना और उन्हें दृढ़तापूर्वक करते रहना

(c) क्रोध तथा हर्ष दोनों को प्रभावी रूप से प्रबंधित करना

(d) हमउम्र साथियों के साथ प्रतियोगिता पर दृढ़तापूर्वक ध्यान केंद्रित करना

DSSSB PRT

C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (d) हमउम्र साथियों के साथ प्रतियोगिता पर दृढ़तापूर्वक ध्यान केन्द्रित करना बच्चे को न तो संवेगात्मक परिपक्वता की ओर ले जाता है और न ही उसकी सामाजिकता को ही बढ़ाता है। अतः शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे में अंधी प्रतियोगिता या प्रतिस्पर्धा की भावना न पनपने पाये।

12. एक विद्यार्थी अपने समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति आक्रामक व्यवहार करता है और विद्यालय के मानदण्डों को नहीं मानता। इस विद्यार्थी को ..... में सहायता की आवश्कता है।

(a) भावनात्मक क्षेत्र (b) उच्चस्तरीय चिंतन कौशल

(c) संज्ञानात्मक क्षेत्र (d) मनोगत्यात्मक क्षेत्र

DSSSB PRT

C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (a) जिन बालकों का संवेगात्मक विकास उचित प्रकार से नहीं होता है वे अपने समकक्ष बालकों के प्रति आक्रामक व्यवहार करते हैं और अपने समाज, विद्यालय, परिवार या समुदाय के मानदण्डों, आदर्शों या मूल्यों को नहीं मानते। अतः यह आवश्यक है कि बालकों के संवेगों या भावनाओं को सही दिशा में निर्देशित व प्रशिक्षित किया जाए।

13. संवेग के मनोविज्ञान में निम्नलिखित में से किस तथ्य पर सबसे कम ध्यान दिया गया है?

(a) संवेग विषयनिष्ठ (व्यक्तिपरक) भावना है और वह अलग–अलग व्यक्तियों में अलग–अलग होती है

(b) संवेग न केवल वैयक्तिक शिक्षार्थियों में बल्कि पूरी कक्षा में भी उत्पन्न होते हैं

(c) संवेग उत्तेजना और संज्ञानात्मक व्याख्या के जटिल पैटर्न होते हैं

(d) संवेगात्मक प्रक्रिया में शारीरिक के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएँ शामिल हैं

DSSSB PRT

C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (b) संवेग के मनोविज्ञान में सांवेगिक विकास को व्यक्तिगत रूप में ही समझने का प्रयास किया गया है। संवेग न केवल वैयक्तिक शिक्षार्थियों में बल्कि पूरी कक्षा में भी उत्पन्न होता है। अतः सांवेगिक विकास को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है।

14. निम्न में से संवेगात्मक विशेषताएं किस अवस्था की है?

(a) बचपन (b) किशोवस्था

(c) शिशुकाल (d) प्रौढ़ावस्था

DSSSB PRT

Ans : (b) संवेगात्मक विशेषताएँ सभी प्राणियों में और सभी अवस्था में पायी जाती हैं, किन्तु किशोरावस्था में बालक अपने संवेगों से संघर्ष करता है, उसके संवेगों में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं जिसके कारण समायोजन की समस्या उत्पन्न होती है।

15. गोलमैन निम्न में से किससे सम्बन्धित हैं?

(a) सामाजिक बुद्धि (b) संवेगात्मक बुद्धि

(c) आध्यात्मिक बुद्धि (d) सामान्य बुद्धि

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) स्वयं की एवं दूसरो की भावनाओ अथवा संवेगों को समझने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने की योग्यता है। डेनियल गोलमैन 'संवेगात्मक बुद्धि' नामक पुस्तक लिखकर इस ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया।

16. संवेग की उत्पत्ति.....से होती है।

(a) आदतों (b) मूल प्रवृत्तियों

(c) शारीरिक विकास (d) सम्प्रत्ययों के निर्माण

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

CG TET 2011 (I-V)

Ans : (b) मैक्डूगल के अनुसार ''व्यक्ति अनेक मूल प्रवृत्तियाँ लेकर संसार में आता है। इन मूल प्रवृत्तियों का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार के संवेगों से होता है।'' अर्थात् मूल प्रवृत्तियों से ही संवेगों की उत्पत्ति होती है। मैक्डूगल ने 14 प्रकार की मूल प्रवृत्तियों के बारे में बताया है जिससे संवेगों की उत्पत्ति होती हैं। जैसे-

मूल प्रवृत्तियाँ	संवेग
भागना	भय
युयुत्सा, युद्धप्रियता	क्रोध
शिशु रक्षा	वात्सल्य आदि।

17. संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है–

(a) क्रोध और भय

(b) स्नेह तथा प्रेम

(c) उत्तेजना या भावों में उथल-पुथल

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (c) संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है वेग से युक्त, अर्थात् जब व्यक्ति वेगवान होकर कार्य करता है तो उसे संवेग कहते हैं। अंग्रेजी भाषा में संवेग को Emotion कहते हैं। E का अर्थ अन्दर से तथा Motion का अर्थ गति है। अतः अंग्रेजी इमोशन शब्द का अर्थ आंतरिक भावों को बाहर की ओर गति देने से है।

18. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार निम्नलिखित में से किस विधि द्वारा मूल-प्रवृत्तियों में परिवर्तन लाया जा सकता है?

(a) सहसम्बन्ध (b) मार्गान्तरीकरण

(c) विलयन (d) नवीनीकरण

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (b) मार्गान्तरीकरण अर्थात पुनर्निर्देशन के द्वारा मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन लाया जा सकता है। मार्गानतरीकरण का अर्थ है मूलप्रवृत्ति की क्रियाशीलता को अच्छे कार्य या दिशा की ओर मोड़ना।

19. निम्न में से कौन-सा कौशल संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है?

(a) गतिक प्रक्रमण (b) विचार करना

(c) समानुभूति देना (d) याद करना

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (c) समानुभूति देना संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित है। डेनियल गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि के पाँच अन्वय बताये हैं– (1) स्व–बोध (2) स्वनियमन (3) सामाजिक कौशल (4) समानुभूति और (5) अभिप्रेरणा। समानुभूति देने से तात्पर्य, दूसरों की भावनाओं व परिप्रेक्ष्यों को समझना तथा उनके प्रति सक्रिय रुचि लेना है।

20. निम्नलिखित में से कौन–सा कौशल भावात्मक बुद्धि से सम्बद्ध नहीं है?

(a) भावनाओं की आलोचना

(b) कक्षा सहपाठियों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार

(c) भावनाओं के प्रति जागरूकता

(d) भावनाओं का प्रबन्धन

DSSSB PRT
Hariyana TET 2015 (I-V)
C TET (VI-VIII) 2014

Ans : (a) भावनात्मक बुद्धि से आशय अपनी भावनाओं को नियंत्रित व उचित निर्देशन प्रदान करना है न कि भावनाओं की आलोचना करना।

21. एक शिक्षिका का भावानात्मक बुद्धिलब्धांक ऊंचा है। इसका तात्पर्य है कि–

(a) वह उच्च बुद्धि वाली है।

(b) वह उच्च अनुशासनप्रिय है।

(c) वह हास–परिहास वाली है।

(d) वह संतुलित व्यवहार वाली है।

DSSSB PRT

Ans : (d) यदि शिक्षिका का भावनात्मक बुद्धि लब्धांक ऊँचा है तो वह संतुलित व्यवहार को प्रदर्शित करेगी। **गोलमैन** ने उच्च भावनात्मक बुद्धि लब्धांक वाले लोगों में पाँच तत्वों की पहचान की है– स्वबोध, स्व–नियमन, सामाजिक कौशल, अनुभूति तथा अभिप्रेरणा इन्हीं तत्त्वों के आधार पर व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित किया जा सकता है।

22. संवेदना के माध्यम से विशिष्ट उद्दीपन का चयन करने का अभिलक्षण है-

(a) अवधान (b) गहन चिंतन

(c) अवधारणा (d) बोध

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : संवेदना के माध्यम से विशिष्ट उद्दीपन का चयन करने का अभिलक्षण बोध है। संवेदना सबसे साधारण मानसिक अनुभव और मानसिक प्रक्रिया का सबसे सामान्य रूप है। यह ज्ञान प्राप्ति की पहली सीढ़ी है। संवेदना के लिए निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है–

- उद्दीपक की उपस्थिति
- ज्ञानेन्द्रिय क्रियाशीलता
- बोध स्नायु द्वारा उद्दीपक का समाचार मस्तिष्क तक पहुँचना
- मस्तिष्क द्वारा संवेदना के अर्थ का अज्ञात होना

संवेग के प्रकार एवं सिद्धांत

23. निम्नलिखित में से कौन-सा एक संवेग है?

(a) स्मृति (b) डर

(c) ध्यान (d) उत्तेजना

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : संवेग वास्तव में व्यक्ति के आंतरिक भावों के अचानक तीव्र होने तथा विवेक प्रक्रिया के नियंत्रण से मुक्त व्यवहार के परिलक्षित होने की स्थिति को अभिव्यक्त करता है। मैक्डूगल ने कुल 14 प्रकार के संवेग बताये हैं जिनकी उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती है। ये संवेग हैं– डर, क्रोध, घृणा, वात्सल्य, करूणा, कामुक्ता, आश्चर्य, आत्महीनता, आत्माभिमान, एकाकीपन, भूख, अधिकार, कृतिभाव, आमोद।

24. सहानुभूति कौशल में व्यक्ति–

(a) दूसरों की परेशानियों को समझता है
(b) दूसरों को पसंद करता है
(c) दूसरों की इच्छानुसार कार्य करता है
(d) हमेशा भ्रम में रहता है

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (a) सहानुभूति कौशल में व्यक्ति दूसरों की परेशानियों को समझता है। किसी व्यक्ति की ऐसी संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ जो दूसरे लोगों पर केन्द्रित होती है या जिसका रूझान दूसरे की तरफ होता है और जिससे करूणा की अनुभूति, हमदर्दी और चिंताएँ शामिल होती हैं उसे सहानुभूति कहते हैं।

25. निम्न में से कौन–सा एक संवेग है?

(a) उद्दीपक (b) स्मृति
(c) आमोद (d) ध्यान

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : मैक्डूगल द्वारा बताये गये चौदह प्रकार के संवेग निम्न हैं–

1. भय	2. क्रोध	3. घृणा	4. वात्सल्य
5. करूणा	6. कामुकता	7. आश्चर्य	8. आत्महीनता
9. आत्मभिमान	10. एकाकीपन	11. भूख	12. अधिकार
13. कृतिभाव	14. आमोद।		

26. रॉस ने संवेग को कितने प्रकार में बाँटा है?

(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) रॉस ने संवेग को तीन भागों में बांटा है
1. ज्ञानात्मक संवेग 2. क्रियात्मक संवेग
3. भावात्मक संवेग

27. शिशु के प्रति सहानुभूति एवं प्यार-दुलार से किस संवेग की उत्पत्ति होती है?

(a) क्रोध (b) भय
(c) अनुराग (d) आक्रामकता।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) शिशु के प्रति सहानुभूति एवं प्यार–दुलार से अनुराग संवेग की उत्पत्ति होती है।

28. मैक्डूगल के अनुसार मूल प्रवृत्ति 'जिज्ञासा' का सम्बद्ध संवेग कौन-सा है?

(a) भय (b) घृणा
(c) आश्चर्य (d) भूख

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) मैक्डूगल के अनुसार प्राणी की मूल प्रवृत्ति 'जिज्ञासा' का सम्बंन्ध आश्चर्य से होता है। व्यवहार के निर्धारण में मूल प्रवृत्तियों का योगदान महत्वपूर्ण होता है।

29. स्पीनोजा ने संवेग को कितने प्रकार से बाँटा है?

(a) 2 (b) 3
(c) 4 (d) 5

DSSSB PRT

Ans : (b) स्पीनोजा ने प्राथमिक संवेगों के रूप में हर्ष, शोक व इच्छा को ही स्वीकार किया है। वाटसन ने भय, क्रोध तथा प्रेम को प्राथमिक संवेग कहा है। मैक्डूगल ने कुल चौदह संवेगों का उल्लेख किया है– भय, क्रोध, घृणा वात्सल्य, करुणा, कामुकता, आश्यचर्य, आत्महीनता, आत्म–अभिमान, एकाकीपन, भूख, अधिकार, कृतभाव, आमोद।

30. भय संवेग उत्पन्न करने के लिए स्वाभाविक उद्दीपक है–

(a) दर्द
(b) अचानक उत्पन्न होने वाला उद्दीपक
(c) अंहकार युक्त स्थान
(d) तेजी से गिरती हुई वस्तु

DSSSB PRT

Ans : (b) भय संवेग उत्पन्न करने के लिए अचानक उत्पन्न होने वाला उद्दीपक, स्वभाविक उद्दीपक है। मैक्डूगल ने भय संवेग का सम्बन्ध 'पलायन या भागना' मूलप्रवृत्ति से स्थापित किया है।

31. मूल प्रवृत्तियों को चौदह प्रकार से किसने वर्गीकृत किया है?

(a) ड्रेवर (b) मैक्डूगल
(c) थॉर्नडाइक (d) वुडवर्थ

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) मैक्डूगल के अनुसार- ''मूलप्रवृत्ति, परम्परागत या जन्मजात मनोशारीरिक प्रवृत्ति है, जो प्राणी को किसी विशेष वस्तु को देखने उसके प्रति ध्यान देने, उसे देखकर एक विशेष प्रकार की संवेगात्मक उत्तेजना का अनुभव करने और उससे सम्बन्धित एक विशेष ढंग से कार्य करने या ऐसा करने की प्रबल इच्छा का अनुभव करने के लिए बाध्य करती है।'' मैक्डूगल का मूलप्रवृत्तियों का वर्गीकरण मौलिक और सर्वमान्य है। इन्होंने निश्चित शारीरिक क्रियाओं के आधार पर 14 मूलप्रवृत्तियों की सूची दी है और प्रत्येक मूलप्रवृत्ति से सम्बद्ध एक संवेग बताया है।

32. क्रोध व भय प्रकार हैं -

(a) अभिप्रेरणा (b) संवेग
(c) परिकल्पना (d) मूलप्रवृत्ति

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) **संवेग-** क्रोध व भय संवेग के प्रकार हैं। मैक्डूगल द्वारा इसी प्रकार 14 संवेगों की व्याख्या की गई है। संवेग एक जटिल अवस्था होती है जिसमें कुछ आंगिक प्रतिक्रियाएं जैसे- हृदय की गति में परिवर्तन रक्तचाप में परिवर्तन, सांस की गति में परिवर्तन इसके अलावा बाहरी अंगों में परिवर्तन होता है।

33. मूल प्रवृत्ति की एक प्रमुख विशेषता है, जो पायी जाती है–

(a) केवल मनुष्यों में
(b) केवल बिल्लियों में
(c) सभी प्राणियों में तथा यह जन्मजात व प्राकृतिक होती है
(d) केवल कलाकारों में

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (c) मूल प्रवृत्तियाँ सभी प्राणियों में पायी जाती है तथा यह जन्मजात व प्राकृतिक होती है। मैक्डूगल के अनुसार ''मूलप्रवृत्ति परम्परागत या जन्मजात मनोशारीरिक प्रवृत्ति है, जो प्राणी को किसी विशेष वस्तु को देखने, उसके प्रति ध्यान देने, उसे देखकर एक विशेष प्रकार की संवेगात्मक उत्तेजना का अनुभव करने और उससे सम्बन्धित एक विशेष ढंग से कार्य करने या ऐसा करने की प्रबल इच्छा का अनुभव करने के लिए बाध्य करती है।''

34. मैक्डूगल के अनुसार प्रत्येक मूल प्रवृत्ति से सम्बद्ध होता है

(a) संज्ञान (b) संवेग
(c) संवेदना (d) चिन्तन

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) मैकडूगल के अनुसार संवेग प्रत्येक मूल प्रवत्ति से सम्बद्ध होता है। चौदह मूल प्रवृत्तियों के चौदह ही संवेग हैं जैसे- भय, क्रोध, घृणा, वात्सल्य, करूणा, कामुकता आदि।

35. संवेग का कौन सा सिद्धान्त इस विचार को मानता है कि 'संवेगात्मक अनुभव संवेगात्मक व्यवहार' पर आधारित हैं-

(a) जेम्स लैंग सिद्धांत (b) हाइपोटोलसिक सिद्धांत
(c) सक्रियता सिद्धांत (d) अभिप्रेरण सिद्धांत

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) जेम्स-लैंग सिद्धांत के अनुसार पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। उदाहरण- यदि व्यक्ति बाघ या भालू को देखकर नहीं भागता, तो उसमें डर की अनुभूति भी नहीं होती है। अतः ''संवेगात्मक अनुभूति संवेगात्मक व्यवहार'' जैम्स-लैंग सिद्धांत पर आधारित है।

36. माँ और उसके बच्चे के बीच मजबूत बंधन का वर्णन करने के लिए किस शब्द का उपयोग किया जाता है?

(a) प्रेम (लव) (b) सुरक्षा (सिक्योरिटी)
(c) मातृत्व (मैटरनिटी) (d) ममता (अटैचमेंट)

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : माँ और उसके बच्चे के बीच मजबूत बंधन का वर्णन करने के लिए ममता (Attachment) शब्द का उपयोग किया जाता है। अटैचमेंट सिद्धांत मनुष्यों के बीच सम्बन्धों के विषय में एक मनोवैज्ञानिक, विकासवादी और नैतिक सिद्धांत है। यह सिद्धांत माता और बच्चे के बीच सम्बन्धों को सबसे उपयुक्त प्रकार से परिभाषित करता है। इस सिद्धांत का विकास जॉन बाल्बी द्वारा किया गया था।

सांवेगिक दशाएँ

37. जब बच्चे की दादी, उसे उसकी माँ की गोद से लेती है, तो बच्चा रोने लगता है। बच्चा ..... के कारण रोता है।

(a) वियोग दुश्चिंता (b) सामाजिक दुश्चिंता
(c) संवेगात्मक दुश्चिंता (d) अजनबी दुश्चिंता

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (c) चूँकि संवेगों की उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती है और मूल प्रवृत्तियाँ बालक की स्वभाविक व जन्मजात क्रियाएँ होती हैं। एक छोटा बच्चा अपनी भावनाएँ रोकर व्यक्त करता है। अतः जब बच्चे की दादी उसे उसकी माँ की गोद से लेती है तो बच्चे में संवेगात्मक दुश्चिंता की उत्पत्ति होती है जिसको व्यक्त करने के लिए बच्चा रोने लगता है।

38. आकलन प्रक्रिया के दौरान देविका की उत्तेजना ऊर्जापूर्ण होती है जबकि राजेश की उत्तेजना उनुत्साही। उन दोनों के भावात्मक अनुभवों का अन्तर किससे सम्बद्ध है?

(a) अनुकूलन का स्तर (b) विचारों का घनत्व
(c) समयान्तराल (d) भावनाओं की पराकाष्ठा

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) उद्दीपन अनुकूल होने पर भावनाएँ स्वतः उत्तेजित हो जाती है और व्यक्ति कार्य करने (अनुक्रिया) के लिए प्रेरित होता है। किन्तु जब उद्दीपन प्रतिकूल होता है तो भावनाएँ उत्तेजित नहीं होती है और व्यक्ति उद्दीपन के प्रति निष्क्रिय ही बना रहता है।

39. सी.बी.एस.ई. शिक्षार्थियों के लिए व्यक्तिगत गतिविधियों के स्थान पर सामूहिक गतिविधियों की संस्तुति करती है। ऐसा करने के पीछे विचार हो सकता है –

(a) प्रत्येक शिक्षार्थी के स्थान पर समूह में अवलोकन द्वारा शिक्षक के कार्य को सरल बनाने के लिए
(b) विद्यालयों के पास उपलब्ध समय को प्रासंगिक बनाना जबकि उनमें से अधिकांश के पास व्यक्तिगत गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं होता।
(c) गतिविधि की ढाँचागत लागत को कम करना।
(d) व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के प्रति नकारात्मक संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से उबारना जो संपूर्ण अधिगम पर सामान्यीकृत हो सकती है।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans:(d) सी.वी.एस.ई. शिक्षार्थियों के लिए व्यक्तिगत गतिविधियों के स्थान पर सामूहिक गतिविधियों की संस्तुति करती है ऐसा करने के पीछे जो विचार है वह यह कि व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के प्रति नकारात्मक सवेंगात्मक प्रतिक्रियाओं से उबारना जो संपूर्ण अधिगम पर सामान्यीकृत हो सकती है।

बोध, संवेग एवं अधिगम में अंतर्सम्बन्ध

40. जजोंक का यह मानना है कि संज्ञान और भाव ..... होते हैं।

(a) अन्योन्याश्रित (b) स्वतंत्र
(c) अंतर्संबंधित (d) एकीकृत

C TET (VI-VIII) 9 Dec. 2018

Ans. (b) : जजोंक का यह मानना है कि संज्ञान और भाव स्वतंत्र होते हैं। जजोंक के अनुसार संवेग का संज्ञान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और न ही संज्ञान संवेग को प्रभावित करती है। ये दोनों स्वतंत्र होते हैं और स्वतंत्र रहकर मनुष्य के व्यवहारों को नियंत्रित करते हैं।

41. नीचे लिखी हुई स्थिति किस सिद्धांत को दर्शाती है?
''जो विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, वे महसूस करते हैं कि वे ''पर्याप्त रूप से अच्छे'' नहीं हैं और हतोत्साहित महसूस करते हैं। तब उनमें बिना प्रयास के कार्य को आसानी से छोड़ देने की संभावना है।''

(a) संज्ञान एवं संवेग संबंधित नहीं हैं।
(b) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण अलग नहीं हैं।
(c) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण संबंधित नहीं हैं।
(d) संज्ञान एवं संवेग अलग नहीं हैं।

C TET (I-V) 7 Jul. 2019

Ans : (d) ''जो विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, वे महसूस करते हैं कि वे ''पर्याप्त रूप से अच्छे'' नहीं हैं और हतोत्साहित महसूस करते हैं। तब उनमें बिना प्रयास के कार्य को आसानी से छोड़ देने की संभावना है।'' यह उक्ति इस सिद्धान्त को प्रदर्शित करती है कि संज्ञान एवं संवेग अलग नहीं हैं। संवेग और संज्ञान में नकारात्मक सहसम्बन्ध होता है। सांवेगिक दशा में व्यक्ति की विचार प्रक्रिया या तो शिथिल हो जाती है अथवा लुप्तप्राय हो जाती है। बुद्धि तथा विवेक एवं चिंतन तथा तर्क प्रक्रिया का उसके व्यवहार पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रहता है। यही कारण है कि व्यक्ति उच्च सांवेगिक दशा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है।

42. संज्ञान एवं संवेग के बीच किस प्रकार संबंध होता है?

(a) एक दिशीय - संवेग संज्ञान को प्रभावित करते हैं
(b) एक दिशीय – संज्ञान संवेगों को प्रभावित करता है
(c) द्विदिशीय – दोनों के बीच एक गतिशील पारस्पारिक क्रिया होती है
(d) एक दूसरे से स्वतंत्र हैं

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (c) संज्ञान एवं संवेग के बीच द्विदिशीय- दोनों के बीच एक गतिशील पारस्परिक क्रिया का संबन्ध होता है। संवेग एवं संज्ञान एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और प्रभावित भी होते हैं। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति उत्तेजित दशा में होता है तो उसके सोचने, समझने और स्मरण करने की क्षमता का लोप हो जाता है। इसी प्रकार जब व्यक्ति में उच्च संज्ञानात्मक योग्यता होती है तो वह अपने संवेगों पर उचित नियंत्रण भी स्थापित कर लेता है।

43. संवेग एवं संज्ञान एक दूसरे से _____ हैं।

(a) सन्निहित (b) संबंधित नहीं
(c) पूर्णतया अलग (d) स्वतंत्र

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (a) संवेग एवं संज्ञान एक दूसरे से सन्निहित हैं। सांवेगिक दशा में व्यक्ति की विचार प्रक्रिया या तो शिथिल हो जाती है अथवा लुप्तप्राय हो जाती है। बुद्धि तथा विवेक एवं चिंतन तथा तर्क प्रक्रिया का उसके व्यवहार पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रहता है, वह उचित व अनुचित का ठीक ढंग से विचार नहीं कर पाता है।

44. अधिगमकर्ता में बढ़ते हुए क्रोध को रोकने के लिए अध्यापक को चाहिए–

(a) कि उसके सभी हितों की सुरक्षा करें भले ही वे अनुचित हों।
(b) कि बालक के दिन-प्रतिदिन के मामलों में कोई हस्तक्षेप न करे।
(c) कि वह उसे अनदेखा कर दें
(d) कि बालक को क्रोध करने पर दण्ड दें

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (b) बालक के दिन प्रतिदिन के मामलों में अध्यापक द्वारा हस्तक्षेप न करके बालक के बढ़ते हुए क्रोध को रोका जा सकता है।

45. संज्ञान और संवेग के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन–सा कथन सही है?

(a) संज्ञान और संवेग एक–दूसरे से स्वतंत्र प्रक्रियाएं हैं।
(b) संज्ञान और संवेग परस्पर जुड़े हैं और एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।
(c) संज्ञान संवेगों को प्रभावित करता है, किंतु संवेग संज्ञान को प्रभावित नहीं करता।
(d) संवेग संज्ञान को प्रभावित करते हैं किंतु संज्ञाान संवेगों को प्रभावित नहीं करता।

DSSSB PRT
C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (b) संज्ञान (Cognition) और संवेग (Emotion) परस्पर जुड़े हुए हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। संज्ञान कुछ मानसिक प्रक्रियाओं का सामूहिक नाम है, जिनमें ध्यान, स्मरण, निर्णय लेना, भाषा निपुणता और समस्या हल करना शामिल है। जबकि संवेग व्यक्ति के आंतरिक भावों का बाह्य प्रदर्शन है जिसके तीव्र होने पर विवेक प्रक्रिया नियंत्रण से मुक्त व्यवहार के रूप में परिलक्षित होते हैं।

46. परीक्षा में तनाव–निष्पत्ति को प्रभावित करता है। यह तथ्य निम्नलिखित में से किस प्रकार के सम्बन्ध को स्पष्ट करता है?

(a) संज्ञान–भावना (b) तनाव–विलोपन
(c) निष्पत्ति–चिन्ता (d) संज्ञान–प्रतियोगिता

DSSSB PRT

Ans : (a) तनाव को किसी ऐसे शारीरिक, रासायनिक या भावनात्मक कारक के रूप में समझा जा सकता है, जो शारीरिक तथा मानसिक बेचैनी उत्पन्न करता हो। हल्के मात्रा में तनाव फायदेमंद होता है। तनाव दो प्रकार का होता है 'यूस्ट्रेस' (सकारात्मक तनाव) तथा 'डिस्ट्रेस' (नकारात्मक तनाव), जिसका सामान्य अर्थ चुनौती तथा अधिक मानसिक बोझ होता है। जब तनाव अनियंत्रित हो जाता है तब नकानात्मक प्रभाव दिखता है, जिसका प्रभाव सीधा संज्ञान या बोध पर पड़ता है तथा निष्पत्ति नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है।

47. सीमा परीक्षा में A+ ग्रेड प्राप्त करने के लिए अति इच्छुक है। जब वह परीक्षा भवन में दाखिल होती है तथा परीक्षा प्रारम्भ होती है, वह अत्यधिक नर्वस हो जाती है। उसके पाँव ठण्डे पड़ जाते हैं, उसके हृदय की धड़कन बहुत तेज हो जाती है और वह उचित तरीके से उत्तर नहीं दे पाती इसका मुख्य कारण हो सकता है

(a) शायद वह अकस्मात् संवेगात्मक आवेग का सामना नहीं कर सकती
(b) शायद वह अपनी तैयारी के बारे में बहुत आत्मविश्वासी नहीं है
(c) शायद वह इस परीक्षा के परिणाम के बारे में बहुत अधिक सोचती है
(d) निरीक्षक शिक्षिका जो ड्यूटी पर है, वह उसकी कक्षा अध्यापिका हो सकती है और वह स्वभाव में बहुत कठोर है

DSSSB PRT

Ans : (a) यदि शिक्षार्थी का संवेगात्मक विकास ठीक प्रकार से नहीं हुआ रहता है तथा उसके सामने अचानक संवेगात्मक परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है तो वह उस परिस्थिति का सामना नहीं कर पाता है और उसके पाँव ठण्डे तथा हृदय की गति तेज हो जाती है। इसका प्रभाव उसके निष्पादन पर पड़ता है।

48. भावनाओं, अधिगम और अभिप्रेरणा के संदर्भ में निम्नलिखित में से किस कथन से आप सहमत है?

(a) सीखने के लिए भावनाओं को अलग रख देना चाहिए।
(b) प्रेरणा और सीखने के साथ भावनाएँ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हैं।

(c) सीखने के लिए अभिप्रेरित करने भावनाओं की कोई भूमिका नहीं होती।

(d) कुछ नया सीखना इस पर निर्भर करता है कि उसमें हम कितने निपुण हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (b) प्रेरणा एवं अधिगम (सीखने) के साथ भावनाए घनिष्ठ रुप से जुड़ी होती हैं क्योंकि अधिगम के लिए प्रेरणा की अति आवश्यकता होती है जो व्यक्ति के संवेगात्मक एवं संज्ञानात्मक व्यवहार से प्रेरित होती है।

49. प्राथमिक विद्यालय के बच्चे उस वातावरण में सबसे प्रभावी ढंग से सीखेंगे–

(a) जहाँ उनकी संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और वे अनुभव करते हैं कि वे महत्त्वपूर्ण हैं

(b) जहाँ शिक्षक एकाधिकारवादी है और स्पष्ट आदेश देता है कि क्या किया जाना चाहिए

(c) जहाँ मूलरूप से पढ़ने, लिखने और गणित की संज्ञानात्मक कुशलताओं पर ही ध्यान केन्द्रित होता है और बल दिया जाता है

(d) जहाँ शिक्षक सारे अधिगमों में आगे होता है और विद्यार्थियों से निष्क्रिय रहने की अपेक्षा करता है

C TET Paper - I (Class I-V) 18 Sep 2016

Ans : (a) बालक वहाँ बेहतर तरीके से सीखते हैं जहाँ उनकी संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, वे अनुभव करते हैं कि वे महत्वपूर्ण हैं इसे ही बाल केन्द्रित शिक्षा कहते हैं जहाँ बालक को सबसे महत्वपूर्ण समझा जाता है।

50. बच्चों में संवेगात्मक समायोजन प्रभावी होता है

(a) व्यक्तित्व निर्माण में (b) कक्षा शिक्षण में

(c) अनुशासन में (d) उपरोक्त सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) बच्चों में संवेगात्मक समायोजन प्रभावी होता है–

- व्यक्तित्व निर्माण में
- कक्षा शिक्षण में
- अनुशासन में
- व्यवहार नियंत्रण आदि में।

51. एक छात्र कक्षा में नहीं सीख पा रहा है, क्योंकि उसका पालतू पशु ठीक नहीं है। अधिगम को प्रभावित करने वाला सबसे संभावित कारक है:

(a) अभ्यास की कमी (b) प्रतिकूल भावनात्मक स्थिति

(c) नींद की कमी (d) पोषण की कमी

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : यदि कोई छात्र कक्षा में नहीं सीख पा रहा है क्योंकि उसका पालतू पशु ठीक नहीं है तो इसका मतलब है कि उसका अधिगम प्रतिकूल भावनात्मक स्थिति से प्रभावित हो रहा है क्योंकि जब कोई बालक भावनात्मक रूप से स्थिर नहीं होता है तब उसका अधिगम प्रभावित होता है।

संवेदना का अर्थ, विशेषताएँ एवं प्रकार

52. पूर्व अनुभव के आधार पर संवेदना को अर्थ प्रदान करना कहलाता है

(a) संवेदना (b) प्रत्यक्षज्ञान

(c) अभिप्रेरणा (d) कल्पना

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) पूर्व अनुभव के आधार पर संवेदना को अर्थ प्रदान करना प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है।

प्रत्यक्षीकरण का अर्थ एवं विशेषताएँ

53. फ एवं व, म एवं न अक्षरों की ध्वनियों में अन्तर न कर पाना, अधिगम की समस्या सम्बन्धित है

(a) अवधान केन्द्रण की (b) स्मृति की

(c) प्रत्यक्षीकरण की (d) इनमें से सभी

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) जब कोई बालक किसी ध्वनि का प्रत्यक्षण ठीक ढंग से नहीं कर पाता है तो वह उन ध्वनियों में अंतर भी नहीं कर पाता है। यह अन्य कारकों पर भी निर्भर करता है जैसे- अस्पष्ट ध्वनि, अवधान की कमी, समझ का स्तर आदि।

EXAM POINTS

संवेग मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण इकाई है। मनुष्य को कार्य करने की प्रेरणा संवेगों से मिलती है। संवगों के उत्पन्न होने पर व्यक्ति, शारीरिक एवं मानसिक क्रिया करता है।

- वाटसन नामक वैज्ञानिक ने अध्ययन करके पाया कि नवजात शिशु के तीन संवेग होते है **–भय, क्रोध, प्रेम**
- **ऋणात्मक संवेग कहा जाता है –घृणा, क्रोध, भय**

नोट- तीन माह के उम्र में 'दुख' और 'आनन्द' संवेग का जन्म होता है और इन संवेगो से अन्य संवेग की उत्पत्ति।

-


- मैक्डूगल के अनुसार मूल प्रवृत्ति या संवेग होती है **-14**

मूल प्रवृत्तियों की संख्या 14 है इस प्रकार चौदह संवेग भी है जो आकारिक रूप से निम्नवत है–

सकारात्मक मूल प्रवृत्ति	सकारात्मक संवेग	नकारात्मक मूल प्रवृत्ति	नकारात्मक संवेग
संतान कामना	वात्सल्य	युयुत्सा	क्रोध
शरणागति	करूणा	निवृत्ति	घृणा
जिज्ञासा	आश्चर्य	पलायन	भय
ह्रास	आमोद	दैन्य	आत्महीनता
गौरव	आत्माभिमान	सामूहिकता	एकांकीपन
संग्रहण	स्वामित्व	भोजन की तलाश	भूख
रचनाधार्मिकता	कृतिभाव	काम प्रवृत्ति	कामुकता

संवेग की विशेषताएं –

1. संवेग से कार्य करने की प्रेरण शक्ति मिलती है।
2. संवेगों का स्थानान्तरण होता है।
3. सोचने-समझने की क्षमता का लाभ लोप हो जाता है।
4. संवेगों की अस्थिरता।
5. संवेग व्यक्तिगत होता है।
6. संवेग व्यापक होता है।
7. संवेग की स्थिति में शारीरिक परिवर्तन होता है।
8. संवेग सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होता है।
9. संवेग का सम्बन्ध क्रियात्मक प्रवृत्ति से है। जैसे- आमोद में व्यक्ति हंसता है।
10. संवेग का सम्बन्ध मूल प्रवृत्तियों से रहता है। जैसे संतान कामना से वात्सल्य
11. संवेग में सुख और दुःख निहित रहता है।
12. संवेग धनात्मक और ऋणात्मक रूप में होते है।
13. संवेग प्राकृतिक होते है।
14. संवेग विकसित होते है।

- भारतीय मनोवैज्ञानिक के अनुसार संवेग है **–राग, द्वेष**
- बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास हो जाता है **–5 वर्ष**
- 'शरणागति है **–मूल-प्रवृत्ति**
- 'पलायन है **–मूल-प्रवृत्ति**
- ''किशोरावस्था के आगमन का मुख्य चिन्ह संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन होता है।'' मत है **–कोल एवं ब्रूस**

■ ''किसी व्यक्ति ने स्वयं अपने बारे में तथा अपने पर्यावरण के बारे में जो विचार, ज्ञान, व्याख्या, समझ व धारणा अर्जित की है वही संज्ञान है'' यह कथन किस विद्वान का है– **हिलगार्ड का**

■ ..... सिद्धांत यह स्वीकारता है कि संवेग एवं शारीरिक अनुक्रिया का संबंध कारण एवं प्रभाव से है– **जेम्स-लैंग का**

■ संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों में से सत्य है/हैं– **परिवार की पृष्ठभूमि, वंशानुक्रम एवं संरचनात्मक कारक व सामाजिक वर्ग**

■ ''संवेग, चेतना की वह अवस्था है, जिसमें रागात्मक तत्व की प्रधानता रहती है।'' यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है– **जे. एस. रॉस**

■ बच्चों में संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति किस समय से प्रारम्भ हो जाती है– **जन्म के समय से**

■ संवेगों के घटकों में सम्मिलित हैं– **शारीरिक परिवर्तन, संवेगात्मक अभिव्यक्ति, संवेगात्मक भावनाएँ**

■ बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को सबसे अच्छे तरीके से परिभाषित किया जा सकता है– **विद्यालय एवं कक्षा में**

■ बच्चों में व्यक्तित्व निर्माण में, कक्षा शिक्षण में एवं अनुशासन में प्रभावी होता है– **संवेगात्मक समायोजन**

■ क्रोध व भय है– **संवेग**

■ संवेगों की उत्पत्ति होती है– **मूलप्रवृत्ति से**

■ संज्ञानात्मक विकास का अर्थ है– **अभियोग्यता का विकास**

■ चिन्तन अनिवार्य रूप से है एक– **संज्ञानात्मक गतिविधि**

■ संज्ञानात्मक क्रिया की दी गयी सूचना के विश्लेषण के लिए प्रयोग में लायी जाती है– **अन्तर करना**

■ संज्ञानात्मक उद्देश्य की पदानुक्रमिक व्यवस्था है– **ब्लूम की टैक्सोनामी**

■ ज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में योगदान के लिए जाने जाते हैं– **पियाजे**

■ संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है, यह कथन है– **वुडवर्थ का**

■ पद संवेगात्मक क्रांति जुड़ा हुआ है– **किशोरावस्था से**

■ बच्चे का संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास अच्छे से होगा– **जब बच्चे को महत्वपूर्ण माना जाए एवं उसकी भावनाओं का सम्मान किया जाए**

■ अधिगम को एक सामाजिक गतिविधि के रूप में ग्रहण करते हैं– **संज्ञानात्मक प्रशिक्षुता तथा शैक्षिक संवाद**

■ उत्तेजना या भावों में उथल-पुथल शाब्दिक अर्थ है– **संवेग शब्द का**

■ शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक योग्यता एवं थकान, ये सभी कारक प्रभावित करते हैं– **संवेगात्मक विकास को**

■ बच्चों के संवेगात्मक विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है– **कक्षा-कक्ष का प्रजातान्त्रिक परिवेश**

■ ''कोई भी नाराज हो सकता है– यह आसान है, परन्तु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर, सही के उद्देश्य के लिए तथा सही तरीके से नाराज होना आसान नहीं है।'' यह सम्बन्धित है– **संवेगात्मक विकास से**

■ संज्ञान और संवेग के बारे में सही कथन है– **संज्ञान और संवेग परस्पर जुड़े हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं**

■ पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा वस्तु-स्थायित्व को प्रदर्शित करता है– **संवेदी प्रेरक चरण**

■ बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ का सृजन करते हैं। इसका श्रेय जाता है– **पियाजे को**

■ रॉस ने संवेग को बाँटा है– **3 प्रकार में**

■ संज्ञान और सामाजिक दक्षता के लिए सार्थक हैं– **खेलना**

■ परीक्षा में तनाव निष्पत्ति को प्रभावित करता है यह तथ्य स्पष्ट करता है– **सज्ञान भावना सम्बन्ध**

■ स्वयं की भावनाओं तथा संवेगों को नियन्त्रित करने से सम्बन्धित बुद्धि को कहा जायेगा– **अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि**

■ सीमा परीक्षा में A+ ग्रेड प्राप्त करने के लिए अति इच्छुक है। जब वह परीक्षा भवन में दाखिल होती है तथा जब परीक्षा प्रारम्भ होती है, वह अत्यधिक नर्वस हो जाती है। उसके पाँव ठण्डे पड़ जाते हैं, उसके हृदय की धड़कन बहुत तेज हो जाती है और वह उचित तरीके से उत्तर नहीं दे पाती। इसका मुख्य कारण हो सकता है– **शायद वह अकस्मात् संवेगात्मक आवेग का सामना नहीं कर सकती**

■ सी. बी. एस. ई. शिक्षार्थियों के लिए व्यक्तिगत गतिविधियों की संस्तुति करती है। ऐसा करने के पीछे विचार हो सकता है– **व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के प्रति नकारात्मक संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से उबारना जो संपूर्ण अधिगम पर सामान्यीकृत हो सकती है**

30.

अभिप्रेरणा और अधिगम

अभिप्रेरणा की अवधारणा

1. कार्य को आरम्भ करने, जारी रखने और नियमित करने की प्रक्रिया है -

(a) प्रेरणा (b) संवेदना

(c) सीखना (d) प्रत्यक्षीकरण

UPTET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) ''अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारम्भ करने, जारी रखने अथवा नियन्त्रित करने या नियमित करने की प्रक्रिया है।''

-गुड के अनुसार

2. किसी उद्दीपन के निरन्तर दिये जाने से व्यवहार में होने वाला अस्थायी परिवर्तन कहलाता है

(a) अभ्यस्तता (b) अधिगम

(c) अस्थायी अधिगम (d) अभिप्रेरणा

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) अभिप्रेरणा एक अस्थायी परिवर्तन होता है क्योंकि आवश्यकता से अभिप्रेरणा उत्पन्न होती है और आवश्यकता पूर्ण होने के बाद अभिप्रेरणा भी शांत हो जाती है।

3. एक आन्तरिक बल जो प्रोत्साहित करता है और व्यवहारपरक प्रतिक्रिया के लिए बाध्य करता है एवं उस प्रतिक्रिया को विशिष्ट दिशा उपलब्ध कराता है, हैं

(a) अभिप्रेरण (b) अध्यवसाय

(c) संवेग (d) वचनबद्धता

DSSSB PRT
C TET 2014 (I-V)

Ans : (a) अभिप्रेरण एक आंतरिक बल है जो व्यक्ति को आंतरिक रूप से प्रोत्साहित करता है और व्यवहारपरक प्रतिक्रिया के लिए बाध्य करता है एवं उस प्रतिक्रिया को विशिष्ट दिशा उपलब्ध कराता है।

4. ..... प्रेरणाएँ अनुभूतियों के सन्तुष्टिकरण की अवस्थाओं तक पहुँचने और वैयक्तिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की आवश्यकता को सम्बोधित करती है।

(a) प्रभावी (b) भावात्मक

(c) संरक्षण–उन्मुखी (d) सुरक्षा–उन्मुखी

DSSSB PRT
C TET 2014 (I-V)

Ans : (b) भावात्मक या संवेगात्मक प्रेरणाएँ अनुभूतियों के संतुष्टीकरण की अवस्थाओं तक पहुँचने और वैयक्तिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की आवश्यकता को सम्बोधित करती है।

5. राजेश गणित की समस्या को हल करने के लिए पूरी तरह से संघर्ष कर रहा है। उसका आन्तरिक बल जो उसे उस समस्या को पूरी तरह से हल करने के लिए विवश करता है, ... के रूप में जाना जाता है।

(a) प्रेरक (b) व्यक्तित्व विशेषक

(c) संवेग (d) प्रत्यक्षण

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (a) राजेश गणित की समस्या को हल करने के लिए पूरी तरह से संघर्ष कर रहा है। उसका आंतरिक बल जो उसे समस्या को पूरी तरह से हल करने के लिए विवश करता है, प्रेरक के रूप में जाना जाता है। प्रेरक वह उद्दीपक है जो व्यक्ति को किसी लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है।

6. ''---------- छात्र में रुचि उत्पन्न करने की कला है।''

(a) शिक्षण (b) सहानुभूति

(c) समदृष्टि (d) प्रेरणा

UPTET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (d) प्रेरणा पाकर बच्चे पढ़ाई में रुचि लेने लगते हैं जिससे ज्ञानार्जन की गति भी तीव्र हो जाती है। इसी सन्दर्भ में थॉमसन ने लिखा है- ''प्रेरणा छात्र में रुचि उत्पन्न करने की कला है।''

7. कार्य को आरम्भ करने, जारी रखने और नियमित करने की प्रक्रिया है -

(a) प्रेरणा (b) संवेदना

(c) सीखना (d) प्रत्यक्षीकरण

UPTET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) ''अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारम्भ करने, जारी रखने अथवा नियन्त्रित करने या नियमित करने की प्रक्रिया है।''

-गुड के अनुसार

8. प्रेरणा एक ..... स्थिति है–

(a) मनोवैज्ञानिक (b) भौतिक

(c) प्राकृतिक (d) खंडित

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (a) प्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक स्थिति है। यह एक ऐसी परिकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो प्राणी के व्यवहार के निर्धारण व संचालन से सम्बन्ध रखती है। यह एक आन्तरिक शक्ति होती है जो प्राणी को किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य को करने के लिए बाध्य करती है। यह व्यक्ति के अंदर ऊर्जा परिवर्तन है जो भावात्मक जागृति तथा पूर्व अपेक्षित उद्देश्य अनुक्रियाओं से निर्धारित होता है।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन प्रेरणा को अच्छी तरह परिभाषित करता है?

(a) किसी व्यक्ति की आंतरिक स्थिति जो व्यवहार को उत्तेजित करती है, निर्देशित करती है और बनाए रखती है।

(b) कठिन परिस्थिति का जवाब देने के लिए एक भावनात्मक शक्ति की स्थिति।

(c) अनुशासन प्रदर्शित करने की क्षमता

(d) किसी कार्य को जल्दी और उम्दा तरीके से करने की क्षमता

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : अभिप्रेरणा एक ऐसी परिकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो प्राणी के व्यवहार के निर्धारण व संचालन से सम्बन्ध रखती है। यह किसी व्यक्ति की आंतरिक स्थिति है जो व्यवहार को उत्तेजित करती है, निर्देशित करती है और बनाए रखती है।

ब्लेयर, जोन्स तथा सिम्पसन के अनुसार– ''अभिप्रेरणा वह प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाले व्यक्ति की आन्तरिक ऊर्जाएँ अथवा आवश्यकताएँ उसके वातावरण के विभिन्न लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती है।''

अभिप्रेरणा के संघटक एवं प्रकार

10. इनमें से कौन सा बाह्य अभिप्रेरणा का एक उदाहरण है?

(a) ''मैं बहुत अधिक सीखती हूँ जब मैं अपना गृहकार्य करती हूँ।''

(b) ''गृहकार्य करने से मैं अपनी अवधारणाओं को अच्छी तरह से समझ पाती हूँ।''

(c) ''मैं अपना गृहकार्य पूरा करती हूँ क्योंकि शिक्षक प्रत्येक नियत कार्य के लिए हमें अंक देते हैं।''

(d) ''मैं अपना गृहकार्य करना पसंद करती हूँ क्योंकि यह बहुत आनन्ददायक है।''

C TET (VI-VIII) 7 Jul. 2019

Ans. (c) : ''मैं अपना गृहकार्य पूरा करती हूँ क्योंकि शिक्षक प्रत्येक नियत कार्य के लिए हमें अंक देते हैं।'' यह कथन बाह्य अभिप्रेरणा का उदाहरण है। बाह्य अभिप्रेरणा में बालक किसी कार्य को अपनी स्वयं की इच्छा से न करके, किसी दूसरे की इच्छा या बाह्य प्रभाव के कारण करता है। शिक्षक–प्रशंसा, निन्दा, पुरस्कार प्रतिद्वन्दिता, अंक आदि का प्रयोग करके बालक को बाह्य अभिप्रेरणा प्रदान करता है। इस अभिप्रेरणा को नकारात्मक अभिप्रेरणा भी कहते हैं।

11. पुरस्कार किस प्रकार की अभिप्रेरणा है?

(a) धनात्मक एवं प्रत्यक्ष (b) धनात्मक एवं अप्रत्यक्ष

(c) ऋणात्मक एवं प्रत्यक्ष (d) ऋणात्मक एवं अप्रत्यक्ष

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (a) पुरस्कार धनात्मक एवं प्रत्यक्ष अभिप्रेरणा है। पुरस्कार प्राप्त करना एक आनन्ददायक तथा सुखद अनुभूति है जिसके द्वारा वांछित कार्यों को आनन्ददायक, आकर्षक तथा पुनरावृत्ति योग्य बनाया जाता है साथ ही पुरस्कार किसी व्यक्ति को तत्काल और प्रत्यक्ष रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। पुरस्कार दो प्रकार के, भौतिक पुरस्कार तथा सामाजिक पुरस्कार हो सकते हैं।

12. निम्नलिखित में से कौन–सा एक सामाजिक प्रेरक है?

(a) आत्मगौरव (b) प्रेम

(c) भूख (d) प्यास

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (a) सामाजिक अभिप्रेरक सामाजिक मान्यताओं, सम्बन्धों, परिस्थितियों, आदर्शों आदि के कारण उत्पन्न होते हैं। जैसे- प्रतिष्ठा, सुरक्षा, संग्रह, आत्मगौरव आदि। भूख, प्यास जन्मजात अभिप्रेरक हैं जबकि प्रेम जैविक अभिप्रेरक है।

13. मनुष्य की सामान्य चाहतों व इच्छाओं को क्या कहा जाता है?

(a) अभिप्रेरक (b) आवश्यकता

(c) अन्तर्नोद (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) मनुष्य की सामान्य चाहतों व इच्छाओं को अंतर्नोद कहा जाता है। अंतर्नोद वस्तुतः आवश्यकताओं पर आधारित मनोवैज्ञानिक संप्रत्यय है। प्राणी की आवश्यकताएँ अंतर्नोद को जन्म देती हैं। अंतर्नोद किसी आवश्यकता को पूरी करने या दूर करने के लिए किसी प्रकार अथवा क्रिया करने के लिए व्यक्ति को क्रियाशील करता है। आवश्यकता मूलतः शारीरिक होती है, जबकि अंतर्नोद व्यवहार से संबन्धित रहता है।

14. मासलो के पदानुक्रम में अंतिम चरण को क्या कहा जाता है?

(a) सम्मान की जरूरत

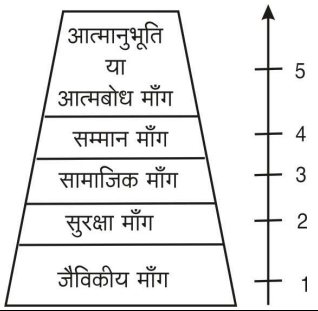
(b) सुरक्षा की जरूरत

(c) शारीरिक जरूरत

(d) आत्मबोध

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) मास्लो के पदानुक्रम में अंतिम चरण को आत्मबोध या आत्मानुभूति चरण कहा जाता है। ध्यातव्य है कि अभिप्रेरणा के माँग सिद्धान्त का प्रतिपादन अब्राहम मैस्लो ने किया था। इन्होंने अपने माँग सिद्धान्त में पाँच मूलभूत माँगों को पदानुक्रम के रूप में वर्गीकृत किया है-



15. जब विद्यार्थी पुरस्कार पाने की इच्छा से बार-बार किसी गतिविधि को करने का निर्णय लेते हैं (जैसा कि एक प्रयोग का नियोजन एवं संचालन करना) जो कि प्रत्यक्ष रूप से उस गतिविधि से संबंधित नहीं है (जैसा कि एक 'स्टार' या 'बैज' प्राप्त करना) ऐसी स्थिति में क्या सांभावना उत्पन्न होती है?

(a) समझने के लिए अधिगम से आनंद प्राप्त करना
(b) पुरस्कार के बिना भी उस गतिविधि में लगे रहना
(c) अन्य लोगों को खुश करने के लिए कार्य करने के बजाय स्वयं की निपुणता के लिए उद्देश्य निर्धारित करना
(d) अधिगम के प्रति भौतिकवादी अभिवृत्ति का विकास

C TET (VI-VIII) 8 Dec. 2019

Ans. (d) जब विद्यार्थी पुरस्कार पाने की इच्छा से बार-बार किसी गतिविधि को करने का निर्णय लेते हैं (जैसा कि एक प्रयोग का नियोजन एवं संचालन करना) जो कि प्रत्यक्ष रूप से उस गतिविधि से संबन्धित नहीं है (जैसा-कि एक 'स्टार' या 'बैज' प्राप्त करना) ऐसी स्थिति में अधिगम के प्रति भौतिकवादी अभिवृत्ति के विकास की सम्भावना होती है। यह भौतिकवादी अभिवृत्ति पुरस्कार मिलने तक विद्यार्थी को गतिविधि को करने के लिए प्रेरित करेगी। जब विद्यार्थी को पुरस्कार मिलना बंद हो जायेगा तब वह गतिविधि करना भी बंद कर देगा। इसीलिए भौतिकवादी अभिवृत्ति को बढ़ावा देने वाले अभिप्रेरकों को नकारात्मक अभिप्रेरक की श्रेणी में रखा जाता है।

16. निम्नलिखित व्यक्तियों में कौन अपने बच्चे/बच्चों की आन्तरिक प्रेरणा दे रहा है?

(a) फादर रॉबर्ट अपनी कक्षा के उन बच्चों को चॉकलेट देते हैं जो अच्छा व्यवहार करते हैं
(b) अगली कक्षा में कक्षोन्नति पाने पर नन्द कुमार अपने पुत्र को कहानी की पुस्तकें देते हैं
(c) अपने पुत्र के जन्मदिन पर गिरिजोश कुमार दावत देते हैं
(d) विज्ञान विषयों में सर्वोच्च अंक पाने पर राकेश कुमार अपने पुत्र की प्रशंसा करते हैं

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) किसी कार्य या परिणाम के लिए प्रशंसा करना आन्तरिक प्रेरणा का उदाहरण है अतः सर्वोच्च अंक पाने पर प्रशंसा करना आन्तरिक रूप से प्रेरित करना है।

17. अभिप्रेरणा का वर्गीकरण होता है

(a) स्वाभाविक और कृत्रिम
(b) कम महत्त्वपूर्ण तथा अधिक महत्वपूर्ण
(c) जन्मजात तथा अर्जित
(d) अभिप्रेरणा तथा प्रलोभन

UPTET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (*) अब्राहम मैस्लो ने अभिप्रेरणा को दो भागों में वर्गीकृत किया है - (1) जन्मजात अभिप्रेरण (जैसे - भूख, प्यास, विश्राम, निद्रा आदि। (2) अर्जित अभिप्रेरण (जैसे सामाजिक, रुचि, प्रतिष्ठा आदि। इसी प्रकार थाम्पसन ने भी अभिप्रेरण को दो भागों में वर्गीकृत किया है - (1) स्वाभाविक अभिप्रेरण (जैसे - खेलना, सुख प्राप्त करना आदि) (2) कृत्रिम अभिप्रेरण (जैसे - पुरस्कार प्रशंसा, दण्ड आदि) अतः विकल्प (a) और (c) दोनों सही है।

18. अभिप्रेरण के लिए अक्सर.....शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।

(a) संवेग (b) आवश्यकता
(c) भावना (d) प्रत्यक्षीकरण

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) मैस्लो के अनुसार- अभिप्रेरणा की उत्पत्ति आवश्यकता के अनुरुप होती है। जैसी आवश्यकता होती है उसी प्रकार से व्यक्ति अभिप्रेरित होता है। आवश्यकता एवं अभिप्रेरणा एक दूसरे के पूरक होते है अतः अभिप्रेरणा को अवश्यकता भी कहा जाता है।

19. एक व्यक्ति की 'जीवन में नाम व प्रशंसा कमाने की इच्छा' किस प्रकार का अभिप्रेरक है?

(a) आन्तरिक अभिप्रेरक (b) बाह्य अभिप्रेरक
(c) दैहिक अभिप्रेरक (d) मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (a) आन्तरिक अभिप्रेरणा वह है जो मनुष्य के मन या अन्तरात्मा से निकलती है। इस अभिप्रेरणा के द्वारा व्यक्ति समाज में सम्मान पाने की इच्छा रखता है।

20. एक अध्यापक को निम्न में से किस कथन से सहमत होना चाहिये?

(a) आन्तरिक अभिप्रेरणा तब होती है, जब अधिगमकर्ता बाह्य सन्तोषजनक परिणाम का अनुभव करने के लिये कार्य करते हैं।
(b) बाह्य अभिप्रेरणा तब होती है, जब अधिगमकर्त्ता बाह्य पुरस्कार प्राप्त करने के लिये कार्य करते हैं।
(c) बाह्य पुरस्कार से स्थायी व्यवहार परिवर्तन होता है।
(d) बाह्य पुरस्कार आन्तरिक अभिप्रेरणा प्रदान करते हैं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012

Ans: (b) जब अधिगमकर्ता बाह्य पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कार्य करता है तो वह बाह्य अभिप्रेरणा होती है।

21. उपलब्धि अभिप्रेरक के सम्बन्ध में निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

(a) उपलब्धि अभिप्ररेक जीवित रहने के लिए आवश्यक है
(b) यदि व्यक्तिगत क्षमताओं की सन्तुष्टि महत्वपूर्ण है तो उपलब्धि अभिप्रेरक को विकास प्रेरक कहा जा सकता है
(c) यदि व्यक्तियों के मध्य प्रतियोगिता पर बल है, तो उपलब्धि अभिप्रेरक को सामाजिक अभिप्ररेक कहा जा सकता है
(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) अभिप्रेरक कार्य करने की वह प्रवृत्ति है जो किसी आवश्यकता अथवा अंतर्नोद से प्रारम्भ होती है तथा समायोजन तक समाप्त हो जाती है। अभिप्रेरक कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे– भूख, प्यास, सानिध्य, उपलब्धि, आक्रामकता आदि।

22. बाह्य अभिप्रेरणा में समावेशित किया जायेगा

I. प्रशंसा एवं दोषारोपण II. प्रतिद्वन्द्विता
III. पुरस्कार एवं दण्ड IV. परिणाम का ज्ञान।

इनमें से

(a) I और III (b) I, II और III

(c) केवल II (d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (d) किसी व्यक्ति को कार्य करने के लिए किसी बाहरी स्रोत में दिया गया प्रेरणा बाह्य अभिप्रेरणा कहलाता है। बाह्य अभिप्रेरणा के उदाहरण निम्न है-

- प्रशांसा - प्रतिद्वन्दिता
- पुरस्कार एवं दण्ड - परिणाम

23. निम्न में से कौन-सा कथन 'अभिप्रेरणा एक प्रक्रिया' के सन्दर्भ में उपयुक्त नहीं है?

(a) यह व्यक्ति को लक्ष्य की ओर ले जाता है।

(b) यह व्यक्ति की शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि करता है।

(c) यह मनोवैज्ञानिक आकांक्षा को प्राप्त करने में सहायता करता है।

(d) यह व्यक्ति की अप्रिय स्थिति से दूर रखता है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (d) अभिप्रेरणा व्यक्ति को -

- लक्ष्य की ओर ले जाती है
- शारीरिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है
- मनोवैज्ञानिक आकांक्षाओं को प्राप्त करने में सहायता करती है

कभी-कभी अभिप्रेरणा व्यक्ति को अप्रिय स्थिति में ले जाती है जहाँ उसकी महात्वाकांक्षाए तो पूर्ण हो सकती है, परन्तु परिस्थिति एवं वातावरण व्यक्ति के अनूकुल नहीं रहते।

24. किसी जिज्ञासु छात्र को प्रेरित करने में निम्न में से कौन एक कारगर उपाय है?

(a) सजा द्वारा (b) प्रशंसा द्वारा

(c) आलोचना द्वारा (d) इनमें कोई नहीं

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) सकारात्मक अभिप्रेरणा सबसे उपयुक्त मानी जाती है। अतः प्रशंसा करके किसी जिज्ञासु बालक को प्रेरित किया जा सकता है तथा यही सर्वाधिक उपयुक्त विधि है।

25. 'भूख' और 'प्यास' हैं

(a) व्यक्तिगत प्रेरक (b) जन्मजात प्रेरक

(c) सामाजिक प्रेरक (d) अर्जित प्रेरक

UK TET Paper - II (Class VI-VIII) 12 Nov 2013

Ans: (b) भूख और प्यास जन्मजात प्रेरक होते हैं। ऐसे प्रेरक जो व्यक्ति में जन्म से ही अध्ययन हो उन्हें जन्मजात प्रेरक कहते हैं। इसे जैविक या शारीरिक प्रेरक भी कहा जाता है।

26. निम्नलिखित में से कौन–सी सीखने के लिए अधिकतम रूप से अभिप्रेरित करता है?

(a) बहुत सरल या कठिन लक्ष्यों का चयन करने की प्रवृत्ति

(b) लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत सन्तुष्टि

(c) बाह्य कारक

(d) असफलता से बचने के लिए अभिप्रेरणा

DSSSB PRT
C TET 2012 (I-V)

Ans : (b) लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत संतुष्टि सीखने के लिए अधिकतम् रूप से अभिप्रेरित करता है। यह आंतरिक अभिप्रेरण के रूप में कार्य करता है।

27. उपलब्धि अभिप्रेरणा है

(a) बिना विचारे, जल्दबाजी में कार्य करने की प्रवृत्ति

(b) चुनौतीपूर्ण कार्य करने में डटे रहने की प्रवृत्ति

(c) असफलता से बचने की प्रवृत्ति

(d) सफलता व असफलता को समान रूप से स्वीकारने की तत्परता

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (b) उपलब्धि अभिप्रेरणा, सफलता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा को प्रकट करता है। यह चुनौतीपूर्ण कार्य करने में डटे रहने की प्रवृत्ति है।

28. आंतरिक रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थी

(a) के लिए औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है

(b) के लिए पुरस्कार की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है

(c) के लिए बाह्य पुरस्कार उसकी अभिप्रेरणा को बनाए रखने के लिए पर्याप्त नहीं है

(d) को बाह्य रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थी की तुलना में अभिप्रेरणा–स्तर कम होता है

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) आंतरिक रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थी अपने कार्य या गतिविधि में ही अंतर्निहित पुरस्कार या आनन्द की प्राप्ति करते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के लिए बाह्य पुरस्कार उसकी अभिप्रेरणा को बनाये रखने के लिए पर्याप्त नहीं है।

29. निम्न में से कौन–सा जन्मजात प्रेरक नहीं है?

(a) भूख (b) प्यास

(c) आदत (d) नींद

DSSSB PRT, Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (c) प्रेरक वह उद्दीपक है जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। प्रेरक दो प्रकार का होता है– जन्मजात अभिप्रेरक जैसे– भूख, प्यास, निद्रा आदि तथा अर्जित अभिप्रेरक इसके अंतर्गत पुरस्कार, प्रशंसा, निंदा, आदि आते हैं। अतः आदत को जन्मजात अभिप्रेरक नहीं माना जाता है।

30. निम्नलिखित में से जन्मजात अभिप्रेरक कौन है

(a) निद्रा (b) खेलना

(c) प्रशंसा (d) क्रोध

DSSSB PRT, Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (a) अभिप्रेरक मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–जन्मजात अभिप्रेरक और अर्जित अभिप्रेरक। जन्मजात अभिप्रेरक में भूख, प्यास, निद्रा आदि को शामिल किया जाता है जबकि अर्जित अभिप्रेरक में प्रशंसा, निंदा, क्रोध, खेलना आदि को शामिल किया जाता है।

31. अभिप्रेरणा–चक्र के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन–सा सही क्रम है?

(a) उत्तेजना, प्रबल प्रेरणा, आवश्यकता, उपलब्धि, लक्ष्य–उन्मुखी, व्यवहार, उत्तेजना में कमी

(b) प्रबल प्रेरणा, आवश्यकता, उत्तेजना, लक्ष्य–उन्मुखी, व्यवहार, उपलब्धि, उत्तेजना में कमी

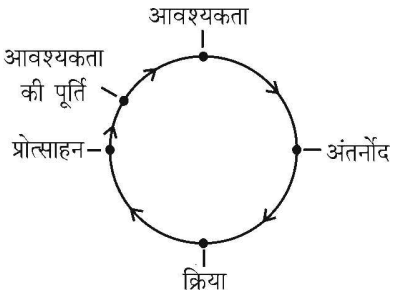
(c) आवश्यकता, लक्ष्य–उन्मुखी व्यवहार, प्रबल प्रेरणा, उत्तेजना, उपलब्धि, उत्तेजना में कमी

(d) आवश्यकता, प्रबल प्रेरणा, उत्तेजना, लक्ष्य–उन्मुखी, व्यवहार, उपलब्धि, उत्तेजना में कमी

DSSSB PRT
C TET 2014 (VI-VIII)

Ans : (d) अभिप्रेरणा चक्र है– आवश्यकता → प्रबल प्रेरणा → उत्तेजना → लक्ष्य उन्मुखी व्यवहार → उपलब्धि → उत्तेजना में कमी।

इसको मनोवैज्ञानिकों ने इस प्रकार समझा है–



32. पुरस्कार एवं दंड है–

(a) सकारात्मक प्रेरक (b) स्वाभाविक प्रेरक

(c) कृत्रिम प्रेरक (d) अर्जित प्रेरक

DSSSB PRT
UK TET 2011 (I-V)

Ans : (c) पुरस्कार एवं दण्ड कृत्रिम प्रेरक हैं। ये प्रेरक स्वभाविक प्रेरकों (अनुकरण, प्रतिष्ठा, सुख–प्राप्ति आदि) के पूरक के रूप में कार्य करते हैं और व्यक्ति के कार्य या व्यवहार को नियंत्रित और प्रोत्साहित करते हैं।

33. जब बच्चे एक विशेष संख्या में पुस्तकें पढ़ते है तो उन्हें एक प्रमाणपत्र दिया जाता है। यह रणनीति शायद अधिक समय तक काम न करे, क्योंकिः

(a) यह संभवतः बच्चों को केवल प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए पुस्तकों को पढ़ने की तरफ ले जा सकता है।

(b) पुस्तकालय में बहुत अधिक पुस्तकों को खरीदने की आवश्यकता होगी।

(c) जब अधिक संख्या में बच्चे पढ़ना शुरू कर देंगे तो बड़ी मात्रा में प्रमाणपत्र देने होंगे।

(d) पुस्तकों को पढ़ना बच्चों को उनके गृहकार्य को पूरा करने में बाधा डालेगा।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 20 Sep 2015

Ans: (a) यदि बच्चे प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए पुस्तकें पढ़ते है तो यह बच्चों को केवल प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए पुस्तकों को पढ़ने की तरफ ले जा सकता है और इससे वे सीख भी नहीं पायेंगे क्योंकि प्रमाण पत्र देना बाह्य पुनर्बलन है जबकि बच्चे यदि आंतरिक पुनर्बलन से प्रेरित होकर पुस्तकें पढ़ते हैं तो वे उसमे रूचि लेकर ध्यानपूर्वक पढ़ेगें जो अधिगम को स्थायित्व प्रदान करेगा।

34. निम्न में से कौन-सी शब्दावली प्रायः ''अभिप्रेरणा'' के साथ अंतः बदलाव के साथ इस्तेमाल की जाती है?

(a) संवेग (b) आवश्यकता

(c) उत्प्रेरणा (d) पुरस्कार (प्रेरक)

C TET Paper - I (Class I-V) 21 Sep 2014
DSSSB PRT

Ans: (b) जिस प्रकार से अभिप्रेरणा हमें लक्ष्य प्राप्ति में सहायता करती हैं उसी प्रकार से हम अपनी आवश्यकता को संतुष्ट करने के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने का प्रत्यन करते हैं। इसलिए आवश्यकता अभिप्रेरणा के साथ अंत बदलाव के साथ प्रयोग में लाई जा सकती है।

35. राजेश अति लोलुप पाठक हैं। वह अपने कोर्स की पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त प्रायः पुस्तकालय जाता है और भिन्न प्रकरणों पर पुस्तकें पढ़ता है। इतना ही नहीं, राजेश भोजन-अवकाश में अपने परियोजना कार्य करता है। उसे परीक्षाओं के लिए पढ़ने के लिए अपने शिक्षकों अथवा अभिभावकों द्वारा कभी भी कहने की जरूरत नहीं है और वह वास्तव में सीखने का आनंद लेता नजर आता है। उसे ---- के रूप में सर्वाधिक बेहतर रूप से वर्णित किया जा सकता है।

(a) आंतरिक रूप से अभिप्रेरित शिक्षार्थी

(b) तथ्य-आधारित शिक्षार्थी

(c) शिक्षक-अभिप्रेरित शिक्षार्थी

(d) आकलन-आधारित शिक्षार्थी

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (a) राजेश एक आन्तरिक रूप से अभिप्रेरित शिक्षार्थी है क्योंकि ऐसे छात्र सामान्यतः स्वयं ही अपने कोर्स की पुस्तकें पढ़ते हैं तथा अन्य प्रकरणों पर पुस्तकें भी पढ़ते है क्योंकि ऐसे छात्र जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं तथा वह ज्यादा से ज्यादा ज्ञान अर्जित करने की कोशिश करते रहते हैं। अतः ऐसे छात्रों को पढ़ने तथा किसी परियोजना को पूरा करने के लिए किसी के कहने की जरूरत नहीं पड़ती है। वह स्वयं ही कर लेते हैं।

36. एक विद्यार्थी मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेने के लिए कठिन परिश्रम करता है ताकि वह प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके। यह विद्यार्थी ..... रूप से अभिप्रेरित है।

(a) वैयक्तिक (b) आनुभविक

(c) आंतरिक (d) बाह्य

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 29 Jan 2012

Ans: (d) यदि कोई विद्यार्थी मेडिकल कालेज में दाखिला लेने के लिए कठिन परिश्रम करता है ताकि वह प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके तो इसका अर्थ है कि वह विद्यार्थी बाह्य रूप से अभिप्रेरित है। इस प्रकार के अभिप्रेरणा को बाह्य अभिप्रेरणा या नकारात्मक अभिप्रेरणा कहते हैं। बाह्य अभिप्रेरणा बालक की कार्य में अरुचि उत्पन्न कर सकती है, फलस्वरूप वह कार्य को पूर्ण करने के लिए किसी अनुचित विधि का प्रयोग कर सकता है।

37. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता आंतरिक रूप से अभिप्रेरित बच्चों के लिए सही नहीं है?

(a) वे कार्य करते समय उच्च स्तर की ऊर्जा प्रदर्शित करते हैं

(b) वे चुनौती भरे कार्यों को पसंद करते हैं

(c) ये हमेशा सफल होते हैं।

(d) उन्हें कार्य करने में आनंद आता है।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

UP TET 2014 (VI-VIII)

Ans: (c) आंतरिक रूप से अभिप्रेरित बच्चों के लिए यह सही नहीं है कि वे हमेशा सफल होते हैं क्योंकि अभिप्रेरित होना यह बालक को किसी कार्य के प्रति उत्साह प्रकट करता है न कि सफलता को निश्चित करता है। अतः विकल्प (c) सत्य नहीं है।

38. निम्नलिखित में से कौन बाह्य प्रेरणा का उदाहरण नहीं है?

(a) वेतन (b) प्रशंसा

(c) जुनून (d) पदोन्नति

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : बाह्य प्रेरणा में बालक किसी कार्य को अपनी स्वयं की इच्छा से न करके, किसी दूसरे की इच्छा या बाह्य प्रभाव के कारण करता है। इस कार्य को करने से उसे किसी वांछनीय या निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति होती है। वेतन, पदोन्नति, प्रशंसा, पुरस्कार, प्रतिद्वन्द्विता आदि बाह्य प्रेरणा के उदाहरण हैं जबकि जुनून, रुचि, जिज्ञासा, स्वीकृति आदि आंतरिक प्रेरणा के उदाहरण है।

39. निम्नलिखित में से कौन-सा अभिप्रेरणा का सही क्रम है?

(a) प्रणोद, आवश्यकता, लक्ष्य निर्देशित व्यवहार, लक्ष्य उपलब्धि, प्रणोद ह्रास

(b) आवश्यकता, प्रणोद ह्रास, लक्ष्य निर्देशित व्यवहार, लक्ष्य उपलब्धि, प्रणोद

(c) आवश्यकता, प्रणोद, प्रणोद ह्रास, लक्ष्य निर्देशित व्यवहार, लक्ष्य उपलब्धि

(d) आवश्यकता, प्रणोद, लक्ष्य निर्देशित व्यवहार, लक्ष्य उपलब्धि, प्रणोद ह्रास

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : अभिप्रेरणा का सही क्रम है– आवश्यकता → प्रणोद → लक्ष्य निर्देशित व्यवहार → लक्ष्य उपलब्धि → प्रणोद ह्रास।



40. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन कक्षा अभ्यास में 'आंतरिक प्रेरणा' को सबसे अच्छी तरह वर्णित करता है?

(a) शिक्षक स्वायत्तता को प्रोत्साहित करता है और शिक्षार्थियों को उनके लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए विकल्प देता है।

(b) शिक्षक बच्चे के काम की सराहना और प्रशंसा करता है।

(c) शिक्षक नाश्ता और पानी पीने के लिए एक छोटा ब्रेक देता है।

(d) शिक्षक कार्य को पूरा करने के लिए नियम और शर्तें प्रदान करता है।

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : आन्तरिक प्रेरणा (Intrinsic notivation) में बालक किसी कार्य को अपनी स्वयं की इच्छा से करता है। इस कार्य को करने से उसे सुख और संतोष प्राप्त होता है। शिक्षक विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन और स्थितियों का निर्माण करके बालक को सकारात्मक प्रेरणा प्रदान करता है। इसे सकारात्मक प्रेरणा (Positive motivation) भी कहते हैं।

अतः शिक्षक स्वायत्रता को प्रोत्साहित करता है और शिक्षार्थियों को उनके लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए विकल्प देता है। यह कथन 'आंतरिक प्रेरणा' को अच्छी तरह वर्णित करता है।

41. एक व्यक्ति जिसमें प्रेरक उपलब्धि की कमी है वह..... प्रदर्शित करेगा।

(a) आत्म-आश्वासन (b) निराशावाद
(c) व्यवहारवाद (d) सकारात्मक दृष्टिकोण

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : एक व्यक्ति जिसमें प्रेरक उपलब्धि की कमी होती है वह निराशावाद प्रदर्शित करता है। प्रेरक शक्तियाँ व्यक्ति को व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती हैं। वुडवर्थ ने प्रेरक को परिभाषित करते हुए कहा है– ''प्रेरक व्यक्ति की वह अवस्था या तत्परता है जो कि उसे किसी व्यवहार को करने के लिए एवं किन्ही उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित करती है।'' इसलिए प्रत्येक व्यक्ति में प्रेरक शक्ति का होना आवश्यक होता है।

42. अभिप्रेरण के लिए निम्नलिखित में से कौन सा दृष्टिकोण एक आंतरिक स्त्रोत पर निर्भर नहीं करता है?

(a) संज्ञानात्मक
(b) मानववादी
(c) व्यवहारवादी
(d) समाज-सांस्कृतिक

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : अभिप्रेरण के लिए व्यवहारवादी दृष्टिकोण आंतरिक स्त्रोत पर निर्भर नहीं करता है। दूसरे शब्दों में व्यवहारवादियों ने जन्मजात प्रवृत्तियों (आंतरिक प्रवृत्तियों) के अस्तित्व को नकारते हुए सीखने पर बल दिया है। इन्होंने मानव व्यवहार को समझने के साधन के रूप में पशु व्यवहार के अध्ययन पर जोर दिया।

अभिप्रेरणा के सिद्धांत

43. मास्लो के अनुसार, निम्न आवश्यकताओं में से किसे कमी की आवश्यकता के रूप में जाना जाता है?

(a) अपनापन, मान्यता, सुरक्षा, आत्म-सिद्धि
(b) सुरक्षा, अपनापन, मान्यता, आत्म-सिद्धि
(c) शारीरिक, अपनापन, मान्यता, आत्म-सिद्धि
(d) शारीरिक, सुरक्षा, अपनापन, मान्यता

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

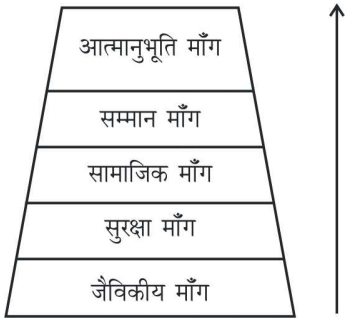
Ans. (d) : मैस्लो के अनुसार, शारीरिक सुरक्षा, अपनापन, मान्यता की आवश्यकता को कमी की आवश्यकता के रूप में जाना जाता है। अभिप्रेरणा के माँग के सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1954 में अब्राहम मैस्लो ने किया था। इस सिद्धांत के अनुसार जब प्राणी अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक किसी वस्तु की कमी या माँग महसूस करता है तो वह उसे प्राप्त करने के लिए क्रियाशील या अभिप्रेरित हो जाता है।

44. निम्नलिखित में से कौन सा मास्लो की आवश्यकताओं के पदानुक्रम में निम्नतम क्रम की आवश्यकता का एक उदाहरण है?

(a) सम्मान की आवश्यकताएं
(b) आत्म-बोध की आवश्यकताएं
(c) सुरक्षा की आवश्यकताएं
(d) प्यार एवं अपनेपन की आवश्यकताएं

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : अब्राहम मैस्लो को मानवतावादी मनोविज्ञान का आध्यात्मिक जनक कहा जात है। इन्होंने अभिप्रेरणा के माँग सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1954 में किया। मैस्लो द्वारा कुल पाँच प्रकार के मूलभूत माँगों को प्रदानुक्रमिक रूप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है–



इन पाँच प्रकार के माँगों में सुरक्षा माँग और जैविकीय माँग निम्न श्रेणी के माँगों में आते हैं जबकि उपर्युक्त तीनों माँग उच्च श्रेणी के माँगों में आते हैं।

45. मानवतावाद के अनुसार अधिगम का उद्देश्य क्या है?

(a) मानकीकृत परीक्षणों को एकरूप (एक्क) करने के लिए
(b) किसी की क्षमता को पूरा करने के लिए
(c) रोजगारपरक बनने के लिए
(d) वित्तीय सुरक्षा प्राप्त करने के लिए

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : मानवतावाद के अनुसार अधिगम का उद्देश्य व्यक्ति की क्षमता को पूरा करना होता है। मानवतावाद मानव को एक ऐसा श्रेष्ठ व सृजनशील प्राणी मानता है जो निरंतर स्वयं को उन्नत बनाने का प्रयास करता रहता है।

46. पारंपरिक रूप से, मास्लो के सिद्धांत में कितने प्रकार की अवश्यकताओं को वर्णित किया गया है?

(a) 2 (b) 6
(c) 5 (d) 3

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) अब्राहम मैस्लो को मानवतावादी मनोविज्ञान (Humanistic psychology) का आध्यात्मिक जनक (Spiritual father) कहा जाता है। मैस्लो का विचार था कि मानव अभिप्रेरक मूलतः जन्मजात होते हैं एवं इन्हें वरीयता के आधार पर आरोही पदानुक्रम (Ascending Hierarchy) के रूप में व्यवस्थित किया जा सकता है। उन्होंने अभिप्रेरकों को पाँच वर्गों में बाँटकर निम्नवत पदानुक्रम रूप में प्रस्तुत किया है–

1. दैहिक माँगे (Physiological Needs)
2. सुरक्षा माँगे (Safty Needs)
3. सामाजिक माँगे (Social Needs)
4. स्व–सम्मान माँगे (Self–Esteem Needs)
5. आत्म सिद्धि माँगे (Self– Actualization Needs)

47. अब्राहम मैसलो कौन थे?

(a) प्रयोजनवादी (b) व्यवहारवादी
(c) मानवतावादी (d) यथार्थवादी

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) अब्राहम मैसलो को मानवतावादी मनोविज्ञान का आध्यात्मिक जनक कहा जाता है। इन्होंने मानव मूल्यों, व्यक्तिगत वर्धन तथा आत्म निर्देश पर विशेष बल दिया एवं कहा कि व्यक्तित्व का विकास व्यक्ति के अन्दर उपस्थित अभिप्रेरकों के द्वारा संगठित ढंग से होता है।

48. अभिप्रेरणा के मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं–

(a) फ्रायड (b) क्लार्क एल. हल

(c) मैक्डूगल (d) मॉर्गन

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) अभिप्रेरणा के मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त के प्रतिपादक मैक्डूगल हैं। मैक्डूगल ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सन् 1908 में किया था। सिंगमण्ड फ्रायड ने अभिप्रेरणा के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। क्लार्क एल. हल ने अभिप्रेरणा के प्रणोद न्यूनता सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था जबकि मॉर्गन का संबन्ध प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण (T.A.T.) से है।

49. सूची–A तथा सूची–B को सुमेलित कीजिए।

सूची– A		सूची– B	
A.	हल	I.	आवश्यकता सिद्धांत
B.	मैक्डूगल	II.	मूल प्रवृत्ति सिद्धांत
C.	फ्रॉयड	III.	मनो–विश्लेषण सिद्धांत
D.	मैस्लो	IV.	प्रणोद-अवकलन सिद्धांत

	A	B	C	D
(a)	I	II	III	IV
(b)	IV	II	III	I
(c)	IV	II	I	III
(d)	IV	I	II	III

UP TET (VI-VIII) 8 Jan. 2020

Ans. (b) :

सूची– A		सूची– B	
A.	हल	IV.	प्रणोद– अवकलन सिद्धांत
B.	मैक्डूगल	II.	मूल– प्रवृत्ति सिद्धांत
C.	फ्रॉयड	III.	मनो– विश्लेषण सिद्धांत
D.	मैस्लो	I.	आवश्यकता सिद्धांत

50. अभिप्रेरणा के मूल–प्रवृत्ति सिद्धांत के प्रतिपादक थे–

(a) मैक्डूगल (b) अब्राहम मैस्लो

(c) सिम्पसन (d) विलियम जेम्स

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (a) : अभिप्रेरणा के मूल प्रवृत्ति सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1908 में मैक्डूगल ने किया था। उनके अनुसार मानव मस्तिष्क में कुछ जन्मजात प्रवृत्तियाँ होती हैं जो मानव के सभी विचारों तथा क्रियाओं के लिए प्रेरक शक्ति का कार्य करती हैं, मैक्डूगल ने मूल प्रवृत्ति को जन्मजात मनो–शारीरिक उपद्रव के रूप में परिभाषित किया है।

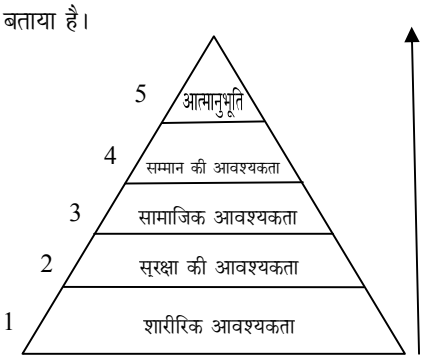
51. मैस्लो के अभिप्रेरणा सिद्धान्त को कहा जाता है

(a) आवश्यकता का सिद्धान्त (b) शारीरिक सिद्धान्त

(c) दृढ़ इच्छाशक्ति सिद्धान्त (d) अन्तर्नोद का सिद्धान्त

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (a) मैस्लों के अभिप्रेरणा के सिद्धांत को आवश्यकता का सिद्धांत कहा जाता है मैस्लो ने अभिप्रेरणा के लिए 5 आवश्यकता स्तर को बताया है।



52. प्रभावी एवं सफल नेतृत्व का आधार है

(a) प्रशंसा (b) सम्पूर्ण समूह का हित

(c) समूह की सेवा (d) स्वयं का हित

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (b) प्रभावी एवं सफल नेतृत्व का आधार है सम्पूर्ण समूह का हित।

53. एक अभिप्रेरित बालक निम्न में से कौन-सा गुण प्रदर्शित नहीं करता?

(a) सीखने की इच्छा (b) सीखने में आवेष्टन

(c) आकांक्षा स्तर (d) समूह से अलगाव

Hariyana TET Paper - II (Class V I-VIII) 2013

Ans: (d) अभिप्रेरित बालक के निम्न गुण होते है-

- सीखने की इच्छा - सीखने में अवेष्टन
- आकांक्षास्तर

समूह से अलगाव अभिप्रेरित बालक के लक्षण नहीं होते हैं।

54. मानव आवश्यकताओं का पदानुक्रम किसने दिया?

(a) थॉर्नडाइक (b) मास्लो

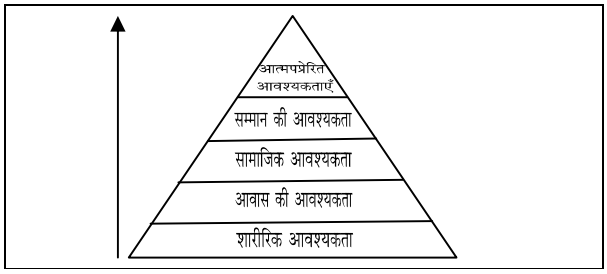
(c) गिल्फोर्ड (d) कॉफ्का

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

UP TET 2016 (VI-VIII)

Ans: (b) मास्लो पिरामिड या मास्लो का आवश्यकता पदानुक्रम अब्राहम मास्लो द्वारा प्रतिपादित एक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है। जो उन्होंने 'अ पिअरी ऑफ ह्यूमन मोटिवेशन' नामक अपने ग्रंथ में 1946 में प्रस्तुत किया था।

1. शारीरिक आवश्यकता 2. आवास की आवश्यकता (सुरक्षा की आवश्यकता)
3. सामाजिक आवश्यकता 4. सम्मान
5. आत्मप्रेरित आवश्यकताएँ



55. अभिप्रेरणा मूल्यांकन का ..... उद्देश्य है

DSSSB Assistant Primary Teacher (PRT)

(a) मौलिक (b) प्राथमिक

(c) वैकल्पिक (d) वैयक्तिक

Ans. (a) **:** अभिप्रेरणा मूल्यांकन का मौलिक उद्देश्य है।

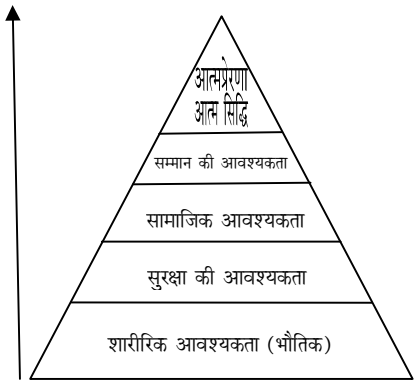
56. हम सभी में आवश्यकता के अनुसार अभिप्रेरण की शुरूआत होती है, छात्र की वह आवश्यकता जिसे उसको सर्वप्रथम पूरा करना चाहिए, सम्बन्धित है

(a) सम्मान (b) शारीरिक

(c) सामाजिक (d) आत्म-अनुभूतिकरण

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (b) प्रेरणा का विचार अब्राहम मैस्लो ने दिया है। मैस्लो के अनुसार प्रेरणा का जन्म आवश्यकता से होता है। मैस्लो ने 5 आवश्यकताओं को इंगित किया है जो चरण बद्ध होती है तथा एक आवश्यकता के बाद दूसरी आवश्यकता का जन्म होता है। आवश्यकता का सोपान इस प्रकार है-



57. निम्न में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) आवश्यकता वंचना की शारीरिक अवस्था नहीं है

(b) अन्तर्नोद आवश्यकता का मनोवैज्ञानिक परिणाम है

(c) आवश्यकता एवं अन्तर्नोद समान नहीं है, बल्कि समानान्तर हैं

(d) मूलप्रवृत्तियाँ आन्तरिक जैविक बल हैं।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (a) प्रत्येक शारीरिक अवस्था को अलग-2 आवश्यकता होती है। प्रत्येक शारीरिक अवस्था की विशेष गुण अलग-2 होने के कारण आवश्यकताएं भी परिवर्तित होती है। बिना आवश्यकता की पूर्ति किए शरीर का पोषण पूर्ण सही तरीके से नहीं किया जा सकता है। अतः विकल्प (a) गलत है।

58. छात्रों को प्रेरित करने की सही विधि है -

(a) दण्ड (b) फटकारना

(c) प्रशंसा (d) मारना-पीटना।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) छात्र को प्रेरित करने के प्रमुख सही विधि है- प्रशंसा करना, पुरस्कार प्रदान करना आदि

59. एक महिला ने भोजन प्राप्त करने के लिए अपने बच्चे को बेच दिया। इस खबर को ..... को आधार पर अच्छी तरह समझा जा सकता है।

(a) पुनर्बलित अकस्मिकताओं का सिद्धांत

(b) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

(c) पदानुक्रमिक आवश्यकताओं का सिद्धांत

(d) मनोसामाजिक सिद्धांत

DSSSB PRT
C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (c) एक महिला ने भोजन प्राप्त करने के लिए अपने बच्चे को बेच दिया। इस खबर को अब्राहम मैस्लो द्वारा प्रतिपादित पदानुक्रमिक आवश्यकताओं के सिद्धांत के आधार पर अच्छी तरह समझा जा सकता है जिसके अनुसार, जैवीकीय माँग जैसे भूख, प्यास, निद्रा आदि को ज्यादा प्रबल माँग माना गया है। जबकि सामाजिक माँग या सम्मान माँग को कम प्रबल माना गया है।

60. अभिप्रेरणा के सिद्धांतों के अनुसार, एक शिक्षक ..... के द्वारा सीखने को संवर्द्धित कर सकता है।

(a) विद्यार्थियों से वास्तविक अपेक्षाएँ रखने

(b) अपेक्षाओं का स्वरूप निम्न स्तर पर

(c) विद्यार्थियों से किसी प्रकार की अपेक्षाएँ न रखने

(d) विद्यार्थियों से बहुत उच्च अपेक्षाएँ रखने

DSSSB PRT, C TET 2012 (VI-VIII)

Ans : (a) अभिप्रेरणा के सिद्धांतों के अनुसार, एक शिक्षक विद्यार्थियों से वास्तविक अपेक्षाएँ रखने के द्वारा सीखने को संवर्द्धित कर सकता है। उच्च अपेक्षाएँ रखने से विद्यार्थियों में दुश्चिंता उत्पन्न होगी और निम्न अपेक्षाएँ रखने से उदासीनता आयेगी।

61. ..... के द्वारा निपुणता अभिविन्यास को प्रोत्साहित किया जा सकता है

(a) शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करने

(b) शिक्षार्थियों की सफलता की परस्पर तुलना करने

(c) गृह–कार्य के रूप में बहुत अधिक अभ्यास सामग्री देकर

(d) अनप्रेक्षित परीक्षा लेकर

DSSSB PRT, C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (a) आंतरिक रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थियों के व्यक्तिगत प्रयासों पर ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा निपुणता अभिविन्यास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

62. अ, ब, स तीन शिक्षार्थी हैं जो अंग्रेजी पढ़ते हैं। अ को यह विषय रोचक लगता है और वह सोचता है कि यह उसके भविष्य में सहायक होगा। ब अंग्रेजी इसलिए पढ़ती है, क्योंकि वह कक्षा में पहला स्थान प्राप्त करना चाहती है। स इसलिए पढ़ता है, क्योंकि उसकी प्राथमिकता सरोकार उत्तीर्ण होने वाले ग्रेड्स प्राप्त करना है। अ, ब और स के उद्देश्य क्रमशः ..... है।

(a) निपुणता, निष्पादन, निष्पादन–उपेक्षा

(b) निष्पादन, निष्पादन–उपेक्षा, निपुणता

(c) निष्पादन–उपेक्षा, निपुणता, निष्पादन

(d) निपुणता, निष्पादन–उपेक्षा, निष्पादन

DSSSB PRT, C TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (a) उपुर्यक्त प्रश्न में अ शिक्षार्थी आंतरिक रूप से प्रेरित होकर अंग्रेजी पढ़ता है अतः व निपुणता के स्तर को प्राप्त करेगा। शिक्षार्थी ब चूँकि सोचती है कि वह कक्षा में प्रथम आये इसलिए अंग्रेजी पढ़ना आवश्यक है अर्थात् वह बाह्य रूप से प्रेरित होकर बेहतर निष्पादन स्तर को प्राप्त करेगी जबकि शिक्षार्थी स मात्र उत्तीर्ण होने के लिए ग्रेड प्राप्त करने हेतु अध्ययन करता है इसलिए वह निष्पादन की उपेक्षा करेगा और किसी प्रकार से उत्तीर्ण होने का प्रयास करेगा।

63. भारत सरकार ने प्राथमिक विद्यालयों के लिए मध्याह्न-भोजन योजना प्रारम्भ की है। निम्नलिखित में से कौन-सा अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त इस योजना का समर्थन करता है?

(a) व्यवहारवादी (b) समाज-सांस्कृतिक

(c) संज्ञानात्मक (d) मानवीय

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 16 Feb 2014

Ans: (d) मध्यान्ह् भोजन के माध्यम से सरकार बच्चों को विद्यालय में रोके रखने और शिक्षा के लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास कर रही है। यहाँ मानवीय अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त कार्य कर रहा है। इस सिद्धान्त के अनुसार भोजन, पानी आदि मनुष्य को लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

64. हालांकि यह स्पष्ट रूप से उनकी सुरक्षा आवश्यकताओं के उल्लंघन में था, कैप्टन विक्रम बत्रा अपने देश को बचाने के दौरान कारगिल युद्ध में मारे गए। संभवतः उन्हें - - - - था/थी।

(a) आत्म-सिद्धि की प्राप्ति

(b) अपने अपनत्व संबंधी आवश्यकताओं की उपेक्षा

(c) अपने परिवार के नाम की ख्याति-प्राप्ति

(d) नवीन अनुभव की प्राप्ति की इच्छा

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (a) हालांकि यह स्पष्ट रूप से उनकी सुरक्षा आवश्यकताओं के उल्लंघन में था, कैप्टन विक्रम बत्रा अपने देश को बचाने के दौरान कारगिल युद्ध में मारे गए। संभवतः उन्हें आत्म-सिद्धि की प्राप्ति थी। आत्म-सिद्धि मैस्लों के अभिप्रेरणा का उच्चतम बिन्दु है।

65. निम्न में से कौन-सा बच्चे की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के साथ संबद्ध नहीं है?

(a) संवेगात्मक सुरक्षा की आवश्यकता

(b) शरीर में अपशिष्ट पदार्थों का नियमित रूप से बाहर निकलना

(c) सान्निध्य (संगति) की आवश्यकता

(d) सामाजिक अनुमोदन अथवा सराहना की आवश्यकता

C TET Paper -I (Class (I-V) 26 June 2011

Ans: (b) शरीर से अपशिष्ट पदार्थें को नियमित रूप से बाहर निकलना एक शारीरिक आवश्यकता है न कि सामाजिक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता।

66. निम्नलिखित में से प्रेरणा का कौन–सा सिद्धांत, जैविक पहलुओं और आवश्यकताओं पर किसी भी प्रकार से ध्यान केन्द्रित नहीं करता है?

(a) ड्राइव सिद्धांत

(b) आवश्यकताओं के सिद्धांत का पदानुक्रम

(c) प्रत्यक्षता को सिद्धांत की आवश्यकता होती है।

(d) वृत्ति सिद्धांत

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) प्रेरणा का प्रत्यक्षता आवश्यकता सिद्धांत, जैविक पहलुओं और आवश्यकताओं पर किसी भी प्रकार से ध्यान केन्द्रित नहीं करता है। प्रत्यक्षता आवश्यकता सिद्धांत डेविड मैक्लेलैण्ड्स द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार प्रत्यक्षता को संतुष्ट करने की इच्छा के द्वारा संचालित होता है और इसके लिए मुख्य रूप से तीन आवश्यकताएँ महत्त्वपूर्ण होती हैं–

- शक्ति की आवश्यकता (Need of Power)
- संबद्धिकरण की आवश्यकता (Need for Affiliation)
- उपलब्धि की आवश्यकता (Need for achievement)

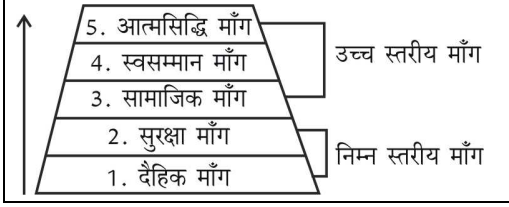
67. आवश्यकताओं का पदनुक्रम, प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य है, जिसे इनके द्वारा प्रतिपादित किया गया था-

(a) मास्लो (b) पियाजे

(c) पावलाव (d) फ्रायड

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : आवश्यकताओं का पदानुक्रम, प्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य है, जिसे मैसलो द्वारा प्रतिपादित किया गया था। उन्होंने अभिप्रेरकों को पाँच वर्गों में बाँटकर निम्नलिखित पदानुक्रम रूप प्रस्तुत किया था–



68. व्यवहार के जन्मजात पैटर्न जो जीव-विज्ञान के अनुसार निर्धारित होते हैं, उन्हें यह भी कहा जाता है-

(a) पहचान (b) ड्राइव

(c) सहज ज्ञान (d) बुद्धिमत्ता

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : व्यवहार के जन्मजात पैटर्न जो जीव-विज्ञान के अनुसार निर्धारित होते हैं, उन्हें सहज ज्ञान या मूल प्रवृत्ति भी कहा जाता है। मैक्डूगल के अनुसार मानव मस्तिष्क में कुछ जन्मजात प्रवृत्तियाँ होती हैं जो मानव के सभी विचारों तथा क्रियाओं के लिए प्रेरक शक्ति का कार्य करती हैं।

मैक्डूगल ने मूल प्रवृत्ति को जन्मजात मनो-शारीरिक उपद्रव के रूप में परिभाषित किया जो किसी उद्देश्यपूर्ण कार्य की ओर व्यक्ति को ले जाता है एवं जिन्हें सीखना नहीं होता है।

अभिप्रेरणा और अधिगम में अंतर्संबन्ध

69. प्रेरणा का वही सम्बन्ध उपलब्धि से है जो अधिगम का.....से है।

(a) तर्क (b) चिन्तन

(c) बोध (d) विवेक

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) प्रेरणा का जो सम्बंध उपलब्धि से है, अधिगम का वही सम्बंध बोध से होता है।

70. अधिगम के प्रक्रम में अभिप्रेरण

(a) सीखने वालों की स्मृति को तेज बनाता है

(b) पुराने अधिगम से नए अधिगम को विभेदित करता है

(c) एकदिशीय रूप से सोचने में सीखने वालों को प्रस्तुत करता है

(d) नये सीखने वालों में अधिगम के लिए रुचि का सृजन करता है

UPTET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (d) अधिगम प्रक्रम में अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिप्रेरणा के माध्यम से सीखने वाले में अधिगम के प्रति रूचि उत्पन्न किया जा सकता है जो अधिगम को प्रभावी बनाता है। अधिगम के प्रक्रम में रोचकता को बढ़ाने के लिए अभिप्रेरणा का प्रयोग करना चाहिए ताकि बच्चों में अधिगम के प्रति रुचि एवं उत्सुकता बढ़ती रहे।

71. बालकों के सीखने में प्रेरणा को किस रूप में उपयोगी माना जाता है?

(a) बालक की वैयक्तिकता का आदर

(b) पुरस्कार एवं दण्ड

(c) प्रशंसा एवं भर्त्सना

(d) उपरोक्त सभी

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) प्रेरणा (अभिप्रेरणा) आवश्यकता जनित होती है जो बालक को अधिगम के लिए प्रोत्साहित करती है। यह अभिप्रेरणा सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की होती है जैसे प्रशंसा, पुरस्कार, दण्ड, भर्त्सना एवं वैक्तिकता का आदर आदि।

72. सीखने की प्रक्रिया में, अभिप्रेरणा

(a) शिक्षार्थियों की स्मरण शक्ति को पैना बनाती है

(b) पिछले सीखे हुए को नए अधिगम से अलग करती है

(c) शिक्षार्थियों को एक दिशा में सोचने के योग्य बनाती है

(d) शिक्षार्थियों में सीखने के प्रति रुचि का विकास करती है

DSSSB PRT

C TET 2011 (I-V)

Ans : (d) सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा शिक्षार्थियों में सीखने के प्रति रुचि का विकास करती है। सीखने के प्रति रुचि आंतरिक अभिप्रेरणा या बाह्य अभिप्रेरणा के कारण उत्पन्न हो सकती है।

73. अभिप्रेरणा और अधिगम के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा एक कथन सही है?

(a) अधिगम केवल तभी प्रभावी होता है जब शिक्षार्थियों में भीतरी प्रेरणा हो– सीखने की अन्तर्निहित इच्छा हो

(b) अधिगम केवल तभी प्रभावी होता है जब शिक्षार्थी बाहरी रूप से प्रेरित हों– बाहरी कारणों से प्रेरित हों

(c) अधिगम में प्रेरणा की कोई भूमिका नहीं होती

(d) अधिगम केवल तभी प्रभावी होता है जब शिक्षार्थी बाहरी पुरस्कारों का उपयोग करने से प्रेरित हो

DSSSB PRT

C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (a) अभिप्रेरणा सीखने की प्रक्रिया और परिणाम दोनों को प्रभावित करती है। आंतरिक रूप से अभिप्रेरित शिक्षार्थी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, उनके सीखने की गति तीव्र होती है उनका सीखना भी अपेक्षाकृत अधिक स्थायी होता है। **वुडवर्थ के अनुसार,** ''सीखने वालो में सीखने की योग्यताओं के साथ अभिप्रेरणा भी होना चाहिए।''

अभिप्रेरणा का शिक्षा में महत्त्व

74. कक्षा में बच्चों को प्रेरित समझा जा सकता है यदि

(a) वे अच्छी तरह से वर्दी पहने स्कूल में आते हैं

(b) वे कक्षा में अनुशासन बनाए रखते हैं

(c) वे सभी उपस्थिति में नियमित हैं

(d) वे शिक्षक से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए प्रश्न पूछते हैं

C TET (I-V) 9 Dec. 2018

Ans. (d) : कक्षा में बच्चों को प्रेरित समझा जा सकता है यदि वे शिक्षक से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए प्रश्न पूछते है। इसलिए एक कुशल शिक्षक ऐसे सहज शिक्षण अधिगम परिस्थिति का निर्माण करता है जिसमें छात्र प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

75. एक शिक्षक विद्यार्थियों को अनुप्रेरित कर सकता है

(a) पुरस्कार देकर (b) सही मार्गदर्शन कराकर

(c) उदाहरण देकर (d) कक्षा में भाषण देकर

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 13 Nov 2011

Ans : (b) एक शिक्षक विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन के द्वारा अनुप्रेरित कर सकता है।

76. कक्षा में विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करने हेतु किस युक्ति का अनुप्रयोग आप नहीं करते है?

(a) छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा स्थापित करना

(b) उन्हें आत्म गौरव की अनुभूति कराना

(c) उनकी अत्यधिक प्रशंसा करना

(d) गतिविधि आधारित शिक्षण-अधिगम विधियों का अनुप्रयोग करना

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) छात्रों की अत्यधिक प्रशंसा करना उन्हे अधिगम के लिए प्रेरित करने की उपयुक्त युक्ति नहीं है, क्योंकि इससे बालक में अहम की भावना का संचार हो सकता है तथा वह अपने ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए प्रयास नहीं करेगा। अतः यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नकारात्मक सिद्ध हो सकती है।

77. बच्चों में स्वअध्ययन की क्षमता का विकास किया जा सकता है।

(a) महान व्यक्तियों का उदाहरण प्रस्तुत करके।

(b) स्व-अध्ययन पर व्याख्यान देकर।

(c) स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करके

(d) नूतन साहित्य उपलब्ध करा कर

DSSSB PRT

Ans : (d) मनोरंजन के माध्यम से अध्ययन में रुचि पैदा की जा सकती है। बच्चों को नई एवं नूतन साहित्यिक पुस्तकें उपलब्ध कराकर बच्चों में स्वअध्ययन की क्षमता का विकास किया जा सकता है।

78. आप एक कक्षा में शिक्षक के तौर पर छात्रों को प्रेरित करते हैं

(1) निर्देश निर्धारित कर

(2) श्यामपट्ट का प्रयोग कर

(3) दृष्टान्त/उदाहरण के द्वारा

(4) छात्रों की सक्रिय भागीदारी द्वारा

कूट

(a) 1, 2 और 3 (b) 1 और 4

(c) 2 और 4 (d) ये सभी

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (d) छात्रों को प्रेरित करने के मुख्य स्रोत-

1. श्यामपट्ट द्वारा
2. उदाहरण द्वारा
3. निर्देश निर्धारण द्वारा आदि।
4. छात्रों की सक्रिय भागीदारी द्वारा।

79. निम्न में से कौन-सा उदाहरण अभिप्रेरणा का परिणाम नहीं हैं?

(a) कृष्ण ने नृत्य का समय एक घंटे से बढ़ा कर दो घंटे कर दिया है।

(b) जॉन स्टुअर्ट मिल ने 12 वर्ष की उम्र में दर्शन का अध्ययन आरम्भ कर दिया था

(c) जगन ने 'श्वास लेने की प्रक्रिया' में रुचि दिखानी प्रारम्भ कर दी है

(d) राम ने तेजी से आधुनिक एवं प्राचीन ऐतिहासिक प्रवृत्तियों में सहसम्बन्ध स्थापित करने में प्रगति की है।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 2012

Ans: (c) श्वास लेना एक अनैच्छिक क्रिया है तथा सतत् मृत्यु तक चलने वाली क्रिया है। इस पर किसी प्रकार का अभिप्रेरणा का प्रभाव नहीं होता है।

80. बालक में क्रियाओं को नियमित करने तथा रुचि उत्पन्न करने के लिए कौन सा कारक उत्तरदायी है?

(a) प्रेरणा (b) समझ

(c) ज्ञान (d) स्वअध्ययन

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) बालक की क्रियाओं को नियमित करने तथा उनमें रूचि उत्पन्न करने का सबसे प्रभावी कारक अभिप्रेरणा (प्रेरणा) होती है। मैस्लो ने अभिप्रेरणा के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। अभिप्रेरणा दो प्रकार की होती है-

1. आन्तरिक अभिप्रेरणा 2. बाह्य अभिप्रेरणा

81. किसी प्रारंभिक कक्षा में प्रभावशाली शिक्षक का उद्देश्य विद्यार्थियों को उत्प्रेरित करना होगा–

(a) रटकर याद करने के लिए जिससे वे प्रत्यास्मरण करने में अच्छे बने।

(b) दंडात्मक उपायों का प्रयोग करके जिससे वे शिक्षक का सम्मान करें।

(c) ऐसे काम करने के लिए जिससे परीक्षा के अंत में वे अच्छे अंक पा सकें।

(d) सीखने के लिए जिससे वे जिज्ञासु बनें और सीखने के लिए ही सीखना पसंद करें।

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (d) किसी भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों में विषय–वस्तु के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना होता है ताकि विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए उस विषय वस्तु को सीखे। इस प्रकार वे आंतरिक रूप से अभिप्रेरित होकर सीखेंगे तो सीखने के लिए ही सीखना पसन्द करेंगे।

82. कोई शिक्षिका अपने विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए अध्ययन करने हेतु आंतरिक रूप से उत्प्रेरित करने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकती है?

(a) प्रतियोगितात्मक परीक्षक से

(b) व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने और उनमें निपुणता पाने में उन्हें मदद देकर

(c) साफ दिखाई पड़ने वाले ईनाम देकर जैसे टॉफी

(d) उनमें चिंता और डर पैदा करके

DSSSB PRT, C TET 2016 (I-V)

Ans : (b) प्रत्येक मानव व्यवहार का एक निश्चित लक्ष्य होता है और उस लक्ष्य की प्राप्ति तक निरंतर क्रियाशील रहता है। लक्ष्य की प्राप्ति से व्यक्ति को संतोष मिलता है जो पुनर्बलन का कार्य करता है। इसलिए विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए उनका व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और उनमें निपूणता प्राप्त करने में उनकी सहायता करनी चाहिए।

83. कोई शिक्षिका अपने विद्यार्थियों को क्या कहे कि उन्हें भीतरी प्रेरणा के साथ कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कर सके?

(a) ''तुम उसके जैसे क्यों नहीं हो सकते? देखो, उसने इसे एकदम ठीक कर दिया।''

(b) ''काम जल्दी पूरा करो तो तुम्हें एक टॉफी मिलेगी।''

(c) ''इसे करने की कोशिश करो और तुम सीख जाओगे।''

(d) ''चलो, इसे उसके करने से पहले समाप्त कर लो।''

DSSSB PRT
C TET 2016 (I-V)

Ans : (c) कोई शिक्षिका अपने विद्यार्थियों में किसी कार्य को सीखने के प्रति जिज्ञासा, रुचि, अभिप्रेरणा, सफलता की भावना आदि उत्पन्न करके उसे आंतरिक रूप से अभिप्रेरित कर सकती है। अतः इसके लिए वह अपने विद्यार्थियों को कह सकती है कि ''इसे करने की कोशिश करो और तुम सीख जाओगे।'' ऐसा कहकर वह उनमें सफलता की भावना पैदा कर रही है जो एक आंतरिक अभिप्रेरण है।

84. निम्न में सर्वोत्तम कथन कौन-सा है?

एक अच्छा अध्यापक

(a) अध्यापन के लिए व्याख्यान विधि का प्रयोग करता है

(b) सदैव प्रदर्शन के माध्यम से सिखाता है

(c) विद्यार्थियों को सदैव सीखने के लिए प्रेरित करता है

(d) विद्यार्थियों को सदैव अनुशासन में रखता है

UK TET Paper - I (Class I-V) 29 Jan 2011

Ans: (c) एक अच्छा अध्यापक सदैव बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। वह किसी बाह्य प्रेरक के बजाय आंतरिक प्रेरक का प्रयोग करता है ताकि विद्यार्थी आंतरिक रूप से अभिप्रेरित होकर सीखें।

85. ..... को एक अभिप्रेरित शिक्षण का संकेतक माना जाता है

(a) कक्षा में अधिकतम उपस्थिति

(b) शिक्षक द्वारा दिया गया उपचारात्मक कार्य

(c) विद्यार्थियों के द्वारा प्रश्न पूछना

(d) कक्षा में एकदम खामोशी

DSSSB PRT
C TET 2011 (I-V)

Ans : (c) कक्षा–कक्ष में यदि विद्यार्थी विषय से सम्बन्धित प्रश्न पूछते हैं तो इसका अर्थ होता है कि वे अधिगम में रुचि ले रहे हैं तथा आंतरिक रूप से अभिप्रेरित हैं। अतः विद्यार्थियों के द्वारा प्रश्न पूछना, को एक अभिप्रेरित शिक्षण का संकेतक माना जाता है।

86. बच्चों को सीखने हेतु अभिप्रेरित करने के लिए शिक्षक को बढ़ावा देना चाहिए–

(a) प्रतिस्पर्धा

(b) कक्षा में प्रथम आने वाले बच्चे को पुरस्कृत करके

(c) सीखने हेतु उचित स्थिति और वातावरण का सृजन

(d) कक्षा में प्रतिभाशाली बच्चों की प्रशंसा करके

DSSSB PRT, UK TET 2013 (I-V)

Ans : (c) बच्चों को सीखने हेतु अभिप्रेरित करने के लिए शिक्षक को सर्वप्रथम सीखने हेतु उचित स्थिति और वातावरण का सृजन करना चाहिए ताकि बच्चे आंतरिक रूप से अभिप्रेरित होकर सीखें।

87. बच्चों को अपने अध्ययन में प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षकों को ..... की आवश्यकता होती है।

(a) बच्चे को नियंत्रण में रखने

(b) अन्य बच्चों के साथ तुलना करने

(c) बच्चे को प्रेरित करने

(d) बच्चे को डाँटने

DSSSB PRT
C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (c) बच्चों को अपने अध्ययन में प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षकों को बच्चों को प्रेरित करने की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चों को आंतरिक रूप से प्रेरित करे ताकि प्रेरणा से व्यवहार में परिवर्तन हो जाये।

88. प्रभावी और स्थायी शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी के पास होना चाहिए–

(a) केवल शिक्षा प्राप्त करने के अवसर

(b) योग्यता और अभिप्रेरणा का वांछित स्तर

(c) केवल उपयुक्त बौद्धिक स्तर

(d) केवल सीखने की योग्यता

DSSSB PRT
UT TET 2013 (I-V)

Ans : (b) प्रभावी और स्थायी शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी के पास योग्यता और अभिप्रेरणा का वांछित स्तर होना आवश्यक होता है। योग्यता अधिगम के लिए पृष्ठभूमि तैयार करती है तथा अभिप्रेरणा अधिगम के लिए क्रियाशील बनाती है। इसलिए दोनों का होना आवश्यक है।

89. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक को अपने शिक्षार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिए निम्नलिखित में से किस रणनीति को अपनाना चाहिए?

(a) प्रत्येक शिक्षार्थी में अंक लगाने के लिए स्पर्धा को प्रोत्साहित करना।

(b) प्रत्येक गतिविधि के प्रेरक के रूप में प्रोत्साहन, पुरस्कार और दंड का उपयोग करना।

(c) बच्चों को उनकी रूचियों के अनुसार अपने लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें पाने के लिए उद्यम में सहायता करना।

(d) पूरी कक्षा के लिए मानक लक्ष्य निर्धारित करना और उनकी उपलब्धि के आकलन के लिए कठोर मानदंड निर्धारित करना।

C TET Paper - I (Class I-V) 20 Sep 2015

Ans : (c) प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिए चाहिए कि वे बच्चों के रूचि के अनुसार लक्ष्य निर्धारित करें तथा उन्हें पाने में उनकी मदद करें, क्योंकि बच्चे वह कार्य ज्यादा लगन तथा सामर्थ्य से करते है जिसे करने में उन्हें आनन्द आता है।

90. एक अध्यापिका यह सुनिश्चित करना चाहती है कि उसके विद्यार्थी आन्तरिक रूप से प्रेरित हैं। इस सन्दर्भ में वह करेगी

(a) सभी बच्चों के लिए उपलब्धि के एकसमान मानकों को उल्लिखित करना

(b) इस प्रकार की अधिगम गतिविधियों की योजना बनाना जो अभिसारी चिन्तन को प्रोत्साहन देती है

(c) अन्तिम परिणाम पर ध्यान देने के बजाय व्यक्तिगत रूप से बच्चों की अधिगम की प्रक्रियाओं पर ध्यान देना

(d) वस्तु रूप में पुरस्कार प्रस्तुत करना

DSSSB PRT

C TET 2015 (VI-VIII)

Ans : (c) यदि विद्यार्थियों को सीखने के लिए आंतरिक रूप से अभिप्रेरित करना है तो उन्हें किसी बाह्य पुरस्कार या अंतिम परिणाम की जानकारी देने के बजाय व्यक्तिगत रूप से उनकी अधिगम की प्रक्रियाओं पर ध्यान देना चाहिए तथा उन्हें मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए।

91. विद्यार्थियों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करने हेतु उन्हें स्वच्छता समिति का सदस्य बनाना, प्रतिबिम्बित करता है

(a) प्रेरणा की सामाजिक-सांस्कृतिक संकल्पनाएँ

(b) प्रेरणा का व्यवहारवादी उपागम

(c) प्रेरणा का मानवतावादी उपागम

(d) प्रेरणा का संज्ञानात्मक उपागम

C TET Paper - I (Class I-V) 22 Feb 2015

Ans : (a) विद्यार्थियों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करने हेतु उन्हें स्वच्छता समिति का सदस्य बनाना, प्रेरणा की सामाजिक-सांस्कृतिक संकल्पनाओं को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार किसी भी सामाजिक, सांस्कृतिक कार्य के प्रति विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए उसमे उन्हें सक्रिय सहभागी बनाना चाहिए।

92. यदि पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों पर खोज करने की अनुमति दे दी जाए तो वे संतुष्ट हो जाते हैं। जब उन्हें हतोत्साहित किया जाता है तो वे व्यथित हो जाते हैं। वे ऐसा.....की उनकी अभिप्रेरणा के कारण करते हैं।

(a) अपनी शक्तियों के उपयोग करते हैं।

(b) अपनी उपेक्षा को कम करने

(c) कक्षा के साथ संबद्ध होने

(d) कक्षा में अव्यवस्था फैलाने में

C TET Paper -I (Class (I-V) 28 July 2013

Ans: (b) यदि पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों पर खोज करने की अनुमति दे दी जाए तो वे संतुष्ट हो जाते हैं जब उन्हें हतोत्साहित किया जाता है तो वे व्यथित हो जाते हैं। वे ऐसा अपनी उपेक्षा को कम करने की अभिप्रेरणा के कारण करते है।

93. इनमें से कौन से कक्षा के अभ्यास विद्यालय में विद्यार्थियों की प्रेरणा को कम कर सकती हैं?

(a) शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की कठिनाईयों का उपचार करने के लिए उसे पहचानने में असफल रहना।

(b) शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की योग्यता से अधिक ग्रेड देना।

(c) शिक्षक द्वारा निम्न प्रदर्शन करने वाले अधिगमकर्ताओं को प्रोत्साहित करके

(d) शिक्षक द्वारा उच्च शैक्षणिक मानक में उत्कृष्टता के रूप में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों को जज करना

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : किसी शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की कठिनाइयों का उपचार करने के लिए उसे पहचानने में असफल रहना विद्यालय में विद्यार्थियों की प्रेरणा को कम कर सकता है। क्योंकि विद्यालय में शिक्षक ही वह व्यक्ति होता है जो बच्चों के अधिगम में आने वाली कठिनाइयों को पहचानता है और उसका उपचार करता है। साथ ही वह विद्यार्थियों को अपनी कमजोरियों को पहचानने और उसमें सुधार करने के लिए भी अभिप्रेरित करता है।

94. वे शिक्षार्थी जो संवृद्ध ज्ञान और शैक्षणिक दक्षता की हार्दिक इच्छा प्रदर्शित करते हैं, उनके पास होता है

(a) निष्पादन-उपागम अभिविन्यास

(b) निष्पादन-परिहार अभिविन्यास

(c) कार्य-परिहार अभिविन्यास

(d) नैपुण्यता अभिविन्यास

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (a) जिन शिक्षार्थी के पास निष्पादन-उपागम अभिविन्यास होता है वे शिक्षार्थी संवृद्ध ज्ञान और शैक्षणिक दक्षता की हार्दिक इच्छा प्रदर्शित करते हैं।

95. शिक्षार्थी जो शैक्षिक योग्यता हेतु सबसे अधिक इच्छा रखते हैं, उन्हें कहा जाता है :

(a) प्रदर्शन परिहार उन्मुखीकरण

(b) प्रदर्शन दृष्टिकोण उन्मुखीकरण

(c) कार्य परिहार उन्मुखीकरण

(d) महारत उन्मुखीकरण

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : वह शिक्षार्थी जो शैक्षिक योग्यता हेतु सबसे अधिक इच्छा रखते हैं, उन्हें महारत उन्मुखीकरण (Mastery orientation) कहा जाता है। ऐसे बच्चों में उच्च अभिप्रेरण होती है, जो उन्हें आंतरिक रूप से अभिप्रेरित करती है।

पुनर्बलन, पुरस्कार एवं दण्ड

96. बच्चों को अधिगम गतिविधियों में भागीदारी करने के लिए लगातार पुरस्कार देना व दंड का प्रयोग करने से क्या प्रभाव पड़ता है?

(a) यह बच्चों को प्रदर्शन आधारित लक्ष्यों के बजाय निपुणता पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

(b) अधिगम में बच्चों की स्वाभाविक अभिरुचि तथा जिज्ञासा कम होती है।

(c) बाहरी अभिप्रेरणा कम होती है।

(d) आंतरिक अभिप्रेरणा बढ़ती है।

C TET (I-V) 8 Dec. 2019

Ans. (b) बच्चों को अधिगम गतिविधियों में भागीदारी करने के लिए लगातार पुरस्कार देने व दण्ड का प्रयोग करने से अधिगम में बच्चों की स्वाभाविक अभिरुचि तथा जिज्ञासा कम होती है क्योंकि लगातार पुरस्कार या दण्ड देने से उनका निष्पादन पुरस्कार और दण्ड पर निर्भर हो जाता है और प्रत्येक अनुक्रिया के बाद पुरस्कार या दण्ड की प्राप्ति से आशंकित रहते हैं। इसीलिए स्किनर ने भी आंशिक पुनर्बलन को अधिगम के लिए बेहतर माना है।

97. निम्नलिखित में से कौन पुनर्बलन का एक प्रकार नहीं है?

(a) सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन

(b) शारीरिक दण्ड (नकारात्मक पुनर्बलन)

(c) नकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (d) पुनर्बलन के निम्न प्रकार है-

- सकारात्म शाब्दिक पुनर्बलन (शाबासी देना) प्रशंसा करना।
- शारीरिक दण्ड
- नकारात्मक शाब्दिकपुनर्बलन (डांटना)

98. सकारात्मक दण्ड का निम्न में से कौन-सा उदाहरण है?

(a) मित्रों के द्वारा उपहास

(b) मित्रों के साथ समय बरबाद करना

(c) मीनमेख निकालना बंद करना

(d) इनमें से सभी।

Rajsthan TET Paper -I (Class (I-V) 31 July 2011

Ans: (a) बालक को अभिप्रेरित करने के कई साधन होते है

सकारात्मक साधन → प्रशंसा, शाबासी, पुरस्कार

सकारात्मक दण्ड - उपहास, हँसी उड़ाना

नकारात्मक

नकारात्मक दण्ड - शारीरिक दण्ड, डाटना

मित्रों के द्वारा उपहास से बचने के लिए बालक सीखने का प्रयास करता है या बुरी आदत छोड़ देता है इसलिए इसे सकारात्मक दण्ड कहा गया है।

99. प्रतिक्रिया का विलोप होना निम्नलिखित में से किसके बाद अधिक कठिन है?

(a) निरंतर पुनर्बलन (b) दंड

(c) मौखिक भर्त्सना (d) आंशिक पुनर्बलन

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (d) प्रतिक्रिया का विलोप होना आंशिक पुनर्बलन के बाद अधिक कठिन होता है क्योंकि आंशिक पुनर्बलन कई सही अनुक्रियाओं के उपरान्त दिया जाता है तथा कुछ सही अनुक्रियाओं पर पुनर्बलन नहीं दिया जाता है। यही कारण है कि निरंतर पुनर्बलन की अपेक्षा आंशिक पुनर्बलन अधिक प्रभावी होता है।

100. दण्ड किस प्रकार का पुर्नबलन है?

उत्तर: ऋणात्मक पुनर्बलन/नकारात्मक पुनर्बल/दण्ड कोई पुनर्बलन नहीं है।

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-पुनर्बलन से तात्पर्य है किसी अपेक्षित अनुक्रिया के प्रतिफल के रूप में किसी ऐसे उद्दीपक की प्रस्तुति जो अनुक्रिया को दोहराने की प्रायिकता को बढ़ाता हो। पुनर्बलन दो प्रकार का होता है।

* धनात्मक पुनर्बलन के उपस्थिति से अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ती है। जैसे-पुरस्कार, भोजन, प्रशंसा आदि।

* नकारात्मक पुनर्बलन के हटाये जाने से अनुक्रिया के दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ती है। जैसे- निन्दा, शोर आदि।

* दण्ड और ऋणात्मक पुनर्बलन में मुख्य अंतर यह है कि ऋणात्मक पुनर्बलन किसी अपेक्षित अनुक्रिया को दोहराये जाने की प्रायिकता बढ़ाता है जबकि दण्ड किसी अनुक्रिया के घटित होने की प्रायिक्ता को कम करता है। इसलिए स्किनर दण्ड को ऋणात्मक पुनर्बलन नही मानते हैं।

101. दंड और प्रोत्साहन___ के घटक हैं।

(a) व्यवहारवाद सिद्धांत
(b) डिजाइन-आधारित अनुसंधान विधि
(c) मानवतावाद सिद्धांत
(d) संयोजकता सिद्धांत

MP TET (VI-VIII) 16 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) : दंड और प्रोत्साहन व्यवहारवाद सिद्धांत के घटक हैं। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक स्किनर ने दंड और प्रोत्साहन (पुर्नबलन) को अधिगम के लिए महत्त्वपूर्ण माना है।

102. एक बच्ची को हर सही उत्तर के लिए एक स्टार मिलता है। किस सदृढ़ीकरण अनुसूची का उपयोग किया जा रहा है?

(a) परिवर्तनीय अनुपात सुदृढ़ीकरण अनुसूची
(b) आंतरायिक सुदृढ़ीकरण अनुसूची
(c) आंशिक सुदृढ़ीकरण अनुसूची
(d) निश्चित अनुपात सुदृढ़ीकरण अनुसूची

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : यदि एक बच्ची को हर सही उत्तर के लिए एक स्टार मिलता है तो इसका मतलब है कि निश्चित अनुपात सुदृढ़ीकरण अनुसूची का उपयोग किया जा रहा है। निश्चित अनुपात अनुसूची में कुछ निश्चित प्रतिक्रियाओं के उत्सर्जन के बाद पुनर्बलन दिया जाता है।

103. एक बच्चे को प्रेरित करने के लिए उसे उत्तेजित करना निम्न होता है:

(a) निरंतर सुदृढ़ीकरण (b) ऑपरेंट कंडीशनिंग
(c) सुदृढ़ीकरण (d) तटस्थ उत्तेजना

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : एक बच्चे को प्रेरित करने के लिए उसे उत्तेजित करना पुनर्बलन या सुदृढ़ीकरण (Reinforcement) कहलाता है। पुनर्बलन से आाशय है ऐसे उद्दीपकों को प्रस्तुत करना या हटाना ताकि किसी अनुक्रिया के होन की सम्भावना बढ़ जाये। पुनर्बलन के अंतर्गत प्रशंसा, भौतिक पुरस्कार, तेज शोर आदि आते हैं।

104. निम्नलिखित द्वितीयक पुनर्बलन का एक उदाहरण है।

(a) आइसक्रीम (b) पोशाक
(c) धन (d) रस

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : धन (Money) द्वितीयक पुनर्बलन का एक उदाहरण है जबकि आइसक्रीम, पोशाक, रस, भोजन आदि प्राथमिक पुनर्बलन के उदाहरण हैं। प्राथमिक पुनर्बलन बालक की जैविक आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं जबकि द्वितीयक पुनर्बलन बालक के सामाजिक, नैतिक आदि आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं। गौण या द्वितीयक पुनर्बलन को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि ''वह उद्दीपक या उत्तेजक जो वास्तव में प्रबलन नहीं होता किन्तु बार–बार की पुनरावृत्ति के कारण प्रबलन बन जाता है, द्वितीयक पुनर्बलन कहलाता है।

105. प्रतिक्रिया का विलोप होना निम्नलिखित में से किसके बाद अधिक कठिन है?

(a) आंशिक पुनर्बलन (b) निरंतर पुनर्बलन
(c) दंड (d) मौखिक भर्त्सना

DSSSB PRT

Ans : (a) प्रतिक्रिया का विलोप होना आंशिक पुनर्बलन के बाद अधिक कठिन है। आंशिक पुनर्बनलन को असतत् पुनर्बलन भी कहते हैं। इस प्रकार का पुनर्बलन कुछ सही अनुक्रिया करने या कुछ समयान्तराल पर दिया जाता है। यह पुनर्बलन सतत् पुनर्बलन की अपेक्षा ज्यादा प्रभावी होता है।

106. आंशिक पुनर्बलन

(a) सतत् पुनर्बलन की अपेक्षा कम प्रभावी होता है
(b) वास्तविक कक्षा-कक्ष में अनप्रयुक्त नहीं किया जा सकता
(c) पशुओं को प्रशिक्षित करने में सर्वाधिक कार्य करता है
(d) सतत पुनर्बलन की अपेक्षा अधिक प्रभावी होता है

C TET Paper -I (Class (I-V) 18 Nov 2012

Ans: (d) आंशिक पुनर्बलन से अभिप्राय कई सही अनुक्रियाओं के उपरान्त पुनर्बलन देने से है। यह सतत् पुनर्बलन की अपेक्षा अधिक प्रभावी होता है क्योंकि इसमें छात्र को किस अनुक्रिया पर पुनर्बलन मिलेगा इसका पता नहीं होता इससे वह प्रत्येक अनुक्रिया को तत्परता से करता है।

107. शिक्षकों को शिक्षार्थियों को शारीरिक दण्ड नहीं देना चाहिए क्योंकि

(DSSSB Assistant Nursery Teacher)

(a) यह माता-पिता को बहुत गुस्सा दिलाता है
(b) यह जोखिम भरा है
(c) यह शिक्षार्थियों में तनाव और डर पैदा करता है
(d) यह शिक्षकों के लिए केवल एक भावनात्मक रिहाई है

Ans. (c) **:** शिक्षकों को शिक्षार्थियों को शारीरिक दण्ड नहीं देना चाहिए क्योंकि यह शिक्षार्थियों में तनाव और डर पैदा करता है। इसका परिणाम यह होता है कि छात्र अपने भावनाओं, विचारों आदि को अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं जिससे उनका सामाजिक, मानसिक व भाषागत विकास अवरुद्ध हो जाता है।

108. बच्चों को शाब्दिक या गैर–शाब्दिक दण्ड देने का परिणाम होता है–

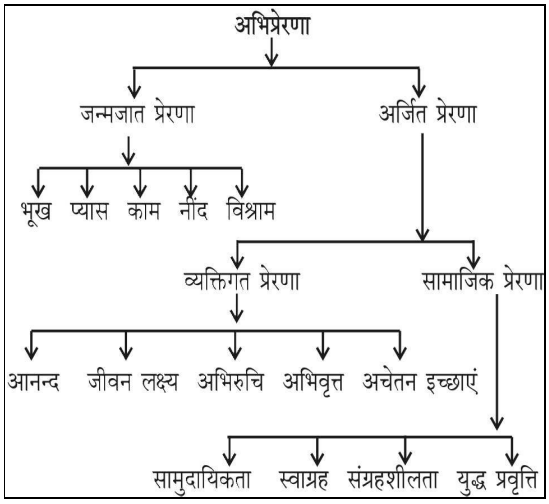
(a) उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित करना
(b) बच्चे की छवि की सुरक्षा करना
(c) उनके अंकों में सुधार करना
(d) उनके स्वयं के प्रति अवधारणा को नष्ट करना

DSSSB PRT
C TET (I-V) 2015

Ans : (d) जब बच्चे में कोई गलत कार्य करने की आदत पड़ जाती है या वह अपने प्रति गलत अवधारणा विकसित कर लेता है तो ऐसी स्थिति में उसे नकारात्मक या ऋणात्मक पुनर्बलन देकर उसकी आदत या अवधारणा को समाप्त किया जा सकता है। ऋणात्मक पुनर्बलन के अंतर्गत शाब्दिक या अशाब्दिक दण्ड आता है।

EXAM POINT

- ''अभिप्रेरणा वे शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक दशाएँ हैं जो किसी काम को करने के लिए प्रेरित करती है'' परिभाषा है **–मैक्डूगल की**
- मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त के प्रतिपादक है **–फ्रायड**
- शरीर क्रिया सिद्धान्त के प्रतिपादक है **–मार्गन**
- मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त दिया है **–विलियम मैक्डूगल**
- मासलो के अनुसार अभिप्रेरणा के प्रकार है **–जन्मजात, अर्जित, व्यक्तिगत, सामाजिक**



- अभिप्रेरणा दो प्रकार के होते है **–आन्तरिक एवं बाह्य अभिप्रेरणा**
- आन्तरिकत अभिप्रेरणा को कहते है **–सकारात्मक अभिप्रेरणा**
- पुरस्कार, दण्ड, प्रशंसा आदि है **–बाह्य अभिप्रेरणा**
- मोटिवेशन शब्द की उत्पत्ति हुई है **–मोटम (Motum)**
- मनोवैज्ञानिको ने मनुष्य को माना है **–यंत्र**
- जन्मजात प्रेरक है **–भूख**
- जन्मजात प्रेरक नहीं है **–मदव्यसन**
- यौन-प्रेरणा का सम्बन्ध किस ग्रन्थि के स्राव से है **–जनन ग्रन्थियाँ**
- प्राणी के समस्त व्यवहार के पीछे निहित कारक है **–अभिप्रेरणा**
- प्रणोदन वह शक्तिशाली उद्दीपन है जो माँग एवं उसकी अनुक्रिया उपस्थित करता है, यह कथन है **–शैफ्ट गिबनर का**
- अभिप्रेरणा अधिगम का है **–सहायक अंग**
- ''प्रेरणा विद्यार्थी में रुचि उत्पन्न करने की एक कला है, ऐसी रुचि जो या तो छात्र में है ही नहीं या इस रुचि का उसे आभास ही नहीं है।'' यह कथन किस विद्वान द्वारा दिया गया है– **थॉमसन के द्वारा**
- मनोवैज्ञानिकों के अनुसर अभिप्रेरणा चक्र के क्रमिक कदम कौन-सा है/हैं– **आवश्यकता, अन्तर्नोद, प्रोत्साहन या लक्ष्य**
- 'स्वतः अभिरुचि' का सम्बन्ध किससे है– **आन्तरिक अभिप्रेरण, बाह्य अभिप्रेरण**
- रुचि, आदत व सामुदायिकता किस प्रकार के प्रेरक के उदाहरण हैं– **अर्जित प्रेरक**
- एक अभिप्रेरित शिक्षण (Motivated Teaching) का संकेतक माना जाता है– **विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछने को**
- अभिप्रेरणा एक प्रक्रिया के संदर्भ में उपयुक्त नहीं है– **वह व्यक्ति को अप्रिय स्थिति से दूर रखता है**
- उपलब्धि अभिप्रेरक जीवित रहने के लिए आवश्यक है, यदि व्यक्तिगत क्षमताओं (Personal Potentialities) की सन्तुष्टि महत्वपूर्ण है तो उपलब्धि अभिप्रेरक को विकास प्रेरक कहा जाता है एवं यदि व्यक्तियों के मध्य प्रतियोगिता पर बल (Stress) है, तो उपलब्धि अभिप्रेरक को सामाजिक अभिप्रेरक कहा जा सकता है। यह सभी कथन सही हैं– **उपलब्धि अभिप्रेरक (Achievement motive) के सम्बन्ध में**
- आन्तरिक रूप से अभिप्रेरित बच्चों (Intrinsically motivated children) के लिए सही नहीं है– **ये हमेशा सफल होते हैं**
- प्रशंसा एवं दोषारोपण (Blame), प्रतिद्वन्द्विता (Rivalry), पुरस्कार एवं दण्ड और परिणाम का ज्ञान को समावेशित किया जाएगा– **बाह्य अभिप्रेरणा (Extrinsic motivation) में**
- अधिगम निर्योग्यता (Learning Disability) का लक्षण है– **अभिप्रेरणा (Motivation) का अभाव**
- रक्षा तन्त्र (Defense mechanism) बहुत सहायता करता है– **दबाव (Stress) से निपटने में**
- नए सीखने वालों में अधिगम के लिए रुचि का सृजन करता है– **अधिगम के प्रक्रम में अभिप्रेरणा**
- आप देखते हैं कि एक बच्चा बुद्धिमान है, आप– **वह जैसे अधिक प्रगति कर सके उस तरह उसे अनुप्रेरित करेंगे**
- अनुप्रेरित शिक्षण के एक संकेत में रूप में विवेचित किया जाता है– **विद्यार्थियों द्वारा प्रश्न पूछने को**
- विद्यालय में विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना उचित है– **गहन अध्ययन द्वारा**
- जन्मजात अभिप्रेरक है– **निद्रा**
- ''अभिप्रेरणा की व्याख्या जन्मजात मूल प्रवृत्तियों के आधार पर की जा सकती है।'' यह कहा– **मैक्डूगल ने**
- जन्मजात प्रेरक नहीं है– **आदत**
- कक्षा में शिक्षक के तौर पर निर्देशित निर्धारित कर, श्यामपट्ट का प्रयोग कर, दृष्टान्त उदाहरण द्वारा एवं छात्रों की सक्रिय भागीदारी द्वारा आप– **छात्रों को प्रेरित करते हैं**
- अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों के अनुसार, एक शिक्षक विद्यार्थियों से वास्तविक अपेक्षाएँ रखने के द्वारा संवर्धित कर सकता है– **सीखने को**

- एक विद्यार्थी मेडिकल कालेज में दखिला लेने के लिए कठिन परिश्रम करता है ताकि वह प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके। यह विद्यार्थी अभिप्रेरित है– **आन्तरिक रूप से**
- सीखने के लिए अधिकतम रूप से अभिप्रेरित करता है– **लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत सन्तुष्टि**
- चुनौतीपूर्ण कार्य करने में डटे रहने की प्रवृत्ति है– **उपलब्धि अभिप्रेरणा**
- आन्तरिक रूप से अभिप्रेरित विद्यार्थी के लिए बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है– **पुरस्कार की**
- राजेश अति लोलुप पाठक है। वह अपने कोर्स की पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त प्रायः पुस्तकालय जाता है और भिन्न प्रकरणों पर पुस्तकें पढ़ता है। इतना ही नहीं राजेश भोजन अवकाश में अपने परियोजना कार्य करता है। उसे परीक्षाओं के लिए पढ़ने के लिए अपने शिक्षकों अथवा अभिभावकों द्वारा कभी भी कहने की जरूरत नहीं है और वह वास्तव में सीखने का आनन्द लेता नजर आता है। उसे बेहतर रूप से वर्णित किया जा सकता है– **आन्तरिक रूप से अभिप्रेरित शिक्षार्थी**
- हालांकि यह स्पष्ट रूप से उनकी सुरक्षा आवश्यकताओं के उल्लंघन में था, कैप्टन विक्रम बतरा अपने देश को बचाने के दौरान कारगिल युद्ध में मारे गये सम्भवतः उन्हें था– **आत्म-सिद्धि की प्राप्ति**
- कक्षा में विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करने हेतु किस युक्ति का अनुप्रयोग नहीं कर सकते हैं– **उनकी अत्यधिक प्रशंसा करना**
- किसी शिक्षक को यदि यह लगता है कि उसका एक विद्यार्थी जो पहले विषय वस्तु को भली प्रकार सीख रहा था उसमें स्थिरता आ गई है। शिक्षक को ऐसे– **विद्यार्थी को प्रेरित करना चाहिए**
- विज्ञान विषयों में सर्वोच्च अंक पाने पर राकेश कुमार अपने पुत्र की प्रशंसा करते हैं, यह है– **अपने बच्चों को आन्तरिक प्रेरणा देना**
- सीखने को प्रभावित करने वाले कारक हैं– **अनुकरण, प्रशंसा एवं निन्दा और प्रतियोगिता**
- बालक की वैयक्तिकता का आदर, पुरस्कार एवं दण्ड और प्रशंसा एवं भर्त्सना को उपयोगी माना जा सकता है– **बालकों के सीखने में प्रेरणा को**
- प्रेरणा का वही सम्बन्ध उपलब्धि से है जो अधिगम का है– **बोध से**
- उत्सुकता परीक्षण घटक है– **अभिप्रेरणा का**
- अभिप्रेरणा के स्रोत हैं– **आवश्यकता**
- एक व्यक्ति की ''जीवन में नाम व प्रशंसा कमाने की इच्छा'' है– **आन्तरिक अभिप्रेरक**
- जो बालक के सामाजिक स्तरीकरण को समझे तथा कक्षा के वातावरण को प्रगतिशील व प्रेरणास्पद बनाए, वह है– **एक अच्छा विद्यालय**
- बच्चों को सीखने हेतु अभिप्रेरित करने के लिए शिक्षकों को बढ़ावा देना चाहिए– **सीखने हेतु उचित स्थिति और वातावरण का सृजन**
- कुशल मुख्याध्यापक, स्कूल का स्वस्थ वातावरण, आदर्श अध्यापक एवं पुरस्कार और दण्ड, ये सभी मुख्य तत्व हैं– **अच्छे अनुशासन के लिए**
- प्रभावी और स्थायी शिक्षा ग्रहण करने के लिए एक विद्यार्थी के पास होना चाहिए– **योग्यता और अभिप्रेरणा का वांछित स्तर**
- कक्षा-कक्ष गतिविधि इस प्रकार से हो कि बच्चों को सहायता मिल सके– **चरित्र निर्माण में**
- भारत सरकार ने प्राथमिक विद्यालयों के लिए मध्याह्न भोजन योजना प्रारम्भ की है। इस योजना का समर्थन करता है– **मानवीय अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त**
- विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा विकसित करने के लिए शिक्षक को चाहिए– **नई तकनीकी व नई विधियों का प्रयोग करना**
- एक अभिप्रेरित बालक प्रदर्शित नहीं करता है– **समूह से अलगाव का गुण**
- अभिप्रेरणा के लिए अक्सर प्रयोग किया जाता है– **आवश्यकता शब्द का**
- विद्यार्थियों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करने हेतु उन्हें स्वच्छता समिति का सदस्य बनाना प्रतिबिम्बित करता है– **प्रेरणा की सामाजिक सांस्कृतिक संकल्पनाएँ**
- अधिगम में आकलन आवश्यक होता है– **प्रेरणा के लिए**
- बच्चों को अपने अध्ययन में प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों को आवश्यकता होती है– **बच्चे को प्रेरित करने की**
- बच्चों की झूठ बोलने की आदत को सुधार सकते हैं– **सच बोलने वाले बच्चों को पारितोषिक देकर**
- छात्र में रुचि उत्पन्न करने की कला है– **प्रेरणा**
- अर्जित प्रेरक का उदाहरण है– **रुचि**
- अभिप्रेरणा वर्णित होती है– **भावात्मक जाग्रति द्वारा**
- सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा (Motivation) है– **शिक्षार्थियों में सीखने के प्रति रुचि का विकास**
- सतत् पुनर्बलन की अपेक्षा अधिक प्रभावी होता है– **आंशिक पुनर्बलन**
- मैस्लो के अभिप्रेरणा सिद्धान्त को कहा जाता है– **आवश्यकता का सिद्धान्त**
- शिक्षार्थियों में सीखने के प्रति रुचि का विकास करती है– **सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा**
- नए सीखने वालों से अधिगम के लिए रुचि का सृजन करता है– **अधिगम के प्रक्रम में अभिप्रेरणा**
- बच्चों को सीखने हेतु अभिप्रेरित करने के लिए शिक्षक को बढ़ावा देना चाहिए– **सीखने हेतु उचित स्थिति और वातावरण का सृजन**
- कोई शिक्षिका अपने विद्यार्थियों को अध्ययन करने हेतु आन्तरिक रूप से उत्प्रेरित करने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकती है– **व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने और उसमें निपुणता पाने में उन्हें मदद देकर**

31.

अधिगम में योगदान देने वाले कारक

व्यक्तिगत कारक

1. निम्नलिखित में से किस कारक का सीखने पर सबसे कम प्रभाव पड़ता है?

(a) थकान (b) आयु
(c) रोग (d) लिंगभेद

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (d) सीखने पर प्रभाव डालने वाले प्रमुख कारक– थकान, आयु, रोग बौद्धिक क्षमता, स्मरण क्षमता आदि हैं। दिये गये विकल्पों में से लिंग भेद का सीखने पर सबसे कम प्रभाव पड़ता है।

2. सीखने की प्रकिया को प्रभावित करने वाले कारक है

(a) अनुकरण (b) प्रशंसा एवं निन्दा
(c) प्रतियोगिता (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) अधिगम (सीखने) को प्रभावित करने वाले कारक-

1. पूर्व अधिगम	2. विषय वस्तु का स्वरूप
3. विषय के प्रति मनोवृत्ति	4. सीखने की इच्छा
5. सीखने की विधि	6. अभिप्रेरणा
7. अनुवांशिकता	8. वातावरण
9. प्रशिक्षण/शिक्षण	10. प्रशंसा एवं निंदा

3. निम्नलिखित में से कौन–से तत्त्व अधिगम को प्रभावित करते हैं?

(1) शिक्षार्थी का उत्प्रेरण
(2) शिक्षार्थी की परिपक्वता
(3) शिक्षण युक्तियां
(4) शिक्षार्थी का शारीरिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य

(a) 1 और 2 (b) 1, 2, 3 और 4
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

DSSSB PRT, C TET 2016 (VI-VIII)

Ans : (b) अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं–

(1) शिक्षार्थी का उत्प्रेरण (2) शिक्षार्थी की परिपक्वता
(3) शिक्षण युक्तियाँ
(4) शिक्षार्थी का शारीरिक और संवेगात्मक स्वास्थ्य
(5) पूर्व अधिगम (6) विषयवस्तु की प्रकृति
(7) अधिगम की इच्छा (8) थकान
(9) वातावरण आदि।

4. अधिगम को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक है

(a) संचार के साधन (b) समवयस्क समूह
(c) अध्यापक (d) परिपक्वता एवं आयु

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 31 July 2011

Ans: (d) अधिगम को प्रभावित करने वाला व्यक्तिगत कारक परिपक्वता एवं आयु है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी परिपक्वता एवं आयु के आधार पर ही अधिगम का कार्य कर सकता है। यदि कोई अधिगम कार्य व्यक्ति के परिपक्वता एंव आयु के समायोजन में नहीं होगा तो व्यक्ति अधिगम को नहीं प्राप्त कर सकता।

5. सीखने के वे कौन-से कारक हैं जो सीखने को प्रभावित करते हैं?

(a) शिक्षणार्थी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
(b) प्रेरणा और उपलब्धि का अभिप्रेरण स्तर
(c) उत्सुकता और इच्छाशक्ति
(d) उपरोक्त सभी

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (d) सीखने को प्रभावित करने वाले कारक-

1. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य	2. अभिप्रेरणा स्तर	
3. उत्सुकता	4. इच्छाशक्ति	5. वातावरण आदि

6. दो विद्यार्थी एक ही अवतरण को पढ़ते हैं, फिर भी इसके बिलकुल भिन्न अर्थ लगाते हैं। उनके बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?

(a) संभव नहीं है, क्योंकि अधिगम का आशय अर्थ लगाना नहीं है।
(b) संभव नहीं है और विद्यार्थियों को उसे दुबारा पढ़ना चाहिए।
(c) संभव है, क्योंकि शिक्षक ने अवतरण को समझाया नहीं है।
(d) संभव है, क्योंकि व्यक्ति के अधिगम को विविध कारण विभिन्न विधियों से प्रभावित करते हैं।

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 18 Sep 2016

Ans : (d) जब विद्यार्थी किसी नयी वस्तु का अधिगम करता है तो उस पर उसके पूर्व ज्ञान, मनोवृत्ति, समाज, संस्कृति, वातावरण, भाषा इत्यादि का प्रभाव पड़ता है। इसी कारण जब दो विद्यार्थी एक ही अवतरण को पढ़ते हैं फिर भी वे अपने मनोवृत्ति और परिवेश के आधार पर भिन्न अर्थ लगाते हैं।

7. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'सीखने' के बारे में सही है?

(a) सीखने के किसी भी चरण पर सीखना संवेगात्मक कारकों से प्रभावित नहीं होता।
(b) सीखना मूल रूप से मानसिक क्रिया है।
(c) बच्चों द्वारा की गई त्रुटियाँ यह संकेत करती हैं कि किसी तरह का सीखना नहीं हुआ।
(d) सीखना उस वातावरण में प्रभावी होता है जो संवेगात्मक रूप से सकारात्मक हो और शिक्षार्थियों को संतुष्ट करने वाला हो।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 26 June 2011

Ans: (d) सीखना उस वातावरण में प्रभावी होता है जो संवेगात्मक रूप से सकारात्मक हो और शिक्षार्थियों को संतुष्ट करने वाला हो।

8. निम्नलिखित में से कौन सा एक व्यक्तिगत अंतर नहीं है जो संभवतः अधिगम को प्रभावित कर सकता है?

(a) शरीर द्रव्यमान (b) बुद्धिमत्ता
(c) अनुभव (d) अभिप्रेरणा

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) किसी व्यक्ति का शरीर द्रव्यमान, भार, लम्बाई आदि व्यक्तिगत अंतर अधिगम को प्रभावित नहीं करते हैं जबकि बुद्धिमत्ता, अनुभव, अभिप्रेरणा, रुचि, आवश्यकता, मनोवृत्ति, मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य और परिपक्वता, थकान आदि व्यक्तिगत अंतर अधिगम को प्रभावित करते हैं।

9. निम्नलिखित में से कौन-सा एक व्यक्तिगत अंतर नहीं है जो अधिगम को प्रभावित करता है?

(a) लिंग (b) उँचाई
(c) सामाजिक-आर्थिक स्थिति (d) जाति

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : किसी व्यक्ति की ऊँचाई एक ऐसा व्यक्तिगत अंतर है जो अधिगम को प्रभावित नहीं करता है जबकि बुद्धि, व्यक्तित्व, योग्यता, क्षमता, मनोवृत्ति, रूचि, अभिवृत्ति, लिंग, सामाजिक आर्थिक स्थिति आदि व्यक्तिगत अंतर अधिगम को प्रभावित करते हैं।

पर्यावरणीय कारक

10. अध्यापक का कौन-सा कार्य उपयुक्त अधिगम वातावरण बनाने में मदद नहीं करता?

(a) बच्चों को सुरक्षा का भाव देना
(b) बच्चों को स्वतंत्रता का भाव देना
(c) बच्चों को अन्य बच्चों की आलोचना करने देना
(d) बच्चों को निर्भय बनाना

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (c) अध्यापक द्वारा किया गया कार्य ही अधिगम वातावरण को बनाने का कार्य करता है। अध्यापक द्वारा कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे अधिगम वातावरण दूषित हो और शिक्षण प्रक्रिया बाधित हो। जैसे-बच्चों की उदण्डता को उन्मुक्तता प्रदान करना। परस्पर आलोचना भी ऐसा ही दूषित कार्य है।

11. निम्नलिखित में से कौन–सा कारक अधिगम को सकारात्मक प्रकार से प्रभावित करता है?

(a) अनुत्तीर्ण हो जाने का भय
(b) से प्रतियोगिता
(c) अर्थपूर्ण सम्बन्ध
(d) माता–पिता की ओर से दबाव

DSSSB PRT, C TET 2014 (I-V)

Ans : (c) जब व्यक्ति का किसी विषय वस्तु, घटना या परिस्थिति से अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो वह आंतरिक रूप से प्रेरित होकर कार्य करता है जो अधिगम को सकारात्मक प्रकार से प्रभावित करता है। या

जब उद्दीपक और अनुक्रिया के मध्य अर्थपूर्ण ढंग से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है तो यह अधिगम को सकारात्मक प्रकार से परिभाषित करता है।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा अधिगम को अधिकतम करने के लिए सर्वाधिक उचित है?

(a) शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नता को सहज बनाने के लिए समान शिक्षार्थियों के जोड़ बनाए जा सकते हैं।
(b) अधिकतम परिणाम लाने के लिए शिक्षक केवल एक अधिकम शैली पर ध्यान केंद्रित करता है।
(c) समान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले शिक्षार्थियों को एक कक्षा में रखना चाहिए ताकि मत वैभिन्य से बचा जा सके।
(d) शिक्षिका को अपनी संज्ञानात्मक शैली के साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक शैली का पहचान करनी चाहिए।

C TET Paper -II (Class (VI-VIII) 28 July 2013

Ans: (d) अधिगम को अधिकतम करने के लिए सर्वाधिक उचित है कि शिक्षक को अपनी संज्ञानात्मक शैली के साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों को संज्ञानात्मक शैली की पहचान करानी है।

13. सीखने के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सत्य है?

(a) सीखना शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान पर आधारित नहीं है
(b) सीखना एक निष्क्रिय ग्रहणशील प्रक्रिया है
(c) सीखना कौशलों के संचय के समान है
(d) सीखने को सामाजिक क्रियाएँ सुविधा देती है

C TET Paper - II (Class VI-VIII) 21 Feb 2016

Ans : (d) सीखना जीवन पर्यंत चलने वाली एक प्रक्रिया है। मनुष्य समाज में रहकर तथा समाज के मानकों, मूल्यों के आधार पर सीखता है। अतः सामाजिक क्रियायें सीखने में सुविधा उपलब्ध कराती है तथा मनुष्य के विकास में सहायता प्रदान करती है।

14. निम्न आर्थिक स्तर का प्रभाव निम्न में से किस पर नहीं पड़ता है?

(a) आत्मसम्मान पर (b) सीखने की दक्षता पर
(c) उच्च संस्थान में प्रवेश पर (d) जीवन यापन पर

DSSSB PRT

Ans : (b) सीखने की क्षमता या योग्यता व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों, मानसिक विकास, बौद्धिक क्षमता आदि से प्रभावित होती है। इसमें आर्थिक कारण महत्त्वपूर्ण नहीं हो सकता। जबकि उच्च शिक्षण–संस्थान में प्रवेश, आत्मसम्मान तथा जीवन यापन आदि पर प्रत्यक्ष रूप से निम्न आर्थिक स्थिति प्रभाव डालता है।

15. निम्नलिखित में से कौन-सा शिक्षक से सम्बन्धित अधिगम को प्रभावित करने वाला कारक है?

(a) बैठने की उचित व्यवस्था
(b) शिक्षण-अधिगम संसाधनों की उपलब्धता
(c) विषय-वस्तु या अधिगम-अनुभवों की प्रकृति
(d) विषय-वस्तु में प्रवीणता

C TET Paper -I (Class (I-V) 29 Jan 2012

Ans: (d) शिक्षण प्रक्रिया में जब शिक्षक अपने विषय में प्रवीण होता है तो वह शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सकता है साथ ही साथ उसे अन्य विषयों के बारे में भी सामान्य ज्ञान होने चाहिए।

16. अल्प वयस्क बच्चों के अधिगम में अभिभावकों की भूमिका होनी चाहिए–

(a) निषेधात्मक (b) अग्र सक्रिय
(c) संवेदनात्मक (d) उदासीन

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (b) अल्प वयस्क बच्चों के अधिगम में अभिभावक की भूमिका अग्र सक्रिय होनी चाहिए ताकि उनके कार्य में भटकाव की स्थिति न उत्पन्न हो। इस अवस्था में बच्चों को निर्देशन के साथ-साथ परामर्श की भी आवश्यकता पड़ती है।

32.

स्मृति, विस्मृति, आदत निर्माण, थकान तथा अनुशासन

स्मृति का अर्थ एवं विशेषताएँ

1. वह स्मरण शक्ति जिसके द्वारा याद की गयी सामग्री को बिना किसी जोड़ तोड़ के ठीक उसी रूप में पुनः पेश कर सके उसे क्या कहते हैं?

(a) पूरी स्मरण शक्ति (b) रटने की स्मरण शक्ति
(c) श्रेष्ठ स्मरण शक्ति (d) ये सभी

MP TET (I-V) 2011

Ans : (c) वह स्मरण शक्ति जिसके द्वारा याद की गयी सामग्री को बिना किसी जोड़-तोड़ के ठीक उसी रूप में पुनः पेश कर सके, उसे श्रेष्ठ स्मरण शक्ति कहते हैं। इस स्मृति में हम याद किये हुए तथ्यों का स्वतन्त्र रूप से वास्तविक पुनः स्मरण कर सकते हैं तथा हम जो कुछ याद करते हैं, उसका हमें क्रमबद्ध ज्ञान रहता है।

2. अच्छी स्मृति की विशेषताएँ हैं

(a) शीघ्र पुनःस्मरण (b) शीघ्र पहचान
(c) अच्छी धारणा (d) ये सभी

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) स्मृति एक क्षमता है जिसके सहारे उद्देश्य पूर्ण कार्य किए जाते है तथा व्यक्ति विवेकशील चिंतन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है। अच्छी स्मृति के निम्न विशेषताए होती है-

1- शीघ्र पुनः स्मरण 2- पहचान
3- अच्छी धारण 4- समायोजन आदि।

3. निम्नलिखित में से कौन-सी स्पष्ट स्मृति की विशेषता नहीं है?

(a) अचेत (b) सुविचारित
(c) जागरूकता (d) स्मरण शक्ति

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (a) स्मृति वह योग्यता है जो पूर्व अनुभवों अथवा अधिगम से सीखी गयी बातों को संचित करने तथा कालान्तर में उसका चेतन जगत में प्रयोग करने से सम्बन्धित है। सुविचारित, जागरुकता, स्मरण शक्ति, धारण, पुनः स्मरण आदि स्मृति के अंग हैं।

स्मृति के अंग एवं प्रक्रिया

4. बुद्धि और स्मृति को नियंत्रित करने वाला मस्तिष्क का ग्रे मैटर, ... शिक्षार्थियों में अधिक मात्रा में होता है।

(a) पर्याप्त नींद लेने वाले
(b) स्वस्थ आहार लेने वाले
(c) तनाव से बचने वाले
(d) नियमित रूप से व्यायाम करने वाले

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : बुद्धि और स्मृति को नियंत्रित करने वाला मस्तिष्क का ग्रे मैटर, नियमित रूप से व्यायाम करने वाले शिक्षार्थियों में अधिक मात्रा में होता है क्योंकि नियमित व्यायाम शरीर की ताकत बढ़ाने के साथ–साथ मस्तिष्क की कोशिकाओं के आकार को बनाए रखने में भी सहायक होता है। व्यायाम मस्तिष्क के ग्रे पदार्थ को बनाये रखने में मदद करता है, जो विभिन्न कौशल और सोच क्षमताओं से जुड़ा हुआ है। ग्रे मैटर के बैलेंस रहने से दिमागी क्षमता की गिरावट को रोका जा सकता है।

5. निम्नलिखित में से स्मरण करने की कौन-सी विधि है?

(a) मिश्रित विधि (b) विचार-साहचर्य विधि
(c) (a) और (b) (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) मिश्रित विधि एवं विचार-साहचर्य विधि दोनों स्मरण की मुख्य विधियां हैं। मिश्रित विधि में पहले पूरे पाठ को प्रारम्भ से अंत तक पढ़ा जाता है फिर उसे खण्डों में बाँटकर उनको याद किया जाता है अंत में पूरे पाठ को प्रारम्भ से अंत तक फिर पढ़ा जाता है। विचार साहचर्य विधि – इस विधि में स्मरण की जाने वाली बातों का ज्ञात बातो से सम्बन्ध स्थापित कर लिया जाता है।

6. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक स्मृति से सम्बन्धित नहीं है?

(a) पहचान (b) धारण
(c) पुनर्स्मरण (d) अनुभूति

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (d) पहचान, धारण तथा पुनर्स्मरण का सीधा सम्बंध स्मृति से है जबकि अनुभूति विशेष परिस्थितियों में होने वाली क्रिया है।

7. वुडवर्थ के अनुसार स्मृति का आयाम नहीं है

(a) धारण (b) पुनःस्मरण
(c) पहचानना (d) तर्क करना

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (d) तर्क करना। स्मरण से तात्पर्य पूर्व सीखे गये विषयों या पाठों को चेतना में लाने से होता है स्मरण की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया होती है जिसमें चार तरह की उपक्रियाएं होती है-
(i) सीखना, (ii) धारण करना, (iii) प्रत्याहान, (iv) पहचान करना

8. निम्नलिखित में से कौन स्मृति की प्रक्रिया का हिस्सा नहीं है?

(a) भंडारण (b) पुनः प्राप्ति
(c) इनकोडिंग (d) प्रेरणा

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : स्मृति किसी सूचना को एक समय तक धारित करना तथा उसका प्रत्याह्वान करना है। स्मृति एक प्रक्रिया है जिसमें तीन स्वतंत्र किंतु अंतःसंबधित अवस्थाएँ होती हैं। ये तीनों अवस्थाएँ निम्न हैं–

1. **कूट संकेतन (Encoding)**– यह पहली अवस्था है जिसका तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा सूचना स्मृति तंत्र में पहली बार पंजीकृत की जाती है, ताकि इसका पुनः उपयोग किया जा सके।
2. **भंडारण (Storage)**– भंडारण स्मृति की द्वितीय अवस्था है। भंडारण उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसके द्वारा सूचना कुछ समय सीमा तक धारण की जाती है।
3. **पुनः प्राप्ति (Retrieval)**– यह स्मृति की तीसरी अवस्था है। सूचना का उपयोग तभी किया जा सकता है जब कोई व्यक्ति अपनी स्मृति से उसे वापस करने में समर्थ हो।

9. कविता को याद करने में प्रयुक्त विधि को कहा जाता है:

(a) बड़े पैमाने पर अधिगम (b) वितरित शिक्षा
(c) क्रमिक संस्मरण (d) युग्मित सहयोगी अधिगम

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (c) : कविता को याद करने में प्रयुक्त विधि को क्रमिक संस्मरण विधि कहा जाता है। क्रमिक संस्मरण विधि में किसी विषय–वस्तु को क्रमिक रूप से याद किया जाता है।

10. अंध स्मरणन (ब्लाइंड मैमोराइजेशन)..... कहलाता है।

(a) सस्वर पाठ (b) रटने द्वारा अधिगम
(c) अर्थपूर्ण अधिगम (d) पुनरावृत्ति

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : रटने द्वारा अधिगम अंध स्मरणन कहलाता है। किसी विषयवस्तु को बिना अच्छी तरह समझे उसे धारण कर लेना और आवश्यकता पड़ने पर उसका पुनः स्मरण कर लेना रटन्त अधिगम कहलाता है।

स्मृति के प्रकार

11. वर्तमान में पहने जा रहे जूते की एक नई जोड़ी से जूते के काटने का दर्द इसका एक उदाहरण है :

(a) दीर्घ-काल स्मृति (b) प्रासंगिक स्मृति
(c) तत्काल स्मृति (d) संवेदना स्मृति

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : वर्तमान में पहने जा रहे जूते की एक नई जोड़ी से जूते के काटने का दर्द तत्काल स्मृति का एक उदाहरण है। तत्काल स्मृति में हम याद की हुई बात को तत्काल सुना देते हैं, पर हम उसको साधारणतः कुछ समय के बाद भूल जाते हैं। यह स्मृति सब व्यक्तियों में एक-सी नहीं होती है और बालकों की अपेक्षा वयस्कों में अधिक होती है।

12. किस प्रकार की स्मृति में एक साइकिल चलाने का कौशल संग्रहित होता है?

(a) प्रक्रियात्मक स्मृति (प्रोसिजरल मेमोरी)
(b) प्रतिभा सम्बन्धित स्मृति (आइकॉनिक मेमोरी)
(c) प्रासंगिक स्मृति (एपिसोडिक मेमोरी)
(d) घोषणात्मक स्मृति (डिक्लरेटिव मेमोरी)

MP TET (VI-VIII) 18 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (a) प्रक्रियात्मक स्मृति उन स्मृतियों से सम्बन्धित है जिनमें किसी कार्य को पूरा करने के लिए कुछ कौशल की आवश्यकता होती है, जैसे– साइकिल चलाना, बॉस्केट बाल खेलना, चाय बनाना इत्यादि। प्रासंगिक स्मृति में जीवन से संबंधित सूचनाएँ होती हैं तथा घोषणात्मक स्मृति में तथ्य, नाम, तिथियाँ आदि संग्रहित होती है। ये तीनों स्मृतियाँ दीर्घकालिक स्मृति के प्रकार हैं। प्रतिभा सम्बन्धित स्मृति (आइकोनिक मेमोरी) दृश्य–संवेदी स्मृति है जो अल्पकालिक स्मृति के रूप में जाना जाता है।

13. हमारी स्मृति का कौन सा हिस्सा हमारे जीवन में घटित घटनाओं का भंडार है?

(a) प्रासंगिक स्मृति (b) प्रक्रियात्मक स्मृति
(c) शब्दार्थ स्मृति (d) घोषणात्मक स्मृति

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : प्रासंगिक या आख्यानात्मक स्मृति (Episodic memory) से तात्पर्य व्यक्ति के साथ घटी व्यक्तिगत आख्यान तथा घटनाओं की स्मृति से होता है। यह स्मृति हमारे जीवन में घटित घटनाओं का भंडार है। यह व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवों अथवा सूचनाओं से सम्बन्धित होती है।

14. निम्नलिखित में से कौन सी चलन स्मृति (वर्किंग मेमोरी) की विशेषता नहीं है?

(a) इसमें रिहर्सल शामिल है
(b) यह स्थायी है
(c) यह सक्रिय है
(d) इसमें जोड़-तोड़ शामिल है

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : कार्यकारी स्मृति या चलन स्मृति (Working Memory) स्थायी प्रकृति की नहीं होती है। बेडेले ने 1986 में सुझाया कि अल्पकालिक स्मृति निष्क्रिय भण्डार नहीं है बल्कि एक कार्य-मेज है जिस पर स्मृति की बहुत प्रकार की सामग्री रखी रहती है। जब-जब लोग विभिन्न संज्ञानात्मक कार्य करते हैं तब-तब इस सामग्री का लगातार उपयोग किया जाता है, इसको नियंत्रित और परिवर्तित किया जाता है। इस कार्य-मेज को कार्यकारी स्मृति कहा जाता है। इस प्रकार कार्यकारी स्मृति भी अल्पकालिक स्मृति की ही एक घटक है।

15. स्मृति के किस भाग में 15-25 सेकंड में अनावश्यक जानकारी को भूल जाना शामिल हैं?

(a) दीर्घ-कालीन स्मृति (b) संवेदी रजिस्टर
(c) चलन स्मृति (d) लघु-कालीन स्मृति

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : लघु–कालीन स्मृति में किसी अनावश्यक जानकारी को 15–25 सेकेंड में भूल जाना शामिल किया जाता है। इसे अस्थायी स्मृति (Temporary memory) भी कहते हैं। इस प्रकार की स्मृति का तात्पर्य सीखने के थोड़े समय के उपरान्त की अवधि में विषयवस्तु को दोहरा देने की क्षमता से है।

16. निम्न में से कौन-सी एक प्रकार की दीर्घ-कालिक स्मृति नहीं है?

(a) प्रक्रियात्मक स्मृति (b) प्रासंगिक स्मृति
(c) अर्थगत स्मृति (d) प्रतिध्वनित स्मृति

MP TET (VI-VIII) 28 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans : (d) दीर्घकालिक स्मृति, स्मृति का वह प्रकार है जिसकी स्थायी संचयी क्षमता असीमित तथा अवधि जीवनपर्यंत होती है। इसके निम्न प्रकार होते हैं–

1. घोषणात्मक स्मृति (declarative memory)
2. प्रक्रियात्मक स्मृति (procedural memory)
3. प्रासंगिक या घटनापरक स्मृति (episodic memory)
4. आर्थी या अर्थगत स्मृति (semantic memory)

जबकि प्रतिध्वनित स्मृति (Echoic memory) संवेदी स्मृति का प्रकार है।

17. स्मृति का वह हिस्सा जो पिछले अनुभव को संग्रहीत करता है?

(a) प्रक्रियात्मक स्मृति
(b) गैर-घोषणात्मक स्मृति
(c) अर्थ स्मृति
(d) प्रासंगिक (एपिसोडिक) स्मृति

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : स्मृति का वह हिस्सा जो पिछले अनुभव को संग्रहित करता है वह प्रासंगिक (एपिसोडिक) स्मृति कहलाता है। प्रासंगिक स्मृति से तात्पर्य व्यक्ति के साथ घटी व्यक्तिगत घटनाओं की स्मृति से होता है। यह व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवों अथवा सूचनाओं से सम्बन्धित होता है।

18. किस प्रकार की स्मृति संदर्भ का विशेष ध्यान रखती है?

(a) प्रतिष्ठित स्मृति (b) प्रतिध्वनि स्मृति
(c) प्रासंगिक स्मृति (d) संवेदी स्मृति

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (c) : प्रासंगिक स्मृति संदर्भ का विशेष ध्यान रखती है। प्रासंगिक स्मृति में जीवन चरित से सम्बन्धित सूचनाएँ होती हैं। हमारे निजी जीवन से सम्बन्धित स्मृतियाँ प्रासंगिक स्मृति बनाती हैं, इसलिए सामान्यतया इनका सांवेगिक स्वरूप होता है।

19. निम्नलिखित में से कौन कार्यशील स्मृति का हिस्सा नहीं है?

(a) केंद्रीय कार्यकारी (सेन्ट्रल एक्सक्यूटिव)
(b) स्वर-विज्ञान संबंधी पाश (फोनालॉजिकल लूप)
(c) एपिसोडिक बफर
(d) संवेदी रजिस्टर

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : संवेदी रजिस्टर कार्यशील स्मृति का हिस्सा नहीं है जबकि अन्य हैं। कार्यशील स्मृति के चार भाग होते हैं–
1. स्वर-विज्ञान संबंधी पाश (Phonological loop)
2. वीजुओ-स्पेशियल स्केचपैड (visuo-spatial sketch pad)
3. केन्द्रीय कार्यकारी (central executive)
4. ऐपिसोडिक बफर (Episodic buffer)

20. जटिल गणितीय समस्याओं को पूरा करने में किस प्रकार की स्मृति सम्मिलित हो सकती हैं?

(a) प्रतिभा सम्बन्धित स्मृति (आइकोनिक मेमोरी)
(b) प्रतिध्वनि स्मृति (एकोइक मेमोरी)
(c) चलन स्मृति (वर्किंग मेमोरी)
(d) संवेदी स्मृति (सेंसरी मेमोरी)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (c) : जटिल गणितीय समस्याओं को पूरा करने में चलन स्मृति (working memory) सम्मिलित हो सकती है। इसे कार्यशील स्मृति भी कह सकते हैं। कार्यशील स्मृति एक संज्ञानात्मक प्रणाली है जो सीमित क्षमता के साथ किसी सूचना का अस्थायी संचयन करती है ताकि उसको प्रसंस्करण या प्रयोग में लाया जा सके। चलन स्मृति तर्क करने के लिए तथा व्यवहार और निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

21. निम्नलिखित में से कौन हमारी कार्यशील स्मृति का एक हिस्सा है?

(a) केंद्रीय कार्यकारी (b) घोषणात्मक स्मृति
(c) शब्दार्थ स्मृति (d) संवेदी रजिस्टर

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : केन्द्रिय कार्यकारी स्मृति हमारी कार्यशील स्मृति का हिस्सा है। बेडेल के अनुसार अल्पकालिक स्मृति निष्क्रिय भण्डार नहीं है बल्कि एक कार्य मेज है जिस पर स्मृति की बहुत प्रकार की सामग्री रखी रहती है। जब–जब लोग विभिन्न संज्ञानात्मक कार्य करते हैं तब–तब इस सामग्री का लगातार उपयोग किया जाता है। इसको नियंत्रित और परिवर्तित किया जाता है। इसी कार्य–मेज को कार्यकारी स्मृति कहा जाता है।

22. स्मृति के किस हिस्से में चंकिंग (खण्डन) होता है?

(a) लघु-कालीन स्मृति
(b) दीर्घ-कालीन स्मृति
(c) संवेदी रजिस्टर
(d) चलन स्मृति (वर्किंग मेमोरी)

MP TET (VI-VIII) 22 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) : स्मृति के लघु कालीन स्मृति में चंकिंग (खण्डन) होता है। अल्पकालीन या लघु कालीन स्मृति की क्षमता बढ़ाने में चंकिंग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके द्वारा लघु कालीन स्मृति की क्षमता जो वैसे तो 7 ± 2 होती है, बढ़ाई जा सकती है।

स्मृति के नियम/सिद्धांत

23. निम्न में से किस विधि का उपयोग स्मृति के मापन के लिए नहीं किया जाता है?

(a) प्रत्याह्वान विधि (b) तार्किक विधि
(c) पहचान विधि (d) पुनः सीखना विधि

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (b) स्मृति वह योग्यता है जो पूर्व अनुभवों अथवा अधिगम से सीखी गयी बातों को संचित करने तथा कालान्तर में उसका चेतन जगत में प्रयोग करने से सम्बन्धित है।
प्रत्याह्वान विधि, पहचान विधि तथा पुनः सीखना विधि स्मृति से सम्बन्धित है तथा तार्किक विधि बौद्धिक क्षमता से सम्बन्धित है।

24. संघनन सिद्धान्त निम्न में किससे सम्बन्धित है-

(a) अधिगम (b) अभिप्रेरण
(c) स्मृति (d) सृजनात्मकता

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) संघनन सिद्धांत स्मृति से सम्बन्धित है। यह सिद्धांत मूलरूप से निर्णय निर्माण की प्रक्रिया तथा प्रस्तुतीकरण के तरीके को व्याख्यायित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार मनुष्य के मस्तिष्क में असंख्य सूचनाएँ संघनित रहती हैं। मनुष्य वही सूचना के द्वारा निर्णय का निर्माण करता है जो समस्या समाधान में सहायक होती है। अतः वही व्यक्ति निर्णय निर्माण में दक्ष होगा जो सृजनशील होगा।

25. संघनन का सिद्धान्त निम्न में से किसकी व्याख्या करता है?

(a) अधिगम (b) स्मृति
(c) अभिप्रेरणा (d) सृजनात्मकता

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) संघनन का सिद्धान्त स्मृति से सम्बन्धित है। यह मस्तिष्क में सूचनाओं के संचयन से सम्बन्धित है।

26. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक बच्चे की स्मृति को सुधारने में मदद नहीं करेगा?

(a) दोहराना और अभ्यास
(b) ताल अथवा लय की सहायता लेना
(c) विषय-सामग्री को उचित समूहों में व्यवस्थित करना
(d) अभिप्रेरित विस्मृति का सिद्धांत

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2015

Ans: (d) अभिप्रेरित विस्मृत का सिद्वांत अभिप्रेरणा स्तर को निर्धारण में सहायक होता है न कि स्मृति को सुधारने में सहायक होगा।

27. चेकिंग पर मिलर के सिद्धांत के अनुसार 'मैजिक नंबर' क्या है?

(a) 2 (+/–3) (b) 9 (+/–1)
(c) 5 (+/–2) (d) 7 (+/–2)

MP TET (VI-VIII) 26 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : चेकिंग पर मिलर के सिद्धान्त के अनुसार मैजिक नम्बर 7(+/–2) है। मिलर ने वर्ष 1956 में एक विचार प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने बताया कि अल्पकालिक स्मृति में केवल 5–9 {7 (+/–2)} सूचनाएं ही संग्रहित हो पाती हैं जिसमें एक भाग सार्थक इकाई के रूप में होता है तथा एक भाग कोई अंक, शब्द या किसी के चेहरे को संदर्भित कर सकता है।

28. सूचना की पुनरावृत्ति में क्या सम्मिलित है ताकि यह लघु-कालीन से दीर्घ-कालीन स्मृति तक चले?

(a) कूट संकेतीकरण (b) पूर्वाभ्यास
(c) चंकिंग (d) संग्रहण

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (b) : सूचना की पुनरावृत्ति में पूर्वाभ्यास (Rehearsal) आवश्यक है ताकि यह लघु–कालीन से दीर्घकालीन स्मृति तक मस्तिष्क में विद्यमान रहे। किसी व्यक्ति के द्वारा कोई बात जितनी अच्दी तरह से धारण की गयी होती है उसका उतनी ही सरलता से पुनःस्मरण किया जा सकता है तथा वह सूचना दीर्घकालीन भी होती है।

29. स्मृति को निम्न विधि से मापा जाता है।

(a) पुनरूत्पादन (रिकॉल यानी याद करना)
(b) साक्षात्कार
(c) अवलोकन
(d) प्रयोग

MP TET (VI-VIII) 17 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (a) स्मृति को पुनरूत्पादन या पुनः स्मरण विधि से मापा जाता है। पुनः स्मरण स्मृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। पुनः स्मरण से तात्पर्य गत अनुभवों अथवा अधिगम को वर्तमान में पुनः उत्पादन करने से है। यह काफी हद तक व्यक्ति की धारण शक्ति पर निर्भर करता है। किसी व्यक्ति के द्वारा जो बातें जितनी अच्छी तरह से धारण की गयी होती हैं उनकी उतनी ही अधिक सरलता से पुनःस्मरण किया जा सकता है।

30. किसने स्मृति पर एक प्रयोग किया, जिसमें बकवास शब्दांश शामिल थे?

(a) एबिंगहास (b) एटकिंसन
(c) पोसनर (d) कालकिंस

MP TET (VI-VIII) 24 Feb 2019 (9:30 PM)

Ans. (a) : हर्मन एबिंगहास ने स्मृति पर एक प्रयोग किया, जिसमें बकवास शब्द (Nonsence Syllables) शामिल थे। एबिंगहास ने विस्मरण के स्वरूप को समझने के लिए सर्वप्रथम क्रमिक प्रयास किया। उन्होंने निरर्थक/बकवास शब्दांशों की सूची (जो व्यंजन–स्वर–व्यंजन अक्षरों से बना था तथा जिन्हें CVC ट्राईग्राम कहा गया, जैसे– NOK या SEP इत्यादि) को याद किया। उस सूची को भिन्न–भिन्न समयान्तरालों पर पुनः याद किया तथा प्रत्येक बार प्रयासों की संख्या का मापन किया। उन्होंने पाया कि विस्मरण के क्रम का एक निश्चित प्रारूप होता है।

विस्मृति का अर्थ एवं प्रकार

31. सीखी हुई बात को स्मरण रखने या पुनः स्मरण करने की असफलता कहलाती है

(a) पुनः स्मरण (b) विस्मृति
(c) संवेदना (d) स्मृति

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 2 Feb 2016
UP TET Paper - I (Class V-V) 19 Dec 2016

Ans : (b) सीखी हुई बात को स्मरण रखने या पुनः स्मरण करने की असफलता विस्मृति कहलाती है। विस्मृति का तात्पर्य भूलना होता है जिसमें कोई तथ्य याद नहीं हो पाता है, इस दोष को विस्मृति कहते हैं।

32. सीखी गयी बात को धारण करने और पुनःस्मरण करने में असफल होना

(a) विस्मरण है (b) स्मरण है
(c) धारण है (d) चिन्तन है

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (a) सीखी गयी बात को धारण करने और पुनः स्मरण करने में असफल होना, विस्मरण कहलाता है।

विस्मृति के कारण एवं विस्मृति कम करने के उपाय

33. निम्नलिखित में कौन-सा भूलने का सिद्धान्त है?

(a) प्रतिस्पर्धात्मक अवरोध (b) प्रतीपकारी अवरोध
(c) प्रतिबोधित अवरोध (d) प्रतिच्छायित अवरोध

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (b) प्रतीपकारी अवरोध भूलने का सिद्धांत है जिसमे मौलिक रूप से सीखी गई कोई धारणा अन्य वस्तुओ (विषयवस्तु) पर लागू करने में त्रुटि का अनुभव किया जाता है।

34. निम्नलिखित में से कौन सा भूलने का कारण नहीं है?

(a) मानसिक द्वन्द्व (b) पुनरावृत्ति का अभाव
(c) सीखने की मात्रा (d) शिक्षक की योग्यता

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (d) अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत बालकों में भूलने की प्रवृत्ति उनमें उत्पन्न मानसिक या शारीरिक दोष के कारण होती है इसके अलावा मानसिक द्वन्द्व, पुनरावृत्ति का आभाव एवं सीखने की मात्रा (अधिकता की स्थिति में) भी भूलने के प्रमुख कारण हैं। किन्तु बालकों के भूलने के कारणों में किसी भी प्रकार से शिक्षक का योगदान नहीं होता है।

35. विस्मृति कम करने का उपाय है -

(a) सीखने में कमी
(b) सीखने की त्रुटिपूर्ण विधि
(c) पाठ की पुनरावृत्ति
(d) स्मरण करने में कम ध्यान देना

UP TET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (c) जब व्यक्ति अपने भूतकाल के अनुभवों या सीखी बातों को चेतन में लाने में असफल हो जाता है, तब उसे विस्मृति कहते हैं। अतः विस्मृति को कम करने के लिये यह आवश्यक है कि सीखी गयी बातों या अनुभवों की पुनरावृत्ति की जाती रहे।

36. निम्न में से कौन-सा विस्मृति का कारण नहीं है?

(a) सीखने में कमी
(b) स्मरण करने की इच्छा
(c) मानसिक द्वन्द्व
(d) सीखने की दोषपूर्ण विधिया

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (b) विस्मृति या विस्मरण सीखने में कमी, मानसिक द्वन्द्व तथा सीखने की दोषपूर्ण विधियों के कारण होता है। अतः विकल्प (b) स्मरण करने की इच्छा इसके अन्तर्गत नहीं आता है।

आदत का अर्थ, प्रकार एवं शिक्षा में इसका महत्त्व

37. निम्नलिखित में से कौन-सी नैतिक आदत नहीं है?

(a) सत्य बोलना (b) सहानुभूति दिखाना
(c) सही उच्चारण करना (d) जीवों पर दया दिखाना

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 2015

Ans: (c) नैतिक आदत निम्न है–
- सत्य बोलना
- सहानुभूति दिखाना
- जीवो पर दया दिखाना
- दूसरों की सहायता करना

सही उच्चारण न कर पाना एक भाषा विकार है जो अभ्यास द्वारा दूर किया जा सकता हैं।

थकान का अर्थ, प्रकार, कारण एवं शिक्षा में महत्त्व

38. थकान का कारण नहीं है

(a) निरन्तर कार्य करते रहना (b) शिक्षण विधियाँ
(c) विश्राम (d) अपर्याप्त रोशनी।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (c) निरन्तर कार्य करते रहने से, कार्य के लिए अनुकूल पारिस्थितियों के न होने से उपयुक्त शिक्षण विधियों के अभाव से या अपर्याप्त रोशनी से थकान का अनुभव किया जाता है। थकान को दूर करने के लिए विश्राम (आराम) किया जाता है। अतः विश्राम थकान का कारण नहीं है।

अनुशासन

39. किसका अभिप्राय अपने व्यवहार को नियंत्रित करने से है?

(a) आत्म नियंत्रण (b) आत्म अनुदेश
(c) आत्म प्रबलन (d) आत्म अभिव्यक्ति

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) आत्म नियंत्रण का अर्थ है आत्मा पर नियंत्रण अर्थात् अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना आत्म नियंत्रण है अतः अपने व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए उपयुक्त शब्द आत्म नियंत्रण है।

EXAM POINTS

- ''पूर्व समय में सीखी हुई बातों को याद रखना ही स्मृति है'' कथन है **–वुडवर्थ**
- ''स्मृति से तात्पर्य अतीत की घटनाओं की कल्पना करना और इस तथ्य को पहचाने लेना भी ये अतीत के अनभुव है'' **–मैकडूगल**
- संवेदी स्मृति (sensory memory) होती है **–4 सेकेण्ड तक**
- अल्पकालीन स्मृति (short term memory) कितनी अवधि की होती है **–20 सेकेण्ड तक**
- स्मृति की सर्वश्रेष्ठ प्रणाली कौन सी है? –पहचानना
- स्मृति पर सर्वप्रथम प्रयोग किया –एबिंगहास

स्मृति के प्रकार– व्यक्तिगत स्मृति, अव्यक्तिगत स्मृति, तात्कालिक स्मृति, स्थायी स्मृति, सक्रिय स्मृति, निष्क्रिय स्मृति, रटंत स्मृति, तार्किक स्मृति, सच्ची अथवा शुद्ध स्मृति, आदत स्मृति, मनोवैज्ञानिक स्मृति, शारीरिक स्मृति, इन्द्रिय-अनुभव स्मृति।

स्मृति के आधार अथवा अंग हैं–

1. सीखना, 2. धारण, 3. पुनः स्मरण 4. पहचान

- स्मृति का अंग नहीं है **–चिन्तन**
- अच्छी स्मृति की विशेषता है **–शीघ्र अधिगम, शीघ्र स्मरण, अनावश्यक बातों की विस्मृति**
- वास्तविक स्मृति में याद किया जात है **–क्रमबद्धता से**
- पुनः स्मृति में बाधा उत्पन्न करता है **–भय, चिन्ता, परेशानी**
- सीखी हुई कोई भी क्रिया मस्तिष्क में अंकित हो जाती है उसे कहते है **–स्मृति चिन्ह**
- अच्छी स्मृति की प्रथम प्रमुख विशेषता है **–शीघ्र याद होना**

विस्मृति–भूतकाल के किसी अनुभव को वर्तमान चेतना में लाने को असफलता को विस्मृति कहते है।

- विस्मृति दो प्रकार की होती है **–सक्रिय विस्मृति, निष्क्रिय विस्मृति**
- जब व्यक्ति किसी बात को भूलने का प्रयत्न करके उसे भुला देता है उसे कहते है **–सक्रिय विस्मृति**
- सीधी हुई वस्तु को धारण और पुनः स्मरण करने में असफल होना ही **–विस्मृति कहलाती है**
- विस्मृति का कारण है **–मानसिक द्वन्द्व, मानसिक आघात, दमन सिद्धान्त**
- जब व्यक्ति प्रयास न करने पर भी किसी बात को भूल जाता है **–निष्क्रिय विस्मृति**

विस्मृति के कारण– बाधा, दमन, अनभ्यास, समय का प्रभाव, रुचि, ध्यान या इच्छा का अभाव, विषय का स्वरूप, विषय की मात्रा, सीखने में कमी, सीखने की दोषपूर्णविधि, मानसिक आघात, मानसिक द्वन्द्व, मानसिक रोग, मादक वस्तुओं का प्रयोग, स्मरण न करने की इच्छा।

33.

शिक्षा में सांख्यिकी विधियाँ

1. निम्नांकित 7 छात्रों के अंक इस प्रकार हैं
40, 38, 36, 50, 51, 54, 23
उपरोक्त की माध्यिका होगी

(a) 36 (b) 50
(c) 40 (d) 23

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) प्रश्नगत श्रेणी को आरोही क्रम में रखने पर नयी श्रेणी होगी- 23, 36, 38, 40, 50, 51, 54

अभीष्ठ माध्यिका $= \frac{n+1}{2}$ वाँ पद [n = आकड़ों की संख्या]

$= \frac{7+1}{2} = \frac{8}{2} = 4$ वाँ पद

अतः माध्यिका 40 होगी।

2. ''प्राप्तांकों के समूह का वह बिन्दु, जिसके नीचे समूह के आधे प्राप्तांक और जिसके ऊपर समूह के आधे प्राप्तांक होते है'', कहलाता है

(a) मध्यमान (b) बहुलांक
(c) मध्यांक (d) मानक विचलन

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) प्राप्तांको के समूहों को आरोही या अवरोही क्रम में रखने पर उस समूह के मध्य बिन्दु को मध्यांक कहते है। माना समूहों में प्राप्तांकों की संख्या n हो तो

मध्यांक $= \frac{n}{2}$ वाँ पद

3. आवृत्ति वितरण को रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित करने की विधियों में से.....एक विधि है।

(a) आकृति (b) स्तम्भाकृति
(c) गुम्फाक्षर आकृति (d) स्वलिखित आकृति

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (b) आवृत्ति वितरण को रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित करने की कई विधियां होती है जैसे- पाई चार्ट, स्तम्भाकृति तथा वेन आरेख आदि।

4. पूरे आवृत्ति वितरण के प्रतिनिधित्व करने वाले मान को.....कहा जाता है।

(a) प्रामाणिक विचलन का मान
(b) केन्द्रवर्ती प्रमाप का मान
(c) सहसम्बन्धीय प्रतिनिधि का मान
(d) समूहज प्रतिशत प्रतिनिधि का मान

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) पूरे आवृत्ति विवरण का प्रतिनिधित्व करने वाले मान को केन्द्रवर्ती प्रमाप का मान कहते है जिसमें माध्य, माध्यिका, बहुलक आदि शामिल होते है।

5. निम्न में से कौन केन्द्रीय प्रवृत्ति का माप नहीं है?

(a) प्रसार (b) बहुलांक
(c) मध्यांक (d) मध्यमान

UPTET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (a) किसी श्रेणी में चर का वह मान जो उस श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है, केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप कहलाती है। केन्द्रीय प्रवृत्ति की मुख्य मापें निम्न है-
1. माध्य 2. माध्यिका 3. बहुलक
प्रसार केन्द्रीय प्रवृत्ति का माप नहीं होता है।

6. सांख्यिकी में वह रेखाचित्र, जिसमें आवृत्तियों को स्तम्भों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, कहलाता है

(a) स्तम्भाकृति (b) आवृत्ति बहुभुज
(c) संचयी आवृत्ति (d) रेखाचित्र

UPTET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (a) सांख्यिकी में वह रेखाचित्र, जिसमें आवृत्तियों को स्तम्भों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है उसे ''स्तम्भाकृति'' कहते हैं।

7. दिए हुए प्राप्तांकों के समूह में जो प्राप्तांक बहुधा सबसे अधिक बार आता है उसे -------- कहते हैं –

(a) बहुलक (b) मध्यमान
(c) मध्यांक (d) मानक विचलन

UPTET Paper - I (Class I-V) 19 Dec 2016

Ans : (a) बहुलांक या बहुलक सांख्यिकी की केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप का भाग है जिसमें माध्य, माध्यिका व बहुलक भी आता है। प्राप्तांकों में जिस प्राप्तांक की आवृत्ति सबसे अधिक होती है वह बहुलक कहलाता है। इसे निम्न सूत्र से ज्ञात किया जा सकता है-
3 Median -2 Mean (3 Mn -M)

8. .....केन्द्रीय प्रवृत्ति का एक माप है।

(a) प्रसार क्षेत्र (b) माध्यिका
(c) औसत विचलन (d) मानक विचलन

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (b) माध्यिका - केन्द्रीय प्रवृत्ति एक सांख्यिकी विधि है। जिसके द्वारा स्कोर के केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप की जाती है। इसके अन्तर्गत माध्य (Mean), माध्यिका (Median), Mode (बहुलक आते हैं।

9. वह विज्ञान, जो संख्यात्मक प्रदत्त को एकत्र करने, विभाजित करने, प्रस्तुत करने, तुलना करने और व्याख्या करने की विधि से सम्बन्धित है, कहलाता है

(a) सांख्यिकी (b) गणित

(c) ज्यामिति (d) सम्भाव्यता

UPTET Paper - II (Class VI-VIII) 15 Oct 2017

Ans : (a) वह विज्ञान जो संख्यात्मक प्रदत्त को एकत्र करने, विभाजित करने, प्रस्तुत करने, तुलना करने और व्याख्या करने की विधि से सम्बन्धित है, सांख्यिकी कहलाता है।

10. The empirical relationship among the three measures of central tendencies is :
केन्द्रीय प्रवृत्ति के तीनों मापों में आनुभविक संबंध है–

(a) 2 Median = Mode + Mean
2 माध्यिका = बहुलक + माध्य

(b) 3 Median = Mode + 2 Mean
3 माध्यिका = बहुलक + 2 माध्य

(c) Median = Mode + Mean
माध्यिका = बहुलक + माध्य

(d) Median = 2 Mode + 3 Mean
माध्यिका = 2 बहुलक + 3 माध्य

UP TET (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) ∵ माध्य–बहुलक = 3 (माध्य – माध्यिका)

⇒ माध्य – बहुलक = 3 × माध्य – 3 × माध्यिका

⇒ 3 माध्यिका = 3 माध्य – माध्य + बहुलक

⇒ 3माध्यिका = बहुलक + 2 माध्य

11. आप छात्रों के औसत अंकों की गणना कैसे करेंगे?

(a) जियोमेट्रिक माध्य (b) प्रसरण

(c) मानक विचलन (d) अंकगणित औसत

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (2:30 PM)

Ans. (d) : अंकगणित औसत एक माध्य या औसत का सबसे सरल और व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला माप है। इसमें केवल संख्याओं के समूह का योग लेना शामिल है, फिर श्रृंखला में प्रयुक्त संख्याओं की गणना द्वारा उस योग को विभाजित किया जाता है। छात्रों के औसत अंकों की गणना इसी माप द्वारा की जाती है।

EXAM POINT

सांख्यिकी को अग्रेजी में statistics कहते है। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Status, इटैलियन शब्द Ststista या जर्मन शब्द 'Statistik' से हुई है। 'Statistics' शब्द का प्रयोग जर्मनी के विद्वान **गोट फ्राइट एकैनवाल** ने किया था, जिन्हें सांख्यिकी का जन्मदाता माना जाता है।

रेखाचित्र अथवा ग्राफ पर भी आंकड़ों को प्रस्तुत करने की तीन विधियाँ होती है–

1. स्तम्भाकृति
2. आवृत्ति वितरण बहुभुज
3. संचयी आवृत्ति लेखाचित्र

केन्द्रीयवर्ती मान तीन प्रकार के होते है–

1. मध्य या मध्यमान (Mean)
2. मध्यांक (Median)
3. बहुलांक (Mode)

1. मध्यमान (Mean)– प्राप्तांकों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर जो भागफल आता है। उसे मध्यमान कहते है।

उदाहरण- एक व्यक्ति को पहले दिन 5 रुपये दूसरे दिन 7 रुपये तीसरे दिन 10 रुपये, चौथे दिन 15 रुपये दिया गया तो उसका मध्यमान होगा।

उत्तर- $\frac{5+7+10+14}{4}=\frac{36}{4}=9$ मध्यमान

इसका अर्थ हुआ कि उस व्यक्ति को 9 रुपये का औसत प्राप्त हुआ।

2. मध्यांक या माध्यिका (Median)– माध्यिका वितरण का मध्य बिन्दु है। जिसके ऊपर एवं नीचे, बराबर-बराबर 50% प्रापतांक रहते है।

उदाहरण- कुछ बालको के प्राप्तांक निम्नलिखित है इनका मध्यांक ज्ञात कीजिए।

18, 12, 23, 26, 7, 12, 9, 14, 42

उत्तर- सर्वप्रथम उपर्युक्त प्राप्तांकों को छोटे से बड़े के क्रम में रखते है।

7, 9, 12, 12, 14, 18, 23, 26, 42

अतः माध्यिका = 14 होगा।

प्रस्तुत उदाहरण में हम देखते हैं कि छोटी संख्या से बड़ी संख्या क्रम में रखने से 14 ठीक बीच में पड़ता है। 14 के नीचे और ऊपर दोनो ओर 4-4 अर्थात बराबर प्राप्तांक है। अतः माध्यिका 14 हुई।

3. बहुलक (Mode) – बहुलांक वह अंकमान है। जिसकी पुनरावृत्ति वितरण में सबसे अधिक हो अर्थात् जो अंक वितरण में सबसे अधिक बार आयो हो।

उदाहरण- 6,12,7,6,9,6,4,7,6,8,10,6

अवर्गीकृत प्रदत्तों का बहुलांक ज्ञात कीजिए।

उत्तर–इसमे 6 बहुलांक होगा क्योंकि सम्पूर्ण वितरण में यही अंक सबसे अधिक बार आया है।

विचलन– विचलन मान के माप निम्नलिखित चार होते है।

1. विस्तार क्षेत्र (Range)
2. चतुर्थांश विचलन
3. मध्यमान विचलन
4. मानक विचलन

1. विस्तार क्षेत्र (Range) – उच्चतम प्राप्तांक (highest score) तथा न्यनूतम प्राप्तांक (lowest score) के बीच के अन्तर को विस्तार क्षेत्र कहते है।

उदाहरण– यदि आठ बालकों के प्राप्तांक 6, 9, 7, 14, 18, 15, 13, 22 हो तो इनका विस्तार क्षेत्र ज्ञात कीजिए?

उत्तर– सम्पूर्ण प्राप्तांकों का उच्चतम प्राप्तांक 22 और न्यूनतम प्राप्तांक 6 है। इनके बीच का अन्तर 22-6= 16

अतः 16 ही अभीष्ट विस्तार क्षेत्र होगा।

2. चतुर्थांश विचलन– चतुर्थांश विचलन ज्ञात करने के लिए सूत्र

$$Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$$

3. मध्यमान विचलन– ''मध्यमान विचलन किसी पदमाला में सभी अलग-अलग प्राप्तांको का उनके मध्यमान से विचलनों का औसत होता है।''

मध्यमान विचलन दो प्रकार से निकाला जाता है–

1. अवर्गीकृत आँकड़े 2. वर्गीकृत आँकड़े

उदाहरण– निम्नलिखित प्राप्तांकों का मध्यमान-विचलन ज्ञात कीजिए।

14,20,22,26,30,32

उत्तर- इसका सबसे पहले मध्यमान निकालते है

$$\frac{14+20+22+26+30+32}{6} = \frac{144}{6} = 24$$

अब 24 को सभी प्राप्तांकों में से घटायेंगे, किन्तु घटाते समय +, – के चिन्हों पर ध्यान नहीं देते।

14-24= -10
20-24= -4
22-24= -2
26-24= +2
30-24= +6
32-24= +8
32

$\frac{32}{6} = 5.33$ अभीष्ट उत्तर

मानक विचलन– मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहते हैं। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गों के वर्गमूल का औसत होता है।

मानक विचलन निकालने का सूत्र– $S.D. = \sqrt{\left(\frac{\sum d^2}{N}\right)}$

S.D.= मानक विचलन

d^2 = विचलनों का वर्ग

N = प्राप्तांकों की संख्या

$\sum$ = सिग्मा = योग

उदाहरण–निम्नलिखित प्राप्तांकों का प्रामाणिक विचलन ज्ञात कीजिए।

14, 20, 22, 26, 30, 32

उत्तर– सबसे पहले मध्यमान निकालते है

$$\frac{14+20+22+26+30+32}{6} = \frac{144}{6} = 24$$

अब सभी प्राप्तांकों में से 24 को घटायेंगे इसमें +, - चिन्हे का मतलब नहीं रखते है तथा घटाने के बाद जो प्राप्तांक प्राप्त होते है उनका वर्ग कर देते है।

14-24=	-10	100
20-24=	-4	16
22-24=	-2	4
26-4=	+2	4
30-24=	+6	36
32-24=	+8	64
		224

$S.D. = \sqrt{\left(\frac{224}{6}\right)} = 6.11$ अभीष्ट उत्तर

- सांख्यिकी के पिता कहा जाता है **–गाट फ्रायड एकेनवाल को**
- ''प्राप्तांकों के समूह का वह बिन्दु, जिसके नीचे समूह के आधे प्राप्तांक और जिसके ऊपर समूह के आधे प्राप्तांक होते है'' कहलाता है **–मध्यांक**
- सांख्यिकी के नियम है **–सार्वभौमिक**
- सांख्यिकी है **–विज्ञान व कला दोनों**
- एक पेड़ पर लगे सन्तरों का औसत आकार निकालने हेतु सर्वाधिक उपयुक्त औसत है **–बहुलक**
- केन्द्रीय आवृत्ति का सर्वोत्तम आदर्श माप है **–समान्तर माध्य**
- माध्य स्थिति माध्य है **–बहुलक**
- मध्यका की गणना में श्रेणी को व्यवस्थित किया जाता है **–आरोही अथवा अवरोही क्रम में**
- व्यवस्थित व्यक्तिगत श्रेणी में मध्यका होगा **–(N+1/2)वाँ पद**
- मध्यांक की विशेषता होती है **–सुगमता, विश्सनीयता, सम्भाव्यता**
- मध्यमान किसे कहते है **–प्राप्तांको का औसत**
- शिक्षा में आवृत्ति वितरण का महत्व है **–कक्षा के छात्रों को किसी विषय में सामान्य योग्यता का स्पष्ट ज्ञान प्रदान करता है**
- चतुर्थांश विचलन कहते है **–तृतीय चतुर्थांश तथा प्रथम चतुर्थांश के बीच के अन्तर की आधी दूरी**
- उच्चतम प्राप्तांक और न्यूनतम प्राप्तांक के बीच के अन्तर को कहते है **–विस्तार क्षेत्र**
- वितरण में जो अंक सबसे अधिक बार आता है उसे **–बहुलांक कहते हैं**

34.

विविध

कथन

1. ''बालक एक ऐसी पुस्तक है जिसका शिक्षक को आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिए''
उपरोक्त कथन किसके द्वारा दिया गया है?

(a) प्लेटो (b) अरस्तू
(c) रूसो (d) रॉस

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) रूसो के अनुसार-''बालक एक ऐसी पुस्तक है जिसका शिक्षक को आद्योपान्त अध्ययन करना चाहिए।''

2. शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करते हैं। यह कथन किसका है:

(a) स्वामी विवेकानन्द (b) स्कीनर
(c) पेस्टालॉजी (d) रविन्द्रनाथ टैगोर

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans : (a) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार- ''शिक्षा मनुष्य में अन्तर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करते है।''

3. 'स्मृति सीखी हुई वस्तु का सीधा उपयोग है।''
उपरोक्त कथन किसका है?

(a) मैक्डूगल (b) वुडवर्थ
(c) रॉस (d) ड्रेवर

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) वुडवर्थ के अनुसार, ''स्मृति (बुद्धि) सीखी हुई वस्तु का सीधा उपयोग है।''

4. फ्रायड के अनुसार–

(a) ''ग्रहण किये या सीखे हुए तथ्यों को धारण करने या पुनःस्मरण करने की असफलता को विस्मरण कहते हैं।''

(b) ''विस्मरण का अर्थ है – किसी समय प्रयत्न करने पर भी किसी पूर्व अनुभव का स्मरण करने या पहले की सीखी हुई किसी कार्य को करने की असफलता।''

(c) ''विस्मरण वह प्रवृत्ति है, जिसके द्वारा दुःखद अनुभवों को स्मृति से अलग कर दिया जाता है।''

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) सिगमण्ड फ्रायड आस्ट्रेलिया के प्रमुख तंत्रिकातन्त्र विशेषज्ञ थे उन्हें मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा का पिता माना जाता है। फ्रायड ने मानव व्यक्तित्व के विकास में मनोविश्लेषणात्मक संकल्पना प्रस्तुत किया तथा उनके अनुसार मानव की स्मृति मानव व्यक्तित्व के विकास में अहम भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा है कि ''विस्मरण वह प्रवृति है जिसके द्वारा दुःखद अनुभवों को स्मृति से अलग कर दिया जाता है।''

5. ''किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण अवधान है।'' यह कथन है

(a) डम्विल का (b) रॉस का
(c) मन का (d) मैक्डूगल का

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) ''किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण अवधान है।''- डम्बिल के अनुसार

6. ''अभिप्रेरणा की व्याख्या जन्मजात मूल प्रवृत्तियों के आधार पर की जा सकती है'' किसने कहा है?

(a) मैक्डूगल ने (b) कुर्ट लेविन ने
(c) फ्रायड ने (d) स्किनर ने

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (a) अभिप्रेरणा के मूलप्रवृत्ति सिद्धान्त का प्रतिपादन 1908 में मैक्डूगल ने किया था। कोई व्यक्ति किसी खास तरह की परिस्थिति में कोई विशेष प्रकार का व्यवहार ही क्यों करता है इसका स्पष्टीकरण सर्वप्रथम इसी सिद्धान्त के अंतर्गत दिया गया था। इसी सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए मैक्डूगल ने कहा है कि अभिप्रेरणा की व्याख्या जन्मजात मूल प्रवृत्तियों के आधार पर की जा सकती है।

7. ''किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण अवधान है।'' यह कथन है

(a) डम्विल का (b) रॉस का
(c) मन का (d) मैक्डूगल का

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) ''किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण अवधान है।''- डम्बिल के अनुसार

8. 'संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है' यह कथन निम्नांकित में से किसका है?

(a) पियाजे (b) वुडवर्थ
(c) वैलेन्टाइन (d) रॉस

UP TET Paper - I (Class I-V) 27 June 2013

Ans : (b) संवेग के लिए अंग्रेजी का शब्द है इमोशन (Emotion) जिसकी उत्पत्ति इमोवेयर से हुई है जिसका अर्थ होता है उत्तेजित होना। इस प्रकार संवंग को व्यक्ति की उत्तेजित दशा कहते हैं। इस दशा में हमारा बाह्य व आंतरिक व्यवहार बदल जाता है।

वुडवर्थ के अनुसार- ''संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा होती है।''

9. 'व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है' यह किसने कहा है?

(a) वुडवर्थ (b) गिलफोर्ड
(c) स्किनर (d) क्रो एण्ड क्रो

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) :
1. **गिलफोर्ड के अनुसार–**''व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।''
2. **वुडवर्थ के अनुसार–**''नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं को अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम करने की प्रक्रिया है।''
3. **स्किनर के अनुसार–**''अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की एक प्रक्रिया है।''
4. **क्रो एवं क्रो के अनुसार–**''आदतों, ज्ञान तथा अभिवृत्तियों का अर्जन ही अधिगम है।''

10. ''सीखने का पठार सीखने की प्रक्रिया के मुख्य अभिलक्षण हैं जो उस स्थिति को प्रकट करते हैं जिसमें सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती।'' यह कथन किसका है?

(a) गेट्स व अन्य (b) हालिंगवर्थ
(c) रॉस (d) स्किनर

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) : सीखने में पठार की परिभाषा **रॉस** ने इस प्रकार दी है– ''सीखने का पठार सीखने की प्रक्रिया के मुख्य अभिलक्षण हैं जो उस स्थिति को प्रकट करते हैं, जिसमें सीखने की प्रक्रिया में कोई उन्नति नहीं होती।''

जबकि **गेट्स व अन्य** ने सीखने में वक्र को इस प्रकार परिभाषित किया है– ''सीखने के वक्र अभ्यास द्वारा सीखने की मात्रा, गति और उन्नति की सीमा का ग्राफ पर प्रदर्शन करते हैं।''

11. ''हम करके सीखते है।'' किसने कहा?

(a) डॉ. मेस (b) योकम
(c) सिम्पसन (d) कोलेसनिक।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) सिम्पसन ने अधिगम क्रिया पर बहुत ही शोध किए तथा उन्होंने निष्कर्ष निकाला प्रत्येक व्यक्ति कार्य करके उसके अनुभव द्वारा सीखता है। सिम्पसन के अनुसार- ''हम करके सीखते है।''

12. ''नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं को अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया है।'' यह कथन है

(a) थार्नडाइक का (b) वुडवर्थ का
(c) गैने का (d) हल का

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) वुडवर्थ के अनुसार-''नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं को अर्जन करने की प्रक्रिया ही अधिगम प्रक्रिया है।''

13. 'सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामन्जस्य की प्रक्रिया है।' यह कथन है

(a) क्रो व क्रो (b) पियाजे
(c) स्किनर (d) कोह्लर

CG TET Paper - II (Class VI-VIII) 2011
Jharkhand TET 2011 (I-V)

Ans: (c) स्कीनर के अनुसार सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामन्जस्य की प्रक्रिया है। स्कीनर ने अधिगम के लिए क्रिया-प्रसूत सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

14. किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, ''सीखने का मतलब ज्ञान निर्माण करना है''?

(a) स्किनर (b) पियाजे
(c) थॉर्नडाइक (d) लेव वाइर्गोत्सकी

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (b) जीन पियाजे के अनुसार- ''सीखने का तात्पर्य ज्ञान का निर्माण करना है।'' इनका मानना है कि बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं।

15. ''अधिगम, अनुभव और प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन है।'' यह कथन किनके द्वारा दिया गया?

(a) गेट्स व अन्य (b) मॉर्गन और गिलिलैण्ड
(c) स्किनर (d) क्रॉनबैक

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (a) ''अधिगम, अनुभव और प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन है।''- गेट्स व अन्य के अनुसार

16. गेट्स के अनुसार, ''अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही..... है।''

(a) अभिप्रेरण (b) समायोजन
(c) सीखना (d) चिन्तन

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (c) गेट्स के अनुसार- ''अनुभव द्वारा व्यवहार परिवर्तन ही अधिगम (सीखना) है।''

17. ''नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया है।'' यह कथन है

(a) थार्नडाइक का (b) वुडवर्थ का
(c) गैने का (d) हल का

DSSSB PRT

Ans : (b) **वुडवर्थ** के अनुसार– ''नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम प्रक्रिया है।''

थार्नडाइक के अनुसार ''उपयुक्त अनुक्रिया के चयन तथा उसे उत्तेजना से जोड़ने को अधिगम कहते हैं।''

गैने ने अधिगम के अर्थ को समझने के लिए अधिगम को आठ सोपनकी क्रम में विभाजित किया है।

हल ने सीखने का प्रबलन सिद्धांत दिया।

18. ''प्रतिभाशाली बालक वह है, जो अपने उत्पादन की मात्रा, दर तथा गुणवत्ता में विशिष्ट होता है।'' यह कथन दिया गया है–

(a) टर्मन एवं ओडन द्वारा (b) कैरल एवं मार्टिन्स द्वारा
(c) आर डब्ल्यू टेलर द्वारा (d) इनमें से कोई नहीं

DSSSB PRT
UK TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (c) **आर.डब्ल्यू. टेलर** ने प्रतिभाशाली बालकों को परिभाषित करते हुए कहा है– ''प्रतिभाशाली बालक वह है, जो अपने उत्पादन की मात्रा, दर तथा गुणवत्ता में विशिष्ट होता है।

19. ''शैक्षिक प्रशासन उपयुक्त विद्यार्थियों को उपयुक्त शिक्षकों द्वारा समुचित शिक्षा प्राप्त करने योग्य बनाता है जिससे वे उपलब्ध अधिक साधनों का उपयोग करके अपने प्रशिक्षण से सर्वोत्तम को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।'' यह परिभाषा दी गई है?

(a) एम.एन. मुखर्जी द्वारा (b) कैम्बेल द्वारा
(c) वेलफेयर ग्राह्य द्वारा (d) डॉ. आत्मानंद मिश्रा द्वारा

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) वेलफेयर ग्राह्य ने शैक्षिक प्रशासन को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''शैक्षिक प्रशासन उपयुक्त विद्यार्थियों को उपयुक्त शिक्षकों द्वारा समुचित शिक्षा प्राप्त करने योग्य बनाता है। जिससे वे उपलब्ध अधिक साधनों का उपयोग करके अपने प्रशिक्षण से सर्वोत्तम को प्राप्त करने में समर्थ को सकें।

20. ''पिछड़ा बालक वह है, जो अपने पाठशाली जीवन के मध्य (10-11 वर्ष) में अपनी आयु के अनुरूप सामान्य कक्षा से नीचे की कक्षा का कार्य न कर सके।'' यह कथन किसका है?

(a) सिरिल बर्ट (b) टर्मन
(c) टेलर (d) मारंटिस

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (a) सिरिल बर्ट के अनुसार ''पिछड़ा बालक वह है, जो अपने स्कूल जीवन के बीच अपनी आयु के समकक्ष से नीचे की कक्षा का कार्य करने में असमर्थ हो।'' बर्ट का मत है कि जिस बालक की शैक्षिक (बौद्धिक) उपलब्धि 85 से कम होती है, उसे पिछड़ा बालक कहा जा सकता है।

21. 'मानसिक स्वास्थ्य के नियमों को खोजना और उन्हें बनाए रखना' अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है

(a) शैफर (b) हैडफील्ड
(c) ड्रेवर (d) लैंडेल

UP TET Paper - II (Class VI-VIII) 27 June 2013

Ans : (c) ड्रेवर के अनुसार- '' मानसिक स्वास्थ्य के नियमों की खोज करना और उन्हे बनाए रखना ही अध्ययन का केन्द्र बिन्दु होता है।''

22. किसने कहा कि ये स्थितियाँ मानसिक मूल्यांकन हैं जो संघर्ष और चिंता के पहलू हैं?

(a) हिल गार्ड (b) वाटसन
(c) जीन पियाजे (d) राल्फ टायलर

DSSSB ASSISTANT PRIMARY TEACHER (PRT)

Ans. (d) **:** राल्फ डब्ल्यू टॉयलर एक अमेरिकी शिक्षाविद थे। इन्होंने आकलन एवं मूल्यांकन (Assessment and Evaluation) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। इन्होंने कहा कि ये स्थितियाँ मानसिक मूल्यांकन हैं जो संघर्ष और चिंता के पहलू हैं।

23. ''मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करे।'' यह विचार दिया गया–

(a) अरस्तू द्वारा (b) ह्यूम द्वारा
(c) अर्बन द्वारा (d) हॉफडिंग द्वारा

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (c) अर्बन महोदय ने मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा है ''मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तुष्टि करें।'' मूल्य के लिए इंग्लिश में 'Value' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के "Vallere' शब्द से मानी गयी है जो किसी वस्तु की कीमत, गुण या उपयोगिता को व्यक्त करता है।

24. 'चिन्तन संज्ञानात्मक पक्ष में एक मानसिक क्रिया है।' यह कथन दिया गया है

(a) डिवी द्वारा (b) गिल्फर्ड द्वारा
(c) क्रूज द्वारा (d) रॉस द्वारा

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (d) रॉस के अनुसार-''चिंतन संज्ञानात्मक पक्ष में एक मानसिक क्रिया है।''

25. ''चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पहलू है।'' चिन्तन की यह परिभाषा किसने दी?

(a) वॉरेन (b) रॉस
(c) वेलेण्टाइन (d) स्किनर

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (b) रॉस के अनुसार- ''चिंतन मानसिक विकास का ज्ञानात्मक पहलू है।'' या मन की बातों से सम्बन्धित मानसिक क्रिया है।

26. व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है। व्यक्तित्व की यह परिभाषा दी है

(a) मुर्रे (b) जे. बी. वाटसन
(c) जी. डब्ल्यू. आलपोर्ट (d) स्कीनर।

Rajsthan TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2012
UP TET 2016 (VI-VIII)

Ans: (c) ''व्यक्तित्व व्यक्ति के अंदर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ उसका एक अनूठा समायोजन स्थापित करते हैं।'' यह कथन जी.डब्ल्यू. आलपोर्ट का है। इन्होंने व्यक्तित्व के शीलगुण सिद्धांत या विशेषक सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

27. किसने कहा कि ''सृजनात्मकता मनुष्य के मस्तिष्क की वह शक्ति है, जिससे वह सम्बन्धों के रूपान्तरण द्वारा नयी सामग्री का सृजन करता है जिससे नये सह-सम्बन्ध उत्पन्न होते हैं''?

(a) स्पीयरमैन (b) बारलेट
(c) स्किनर (d) लेविन

MP TET (I-V) 2011

Ans: (c) स्किनर के अनुसार - ''सृजनात्मकता मानव मस्तिष्क के द्वारा संबंधों को रूपान्तरित करके नई विषयवस्तु का रचनात्मक सृजन करके अन्तः सम्बंधों का विकास करने की शक्ति का पर्याय है।''

28. किसने यह कहा कि–''सृजनशील मानव मस्तिष्क द्वारा संबंधों को रुपांतरित करके नई विषय वस्तु का रचनात्मक सृजन कर नए अंतः संबंधों का विकास करने की शक्ति का पर्याय है।''

(a) स्पीयरमैन (b) बारलेट
(c) स्किनर (d) लेविन

MP TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) स्किनर के अनुसार - ''सृजनात्मकता मानव मस्तिष्क के द्वारा संबंधों को रूपान्तरित करके नई विषयवस्तु का रचनात्मक सृजन करके अन्तः सम्बंधों का विकास करने की शक्ति का पर्याय है।''

29. ''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।'' यह कथन है

(a) कोल एवं ब्रूस का (b) ड्रेवहल का
(c) डीहान का (d) क्रो एवं क्रो का

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (d) ''सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मनासिक प्रक्रिया है।'' यह कथन क्रो एवं क्रो का है।

30. ''सृजनशीलता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक क्रिया है।''

उपरोक्त कथन किसके द्वारा दिया गया है?

(a) क्रो एण्ड क्रो (b) जेम्स ड्रेवर
(c) रॉस (d) स्किनर

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 23 Feb 2014

Ans : (a) क्रो एवं क्रो के अनुसार- ''सृजनशीलता मौलिक परिणामों को व्यक्त करने की मानसिक क्रिया होती है।''

31. वह मनोवैज्ञानिक जिसने कहा कि बुद्धि वह क्षमता है जो हमें अपने वातावरण में समायोजित करना सिखाती है, कौन था?

(a) जीन पियाजे (b) थॉर्नडाइक
(c) टर्मन (d) बिने

MP TET (I-V) 2011

Ans : (a) जीन पियाजे – इन्होंने बुद्धि को एक बिल्कुल अलग ढंग से व्यक्त किया है। इनके अनुसार, बुद्धि वातावरण के साथ समायोजन करने की प्रक्रिया है। इनके अनुसार, व्यवहार कुशल व्यक्ति ही बुद्धिमान है।

थॉर्नडाइक के अनुसार – ''सत्य या तथ्य के दृष्टिकोण से उत्तम प्रतिक्रियाओं की शक्ति ही बुद्धि है।''

टर्मन के अनुसार – ''बुद्धि, अमूर्त विचारों के बारे में सोचने की योग्यता है।''

बिने के अनुसार – ''बुद्धि इन चार शब्दों में निहित है- ज्ञान, आविष्कार, निर्देश और आलोचना।''

स्टर्न के अनुसार – ''बुद्धि एक सामान्य योग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति नई परिस्थितियों में अपने विचारों को जानबूझ कर समायोजित करता है।''

32. बुद्धि एक तर्कसंगत चिंतन है, बुद्धि की यह परिभाषा दी–

(DSSSB ASSISTANT TEACHER EDUCATION DEP.)

(a) स्टर्न (b) टर्मन
(c) स्पीयमैन (d) बिने

Ans. (c) **:** स्पीयरमैन के अनुसार–बुद्धि एक तर्कसंगत चिंतन है (Intelligence is a Rational thinking)

33. ''व्यावहारिक बुद्धि का अर्थ है कि बुद्धि संस्कृति का उत्पाद होती है।'' यह किसका कथन है?

(a) स्टेर्नबर्ग (b) वाइगॉट्स
(c) सैलोवी (d) मेयर।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (a) 'व्यवहारिक बुद्धि का अर्थ है कि बुद्धि संस्कृति का उत्पाद होती है।' यह कथन स्टेनबर्ग द्वारा दिया गया था। स्टेनबर्ग ने एक त्रितन्त्र सिद्धांत दिया था। जिसमें कि व्यक्ति जब तर्क करता है या प्रभावी ढंग से किसी सूचना को संशोधित करता है तो उस समय उसके मन में क्या होता है। इस तथ्य का प्रेक्षण कई व्यक्तियों में किया और उसके बाद निष्कर्ष निकाला कि मानव बुद्धि में कई तत्व सम्मिलित होते हैं - जिसे स्टर्नबर्ग के सिद्धांतानुसार कई भाग में विभाजित किया गया है - (i) कूटसंकेतन (ii) अनुमान (iii) व्यवस्था (iv) उपयोग (v) अनुक्रिया आदि।

34. ''बुद्धि पर वंशानुक्रम का प्रभाव होता है।'' किसने कहा है?

(a) गैसल (b) गाल्टन
(c) टर्मन (d) डॉ. माथुर।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (c) टर्मन के अनुसार- बुद्धि पर वंशानुक्रम का प्रभाव पड़ता है।

35. ''बच्चे अपनी समझ से विश्व की परिकल्पना करते हैं।'' ये कथन किसने दिया था?

(a) पैवलूव (b) स्किनर
(c) पियाजे (d) कोह्लवर्ग

DSSSB PRT

Ans : (c) पियाजे के अनुसार– ''बच्चे अपनी समझ से विश्व की परिकल्पना करते हैं।''

36. ..... के अनुसार 'बालक का विकास आनुवंशिकता तथा वातावरण का गुणनफल है।'

(a) वुडवर्थ (b) गैरेट

(c) हालैण्ड (d) थॉर्नडाइक

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (a) आनुवंशिकता से व्यवहार के रचना तंत्र का निर्माण होता है तथा वातावरण उस रचना तंत्र के व्यवहार की एक निश्चित दिशा विकसित करता है ''बीज में वृक्ष बनने की संभावना निहित रहती है लेकिन वातावरण के आधार पर उसके विकास का स्तर निर्धारित होता है। दोनों में से किसी एक के आभाव में वृक्ष का समुचित ढ़ंग से विकास होना सम्भव नहीं है।'' इसलिए **वुडवर्थ** का मत है कि ''बालक का विकास आनुवांशिकता तथा वातावरण का गुणनफल है।''

37. किसने कहा?

''एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से अन्तर एक सार्वभौमिक घटना जान पड़ती है''

(a) टॉयलर (b) स्किन्नर

(c) क्रो एवं क्रो (d) वुडवर्थ

CG TET Paper - I (Class VI-VIII) 2014

Ans: (a) वैयक्तिक भिन्नता के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक टॉयलर का कथन है कि ''एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से अन्तर एक सार्वभौमिक घटना जान पड़ती है''

38. विकास की किस अवस्था को कोल तथा ब्रूस ने ''संवेगात्मक विकास का अनोखा काल'' कहा है?

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था

(c) प्रौढ़ावस्था (d) किशोरावस्था

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) : 'कोल व ब्रूस' ने बाल्यावस्था को ''संवेगात्मक विकास का अनोखा काल'' बताते हुए लिखा है– ''वास्तव में माता–पिता के लिए बाल–विकास की इस अवस्थ को समझना कठिन है।''

39. ''किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, हमला व विरोध की अवस्था है।'' यह कथन किसका है?

(a) जरशील्ड (b) स्टेन्ले हॉल

(c) सिम्पसन (d) क्रो एण्ड क्रो

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (b) :

- **स्टेन्ले हॉल के अनुसार–** ''किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान (हमला) तथा विरोध की अवस्था है।''
- **जरशील्ड के अनुसार–** ''किशोरावस्था वह समय है जिसमें विचारशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है।''
- **ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन के विचारानुसार–** ''किशोरावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अन्त में आरम्भ होता है और प्रौढ़ावस्था के आरम्भ में समाप्त होता है।''
- **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार–** ''किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।''

40. बिग व हंट के अनुसार.....की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है ''परिवर्तन''। परिवर्तन शारीरिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है।

(a) शैशवावस्था (b) बाल्यावस्था

(c) किशोरावस्था (d) प्रौढ़ावस्था

Jharkhand TET Paper - I (Class I-V) 2011
CG TET 2011 (VI-VIII)

Ans: (c) बिग एवं हंट के अनुसार ''किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है, 'परिवर्तन'।'' परिवर्तन शारीरिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है।

41. किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, ''विकास एक सतत् और धीमी-धीमी प्रक्रिया है''?

(a) कोलेसनिक (b) पियाजे

(c) स्किनर (d) हरलॉक

CG TET Paper - I (Class I-V) 2011

Ans: (c) स्किनर के अनुसार ''विकास सतत चलने वाली एक प्रक्रिया होती है जो धीरे-धीरे चलती है और अन्ततः पूर्णता को प्राप्त करती है।''

42. ''विकास के परिणामस्वरूप नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।'' यह कथन किसने दिया है?

(a) गेसेल (b) हरलॉक

(c) मेरेडिथ (d) डगलस और होलैण्ड

UP TET Paper - I (Class I-V) 15 Oct 2017

Ans : (b) हरलॉक ने बालक के विकास को परिभाषित करते हुए लिखा है ''विकास की प्रक्रिया बालक की गर्भावस्था से उसकी मृत्यु तक एक क्रम में चलती है तथा प्रत्येक अवस्था का प्रभाव दूसरी अवस्था पर पड़ता है।'' इनके अनुसार- ''विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नई-नई विशेषताएँ और नई-नई योग्यताएँ प्रकट होती है।''

43. व्यवहारवादी .....ने कहा है, ''मुझे नवजात शिशु दे दो। मैं उसे डॉक्टर, वकील, चोर या जो चाहूँ बना सकता हूँ।''

(a) फ्रीमैन (b) न्यूमैन

(c) वाटसन (d) होलजिंगर

UP TET Paper - I (Class I-V) 2 Feb 2016

Ans : (c) वाटसन अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थे। वाटसन व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों में अग्रणी थे। वाटसन ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यवहारवाद को स्थापित किया और मानव विकास में व्यवहारवाद की भूमिका को महत्वपूर्ण माना। इन्होंने अपने व्यवहारवादी दृष्टिकोण को 1913 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया। इनका प्रमुख कथन है कि– ''मुझे नवजात शिशु दे दो। मैं उसे डॉक्टर, वकील, चोर या जो चाहूँ बना सकता हूँ।''

44. 'सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार की योग्यता का अधिगम सामाजिक विकास कहा जाता है।' उक्त कथन है

(a) हरलॉक का (b) टी पी नन का

(c) मैक्डूगल का (d) रॉस का

UP TET Paper - I (Class I-V) 23 Feb 2014

Ans : (a) हरलॉक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने समाज का प्रभाव बालक के विकास एवं अधिगम पर किस प्रकार पड़ता है, बताया है। हरलॉक के अनुसार-''सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार की योग्यता का अधिगम सामाजिक विकास कहा जाता है।''

45. ''मनोविज्ञान, शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।'' यह किसने कहा है?

(a) बी.एन.झा (b) स्किनर
(c) डेविस (d) वुडवथ

DSSSB PRT
Bihar TET 2013 (VI-VIII)

Ans : (b) स्किनर के अनुसार– ''शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।'' इनके अनुसार शिक्षा– मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से जो व्यवहार–सम्बन्धी विज्ञान है ग्रहण करता है।

46. विकासात्मक मनोविज्ञान में जीवन का अध्ययन किया जाता है

(a) गर्भकाल में (b) जन्म से
(c) जीवन पर्यन्त (d) किशोरावस्था में।

Bihar TET Paper - I (Class I-V) 2013

Ans: (b) विकासात्मक मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो मनुष्य के जीवन में हो रहे परिवर्तन के बारे में बताता है। विकासात्मक मनोविज्ञान के तीन लक्ष्य हैं - विकास का वर्णन करना, समझना और अनुकरण करना।
मनुष्य जीवन चरणबद्ध तरीके से आगे की तरफ बढ़ता है-
(i) शैशवावस्था (ii) वाल्यावस्था
(iii) किशोरावस्था (iv) प्रौढ़ावस्था
विकासात्मक मनोविज्ञान का अर्थ व्यक्ति के विकास के साथ ही उसके व्यवहार का अध्ययन है।

47. शैक्षिक मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का एक व्यवस्थित अध्ययन है। शिक्षा मनोविज्ञान की यह परिभाषा द्वारा दी गई है

(a) स्किनर (b) सी वि गुड
(c) जे. एम. स्टीफन (d) सी. एच. जुद

(DSSSB Assistant Teacher Education Department)

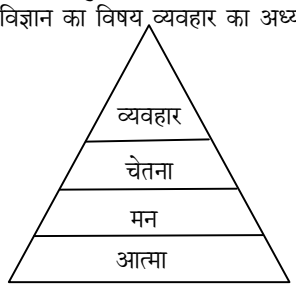
Ans. (c) **: स्टीफन के अनुसार–**''शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन है''
Educational Psychology is a systematic study of educational growth – J. M. Stephen

48. ''मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का परित्याग किया, फिर अपने मन का और फिर अपनी चेतना का, अभी वह एक प्रकार के व्यवहार को संजोये है'' कथन था।

(a) टिचनर का (b) वुंट का
(c) वुडवर्थ का (d) मैक्डूगल का

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 2 Feb 2016

Ans : (c) साइकॉलाजी (मनोविज्ञान) यूनानी भाषा का शब्द है। यह दो शब्दों से मिल कर बना है- साइकी (Psyche) तथा लोगस (Logos)। अतः साइकॉलाजी शब्द का अर्थ है- आत्मा का अध्ययन। कालचक्र के अनुसार मनोविज्ञान का विषय बदलता रहा और अन्ततः मनोविज्ञान का विषय व्यवहार का अध्ययन बना।



वुडवर्थ के शब्दो में- ''सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया फिर इसने मन का त्याग किया पुनः इसने चेतना का त्याग किया अब वह व्यवहार के विधि को स्वीकार करता है।''

पुस्तकें

49. 'द कंडीशन्स ऑफ लर्निंग' पुस्तक के लेखक हैं–

(a) ई.एल. थार्नडाइक (b) बी.एफ. स्किनर
(c) आर.एम. गेने (d) आई.पी. पावलव

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (c) :

लेखक	पुस्तक
आर.एम. गेने	''द कंडीशन्स ऑफ लर्निंग''
ई.एल. थार्नडाइक	एनिमल इंटेलिजेन्स, ''द साइकोलॉजी ऑफ अर्थमेटिक''
बी.एफ. स्किनर	'द सेलेक्शन ऑफ बिहेवियर'
आई.पी. पावलव	'कंडिशन्ड रिफ्लेक्सेस' व 'लेक्चर्स ऑफ कंडिशन्ड'

50. "Pathology of Brain" नामक पुस्तक किसके द्वारा प्रकाशित है?

(a) हॉलर (b) फिलिप
(c) क्रेपलिन (d) बेन्जामिन रश।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (c) Pathology of Brain पुस्तक क्रेपलिन द्वारा लिखी गई है।

51. हेरेडिटरी जीनियस नामक पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई है?

(a) कैटेल (b) गाल्टन
(c) टरमैन (d) पीयर्सन

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) हेरेडिटरी जीनियस नामक पुस्तक फ्रांसिस गॉल्टन द्वारा लिखी गयी है। फ्रांसिस गाल्टन जीव सांख्यिकी के संस्थापक माने जाते हैं। फ्रांसिस गाल्टन यह जानना चाहते थे कि पिता से पुत्र में और फिर पौत्र में, इसी भांति पीढ़ी दर पीढ़ी किसी गुण विशेष का संचरण किस प्रकार होता है। उन्होंने दो नियमों का प्रतिपादन किया–
(1) पैतृक वंशानुक्रमण का नियम
(2) वंश अवनति का नियम

52. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए

सूची I	सूची II
A. रिपब्लिक	1. जॉन डीवी
B. एमिल एण्ड एजुकेशन	2. दयानन्द सरस्वती
C. दि स्कूल एण्ड सोसायटी	3. प्लेटो
D. संध्या विधि	4. रूसो

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	4	1	2	(b)	4	3	1	2
(c)	2	1	4	3	(d)	1	2	3	4

UP TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (a)

पुस्तक	-	लेखक
रिपब्लिक	-	प्लेटो
एमिल एण्ड एजुकेशन	-	रुसो
द स्कूल एण्ड सोसायटी	-	जॉन डीवी
संध्याविधि	-	दयानन्द सरस्वती

भारत में शिक्षा का विकास

53. जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम किस वर्ष लागू किया गया था?

(a) 1990 (b) 1993
(c) 1998 (d) 2000

Hariyana TET Paper - I (Class I-V) 1 Feb 2014

Ans: (*) प्रश्न में दिये गये चारों विकल्पों में से कोई उत्तर नहीं है जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम 1994 में लागू किया गया था।

54. महात्मा गांधी द्वारा चलाई गई शिक्षा की प्रणाली जानी जाती है

(a) बुनियादी शिक्षा प्रणाली (b) व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली
(c) बाल केन्द्रित शिक्षा प्रणाली (d) हस्तकला शिक्षा प्रणाली

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) महात्मा गांधी द्वारा चलाई गई शिक्षा की प्रणाली बुनियादी शिक्षा प्रणाली या वर्धाशिक्षा प्रणाली के नाम से जानी जाती है। इस शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके भावी जीवन में आत्मनिर्भर बनाना था। यही कारण है कि इसमें व्यावसायिक शिक्षा (जैसे- हस्तकला, कृषि आदि) का प्रावधान होता था।

55. वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को जीवन से अलग करती है क्योंकि

(a) यह जीवन का समग्र भाग नहीं है
(b) यह व्यक्ति को दाना-पानी देने में असमर्थ है
(c) यह व्यक्ति को नौकरी देने में असमर्थ है
(d) यह व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करती है

Hariyana TET Paper - I (Class (I-V) 2011

Ans: (a) शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है परन्तु वर्तमान शिक्षा अपने उद्देश्य से भटक गई है और अब केवल रोजगार परक रह गई है। इसलिए वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को जीवन से अलग करती है क्योंकि अब जीवन के समग्र भाग का प्रतिनिधित्व नहीं करती है।

56. भारत में शिक्षा प्रणाली

(a) छात्रों को जीवन के लिए तैयार करती है
(b) रोजगार के लिए तैयार करती है
(c) व्यावसायिक विषयों के लिए तैयार करती है
(d) परीक्षा के लिए तैयार करती है

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (b) भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य छात्र को रोजगार परक शिक्षा देना है ताकि भविष्य की आर्थिक समस्याओं को हल सकें।

57. उपनयन संस्कार किस शिक्षा काल में किया जाता है?

(a) वैदिक काल (b) बौद्ध काल
(c) मुस्लिम काल (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

DSSSB PRT
Bihar TET 2011 (I-V)

Ans : (a) उपनयन संस्कार वैदिक काल में किया जाने वाला महत्त्वपूर्ण संस्कार है। इस संस्कार के पश्चात् ही बालक गुरू के साथ आश्रम जाकर वेदों की शिक्षा ग्रहण करता था। इस संस्कार के बाद बालक पूर्णतः ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते हुए शिक्षा ग्रहण करता था।

58. शिक्षा में अवरोधन का तात्पर्य है–

(a) बालक का विद्यालय में प्रवेश न लेना
(b) बालक का विद्यालय न जाना
(c) बालक द्वारा विद्यालय छोड़ देना
(d) किसी बालक का एक वर्ष से अधिक समय तक एक ही कक्षा में रहना

UP TET (I-V) 8 Jan. 2020

Ans. (d) : शिक्षा में अवरोधन का आशय असफल रहने से लिया जाता है। अर्थात् किसी बालक का एक वर्ष से अधिक समय तक एक ही कक्षा में रहना अवरोधन कहलाता है। जबकि अपव्यय का आशय बालक का अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी किये बिना ही विद्यालय छोड़ देना होता है, जिससे बालक पर खर्च किया गया धन, समय और श्रम बेकार चला जाता है।

59. 'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' की समस्या मुख्यतया किस शिक्षा-स्तर से सम्बंधित है?
उत्तर: प्राथमिक शिक्षा स्तर

UP Assistant Teacher (I-V) 27 May 2018

व्याख्या-'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' की समस्या मुख्यतया प्राथमिक शिक्षा से सम्बन्धित है। जब कोई छात्र किसी कारणवश अपनी शिक्षा समाप्त होने से पहले ही बीच में छोड़ देता है तो उसे अपव्यय में सम्मिलित किया जाता है। जबकि जब कोई बालक एक ही कक्षा में एक से अधिक बार अनुत्तीर्ण हो जाता है या एक ही कक्षा में एक वर्ष से अधिक समय तक रहता है तो उसे अवरोधन में सम्मिलित किया जाता है।

60. भारतीय शिक्षा के इतिहास में सर्वप्रथम किस समिति ने 'अपव्यय एवं अवरोधन' पर विचार किया?

(a) हार्टोग समिति (b) यशपाल समिति

(c) मेहता समिति (d) जाकिर हुसैन समिति

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (a) ब्रिटीश कालीन शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में हण्टर कमीशन –1882, लार्ड कर्जन (1898–1905) तथा हार्टोग समिति (1927–29) ने प्राथमिक शिक्षा की समस्या पर विचार कर उनकी समस्याओं के समाधान की रूपरेखा तैयार किया। हार्टोग समिति ने प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या पर प्रकाश डाला और कहा कि भारत में एक बड़ी संख्या में छात्र प्राथमिक शिक्षा पूर्ण किये बिना प्राथमिक शिक्षा से हट जाते हैं। इसलिए उन्हीं बच्चों को शिक्षा प्रदान किया जाये जो उसके योग्य हो।

61. भारत के शैक्षिक इतिहास में किसने प्राथमिक शिक्षा का मौलिक अधिकार सम्बन्धी बिल, धारा सभा/इम्पीरियल काउन्सिल में प्रस्तुत किया था?

(a) कपिल सिब्बल

(b) जवाहरलाल नेहरू

(c) गोपालकृष्ण गोखले

(d) अब्दुल कलाम आजाद

UT TET Paper - I (Class I-V) 12 Nov 2013

Ans: (c) बड़ौदा नरेश सायाजीराव गायकवाड से प्रभावित होकर गोपाल कृष्ण गोखले ने केन्द्रीय सभा के समक्ष मार्च 1910 में प्राथमिक शिक्षा के मौलिक अधिकार सम्बंधी बिल प्रस्तुत किया।

62. परिवार एक साधन है

(a) अनौपचारिक शिक्षा का

(b) औपचारिक शिक्षा का

(c) गैर-औपचारिक शिक्षा का

(d) दूरस्थ शिक्षा का

UP TET Paper - I (Class I-V) 13 Nov 2011

Ans : (a) परिवार ही बालक का प्राथमिक विद्यालय होता है तथा माता-पिता ही बालक के प्रारम्भिक शिक्षक माने जाते है। इनसे प्राप्त ज्ञान अनौपचारिक होता है तथा इसी ज्ञान से बालक में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

63. मकतब' में किस स्तर की शिक्षा दी जाती है?

उत्तर: प्राथमिक शिक्षा

UP Assistant Teacher 27 May 2018

व्याख्या-'मकतब' में प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती है। मकतब का अर्थ उस स्थान से है जहाँ बालक को लिखना सिखाया जाता है। मकतब किसी मस्जिद के साथ जुड़े होते हैं। मकतब की शिक्षा समाप्त करके विद्यार्थी मदरसे में प्रवेश लेते हैं। इस प्रकार मदरसो में उच्च शिक्षा की व्यवस्था की जाती हैं।

64. किस घोषणा पत्र को भारतीय शिक्षा का शिलालेख कहा जाता है?

उत्तर: वुड का घोषणा पत्र

UP Assistant Teacher 27 May 2018

व्याख्या-वुड के घोषणापत्र को भारतीय शिक्षा का शिलालेख कहा जाता है। वुड का घोषणापत्र 'बोर्ड ऑफ कंट्रोल' के प्रधान या अध्यक्ष चार्ल्स वुड द्वारा 19 जुलाई 1854 को जारी किया गया। इस घोषणा पत्र में भारतीय शिक्षा पर एक व्यापक योजना प्रस्तुत की गयी थी जिसे 'वुड डिस्पैच' कहा गया। 100 अनुच्छेदो वाले इस प्रस्ताव में शिक्षा के उद्देश्य, माध्यम, सुधारो आदि का विचार किया गया था।

अन्य

65. जीवन कौशल का मुख्य उद्देश्य है–

(a) क्षमताएँ विकसित करना

(b) चुनौतियों एवं माँगों के अनुसार योग्यता

(c) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना

(d) एक अच्छा शिक्षक बनना

UP Assistant Teacher (I-V) 6 Jan. 2019

Ans : (b) जीवन कौशल का मुख्य उद्देश्य है, चुनौतियों एवं माँगों के अनुसार योग्यता विकसित करना। जीवन कौशल, अनुकूली तथा सकारात्मक व्यवहार की वे योग्यताएँ हैं जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सक्षम बनाती हैं। ये जीवन कौशल सीखे जा सकते हैं तथा उनमें सुधार भी किया जा सकता है।

66. कॉलीसिस्टोकाइनिन एक हार्मोन है जिसकी सूई यदि दे दी जाये तो इससे प्राणी में

(a) भूख अधिक बढ़ जाती है।

(b) भूख और प्यास दोनों में ही वृद्धि हो जाती हैं।

(c) भूख कम हो जाती है।

(d) भूख और प्यास दोनों में ही कमी आ जाती है।

UP TET Paper - I (Class VI-VIII) 19 Dec 2016

Ans : (c) 'कॉलीसिस्टोकाइनिन' एक हार्मोन है जिसकी सूई यदि दे दी जाए तो इससे प्राणी में भूख कम हो जाती है।

67. दुर्बलीकरण बाधा है-

(a) शारीरिक स्तर पर (b) कार्यात्मक स्तर पर

(c) सामाजिक स्तर पर (d) शैक्षिक स्तर पर

Hariyana TET Paper - II (Class VI-VIII) 1 Feb 2014

Ans: (b) दुर्बलीकरण कार्यात्मक स्तर पर बाधा होती है।

68. अनुकूलीय एवं सकारात्मक व्यवहार के लिए छात्र में निम्न जीवन कौशल आवश्यक है

(a) प्रभावी अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण

(b) निर्णय लेने की योग्यता

(c) भावनाओं और तनाव के साथ सामंजस्य

(d) उपरोक्त सभी

Hariyana TET Paper -II (Class (VI-Viii) 2011

Ans: (d) अनुकूलीय एवं सकारात्मक व्यवहार के लिए छात्र में निम्न जीवन कौशल आवश्यक है-

1. प्रभावी अंतर्वैयक्तिक सम्प्रेषण
2. निर्णय लेने की योग्यता
3. भावनाओं और तनाव के साथ सामंजस्य
4. अपने वातावरण के साथ समायोजन आदि।

69. निम्नलिखित में से कौन असतत् चर का उदाहरण नहीं है?

(a) आयु (b) लिंग

(c) वैवाहिक स्थिति (d) आवासीय स्थान

Punjab TET Paper -II (Class (VI-VIII) 2011

Ans: (a) आयु सतत् बढ़ने वाली प्रक्रिया है इसिलए यह एक सतत् चर है।

70. इनमें से कौन-सा प्रयोजन प्राथमिक प्रयोजन कहलाता है?

(a) मानसिक प्रयोजन (b) शारीरिक प्रयोजन

(c) सामाजिक प्रयोजन (d) शैक्षणिक प्रयोजन

Punjab TET Paper -II (Class (I-V) 2011

Ans: (b) शारीरिक प्रयोजन को प्राथमिक प्रयोजन कहते हैं।

71. असामान्य मनोविज्ञान के आधुनिक युग के जनक थे

(a) एडलर (b) सिगमण्ड फ्रायड

(c) जुंग (d) जीन एसक्यूरल

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans (b) **:** असामान्य मनोविज्ञान के जनक सिगमण्ड फ्रायड माने जाते है। इन्होंने मनोविज्ञान की मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या की।

72. Father of Medicine के नाम से किस मनोवैज्ञानिक को जाना जाता था?

(a) हिप्पोक्रेटीज (b) आइजेन्क

(c) अरस्तू (d) प्लेटो।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans : (a) हिप्पोक्रेटीज को Father of Medicine के नाम से जाना जाता है।

73. सामूहिक पागलपन के प्रमाण किस शताब्दी से किस शताब्दी तक मिले?

(a) 10 वीं से 15 वीं तक (b) 11 वीं से 16 वीं तक

(c) 10 वीं से 14 वीं तक (d) 10 वीं से 16 वीं तक

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (d) 10वीं से 16वीं शताब्दी तक के काल में सामूहिक पागलपन के प्रमाण मिलते है।

74. मनः स्नायु विकृति के रोग का लक्षण है

(a) भय (b) आशंका

(c) रोग (d) कष्ट।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (b) मनःस्नायु विकृति रोग का लक्षण आशंका होता है जिसमें व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास नहीं हो पाता है और अपने कार्यो की सफलता एवं असफलता को लेकर सशंकित रहता है।

75. अति संरक्षणशीलता बालक को बना देती है

(a) सामाजिक (b) आदर्शवादी

(c) धार्मिक (d) अव्यावहारिक।

Bihar TET Paper - II (Class VI-VIII) 2013

Ans: (b) संरक्षण का तात्पर्य पुरानी परम्पराओं को बनाए रखना होता है जिसे आदर्श कहते है अतः अति संरक्षणशीलता बालक को आदर्शवादी बना देता है जिसमें बालक पूर्व निर्धारित रास्तो से ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करता है।

76. शिक्षकों को राज्य प्रमाणपत्र देने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(a) जो मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं उन्हें पेशे से बाहर करने के लिए

(b) शिक्षाशास्त्र में प्रशिक्षित नहीं होने वाले को पेशे से बाहर करने के लिए

(c) शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता की निगरानी करना।

(d) पूरे राज्य में प्रवेश स्तर के शिक्षक योग्यता का एक समान मानक प्रदान करने के लिए।

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (d) : शिक्षकों को राज्य प्रमाणपत्र देने का मुख्य उद्देश्य पूरे राज्य में प्रवेश स्तर के शिक्षक योग्यता का एक समान मानक प्रदान करना है।

77. एक निश्चित दूरी के बाद दो समानांतर रेलवे लाइनों की ट्रैक मिलती हुई दिखाई पड़ती हैं। इसका एक उदाहरण ..... है।

(a) मिलर-लायर भ्रम (b) परिदृश्य भ्रम

(c) गति भ्रम (d) दृष्टि भ्रम

MP TET (VI-VIII) 21 Feb 2019 (9:30 AM)

Ans. (b) : एक निश्चित दूरी के बाद दो समानांतर रेलवे लाइनों की ट्रैक मिलती हुई दिखाई पड़ती हैं। इसका एक उदाहरण परिदृश्य भ्रम है। परिदृश्य भ्रम में दूर की वस्तुएँ छोटी दिखाई देती हैं क्योंकि दूर की वस्तुएँ रेटिना पर छोटी प्रक्षेपित होती हैं।

78. निर्देश चिकित्सा (डाइरेक्टिव थेरेपी) किसने विकसित की?

(a) कार्ल रोजर (b) इलिस

(c) स्किनर (d) इनमें से कोई नहीं

MP TET (I-V) 2011

Ans : (d) निर्देशात्मक चिकित्सा, एक मनोचिकित्सात्मक दृष्टिकोण हैं जिसमें मनोचिकित्सक चिकित्सा के पाठ्यक्रम को निर्देशित करता है। इस प्रकार के चिकित्सा के समर्थकों में विली (Willy) तथा एण्ड्रिव (Andrew) का नाम लिया जा सकता है।

EXAM POINT

- सर्वाधिक जटिल समस्या है **–प्राथमिक स्तर की**
- वर्तमान समय में विद्यमान आवासीय विद्यालयों की तरह प्राचीन समय के स्कूल थे **–गुरूकुल**
- नर्सरी स्कूल के प्रारम्भकर्ता थे **–फ्रोबेल**
- थ्री आर है **–पढ़ना, लिखना, गणित (अंकगणित)**
- नवोदय विद्यालय का गठन किसके लिए किया गया **–75% ग्रामीण और 25% शहरी मेधावी बच्चों के लिए**
- 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' में प्रावधान है **–दो शिक्षक दो कमरों का**
- ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड सम्बन्धित है **–प्राथमिक विद्यालयों में न्यूनतम सुविधाओं से**
- DIET का गठन किसके लिए किया गया **–प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए**
- बच्चों का सही मूल्यांकन होता है **–मासिक परीक्षा में**
- मूल्यांकन का सर्वोत्तम रूप है **–सतत एवं व्यापक मूल्यांकन**
- प्रश्नपत्र का सही रूप है **–पहले आसान और बाद में कठिन प्रश्न**
- अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व है **– बालक को समझने में सहायक, शिक्षण प्रक्रिया में सहायक**
- आप अध्यापक बनना चाहते है **–समाज को आदर्श एवं स्वस्थ जीवनप्रदान करने के लिए**
- एक शिक्षक के लिए छात्र की बुद्धि लब्धि की उपयोगिता है **–छात्र की उन्नति करने में**
- बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझने के लिए अध्यापक को **–बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना जरूरी है**
- बालकों को सामाजिक व्यवहार की शिक्षा दी जाती है **–विद्यालय में सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा**
- स्व-अध्ययन की आदत के विकास का सर्वोत्तम तरीका है **–छात्रों के सामने स्वयं पढ़ना**
- आपकी राय में छोटे बच्चों की कितनी आयु में स्कूल भेजना चाहिए **–चार वर्ष की आयु के बाद**
- छोटे बच्चों के लिए बाल साहित्य उपयोगी है, क्योंकि **–यह बच्चों में पढ़ने की रूचि बढ़ाता है**
- छात्रों में किसका विकास आपकी दृष्टि में सबसे कम महत्वपूर्ण है **–धर्मानुराग**
- किस स्तर की शिक्षा की समस्याएँ अधिक महत्वपूर्ण और जटिल हैं **–प्राइमरी स्तर की शिक्षा**
- प्राइमरी स्तर पर छात्रों को मातृभाषा में पढ़ाना बेहतर होता है क्योंकि इससे **–बच्चों की पढ़ाई स्वाभाविक वातावरण में होती है**
- बालक सर्वप्रथम कौन-सी क्रिया सीखता है **–भाव प्रदर्शन**
- छोटे बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की नियमित आदत बनाने के लिए **–अध्यापक उनके लिए उच्च स्वर में पढ़ेगा**
- प्रारम्भ में ही बच्चों की बाल साहित्य पढ़ने में रूचि जागृत करने का क्या लाभ होगा? **–छात्रों में स्वस्थ आदतों का विकास होगा**
- सामाजिक परिवर्तन सम्भव है **–शिक्षा द्वारा**
- छोटे बच्चों को एक साथ बैठकर कहानियाँ सुनाने से **–उनकी मिलकर काम करने की भावना पैदा होती है**
- भाषा सीखने का प्रभावी उपाय है **–वार्तालाप**
- शिक्षा समाज के किस पक्ष को प्रभावित करती है **–धार्मिक पक्ष, आर्थिक पक्ष, राजनैतिक पक्ष**
- बच्चों का उच्चारण सुधारने के लिए **–स्वयं शुद्ध उच्चारण करके छात्र से पुनरावृत्ति कराएंगे**
- बच्चों की शिक्षा प्रारम्भ होती है **–घर से**
- कक्षा के मनोवैज्ञानिक वातावरण की जिम्मेदारी मुख्यतः किसकी होती है **–कक्षा-शिक्षक की**
- पूर्व माध्यमिक शिक्षा है **–बाल केन्द्रित**
- सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार स्तम्भ है **–प्राथमिक स्तर**
- नयी भाषा को सीखने के लिए प्रारम्भ किया जाना चाहिए **–अक्षर व शब्दों के साहचर्य से**
- कोई छात्र गणित में काफी कमजोर है। आपको उसकी सहायता के लिए क्या करना चाहिए **–उस छात्र से बात करके पता लगाएँगे कि गणित में उसकी क्या दिक्कत है और उसे दूर करेंगे**
- शिक्षक को कक्षा-शिक्षण के दौरान ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए, जो **–आसानी से समझ में आएँ, सटीक हो, बहुत लम्बे न हो**
- कक्षा में आपकी अनुपस्थिति के दौरान कक्षा का मॉनीटर किसी शैतानी कर रहे छात्र की पिटाई कर देता है। कक्षा में आने पर आप **–मानीटर को अलग से समझाएंगे कि किसी छात्र को पीटने का उसे कोई अधिकार नहीं है**
- आप कक्षा में पढ़ा रहे हैं। अचानक आप देखते हैं कि पीछे की सीट पर एक छात्र टेबल पर सिर रखकर सो गया है। आप क्या करेंगे? **–उसे ऐसा करने देंगे व बाद में उससे इसका कारण पूछेंगे**

- कक्षा में किसी छात्र द्वारा दिए गए गलत उत्तर को सुनकर अन्य छात्र हँस पड़ते हैं। ऐसी अवस्था में **–हँसने वाले छात्रों को रोकना चाहिए और उन्हें बताना चाहिए कि कभी-कभी सभी से गलती होती है।**
- आप की कक्षा में कुछ छात्र बहुत तीव्र बुद्धि वाले हैं। कक्षा में पढ़ाई जाने वाली सामग्री में उन्हे कोई चुनौती जैसी बात नहीं मिलती। ऐसे छात्रों के सम्बन्ध में आप क्या करना चाहेंगे? **–उन छात्रों को विशेष कार्य देंगे, जो सामान्य कक्षा के छात्रों को दिए जाने वाले कार्य से मुश्किल हो**
- एक बालक आपके प्रश्न का आंशिक रूप से सही उत्तर देता है। इस प्रकार की स्थिति में आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? **–बालक के प्रयास की सरहाना करना**
- एक कार्य को सीखने का दूसरे कार्य के सीखने पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है तो इस प्रशिक्षण-स्थानान्तरण को क्या कहते है **–शून्य प्रशिक्षण स्थानान्तरण**
- यदि कक्षा में कुछ बच्चे पढ़ने में कमजोर हों और कुछ तेज हों, तो अध्यापक के लिए क्या उचित है? **–कमजोर बच्चों को स्कूल टाइम के बाद से अलग से पढ़ाए**
- शिक्षक को अपने छात्रों का नाम जानना चाहिए। इसका मुख्य लाभ यह है कि **–छात्रों के साथ शिक्षक का सम्बन्ध बढ़ेगा**
- कक्षा में शिक्षक क्रम संख्या बोलकर छात्र की हाजिरी लेते है **–यह तरीका अच्छा नहीं है इससे शिक्षक के साथ छात्र का सीधा सम्बन्ध नहीं बन पाता**
- यदि स्कूल में पूरे समय तक बच्चों को शिक्षा कार्यक्रमों में पूरी तरह व्यस्त रखा जाए तो आपके ख्याल से कौन-सी समस्या पैदा नहीं होगी **–छात्रों में पढ़ने के प्रति रूचि में कमी नहीं आएगी**
- कक्षा में अनुशासन भंग होने की सम्भावना रहती है **–कक्षा में छात्रों की संख्या आवश्यकता से अधिक हो, छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर ध्यान नहीं दिया जाए, शिक्षक को पढ़ाने का ढंग संतोषजनक न हो**
- डंडे के भय से **–व्यवस्था तो हो सकती है पर अनुशासन होना जरूरी नहीं है**
- कक्षा में बेहतर अनुशासन रहता है, यदि **–शिक्षण सामग्री का कारगर उपयोग किया जाए**
- बच्चों में स्व-अनुशासन की भावना किस प्रकार पैदा की जा सकती है **–उन्हें जिम्मेदारी सौंपकर**
- कक्षा में अनुशासन सुधारने की दृष्टि से अध्यापक को क्या करना सर्वोत्तम होगा **–अध्यापक छात्रों को पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु, पढ़ाने की विधि और छात्रों के प्रति अपने दृष्टिकोण का मूल्यांकन करे**
- अनुशासन की समस्या का समाधान के लिए एक सुझाव यह भी अच्छा है **–छात्रों को नैतिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए।**
- शिक्षक-पाठ समाप्त होने के बाद **–श्यामपट्ट को साफ कर दे**
- रटने की आदत से छात्रों को क्या हानि होती है? **–वे मौलिक चिन्तन नहीं कर पाते**
- अध्यापक बनने के बाद आपके विचारानुसार हर अध्यापक के घर पर किस वस्तु का होना जरूरी है **–पुस्तकालय**
- शिक्षण क्रिया तब तक उद्देश्य में सफल नहीं हो सकती जब तक छात्र **–इसके लिए इच्छुक न हो**
- संकोची और शर्मीले छात्रों को कक्षा के शिक्षण-कार्य मे भाग लेने की प्रेरणा देने का उपाय यह है कि **–उनको कक्षा में अपनी रूचि के विषय पर कुछ बताने को प्रोत्साहित किया जाए**
- छात्रों को बहुत अधिक या कठोर सजा देने से **–छात्रों के मन में स्कूल के प्रति उग्र प्रतिक्रिया पैदा हो सकती है**
- शिक्षक-अभिभावक संघ का महत्व इसलिए है कि **–छात्रों की समस्याओं को हल करने के लिए अध्यापक और अभिभावक मिलकर विचार करते और रास्ता निकालते है**
- शिक्षकों द्वारा अभिभावकों के पास छात्रों की मासिक रिपोर्ट भेजने से **–शिक्षकों और अभिभावकों का सम्बन्ध बना रहता है**
- क्या आप कक्षा के सभी छात्रों को एक ही गृहकार्य देना ठीक समझते है? **–जी नहीं, क्योंकि छात्रों की अभिरूचि अलग-अलग हो सकती है**
- गृहकार्य तभी उपयोगी होता है जब वह **–छात्रों की योग्यता के अनुरूप हो**
- यदि पढ़ाया जाने वाला पाठ छात्रों की बौद्धिक और भावात्मक अपेक्षा के अनुकूल न हो, तो **–कक्षा में अनुशासनहीनता पैदा हो सकती है कक्षा के छात्र उसको रूचि से नहीं सुनते है अध्यापक को छात्रों का सहयोग नहीं मिल पाता**
- शिक्षक को चरित्रवान होना चाहिए, जिससे **–उसके छात्र भी चरित्रवान बनने की कोशिश करे**
- यदि आपकों कहीं प्रशिक्षण हेतु भेजा जाए तो आप **–शिक्षण की नई-नई विधियों को सीखेंगें**
- रेखीय अभिक्रमित शिक्षण प्रक्रिया में 'R' का अभिप्राय है **–Reading**
- वृहद् कक्षा शिक्षण सम्बन्धित है **–कक्षा में निर्धारित छात्रों की संख्या से अधिक छात्र**

- विद्यालय में अनुशासन स्थापित करने का उत्तरदायित्व है **–अध्यापक का**
- विद्यालय का आधार-स्तम्भ होता है **–छात्र**
- प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षक 'तत्परता के नियम' का अनुपालन करता है। इसका अर्थ है **–बालक जिस कार्य को सीखने को तैयार है, वह उसे सीख लेगा**
- सीखना एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जो **–समस्त प्राणियों में पायी जाती है**
- अधिगम की सबसे अच्छी विधि है? **–ज्ञात से अज्ञात की ओर**
- आप अध्यापक-छात्र के मध्य किस सम्बन्ध को अच्छा समझते है? **–मित्र का**
- प्राथमिक स्तर पर वही शिक्षक प्रभावी माना जाता है जो **–अपने विषय में अच्छा हो**
- रीता कक्षा-4 की विद्यार्थी, गणित में अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर रही हैं हालांकि अन्य विषयों में उसकी उपलब्धि अच्छी है। इसका सम्भावित कारण हो सकता है **–गणित पढ़ाने के ढंग में कुछ समस्या है**
- सबसे अच्छा अधिगम वह है जो कि **–छात्र स्वयं प्राप्त करे**
- शिक्षण में पाठ्यक्रम सम्बन्धी क्रियाओं का प्रयोग **–शिक्षण को रोचक, सुग्राही एवं प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है**
- अपने अध्यापन कार्य को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए सबसे अधिक किस पर निर्भर रहना चाहिए **–अपने ज्ञान पर**
- शिक्षण का पहला चरण है **–पहले से योजना बनाना**
- शिक्षा के क्षेत्र में ली जाने वाली परीक्षा से हम जाने सकते हैं कि **–विद्यार्थी का शैक्षिक विकास सही दिशा में हो रहा है या नहीं**
- जब एक छात्र विशेष के पढ़ने में अरूचि का प्रदर्शन करने लगे, तो शिक्षक को तुरन्त उपााय करने चाहिए **–वास्तविक कारण की खेज**
- एक अच्छे शिक्षक को शिक्षण विधियों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए क्योंकि **–इससे शिक्षण अधिक प्रभावशाली हो जाता है**
- शिक्षणार्थ भ्रमण में आप बच्चों से क्या अपेक्षा करेंगे **–बच्चे हर स्थान व वस्तु को ध्यान से देखे और उसके बारे में शिक्षक से प्रश्न करें**
- आदर्शवाद की मुख्य शिक्षण विधि कौन सी है **–प्रश्नोत्तर व वाद-विवाद**
- आदर्शवाद की सबसे महत्वपूर्ण देन किस क्षेत्र में है **–उद्देश्यों के क्षेत्र में**
- जो अध्यापक कक्षा अध्यापन में उत्साही होते है **–वे अपने छात्रों को अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया में अन्तग्रस्त कर लेते हैं**
- शिक्षक तभी अपने छात्रों को प्रभावित करत सकता है जब वह **–वह पढ़ाते समय 'मनोवैज्ञानिक शिक्षा' के सिद्धान्तों पर चले**
- आपके विचार में कौन-सा गुण एक सफल अध्यापक होने के लिए अधिक आवश्यक है **–विषय वस्तु का समुचित ज्ञान होना**
- शिक्षण व्यवसाय में महिलाओं की अधिकता क्यों है **–ये बच्चों के साथ अधिक धैर्यपूर्वक व्यवहार करती है**
- रूसो के शिक्षक सम्बन्धी विचार किस पुस्तक से मिलते है **–एमील**
- 'Democracy and Education' पुस्तक लिखी है **–डीवी ने**
- डीवी सीखने का आधार किसे मानते थे? **–क्रियाओं को**
- शिक्षा का अंग्रेजी पर्याय है Education शब्द का जन्म 'एडुकेयर' से हुआ, यह शब्द किस भाषा का है **–लैटिन**
- शिक्षा को 'द्विध्रुवीय' किसने कहा **–एडम्स**
- एक अच्छी पाठ्यपुस्तक के क्या गुण है? **–उपयुक्त उदाहरण द्वारा विषय वस्तु प्रस्तुत करना**
- यदि कोई बालक एक ही कक्षा में कई वर्ष तक असफल हो जाता है तो उसकी असफलता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण क्या हो सकता है? **–उसकी अध्ययन में अरूचि तथा पाठ्य-पुस्तक एवं बालक के मानसिक स्तर में पर्याप्त अन्तर**
- कक्षा में शिक्षक का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है? **–विषयवस्तु के ज्ञान को सम्प्रेषित करना**
- यदि शिक्षक कक्षा में शिक्षण के समय कोई गम्भीर त्रुटि कर जाता है, तो उसे कार्य करना चाहिए **–वह अपनी त्रुटि को तुरन्त स्वीकार कर लें**
- कौन-सा कथन शिक्षण सफलता के लिए सर्वाधिक अनिवार्य है? **–शिक्षक का विषय ज्ञान उत्तम हो**
- छात्रों का निरन्तर आन्तरिक मूल्यांकन होना चाहिए **– जिससे छात्रों को अपनी कमजोरियों का ज्ञान हो**
- शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य होना चाहिए **–जीवन-जीने का प्रशिक्षण प्राप्त करना**
- गिजू भाई को किस उपनाम से जाना जाता है **–बाल गांधी**
- गिजू भाई का शैक्षिक चिन्तन का आधार क्या है **–शिशु शिक्षा**
- गिजू भाई लिखित पुस्तक का नाम क्या है? **–दिवास्वप्न**
- स्वामी विवेकानन्द शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ विधि किसे मानते है **–योग**
- मनुष्य बनने की शिक्षा के प्रवर्तक कौन हैं **–स्वामी विवेकानन्द**